१ओं सतिगुर प्रसादि।।
आदि
श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी

मूल पाठ सहित हिन्दी अनुवाद

(भाग चौथा)

(अंग ११०७ से १४३० तक)

१ ਓं सतिगुरु प्रसादि ॥

आदि

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी

(मूल पाठ सहित हिन्दी अनुवाद)

भाग चौथा

{अंग ११०७ से १४३० तक}

अनुवादक :

साहिब सिंघ, चरण सिंघ

डा. अजीत सिंघ औलख

लिप्यन्तरण :

जतिन्द्र कुमार

भा. ... घ

ISBN : 978-93-80323-34-3

प्रथम संस्करण : 2010

भाग चौथा भेटा : 500-00

प्रकाशक :

भा.चतर सिंघ जीवन सिंघ

बाज़ार माई सेवां, अमृतसर।

फोन : 91-183-2557973, 2542346, 5011003

फैक्स : 91-183-5017488

E-mail : csjssales@hotmail.com, csjsexports@vsnl.com
csjspurchase@yahoo.com

Visit website : www.csjs.com

विनती : पोथी का पाठ आरम्भ करने से पूर्व इसके सभी अंग देख लिए जाएं जी। अगर कहीं कोई त्रुटि नजर आए तो इसे प्राप्ति स्थान से बदला लेवें जी।

'भुलण अंदरि सभु को अभुलु गुरू करतारु॥' —प्रकाशक

मुद्रक : जीवन प्रिंटर्ज, अमृतसर।

१ ओं सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

ततकरा रागों का

भाग चौथा

१ओं सतिगुर प्रसादि॥

ततकरा शबदों का

रागु तुखारी

छंत महला १

छंत महला ४

छंत महला ५

रागु केदारा

महला ४

महला ५

छंत महला ५

कबीर जीउ

रविदास जीउ

रागु भैरउ

महला १

महला ३

महला ४

महला ५

असटपदीआ महला १

महला ३

महला ५ असटपदीआ

कबीर जीउ

महला ९

असटपदीआ महला १

महला ३ असटपदीआ

महला ५ असटपदीआ

छंत महला ५

सारंग की वार

महला ४

कबीर जी

नामदेउ जी

परमानंद

सूरदास

महला ५ सूरदास

कबीर जीउ

रागु मलार

महला १

महला ३

महला ३

महला ४

महला ५

असटपदीआ महला १

महला ३

महला ५ असटपदीआ

भगत कबीर जी

भगत नामदेव जी

भगत बेणी जी

रागु जैजावंती

महला ९

सलोक सहसक्रिती महला १

सलोक सहसक्रिती महला ५

महला ५ गाथा

फुनहे महला ५

चउबोले महला ५

सलोक भगत कबीर जीउ के

सलोक सेख फरीद के

सवये स्री मुखबाक्य महला ५

सवईए महले पहिले के १

सवईए महले दूजे के २

सवईए महले तीजे के ३

सवईए महले चौथे के ४

सवईए महले पंजवे के ५

सलोक वारां ते वधीक महला १

सलोक महला ३

सलोक महला ४

सलोक महला ५

सलोक महला ९

मुंदावणी महला ५

राग माला

★★★

अंक ज्ञान

हिन्दू अरबी – देवनागरी हिन्दी

एकाई		दहाई		सैकड़ा		हजार	
0	०	10	१०	100	१००	1000	१०००
1	१	11	११	101	१०१	1001	१००१
2	२	12	१२	102	१०२	1002	१००२
3	३	13	१३	103	१०३	1003	१००३
4	४	14	१४	104	१०४	1004	१००४
5	५	15	१५	105	१०५	1005	१००५
6	६	16	१६	106	१०६	1006	१००६
7	७	17	१७	107	१०७	1007	१००७
8	८	18	१८	108	१०८	1008	१००८
9	९	19	१९	109	१०९	1009	१००९
--		20	२०	110	११०	1010	१०१०
--		30	३०	200	२००	1020	१०२०
--		40	४०	300	३००	1030	१०३०
--		50	५०	400	४००	1040	१०४०
--		60	६०	500	५००	1050	१०५०
--		70	७०	600	६००	1100	११००
--		80	८०	700	७००	1200	१२००
--		90	९०	800	८००	1300	१३००
--		99	९९	900	९००	1400	१४००

ਪੰਜਾਬੀ (ਗੁਰਮੁਖੀ)-ਦੇਵਨਾਗਰੀ ਵਰਣਮਾਲਾ

पंजाबी (गुरमुखी)-देवनागरी वर्णमाला

ਅ अ	ਆ आ	ਇ इ	ਈ ई	
ਉ उ	ਊ ऊ	ਰੀ ऋ	ਏ ए	
ਐ ऐ	ਓ ओ	ਔ औ	ਅੰ अं	ਅ: अ:
ਕ क	ਖ ख	ਗ ग	ਘ घ	ਙ ङ
ਚ च	ਛ छ	ਜ ज	ਝ झ	ਞ ञ
ਟ ट	ਠ ठ	ਡ ड	ਢ ढ	ਣ ण
ਤ त	ਥ थ	ਦ द	ਧ ध	ਨ न
ਪ प	ਫ फ	ਬ ब	ਭ भ	ਮ म
ਯ य	ਰ र	ਲ ल	ਵ व	ੜ ड़
ਸ਼ श	ਸ਼ ष	ਸ स	ਹ ह	

ध्यातव्य– मूल पाठ के शब्दों जैसे कि 'हरिनामु' 'जपु' 'परमेसरु' 'सिमरनि' 'अंम्रितु' 'प्रसादि' इत्यादि के आखिरी व्यंजन के साथ सम्मिलित ह्रस्व 'उ' (ੁ) 'इ' (ਿ) मात्राओं का उच्चारण या पाठ नहीं किया जाता।

शब्दार्थ

१. ओंकार — परब्रह्म का सूचक ओम् अनहद नाद
२. अरज़ — विनती
३. अकल लतीफ — बुद्धिमान
४. अजनमा — जन्म-मरण से मुक्त
५. अरदास — प्रार्थना, वंदना
६. अल्लाह — परमात्मा
७. अव्वल — पहले
८. अगम — पहुँच से परे
९. अष्टपदी — आठ पंक्तियों वाले शब्द
१०. अभुल — भूल नहीं करने वाला
११. अचरज — दिलचस्प
१२. अचुत — अटल
१३. अचेत — नासमझ, चेतना रहित
१४. आकार — सृष्टि
१५. अपर अपार — परे से परे
१६. आदिपुरुष — ईश्वर
१७. ओट — आसरा
१८. इक तुके — एक पंक्ति वाला
१९. एहि — यह
२०. कादिर — स्रष्टा
२१. कलमल — पाप
२२. कबीर — बड़ा
२३. करीम — रहमदिल
२४. करम — अनुकंपा
२५. कतंच — कहां
२६. कुदरत — ईश्वरीय शक्ति
२७. खालिक — परमेश्वर
२८. खलक — संसार
२९. खुमारी — नशा
३०. खूब — बढ़िया
३१. खता — भूल, गलती
३२. गरु — गरुआ, बहुत बड़ा
३३. गुरुवाणी — गुरु के मुखारबिंद से उच्चरित वाणी
३४. गुरदेउ — परमेश्वर
३५. गोर — कब्र
३६. गरीबनिवाज — गरीबों का मसीहा
३७. गुरवाक — गुरु का वचन
३८. गुरुसिख — गुरु का शिष्य
३९. गोपाल — संसार का पालनहार
४०. गोबिंदवाल — गुरु अमरदास जी की बसाई नगरी गोइंदवाल
४१. गरीबी — नम्रता, कंगाली
४२. गाखड़ी — कठिन
४३. गोविंद — ईश्वर
४४. गुर मंत्र — गुरु का उपदेश
४५. गुसा — गुस्सा, क्रोध
४६. गति — मुक्ति, हरकत
४७. घाल — सेवा
४८. घट — शरीर
४९. घात — हत्या
५०. चाकरी — सेवा
५१. चउबोले — छंद, चार के प्रति कहे वचन
५२. चाटड़ा — विद्यार्थी
५३. चितवत — सोचते
५४. चरण — पैर
५५. चरित — लीला, कौतुक
५६. छिनवै — छिआनवे, ९६
५७. छल — धोखा
५८. जग — संसार
५९. जाचक — मांगने वाला
६०. जहान — दुनिया
६१. जीअ — दिल, प्राण, जीवन
६२. जस्य — जिसका
६३. जूठा — अपवित्र

६४. जोर	—	अत्याचार
६५. टेक	—	अवलम्ब, आसरा
६६. ठाकुर	—	स्वामी
६७. ठेंगा	—	चोट
६८. डान	—	दण्ड, सजा
६९. तरण	—	तैरना, मुक्ति
७०. तरण तारण	—	मुक्तिदाता
७१. ताण	—	आसरा
७२. तुठा	—	प्रसन्न
७३. दुहागिन	—	पति से विहीन
७४. दात	—	नियामत
७५. दोजक	—	नरक
७६. दीनबंधु	—	गरीबों का हमदर्द
७७. दीबान	—	कचहरी
७८. दरवेस	—	फकीर
७९. दुतुके	—	दो पंक्तियों वाले
८०. धरमराइ	—	मृत्यु का व्यवस्थापक
८१. धुर दरगाह	—	ईश्वर की अदालत
८२. नदरि	—	कृपा, करुणा-दृष्टि
८३. नारायण	—	ईश्वर का सृष्टि रचना से पूर्व का स्वरूप
८४. नाद	—	शब्द
८५. नादी	—	शब्द करनेवाला
८६. निगुरा	—	गुरु-विहीन
८७. निरंजन	—	मायातीत, प्रभु
८८. निगम	—	वेद- ऋगवेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद
८९. निधान	—	भण्डार
९०. निसतारा	—	उद्धार
९१. निहफलु	—	फलहीन
९२. नूर	—	ज्योति
९३. नदर	—	कृपा
९४. पंचपदे	—	पाँच पंक्तियों वाले शब्द
९५. पिंड	—	शरीर
९६. पंथ	—	रास्ता
९७. पारावार	—	ओर-छोर
९८. पपीलका	—	चींटी
९९. पीर	—	मुरशद, गुरु
१००. पाक	—	पावन
१०१. पउड़ी	—	गाथा गीत
१०२. पिसन	—	चुगलखोर
१०३. परमपद	—	मुक्ति, मोक्ष
१०४. परवाणु	—	मंजूर, स्वीकार
१०५. पतितपावन	—	पतितों को पावन करनेवाला
१०६. परवरदगार	—	पालनहार, परमात्मा
१०७. पूंगड़ा	—	पुत्र
१०८. पैज	—	लाज, मान-प्रतिष्ठा
१०९. प्रतिपालक	—	पालन करने वाला
११०. बसंत	—	एक प्रमुख खिली हुई ऋतु
१११. बेऐब	—	जिसमें कोई ऐब न हो
११२. बखसीस	—	अनुग्रह, कृपा
११३. बेपीर	—	निगुरा
११४. बंदा	—	सेवक
११५. बधिक	—	हत्यारा
११६. बिपास	—	ब्यास नदी
११७. बहुटी	—	दुल्हन
११८. बंधप	—	भाई
११९. बउरी	—	पगली, बावली
१२०. बिप	—	ब्राह्मण
१२१. बरदाता	—	वर देने वाला
१२२. बोहिथ	—	जहाज
१२३. बखसिंद	—	रहमदिल
१२४. बावरा	—	पगला, दीवाना
१२५. बिसरत	—	भुलाना, विस्मृत
१२६. बिसमिल	—	मृत
१२७. बेपरवाह	—	सर्वाधिकार सम्पन्न
१२८. भाणा	—	रज़ा, इच्छा, मर्जी
१२९. भगत	—	प्रभु की भक्ति करने वाला
१३०. भरवासा	—	भरोसा, विश्वास
१३१. भउजल	—	संसार-सागर
१३२. भव	—	जन्म
१३३. भाणा	—	प्रभु की रज़ा

१३४.भाउ — श्रद्धा-प्रेम
१३५.भक्तवत्सल — भक्तों से प्रेम करने वाला
१३६.भजु — भजन
१३७.मति — शिक्षा, सीख, उपदेश
१३८.मेदिनी — संसार
१३९.मैंडा — मेरा
१४०.मिठ बोलड़ा — मधुरभाषी
१४१.मंदभागी — बदकिस्मत
१४२.मसकीन — विनम्र
१४३.मनमुख — स्वेच्छाचारी
१४४.मुमारखी — मुबारक
१४५.मता — सलाह
१४६.मधुसूदन — दुष्टदमन
१४७.मुंदावणी — पहेली
१४८.मिथिआ — झूठा
१४९.मिहरामति — कृपा
१५०.मोकउ — मुझे
१५१.मन — अंतःकरण
१५२.मुसताक — प्रेमी
१५३.मुगध — मूर्ख
१५४.यम — मौत का फरिश्ता
१५५.रामदासपुरी — गुरु रामदास जी की बसाई नगरी अमृतसर
१५६.रब — प्रभु
१५७.रहीम — रहम करने वाला
१५८.रहाउ — रुको, दुबारा चिंतन करो
१५९.रजाइ — मर्जी
१६०.राखनहार — संरक्षक
१६१.रागी — राग गाने वाला, कीर्तनिया
१६२.रसना — जीभ, जिह्वा
१६३.रीस — बराबरी
१६४.लेखावती — लिखने वाली
१६५.लालन — प्रभु
१६६.लोच — कामना
१६७.वाहिगुरु — ईश्वर
१६८.वार — काव्य रूप
१६९.वडिआई — बड़ाई, स्तुति, प्रशंसा
१७०.वाह-वाह — स्तुति
१७१.विधाता — परमेश्वर
१७२.वेसाह — भरोसा
१७३.वडभागी — भाग्यवान, भाग्यशाली
१७४.शरणागत — शरण में आया हुआ
१७५.शील — चरित्र, अच्छा स्वभाव
१७६.श्रृंगार — एक भक्तिभाव
१७७.श्रीपति — हरि
१७८.सतिगुरु — सच्चा गुरु, परमेश्वर
१७९.सबद — शब्द, नाम
१८०.समाधि — ध्यान, मन की एकाग्रावस्था
१८१.सुखदाता — सुख देने वाला
१८२.संध्या — संध्या-वंदन
१८३.सिमरन — आराधना, वंदन
१८४.सतसंगति — सत्संग, साधु-संतों की संगति
१८५.साकत — मतावलंबी, मायावी जीव
१८६.सालक — साथी
१८७.सहसा — संशय, चिंता
१८८.साक्षात्कार — मुलाकात, भेंट, ज्ञान
१८९.साधु — धार्मिक पुरुष
१९०.सोहिलड़ा — यशोगान
१९१.सिक्ख — शिष्य, शार्गिद
१९२.सबद — शब्द, ब्रह्म, नाम
१९३.सिफत — प्रशंसा, स्तुति
१९४.स्री मुखबाक्य — श्री गुरु साहिब जी के मुखारबिंद से उच्चरित
१९५.साहिब — मालिक, परमेश्वर
१९६.हउमै — अहंत्व, अभिमान, अहंकार
१९७.हणवंत — राम-भक्त हनुमान
१९८.हुक्म — आदेश, आज्ञा
२९९.हरि — ईश्वर
२००.हलत पलत — लोक-परलोक
२०१.हरि कीरतन — ईश्वर का भजन
२०२.हाजरा हजूर — साक्षात्, पास

★★★

अंग ११०७ से १४३० तक
मूलपाठ एवं हिन्दी अनुवाद

तुखारी छंत महला १ बारह माहा

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥

वह अद्वितीय परमेश्वर जिसका वाचक ओम् है, केवल (ओंकार स्वरूप) एक है, सतगुरु की कृपा से प्राप्त होता है।

तू सुणि किरत करंमा पुरबि कमाइआ ॥ सिरि सिरि सुख सहंमा देहि सु तू भला ॥ हरि रचना तेरी किआ गति मेरी हरि बिनु घड़ी न जीवा ॥ प्रिअ बाझु दुहेली कोइ न बेली गुरमुखि अंम्रितु पीवां ॥ रचना राचि रहे निरंकारी प्रभ मनि करम सुकरमा ॥ नानक पंथु निहाले सा धन तू सुणि आतम रामा ॥ १ ॥

हे ईश्वर ! तुम सुनो, हर जीव अपने पूर्व (शुभाशुभ) कर्मानुसार सुख-दुःख पा रहा है, अतः जो तुम देते हो, सब भला ही है। जब सब रचना तेरी है तो इसमें मेरी कोई गति नहीं, तेरे बिना घड़ी भर जीना असंभव है। प्रियतम बिना जीव-स्त्री दुखी है, कोई उसका साथी नहीं, गुरु के माध्यम से ही वह अमृतपान कर सकती है। हम सब निराकार की रचना में रचे हुए हैं और प्रभु को मन में बसा लेना ही शुभ कर्म है। गुरु नानक का कथन है कि हे प्रभु ! जीव-स्त्री तेरा रास्ता निहार रही है॥ १॥

बाबीहा प्रिउ बोले कोकिल बाणीआ ॥ सा धन सभि रस चोलै अंकि समाणीआ ॥ हरि अंकि समाणी जा प्रभ भाणी सा सोहागणि नारे ॥ नव घर थापि महल घरु ऊचउ निज घरि वासु मुरारे ॥ सभ तेरी तू मेरा प्रीतमु निसि बासुर रंगि रावै ॥ नानक प्रिउ प्रिउ चवै बबीहा कोकिल सबदि सुहावै ॥ २ ॥

(मन रूपी) चातक प्रिय-प्रिय बोलता है, (जीभ रूपी) कोयल मीठे बोल बोलती है। प्रभु में अनुरक्त जीव-स्त्री सभी आनंद-रस प्राप्त करती है। प्रभु में अनुरक्त भी वही जीव-स्त्री है, जो उसे अच्छी लगती है और वही सुहागिन नारी है। नौ द्वार बनाकर शरीर के ऊँचे महल (दसम द्वार) में प्रभु का निवास है। हे प्रभु ! सब तेरा है, तू मेरा प्रियतम है, मैं दिन-रात तेरे रंग में लीन रहती हूँ। गुरु नानक का कथन है कि (मन रूपी) चातक प्रिय-प्रिय गाता है, (जीभ रूपी) कोयल मीठे बोलों में उसके गुण गाती है॥ २॥

तू सुणि हरि रस भिंने प्रीतम आपणे ॥ मनि तनि रवत रवंने घड़ी न बीसरै ॥ किउ घड़ी बिसारी हउ बलिहारी हउ जीवा गुण गाए ॥ ना कोई मेरा हउ किसु केरा हरि बिनु रहणु न जाए ॥ ओट गही हरि चरण निवासे भए पवित्र सरीरा ॥ नानक द्रिसटि दीरघ सुखु पावै गुर सबदी मनु धीरा ॥ ३ ॥

हे प्रभु ! तुम सुनो, अपने प्रियतम के आनंद में भीगी एवं मन-तन में भी उसके गुणों में लीन जीव-स्त्री पल भर भी विस्मृत नहीं करती। वह पल भर भी कैसे भुला सकती है, तुझ पर कुर्बान है और तेरे गुण गाकर जीवन पा रही है। (जीव-स्त्री की विनती है कि) हे प्रभु ! तेरे सिवा मेरा कोई नहीं, तेरे अलावा कौन हमदर्द है, तेरे बिना जिया नहीं जा सकता। प्रभु-चरणों का आसरा लिया तो शरीर पावन हो गया। गुरु नानक का कथन है कि उसकी दीर्घ-दृष्टि से सुख की अनुभूति होती है और गुरु-उपदेश से मन को संतोष प्राप्त होता है॥ ३॥

बरसै अंम्रित धार बूंद सुहावणी ॥ साजन मिले सहजि सुभाइ हरि सिउ प्रीति बणी ॥ हरि मंदरि आवै जा प्रभ भावै धन ऊभी गुण सारी ॥ घरि घरि कंतु रवै सोहागणि हउ किउ कंति विसारी ॥ उनवि घन छाए बरसु सुभाए मनि तनि प्रेमु सुखावै ॥ नानक वरसै अंम्रित बाणी करि किरपा घरि आवै ॥ ४ ॥

सुहावनी बूंद की अमृत धारा बरस रही है, हरि से प्रीत बनी तो सहज-स्वभाव वह सज्जन-प्रभु मिल गया। जब प्रभु चाहता है तो वह मन-मंदिर में आ बसता है, तब जीव-स्त्री उसके गुणगान में ही लीन रहती है। हर सुहागिन के हृदय-घर में पति-प्रभु रमण कर रहा है, तो प्रियतम ने मुझे क्यों विस्मृत किया हुआ है। बादल छा कर बरस रहे हैं और मन-तन में उसकी स्मृति व प्रेम की सुखद अनुभूति हो रही है। गुरु नानक का कथन है कि जब पति-प्रभु कृपा करके हृदय-घर में बस जाता है तो अमृतवाणी बरसने लगती है॥ ४॥

चेतु बसंतु भला भवर सुहावड़े ॥ बन फूले मंझ बारि मै पिरु घरि बाहुड़ै ॥ पिरु घरि नही आवै धन किउ सुखु पावै बिरहि बिरोध तनु छीजै ॥ कोकिल अंबि सुहावी बोलै किउ दुखु अंकि सहीजै ॥ भवरु भवंता फूली डाली किउ जीवा मरु माए ॥ नानक चेति सहजि सुखु पावै जे हरि वरु घरि धन पाए ॥ ५ ॥

चैत्र माह को बसंत ऋतु खिली होती है, फूलों पर मंडराते भँवरे सुहावने लगते हैं। अगर प्रियतम घर लौट आए तो मन यूं खिल जाता है जैसे वनों-मरुस्थलों में फल-फूल खिल जाते हैं। अगर पति-प्रभु घर नहीं आता तो जीव-स्त्री क्योंकर सुख पा सकती है, विरह के दुःख में शरीर टूटने लगता है। आम के पेड़ पर कोयल मीठे बोल बोलती है, प्रभु बिन मन का दुःख और असह्य बन जाता है। भँवरा फूलों पर मंडराता रहता है, हे माँ ! प्रभु बिन जीना तो मृत्यु के समान है। गुरु नानक का कथन है कि अगर पति-प्रभु को जीव-स्त्री पा ले तो चैत्र माह को सहज-सुख पा सकती है॥ ५॥

वैसाखु भला साखा वेस करे ॥ धन देखै हरि दुआरि आवहु दइआ करे ॥ घरि आउ पिआरे दुतर तारे तुधु बिनु अढु न मोलो ॥ कीमति कउण करे तुधु भावां देखि दिखावै ढोलो ॥ दूरि न जाना अंतरि माना हरि का महलु पछाना ॥ नानक वैसाखीं प्रभु पावै सुरति सबदि मनु माना ॥ ६ ॥

वैसाख का महीना भला है, प्रकृति सुन्दर वेष धारण कर लेती है। जीव-स्त्री द्वार पर पति-प्रभु को देखती है और विनय करती है कि दया करके घर आओ। हे प्यारे ! घर चले आओ, तू ही

दुस्तर संसार-सागर से पार करवा सकता है और तेरे बिना तो मेरा कौड़ी भर मोल नहीं है। हे प्रभु ! अगर तुझे भा जाऊँ तो मैं अमूल्य हो जाऊँ, हे प्रियतम ! अपने दर्शन प्रदान करो। मैं तुझे अपने से दूर मत समझूँ अपितु अंतर्मन में ही अनुभूति करूँ, तेरा महल पहचान लूं। गुरु नानक का कथन है कि वैसाख में प्रभु को वही पाता है, जिसकी सुरति शब्द-गुरु में लगकर मन प्रसन्न हो गया है॥ ६॥

माहु जेठु भला प्रीतमु किउ बिसरै ॥ थल तापहि सर भार सा धन बिनउ करै ॥ धन बिनउ करेदी गुण सारेदी गुण सारी प्रभ भावा ॥ साचै महलि रहै बैरागी आवण देहि त आवा ॥ निमाणी निताणी हरि बिनु किउ पावै सुख महली ॥ नानक जेठि जाणै तिसु जैसी करमि मिलै गुण गहिली ॥ ७ ॥

ज्येष्ठ का महीना भला है, इसमें प्रियतम कैसे विस्मृत हो सकता है। भट्ठी की मानिंद भूमि तपने लगती है, जीव रूपी नारी विनय करती है। गुण गाती है ताकि गुण गाते हुए प्रभु को भा जाए। वह अलिप्त प्रभु सच्चे महल में रहता है, अगर आने की अनुमति दे तो आ जाऊँ। हे प्रभु ! विनम्र एवं असहाय जीव-स्त्री तेरे बिना महल में कैसे सुख पा सकती है। गुरु नानक का कथन है कि ज्येष्ठ के महीने में प्रभु-कृपा हो जाए तो उस जैसी ही बन जाती है और शुभ-गुणों से गुणवान बन जाती है॥ ७॥

आसाड़ु भला सूरजु गगनि तपै ॥ धरती दूख सहै सोखै अगनि भखै ॥ अगनि रसु सोखै मरीऐ धोखै भी सो किरतु न हारे ॥ रथु फिरै छाइआ धन ताकै टीडु लवै मंझि बारे ॥ अवगण बाधि चली दुखु आगै सुखु तिसु साचु समाले ॥ नानक जिस नो इहु मनु दीआ मरणु जीवणु प्रभ नाले ॥ ८ ॥

आषाढ़ का महीना भला है, गगन में सूर्य तपता है, धरती दुख सहन करती है, इतनी गर्मी पड़ती है कि वह जलकर सूख जाती है। अग्नि रूपी सूर्य जल को सुखा देता है, खुद तो जलता ही है, मगर अपने काम में हार नहीं मानता। उसका रथ फिरता रहता है, जीव-स्त्री उसकी गर्मी से बचने के लिए छाया ढूँढती है, टिड्डे सूनी जमीन पर आवाजें निकालते रहते हैं। जो अवगुणों की गठरी बांधकर चली जाती है, उसे आगे दुख ही प्राप्त होता है, मगर सुख वही पाता है, जो परम-सत्य का चिंतन करता है। गुरु नानक का कथन है कि जिसे यह मन दिया है, उसका जन्म-मरण भी प्रभु के साथ है॥ ८॥

सावणि सरस मना घण वरसहि रुति आए ॥ मै मनि तनि सहु भावै पिर परदेसि सिधाए ॥ पिरु घरि नही आवै मरीऐ हावै दामनि चमकि डराए ॥ सेज इकेली खरी दुहेली मरणु भइआ दुखु माए ॥ हरि बिनु नीद भूख कहु कैसी कापड़ु तनि न सुखावए ॥ नानक सा सोहागणि कंती पिर कै अंकि समावए ॥ ६ ॥

हे मन ! सावन का मास सरस है, बादलों के बरसने का मौसम आ जाता है। मेरे तन-मन को परदेस जाने वाला प्रियतम-प्रभु ही रुचता है। अगर प्रियतम घर नहीं आता तो उसके बिना मरने के समान है और बिजली चमक-चमक कर डराती है। हे माँ ! सेज अकेली है, उसके बिना दुखी हूँ और जुदाई का दुख मरने के समान है। प्रभु बिना नींद-भूख भी भला कैसी है, शरीर पर कोई वस्त्र भी अच्छा नहीं लगता। गुरु नानक का कथन है कि वही सुहागिन है जो पति-प्रभु के संग लीन रहती है॥ ६॥

भादउ भरमि भुली भरि जोबनि पछुताणी ॥ जल थल नीरि भरे बरस रुते रंगु माणी ॥ बरसै निसि काली किउ सुखु बाली दादर मोर लवंते ॥ प्रिउ प्रिउ चवै बबीहा बोले भुइअंगम फिरहि डसंते ॥ मछर

डंग साइर भर सुभर बिनु हरि किउ सुखु पाईऐ ॥ नानक पूछि चलउ गुर अपुने जह प्रभु तह ही जाईऐ ॥ १० ॥

भादों के महीने में भ्रम में भूली यौवन में मस्त जीव रूपी नारी पछताती है। आनंदमय बरसात के मौसम में जल-थल पानी से भर जाते हैं, काली रात में मेघ बरसते हैं, मेंढक-मोर बोलते हैं, जीव रूपी नारी को भला कैसे सुख हो सकता है। पपीहा प्रिय-प्रिय बोलता है और सांप डंसते रहते हैं। मच्छर काटते रहते हैं, सरोवर जल से भर जाते हैं, मगर प्रभु के बिना सुख कैसे प्राप्त हो सकता है। गुरु नानक का कथन है कि अपने गुरु से पूछकर वहाँ चले जाना चाहिए, जहाँ प्रभु है॥ १०॥

असुनि आउ पिरा सा धन झूरि मुई ॥ ता मिलीऐ प्रभ मेले दूजै भाइ खुई ॥ झूठि विगुती ता पिर मुती कुकह काह सि फुले ॥ आगै घाम पिछै रुति जाडा देखि चलत मनु डोले ॥ दह दिसि साख हरी हरीआवल सहजि पकै सो मीठा ॥ नानक असुनि मिलहु पिआरे सतिगुर भए बसीठा ॥ ११ ॥

आश्विन के महीने में हे प्रियतम-प्रभु ! तुम चले आओ, क्योंकि जीव-स्त्री चिंता में मर रही है, अगर प्रभु मिलाप करे तो ही मिलन होता है, अन्यथा द्वैत-भावना में विचलित होती है। झूठ में लिप्त रहने के कारण नष्ट हो गई है, तभी प्रियतम ने त्याग दिया है, अब सरकण्डे में भी फूल आ चुके हैं (अर्थात् यौवन समाप्त हो गया और बुढ़ापा आ गया) आगे गर्मी एवं पीछे जाड़े की ऋतु देखकर मन विचलित होता है। दसों दिशाओं में वनस्पति की हरियाली है और जो सहज पकता है, वही मीठा है। गुरु नानक का कथन है कि आश्विन के महीने में हे प्यारे ! तुम आन मिलो; चूंकि सतगुरु मध्यस्थ बन चुके हैं॥ ११॥

कतकि किरतु पइआ जो प्रभ भाइआ ॥ दीपकु सहजि बलै तति जलाइआ ॥ दीपक रस तेलो धन पिर मेलो धन ओमाहै सरसी ॥ अवगण मारी मरै न सीझै गुणि मारी ता मरसी ॥ नामु भगति दे निज घरि बैठे अजहु तिनाड़ी आसा ॥ नानक मिलहु कपट दर खोलहु एक घड़ी खटु मासा ॥ १२ ॥

कार्तिक के महीने में जो प्रभु को अच्छा लगता है, वही फल प्राप्त होता है। वह दीपक सहज में जलता है, जिसे ज्ञान-तत्व से जलाया जाता है। ऐसे दीपक में प्रेम का तेल है, जीव-स्त्री पति-प्रभु से मिलकर आनंद एवं सुख की अनुभूति करती है। अवगुणों में मरने वाली छुटकारा नहीं पाती, मगर गुणों में लिप्त रहने वाली छूट जाती है। प्रभु जिन्हें नाम-भक्ति देता है, वे सच्चे घर में स्थान पाते हैं और उसकी आशा में ही रहते हैं। गुरु नानक का कथन है कि हे परमेश्वर ! किवाड़ खोलकर मिल जाओ, अन्यथा तेरे बिना एक घड़ी भी छः मास की मानिंद है॥ १२॥

मंघर माहु भला हरि गुण अंकि समावए ॥ गुणवंती गुण रवै मै पिरु निहचलु भावए ॥ निहचलु चतुरु सुजाणु बिधाता चंचलु जगतु सबाइआ ॥ गिआनु धिआनु गुण अंकि समाणे प्रभ भाणे ता भाइआ ॥ गीत नाद कवित कवे सुणि राम नामि दुखु भागै ॥ नानक सा धन नाह पिआरी अभ भगती पिर आगै ॥ १३ ॥

मगहर का महीना भला है, इसमें ईश्वर के गुण अंतर्मन में बस जाते हैं। गुणवान् जीव-स्त्री निश्चल पति-प्रभु के गुण गाती रहती है। विधाता बुद्धिमान, चतुर एवं निश्चल है, समूचा संसार चंचल है। अगर प्रभु की रज़ा हो तो हृदय में ज्ञान-ध्यान के शुभ गुण बस जाते हैं। कवियों से प्रभु-नाम के गीत, नाद व कवित्त सुनकर दुःख निवृत्त हो जाते हैं। गुरु नानक का कथन है कि

वही जीव रूपी नारी पति-प्रभु को प्यारी लगती है जो दिल से भक्ति करती है और सेवा में सदा तत्पर रहती है॥ १३॥

पोखि तुखारु पड़ै वणु त्रिणु रसु सोखै ॥ आवत की नाही मनि तनि वसहि मुखे ॥ मनि तनि रवि रहिआ जगजीवनु गुर सबदी रंगु माणी ॥ अंडज जेरज सेतज उतभुज घटि घटि जोति समाणी ॥ दरसनु देहु दइआपति दाते गति पावउ मति देहो ॥ नानक रंगि रवै रसि रसीआ हरि सिउ प्रीति सनेहो ॥ १४ ॥

पौष के महीने में इतना पाला पड़ता है कि वन-तृण वनस्पति सब सूख जाते हैं। हे ईश्वर ! मन, तन, मुख में तू ही बसा हुआ है, हमारे पास क्यों नहीं आता। मन-तन हर जगह ईश्वर ही व्याप्त है और शब्द-गुरु से ही आनंद प्राप्त होता है। अण्डज, जेरज, स्वेदज, उदभिज्ज, संसार के कण-कण में प्रभु-ज्योति ही समा रही है। हे दयालु दाता ! दर्शन दो, सद्‌बुद्धि प्रदान करो, ताकि गति प्राप्त हो जाए। गुरु नानक का कथन है कि जिसका प्रभु से प्रेम बन जाता है, वह सब रस आनंद पाता है॥ १४॥

माघि पुनीत भई तीरथु अंतरि जानिआ ॥ साजन सहजि मिले गुण गहि अंकि समानिआ ॥ प्रीतम गुण अंके सुणि प्रभ बंके तुधु भावा सरि नावा ॥ गंग जमुन तह बेणी संगम सात समुंद समावा ॥ पुंन दान पूजा परमेसुर जुगि जुगि एको जाता ॥ नानक माघि महा रसु हरि जपि अठसठि तीरथ नाता ॥ १५ ॥

अंतर्मन में ज्ञान का तीर्थ स्नान माना तो माघ का महीना जीव के लिए पावन बन गया। मन प्रभु के स्तुतिगान में लीन हुआ तो वह सज्जन सहज स्वाभाविक मिल गया। प्रियतम के गुण धारण करके उसे भली लगूँगी। हे प्रभु ! तुझे स्वीकार हो तो मन रूपी सरोवर में स्नान करूँ। इसी से गंगा, यमुना त्रिवेणी संगम तथा सात समुद्र की पवित्रता मुझे प्राप्त होगी। दान-पुण्य एवं पूजा-अर्चना युग-युगांतर एक परमेश्वर का ही अस्तित्व माना है। गुरु नानक का कथन है कि माघ के महीने प्रभु का जाप महा आनंददायक है, यही अड़सठ तीर्थ में स्नान समान है॥१५॥

फलगुनि मनि रहसी प्रेमु सुभाइआ ॥ अनदिनु रहसु भइआ आपु गवाइआ ॥ मन मोहु चुकाइआ जा तिसु भाइआ करि किरपा घरि आओ ॥ बहुते वेस करी पिर बाझहु महली लहा न थाओ ॥ हार डोर रस पाट पटंबर पिरि लोड़ी सीगारी ॥ नानक मेलि लई गुरि अपणै घरि वरु पाइआ नारी ॥ १६ ॥

फाल्गुन के महीने में प्रभु से प्रेम लगा, तो मन आनंदित हो गया। अहम् भाव को छोड़ने से नित्य खुशियाँ मिल रही हैं। जब प्रभु की रज़ा हुई तो मन में से मोह मिट गया, वह कृपा करके हृदय घर में आ गया। प्रभु के बिना अनेक श्रृंगार किए, परन्तु उसके चरणों में स्थान नहीं मिल सका। जब प्रभु की इच्छा हुई तो हार, डोर, रस, पाट-पटंबर सब श्रृंगार हो गए। गुरु नानक का कथन है कि गुरु से मिलाप हुआ तो पति-प्रभु को हृदय में पा लिया॥१६॥

बे दस माह रुती थिती वार भले ॥ घड़ी मूरत पल साचे आए सहजि मिले ॥ प्रभ मिले पिआरे कारज सारे करता सभ बिधि जाणै ॥ जिनि सीगारी तिसहि पिआरी मेलु भइआ रंगु माणै ॥ घरि सेज सुहावी जा पिरि रावी गुरमुखि मसतकि भागो ॥ नानक अहिनिसि रावै प्रीतमु हरि वरु थिरु सोहागो ॥ १७ ॥ १ ॥

बारह महीने, ऋतुएँ, तिथि एवं वार भले हैं। घड़ी, मुहूर्त, पल भी प्रशंसनीय है और सच्चा प्रभु सहज-स्वभाव ही मिल जाता है। प्यारे प्रभु को मिलकर सभी कार्य संवर जाते हैं और कर्ता-प्रभु सब विधियाँ जानता है। जिसे प्रभु शुभ गुणों से शृंगार देता है वही प्यारी है और प्रभु मिलन में आनंद प्राप्त करती है। यदि प्रभु रमण करे तो हृदय-घर रूपी सेज सुन्दर हो जाती है, जिस गुरुमुख के मस्तक पर उत्तम भाग्य होता है। गुरु नानक का कथन है कि वह दिन-रात प्रियतम-प्रभु के संग रमण करती है और उसका प्रभु रूपी सुहाग अटल है॥ १७॥ १॥

तुखारी महला १ ॥ पहिलै पहरै नैण सलोनड़ीए रैणि अंधिआरी राम ॥ वखरु राखु मुईए आवै वारी राम ॥ वारी आवै कवणु जगावै सूती जम रसु चूसए ॥ रैणि अंधेरी किआ पति तेरी चोरु पड़ै घरु मूसए ॥ राखणहारा अगम अपारा सुणि बेनंती मेरीआ ॥ नानक मूरखु कबहि न चेतै किआ सूझै रैणि अंधेरीआ ॥ १ ॥ दूजा पहरु भइआ जागु अचेती राम ॥ वखरु राखु मुईए खाजै खेती राम ॥ राखहु खेती हरि गुर हेती जागत चोरु न लागै ॥ जम मगि न जावहु ना दुखु पावहु जम का डरु भउ भागै ॥ रवि ससि दीपक गुरमति दुआरै मनि साचा मुखि धिआवए ॥ नानक मूरखु अजहु न चेतै किव दूजै सुखु पावए ॥ २ ॥ तीजा पहरु भइआ नीद विआपी राम ॥ माइआ सुत दारा दूखि संतापी राम ॥ माइआ सुत दारा जगत पिआरा चोग चुगै नित फासै ॥ नामु धिआवै ता सुखु पावै गुरमति कालु न ग्रासै ॥ जंमणु मरणु कालु नही छोडै विणु नावै संतापी ॥ नानक तीजै त्रिबिधि लोका माइआ मोहि विआपी ॥ ३ ॥ चउथा पहरु भइआ दउतु बिहागै राम ॥ तिन घरु राखिअड़ा जुो अनदिनु जागै राम ॥ गुर पूछि जागे नामि लागे तिना रैणि सुहेलीआ ॥ गुर सबदु कमावहि जनमि न आवहि तिना हरि प्रभु बेलीआ ॥ कर कंपि चरण सरीरु कंपै नैण अंधुले तनु भसम से ॥ नानक दुखीआ जुग चारे बिनु नाम हरि के मनि वसे ॥ ४ ॥ खूली गंठि उठो लिखिआ आइआ राम ॥ रस कस सुख ठाके बंधि चलाइआ राम ॥ बंधि चलाइआ जा प्रभ भाइआ ना दीसै ना सुणीऐ ॥ आपण वारी सभसै आवै पकी खेती लुणीऐ ॥ घड़ी चसे का लेखा लीजै बुरा भला सहु जीआ ॥ नानक सुरि नर सबदि मिलाए तिनि प्रभि कारणु कीआ ॥ ५ ॥ २ ॥

हे सुन्दर नयनों वाली जीव स्त्री! जीवन रूपी पहले प्रहर में अज्ञान रूपी रात्रि का अंधेरा बना रहता है। जन्म मिला है तो बारी आने पर आखिर मृत्यु को प्राप्त होना है, अतः नाम रूपी (सौदा संभाल लो अर्थात् हरिनाम जप लो)। मृत्यु की बारी आने पर कौन जगाता है, सोए हुए मनुष्य का यम सब खत्म कर देता है। अज्ञान रूपी रात अंधेरी है, तेरी कोई प्रतिष्ठा नहीं, पाँच विकार लूटते रहते हैं। मेरी विनती सुनो; अगम्य-अपार परमेश्वर ही रक्षा करने वाला है। गुरु नानक का कथन है कि मूर्ख जीव कभी जाग्रत नहीं होता और उसे अज्ञान रूपी अंधेरे का ज्ञान नहीं होता॥ १॥ हे नादान! जाग ले, जीवन का दूसरा प्रहर आ गया है। नाम रूपी सौदे को बचाकर रख ले, क्योंकि गुणों की खेती तो कामादिक खाते जा रहे हैं। प्रभु से प्रेम लगाकर इस खेती को बचा लो, जाग्रत रहने से कामादिक पशु रूपी चोर नुक्सान नहीं पहुँचा सकते। मृत्यु के मार्ग पर मत जाओ, न ही दुख प्राप्त करो; इस प्रकार यम का भय निवृत्त हो जाएगा। गुरु-उपदेश द्वारा सूर्य-चांद रूपी ज्ञान के दीपक जग जाएँगे, अतः मन एवं मुख से सच्चे प्रभु का भजन करो। गुरु नानक का कथन है कि हे मूर्ख! अब तक तो तू सावधान नहीं हुआ, फिर जीवन के अगले हिस्से में कैसे सुख उपलब्ध होगा॥ २॥ जीवन के तीसरे प्रहर में मोह की नींद बनी रहती है।

पुत्र-पत्नी के द्वारा माया दुख-संताप प्रदान करती है। पुत्र-पत्नी, सांसारिक प्रेम में जीव चोगा चुगता है और नित्य माया-जाल में फँसता है। यदि हरिनाम का भजन किया जाए तो सुख प्राप्त हो सकता है, गुरु-उपदेशानुसार जीवन बिताने वाले को काल अपना ग्रास नहीं बनाता। हरिनाम बिना जीव दुख-तकलीफ भोगता है, काल उसे छोड़ता नहीं और वह जन्म-मरण में पड़ा रहता है। गुरु नानक का कथन है कि जीवन के तीसरे प्रहर में लोग त्रिगुणात्मक माया के मोह में व्याप्त रहते हैं॥ ३॥ जीवन के चौथे प्रहर में सूर्योदय हो गया अर्थात् बुढ़ापा आ गया, जीवन-अवधि समाप्त हो गई। जो दिन-रात सावधान रहा, उसने अपने घर को बचा लिया। जो गुरु की सलाहानुसार सावधान होकर हरिनाम का भजन करता है, उसकी जीवन रूपी रात्रि सुखमय हो जाती है। वह शब्द-गुरु के अनुसार आचरण करता है, जीवन-मृत्यु के बन्धन से छूट जाता है और प्रभु ही उसका सच्चा साथी बनता है। अन्यथा इस उम्र में हाथ-पैर थर-थर कांपते हैं, शरीर एवं पैर भी कांपने लग जाते हैं, आँखों की रोशनी कम हो जाती है और अंततः शरीर भस्म हो जाता है। गुरु नानक का कथन है कि मन में हरिनाम बसाए बिना चारों युग केवल दुख ही मिलता है॥ ४॥ इस प्रकार मृत्यु का बुलावा आ गया, कर्मों का हिसाब-किताब हुआ। स्वाद एवं सुखों की समाप्ति हुई और मृत्यु ने बांधकर साथ ले लिया। जब प्रभु को स्वीकार होता है तो जीव बंधकर चल देता है, यह हुक्म सुनाई एवं दिखाई नहीं देता। हर जीव अपनी बारी आने पर आ जाते हैं और अपने शुभाशुभ कर्मों का फल भोगते हैं। फिर घड़ी-पल का कर्मों का हिसाब लिया जाता है और सब जीवों को बुरा-भला सहन करना पड़ता है। गुरु नानक का कथन है कि शब्द द्वारा ईश्वर ने स्वयं ही संत-व्यक्तियों को अपने संग विलीन किया है और प्रभु ने स्वयं ही कारण बनाया है॥५॥२॥

तुखारी महला १ ॥ तारा चड़िआ लंमा किउ नदरि निहालिआ राम ॥ सेवक पूर करंमा सतिगुरि सबदि दिखालिआ राम ॥ गुर सबदि दिखालिआ सचु समालिआ अहिनिसि देखि बीचारिआ ॥ धावत पंच रहे घरु जाणिआ कामु क्रोधु बिखु मारिआ ॥ अंतरि जोति भई गुर साखी चीने राम करंमा ॥ नानक हउमै मारि पतीणे तारा चड़िआ लंमा ॥ १ ॥ गुरमुखि जागि रहे चूकी अभिमानी राम ॥ अनदिनु भोरु भइआ साचि समानी राम ॥ साचि समानी गुरमुखि मनि भानी गुरमुखि साबतु जागे ॥ साचु नामु अंम्रितु गुरि दीआ हरि चरनी लिव लागे ॥ प्रगटी जोति जोति महि जाता मनमुखि भरमि भुलाणी ॥ नानक भोरु भइआ मनु मानिआ जागत रैणि विहाणी ॥ २ ॥ अउगण वीसरिआ गुणी घरु कीआ राम ॥ एको रवि रहिआ अवरु न बीआ राम ॥ रवि रहिआ सोई अवरु न कोई मन ही ते मनु मानिआ ॥ जिनि जल थल त्रिभवण घटु घटु थापिआ सो प्रभु गुरमुखि जानिआ ॥ करण कारण समरथ अपारा त्रिबिधि मेटि समाई ॥ नानक अवगण गुणह समाणे ऐसी गुरमति पाई ॥ ३ ॥ आवण जाण रहे चूका भोला राम ॥ हउमै मारि मिले साचा चोला राम ॥ हउमै गुरि खोई परगटु होई चूके सोग संतापै ॥ जोती अंदरि जोति समाणी आपु पछाता आपै ॥ पेईअड़ै घरि सबदि पतीणी साहुरड़ै पिर भाणी ॥ नानक सतिगुरि मेलि मिलाई चूकी काणि लोकाणी ॥ ४ ॥ ३ ॥

जिस पर परमेश्वर की कृपा-दृष्टि हो जाती है, उसके जीवन रूपी अंधेरे में ज्ञान का लम्बा तारा चढ़ा रहता है। पूर्ण भाग्यशाली सेवक को सतगुरु ने शब्द द्वारा ज्ञान का तारा दिखा दिया है। शब्द-गुरु ने ज्ञान का तारा दिखाया तो सत्य को स्मरण कर दिन-रात उसने उसका ही मनन किया। उसके हृदय-घर में से पाँच विकारों का छुटकारा हो गया और काम-क्रोध रूपी विष का

अंत हो गया। गुरु की शिक्षा से अन्तर्मन में सत्य की ज्योति प्रज्वलित हो गई और उसने प्रभु की लीला को पहचान लिया। गुरु साहिब फुरमाते हैं कि जो अहम् को मिटाकर प्रसन्न हो जाता है, उसके लिए लम्बा तारा चढ़ा रहता है॥१॥ गुरुमुख अभिमान को मिटाकर जाग्रत रहते हैं। उनके लिए सत्य का सवेरा बना रहता है और वे परम सत्य प्रभु में विलीन रहते हैं। गुरुमुख परम सत्य में लवलीन रहते हैं, यही उनके मन को भाता है और वे सदैव जाग्रत रहते हैं। गुरु उन्हें सच्चा नामामृत देता है और उनकी प्रभु-चरणों में लगन लगी रहती है। उनके अन्तर्मन में परम-ज्योति प्रगट हो जाती है, वे परम-सत्य को जान लेते हैं, मगर मनमुखी जीव भ्रमों में ही भूले रहते हैं। गुरु नानक का मत है कि गुरमुख जनों के लिए सत्य का भोर बना रहता है, उनका मन प्रसन्न हो जाता है और उनकी प्रभु-भक्ति में जागते ही जीवन रूपी रात्रि व्यतीत होती है॥२॥ जिसके हृदय-घर में गुण बस जाते हैं, उसके अवगुण समाप्त हो जाते हैं। एक ईश्वर ही सबमें रमण कर रहा है, उसके बिना कोई नहीं। घट-घट में केवल ईश्वर रमण कर रहा है, अन्य कोई नहीं और मन में मन को प्रसन्नता प्राप्त होती है। जिसने जल, थल, तीन लोक, घट-घट बनाया है, वह प्रभु तो गुरु के माध्यम से ही जाना जाता है। सर्वकर्ता परमेश्वर सब कुछ करने योग्य है और उसने त्रिगुणात्मक माया को मिटा दिया है। गुरु नानक फुरमाते हैं कि ऐसी गुरु-शिक्षा प्राप्त की है कि अवगुण गुणों में लीन होकर दूर हो गए हैं॥३॥ आवागमन मिट गया है और सब भ्रम निवृत्त हो गए हैं। अहम्-भाव को मिटाकर मिलन हुआ तो शरीर सफल हो गया। गुरु ने अहम्-भाव को निवृत्त किया तो वह प्रगट हो गया और शोक-संताप निवृत्त हो गए। अपने आप को पहचानकर आत्म-ज्योति ब्रह्म-ज्योति में विलीन हो गई। जीव इहलोक में शब्द-गुरु द्वारा आचरण करता है और परलोक में पति-प्रभु के संग रहता है। गुरु नानक फुरमाते हैं कि सतगुरु ने जिसे प्रभु से मिला दिया है, उसकी संसार से निर्भरता दूर हो गई है॥४॥३॥

तुखारी महला १ ॥ भोलावड़ै भुली भुलि भुलि पछोताणी ॥ पिरि छोडिअड़ी सुती पिर की सार न जाणी ॥ पिरि छोडी सुती अवगणि मुती तिसु धन विधण राते ॥ कामि क्रोधि अहंकारि विगुती हउमै लगी ताते ॥ उडरि हंसु चलिआ फुरमाइआ भसमै भसम समाणी ॥ नानक सचे नाम विहूणी भुलि भुलि पछोताणी ॥ १ ॥ सुणि नाह पिआरे इक बेनंती मेरी ॥ तू निज घरि वसिअड़ा हउ रुलि भसमै ढेरी ॥ बिनु अपने नाहै कोइ न चाहै किआ कहीऐ किआ कीजै ॥ अंम्रित नामु रसन रसु रसना गुर सबदी रसु पीजै ॥ विणु नावै को संगि न साथी आवै जाइ घनेरी ॥ नानक लाहा लै घरि जाईऐ साची सचु मति तेरी ॥ २ ॥ साजन देसि विदेसीअड़े सानेहड़े देदी ॥ सारि समाले तिन सजणा मुंध नैण भरेदी ॥ मुंध नैण भरेदी गुण सारेदी किउ प्रभ मिला पिआरे ॥ मारगु पंथु न जाणउ विखड़ा किउ पाईऐ पिरु पारे ॥ सतिगुर सबदी मिलै विछुंनी तनु मनु आगै राखै ॥ नानक अंम्रित बिरखु महा रस फलिआ मिलि प्रीतम रसु चाखै ॥ ३ ॥ महलि बुलाइड़ीए बिलमु न कीजै ॥ अनदिनु रतड़ीए सहजि मिलीजै ॥ सुखि सहजि मिलीजै रोसु न कीजै गरबु निवारि समाणी ॥ साचै राती मिलै मिलाई मनमुखि आवण जाणी ॥ जब नाची तब घूघटु कैसा मटुकी फोड़ि निरारी ॥ नानक आपै आपु पछाणै गुरमुखि ततु बीचारी ॥ ४ ॥ ४ ॥

जीव-स्त्री भुलावे में भूली रही और बार-बार भूल-भूलकर पछताती है। पति-प्रभु को छोड़कर मोह-माया में मग्न रही, मगर पति-प्रभु की महत्ता को नहीं जाना। प्रियतम को छोड़कर अवगुणों में लीन रही, जिसके फलस्वरूप जीव-स्त्री का जीवन विधवा की तरह बना रहा। वह काम, क्रोध,

अहंकार में विनष्ट हुई और अहम्-भावना में पड़कर दुख भोगती रही। जब मौत का बुलावा आया तो आत्मा रूपी हंस शरीर में से निकल कर उड़ गया और भस्म रूपी शरीर भस्म में ही मिल गया। गुरु नानक का फुरमान है कि प्रभु-नाम से विहीन जीव-स्त्री भूल-भूल कर पछताती है॥ १॥ हे प्यारे प्रभु ! मेरी एक विनती सुनो, तुम तो अपने घर में आनंदपूर्वक रह रहे हो, मगर मैं राख की ढेरी बनकर भटक रही हूँ। निःसंकोच कुछ भी कहा अथवा किया ही क्यों न जाए, मगर अपने प्रियतम के बिना कोई भी हमदर्द नहीं। हरिनामामृत रसों का भण्डार है, अतः गुरु-उपदेशानुसार जिह्वा से इस रस का पान करो। हरिनाम बिना कोई संगी-साथी नहीं, दुनिया में कितने लोग आते-जाते रहते हैं। गुरु नानक का मत है कि हरिनाम रूपी लाभ पाकर सच्चे घर जाना चाहिए, क्योंकि यही तेरा हे सच्चे प्रभु ! सच्चा उपदेश है॥ २॥ विदेश गए सज्जन-प्रभु को जीव-स्त्री संदेश भेजती है। नयनों में जल भरकर वह सज्जन का स्मरण करती है। नयनों में जल भरकर उसके गुणों को स्मरण करती हुई यही चाहती है कि प्यारे प्रभु को कैसे मिला जाए। जाने का रास्ता कठिन है, प्रियतम को कैसे पाया जा सकता है? गुरु के उपदेश द्वारा अगर तन-मन समर्पित कर दे तो बिछुड़ी हुई का प्रभु से मिलन हो जाता है। गुरु नानक का कथन है कि हरिनाम अमृतमय वृक्ष, महारस एवं फलदायक हैं और प्रियतम से मिलकर ही वह इस रस को चख पाती है॥ ३॥ हे प्रभु ! अपने चरणों में बुला लो, देरी मत करो। नित्य प्रभु-प्रेम में रत रहने वाली सहज-स्वभाव ही मिल जाती है। सहज-स्वभाव मिलन से ही परम सुख मिलता है, क्रोध मत करो, अहम् का निवारण कर लीन हुआ जा सकता है। गुरु के माध्यम से सत्य में लीन जीव-स्त्री का मिलाप हो जाता है परन्तु स्वेच्छाचारी आवागमन में पड़ी रहती है। अगर लोक-लाज छोड़कर प्रभु-भक्ति में नाचने लग गई तो घूंघट कैसा। गुरु नानक का मत है– सार तत्व यही है कि गुरु के द्वारा जीव को आत्म-स्वरूप की पहचान होती है॥ ४॥ ४॥

तुखारी महला १ ॥ मेरे लाल रंगीले हम लालन के लाले ॥ गुरि अलखु लखाइआ अवरु न दूजा भाले ॥ गुरि अलखु लखाइआ जा तिसु भाइआ जा प्रभि किरपा धारी ॥ जगजीवनु दाता पुरखु बिधाता सहजि मिले बनवारी ॥ नदरि करहि तू तारहि तरीऐ सचु देवहु दीन दइआला ॥ प्रणवति नानक दासनि दासा तू सरब जीआ प्रतिपाला ॥ १ ॥ भरिपुरि धारि रहे अति पिआरे ॥ सबदे रवि रहिआ गुर रूपि मुरारे ॥ गुर रूप मुरारे त्रिभवण धारे ता का अंतु न पाइआ ॥ रंगी जिनसी जंत उपाए नित देवै चड़ै सवाइआ ॥ अपरंपरु आपे थापि उथापे तिसु भावै सो होवै ॥ नानक हीरा हीरै बेधिआ गुण कै हारि परोवै ॥ २ ॥ गुण गुणहि समाणे मसतकि नाम नीसाणो ॥ सचु साचि समाइआ चूका आवण जाणो ॥ सचु साचि पछाता साचै राता साचु मिलै मनि भावै ॥ साचे ऊपरि अवरु न दीसै साचे साचि समावै ॥ मोहनि मोहि लीआ मनु मेरा बंधन खोलि निरारे ॥ नानक जोती जोति समाणी जा मिलिआ अति पिआरे ॥ ३ ॥ सच घरु खोजि लहे साचा गुर थानो ॥ मनमुखि नह पाईऐ गुरमुखि गिआनो ॥ देवै सचु दानो सो परवानो सद दाता वड दाणा ॥ अमरु अजोनी असथिरु जापै साचा महलु चिराणा ॥ दोति उचापति लेखु न लिखीऐ प्रगटी जोति मुरारी ॥ नानक साचा साचै राचा गुरमुखि तरीऐ तारी ॥ ४ ॥ ५ ॥

मेरा प्रियतम प्रभु रंगीला है, हम भी उसी के उपासक हैं। जब से गुरु ने उस अदृष्ट प्रभु के दर्शन करवाए हैं, उसके सिवा हम किसी अन्य को नहीं ढूँढते। जब प्रभु की इच्छा हुई तो उसने कृपा कर दी और गुरु ने अदृष्ट प्रभु को दिखा दिया। संसार का जीवन-दाता परम पुरुष विधाता

सहज ही मिल जाता है। हे दीनदयाल! जब तू अपनी कृपा करता है, संसार-सागर से उद्धार हो जाता है, अतः सच्चा नाम प्रदान करो। नानक की विनती है कि हम तेरे दासों के भी दास हैं और तू सब जीवों का पोषक है॥१॥ भरपूर ब्रह्म में वह प्रियतम प्यारा (गुरु) व्याप्त है, गुरु रूप ईश्वर शब्द में ही रमण कर रहा है। गुरु रूप परमेश्वर तीनों लोकों का आधार है, उसका रहस्य पाया नहीं जा सकता। उसने कितने ही रंग एवं प्रकार के जीव उत्पन्न किए हैं और नित्य ही बढ़-चढ़कर देता रहता है। अपरंपार प्रभु स्वयं ही बनाता एवं बिगाड़ देता है और जो वह चाहता है, वही होता है। गुरु नानक का कथन है कि गुरु गुणों की माला में पिरोकर हीरा बनकर हीरे के साथ बिंध जाता है॥२॥ गुण गुणों में लीन हुए ललाट पर नाम-स्मरण का भाग्यालेख था। जब परम-सत्य में विलीन हो गया तो आवागमन मिट गया। सत्य में लीन रहकर सत्य को पहचान लिया, सत्य में मिलन हो जाए तो यही मन को अच्छा लगता है। उस सच्चे परमेश्वर के सिवा अन्य कोई दृष्टिमान नहीं होता, सत्यनिष्ठ बनकर सत्य में समाया जा सकता है। प्रभु ने मेरा मन मोह लिया है और बन्धनों से छुटकारा हो गया है। हे नानक! जब प्यारा प्रभु मिला तो आत्म-ज्योति, परम-ज्योति में विलीन हो गई॥३॥ सच्चा गुरु वह स्थान है, जहाँ से सच्चे घर (प्रभु) की खोज होती है। मन की मर्जी करने से प्राप्ति नहीं होती यदि गुरमुख बना जाए तो ज्ञान की प्राप्ति हो जाती है। ईश्वर सदैव देने वाला है, बड़ा प्रतिभावान् है, सत्य ही देता है और वही स्वीकार होता है। वह अमर, अयोनि, चिरस्थाई है और उसका सच्चा स्थान सदैव रहने वाला है। यदि परमेश्वर की ज्योति अन्तर्मन में प्रगट हो जाए तो हर रोज़ के कर्मों का लेख नहीं लिखा जाता। हे नानक! सत्यनिष्ठ जीव परम-सत्य प्रभु की स्मृति में लीन रहता है और ऐसा गुरुमुख भवसागर से पार उतर जाता है॥४॥५॥

तुखारी महला १ ॥ ए मन मेरिआ तू समझु अचेत इआणिआ राम ॥ ए मन मेरिआ छडि अवगण गुणी समाणिआ राम ॥ बहु साद लुभाणे किरत कमाणे विछुड़िआ नही मेला ॥ किउ दुतरु तरीऐ जम डरि मरीऐ जम का पंथु दुहेला ॥ मनि रामु नही जाता साझ प्रभाता अवघटि रुधा किआ करे ॥ बंधनि बाधिआ इन बिधि छूटै गुरमुखि सेवै नरहरे ॥ १ ॥ ए मन मेरिआ तू छोडि आल जंजाला राम ॥ ए मन मेरिआ हरि सेवहु पुरखु निराला राम ॥ हरि सिमरि एकंकारु साचा सभु जगतु जिंनि उपाइआ ॥ पउणु पाणी अगनि बाधे गुरि खेलु जगति दिखाइआ ॥ आचारि तू वीचारि आपे हरि नामु संजम जप तपो ॥ सखा सैनु पिआरु प्रीतमु नामु हरि का जपु जपो ॥ २ ॥ ए मन मेरिआ तू थिरु रहु चोट न खावही राम ॥ ए मन मेरिआ गुण गावहि सहजि समावही राम ॥ गुण गाइ राम रसाइ रसीअहि गुर गिआन अंजनु सारहे ॥ त्रै लोक दीपकु सबदि चानणु पंच दूत संघारहे ॥ भै काटि निरभउ तरहि दुतरु गुरि मिलिऐ कारज सारए ॥ रूपु रंगु पिआरु हरि सिउ हरि आपि किरपा धारए ॥ ३ ॥ ए मन मेरिआ तू किआ लै आइआ किआ लै जाइसी राम ॥ ए मन मेरिआ ता छुटसी जा भरमु चुकाइसी राम ॥ धनु संचि हरि हरि नाम वखरु गुर सबदि भाउ पछाणहे ॥ मैलु परहरि सबदि निरमलु महलु घरु सचु जाणहे ॥ पति नामु पावहि घरि सिधावहि झोलि अंम्रित पी रसो ॥ हरि नामु धिआईऐ सबदि रसु पाईऐ वडभागि जपीऐ हरि जसो ॥ ४ ॥ ए मन मेरिआ बिनु पउड़ीआ मंदरि किउ चड़ै राम ॥ ए मन मेरिआ बिनु बेड़ी पारि न अंबड़ै राम ॥ पारि साजनु अपारु प्रीतमु गुर सबद सुरति लंघावए ॥ मिलि साधसंगति करहि रलीआ फिरि न पछोतावए ॥ करि दइआ दानु दइआल साचा हरि नाम संगति पावओ ॥ नानकु पइअंपै सुणहु प्रीतम गुर सबदि मनु समझावओ ॥ ५ ॥ ६ ॥

ऐ मेरे मन ! तू समझ, क्यों नासमझ और अचेत बना हुआ है। अवगुणों को छोड़कर गुणों में लीन हो जा। अनेक स्वादों के लोभ में तू कर्म कर रहा है, अतः बिछुड़े हुए का यों मिलन नहीं होता। दुस्तर संसार-सागर में से कैसे पार हुआ जा सकता है, यम का डर मारता रहता है और यम का रास्ता दुखदायी है। सांझ-सवेरे मन ने राम नाम के भजन की महत्ता को समझा नहीं, यम के मार्ग में क्या कर सकते हो। यदि गुरु के माध्यम से प्रभु की उपासना की जाए तो इन कर्म-बन्धनों से छुटकारा हो सकता है॥ १॥ ऐ मेरे मन! सब जंजाल छोड़ दो और परमपुरुष निराले प्रभु की उपासना करो। जिसने समूचा जगत उत्पन्न किया है, उस सत्यस्वरूप ओंकार की अर्चना करो। उस गुरु-परमेश्वर ने पवन, पानी, अग्नि इत्यादि को नियंत्रण में कर जगत तमाशा दिखाया है। ऐ मन ! हरिनाम का चिंतन ही तेरा पूजा-पाठ, तपस्या एवं संयम है, यही तेरा धर्म है। हरिनाम का जाप करो, क्योंकि यही सच्चा साथी, संबंधी एवं प्रियतम है॥ २॥ ऐ मन ! तू स्थिर रह, चोट मत खाना। प्रभु के गुण गाकर सहज-स्वभाव समा जाना। प्रभु के गुण गाकर प्रेम में लीन रहना, गुरु-ज्ञान का सुरमा लगाओ। इससे तीनों लोकों के दीपक परमेश्वर का आलोक प्राप्त हो जाएगा, उस द्वारा कामादिक पाँच दूतों को समाप्त कर दोगे। गुरु से मिलकर सब कार्य संवर जाते हैं, भय को दूर कर निर्भय होकर दुस्तर संसार-सागर से पार हुआ जा सकता है। यदि ईश्वर स्वयं कृपा धारण करे तो उसके प्रेम में उस जैसा ही रूप-रंग हो जाएगा॥ ३॥ ऐ मन! तू क्या लेकर आया था, अंततः क्या लेकर यहां से जाएगा? अगर भ्रम की निवृत्ति होगी तो तेरा छुटकारा निश्चित है। हरिनाम धन संचित कर और शब्द-गुरु के द्वारा प्रेम की पहचान कर। पावन शब्द के फलस्वरूप मन की मैल निवृत्ति कर सच्चे घर को जान ले। हरिनाम रूपी यश पाकर तू वास्तविक घर आएगा और जी भरकर अमृत पान प्राप्त होगा। हरिनाम का भजन करो, शब्द द्वारा आनंद पाओ, उत्तम भाग्य से प्रभु का यशोगान होता है॥ ४॥ ऐ मन! सीढ़ियों के बिना इमारत पर कैसे चढ़ा जा सकता है, नौका के बिना दरिया से पार कैसे हुआ जा सकता है। अपार प्रियतम साजन (संसार-समुद्र के) उस पार है, शब्द-गुरु की सुरति पार करवाने वाली है। साधु-संगति में मिलकर आनंद प्राप्त किया जा सकता है और फिर पछताना नहीं पड़ता। हे दीनदयाल ! दया कर, हरिनाम रूपी संगति प्रदान करो। नानक की विनती है कि हे प्रियतम ! मेरी विनय सुनो, शब्द-गुरु द्वारा मन को समझा दो॥ ५॥ ६॥

तुखारी छंत महला ४ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

अंतरि पिरी पिआरु किउ पिर बिनु जीवीऐ राम ॥ जब लगु दरसु न होइ किउ अंम्रितु पीवीऐ राम ॥ किउ अंम्रितु पीवीऐ हरि बिनु जीवीऐ तिसु बिनु रहनु न जाए ॥ अनदिनु प्रिउ प्रिउ करे दिनु राती पिर बिनु पिआस न जाए ॥ अपणी क्रिपा करहु हरि पिआरे हरि हरि नामु सद सारिआ ॥ गुर कै सबदि मिलिआ मै प्रीतमु हउ सतिगुर विटहु वारिआ ॥ १ ॥ जब देखां पिरु पिआरा हरि गुण रसि रवा राम ॥ मेरै अंतरि होइ विगासु प्रिउ प्रिउ सचु नित चवा राम ॥ प्रिउ चवा पिआरे सबदि निसतारे बिनु देखे त्रिपति न आवए ॥ सबदि सीगारु होवै नित कामणि हरि हरि नामु धिआवए ॥ दइआ दानु मंगत जन दीजै मै प्रीतमु देहु मिलाए ॥ अनदिनु गुरु गोपालु धिआई हम सतिगुर विटहु घुमाए ॥ २ ॥ हम पाथर गुरु नाव बिखु भवजलु तारीऐ राम ॥ गुर देवहु सबदु सुभाइ मै मूड़ निसतारीऐ राम ॥ हम मूड़ मुगध किछु मिति नही पाई तू अगंमु वड जाणिआ ॥ तू आपि दइआलु दइआ करि मेलहि हम निरगुणी

निमाणिआ ॥ अनेक जनम पाप करि भरमे हुणि तउ सरणागति आए ॥ दइआ करहु रखि लेवहु हरि जीउ हम लागह सतिगुर पाए ॥ ३ ॥ गुर पारस हम लोह मिलि कंचनु होइआ राम ॥ जोती जोति मिलाइ काइआ गड़ु सोहिआ राम ॥ काइआ गड़ु सोहिआ मेरै प्रभि मोहिआ किउ सासि गिरासि विसारीऐ ॥ अद्रिसटु अगोचरु पकड़िआ गुर सबदी हउ सतिगुर कै बलिहारीऐ ॥ सतिगुर आगै सीसु भेट देउ जे सतिगुर साचे भावै ॥ आपे दइआ करहु प्रभ दाते नानक अंकि समावै ॥ ४ ॥ १ ॥

दिल में प्रभु का ही प्रेम बसा हुआ है, फिर उसके बिना कैसे जिंदा रहा जा सकता है। जब तक उसके दर्शन नहीं होते तो क्योंकर अमृतपान हो सकता है। क्योंकर अमृतपान किया जाए, प्रभु बिन कैसे जिया जाए, उसके बिना रहा नहीं जा सकता। मन रात-दिन बाबीहे की तरह प्रिय-प्रिय करता है और प्रियतम बिना प्यास नहीं बुझ सकती। हे प्यारे प्रभु ! अपनी कृपा करो, क्योंकि सदा तेरे नाम का ही जाप किया है। गुरु के शब्द द्वारा मुझे प्रियतम प्रभु मिल गया है, अतः मैं सतगुरु पर बलिहारी हूँ॥ १॥ जब प्रियतम प्रभु के दर्शन करूँ तो प्रेमपूर्वक उसी के गुण-गान में लीन रहूँ। मेरा अन्तर्मन प्रसन्न हो जाए और बाबीहे की तरह प्रिय-प्रिय करता नित्य हरि का नामोच्चारण करता रहे। मैं प्रिय-प्रिय उच्चारण करता रहूँ, शब्द प्रभु द्वारा मेरा उद्धार हो जाएगा, प्रियतम के दर्शन बिना मन तृप्त नहीं होता। यदि जीव रूपी कामिनी शब्द का शृंगार करे, तो वह नित्य हरिनाम का ध्यान करती रहेगी। हे प्रियतम ! मुझ याचक को दया का दान देकर अपने साथ मिला लो। दिन-रात गुरु-परमेश्वर का ही भजन किया है, अतः हम सतगुरु पर कुर्बान हैं॥ २॥ हम पत्थर हैं, गुरु नैया है, जो विषम संसार-सागर से पार उतार देता है। हे गुरु ! मुझ मूर्ख को सहज-स्वभाव शब्द प्रदान करो, ताकि मेरा उद्धार हो जाए। हम मूर्ख तेरे रहस्य का अनुमान नहीं लगा पाए, तू अगम्य एवं बड़ा माना जाता है। हे दया के घर ! तू स्वयं दयालु है, अतः दया करके अपने साथ मिला लो, हम तो गुणविहीन एवं नाचीज हैं। अनेक जन्म पाप करते हुए भटकते रहे, परन्तु अब तेरी शरणागत आए हैं। हे प्रभु ! दया करके हमें बचा लो, चूंकि हम तो सतगुरु के चरणों में लग गए हैं॥ ३॥ गुरु पारस है, जिसके संग मिलकर हम लोहे जैसे स्वर्णयुक्त हो गए हैं। आत्म-ज्योति को परम-ज्योति से मिलाया गया, यह शरीर रूपी दुर्ग सुन्दर बन गया। शरीर रूपी सुन्दर दुर्ग ने प्रभु को मोह लिया है, वह इसमें ही स्थित है, फिर श्वास-ग्रास से उसे कैसे भुलाया जा सकता है। शब्द-गुरु द्वारा अदृश्य, अगोचर प्रभु को पा लिया है, अतः मैं ऐसे सतगुरु पर कुर्बान हूँ। अगर सच्चा सतगुरु चाहे तो यह शीश भी उसके चरणों में भेंट कर दूँ। नानक की विनती है कि हे दाता प्रभु ! दया करो, ताकि वह तेरी गोद में लवलीन हो जाए॥ ४॥ १॥

तुखारी महला ४ ॥ हरि हरि अगम अगाधि अपरंपर अपरपरा ॥ जो तुम धिआवहि जगदीस ते जन भउ बिखमु तरा ॥ बिखम भउ तिन तरिआ सुहेला जिन हरि हरि नामु धिआइआ ॥ गुर वाकि सतिगुर जो भाइ चले तिन हरि हरि आपि मिलाइआ ॥ जोती जोति मिलि जोति समाणी हरि क्रिपा करि धरणीधरा ॥ हरि हरि अगम अगाधि अपरंपर अपरपरा ॥ १ ॥ तुम सुआमी अगम अथाह तू घटि घटि पूरि रहिआ ॥ तू अलख अभेउ अगंमु गुर सतिगुर बचनि लहिआ ॥ धनु धंनु ते जन पुरख पूरे जिन गुर संतसंगति मिलि गुण रवे ॥ बिबेक बुधि बीचारि गुरमुखि गुर सबदि खिनु खिनु हरि नित चवे ॥ जा बहहि गुरमुखि हरि नामु बोलहि जा खड़े गुरमुखि हरि हरि कहिआ ॥ तुम सुआमी अगम अथाह

तू घटि घटि पूरि रहिआ ॥ २ ॥ सेवक जन सेवहि ते परवाणु जिन सेविआ गुरमति हरे ॥ तिन के कोटि सभि पाप खिनु परहरि हरि दूरि करे ॥ तिन के पाप दोख सभि बिनसे जिन मनि चिति इकु अराधिआ ॥ तिन का जनमु सफलिओ सभु कीआ करतै जिन गुर बचनी सचु भाखिआ ॥ ते धंनु जन वड पुरख पूरे जो गुरमति हरि जपि भउ बिखमु तरे ॥ सेवक जन सेवहि ते परवाणु जिन सेविआ गुरमति हरे ॥ ३ ॥ तू अंतरजामी हरि आपि जिउ तू चलावहि पिआरे हउ तिवै चला ॥ हमरै हाथि किछु नाहि जा तू मेलहि ता हउ आइ मिला ॥ जिन कउ तू हरि मेलहि सुआमी सभु तिन का लेखा छुटकि गइआ ॥ तिन की गणत न करिअहु को भाई जो गुर बचनी हरि मेलि लइआ ॥ नानक दइआलु होआ तिन ऊपरि जिन गुर का भाणा मंनिआ भला ॥ तू अंतरजामी हरि आपि जिउ तू चलावहि पिआरे हउ तिवै चला ॥ ४ ॥ २ ॥

ईश्वर अगम्य, असीम, परे से परे, अपरंपार है। हे जगदीश्वर ! जो जन तुम्हारा ध्यान करते हैं, वे विषम भवसागर से पार उतर जाते हैं। इस विषम संसार-सागर से वही पार हुआ है, जिसने हरिनाम का चिंतन किया है। जो निष्ठापूर्वक गुरु के वचनानुसार चलता है, उसे प्रभु ने स्वयं ही अपने साथ मिला लिया है। प्रभु की कृपा हुई तो आत्म-ज्योति परम-ज्योति में विलीन हो गई। वह परमशक्ति ईश्वर अगम्य, अगाध, अनंत एवं अपरंपार है॥१॥ हे स्वामी ! तुम अगम्य-अथाह हो और संसार के कण-कण में तू ही रमण कर रहा है। तू अदृश्य, रहस्यातीत एवं अपहुँच है और गुरु के वचन से तुझे पाया जा सकता है। वे लोग धन्य-धन्य एवं पूर्ण पुरुष हैं, जिन्होंने गुरु-संत की संगति में मिलकर प्रभु महिमा का गान किया है। गुरुमुख के पास विवेक बुद्धि एवं चिंतन-मनन की बात होती है अतः शब्द गुरु द्वारा वह पल-पल प्रभु का ध्यान करता है। अगर गुरमुख बैठता है तो प्रभु-नाम ही बोलता है और खड़े होकर भी प्रभु के गुण गाता है। हे स्वामी ! तू अगम्य-असीम है और संसार के कण-कण में तू ही व्याप्त है॥२॥ जिन्होंने गुरु-मतानुसार प्रभु की उपासना की है, ऐसे सेवक जन ईशोपासना करके दरबार में मान्य हो गए हैं। उनके करोड़ों पाप क्षण में प्रभु निवृत्त कर देता है। जिन्होंने एकाग्रचित होकर ईश्वर की आराधना की है, उनके पाप-दोष सब नष्ट हो गए हैं। जिन्होंने गुरु के वचनानुसार सत्य बोला है, ईश्वर ने उनका समूचा जीवन सफल कर दिया है। वही व्यक्ति धन्य एवं महापुरुष हैं जो गुरु के उपदेशानुसार प्रभु का जाप कर विषम संसार-सागर से पार उतर गए हैं। जिन्होंने गुरु-मतानुसार प्रभु की उपासना की है, ऐसे सेवकजन ईशोपासना करके प्रभु-दरबार में मान्य हो गए हैं॥३॥ हे श्री हरि ! तू अन्तर्यामी है, जैसे तू चलाता है, वैसे ही हम चलते हैं। हमारे हाथ कुछ भी नहीं, अगर तू मिला ले तो हम तुझसे मिल जाते हैं। हे स्वामी ! जिनको तू अपने साथ मिला लेता है, उनका कर्मों का लेख छूट जाता है। हे भाई ! उनकी गणना नहीं की जा सकती, जिनको गुरु के वचन द्वारा प्रभु ने मिला लिया है। नानक का फुरमान है कि ईश्वर उन पर ही दयालु हुआ है, जिन्होंने गुरु की रज़ा को भला माना है। हे हरि ! तू अन्तर्यामी है, जैसे तू चलाता है, वैसे ही हम चलते हैं॥४॥२॥

तुखारी महला ४ ॥ तू जगजीवनु जगदीसु सभ करता स्रिसटि नाथु ॥ तिन तू धिआइआ मेरा रामु जिन कै धुरि लेखु माथु ॥ जिन कउ धुरि हरि लिखिआ सुआमी तिन हरि हरि नामु अराधिआ ॥ तिन के पाप इक निमख सभि लाथे जिन गुर बचनी हरि जापिआ ॥ धनु धंनु ते जन जिन हरि नामु जपिआ तिन देखे हउ भइआ सनाथु ॥ तू जगजीवनु जगदीसु सभ करता स्रिसटि नाथु ॥ १ ॥ तू जलि थलि

महीअलि भरपूरि सभ ऊपरि साचु धणी ॥ जिन जपिआ हरि मनि चीति हरि जपि जपि मुकतु घणी ॥ जिन जपिआ हरि ते मुकत प्राणी तिन के ऊजल मुख हरि दुआरि ॥ ओइ हलति पलति जन भए सुहेले हरि राखि लीए रखनहारि ॥ हरि संतसंगति जन सुणहु भाई गुरमुखि हरि सेवा सफल बणी ॥ तू जलि थलि महीअलि भरपूरि सभ ऊपरि साचु धणी ॥ २ ॥ तू थान थनंतरि हरि एकु हरि एको एकु रविआ ॥ वणि त्रिणि त्रिभवणि सभ स्रिसटि मुखि हरि हरि नामु चविआ ॥ सभि चवहि हरि हरि नामु करते असंख अगणत हरि धिआवए ॥ सो धंनु धनु हरि संतु साधू जो हरि प्रभ करते भावए ॥ सो सफलु दरसनु देहु करते जिसु हरि हिरदै नामु सद चविआ ॥ तू थान थनंतरि हरि एकु हरि एको एकु रविआ ॥ ३ ॥ तेरी भगति भंडार असंख जिसु तू देवहि मेरे सुआमी तिसु मिलहि ॥ जिस कै मसतकि गुर हाथु तिसु हिरदै हरि गुण टिकहि ॥ हरि गुण हिरदै टिकहि तिस कै जिसु अंतरि भउ भावनी होई ॥ बिनु भै किनै न प्रेमु पाइआ बिनु भै पारि न उतरिआ कोई ॥ भउ भाउ प्रीति नानक तिसहि लागै जिसु तू आपणी किरपा करहि ॥ तेरी भगति भंडार असंख जिसु तू देवहि मेरे सुआमी तिसु मिलहि ॥ ४ ॥ ३ ॥

हे जगदीश्वर ! तू जगत का जीवन, सब बनानेवाला एवं सृष्टि का मालिक है। जिनके ललाट पर प्रारम्भ से ही भाग्य लिखा हुआ है, उन भक्तों ने ही तेरी पूजा-अर्चना की है। जिनके भाग्य में शुरु से ही लिखा है, उन्होंने हरिनाम की आराधना की है। जिन्होंने गुरु के वचन द्वारा हरि का जाप किया, उनके पाप एक पल में ही दूर हो गए हैं। जिन्होंने हरिनाम जपा है, वे भक्तजन धन्य हैं, उनके दर्शन पाकर सनाथ बन गया हूँ। हे ईश्वर ! तू जगत का जीवन, सब बनानेवाला एवं सृष्टि का स्वामी है ॥ १ ॥ हे ईश्वर ! तू जल, थल, नभ सब में व्याप्त है, सबसे बड़ा एवं हम सबका मालिक है। जिन्होंने एकाग्रचित होकर हरिनाम जपा, ऐसे कितने ही भक्तजन हरिनाम जप-जपकर मुक्ति पा गए हैं। हरिनाम जपने वाले प्राणी संसार के बन्धनों से मुक्त हो गए हैं और प्रभु-द्वार में उन्हीं के मुख उज्ज्वल हुए हैं। वे लोक-परलोक में सुखी हुए हैं और ईश्वर ही उनका रखवाला बना है। हे भाई जनो ! सुनो, गुरु-संतों की संगति में ही प्रभु की उपासना सफल हुई है। हे मालिक ! एकमात्र तू ही सबसे बड़ा है, जल, थल, नभ सब में तू ही व्याप्त है ॥ २ ॥ हे प्रभु ! एक तू ही सर्वव्यापक है, केवल तू ही कण-कण में रमण कर रहा है, वन-वनस्पति, तीनों लोक, समूची सृष्टि हरिनाम जप रही है। सभी जीव हरिनाम की स्तुति कर रहे हैं, असंख्य, अनगिनत जीव ईश्वर का भजन करने में तल्लीन हैं। पर वे साधु-संत धन्य हैं, जो कर्ता प्रभु को भा जाते हैं। हे सृष्टिकर्ता ! जिसने हृदय में सदा हरिनामोच्चारण किया है, उस गुरु-संत पुरुष के मुझे सफल दर्शन करवा दो। हे प्रभु ! एक तू ही हर स्थान पर मौजूद है, केवल एक तू ही संसार के कण-कण में रमण कर रहा है ॥ ३ ॥ तेरी भक्ति के भण्डार तो अनगिनत हैं, हे मेरे स्वामी ! पर जिसे तू देता है, उसे ही मिलता है। जिसके मस्तक पर गुरु का हाथ है, उसके ही हृदय में प्रभु-गुण टिकते हैं। उसके ही हृदय में प्रभु-गुण टिकते हैं, जिसके अन्तर्मन में पूर्ण निष्ठा बनी हुई है। श्रद्धा-भय के बिना किसी ने भी प्रेम नहीं पाया और बिना श्रद्धा-भय के कोई भी पार नहीं हुआ। गुरु नानक का कथन है कि हे प्रभु ! भय, श्रद्धा एवं प्रीति उसी के अन्तर्मन में उत्पन्न होती है, जिस पर तू अपनी कृपा करता है। हे मेरे स्वामी ! तेरी भक्ति के भण्डार तो अनगिनत हैं, पर जिसे तू देता है, उसे ही यह मिलता है ॥ ४ ॥ ३ ॥

तुखारी महला ४ ॥ नावणु पुरबु अभीचु गुर सतिगुर दरसु भइआ ॥ दुरमति मैलु हरी अगिआनु अंधेरु गइआ ॥ गुर दरसु पाइआ अगिआनु गवाइआ अंतरि जोति प्रगासी ॥ जनम मरण दुख खिन महि बिनसे हरि पाइआ प्रभु अबिनासी ॥ हरि आपि करतै पुरबु कीआ सतिगुरू कुलखेति नावणि गइआ ॥ नावणु पुरबु अभीचु गुर सतिगुर दरसु भइआ ॥ १ ॥ मारगि पंथि चले गुर सतिगुर संगि सिखा ॥ अनदिनु भगति बणी खिनु खिनु निमख विखा ॥ हरि हरि भगति बणी प्रभ केरी सभु लोकु वेखणि आइआ ॥ जिन दरसु सतिगुर गुरू कीआ तिन आपि हरि मेलाइआ ॥ तीरथ उदमु सतिगुरू कीआ सभ लोक उधरण अरथा ॥ मारगि पंथि चले गुर सतिगुर संगि सिखा ॥ २ ॥ प्रथम आए कुलखेति गुर सतिगुर पुरबु होआ ॥ खबरि भई संसारि आए त्रै लोआ ॥ देखणि आए तीनि लोक सुरि नर मुनि जन सभि आइआ ॥ जिन परसिआ गुरु सतिगुरू पूरा तिन के किलविख नास गवाइआ ॥ जोगी दिगंबर संनिआसी खटु दरसन करि गए गोसटि ढोआ ॥ प्रथम आए कुलखेति गुर सतिगुर पुरबु होआ ॥ ३ ॥ दुतीआ जमुन गए गुरि हरि हरि जपनु कीआ ॥ जागाती मिले दे भेट गुर पिछै लंघाइ दीआ ॥ सभ छुटी सतिगुरू पिछै जिनि हरि हरि नामु धिआइआ ॥ गुर बचनि मारगि जो पंथि चाले तिन जमु जागाती नेड़ि न आइआ ॥ सभ गुरू गुरू जगतु बोलै गुर कै नाइ लइऐ सभि छुटकि गइआ ॥ दुतीआ जमुन गए गुरि हरि हरि जपनु कीआ ॥ ४ ॥ त्रितीआ आए सुरसरी तह कउतकु चलतु भइआ ॥ सभ मोही देखि दरसनु गुर संत किनै आढु न दामु लइआ ॥ आढु दामु किछु पइआ न बोलक जागातीआ मोहण मुंदणि पई ॥ भाई हम करह किआ किसु पासि मांगह सभ भागि सतिगुर पिछै पई ॥ जागातीआ उपाव सिआणप करि वीचारु डिठा भंनि बोलका सभि उठि गइआ ॥ त्रितीआ आए सुरसरी तह कउतकु चलतु भइआ ॥ ५ ॥ मिलि आए नगर महा जना गुर सतिगुर ओट गही ॥ गुरु सतिगुरु गुरु गोविदु पुछि सिम्रिति कीता सही ॥ सिम्रिति सासत्र सभनी सही कीता सुकि प्रहिलादि स्रीरामि करि गुर गोविदु धिआइआ ॥ देही नगरि कोटि पंच चोर वटवारे तिन का थाउ थेहु गवाइआ ॥ कीरतन पुराण नित पुंन होवहि गुर बचनि नानकि हरि भगति लही ॥ मिलि आए नगर महा जना गुर सतिगुर ओट गही ॥ ६ ॥ ४ ॥ १० ॥

{गुरु रामदास जी अपने गुरु अमरदास जी के दर्शनों को अभिजित् नक्षत्र में तीर्थ-स्नान का फल मानते हैं। माना जाता है कि इस पर्व को कुरुक्षेत्र तीर्थ में स्नान करने से पुण्य प्राप्त होता है, पर गुरु साहिब उच्चरित करते हैं कि गुरु-दर्शनों में ही पुण्य-फल निहित है। जनमानस का कल्याण करने के लिए गुरु अमरदास जी कुरुक्षेत्र, यमुना एवं हरिद्वार की यात्रा पर गए।}

गुरु का दर्शन हमारे लिए अभिजित् नक्षत्र में (कुरुक्षेत्र तीर्थ) स्नान का पुण्य फल पाना है, इससे दुर्मति की मैल निवृत्त हो गई है और अज्ञान का अंधेरा मिट गया है। गुरु-दर्शन पाकर अज्ञान दूर हो गया है और अन्तर्मन में ज्योति का प्रकाश हो गया है। इससे जन्म-मरण का दुख क्षण में विनष्ट हो गया है और अविनाशी प्रभु पा लिया है। ईश्वर ने स्वयं ही इस पर्व का सुनहरी अवसर बनाया, सतगुरु (अमरदास जी) कुरुक्षेत्र तीर्थ स्नान के लिए गए। वास्तव में गुरु का दर्शन ही अभिजित् नक्षत्र में तीर्थ-स्नान का पुण्य फल है॥ १॥ सतगुरु (अमरदास जी) के संग उनके शिष्य भी मार्ग पर चल पड़े, पल-पल रास्ते में भक्ति-ज्ञान की गोष्ठी हुई। शिष्यजनों के साथ

प्रभु-भक्ति की चर्चा चलती रही और सब लोग उनके दर्शनार्थ आए। जिन्होंने गुरु का दर्शन किया, उनको प्रभु ने स्वयं मिला लिया। लोगों का उद्धार करने के लिए सतगुरु (अमरदास जी) ने तीर्थ जाने का कार्य किया। गुरु के संग उनके शिष्यजन भी रास्ते पर चल पड़े॥ २॥ सतगुरु (अमरदास जी) पहले कुरुक्षेत्र आए, जहां उनके दर्शन का पर्व हो गया। संसार में इसकी खबर हो गई और तीनों लोकों के जीव दर्शनार्थ आए। तीनों लोकों के देवगण, मनुष्य एवं मुनिजन इत्यादि सभी गुरु-दर्शन के लिए आए। जिन्होंने पूरे गुरु के दर्शन व चरण-स्पर्श किए, उनके सब पाप-अपराध नाश हो गए। योगी, दिगंबर एवं छः प्रकार के सन्यासियों ने उनके साथ ज्ञान-गोष्ठी की और गुरु (के हरिनाम मंत्र) को माना। सतगुरु (अमरदास जी) पहले कुरुक्षेत्र आए, जहां उनका दर्शन-पर्व हो गया॥ ३॥ तदुपरांत गुरु जी यमुना पर गए, जहाँ उन्होंने हरिनाम का जाप किया। वहाँ पर कराधिकारी भेंट-उपहार देकर गुरु जी से मिले और गुरु के शिष्य कहलवाने वाले सब व्यक्ति बिना टैक्स ही आगे निकल गए। जिन्होंने सतगुरु के निर्देशानुसार चलकर ईश्वर का भजन किया, वे सभी संसार के बन्धनों से मुक्ति पा गए। गुरु के वचन द्वारा जो सन्मार्ग पर चलते हैं, उन्हें यम रूपी कराधिकारी भी तंग करने नहीं आते। जगत के सब लोग गुरु का यश गाते हैं, गुरु का नाम जपने से सभी मुक्त हो गए। तदन्तर गुरु जी यमुना पर गए, जहाँ उन्होंने हरिनाम का भजन किया॥४॥ उसके उपरांत वे गंगा (हरिद्वार) आए और वहाँ पर उन्होंने विचित्र लीला रची। संत-गुरु के दर्शन कर सभी मोहित हो गए और किसी ने कौड़ी भर दाम नहीं लिया। धन-दान लेने वाले पुरोहित-पण्डितों की गोलक में कुछ भी नहीं डाला और वे दंग रह गए। वे कहने लगे, हे भाई! हम क्या करें, किससे मांगने का यत्न करें, सभी सतगुरु की शरण में जा रहे हैं। धन-दान लेने वाले पुरोहितों ने उपाय, बुद्धिमत्ता कर सब गोलक उठवा लिए। इस तरह वे गंगा (हरिद्वार) आए और वहाँ उन्होंने विचित्र लीला रची॥५॥ फिर नगर के प्रतिष्ठित व्यक्ति मिलकर गुरु जी के पास आए और उनका आसरा ग्रहण किया। जब उन्होंने ईश्वर के बारे में अपनी जिज्ञासा व्यक्त की तो गुरु जी ने स्मृतियों के आधार पर उन्हें संतुष्टि प्रदान की। गुरु जी ने स्मृतियों एवं शास्त्रों के आधार पर तथ्य बताया कि शुकदेव, भक्त प्रहलाद एवं श्री रामचन्द्र जी ने क्योंकर ईश्वर की सत्ता मानकर उसका ध्यान किया और देह रूपी नगर किले में कामादिक पाँच चोरों को चकनाचूर कर दिया। वहाँ नित्य प्रभु-कीर्तन, पुराणों की कथा और दान-पुण्य हो रहा था, नानक का कथन है कि गुरु के वचन से उनको प्रभु-भक्ति प्राप्त हुई। नगर के कुलीन पुरुष मिलकर गुरु जी के सान्निध्य में आए और उनका आसरा पाया॥ ६॥ ४॥ १०॥

तुखारी छंत महला ५ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

घोलि घुमाई लालना गुरि मनु दीना ॥ सुणि सबदु तुमारा मेरा मनु भीना ॥ इहु मनु भीना जिउ जल मीना लागा रंगु मुरारा ॥ कीमति कही न जाई ठाकुर तेरा महलु अपारा ॥ सगल गुणा के दाते सुआमी बिनउ सुनहु इक दीना ॥ देहु दरसु नानक बलिहारी जीअड़ा बलि बलि कीना ॥ १ ॥ इहु तनु मनु तेरा सभि गुण तेरे ॥ खंनीऐ वंञा दरसन तेरे ॥ दरसन तेरे सुणि प्रभ मेरे निमख द्रिसटि पेखि जीवा ॥ अंम्रित नामु सुनीजै तेरा किरपा करहि त पीवा ॥ आस पिआसी पिर कै ताई जिउ

चात्रिकु बूंदेरे ॥ कहु नानक जीअड़ा बलिहारी देहु दरसु प्रभ मेरे ॥ २ ॥ तू साचा साहिबु साहु अमिता ॥ तू प्रीतमु पिआरा प्रान हित चिता ॥ प्रान सुखदाता गुरमुखि जाता सगल रंग बनि आए ॥ सोई करमु कमावै प्राणी जेहा तू फुरमाए ॥ जा कउ क्रिपा करी जगदीसुरि तिनि साधसंगि मनु जिता ॥ कहु नानक जीअड़ा बलिहारी जीउ पिंडु तउ दिता ॥ ३ ॥ निरगुणु राखि लीआ संतन का सदका ॥ सतिगुरि ढाकि लीआ मोहि पापी पड़दा ॥ ढाकनहारे प्रभू हमारे जीअ प्रान सुखदाते ॥ अबिनासी अबिगत सुआमी पूरन पुरख बिधाते ॥ उसतति कहनु न जाइ तुमारी कउणु कहै तू कद का ॥ नानक दासु ता कै बलिहारी मिलै नामु हरि निमका ॥ ४ ॥ १ ॥ ११ ॥

हे स्वामी ! मैं तुम पर कोटि-कोटि कुर्बान् जाता हूँ, गुरु द्वारा मैंने यह मन तुझे अर्पण कर दिया है। तुम्हारा शब्द सुनकर मेरा मन भीग गया है, यह मन तेरे प्रेम में ऐसे भीग गया है, जैसे मछली का जल से प्रेम होता है। हे प्रभु ! तेरा घर अपार है, इसकी कीमत आँकी नहीं जा सकती। हे सर्वगुणों के दाता, स्वामी ! दीन की एक विनय सुनो, नानक तुझ पर बलिहारी जाता है, अपने दर्शन प्रदान् करो, यह प्राण भी तुझ पर न्यौछावर हैं॥ १॥ यह तन-मन, सब गुण तेरी देन है, तेरे दर्शन पाने के लिए टुकड़े-टुकड़े होने के लिए भी तैयार हूँ। हे मेरे प्रभु ! सुनो, पल भर तुझे देखकर ही मैं जीवन पाता हूँ। तेरा अमृत नाम सुना जाता है, अगर तेरी कृपा हो जाए तो मैं भी पान कर सकता हूँ। जैसे पपीहा स्वाति-बूँद के लिए प्यासा होता है, वैसे ही जीव-स्त्री प्रभु की आशा में प्यासी बनी हुई है। नानक का कथन है कि हे मेरे प्रभु ! मुझे दर्शन प्रदान करो, क्योंकि यह प्राण भी तुझ पर न्यौछावर हैं॥ २॥ हे परमेश्वर, तू परम सत्य है, संसार का मालिक है, अमित साहूकार है। तू प्रियतम प्यारा तो हमें दिल एवं जान से भी बहुत प्यारा है। प्राणों को सुख देने वाले प्रभु का बोध गुरु से ही होता है, सब रंग-तमाशे उसके ही बनाए हुए हैं। प्राणी वही कर्म करता है, जैसा तू आदेश करता है। जिस पर जगदीश्वर ने कृपा की है, उसने साधु-संगत में मन को जीत लिया है। नानक का कथन है कि यह प्राण भी तुम पर कुर्बान हैं, क्योंकि यह आत्मा-शरीर सब तेरी देन है॥ ३॥ संत पुरुषों के सदके मुझ गुणविहीन को परमात्मा ने बचा लिया है, सतगुरु ने मुझ जैसे पापी का पर्दा ढक लिया है। आत्मा एवं प्राणों को सुख देने वाला प्रभु ही हमारे पाप-अपराध ढकने वाला है। वह अविनाशी, अव्यक्त, संसार का स्वामी, पूर्ण परमपुरुष विधाता है। हे प्रभु ! तेरी प्रशंसा कही नहीं जा सकती (अर्थात् तेरी प्रशंसा का कोई अंत नहीं), कौन कह सकता है कि तू कब का व्याप्त है। दास नानक उस गुरु पर बलिहारी है, जिससे हरिनाम मिल जाए॥ ४॥ १॥ ११॥

केदारा महला ४ घरु १

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥

वह अनंतशक्ति निरंकार केवल (ओंकार स्वरूप) एक है,
सतगुरु की कृपा से प्राप्ति होती है।

मेरे मन राम नाम नित गावीऐ रे ॥ अगम अगोचरु न जाई हरि लखिआ गुरु पूरा मिलै लखावीऐ रे ॥ रहाउ ॥ जिसु आपे किरपा करे मेरा सुआमी तिसु जन कउ हरि लिव लावीऐ रे ॥ सभु को भगति करे हरि केरी हरि भावै सो थाइ पावीऐ रे ॥ १ ॥ हरि हरि नामु अमोलकु हरि पहि हरि देवै ता नामु धिआवीऐ रे ॥ जिस नो नामु देइ मेरा सुआमी तिसु लेखा सभु छडावीऐ रे ॥ २ ॥ हरि नामु अराधहि से धंनु जन कहीअहि तिन मसतकि भागु धुरि लिखि पावीऐ रे ॥ तिन देखे मेरा मनु बिगसै जिउ सुतु मिलि मात गलि लावीऐ रे ॥ ३ ॥ हम बारिक हरि पिता प्रभ मेरे मोकउ देहु मती जितु हरि पावीऐ रे ॥ जिउ बछुरा देखि गऊ सुखु मानै तिउ नानक हरि गलि लावीऐ रे ॥ ४ ॥ १ ॥

हे मेरे मन! नित्य राम-नाम का भजन-गान करो; अपहुँच, मन-वाणी से परे प्रभु को देखा नहीं जा सकता, परन्तु यदि पूरा गुरु मिल जाए तो साक्षात्कार हो जाता है॥ रहाउ॥ मेरा स्वामी जिस पर अपनी कृपा करता है, उस व्यक्ति को अपनी लगन में लगा देता है। वैसे तो हर व्यक्ति प्रभु की भक्ति करता है, मगर प्रभु को भा जाए तो वही सफल होती है॥१॥ हरिनाम अमूल्य है यह भण्डार प्रभु के ही पास है, यदि वह नाम प्रदान करे तो ही उसके नाम का चिंतन किया जाता है। जिसे मेरा स्वामी नाम देता है, वह सब बन्धनों से मुक्त हो जाता है॥२॥ हरिनाम की आराधना करने वाला व्यक्ति धन्य माना जाता है और उसके मस्तक पर प्रारम्भ से ही उत्तम भाग्य लिखा होता है। उसे देखकर मेरा मन यूं खिल जाता है, जैसे पुत्र को मिलकर माता गले से लगा लेती है॥३॥ हम बालक हैं, प्रभु हमारा पिता है। हे प्रभु! मुझे ऐसा उपदेश दो, जिससे तुझे पाया जा सकता है। नानक का कथन है कि हे ईश्वर! जैसे बछड़े को देखकर गाय सुख की अनुभूति करती है, वैसे ही गले लगाकर परमसुख प्रदान करो॥४॥१॥

केदारा महला ४ घरु १ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

मेरे मन हरि हरि गुन कहु रे ॥ सतिगुरू के चरन धोइ धोइ पूजहु इन बिधि मेरा हरि प्रभु लहु रे ॥ रहाउ ॥ कामु क्रोधु लोभु मोहु अभिमानु बिखै रस इन संगति ते तू रहु रे ॥ मिलि सतसंगति कीजै हरि गोसटि साधू सिउ गोसटि हरि प्रेम रसाइणु राम नामु रसाइणु हरि राम नाम राम रमहु रे ॥ १ ॥

अंतर का अभिमानु जोरु तू किछु किछु किछु जानता इहु दूरि करहु आपन गहु रे ॥ जन नानक कउ हरि दइआल होहु सुआमी हरि संतन की धूरि करि हरे ॥ २ ॥ १ ॥ २ ॥

हे मेरे मन! परमेश्वर का स्तुतिगान करो; गुरु के चरण धो-धोकर पूजो, इस तरीके से मेरे प्रभु को पा लो॥ रहाउ॥ काम, क्रोध, लोभ, मोह, अभिमान—इन विकार-रसों की संगत से तुम दूर ही रहना, संतों के संग मिलकर परमेश्वर की गोष्ठी करो। साधु-पुरुषों के संग गोष्ठी करने से प्रेम-रसायन की लब्धि होती है। राम नाम रसायन पान करो और राम नाम के भजन में ही लीन रहो॥१॥ मन का अभिमान जो कुछ तू जानता है, इसे दूर करो और अपने आप को नियंत्रण में रखो। नानक विनती करते हैं कि हे स्वामी! दयालु होकर हमें संतजनों की चरण-धूल बना दो॥२॥१॥२॥

केदारा महला ५ घरु २ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

माई संतसंगि जागी ॥ प्रिअ रंग देखै जपती नामु निधानी ॥ रहाउ ॥ दरसन पिआस लोचन तार लागी ॥ बिसरी तिआस बिडानी ॥ १ ॥ अब गुरु पाइओ है सहज सुखदाइक दरसनु पेखत मनु लपटानी ॥ देखि दमोदर रहसु मनि उपजिओ नानक प्रिअ अंम्रित बानी ॥ २ ॥ १ ॥

हे माँ! संतों के संग जागृति प्राप्त हुई है, प्रिय के रंग देखती सुखनिधि हरिनाम को ही जपती हूँ॥ रहाउ॥ प्रभु-दर्शन की लालसा में आँखें उधर ही लगी हैं एवं इसने अन्य चीजों की चाह छोड़ दी है॥१॥ अब गुरु पा लिया है, जो परम सुख प्रदान करने वाला है, उसके दर्शन करते ही मन उसमें लीन हो चुका है। नानक का कथन है कि प्रभु को देखकर मन में आनंद ही आनंद उत्पन्न हो गया है और उस प्रिय की अमृत-वाणी ने विभोर कर दिया है॥२॥१॥

केदारा महला ५ घरु ३ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

दीन बिनउ सुनु दइआल ॥ पंच दास तीनि दोखी एक मनु अनाथ नाथ ॥ राखु हो किरपाल ॥ रहाउ ॥ अनिक जतन गवनु करउ ॥ खटु करम जुगति धिआनु धरउ ॥ उपाव सगल करि हारिओ नह नह हुटहि बिकराल ॥ १ ॥ सरणि बंदन करुणा पते ॥ भव हरण हरि हरि हरि हरे ॥ एक तूही दीन दइआल ॥ प्रभ चरन नानक आसरो ॥ उधरे भ्रम मोह सागर ॥ लगि संतना पग पाल ॥ २ ॥ १ ॥ २ ॥

हे दयासागर! इस दीन की विनती सुनो; हे अनाथों के नाथ! मन केवल एक ही है, मगर पाँच (कामादिक) दास एवं तीन (गुण रूपी) दोषी पीड़ा दे रहे हैं, हे कृपानिधि! इनसे मुझे बचा लो॥ रहाउ॥ तीर्थ-यात्रा के मैं अनेक यत्न करता हूँ, छः कर्मों की युक्ति में ध्यान लगाता हूँ, सब उपाय कर हार चुका हूँ, मगर विकराल विकार नहीं छूटते॥१॥ हे करुणामय! तेरी शरण में आया हूँ, तेरी वंदना करता हूँ। हे श्रीहरि! सृष्टि के जन्म-मरण के बन्धन तू ही काटनेवाला है, केवल तू ही दीनों पर दया करने वाला है। नानक का कथन है कि हे प्रभु! तेरे चरणों का ही आसरा है। संतजनों के चरणों में लग कर मेरा भ्रम-मोह के समन्दर से उद्धार हो पाया है॥२॥१॥२॥

केदारा महला ५ घरु ४ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

सरनी आइओ नाथ निधान ॥ नाम प्रीति लागी मन भीतरि मागन कउ हरि दान ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुखदाई पूरन परमेसुर करि किरपा राखहु मान ॥ देहु प्रीति साधू संगि सुआमी हरि गुन रसन बखान

॥ १ ॥ गोपाल दइआल गोबिद दमोदर निरमल कथा गिआन ॥ नानक कउ हरि कै रंगि रागहु चरन कमल संगि धिआन ॥ २ ॥ १ ॥ ३ ॥

हे सुखनिधान, स्वामी ! मैं तेरी शरण में आया हूँ। मन में तेरे नाम से प्रीति लग चुकी है, तुझसे हरिनाम दान मांगता हूँ॥१॥ रहाउ॥ हे सुखदाता, परिपूर्ण परमेश्वर ! कृपा कर मेरा मान रखो, हे स्वामी ! साधुजनों के संग प्रीति प्रदान करो, ताकि जिह्वा से मैं तेरे गुणों का बखान करता रहूँ॥१॥ हे गोविन्द, गोपाल, दयालु परमेश्वर ! तेरी ज्ञान कथा अति पावन है। नानक को हरि के रंग में रंग दो ताकि उसका ध्यान तेरे चरण-कमल में लवलीन रहे॥२॥१॥३॥

केदारा महला ५ ॥ हरि के दरसन को मनि चाउ ॥ करि किरपा सतसंगि मिलावहु तुम देवहु अपनो नाउ ॥ रहाउ ॥ करउ सेवा सत पुरख पिआरे जत सुनीऐ तत मनि रहसाउ ॥ वारी फेरी सदा घुमाई कवनु अनूपु तेरो ठाउ ॥ १ ॥ सरब प्रतिपालहि सगल समालहि सगलिआ तेरी छाउ ॥ नानक के प्रभ पुरख बिधाते घटि घटि तुझहि दिखाउ ॥ २ ॥ २ ॥ ४ ॥

मेरे मन में परमात्मा के दर्शन का चाव है, हे परमेश्वर ! कृपा कर सत्संग में मिला दो और तुम अपना नाम दे दो॥ रहाउ॥ मैं प्यारे सत्पुरुष की सेवा में तल्लीन रहता हूँ, जब उसका यश सुनता हूँ तो मन में भरपूर आनंद उत्पन्न हो जाता है। हे प्रभु ! मैं सदैव तुझ पर बलिहारी जाता हूँ, तेरा अनुपम स्थान कैसा है॥१॥ तू सब जीवों का पोषक है, सबकी संभाल करता है और उन्हें तेरा ही आसरा है। हे नानक के प्रभु ! हे परमपुरुष विधाता ! मैं घट-घट तुझे ही देखता रहूँ॥२॥२॥४॥

केदारा महला ५ ॥ प्रिअ की प्रीति पिआरी ॥ मगन मनै महि चितवउ आसा नैनहु तार तुहारी ॥ रहाउ ॥ ओइ दिन पहर मूरत पल कैसे ओइ पल घरी किहारी ॥ खूले कपट धपट बुझि त्रिसना जीवउ पेखि दरसारी ॥ १ ॥ कउनु सु जतनु उपाउ किनेहा सेवा कउन बीचारी ॥ मानु अभिमानु मोहु तजि नानक संतह संगि उधारी ॥ २ ॥ ३ ॥ ५ ॥

प्रिय प्रभु की प्रीति अत्यंत प्यारी है। हे प्रभु ! मन में मग्न होकर तेरी आशा लगाए रखता हूँ और नयनों से तुझे देखने की तीव्र लालसा लगी हुई है॥ रहाउ॥ वे दिन, प्रहर, मुहूर्त, पल एवं घड़ी कैसी होगी, जब तुरंत कपाट खुलकर तृष्णा बुझेगी और दर्शन पाकर जीवन प्राप्त होगा॥१॥ गुरु नानक का कथन है कि वह कौन-सा यत्न, कारगर उपाय है, कैसी सेवा एवं कौन-सा विचार है, जिससे मान-अभिमान एवं मोह छोड़कर संतों के संग उद्धार हो सकता है॥२॥३॥५॥

केदारा महला ५ ॥ हरि हरि हरि गुन गावहु ॥ करहु क्रिपा गोपाल गोबिदे अपना नामु जपावहु ॥ रहाउ ॥ काढि लीए प्रभ आन बिखै ते साधसंगि मनु लावहु ॥ भ्रमु भउ मोहु कटिओ गुर बचनी अपना दरसु दिखावहु ॥ १ ॥ सभ की रेन होइ मनु मेरा अहंबुधि तजावहु ॥ अपनी भगति देहि दइआला वडभागी नानक हरि पावहु ॥ २ ॥ ४ ॥ ६ ॥

हर पल ईश्वर की महिमा गान करो। हे परमेश्वर ! कृपा करो और अपने नाम का ही जाप करवाओ॥ रहाउ॥ प्रभु ने अन्य विषय-विकारों से निकाल लिया है, अब साधु-संगत में मन लीन है। गुरु के वचन ने भ्रम-भय और मोह काट दिया है, अपने दर्शन करवा दो॥१॥ मेरा मन सब की चरणरज बना रहे, अतः मेरी अहम्-बुद्धि नष्ट कर दो। नानक का कथन है कि हे दयालु परमेश्वर ! जिसे तू अपनी भक्ति प्रदान करता है, ऐसा भाग्यशाली तुझे पा लेता है॥२॥४॥६॥

केदारा महला ५ ॥ हरि बिनु जनमु अकारथ जात ॥ तजि गोपाल आन रंगि राचत मिथिआ पहिरत खात ॥ रहाउ ॥ धनु जोबनु संपै सुख भुोगवै संगि न निबहत मात ॥ म्रिग त्रिसना देखि रचिओ बावर द्रुम छाइआ रंगि रात ॥ १ ॥ मान मोह महा मद मोहत काम क्रोध कै खात ॥ करु गहि लेहु दास नानक कउ प्रभ जीउ होइ सहात ॥ २ ॥ ५ ॥ ७ ॥

हे जीव! प्रभु-सिमरन बिना तेरा जीवन व्यर्थ ही जा रहा है। ईश्वर की अर्चना को तजकर अन्य रंगों में लीन रहकर तुम्हारा खाना-पहनना भी मात्र झूठा है॥ रहाउ॥ धन-दौलत, यौवन, संपति इत्यादि सुख भोगते रहते हो परन्तु अन्त में ये साथ नहीं निभाते। अरे पगले! मृगतृष्णा को देख कर उसमें ही तू आसक्त है, ये सब सुख-सुविधाएँ जिनमें तू लीन है, यह तो पेड़ की छाया मानिंद अस्थाई हैं॥ १॥ मैं मान-मोह एवं महा मद में मोहित हूँ और काम-क्रोध के खड्डे में पड़ा हुआ हूँ। हे प्रभु जी! दास नानक को बाँह पकड़ा कर इन से निकालने में सहायता करो॥२॥ ५॥ ७ ॥

केदारा महला ५ ॥ हरि बिनु कोइ न चालसि साथ ॥ दीना नाथ करुणापति सुआमी अनाथा के नाथ ॥ रहाउ ॥ सुत संपति बिखिआ रस भुोगवत नह निबहत जम कै पाथ ॥ नामु निधानु गाउ गुन गोबिंद उधरु सागर के खात ॥ १ ॥ सरनि समरथ अकथ अगोचर हरि सिमरत दुख लाथ ॥ नानक दीन धूरि जन बांछत मिलै लिखत धुरि माथ ॥ २ ॥ ६ ॥ ८ ॥

प्रभु के सिवा कोई भी अंतकाल साथ नहीं निभाता। हे दीनानाथ! तू करुणापति, सबका स्वामी एवं अनाथों का नाथ है॥ रहाउ॥ पुत्र-सम्पति, विकारों के रस भोग यम के मार्ग पर साथ नहीं निभा पाते। सुखनिधि हरिनाम जपो, उस गोविंद के गुण गाओ, अंततः यही संसार-सागर के गड्डे से उद्धार करवाता है॥ १॥ शरण देने वाले, पूर्ण समर्थ, अकथनीय, इन्द्रियातीत परमेश्वर का सिमरन करने से दुःख-दर्द निवृत्त हो जाते हैं। नानक दीन संतजनों की चरण-धूल की कामना करता है, पर माथे पर भाग्य हो तो ही यह मिलती है॥ २॥ ६॥ ८॥

केदारा महला ५ घरु ५ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

बिसरत नाहि मन ते हरी ॥ अब इह प्रीति महा प्रबल भई आन बिखै जरी ॥ रहाउ ॥ बूंद कहा तिआगि चात्रिक मीन रहत न घरी ॥ गुन गोपाल उचारु रसना टेव एह परी ॥ १ ॥ महा नाद कुरंक मोहिओ बेधि तीखन सरी ॥ प्रभ चरन कमल रसाल नानक गाठि बाधि धरी ॥ २ ॥ १ ॥ ९ ॥

मन से ईश्वर कदापि नहीं भूलता, यह प्रेम अब अटूट हो चुका है और अन्य सब विकार दूर हो गए हैं॥ रहाउ॥ जिस प्रकार चातक बूँद को छोड़ नहीं सकता, मछली जल बिना घड़ी भी नहीं रहती। वैसे ही जिह्वा प्रभु के गुणों का उच्चारण करने में लगी हुई है॥ १॥ जैसे मधुर संगीत की धुन से मोहित होकर मृग तीरों से बिंध जाता है, वैसे ही नानक ने प्रभु चरण-कमल के रस से गांठ बाँध ली है॥ २॥ १॥ ९॥

केदारा महला ५ ॥ प्रीतम बसत रिद महि खोर ॥ भरम भीति निवारि ठाकुर गहि लेहु अपनी ओर ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अधिक गरत संसार सागर करि दइआ चारहु धोर ॥ संतसंगि हरि चरन बोहिथ उधरते लै मोर ॥ १ ॥ गरभ कुंट महि जिनहि धारिओ नही बिखै बन महि होर ॥ हरि सकत सरन समरथ नानक आन नही निहोर ॥ २ ॥ २ ॥ १० ॥

हे प्रियतम! मेरे हृदय में अवगुण बस रहे हैं, हे मालिक! भ्रम की दीवार गिराकर अपनी ओर झुका लो॥१॥ रहाउ॥ संसार-सागर में बहुत गर्त है, दया कर पार करवा दो। संतों के संग हरि-चरणों के जहाज़ द्वारा मेरा उद्धार कर लो॥१॥ जिसने गर्भ कुण्ड में से बचाया है, विषय-विकारों में भी अन्य कोई नहीं बचाने वाला। नानक निष्ठापूर्वक मानते हुए कहते हैं कि परमेश्वर की शरण अति प्रबल एवं समर्थ है और उसके सिवा किसी अन्य का कोई सहारा नहीं॥२॥२॥१०॥

केदारा महला ५ ॥ रसना राम राम बखानु ॥ गुन गोपाल उचारु दिनु रैनि भए कलमल हान ॥ रहाउ ॥ तिआगि चलना सगल संपत कालु सिर परि जानु ॥ मिथन मोह दुरंत आसा झूठु सरपर मानु ॥ १ ॥ सति पुरख अकाल मूरति रिदै धारहु धिआनु ॥ नामु निधानु लाभु नानक बसतु इह परवानु ॥ २ ॥ ३ ॥ ११ ॥

हे सज्जनो, जिह्वा से राम नाम का जाप करो; हरदम ईश्वर का स्तुतिगान करने से पाप-दोष नष्ट हो जाते हैं॥ रहाउ॥ दुनियावी सुख-संपत्ति को निश्चय ही त्याग जाना है; अतः मौत को सिर पर अपरिहार्य मानो। मिथ्या मोह एवं बुरी आशा को झूठा ही समझना॥१॥ सत्यपुरुष अकालमूर्ति परमेश्वर का हृदय में ध्यान करो। नानक का कथन है कि सुखनिधान हरिनाम वस्तु का लाभ प्राप्त करो, यही मान्य है॥२॥३॥११॥

केदारा महला ५ ॥ हरि के नाम को आधारु ॥ कलि कलेस न कछु बिआपै संतसंगि बिउहारु ॥ रहाउ ॥ करि अनुग्रहु आपि राखिओ नह उपजतउ बेकारु ॥ जिसु परापति होइ सिमरै तिसु दहत नह संसारु ॥ १ ॥ सुख मंगल आनंद हरि हरि प्रभ चरन अंम्रित सारु ॥ नानक दास सरनागती तेरे संतना की छारु ॥ २ ॥ ४ ॥ १२ ॥

हरिनाम ही हमारा एकमात्र आसरा है, संतों के संग व्यवहार करने से कलह-कलेश बिल्कुल प्रभावित नहीं करते॥ रहाउ॥ जिसे प्रभु आप कृपा करके बचाता है, उस पर कोई दुःख-विकार प्रभाव नहीं डालता। जिसे ईश्वर का सुमिरन प्राप्त हो जाता है, उसे संसार की जलन या पीड़ा तंग नहीं करती॥१॥ ईश्वर सुखों का कोष एवं आनंदस्रोत है और उसके चरण अमृत समान हैं। हे प्रभु! दास नानक तेरी शरणागत है और तेरे संतजनों की धूल मात्र है॥२॥४॥१२॥

केदारा महला ५ ॥ हरि के नाम बिनु ध्रिगु स्रोत ॥ जीवन रूप बिसारि जीवहि तिह कत जीवन होत ॥ रहाउ ॥ खात पीत अनेक बिंजन जैसे भार बाहक खोत ॥ आठ पहर महा स्रमु पाइआ जैसे बिरख जंती जोत ॥ १ ॥ तजि गोपाल जि आन लागे से बहु प्रकारी रोत ॥ कर जोरि नानक दानु मागै हरि रखउ कंठि परोत ॥ २ ॥ ५ ॥ १३ ॥

हरिनाम-संकीर्तन सुने बिना कान धिक्कार योग्य हैं। जीवन रूप परमेश्वर को भुलाकर जीने वाले व्यक्तियों का क्या जीना है?॥ रहाउ॥ वे अनेक प्रकार के व्यंजन खाते-पीते भी जैसे भार ढोने वाले गधे हैं। वे जुते बैल की मानिंद आठ पहर कोल्हू में सख्त मेहनत करते रहते हैं॥१॥ ईश्वर को तजकर जो कर्मकाण्डों में लीन हो जाते हैं, वे बहुत प्रकार से रोते हैं। नानक हाथ जोड़कर यही दान माँगता है कि हे प्रभु! अपने गले से लगाकर रखना॥२॥५॥१३॥

केदारा महला ५ ॥ संतह धूरि ले मुखि मली ॥ गुणा अचुत सदा पूरन नह दोख बिआपहि कली ॥ रहाउ ॥ गुर बचनि कारज सरब पूरन ईत ऊत न हली ॥ प्रभ एक अनिक सरबत पूरन बिखै अगनि न जली ॥ १ ॥ गहि भुजा लीनो दासु अपनो जोति जोती रली ॥ प्रभ चरन सरन अनाथु आइओ नानक हरि संगि चली ॥ २ ॥ ६ ॥ १४ ॥

अगर संतजनों की चरणरज मुख पर लगाई जाए, सदैव पूर्ण अटल ओंकार का स्तुतिगान किया जाए तो कलियुग के दोष भी नहीं सताते॥ रहाउ॥ गुरु के वचनानुसार सब कार्य पूर्ण हो जाते हैं और इससे मन इधर-उधर विचलित नहीं होता। प्रभु एक ही है, सबमें परिपूर्ण है, उसकी सत्ता को मानने से विकारों की अग्नि नहीं जलाती॥१॥ हे ईश्वर! बांह पकड़कर दास को अपने संग मिला लो और आत्म-ज्योति को परम-ज्योति में मिला लो। नानक प्रार्थना करते हैं कि हे प्रभु! यह अनाथ तेरी चरण-शरण में आया है, अपने संग मिला लो॥२॥६॥१४॥

केदारा महला ५ ॥ हरि के नाम की मन रुचै ॥ कोटि सांति अनंद पूरन जलत छाती बुझै ॥ रहाउ ॥ संत मारगि चलत प्रानी पतित उधरे मुचै ॥ रेनु जन की लगी मसतकि अनिक तीरथ सुचै ॥ १ ॥ चरन कमल धिआन भीतरि घटि घटहि सुआमी सुझै ॥ सरनि देव अपार नानक बहुरि जमु नही लुझै ॥ २ ॥ ७ ॥ १५ ॥

मन में हरिनाम की चाहत बनी हो तो करोड़ों सुख-शान्तियों एवं पूर्ण आनंद की प्राप्ति होती है तथा दिल की जलन बुझ जाती है॥ रहाउ॥ संतों के मार्ग चलने पर पतित प्राणियों का उद्धार हो गया है, (अगर) संतजनों की चरणरज मस्तक पर लग गई तो अनेकों तीर्थ स्नान की शुद्धता का फल मिल जाता है॥१॥ मन में प्रभु-चरणों का ही ध्यान है और घट-घट में वह स्वामी व्याप्त है। नानक का कथन है कि देवाधिदेव प्रभु की शरण में आने से यम दोबारा दुखी नहीं करते॥२॥७॥१५॥

केदारा छंत महला ५ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

मिलु मेरे प्रीतम पिआरिआ ॥ रहाउ ॥ पूरि रहिआ सरबत्र मै सो पुरखु बिधाता ॥ मारगु प्रभ का हरि कीआ संतन संगि जाता ॥ संतन संगि जाता पुरखु बिधाता घटि घटि नदरि निहालिआ ॥ जो सरनी आवै सरब सुख पावै तिलु नही भंनै घालिआ ॥ हरि गुण निधि गाए सहज सुभाए प्रेम महा रस माता ॥ नानक दास तेरी सरणाई तू पूरन पुरखु बिधाता ॥ १ ॥ हरि प्रेम भगति जन बेधिआ से आन कत जाही ॥ मीनु बिछोहा ना सहै जल बिनु मरि पाही ॥ हरि बिनु किउ रहीऐ दूख किनि सहीऐ चात्रिक बूंद पिआसिआ ॥ कब रैनि बिहावै चकवी सुखु पावै सूरज किरणि प्रगासिआ ॥ हरि दरसि मनु लागा दिनसु सभागा अनदिनु हरि गुण गाही ॥ नानक दासु कहै बेनंती कत हरि बिनु प्राण टिकाही ॥ २ ॥ सास बिना जिउ देहुरी कत सोभा पावै ॥ दरस बिहूना साध जनु खिनु टिकणु न आवै ॥ हरि बिनु जो रहणा नरकु सो सहणा चरन कमल मनु बेधिआ ॥ हरि रसिक बैरागी नामि लिव लागी कतहु न जाइ निखेधिआ ॥ हरि सिउ जाइ मिलणा साधसंगि रहणा सो सुखु अंकि न मावै ॥ होहु क्रिपाल नानक के सुआमी हरि चरनह संगि समावै ॥ ३ ॥ खोजत खोजत प्रभ मिले हरि करुणा धारे ॥ निरगुणु

नीचु अनाथु मै नही दोख बीचारे ॥ नही दोख बीचारे पूरन सुख सारे पावन बिरदु बखानिआ ॥ भगति वछलु सुनि अंचलो गहिआ घटि घटि पूर समानिआ ॥ सुख सागरो पाइआ सहज सुभाइआ जनम मरन दुख हारे ॥ करु गहि लीने नानक दास अपने राम नाम उरि हारे ॥ ४ ॥ १ ॥

हे मेरे प्रियतम, प्यारे प्रभु! मुझे आ मिलो॥ रहाउ॥ वह आदिपुरुष विधाता सृष्टि के कण-कण में व्याप्त है। प्रभु को पाने का मार्ग उसने स्वयं ही बनाया है और संतजनों की संगत में ही वह जाना जाता है। संतजनों के संग ही परमपुरुष विधाता ज्ञात होता है और घट-घट में वही दिखाई देता है। जो शरण में आता है, वह सर्व सुख पाता है और उसकी सेवा निष्फल नहीं होती। जिसने सहज-स्वभाव ईश्वर के गुण गाए हैं, वह प्रेम रूपी महारस में ही मस्त रहता है। हे परमेश्वर! दास नानक तेरी शरण में है, केवल तू ही पूर्ण परमपुरुष विधाता है॥१॥ भक्त तो प्रभु की प्रेम-भक्ति से बिंध गया है, फिर अन्य कहाँ जा सकता है। जिस प्रकार मछली वियोग सह नहीं पाती और जल बिना मर ही जाती है, वैसे ही प्रभु बिना क्योंकर रहा जा सकता है, दुख कैसे सहा जा सकता है, पपीहा बिन बूँद प्यासा ही मर जाता है। कब रात्रि व्यतीत होगी, चकवी को सूर्य-किरणों का उजाला होने से परम सुख प्राप्त होता है। मन प्रभु-दर्शन की लालसा में लीन है, वह दिन खुशनसीब है, जब रात-दिन ईश्वर का ही गुणानुवाद किया है। दास नानक विनती करते हैं कि प्रभु बिन प्राण कैसे टिक सकते हैं॥२॥ जैसे श्वास बिना शरीर को शोभा प्राप्त नहीं होती, वैसे ही दर्शन विहीन साधुजन पल भर टिक नहीं पाते। मन प्रभु-चरणों में ही बिंधा हुआ है, अतः प्रभु बिना रहना तो नरक भोगना है। वैराग्यवान एवं प्रभु का रसिया, जिसकी नाम में लगन लगी रहती है, उसका तिरस्कार नहीं किया जा सकता। ईश्वर से मिलना, साधु-पुरुषों की संगत में रहने का सच्चा सुख अन्तर में समाया नहीं जा सकता। हे नानक के स्वामी! कृपालु हो जाओ ताकि तेरे चरणों में लीन रहूँ॥३॥ खोजते-खोजते करुणामय प्रभु से साक्षात्कार हुआ है। मैं गुणविहीन, नीच व अनाथ हूँ, पर उसने मेरे दोषों की ओर ध्यान नहीं दिया। उसने दोषों की ओर ध्यान न देकर भी सब सुख प्रदान किए हैं और पावन करना उसका धर्म-स्वभाव माना जाता है। मैंने सहज-स्वभाव सुख-सागर परमेश्वर को पा लिया है, जिससे जन्म-मरण का दुख निवृत्त हो गया है। नानक का कथन है कि प्रभु ने हाथ थमाकर दास को अपने साथ मिला लिया है, उसने हृदय में राम-नाम की माला धारण कर ली है॥४॥१॥

रागु केदारा बाणी कबीर जीउ की १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

उसतति निंदा दोऊ बिबरजित तजहु मानु अभिमाना ॥ लोहा कंचनु सम करि जानहि ते मूरति भगवाना ॥ १ ॥ तेरा जनु एकु आधु कोई ॥ कामु क्रोधु लोभु मोहु बिबरजित हरि पदु चीन्है सोई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रज गुण तम गुण सत गुण कहीऐ इह तेरी सभ माइआ ॥ चउथे पद कउ जो नरु चीन्है तिन्ह ही परम पदु पाइआ ॥ २ ॥ तीरथ बरत नेम सुचि संजम सदा रहै निहकामा ॥ त्रिसना अरु माइआ भ्रमु चूका चितवत आतम रामा ॥ ३ ॥ जिह मंदरि दीपकु परगासिआ अंधकारु तह नासा ॥ निरभउ पूरि रहे भ्रमु भागा कहि कबीर जन दासा ॥ ४ ॥ १ ॥

तारीफ व निंदा दोनों को छोड़ देना चाहिए, मान या अभिमान इसे भी तज दो। जो लोहे अथवा स्वर्ण को बराबर समझता है, वही ईश्वर की मूर्ति है॥१॥ हे परमपिता! तेरा कोई एकाध ही उपासक है, जो काम, क्रोध, लोभ, मोह को पूर्णरूपेण छोड़कर परमपद को जानता है॥१॥ रहाउ॥ जिसे रजोगुण, तमोगुण, सतगुण कहा जाता है, यह सब तेरी माया है। जो पुरुष तीनों गुणों से रहित होकर तुरियावस्था को पहचान जाता है, उसे ही परमपद (मोक्ष) प्राप्त होता है॥२॥ वह तीर्थ, व्रत, नियम, शुद्धि एवं संयम इत्यादि के फल प्रति सदा निष्काम बना रहता है। उसका तृष्णा और माया का भ्रम समाप्त हो जाता है और अन्तर्मन में प्रभु की स्मृति बनी रहती है॥३॥ जिस घर में दीपक का आलोक होता है, वहाँ अंधेरा दूर हो जाता है। कबीर जी कहते हैं, जिस दास के अन्तर्मन में निर्भय प्रभु है, उसका भ्रम समाप्त हो गया है॥४॥१॥

किनही बनजिआ कांसी तांबा किनही लउग सुपारी ॥ संतहु बनजिआ नामु गोबिद का ऐसी खेप हमारी ॥ १ ॥ हरि के नाम के बिआपारी ॥ हीरा हाथि चड़िआ निरमोलकु छूटि गई संसारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साचे लाए तउ सच लागे साचे के बिउहारी ॥ साची बसतु के भार चलाए पहुचे जाइ भंडारी ॥ २ ॥ आपहि रतन जवाहर मानिक आपै है पासारी ॥ आपै दह दिस आप चलावै निहचलु है बिआपारी ॥ ३ ॥ मनु करि बैलु सुरति करि पैडा गिआन गोनि भरि डारी ॥ कहतु कबीरु सुनहु रे संतहु निबही खेप हमारी ॥ ४ ॥ २ ॥

किसी ने काँसे-तांबे का व्यापार किया तो किसी ने लौंग-सुपारी का व्यवसाय किया। हे सज्जनो! हमने तो हरिनाम का व्यापार किया और यही हमारा सौदा है॥१॥ हम हरिनाम के व्यापारी हैं, जब से अमूल्य नाम रूपी हीरा हाथ आया है, हमारी सांसारिक लगन छूट गई है॥१॥ रहाउ॥ जब सच्चे परमेश्वर ने सत्य-नाम के साथ लगाया तो हम सत्य के व्यापारी बन गए। हमने सच्ची वस्तु के भार लाद लिए हैं और प्रभु-भण्डार तक जा पहुँचे हैं॥२॥ रत्न, जवाहर एवं माणिक्य प्रभु स्वयं ही है और स्वयं ही इसे फैलाने वाला है। वह स्वयं ही दस दिशाओं को चलाता है और वह व्यापारी भी निश्चल है॥३॥ मन को बैल बनाकर उस पर ज्ञान की गठरी लादकर सुरति को प्रभु-मार्ग पर चला दिया है। कबीर जी कहते हैं, हे संतजनो! सुनो, इस प्रकार हमारे सौदे ने हमारा साथ निभाया है॥४॥२॥

री कलवारि गवारि मूढ मति उलटो पवनु फिरावउ ॥ मनु मतवार मेर सर भाठी अंम्रित धार चुआवउ ॥ १ ॥ बोलहु भईआ राम की दुहाई ॥ पीवहु संत सदा मति दुरलभ सहजे पिआस बुझाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भै बिचि भाउ भाइ कोऊ बूझहि हरि रसु पावै भाई ॥ जेते घट अंम्रितु सभ ही महि भावै तिसहि पीआई ॥ २ ॥ नगरी एकै नउ दरवाजे धावतु बरजि रहाई ॥ त्रिकुटी छूटै दसवा दरु खूल्है ता मनु खीवा भाई ॥ ३ ॥ अभै पद पूरि ताप तह नासे कहि कबीर बीचारी ॥ उबट चलंते इहु मदु पाइआ जैसे खोंद खुमारी ॥ ४ ॥ ३ ॥

अरी गंवार कलवारी! हे मूर्ख बुद्धि! वासना रूपी पवन को सांसारिक प्रपंच की तरफ से हटाओ। मन को दसम द्वार की भट्टी में से अमृतधारा का पान करवा कर मतवाला बना दो॥१॥ हे भाई! राम की दुहाई है। संत सदैव इस अमृत का पान करते हैं, जो दुर्लभ है और सहज प्यास

बुझा लेते हैं॥१॥ रहाउ॥ प्रभु-भय में ही प्रेम भावना है, जो इस तथ्य को बूझता है, वही हरि-रस पाता है। जितने भी शरीर रूपी घट हैं, सब में अमृत विद्यमान है, मगर जिसे प्रभु चाहता है, उसे ही पान करवाता है॥२॥ शरीर रूपी एक नगरी के (आँखें, कान इत्यादि) नौ द्वार हैं, चंचल मन को नियंत्रण में करो। हे भाई! जब तीन गुण छूट जाते हैं तो दसम द्वार खुल जाता है और मन आनंदित हो जाता है॥३॥ कबीर जी विचार कर कहते हैं कि अभयपद पाने से सब ताप नष्ट हो जाते हैं, मन को माया की ओर से उलटाने से यह मदिरा प्राप्त होती है, जैसे खाए-पीए पशु की मानिंद खुमारी छाई रहती है॥४॥३॥

काम क्रोध त्रिसना के लीने गति नही एकै जानी ॥ फूटी आखै कछू न सूझै बूडि मूए बिनु पानी ॥ १ ॥ चलत कत टेढे टेढे टेढे ॥ असति चरम बिसटा के मूंदे दुरगंध ही के बेढे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ राम न जपहु कवन भ्रम भूले तुम ते कालु न दूरे ॥ अनिक जतन करि इहु तनु राखहु रहै अवसथा पूरे ॥ २ ॥ आपन कीआ कछू न होवै किआ को करै परानी ॥ जा तिसु भावै सतिगुरु भेटै एको नामु बखानी ॥ ३ ॥ बलूआ के घरूआ महि बसते फुलवत देह अइआने ॥ कहु कबीर जिह रामु न चेतिओ बूडे बहुतु सिआने ॥ ४ ॥ ४ ॥

काम, क्रोध व तृष्णा में लीन लोगों ने ईश्वर की महिमा को नहीं समझा। फूटी आँखों वाले ऐसे ज्ञानहीन लोगों को कुछ भी नहीं सूझता और वे बिन पानी के ही डूब मरते हैं॥१॥ वे भला टेढ़े क्यों चलते हैं? वे तो हड्डी, चमड़ा और विष्ठा के बंधे हुए दुर्गन्ध में लिपटे हुए हैं॥१॥ रहाउ॥ अरे भाई! राम का जाप कर नहीं रहे हो, किस भ्रम में भूले हुए हो, तुम से मौत दूर नहीं है। अनेक यत्न कर इस शरीर को तुम बचाकर रखते हो, मगर जीवनावधि पूरी होने पर यह यहीं रह जाता है॥२॥ निस्संकोच प्राणी कुछ भी कर ले, मगर अपने आप करने से कुछ नहीं होता। जब ईश्वर की मर्जी होती है तो सतगुरु से भेंट हो जाती है और फिर वह हरिनाम का बखान करता है॥३॥ रेत के घर में बस रहा नादान जीव बेकार में ही शरीर का अहंकार करता है। कबीर जी कहते हैं कि जिन्होंने कभी राम का स्मरण नहीं किया, ऐसे बहुत बुद्धिमान भी डूब चुके हैं॥४॥४॥

टेढी पाग टेढे चले लागे बीरे खान ॥ भाउ भगति सिउ काजु न कछूऐ मेरो कामु दीवान ॥ १ ॥ रामु बिसारिओ है अभिमानि ॥ कनिक कामनी महा सुंदरी पेखि पेखि सचु मानि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ लालच झूठ बिकार महा मद इह बिधि अउध बिहानि ॥ कहि कबीर अंत की बेर आइ लागो कालु निदानि ॥ २ ॥ ५ ॥

कुछ व्यक्ति टेढ़ी पगड़ी बाँधकर टेढ़े रास्ते चलते हैं और पान बीड़े खाते हैं। उनकी यही सोच है कि प्रेम-भक्ति से कुछ भी वास्ता नहीं अपितु हमारा काम केवल लोगों पर शासन करना है॥१॥ ऐसे अभिमानी पुरुषों ने ईश्वर को भुला दिया है और स्वर्ण (धन-दौलत, मदिरा) एवं खूबसूरत स्त्रियों को देख-देखकर उन्हें सच मान लिया है॥१॥ रहाउ॥ लालच, झूठ एवं विकारों के नशे में इनका पूरा जीवन बीत जाता है। कबीर जी कहते हैं कि आखिरकार मौत उन्हें अपना शिकार बना लेती है॥२॥५॥

चारि दिन अपनी नउबति चले बजाइ ॥ इतनकु खटीआ गठीआ मटीआ संगि न कछु लै जाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दिहरी बैठी मिहरी रोवै दुआरै लउ संगि माइ ॥ मरहट लगि सभु लोगु कुटंबु मिलि हंसु इकेला जाइ ॥ १ ॥ वै सुत वै बित वै पुर पाटन बहुरि न देखै आइ ॥ कहतु कबीरु रामु की न सिमरहु जनमु अकारथु जाइ ॥ २ ॥ ६ ॥

मनुष्य चार दिन अपनी नौबत बजाकर चल देता है और अनेक प्रकार से कमाया हुआ धन-दौलत एवं जायदाद कुछ भी साथ नहीं जाता॥१॥ रहाउ॥ दहलीज पर बैठी पत्नी रोती है और द्वार पर माता भी आँसू बहाती है। परिवार के सदस्य एवं अन्य रिश्तेदार श्मशान तक आते हैं परन्तु आत्मा रूपी हंस अकेला ही जाता है॥१॥ वे पुत्र, धन-दौलत, नगर-गलियां पुनः देखने को नहीं मिलते। कबीर जी जनमानस को चेताते हुए कहते हैं, फिर भला राम का स्मरण क्यों नहीं करते, क्योंकि जीवन तो निरर्थक जा रहा है॥२॥६॥

रागु केदारा बाणी रविदास जीउ की ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

खटु करम कुल संजुगतु है हरि भगति हिरदै नाहि ॥ चरनारबिंद न कथा भावै सुपच तुलि समानि ॥ १ ॥ रे चित चेति चेत अचेत ॥ काहे न बालमीकहि देख ॥ किसु जाति ते किह पदहि अमरिओ राम भगति बिसेख ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुआन सत्रु अजातु सभ ते क्रिस्न लावै हेतु ॥ लोगु बपुरा किआ सराहै तीनि लोक प्रवेस ॥ २ ॥ अजामलु पिंगुला लुभतु कुंचरु गए हरि कै पासि ॥ ऐसे दुरमति निसतरे तू किउ न तरहि रविदास ॥ ३ ॥ १ ॥

अगर कोई षट् कर्म (भजन, याजन, अध्ययन, अध्यापन, दान देना अथवा लेना) करने वाला है, उच्च कुल से नाता रखता है, अगर हृदय में हरि-भक्ति नहीं, प्रभु-चरणों की कथा उसे अच्छी नहीं लगती तो वह चाण्डाल समान है॥१॥ अरे मन! क्यों अचेत बना हुआ है, होश में आ। वाल्मीकि की ओर क्यों नहीं देख रहा, किस जाति से था और किस प्रकार राम भक्ति के फलस्वरूप विशेषता अमर पद पा गया॥१॥ रहाउ॥ वह कुत्तों को मारने वाला था, सबसे हिंसक था, उसने भगवान कृष्ण से प्रेम लगा लिया, लोग भला उस बेचारे की क्या प्रशंसा करेंगे, उसकी कीर्ति तो तीनों लोकों में फैल गई॥२॥ वेश्यागामी अजामिल, पिंगला, शिकारी एवं कुंचर सभी संसार के बन्धनों से छूटकर ईश्वर में विलीन हो गए। रविदास जनमानस को उपदेश करते हैं कि जब ऐसी दुर्मति वाले संसार से मुक्ति पा गए, फिर प्रभु-स्मरण कर तू क्यों नहीं पार होगा॥३॥१॥

रागु भैरउ महला १ घरु १ चउपदे

१ओं सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

वह अनंतशक्ति ओमकार-स्वरूप केवल एक है, उसका नाम सत्य है, वह आदिपुरुष, संसार का रचयिता है, वह भय से रहित है, वह वैर भावना से रहित (प्रेम-स्वरूप) है, वह कालातीत ब्रह्म-मूर्ति है, वह जन्म-मरण से रहित (अमर) है, वह अपने आप ही प्रगट हुआ है, गुरु-कृपा से पाया जाता है।

तुझ ते बाहरि किछू न होइ ॥ तू करि करि देखहि जाणहि सोइ ॥ १ ॥ किआ कहीऐ किछु कही न जाइ ॥ जो किछु अहै सभ तेरी रजाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो किछु करणा सु तेरै पासि ॥ किसु आगै कीचै अरदासि ॥ २ ॥ आखणु सुनणा तेरी बाणी ॥ तू आपे जाणहि सरब विडाणी ॥ ३ ॥ करे कराए जाणै आपि ॥ नानक देखै थापि उथापि ॥ ४ ॥ १ ॥

हे स्रष्टा ! तेरी रज़ा से बाहर कुछ नहीं होता, तू सब कर-करके देखता और जानता है॥१॥ तेरे रहस्य के बारे में क्या कहा जाए, कुछ भी कहा नहीं जा सकता। जो कुछ यह संसार है, सब तेरी रज़ा में (चल रहा) है॥१॥ रहाउ॥ जो कुछ करना है, वह तेरे पास ही कहना है, फिर किसके सम्मुख प्रार्थना करें॥२॥ हमारा कहना एवं सुनना तेरी ही वाणी है, हे सब लीला करने वाले ! तू स्वयं ही सब जानता है॥३॥ गुरु नानक का मत है कि करने-कराने एवं जानने वाला आप परमेश्वर ही है, बनाकर तोड़कर वही देखता संभालता है॥४॥१॥

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥

रागु भैरउ महला १ घरु २ ॥ गुर कै सबदि तरे मुनि केते इंद्रादिक ब्रहमादि तरे ॥ सनक सनंदन तपसी जन केते गुर परसादी पारि परे ॥ १ ॥ भवजलु बिनु सबदै किउ तरीऐ ॥ नाम बिना जगु रोगि बिआपिआ दुबिधा डुबि डुबि मरीऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरु देवा गुरु अलख अभेवा त्रिभवण सोझी गुर की सेवा ॥ आपे दाति करी गुरि दातै पाइआ अलख अभेवा ॥ २ ॥ मनु राजा मनु मन ते मानिआ मनसा मनहि समाई ॥ मनु जोगी मनु बिनसि बिओगी मनु समझै गुण गाई ॥ ३ ॥ गुर ते मनु मारिआ सबदु वीचारिआ ते विरले संसारा ॥ नानक साहिबु भरिपुरि लीणा साच सबदि निसतारा ॥ ४ ॥ १ ॥ २ ॥

गुरु के उपदेश से कितने ही मुनि, स्वर्गाधिपति इन्द्र, ब्रह्मा इत्यादि पार हो गए। सनक-सनंदन जैसे अनेकों ही तपस्वी जन गुरु की कृपा से मुक्ति पा गए॥१॥ गुरु-उपदेश के बिना

संसार-समुद्र को कैसे पार किया जा सकता है। हरिनाम बिना पूरा जगत रोगी बना हुआ है और दुविधा में लीन होकर डूबकर मर रहा है॥१॥ रहाउ॥ गुरु ही देव है, वह अदृश्य एवं रहस्यमय है और गुरु की सेवा से तीनों लोकों की सूझ होती है। दाता गुरु ने स्वयं ही देन प्रदान की, जिसके फलस्वरूप अदृश्य एवं रहस्यातीत परमसत्य को पाया है॥२॥ मन ही राजा है, साक्षात्कार के उपरांत मन स्वयं से ही प्रसन्न होता है और मन की लालसाएँ समाप्त हो जाती हैं। मन ही योगी है और वियोगी बनकर विनष्ट होता है। ईश्वर का गुणगान करने से उसे सूझ प्राप्त होती है॥३॥ संसार में ऐसे विरले ही व्यक्ति है, जिन्होंने गुरु द्वारा मन को मारा है और शब्द का मनन किया है। गुरु नानक का कथन है कि ईश्वर सबमें भरपूर है और सच्चे शब्द से ही जीव मुक्ति पाता है॥४॥१॥२॥

भैरउ महला १ ॥ नैनी द्रिसटि नही तनु हीना जरि जीतिआ सिरि कालो ॥ १ ॥ रूपु रंगु रहसु नही साचा किउ छोडै जम जालो ॥ १ ॥ प्राणी हरि जपि जनमु गइओ ॥ साच सबद बिनु कबहु न छूटसि बिरथा जनमु भइओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तन महि कामु क्रोधु हउ ममता कठिन पीर अति भारी ॥ गुरमुखि राम जपहु रसु रसना इन बिधि तरु तू तारी ॥ २ ॥ बहरे करन अकलि भई होछी सबद सहजु नही बूझिआ ॥ जनमु पदारथु मनमुखि हारिआ बिनु गुर अंधु न सूझिआ ॥ ३ ॥ रहै उदासु आस निरासा सहज धिआनि बैरागी ॥ प्रणवति नानक गुरमुखि छूटसि राम नामि लिव लागी ॥ ४ ॥ २ ॥ ३ ॥

आँखों में रोशनी नहीं, शरीर बिल्कुल कमजोर हो चुका है, बुढ़ापे ने कब्जा कर लिया है और मौत सिर पर खड़ी है॥१॥ रूप-रंग तो सदा रहने वाला नहीं, फिर मौत का जाल क्योंकर छोड़ सकता है॥१॥ हे प्राणी ! ईश्वर का जाप कर ले, यह जीवन खत्म हो गया है। सच्चे शब्द के बिना कभी छुटकारा नहीं हो सकता, यह मनुष्य जन्म निरर्थक जा रहा है॥१॥ रहाउ॥ शरीर में काम, क्रोध, अहम् व ममत्व अत्यंत भारी दर्द प्रदान करते हैं। गुरु के माध्यम से आनंदपूर्वक जिह्वा से ईश्वर का भजन करो; इस तरीके से संसार-सागर को पार किया जा सकता है॥२॥ कान बहरे हो गए हैं, बुद्धि भ्रष्ट हो चुकी है, शब्द के भेद को बूझा नहीं। इस तरह मनमुखी जीव ने अमूल्य जन्म हार दिया है और गुरु के बिना अज्ञानांध जीव को कोई सूझ प्राप्त नहीं होती॥३॥ अगर जीवन की आशाओं को छोड़कर निर्लिप्त हुआ जाए और वैराग्यवान होकर सहज स्वाभाविक ईश्वर में ध्यान लगा रहे, गुरु नानक का फुरमान है कि गुरु के सान्निध्य में राम नाम में लगन लगाने से संसार के बन्धनों से छुटकारा हो जाता है॥४॥२॥३॥

भैरउ महला १ ॥ भूंडी चाल चरण कर खिसरे तुचा देह कुमलानी ॥ नेत्री धुंधि करन भए बहरे मनमुखि नामु न जानी ॥ १ ॥ अंधुले किआ पाइआ जगि आइ ॥ रामु रिदै नही गुर की सेवा चाले मूलु गवाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिहवा रंगि नही हरि राती जब बोलै तब फीके ॥ संत जना की निंदा विआपसि पसू भए कदे होहि न नीके ॥ २ ॥ अंम्रित का रसु विरली पाइआ सतिगुर मेलि मिलाए ॥ जब लगु सबद भेदु नही आइआ तब लगु कालु संताए ॥ ३ ॥ अन को दरु घरु कबहू न जानसि एको दरु सचिआरा ॥ गुर परसादि परम पदु पाइआ नानकु कहै विचारा ॥ ४ ॥ ३ ॥ ४ ॥

चाल खराब एवं हाथ-पैर शिथिल हो गए हैं, शरीर की त्वचा भी कुम्हला चुकी है। आँखों से धुंधला दिखाई देने लग गया है, कान भी बहरे हो गए हैं, मगर मनमुखी जीव ने प्रभु-नाम की महत्ता को नहीं जाना॥१॥ अरे अन्धे ! जगत में आकर तूने क्या पाया है, राम की स्मृति हृदय में नहीं,

न ही गुरु की सेवा की, तू अपना मूल गंवाकर भी चलता बन रहा है॥ १॥ रहाउ॥ तेरी जिह्वा प्रभु के रंग में लीन नहीं हुई, जब भी बोले, तब फीका ही बोले। संतजनों की निंदा करते तुम पशु ही बन गए हो, मगर कभी भले न बन सके॥२॥ सतगुरु के संपर्क में हरिनाम-अमृत का रस किसी विरले ने ही पाया है। जब तक शब्द का भेद ज्ञात नहीं होता, तब तक जीव को काल तंग करता रहता है॥३॥ जिसने अन्य घर-द्वार (अर्थात् देवी-देवताओं) को कभी न मानते हुए एक परमेश्वर पर ही अटूट श्रद्धा धारण की है, वही सत्यनिष्ठ है। नानक विचार कर कहते हैं कि गुरु की कृपा से उसे परमपद प्राप्त हो गया है॥४॥३॥४॥

भैरउ महला १ ॥ सगली रैणि सोवत गलि फाही दिनसु जंजालि गवाइआ ॥ खिनु पलु घड़ी नही प्रभु जानिआ जिनि इहु जगतु उपाइआ ॥ १ ॥ मन रे किउ छूटसि दुखु भारी ॥ किआ ले आवसि किआ ले जावसि राम जपहु गुणकारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ऊंधउ कवलु मनमुख मति होछी मनि अंधै सिरि धंधा ॥ कालु बिकालु सदा सिरि तेरै बिनु नावै गलि फंधा ॥ २ ॥ डगरी चाल नेत्र फुनि अंधुले सबद सुरति नही भाई ॥ सासत्र बेद त्रै गुण है माइआ अंधुलउ धंधु कमाई ॥ ३ ॥ खोइओ मूलु लाभु कह पावसि दुरमति गिआन विहूणे ॥ सबदु बीचारि राम रसु चाखिआ नानक साचि पतीणे ॥ ४ ॥ ४ ॥ ५ ॥

सारी रात परेशानियों का गले में फंदा डालकर सोते रहे और दिन जंजाल में गंवा दिया। जिसने यह जगत उत्पन्न किया है, उस प्रभु का तुमने क्षण, पल, घड़ी स्मरण ही नहीं किया॥१॥ हे मन, फिर भारी दुखों से तेरा कैसे छुटकारा हो सकता है। तू क्या लेकर आया था और क्या लेकर चला जाएगा, राम का भजन कर ले, यही लाभप्रद है॥१॥ रहाउ॥ स्वेच्छाचारी का हृदय कमल औंधा पड़ा है, बुद्धि भी ओच्छी हो गई है, मन अन्धा बनकर संसार के धंधों में लिप्त है। विकराल काल सदा तेरे सिर पर खड़ा है और हरिनाम बिना गले में फंदा ही पड़ता है॥२॥ तेरी चाल विकृत हो गई है, आँखें भी अन्धी हो चुकी हैं मगर सुरति को शब्द अच्छा नहीं लगा। शास्त्र, वेद, तीन गुण मायावी हैं, मगर जीव अन्धा बनकर जगत के धंधों में लिप्त है॥३॥ हे दुर्मति ज्ञानविहीन! मूलधन तो खो दिया है, फिर लाभ कैसे प्राप्त हो सकता है। गुरु नानक का मत है कि जिसने शब्द का गहन चिंतन कर राम रस को चखा है, वह सत्य से प्रसन्न हो गया है॥४॥४॥५॥

भैरउ महला १ ॥ गुर कै संगि रहै दिनु राती रामु रसनि रंगि राता ॥ अवरु न जाणसि सबदु पछाणसि अंतरि जाणि पछाता ॥ १ ॥ सो जनु ऐसा मै मनि भावै ॥ आपु मारि अपरंपरि राता गुर की कार कमावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अंतरि बाहरि पुरखु निरंजनु आदि पुरखु आदेसो ॥ घट घट अंतरि सरब निरंतरि रवि रहिआ सचु वेसो ॥ २ ॥ साचि रते सचु अंम्रितु जिहवा मिथिआ मैलु न राई ॥ निरमल नामु अंम्रित रसु चाखिआ सबदि रते पति पाई ॥ ३ ॥ गुणी गुणी मिलि लाहा पावसि गुरमुखि नामि वडाई ॥ सगले दूख मिटहि गुर सेवा नानक नामु सखाई ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥

जो दिन-रात गुरु की संगत में रहता है, जिसकी जिह्वा राम के रंग में लीन रहती है, वह प्रभु-शब्द में निष्ठा रखकर किसी अन्य को नहीं मानता और अन्तर्मन में परम-सत्य को पहचान लेता है॥१॥ सो ऐसा सज्जन ही मेरे मन को भाता है, वह अहम् को मारकर प्रभु में लीन रहता है और गुरु की सेवा करता रहता है॥१॥ रहाउ॥ अन्तर-बाहर सबमें परमपुरुष परमेश्वर ही व्याप्त है और उस आदिपुरुष को हमारा शत्-शत् प्रणाम है। वह सत्यस्वरूप घट-घट सबमें रमण

कर रहा है॥२॥ सत्य में लीन सेवक की जिह्वा पर सत्य रूपी अमृत ही होता है और झूठ की मैल उसे बिल्कुल नहीं लगती। उसने निर्मल नामामृत का ही रस चखा है और शब्द में रत रहकर शोभा प्राप्त की है॥३॥ गुणवान व्यक्ति पूर्ण गुणवान संत गुरु से साक्षात्कार कर लाभ ही पाता है और गुरुमुख बनकर प्रभु-नाम का संकीर्तन कर शोभा पाता है। गुरु नानक का फुरमान है कि गुरु की सेवा करने से सब दुख मिट जाते हैं और हरिनाम उसका सहायक होता है॥४॥५॥६॥

भैरउ महला १ ॥ हिरदै नामु सरब धनु धारणु गुर परसादी पाईऐ ॥ अमर पदारथ ते किरतारथ सहज धिआनि लिव लाईऐ ॥ १ ॥ मन रे राम भगति चितु लाईऐ ॥ गुरमुखि राम नामु जपि हिरदै सहज सेती घरि जाईऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भरमु भेदु भउ कबहु न छूटसि आवत जात न जानी ॥ बिनु हरि नाम को मुकति न पावसि डूबि मुए बिनु पानी ॥ २ ॥ धंधा करत सगली पति खोवसि भरमु न मिटसि गवारा ॥ बिनु गुर सबद मुकति नही कब ही अंधुले धंधु पसारा ॥ ३ ॥ अकुल निरंजन सिउ मनु मानिआ मन ही ते मनु मूआ ॥ अंतरि बाहरि एको जानिआ नानक अवरु न दूआ ॥ ४ ॥ ६ ॥ ७ ॥

गुरु की कृपा से हृदय में सर्वोच्च धन प्रभु-नाम प्राप्त होता है। सहज-स्वभाव ध्यान लगाकर प्रभु में लगन लगाने से अमर पदार्थ से जीव कृतार्थ हो जाता है॥१॥ हे मन! ईश्वर की भक्ति में ध्यान लगाओ। गुरुमुख बनकर हृदय में राम नाम का जाप करने से सहज ही वास्तविक घर में जाया जा सकता है॥१॥ रहाउ॥ भ्रम, भेदभाव व भय कभी छूट नहीं सका और न ही संसार में आने-जाने के रहस्य को समझा। वास्तव में हरिनाम बिना कोई भी मुक्ति नहीं पा सकता और नामविहीन बिन पानी ही डूब मरे हैं॥२॥ सांसारिक काम करते हुए जीव अपनी इज्जत खो देता है, फिर भी गंवार जीव का भ्रम नहीं मिटता। शब्द-गुरु के बिना कभी मुक्ति नहीं मिलती, अंधे जीव ने केवल धंधों का प्रसार किया हुआ है॥३॥ जब मायातीत परमेश्वर से मन मानता है तो मन से ही मन के विकार समाप्त हो जाते हैं। नानक का कथन है कि अन्तर-बाहर सबमें ईश्वर को ही माना है, उसके सिवा किसी अन्य के प्रति कोई रुचि नहीं॥४॥६॥७॥

भैरउ महला १ ॥ जगन होम पुंन तप पूजा देह दुखी नित दूख सहै ॥ राम नाम बिनु मुकति न पावसि मुकति नामि गुरमुखि लहै ॥ १ ॥ राम नाम बिनु बिरथे जगि जनमा ॥ बिखु खावै बिखु बोली बोलै बिनु नावै निहफलु मरि भ्रमना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पुसतक पाठ बिआकरण वखाणै संधिआ करम तिकाल करै ॥ बिनु गुर सबद मुकति कहा प्राणी राम नाम बिनु उरझि मरै ॥ २ ॥ डंड कमंडल सिखा सूतु धोती तीरथि गवनु अति भ्रमनु करै ॥ राम नाम बिनु सांति न आवै जपि हरि हरि नामु सु पारि परै ॥ ३ ॥ जटा मुकटु तनि भसम लगाई बसत्र छोडि तनि नगनु भइआ ॥ राम नाम बिनु त्रिपति न आवै किरत कै बांधै भेखु भइआ ॥ ४ ॥ जेते जीअ जंत जलि थलि महीअलि जत्र कत्र तू सरब जीआ ॥ गुर परसादि राखि ले जन कउ हरि रसु नानक झोलि पीआ ॥ ५ ॥ ७ ॥ ८ ॥

यज्ञ, होम, दान-पुण्य, तपस्या व पूजा इत्यादि में प्रवृत्त होकर शरीर दुखी होता है और नित्य ही दुख सहता है। राम-नाम बिना जीव को मुक्ति प्राप्त नहीं होती और संसार से मुक्ति देने वाला नाम गुरु से ही मिलता है॥१॥ राम-नाम के बिना जगत में जन्म लेना व्यर्थ है, जीव विकार रूपी जहर खाता है, जहर भरी बोली बोलता है और प्रभु-नाम बिना निष्फल मरकर भटकता रहता है॥१॥ रहाउ॥ कोई पुस्तकों का पाठ व व्याकरण की व्याख्या करता है, सुबह, दोपहर एवं शाम को संध्या-वन्दन करता है, मगर शब्द-गुरु के बिना ऐसा प्राणी मुक्ति कैसे पा सकता है, राम-नाम के

बिना वह अनेक कार्यों में उलझकर मरता है॥२॥ अगर कोई डंडा, कमण्डल, शिखा, जनेऊ, धोती धारण कर अनेक बार तीर्थों पर भी भ्रमण कर ले, मगर राम-नाम बिना उसके मन को शान्ति प्राप्त नहीं होती। जो ईश्वर का नाम जपता है, वह संसार-सागर से पार उतर जाता है॥३॥ अगर योगी बनकर जटाओं का मुकुट बना लिया, शरीर पर भस्म लगा ली और वस्त्र छोड़कर शरीर नग्न हो गया, फिर भी राम-नाम बिना तृप्ति नहीं मिलती। यह तो कर्मफल के रूप में वेष बना हुआ है॥४॥ हे ईश्वर! जल, थल, नभ में जितने भी जीव-जन्तु हैं, जहाँ कहाँ तू सबमें व्याप्त है। नानक की विनती है कि गुरु कृपा से दास को बचा ले, उसने हरि-नाम रस ही पान किया है॥५॥७॥८॥

रागु भैरउ महला ३ चउपदे घरु १ १ॐ सतिगुर प्रसादि ॥

जाति का गरबु न करीअहु कोई ॥ ब्रहमु बिंदे सो ब्राहमणु होई ॥ १ ॥ जाति का गरबु न करि मूरख गवारा ॥ इसु गरब ते चलहि बहुतु विकारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चारे वरन आखै सभु कोई ॥ ब्रहमु बिंद ते सभ ओपति होई ॥ २ ॥ माटी एक सगल संसारा ॥ बहु बिधि भांडे घड़ै कुम्हारा ॥ ३ ॥ पंच ततु मिलि देही का आकारा ॥ घटि वधि को करै बीचारा ॥ ४ ॥ कहतु नानक इहु जीउ करम बंधु होई ॥ बिनु सतिगुर भेटे मुकति न होई ॥ ५ ॥ १ ॥

{गुरु जी जाति-पाति का खंडन करते हुए समाज को उपदेश करते हैं}

हे सज्जनो, जाति का कोई गर्व न करो, जो ब्रह्म को मानता है, असल में वही ब्राह्मण होता है॥१॥ हे मूर्ख-गंवार! जाति का गर्व मत कर, इस गर्व के कारण अनेक विकारों में वृद्धि होती है॥१॥ रहाउ॥ हर कोई कहता है कि (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र) चार वर्ण हैं, मगर समूचे संसार की उत्पति एक ब्रह्म बिंदु से हुई है (अर्थात् सब एक पिता परमेश्वर की औलाद हैं)॥२॥ समूचे संसार की रचना में एक ही मिट्टी का प्रयोग हुआ है, इसी से ईश्वर रूपी कुम्हार ने अनेक प्रकार के जीव रूपी बर्तन बनाए हैं॥३॥ पंचतत्व मिलाकर शरीर का आकार बना है, फिर किसी में कम या अधिक तत्व कैसे कोई कह सकता है॥४॥ नानक कहते हैं कि यह जीव कर्मो के बन्धन में बंधा हुआ है और सतगुरु से साक्षात्कार किए बिना इसकी मुक्ति नहीं होती॥५॥१॥

भैरउ महला ३ ॥ जोगी ग्रिही पंडित भेखधारी ॥ ए सूते अपणै अहंकारी ॥ १ ॥ माइआ मदि माता रहिआ सोइ ॥ जागतु रहै न मूसै कोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सो जागै जिसु सतिगुरु मिलै ॥ पंच दूत ओहु वसगति करै ॥ २ ॥ सो जागै जो ततु बीचारै ॥ आपि मरै अवरा नह मारै ॥ ३ ॥ सो जागै जो एको जाणै ॥ परकिरति छोडै ततु पछाणै ॥ ४ ॥ चहु वरना विचि जागै कोइ ॥ जमै कालै ते छूटै सोइ ॥ ५ ॥ कहत नानक जनु जागै सोइ ॥ गिआन अंजनु जा की नेत्री होइ ॥ ६ ॥ २ ॥

योगी, गृहस्थी, पण्डित, वेषाडम्बरी सब अपने अहंकार के कारण अज्ञान की निद्रा में सो रहे हैं॥१॥ जीव माया के मद में मस्त रहता है, पर जो जागृत रहता है, उसे कोई नहीं लूटता॥१॥ वही जागृत रहता है, जिसका सतगुरु से साक्षात्कार हो जाता है, वह कामादिक पाँच दूतों को वशीभूत कर लेता है॥२॥ वही जागता है, जो तत्व का चिंतन करता है, वह अन्यों को नहीं मारता अपितु अपने अहम् को मारता है॥३॥ वही जागता है, जो ईश्वर को जानता है। वह मनोवृत्ति छोड़कर सार तत्व को पहचान लेता है॥४॥ चारों वर्णों में जो कोई जागता है, वही यमकाल से छूट जाता है॥५॥ नानक कहते हैं कि वही व्यक्ति जागृत है, जिसकी आँखों में ज्ञान-अञ्जन होता है॥६॥२॥

भैरउ महला ३ ॥ जा कउ राखै अपणी सरणाई ॥ साचे लागै साचा फलु पाई ॥ १ ॥ रे जन कै सिउ करहु पुकारा ॥ हुकमे होआ हुकमे वरतारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ एहु आकारु तेरा है धारा ॥ खिन महि बिनसै करत न लागै बारा ॥ २ ॥ करि प्रसादु इकु खेलु दिखाइआ ॥ गुर किरपा ते परम पदु पाइआ ॥ ३ ॥ कहत नानकु मारि जीवाले सोइ ॥ ऐसा बूझहु भरमि न भूलहु कोइ ॥ ४ ॥ ३ ॥

जिसे परमेश्वर अपनी शरण में रखता है, वह सत्य में प्रवृत्त होकर सच्चा फल ही पाता है॥१॥ हे मनुष्य ! किस के आगे पुकार कर रहे हो, सब उसके हुक्म से पैदा हुआ है और हुक्म से चल रहा है॥१॥ रहाउ॥ हे ईश्वर ! यह संसार तेरा धारण किया हुआ है और इसे तुम क्षण में नष्ट कर देते हो और कोई समय नहीं लगता॥२॥ ईश्वर ने कृपा कर एक विचित्र खेल दिखाया है, गुरु की कृपा हो जाए तो मोक्ष पाया जा सकता है॥३॥ नानक कहते हैं कि दरअसल मारने-ज़िंदा करने वाला ईश्वर ही है, इस सच्चाई को समझ लो, भ्रम में पड़कर मत भूलो॥४॥३॥

भैरउ महला ३ ॥ मै कामणि मेरा कंतु करतारु ॥ जेहा कराए तेहा करी सीगारु ॥ १ ॥ जां तिसु भावै तां करे भोगु ॥ तनु मनु साचे साहिब जोगु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ उसतति निंदा करे किआ कोई ॥ जां आपे वरतै एको सोई ॥ २ ॥ गुर परसादी पिरम कसाई ॥ मिलउगी दइआल पंच सबद वजाई ॥ ३ ॥ भनति नानकु करे किआ कोइ ॥ जिस नो आपि मिलावै सोइ ॥ ४ ॥ ४ ॥

ईश्वर मेरा पति है, मैं उसकी पत्नी हूँ। जैसा वह चाहता है, वैसा ही मैं श्रृंगार करती हूँ॥१॥ जब उसकी रज़ा होती है तो मुझसे रमण करता है। यह तन मन उस सच्चे मालिक योग्य है॥१॥ रहाउ॥ कोई उसकी प्रशंसा एवं निंदा क्या करे, जब वह स्वयं ही सबमें व्याप्त है॥२॥ गुरु की कृपा से प्रियतम की ओर आकर्षित हुई हूँ और खुशियों के नाद बजाकर दयालु प्रभु से मिल जाऊँगी॥३॥ गुरु नानक कहते हैं कि कोई क्या कर सकता है, जिसे वह स्वयं ही मिला लेता है॥४॥४॥

भैरउ महला ३ ॥ सो मुनि जि मन की दुबिधा मारे ॥ दुबिधा मारि ब्रहमु बीचारे ॥ १ ॥ इसु मन कउ कोई खोजहु भाई ॥ मनु खोजत नामु नउ निधि पाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मूलु मोहु करि करतै जगतु उपाइआ ॥ ममता लाइ भरमि भोलाइआ ॥ २ ॥ इसु मन ते सभ पिंड पराणा ॥ मन कै वीचारि हुकमु बुझि समाणा ॥ ३ ॥ करमु होवै गुरु किरपा करै ॥ इहु मनु जागै इसु मन की दुबिधा मरै ॥ ४ ॥ मन का सुभाउ सदा बैरागी ॥ सभ महि वसै अतीतु अनरागी ॥ ५ ॥ कहत नानकु जो जाणै भेउ ॥ आदि पुरखु निरंजन देउ ॥ ६ ॥ ५ ॥

मुनि वही है, जो मन की दुविधा को मारता है और दुविधा को मारकर ब्रह्म का चिंतन करता है॥१॥ हे भाई ! इस मन को कोई खोज लो, मन को खोजने से नाम रूपी नवनिधि प्राप्त होती है॥१॥ रहाउ॥ मोह का तत्व डालकर परमपिता ने जगत को उत्पन्न किया और ममत्व की भावना में लगाकर उसे भ्रम में भुला दिया है॥२॥ इस मन से सब शरीर एवं प्राण हैं और मन के चिंतन द्वारा ईश्वर के हुक्म को बूझकर उसमें समाया जा सकता है॥३॥ अगर उत्तम भाग्य हो तो गुरु कृपा करता है, यह मन जागृत हो जाता है और इस मन की दुविधा समाप्त हो जाती है॥४॥ मन का स्वभाव सदा वैराग्यपूर्ण है और सब में वह अतीत एवं प्यारा ईश्वर बसता है॥ ५॥ नानक कहते हैं कि जो इस रहस्य को जानता है, वह आदिपुरुष निरंजन का रूप है॥६॥५॥

भैरउ महला ३ ॥ राम नामु जगत निसतारा ॥ भवजलु पारि उतारणहारा ॥ १ ॥ गुर परसादी हरि नामु सम्हालि ॥ सद ही निबहै तैरै नालि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नामु न चेतहि मनमुख गावारा ॥ बिनु नावै कैसे पावहि पारा ॥ २ ॥ आपे दाति करे दातारु ॥ देवणहारे कउ जैकारु ॥ ३ ॥ नदरि करे सतिगुरू मिलाए ॥ नानक हिरदै नामु वसाए ॥ ४ ॥ ६ ॥

राम नाम जगत का मुक्तिदाता है और यही संसार-सागर से पार उतारनेवाला है॥१॥ गुरु की कृपा से हरिनाम स्मरण करो, हे भाई! यह सदा ही तेरा साथ निभानेवाला है॥१॥रहाउ॥ मूर्ख मनमुख जीव हरिनाम स्मरण नहीं करता तो फिर नाम के बिना वह कैसे पार हो सकता है॥२॥ दरअसल हरिनाम की दात ईश्वर स्वयं ही देता है, उस दाता को हमारा कोटि-कोटि वन्दन है॥३॥ अगर प्रभु कृपा करे तो सतगुरु से मिला देता है। नानक फुरमाते हैं कि फिर गुरु हृदय में हरिनाम बसा देता है॥४॥६॥

भैरउ महला ३ ॥ नामे उधरे सभि जितने लोअ ॥ गुरमुखि जिना परापति होइ ॥ १ ॥ हरि जीउ अपणी क्रिपा करेइ ॥ गुरमुखि नामु वडिआई देइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ राम नामि जिन प्रीति पिआरु ॥ आपि उधरे सभि कुल उधारणहारु ॥ २ ॥ बिनु नावै मनमुख जम पुरि जाहि ॥ अउखे होवहि चोटा खाहि ॥ ३ ॥ आपे करता देवै सोइ ॥ नानक नामु परापति होइ ॥ ४ ॥ ७ ॥

जितने भी सब लोक हैं, हरिनाम से ही उनका उद्धार हुआ है और गुरु से सबको हरिनाम प्राप्त होता है॥१॥ ईश्वर अपनी कृपा करता है और गुरमुख को नाम देकर बड़ाई प्रदान करता है॥१॥रहाउ॥ जिसका राम नाम से प्रेम है, उसका स्वयं तो उद्धार हुआ ही है, उसने पूरी कुल का भी उद्धार करवा दिया है॥२॥ प्रभु-नामविहीन मनमुखी जीव यमपुरी (नरक) जाता है और तंग होकर कष्ट भोगता है॥३॥ हे नानक! जब ईश्वर स्वयं देता है तो ही नाम प्राप्त होता है॥४॥७॥

भैरउ महला ३ ॥ गोविंद प्रीति सनकादिक उधारे ॥ राम नाम सबदि बीचारे ॥ १ ॥ हरि जीउ अपणी किरपा धारु ॥ गुरमुखि नामे लगै पिआरु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अंतरि प्रीति भगति साची होइ ॥ पूरै गुरि मेलावा होइ ॥ २ ॥ निज घरि वसै सहजि सुभाइ ॥ गुरमुखि नामु वसै मनि आइ ॥ ३ ॥ आपे वेखै वेखणहारु ॥ नानक नामु रखहु उर धारि ॥ ४ ॥ ८ ॥

गोविन्द से प्रेम के फलस्वरूप सनक-सनंदन का उद्धार हुआ, उन्होंने राम नाम शब्द का चिंतन किया॥१॥ अगर ईश्वर अपनी कृपा कर दे तो गुरु द्वारा नाम से प्रेम हो जाता है॥१॥ अन्तर्मन में प्रेम से सच्ची भक्ति होती है और पूरे गुरु से मिलाप हो जाता है॥२॥ फिर जीव सहज-स्वभाव अपने वास्तविक घर में बस जाता है और गुरु द्वारा मन में हरिनाम आ बसता है॥३॥ वह देखनेवाला प्रभु स्वयं ही देख रहा है, हे नानक! हरिनाम अपने दिल में बसाकर रखो॥४॥८॥

भैरउ महला ३ ॥ कलजुग महि राम नामु उर धारु ॥ बिनु नावै माथै पावै छारु ॥ १ ॥ राम नामु दुलभु है भाई ॥ गुर परसादि वसै मनि आई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ राम नामु जन भालहि सोइ ॥ पूरे गुर ते प्रापति होइ ॥ २ ॥ हरि का भाणा मंनहि से जन परवाणु ॥ गुर कै सबदि नाम नीसाणु ॥ ३ ॥ सो सेवहु जो कल रहिआ धारि ॥ नानक गुरमुखि नामु पिआरि ॥ ४ ॥ ९ ॥

कलियुग में राम-नाम हृदय में धारण करो; क्योंकि नाम के बिना माथे पर राख ही पड़ती है॥१॥ हे भाई! राम नाम दुर्लभ है, अतः गुरु की कृपा से ही यह मन में आ बसता है॥१॥ रहाउ॥ मनुष्य राम नाम ही ढूँढता है, मगर पूरे गुरु से ही यह प्राप्त होता है॥२॥ जो परमात्मा की रज़ा को मानता है, वही व्यक्ति जीवन में सफल होता है और गुरु के उपदेश से लब्ध प्रभु-नाम में ही लवलीन रहता है॥३॥ जिसने सर्वशक्तियों को धारण किया हुआ है, उस ईश्वर की उपासना करो। हे नानक! गुरु के सान्निध्य में प्रभु-नाम से प्यार बना रहता है॥४॥६॥

भैरउ महला ३ ॥ कलजुग महि बहु करम कमाहि ॥ ना रुति न करम थाइ पाहि ॥ १ ॥ कलजुग महि राम नामु है सारु ॥ गुरमुखि साचा लगै पिआरु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तनु मनु खोजि घरै महि पाइआ ॥ गुरमुखि राम नामि चितु लाइआ ॥ २ ॥ गिआन अंजनु सतिगुर ते होइ ॥ राम नामु रवि रहिआ तिहु लोइ ॥ ३ ॥ कलिजुग महि हरि जीउ एकु होर रुति न काई ॥ नानक गुरमुखि हिरदै राम नामु लेहु जमाई ॥ ४ ॥ १० ॥

कलियुग में मनुष्य अनेक कर्मकाण्ड करता है, परन्तु यह कर्मकाण्ड करने का समय नहीं है, इसलिए कोई कर्म सफल नहीं हो पाता॥१॥ कलियुग में राम नाम ही उपयोगी है और गुरु के सान्निध्य में जीव को प्रभु से प्रेम हो जाता है॥१॥ रहाउ॥ तन मन को खोज कर इसे हृदय-घर में ही पाया जा सकता है और गुरु के सान्निध्य में राम नाम से चित लगा रहता है॥२॥ सतगुरु से ज्ञान अञ्जन प्राप्त होता है कि तीनों लोकों में राम नाम ही व्याप्त है॥३॥ कलियुग में केवल ईश्वर के भजन-संकीर्तन का ही समय है, अन्य कोई उचित समय नहीं। नानक फुरमाते हैं कि हे भक्तजनो! गुरु के सान्निध्य में राम नाम हृदय में अवस्थित कर लो॥४॥१०॥

भैरउ महला ३ घरु २ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

दुबिधा मनमुख रोगि विआपे त्रिसना जलहि अधिकाई ॥ मरि मरि जंमहि ठउर न पावहि बिरथा जनमु गवाई ॥ १ ॥ मेरे प्रीतम करि किरपा देहु बुझाई ॥ हउमै रोगी जगतु उपाइआ बिनु सबदै रोगु न जाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिंम्रिति सासत्र पड़हि मुनि केते बिनु सबदै सुरति न पाई ॥ त्रै गुण सभे रोगि विआपे ममता सुरति गवाई ॥ २ ॥ इकि आपे काढि लए प्रभि आपे गुर सेवा प्रभि लाए ॥ हरि का नामु निधानो पाइआ सुखु वसिआ मनि आए ॥ ३ ॥ चउथी पदवी गुरमुखि वरतहि तिन निज घरि वासा पाइआ ॥ पूरै सतिगुरि किरपा कीनी विचहु आपु गवाइआ ॥ ४ ॥ एकसु की सिरि कार एक जिनि ब्रहमा बिसनु रुद्रु उपाइआ ॥ नानक निहचलु साचा एको ना ओहु मरै न जाइआ ॥ ५ ॥ १ ॥ ११ ॥

स्वेच्छाचारी को दुविधा का रोग लगा रहता है और वह अधिकतर तृष्णा की अग्नि में जलता है। वह पुनः पुनः जन्मता-मरता है, कोई ठौर-ठिकाना नहीं पाता और अपना जन्म निरर्थक गंवा देता है॥१॥ मेरे प्रियतम ने कृपा कर समझा दिया है कि अहम् रोग में जगत उत्पन्न हुआ है और शब्द के बिना रोग निवृत्त नहीं होता॥१॥ रहाउ॥ मुनियों ने शास्त्रों एवं स्मृतियों का पठन किया लेकिन शब्द के बिना उन्हें सुरति प्राप्त नहीं हुई। माया के तीन गुणों के कारण सब रोगी हो गए और ममत्व के कारण सुरति गंवा दी॥२॥ मगर किसी को प्रभु ने स्वयं ही रोग से बचा लिया और गुरु की सेवा में तल्लीन कर दिया। फिर उसने हरिनाम रूपी सुखों का भण्डार पा लिया और उसके मन में सुख आकर बस गया॥३॥ गुरु के सान्निध्य में उसे तुरीयावस्था प्राप्त

हुई और उसने सच्चे घर में वास पा लिया। पूरे सतगुरु ने कृपा कर अन्तर्मन से अहम् भावना निवृत्त कर दी॥४॥ जिसने ब्रह्मा, विष्णु एवं शिव को उत्पन्न किया है, उस एक ईश्वर की सम्पूर्ण सृष्टि पर सत्ता है। नानक का कथन है कि एक सत्यस्वरूप परमेश्वर ही निश्चल है और वह जन्म-मरण से रहित है॥५॥१॥११॥

भैरउ महला ३ ॥ मनमुखि दुबिधा सदा है रोगी रोगी सगल संसारा ॥ गुरमुखि बूझहि रोगु गवावहि गुर सबदी वीचारा ॥ १ ॥ हरि जीउ सतसंगति मेलाइ ॥ नानक तिस नो देइ वडिआई जो राम नामि चितु लाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ममता कालि सभि रोगि विआपे तिन जम की है सिरि कारा ॥ गुरमुखि प्राणी जमु नेड़ि न आवै जिन हरि राखिआ उरि धारा ॥ २ ॥ जिन हरि का नामु न गुरमुखि जाता से जग महि काहे आइआ ॥ गुर की सेवा कदे न कीनी बिरथा जनमु गवाइआ ॥ ३ ॥ नानक से पूरे वडभागी सतिगुर सेवा लाए ॥ जो इछहि सोई फलु पावहि गुरबाणी सुखु पाए ॥ ४ ॥ २ ॥ १२ ॥

मनमुखी जीव सदा दुविधा का रोगी बना रहता है, इस तरह समूचा संसार ही इस रोग का शिकार है। गुरु के सान्निध्य में रहने वाला इस तथ्य को बूझकर रोग निवृत्त कर देता है और शब्द-गुरु का चिंतन करता है॥१॥ ईश्वर ही संतों की संगत में मिलाता है। हे नानक! जो राम नाम में ध्यान लगाता है, उसे ही कीर्ति प्रदान करता है॥१॥ रहाउ॥ ममत्व में लीन रहने से काल एवं सभी रोग सताते हैं और उन पर यम की पीड़ा बनी रहती है। जिसने परमात्मा को अपने मन में बसा लिया है, उस गुरमुख प्राणी के निकट यम भी नहीं आता॥२॥ जिसने गुरु के सान्निध्य में हरिनाम को नहीं समझा, वह जगत में क्यों आया है। गुरु की सेवा कभी की नहीं, अपना जन्म व्यर्थ ही गंवा दिया॥३॥ नानक का कथन है कि वही पूर्ण भाग्यशाली हैं, जो सतगुरु की सेवा में तल्लीन रहते हैं, जैसी कामना करते हैं, वैसा ही फल प्राप्त करते हैं और गुरु की वाणी से सुख पाते हैं॥४॥२॥१२॥

भैरउ महला ३ ॥ दुख विचि जंमै दुखि मरै दुख विचि कार कमाइ ॥ गरभ जोनी विचि कदे न निकलै बिसटा माहि समाइ ॥ १ ॥ ध्रिगु ध्रिगु मनमुखि जनमु गवाइआ ॥ पूरे गुर की सेव न कीनी हरि का नामु न भाइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर का सबदु सभि रोग गवाए जिस नो हरि जीउ लाए ॥ नामे नामि मिलै वडिआई जिस नो मंनि वसाए ॥ २ ॥ सतिगुरु भेटै ता फलु पाए सचु करणी सुख सारु ॥ से जन निरमल जो हरि लागे हरि नामे धरहि पिआरु ॥ ३ ॥ तिन की रेणु मिलै तां मसतकि लाई जिन सतिगुरु पूरा धिआइआ ॥ नानक तिन की रेणु पूरै भागि पाईऐ जिनी राम नामि चितु लाइआ ॥ ४ ॥ ३ ॥ १३ ॥

(मनमर्जी करने वाला) मनुष्य दुख में जन्म लेता है, दुख में ही मृत्यु को प्राप्त होता है और दुखों में ही कामकाज करता है। वह गर्भ योनि में से कभी मुक्त नहीं होता और विष्ठा में ही पड़ा रहता है॥१॥ इस प्रकार के मनमुख मनुष्य को धिक्कार है, अपना जीवन उसने व्यर्थ ही गंवा दिया है। पूरे गुरु की कभी न सेवा की और न ही परमात्मा का नाम उसे अच्छा लगा॥१॥रहाउ॥ जिसे ईश्वर लगन में लगाता है, गुरु का शब्द उसके सब रोग दूर कर देता है। जो व्यक्ति प्रभु का नाम मन में बसा लेता है, उसे नाम द्वारा ही कीर्ति प्राप्त होती है॥२॥ सतगुरु से भेंट हो जाए तो फल प्राप्त होता है और सत्कर्म ही सुखाधार है। वही व्यक्ति निर्मल है, जो प्रभु की भक्ति में लगता है और हरिनाम से प्रेम करता है॥३॥ जिन्होंने पूर्ण सतगुरु का ध्यान किया है, उनकी

चरणरज मिल जाए तो माथे पर लगा लूँ। नानक का कथन है कि उनकी चरणरज पूर्ण भाग्य से ही प्राप्त होती है, जिन्होंने राम नाम में मन लगाया है॥ ४॥ ३॥ १३॥

भैरउ महला ३ ॥ सबदु बीचारे सो जनु साचा जिन कै हिरदै साचा सोई ॥ साची भगति करहि दिनु राती तां तनि दूखु न होई ॥ १ ॥ भगतु भगतु कहै सभु कोई ॥ बिनु सतिगुर सेवे भगति न पाईऐ पूरै भागि मिलै प्रभु सोई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनमुख मूलु गवावहि लाभु मागहि लाहा लाभु किदू होई ॥ जमकालु सदा है सिर ऊपरि दूजै भाइ पति खोई ॥ २ ॥ बहले भेख भवहि दिनु राती हउमै रोगु न जाई ॥ पड़ि पड़ि लूझहि बादु वखाणहि मिलि माइआ सुरति गवाई ॥ ३ ॥ सतिगुरु सेवहि परम गति पावहि नामि मिलै वडिआई ॥ नानक नामु जिना मनि वसिआ दरि साचै पति पाई ॥ ४ ॥ ४ ॥ १४ ॥

शब्द-ब्रह्म का चिंतन करने वाला ही सच्चा पुरुष है और उसके ही हृदय में सच्चा परमेश्वर है। वह दिन-रात सच्ची भक्ति करता है, जिसके फलस्वरूप तन दुखी नहीं होता॥ १॥ हर कोई भक्ति की चर्चा करता है, मगर सतगुरु की सेवा बिना भक्ति प्राप्त नहीं होती और पूर्ण भाग्य से ही प्रभु मिलता है॥ १॥ रहाउ॥ स्वेच्छाचारी मूलधन तो गंवा देता है पर लाभ की मांग करता है, फिर लाभ कैसे प्राप्त हो सकता है। यमकाल उसके सिर पर बना रहता है और वह द्वैतभाव में प्रतिष्ठा खो देता है॥ २॥ वह दिन-रात वेष बदलता है, पर उसका अहम् रोग दूर नहीं होता। विद्या पाकर उलझता है, वाद-विवाद एवं व्याख्या करता है और माया में रत होकर सुरति गंवा देता है॥ ३॥ सतगुरु की सेवा,से ही जीव परमगति पाता है और प्रभु-नाम से ही उसे बड़ाई मिलती है। नानक का कथन है कि जिसके मन में परमेश्वर का नाम बस जाता है, वही सच्चे द्वार पर प्रतिष्ठा पाता है॥ ४॥ ४॥ १४॥

भैरउ महला ३ ॥ मनमुख आसा नही उतरै दूजै भाइ खुआए ॥ उदरु नै साणु न भरीऐ कबहू त्रिसना अगनि पचाए ॥ १ ॥ सदा अनंदु राम रसि राते ॥ हिरदै नामु दुबिधा मनि भागी हरि हरि अंम्रितु पी त्रिपताते ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपे पारब्रहमु स्रिसटि जिनि साजी सिरि सिरि धंधै लाए ॥ माइआ मोहु कीआ जिनि आपे आपे दूजै लाए ॥ २ ॥ तिस नो किहु कहीऐ जे दूजा होवै सभि तुधै माहि समाए ॥ गुरमुखि गिआनु ततु बीचारा जोती जोति मिलाए ॥ ३ ॥ सो प्रभु साचा सद ही साचा साचा सभु आकारा ॥ नानक सतिगुरि सोझी पाई सचि नामि निसतारा ॥ ४ ॥ ५ ॥ १५ ॥

स्वेच्छाचारी मनुष्य की आशा खत्म नहीं होती और वह द्वैतभाव में ख्वार होता है। उसका पेट नदी की तरह कभी नहीं भरता और वह तृष्णा अग्नि में दुःख पाता है॥ १॥ ईश्वर के रंग में रत रहने वाले सदा आनंद पाते हैं, उनके हृदय में नाम के फलस्वरूप मन की दुविधा दूर हो जाती है और वे हरिनामामृत पीकर तृप्त रहते हैं॥ १॥ रहाउ॥ परब्रह्म ने स्वयं ही सृष्टि बनाकर जीवों को कार्यों में लगाया है और माया का मोह बना कर स्वयं द्वैतभाव में लगा दिया है॥ २॥ हे स्रष्टा! यदि कोई दूसरा हो तो उसे कहा जाए, पर सब जीव तुझ में ही समाए हुए हैं। गुरु से ज्ञान तत्व का चिंतन कर आत्म-ज्योति परम-ज्योति में समाहित हो जाती है॥ ३॥ सो वह प्रभु शाश्वत है, सदैव सच्चा है और उसकी सृष्टि रचना भी सच्ची है। नानक का कथन है कि सतगुरु से सूझ पाकर सच्चे नाम से जीव की मुक्ति हो जाती है॥ ४॥ ५॥ १५॥

भैरउ महला ३ ॥ कलि महि प्रेत जिन्ही रामु न पछाता सतजुगि परम हंस बीचारी ॥ दुआपुरि त्रेतै माणस वरतहि विरलै हउमै मारी ॥ १ ॥ कलि महि राम नामि वडिआई ॥ जुगि जुगि गुरमुखि एको जाता विणु नावै मुकति न पाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हिरदै नामु लखै जनु साचा गुरमुखि मंनि वसाई ॥ आपि तरे सगले कुल तारे जिनी राम नामि लिव लाई ॥ २ ॥ मेरा प्रभु है गुण का दाता अवगण सबदि जलाए ॥ जिन मनि वसिआ से जन सोहे हिरदै नामु वसाए ॥ ३ ॥ घरु दरु महलु सतिगुरू दिखाइआ रंग सिउ रलीआ माणै ॥ जो किछु कहै सु भला करि मानै नानक नामु वखाणै ॥ ४ ॥ ६ ॥ १६ ॥

जिसने राम को नहीं पहचाना, वह कलियुग में प्रेत समान है। परम सत्य का चिन्तनशील सतयुग का परमहंस है। द्वापर एवं त्रेता में विरले ही मनुष्य हुए हैं, जिन्होंने अहम्-भाव को मिटाया है॥१॥ कलियुग में राम नाम के संकीर्तन से ही बड़ाई है। युग-युगांतर गुरु ने एक परम सत्य परमेश्वर को ही माना है और प्रभु-नाम बिना मुक्ति प्राप्त नहीं होती॥१॥ रहाउ॥ जो व्यक्ति हृदय में ही प्रभु-नाम को देखता है, वही सत्यनिष्ठ है और ऐसे गुरमुख ने उसे मन में बसाया है। जिसने राम नाम में लगन लगाई है, वह स्वयं तो पार हुआ है, साथ ही समूची वंशावलि को भी पार करवा दिया है॥२॥ मेरा प्रभु गुणों का दाता है, शब्द द्वारा वह सब अवगुण जला देता है। जिसके मन में प्रभु बस गया है, वही व्यक्ति शोभा का पात्र है और उसके हृदय में प्रभु-नाम की स्मृति बसी रहती है॥३॥ जिसे सतगुरु ने सच्चा घर-द्वार दिखा दिया है, वह आनंद ही पाता है। हे नानक! वह जो कुछ कहता है, उसे ही भला मानता है और प्रभु-नाम का ही उच्चारण करता रहता है॥४॥६॥१६॥

भैरउ महला ३ ॥ मनसा मनहि समाइ लै गुर सबदी वीचार ॥ गुर पूरे ते सोझी पवै फिरि मरै न वारो वार ॥ १ ॥ मन मेरे राम नामु आधारु ॥ गुर परसादि परम पदु पाइआ सभ इछ पुजावणहारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सभ महि एको रवि रहिआ गुर बिनु बूझ न पाइ ॥ गुरमुखि प्रगटु होआ मेरा हरि प्रभु अनदिनु हरि गुण गाइ ॥ २ ॥ सुखदाता हरि एकु है होर थै सुखु न पाहि ॥ सतिगुरु जिनी न सेविआ दाता से अंति गए पछुताहि ॥ ३ ॥ सतिगुरु सेवि सदा सुखु पाइआ फिरि दुखु न लागै धाइ ॥ नानक हरि भगति परापति होई जोती जोति समाइ ॥ ४ ॥ ७ ॥ १७ ॥

जो गुरु-उपदेश का चिंतन कर अपनी लालसाओं को मन में से दूर कर लेता है, तदन्तर पूरे गुरु से सूझ पाकर वह जन्म-मरण से मुक्त हो जाता है॥१॥ हे मेरे मन! राम नाम एकमात्र आसरा है, गुरु की कृपा से मोक्ष प्राप्त हुआ है और सब इच्छाएँ पूरी हो गई हैं॥१॥ रहाउ॥ सबमें एक ईश्वर ही रमण कर रहा है, मगर गुरु के बिना इस तथ्य का ज्ञान प्राप्त नहीं होता। गुरु द्वारा ही मेरा प्रभु अन्तर्मन में प्रकट होता है और फिर नित्य उसका गुणगान होता रहता है॥२॥ केवल परमात्मा ही सुख देने वाला है और कहीं अन्य सुख प्राप्त नहीं होता। जिन्होंने दाता सतगुरु की उपासना नहीं की, वे अन्ततः पछताते ही गए हैं॥३॥ सतगुरु की सेवा से सदा सुख ही प्राप्त होता है और पुनः कोई दुख नहीं लगता। हे नानक! फलस्वरूप प्रभु-भक्ति प्राप्त हो जाती है और आत्म-ज्योति परम-ज्योति में विलीन हो जाती है॥४॥७॥१७॥

भैरउ महला ३ ॥ बाझु गुरू जगतु बउराना भूला चोटा खाई ॥ मरि मरि जंमै सदा दुखु पाए दर की खबरि न पाई ॥ १ ॥ मेरे मन सदा रहहु सतिगुर की सरणा ॥ हिरदै हरि नामु मीठा सद लागा गुर सबदे भवजलु तरणा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भेख करै बहुतु चितु डोलै अंतरि कामु क्रोधु अहंकारु ॥ अंतरि तिसा भूख अति बहुती भउकत फिरै दर बारु ॥ २ ॥ गुर कै सबदि मरहि फिरि जीवहि तिन

कउ मुकति दुआरि ॥ अंतरि सांति सदा सुखु होवै हरि राखिआ उर धारि ॥ ३ ॥ जिउ तिसु भावै तिवै चलावै करणा किछू न जाई ॥ नानक गुरमुखि सबदु सम्हाले राम नामि वडिआई ॥ ४ ॥ ८ ॥ १८ ॥

गुरु के बिना संसार बावला बनकर भूला हुआ है, अतः दुःख भोगता है। वह बार-बार मरता-जन्मता है, सदा दुख पाता है परन्तु सच्चे द्वार का ज्ञान प्राप्त नहीं करता॥१॥ हे मेरे मन, सदैव गुरु की शरण में रहो, फिर प्रभु का नाम हृदय में सदैव मीठा लगता है और गुरु-उपदेश द्वारा संसार-सागर से उद्धार हो जाता है॥१॥ रहाउ॥ जीव बहुत दिखावे करता है, उसका मन डगमगाता है, अन्तर्मन में काम, क्रोध एवं अहंकार भरा रहता है। उसके मन को तृष्णा की भूख लगी रहती है और फिर बहुत बकवाद करता है॥२॥ अगर गुरु के उपदेश द्वारा जीव कामादिक विकारों की ओर से मरकर जीवन बिताए तो मुक्ति प्राप्त कर लेता है। उसके ही मन को शान्ति प्राप्त होती है, वह प्रभु को मन में बसाकर रखता है और सदा सुखी रहता है॥३॥ जैसा ईश्वर चाहता है, वैसे ही चलाता है और अपने आप हम कुछ नहीं कर सकते। नानक का मत है कि जो गुरु के सान्निध्य में शब्द का मनन करता है, उसी को राम-नाम से बड़ाई मिलती है॥४॥८॥१८॥

भैरउ महला ३ ॥ हउमै माइआ मोहि खुआइआ दुखु खटे दुख खाइ ॥ अंतरि लोभ हलकु दुखु भारी बिनु बिबेक भरमाइ ॥ १ ॥ मनमुखि ध्रिगु जीवणु सैसारि ॥ राम नामु सुपनै नही चेतिआ हरि सिउ कदे न लागै पिआरु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पसूआ करम करै नही बूझै कूड़ु कमावै कूड़ो होइ ॥ सतिगुरु मिलै त उलटी होवै खोजि लहै जनु कोइ ॥ २ ॥ हरि हरि नामु रिदै सद वसिआ पाइआ गुणी निधानु ॥ गुर परसादी पूरा पाइआ चूका मन अभिमानु ॥ ३ ॥ आपे करता करे कराए आपे मारगि पाए ॥ आपे गुरमुखि दे वडिआई नानक नामि समाए ॥ ४ ॥ ६ ॥ १६ ॥

अहम् एवं माया-मोह में भटककर जीव दुख कमाता है और दुख ही भोगता है। अन्तर्मन में लोभ का पागलपन भारी दुख का कारण बनता है और अविवेक के कारण वह भटकता है॥१॥ मनमुखी जीव का संसार में जीना ही धिक्कार योग्य है, राम नाम उसे सपने में भी याद नहीं आता और प्रभु से वह कभी प्रेम नहीं लगाता॥१॥ रहाउ॥ वह पशु की तरह कर्म करता है, मगर तथ्य को नहीं बूझता, इस प्रकार झूठ कमाता है और झूठा ही सिद्ध होता है। अगर सतगुरु से साक्षात्कार हो जाए तो उसका जीवन-आचरण बदल जाता है और वह प्रभु को खोज लेता है॥२॥ जिसके हृदय में सदा हरिनाम बसा रहता है, वह उस गुणों के भण्डार को पा लेता है। गुरु की कृपा से पूर्ण प्रभु प्राप्त हो जाता है और मन का अभिमान दूर हो जाता है॥३॥ हे भाई! ईश्वर स्वयं ही सब करने-करवाने वाला है और स्वयं ही सन्मार्ग लगाता है। नानक का कथन है कि वह गुरमुख को ही बड़ाई प्रदान करता है, इस तरह वह नाम में ही समा जाता है॥४॥६॥१६॥

भैरउ महला ३ ॥ मेरी पटीआ लिखहु हरि गोविंद गोपाला ॥ दूजै भाइ फाथे जम जाला ॥ सतिगुरु करे मेरी प्रतिपाला ॥ हरि सुखदाता मेरै नाला ॥ १ ॥ गुर उपदेसि प्रहिलादु हरि उचरै ॥ सासना ते बालकु गमु न करै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ माता उपदेसै प्रहिलाद पिआरे ॥ पुत्र राम नामु छोडहु जीउ लेहु उबारे ॥ प्रहिलादु कहै सुनहु मेरी माइ ॥ राम नामु न छोडा गुरि दीआ बुझाइ ॥ २ ॥ संडा मरका सभि जाइ पुकारे ॥ प्रहिलादु आपि विगड़िआ सभि चाटड़े विगाड़े ॥ दुसट सभा महि मंतु पकाइआ ॥ प्रहलाद का राखा होइ रघुराइआ ॥ ३ ॥ हाथि खड़गु करि धाइआ अति अहंकारि ॥ हरि तेरा कहा तुझु लए उबारि ॥ खिन महि भैआन रूपु निकसिआ थंम्ह उपाड़ि ॥ हरणाखसु नखी

बिदारिआ प्रहलादु लीआ उबारि ॥ ४ ॥ संत जना के हरि जीउ कारज सवारे ॥ प्रहलाद जन के इकीह कुल उधारे ॥ गुर कै सबदि हउमै बिखु मारे ॥ नानक राम नामि संत निसतारे ॥ ५ ॥ १० ॥ २० ॥

मेरी पट्टी पर हरिनाम लिख दो; हरि के सिवा किसी दूसरे से लगाव लगाना तो मौत के जाल में फँसने बराबर है। सतगुरु मेरी रक्षा करता है, वह सुखदाता ईश्वर मेरे साथ ही है॥१॥ गुरु के उपदेश पर प्रहलाद ने हरिनाम उच्चरित किया और बालक दण्ड से बिल्कुल नहीं डरता॥१॥ माता ने उपदेश दिया, प्यारे पुत्र प्रहलाद! राम नाम का जाप छोड़कर अपने प्राण बचा लो। प्रहलाद ने निर्भीक होकर कहा; हे मेरी माता! गुरु ने मुझे भेद समझा दिया है, अतः मैं राम नाम (का जाप) नहीं छोड़ सकता॥२॥ प्रहलाद के अध्यापक शण्ड तथा अमरक ने राजा हिरण्यकशिपु को शिकायत करते हुए आरोप लगाया कि प्रहलाद स्वयं तो बिगड़ा ही है, इसने अन्य सब विद्यार्थी भी बिगाड़ दिए हैं। दुष्ट राजा के दरबार में (प्रहलाद को मारने की) सलाह की गई, परन्तु ईश्वर स्वयं प्रहलाद का रखवाला बना॥३॥ अहंकारी राजा हाथ में तलवार पकड़ (प्रहलाद की ओर) आया और क्रोधपूर्ण बोला, "कहाँ है तेरा परमात्मा, जो तुझे बचा लेगा?" तब पल में भयानक रूप नृसिंह खम्भा फोड़कर निकल आया और दुष्ट हिरण्यकशिपु को नाखुनों से फाड़कर भक्त प्रहलाद को बचा लिया॥४॥ ईश्वर भक्तजनों के कार्य संवारता है और उसने भक्त प्रहलाद की इक्कीस कुलों का उद्धार किया। नानक फुरमाते हैं कि गुरु के उपदेश से अहम् रूपी जहर को समाप्त किया जाए तो राम नाम से भक्तों की मुक्ति हो जाती है॥५॥१०॥२०॥

भैरउ महला ३ ॥ आपे दैत लाइ दिते संत जना कउ आपे राखा सोई ॥ जो तेरी सदा सरणाई तिन मनि दुखु न होई ॥ १ ॥ जुगि जुगि भगता की रखदा आइआ ॥ दैत पुतु प्रहलादु गाइत्री तरपणु किछू न जाणै सबदे मेलि मिलाइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनदिनु भगति करहि दिन राती दुबिधा सबदे खोई ॥ सदा निरमल है जो सचि राते सचु वसिआ मनि सोई ॥ २ ॥ मूरख दुबिधा पढ़हि मूलु न पछाणहि बिरथा जनमु गवाइआ ॥ संत जना की निंदा करहि दुसटु दैतु चिड़ाइआ ॥ ३ ॥ प्रहलादु दुबिधा न पड़ै हरि नामु न छोडै डरै न किसै दा डराइआ ॥ संत जना का हरि जीउ राखा दैतै कालु नेड़ा आइआ ॥ ४ ॥ आपणी पैज आपे राखै भगतां देइ वडिआई ॥ नानक हरणाखसु नखी बिदारिआ अंधै दर की खबरि न पाई ॥ ५ ॥ ११ ॥ २१ ॥

(ईश्वर की यह लीला ही है कि) वह स्वयं ही दैत्यों को भक्तजनों के पीछे लगा देता है और फिर स्वयं ही उनकी रक्षा भी करता है। हे भक्तवत्सल! जो सदा तेरी शरण में रहता है, उसके मन को कोई दुःख-दर्द प्रभावित नहीं करता॥१॥ युग-युगांतर से परमात्मा अपने भक्तों की रक्षा करता आया है, दैत्य पुत्र प्रहलाद गायत्री तर्पण कुछ नहीं जानता था, पर शब्द की स्तुति से ही उसका मिलाप हुआ॥१॥ रहाउ॥ जो रात-दिन भगवान की भक्ति करता है, शब्द द्वारा उसकी दुविधा निवृत्त हो जाती है। जो प्रभु की स्मृति में लीन रहता है, वह सदा निर्मल होता है और उसके मन में सच्चा प्रभु बसा रहता है॥२॥ मूर्ख व्यक्ति दुविधा में पड़ा रहता है, मूल को नहीं पहचानता, अतः उसका जीवन व्यर्थ ही जाता है। भक्तजनों की निंदा करने वालों ने दैत्य हिरण्यकशिपु को प्रहलाद के विरुद्ध उकसाया॥३॥ भक्त प्रहलाद दुविधा में न पड़ा, हरिनाम का जाप उसने बिल्कुल नहीं छोड़ा और न ही किसी के डराने पर (मौत से) डरा। श्री हरि अपने भक्तजनों का रखवाला है, तभी दैत्य हिरण्यकशिपु का काल निकट आ गया॥४॥ प्रभु अपनी भक्ति की लाज

स्वयं रखता है और भक्तों को कीर्ति प्रदान करता है। हे नानक ! दुष्ट हिरण्यकशिपु का उसने नाखुनों से चीर कर वध कर दिया, पर अन्धे ने सच्चे द्वार को नहीं जाना॥ ५॥ ११॥ २१॥

रागु भैरउ महला ४ चउपदे घरु १ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

हरि जन संत करि किरपा पगि लाइणु ॥ गुर सबदी हरि भजु सुरति समाइणु ॥ १ ॥ मेरे मन हरि भजु नामु नराइणु ॥ हरि हरि क्रिपा करे सुखदाता गुरमुखि भवजलु हरि नामि तराइणु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संगति साध मेलि हरि गाइणु ॥ गुरमती ले राम रसाइणु ॥ २ ॥ गुर साधू अंम्रित गिआन सरि नाइणु ॥ सभि किलविख पाप गए गावाइणु ॥ ३ ॥ तू आपे करता स्रिसटि धराइणु ॥ जनु नानकु मेलि तेरा दास दसाइणु ॥ ४ ॥ १ ॥

अगर भक्तों व संतजनों की कृपा हो जाए तो वे प्रभु-चरणों में लगा देते हैं। गुरु उपदेश द्वारा एकाग्रचित होकर परमेश्वर का भजन करो॥ १॥ हे मेरे मन ! नारायण-स्वरूप हरि-नाम का भजन-संकीर्तन करो। यद्यपि सुखदाता ईश्वर कृपा कर दे तो गुरु के माध्यम से उसका नाम संसार-सागर से पार करवा देता है॥ १॥ रहाउ॥ साधुओं की संगत में मिलकर प्रभु का यशगान होता है और गुरु के निर्देशानुसार राम नाम रूपी औषधि प्राप्त की जा सकती है॥ २॥ गुरु-साधु के अमृत ज्ञान रूपी सरोवर में स्नान करो, इससे सभी पाप-दोष दूर हो जाते हैं॥ ३॥ हे ईश्वर ! तू ही बनानेवाला है और सृष्टि को सहारा देने वाला है। नानक की विनती है कि मुझे अपने संग मिला लो, क्योंकि वह तो तेरे दासों का भी दास है॥ ४॥ १॥

भैरउ महला ४ ॥ बोलि हरि नामु सफल सा घरी ॥ गुर उपदेसि सभि दुख परहरी ॥ १ ॥ मेरे मन हरि भजु नामु नरहरी ॥ करि किरपा मेलहु गुरु पूरा सतसंगति संगि सिंधु भउ तरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जगजीवनु धिआइ मनि हरि सिमरी ॥ कोट कोटंतर तेरे पाप परहरी ॥ २ ॥ सतसंगति साध धूरि मुखि परी ॥ इसनानु कीओ अठसठि सुरसरी ॥ ३ ॥ हम मूरख कउ हरि किरपा करी ॥ जनु नानकु तारिओ तारण हरी ॥ ४ ॥ २ ॥

वही सफल घड़ी है, जब ईश्वर का संकीर्तन होता है। गुरु के उपदेश से सब दुख दूर हो जाते हैं॥ १॥ हे मेरे मन ! परमेश्वर का भजन करो, अगर वह कृपा कर दे तो पूर्ण गुरु से मिलाप हो जाता है, सत्संगति में संसार-समुद्र से उद्धार हो जाता है॥ १॥ रहाउ॥ हे मन ! संसार के जीवन प्रभु का चिंतन कर ले, तेरे करोड़ों पाप दूर हो जाएँगे॥ २॥ अगर सत्संगति में साधु की चरण-धूल मुँह-माथे पर लग जाए तो उससे अड़सठ गंगा स्नान का फल प्राप्त हो जाता है॥ ३॥ नानक की विनती है कि हे प्रभु ! मुझ मूर्ख पर कृपा करो; इस संसार-सागर से पार उतार दो॥ ४॥ २॥

भैरउ महला ४ ॥ सुक्रितु करणी सारु जपमाली ॥ हिरदै फेरि चलै तुधु नाली ॥ १ ॥ हरि हरि नामु जपहु बनवाली ॥ करि किरपा मेलहु सतसंगति तूटि गई माइआ जम जाली ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरमुखि सेवा घाल जिनि घाली ॥ तिसु घड़ीऐ सबदु सची टकसाली ॥ २ ॥ हरि अगम अगोचरु गुरि अगम दिखाली ॥ विचि काइआ नगर लधा हरि भाली ॥ ३ ॥ हम बारिक हरि पिता प्रतिपाली ॥ जन नानक तारहु नदरि निहाली ॥ ४ ॥ ३ ॥

शुभ कर्म करना ही जप माला है, इसे हृदय में फेरते चलो अर्थात् शुभ कर्म करो; इसी का फल प्राप्त होगा॥१॥ ईश्वर का नाम जपो, अगर कृपा कर सत्संगत में मिला दे तो माया का यम जाल टूट जाता है॥१॥ रहाउ॥ जिसने गुरु की सेवा की है, उस सच्ची टकसाल में शब्द के स्फोट से उसका जीवन संवर गया है॥२॥ ईश्वर अगम्य-अगोचर है और गुरु ने उसका दर्शन करवा दिया है, इस प्रकार शरीर रूपी नगर में ही उसे पा लिया है॥३॥ हम ईश्वर की संतान हैं, वह पिता की तरह हमारा पोषण करता है। नानक का कथन है कि यदि प्रभु की करुणा-दृष्टि हो जाए तो जीव संसार-सागर से पार हो जाता है॥४॥३॥

भैरउ महला ४ ॥ सभि घट तेरे तू सभना माहि ॥ तुझ ते बाहरि कोई नाहि ॥ १ ॥ हरि सुखदाता मेरे मन जापु ॥ हउ तुधु सालाही तू मेरा हरि प्रभु बापु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जह जह देखा तह हरि प्रभु सोइ ॥ सभ तेरै वसि दूजा अवरु न कोइ ॥ २ ॥ जिस कउ तुम हरि राखिआ भावै ॥ तिस कै नेड़ै कोइ न जावै ॥ ३ ॥ तू जलि थलि महीअलि सभ तै भरपूरि ॥ जन नानक हरि जपि हाजरा हजूरि ॥ ४ ॥ ४ ॥

हे परमेश्वर ! सब शरीर तेरे हैं, तू सर्वव्यापक है और तुझ से बाहर कोई नहीं॥१॥ हे मेरे मन ! सुखदाता परमेश्वर का जाप करो; हे प्रभु ! मैं तेरी प्रशंसा करता हूँ, तू ही मेरा पिता है॥१॥ रहाउ॥ जहाँ देखता हूँ, वहाँ प्रभु ही है। सब तेरे वश में है, दूसरा अन्य कोई नहीं॥२॥ हे प्रभु ! जिसे तुम स्वेच्छा से बचाते हो, उसके निकट कोई दुरात्मा भी नहीं जाती॥३॥ सागर, भूमि व आसमान सबमें तू ही व्याप्त है। नानक का कथन है कि हे हरि ! जाप करने से तू साक्षात् दिखाई देता है॥४॥४॥

भैरउ महला ४ घरु २ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

हरि का संतु हरि की हरि मूरति जिसु हिरदै हरि नामु मुरारि ॥ मसतकि भागु होवै जिसु लिखिआ सो गुरमति हिरदै हरि नामु सम्हारि ॥ १ ॥ मधुसूदनु जपीऐ उर धारि ॥ देही नगरि तसकर पंच धातू गुर सबदी हरि काढे मारि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिन का हरि सेती मनु मानिआ तिन कारज हरि आपि सवारि ॥ तिन चूकी मुहताजी लोकन की हरि अंगीकारु कीआ करतारि ॥ २ ॥ मता मसूरति तां किछु कीजै जे किछु होवै हरि बाहरि ॥ जो किछु करे सोई भल होसी हरि धिआवहु अनदिनु नामु मुरारि ॥ ३ ॥ हरि जो किछु करे सु आपे आपे ओहु पूछि न किसै करे बीचारि ॥ नानक सो प्रभु सदा धिआईऐ जिनि मेलिआ सतिगुरु किरपा धारि ॥ ४ ॥ १ ॥ ५ ॥

ईश्वर का भक्त तो ईश्वर की मूर्ति समान है, जिसके हृदय में हरिनाम ही बसा रहता है। जिसका उत्तम भाग्य हो, वह गुरु-मतानुसार हरिनाम स्मरण करता है॥१॥ दिल में परमात्मा का नाम जपो; शरीर रूपी नगरी में स्थित कामादिक पाँच लुटेरे गुरु-उपदेश से मारे जा सकते हैं॥१॥ रहाउ॥ जिनका मन ईश्वर में ही रमा रहता है, वह उनके कार्य स्वयं संवार देता है। जिनको परमात्मा ने अंगीकार किया है, उनकी लोगों पर निर्भरता मिट गई है॥२॥ सलाह-मशविरा तो किया जाए अगर प्रभु से कुछ बाहर हो। दिन-रात परमेश्वर का ध्यान करो; वह जो कुछ करेगा, वही भला होगा॥३॥ जो कुछ परमात्मा करता है, वह स्वेच्छा से ही करता है और किसी से सलाह लेकर नहीं करता। हे नानक ! सो प्रभु का सदैव ध्यान करो, जिसने कृपा कर सतगुरु से साक्षात्कार करवाया है॥४॥१॥५॥

भैरउ महला ४ ॥ ते साधू हरि मेलहु सुआमी जिन जपिआ गति होइ हमारी ॥ तिन का दरसु देखि मनु बिगसै खिनु खिनु तिन कउ हउ बलिहारी ॥ १ ॥ हरि हिरदै जपि नामु मुरारी ॥ क्रिपा क्रिपा करि जगत पित सुआमी हम दासनि दास कीजै पनिहारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तिन मति ऊतम तिन पति ऊतम जिन हिरदै वसिआ बनवारी ॥ तिन की सेवा लाइ हरि सुआमी तिन सिमरत गति होइ हमारी ॥ २ ॥ जिन ऐसा सतिगुरु साधु न पाइआ ते हरि दरगह काढे मारी ॥ ते नर निंदक सोभ न पावहि तिन नक काटे सिरजनहारी ॥ ३ ॥ हरि आपि बुलावै आपे बोलै हरि आपि निरंजनु निरंकारु निराहारी ॥ हरि जिसु तू मेलहि सो तुधु मिलसी जन नानक किआ एहि जंत विचारी ॥ ४ ॥ २ ॥ ६ ॥

हे स्वामी ! उन साधुगणों से भेंट करा दो, जिनका जाप करने से संसार के बन्धनों से हमारी मुक्ति हो जाए। उनके दर्शन पाकर मन प्रसन्न हो जाता है और पल-पल मैं उन पर बलिहारी हूँ॥१॥ ह्रदय में प्रभु नाम का जाप करो; हे जगतपिता ! कृपा कर हमें अपने दासों के दास का पानी भरने वाला सेवक ही बना दो॥१॥ रहाउ॥ जिनके ह्रदय में परमेश्वर बस गया है, उनकी मति एवं प्रतिष्ठा भी अति उत्तम है। हे स्वामी ! उनकी सेवा में तल्लीन कर दो, चूंकि उनका स्मरण करने से हमारी मुक्ति हो सकती है॥२॥ जिन्होंने ऐसा साधु सतगुरु नहीं पाया, उनको प्रभु-दरबार से निकाल दिया गया है। ऐसे निंदक पुरुष शोभा प्राप्त नहीं करते, उनको सृजनहार तिरस्कृत कर देता है॥३॥ परमात्मा स्वयं ही (जीवों में) बुलवाता एवं बोलता है, परन्तु फिर भी वह माया की कालिमा से रहित, आकार रहित एवं सांसारिक पूर्तियों से भी निर्लिप्त है। नानक का कथन है कि हे परमेश्वर ! जिसे तू मिला लेता है, वह तुझ में ही विलीन रहता है, यह जीव बेचारा तो कुछ भी करने में असमर्थ है॥४॥२॥६॥

भैरउ महला ४ ॥ सतसंगति साई हरि तेरी जितु हरि कीरति हरि सुनणे ॥ जिन हरि नामु सुणिआ मनु भीना तिन हम स्रेवह नित चरणे ॥ १ ॥ जगजीवनु हरि धिआइ तरणे ॥ अनेक असंख नाम हरि तेरे न जाही जिहवा इतु गनणे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरसिख हरि बोलहु हरि गावहु ले गुरमति हरि जपणे ॥ जो उपदेसु सुणे गुर केरा सो जनु पावै हरि सुख घणे ॥ २ ॥ धंनु सु वंसु धंनु सु पिता धंनु सु माता जिनि जन जणे ॥ जिन सासि गिरासि धिआइआ मेरा हरि हरि से साची दरगह हरि जन बणे ॥ ३ ॥ हरि हरि अगम नाम हरि तेरे विचि भगता हरि धरणे ॥ नानक जनि पाइआ मति गुरमति जपि हरि हरि पारि पवणे ॥ ४ ॥ ३ ॥ ७ ॥

हे ईश्वर ! तेरी वही सत्संगति है, जहां भक्तजन हरि-कीर्तन सुनते हैं। जिसने हरिनाम का संकीर्तन सुना है, उसका मन आनंद-विभोर हो गया है और हम नित्य ही उसके चरणों के पूजक हैं॥१॥ संसार के जीवन ईश्वर का मनन करने से मुक्ति प्राप्त हो जाती है। हे परमेश्वर ! तेरे (अनेकानेक) असंख्य नाम हैं, इनको जीभ से गिना नहीं जा सकता॥१॥ रहाउ॥ हे गुरु-शिष्यो ! हरिनाम बोलो, हरि के गुण गाओ और गुरु उपदेश लेकर हरि का जाप करो। जो गुरु का उपदेश सुनता है, वह परम सुख प्राप्त करता है॥२॥ वह वंश धन्य है, वे माता-पिता भी धन्य एवं महान् हैं, जिन्होंने भक्त को पैदा किया है। जिसने श्वास-ग्रास से मेरे प्रभु का चिंतन किया है, ऐसे भक्त ने सच्चे दरबार में कीर्ति प्राप्त की है॥३॥ परमेश्वर का नाम अगम्य है और उसने स्वयं ही भक्तों के अन्तर्मन में बसाया है। गुरु नानक फुरमान करते हैं— जिसने गुरु-उपदेशानुसार प्रभु का जाप किया है, वह संसार-सागर से पार हो गया है॥४॥३॥७॥

भैरउ महला ५ घरु १ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सगली थीति पासि डारि राखी ॥ असटम थीति गोविंद जनमा सी ॥ १ ॥ भरमि भूले नर करत कचराइण ॥ जनम मरण ते रहत नाराइण ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करि पंजीरु खवाइओ चोर ॥ ओहु जनमि न मरै रे साकत ढोर ॥ २ ॥ सगल पराध देहि लोरोनी ॥ सो मुखु जलउ जितु कहहि ठाकुरु जोनी ॥ ३ ॥ जनमि न मरै न आवै न जाइ ॥ नानक का प्रभु रहिओ समाइ ॥ ४ ॥ १ ॥

सब तिथियों (पूर्णिमा, एकादशी इत्यादि) को लोगों ने दरकिनार कर दिया और अष्टमी तिथि को (श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी पर) ईश्वर का जन्म मानने लग गए॥१॥ भ्रम में भूले हुए ऐसे लोग निरर्थक बातें ही करते हैं और उन्हें यह ज्ञान नहीं कि ईश्वर तो जन्म-मरण से रहित है॥१॥ रहाउ॥ जन्माष्टमी के पर्व पर लोग पंजीरी बनाकर कृष्ण की मूर्ति को भोग लगा देते हैं, अरे मायावी पशु! परमेश्वर तो अमर है, वह न ही जन्म लेता है और न ही मरता है॥२॥ लोरियां देते हो, यह सब अपराध का कारण है। वह मुँह जल जाना चाहिए, जो कहता है कि ठाकुर जी का जन्म होता है॥३॥ हे जीवो! वह जन्मता-मरता नहीं और न आता है, न जाता है। नानक का मत है कि प्रभु सबमें व्याप्त है॥४॥१॥

भैरउ महला ५ ॥ ऊठत सुखीआ बैठत सुखीआ ॥ भउ नही लागै जां ऐसे बुझीआ ॥ १ ॥ राखा एकु हमारा सुआमी ॥ सगल घटा का अंतरजामी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सोइ अचिंता जागि अचिंता ॥ जहा कहां प्रभु तूं वरतंता ॥ २ ॥ घरि सुखि वसिआ बाहरि सुखु पाइआ ॥ कहु नानक गुरि मंत्रु द्रिड़ाइआ ॥ ३ ॥ २ ॥

उठते-बैठते सुख ही उपलब्ध होता है और कोई भय नहीं लगता। जो इस तथ्य को बूझ लेता है कि ईश्वर अमर एवं सर्वरक्षक है॥१॥ हमारा स्वामी प्रभु ही रक्षा करने वाला है, वह सब के मन की भावना को जानने वाला है॥१॥ रहाउ॥ हे प्रभु! जहाँ कहाँ तू कार्यशील है, सोते-जागते वहाँ कोई चिंता नहीं॥२॥ घर-बाहर उसे सुख ही मिला है, हे नानक! गुरु ने यही मंत्र दृढ़ करवाया है॥३॥२॥

भैरउ महला ५ ॥ वरत न रहउ न मह रमदाना ॥ तिसु सेवी जो रखै निदाना ॥ १ ॥ एकु गुसाई अलहु मेरा ॥ हिंदू तुरक दुहां नेबेरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हज काबै जाउ न तीरथ पूजा ॥ एको सेवी अवरु न दूजा ॥ २ ॥ पूजा करउ न निवाज गुजारउ ॥ एक निरंकार ले रिदै नमसकारउ ॥ ३ ॥ ना हम हिंदू न मुसलमान ॥ अलह राम के पिंडु परान ॥ ४ ॥ कहु कबीर इहु कीआ वखाना ॥ गुर पीर मिलि खुदि खसमु पछाना ॥ ५ ॥ ३ ॥

न ही व्रत-उपवास रखता हूँ और न ही रमज़ान के महीने में रोज़े रखता हूँ अपितु जन्म से मृत्यु तक रक्षा करने वाले ईश्वर की ही अर्चना करता हूँ॥१॥ एक मालिक प्रभु ही मेरा अल्लाह है और हिन्दू-मुसलमानों दोनों से नाता तोड़ लिया है॥१॥ रहाउ॥ मैं हज्ज के लिए काबा और पूजा के लिए तीर्थों पर भी नहीं जाता। एक ईश्वर की उपासना करता हूँ और किसी को नहीं मानता॥२॥ न ही मन्दिर में पूजा करता हूँ और न ही मस्जिद में नमाज पढ़ता हूँ, हृदय में केवल निरंकार की वंदना करता हूँ॥३॥ हम हिन्दू अथवा मुसलमान भी नहीं हैं, यह शरीर प्राण तो उस अल्लाह राम के अपने हैं॥४॥ पाँचवें नानक गुरु अर्जुन देव जी कबीर के हवाले से कहते हैं कि हमने यही बखान किया है, गुरु पीर को मिलकर खुद ही अपने मालिक को पहचान लिया है॥५॥३॥

भैरउ महला ५ ॥ दस मिरगी सहजे बंधि आनी ॥ पांच मिरग बेधे सिव की बानी ॥ १ ॥ संतसंगि ले चड़िओ सिकार ॥ म्रिग पकरे बिनु घोर हथीआर ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आखेर बिरति बाहरि आइओ धाइ ॥ अहेरा पाइओ घर कै गांइ ॥ २ ॥ म्रिग पकरे घरि आणे हाटि ॥ चुख चुख ले गए बांढे बाटि ॥ ३ ॥ एहु अहेरा कीनो दानु ॥ नानक कै घरि केवल नामु ॥ ४ ॥ ४ ॥

दस इन्द्रिय रूपी मृग सहज ही बाँध लिए हैं और पाँच कामादिक विकार रूपी मृगों को शिव-बाण से भेद दिया है॥१॥ सत्संग में जब शिकार के लिए निकला तो बिन हथियारों के ही पाँच मृग पकड़ लिए॥१॥ रहाउ॥ आखेट की वृत्ति पहले बाहर वन इत्यादि से दौड़ रही थी मगर हृदय-घर के गांव में ही शिकार को पा लिया॥२॥ जब मृग पकड़कर घर लौट आए तो सत्संगियों को भी थोड़ा-थोड़ा हिस्सा बांट दिया॥३॥ यह शिकार तो दान कर दिया है, पर नानक के हृदय-घर में केवल हरिनाम ही है॥४॥४॥

भैरउ महला ५ ॥ जे सउ लोचि लोचि खावाइआ ॥ साकत हरि हरि चीति न आइआ ॥ १ ॥ संत जना की लेहु मते ॥ साधसंगि पावहु परम गते ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पाथर कउ बहु नीरु पवाइआ ॥ नह भीगै अधिक सूकाइआ ॥ २ ॥ खटु सासत्र मूरखै सुनाइआ ॥ जैसे दह दिस पवनु झुलाइआ ॥ ३ ॥ बिनु कण खलहानु जैसे गाहन पाइआ ॥ तिउ साकत ते को न बरासाइआ ॥ ४ ॥ तित ही लागा जितु को लाइआ ॥ कहु नानक प्रभि बणत बणाइआ ॥ ५ ॥ ५ ॥

चाहे सैकड़ों बार चाह से खिलाया जाए, फिर भी मायावी जीव को ईश्वर याद नहीं आता॥१॥ हे जीवो! संतजनों की शिक्षा ग्रहण करो और साधुओं की संगत में परमगति पा लो॥१॥ रहाउ॥ कठोर (इन्सान) पत्थर को बहुत जल भी डाला (समझाया) जाए मगर इतना अधिक शुष्क होता है कि वह भीगता ही नहीं॥२॥ मूर्ख को छः शास्त्र सुनाना ऐसे निरर्थक है, जैसे दसों दिशाओं में वायु गुजर जाती है॥३॥ जिस प्रकार दाने के बिना खलिहान के गाहन से कुछ भी नहीं मिलता, वैसे ही मायावी मनुष्य से किसी को फायदा नहीं होता॥४॥ नानक का मत है कि प्रभु ने ऐसा विधान बनाया हुआ है कि जिधर (शुभाशुभ कर्म की तरफ) उसने जीव को लगाया हुआ है, वह उधर ही लगा हुआ है॥५॥५॥

भैरउ महला ५ ॥ जीउ प्राण जिनि रचिओ सरीर ॥ जिनहि उपाए तिस कउ पीर ॥ १ ॥ गुरु गोबिंदु जीअ कै काम ॥ हलति पलति जा की सद छाम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रभु आराधन निरमल रीति ॥ साधसंगि बिनसी बिपरीति ॥ २ ॥ मीत हीत धनु नह पारणा ॥ धंनि धंनि मेरे नाराइणा ॥ ३ ॥ नानकु बोलै अंम्रित बाणी ॥ एक बिना दूजा नही जाणी ॥ ४ ॥ ६ ॥

आत्मा-प्राण देकर जिसने शरीर बनाया है, जिसने पैदा किया है, उसे ही हमारी फिक्र है॥१॥ गुरु-परमेश्वर ही जीव के काम आने वाले हैं और लोक-परलोक में सदा उनका ही आसरा है॥१॥ प्रभु की आराधना ही निर्मल जीवन-आचरण है, साधु पुरुषों की संगत में खोटी बुद्धि नष्ट हो जाती है॥२॥ मित्र-शुभचिंतक अथवा धन-दौलत कोई साथ नहीं देता अपितु अंत तक साथ देने वाला मेरा परमेश्वर धन्य एवं महान् है॥३॥ नानक तो अमृतवाणी ही बोलता है और एक ईश्वर के सिवा अन्य को नहीं मानता॥४॥६॥

भैरउ महला ५ ॥ आगै दयु पाछै नाराइण ॥ मधि भागि हरि प्रेम रसाइण ॥ १ ॥ प्रभू हमारै सासत्र सउण ॥ सूख सहज आनंद ग्रिह भउण ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रसना नामु करन सुणि जीवे ॥ प्रभु सिमरि सिमरि अमर थिरु थीवे ॥ २ ॥ जनम जनम के दूख निवारे ॥ अनहद सबद वजे दरबारे ॥ ३ ॥ करि किरपा प्रभि लीए मिलाए ॥ नानक प्रभ सरणागति आए ॥ ४ ॥ ७ ॥

आगे-पीछे नारायण-स्वरूप परमेश्वर ही है और मध्य भाग में भी उसका प्रेम रस है॥१॥ प्रभु ही हमारे शास्त्र अथवा शगुन है, वही सहज सुख, आनंद देने वाला घर है॥१॥ रहाउ॥ जिह्वा हरिनाम जपकर व कान उसका यश सुनकर जीवन पा रहे हैं, प्रभु का स्मरण कर हम निश्चय हो गए हैं॥२॥ ईश्वर ने जन्म-जन्मांतर के दुखों का निवारण कर दिया है, उसके दरबार में अनाहत शब्द गूंजता रहता है॥३॥ नानक का कथन है कि जब हम प्रभु की शरण में आए तो उसने कृपा करके हमें साथ मिला लिया॥४॥७॥

भैरउ महला ५ ॥ कोटि मनोरथ आवहि हाथ ॥ जम मारग कै संगी पांथ ॥ १ ॥ गंगा जलु गुर गोबिंद नाम ॥ जो सिमरै तिस की गति होवै पीवत बहुड़ि न जोनि भ्रमाम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पूजा जाप ताप इसनान ॥ सिमरत नाम भए निहकाम ॥ २ ॥ राज माल सादन दरबार ॥ सिमरत नाम पूरन आचार ॥ ३ ॥ नानक दास इहु कीआ बीचारु ॥ बिनु हरि नाम मिथिआ सभ छारु ॥ ४ ॥ ८ ॥

करोड़ों मनोरथ पूरे हो जाते हैं, मौत के रास्ते पर भी हरिनाम ही साथ देता है॥१॥ परमेश्वर का नाम गंगा-जल है, जो स्मरण करता है, उसकी मुक्ति हो जाती है और इसका पान करने से पुनः योनि चक्र में नहीं आना पड़ता॥ १॥ रहाउ॥ नाम-स्मरण के सन्मुख तो पूजा-पाठ, जाप-तपस्या, तीर्थ-स्नान भी निष्फल सिद्ध होते हैं॥२॥ राज, माल, महल एवं परिवार का कोई लाभ नहीं, नाम-स्मरण ही पूर्ण आचरण है॥३॥ दास नानक ने यही विचार किया है कि हरिनाम स्मरण के सिवा सब मिथ्या एवं धूल मात्र है॥४॥८॥

भैरउ महला ५ ॥ लेपु न लागो तिल का मूलि ॥ दुसटु ब्राहमणु मूआ होइ कै सूल ॥ १ ॥ हरि जन राखे पारब्रहमि आपि ॥ पापी मूआ गुर परतापि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अपणा खसमु जनि आपि धिआइआ ॥ इआणा पापी ओहु आपि पचाइआ ॥ २ ॥ प्रभ मात पिता अपणे दास का रखवाला ॥ निंदक का माथा ईहां ऊहा काला ॥ ३ ॥ जन नानक की परमेसरि सुणी अरदासि ॥ मलेछु पापी पचिआ भइआ निरासु ॥ ४ ॥ ६ ॥

{उल्लेखनीय है कि एक बार पृथी चंद के अनुरोध पर ब्राह्मण नौकर ने गुरु-पुत्र हरिगोबिंद को जहर दे दिया, परन्तु परब्रह्म की कृपा से ज़हर का कोई असर तो न हुआ अपितु इसके विपरीत ब्राह्मण उदर-शूल के कारण संसार छोड़ गया।}

जहर का किंचित मात्र भी असर नहीं हुआ, पर जहर देने वाला दुष्ट ब्राह्मण उदर-शूल के कारण मृत्यु को प्राप्त हो गया॥१॥ परब्रह्म ने स्वयं ही दास को बचाया है और गुरु के प्रताप से पापी ब्राह्मण मौत की नींद सो गया॥१॥ रहाउ॥ दास ने अपने मालिक का ही ध्यान किया है और वह पापी मूर्ख ब्राह्मण स्वयं ही दुखी होकर मरा है॥२॥ प्रभु हमारा माता-पिता है, वही अपने दास की रक्षा करने वाला है और निंदक का यहाँ (लोक) वहाँ (परलोक) मुँह काला हो गया है॥३॥ नानक का कथन है कि जब परमेश्वर ने अपने दास की प्रार्थना सुनी तो बुरी नीयत वाला पापी हताश हो गया॥४॥६॥

भैरउ महला ५ ॥ खूबु खूबु खूबु खूबु खूबु तेरो नामु ॥ झूठु झूठु झूठु झूठु दुनी गुमानु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नगज तेरे बंदे दीदारु अपारु ॥ नाम बिना सभ दुनीआ छारु ॥ १ ॥ अचरजु तेरी कुदरति तेरे कदम सलाह ॥ गनीव तेरी सिफति सचे पातिसाह ॥ २ ॥ नीधरिआ धर पनह खुदाइ ॥ गरीब निवाजु दिनु रैणि धिआइ ॥ ३ ॥ नानक कउ खुदि खसम मिहरवान ॥ अलहु न विसरै दिल जीअ परान ॥ ४ ॥ १० ॥

हे ईश्वर ! वाह वाह !! तेरा नाम कितना खूब है, यह दुनिया का घमण्ड तो झूठा ही है॥१॥ रहाउ॥ तेरे सेवक बहुत अच्छे हैं और तेरे दीदार भी अपार हैं। प्रभु-नाम के सिवा सारी दुनिया धूल समान है॥१॥ तेरी बनाई कुदरत अद्‌भुत है और तेरे उपकार भी प्रशंसनीय हैं। हे सच्चे बादशाह ! तेरी स्तुति का कोई मूल्य नहीं है॥२॥ हे खुदा ! बेसहारा लोगों का तू ही सहारा है और तू ही उनकी पनाह है। हे गरीब-नवाज ! मैं दिन-रात तेरे ध्यान में लीन रहता हूँ॥३॥ नानक का कथन है कि मालिक खुद ही उस पर मेहरबान है और दिल-प्राण से वह अल्लाह हरगिज नहीं भूलता॥४॥१०॥

भैरउ महला ५ ॥ साच पदारथु गुरमुखि लहहु ॥ प्रभ का भाणा सति करि सहहु ॥ १ ॥ जीवत जीवत जीवत रहहु ॥ राम रसाइणु नित उठि पीवहु ॥ हरि हरि हरि हरि रसना कहहु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कलिजुग महि इक नामि उधारु ॥ नानकु बोलै ब्रहम बीचारु ॥ २ ॥ ११ ॥

प्रभु-नाम रूपी सच्चा पदार्थ गुरु से प्राप्त करो और प्रभु की रज़ा को सत्य समझकर मानो॥१॥ आध्यात्मिक तौर पर जिंदा रहना है तो राम नाम रूपी रसायन का नित्य उठकर पान करो। हे सज्जनो, हरदम जिह्वा से ईश्वर के गुण गाओ॥१॥ रहाउ॥ नानक यही ब्रह्म-विचार बोलता है कि कलियुग में केवल प्रभु-नाम से ही संसार के बन्धनों से उद्धार हो सकता है॥२॥११॥

भैरउ महला ५ ॥ सतिगुरु सेवि सरब फल पाए ॥ जनम जनम की मैलु मिटाए ॥ १ ॥ पतित पावन प्रभ तेरो नाउ ॥ पूरबि करम लिखे गुण गाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साधू संगि होवै उधारु ॥ सोभा पावै प्रभ कै दुआर ॥ २ ॥ सरब कलिआण चरण प्रभ सेवा ॥ धूरि बाछहि सभि सुरि नर देवा ॥ ३ ॥ नानक पाइआ नाम निधानु ॥ हरि जपि जपि उधरिआ सगल जहानु ॥ ४ ॥ १२ ॥

सतगुरु की सेवा करने से सब फल प्राप्त हो जाते हैं और जन्म-जन्मांतर की मैल निवृत्त हो जाती है॥१॥ हे प्रभु ! तेरा नाम पापी जीवों को पावन करनेवाला है और पूर्व कर्मानुसार प्रारब्ध से ही तेरे गुण गाने का सुअवसर प्राप्त होता है॥१॥ रहाउ॥ साधु पुरुषों के संग रहने से उद्धार हो जाता है और इस तरह प्रभु के द्वार पर शोभा प्राप्त होती है॥२॥ प्रभु-चरणों की सेवा से सर्व कल्याण होता है और देवी-देवता एवं मनुष्य भी उसकी चरण-धूलि की आकांक्षा करते हैं॥३॥ नानक का कथन है कि हमने भी हरिनाम रूपी सुखनिधान को पा लिया है, जिसका निरन्तर जाप करके सारे जहान का उद्धार हो गया है॥४॥१२॥

भैरउ महला ५ ॥ अपणे दास कउ कंठि लगावै ॥ निंदक कउ अगनि महि पावै ॥ १ ॥ पापी ते राखे नाराइण ॥ पापी की गति कतहू नाही पापी पचिआ आप कमाइण ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दास राम जीउ लागी प्रीति ॥ निंदक की होई बिपरीति ॥ २ ॥ पारब्रहमि अपणा बिरदु प्रगटाइआ ॥ दोखी अपणा कीता पाइआ ॥ ३ ॥ आइ न जाई रहिआ समाई ॥ नानक दास हरि की सरणाई ॥ ४ ॥ १३ ॥

ईश्वर अपने दास को गले से लगा लेता है, किन्तु निंदक को दुःखों की अग्नि में डाल देता है॥१॥ परमेश्वर ही पापी से बचाता है, पापी की कहीं भी गति नहीं होती और वह अपने किए

कर्मों का ही फल भोगता है॥१॥ रहाउ॥ दास की प्रभु से प्रीति लगी हुई है और निंदक का बहुत बुरा हाल हुआ है॥२॥ परब्रह्म ने अपने विरद् को प्रकट किया है और दोषी ने अपने किए कर्मों की सजा प्राप्त की है॥३॥ ईश्वर न आता है, न ही जाता है, सब में ही समाया रहता है, दास नानक प्रभु की शरण में ही रहता है॥४॥१३॥

रागु भैरउ महला ५ चउपदे घरु २ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

स्रीधर मोहन सगल उपावन निरंकार सुखदाता ॥ ऐसा प्रभु छोडि करहि अन सेवा कवन बिखिआ रस माता ॥ १ ॥ रे मन मेरे तू गोविद भाजु ॥ अवर उपाव सगल मै देखे जो चितवीऐ तितु बिगरसि काजु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ठाकुरु छोडि दासी कउ सिमरहि मनमुख अंध अगिआना ॥ हरि की भगति करहि तिन निंदहि निगुरे पसू समाना ॥ २ ॥ जीउ पिंडु तनु धनु सभु प्रभ का साकत कहते मेरा ॥ अहंबुधि दुरमति है मैली बिनु गुर भवजलि फेरा ॥ ३ ॥ होम जग जप तप सभि संजम तटि तीरथि नही पाइआ ॥ मिटिआ आपु पए सरणाई गुरमुखि नानक जगतु तराइआ ॥ ४ ॥ १ ॥ १४ ॥

सुखदाता निरंकार ब्रह्म ही सबको उत्पन्न करने वाला है। ऐसे प्रभु को छोड़कर विषय-विकारों में मस्त जीव अन्य की ही सेवा करता है॥१॥ हे मेरे मन! तू ईश्वर का भजन-संकीर्तन कर, क्योंकि मैंने अन्य सब उपाय करके देख लिए हैं, अगर उनके बारे में सोचा जाए तो सब कार्य बिगड़ जाते हैं॥१॥ रहाउ॥ अन्धा-अज्ञानी मनमुख, मालिक को छोड़कर उसकी दासी माया को याद करता है, वह प्रभु की भक्ति करने वालों की निंदा करता रहता है, ऐसा निगुरा व्यक्ति पशु समान है॥२॥ यह प्राण, शरीर, तन-धन सब प्रभु का दिया हुआ है, मगर मायावी पुरुष इनको अपना बताता है। अहम् से भरी हुई बुद्धि मलिन है, गुरु के बिना संसार-सागर का चक्र लगा रहता है॥३॥ होम, यज्ञ, जप-तप, संयम एवं तट-तीर्थ से ईश्वर प्राप्त नहीं होता। नानक का फुरमान है कि यदि अहम्-भावना को मिटाकर गुरु की शरण में आया जाए तो जगत से मुक्ति प्राप्त हो जाती है॥४॥१॥१४॥

भैरउ महला ५ ॥ बन महि पेखिओ त्रिण महि पेखिओ ग्रिहि पेखिओ उदासाए ॥ दंडधार जटधारै पेखिओ वरत नेम तीरथाए ॥ १ ॥ संतसंगि पेखिओ मन माएं ॥ ऊभ पइआल सरब महि पूरन रसि मंगल गुण गाए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जोग भेख संनिआसै पेखिओ जति जंगम कापड़ाए ॥ तपी तपीसुर मुनि महि पेखिओ नट नाटिक निरताए ॥ २ ॥ चहु महि पेखिओ खट महि पेखिओ दस असटी सिंम्रिताए ॥ सभ मिलि एको एकु वखानहि तउ किस ते कहउ दुराए ॥ ३ ॥ अगह अगह बेअंत सुआमी नह कीम कीम कीमाए ॥ जन नानक तिन कै बलि बलि जाईऐ जिह घटि परगटीआए ॥ ४ ॥ २ ॥ १५ ॥

वनों में देखा, तृण में ढूँढा, गृहस्थी एवं उदासीन में देखा, दण्डी, जटाधारी योगियों, व्रत, नियम एवं तीर्थों में उसे खोजा॥१॥ मगर जब संतों का संग पाया तो उसे मन में ही देख लिया। आकाश-पाताल सबमें पूर्ण रूप से व्याप्त ईश्वर के ही गुण गाए हैं॥१॥ रहाउ॥ योगियों, वेषधारी, सन्यासी, ब्रह्मचारी, दिगम्बर, कापड़िए के रूप में उसे ढूँढा, तपस्वी, तपीश्वर, मुनियों, नाट्य, नाटक, नृत्य में उसको खोजा॥२॥ चार वेदों, छः शास्त्रों, अठारह पुराणों में उसकी खोज-पड़ताल की। सब ने मिलकर केवल उस एक का ही बखान किया है, तब वह किससे दूर कहा जा सकता

है॥३॥ परमात्मा अगम्य, अपहुँच, बेअंत है, उसकी कीमत को आंका नहीं जा सकता। जिसके दिल में ईश्वर प्रगट हो गया है, नानक तो उस पर बलिहारी जाता है॥४॥२॥१५॥

भैरउ महला ५ ॥ निकटि बुझै सो बुरा किउ करै ॥ बिखु संचै नित डरता फिरै ॥ है निकटे अरु भेदु न पाइआ ॥ बिनु सतिगुर सभ मोही माइआ ॥ १ ॥ नेड़ै नेड़ै सभु को कहै ॥ गुरमुखि भेदु विरला को लहै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ निकटि न देखै पर ग्रिहि जाइ ॥ दरबु हिरै मिथिआ करि खाइ ॥ पई ठगउरी हरि संगि न जानिआ ॥ बाझु गुरू है भरमि भुलानिआ ॥ २ ॥ निकटि न जानै बोलै कूड़ु ॥ माइआ मोहि मूठा है मूड़ु ॥ अंतरि वसतु दिसंतरि जाइ ॥ बाझु गुरू है भरमि भुलाइ ॥ ३ ॥ जिसु मसतकि करमु लिखिआ लिलाट ॥ सतिगुरु सेवे खुल्हे कपाट ॥ अंतरि बाहरि निकटे सोइ ॥ जन नानक आवै न जावै कोइ ॥ ४ ॥ ३ ॥ १६ ॥

ईश्वर को समीप माननेवाला किसी का बुरा कैसे कर सकता है? परन्तु पापों का जहर इकट्ठा करने वाला नित्य डरता रहता है। ईश्वर निकट ही है, मगर इसका रहस्य प्राप्त नहीं होता, वास्तव में सतगुरु के बिना सब लोग माया में मोहित रहते हैं॥१॥ हर साधारण व्यक्ति उसे निकट ही बताता है, मगर कोई विरला ही गुरु से इस रहस्य को प्राप्त करता है॥१॥ रहाउ॥ जो उसे निकट नहीं देखते, वे पराये घर ही जाते हैं। वे धन-दौलत छीनकर झूठा जीवन बिताते हैं। वे माया में ठगकर ईश्वर को आस-पास नहीं समझते और गुरु के बिना भ्रम में भूले रहते हैं॥२॥ जो प्रभु को पास नहीं मानता, वह झूठ ही बोलता है। दरअसल मूर्ख व्यक्ति माया के मोह में ठगा हुआ है। सच्ची वस्तु तो अन्तर्मन में ही है, मगर वह दूर-दूर जाकर ढूँढता है। गुरु बिना वह भ्रम में भूला हुआ है॥३॥ जिसके भाग्य में लिखा होता है, वही सतगुरु की सेवा करता है और उसके मन के कपाट खुल जाते हैं। अन्तर-बाहर और समीप ईश्वर ही है, हे नानक! वह कहीं आता-जाता नहीं॥४॥३॥१६॥

भैरउ महला ५ ॥ जिसु तू राखहि तिसु कउनु मारै ॥ सभ तुझ ही अंतरि सगल संसारै ॥ कोटि उपाव चितवत है प्राणी ॥ सो होवै जि करै चोज विडाणी ॥ १ ॥ राखहु राखहु किरपा धारि ॥ तेरी सरणि तेरै दरवारि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिनि सेविआ निरभउ सुखदाता ॥ तिनि भउ दूरि कीआ एकु पराता ॥ जो तू करहि सोई फुनि होइ ॥ मारै न राखै दूजा कोइ ॥ २ ॥ किआ तू सोचहि माणस बाणि ॥ अंतरजामी पुरखु सुजाणु ॥ एक टेक एको आधारु ॥ सभ किछु जाणै सिरजणहारु ॥ ३ ॥ जिसु ऊपरि नदरि करे करतारु ॥ तिसु जन के सभि काज सवारि ॥ तिस का राखा एको सोइ ॥ जन नानक अपड़ि न साकै कोइ ॥ ४ ॥ ४ ॥ १७ ॥

हे प्रभु! जिसे तू बचाने वाला है, उसे भला कौन मार सकता है? समूचा संसार तेरे अधीन है। प्राणी बेशक कितने ही उपाय सोचता रहता है, मगर होता वही है, जो परमात्मा करता है॥१॥ हे भगवान! कृपा कर के रक्षा करो, हम तेरे दरबार में तेरी शरण आए हैं॥१॥ रहाउ॥ जिसने सुखदाता निर्भय प्रभु की उपासना की है, उसका भय दूर हो गया है और उसने एक ब्रह्म को पहचान लिया है। हे परब्रह्म! जो तू करता है, वही होता है, तेरे अतिरिक्त कोई दूसरा मारने अथवा बचाने वाला नहीं॥२॥ हे मनुष्य! स्वभावानुसार तू क्या सोचता है? अन्तर्यामी प्रभु बड़ा समझदार है। केवल वही हमारा आसरा है और एकमात्र वही सबका आधार है, वह सृजनहार सब कुछ जानता है॥३॥ जिस पर ईश्वर मेहर करता है, उसके सब कार्य सम्पन्न हो जाते हैं। हे नानक! उसकी रक्षा करने वाली केवल वही परम शक्ति है, जिस तक कोई पहुँच नहीं सकता॥४॥४॥१७॥

भैरउ महला ५ ॥ तउ कड़ीऐ जे होवै बाहरि ॥ तउ कड़ीऐ जे विसरै नरहरि ॥ तउ कड़ीऐ जे दूजा भाए ॥ किआ कड़ीऐ जां रहिआ समाए ॥ १ ॥ माइआ मोहि कड़े कड़ि पचिआ ॥ बिनु नावै भ्रमि भ्रमि भ्रमि खपिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तउ कड़ीऐ जे दूजा करता ॥ तउ कड़ीऐ जे अनिआइ को मरता ॥ तउ कड़ीऐ जे किछु जाणै नाही ॥ किआ कड़ीऐ जां भरपूरि समाही ॥ २ ॥ तउ कड़ीऐ जे किछु होइ धिङाणै ॥ तउ कड़ीऐ जे भूलि रंञाणै ॥ गुरि कहिआ जो होइ सभु प्रभ ते ॥ तब काड़ा छोडि अचिंत हम सोते ॥ ३ ॥ प्रभ तूहै ठाकुरु सभु को तेरा ॥ जिउ भावै तिउ करहि निबेरा ॥ दुतीआ नासति इकु रहिआ समाइ ॥ राखहु पैज नानक सरणाइ ॥ ४ ॥ ५ ॥ १८ ॥

दर्द तो हमें तब हो, अगर ईश्वर हमसे कहीं बाहर है अथवा तो ही हम दुखी होते हैं, जब भगवान भूल जाता है। अगर द्वैतभाव में आसक्त हो जाएँ तो पीड़ा होती है। जब प्रभु सबमें व्याप्त है तो दर्द किस तरह होगा ?॥ १॥ माया-मोह में फँसकर जीव दुःख ही पाता है और प्रभु-नाम के बिना भ्रम में खपता है॥ १॥रहाउ॥ दुःखी तब होते हैं अगर कोई अन्य कर्त्ता है। अगर कोई बुरी मौत मरता है तो बड़ा दुःख होता है। जब कुछ जानता ही नहीं तो दुख की अनुभूति होती है। ईश्वर सबमें भरपूर रूप से व्याप्त है, फिर भला कैसे तकलीफ हो सकती है॥ २॥ अगर कुछ जुल्म अथवा जबरदस्ती हो जाए तो हम दुःख के शिकार होते हैं, अगर कोई गलती से किसी को सताता है तो भी हमें दर्द होता है। गुरु ने यही सत्य बताया है कि जो होता सब प्रभु की इच्छा से ही होता है। तब सब दुख-परेशानियों को छोड़कर हम निश्चिंत होकर सोते हैं॥ ३॥ हे प्रभु ! तू सबका मालिक है और सब तेरा ही बनाया हुआ है। जैसा तुझे उचित लगता है, वैसा ही निपटारा करता है। दूसरा कोई नहीं, केवल वही सर्वव्यापक है। हे ईश्वर ! नानक की प्रार्थना है कि शरण में आने वाले की लाज रखो॥ ४॥ ५॥ १८॥

भैरउ महला ५ ॥ बिनु बाजे कैसो निरतिकारी ॥ बिनु कंठै कैसे गावनहारी ॥ जील बिना कैसे बजै रबाब ॥ नाम बिना बिरथे सभि काज ॥ १ ॥ नाम बिना कहहु को तरिआ ॥ बिनु सतिगुर कैसे पारि परिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बिनु जिहवा कहा को बकता ॥ बिनु स्रवना कहा को सुनता ॥ बिनु नेत्रा कहा को पेखै ॥ नाम बिना नरु कही न लेखै ॥ २ ॥ बिनु बिदिआ कहा कोई पंडित ॥ बिनु अमरै कैसे राज मंडित ॥ बिनु बूझे कहा मनु ठहराना ॥ नाम बिना सभु जगु बउराना ॥ ३ ॥ बिनु बैराग कहा बैरागी ॥ बिनु हउ तिआगि कहा कोऊ तिआगी ॥ बिनु बसि पंच कहा मन चूरे ॥ नाम बिना सद सद ही झूरे ॥ ४ ॥ बिनु गुर दीखिआ कैसे गिआनु ॥ बिनु पेखे कहु कैसो धिआनु ॥ बिनु भै कथनी सरब बिकार ॥ कहु नानक दर का बीचार ॥ ५ ॥ ६ ॥ १९ ॥

संगीत के बिना कैसे नृत्य किया जा सकता है और कण्ठ के बिना कैसे गाया जा सकता है। जील बिना रबाब भी बजाया नहीं जा सकता, वैसे प्रभु नाम स्मरण के बिना सब कार्य विफल हो जाते हैं॥ १॥ बताओ, नाम बिना किसकी मुक्ति हुई है, सच्चे गुरु के बिना कोई संसार-सागर से पार नहीं हो सका॥ १॥ रहाउ॥ जिस प्रकार जीभ के बिना कोई बोल नहीं सकता, कानों के बिना कोई सुन नहीं सकता। आँखों के बिना कोई देख नहीं सकता, वैसे ही प्रभु-नाम के बिना मनुष्य का कोई वजूद नहीं॥ २॥ विद्या के बिना कोई पण्डित अथवा विद्वान नहीं बनता। ताकत अथवा अधिकार के बिना कैसे कोई शासन कर सकता है। ज्ञान के बिना मन स्थिर नहीं होता, प्रभु नाम स्मरण बिना समूचा जगत बावला है॥ ३॥ वैराग्य के बिना कोई वैरागी नहीं कहलाता और अहम

का त्याग किए बिना कैसे कोई त्यागी हो सकता है। ज्यों कामादिक पाँच इन्द्रियों को वशीभूत किए बिना मन स्थिर नहीं होता, इसी तरह प्रभु नाम के चिंतन बिना मनुष्य सदैव कष्ट पाता है॥ ४॥ गुरु दीक्षा के बिना ज्ञान कैसे संभव है? बिना देखे ध्यान भी नहीं लग सकता। बिना भय के कथनी में सब विकार ही हैं। हे नानक! अतः सच्चे द्वार (प्रभु) का चिंतन करो॥ ५॥ ६॥१६॥

भैरउ महला ५ ॥ हउमै रोगु मानुख कउ दीना ॥ काम रोगि मैगलु बसि लीना ॥ द्रिसटि रोगि पचि मुए पतंगा ॥ नाद रोगि खपि गए कुरंगा ॥ १ ॥ जो जो दीसै सो सो रोगी ॥ रोग रहित मेरा सतिगुरु जोगी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिहवा रोगि मीनु ग्रसिआनो ॥ बासन रोगि भवरु बिनसानो ॥ हेत रोग का सगल संसारा ॥ त्रिबिधि रोग महि बधे बिकारा ॥ २ ॥ रोगे मरता रोगे जनमै ॥ रोगे फिरि फिरि जोनी भरमै ॥ रोग बंध रहनु रती न पावै ॥ बिनु सतिगुर रोगु कतहि न जावै ॥ ३ ॥ पारब्रहमि जिसु कीनी दइआ ॥ बाह पकड़ि रोगहु कढि लइआ ॥ तूटे बंधन साधसंगु पाइआ ॥ कहु नानक गुरि रोगु मिटाइआ ॥ ४ ॥ ७ ॥ २० ॥

अहम् रोग मनुष्य को दिया है, कामवासना के रोग के कारण हाथी कैद में फँस जाता है। दृष्टि रोग के परिणामस्वरूप पतंगा जलकर नष्ट हो जाता है और हिरण संगीत के स्वर रोग के कारण दुखी होता है॥ १॥ संसार में जो जो दिखाई दे रहा है, वही रोगी है। मगर मेरा योगी सतगुरु सब रोगों से रहित है॥ १॥ रहाउ॥ जीभ के रोग के कारण मछली जाल में फँस जाती है, भँवरा सुगन्धि रोग के कारण नष्ट हो जाता है। समूचे संसार को मोह-प्रेम का रोग लगा हुआ है और तीन गुणों के रोग में पड़कर विकारों में और भी वृद्धि होती है॥ २॥ जीव रोग में ही मरता है और रोग में ही जन्म लेता है। रोगों के कारण ही पुनः पुनः योनि चक्र में घूमता है। रोगों के बन्धन में पड़कर उसे बिल्कुल भी ठिकाना नहीं मिलता और सतगुरु के बिना उसके रोग कदापि दूर नहीं होते॥ ३॥ परब्रह्म ने जिस पर भी दया की है, उसे बाँह से पकड़कर रोगों से मुक्त कर दिया है। साधु पुरुषों का साथ पाने से सब बन्धन टूटते हैं। हे नानक! गुरु ने सब रोगों को मिटाया है॥ ४॥ ७॥ २०॥

भैरउ महला ५ ॥ चीति आवै तां महा अनंद ॥ चीति आवै तां सभि दुख भंज ॥ चीति आवै तां सरधा पूरी ॥ चीति आवै तां कबहि न झूरी ॥ १ ॥ अंतरि राम राइ प्रगटे आइ ॥ गुरि पूरै दीओ रंगु लाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चीति आवै तां सरब को राजा ॥ चीति आवै तां पूरे काजा ॥ चीति आवै तां रंगि गुलाल ॥ चीति आवै तां सदा निहाल ॥ २ ॥ चीति आवै तां सद धनवंता ॥ चीति आवै तां सद निभरंता ॥ चीति आवै तां सभि रंग माणे ॥ चीति आवै तां चूकी काणे ॥ ३ ॥ चीति आवै तां सहज घरु पाइआ ॥ चीति आवै तां सुंनि समाइआ ॥ चीति आवै सद कीरतनु करता ॥ मनु मानिआ नानक भगवंता ॥ ४ ॥ ८ ॥ २१॥

ईश्वर स्मरण आए तो परम आनंद प्राप्त होता है, प्रभु याद आ जाए तो सब दुःख नष्ट हो जाते हैं। मन में प्रभु की स्मृति बनी रहे तो हर श्रद्धा पूरी हो जाती है, उसकी याद आने से कभी परेशान नहीं होना पड़ता॥ १॥ पूरे गुरु ने जब ईश्वर की लगन में लगाया तो वह मन में ही प्रगट हो गया॥ १॥ रहाउ॥ अगर प्रभु याद आए तो मनुष्य सबका राजा बन जाता है, प्रभु की याद आती रहे तो सब कार्य सम्पन्न हो जाते हैं। भगवान स्मरण आए तो प्रेम का रंग चढ़ा रहता है, प्रभु का चिन्तन हो तो जीव सदा आनंदित रहता है॥ २॥ ईश्वर याद आता रहे तो मनुष्य सदा

धनवान् बना रहता है, परमात्मा का ध्यान हो तो सदा आत्म-निर्भर रहता है। परमेश्वर स्मरण आता रहे तो सब खुशियाँ प्राप्त होती हैं, प्रभु का ध्यान हो तो लोगों पर निर्भर रहने की जरूरत नहीं पड़ती॥३॥ ईश्वर याद आए तो सहज ही सच्चा घर प्राप्त हो जाता है, उसकी स्मृति बनी रहे तो शून्यावस्था में लीन हो जाता है। अगर प्रभु याद आता रहे तो जीव सदैव उसका कीर्तन करता रहता है। नानक फुरमाते हैं कि इस तरह मन भगवान में लीन रहकर आनंदित हो जाता है॥४॥८॥२१॥

भैरउ महला ५ ॥ बापु हमारा सद चरंजीवी ॥ भाई हमारे सद ही जीवी ॥ मीत हमारे सदा अबिनासी ॥ कुटंबु हमारा निज घरि वासी ॥ १ ॥ हम सुखु पाइआ तां सभहि सुहेले ॥ गुरि पूरै पिता संगि मेले ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मंदर मेरे सभ ते ऊचे ॥ देस मेरे बेअंत अपूछे ॥ राजु हमारा सद ही निहचलु ॥ मालु हमारा अखूटु अबेचलु ॥ २ ॥ सोभा मेरी सभ जुग अंतरि ॥ बाज हमारी थान थनंतरि ॥ कीरति हमरी घरि घरि होई ॥ भगति हमारी सभनी लोई ॥ ३ ॥ पिता हमारे प्रगटे माझ ॥ पिता पूत रलि कीनी सांझ ॥ कहु नानक जउ पिता पतीने ॥ पिता पूत एकै रंगि लीने ॥ ४ ॥ ६ ॥ २२ ॥

हमारा पिता परमेश्वर सदैव चिरंजीव है, हमारे भाई-बंधु सदा जीवन पा रहे हैं, हमारे मित्र सदा अविनाशी हो गए। हमारा पूरा परिवार सच्चे घर में रह रहा है॥१॥ हमें परम सुख उपलब्ध हुआ तो सभी सुखी हो गए। पूरे गुरु ने पिता परमेश्वर के साथ मिला दिया है॥१॥रहाउ॥ मेरा घर सबसे ऊँचा है, देश मेरा अनंत है, कोई पूछताछ नहीं। हमारा राज्य निश्चय हो गया है और हमारा माल अक्षुण्ण अप्रभावित है॥२॥ पूरे जगत में मेरी शोभा हो गई है, देश-दिशांतर हमारी प्रतिष्ठा बनी है। घर-घर में हमारी कीर्ति फैली है और सब लोगों में हमारी भक्ति का प्रचार हो गया है॥३॥ हमारे अन्तर्मन में ही पिता प्रभु प्रगट हो गया है, अब पिता-पुत्र ने मिलकर साझ कर ली है। नानक फुरमाते हैं कि अगर पिता खुश हो जाए तो वह अपने पुत्र को अपने रंग में लीन कर लेता है॥४॥६॥२२॥

भैरउ महला ५ ॥ निरवैर पुरख सतिगुर प्रभ दाते ॥ हम अपराधी तुम्ह बखसाते ॥ जिसु पापी कउ मिलै न ढोई ॥ सरणि आवै तां निरमलु होई ॥ १ ॥ सुखु पाइआ सतिगुरू मनाइ ॥ सभ फल पाए गुरू धिआइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पारब्रहम सतिगुर आदेसु ॥ मनु तनु तेरा सभु तेरा देसु ॥ चूका पड़दा तां नदरी आइआ ॥ खसमु तूहै सभना के राइआ ॥ २ ॥ तिसु भाणा सूके कासट हरिआ ॥ तिसु भाणा तां थल सिरि सरिआ ॥ तिसु भाणा तां सभि फल पाए ॥ चिंत गई लगि सतिगुर पाए ॥ ३ ॥ हरामखोर निरगुण कउ तूठा ॥ मनु तनु सीतलु मनि अंम्रितु वूठा ॥ पारब्रहम गुर भए दइआला ॥ नानक दास देखि भए निहाला ॥ ४ ॥ १० ॥ २३ ॥

हे सतगुरु प्रभु! तू प्रेमस्वरूप, परमपुरुष एवं दाता है, हम तो अपराधी हैं और तू ही हमें क्षमा करने वाला है। जिस पापी व्यक्ति को कहीं आसरा नहीं मिलता, अगर तेरी शरण में आ जाए तो पाप-मुक्त होकर निर्मल हो जाता है॥१॥ सतगुरु को मनाकर सुख प्राप्त हुआ है और गुरु का ध्यान करने से सब फल पा लिए हैं॥१॥ रहाउ॥ हे परब्रह्म सतगुरु! तुम्हें शत्-शत् नमन है, यह मन तन सब तेरी ही देन है। भ्रम का पर्दा हटा तो तू नजर आया। हे विश्व के बादशाह! तू ही सबका मालिक है॥२॥ अगर उसकी रज़ा हो तो सूखी लकड़ी हरी हो जाती है, अगर उसकी इच्छा हो तो सूखा सरोवर जल से भर जाता है, उसकी मर्जी हो तो सब फल प्राप्त हो जाते हैं,

सतगुरु के चरणों में लगने से चिंता दूर हो जाती है॥ ३॥ अगर वह किसी हरामखोर एवं गुणविहीन पुरुष पर प्रसन्न हो जाता है तो उसका मन-तन शीतल हो जाता है और उसके मन में अमृत स्थित हो जाता है। परब्रह्म गुरु उस पर दयालु हो गया है, दास नानक उसकी दया-दृष्टि को देखकर आनंदित हो गया है॥ ४॥ १०॥ २३॥

भैरउ महला ५ ॥ सतिगुरु मेरा बेमुहताजु ॥ सतिगुर मेरे सचा साजु ॥ सतिगुरु मेरा सभस का दाता ॥ सतिगुरु मेरा पुरखु बिधाता ॥ १ ॥ गुर जैसा नाही को देव ॥ जिसु मसतकि भागु सु लागा सेव ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतिगुरु मेरा सरब प्रतिपालै ॥ सतिगुरु मेरा मारि जीवालै ॥ सतिगुर मेरे की वडिआई ॥ प्रगटु भई है सभनी थाई ॥ २ ॥ सतिगुरु मेरा ताणु निताणु ॥ सतिगुरु मेरा घरि दीबाणु ॥ सतिगुर कै हउ सद बलि जाइआ ॥ प्रगटु मारगु जिनि करि दिखलाइआ ॥ ३ ॥ जिनि गुरु सेविआ तिसु भउ न बिआपै ॥ जिनि गुरु सेविआ तिसु दुखु न संतापै ॥ नानक सोधे सिंम्रिति बेद ॥ पारब्रहम गुर नाही भेद ॥ ४ ॥ ११ ॥ २४ ॥

मेरा सतगुरु किसी पर निर्भर नहीं, उसका कार्य भी सच्चा है। मेरा सतगुरु सबको देने वाला है और वही मेरा विधाता है॥ १॥ गुरु जैसा पूज्य देवता कोई नहीं, जिसके माथे पर भाग्य है, वही उसकी सेवा में तल्लीन होता है॥ १॥रहाउ॥मेरा सतगुरु सब का पोषण करता है, वही मारने-जिंदा करने वाला है। मेरे सतगुरु की कीर्ति सारे संसार में फैल गई है॥ २॥ मेरा सतगुरु बलहीनों का बल है और वही मेरा घर अवलम्ब है। मैं सतगुरु पर सदैव बलिहारी जाता हूँ, जिसने सच्चा मार्ग दिखा दिया है॥ ३॥ जिसने गुरु की सेवा की है, उसे कोई भय नहीं छूता। गुरु की आराधना करने वाले जीव को कोई दुख अथवा संताप विचलित नहीं करता। नानक फुरमाते हैं कि वेदों एवं स्मृतियों का विश्लेषण कर यही परिणाम मिला है कि परब्रह्म एवं गुरु में कोई भेद नहीं॥ ४॥ ११॥ २४॥

भैरउ महला ५ ॥ नामु लैत मनु परगटु भइआ ॥ नामु लैत पापु तन ते गइआ ॥ नामु लैत सगल पुरबाइआ ॥ नामु लैत अठसठि मजनाइआ ॥ १ ॥ तीरथु हमरा हरि को नामु ॥ गुरि उपदेसिआ ततु गिआनु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नामु लैत दुखु दूरि पराना ॥ नामु लैत अति मूड़ सुगिआना ॥ नामु लैत परगटि उजीआरा ॥ नामु लैत छुटे जंजारा ॥ २ ॥ नामु लैत जमु नेड़ि न आवै ॥ नामु लैत दरगह सुखु पावै ॥ नामु लैत प्रभु कहै साबासि ॥ नामु हमारी साची रासि ॥ ३ ॥ गुरि उपदेसु कहिओ इहु सारु ॥ हरि कीरति मन नामु अधारु ॥ नानक उधरे नाम पुनहचार ॥ अवरि करम लोकह पतीआर ॥ ४ ॥ १२ ॥ २५ ॥

ईश्वर का नाम लेने से वह मन में ही प्रगट हो गया है, प्रभु का नाम जपने से तन के पाप निवृत्त हो गए हैं। हरिनाम जपने से सब पर्वो का फल प्राप्त होता है, प्रभु नाम के जाप से अड़सठ तीर्थों में स्नान हो जाता है॥ १॥ प्रभु का नाम जपना ही हमारा तीर्थ है और गुरु ने उपदेश देकर यही तत्व ज्ञान बताया है॥ १॥ रहाउ॥ हरिनाम के जाप से सब दुःख दूर हो जाते हैं, प्रभु का नाम लेने से मूर्ख भी ज्ञानवान बन जाता है। नाम-स्मरण से मन में ज्ञान का उजाला हो जाता है। प्रभु नाम का जाप करने से सब जंजालों से छुटकारा हो जाता है॥ २॥ नाम जपने से यम भी पास नहीं आता, हरिनाम-स्मरण करने से प्रभु-दरबार में सुख प्राप्त होता है। नाम जपने वाले भक्त की प्रभु श्लाघा करता है, अतः प्रभु-नाम ही हमारी सच्ची जीवन-राशि है॥ ३॥ गुरु ने उपदेश देकर यही सार बताया है कि हरिनाम का कीर्ति-गान ही मन का आसरा है। हे नानक ! प्रभु-नाम के जाप से प्रायश्चित है, अन्य कर्मकाण्ड तो लोगों को खुश करने के लिए हैं॥ ४॥ १२॥ २५॥

भैरउ महला ५ ॥ नमसकार ता कउ लख बार ॥ इहु मनु दीजै ता कउ वारि ॥ सिमरनि ता कै मिटहि संताप ॥ होइ अनंदु न विआपहि ताप ॥ १ ॥ ऐसो हीरा निरमल नाम ॥ जासु जपत पूरन सभि काम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा की द्रिसटि दुख डेरा ढहै ॥ अंम्रित नामु सीतलु मनि गहै ॥ अनिक भगत जा के चरन पूजारी ॥ सगल मनोरथ पूरनहारी ॥ २ ॥ खिन महि ऊणे सुभर भरिआ ॥ खिन महि सूके कीने हरिआ ॥ खिन महि निथावे कउ दीनो थानु ॥ खिन महि निमाणे कउ दीनो मानु ॥ ३ ॥ सभ महि एकु रहिआ भरपूरा ॥ सो जापै जिसु सतिगुरु पूरा ॥ हरि कीरतनु ता को आधारु ॥ कहु नानक जिसु आपि दइआरु ॥ ४ ॥ १३ ॥ २६ ॥

लाखों बार ईश्वर को नमस्कार है, यह मन भी उसे न्यौछावर कर देना चाहिए। उसका स्मरण करने से सब संताप मिट जाते हैं एवं ताप निवृत्त होकर आनंद प्राप्त होता है॥ १॥ प्रभु का निर्मल नाम ऐसा अमोल हीरा है, जिसका जाप करने से सभी कार्य पूर्ण हो जाते हैं॥ १॥ रहाउ॥ जिसकी करुणा-दृष्टि से दुःखों का पहाड़ नष्ट हो जाता है और मन अमृतमय शीतल नाम को लेता है। अनेकानेक भक्त जिसके चरणों के पुजारी हैं, वह उनके सब मनोरथ पूर्ण करनेवाला है॥ २॥ ईश्वर की लीला इतनी विचित्र है कि वह पल में खाली चीजों को पूर्ण रूप से भर देता है, पल में ही सूखी धरती को हरा-भरा कर देता है। वह पल में ही बेसहारा को सहारा दे देता है और पल में ही सम्मानहीन को सम्मान प्रदान करता है॥ ३॥ सबमें एक परब्रह्म ही पूर्ण रूप से भरपूर है। जिसे पूर्ण सतगुरु प्राप्त हो जाता है, वही उसका जाप करता है। हे नानक ! जिस पर दयालु हो जाता है, प्रभु का कीर्तन ही उसका आसरा बन जाता है॥ ४॥ १३॥ २६॥

भैरउ महला ५ ॥ मोहि दुहागनि आपि सीगारी ॥ रूप रंग दे नामि सवारी ॥ मिटिओ दुखु अरु सगल संताप ॥ गुर होए मेरे माई बाप ॥ १ ॥ सखी सहेरी मेरै ग्रसति अनंद ॥ करि किरपा भेटे मोहि कंत ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तपति बुझी पूरन सभ आसा ॥ मिटे अंधेर भए परगासा ॥ अनहद सबद अचरज बिसमाद ॥ गुरु पूरा पूरा परसाद ॥ २ ॥ जा कउ प्रगट भए गोपाल ॥ ता कै दरसनि सदा निहाल ॥ सरब गुणा ता कै बहुतु निधान ॥ जा कउ सतिगुरि दीओ नामु ॥ ३ ॥ जा कउ भेटिओ ठाकुरु अपना ॥ मनु तनु सीतलु हरि हरि जपना ॥ कहु नानक जो जन प्रभ भाए ॥ ता की रेनु बिरला को पाए ॥ ४ ॥ १४ ॥ २७ ॥

मुझ दुहागिन का प्रभु ने स्वयं ही श्रृंगार किया है और रूप-रंग देकर नाम से संवार दिया है। जब गुरु मेरे माई बाप (संरक्षक) बन गए तो सभी दुःख और संताप मिट गए॥ १॥ हे सखी सहेलियो ! कृपा कर के मुझे पति-प्रभु मिल गया है, अतः मेरे हृदय-घर में आनंद ही आनंद है॥ १॥ रहाउ॥ मेरी जलन बुझ गई है, सब आशाएँ पूर्ण हो गई हैं। अन्धेरा मिटकर प्रकाश हो गया है। पूर्ण गुरु की पूर्ण कृपा से अनाहत शब्द का श्रवण अद्भुत व आनंदमय बन गया है॥ २॥ जिसके मन में प्रभु प्रगट हो जाता है, उसके दर्शन से जीव सदा के लिए निहाल हो जाता है। जिसे सतगुरु प्रभु-नाम की देन प्रदान करता है, उसके ही पास सर्वगुणों के अनेक भण्डार हैं॥ ३॥ जिसे ईश्वर मिल जाता है, प्रभु को जपकर उसका मन तन शीतल हो जाता है। हे नानक ! जो संतजन प्रभु को अच्छे लगते हैं, उनकी चरणरज कोई विरला ही पाता है॥ ४॥ १४॥ २७॥

भैरउ महला ५ ॥ चितवत पाप न आलकु आवै ॥ बेसुआ भजत किछु नह सरमावै ॥ सारो दिनसु मजूरी करै ॥ हरि सिमरन की वेला बजर सिरि परै ॥ १ ॥ माइआ लगि भूलो संसारु ॥ आपि भुलाइआ भुलावणहारै राचि रहिआ बिरथा बिउहार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पेखत माइआ रंग बिहाइ ॥ गड़बड़ करै कउडी रंगु लाइ ॥ अंध बिउहार बंध मनु धावै ॥ करणैहारु न जीअ महि आवै ॥ २ ॥ करत करत इव ही दुखु पाइआ ॥ पूरन होत न कारज माइआ ॥ कामि क्रोधि लोभि मनु लीना ॥ तड़फि मूआ जिउ जल बिनु मीना ॥ ३ ॥ जिस के राखे होए हरि आपि ॥ हरि हरि नामु सदा जपु जापि ॥ साधसंगि हरि के गुण गाइआ ॥ नानक सतिगुरु पूरा पाइआ ॥ ४ ॥ १५ ॥ २८ ॥

पाप करने में जरा-सा आलस्य नहीं करता, वेश्या से भोग करने में थोड़ी-सी भी शर्म नहीं आती, धन पाने के लिए सारा दिन मेहनत-मजदूरी करता है, परन्तु ईश्वर स्मरण के समय सिर पर वज्र पड़ता है॥१॥ माया-मोह में लीन होकर सारा संसार भूला हुआ है। दरअसल भुलाने वाले ईश्वर ने इसे स्वयं ही भुलाया हुआ है और वह व्यर्थ ही इन कार्यों में रचा हुआ है॥ १॥ रहाउ॥ माया के रंग देखते पूरी जिन्दगी गुजर जाती है। जीव एक कौड़ी से लगाव लगाकर हिसाब में गड़बड़ करता है, अन्ध व्यवहार में बंधा हुआ मन दौड़ता रहता है, मगर बनानेवाला परमेश्वर दिल में याद ही नहीं आता॥२॥ ऐसे करते-करते ही दुःख प्राप्त करता है और माया के मोह में फँसकर इसका कार्य पूर्ण नहीं होता। मन केवल काम-क्रोध एवं लोभ में ही आसक्त रहता है और जल बिन मछली की तरह तड़पता हुआ मरता है॥३॥ जिसका रखवाला स्वयं ईश्वर होता है, वह सदा प्रभु का भजन करता है। साधु-संतों की संगत में जिसने परमात्मा का गुणगान किया है, हे नानक! उसने पूर्ण सतगुरु को पा लिया है॥४॥१५॥२८॥

भैरउ महला ५ ॥ अप्रणी दइआ करे सो पाए ॥ हरि का नामु मंनि वसाए ॥ साच सबदु हिरदे मन माहि ॥ जनम जनम के किलविख जाहि ॥ १ ॥ राम नामु जीअ को आधारु ॥ गुर परसादि जपहु नित भाई तारि लए सागर संसारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिन कउ लिखिआ हरि एहु निधानु ॥ से जन दरगह पावहि मानु ॥ सूख सहज आनंद गुण गाउ ॥ आगै मिलै निथावे थाउ ॥ २ ॥ जुगह जुगंतरि इहु ततु सारु ॥ हरि सिमरणु साचा बीचारु ॥ जिसु लड़ि लाइ लए सो लागै ॥ जनम जनम का सोइआ जागै ॥ ३ ॥ तेरे भगत भगतन का आपि ॥ अपणी महिमा आपे जापि ॥ जीअ जंत सभि तेरै हाथि ॥ नानक के प्रभ सद ही साथि ॥ ४ ॥ १६ ॥ २६ ॥

जिस पर ईश्वर दया करता है, वही उसे पाता है और प्रभु का नाम उसके मन में बसाता है। जिसके मन में सच्चा शब्द स्थित होता है, उसके जन्म-जन्मांतर के पाप दूर हो जाते हैं॥१॥ राम-नाम ही हमारे प्राणों का आधार है। हे भाई! गुरु की कृपा से नित्य हरि नाम जपो और संसार-सागर से मुक्ति पा लो॥१॥रहाउ॥ जिनके भाग्य में हरि-नाम रूपी निधि को पाना लिखा है, वही भक्तगण प्रभु-दरबार में शोभा पाते हैं। सहज-स्वभाव आनंदपूर्वक ईश्वर का गुणगान करो, इससे आगे निराश्रय को भी आश्रय मिल जाएगा॥२॥ युग-युगान्तर से यही सार तत्व है कि ईश्वर का स्मरण ही सच्चा विचार है। ईश्वर जिसे अपनी लगन में लगा लेता है, वही लगता है और उसका जन्म-जन्म का सोया हुआ मन जागृत हो जाता है॥ ३॥ हे ईश्वर! भक्तगण तेरे हैं और तू स्वयं भक्तों का है, अपनी महिमा का जाप तू स्वयं ही उनसे करवाता है। नानक का कथन है कि हे प्रभु! जगत के सब जीव-जन्तु तेरे वश में हैं और तू सदा ही हमारे साथ है॥४॥१६॥२६॥

भैरउ महला ५ ॥ नामु हमारै अंतरजामी ॥ नामु हमारै आवै कामी ॥ रोमि रोमि रविआ हरि नामु ॥ सतिगुर पूरै कीनो दानु ॥ १ ॥ नामु रतनु मेरै भंडार ॥ अगम अमोला अपर अपार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नामु हमारै निहचल धनी ॥ नाम की महिमा सभ महि बनी ॥ नामु हमारै पूरा साहु ॥ नामु हमारै बेपरवाहु ॥ २ ॥ नामु हमारै भोजन भाउ ॥ नामु हमारै मन का सुआउ ॥ नामु न विसरै संत प्रसादि ॥ नामु लैत अनहद पूरे नाद ॥ ३ ॥ प्रभ किरपा ते नामु नउ निधि पाई ॥ गुर किरपा ते नाम सिउ बनि आई ॥ धनवंते सेई परधान ॥ नानक जा कै नामु निधान ॥ ४ ॥ १७ ॥ ३० ॥

भगवन्नाम हमारे मन की भावना को जाननेवाला है और नाम ही हमारे काम आता है। रोम-रोम में हरिनाम ही बसा हुआ है और पूर्ण सतगुरु ने यही दान किया है॥१॥ प्रभु-नाम रूपी रत्न ही हमारा भण्डार है, जो अगम्य, अमूल्य एवं अपरम्पार है॥१॥ रहाउ॥ हरि-नाम ही हमारा निश्चल मालिक है और नाम की महिमा सब में बनी हुई है। नाम ही हमारे लिए पूर्ण शाह है और नाम ही हमारे लिए बेपरवाह है॥२॥ हरि-नाम ही हमारा प्रेम एवं भोजन है और हरि-नाम हमारे मन की कामनाओं को पूरा करता है। संत की कृपा से हरिनाम कदापि विस्मृत नहीं होता और नाम जपने से पूर्ण अनाहत ध्वनि श्रवण का आनंद मिलता है॥३॥ प्रभु-कृपा से नाम रूपी नवनिधि उपलब्ध हुई है और गुरु की कृपा से नाम से ही प्रेम बना हुआ है। जिसके पास हरि-नाम रूपी भण्डार है, वास्तव में वही धनवान एवं प्रधान है॥४॥१७॥३०॥

भैरउ महला ५ ॥ तू मेरा पिता तूहै मेरा माता ॥ तू मेरे जीअ प्रान सुखदाता ॥ तू मेरा ठाकुरु हउ दासु तेरा ॥ तुझ बिनु अवरु नही को मेरा ॥ १ ॥ करि किरपा करहु प्रभ दाति ॥ तुम्हरी उसतति करउ दिन राति ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हम तेरे जंत तू बजावनहारा ॥ हम तेरे भिखारी दानु देहि दातारा ॥ तउ परसादि रंग रस माणे ॥ घट घट अंतरि तुमहि समाणे ॥ २ ॥ तुम्हरी क्रिपा ते जपीऐ नाउ ॥ साधसंगि तुमरे गुण गाउ ॥ तुम्हरी दइआ ते होइ दरद बिनासु ॥ तुमरी मइआ ते कमल बिगासु ॥ ३ ॥ हउ बलिहारि जाउ गुरदेव ॥ सफल दरसनु जा की निरमल सेव ॥ दइआ करहु ठाकुर प्रभ मेरे ॥ गुण गावै नानकु नित तेरे ॥ ४ ॥ १८ ॥ ३१ ॥

हे ईश्वर ! तू ही मेरा माता-पिता है, तू ही मेरी आत्मा व प्राणों को सुख देने वाला है। तू मेरा मालिक है एवं मैं तेरा दास हूँ, तेरे अलावा मेरा कोई नहीं है॥१॥ हे प्रभु ! कृपा कर यह देन प्रदान करो कि दिन-रात मैं तेरी प्रशंसा करता रहूँ॥१॥रहाउ॥ हम तेरे यंत्र हैं और तू बजाने वाला है। हम तेरे भिखारी मात्र हैं और तू ही देने वाला दाता है। तेरी कृपा से सब खुशियाँ मना रहे हैं और घट-घट में तू ही व्याप्त है॥२॥ तेरी कृपा से ही नाम का जाप होता है और साधु पुरुषों के संग तेरे ही गुण गाते हैं। तेरी दया से दुख-दर्द नष्ट हो जाते हैं, तेरी अनुकंपा से हृदय-कमल खिल जाता है॥३॥ हे गुरुदेव ! मैं तुझ पर कुर्बान जाता हूँ, तेरे दर्शन फलदायक हैं और तेरी सेवा अति निर्मल है। नानक की विनती है कि हे मेरे प्रभु ! मुझ पर दया करो ताकि नित्य तेरा गुणगान करता रहूँ॥४॥१८॥३१॥

भैरउ महला ५ ॥ सभ ते ऊच जा का दरबारु ॥ सदा सदा ता कउ जोहारु ॥ ऊचे ते ऊचा जा का थान ॥ कोटि अघा मिटहि हरि नाम ॥ १ ॥ तिसु सरणाई सदा सुखु होइ ॥ करि किरपा जा कउ मेलै सोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा के करतब लखे न जाहि ॥ जा का भरवासा सभ घट माहि ॥ प्रगट भइआ साधू कै संगि ॥ भगत अराधहि अनदिनु रंगि ॥ २ ॥ देदे तोटि नही भंडार ॥ खिन महि थापि

उथापनहार ॥ जा का हुकमु न मेटै कोइ ॥ सिरि पातिसाहा साचा सोइ ॥ ३ ॥ जिस की ओट तिसै की आसा ॥ दुखु सुखु हमरा तिस ही पासा ॥ राखि लीनो सभु जन का पड़दा ॥ नानकु तिस की उसतति करदा ॥ ४ ॥ १६ ॥ ३२ ॥

जिसका दरबार सबसे ऊँचा है, उस ओंकार को सदैव अभिवन्दन है। जिसका स्थान सर्वोपरि है, उस हरि-नाम के जाप से करोड़ों पाप-अपराध मिट जाते हैं॥१॥ उसकी शरण में आने से सदा सुख प्राप्त होता है, जिस पर कृपा कर देता है, उसे अपने साथ मिला लेता है॥१॥ रहाउ॥ जिसके कौतुक दिखाई नहीं देते, सब लोगों की जिस पर अटूट आस्था है, वह साधु पुरुषों की संगत में रहने से प्रगट होता है। भक्तगण निष्ठापूर्वक दिन-रात उसकी आराधना करते रहते हैं॥ २॥ वह जितना भी देता है, उसके भण्डार में कोई कमी नहीं आती। वह पल में बनाने-बिगाड़नेवाला है। जिसका हुक्म कोई भी नहीं टाल सकता, वह सच्चा परमेश्वर समूची सृष्टि का बादशाह है॥ ३॥ जिसका अवलम्ब सब प्राप्त करते हैं, उसी की हमें आशा है। हमारा दुःख अथवा सुख सब उसी के पास है। जो सब भक्तजनों की लाज बचाता है, नानक तो उसी की प्रशंसा करता है॥४॥१६॥३२॥

भैरउ महला ५ ॥ रोवनहारी रोजु बनाइआ ॥ बलन बरतन कउ सनबंधु चिति आइआ ॥ बूझि बैरागु करे जे कोइ ॥ जनम मरण फिरि सोगु न होइ ॥ १ ॥ बिखिआ का सभु धंधु पसारु ॥ विरलै कीनो नाम अधारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ त्रिबिधि माइआ रही बिआपि ॥ जो लपटानो तिसु दूख संताप ॥ सुखु नाही बिनु नाम धिआए ॥ नाम निधानु बडभागी पाए ॥ २ ॥ स्वांगी सिउ जो मनु रीझावै ॥ स्वागि उतारिऐ फिरि पछुतावै ॥ मेघ की छाइआ जैसे बरतनहार ॥ तैसो परपंचु मोह बिकार ॥ ३ ॥ एक वसतु जे पावै कोइ ॥ पूरन काजु ताही का होइ ॥ गुर प्रसादि जिनि पाइआ नामु ॥ नानक आइआ सो परवानु ॥ ४ ॥ २० ॥ ३३ ॥

रोने वाले व्यक्ति ने रोने का नियम बनाया हुआ है, अपने कार्य-व्यवहार (लाभ-हानि) का उसे ख्याल आता है। अगर कोई वैराग्वान होकर तथ्य को बूझ लेता है, उसे पुनः जन्म-मरण का गम नहीं होता॥१॥ दुनिया में विषय-विकारों का धंधा फैला हुआ है, मगर किसी विरले ने प्रभु-नाम को अपना आसरा बना लिया है॥१॥ रहाउ॥ तीन गुणों वाली माया हर तरफ व्याप्त है, जो इससे लिपटता है, उसे ही दुःख-संताप होता है। हरि-नाम का ध्यान किए बिना सुख प्राप्त नहीं होता और नाम रूपी निधि कोई खुशकिस्मत ही पाता है॥२॥ जिस प्रकार व्यक्ति स्वांग रचकर मन प्रसन्न करता है, जब स्वांग उतर जाता है तो पुनः पछताता है। जैसे बादल की छाया है, वैसे मोह-विकारों का प्रपंच है॥३॥ अगर कोई प्रभु-नाम रूपी वस्तु को पाता है, उसका ही कार्य पूर्ण होता है। हे नानक! गुरु की बख्शिश से जिसने प्रभु-नाम को पाया है, उसका ही जन्म सफल हुआ है॥४॥२०॥३३॥

भैरउ महला ५ ॥ संत की निंदा जोनी भवना ॥ संत की निंदा रोगी करना ॥ संत की निंदा दूख सहाम ॥ डानु दैत निंदक कउ जाम ॥ १ ॥ संतसंगि करहि जो बादु ॥ तिन निंदक नाही किछु सादु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भगत की निंदा कंधु छेदावै ॥ भगत की निंदा नरकु भुंचावै ॥ भगत की निंदा गरभ महि गलै ॥ भगत की निंदा राज ते टलै ॥ २ ॥ निंदक की गति कतहू नाहि ॥ आपि बीजि आपे ही खाहि ॥ चोर जार जूआर ते बुरा ॥ अणहोदा भारु निंदकि सिरि धरा ॥ ३ ॥

पारब्रहम के भगत निरवैर ॥ सो निसतरै जो पूजै पैर ॥ आदि पुरखि निंदकु भोलाइआ ॥ नानक किरतु न जाइ मिटाइआ ॥ ४ ॥ २१ ॥ ३४ ॥

संत पुरुषों की निन्दा योनि चक्र में डाल देती है, संतों की निंदा मनुष्य को रोगी बनाकर रख देती है। अगर संतों की निंदा की जाए तो दुःख ही सहने पड़ते हैं और यम निंदक व्यक्ति को कठोर दण्ड देते हैं॥१॥ जो संतों के संग झगड़ा करता है, उस निंदक को कोई शान्ति नहीं मिलती॥१॥ रहाउ॥ भक्त की निंदा शरीर को तोड़ देती है और भक्त की निन्दा करने से नरक ही भोगने को मिलता है। भक्त की निंदा गर्भ में ही दुखी करती है, भक्त की निंदा राज-शासन सब खुशियां छीन लेती है॥२॥ निंदक की कभी गति नहीं होती और अपने किए कर्मों का वह स्वयं ही फल पाता है। वह चोर, दुष्टों एवं जुआरी से भी बुरा है और निंदा करने वाला व्यर्थ ही सिर पर दुःखों का बोझ धारण कर लेता है॥३॥ परब्रह्म के भक्त प्रेमस्वरूप हैं, उनका किसी से कोई वैर नहीं, जो उनके चरण पूजता है, वही मोक्ष पाता है। नानक फुरमाते हैं कि दरअसल ईश्वर ने ही निंदक को भुलाया हुआ है और उसके कर्म को टाला नहीं जा सकता॥४॥२१॥३४॥

भैरउ महला ५ ॥ नामु हमारै बेद अरु नाद ॥ नामु हमारै पूरे काज ॥ नामु हमारै पूजा देव ॥ नामु हमारै गुर की सेव ॥ १ ॥ गुरि पूरै द्रिड़िओ हरि नामु ॥ सभ ते ऊतमु हरि हरि कामु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नामु हमारै मजन इसनानु ॥ नामु हमारै पूरन दानु ॥ नामु लैत ते सगल पवीत ॥ नामु जपत मेरे भाई मीत ॥ २ ॥ नामु हमारै सउण संजोग ॥ नामु हमारै त्रिपति सुभोग ॥ नामु हमारै सगल आचार ॥ नामु हमारै निरमल बिउहार ॥ ३ ॥ जा कै मनि वसिआ प्रभु एकु ॥ सगल जना की हरि हरि टेक ॥ मनि तनि नानक हरि गुण गाउ ॥ साधसंगि जिसु देवै नाउ ॥ ४ ॥ २२ ॥ ३५ ॥

हरि-नाम का जाप ही हमारे लिए वेद एवं मंत्रोच्चारण है और नाम से ही हमारे कार्य पूर्ण होते हैं। नाम का जाप हमारे लिए इष्ट पूजा है और नाम की उपासना ही गुरु की सेवा है॥१॥ पूर्ण गुरु ने हरि-नाम मन में दृढ़ करवाया है और हरि की आराधना ही सबसे उत्तम कार्य है॥१॥ रहाउ॥ ईश्वर का नाम-स्मरण ही हमारे लिए तीर्थ-स्नान है और नाम की अर्चना ही हमारे लिए पूर्ण दान है। ईश्वर का नाम लेने से सभी पवित्र हो जाते हैं। जो परमेश्वर का नाम जपते हैं, वास्तव में वही हमारे भाई एवं परम मित्र हैं॥२॥ हमारे लिए शगुन-संयोग भी हरि-नाम है, नाम-स्मरण ही पूर्ण तृप्ति एवं भोग-आनंद है। नाम की उपासना ही हमारे सब आचार हैं और नाम की वंदना हमारा निर्मल व्यवहार है॥३॥ जिसके मन में प्रभु बस गया है, वही सबका आसरा हो गया है। हे नानक! साधु पुरुषों की संगत में जिसे नाम देता है, वह मन तन से प्रभु के ही गुण गाता रहता है॥४॥२२॥३५॥

भैरउ महला ५ ॥ निरधन कउ तुम देवहु धना ॥ अनिक पाप जाहि निरमल मना ॥ सगल मनोरथ पूरन काम ॥ भगत अपुने कउ देवहु नाम ॥ १ ॥ सफल सेवा गोपाल राइ ॥ करन करावनहार सुआमी ता ते बिरथा कोइ न जाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रोगी का प्रभ खंडहु रोगु ॥ दुखीए का मिटावहु प्रभ सोगु ॥ निथावे कउ तुम्ह थानि बैठावहु ॥ दास अपने कउ भगती लावहु ॥ २ ॥ निमाणे कउ प्रभ देतो मानु ॥ मूड़ मुगधु होइ चतुर सुगिआनु ॥ सगल भइआन का भउ नसै ॥ जन अपने कै हरि मनि बसै ॥ ३ ॥ पारब्रहम प्रभ सूख निधान ॥ ततु गिआनु हरि अंम्रित नाम ॥ करि किरपा संत टहलै लाए ॥ नानक साधू संगि समाए ॥ ४ ॥ २३ ॥ ३६ ॥

हे प्रभु ! जिसे तू नाम देता है, वह निर्धन से धनवान बन जाता है, उसके अनेक पाप दूर हो जाते हैं और मन निर्मल हो जाता है, उसकी सब कामनाएँ एवं कार्य पूर्ण हो जाते हैं। अतः अपने भक्त को भी नाम प्रदान करो॥१॥ ईश्वर की सेवा ही फल प्रदान करने वाली है। वह स्वामी करने-करवाने में समर्थ है, उससे कोई भी खाली नहीं लौटता॥१॥ रहाउ॥ प्रभु इतना दयालु है कि रोगी का रोग नष्ट कर देता है, दुखियारे का हर गम मिटा देता है। हे प्रभु ! बेघर जीव को तू ही घर में बिठाने वाला है, अतः अपने दास को भक्ति में लगाए रखो॥२॥ नाचीज व्यक्ति को हे प्रभु ! तू ही सम्मान प्रदान करता है, मूर्ख एवं बेवकूफ व्यक्ति भी तेरी कृपा से चतुर एवं ज्ञानवान बन जाता है। सब बुरी बलाओं का भय दूर होता है। अपने भक्तजनों के मन में तो प्रभु ही बसा रहता है॥३॥ परब्रह्म प्रभु सर्व सुखों का घर है और हरि-नामामृत ही तत्वज्ञान है। वह कृपा कर संत पुरुषों को अपनी सेवा में लगाए रखता है। हे नानक ! वे साधु-संगति में परम-सत्य में ही समाए रहते हैं॥४॥२३॥३६॥

भैरउ महला ५ ॥ संत मंडल महि हरि मनि वसै ॥ संत मंडल महि दुरतु सभु नसै ॥ संत मंडल महि निरमल रीति ॥ संतसंगि होइ एक परीति ॥ १ ॥ संत मंडलु तहा का नाउ ॥ पारब्रहम केवल गुण गाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संत मंडल महि जनम मरणु रहै ॥ संत मंडल महि जमु किछू न कहै ॥ संतसंगि होइ निरमल बाणी ॥ संत मंडल महि नामु वखाणी ॥ २ ॥ संत मंडल का निहचल आसनु ॥ संत मंडल महि पाप बिनासनु ॥ संत मंडल महि निरमल कथा ॥ संतसंगि हउमै दुख नसा ॥ ३ ॥ संत मंडल का नही बिनासु ॥ संत मंडल महि हरि गुणतासु ॥ संत मंडल ठाकुर बिस्रामु ॥ नानक ओति पोति भगवानु ॥ ४ ॥ २४ ॥ ३७ ॥

संतों की मण्डली में प्रभु मन में आ बसता है, संतों की सभा में सब पाप-बुराइयाँ दूर हो जाती हैं। संतों की संगत में निर्मल आचरण होता है और संतों के संग केवल प्रभु से अटूट प्रेम होता है॥१॥ संतमण्डल उस पावन स्थल का नाम है, जहाँ केवल परब्रह्म का गुणगान होता है॥१॥रहाउ॥ संतों की मण्डली में जन्म-मरण निवृत्त हो जाता है और संतों के मण्डल में यम भी दुःख नहीं देता। संतों की संगत में निर्मल वाणी की वर्षा होती है और संतमण्डल में प्रभु-नाम की ही चर्चा होती है॥२॥ संतमण्डल का स्थल निश्चल है और संत-संगत में पाप विनष्ट हो जाते हैं। संतों के मण्डल में पावन कथा होती रहती है, संतों का संग अहम् एवं दुखों को दूर कर देता है॥३॥ संतमण्डल का कदापि नाश नहीं होता, संत-संगत में गुणों का भण्डार परमेश्वर रहता है। हे नानक ! वास्तव में संतमण्डल ही ईश्वर का निवास स्थान है और वहाँ भगवान ही रहता है॥४॥२४॥३७॥

भैरउ महला ५ ॥ रोगु कवनु जां राखै आपि ॥ तिसु जन होइ न दूखु संतापु ॥ जिसु ऊपरि प्रभु किरपा करै ॥ तिसु ऊपर ते कालु परहरै ॥ १ ॥ सदा सखाई हरि हरि नामु ॥ जिसु चीति आवै तिसु सदा सुखु होवै निकटि न आवै ता कै जामु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जब इहु न सो तब किनहि उपाइआ ॥ कवन मूल ते किआ प्रगटाइआ ॥ आपहि मारि आपि जीवालै ॥ अपने भगत कउ सदा प्रतिपालै ॥ २ ॥ सभ किछु जाणहु तिस कै हाथ ॥ प्रभु मेरो अनाथ को नाथ ॥ दुख भंजनु ता का है नाउ ॥ सुख पावहि तिस के गुण गाउ ॥ ३ ॥ सुणि सुआमी संतन अरदासि ॥ जीउ प्रान धनु तुम्हरै पासि ॥ इहु जगु तेरा सभ तुझहि धिआए ॥ करि किरपा नानक सुखु पाए ॥ ४ ॥ २५ ॥ ३८ ॥

जब स्वयं ईश्वर बचानेवाला हो तो कोई रोग भला क्या बिगाड़ सकता है। उस व्यक्ति को कोई दुःख संताप झेलना नहीं पड़ता। जिस पर प्रभु कृपा करता है, उसके सिर से काल भी हट जाता है॥१॥ प्रभु-नाम सदा सहायता करने वाला है। जिसे स्मरण आता है, उसे सदा सुख प्राप्त होता है और मौत भी उसके निकट नहीं आती॥१॥ रहाउ॥ जब यह जीव नहीं था, तब किसने इसे उत्पन्न किया ? इसका मूल भी क्या था और किससे यह प्रगट हुआ। सच तो यही है कि मारने एवं जिंदा करने वाला परमेश्वर ही है और अपने भक्तों का सदा पालन-पोषण करता है॥२॥ यह भी मानो सब कुछ उसके हाथ है, मेरा प्रभु अनाथ जीवों का नाथ है। उसका नाम दुखों को नाश करने वाला है और उसके गुण गाने से सुख प्राप्त होता है॥३॥ हे स्वामी ! संतों की प्रार्थना सुनो; हमारा जीवन, प्राण, धन सब तुम्हारे ही पास है। यह जगत् तेरा है, सभी तेरा ध्यान करते हैं। नानक की विनती है कि हे प्रभु ! कृपा करो, ताकि सुख प्राप्त हो॥४॥२५॥३८॥

भैरउ महला ५ ॥ तेरी टेक रहा कलि माहि ॥ तेरी टेक तेरे गुण गाहि ॥ तेरी टेक न पोहै कालु ॥ तेरी टेक बिनसै जंजालु ॥ १ ॥ दीन दुनीआ तेरी टेक ॥ सभ महि रविआ साहिबु एक ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तेरी टेक करउ आनंद ॥ तेरी टेक जपउ गुर मंत ॥ तेरी टेक तरीऐ भउ सागरु ॥ राखणहारु पूरा सुख सागरु ॥ २ ॥ तेरी टेक नाही भउ कोइ ॥ अंतरजामी साचा सोइ ॥ तेरी टेक तेरा मनि ताणु ॥ ईहां ऊहां तू दीबाणु ॥ ३ ॥ तेरी टेक तेरा भरवासा ॥ सगल धिआवहि प्रभ गुणतासा ॥ जपि जपि अनदु करहि तेरे दासा ॥ सिमरि नानक साचे गुणतासा ॥ ४ ॥ २६ ॥ ३९ ॥

हे मालिक ! इस घोर कलियुग में तेरे आसरे ही रहता हूँ और तेरे आसरे तेरे ही गुण गाता हूँ। तेरी टेक पाने से मृत्यु भी मुझे स्पर्श नहीं करती, तेरा आसरा पाने से सब जंजाल नष्ट हो गए हैं॥१॥ दीन-दुनिया को तेरा ही अवलम्ब है और सब में केवल मालिक ही व्याप्त है॥१॥ रहाउ॥ तेरे आसरे ही आनंद करता हूँ और तेरे आसरे ही गुरु-मंत्र जपता हूँ। तेरे आसरे ही संसार-सागर से पार हुआ जाता है। संसार का रखवाला परमेश्वर पूर्ण सुखों का सागर है॥२॥ तेरा सहारा पाने से कोई भय नहीं, परमसत्य परमेश्वर मन की सब भावनाओं को जाननेवाला है। हे प्रभु ! तेरी टेक ही मन का बल है और यहाँ (इहलोक) वहाँ (परलोक) तू ही हमारा सहारा है॥३॥ केवल तेरा ही आसरा है और तेरा ही भरोसा है, अतः सब लोग गुणागार प्रभु का ध्यान करते हैं। तेरे भक्त तेरा नाम जप-जपकर आनंद कर रहे हैं। नानक की विनती है कि सच्चे गुणों के भण्डार परमात्मा का स्मरण करो॥४॥२६॥३६॥

भैरउ महला ५ ॥ प्रथमे छोडी पराई निंदा ॥ उतरि गई सभ मन की चिंदा ॥ लोभु मोहु सभु कीनो दूरि ॥ परम बैसनो प्रभ पेखि हजूरि ॥ १ ॥ ऐसो तिआगी विरला कोइ ॥ हरि हरि नामु जपै जनु सोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अहंबुधि का छोडिआ संगु ॥ काम क्रोध का उतरिआ रंगु ॥ नाम धिआए हरि हरि हरे ॥ साध जना कै संगि निसतरे ॥ २ ॥ बैरी मीत होए संमान ॥ सरब महि पूरन भगवान ॥ प्रभ की आगिआ मानि सुखु पाइआ ॥ गुरि पूरै हरि नामु द्रिड़ाइआ ॥ ३ ॥ करि किरपा जिसु राखै आपि ॥ सोई भगतु जपै नाम जाप ॥ मनि प्रगासु गुर ते मति लई ॥ कहु नानक ता की पूरी पई ॥ ४ ॥ २७ ॥ ४० ॥

पहले पराई निन्दा करना छोड़ दिया तो इससे मन की सारी चिंता दूर हो गई। इस प्रकार लोभ-मोह इत्यादि सबको दूर कर दिया तो प्रभु को आसपास देखकर परम वैष्णव हुए॥१॥ संसार में ऐसा कोई विरला ही त्यागी है, वही व्यक्ति प्रभु-नाम का जाप करता है॥१॥ रहाउ॥ जब अहम्-बुद्धि का साथ छोड़ा तो काम-क्रोध का रंग उतर गया। साधु-पुरुषों के संग हरि-नाम का ध्यान कर मुक्त हो गए॥२॥ अब दुश्मन एवं दोस्त दोनों समान हो गए हैं और सब में पूर्ण रूप से भगवान ही दिखाई दे रहा है। प्रभु की आज्ञा को मानकर सच्चा सुख प्राप्त किया है और पूर्ण गुरु ने हरि-नाम का जाप ही मन में दृढ़ करवाया है॥३॥ कृपा करके जिसकी वह स्वयं रक्षा करता है, वही भक्त प्रभु-नाम का जाप करता है। हे नानक! गुरु से शिक्षा पाकर जिसके मन में आलोक हो गया है, उसी का जीवन-सफर पूर्ण सफल हो गया है॥४॥२७॥४०॥

भैरउ महला ५ ॥ सुखु नाही बहुतै धनि खाटे ॥ सुखु नाही पेखे निरति नाटे ॥ सुखु नाही बहु देस कमाए ॥ सरब सुखा हरि हरि गुण गाए ॥ १ ॥ सूख सहज आनंद लहहु ॥ साधसंगति पाईऐ वडभागी गुरमुखि हरि हरि नामु कहहु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बंधन मात पिता सुत बनिता ॥ बंधन करम धरम हउ करता ॥ बंधन काटनहारु मनि वसै ॥ तउ सुखु पावै निज घरि बसै ॥ २ ॥ सभि जाचिक प्रभ देवनहार ॥ गुण निधान बेअंत अपार ॥ जिस नो करमु करे प्रभु अपना ॥ हरि हरि नामु तिनै जनि जपना ॥ ३ ॥ गुर अपने आगै अरदासि ॥ करि किरपा पुरख गुणतासि ॥ कहु नानक तुमरी सरणाई ॥ जिउ भावै तिउ रखहु गुसाई ॥ ४ ॥ २८ ॥ ४१ ॥

अधिकाधिक धन-दौलत कमाने में भी सुख नहीं है, नृत्य अथवा नाटक देखकर भी सुख नहीं मिलता। बहुत सारे देशों को जीतने में भी सुख नहीं, दरअसल प्रभु के गुण गाने से ही सर्व सुख प्राप्त होते हैं॥१॥ परम सुख एवं सच्चा आनंद ही खोजो, बड़े भाग्य से साधु पुरुषों की संगत प्राप्त होती है। गुरुमुख बनकर प्रभु-नाम का यशगान करो॥१॥ रहाउ॥ माता-पिता, पुत्र अथवा पत्नी मात्र बन्धनों में फँसाए रखते हैं। अहम्-भावना में किए गए धर्म-कर्म बन्धन बन जाते हैं। सब बन्धन काटनेवाला ईश्वर मन में बसता है, तो ही सुख प्राप्त होता है और अपने सच्चे घर (प्रभु) में जीव बसा रहता है॥२॥ केवल प्रभु ही देनेवाला है, सभी उसके मात्र भिखारी हैं। वह बे-अन्त, अपार एवं गुणों का भण्डार है। जिस पर प्रभु अपनी कृपा करता है, वही प्रभु-नाम का जाप करता है॥३॥ हमारी अपने गुरु के समक्ष प्रार्थना है कि हे परमपुरुष, गुणों के भण्डार! कृपा करो। नानक का कथन है कि हे मालिक! तुम्हारी शरण में आ गया हूँ, जैसे तू चाहता है, वैसे ही मुझे रखना॥४॥२८॥४१॥

भैरउ महला ५ ॥ गुर मिलि तिआगिओ दूजा भाउ ॥ गुरमुखि जपिओ हरि का नाउ ॥ बिसरी चिंत नामि रंगु लागा ॥ जनम जनम का सोइआ जागा ॥ १ ॥ करि किरपा अपनी सेवा लाए ॥ साधू संगि सरब सुख पाए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रोग दोख गुर सबदि निवारे ॥ नाम अउखधु मन भीतरि सारे ॥ गुर भेटत मनि भइआ अनंद ॥ सरब निधान नाम भगवंत ॥ २ ॥ जनम मरण की मिटी जम त्रास ॥ साधसंगति ऊंध कमल बिगास ॥ गुण गावत निहचलु बिस्राम ॥ पूरन होए सगले काम ॥ ३ ॥ दुलभ देह आई परवानु ॥ सफल होई जपि हरि हरि नामु ॥ कहु नानक प्रभि किरपा करी ॥ सासि गिरासि जपउ हरि हरी ॥ ४ ॥ २६ ॥ ४२ ॥

गुरु से साक्षात्कार कर द्वैतभाव को त्याग दिया है, गुरु के सान्निध्य में हरि-नाम का जाप किया है। प्रभु-नाम में ऐसा रंग लगा है कि सब चिन्ताएँ भूल चुकी हैं और जन्म-जन्मांतर का अज्ञान में सोया मन जागृत हो गया है॥१॥ अपनी कृपा कर सेवा में लगाया है, साधु जनों के साथ सर्व सुख प्राप्त हुए हैं॥१॥ रहाउ॥ शब्द-गुरु के द्वारा सब रोगों-दोषों का निवारण किया है और हरिनाम रूपी औषधि मन में स्थित है। गुरु से भेंटवार्ता कर मन खिल गया है, भगवन्नाम सर्व सुखों का भण्डार है॥२॥ जन्म-मरण की यम की पीड़ा मिट गई है, साधु-पुरुषों की संगत में उलटा पड़ा हृदय खिल गया है। ईश्वर के गुण गाते निश्चल शान्ति मिली है और सभी मनोरथ पूर्ण हुए हैं॥३॥ दुर्लभ शरीर का संसार में आना परवान हुआ है, ईश्वर का नाम जपते हुए जन्म सफल हो गया है। नानक का कथन है कि प्रभु ने ऐसी कृपा की है कि साँस-ग्रास से हरि-हरि ही जपता रहता हूँ॥४॥२६॥४२॥

भैरउ महला ५ ॥ सभ ते ऊचा जा का नाउ ॥ सदा सदा ता के गुण गाउ ॥ जिसु सिमरत सगला दुखु जाइ ॥ सरब सूख वसहि मनि आइ ॥ १ ॥ सिमरि मना तू साचा सोइ ॥ हलति पलति तुमरी गति होइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पुरख निरंजन सिरजनहार ॥ जीअ जंत देवै आहार ॥ कोटि खते खिन बखसनहार ॥ भगति भाइ सदा निसतार ॥ २ ॥ साचा धनु साची वडिआई ॥ गुर पूरे ते निहचल मति पाई ॥ करि किरपा जिसु राखनहारा ॥ ता का सगल मिटै अंधिआरा ॥ ३ ॥ पारब्रहम सिउ लागो धिआन ॥ पूरन पूरि रहिओ निरबान ॥ भ्रम भउ मेटि मिले गोपाल ॥ नानक कउ गुर भए दइआल ॥ ४ ॥ ३० ॥ ४३ ॥

जिसका नाम सबसे ऊँचा है, सदैव उसके गुण गाओ। जिसे स्मरण करने से सब दुःख दूर हो जाते हैं और मन में सुख ही सुख बस जाते हैं॥१॥ हे मन! उस परमात्मा का स्मरण कर, एकमात्र वही परम-सत्य है, इसके फलस्वरूप लोक-परलोक में तुम्हारी गति होगी॥१॥रहाउ॥ पावनस्वरूप परमेश्वर ही सृजनहार है, वही जीव-जन्तुओं को रोजी रोटी देता है। वह इतना दयालु है कि करोड़ों गलतियों को पल में क्षमा करने वाला है। उसकी भक्ति करने से निस्तार हो जाता है॥२॥ प्रभु-नाम ही सच्चा धन है और इसकी कीर्ति भी शाश्वत है। पूर्ण गुरु से यही निश्चल शिक्षा प्राप्त की है। परमात्मा कृपा करके जिसकी रक्षा करता है, उसका अज्ञान रूपी अंधेरा मिट जाता है॥३॥ हमारा परब्रह्म में ही ध्यान लगा हुआ है, वह पूर्ण रूप से संसार के कण-कण में व्याप्त है। नानक पर गुरु दयालु हो गया है और सब भ्रम-भय मिटाकर उसे ईश्वर मिल गया है॥४॥३०॥४३॥

भैरउ महला ५ ॥ जिसु सिमरत मनि होइ प्रगासु ॥ मिटहि कलेस सुख सहजि निवासु ॥ तिसहि परापति जिसु प्रभु देइ ॥ पूरे गुर की पाए सेव ॥ १ ॥ सरब सुखा प्रभ तेरो नाउ ॥ आठ पहर मेरे मन गाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो इछै सोई फलु पाए ॥ हरि का नामु मंनि वसाए ॥ आवण जाण रहे हरि धिआइ ॥ भगति भाइ प्रभ की लिव लाइ ॥ २ ॥ बिनसे काम क्रोध अहंकार ॥ तूटे माइआ मोह पिआर ॥ प्रभ की टेक रहै दिनु राति ॥ पारब्रहमु करे जिसु दाति ॥ ३ ॥ करन करावनहार सुआमी ॥ सगल घटा के अंतरजामी ॥ करि किरपा अपनी सेवा लाइ ॥ नानक दास तेरी सरणाइ ॥ ४ ॥ ३१ ॥ ४४ ॥

जिसे स्मरण करने से मन में आलोक हो जाता है, दुःख-क्लेश मिट जाते हैं और परम सुख बना रहता है। यह उसे प्राप्त होता है जिसे प्रभु देता है, वह पूर्ण गुरु की सेवा पाता है॥ १॥ हे प्रभु! तेरा नाम सर्व सुख प्रदान करनेवाला है, अतः आठ प्रहर मेरा मन तेरे ही गुण गाता है॥ १॥ रहाउ॥ जो प्रभु का नाम मन में बसा लेता है, वह मनवांछित फल पाता है। परमात्मा का भजन करने से आवागमन से मुक्ति प्राप्त होती है और प्रभु की भक्ति में ध्यान लगा रहता है॥ २॥ काम-क्रोध व अहंकार नष्ट हो जाता है और मोह-माया का प्यार टूट जाता है। परब्रह्म जिसे देन प्रदान करता है, उसे प्रभु का आसरा दिन-रात बना रहता है॥ ३॥ संसार का स्वामी परमेश्वर करने-कराने में समर्थ है, वह सब जीवों के मन की भावना को जाननेवाला है। नानक की विनती है कि हे प्रभु! कृपा करके अपनी सेवा में लगा लो, चूंकि यह दास तेरी शरण में आया है॥ ४॥ ३१॥ ४४॥

भैरउ महला ५ ॥ लाज मरै जो नामु न लेवै ॥ नाम बिहून सुखी किउ सोवै ॥ हरि सिमरनु छाडि परम गति चाहै ॥ मूल बिना साखा कत आहै ॥ १ ॥ गुरु गोविंदु मेरे मन धिआइ ॥ जनम जनम की मैलु उतारै बंधन काटि हरि संगि मिलाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तीरथि नाइ कहा सुचि सैलु ॥ मन कउ विआपै हउमै मैलु ॥ कोटि करम बंधन का मूलु ॥ हरि के भजन बिनु बिरथा पूलु ॥ २ ॥ बिनु खाए बूझै नही भूख ॥ रोगु जाइ तां उतरहि दूख ॥ काम क्रोध लोभ मोहि बिआपिआ ॥ जिनि प्रभि कीना सो प्रभु नही जापिआ ॥ ३ ॥ धनु धनु साध धंनु हरि नाउ ॥ आठ पहर कीरतनु गुण गाउ ॥ धनु हरि भगति धनु करणैहार ॥ सरणि नानक प्रभ पुरख अपार ॥ ४ ॥ ३२ ॥ ४५ ॥

जो व्यक्ति परमेश्वर का नाम नहीं लेता, उसे शर्म में डूब मरना चाहिए। नाम से विहीन रहकर भला सुखी कैसे रह सकता है। परमात्मा का स्मरण छोड़कर परमगति की आकांक्षा करता है, जड़ के बिना भला शाखा कैसे हो सकती है॥ १॥ हे मेरे मन! गुरु-परमेश्वर का मनन करो, वह जन्म-जन्मांतर की मैल उतार कर और सब बन्धनों को काटकर ईश्वर के संग मिला देता है॥ १॥ रहाउ॥ तीर्थों पर स्नान करने से पत्थर-दिल कैसे शुद्ध हो सकता है, मन को तो अहम् की मैल लगी रहती है। करोड़ों कर्मकाण्ड भी मात्र बन्धनों का कारण हैं, ईश्वर के भजन बिना कर्मों का गट्ठर व्यर्थ है॥ २॥ कुछ भोजन इत्यादि खाए बिना भूख दूर नहीं होती, जब कोई रोग दूर हो जाता है तो ही दुःख समाप्त होता है। जीव केवल काम, क्रोध, लोभ, मोह में लिप्त रहता है, जिस प्रभु ने बनाया है, उसे वह जानता ही नहीं॥ ३॥ साधु पुरुष एवं हरि-नाम धन्य है। आठ प्रहर परमात्मा का संकीर्तन एवं गुणगान करो। परमात्मा की भक्ति धन्य है और भक्ति करनेवाला भी धन्य है। नानक तो अपार प्रभु की शरण में है॥ ४॥ ३२॥ ४५॥

भैरउ महला ५ ॥ गुर सुप्रसंन होए भउ गए ॥ नाम निरंजन मन महि लए ॥ दीन दइआल सदा किरपाल ॥ बिनसि गए सगले जंजाल ॥ १ ॥ सूख सहज आनंद घने ॥ साधसंगि मिटे भै भरमा अंम्रितु हरि हरि रसन भने ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चरन कमल सिउ लागो हेतु ॥ खिन महि बिनसिओ महा परेतु ॥ आठ पहर हरि हरि जपु जापि ॥ राखनहार गोविद गुर आपि ॥ २ ॥ अपने सेवक कउ सदा प्रतिपारै ॥ भगत जना के सास निहारै ॥ मानस की कहु केतक बात ॥ जम ते राखै दे करि हाथ ॥ ३ ॥ निरमल सोभा निरमल रीति ॥ पारब्रहमु आइआ मनि चीति ॥ करि किरपा गुरि दीनो दानु ॥ नानक पाइआ नामु निधानु ॥ ४ ॥ ३३ ॥ ४६ ॥

अगर गुरु प्रसन्न हो जाए तो सब भय दूर हो जाते हैं और मन में पावन हरिनाम स्थित हो जाता है। दीनदयाल प्रभु सदा कृपा करता है, जिससे सारे जंजाल नष्ट हो जाते हैं॥ १॥ साधु पुरुषों के संग जिह्वा से अमृतमय हरि नाम जपने से सब भय-भ्रम मिट जाते हैं और स्वाभाविक सुख एवं परमानंद बना रहता है॥ १॥ रहाउ॥ अगर प्रभु-चरणों से प्रेम लग जाए तो पल में अभिमान रूपी महाप्रेत नष्ट हो जाता है। आठ प्रहर ईश्वर का जाप करो, वह गुरु-परमेश्वर स्वयं रक्षा करने वाला है॥ २॥ वह अपने सेवकों का सदा पालन-पोषण करता है और भक्तजनों का हर साँस से ख्याल रखता है। मनुष्य की क्या हैसियत है, वह तो हाथ देकर यम से रक्षा करता है॥ ३॥ मन में परब्रह्म याद आने से निर्मल शोभा होती है और आचरण भी निर्मल हो जाता है। हे नानक! गुरु ने कृपा कर दान दिया है और नाम रूपी सुखों का भण्डार पा लिया है॥ ४॥ ३३॥ ४६॥

भैरउ महला ५ ॥ करण कारण समरथु गुरु मेरा ॥ जीअ प्राण सुखदाता नेरा ॥ भै भंजन अबिनासी राइ ॥ दरसनि देखिऐ सभु दुखु जाइ ॥ १ ॥ जत कत पेखउ तेरी सरणा ॥ बलि बलि जाई सतिगुर चरणा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पूरन काम मिले गुरदेव ॥ सभि फलदाता निरमल सेव ॥ करु गहि लीने अपुने दास ॥ राम नामु रिद दीओ निवास ॥ २ ॥ सदा अनंदु नाही किछु सोगु ॥ दूखु दरदु नह बिआपै रोगु ॥ सभु किछु तेरा तू करणैहारु ॥ पारब्रहम गुर अगम अपार ॥ ३ ॥ निरमल सोभा अचरज बाणी ॥ पारब्रहम पूरन मनि भाणी ॥ जलि थलि महीअलि रविआ सोइ ॥ नानक सभु किछु प्रभ ते होइ ॥ ४ ॥ ३४ ॥ ४७ ॥

मेरा गुरु सब कुछ करने-कराने में समर्थ है, आत्मा-प्राणों को सुख देने वाला है, वह सब भय नष्ट करने वाला एवं अविनाशी है। उसके दर्शन करने से सब दुःख दूर हो जाते हैं॥ १॥ जहाँ कहीं तेरी शरण देखता हूँ, मैं सतगुरु के चरणों पर कुर्बान जाता हूँ॥ १॥ रहाउ॥ गुरुदेव से साक्षात्कार कर सब कार्य पूर्ण हो गए हैं, वह सब फल प्रदान करने वाला है और सेवा भी पावन है। हाथ देकर उसने अपने दास को बचा लिया है और राम नाम हृदय में बसा दिया है॥ २॥ भक्तों के मन में सदा आनंद बना रहता है और कोई गम नहीं होता। दुःख-दर्द एवं रोग भी उन्हें नहीं छूता। हे अगम्य परब्रह्म गुरु! सब कुछ तेरा है और तू ही करने वाला है॥ ३॥ तेरी शोभा अति निर्मल है और वाणी आश्चर्यमय है। पूर्ण परब्रह्म के मन को भी अच्छी लगती है। जमीन, आसमान एवं जल में वही व्याप्त है, हे नानक! संसार में सब कुछ प्रभु ही कर रहा है॥ ४॥ ३४॥ ४७॥

भैरउ महला ५ ॥ मनु तनु राता राम रंगि चरणे ॥ सरब मनोरथ पूरन करणे ॥ आठ पहर गावत भगवंतु ॥ सतिगुरि दीनो पूरा मंतु ॥ १ ॥ सो वडभागी जिसु नामि पिआरु ॥ तिस कै संगि तरै संसारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सोई गिआनी जि सिमरै एक ॥ सो धनवंता जिसु बुधि बिबेक ॥ सो कुलवंता जि सिमरै सुआमी ॥ सो पतिवंता जि आपु पछानी ॥ २ ॥ गुर परसादि परम पदु पाइआ ॥ गुण गोपाल दिनु रैनि धिआइआ ॥ तूटे बंधन पूरन आसा ॥ हरि के चरण रिद माहि निवासा ॥ ३ ॥ कहु नानक जा के पूरन करमा ॥ सो जनु आइआ प्रभ की सरना ॥ आपि पवितु पावन सभि कीने ॥ राम रसाइणु रसना चीन्हे ॥ ४ ॥ ३५ ॥ ४८ ॥

यह मन-तन प्रभु-चरणों में ही लीन है, वह सब कामनाओं को पूर्ण करने वाला है। सतगुरु ने यही पूर्ण मंत्र दिया है कि आठ प्रहर भगवान के गुण गाओ॥१॥ जिसका प्रभु-नाम से अटूट प्रेम है, वही भाग्यशाली है, उसकी संगत करके संसार का भी उद्धार हो जाता है॥१॥ रहाउ॥ वही ज्ञानवान है, जो ईश्वर का स्मरण करता है। जिसके पास विवेक बुद्धि है, वही धनवान है। जो प्रभु की उपासना करता है, वही कुलीन है। जिसे आत्म-ज्ञान की पहचान होती है, वही इज्जतदार है॥२॥ गुरु की कृपा से जिसने परमपद पा लिया है, वह प्रभु के गुण गाता है, दिन-रात उसी के ध्यान में लीन रहता है। उसकी आशाएँ पूर्ण हो जाती हैं और सब बन्धन टूट जाते हैं। उसके हृदय में प्रभु के चरण बने रहते हैं॥३॥ नानक फुरमाते हैं कि जिसका पूर्ण भाग्य होता है, वही व्यक्ति प्रभु की शरण में आता है। वह आप तो पवित्र होता ही है, सबको पावन कर देता है और जिह्वा से राम नाम रूपी रसायन को पहचान लेता है॥४॥३५॥४८॥

भैरउ महला ५ ॥ नामु लैत किछु बिघनु न लागै ॥ नामु सुणत जमु दूरहु भागै ॥ नामु लैत सभ दूखह नासु ॥ नामु जपत हरि चरण निवासु ॥ १ ॥ निरबिघन भगति भजु हरि हरि नाउ ॥ रसकि रसकि हरि के गुण गाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि सिमरत किछु चाखु न जोहै ॥ हरि सिमरत दैत देउ न पोहै ॥ हरि सिमरत मोहु मानु न बधै ॥ हरि सिमरत गरभ जोनि न रुधै ॥ २ ॥ हरि सिमरन की सगली बेला ॥ हरि सिमरनु बहु माहि इकेला ॥ जाति अजाति जपै जनु कोइ ॥ जो जापै तिस की गति होइ ॥ ३ ॥ हरि का नामु जपीऐ साधसंगि ॥ हरि के नाम का पूरन रंगु ॥ नानक कउ प्रभ किरपा धारि ॥ सासि सासि हरि देहु चितारि ॥ ४ ॥ ३६ ॥ ४९ ॥

प्रभु का नाम लेने से कोई रुकावट पेश नहीं आती, नाम सुनने से तो यम भी दूर से भागने लगता है। प्रभु-नाम की वंदना से सब दुःख नाश हो जाते हैं, नाम जपने से प्रभु-चरणों में निवास हो जाता है॥१॥ प्रभु की भक्ति हर विघ्न दूर करती है, परमात्मा का भजन करो, आनंदपूर्वक प्रभु का ही गुणगान करो॥१॥ रहाउ॥ ईश्वर का स्मरण करने से कोई बुरी नजर नहीं लगती, ईश्वर का स्मरण करने से भूत-प्रेत दुखी नहीं करते। परमात्मा के स्मरण से मान-मोह नहीं बांध पाता और परमात्मा का सिमरन करने से गर्भ योनि से छुटकारा हो जाता है॥२॥ दिन-रात अथवा सुबह-शाम ईश्वर स्मरण का ही शुभ समय है, ईश्वर का स्मरण अनेक लोगों में कोई अकेला ही करता है। छोटी-बड़ी जाति का कोई भी व्यक्ति परमात्मा का जाप कर सकता है, जो जाप करता है, उसकी मुक्ति हो जाती है॥३॥ साधुजनों के संग प्रभु का नाम जपना चाहिए, इससे प्रभु-नाम का पूर्ण रंग चढ़ जाता है। हे नानक! प्रभु ने कृपा करके ऐसा वर दिया है कि वह श्वास-श्वास प्रभु का स्मरण करता है॥४॥३६॥४९॥

भैरउ महला ५ ॥ आपे सासतु आपे बेदु ॥ आपे घटि घटि जाणै भेदु ॥ जोति सरूप जा की सभ वथु ॥ करण कारण पूरन समरथु ॥ १ ॥ प्रभ की ओट गहहु मन मेरे ॥ चरन कमल गुरमुखि आराधहु दुसमन दूखु न आवै नेरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपे वणु त्रिणु त्रिभवण सारु ॥ जा कै सूति परोइआ संसारु ॥ आपे सिव सकती संजोगी ॥ आपि निरबाणी आपे भोगी ॥ २ ॥ जत कत पेखउ तत तत सोइ ॥ तिसु बिनु दूजा नाही कोइ ॥ सागरु तरीऐ नाम कै रंगि ॥ गुण गावै नानकु साधसंगि ॥ ३ ॥ मुकति भुगति जुगति वसि जा कै ॥ ऊणा नाही किछु जन ता कै ॥ करि किरपा जिसु होइ सुप्रसंन ॥ नानक दास सेई जन धंन ॥ ४ ॥ ३७ ॥ ५० ॥

वेद एवं शास्त्र वह स्वयं ही है और वह स्वयं ही घट-घट का रहस्य जानता है। वह ज्योति स्वरूप है, रचना रूपी सब वस्तुएँ उसी की हैं। वह सब कुछ करने में पूर्ण समर्थ है॥१॥ हे मेरे मन! प्रभु की ओट लो, गुरु के द्वारा उसके चरण-कमल की आराधना करो, इससे दुश्मन एवं कोई दुःख पास नहीं आता॥१॥ रहाउ॥ वन, वनस्पति, तीनों लोकों का सार वह स्वयं ही है और पूरा संसार उसी के सूत्र में पिरोया हुआ है। वह स्वयं ही शिव और शक्ति का संयोग करवाने वाला है। वह स्वयं ही भोगने वाला है और स्वयं ही निर्लिप्त है॥२॥ जिधर भी दृष्टि जाती है, उधर वही है, उसके सिवा अन्य कोई नहीं। प्रभु-नाम के रंग में लीन रहकर संसार-सागर को पार किया जा सकता है, अतः साधु पुरुषों के संग नानक उसके ही गुण गाता है॥३॥ मुक्ति, भुक्ति एवं युक्ति उसी के वश में है और उसके भक्त के पास किसी चीज की कोई कमी नहीं। हे नानक! वह कृपा कर जिस पर प्रसन्न हो जाता है, वही व्यक्ति धन्य है॥४॥३७॥५०॥

भैरउ महला ५ ॥ भगता मनि आनंदु गोबिंद ॥ असथिति भए बिनसी सभ चिंद ॥ भै भ्रम बिनसि गए खिन माहि ॥ पारब्रहमु वसिआ मनि आइ ॥ १ ॥ राम राम संत सदा सहाइ ॥ घरि बाहरि नाले परमेसरु रवि रहिआ पूरन सभ ठाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ धनु मालु जोबनु जुगति गोपाल ॥ जीअ प्राण नित सुख प्रतिपाल ॥ अपने दास कउ दे राखै हाथ ॥ निमख न छोडै सद ही साथ ॥ २ ॥ हरि सा प्रीतमु अवरु न कोइ ॥ सारि सम्हाले साचा सोइ ॥ मात पिता सुत बंधु नराइणु ॥ आदि जुगादि भगत गुण गाइणु ॥ ३ ॥ तिस की धर प्रभ का मनि जोरु ॥ एक बिना दूजा नही होरु ॥ नानक कै मनि इहु पुरखारथु ॥ प्रभू हमारा सारे सुआरथु ॥ ४ ॥ ३८ ॥ ५१ ॥

भक्तों के मन में ईश्वर के बसने से आनंद ही आनंद बना रहता है। उनकी सब चिन्ताएँ नष्ट हो जाती हैं और वे स्थिरचित्त हो जाते हैं। पल में उनके भ्रम-भय नष्ट हो जाते हैं, क्योंकि परब्रह्म मन में आ बसता है॥१॥ ईश्वर संतों का सदा सहायक है, घर-बाहर सब में पूर्ण रूप से परमेश्वर ही व्याप्त है॥१॥ रहाउ॥ मेरा धन, माल, यौवन एवं जीवन-युक्ति सब परमात्मा ही है और मेरे जीवन-प्राणों का नित्य पालन पोषण करता है। वह अपने दास को हाथ देकर रक्षा करता है और पल भर भी साथ नहीं छोड़ता, सदैव साथ रहता है॥२॥ ईश्वर-सा प्रियतम दूसरा कोई नहीं, वह सच्चा प्रभु ही हमारा ध्यान रखता है। माता-पिता, पुत्र एवं बंधु परमात्मा ही है, युग-युगांतर से भक्त उसके ही गुण गा रहे हैं॥३॥ हमें उसका ही आसरा है और हमारे मन को प्रभु का ही बल है, उस एक के सिवा दूसरा अन्य कोई नहीं। नानक के मन में यही बल-शक्ति है कि प्रभु हमारे सब कार्य संवारेगा॥४॥३८॥५१॥

भैरउ महला ५ ॥ भै कउ भउ पड़िआ सिमरत हरि नाम ॥ सगल बिआधि मिटी त्रिहु गुण की दास के होए पूरन काम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि के लोक सदा गुण गावहि तिन कउ मिलिआ पूरन धाम ॥ जन का दरसु बांछै दिन राती होइ पुनीत धरम राइ जाम ॥ १ ॥ काम क्रोध लोभ मद निंदा साधसंगि मिटिआ अभिमान ॥ ऐसे संत भेटहि वडभागी नानक तिन कै सद कुरबान ॥ २ ॥ ३९ ॥ ५२ ॥

परमात्मा का नाम-स्मरण करने से भय भी डर गया है। तीन गुणों की सब व्याधियाँ मिट गई हैं और दास के सब कार्य पूर्ण हो गए हैं॥१॥ रहाउ॥ परमात्मा के भक्त सदा उसके गुण गाते हैं और उनको ही पूर्ण वैकुण्ठ धाम मिला है। भक्तों का दर्शन तो यमराज भी दिन-रात चाहता है और पावन होता है॥१॥ काम, क्रोध, लोभ, मद, निंदा एवं अभिमान साधु-संगत में मिट जाता

है। ऐसे संत-पुरुषों से जिनकी भेंट होती है, वे भाग्यशाली हैं और नानक उन पर सदैव कुर्बान है॥ २॥ ३६॥ ५२॥

भैरउ महला ५ ॥ पंच मजमी जो पंचन राखै ॥ मिथिआ रसना नित उठि भाखै ॥ चक्र बणाइ करै पाखंड ॥ झुरि झुरि पचै जैसे त्रिअ रंड ॥ १ ॥ हरि के नाम बिना सभ झूठु ॥ बिनु गुर पूरे मुकति न पाईऐ साची दरगहि साकत मूठु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सोई कुचीलु कुदरति नही जानै ॥ लीपिऐ थाइ न सुचि हरि मानै ॥ अंतरु मैला बाहरु नित धोवै ॥ साची दरगहि अपनी पति खोवै ॥ २ ॥ माइआ कारणि करै उपाउ ॥ कबहि न घालै सीधा पाउ ॥ जिनि कीआ तिसु चीति न आणै ॥ कूड़ी कूड़ी मुखहु वखाणै ॥ ३ ॥ जिस नो करमु करे करतारु ॥ साधसंगि होइ तिसु बिउहारु ॥ हरि नाम भगति सिउ लागा रंगु ॥ कहु नानक तिसु जन नही भंगु ॥ ४ ॥ ४० ॥ ५३ ॥

जो कामादिक पाँच विकारों को मन में धारण करता है, वही पंच मजमी होता है। वह नित्य उठकर मुँह से झूठ बोलता है, ललाट पर तिलक व चक्रादि पुजारी होने का ढोंग करता है, मगर विधवा औरत की तरह पछताता मर मिटता है॥ १॥ प्रभु के नाम बिना सब झूठ ही झूठ है, पूरे गुरु के बिना मुक्ति नसीब नहीं होती और मायावी जीव प्रभु-दरबार में लुट जाता है॥ १॥ रहाउ॥ वह मलिन पुरुष ईश्वर की कुदरत को नहीं जानता। स्थान की लीपा-पोती करने पर भी ईश्वर इसे पावन-स्थल नहीं मानता। जिसका अन्तर्मन मैला है और बाहर से शरीर को रोज़ धोता है, वह सच्चे दरबार में अपनी इज्जत खो देता है॥ २॥ वह धन-दौलत के लिए अनेक उपाय करता है और कभी सीधा पांव नहीं रखता अपितु बुरे काम ही करता है। जिसने बनाया है, उसे याद नहीं करता और मुँह से सदा झूठ ही बोलता रहता है॥ ३॥ जिस पर ईश्वर कृपा करता है, उसका व्यवहार साधु पुरुषों के संग हो जाता है। गुरु नानक का फुरमान है कि जिसका हरि-नाम भक्ति से रंग लग जाता है, उस व्यक्ति को कोई मुश्किल पेश नहीं आती॥ ४॥ ४०॥ ५३॥

भैरउ महला ५ ॥ निंदक कउ फिटके संसारु ॥ निंदक का झूठा बिउहारु ॥ निंदक का मैला आचारु ॥ दास अपुने कउ राखनहारु ॥ १ ॥ निंदकु मुआ निंदक कै नालि ॥ पारब्रहम परमेसरि जन राखे निंदक कै सिरि कड़किओ कालु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ निंदक का कहिआ कोइ न मानै ॥ निंदक झूठु बोलि पछुताने ॥ हाथ पछोरहि सिरु धरनि लगाहि ॥ निंदक कउ दई छोडै नाहि ॥ २ ॥ हरि का दासु किछु बुरा न मागै ॥ निंदक कउ लागै दुख सांगै ॥ बगुले जिउ रहिआ पंख पसारि ॥ मुख ते बोलिआ तां कढिआ बीचारि ॥ ३ ॥ अंतरजामी करता सोइ ॥ हरि जनु करै सु निहचलु होइ ॥ हरि का दासु साचा दरबारि ॥ जन नानक कहिआ ततु बीचारि ॥ ४ ॥ ४१ ॥ ५४ ॥

निंदक मनुष्य को समूचा संसार ही धिक्कारता एवं छिः छिः करता है, निंदक का व्यवहार झूठा ही होता है और उसका आचरण भी मैला होता है। मगर भगवान अपने दास को इस (निंदा) से बचाकर रखता है॥ १॥ निंदक मनुष्य निंदकों के संग रहकर मर जाता है। परब्रह्म परमेश्वर अपने भक्तों की रक्षा करता है और निंदक के सिर पर काल कड़कता है॥ १॥ रहाउ॥ निंदक व्यक्ति का कहा कोई नहीं मानता और निंदक झूठ बोलकर पछताता है, वह हाथ पटकता, सिर धरती पर लगाता है मगर निंदक को ईश्वर नहीं छोड़ता॥ २॥ ईश्वर का उपासक किसी का बुरा नहीं चाहता, अतः निंदक को दुखों के तीर लगते हैं। वह बगुले की मानिंद पंख पसारकर सफेदपोश बनता है किन्तु जब मुँह से बोलता है तो विचार कर सज्जन पुरुष उसे सत्संग से बाहर

निकाल देते हैं॥३॥ ईश्वर अन्तर्यामी है, भक्त जो कहता है, वह निश्चय होता है। नानक तत्व विचार कर कहते हैं कि प्रभु का भक्त सच्चे दरबार में शोभा पाता है॥४॥४१॥५४॥

भैरउ महला ५ ॥ दुइ कर जोरि करउ अरदासि ॥ जीउ पिंडु धनु तिस की रासि ॥ सोई मेरा सुआमी करनैहारु ॥ कोटि बार जाई बलिहार ॥ १ ॥ साधू धूरि पुनीत करी ॥ मन के बिकार मिटहि प्रभ सिमरत जनम जनम की मैलु हरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा कै ग्रिह महि सगल निधान ॥ जा की सेवा पाईऐ मानु ॥ सगल मनोरथ पूरनहार ॥ जीअ प्रान भगतन आधार ॥ २ ॥ घट घट अंतरि सगल प्रगास ॥ जपि जपि जीवहि भगत गुणतास ॥ जा की सेव न बिरथी जाइ ॥ मन तन अंतरि एकु धिआइ ॥ ३ ॥ गुर उपदेसि दइआ संतोखु ॥ नामु निधानु निरमलु इहु थोकु ॥ करि किरपा लीजै लड़ि लाइ ॥ चरन कमल नानक नित धिआइ ॥ ४ ॥ ४२ ॥ ५५ ॥

मैं दोनों हाथ जोड़कर प्रार्थना करता हूँ कि यह प्राण, तन, धन इत्यादि सब ईश्वर की पूंजी है। सब करनेवाला वही मेरा स्वामी है और करोड़ों बार उस पर कुर्बान जाता हूँ॥१॥ साधु की चरण-रज ने मुझे पावन कर दिया है, प्रभु-स्मरण से मन के विकार मिट गए हैं और जन्म-जन्म की मैल दूर हो गई है॥१॥ रहाउ॥ जिसके घर में सब सुखों के भण्डार हैं, जिसकी सेवा से मान-सम्मान प्राप्त होता है, सब कामनाओं को पूरा करने वाला वह परमात्मा ही भक्तों के जीवन एवं प्राणों का आसरा है॥२॥ वह सबके अन्तर्मन में प्रकाश करता है, उस गुणों के भण्डार परमेश्वर का नाम जप-जपकर ही भक्त जीते हैं। उसकी सेवा कभी व्यर्थ नहीं जाती, अतः मन-तन में एक ईश्वर का ही ध्यान करो॥३॥ गुरु के उपदेश से दया, संतोष इत्यादि शुभ गुणों की प्राप्ति होती है, हरिनाम का भण्डार अत्यंत पावन है। नानक की विनती है कि हे परमात्मा ! कृपा करके अपनी शरण में ले लो, नित्य तेरे चरणों का ध्यान करता हूँ॥४॥४२॥५५॥

भैरउ महला ५ ॥ सतिगुर अपुने सुनी अरदासि ॥ कारजु आइआ सगला रासि ॥ मन तन अंतरि प्रभू धिआइआ ॥ गुर पूरे डरु सगल चुकाइआ ॥ १ ॥ सभ ते वड समरथ गुरदेव ॥ सभि सुख पाई तिस की सेव ॥ रहाउ ॥ जा का कीआ सभु किछु होइ ॥ तिस का अमरु न मेटै कोइ ॥ पारब्रहमु परमेसरु अनूपु ॥ सफल मूरति गुरु तिस का रूपु ॥ २ ॥ जा कै अंतरि बसै हरि नामु ॥ जो जो पेखै सु ब्रहम गिआनु ॥ बीस बिसुए जा कै मनि परगासु ॥ तिसु जन कै पारब्रहम का निवासु ॥ ३ ॥ तिसु गुर कउ सद करी नमसकार ॥ तिसु गुर कउ सद जाउ बलिहार ॥ सतिगुर के चरन धोइ धोइ पीवा ॥ गुर नानक जपि जपि सद जीवा ॥ ४ ॥ ४३ ॥ ५६ ॥

सतगुरु ने हमारी प्रार्थना सुनी तो सब कार्य सफल सम्पन्न हो गए। मन-तन में केवल प्रभु का ही ध्यान किया, पूर्ण गुरु ने हमारा सारा डर दूर कर दिया है॥१॥ हमारा गुरुदेव सबसे बड़ा है, सब करने में पूर्ण समर्थ है और उसकी सेवा से सभी सुख प्राप्त हुए हैं॥रहाउ॥ जिसका किया सबकुछ होता है, उसके हुक्म को कोई नहीं टाल सकता। वह परब्रह्म-परमेश्वर अनुपम है, उसका दर्शन फलदायक है और गुरु उसका ही रूप है॥२॥ जिसके मन में परमात्मा का नाम बसता है, जो जो देखता है, उसमें ब्रह्म-ज्ञान ही पाता है। जिसके मन में शत-प्रतिशत पूर्ण प्रकाश होता है, उस व्यक्ति के अन्तर में परब्रह्म का निवास होता है॥३॥ उस गुरु को सदैव नमन करता हूँ, उस पर सदैव कुर्बान जाता हूँ। हे नानक ! सच्चे गुरु के चरण तो धो-धोकर पीता हूँ और गुरु का जाप कर करके जी रहा हूँ॥४॥४३॥५६॥

रागु भैरउ महला ५ पड़ताल घरु ३ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

परतिपाल प्रभ क्रिपाल कवन गुन गनी ॥ अनिक रंग बहु तरंग सरब को धनी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनिक गिआन अनिक धिआन अनिक जाप जाप ताप ॥ अनिक गुनित धुनित ललित अनिक धार मुनी ॥ १ ॥ अनिक नाद अनिक बाज निमख निमख अनिक स्वाद अनिक दोख अनिक रोग मिटहि जस सुनी ॥ नानक सेव अपार देव तटह खटह बरत पूजा गवन भवन जात्र करन सगल फल पुनी ॥ २ ॥ १ ॥ ५७ ॥ ८ ॥ २१ ॥ ७ ॥ ५७ ॥ ६३ ॥

हे प्रभु ! तू कृपालु एवं हमारा पालनहार है, मैं तुम्हारे कौन से गुण की बात करूँ। तू सबका मालिक है, तेरे अनेक रंग हैं, बहुत-सी मन की उमंगें हैं॥१॥ रहाउ॥ संसार में अनेकों ही ज्ञानवान, ध्यानशील, जाप जपने वाले जापक एवं तपस्वी हैं, अनेकों ही मधुर स्वर सहित तेरे गुण गाने वाले हैं और अनेकों मुनि तेरे ध्यान में लीन रहने वाले हैं॥१॥ अनेकों ही तेरी खातिर गाते हैं, पल-पल वाद्य बजाते हैं, अनेकों ही खूब मजा लेकर तेरा नाम लेते हैं, तेरा यश सुनने से अनेकानेक रोग दोष मिट जाते हैं। हे नानक ! ईश्वर की उपासना में ही तीर्थ, षट कर्म, व्रत-उपवास, पूजा-अर्चना, यात्रा इत्यादि सब पुण्य-फल की प्राप्ति होती है॥२॥१॥ ५७॥ ८॥२१॥७॥५७॥६३॥

भैरउ असटपदीआ महला १ घरु २ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

आतम महि रामु राम महि आतमु चीनसि गुर बीचारा ॥ अंम्रित बाणी सबदि पछाणी दुख काटै हउ मारा ॥ १ ॥ नानक हउमै रोग बुरे ॥ जह देखां तह एका बेदन आपे बखसै सबदि धुरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपे परखे परखणहारै बहुरि सूलाकु न होई ॥ जिन कउ नदरि भई गुरि मेले प्रभ भाणा सचु सोई ॥ २ ॥ पउणु पाणी बैसंतरु रोगी रोगी धरति सभोगी ॥ मात पिता माइआ देह सि रोगी रोगी कुटंब संजोगी ॥ ३ ॥ रोगी ब्रहमा बिसनु सरुद्रा रोगी सगल संसारा ॥ हरि पदु चीनि भए से मुकते गुर का सबदु वीचारा ॥ ४ ॥ रोगी सात समुंद सनदीआ खंड पताल सि रोगि भरे ॥ हरि के लोक सि साचि सुहेले सरबी थाई नदरि करे ॥ ५ ॥ रोगी खट दरसन भेखधारी नाना हठी अनेका ॥ बेद कतेब करहि कह बपुरे नह बूझहि इक एका ॥ ६ ॥ मिठ रसु खाइ सु रोगि भरीजै कंद मूलि सुखु नाही ॥ नामु विसारि चलहि अन मारगि अंत कालि पछुताही ॥ ७ ॥ तीरथि भरमै रोगु न छूटसि पड़िआ बादु बिबादु भइआ ॥ दुबिधा रोगु सु अधिक वडेरा माइआ का मुहताजु भइआ ॥ ८ ॥ गुरमुखि साचा सबदि सलाहै मनि साचा तिसु रोगु गइआ ॥ नानक हरि जन अनदिनु निरमल जिन कउ करमि नीसाणु पइआ ॥ ९ ॥ १ ॥

गुरु के सद्‌विचार द्वारा यह रहस्य मालूम होता है कि आत्मा में परमात्मा और परमात्मा में ही आत्मा है। उसकी अमृत वाणी से शब्द की पहचान होती है, जो दुःखों को काट देती है और अहम् को मार देती है॥१॥ हे नानक ! अहम् का रोग बहुत बुरा है। जहाँ भी देखा जाए वहाँ एक दर्द सता रहा है। यदि परमेश्वर क्षमा करे तो निदान हो सकता है॥१॥रहाउ॥ जब परखने वाला स्वयं भले-बुरे की परख कर लेता है तो उसे पुनः परीक्षण के लिए सूए पर नहीं चढ़ाया जाता। जिन पर उसकी करुणा-दृष्टि हो गई, उसका गुरु से साक्षात्कार हो गया और प्रभु की रज़ा सत्य सिद्ध हुई॥२॥ पवन, पानी एवं अग्नि रोगग्रस्त है और भोग पदार्थों सहित पूरी धरती रोगी है।

माता-पिता, माया, शरीर रोगी हैं एवं परिवार से जुड़े सदस्य एवं नातेदार भी रोगग्रस्त हैं॥३॥ ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश सहित पूरा संसार ही अहम् भावना के कारण रोगी है। जिन्होंने शब्द-गुरु का चिंतन कर परमपद को समझ लिया है, वे संसार से मुक्त हो गए हैं॥४॥ सात समुद्र, नदियाँ एवं अनेक खण्ड एवं पाताल रोगों से भरे हुए हैं। मगर प्रभु के भक्त ही वास्तव में सुखी हैं चूंकि हर जगह पर प्रभु कृपा करता है॥५॥ छः दर्शनों को मानने वाले वेषधारी, अनेक हठी भी रोगों के शिकार हैं। वेद-कतेब बेचारे भी क्या करें जब जीव एक ईश्वर के रहस्य को नहीं बूझते॥६॥ मीठे रस खाने से भी रोग ही भर जाते हैं और कन्दमूल सेवन करने से भी सुख प्राप्त नहीं होता। प्रभु-नाम को भुलाकर जो अन्य रास्ते पर चलते हैं, अन्तिम समय पछताते ही हैं॥७॥ तीर्थों पर भ्रमण करने से रोग नहीं छूटते और पढ़ने से वाद-विवाद का रोग लग जाता है। दुविधा का रोग सबसे बड़ा है और मनुष्य केवल धन का मोहताज बना रहता है॥८॥ जो गुरु के सान्निध्य में निष्ठापूर्वक परमात्मा की प्रशंसा करता है, उसका रोग दूर हो जाता है। गुरु नानक का फुरमान है कि जिन पर परमात्मा की कृपा होती है, वे भक्तजन नित्य निर्मल रहते हैं॥९॥१॥

भैरउ महला ३ घरु २ १ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

तिनि करतै इकु चलतु उपाइआ ॥ अनहद बाणी सबदु सुणाइआ ॥ मनमुखि भूले गुरमुखि बुझाइआ ॥ कारणु करता करदा आइआ ॥ १ ॥ गुर का सबदु मेरै अंतरि धिआनु ॥ हउ कबहु न छोडउ हरि का नामु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पिता प्रहलादु पड़ण पठाइआ ॥ लै पाटी पाधे कै आइआ ॥ नाम बिना नह पड़उ अचार ॥ मेरी पटीआ लिखि देहु गोबिंद मुरारि ॥ २ ॥ पुत्र प्रहिलाद सिउ कहिआ माइ ॥ परविरति न पड़हु रही समझाइ ॥ निरभउ दाता हरि जीउ मेरै नालि ॥ जे हरि छोडउ तउ कुलि लागै गालि ॥ ३ ॥ प्रहलादि सभि चाटड़े विगारे ॥ हमारा कहिआ न सुणै आपणे कारज सवारे ॥ सभ नगरी महि भगति द्रिड़ाई ॥ दुसट सभा का किछु न वसाई ॥ ४ ॥ संडै मरकै कीई पूकार ॥ सभे दैत रहे झख मारि ॥ भगत जना की पति राखै सोई ॥ कीते कै कहिऐ किआ होई ॥ ५ ॥ किरत संजोगी दैति राजु चलाइआ ॥ हरि न बूझै तिनि आपि भुलाइआ ॥ पुत्र प्रहलाद सिउ वादु रचाइआ ॥ अंधा न बूझै कालु नेड़ै आइआ ॥ ६ ॥

ईश्वर ने एक लीला रचकर अनहद वाणी को शब्द रूप में सुनाया है। मनमुखी जीवों ने सुनकर भी ध्यान नहीं दिया, मगर गुरुमुखों ने तथ्य को बूझ लिया है कि प्रभु स्वयं ही कर्ता है और बनाता आया है॥१॥ मेरे मन में गुरु-उपदेश का ही ध्यान बना हुआ है और हरि-नाम स्मरण को कदापि नहीं छोड़ सकता॥१॥ रहाउ॥ पिता हिरण्यकशिपु ने प्रहलाद को पढ़ने के लिए पाठशाला भेजा और वह पट्टी लेकर अध्यापक के पास आ गया। उसने आग्रह किया कि प्रभु-नाम के सिवा अन्य कुछ नहीं पढ़ूँगा, अतः मेरी पट्टी पर ईश्वर का नाम लिख दो॥२॥ माँ ने पुत्र प्रहलाद से कहा, "तुम अन्य रीति-रिवाजों में मत पड़ो, अध्यापक का कहना मानो।" प्रहलाद ने उत्तर दिया, "प्रेमस्वरूप, सबको देने वाला ईश्वर मेरे साथ है, अगर उसे छोड़ता हूँ तो कुल को दाग लगेगा"॥३॥ अध्यापकों ने पिता से शिकायत की कि प्रहलाद ने सभी सहपाठियों को बिगाड़ दिया है और हमारा कहना नहीं मानता अपितु अपने ही कार्य (भक्ति) कर रहा है। समूचे नगर में भक्ति की बात कर रहा है और दुष्टों की सभा का उस पर कोई वश नहीं चला॥४॥ अध्यापकों षण्ड एवं

अमरक ने राजा हिरण्यकशिपु से फरियाद की कि सभी दैत्य निरर्थक समय बर्बाद कर रहे हैं। जब भक्तजनों की प्रतिष्ठा एवं प्राण स्वयं ईश्वर बचाने वाला है तो उसके उत्पन्न किए जीव का कोई बल नहीं चल सकता॥५॥ कर्मों के संयोग से दैत्य हिरण्यकशिपु राज करने लगा, उसने ईश्वर के रहस्य को नहीं समझा और ईश्वर ने स्वयं ही उसे भुला दिया। वह अपने पुत्र प्रहलाद से झगड़ा करने लग गया, मगर अन्धे दैत्य ने यह नहीं समझा कि मौत उसके निकट आ रही है॥६॥

प्रहलादु कोठे विचि राखिआ बारि दीआ ताला ॥ निरभउ बालकु मूलि न डरई मेरै अंतरि गुर गोपाला ॥ कीता होवै सरीकी करै अनहोदा नाउ धराइआ ॥ जो धुरि लिखिआ सुो आइ पहुता जन सिउ वादु रचाइआ ॥ ७ ॥ पिता प्रहलाद सिउ गुरज उठाई ॥ कहां तुम्हारा जगदीस गुसाई ॥ जगजीवनु दाता अंति सखाई ॥ जह देखा तह रहिआ समाई ॥ ८ ॥ थंम्हु उपाड़ि हरि आपु दिखाइआ ॥ अहंकारी दैतु मारि पचाइआ ॥ भगता मनि आनंदु वजी वधाई ॥ अपने सेवक कउ दे वडिआई ॥ ९ ॥ जंमणु मरणा मोहु उपाइआ ॥ आवणु जाणा करतै लिखि पाइआ ॥ प्रहलाद कै कारजि हरि आपु दिखाइआ ॥ भगता का बोलु आगै आइआ ॥ १० ॥ देव कुली लखिमी कउ करहि जैकारु ॥ माता नरसिंघ का रूपु निवारु ॥ लखिमी भउ करै न साकै जाइ ॥ प्रहलादु जनु चरणी लागा आइ ॥ ११ ॥ सतिगुरि नामु निधानु द्रिड़ाइआ ॥ राजु मालु झूठी सभ माइआ ॥ लोभी नर रहे लपटाइ ॥ हरि के नाम बिनु दरगह मिलै सजाइ ॥ १२ ॥ कहै नानकु सभु को करे कराइआ ॥ से परवाणु जिनी हरि सिउ चितु लाइआ ॥ भगता का अंगीकारु करदा आइआ ॥ करतै अपणा रूपु दिखाइआ ॥ १३ ॥ १ ॥ २ ॥

फिर प्रहलाद को कमरे में बंद करके दरवाजे को ताला लगा दिया गया। निर्भीक बालक ने माना कि ईश्वर मेरे अन्तर्मन में ही है, इसलिए वह बिल्कुल नहीं डरा। ईश्वर का बनाया हुआ जीव अगर ईश्वर की बराबरी करने लगे और अपना नाम ऊँचा मनवाए तो कर्म-फल अवश्य पाएगा, अतः भक्त प्रहलाद से हिरण्यकशिपु ने झगड़ा खड़ा कर लिया॥७॥ पिता हिरण्यकशिपु ने पुत्र का वध करने के लिए गदा उठा ली और चिल्लाकर बोला, "तुम्हारा जगदीश कहाँ है?" प्रहलाद ने प्रत्युत्तर दिया, "संसार का जीवन दाता अन्त तक मेरा सहायक है और मैं जिधर देखता हूँ, उधर ही व्याप्त है"॥८॥ तत्क्षण खम्भे को फाड़कर ईश्वर ने नृसिंह रूप में स्वयं को साक्षात् किया और अहंकारी राक्षस को मौत के घाट उतार दिया। इस तरह भक्तों के मन में आनंद छा गया और अपने सेवक को उसने बड़ाई प्रदान की॥९॥ जन्म, मरण, मोह सब ईश्वर ने ही उत्पन्न किया है और आवागमन का लेख लिख दिया है। भक्त प्रहलाद के कार्य हेतु भगवान ने स्वयं को प्रगट किया और भक्तों का वचन पूरा हुआ॥१०॥ फिर सभी देवताओं ने लक्ष्मी जी की वंदना करते हुए विनती की, "हे माता! भगवान को नृसिंह का रूप छोड़ने के लिए आग्रह करें।" मगर लक्ष्मी भी डरते हुए उनके पास न जा सकी। तदन्तर भक्त प्रहलाद प्रभु के चरणों में लग गया॥११॥ सतगुरु ने हरि-नाम रूपी सुखों का भण्डार ही पक्का करवाया है। राज, सम्पदा एवं समूची माया झूठी है, मगर लोभी व्यक्ति इससे ही लिपटे रहते हैं। हरि-नाम स्मरण के बिना दरबार में दण्ड ही मिलता है॥१२॥ हे नानक! ईश्वर ही सब करने एवं करवाने वाला है। वही व्यक्ति मान्य हैं, जिन्होंने ईश्वर से मन लगाया है। वह सदैव भक्तों का साथ देता आया है, अतः भक्तों के लिए कर्ता-प्रभु ने अपना रूप दिखाया है॥१३॥१॥२॥

भैरउ महला ३ ॥ गुर सेवा ते अंम्रित फलु पाइआ हउमै त्रिसन बुझाई ॥ हरि का नामु ह्रिदै मनि वसिआ मनसा मनहि समाई ॥ १ ॥ हरि जीउ क्रिपा करहु मेरे पिआरे ॥ अनदिनु हरि गुण दीन जनु मांगै गुर कै सबदि उधारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संत जना कउ जमु जोहि न साकै रती अंच दूख न लाई ॥ आपि तरहि सगले कुल तारहि जो तेरी सरणाई ॥ २ ॥ भगता की पैज रखहि तू आपे एह तेरी वडिआई ॥ जनम जनम के किलविख दुख काटहि दुबिधा रती न राई ॥ ३ ॥ हम मूड़ मुगध किछु बूझहि नाही तू आपे देहि बुझाई ॥ जो तुधु भावै सोई करसी अवरु न करणा जाई ॥ ४ ॥ जगतु उपाइ तुधु धंधै लाइआ भूंडी कार कमाई ॥ जनमु पदारथु जूऐ हारिआ सबदै सुरति न पाई ॥ ५ ॥ मनमुखि मरहि तिन किछू न सूझै दुरमति अगिआन अंधारा ॥ भवजलु पारि न पावहि कब ही डूबि मुए बिनु गुर सिरि भारा ॥ ६ ॥ साचै सबदि रते जन साचे हरि प्रभि आपि मिलाए ॥ गुर की बाणी सबदि पछाती साचि रहे लिव लाए ॥ ७ ॥ तूं आपि निरमलु तेरे जन है निरमल गुर कै सबदि वीचारे ॥ नानकु तिन कै सद बलिहारै राम नामु उरि धारे ॥ ८ ॥ २ ॥ ३ ॥

गुरु की सेवा से अमृत फल पाया जा सकता है और अहम् तथा तृष्णा निवृत्त हो जाती है। प्रभु का नाम हृदय में अवस्थित हो जाए तो मन की लालसाएँ दूर हो जाती हैं॥१॥ हे प्यारे प्रभु! कृपा करो, दीन सेवक तुझसे तेरा गुणगान ही चाहता है, गुरु के उपदेश से उद्धार करो॥१॥ रहाउ॥ संतजनों के पास यम नहीं फटकता और उन्हें किंचित मात्र भी दुःख नहीं होता। जो तेरी शरण में आ जाते हैं, वे स्वयं तो संसार-सागर से मुक्त होते ही हैं, अपनी समस्त वंशावलि को भी मुक्त करवाते हैं॥२॥ यह तेरा बड़प्पन है कि तू स्वयं ही भक्तों की लाज रखता है, तू जन्म-जन्मांतर के पाप-दुःख काट देता है और उन में रत्ती भर दुविधा नहीं रहती॥३॥ हम मूर्ख-नादान तो कुछ भी नहीं समझते, तू स्वयं ही समझा दे। जो तू चाहता है, वही करता है और अन्य कुछ नहीं हो पाता॥४॥ जगत को उत्पन्न कर तूने काम-धन्धे में लगा दिया, परन्तु लोग मन्दे काम करते रहते हैं। लोगों ने अमूल्य जीवन को जुए में पराजित कर दिया और शब्द को अन्तर्मन में नहीं बसाया॥५॥ स्वेच्छाचारी मर जाते हैं और दुर्मति एवं अज्ञान अंधेरे के कारण कोई सूझ नहीं होती। वे संसार-सागर से पार नहीं उतरते और गुरु के बिना पापों का बोझ लेकर डूब मरते हैं॥६॥ सच्चे शब्द में लीन व्यक्ति ही सत्यनिष्ठ हैं और प्रभु स्वयं ही उन्हें मिला लेता है। गुरु की वाणी द्वारा शब्द रहस्य को जानकर वे सत्य में लगन लगाए रखते हैं॥७॥ तू स्वयं तो निर्मल ही है, तेरे सेवक भी निर्मल हैं, गुरु के उपदेश द्वारा यह विचार किया है। नानक उन पर सदैव कुर्बान जाता है, जिन्होंने राम नाम को मन में धारण कर लिया है॥८॥२॥ ३॥

भैरउ महला ५ असटपदीआ घरु २ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

जिसु नामु रिदै सोई वड राजा ॥ जिसु नामु रिदै तिसु पूरे काजा ॥ जिसु नामु रिदै तिनि कोटि धन पाए ॥ नाम बिना जनमु बिरथा जाए ॥ १ ॥ तिसु सालाही जिसु हरि धनु रासि ॥ सो वडभागी जिसु गुर मसतकि हाथु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिसु नामु रिदै तिसु कोट कई सैना ॥ जिसु नामु रिदै तिसु सहज सुखैना ॥ जिसु नामु रिदै सो सीतलु हूआ ॥ नाम बिना ध्रिगु जीवणु मूआ ॥ २ ॥ जिसु नामु रिदै सो जीवन मुकता ॥ जिसु नामु रिदै तिसु सभ ही जुगता ॥ जिसु नामु रिदै तिनि नउ निधि पाई ॥ नाम बिना भ्रमि आवै जाई ॥ ३ ॥ जिसु नामु रिदै सो वेपरवाहा ॥ जिसु नामु रिदै तिसु सद ही लाहा

॥ जिसु नामु रिदै तिसु वड परवारा ॥ नाम बिना मनमुख गावारा ॥ ४ ॥ जिसु नामु रिदै तिसु निहचल आसनु ॥ जिसु नामु रिदै तिसु तखति निवासनु ॥ जिसु नामु रिदै सो साचा साहु ॥ नामहीण नाही पति वेसाहु ॥ ५ ॥ जिसु नामु रिदै सो सभ महि जाता ॥ जिसु नामु रिदै सो पुरखु बिधाता ॥ जिसु नामु रिदै सो सभ ते ऊचा ॥ नाम बिना भ्रमि जोनी मूचा ॥ ६ ॥ जिसु नामु रिदै तिसु प्रगटि पहारा ॥ जिसु नामु रिदै तिसु मिटिआ अंधारा ॥ जिसु नामु रिदै सो पुरखु परवाणु ॥ नाम बिना फिरि आवण जाणु ॥ ७ ॥ तिनि नामु पाइआ जिसु भइओ क्रिपाल ॥ साधसंगति महि लखे गोपाल ॥ आवण जाण रहे सुखु पाइआ ॥ कहु नानक ततै ततु मिलाइआ ॥ ८ ॥ १ ॥ ४ ॥

जिसके हृदय में हरि-नाम है, वही सबसे बड़ा बादशाह है, जिसके हृदय में नाम है, उसके सभी कार्य सम्पन्न हो जाते हैं। जिसके हृदय में राम नाम है, वही करोड़ों धन पाता है, किन्तु प्रभु-नाम बिना जीवन व्यर्थ ही जाता है॥१॥ जिसके पास प्रभु-नाम रूपी धन राशि है, उसकी ही प्रशंसा करता हूँ। वही भाग्यशाली है, जिसके माथे पर गुरु का हाथ (आशीष) है॥१॥ रहाउ॥ जिसके हृदय में राम नाम है, उसके पास अनेक किले एवं बेशुमार सेना है। जिसके हृदय में नाम है, वही परम सुखी है। जिसके हृदय में हरि का नाम है, उसे ही शीतल शान्ति प्राप्त होती है। हरिनामोपासना के बिना जीना धिक्कार है॥२॥ जिस दिल में प्रभु-नाम अवस्थित है, वही जीवन्मुक्त होता है। जिसके हृदय में हरि-नाम है, उसके पास सब युक्तियां हैं। नौ-निधियाँ उसे ही प्राप्त होती हैं, जिसके हृदय में राम नाम है। प्रभु-नाम के बिना भ्रम में पड़कर आवागमन बना रहता है॥३॥ जिसके हृदय में हरि-नाम है, उसे कोई परवाह नहीं होती। हृदय में नाम बसाने वाला सदा लाभ पाता है। जिसके हृदय में नाम विराजता है, उसका परिवार सुख-समृद्धि पाता है। प्रभु-नाम के बिना मनुष्य मनमुखी गंवार माना जाता है॥४॥ जिसके हृदय में राम नाम है, उसका आसन अटल है, जिसके हृदय में प्रभु का नाम है, वही राजसिंहासन पर सुशोभित होता है। वही सच्चा साहूकार है, जिसके हृदय में परमात्मा का नाम है। नामविहीन व्यक्ति की कोई इज्जत नहीं और उस पर भरोसा भी नहीं किया जा सकता॥५॥ जिसके हृदय में प्रभु का नाम है, वह सब में प्रसिद्ध हो जाता है और वही परमपुरुष विधाता रूप है। जिसके हृदय में हरि-नाम है, वही सबसे ऊँचा होता है, परन्तु नाम से विहीन रहकर प्राणी योनि-चक्र में भटकता रहता है॥६॥ जिसके हृदय में परमात्मा का नाम है, उसे संसार में व्याप्त प्रभु ही दृष्टिगत होता है और उसका अज्ञान का अंधेरा मिट जाता है। जिसके हृदय में नाम है, वही पुरुष स्वीकार होता है और हरि-नाम के बिना पुनः आवागमन में पड़ा रहता है॥७॥ प्रभु-नाम वही पाता है, जिस पर कृपालु होता है, वह साधु पुरुषों की संगत में भगवान के दर्शन करता है। उसका आवागमन निवृत्त हो जाता है और तमाम सुख प्राप्त करता है। हे नानक ! यूं आत्म-तत्व परम-तत्व में ही विलीन हो जाता है॥८॥१॥४॥

भैरउ महला ५ ॥ कोटि बिसन कीने अवतार ॥ कोटि ब्रहमंड जा के ध्रमसाल ॥ कोटि महेस उपाइ समाए ॥ कोटि ब्रहमे जगु साजण लाए ॥ १ ॥ ऐसो धणी गुविंदु हमारा ॥ बरनि न साकउ गुण बिसथारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कोटि माइआ जा कै सेवकाइ ॥ कोटि जीअ जा की सिहजाइ ॥ कोटि उपारजना तेरै अंगि ॥ कोटि भगत बसत हरि संगि ॥ २ ॥ कोटि छत्रपति करत नमसकार ॥ कोटि इंद्र ठाढे है दुआर ॥ कोटि बैकुंठ जा की द्रिसटी माहि ॥ कोटि नाम जा की कीमति नाहि ॥ ३ ॥ कोटि पूरीअत है जा कै नाद ॥ कोटि अखारे चलित बिसमाद ॥ कोटि सकति सिव आगिआकार ॥

कोटि जीअ देवै आधार ॥ ४ ॥ कोटि तीरथ जा के चरन मझार ॥ कोटि पवित्र जपत नाम चार ॥ कोटि पूजारी करते पूजा ॥ कोटि बिसथारनु अवरु न दूजा ॥ ५ ॥ कोटि महिमा जा की निरमल हंस ॥ कोटि उसतति जा की करत ब्रहमंस ॥ कोटि परलउ ओपति निमख माहि ॥ कोटि गुणा तेरे गणे न जाहि ॥ ६ ॥ कोटि गिआनी कथहि गिआनु ॥ कोटि धिआनी धरत धिआनु ॥ कोटि तपीसर तप ही करते ॥ कोटि मुनीसर मोनि महि रहते ॥ ७ ॥ अविगत नाथु अगोचर सुआमी ॥ पूरि रहिआ घट अंतरजामी ॥ जत कत देखउ तेरा वासा ॥ नानक कउ गुरि कीओ प्रगासा ॥ ८ ॥ २ ॥ ५ ॥

जिस परमात्मा ने करोड़ों विष्णु अवतार उत्पन्न किए, धर्म का आचरण करने के लिए करोड़ों ब्रह्माण्ड बनाए, करोड़ों शिवशंकर उत्पन्न कर उन्हें स्वयं में विलीन कर लिया और करोड़ों ही ब्रह्मा जगत को बनाने के लिए लगाए हुए हैं॥१॥ हमारा मालिक परमेश्वर ऐसा है कि उसके गुणों का विस्तार मैं व्यक्त नहीं कर सकता॥१॥ रहाउ॥ हरदम प्रभु की सेवा में तल्लीन माया भी करोड़ों हैं, वह करोड़ों जीवों में रमण कर रहा है, हे स्वामी ! ऐसी सृष्टियाँ भी करोड़ों हैं, जो तेरे अंगों में तल्लीन हैं, करोड़ों भक्त उस परमात्मा के संग बसते हैं॥२॥ करोड़ों छत्रपति तेरी वंदना करते हैं, करोड़ों इन्द्र तेरे द्वार पर हाथ जोड़कर खड़े हैं, करोड़ों वैकुण्ठ जिसकी दृष्टि में हैं, करोड़ों ही उसके नाम हैं, जिनकी महिमा अमूल्य है॥३॥ जिसके करोड़ों नाद गूंजते रहते हैं, जिसकी विस्मयपूर्ण करोड़ों कर्मभूमियाँ एवं लीलाएँ हैं। करोड़ों शिव-शक्तियाँ उसकी आज्ञा का पालन करती हैं, वह सर्वशक्तिमान करोड़ों जीवों को आसरा दे रहा है॥४॥ करोड़ों तीर्थ जिसके चरणों में तल्लीन हैं, करोड़ों लोग जिसका पावन नाम जपते हैं, करोड़ों पुजारी उसकी पूजा-अर्चना करते हैं, करोड़ों ही विस्तार उस परमात्मा के हैं, अन्य कोई नहीं॥५॥ करोड़ों पुण्यात्माएँ निरंकार की महिमा गा रही हैं। ब्रह्म के अंश करोड़ों ही उसकी स्तुति करते हैं। वह अखिलेश्वर पल में करोड़ों प्रलय अथवा उत्पत्तियाँ करने में सर्वशक्तिमान है। हे परमात्मा ! तेरे करोड़ों गुणों को गिना नहीं जा सकता॥६॥ करोड़ों ज्ञानवान ज्ञान-चर्चा करते हैं, करोड़ों ध्यानशील उसके ध्यान में लीन होते हैं, उसे पाने की उमंग में करोड़ों तपस्वी उसकी तपस्या करते हैं और करोड़ों मुनिवर मौन धारण किए रखते हैं॥७॥ वह अव्यक्त नाथ इन्द्रियातीत सबका स्वामी है, वह अन्तर्यामी घट-घट में व्याप्त है। जहाँ कहीं देखता हूँ, हे प्रभु ! तेरा ही वास है। नानक को गुरु ने यह ज्ञानालोक दिया है॥८॥२॥५॥

भैरउ महला ५ ॥ सतिगुरि मोकउ कीनो दानु ॥ अमोल रतनु हरि दीनो नामु ॥ सहज बिनोद चोज आनंता ॥ नानक कउ प्रभु मिलिओ अचिंता ॥ १ ॥ कहु नानक कीरति हरि साची ॥ बहुरि बहुरि तिसु संगि मनु राची ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अचिंत हमारै भोजन भाउ ॥ अचिंत हमारै लीचै नाउ ॥ अचिंत हमारै सबदि उधार ॥ अचिंत हमारै भरे भंडार ॥ २ ॥ अचिंत हमारै कारज पूरे ॥ अचिंत हमारै लथे विसूरे ॥ अचिंत हमारै बैरी मीता ॥ अचिंतो ही इहु मनु वसि कीता ॥ ३ ॥ अचिंत प्रभू हम कीआ दिलासा ॥ अचिंत हमारी पूरन आसा ॥ अचिंत हम्हा कउ सगल सिधांतु ॥ अचिंतु हम कउ गुरि दीनो मंतु ॥ ४ ॥ अचिंत हमारे बिनसे बैर ॥ अचिंत हमारे मिटे अंधेर ॥ अचिंतो ही मनि कीरतनु मीठा ॥ अचिंतो ही प्रभु घटि घटि डीठा ॥ ५ ॥ अचिंत मिटिओ है सगलो भरमा ॥ अचिंत वसिओ मनि सुख बिस्रामा ॥ अचिंत हमारै अनहत वाजै ॥ अचिंत हमारै गोबिंदु गाजै ॥ ६ ॥ अचिंत हमारै मनु पतीआना

॥ निहचल धनी अचिंतु पछाना ॥ अचिंतो उपजिओ सगल बिबेका ॥ अचिंत चरी हथि हरि हरि टेका ॥ ७ ॥ अचिंत प्रभू धुरि लिखिआ लेखु ॥ अचिंत मिलिओ प्रभु ठाकुरु एकु ॥ चिंत अचिंता सगली गई ॥ प्रभ नानक नानक नानक मई ॥ ८ ॥ ३ ॥ ६ ॥

सतगुरु ने मुझे हरि-नाम रूपी अमूल्य रत्न प्रदान किया है। नानक को स्वतः ही सहज स्वभाव आनंद-विनोद एवं अद्‌भुत लीला करने वाला प्रभु मिल गया है॥१॥ हे नानक! परमात्मा की कीर्ति शाश्वत है, यह मन हरदम उसके संग लीन रहता है॥१॥ रहाउ॥ स्वभावतः हमारा प्रेम भोजन होता है, नैसर्गिक ही हमारे यहाँ परमेश्वर का नाम जपा जाता है। स्वतः हमारा शब्द द्वारा उद्धार होता है और स्वाभाविक ही हमारे भण्डार भरे रहते हैं॥२॥ नैसर्गिक ही हमारे सब कार्य पूरे हो जाते हैं और स्वभावतः हमारे दुःख दर्द दूर हुए हैं। नैसर्गिक ही हमारे शत्रु भी मित्र बन गए हैं और सहज स्वभाव ही यह मन वश में कर लिया है॥३॥ स्वभावतः प्रभु ने हमें दिलासा दिया है और स्वतः हमारी सब आशाएँ पूर्ण हुई हैं। स्वतः ही हमें ज्ञान-तत्व प्राप्त हुआ और स्वभावतः ही हमें गुरु ने मंत्र दिया है॥४॥ नैसर्गिक हमारी वैर-भावना समाप्त हुई है और स्वतः हमारे अज्ञान का अन्धेरा मिटा है। सहज स्वभाव ही मन को परमेश्वर का संकीर्तन प्रिय लगा है और नैसर्गिक ही घट-घट में प्रभु दिखाई दिया है॥५॥ सब भ्रम स्वतः ही मिट गए हैं और स्वभावतः ही मन में सुख-शान्ति हो गई है। स्वाभाविक ही मन में अनाहत नाद बजता रहता है और स्वतः ही प्रभु हमारे अन्तर्मन में साक्षात् हो गया है॥६॥ नैसर्गिक ही हमारा मन प्रसन्न हो गया है और सहज स्वभाव ही निश्चल मालिक को पहचान लिया है। स्वतः ही विवेक बुद्धि उत्पन्न हुई है और नैसर्गिक ही ईश्वर का आसरा मिला है॥७॥ सहज स्वभाव ही प्रभु ने भाग्यालेख लिखा, जिसके फलस्वरूप उस एक ईश्वर से साक्षात्कार हो गया। चिन्ता एवं अचिंता सब दूर हो गई हैं और प्रभु नानक एवं नानक प्रभुमयी हो गया है॥८॥३॥६॥

भैरउ बाणी भगता की ॥ कबीर जीउ घरु १ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

इहु धनु मेरे हरि को नाउ ॥ गांठि न बाधउ बेचि न खाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नाउ मेरे खेती नाउ मेरे बारी ॥ भगति करउ जनु सरनि तुम्हारी ॥ १ ॥ नाउ मेरे माइआ नाउ मेरे पूंजी ॥ तुमहि छोडि जानउ नही दूजी ॥ २ ॥ नाउ मेरे बंधिप नाउ मेरे भाई ॥ नाउ मेरे संगि अंति होइ सखाई ॥ ३ ॥ माइआ महि जिसु रखै उदासु ॥ कहि कबीर हउ ता को दासु ॥ ४ ॥ १ ॥

परमात्मा का नाम मेरा अक्षुण्ण धन है, जिसे न ही गाँठ में बाँधता हूँ और न ही बेचकर खाता हूँ॥१॥ रहाउ॥ नाम ही मेरी खेतीबाड़ी है, हे परमेश्वर! तुम्हारी शरण में आकर ही भक्ति करता हूँ॥१॥ प्रभु का नाम मेरी धन-सम्पदा है, नाम ही मेरी पूंजी है। हे दीनदयाल! तुम्हें छोड़कर अन्य किसी को नहीं जानता॥२॥ परमेश्वर का नाम ही मेरा बंधु एवं मेरा भाई है और नाम ही मेरा अन्त तक साथी एवं सहायक होगा॥३॥ कबीर जी कहते हैं कि मोह माया में जिसे वह निर्लिप्त रखता है, मैं तो उसका ही दास हूँ॥४॥१॥

नांगे आवनु नांगे जाना ॥ कोइ न रहिहै राजा राना ॥ १ ॥ रामु राजा नउ निधि मेरै ॥ संपै हेतु कलतु धनु तेरै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आवत संग न जात संगाती ॥ कहा भइओ दरि बांधे हाथी ॥ २ ॥ लंका गढु सोने का भइआ ॥ मूरखु रावनु किआ ले गइआ ॥ ३ ॥ कहि कबीर किछु गुनु बीचारि ॥ चले जुआरी दुइ हथ झारि ॥ ४ ॥ २ ॥

जीव ने नग्न ही आना है एवं नग्न ही चले जाना है, कोई राजा अथवा राणा सदैव जीवित नहीं रहता॥१॥ प्रभु ही मेरे लिए नवनिधि है, यह सम्पत्ति, मोह-प्रेम, स्त्री, धन इत्यादि तेरे ही दिए हुए हैं॥१॥ रहाउ॥ न ही साथ आता है और न ही साथ जाता है, फिर द्वार पर हाथी इत्यादि बांधने का क्या लाभ है॥२॥ लंका सोने का दुर्ग थी, पर मूर्ख रावण भला क्या लेकर यहाँ से गया॥३॥ कबीर जी कहते हैं कि प्रभु-गुणों का चिंतन करो अन्यथा जुआरी की मानिंद दोनों हाथ झाड़कर चले जाओगे॥४॥२॥

मैला ब्रहमा मैला इंदु ॥ रवि मैला मैला है चंदु ॥ १ ॥ मैला मलता इहु संसारु ॥ इकु हरि निरमलु जा का अंतु न पारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मैले ब्रहमंडाइ कै ईस ॥ मैले निसि बासुर दिन तीस ॥ २ ॥ मैला मोती मैला हीरु ॥ मैला पउनु पावकु अरु नीरु ॥ ३ ॥ मैले सिव संकरा महेस ॥ मैले सिध साधिक अरु भेख ॥ ४ ॥ मैले जोगी जंगम जटा सहेति ॥ मैली काइआ हंस समेति ॥ ५ ॥ कहि कबीर ते जन परवान ॥ निरमल ते जो रामहि जान ॥ ६ ॥ ३ ॥

(अपनी ही पुत्री को कामवासना की दृष्टि से देखने के कारण) ब्रह्मा मलिन है, (गौतम ऋषि की पत्नी अहल्या से छलपूर्वक भोग के कारण) इन्द्र भी मैला है। सूर्य एवं चाँद दोनों ही मैले हैं॥१॥ यह पूरा संसार मलिनता मलता रहता है, एकमात्र ईश्वर ही निर्मल एवं पावनस्वरूप है, जिसका कोई अन्त अथवा आर-पार नहीं॥१॥ रहाउ॥ ब्रह्माण्डों के सम्राट भी कर्मों के कारण मलिन हैं, दिन-रात एवं तीस दिन भी मैले हैं॥२॥ हीरा एवं मोती मैले हैं। वायु, अग्नि और पानी भी मैले हैं॥३॥ शिवशंकर महेश मलिन हैं, सिद्ध-साधक एवं वेषधारी भी मैले ही मैले हैं॥४॥ योगी, जंगम जटाधारी मलिन हैं, शरीर सहित आत्मा भी मैली है॥५॥ कबीर जी कहते हैं कि वही व्यक्ति परवान होते हैं, जो भगवान को जानकर निर्मल रहते हैं॥६॥३॥

मनु करि मका किबला करि देही ॥ बोलनहारु परम गुरु एही ॥ १ ॥ कहु रे मुलां बांग निवाज ॥ एक मसीति दसै दरवाज ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मिसिमिलि तामसु भरमु कदूरी ॥ भाखि ले पंचै होइ सबूरी ॥ २ ॥ हिंदू तुरक का साहिबु एक ॥ कह करै मुलां कह करै सेख ॥ ३ ॥ कहि कबीर हउ भइआ दिवाना ॥ मुसि मुसि मनूआ सहजि समाना ॥ ४ ॥ ४ ॥

मन को मक्का और शरीर को किबला बना लो, अन्तर्मन में बोलने वाला ही तेरा परम गुरु है॥१॥ हे मुल्ला! दस द्वार वाली शरीर रूपी मस्जिद में बाँग देकर नमाज़ पढ़॥१॥ रहाउ॥ क्रोध एवं भ्रम को बिस्मिल्लाह कहकर खत्म कर और पाँच विकारों को निगल कर संतोषवान बन जा॥२॥ वास्तव में हिन्दू एवं मुसलमान का मालिक एक ईश्वर ही है, चाहे मुल्ला एवं शेख कुछ भी कहते एवं करते रहें॥३॥ कबीर जी कहते हैं कि मैं तो परमात्मा का दीवाना हो गया हूँ और आहिस्ता-आहिस्ता मन को मारकर सहज ही विलीन हो गया हूँ॥४॥४॥

गंगा कै संगि सलिता बिगरी ॥ सो सलिता गंगा होइ निबरी ॥ १ ॥ बिगरिओ कबीरा राम दुहाई ॥ साचु भइओ अन कतहि न जाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चंदन कै संगि तरवरु बिगरिओ ॥ सो तरवरु चंदनु होइ निबरिओ ॥ २ ॥ पारस कै संगि तांबा बिगरिओ ॥ सो तांबा कंचनु होइ निबरिओ ॥ ३ ॥ संतन संगि कबीरा बिगरिओ ॥ सो कबीरु रामै होइ निबरिओ ॥ ४ ॥ ५ ॥

छोटी-सी नदिया गंगा के साथ विलीन हो गई, सो वह नदिया भी गंगा ही बन गई॥१॥ राम की दुहाई देकर कबीर भी राम में विलीन हो गया और वह सत्यस्वरूप बन गया, अन्य कहीं नहीं

जाता॥१॥ रहाउ॥ पेड़ चन्दन की खुशबू के साथ लीन हुआ तो वह भी चन्दन ही बन गया॥२॥ पारस के संग मिलकर ताँबा भी बदला है, वह ताँबा (लोहा) सोना ही बन गया॥३॥ संतों की संगत में कबीर भी बदल गया, अब कबीर भी राम का रूप हो गया॥४॥५॥

माथे तिलकु हथि माला बानां ॥ लोगन रामु खिलउना जानां ॥ १ ॥ जउ हउ बउरा तउ राम तोरा ॥ लोगु मरमु कह जानै मोरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तोरउ न पाती पूजउ न देवा ॥ राम भगति बिनु निहफल सेवा ॥ २ ॥ सतिगुरु पूजउ सदा सदा मनावउ ॥ ऐसी सेव दरगह सुखु पावउ ॥ ३ ॥ लोगु कहै कबीरु बउराना ॥ कबीर का मरमु राम पहिचानां ॥ ४ ॥ ६ ॥

माथे पर तिलक लगाया एवं हाथ में माला पकड़ ली, ऐसा भेष बनाकर लोगों ने राम को खिलौना ही मान लिया है॥१॥ हे राम! अगर मैं बावला हूँ, तो भी तेरा ही हूँ। अब लोग भला मेरा भेद कैसे जानें॥१॥ रहाउ॥ फूल-पत्ते तोड़कर किसी देवी-देवता की पूजा नहीं करता, वास्तव में राम की भक्ति के बिना अन्य सेवा निष्फल है॥२॥ सतगुरु की पूजा कर उसे सदा मनाता हूँ, क्योंकि ऐसी सेवा से ही दरबार में सुख मिलता है॥३॥ निःसंकोच लोग कबीर को बावला कहते हैं, मगर कबीर का रहस्य राम ही पहचान पाया है॥४॥६॥

उलटि जाति कुल दोऊ बिसारी ॥ सुंन सहज महि बुनत हमारी ॥ १ ॥ हमरा झगरा रहा न कोऊ ॥ पंडित मुलां छाडे दोऊ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बुनि बुनि आप आपु पहिरावउ ॥ जह नही आपु तहा होइ गावउ ॥ २ ॥ पंडित मुलां जो लिखि दीआ ॥ छाडि चले हम कछू न लीआ ॥ ३ ॥ रिदै इखलासु निरखि ले मीरा ॥ आपु खोजि खोजि मिले कबीरा ॥ ४ ॥ ७ ॥

मोह-माया की तरफ से निर्लिप्त होकर जाति एवं कुल दोनों को भुला दिया है और शून्य समाधि में सहज आनंद पा रहे हैं॥१॥ अब हमारा कोई सांसारिक झगड़ा नहीं रहा, क्योंकि पण्डित एवं मुल्ला दोनों को त्याग दिया है॥१॥ रहाउ॥ आप (अहम्) बुन बुनकर उसे ही पहन रहा हूँ। जहाँ अहम् नहीं, उसका ही गुण गाता हूँ॥२॥ पण्डितों एवं मुल्लाओं ने जो लिख दिया है, उसे छोड़कर हम आगे चल पड़े हैं और कुछ भी साथ नहीं लिया॥३॥ कबीर जी कहते हैं कि हे बन्धु! हृदय में प्रेम भरकर देख लो, मन में खोज-खोज कर प्रभु से साक्षात्कार होता है॥४॥७॥

निरधन आदरु कोई न देइ ॥ लाख जतन करै ओहु चिति न धरेइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जउ निरधनु सरधन कै जाइ ॥ आगे बैठा पीठि फिराइ ॥ १ ॥ जउ सरधनु निरधन कै जाइ ॥ दीआ आदरु लीआ बुलाइ ॥ २ ॥ निरधनु सरधनु दोनउ भाई ॥ प्रभ की कला न मेटी जाई ॥ ३ ॥ कहि कबीर निरधनु है सोई ॥ जा के हिरदै नामु न होई ॥ ४ ॥ ८ ॥

निर्धन को कोई आदर नहीं देता, बेशक वह लाखों प्रयास करे, तो भी धनवान् उसकी ओर ध्यान नहीं देते॥१॥ रहाउ॥ अगर निर्धन धनवान् के पास जाता है तो आगे बैठा धनी व्यक्ति मुँह फेर लेता है॥१॥ अगर धनवान् निर्धन के घर जाता है, तो वह आदरपूर्वक स्वागत् कर बुलाता है॥२॥ दरअसल निर्धन एवं धनवान् दोनों भाई ही हैं, अतः प्रभु की रज़ा को टाला नहीं जा सकता॥३॥ कबीर जी कहते हैं कि दरअसल निर्धन वही है, जिसके हृदय में प्रभु-नाम नहीं होता॥४॥८॥

गुर सेवा ते भगति कमाई ॥ तब इह मानस देही पाई ॥ इस देही कउ सिमरहि देव ॥ सो देही भजु हरि की सेव ॥ १ ॥ भजहु गुोबिंद भूलि मत जाहु ॥ मानस जनम का एही लाहु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जब लगु जरा रोगु नही आइआ ॥ जब लगु कालि ग्रसी नही काइआ ॥ जब लगु बिकल भई नही बानी ॥ भजि लेहि रे मन सारिगपानी ॥ २ ॥ अब न भजसि भजसि कब भाई ॥ आवै अंतु न भजिआ जाई ॥ जो किछु करहि सोई अब सारु ॥ फिरि पछुताहु न पावहु पारु ॥ ३ ॥ सो सेवकु जो लाइआ सेव ॥ तिन ही पाए निरंजन देव ॥ गुर मिलि ता के खुल्हे कपाट ॥ बहुरि न आवै जोनी बाट ॥ ४ ॥ इही तेरा अउसरु इह तेरी बार ॥ घट भीतरि तू देखु बिचारि ॥ कहत कबीरु जीति कै हारि ॥ बहु बिधि कहिओ पुकारि पुकारि ॥ ५ ॥ १ ॥ ६ ॥

गुरु की सेवा व भक्ति से ही यह मानव-शरीर प्राप्त होता है। इस अमोल शरीर को पाने की देवता भी आकांक्षा करते हैं। सो इस शरीर में सदैव परमात्मा की उपासना एवं भजन करो॥१॥ मानव शरीर का यही लाभ है कि भगवान का भजन करो, (ध्यान रखना) भूल मत जाना॥१॥ रहाउ॥ जब तक बुढ़ापा एवं रोग शिकार नहीं बनाता, जब तक मृत्यु शरीर को ग्रास नहीं बनाती, जब तक वाणी कमजोर नहीं होती, तब तक हे मन! ईश्वर का भजन कर लो॥२॥ हे भाई! अब भजन न किया तो कब भजन होगा। अन्तिम समय आने पर भजन नहीं हो पाएगा। अतः जो कुछ करना है, अब ही पूरा कर लो, अन्यथा पछतावे के सिवा कुछ हासिल नहीं होगा॥३॥ सेवक वही है, जिसे परमात्मा ने सेवा में लगाया है, वही भगवान को पा लेता है। गुरु से साक्षात्कार होने पर मन के कपाट खुल जाते हैं और पुनः आवागमन नहीं होता॥४॥ हे मनुष्य! ईश्वर को पाने का यही तेरा सुनहरी अवसर है और यही तेरा शुभ समय है, दिल में विचार कर तू सच्चाई को समझ। कबीर जी कहते हैं कि मैंने पुकार-पुकार कर अनेक प्रकार से बता दिया है, हे मनुष्य! अब यह तुझ पर निर्भर है, जीवन बाजी को जीतना है या हारना है॥५॥१॥६॥

सिव की पुरी बसै बुधि सारु ॥ तह तुम्ह मिलि कै करहु बिचारु ॥ ईत ऊत की सोझी परै ॥ कउनु करम मेरा करि करि मरै ॥ १ ॥ निज पद ऊपरि लागो धिआनु ॥ राजा राम नामु मोरा ब्रहम गिआनु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मूल दुआरै बंधिआ बंधु ॥ रवि ऊपरि गहि राखिआ चंदु ॥ पछम दुआरै सूरजु तपै ॥ मेर डंड सिर ऊपरि बसै ॥ २ ॥ पसचम दुआरे की सिल ओड़ ॥ तिह सिल ऊपरि खिड़की अउर ॥ खिड़की ऊपरि दसवा दुआरु ॥ कहि कबीर ता का अंतु न पारु ॥ ३ ॥ २ ॥ १० ॥

हे जीव! दसम द्वार में उत्तम बुद्धि स्थित है, उसे पा कर तुम विचार करो, इसके फलस्वरूप लोक परलोक का ज्ञान होगा। मैं-मेरा कर कर मरने का क्या फायदा है॥१॥ आत्म-स्वरूप (सच्चे घर) पर मेरा ध्यान लगा हुआ है और राम नाम ही मेरा ब्रह्म ज्ञान है॥१॥ रहाउ॥ अन्तर्मन को मूल द्वार प्रभु में बाँधा हुआ है। तमोगुणी रूपी रवि पर सतोगुणी रूपी चांद को रखा है। अज्ञान रूपी पश्चिम में ज्ञान रूपी सूर्य तप रहा है। अन्तर्मन में ईश्वर का ध्यान बस रहा है॥२॥ पश्चिम द्वार की ओर शिला है और उस शिला पर एक अन्य खिड़की है? उस खिड़की पर दसम द्वार है। कबीर जी कहते हैं कि उसका कोई अन्त अथवा आर-पार नहीं॥३॥२॥१०॥

सो मुलां जो मन सिउ लरै ॥ गुर उपदेसि काल सिउ जुरै ॥ काल पुरख का मरदै मानु ॥ तिसु मुला कउ सदा सलामु ॥ १ ॥ है हजूरि कत दूरि बतावहु ॥ दुंदर बाधहु सुंदर पावहु ॥ १ ॥ रहाउ

॥ काजी सो जु काइआ बीचारै ॥ काइआ की अगनि ब्रहमु परजारै ॥ सुपनै बिंदु न देई झरना ॥ तिसु काजी कउ जरा न मरना ॥ २ ॥ सो सुरतानु जु दुइ सर तानै ॥ बाहरि जाता भीतरि आनै ॥ गगन मंडल महि लसकरु करै ॥ सो सुरतानु छत्रु सिरि धरै ॥ ३ ॥ जोगी गोरखु गोरखु करै ॥ हिंदू राम नामु उचरै ॥ मुसलमान का एकु खुदाइ ॥ कबीर का सुआमी रहिआ समाइ ॥ ४ ॥ ३ ॥ ११ ॥

सच्चा मुल्ला वही है, जो मन से लड़ता है और गुरु के उपदेश द्वारा काल से संघर्ष करता है। यमराज के मान का मर्दन करता है तो उस मुल्ला को मेरा सदा सलाम है॥१॥ ईश्वर तो पास ही है, उसे दूर क्यों बता रहे हो। कामादिक द्वन्द्वों को नियंत्रण में करो और सुन्दर ईश्वर को प्राप्त कर लो॥१॥ रहाउ॥ काजी वही है, जो शरीर का चिंतन करता है, शरीर की अग्नि में ब्रह्म को प्रज्वलित करता और स्वप्न में वीर्य का पतन नहीं करता अर्थात् सपने में भी वासना को फटकने नहीं देता। उस काजी को बुढ़ापा अथवा मौत नहीं घेरती॥२॥ सुलतान वही है, जो ज्ञान वैराग्य के दो तीरों को हृदय की डोरी पर तानता है और भटकते मन को भीतर ले आए। दसम द्वार में गुणों की फौज बना ले, ऐसा सुलतान ही छत्र धारण करने का हकदार है॥३॥ योगी ईश्वर को 'गोरख गोरख' नाम से रटते रहते हैं, हिन्दू राम नाम का उच्चाण करते हैं और मुसलमान केवल खुदा ही मानता है, पर कबीर का स्वामी सब में व्याप्त है॥४॥३॥११॥

महला ५ ॥ जो पाथर कउ कहते देव ॥ ता की बिरथा होवै सेव ॥ जो पाथर की पांई पाइ ॥ तिस की घाल अजांई जाइ ॥ १ ॥ ठाकुरु हमरा सद बोलंता ॥ सरब जीआ कउ प्रभु दानु देता ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अंतरि देउ न जानै अंधु ॥ भ्रम का मोहिआ पावै फंधु ॥ न पाथरु बोलै ना किछु देइ ॥ फोकट करम निहफल है सेव ॥ २ ॥ जे मिरतक कउ चंदनु चड़ावै ॥ उस ते कहहु कवन फल पावै ॥ जे मिरतक कउ बिसटा माहि रुलाई ॥ तां मिरतक का किआ घटि जाई ॥ ३ ॥ कहत कबीर हउ कहउ पुकारि ॥ समझि देखु साकत गावार ॥ दूजै भाइ बहुतु घर गाले ॥ राम भगत है सदा सुखाले ॥ ४ ॥ ४ ॥ १२ ॥

{पंचम पातशाह श्री गुरु अर्जुन देव जी कबीर जी के हवाले से मूर्ति-पूजा का खण्डन करते हुए वर्णन करते हैं।}

जो पत्थर की मूर्ति को ईश्वर मानते हैं, उनकी सेवा व्यर्थ ही जाती है। जो पत्थर की मूर्ति पर नतमस्तक होते हैं, उनकी मेहनत बेकार ही जाती है॥१॥ हमारा मालिक शाश्वत है, एवं सदैव बातें करने वाला है, वह सब जीवों को देता रहता है॥१॥ रहाउ॥ ईश्वर तो हमारे मन में ही है, परन्तु अंधा (अज्ञानांध) जीव मन में बस रहे ईश्वर को नहीं जानता, इसलिए भ्रम में पड़ा फंदे में फँस जाता है। हे संसार के लोगो, पत्थर की मूर्ति न ही बोलती है और न ही कुछ देती है, अतः मूर्ति नमित्त कर्म बेकार हैं और मूर्ति-पूजा का कोई फल नहीं मिलता॥२॥ अगर मृतक (मूर्ति) को चंदन लगाया जाए तो बताओ उससे भला क्या फल प्राप्त होगा? अगर मृतक को गन्दगी में मिलाया जाता है तो भी मृतक का क्या घट सकता है॥३॥ कबीर जी विनयपूर्वक कहते हैं कि हे मायावी गंवार ! सोच समझ कर भलीभांति देख। द्वैतभाव ने बहुत सारे लोगों को तंग ही किया है, केवल राम की भक्ति करने वाले सदा सुखी हैं॥४॥४॥१२॥

जल महि मीन माइआ के बेधे ॥ दीपक पतंग माइआ के छेदे ॥ काम माइआ कुंचर कउ बिआपै ॥ भुइअंगम भ्रिंग माइआ महि खापे ॥ १ ॥ माइआ ऐसी मोहनी भाई ॥ जेते जीअ तेते डहकाई ॥

१ ॥ रहाउ ॥ पंखी म्रिग माइआ महि राते ॥ साकर माखी अधिक संतापे ॥ तुरे उसट माइआ महि भेला ॥ सिध चउरासीह माइआ महि खेला ॥ २ ॥ छिअ जती माइआ के बंदा ॥ नवै नाथ सूरज अरु चंदा ॥ तपे रखीसर माइआ महि सूता ॥ माइआ महि कालु अरु पंच दूता ॥ ३ ॥ सुआन सिआल माइआ महि राता ॥ बंतर चीते अरु सिंघाता ॥ मांजार गाडर अरु लूबरा ॥ बिरख मूल माइआ महि परा ॥ ४ ॥ माइआ अंतरि भीने देव ॥ सागर इंद्रा अरु धरतेव ॥ कहि कबीर जिसु उदरु तिसु माइआ ॥ तब छूटे जब साधू पाइआ ॥ ५ ॥ ५ ॥ १३ ॥

जल में मछली भी माया की बंधी हुई है और दीपक के ऊपर मंडराने वाला पतंगा भी माया का बिंधा है। हाथी को कामवासना की माया लगी रहती है और सांप तथा भंवरा भी माया में आसक्त हैं॥१॥ हे भाई! माया ऐसी मोहिनी है, संसार में जितने जीव हैं, इसने सबको बहकाया हुआ है॥१॥ रहाउ॥ मृग, पक्षी इत्यादि माया में लीन हैं। शक्कर मक्खियों को बहुत सताती है। घोड़े एवं ऊँट माया में लिप्त हैं और चौरासी सिद्धगण माया में लिप्त हैं॥२॥ हनुमान, लक्ष्मण, भीम, भैरव इत्यादि छः ब्रह्मचारी भी माया के बंधे हुए हैं। नौ नाथ, सूर्य और चंद, तपस्वी एवं ऋषि माया में मग्न हैं। काल और कामादिक पंच दूत माया से अप्रभावित नहीं॥३॥ कुत्ते, भेड़िए माया में लीन हैं। बंदर, चीते और शेर, बिल्लियां, भेड़ें और लूमड़ियां और तो और वृक्षों के फूल भी माया में ही पड़े हुए हैं॥४॥ देवी-देवता माया में लिप्त हैं। सागर, इन्द्र तथा धरती मायामय है। कबीर जी कहते हैं कि जिसे पेट लगा है, वही माया में तल्लीन है। जब साधु प्राप्त हो जाता है तो जीव माया-जाल से छूट जाता है॥५॥५॥१३॥

जब लगु मेरी मेरी करै ॥ तब लगु काजु एकु नही सरै ॥ जब मेरी मेरी मिटि जाइ ॥ तब प्रभ काजु सवारहि आइ ॥ १ ॥ ऐसा गिआनु बिचारु मना ॥ हरि की न सिमरहु दुख भंजना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जब लगु सिंघु रहै बन माहि ॥ तब लगु बनु फूलै ही नाहि ॥ जब ही सिआरु सिंघ कउ खाइ ॥ फूलि रही सगली बनराइ ॥ २ ॥ जीतो बूडै हारो तिरै ॥ गुर परसादी पारि उतरै ॥ दासु कबीरु कहै समझाइ ॥ केवल राम रहहु लिव लाइ ॥ ३ ॥ ६ ॥ १४ ॥

जब तक लोग अहम्-अभिमान करते हैं, तब तक उनका एक भी कार्य सफल नहीं होता। जब अहं-भावना मिट जाती है तो प्रभु सब कार्य संवार देता है॥१॥ हे मन! ऐसा ज्ञान विचार करो, दुःख नाशक परमात्मा का स्मरण क्यों नहीं कर रहा॥१॥ रहाउ॥ जब तक अहम् रूपी शेर तन रूपी वन में होता है, तब तक तन रूपी वन फलता फूलता नहीं। ज्यों ही नम्रता रूपी सियार अहम् रूपी शेर को खाता है तो समूची वनस्पति खिल जाती है॥२॥ संसार को जीतने वाले डूब जाते हैं और हारने वाले तर जाते हैं। गुरु की कृपा से मनुष्य पार उतरता है। कबीर जी समझाते हुए कहते हैं कि केवल प्रभु मनन में लीन रहो॥३॥६॥१४॥

सतरि सैइ सलार है जा के ॥ सवा लाखु पैकाबर ता के ॥ सेख जु कहीअहि कोटि अठासी ॥ छपन कोटि जा के खेल खासी ॥ १ ॥ मो गरीब की को गुजरावै ॥ मजलसि दूरि महलु को पावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तेतीस करोड़ी है खेल खाना ॥ चउरासी लख फिरै दिवानां ॥ बाबा आदम कउ किछु नदरि दिखाई ॥ उनि भी भिसति घनेरी पाई ॥ २ ॥ दिल खलहलु जा कै जरद रू बानी ॥ छोडि कतेब करै सैतानी ॥ दुनीआ दोसु रोसु है लोई ॥ अपना कीआ पावै सोई ॥ ३ ॥ तुम दाते हम सदा भिखारी ॥ देउ जबाबु होइ बजगारी ॥ दासु कबीरु तेरी पनह समानां ॥ भिसतु नजीकि राखु रहमाना ॥ ४ ॥ ७ ॥ १५ ॥

जिस अल्लाह पाक के सात हजार फरिश्ते हैं, हजरत आदम से लेकर मुहम्मद साहिब तक उसके सवा लाख पैगम्बर हैं, अट्ठासी करोड़ शेख कहे जाते हैं और छप्पन करोड़ जिसके खास दास हैं॥१॥ मुझ गरीब की फरियाद उस तक कौन पहुँचाएगा? चूंकि उसकी मजलिस बड़ी दूर है, उसके महल को कौन पा सकेगा॥१॥ रहाउ॥ तैंतीस करोड़ देवी-देवते भी उसकी सेवा करने वाले हैं, चौरासी लाख योनियों वाले जीव उसी के दीवाने बन भटकते फिरते हैं। जब बाबा आदम ने हुक्म का उल्लंघन किया तो अल्लाह ने उस पर कुछ नजर दिखाई और फिर उसे भी बड़ी बिहिश्त प्राप्त हुई (भाव स्वर्ग से पृथ्वी लोक में आ गया)॥२॥ जिसके दिल में द्वैत की खलबली मचती है, उसके चेहरे का रंग पीला ही रहता है। वह कतेबों का उपदेश छोड़कर शैतानों जैसी हरकतें करता है। वह दुनिया को दोष देकर लोगों पर क्रोध करता है, परन्तु अपने किए कर्मों का ही वह फल पाता है॥३॥ हे खुदा! तुम दाता हो और हम सदा तेरे भिखारी हैं। अगर दान लेकर भी आगे से जवाब देता हूँ तो अपराधी बनता हूँ। दास कबीर विनती करता है कि हे रहमदिल सच्चे खुदा! तेरी पनाह बिहिश्त के समान है, अतः इसके पास ही मुझे रखना॥४॥७॥१५॥

सभु कोई चलन कहत है ऊहां ॥ ना जानउ बैकुंठु है कहां ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आप आप का मरमु न जानां ॥ बातन ही बैकुंठु बखानां ॥ १ ॥ जब लगु मन बैकुंठ की आस ॥ तब लगु नाही चरन निवास ॥ २ ॥ खाई कोटु न परल पगारा ॥ ना जानउ बैकुंठ दुआरा ॥ ३ ॥ कहि कमीर अब कहीऐ काहि ॥ साधसंगति बैकुंठै आहि ॥ ४ ॥ ८ ॥ १६ ॥

सब कोई वहाँ चलने के लिए कहते हैं, पर मैं नहीं जानता कि वैकुण्ठ कहाँ है॥१॥ रहाउ॥ अपने आप का यथार्थ कोई नहीं जानता और बातों ही बातों में वैकुण्ठ का बखान करते हैं॥१॥ जब तक मन में वैकुण्ठ की आकांक्षा है, तब तक ईश्वर के चरणों में निवास नहीं हो पाता॥२॥ वहाँ न कोई खाई है, न ही भलीभांति लीपा हुआ किला है, मैं वैकुण्ठ का द्वार तक नहीं जानता॥३॥ कबीर जी कहते हैं कि अब भला इससे बढ़कर क्या कहा जाए कि साधु संगति ही वैकुण्ठ है॥४॥८॥१६॥

किउ लीजै गढु बंका भाई ॥ दोवर कोट अरु तेवर खाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पांच पचीस मोह मद मतसर आडी परबल माइआ ॥ जन गरीब को जोरु न पहुचै कहा करउ रघुराइआ ॥ १ ॥ कामु किवारी दुखु सुखु दरवानी पापु पुंनु दरवाजा ॥ क्रोधु प्रधानु महा बड दुंदर तह मनु मावासी राजा ॥ २ ॥ स्वाद सनाह टोपु ममता को कुबुधि कमान चढाई ॥ तिसना तीर रहे घट भीतरि इउ गढु लीओ न जाई ॥ ३ ॥ प्रेम पलीता सुरति हवाई गोला गिआनु चलाइआ ॥ ब्रहम अगनि सहजे परजाली एकहि चोट सिझाइआ ॥ ४ ॥ सतु संतोखु लै लरने लागा तोरे दुइ दरवाजा ॥ साधसंगति अरु गुर की क्रिपा ते पकरिओ गढ को राजा ॥ ५ ॥ भगवत भीरि सकति सिमरन की कटी काल भै फासी ॥ दासु कमीरु चढ़िओ गढ़ ऊपरि राजु लीओ अबिनासी ॥ ६ ॥ ९ ॥ १७ ॥

हे भाई! शरीर रूपी मजबूत किले को कैसे जीता जाए, क्योंकि इसमें द्वैत रूपी दीवार और तीन गुण रूपी खाई बनी हुई है॥१॥ रहाउ॥ पाँच तत्व, पच्चीस प्रकृतियाँ प्रबल माया के सहारे मोह, अहम् एवं ईर्ष्या रूप में व्याप्त है। हे प्रभु! दास गरीब का कोई जोर नहीं चलता, फिर मैं क्या करूँ॥१॥ इस पर कामवासना की खिड़की लगी हुई है, दुख सुख पहरेदार हैं और पाप पुण्य के दरवाजे हैं। क्रोध प्रधान बना हुआ है, वह बहुत बड़ा लड़ाका है और क्रांतिकारी मन राजा बना

बैठा है॥२॥ उसने स्वाद का कवच, ममता का टोप एवं कुबुद्धि की कमान चढ़ाई हुई है, तृष्णा के तीर हृदय के भीतर धारण किए हुए हैं, इस तरह किले को जीतना संभव नहीं॥३॥ यदि प्रेम का पलीता, सुरति की हवाई और ज्ञान का गोला बनाकर चला लिया जाए और ब्रह्माग्नि को स्वाभाविक प्रज्वलित किया जाए तो एक ही धमाके से यह किला फतह हो सकता है॥४॥ अगर सत्य एवं संतोष को साथ लेकर युद्ध किया जाए तो दोनों दरवाजे तोड़े जा सकते हैं। इस किले के राजा मन को साधु-संगति एवं गुरु की कृपा से पकड़ा जा सकता है॥५॥ भगवान के भक्तगणों की सत्संगति करने एवं स्मरण की शक्ति से काल के भय का फंदा कट जाता है। हे कबीर! इस तरह दास किले पर चढ़कर अटल राज पा लेता है॥६॥६॥१७॥

गंग गुसाइनि गहिर गंभीर ॥ जंजीर बांधि करि खरे कबीर ॥ १ ॥ मनु न डिगै तनु काहे कउ डराइ ॥ चरन कमल चितु रहिओ समाइ ॥ रहाउ ॥ गंगा की लहरि मेरी टुटी जंजीर ॥ म्रिगछाला पर बैठे कबीर ॥ २ ॥ कहि कंबीर कोऊ संग न साथ ॥ जल थल राखन है रघुनाथ ॥ ३ ॥ १० ॥ १८ ॥

{जब बादशाह सिकंदर लोधी द्वारा कबीर जी को गंगा में फैंका गया था, उस समय का वृत्तांत है}

गंगा मैया बड़ी गहन गंभीर है, जंजीर से बांधकर कबीर को वहाँ खड़ा कर फैंक दिया गया॥१॥ जब मन नहीं डोलता तो फिर तन कैसे डर सकता है। कबीर का चित ईश्वर के चरण कमल में विलीन था॥१॥ गंगा की लहरों से मेरी जंजीर टूट गई और कबीर मृगशाला पर बैठ गया॥२॥ कबीर जी कहते हैं कि जहाँ कोई साथ नहीं देता, जल और थल में वहाँ परमात्मा ही रक्षा करता है॥३॥१०॥१८॥

भैरउ कबीर जीउ असटपदी घरु २ १ॐ सतिगुर प्रसादि ॥

अगम द्रुगम गड़ि रचिओ बास ॥ जा महि जोति करे परगास ॥ बिजुली चमकै होइ अनंदु ॥ जिह पउढ़े प्रभ बाल गोबिंद ॥ १ ॥ इहु जीउ राम नाम लिव लागै ॥ जरा मरनु छूटै भ्रमु भागै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अबरन बरन सिउ मन ही प्रीति ॥ हउमै गावनि गावहि गीत ॥ अनहद सबद होत झुनकार ॥ जिह पउढ़े प्रभ स्री गोपाल ॥ २ ॥ खंडल मंडल मंडल मंडा ॥ त्रिअ असथान तीनि त्रिअ खंडा ॥ अगम अगोचरु रहिआ अभ अंत ॥ पारु न पावै को धरनीधर मंत ॥ ३ ॥ कदली पुहप धूप परगास ॥ रज पंकज महि लीओ निवास ॥ दुआदस दल अभ अंतरि मंत ॥ जह पउड़े स्री कमला कंत ॥ ४ ॥ अरध उरध मुखि लागो कासु ॥ सुंन मंडल महि करि परगासु ॥ ऊहां सूरज नाही चंद ॥ आदि निरंजनु करै अनंद ॥ ५ ॥ सो ब्रहमंडि पिंडि सो जानु ॥ मान सरोवरि करि इसनानु ॥ सोहं सो जा कउ है जाप ॥ जा कउ लिपत न होइ पुंन अरु पाप ॥ ६ ॥ अबरन बरन घाम नही छाम ॥ अवर न पाईऐ गुर की साम ॥ टारी न टरै आवै न जाइ ॥ सुंन सहज महि रहिओ समाइ ॥ ७ ॥ मन मधे जानै जे कोइ ॥ जो बोलै सो आपै होइ ॥ जोति मंत्रि मनि असथिरु करै ॥ कहि कबीर सो प्रानी तरै ॥ ८ ॥ १ ॥

अपहुँच एवं दुर्गम (दशम द्वार रूपी) किले की रचना करके ईश्वर ने इसमें वास किया हुआ है और उसमें उसकी ज्योति का आलोक है। जिस स्थान पर गोबिन्द बसता है, वहाँ ब्रह्मज्ञान रूपी बिजली चमकती है और आनंद बना रहता है॥१॥ यदि जीवात्मा की राम नाम में लगन लग जाए तो जन्म-मरण छूट जाता है और भ्रम भी भाग जाता है॥१॥ रहाउ॥ जिसके मन में जात-पात का प्रेम बना होता है, वह अहम्-भावना के गीत गाता रहता है। जिस स्थान पर प्रभु

विद्यमान है, वहाँ अनाहत शब्द की झंकार होती रहती है॥२॥ परमेश्वर खण्डों-मण्डलों की रचना करने वाला है, वह तीनों लोकों ब्रह्मा, विष्णु, शिव– त्रिदेवों तथा तीन गुणों का संहार करने वाला है। मन-वाणी से परे प्रभु अन्तर्मन में ही विद्यमान है, उस पृथ्वीपालक का रहस्य कोई नहीं पा सकता॥३॥ केले, फूल, धूपबत्ती ये उसी का प्रकाश है, कमल के सौरभ में भी वही वास कर रहा है। बारह पंखुड़ियों वाले हृदय कमल में उसी का मन्तवय है, हर स्थान पर लक्ष्मीपति नारायण ही विद्यमान है॥४॥ नीचे, ऊपर एवं मुख में उसकी ज्योति आलोकित हो रही है, शून्य मण्डल (दशम द्वार) में ईश्वर का आलोक स्थित है। वहाँ सूर्य एवं चांद नहीं, वहाँ भी आदिपुरुष मायातीत प्रभु आनंद कर रहा है॥५॥ जो ब्रह्माण्ड में है, उसे पिण्ड में भी विद्यमान जानो। प्रभु नाम रूपी मानसरोवर में स्नान करो, मैं वही हूँ सोहम् जिसका जाप है, उस पर पाप एवं पुण्य लिप्त नहीं होता॥६॥ ईश्वर वर्ण-अवर्ण, धूप अथवा छांव से परे है, गुरु की शरण बिना उसे कहीं भी पाया नहीं जा सकता। उसमें लगा ध्यान भंग नहीं हो सकता, इससे प्राणी का आवागमन छूट जाता है और वह नैसर्गिक ही शून्य समाधि में लवलीन रहता है॥७॥ अगर कोई मन में उसे जान ले तो जो बोलता है, वह पूरा हो जाता है। हे कबीर ! जो पुरुष प्रभु-ज्योति रूपी मंत्र के द्वारा मन को स्थिर कर लेता है, वह जगत से पार हो जाता है॥८॥१॥

कोटि सूर जा कै परगास ॥ कोटि महादेव अरु कबिलास ॥ दुरगा कोटि जा कै मरदनु करै ॥ ब्रहमा कोटि बेद उचरै ॥ १ ॥ जउ जाचउ तउ केवल राम ॥ आन देव सिउ नाही काम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कोटि चंद्रमे करहि चराक ॥ सुर तेतीसउ जेवहि पाक ॥ नव ग्रह कोटि ठाढे दरबार ॥ धरम कोटि जा कै प्रतिहार ॥ २ ॥ पवन कोटि चउबारे फिरहि ॥ बासक कोटि सेज बिसथरहि ॥ समुंद कोटि जा के पानीहार ॥ रोमावलि कोटि अठारह भार ॥ ३ ॥ कोटि कमेर भरहि भंडार ॥ कोटिक लखिमी करै सीगार ॥ कोटिक पाप पुंन बहु हिरहि ॥ इंद्र कोटि जा के सेवा करहि ॥ ४ ॥ छपन कोटि जा कै प्रतिहार ॥ नगरी नगरी खिअत अपार ॥ लट छूटी वरतै बिकराल ॥ कोटि कला खेलै गोपाल ॥ ५ ॥ कोटि जग जा कै दरबार ॥ गंध्रब कोटि करहि जैकार ॥ बिदिआ कोटि सभै गुन कहै ॥ तऊ पारब्रहम का अंतु न लहै ॥ ६ ॥ बावन कोटि जा कै रोमावली ॥ रावन सैना जह ते छली ॥ सहस कोटि बहु कहत पुरान ॥ दुरजोधन का मथिआ मानु ॥ ७ ॥ कंद्रप कोटि जा कै लवै न धरहि ॥ अंतर अंतरि मनसा हरहि ॥ कहि कबीर सुनि सारिगपान ॥ देहि अभै पदु मांगउ दान ॥ ८ ॥ २ ॥ १८ ॥ २० ॥

जिसका करोड़ों सूर्यों जितना प्रकाश है, करोड़ों महादेव और कैलाश पर्वत जिसमें व्याप्त हैं, करोड़ों दुर्गा देवियाँ जिसकी चरण-सेवा में लीन हैं, करोड़ों ब्रह्मा जिसके वन्दन में वेदों का उच्चारण करते हैं॥१॥ मैं तो केवल राम को ही चाहता हूँ, किसी अन्य देवता से कोई मतलब नहीं॥१॥ रहाउ॥ करोड़ों चन्द्रमा जिसके दर पर चिराग करते हैं, तेंतीस करोड़ देवता जिसकी रसोई में भोजन का कार्य कर रहे हैं, करोड़ों नौ ग्रह उसके दरबार में खड़े हैं, करोड़ों धर्मराज जिसके दरबान हैं॥२॥ करोड़ों पवनें जिसके चौबारे में घूमती हैं, करोड़ों नागराज उसकी सेज के लिए बिछे रहते हैं, करोड़ों समुद्र जिसका पानी भरते हैं और अठारह भार वाली करोड़ों वनस्पति उसकी रोमावली है॥३॥ करोड़ों धन के देवता कुबेर उसके भण्डार भरते हैं, करोड़ों लक्ष्मियाँ उसके लिए श्रृंगार करती हैं। उसके दर्शन से करोड़ों पाप भी दूर हो जाते हैं, करोड़ों इन्द्र भी उसकी सेवा में तत्पर रहते हैं॥४॥ जिसके छप्पन करोड़ द्वारपाल हैं, नगर-नगर उसका यश

फैला रहे हैं। जटा-जटा खोलकर भयानक भूत-प्रेत, पिशाच इत्यादि उसकी आज्ञा में ही कार्यशील हैं। दरअसल ईश्वर करोड़ों शक्तियों के रूप में लीलाएँ करता रहता है॥५॥ करोड़ों जग जिसके दरबार में हैं, करोड़ों गंधर्व उसकी जय-जयकार करते हैं। करोड़ों रूप में विद्या की देवी सरस्वती उसका गुण गाती है, उस परब्रह्म का रहस्य कोई नहीं जानता॥६॥ जिसकी बावन करोड़ रोमावली जितनी वानर सेना थी, जिस राम ने रावण सेना को छल लिया था, उस ईश्वर की ही पुराणों में करोड़ों हजारों कथाएँ हैं। उसी ने दुर्योधन के घमण्ड को चकनाचूर किया॥७॥ करोड़ों कामदेव भी उसकी तुलना नहीं कर सकते, क्योंकि वह मन में ही वासना को चुरा लेता है। कबीर जी विनती करते हैं कि हे प्रभु! सुनो, मैं तुझसे यही दान चाहता हूँ, मुझे मोक्ष प्रदान करो॥८॥२॥१८॥ २०॥

भैरउ बाणी नामदेउ जीउ की घरु १ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

रे जिहबा करउ सत खंड ॥ जामि न उचरसि स्री गोबिंद ॥ १ ॥ रंगी ले जिहबा हरि कै नाइ ॥ सुरंग रंगीले हरि हरि धिआइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मिथिआ जिहबा अवरें काम ॥ निरबाण पदु इकु हरि को नामु ॥ २ ॥ असंख कोटि अन पूजा करी ॥ एक न पूजसि नामै हरी ॥ ३ ॥ प्रणवै नामदेउ इहु करणा ॥ अनंत रूप तेरे नाराइणा ॥ ४ ॥ १ ॥

हे जिह्वा! अगर तूने हरिनामोच्चारण ना किया तो तेरे सात टुकड़े कर दूँगा॥ १॥ हे मनुष्य! जिह्वा को हरिनाम में रंग लो, परमात्मा का भजन कर प्रेम रंग में रंग लो॥१॥ रहाउ॥ हे जिह्वा! तेरे अन्य काम झूठे हैं, केवल परमात्मा का सुमिरन करने से निर्वाण पद प्राप्त होता है॥२॥ असंख्य करोड़ों प्रकार की अन्य पूजा की जाए तो एक भी प्रभु-नाम के बराबर नहीं आती॥३॥ नामदेव विनती करते हैं कि हे जिह्वा! तेरे लिए यही उचित कार्य है कि अनंत रूप नारायण का नाम जपती रहो॥४॥१॥

पर धन पर दारा परहरी ॥ ता कै निकटि बसै नरहरी ॥ १ ॥ जो न भजंते नाराइणा ॥ तिन का मै न करउ दरसना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिन कै भीतरि है अंतरा ॥ जैसे पसु तैसे ओइ नरा ॥ २ ॥ प्रणवति नामदेउ नाकहि बिना ॥ ना सोहै बतीस लखना ॥ ३ ॥ २ ॥

जो पराया धन एवं पराई नारी का मोह छोड़ देता है, ईश्वर उसके निकट बसा रहता है॥ १॥ जो व्यक्ति परमात्मा का भजन नहीं करते, उनका तो मैं दर्शन ही नहीं करता॥१॥ रहाउ॥ जिनके अन्तर्मन में भेदभाव है, वे पुरुष तो ऐसे हैं, जैसे पशु होते हैं॥२॥ नामदेव विनती करते हैं कि बत्तीस लक्षणों वाला पुरुष नाक के बिना सुन्दर नहीं लगता॥३॥२॥

दूधु कटोरै गडवै पानी ॥ कपल गाइ नामै दुहि आनी ॥ १ ॥ दूधु पीउ गोबिंदे राइ ॥ दूधु पीउ मेरो मनु पतीआइ ॥ नाही त घर को बापु रिसाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सोइन कटोरी अंम्रित भरी ॥ लै नामै हरि आगै धरी ॥ २ ॥ एकु भगतु मेरे हिरदे बसै ॥ नामे देखि नराइनु हसै ॥ ३ ॥ दूधु पीआइ भगतु घरि गइआ ॥ नामे हरि का दरसनु भइआ ॥ ४ ॥ ३ ॥

लोटे में पानी लेकर नामदेव ने कपिला गाय को दुहा और कटोरे में दूध डालकर मन्दिर में ले आया॥१॥ उसने प्रेमपूर्वक विनती की, हे गोविन्द! दूध पी लो, पुनः प्रार्थना की, दूध पी लो, मेरा मन प्रसन्न हो जाएगा, यदि तूने दुग्धपान न किया तो घर में पिता जी मुझसे नाराज हो

जाएंगे॥१॥ रहाउ॥ सोने की कटोरी अमृतमय दूध से भरकर नामदेव ने भगवान की प्रतिमा के समक्ष रख दी॥२॥ नामदेव की श्रद्धा को देखकर ईश्वर ने मुस्कुराते हुए कहा कि केवल एक तेरे जैसा भक्त ही मेरे हृदय में बसता है॥३॥ इस तरह भक्त नामदेव भगवान को दूध पिलाकर घर वापिस आ गया और उसे भगवान का दर्शन प्राप्त हो गया॥४॥३॥

मै बउरी मेरा रामु भतारु ॥ रचि रचि ता कउ करउ सिंगारु ॥ १ ॥ भले निंदउ भले निंदउ भले निंदउ लोगु ॥ तनु मनु राम पिआरे जोगु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बादु बिबादु काहू सिउ न कीजै ॥ रसना राम रसाइनु पीजै ॥ २ ॥ अब जीअ जानि ऐसी बनि आई ॥ मिलउ गुपाल नीसानु बजाई ॥ ३ ॥ उसतति निंदा करै नरु कोई ॥ नामे स्रीरंगु भेटल सोई ॥ ४ ॥ ४ ॥

राम ही मेरा पति है, उसी की मैं दीवानी हूँ, उसके लिए मैं रुचिर श्रृंगार करती हूँ॥१॥ हे लोगो ! तुम भला जितनी मर्जी निन्दा कर लो, यह तन-मन सब प्यारे प्रभु पर न्यौछावर है॥१॥ रहाउ॥ किसी से वाद-विवाद मत करो और रसना से केवल राम नाम रूपी रसायन का पान करो (अर्थात् राम का ही यश गाओ)॥२॥ अब तो प्राणों में ऐसी हालत बन गई है कि खुशी के ढोल बजाकर प्रभु से मिलूँगा॥३॥ चाहे कोई व्यक्ति प्रशंसा करे या निंदा करे, नामदेव का ईश्वर से साक्षात्कार हो गया है॥४॥४॥

कबहू खीरि खाड घीउ न भावै ॥ कबहू घर घर टूक मगावै ॥ कबहू कूरनु चने बिनावै ॥ १ ॥ जिउ रामु राखै तिउ रहीऐ रे भाई ॥ हरि की महिमा किछु कथनु न जाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कबहू तुरे तुरंग नचावै ॥ कबहू पाइ पनहीओ न पावै ॥ २ ॥ कबहू खाट सुपेदी सुवावै ॥ कबहू भूमि पैआरु न पावै ॥ ३ ॥ भनति नामदेउ इकु नामु निसतारै ॥ जिह गुरु मिलै तिह पारि उतारै ॥ ४ ॥ ५ ॥

संसार में ईश्वर की लीला हो रही है, कभी मनुष्य को दूध-खीर, शक्कर एवं घी अच्छे नहीं लगते, कभी निर्धन बनाकर घर-घर से रोटी माँगने में लगा देता है, कभी इतना लाचार कर देता है कि कूड़े-कचरे से चने बिनाता है॥१॥ हे भाई ! जैसे प्रभु हमें रखता है, वैसे ही रहना है। भगवान की महिमा का कथन नहीं किया जा सकता॥१॥ रहाउ॥ कभी इतना अमीर बना देता है कि तेज घोड़ों पर नचाता है, कभी इतना गरीब कर देता है कि पाँवों को जूते तक नहीं मिलते॥२॥ कभी सफेद चादर वाली सुन्दर खाट पर मीठी नींद सुलाता है तो कभी भूमि पर पुआल तक नहीं मिलती॥३॥ नामदेव जी कहते हैं कि केवल ईश्वर का नाम ही मोक्ष देने वाला है, जिसे गुरु मिल जाता है, उसे संसार-सागर से पार उतार देता है॥४॥५॥

हसत खेलत तेरे देहुरे आइआ ॥ भगति करत नामा पकरि उठाइआ ॥ १ ॥ हीनड़ी जाति मेरी जादिम राइआ ॥ छीपे के जनमि काहे कउ आइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ लै कमली चलिओ पलटाइ ॥ देहुरै पाछै बैठा जाइ ॥ २ ॥ जिउ जिउ नामा हरि गुण उचरै ॥ भगत जनां कउ देहुरा फिरै ॥ ३ ॥ ६ ॥

हे ईश्वर ! खुशी-खुशी झूमता हुआ तेरे मन्दिर में दर्शनों के लिए आया था। लेकिन यह नामदेव जब भक्ति करने बैठा तो वहाँ के ब्राह्मण-पुजारियों ने इसे पकड़ कर उठा दिया॥१॥ हे गोविन्द ! मेरे साथ ऐसा दुर्व्यवहार हुआ, मेरी जाति छोटी है, तो फिर भला मेरा छीपी जाति में क्योंकर जन्म हुआ॥१॥ मैं अपनी चादर लेकर पीछे चला गया और मन्दिर के पीछे भक्ति के लिए जाकर बैठ गया॥२॥ ज्यों ज्यों नामदेव परमात्मा के गुणों का उच्चारण करने लगा, भक्तजनों का मन्दिर घूम गया (अर्थात् मन्दिर का द्वार घूमकर उनके सन्मुख आ गया)॥३॥६॥

भैरउ नामदेउ जीउ घरु २ १ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

जैसी भूखे प्रीति अनाज ॥ त्रिखावंत जल सेती काज ॥ जैसी मूड़ कुटंब पराइण ॥ ऐसी नामे प्रीति नराइण ॥ १ ॥ नामे प्रीति नाराइण लागी ॥ सहज सुभाइ भइओ बैरागी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जैसी पर पुरखा रत नारी ॥ लोभी नरु धन का हितकारी ॥ कामी पुरख कामनी पिआरी ॥ ऐसी नामे प्रीति मुरारी ॥ २ ॥ साई प्रीति जि आपे लाए ॥ गुर परसादी दुबिधा जाए ॥ कबहु न तूटसि रहिआ समाइ ॥ नामे चितु लाइआ सचि नाइ ॥ ३ ॥ जैसी प्रीति बारिक अरु माता ॥ ऐसा हरि सेती मनु राता ॥ प्रणवै नामदेउ लागी प्रीति ॥ गोबिदु बसै हमारै चीति ॥ ४ ॥ १ ॥ ७ ॥

जैसे भूखे का भोजन से प्रेम होता है, प्यासे का जल से लगाव होता है, जैसे मूर्ख व्यक्ति परिवार के मोह में आसक्त रहता है, ऐसे ही नामदेव का नारायण से प्रेम है॥१॥ नामदेव का नारायण से प्रेम लगा तो वह सहज स्वभाव ही वैराग्यवान हो गया॥१॥ रहाउ॥ जैसे चरित्रहीन नारी पराए पुरुषों में रत रहती है, लोभी पुरुष धन का शुभहितैषी होता है, कामी पुरुष को वासना में नारी ही प्रिय है, ऐसा ही नामदेव का ईश्वर से प्रेम है॥२॥ सच्चा प्रेम वही है, जिसे भगवान आप लगाता है। गुरु की कृपा से दुविधा दूर हो जाती है। तब जीव प्रभु प्रेम में लीन रहता है और यह प्रेम कभी नहीं टूटता। अतः नामदेव ने सच्चे नाम में मन लगा लिया है॥३॥ जैसे माता और बच्चे का प्रेम होता है, वैसे ईश्वर के साथ मन लीन है। नामदेव विनय करते हैं कि ऐसा प्रेम लगा है कि गोविन्द हमारे दिल में ही रहता है॥४॥१॥७॥

घर की नारि तिआगै अंधा ॥ पर नारी सिउ घालै धंधा ॥ जैसे सिंबलु देखि सूआ बिगसाना ॥ अंत की बार मूआ लपटाना ॥ १ ॥ पापी का घरु अगने माहि ॥ जलत रहै मिटवै कब नाहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि की भगति न देखै जाइ ॥ मारगु छोडि अमारगि पाइ ॥ मूलहु भूला आवै जाइ ॥ अंम्रितु डारि लादि बिखु खाइ ॥ २ ॥ जिउ बेस्वा के परै अखारा ॥ कापरु पहिरि करहि सींगारा ॥ पूरे ताल निहाले सास ॥ वा के गले जम का है फास ॥ ३ ॥ जा के मसतकि लिखिओ करमा ॥ सो भजि परि है गुर की सरना ॥ कहत नामदेउ इहु बीचारु ॥ इन बिधि संतहु उतरहु पारि ॥ ४ ॥ २ ॥ ८ ॥

अपनी पत्नी को त्याग कर अन्धा पुरुष पराई नारी के संग लिप्त रहता है। (उसके साथ यही होता है) जैसे सेमल के पेड़ को देखकर तोता खुश होता है, लेस के साथ लिपटकर अन्त में मृत्यु को प्राप्त होता है॥१॥ पापी का घर अग्नि में जलता रहता है और उसकी जलन कभी नहीं मिटती॥१॥ रहाउ॥ वह ईश्वर की भक्ति की ओर ध्यान नहीं देता और सही मार्ग छोड़कर गलत मार्ग में पड़ता है। वह मूल परमात्मा को भूलकर जन्म-मरण में पड़ा रहता है और अमृत नाम को छोड़कर पापों का जहर लादकर खाता रहता है॥२॥ जैसे वेश्या के यहां मुजरा देखने वालों की महफिल लगी रहती है। वह सुन्दर कपड़े पहनकर अनेक शृंगार करती है। जब वह नाचती है तो उसके यौवन को देखकर कामी कामातुर होता है, तो ऐसे पुरुष के गले में मौत का फंदा पड़ जाता है॥३॥ जिसके भाग्य में लिखा होता है, वह गुरु की शरण में आ जाता है। नामदेव यही विचार कहते हैं कि हे सज्जनो, इस तरीके से मुक्ति पाओ॥४॥२॥८॥

संडा मरका जाइ पुकारे ॥ पड़ै नही हम ही पचि हारे ॥ रामु कहै कर ताल बजावै चटीआ सभै बिगारे ॥ १ ॥ राम नामा जपिबो करै ॥ हिरदै हरि जी को सिमरनु धरै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बसुधा बसि कीनी सभ राजे बिनती करै पटरानी ॥ पूतु प्रहिलादु कहिआ नही मानै तिनि तउ अउरै ठानी ॥ २ ॥ दुसट सभा मिलि मंतर उपाइआ करसह अउध घनेरी ॥ गिरि तर जल जुआला भै राखिओ राजा रामि

माइआ फेरी ॥ ३ ॥ काढि खड़गु कालु भै कोपिओ मोहि बताउ जु तुहि राखै ॥ पीत पीतांबर त्रिभवण धणी थंभ माहि हरि भाखै ॥ ४ ॥ हरनाखसु जिनि नखह बिदारिओ सुरि नर कीए सनाथा ॥ कहि नामदेउ हम नरहरि धिआवह रामु अभै पद दाता ॥ ५ ॥ ३ ॥ ६ ॥

प्रहलाद के अध्यापकों षण्ड एवं अमरक ने दैत्यराज हिरण्यकशिपु के पास जाकर शिकायत की कि प्रहलाद बिल्कुल नहीं पढ़ता, हम हर कोशिश कर के हार गए हैं। वह ताल बजाकर राम नाम जपता रहता है, इस प्रकार इसने सब विद्यार्थी बिगाड़ दिए हैं॥१॥ वह हर वक्त राम नाम जपता रहता है और हृदय में हरि का ही स्मरण करता है॥१॥ पटरानी माँ ने विनयपूर्वक कहा, "राजा हिरण्यकशिपु ने समूची पृथ्वी को वश में किया हुआ है, एक पुत्र प्रहलाद ही आज्ञा नहीं मानता और मन में उसने तो कुछ अन्य ही ठान रखा है"॥२॥ दुष्टों की सभा में यह सलाह की गई कि प्रहलाद को मौत के घाट उतार दिया जाए। चाहे पहाड़ से गिराया गया, समुद्र में डुबाने की कोशिश की, अग्नि में जलाया जाने लगा, मगर ईश्वर की माया ने भक्त प्रहलाद को बचा लिया॥३॥ फिर खड़ग निकालकर मौत रूप में क्रोधित होकर हिरण्यकशिपु बोला, "मुझे बता तेरी रक्षा करने वाला कौन एवं कहाँ है?" प्रहलाद ने उत्तर दिया, "तीनों लोकों का मालिक पीताम्बर श्री हरि इस खम्भे में भी है॥४॥ तभी हरि ने खम्भे में से निकल कर दुष्ट हिरण्यकशिपु को नाखुनों से फाड़कर मौत की नींद सुला दिया और देवताओं व मनुष्यों का संरक्षण किया। नामदेव जी कहते हैं कि हम नृसिंह हरि का ध्यान करते हैं और वही अभय पद देने वाला है॥५॥३॥६॥

सुलतानु पूछै सुनु बे नामा ॥ देखउ राम तुम्हारे कामा ॥ १ ॥ नामा सुलताने बाधिला ॥ देखउ तेरा हरि बीठुला ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बिसमिलि गऊ देहु जीवाइ ॥ नातरु गरदनि मारउ ठांइ ॥ २ ॥ बादिसाह ऐसी किउ होइ ॥ बिसमिलि कीआ न जीवै कोइ ॥ ३ ॥ मेरा कीआ कछू न होइ ॥ करि है रामु होइ है सोइ ॥ ४ ॥ बादिसाहु चढ़िओ अहंकारि ॥ गज हसती दीनो चमकारि ॥ ५ ॥ रुदनु करै नामे की माइ ॥ छोडि रामु की न भजहि खुदाइ ॥ ६ ॥ न हउ तेरा पूंगड़ा न तू मेरी माइ ॥ पिंडु पड़ै तउ हरि गुन गाइ ॥ ७ ॥ करै गजिंदु सुंड की चोट ॥ नामा उबरै हरि की ओट ॥ ८ ॥ काजी मुलां करहि सलामु ॥ इनि हिंदू मेरा मलिआ मानु ॥ ९ ॥ बादिसाह बेनती सुनेहु ॥ नामे सर भरि सोना लेहु ॥ १० ॥ मालु लेउ तउ दोजकि परउ ॥ दीनु छोडि दुनीआ कउ भरउ ॥ ११ ॥ पावहु बेड़ी हाथहु ताल ॥ नामा गावै गुन गोपाल ॥ १२ ॥ गंग जमुन जउ उलटी बहै ॥ तउ नामा हरि करता रहै ॥ १३ ॥ सात घड़ी जब बीती सुणी ॥ अजहु न आइओ त्रिभवण धणी ॥ १४ ॥

सुलतान (मुहम्मद बिन तुगलक) ने पूछा, "अबे नामदेव! मैं देखना चाहता हूँ कि तेरा राम क्या करामात करता है॥१॥ फिर सुलतान ने नामदेव को सिपाहियों द्वारा बाँध लिया और बोला, "देखना चाहता हूँ कि तेरा ईश्वर क्या चमत्कार करता है॥१॥ रहाउ॥ अगर अपना भला चाहते हो तो मृत गाय को जीवित कर दो, अन्यथा गर्दन उड़ाकर मार डालूँगा"॥२॥ नामदेव ने कहा, "हे बादशाह! ऐसा कैसे हो सकता है, एक बार मरा हुआ कोई जीव दुबारा जिन्दा नहीं होता॥३॥ मेरे करने से तो कुछ नहीं हो सकता, हाँ जो राम करता है, वही होता है और होगा"॥४॥ यह सुनकर बादशाह अहंकार में आगबबूला हो गया और हाथी को नामदेव पर छोड़ दिया॥५॥ फिर नामदेव की माता रोते हुए कहने लगी, "तू राम को छोड़कर खुदा की बंदगी क्यों नहीं करता॥६॥ यह सुनकर नामदेव जी ने प्रत्युत्तर दिया, "अरी माई! न मैं तेरा पुत्र हूँ और न ही तू मेरी माता है, यदि मेरे शरीर को नष्ट कर दिया जाए तो भी परमात्मा का यशोगान करूँगा"

॥ ७ ॥ तब हाथी ने नामदेव पर सूँड से चोट की, पर ईश्वर ने नामदेव को बचा लिया ॥ ८ ॥ बादशाह हैरान होकर बोला– काजी-मुल्ला सभी मुझे सलाम करते हैं, मगर इस हिन्दू ने तो मेरा अभिमान चकनाचूर कर दिया ॥ ६ ॥ लोगों ने कहा, हे बादशाह हजूर! आप से हमारी विनती है कि नामदेव के वजन जितना सोना ले लो और इसे प्राण-दान दे दो ॥ १० ॥ यह सुनकर बादशाह ने कहा, ''अगर रिश्वत के तौर पर मैं धन लेता हूँ तो नरक में पड़ूँगा। धर्म को छोड़ने वाला दुनिया में बदनामी ही पाता है ॥ ११ ॥ नामदेव के पाँव में बेड़ी थी, फिर भी वह हाथ से ताल बजाकर ईश्वर के गुण गाने लग गया ॥ १२ ॥ नामदेव ने निर्भीक होकर कहा, ''यदि गंगा-यमुना उलटी दिशा में बहने लगेंगी तो भी ईश्वर की प्रशंसा करता रहूँगा ॥ १३ ॥ जब सात घड़ियाँ बीत जाने की ध्वनि सुनाई दी तो भी तीनों लोकों का मालिक परमात्मा नहीं आया ॥ १४ ॥

पाखंतण बाज बजाइला ॥ गरुड़ चढ़े गोबिंद आइला ॥ १५ ॥ अपने भगत परि की प्रतिपाल ॥ गरुड़ चढ़े आए गोपाल ॥ १६ ॥ कहहि त धरणि इकोडी करउ ॥ कहहि त ले करि ऊपरि धरउ ॥ १७ ॥ कहहि त मुई गऊ देउ जीआइ ॥ सभु कोई देखै पतीआइ ॥ १८ ॥ नामा प्रणवै सेल मसेल ॥ गऊ दुहाई बछरा मेलि ॥ १६ ॥ दूधहि दुहि जब मटुकी भरी ॥ ले बादिसाह के आगे धरी ॥ २० ॥ बादिसाहु महल महि जाइ ॥ अउघट की घट लागी आइ ॥ २१ ॥ काजी मुलां बिनती फुरमाइ ॥ बखसी हिंदू मै तेरी गाइ ॥ २२ ॥ नामा कहै सुनहु बादिसाह ॥ इहु किछु पतीआ मुझै दिखाइ ॥ २३ ॥ इस पतीआ का इहै परवानु ॥ साचि सीलि चालहु सुलितान ॥ २४ ॥ नामदेउ सभ रहिआ समाइ ॥ मिलि हिंदू सभ नामे पहि जाहि ॥ २५ ॥ जउ अब की बार न जीवै गाइ ॥ त नामदेव का पतीआ जाइ ॥ २६ ॥ नामे की कीरति रही संसारि ॥ भगत जनां ले उधरिआ पारि ॥ २७ ॥ सगल कलेस निंदक भइआ खेदु ॥ नामे नाराइन नाही भेदु ॥ २८ ॥ १ ॥ १० ॥

तभी पंखों का वाद्य बजाते हुए गरुड़ पर सवार भगवान श्रीहरि आ पहुँचे ॥ १५ ॥ अपने भक्त का प्रतिपालन किया और गरुड़ पर सवार होकर भगवान आ गए ॥ १६ ॥ भगवान ने नामदेव जी से कहा, ''अगर तू कहे तो धरती को उलटी कर दूँ, अगर कहे तो धरती को ऊपर उलटा लटका दूँ ॥ १७ ॥ अगर तू कहे तो मृत गाय को जीवित कर दूँ ताकि हर कोई देखकर विश्वास करने लगें ॥ १८ ॥ *(भगवान ने मृत गाय को जीवत कर दिया और भक्त की रक्षा की)* नामदेव ने कहा, ''गाय को दुहने के लिए टांगों पर रस्सी बांध दो एवं बछड़े को छोड़कर गाय दुहन कर ली जाए ॥१६ ॥ जब दूध दुहन करके मटकी भर दी गई तो उसे बादशाह के आगे पेश कर दिया ॥ २० ॥ यह करिश्मा देखकर बादशाह अपने महल में चला गया और उसी समय बीमार पड़ गया ॥ २१ ॥ बादशाह ने काजी एवं मुल्ला द्वारा विनती की, ''हे हिन्दू! मैं तेरी गाय हूँ, मुझे बख्श दो ॥ २२ ॥ नामदेव कहने लगे, ''हे बादशाह सलामत! मुझे कुछ भरोसा दिलाओ ॥ २३ ॥ हे सुलतान! इस भरोसे का यही प्रमाण है कि तुम सत्य एवं नम्रता से अपना काम करो ॥ २४ ॥ इस तरह नामदेव जन-जन के मन में बस गया था और सभी हिन्दू मिलकर नामदेव के पास आए ॥ २५ ॥ लोगों ने कहा,''अगर अब की बार गाय जिंदा न होती तो नामदेव की प्रतीति खो जाती ॥ २६ ॥ नामदेव की कीर्ति पूरे संसार में फैली रही और भक्तजनों के संग उसका उद्धार हो गया ॥ २७ ॥ (नामदेव से झगड़ा कर) निंदकों को सब क्लेश लग गए और बड़ा दुःख हुआ, क्योंकि नामदेव एवं नारायण में कोई भेद नहीं ॥ २८ ॥ १ ॥ १० ॥

घरु २ ॥ जउ गुरदेउ त मिलै मुरारि ॥ जउ गुरदेउ त उतरै पारि ॥ जउ गुरदेउ त बैकुंठ तरै ॥ जउ गुरदेउ त जीवत मरै ॥ १ ॥ सति सति सति सति सति गुरदेव ॥ झूठु झूठु झूठु झूठु आन सभ सेव ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जउ गुरदेउ त नामु द्रिड़ावै ॥ जउ गुरदेउ न दह दिस धावै ॥ जउ गुरदेउ पंच ते दूरि ॥ जउ गुरदेउ न मरिबो झूरि ॥ २ ॥ जउ गुरदेउ त अंम्रित बानी ॥ जउ गुरदेउ त अकथ कहानी ॥ जउ गुरदेउ त अंम्रित देह ॥ जउ गुरदेउ नामु जपि लेहि ॥ ३ ॥ जउ गुरदेउ भवन त्रै सूझै ॥ जउ गुरदेउ ऊच पद बूझै ॥ जउ गुरदेउ त सीसु अकासि ॥ जउ गुरदेउ सदा साबासि ॥ ४ ॥ जउ गुरदेउ सदा बैरागी ॥ जउ गुरदेउ पर निंदा तिआगी ॥ जउ गुरदेउ बुरा भला एक ॥ जउ गुरदेउ लिलाटहि लेख ॥ ५ ॥ जउ गुरदेउ कंधु नही हिरै ॥ जउ गुरदेउ देहुरा फिरै ॥ जउ गुरदेउ त छापरि छाई ॥ जउ गुरदेउ सिहज निकसाई ॥ ६ ॥ जउ गुरदेउ त अठसठि नाइआ ॥ जउ गुरदेउ तनि चक्र लगाइआ ॥ जउ गुरदेउ त दुआदस सेवा ॥ जउ गुरदेउ सभै बिखु मेवा ॥ ७ ॥ जउ गुरदेउ त संसा टूटै ॥ जउ गुरदेउ त जम ते छूटै ॥ जउ गुरदेउ त भउजल तरै ॥ जउ गुरदेउ त जनमि न मरै ॥ ८ ॥ जउ गुरदेउ अठदस बिउहार ॥ जउ गुरदेउ अठारह भार ॥ बिनु गुरदेउ अवर नही जाई ॥ नामदेउ गुर की सरणाई ॥ ९ ॥ १ ॥ २ ॥ ११ ॥

अगर गुरु मेहरबान हो जाए तो भगवान मिल जाता है, यदि गुरु कृपालु हो जाए तो जीव संसार-सागर से पार उतर जाता है, अगर गुरु की कृपा हो जाए तो वैकुण्ठ भी प्राप्त हो जाता है, अगर गुरु दया के घर में आ जाए तो जीव जीवन्मुक्त हो जाता है॥१॥ गुरु सदैव सत्य है, शाश्वत है, उसकी सेवा भी सत्य है और अन्य सब सेवाएं झूठी हैं॥१॥रहाउ॥ अगर गुरु से साक्षात्कार हो जाए तो वह हरिनामोपासना ही करवाता है, अगर गुरु से भेंटवार्ता हो जाए तो दसों दिशाओं में दौड़ना नहीं पड़ता, अगर गुरु मिल जाए तो जीव काम, क्रोध इत्यादि पाँच विकारों से दूर हो जाता है, अगर गुरु के सान्निध्य में रहा जाए तो चिंता-परेशानियों में मरना नहीं पड़ता॥२॥ यदि गुरुदेव की दयादृष्टि हो जाए तो वाणी अमृत समान मधुर हो जाती है, अगर गुरु की प्रसन्नता हो जाए, तो अकथ कहानी का ज्ञान हो जाता है। यदि गुरु कृपालु हो तो शरीर सफल हो जाता है, यदि गुरु से मुलाकात हो जाए तो ईश्वर का नाम जपकर सबकुछ प्राप्त हो जाता है॥३॥ यदि गुरु कृपा की वर्षा कर दे तो तीनों लोकों का ज्ञान हो जाता है, अगर गुरु की करुणा-दृष्टि हो तो मोक्ष पद का रहस्य समझ में आ जाता है, अगर गुरु-कृपा हो तो साधारण मनुष्य भी राजा बन जाता है, अगर गुरु की दया हो जाए तो सदा तारीफ मिलती है॥४॥ यदि गुरु से साक्षात्कार हो जाए तो जीव सदा वैराग्यवान रहता है, यदि गुरु मिल जाए तो व्यक्ति पराई निंदा त्याग देता है। यदि गुरु प्राप्त हो जाए तो जीव को बुरा-भला एक जैसे ही लगते हैं, यदि गुरु प्रसन्न हो जाए तो भाग्य भी भले हो जाते हैं॥५॥ अगर गुरुदेव की मर्जी हो तो शरीर रूपी दीवार नष्ट नहीं होती, *{मन्दिर घूमना, ईश्वर का झोंपड़ी बनाना एवं बादशाह के आग्रह पर नदिया से सूखी खटोली निकालना– नामदेव जी के जीवन से संबंधित है।}* अगर गुरु-परमेश्वर की रज़ा हो तो मन्दिर भी घूम जाता है, यदि गुरु की चाह हो तो झोंपड़ी भी बन जाती है, अगर गुरु परमेश्वर की अनुकंपा हो तो जल में से खटोली सूखी निकाल देता है॥६॥ अगर गुरु से मिलन हो जाए तो अड़सठ तीर्थ का स्नान हो जाता है। यदि गुरु की करुणा हो तो शरीर पर चक्र लग जाते हैं। अगर गुरु सेवा की जाए तो बारह प्रकार की सेवा पूरी हो जाती है, अगर गुरु की खुशी हो तो सब प्रकार के जहर मीठे मेवे बन जाते हैं॥७॥ अगर गुरु-कृपा करे तो संशय टूट जाते हैं, अगर गुरु का आशीर्वाद हो तो यमों से छुटकारा हो जाता है, यदि गुरु की कृपादृष्टि हो जाए तो प्राणी संसार-सागर से पार हो जाता है, अगर गुरु मेहर कर दे तो जन्म-मरण छूट जाता है॥८॥ गुरु

की खुशी में ही अठारह पुराणों का व्यवहार है, गुरु खुश है तो अठारह भार वनस्पति की अर्चना सफल हो जाती है। गुरु के बिना अन्य कोई सहारा अथवा पूजनीय नहीं है, इसलिए नामदेव एकमात्र गुरु की शरण में आ गया है॥ ६॥ १॥ २॥ ११॥

भैरउ बाणी रविदास जीउ की घरु २ ੧ਓ सतिगुर प्रसादि ॥

बिनु देखे उपजै नही आसा ॥ जो दीसै सो होइ बिनासा ॥ बरन सहित जो जापै नामु ॥ सो जोगी केवल निहकामु ॥ १ ॥ परचै राम रवै जउ कोई ॥ पारसु परसै दुबिधा न होई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सो मुनि मन की दुबिधा खाइ ॥ बिनु दुआरे त्रै लोक समाइ ॥ मन का सुभाउ सभु कोई करै ॥ करता होइ सु अनभै रहै ॥ २ ॥ फल कारन फूली बनराइ ॥ फलु लागा तब फूलु बिलाइ ॥ गिआनै कारन करम अभिआसु ॥ गिआनु भइआ तह करमह नासु ॥ ३ ॥ घ्रित कारन दधि मथै सइआन ॥ जीवत मुकत सदा निरबान ॥ कहि रविदास परम बैराग ॥ रिदै रामु की न जपसि अभाग ॥ ४ ॥ १ ॥

(संसार की वस्तुओं को) देखे बिना मन में आशा उत्पन्न नहीं होती, जो भी दिखाई दे रहा है, वह नाश होने वाला है। जो पूर्ण निष्ठा सहित परमात्मा का जाप करता है, वही योगी केवल निष्काम है॥१॥ जो कोई गुरु से जानकारी पाकर ईशोपासना करता है, वह गुरु रूपी पारस के आशीष रूप स्पर्श से दुविधा में नहीं पड़ता॥१॥ रहाउ॥ वास्तव में मुनि वही है, जो मन की दुविधा को निगल जाता है और द्वार के बिना तीन लोकों को आत्मा में विलीन कर ले अर्थात् जगत की लालसाओं को खत्म कर दे। मन के स्वभावानुसार हर कोई कुछ न कुछ करते रहते हैं, पर जो संसार का कर्ता है, वह निर्भय रहता है॥२॥ फलों के लिए पूरी वनस्पति में फूल लगते हैं, जब फल लगता है, तब फूल स्वतः खत्म हो जाते हैं। वैसे ही ज्ञान की उपलब्धि के लिए कर्मों का अभ्यास किया जाता है। जब ज्ञान की प्राप्ति हो जाती है तो कर्मकाण्ड समाप्त हो जाते हैं॥ ३॥ जैसे चतुर लोग घी पाने के लिए दूध का मंथन करते हैं, वैसे ही जीवन्मुक्त निर्वाण पद पाते हैं। रविदास जी परम वैराग्य की बात बताते हुए कहते हैं कि हे अभागे! दिल में परमात्मा का जाप क्यों नहीं करते॥ ४॥ १॥

नामदेव ॥ आउ कलंदर केसवा ॥ करि अबदाली भेसवा ॥ रहाउ ॥ जिनि आकास कुलह सिरि कीनी कउसै सपत पयाला ॥ चमर पोस का मंदरु तेरा इह बिधि बने गुपाला ॥ १ ॥ छपन कोटि का पेहनु तेरा सोलह सहस इजारा ॥ भार अठारह मुदगरु तेरा सहनक सभ संसारा ॥ २ ॥ देही महजिदि मनु मउलाना सहज निवाज गुजारै ॥ बीबी कउला सउ काइनु तेरा निरंकार आकारै ॥ ३ ॥ भगति करत मेरे ताल छिनाए किह पहि करउ पुकारा ॥ नामे का सुआमी अंतरजामी फिरे सगल बेदेसवा ॥ ४ ॥ १ ॥

हे कलंदर! हे केशव प्रभु! फकीर के वेष में ही आ मिलो॥ रहाउ॥ तू ऐसा है, जिसने आकाश को सिर पर टोपी की तरह धारण किया हुआ है, सात पाताल तेरे जूते हैं। सभी जीव तेरा घर हैं, हे जगतपालक! इस तरह तू सुन्दर बना हुआ है॥१॥ छप्पन करोड़ बादलों का तेरा चोला है एवं सोलह हजार तेरा पायजामा है। अठारह भार वनस्पति तेरा मुदगर है और समूचा संसार तेरा थाल है॥ २॥ यह शरीर मस्जिद है और मन रूपी मौलाना सहज स्वभाव नमाज़ गुजारता है। देवी लक्ष्मी से तेरा निकाह हुआ है, जो तेरे निर्गुण रूप को सगुण करती है॥ ३॥ भक्ति करते हुए मुझसे खड़ताल छीन लिए गए, तेरे सिवा किसको पुकार करूँ। नामदेव का स्वामी दिल की हर भावना को जानता है, वह सबमें रमण कर रहा है॥ ४॥ १॥

रागु बसंतु महला १ घरु १ चउपदे दुतुके

१ओ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

जन्मदाता, पोषणकर्ता एवं संहारक वह अनंतशक्ति ईश्वर एक है, उसका नाम सत्य है, वह कर्ता पुरुष है, सर्वशक्तिमान है, उसे कोई भय नहीं, सब पर सम-दृष्टि होने के कारण वह निर्वेर है, वह कालातीत ब्रह्म-मूर्ति सदा अमर है, वह योनि-चक्र से रहित है, स्वजन्मा है, गुरु की कृपा से प्राप्त होता है।

माहा माह मुमारखी चड़िआ सदा बसंतु ॥ परफड़ु चित समालि सोइ सदा सदा गोबिंदु ॥ १ ॥ भोलिआ हउमै सुरति विसारि ॥ हउमै मारि बीचारि मन गुण विचि गुणु लै सारि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करम पेडु साखा हरी धरमु फुलु फलु गिआनु ॥ पत परापति छाव घणी चूका मन अभिमानु ॥ २ ॥ अखी कुदरति कंनी बाणी मुखि आखणु सचु नामु ॥ पति का धनु पूरा होआ लागा सहजि धिआनु ॥ ३ ॥ माहा रुती आवणा वेखहु करम कमाइ ॥ नानक हरे न सूकही जि गुरमुखि रहे समाइ ॥ ४ ॥ १ ॥

महीनों में सबसे मुबारक महीना वसंत आ गया है, यह सदा ही खिला रहने वाला है। हे मन ! तुम खुशियों से झूमकर सर्वदा परमात्मा का स्मरण करो।' १॥ हे भोले ! अहम्-वृत्ति को छोड़ दे, अहम् को मारकर मन में चिंतन कर और सर्वोत्तम गुणों को संभाल ले॥१॥ रहाउ॥ सम्पूर्ण विश्व कर्म रूपी पेड़ है, हरि-नाम इसकी शाखाएँ हैं, धर्म करना इसका फूल है और ज्ञान की प्राप्ति फल है। जब पत्तों के रूप में घनी छाँव प्राप्त होती है तो मन का अभिमान निवृत्त हो जाता है॥२॥ उसकी सुन्दर प्रकृति आँखों से नसीब होती है, कानों से मधुर वाणी नसीब होती है। अगर सहज स्वभाव परमात्मा में ध्यान लगाया जाए तो लोक-परलोक में प्रतिष्ठा का पूरा धन उपलब्ध हो जाता है॥३॥ हे भाई ! महीने और ऋतुएँ तो आने जाने वाली हैं, अतः नाम स्मरण रूपी सच्ची कर्म कमाई करके देख लो। गुरु नानक साहिब का फुरमान है कि जो गुरु के निर्देशानुसार प्रभु-नाम स्मरण में लीन रहते हैं, वे कभी नहीं सूखते और सदा हरे-भरे रहते हैं॥४॥१॥

महला १ बसंतु ॥ रुति आईले सरस बसंत माहि ॥ रंगि राते रवहि सि तैरै चाइ ॥ किसु पूज चड़ावउ लगउ पाइ ॥ १ ॥ तेरा दासनि दासा कहउ राइ ॥ जगजीवन जुगति न मिलै काइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तेरी मूरति एका बहुतु रूप ॥ किसु पूज चड़ावउ देउ धूप ॥ तेरा अंतु न पाइआ कहा पाइ ॥ तेरा दासनि दासा कहउ राइ ॥ २ ॥ तेरे सठि संबत सभि तीरथा ॥ तेरा सचु नामु परमेसरा ॥ तेरी गति अविगति नही जाणीऐ ॥ अणजाणत नामु वखाणीऐ ॥ ३ ॥ नानकु वेचारा किआ कहै ॥ सभु लोकु सलाहे एकसै ॥ सिरु नानक लोका पाव है ॥ बलिहारी जाउ जेते तेरे नाव है ॥ ४ ॥ २ ॥

रमणीय ऋतु वसंत का महीना आ गया है। हे परमेश्वर ! जो तेरे रंग में लीन रहते हैं, वे तुझे पाने के चाव में मस्त रहते हैं। तेरे सिवा किसकी पूजा के लिए अर्चना-सामग्री भेंट करूँ, तेरे

सिवा किसके पाँव छू सकता हूँ॥१॥ हे मालिक ! तेरे दासों का दास कहलाता हूँ, हे संसार के जीवन ! (भक्ति के सिवा) किसी भी युक्ति से तुझे पाया नहीं जा सकता॥१॥ रहाउ॥ तेरी मूर्ति एक ही है, पर तेरे रूप अनेक हैं। फिर तेरे सिवा किसकी पूजा-अर्चना करूँ, तेरे अतिरिक्त किसे धूप बत्ती इत्यादि भेंट करूँ। तेरा रहस्य कहीं भी प्राप्त नहीं हो सकता। हे मालिक ! तेरे दासों का दास कहलाना चाहता हूँ॥२॥ साठ संबत, सभी तीर्थ तेरे ही हैं। हे परमेश्वर ! तेरा नाम शाश्वत है। तेरी गति-ज्ञान जाना नहीं जा सकता और बिना जाने ही तेरे नाम का उच्चारण करना चाहिए॥३॥ नानक बेचारा भला तेरी क्या स्तुति कर सकता है, सभी लोग एकमात्र तेरी ही प्रशंसा कर रहे हैं। नानक का सिर उन महापुरुषों के पांवों पर पड़ा हुआ है। हे संसार के पालक ! जितने भी तेरे नाम हैं, मैं उन पर कुर्बान जाता हूँ॥४॥२॥

बसंतु महला १ ॥ सुइने का चउका कंचन कुआर ॥ रुपे कीआ कारा बहुतु बिसथारु ॥ गंगा का उदकु करंते की आगि ॥ गरुड़ा खाणा दुध सिउ गाडि ॥ १ ॥ रे मन लेखै कबहू न पाइ ॥ जामि न भीजै साच नाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दस अठ लीखे होवहि पासि ॥ चारे बेद मुखागर पाठि ॥ पुरबी नावै वरनां की दाति ॥ वरत नेम करे दिन राति ॥ २ ॥ काजी मुलां होवहि सेख ॥ जोगी जंगम भगवे भेख ॥ को गिरही करमा की संधि ॥ बिनु बूझे सभ खड़ीअसि बंधि ॥ ३ ॥ जेते जीअ लिखी सिरि कार ॥ करणी उपरि होवगि सार ॥ हुकमु करहि मूरख गावार ॥ नानक साचे के सिफति भंडार ॥ ४ ॥ ३ ॥

अगर किसी ने सोने का चौका तैयार किया हो, सोने के बर्तन वहाँ उपयोग करे, चाँदी की रेखाएँ दूर-दूर तक खींच ले, खाना पकाने के लिए पावन गंगा का जल एवं पवित्र अग्नि उपयोग करे, दूध में मिला कर भोजन पकाता है॥१॥ हे मन ! ऐसा कोई भी कर्मकाण्ड परमात्मा को मंजूर नहीं होता, जब तक सच्चे प्रभु नाम में रत नहीं होते॥१॥ रहाउ॥ अगर अठारह पुराण लिखकर पास रख लिए जाएँ, चार वेदों का पाठ मौखिक कण्ठस्थ हो, अनेक पर्वों का स्नान एवं अलग-अलग जातियों के लोगों को दान-पुण्य किया हो, दिन-रात व्रत एवं नियम कर लिए हों॥ २॥ बेशक कोई काजी, मुल्ला, शेख बन जाए, कोई योगी बनकर भगवा वेश धारण कर लेता है। कोई गृहस्थी बनकर कर्मकाण्ड करता है, परन्तु जब तक मनुष्य ईश्वर के नाम का महत्व नहीं जानता, सबको अपराधियों की तरह बांध कर पेश किया जाता है॥३॥ संसार के जितने भी जीव हैं, उनका भाग्य-लेख लिखा हुआ है। उनके किए कर्मों के आधार पर ईश्वर के दरबार में फैसला होगा। मूर्ख गंवार व्यक्ति व्यर्थ ही संसारिक हुक्म करते रहते हैं। गुरु नानक फुरमान करते हैं कि सच्चे परमेश्वर के स्तुति के भण्डार भरे हुए हैं॥४॥३॥

बसंतु महला ३ तीजा ॥ बसत्र उतारि दिगंबरु होगु ॥ जटाधारि किआ कमावै जोगु ॥ मनु निरमलु नही दसवै दुआर ॥ भ्रमि भ्रमि आवै मूढ़ा वारो वार ॥ १ ॥ एकु धिआवहु मूढ़ मना ॥ पारि उतरि जाहि इक खिनां ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिम्रिति सासत्र करहि वखिआण ॥ नादी बेदी पढ़हि पुराण ॥ पाखंड द्रिसटि मनि कपटु कमाहि ॥ तिन कै रमईआ नेड़ि नाहि ॥ २ ॥ जे को ऐसा संजमी होइ ॥ क्रिआ विसेख पूजा करेइ ॥ अंतरि लोभु मनु बिखिआ माहि ॥ ओइ निरंजनु कैसे पाहि ॥ ३ ॥ कीता होआ करे किआ होइ ॥ जिस नो आपि चलाए सोइ ॥ नदरि करे तां भरमु चुकाए ॥ हुकमै बूझै तां साचा पाए ॥ ४ ॥ जिसु जीउ अंतरु मैला होइ ॥ तीरथ भवै दिसंतर लोइ ॥ नानक मिलीऐ सतिगुर संग ॥ तउ भवजल के तूटसि बंध ॥ ५ ॥ ४ ॥

अगर वस्त्र उतार कर नागा साधू बना जाए, अगर जटा धारण कर योगाभ्यास किया जाए, (कोई फायदा नहीं) दसम द्वार में ध्यान लगाने पर भी मन निर्मल नहीं होता। मूर्ख इन्सान इन भ्रमों में पड़ कर बार-बार संसार में आता रहता है॥१॥ हे मूर्ख मन! केवल परमात्मा का चिंतन करो, एक पल में मुक्ति हो जाएगी॥१॥ रहाउ॥ पण्डित स्मृतियों एवं शास्त्रों का बखान करते हैं, कोई नाद बजाता है, कोई वेदों का पाठ करता है तो कोई पुराण पढ़ता है, परन्तु किसी की दृष्टि पाखण्ड से भरी होती है और कोई मन में कपट करता है, ऐसे लोगों के पास तो परमात्मा बिल्कुल ही नहीं आता॥२॥ अगर कोई ऐसा संयमी पुरुष हो जो कोई विशेष क्रिया करता है, नित्य पूजा-पाठ ही करता हो, अगर उसके अन्तर्मन में लोभ भरा हो और मन में विकार हैं तो फिर ऐसा पुरुष परमात्मा को कैसे पा सकता है॥३॥ जिसे परमात्मा ने बनाया है, उसके करने से क्या हो सकता है, जिसे स्वयं ईश्वर अपनी रज़ा से चला रहा है (दरअसल मनुष्य मजबूर है, परमेश्वर ही उससे सब करवा रहा है) यदि वह करुणा दृष्टि करे तो भ्रम निवृत्त कर देता है। अगर मनुष्य उसके हुक्म को बूझ ले तो वह ईश्वर को पा लेता है॥४॥ जिस व्यक्ति का मन मैला होता है, निःसंकोच वह देश-दिशांतर तीर्थों की यात्रा ही करता रहे, सब निष्फल है। गुरु नानक साहिब का मत है कि गुरु से मिलाप हो जाए तो (प्रभु को पाकर) संसार-सागर के तमाम बन्धन टूट जाते हैं॥५॥४॥

बसंतु महला १ ॥ सगल भवन तेरी माइआ मोह ॥ मै अवरु न दीसै सरब तोह ॥ तू सुरि नाथा देवा देव ॥ हरि नामु मिलै गुर चरन सेव ॥ १ ॥ मेरे सुंदर गहिर गंभीर लाल ॥ गुरमुखि राम नाम गुन गाए तू अपरंपरु सरब पाल ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बिनु साध न पाईऐ हरि का संगु ॥ बिनु गुर मैल मलीन अंगु ॥ बिनु हरि नाम न सुधु होइ ॥ गुर सबदि सलाहे साचु सोइ ॥ २ ॥ जा कउ तू राखहि रखनहार ॥ सतिगुरू मिलावहि करहि सार ॥ बिखु हउमै ममता परहराइ ॥ सभि दूख बिनासे राम राइ ॥ ३ ॥ ऊतम गति मिति हरि गुन सरीर ॥ गुरमति प्रगटे राम नाम हीर ॥ लिव लागी नामि तजि दूजा भाउ ॥ जन नानक हरि गुरु गुर मिलाउ ॥ ४ ॥ ५ ॥

हे जगतपालक! समस्त भवनों में तेरी माया का मोह फैला हुआ है, लेकिन तेरे सिवा मुझे अन्य कोई भी दिखाई नहीं देता, सबमें तू ही है। तू देवताओं का नाथ है, देवाधिदेव है। गुरु-चरणों की सेवा से ही हरिनाम प्राप्त होता है॥१॥ हे मेरे सुन्दर, गहनगम्भीर! गुरु ने मुख से राम-नाम का ही गुणगान किया है, तू अपरंपार है, समूचे विश्व का पालक है॥१॥ रहाउ॥ साधु महापुरुष के बिना ईश्वर का साथ प्राप्त नहीं हो सकता। गुरु के बिना विकारों की मैल से शरीर का प्रत्येक अंग मलिन रहता है। हरिनाम का भजन किए बिना यह शुद्ध नहीं होता। जो गुरु के उपदेश द्वारा परमात्मा की स्तुति करता है, वही सत्यशील होता है॥२॥ हे सर्वरक्षक! जिसकी तू रक्षा करता है, सतगुरु से साक्षात्कार करवा कर उसकी संभाल करता है। उसका अहम् रूपी जहर, ममता एवं सभी दुख तू नष्ट कर देता है॥३॥ शरीर में सद्गुण धारण करने से उत्तम आचरण एवं अवस्था हो जाती है। गुरु के उपदेश से राम नाम रूपी हीरा आलोकित हो जाता है। द्वैतभाव को छोड़कर उसकी नाम-स्मरण में लगन लगी रहती है। नानक की परमेश्वर से विनती है कि गुरु से भेंट कराओ, क्योंकि गुरु ही परमात्मा से मिलाने वाला है॥४॥५॥

बसंतु महला १ ॥ मेरी सखी सहेली सुनहु भाइ ॥ मेरा पिरु रीसालू संगि साइ ॥ ओहु अलखु न लखीऐ कहहु काइ ॥ गुरि संगि दिखाइओ राम राइ ॥ १ ॥ मिलु सखी सहेली हरि गुन बने ॥ हरि

प्रभ संगि खेलहि वर कामनि गुरमुखि खोजत मन मने ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनमुखी दुहागणि नाहि भेउ ॥ ओहु घटि घटि रावै सरब प्रेउ ॥ गुरमुखि थिरु चीनै संगि देउ ॥ गुरि नामु द्रिड़ाइआ जपु जपेउ ॥ २ ॥ बिनु गुर भगति न भाउ होइ ॥ बिनु गुर संत न संगु देइ ॥ बिनु गुर अंधुले धंधु रोइ ॥ मनु गुरमुखि निरमलु मलु सबदि खोइ ॥ ३ ॥ गुरि मनु मारिओ करि संजोगु ॥ अहिनिसि रावे भगति जोगु ॥ गुर संत सभा दुखु मिटै रोगु ॥ जन नानक हरि वरु सहज जोगु ॥ ४ ॥ ६ ॥

हे मेरी सखी सहेलियो ! जरा प्रेमपूर्वक मेरी बात सुनो, मेरा प्रियतम प्रभु हमारे साथ ही रहता है। वह अदृश्य है, उसे देखा नहीं जा सकता। (प्रश्न) कहो, उससे किस प्रकार मिलन हो सकता है ? (उत्तर) यदि गुरु का साथ प्राप्त हो जाए तो वह प्रभु के दर्शन करवा देता है॥१॥ हे सखी सहेलियो ! मिलकर ईश्वर का यशगान करना ही अच्छा है। जीव रूपी कामिनी प्रभु के संग मिलकर रमण करती है और गुरु द्वारा खोजकर उसका मन आनंदित हो जाता है॥१॥ रहाउ॥ मनमुखी बदनसीब जीव स्त्रियों को यह रहस्य मालूम नहीं कि वह सबका प्यारा प्रभु घट-घट में रमण कर रहा है। गुरु उपदेशानुसार अनुसरण करने वाली जीव-स्त्रियां इस भेद को जान लेती हैं कि प्रभु हमारे साथ ही मन में स्थिर है। गुरु ने उनके अन्तर्मन में प्रभु-नाम ही दृढ़ करवाया है, अतः वे प्रभु का नाम जपती रहती हैं॥२॥ गुरु के बिना परमात्मा की भक्ति व चिन्तन नहीं होता, गुरु के बिना संतों की संगत भी संभव नहीं, गुरु शरण बिना अंधे जीव संसार के कार्यों में रोते रहते हैं। गुरु की शरण में आने से मन निर्मल हो जाता है और गुरु का उपदेश विकारों की मैल साफ कर देता है॥३॥ गुरु संयोग बनाकर मन को मार देता है, तदन्तर मन दिन-रात प्रभु-भक्ति में लीन रहता है। गुरु-संत के संपर्क में रहने से तमाम दुख-रोग मिट जाते हैं। गुरु नानक का मत है कि प्रभु से मिलकर सहजावस्था प्राप्त हो जाती है॥४॥६॥

बसंतु महला १ ॥ आपे कुदरति करे साजि ॥ सचु आपि निबेड़े राजु राजि ॥ गुरमति ऊतम संगि साथि ॥ हरि नामु रसाइणु सहजि आथि ॥ १ ॥ मत बिसरसि रे मन राम बोलि ॥ अपरंपरु अगम अगोचरु गुरमुखि हरि आपि तुलाए अतुलु तोलि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर चरन सरेवहि गुरसिख तोर ॥ गुर सेव तरे तजि मेर तोर ॥ नर निंदक लोभी मनि कठोर ॥ गुर सेव न भाई सि चोर चोर ॥ २ ॥ गुरु तुठा बखसे भगति भाउ ॥ गुरि तुठै पाईऐ हरि महलि ठाउ ॥ परहरि निंदा हरि भगति जागु ॥ हरि भगति सुहावी करमि भागु ॥ ३ ॥ गुरु मेलि मिलावै करे दाति ॥ गुरसिख पिआरे दिनसु राति ॥ फलु नामु परापति गुरु तुसि देइ ॥ कहु नानक पावहि विरले केइ ॥ ४ ॥ ७ ॥

परमात्मा ही सम्पूर्ण सृष्टि की रचना करता है, वह स्वयं ही अपने हुक्म से किए गए कर्मों के आधार पर जीवों का निर्णय करता है। गुरु के उपदेश से उत्तम प्रभु साथ ही अनुभव होता है और सहज स्वभाव ही हरि नाम रूपी धन प्राप्त हो जाता है॥१॥ हे मन ! राम नाम का भजन कर, भूल मत जाना। वह अपरंपार, मन-वाणी से परे है और वह स्वयं ही गुरु से अपनी महिमा का गुणगान करवाता है॥१॥ रहाउ॥ गुरु के शिष्य गुरु चरणों की पूजा-वन्दना करते हैं, वे गुरु की सेवा द्वारा अहम् भावना को त्यागकर संसार-सागर से मुक्त हो जाते हैं। निंदा करने वाले पुरुष सदा लोभ करते हैं और उनका मन भी बड़ा कठोर होता है। उनको गुरु की सेवा बिल्कुल अच्छी नहीं लगती, दरअसल वे सबसे बड़े चोर हैं॥२॥ यदि गुरु प्रसन्न हो जाए तो वह प्रेम-भक्ति की बख्शिश कर देता है, गुरु के खुश होने से ही ईश्वर का घर प्राप्त होता है। वह निंदा छोड़कर भगवान की भक्ति में जाग्रत रहता है, उत्तम भाग्य से भगवान की भक्ति सुन्दर लगती है॥३॥ जिसका गुरु

से मिलाप हो जाता है, वह उसे नाम-स्मरण का दान प्रदान करता है। गुरु के प्यारे शिष्य दिन-रात हरिनामोच्चारण में लीन रहते हैं। गुरु नानक का मत है कि गुरु जिस पर प्रसन्नता के घर में आता है, उसे फल रूप में नाम ही प्राप्त होता है, और कोई विरले ही नाम पाते हैं॥ ४॥ ७॥

बसंतु महला ३ इक तुका ॥ साहिब भावै सेवकु सेवा करै ॥ जीवतु मरै सभि कुल उधरै ॥ १ ॥ तेरी भगति न छोडउ किआ को हसै ॥ साचु नामु मेरै हिरदै वसै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जैसे माइआ मोहि प्राणी गलतु रहै ॥ तैसे संत जन राम नाम रवत रहै ॥ २ ॥ मै मूरख मुगध ऊपरि करहु दइआ ॥ तउ सरणागति रहउ पइआ ॥ ३ ॥ कहतु नानकु संसार के निहफल कामा ॥ गुर प्रसादि को पावै अंम्रित नामा ॥ ४ ॥ ८ ॥

मालिक की मर्जी से ही सेवक सेवा करता है, वह संसार में मोह-माया से निर्लिप्त रहकर सभी कुलों का उद्धार कर देता है॥ १॥ हे मालिक! बेशक कोई मुझ पर हँसता रहे, तेरी भक्ति नहीं छोड़ सकता, मेरे हृदय में तेरा शाश्वत नाम बस गया है॥ १॥ रहाउ॥ जैसे प्राणी माया-मोह में लीन रहते हैं, वैसे ही भक्तजन प्रभु-भजन में ही मग्न रहते हैं॥ २॥ हे दयासागर! मुझ मूर्ख नासमझ पर दया करो, मैं सदा तेरी शरण में पड़ा रहूँ॥ ३॥ नानक कहते हैं कि संसार के काम धंधे निरर्थक हैं और गुरु की कृपा से ही कोई हरि-नामामृत प्राप्त करता है॥ ४॥ ८॥

महला १ बसंतु हिंडोल घरु २ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

साल ग्राम बिप पूजि मनावहु सुक्रितु तुलसी माला ॥ राम नामु जपि बेड़ा बांधहु दइआ करहु दइआला ॥ १ ॥ काहे कलरा सिंचहु जनमु गवावहु ॥ काची ढहगि दिवाल काहे गचु लावहु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कर हरिहट माल टिंड परोवहु तिसु भीतरि मनु जोवहु ॥ अंम्रितु सिंचहु भरहु किआरे तउ माली के होवहु ॥ २ ॥ कामु क्रोधु दुइ करहु बसोले गोडहु धरती भाई ॥ जिउ गोडहु तिउ तुम्ह सुख पावहु किरतु न मेटिआ जाई ॥ ३ ॥ बगुले ते फुनि हंसुला होवै जे तू करहि दइआला ॥ प्रणवति नानकु दासनि दासा दइआ करहु दइआला ॥ ४ ॥ १ ॥ ९ ॥

हे ब्राह्मण! तुम शालग्राम की पूजा-अर्चना करते हो, उसे मनाते हो, शुभ आचरण के तौर पर तुलसी की माला फेरते हो। राम नाम का जाप करो, इसे भवसागर पार करने के लिए बेड़े के रूप में तैयार करो और यही सच्ची वन्दना करो कि हे दया सागर! हम पर दया करो॥ १॥ अरे भाई! तुम्हारा जन्म बेकार ही जा रहा है, क्यों बंजर भूमि सींच रहा है। शरीर रूपी कच्ची दीवार नष्ट हो जाएगी, क्यों इस पर धार्मिक दिखावे का चूना लगा रहे हो॥ १॥ रहाउ॥ अपने हाथों से सेवा को कुएं से निकालने वाला रहट और उसकी माला और उसके भीतर मन को बैल बनाकर जोतने के लिए लगा दो। नाम रूपी अमृत जल से क्यारियों को सींचोगे तो ही ईश्वर रूपी बागबां के बनोगे॥ २॥ हे भाई! काम क्रोध को दो खुरपे बनाओ, इसका उपयोग करते हुए अवगुणों को निकालकर गुणों को धारण कर लो और शरीर रूपी भूमि में गुडाई करो। ज्यों ज्यों गुडाई करोगे (अवगुण-विकारों को निकालकर) त्यों त्यों तुम सुख प्राप्त करोगे। इस प्रकार तुम्हारी मेहनत बेकार नहीं जा सकती॥ ३॥ हे दयासागर! यदि तू दया कर दे तो जीव बगुले से हंस बन जाता है। नानक दासों का दास मानते हुए विनती करता है कि हे दयालु ईश्वर! हम पर अपनी दया करो॥ ४॥ १॥ ९॥

बसंतु महला १ हिंडोल ॥ साहुरड़ी वथु सभु किछु साझी पेवकड़ै धन वखे ॥ आपि कुचजी दोसु न देऊ जाणा नाही रखे ॥ १ ॥ मेरे साहिबा हउ आपे भरमि भुलाणी ॥ अखर लिखे सेई गावा अवर न जाणा बाणी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कढि कसीदा पहिरहि चोली तां तुम्ह जाणहु नारी ॥ जे घरु राखहि बुरा न चाखहि होवहि कंत पिआरी ॥ २ ॥ जे तूं पड़िआ पंडितु बीना दुइ अखर दुइ नावा ॥ प्रणवति नानकु एकु लंघाए जे करि सचि समावां ॥ ३ ॥ २ ॥ १० ॥

ससुराल से मिली सभी वस्तुएँ सबके लिए बराबर होती हैं, पर जीव रूपी स्त्री इहलोक में भिन्नता करती है। वह स्वयं अच्छा काम नहीं करती, स्वयं को दोष नहीं देती और वस्तु को संभाल कर नहीं रखती॥१॥ हे मेरे मालिक! मैं स्वयं ही भ्रम में भूली हुई हूँ, जो भाग्य में लिखा है, वही गा रही हूँ, अन्य वाणी बोलना नहीं जानती॥१॥ हे जीव रूपी नारी! अगर हरिनाम रूपी कसीदे की कढाई का प्रेम रूपी परिधान धारण किया जाए तो ही तुम्हें सम्मान मिलेगा। यदि इहलोक रूपी घर में अच्छाई को संभाल कर रखोगी और बुराई से दूर रहोगी तो ही प्रभु को प्यारी लगोगी॥२॥ हे जीव! अगर तू पढ़ा लिखा है, पण्डित एवं चतुर है तो भी हरि नाम रूपी दो अक्षर ही पार करवाने वाले हैं। नानक विनती करते हैं कि यदि परम सत्य की स्तुति में लीन हो जाऊँ तो केवल वही संसार-सागर से लंघा सकता है॥३॥२॥१०॥

बसंतु हिंडोल महला १ ॥ राजा बालकु नगरी काची दुसटा नालि पिआरो ॥ दुइ माई दुइ बापा पड़ीअहि पंडित करहु बीचारो ॥ १ ॥ सुआमी पंडिता तुम्ह देहु मती ॥ किन बिधि पावउ प्रानपती ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भीतरि अगनि बनासपति मउली सागरु पंडै पाइआ ॥ चंदु सूरजु दुइ घर ही भीतरि ऐसा गिआनु न पाइआ ॥ २ ॥ राम रवंता जाणीऐ इक माई भोगु करेइ ॥ ता के लखण जाणीअहि खिमा धनु संग्रहेइ ॥ ३ ॥ कहिआ सुणहि न खाइआ मानहि तिन्हा ही सेती वासा ॥ प्रणवति नानकु दासनि दासा खिनु तोला खिनु मासा ॥ ४ ॥ ३ ॥ ११ ॥

मन रूपी राजा छोटे से बच्चे की तरह नादान है, इसकी तन रूपी नगरी भी कच्ची है और काम, क्रोध, लोभ रूपी दुष्टों से प्रेम बना हुआ है। इसकी दो माताएँ एवं दो पिता बतलाए जाते हैं, हे पण्डित जी! इस बात पर चिंतन करो॥ १॥ हे पण्डित स्वामी! तुम यह शिक्षा प्रदान करो कि सच्चा परमेश्वर किस विधि से प्राप्त हो सकता है॥१॥ रहाउ॥ वनस्पति में अग्नि होने के बावजूद भी वह हरित रहती है और सागर बहुत बड़ा होकर भी अपनी सीमा पार नहीं करता, जैसे गठरी बांध दी गई हो। शान्ति रूपी चांद एवं क्रोध रूपी सूर्य दोनों ही एक घर में रहते हैं, ऐसा ज्ञान प्राप्त नहीं किया॥२॥ ईश्वर का उपासक वही माना जाता है, जो एक माई का भोग कर लेता है, उसके लक्षण यही माने जाते हैं कि वह क्षमाभावना रूपी धन संग्रह करता हो॥३॥ गुरु नानक स्वयं को दासों का दास मानते हुए विनय करते हैं कि मनुष्य का लाचार मन इन इन्द्रियों के संग रहता है, जिनको उपदेश दिया जाए तो ध्यान नहीं देती और जितनी भी तृप्ति करवाई जाए, एहसानमंद नहीं होती। मन पल में ही बड़ा हो जाता है और पल में ही छोटा हो जाता है॥४॥३॥११॥

बसंतु हिंडोल महला १ ॥ साचा साहु गुरू सुखदाता हरि मेले भुख गवाए ॥ करि किरपा हरि भगति द्रिड़ाए अनदिनु हरि गुण गाए ॥ १ ॥ मत भूलहि रे मन चेति हरी ॥ बिनु गुर मुकति नाही त्रै लोई गुरमुखि पाईऐ नामु हरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बिनु भगती नही सतिगुरु पाईऐ बिनु भागा नही भगति

हरी ॥ बिनु भागा सतसंगु न पाईऐ करमि मिलै हरि नामु हरी ॥ २ ॥ घटि घटि गुपतु उपाए वेखै परगटु गुरमुखि संत जना ॥ हरि हरि करहि सु हरि रंगि भीने हरि जलु अंम्रित नामु मना ॥ ३ ॥ जिन कउ तखति मिलै वडिआई गुरमुखि से परधान कीए ॥ पारसु भेटि भए से पारस नानक हरि गुर संगि थीए ॥ ४ ॥ ४ ॥ १२ ॥

गुरु सच्चा शाह है, सुख प्रदान करने वाला है। वह हर लालसा को दूर कर परमात्मा से मिला देता है। वह कृपा करके परमात्मा की भक्ति करवाता है और हर समय परमात्मा के ही गुण गाता है॥ १॥ हे मन! परमात्मा का स्मरण करो, उसे मत भुलाओ। गुरु के बिना तीनों लोकों में मुक्ति नहीं हो सकती और प्रभु का नाम गुरु से ही प्राप्त होता है॥ १॥ रहाउ॥ भक्ति के बिना सतगुरु प्राप्त नहीं होता और भाग्य के बिना ईश्वर की भक्ति भी नहीं हो सकती। भाग्य के बिना सत्संग भी प्राप्त नहीं होता और परमात्मा का नाम प्रारब्ध से ही मिलता है॥२॥ संसार को उत्पन्न एवं देखभाल करने वाला प्रभु घट घट में गुप्त रूप से व्याप्त है, वह गुरमुख भक्तजनों के सन्मुख प्रगट हो जाता है। जो ईश्वर का भजन करते हैं, उसके रंग में ही निमग्न रहते हैं उनके मन में हरिनामामृत ही बसा रहता है॥ ३॥ जिनको राजसिंहासन पर विराजमान होने की बड़ाई मिलती है, उन्हें वही प्रमुख बनाता है। गुरु नानक का फुरमान है कि गुरु-पारस से मुलाकात कर वे भी गुणवान् बन जाते हैं और गुरु के सम्पर्क में ही रहते हैं॥ ४॥ ४॥ १२॥

बसंतु महला ३ घरु १ दुतुके १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

माहा रुती महि सद बसंतु ॥ जितु हरिआ सभु जीअ जंतु ॥ किआ हउ आखा किरम जंतु ॥ तेरा किनै न पाइआ आदि अंतु ॥ १ ॥ तै साहिब की करहि सेव ॥ परम सुख पावहि आतम देव ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करमु होवै तां सेवा करै ॥ गुर परसादी जीवत मरै ॥ अनदिनु साचु नामु उचरै ॥ इन बिधि प्राणी दुतरु तरै ॥ २ ॥ बिखु अंम्रितु करतारि उपाए ॥ संसार बिरख कउ दुइ फल लाए ॥ आपे करता करे कराए ॥ जो तिसु भावै तिसै खवाए ॥ ३ ॥ नानक जिस नो नदरि करेइ ॥ अंम्रित नामु आपे देइ ॥ बिखिआ की बासना मनहि करेइ ॥ अपणा भाणा आपि करेइ ॥ ४ ॥ १ ॥

महीनों, ऋतुओं में बसंत ऋतु सदाबहार है। इस मौसम में सभी जीव-जन्तु खिल जाते हैं। हे सृष्टिकर्ता! मैं किंचन जीव क्या बता सकता हूँ, तेरे आदि एवं अन्त का किसी ने रहस्य नहीं पाया॥ १॥ हे मालिक! जो भी तेरी सेवा करता है, वह परमसुख पाता है॥ १॥ रहाउ॥ जिसका उत्तम भाग्य होता है, वही प्रभु की सेवा करता है। गुरु की कृपा से वह संसार में रहकर विकारों को मारकर आध्यात्मिक तौर पर जीता है। वह हर पल प्रभु नाम का उच्चारण करता है, इस तरीके से प्राणी दुस्तर संसार सागर से पार हो जाता है॥ २॥ (बुराई रूपी) विष एवं (अच्छाई रूपी) अमृत परमात्मा ने उत्पन्न किए हैं और संसार रूपी वृक्ष को दो फल लगा दिए हैं। करने-करवाने वाला स्वयं ईश्वर ही है, जैसे उसकी मर्जी होती है, वैसा ही फल खिलाता है॥ ३॥ हे नानक! जिस पर कृपा-दृष्टि करता है, उसे स्वयं ही नाम अमृत प्रदान कर देता है। वह उसके विकारों की वासना को निवृत्त करता है और अपनी इच्छा से स्वयं ही ऐसा करता है॥ ४॥ १॥

बसंतु महला ३ ॥ राते साचि हरि नामि निहाला ॥ दइआ करहु प्रभ दीन दइआला ॥ तिसु बिनु अवरु नही मै कोइ ॥ जिउ भावै तिउ राखै सोइ ॥ १ ॥ गुर गोपाल मेरै मनि भाए ॥ रहि न सकउ

दरसन देखे बिनु सहजि मिलउ गुरु मेलि मिलाए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इहु मनु लोभी लोभि लुभाना ॥ राम बिसारि बहुरि पछुताना ॥ बिछुरत मिलाइ गुर सेव रांगे ॥ हरि नामु दीओ मसतकि वडभागे ॥ २ ॥ पउण पाणी की इह देह सरीरा ॥ हउमै रोगु कठिन तनि पीरा ॥ गुरमुखि राम नाम दारू गुण गाइआ ॥ करि किरपा गुरि रोगु गवाइआ ॥ ३ ॥ चारि नदीआ अगनी तनि चारे ॥ त्रिसना जलत जले अहंकारे ॥ गुरि राखे वडभागी तारे ॥ जन नानक उरि हरि अंम्रितु धारे ॥ ४ ॥ २ ॥

जो शाश्वत हरिनाम में निमग्न हो जाते हैं, वे सर्वदा आनंदित रहते हैं। हे प्रभु ! तू दीनदयाल है, हम पर दया करो। तेरे सिवा मेरा अन्य कोई सहायक नहीं, जैसे तेरी मर्जी है, वैसे ही तू रखता है॥१॥ गुरु-परमेश्वर ही मेरे मन को अच्छा लगता है, उसके दर्शन किए बिना बिल्कुल रह नहीं सकता। वह सहज स्वभाव ही मिलता है और गुरु स्वयं ही संयोग बनाकर मिलाता है॥१॥ रहाउ॥ यह लोभी मन लोभ में ही फंसा रहता है, तदन्तर ईश्वर का विस्मरण कर बहुत पछताता है। जो गुरु की सेवा में रत हो जाता है, परमात्मा से बिछुड़े हुए प्राणी का गुरु पुनः मिलन करवा देता है। जिसका अहोभाग्य होता है, उसे हरिनाम प्रदान करता है॥२॥ यह शरीर पवन-पानी इत्यादि पंच तत्वों की रचना है और अहम् रोग इस तल को बहुत पीड़ा पहुँचाता है। (गुरु ने) राम नाम का गुणगान ही इसकी दवा (बताया) है और गुरु कृपा करके अहम् रोग समाप्त कर देता है॥३॥ तन में क्रोध, लालच, अहंकार एवं हिंसा रूपी चार नदियाँ बहती रहती हैं और मनुष्य तृष्णा एवं अहंकार में जलता रहता है। गुरु जिसकी रक्षा करता है, ऐसा भाग्यशाली संसार-सागर से तर जाता है। हे नानक ! भक्त अपने हृदय में हरिनाम रूपी अमृत ही धारण करके रखता है॥४॥२॥

बसंतु महला ३ ॥ हरि सेवे सो हरि का लोगु ॥ साचु सहजु कदे न होवै सोगु ॥ मनमुख मुए नाही हरि मन माहि ॥ मरि मरि जंमहि भी मरि जाहि ॥ १ ॥ से जन जीवे जिन हरि मन माहि ॥ साचु सम्हालहि साचि समाहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि न सेवहि ते हरि ते दूरि ॥ दिसंतरु भवहि सिरि पावहि धूरि ॥ हरि आपे जन लीए लाइ ॥ तिन सदा सुखु है तिलु न तमाइ ॥ २ ॥ नदरि करे चूकै अभिमानु ॥ साची दरगह पावै मानु ॥ हरि जीउ वेखै सद हजूरि ॥ गुर कै सबदि रहिआ भरपूरि ॥ ३ ॥ जीअ जंत की करे प्रतिपाल ॥ गुर परसादी सद सम्हाल ॥ दरि साचै पति सिउ घरि जाइ ॥ नानक नामि वडाई पाइ ॥ ४ ॥ ३ ॥

जो ईश्वर की उपासना करता है, वास्तव में वही ईश्वर का उपासक है। वह सहजावस्था में सुख पाता है और उसे कभी दुख-शोक नहीं होता। अभागे मनमुख मन में ईश्वर का स्मरण नहीं करते, अतः बार-बार मरते-जन्मते हैं और आवागमन में पड़े रहते हैं॥१॥ वही व्यक्ति जीते हैं, जो मन में प्रभु को बसा लेते हैं। वे प्रभु का भजनगान करते हैं और परम सत्य में ही समाहित हो जाते हैं॥१॥ रहाउ॥ जो ईश्वर की उपासना नहीं करते, उनसे ईश्वर दूर ही रहता है। वे देश-दिशांतर भटकते हैं, परन्तु सिर पर धूल ही पड़ती है। ईश्वर इतना कृपालु है कि वह स्वयं ही जीवों को अपनी लगन में लगा लेता है, वह सदा सुख प्रदान करता रहता है और उसे तिल भर कोई लोभ नहीं॥२॥ यदि परमात्मा कृपादृष्टि कर दे तो अभिमान दूर हो जाता है और सच्चे दरबार में यश प्राप्त होता है। भक्तजन ईश्वर को सदैव पास ही देखते हैं और गुरु के शब्द से उनको सब में व्याप्त ईश्वर दिखाई देता है॥३॥ परमात्मा संसार के समस्त जीवों का पोषण करता है, गुरु की कृपा से सदा उसका स्मरण करो। इस तरह सम्मानपूर्वक सच्चे घर में जाओ। नानक फुरमाते हैं कि प्रभु नाम से ही बड़ाई प्राप्त होती है॥४॥३॥

बसंतु महला ३ ॥ अंतरि पूजा मन ते होइ ॥ एको वेखै अउरु न कोइ ॥ दूजै लोकी बहुतु दुखु पाइआ ॥ सतिगुरि मैनो एकु दिखाइआ ॥ १ ॥ मेरा प्रभु मउलिआ सद बसंतु ॥ इहु मनु मउलिआ गाइ गुण गोबिंद ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर पूछहु तुम्ह करहु बीचारु ॥ तां प्रभ साचे लगै पिआरु ॥ आपु छोडि होहि दासत भाइ ॥ तउ जगजीवनु वसै मनि आइ ॥ २ ॥ भगति करे सद वेखै हजूरि ॥ मेरा प्रभु सद रहिआ भरपूरि ॥ इसु भगती का कोई जाणै भेउ ॥ सभु मेरा प्रभु आतम देउ ॥ ३ ॥ आपे सतिगुरु मेलि मिलाए ॥ जगजीवन सिउ आपि चितु लाए ॥ मनु तनु हरिआ सहजि सुभाए ॥ नानक नामि रहे लिव लाए ॥ ४ ॥ ४ ॥

(परमात्मा की) सच्ची पूजा मन से ही होती है और सर्वत्र एक ईश्वर के अलावा अन्य कोई दिखाई नहीं देता। संसार के लोगों ने द्वैतभाव में फँसकर बहुत दुख पाया है, लेकिन सतगुरु ने मुझे परमशक्ति के दर्शन करवा दिए हैं॥१॥ मेरा प्रभु बसंत की तरह पूरे विश्व में सदैव खिला रहता है और यह मन गोविन्द के गुण गाकर खिल गया है॥१॥ रहाउ॥ गुरु से पूछकर तुम चिंतन करोगे तो ही सच्चे प्रभु से प्रेम लगेगा। यदि अहम् छोड़कर विनम्र भावना धारण करोगे तो ईश्वर मन में बस जाएगा॥२॥ जो भक्ति करता है, वह सदैव प्रभु को सन्मुख देखता है। मेरा प्रभु सदा सर्वव्यापक है। इस भक्ति का जो कोई रहस्य जान लेता है, उसे ज्ञान हो जाता है कि सबमें प्रभु ही रमण कर रहा है॥३॥ सतगुरु स्वयं ही संयोग बनाकर मिलाता है और ईश्वर की भक्ति में चित्त लगा देता है। हे नानक! उसका मन तन सहज स्वभाव खिला रहता है और प्रभु नाम में ही लगन लगी रहती है॥४॥४॥

बसंतु महला ३ ॥ भगति वछलु हरि वसै मनि आइ ॥ गुर किरपा ते सहज सुभाइ ॥ भगति करे विचहु आपु खोइ ॥ तद ही साचि मिलावा होइ ॥ १ ॥ भगत सोहहि सदा हरि प्रभ दुआरि ॥ गुर कै हेति साचै प्रेम पिआरि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भगति करे सो जनु निरमलु होइ ॥ गुर सबदी विचहु हउमै खोइ ॥ हरि जीउ आपि वसै मनि आइ ॥ सदा सांति सुखि सहजि समाइ ॥ २ ॥ साचि रते तिन सद बसंत ॥ मनु तनु हरिआ रवि गुण गुविंद ॥ बिनु नावै सूका संसारु ॥ अगनि त्रिसना जलै वारो वार ॥ ३ ॥ सोई करे जि हरि जीउ भावै ॥ सदा सुखु सरीरि भाणै चितु लावै ॥ अपणा प्रभु सेवे सहजि सुभाइ ॥ नानक नामु वसै मनि आइ ॥ ४ ॥ ५ ॥

गुरु की कृपा से सहज स्वभाव ही भक्तवत्सल हरि मन में विद्यमान हो जाता है। यदि मन से अहम् को छोड़कर भक्ति की जाए तो ही भगवान से साक्षात्कार होता है॥१॥ भक्त सदैव प्रभु के द्वार पर शोभा देते हैं और गुरु के अनुराग से प्रभु से प्रेम बना रहता है॥१॥ रहाउ॥ जो व्यक्ति भक्ति करता है, वही निर्मल होता है। जब गुरु के उपदेश से वह मन से अहम्-भावना को निकाल देता है। तब ईश्वर स्वयं ही मन में आ बसता है और स्वाभाविक ही मन में सदा सुख-शान्ति बनी रहती है॥२॥ जो ईश्वर की अर्चना में रत रहते हैं, वे सदा वसंत की तरह खिले रहते हैं, प्रभु की महिमागान कर उनका मन तन आनंदित बना रहता है। हरिनामोपासना बिना पूरा संसार सूखा है और बार-बार तृष्णाग्नि में जलता है॥३॥ (संसार का भी क्या दोष) जैसी परमात्मा की मर्जी होती है, वह वही करता है। यदि उसकी रज़ानुसार नाम में चित्त लगाए तो शरीर सदा सुख पाता है। नानक फुरमाते हैं कि वह सहज-स्वभाव अपने प्रभु की उपासना करता है और नाम उसके मन में बस जाता है॥४॥५॥

बसंतु महला ३ ॥ माइआ मोहु सबदि जलाए ॥ मनु तनु हरिआ सतिगुर भाए ॥ सफलिओु बिरखु हरि कै दुआरि ॥ साची बाणी नाम पिआरि ॥ १ ॥ ए मन हरिआ सहज सुभाइ ॥ सच फलु लागै सतिगुर भाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपे नेड़ै आपे दूरि ॥ गुर कै सबदि वेखै सद हजूरि ॥ छाव घणी फूली बनराइ ॥ गुरमुखि बिगसै सहजि सुभाइ ॥ २ ॥ अनदिनु कीरतनु करहि दिन राति ॥ सतिगुरि गवाई विचहु जूठि भरांति ॥ परपंच वेखि रहिआ विसमादु ॥ गुरमुखि पाईऐ नाम प्रसादु ॥ ३ ॥ आपे करता सभि रस भोग ॥ जो किछु करे सोई परु होग ॥ वडा दाता तिलु न तमाइ ॥ नानक मिलीऐ सबदु कमाइ ॥ ४ ॥ ६ ॥

शब्द-गुरु से माया मोह को जलाया जा सकता है और सतगुरु के प्रेम व रज़ा से मन-तन खिल जाता है। तन रूपी वृक्ष वही सफल है, जो प्रभु के द्वार पर स्थित होता है। वह सच्ची वाणी प्रभु-नाम से ही प्रेम करता है॥१॥ यह मन रूपी वृक्ष सहज स्वभाव हरा-भरा हो गया है और गुरु के प्रेम से इसे नाम रूपी सत्य का फल लगा है॥१॥ रहाउ॥ ईश्वर स्वयं ही हमारे निकट है और स्वयं ही दूर है, पर गुरु के उपदेश से वह सदा सम्मुख ही दिखाई देता है। हरित वनस्पति की छांव बहुत घनी होती है और गुरुमुख सहज स्वभाव खिला रहता है॥२॥ वह दिन-रात परमात्मा का कीर्तिगान करता है और सतगुरु उसके मन से झूठ की भ्रांति निकाल देता है। वह जगत प्रपंच को देखकर विस्मित हो जाता है। नाम की बख्शिश गुरु से ही प्राप्त होती है॥३॥ संसार को बनाने वाला परमेश्वर स्वयं ही सभी रस भोगता है। जो कुछ वह करता है, वह निश्चय होता है। वह बहुत बड़ा दाता है (सदैव संसार को देता रहता है) उसे तिल भर कोई लोभ नहीं। हे नानक! शब्द-गुरु अनुसार आचरण करने से ही उसे मिला जा सकता है॥४॥६॥

बसंतु महला ३ ॥ पूरै भागि सचु कार कमावै ॥ एको चेतै फिरि जोनि न आवै ॥ सफल जनमु इसु जग महि आइआ ॥ साचि नामि सहजि समाइआ ॥ १ ॥ गुरमुखि कार करहु लिव लाइ ॥ हरि नामु सेवहु विचहु आपु गवाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तिसु जन की है साची बाणी ॥ गुर कै सबदि जग माहि समाणी ॥ चहु जुग पसरी साची सोइ ॥ नामि रता जनु परगटु होइ ॥ २ ॥ इकि साचै सबदि रहे लिव लाइ ॥ से जन साचे साचै भाइ ॥ साचु धिआइनि देखि हजूरि ॥ संत जना की पग पंकज धूरि ॥ ३ ॥ एको करता अवरु न कोइ ॥ गुर सबदी मेलावा होइ ॥ जिनि सचु सेविआ तिनि रसु पाइआ ॥ नानक सहजे नामि समाइआ ॥ ४ ॥ ७ ॥

पूर्ण खुशकिस्मत जीव भक्ति एवं धर्म का कार्य करता है, परब्रह्म का स्मरण करता है और पुनः योनि में नहीं आता। इस संसार में उसका जन्म सफल हो जाता है और वह सहज स्वभाव ही ईश्वर के नाम में लीन रहता है॥१॥ गुरु के निर्देशानुसार कार्य करो, परमेश्वर में लवलीन रहो। मन का अभिमान निकाल कर परमेश्वर की बंदगी करो॥१॥ रहाउ॥ जिस भक्त की वाणी शाश्वत होती है, गुरु के उपदेश से पूरे संसार में फैल जाती है। चारों युगों में उसकी कीर्ति फैल जाती है, ईश्वर की भक्ति में तल्लीन ऐसा भक्त सब ओर प्रख्यात हो जाता है॥२॥ कई सच्चे शब्द में लवलीन रहते हैं, ऐसे सत्यशील व्यक्ति परम सत्य प्रभु को अच्छे लगते हैं। वे ईश्वर को आसपास मानते हुए उसके ध्यान में ही निमग्न रहते हैं और संतजनों की चरणरज ही चाहते हैं॥३॥ सम्पूर्ण सृष्टि को बनाने वाला केवल एक परमेश्वर ही है, दूसरा कोई नहीं और गुरु के उपदेश से ही उससे मिलाप होता है। जिसने भी ईश्वर का स्तुतिगान किया है, उसने ही आनंद पाया है। नानक का मत है कि सहज स्वभाव वह नाम में ही समाहित हुआ रहता है॥४॥७॥

बसंतु महला ३ ॥ भगति करहि जन देखि हजूरि ॥ संत जना की पग पंकज धूरि ॥ हरि सेती सद रहहि लिव लाइ ॥ पूरै सतिगुरि दीआ बुझाइ ॥ १ ॥ दासा का दासु विरला कोई होइ ॥ ऊतम पदवी पावै सोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ एको सेवहु अवरु न कोइ ॥ जितु सेविऐ सदा सुखु होइ ॥ ना ओहु मरै न आवै जाइ ॥ तिसु बिनु अवरु सेवी किउ माइ ॥ २ ॥ से जन साचे जिनी साचु पछाणिआ ॥ आपु मारि सहजे नामि समाणिआ ॥ गुरमुखि नामु परापति होइ ॥ मनु निरमलु निरमल सचु सोइ ॥ ३ ॥ जिनि गिआनु कीआ तिसु हरि तू जाणु ॥ साच सबदि प्रभु एकु सिञाणु ॥ हरि रसु चाखै तां सुधि होइ ॥ नानक नामि रते सचु सोइ ॥ ४ ॥ ८ ॥

भक्तगण ईश्वर को साक्षात् मानकर उसकी भक्ति करते हैं और संतजनों की चरण-धूल ही लगाते हैं। वे सदा ईश्वर की लगन में लीन रहते हैं, पूर्ण सद्गुरु ने यह भेद बता दिया है॥१॥ कोई विरला ही दासों का दास होता है और वही उत्तम पदवी प्राप्त करता है॥१॥ रहाउ॥ केवल एक ईश्वर की अर्चना करो, किसी अन्य (देवी-देवता) की न करो। जिसकी वन्दना करने से सदा सुख प्राप्त होता है। वह अनश्वर है, आवागमन से रहित है, हे माता ! उसके अतिरिक्त किसी अन्य की सेवा क्यों की जाए॥२॥ वही व्यक्ति सत्यशील हैं, जिन्होंने परम सत्य को पहचान लिया है। वे अहम्-भावना को मारकर स्वाभाविक ही प्रभु-नाम में तल्लीन रहते हैं। गुरु से ही नाम प्राप्त होता है, जिससे मन निर्मल हो जाता है और वह परम सत्य सबसे निर्मल है॥३॥ जिसने ज्ञान उत्पन्न किया है, उस परमेश्वर को तू जान। सच्चे शब्द द्वारा एक प्रभु को पहचान। नानक का मत है कि हरि नाम रूपी रस चखने से मन शुद्ध हो जाता है और नाम में तल्लीन रहने वाला ही सत्यशील है॥४॥८॥

बसंतु महला ३ ॥ नामि रते कुलां का करहि उधारु ॥ साची बाणी नाम पिआरु ॥ मनमुख भूले काहे आए ॥ नामहु भूले जनमु गवाए ॥ १ ॥ जीवत मरै मरि मरणु सवारै ॥ गुर कै सबदि साचु उर धारै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरमुखि सचु भोजनु पवितु सरीरा ॥ मनु निरमलु सद गुणी गहीरा ॥ जंमै मरै न आवै जाइ ॥ गुर परसादी साचि समाइ ॥ २ ॥ साचा सेवहु साचु पछाणै ॥ गुर कै सबदि हरि दरि नीसाणै ॥ दरि साचै सचु सोभा होइ ॥ निज घरि वासा पावै सोइ ॥ ३ ॥ आपि अभुलु सचा सचु सोइ ॥ होरि सभि भूलहि दूजै पति खोइ ॥ साचा सेवहु साची बाणी ॥ नानक नामे साचि समाणी ॥ ४ ॥ ९ ॥

ईश्वर के नाम में रत भक्तजन अपनी वंशावलि का उद्धार कर देते हैं, उनकी वाणी भी मधुर एवं सत्य होती है और नाम से ही उनका प्रेम लगा रहता है। भूले हुए मनमुख क्योंकर संसार में आए हैं ? ईश्वर के नाम को विस्मृत कर उन्होंने जन्म गंवा दिया है॥१॥ जो जीवन में मोह-माया की ओर से मर जाता है, वह विकारों की ओर से मर कर अपना मरना संवार लेता है, गुरु के उपदेश से वह सत्य को ही हृदय में धारण करता है॥१॥ रहाउ॥ परम सत्य का चिंतन ही गुरमुख का भोजन होता है, जिससे उसका शरीर पवित्र रहता है। उसके निर्मल मन में गुणों का गहरा सागर प्रभु बसा रहता है। वह जन्म-मरण से मुक्त हो जाता है, उसका आवागमन मिट जाता है और गुरु की कृपा से वह सत्य में समाहित हो जाता है॥२॥ परम सत्य को पहचान कर उस शाश्वत प्रभु की आराधना करो। गुरु के उपदेश द्वारा प्रभु द्वार में जाने का रास्ता मिल जाता है। उस सच्चे प्रभु के दरबार में ही शोभा प्राप्त होती है और उसे ही अपने सच्चे घर में निवास प्राप्त

होता है॥३॥ परमात्मा कोई भूल नहीं करता, वही शाश्वत है, शेष संसार के सब लोग भूल कर रहे हैं और द्वैतभाव में अपनी प्रतिष्ठा खो देते हैं। शुद्ध वाणी से ईश्वर का भजन करो, हे नानक! यह वाणी सत्य की स्तुति में ही लीन रहती है॥४॥६॥

बसंतु महला ३ ॥ बिनु करमा सभ भरमि भुलाई ॥ माइआ मोहि बहुतु दुखु पाई ॥ मनमुख अंधे ठउर न पाई ॥ बिसटा का कीड़ा बिसटा माहि समाई ॥ १ ॥ हुकमु मंने सो जनु परवाणु ॥ गुर कै सबदि नामि नीसाणु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साचि रते जिन्हा धुरि लिखि पाइआ ॥ हरि का नामु सदा मनि भाइआ ॥ सतिगुर की बाणी सदा सुखु होइ ॥ जोती जोति मिलाए सोइ ॥ २ ॥ एकु नामु तारे संसारु ॥ गुर परसादी नाम पिआरु ॥ बिनु नामै मुकति किनै न पाई ॥ पूरे गुर ते नामु पलै पाई ॥ ३ ॥ सो बूझै जिसु आपि बुझाए ॥ सतिगुर सेवा नामु द्रिढ़ाए ॥ जिन इकु जाता से जन परवाणु ॥ नानक नामि रते दरि नीसाणु ॥ ४ ॥ १० ॥

परमात्मा की कृपा के बिना सब लोग भ्रमों में भूले हुए हैं और माया मोह में बहुत दुख पाते हैं। अन्धे स्वेच्छाचारी को कहीं ठौर-ठिकाना प्राप्त नहीं होता, इस तरह विष्ठा का कीड़ा विष्ठा में ही मिला रहता है॥१॥ जो हुक्म को मानता है, उसी का जीवन सफल होता है। गुरु के शब्द द्वारा उसे नाम का निशान प्राप्त हो जाता है॥१॥ रहाउ॥ जिनके भाग्य में लिखा होता है, वे ईश्वर में ही लीन रहते हैं और प्रभु का नाम सदा उनके मन को अच्छा लगता है। सतगुरु की वाणी से सदा सुख प्राप्त होता है और वही आत्म-ज्योति को परम-ज्योति से मिलाती है॥२॥ केवल परमात्मा का नाम ही संसार को मुक्ति प्रदान करने वाला है, गुरु की कृपा से नाम से प्रेम होता है। प्रभु-नाम बिना किसी ने मुक्ति प्राप्त नहीं की और पूरे गुरु से ही नाम प्राप्त होता है॥३॥ वही समझता है, जिसे परब्रह्म स्वयं समझाता है। सतगुरु की सेवा से प्रभु का नाम दृढ़ करवाता है। जिसने ईश्वर को जान लिया है, वही व्यक्ति परवान हुआ है, हे नानक! प्रभु नाम में निमग्न जीव उसके द्वार को पाते हैं॥४॥१०॥

बसंतु महला ३ ॥ क्रिपा करे सतिगुरू मिलाए ॥ आपे आपि वसै मनि आए ॥ निहचल मति सदा मन धीर ॥ हरि गुण गावै गुणी गहीर ॥ १ ॥ नामहु भूले मरहि बिखु खाइ ॥ ब्रिथा जनमु फिरि आवहि जाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बहु भेख करहि मनि सांति न होइ ॥ बहु अभिमानि अपणी पति खोइ ॥ से वडभागी जिन सबदु पछाणिआ ॥ बाहरि जादा घर महि आणिआ ॥ २ ॥ घर महि वसतु अगम अपारा ॥ गुरमति खोजहि सबदि बीचारा ॥ नामु नव निधि पाई घर ही माहि ॥ सदा रंगि राते सचि समाहि ॥ ३ ॥ आपि करे किछु करणु न जाइ ॥ आपे भावै लए मिलाइ ॥ तिस ते नेड़ै नाही को दूरि ॥ नानक नामि रहिआ भरपूरि ॥ ४ ॥ ११ ॥

जिस पर ईश्वर कृपा करता है, उसे सतगुरु से मिला देता है और स्वतः ही मन में आ बसता है। तदुपरांत जीव की मति निश्चल हो जाती है और उसका मन सदैव शांत रहता है। फिर वह गुणी गम्भीर प्रभु के गुण गाता रहता है॥१॥ ईश्वर के नाम को भुलाने वाले पापों का जहर खा कर मर जाते हैं और अपना जन्म व्यर्थ गंवाकर पुनः आते जाते हैं॥१॥ रहाउ॥ बहुत वेष धारण करने से मन को शान्ति प्राप्त नहीं होती और बहुत अभिमान करने वाला अपनी प्रतिष्ठा खो देता है। वही भाग्यशाली है, जिसने शब्द के रहस्य को पहचान लिया है और उसका बाहर जा रहा मन सच्चे घर में आ जाता है॥२॥ हृदय घर में ही अगम्य अपार नाम रूपी वस्तु विद्यमान है और

गुरु उपदेशानुसार शब्द के चिंतन से इसे खोजा जा सकता है। जिसे हृदय घर में नाम रूप नवनिधि प्राप्त हो जाती है, वह सदा नाम रंग में लीन रहकर सत्य में समा जाता है॥ ३॥ मनुष्य से तो कुछ नहीं हो सकता, ईश्वर ही सब करता है। वह स्वेच्छा से स्वयं ही मिला लेता है। हे नानक ! कोई भी जीव उससे निकट व दूर नहीं है, क्योंकि परमात्मा सृष्टि के कण-कण में व्याप्त है॥ ४॥ ११॥

बसंतु महला ३ ॥ गुर सबदी हरि चेति सुभाइ ॥ राम नाम रसि रहै अघाइ ॥ कोट कोटंतर के पाप जलि जाहि ॥ जीवत मरहि हरि नामि समाहि ॥ १ ॥ हरि की दाति हरि जीउ जाणै ॥ गुर कै सबदि इहु मनु मउलिआ हरि गुणदाता नामु वखाणै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भगवै वेसि भ्रमि मुकति न होइ ॥ बहु संजमि सांति न पावै कोइ ॥ गुरमति नामु परापति होइ ॥ वडभागी हरि पावै सोइ ॥ २ ॥ कलि महि राम नामि वडिआई ॥ गुर पूरे ते पाइआ जाई ॥ नामि रते सदा सुखु पाई ॥ बिनु नामै हउमै जलि जाई ॥ ३ ॥ वडभागी हरि नामु बीचारा ॥ छूटै राम नामि दुखु सारा ॥ हिरदै वसिआ सु बाहरि पासारा ॥ नानक जाणै सभु उपावणहारा ॥ ४ ॥ १२ ॥

जो गुरु के उपदेश द्वारा स्वाभाविक ही निरंकार का चिंतन करता है, राम नाम के भजन में ही तृप्त रहता है। उसके करोड़ों ही पाप जल जाते हैं और सांसारिक कार्य करता हुआ मोह-माया से निर्लिप्त रहकर वह प्रभु के नाम में ही समा जाता है॥ १॥ अपनी बख्शिशों को ईश्वर स्वयं ही जानता है। गुरु के उपदेश द्वारा यह मन खिलकर गुणों के दाता प्रभु के नाम की ही चर्चा करता है॥ १॥ रहाउ॥ भगवा वेश धारण कर भ्रमण करने से भी मुक्ति नहीं होती और बहुत संयम करने से भी किसी को शान्ति प्राप्त नहीं होती। गुरु की शिक्षा से ही नाम प्राप्त होता है और भाग्यशाली ही भगवान को पाता है॥ २॥ कलियुग में राम नाम की ही कीर्ति है, जिसे पूरे गुरु से ही पाया जा सकता है। प्रभु-नाम में लीन रहने से सदा सुख प्राप्त होता है, परन्तु नाम विहीन व्यक्ति अहम् में ही जल जाता है॥ ३॥ कोई खुशकिस्मत ही परमात्मा के नाम का चिंतन करता है, राम नाम द्वारा वह तमाम दुखों से मुक्त हो जाता है। जो हृदय में बस रहा है, बाहर भी उसका ही प्रसार है, हे नानक ! संसार को उत्पन्न करने वाला प्रभु सब (कौतुक) जानता है॥ ४॥ १२॥

बसंतु महला ३ इक तुके ॥ तेरा कीआ किरम जंतु ॥ देहि त जापी आदि मंतु ॥ १ ॥ गुण आखि वीचारी मेरी माइ ॥ हरि जपि हरि कै लगउ पाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर प्रसादि लागे नाम सुआदि ॥ काहे जनमु गवावहु वैरि वादि ॥ २ ॥ गुरि किरपा कीन्ही चूका अभिमानु ॥ सहज भाइ पाइआ हरि नामु ॥ ३ ॥ ऊतमु ऊचा सबद कामु ॥ नानकु वखाणै साचु नामु ॥ ४ ॥ १ ॥ १३ ॥

हे परमपिता ! मैं तेरा उत्पन्न किया हुआ छोटा-सा जीव हूँ, यदि तू ओअंकार मूल मंत्र प्रदान करे तो इसका जाप करता रहूँ॥ १॥ हे मेरी माँ ! यही चाहता हूँ कि प्रभु के गुण गा कर उसका चिंतन करता रहूँ और परमात्मा को जपकर उसके चरणों में लगा रहूँ॥ १॥ रहाउ॥ गुरु की कृपा से भक्तों को प्रभु नाम के भजन में स्वाद लगता है, वैर-विरोध एवं झगड़ों में अपना जीवन क्यों गंवा रहे हो॥ २॥ जिस पर गुरु ने कृपा की है, उसके मन का अभिमान दूर हो गया, उसने सहज-स्वभाव प्रभु-नाम को पा लिया है॥ ३॥ शब्द का मनन सबसे ऊँचा एवं उत्तम कार्य है, अतः नानक शाश्वत प्रभु नाम का ही बखान कर रहा है॥ ४॥ १॥ १३॥

बसंतु महला ३ ॥ बनसपति मउली चड़िआ बसंतु ॥ इहु मनु मउलिआ सतिगुरू संगि ॥ १ ॥ तुम्ह साचु धिआवहु मुगध मना ॥ तां सुखु पावहु मेरे मना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इतु मनि मउलिऐ भइआ अनंदु ॥ अंम्रित फलु पाइआ नामु गोबिंद ॥ २ ॥ एको एकु सभु आखि वखाणै ॥ हुकमु बूझै तां एको जाणै ॥ ३ ॥ कहत नानकु हउमै कहै न कोइ ॥ आखणु वेखणु सभु साहिब ते होइ ॥ ४ ॥ २ ॥ १४॥

वसंत ऋतु के आगमन से समस्त वनस्पति खिल गई है, यह मन भी सतगुरु की संगत में खिल गया है॥१॥ हे मेरे मूर्ख मन! तुम सत्यस्वरूप परमेश्वर का ध्यान करो तो ही सुख प्राप्त होगा॥१॥ रहाउ॥ यह मन खिल गया है, इसे बड़ा आनंद मिला है, क्योंकि इसने गोविन्द का नाम रूपी अमृत फल पा लिया है॥२॥ सब लोग एक की ही बात कर रहे हैं, जो उसके हुक्म को समझ लेता है, वह एक परमेश्वर को जान लेता है॥३॥ नानक कहते हैं कि फिर वह कोई अहम् भरी बात नहीं करता (उसे ज्ञान हो जाता है कि) कहना और देखना सब मालिक की मर्जी से ही होता है॥४॥२॥१४॥

बसंतु महला ३ ॥ सभि जुग तेरे कीते होए ॥ सतिगुरु भेटै मति बुधि होए ॥ १ ॥ हरि जीउ आपे लैहु मिलाइ ॥ गुर कै सबदि सच नामि समाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनि बसंतु हरे सभि लोइ ॥ फलहि फुलीअहि राम नामि सुखु होइ ॥ २ ॥ सदा बसंतु गुर सबदु वीचारे ॥ राम नामु राखै उर धारे ॥ ३ ॥ मनि बसंतु तनु मनु हरिआ होइ ॥ नानक इहु तनु बिरखु राम नामु फलु पाए सोइ ॥ ४ ॥ ३ ॥ १५ ॥

हे संसारपालक! सभी युग तेरे उत्पन्न किए हुए हैं, जिसकी सच्चे गुरु से मुलाकात हो जाती है, उसकी बुद्धि भक्तिमय हो जाती है॥१॥ परमेश्वर स्वयं ही मिला लेता है, गुरु के उपदेश से जीव शाश्वत प्रभु नाम में लीन हो जाता है॥१॥ रहाउ॥ वसंत ऋतु के आने से सभी लोगों के मन खिल उठते हैं और राम नाम में फल फूलकर सुख प्राप्त होता है॥२॥ जो गुरु शब्द का चिंतन करता है, वह सदा वसंत की तरह खिला रहता है और राम नाम ही हृदय में धारण करता है॥३॥ जिनके मन में वसंत का मौसम है, उनका तन मन खिल उठता है। हे नानक! यह तन वृक्ष है और राम नाम का फल पाता है॥४॥३॥१५॥

बसंतु महला ३ ॥ तिन्ह बसंतु जो हरि गुण गाइ ॥ पूरै भागि हरि भगति कराइ ॥ १ ॥ इसु मन कउ बसंत की लगै न सोइ ॥ इहु मनु जलिआ दूजै दोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इहु मनु धंधै बांधा करम कमाइ ॥ माइआ मूठा सदा बिललाइ ॥ २ ॥ इहु मनु छूटै जां सतिगुरु भेटै ॥ जमकाल की फिरि आवै न फेटै ॥ ३ ॥ इहु मनु छूटा गुरि लीआ छडाइ ॥ नानक माइआ मोहु सबदि जलाइ ॥ ४ ॥ ४ ॥ १६ ॥

जो ईश्वर की महिमागान करते हैं, उनके लिए आनंद ही आनंद बना रहता है, पूर्ण भाग्य से ही ईश्वर भक्ति करवाता है॥१॥ जब इस मन को आत्मिक आनंद का अनुभव नहीं होता तो यह मन द्वैतभाव में जलता है॥१॥ रहाउ॥ यह मन जगत के बन्धनों में फँसकर कर्म करता है और माया मोह में सदा रोता चिल्लाता है॥२॥ यदि सतगुरु से साक्षात्कार हो जाए तो यह मन बन्धनों से मुक्त हो जाता है और फिर यमकाल के कष्ट नहीं भोगता॥३॥ हे नानक! शब्द द्वारा माया मोह को जलाकर यह मन मुक्त हो जाता है और दरअसल गुरु ही इसे छुटकारा दिलवाता है॥४॥४॥१६॥

बसंतु महला ३ ॥ बसंतु चड़िआ फूली बनराइ ॥ एहि जीअ जंत फूलहि हरि चितु लाइ ॥ १ ॥ इन बिधि इहु मनु हरिआ होइ ॥ हरि हरि नामु जपै दिनु राती गुरमुखि हउमै कढै धोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतिगुर बाणी सबदु सुणाए ॥ इहु जगु हरिआ सतिगुर भाए ॥ २ ॥ फल फूल लागे जां आपे लाए ॥ मूलि लगै तां सतिगुरु पाए ॥ ३ ॥ आपि बसंतु जगतु सभु वाड़ी ॥ नानक पूरै भागि भगति निराली ॥ ४ ॥ ५ ॥ १७ ॥

जिस प्रकार वसंत ऋतु का आगमन होने से प्रकृति खिल जाती है, वैसे ही परमात्मा में मन लगाने से जीव-जन्तु खिल जाते हैं॥१॥ यदि दिन-रात परमात्मा का जाप किया जाए, गुरु अहम् की मैल को साफ कर दे तो इस तरीके से यह मन हरा-भरा हो जाता है॥१॥ रहाउ॥ सतगुरु ने वाणी से शब्द सुनाया है, सतगुरु के निर्देशानुसार यह जगत खिल उठा है॥२॥ जब स्वयं लगाता है तो ही सृष्टि रूपी पेड़ को फल फूल लगते हैं और मूल प्रभु से प्रेम करने से ही सतगुरु की प्राप्ति होती है॥३॥ समूचा जगत बगीचा है और वसंत रूप में वही विद्यमान है। नानक का मत है कि पूर्ण भाग्यशाली को ही निराली भक्ति प्राप्त होती है॥४॥५॥१७॥

बसंतु हिंडोल महला ३ घरु २ ੧ਓ सतिगुर प्रसादि ॥

गुर की बाणी विटहु वारिआ भाई गुर सबद विटहु बलि जाई ॥ गुरु सालाही सद अपणा भाई गुर चरणी चितु लाई ॥ १ ॥ मेरे मन राम नामि चितु लाइ ॥ मनु तनु तेरा हरिआ होवै इकु हरि नामा फलु पाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरि राखे से उबरे भाई हरि रसु अंम्रितु पीआइ ॥ विचहु हउमै दुखु उठि गइआ भाई सुखु वुठा मनि आइ ॥ २ ॥ धुरि आपे जिन्हा नो बखसिओनु भाई सबदे लइअनु मिलाइ ॥ धूड़ि तिन्हा की अघुलीऐ भाई सतसंगति मेलि मिलाइ ॥ ३ ॥ आपि कराए करे आपि भाई जिनि हरिआ कीआ सभु कोइ ॥ नानक मनि तनि सुखु सद वसै भाई सबदि मिलावा होइ ॥ ४ ॥ १ ॥ १८ ॥ १२ ॥ १८ ॥ ३० ॥

हे भाई! मैं गुरु की वाणी पर कुर्बान हूँ, गुरु के उपदेश पर हरदम बलिहारी जाता हूँ। मैं सदैव अपने गुरु की स्तुति करता हूँ और गुरु के चरणों में ही दिल लगाता हूँ॥१॥ हे मेरे मन! राम नाम में ही दिल लगाना, तेरा मन तन हरा भरा हो जाएगा और हरिनाम रूपी फल प्राप्त हो जाएगा॥१॥ रहाउ॥ हे भाई! जिनकी गुरु ने रक्षा की है, वे बच गए हैं और उन्होंने हरिनाम रस रूपी अमृत का ही पान किया है। उनके अन्तर्मन में से अहम् का दुख निवृत्त हो गया है और मन में सुख ही सुख बस गया है॥२॥ हे भाई! जिन पर प्रारम्भ से ईश्वर ने बख्शिश कर दी है, उन्हें शब्द द्वारा मिला लिया है। उनकी चरणरज से बन्धनों से छुटकारा हो जाता है और संतों की संगत में ईश्वर से मिलाप हो जाता है॥३॥ जिसने बनाकर सृष्टि को प्रफुल्लित किया है, करवाता भी प्रभु स्वयं ही है और स्वयं ही करता है। नानक का कथन है कि हे भाई! शब्द-गुरु द्वारा जिसका परब्रह्म से मिलाप हो जाता है, उसके मन तन में सर्वदा सुख अवस्थित रहता है॥४॥१॥१८॥१२॥१८॥३०॥

रागु बसंतु महला ४ घरु १ इक तुके ੧ਓ सतिगुर प्रसादि ॥

जिउ पसरी सूरज किरणि जोति ॥ तिउ घटि घटि रमईआ ओति पोति ॥ १ ॥ एको हरि रविआ स्रब थाइ ॥ गुर सबदी मिलीऐ मेरी माइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ घटि घटि अंतरि एको हरि सोइ ॥

गुरि मिलिऐ इकु प्रगटु होइ ॥ २ ॥ एको एकु रहिआ भरपूरि ॥ साकत नर लोभी जाणहि दूरि ॥ ३ ॥ एको एकु वरतै हरि लोइ ॥ नानक हरि एको करे सु होइ ॥ ४ ॥ १ ॥

ज्यों सूर्य की किरणों का उजाला सब जगह फैला हुआ है, त्यों परमात्मा प्रत्येक शरीर में ओत-प्रोत है॥१॥ एकमात्र परमात्मा हर जगह पर विद्यमान है, हे मेरी माँ! गुरु के उपदेश से ही उससे मिलाप होता है॥१॥ रहाउ॥ घट घट में एक परमात्मा ही व्याप्त है और गुरु के साक्षात्कार से वह प्रगट हो जाता है॥२॥ विश्व भर में एक प्रभु ही स्थित है, परन्तु प्रभु से विमुख लोभी व्यक्ति उसे दूर समझते हैं॥३॥ एक ईश्वर ही संसार में कार्यशील है। नानक का मत है कि अद्वितीय परमेश्वर जो करता है, वह निश्चय होता है॥४॥१॥

बसंतु महला ४ ॥ रैणि दिनसु दुइ सदे पए ॥ मन हरि सिमरहु अंति सदा रखि लए ॥ १ ॥ हरि हरि चेति सदा मन मेरे ॥ सभु आलसु दूख भंजि प्रभु पाइआ गुरमति गावहु गुण प्रभ केरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनमुख फिरि फिरि हउमै मुए ॥ कालि दैति संघारे जम पुरि गए ॥ २ ॥ गुरमुखि हरि हरि हरि लिव लागे ॥ जनम मरण दोऊ दुख भागे ॥ ३ ॥ भगत जना कउ हरि किरपा धारी ॥ गुरु नानकु तुठा मिलिआ बनवारी ॥ ४ ॥ २ ॥

रात और दिन दोनों ही मौत का बुलावा दे रहे हैं, हे मन! परमात्मा का चिन्तन कर लो, क्योंकि अंत में यही बचाता है॥१॥ हे मेरे मन! सर्वदा परमात्मा का मनन करो, गुरु के सदुपदेश द्वारा प्रभु का स्तुतिगान करो, सब आलस्य एवं दुख दर्द दूर होकर प्रभु प्राप्त हो जाएगा॥१॥ रहाउ॥ मनमुख जीव पुनः पुनः अहंकार की वजह से मरते हैं, जब काल रूपी दैत्य संहार करता है तो वे यमपुरी पहुँच जाते हैं॥२॥ गुरुमुख की परमात्मा में ही लगन लगी रहती है और उसके जन्म-मरण के दोनों ही दुख दूर हो जाते हैं॥३॥ अपने भक्तजनों पर परमात्मा ने कृपा-दृष्टि की है, गुरु नानक की प्रसन्नता से भगवान मिल गया है॥४॥२॥

बसंतु हिंडोल महला ४ घरु २ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

राम नामु रतन कोठड़ी गड़ मंदरि एक लुकानी ॥ सतिगुरु मिलै त खोजीऐ मिलि जोती जोति समानी ॥ १ ॥ माधो साधू जन देहु मिलाइ ॥ देखत दरसु पाप सभि नासहि पवित्र परम पदु पाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पंच चोर मिलि लागे नगरीआ राम नाम धनु हिरिआ ॥ गुरमति खोज परे तब पकरे धनु साबतु रासि उबरिआ ॥ २ ॥ पाखंड भरम उपाव करि थाके रिद अंतरि माइआ माइआ ॥ साधू पुरखु पुरखपति पाइआ अगिआन अंधेरु गवाइआ ॥ ३ ॥ जगंनाथ जगदीस गुसाई करि किरपा साधु मिलावै ॥ नानक सांति होवै मन अंतरि नित हिरदै हरि गुण गावै ॥ ४ ॥ १ ॥ ३ ॥

राम नाम रूपी अमूल्य रत्न शरीर रूपी किले के मन्दिर में गुप्त रूप से विद्यमान है, अगर सच्चे गुरु से भेंट हो जाए तो ही इसकी खोज होती है, तदन्तर आत्म-ज्योति परम-ज्योति में विलीन हो जाती है॥१॥ हे प्रभु! साधुजनों से हमें मिला दो, क्योंकि उनके दर्शनों से सब पाप नाश हो जाते हैं और पवित्र परमपद प्राप्त हो जाता है॥१॥ रहाउ॥ कामादिक पाँच चोर शरीर रूपी नगरी में मिलकर लगे रहते हैं और वे राम नाम रूपी धन को चुराते हैं। जब गुरु की शिक्षा द्वारा छानबीन की तो इन्हें पकड़ लिया और वे राम नाम रूपी धन की सारी राशि बचा ली॥२॥ जीव धर्म-कर्म का आडम्बर एवं भ्रमों का उपाय करके थक जाते हैं परन्तु उनके हृदय में माया का प्रभाव बना रहता

है। जब महापुरुष साधु की संगत प्राप्त होती है तो अज्ञान का अंधेरा समाप्त हो जाता है॥३॥ जब जगन्नाथ जगदीश्वर कृपा करके साधु पुरुष से मिला देता है तो नानक का मत है कि मन को शान्ति प्राप्त हो जाती है और वह नित्य ही हृदय में प्रभु के गुण गाता रहता है॥४॥१॥३॥

बसंतु महला ४ हिंडोल ॥ तुम्ह वड पुरख वड अगम गुसाई हम कीरि किरम तुमनछे ॥ हरि दीन दइआल करहु प्रभ किरपा गुर सतिगुर चरण हम बनछे ॥ १ ॥ गोबिंद जीउ सतसंगति मेलि करि क्रिपछे ॥ जनम जनम के किलविख मलु भरिआ मिलि संगति करि प्रभ हनछे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तुम्हरा जनु जाति अविजाता हरि जपिओ पतित पवीछे ॥ हरि कीओ सगल भवन ते ऊपरि हरि सोभा हरि प्रभ दिनछे ॥ २ ॥ जाति अजाति कोई प्रभ धिआवै सभि पूरे मानस तिनछे ॥ से धंनि वडे वड पूरे हरि जन जिन्ह हरि धारिओ हरि उरछे ॥ ३ ॥ हम ढींढे ढीम बहुतु अति भारी हरि धारि क्रिपा प्रभ मिलछे ॥ जन नानक गुरु पाइआ हरि तूठे हम कीए पतित पवीछे ॥ ४ ॥ २ ॥ ४ ॥

हे सृष्टि के स्वामी! तू बहुत बड़ा है, सर्वशक्तिमान एवं अगम्य है और हम तेरे तुच्छ कीट मात्र हैं। हे दीनदयाल! कृपा करो, हम गुरु के चरण ही चाहते हैं॥१॥ हे गोविन्द! कृपा-दृष्टि करके सत्संगत से मिला दो; मन में जन्म-जन्मांतर की पापों की मैल भरी हुई है, अतः अच्छी संगत में मिलाकर नेक बना दो॥१॥ रहाउ॥ हे प्रभु! ऊँची जाति अथवा छोटी जाति से संबंधित जिस व्यक्ति ने भी तुम्हारा जाप किया है, वह विकारों से छूटकर पवित्र हो गया है। प्रभु ने समूचे लोकों में उसे सर्वोपरि कर दिया है और वह सर्वत्र शोभा प्रदान करता है॥२॥ उच्च अथवा निम्न जाति वाला कोई भी पुरुष प्रभु का ध्यान करे तो उसकी सभी मनोकामनाएँ पूरी हो जाती हैं। जिन्होंने परमात्मा को अपने हृदय में धारण कर लिया है, वही खुशनसीब, धन्य और महान् हैं॥३॥ हे प्रभु! हम बहुत नीच, मूर्ख एवं कठोर दिल हैं, कृपा करके मिल जाओ। हे नानक! जब गुरु को पाया तो प्रभु प्रसन्न हो गया और हम पतित जीवों को उसने पावन कर दिया॥४॥२॥४॥

बसंतु हिंडोल महला ४ ॥ मेरा इकु खिनु मनूआ रहि न सकै नित हरि हरि नाम रसि गीधे ॥ जिउ बारिकु रसकि परिओ थनि माता थनि काढे बिलल बिलीधे ॥ १ ॥ गोबिंद जीउ मेरे मन तन नाम हरि बीधे ॥ वडै भागि गुरु सतिगुरु पाइआ विचि काइआ नगर हरि सीधे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जन के सास सास है जेते हरि बिरहि प्रभू हरि बीधे ॥ जिउ जल कमल प्रीति अति भारी बिनु जल देखे सुकलीधे ॥ २ ॥ जन जपिओ नामु निरंजनु नरहरि उपदेसि गुरू हरि प्रीधे ॥ जनम जनम की हउमै मलु निकसी हरि अंम्रिति हरि जलि नीधे ॥ ३ ॥ हमरे करम न बिचरहु ठाकुर तुम्ह पैज रखहु अपनीधे ॥ हरि भावै सुणि बिनउ बेनती जन नानक सरणि पवीधे ॥ ४ ॥ ३ ॥ ५ ॥

मेरा मन एक पल भी रह नहीं सकता और यह तो नित्य हरिनाम के भजन रस में ही मस्त रहता है। ज्यों छोटा-सा बच्चा माता के स्तनों का दुग्धपान करने में लीन रहता है और स्तनों से निकालने पर रोने चिल्लाने लगता है॥१॥ हे गोविन्द! मेरा मन तन भी इसी तरह नाम रस में बिंध गया है। अहोभाग्य से गुरु को पाया तो शरीर रूपी नगर में प्रभु की प्राप्ति हो गई॥१॥ रहाउ॥ दास की जितनी भी जीवन साँसें हैं, प्रभु प्रेम के विरह में बिंध चुकी हैं। ज्यों कमल का जल से अत्यंत गहरा प्रेम होता है और जल को देखे बिना कुम्हला जाता है॥२॥ भक्तों ने पावन प्रभु-नाम का ही जाप किया है, गुरु के उपदेश से उनको प्रभु साक्षात् दृष्टिगत हो गया है। जब हरि नाम रूपी अमृत जल प्राप्त हुआ तो उनकी जन्म-जन्मांतर की अहम् की मैल

निकल गई॥३॥ हे ठाकुर! हमारे कर्मों का ख्याल मत करो, अपने भक्त की तुम लाज रखो। नानक विनयपूर्वक कहते हैं कि हे प्रभु! जैसे तेरी मर्जी हो हमारी विनती सुनो, हम तेरी शरण में पड़े हुए हैं॥४॥३॥५॥

बसंतु हिंडोल महला ४ ॥ मनु खिनु खिनु भरमि भरमि बहु धावै तिलु घरि नही वासा पाईऐ ॥ गुरि अंकसु सबदु दारू सिरि धारिओ घरि मंदरि आणि वसाईऐ ॥ १ ॥ गोबिंद जीउ सतसंगति मेलि हरि धिआईऐ ॥ हउमै रोगु गइआ सुखु पाइआ हरि सहजि समाधि लगाईऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ घरि रतन लाल बहु माणक लादे मनु भ्रमिआ लहि न सकाईऐ ॥ जिउ ओडा कूपु गुहज खिन काढै तिउ सतिगुरि वसतु लहाईऐ ॥ २ ॥ जिन ऐसा सतिगुरु साधु न पाइआ ते ध्रिगु ध्रिगु नर जीवाईऐ ॥ जनमु पदारथु पुंनि फलु पाइआ कउडी बदलै जाईऐ ॥ ३ ॥ मधुसूदन हरि धारि प्रभ किरपा करि किरपा गुरू मिलाईऐ ॥ जन नानक निरबाण पदु पाइआ मिलि साधू हरि गुण गाईऐ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ६ ॥

मन पल-पल भ्रमों में बहुत दौड़ता है और तिल मात्र भी अपने घर में नहीं रहता। जब गुरु शब्द रूपी दवा से सिर पर अंकुश लगाता है तो यह अपने घर आकर स्थित हो जाता है॥१॥ हे गोविन्द! सत्संगति से मिला दो ताकि तेरा भजन करते रहें। जब सहज स्वभाव प्रभु में ध्यान लगाया जाता है तो अहम् का रोग दूर होकर सुख प्राप्त हो जाता है॥१॥ रहाउ॥ हृदय-घर में बहुत सारे रत्न, मोती एवं माणिक्य भरे हुए हैं परन्तु मन भटकन में पड़कर इसे प्राप्त नहीं कर पाता। ज्यों भूमि में से पानी तलाश करने वाला तत्क्षण भूमि से कुआँ निकाल लेता है, त्यों सतगुरु नाम रूपी वस्तु पा लेता है॥२॥ जिसने ऐसा सतगुरु साधुजन नहीं पाया, उस व्यक्ति का जीना धिक्कार योग्य है। यह मनुष्य जन्म उसे पुण्य फल के रूप में प्राप्त होता है, परन्तु नाम बिना कौड़ियों के दाम जाता है॥३॥ हे प्रभु! कृपा धारण करो; कृपा करके गुरु से मिला दो। नानक का मत है कि साधु पुरुष के संग भगवान का गुणगान किया जाए तो निर्वाण पद प्राप्त हो जाता है॥४॥४॥६॥

बसंतु हिंडोल महला ४ ॥ आवण जाणु भइआ दुखु बिखिआ देह मनमुख सुंञी सुंञु ॥ राम नामु खिनु पलु नही चेतिआ जमि पकरे कालि सलुंञु ॥ १ ॥ गोबिंद जीउ बिखु हउमै ममता मुंञु ॥ सतसंगति गुर की हरि पिआरी मिलि संगति हरि रसु भुंञु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतसंगति साध दइआ करि मेलहु सरणागति साधू पंञु ॥ हम डुबदे पाथर काढि लेहु प्रभ तुम्ह दीन दइआल दुख भंञु ॥ २ ॥ हरि उसतति धारहु रिद अंतरि सुआमी सतसंगति मिलि बुधि लंञु ॥ हरि नामै हम प्रीति लगानी हम हरि विटहु घुमि वंञु ॥ ३ ॥ जन के पूरि मनोरथ हरि प्रभ हरि नामु देवहु हरि लंञु ॥ जन नानक मनि तनि अनदु भइआ है गुरि मंत्रु दीओ हरि भंञु ॥ ४ ॥ ५ ॥ ७ ॥ १२ ॥ १८ ॥ ७ ॥ ३७ ॥

स्वेच्छाचारी मनुष्य विषय-विकारों में दुखी रहता है, इस तरह नामविहीन शरीर सूना ही रहता है, अतः उसे जन्म-मरण का बन्धन बना रहता है। वह पल भर भी राम नाम का चिन्तन नहीं करता, परिणामस्वरूप काल उसे पकड़कर ले जाता है॥१॥ हे गोविन्द! अहंकार रूपी जहर एवं ममत्व को समाप्त कर दो। प्रभु को गुरु की सत्संगति ही प्यारी लगती है, संगत में शामिल होकर हरिनाम रस का आनंद पाओ॥१॥ रहाउ॥ हे प्रभु! दया करके साधुओं की सत्संगति में मिला दो, ताकि हम साधुओं की शरण में पड़े रहें। विकारों में डूब रहे हम जैसे पत्थरों को हे प्रभु! निकाल लो, तुम दीनदयालु एवं दुख नाशक हो॥२॥ हे स्वामी! हृदय में अपनी स्तुति बसा दो,

ताकि सत्संगत में मिलकर बुद्धि उज्ज्वल हो जाए। हमारा हरि-नाम से ही प्रेम लगा हुआ है और हम प्रभु पर कुर्बान जाते हैं॥ ३॥ हे प्रभु ! दास के सभी मनोरथ पूरे कर दो और नाम ही प्रदान करो। नानक का कथन है कि गुरु ने हरिनाम मंत्र प्रदान किया तो मन तन में आनंद उत्पन्न हो गया॥ ४॥ ५॥ ७॥ १२॥ १८॥ ७॥ ३७॥

बसंतु महला ५ घरु १ दुतुके १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

गुरु सेवउ करि नमसकार ॥ आजु हमारै मंगलचार ॥ आजु हमारै महा अनंद ॥ चिंत लथी भेटे गोबिंद ॥ १ ॥ आजु हमारै ग्रिहि बसंत ॥ गुन गाए प्रभ तुम्ह बेअंत ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आजु हमारै बने फाग ॥ प्रभ संगी मिलि खेलन लाग ॥ होली कीनी संत सेव ॥ रंगु लागा अति लाल देव ॥ २ ॥ मनु तनु मउलिओ अति अनूप ॥ सूकै नाही छाव धूप ॥ सगली रूती हरिआ होइ ॥ सद बसंत गुर मिले देव ॥ ३ ॥ बिरखु जमिओ है पारजात ॥ फूल लगे फल रतन भांति ॥ त्रिपति अघाने हरि गुणह गाइ ॥ जन नानक हरि हरि हरि धिआइ ॥ ४ ॥ १ ॥

मैं अभिवन्दन करके गुरु की आराधना करता हूँ। आज हमारे यहां खुशियों का त्यौहार मनाया जा रहा है, आज हमारे यहाँ आनंद ही आनंद छा गया है। दरअसल मुझे ईश्वर मिल गया है, जिससे सारी चिंता निवृत्त हो गई है॥१॥ आज हमारे घर में वसंत का मौसम बन गया है, हे प्रभु ! तुम बेअन्त हो, हमने तेरे ही गुण गाए हैं॥१॥ रहाउ॥ आज हमारे यहाँ होली का त्यौहार बना हुआ है और प्रभु-भक्तों के संग मिलकर होली खेलने लग गए हैं। संत पुरुषों की सेवा ही होली रूप में मनाई है और उनके प्रेम का अति गहरा रंग लग गया है॥२॥ मन तन अत्यंत अनुपम बनकर खिला है, अब चाहे खुशी-गम रूपी धूप-छाँव हो तो भी मन नहीं मुरझाता। सब ऋतुएँ हरित हो गई हैं, गुरुदेव से मिलकर सदा के लिए आनंद हो गया है॥३॥ इच्छाओं की पूर्ति करने वाला पारिजात वृक्ष मन में पैदा हो गया है, जिस पर रत्नों की मानिंद भिन्न-भिन्न फल-फूल लगे हैं। भगवान की महिमागान करने से मन तृप्त एवं संतुष्ट हो जाता है, अतः नानक हरदम प्रभु का भजन करता रहता है॥४॥१॥

बसंतु महला ५ ॥ हटवाणी धन माल हाटु कीतु ॥ जूआरी जूए माहि चीतु ॥ अमली जीवै अमलु खाइ ॥ तिउ हरि जनु जीवै हरि धिआइ ॥ १ ॥ अपनै रंगि सभु को रचै ॥ जितु प्रभि लाइआ तितु तितु लगै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मेघ समै मोर निरतिकार ॥ चंद देखि बिगसहि कउलार ॥ माता बारिक देखि अनंद ॥ तिउ हरि जन जीवहि जपि गोबिंद ॥ २ ॥ सिंघ रुचै सद भोजनु मास ॥ रणु देखि सूरे चित उलास ॥ किरपन कउ अति धन पिआरु ॥ हरि जन कउ हरि हरि आधारु ॥ ३ ॥ सरब रंग इक रंग माहि ॥ सरब सुखा सुख हरि कै नाइ ॥ तिसहि परापति इहु निधानु ॥ नानक गुरु जिसु करे दानु ॥ ४ ॥ २ ॥

ज्यों दुकानदार (शाक-सब्जी, खाने-पीने इत्यादि) भिन्न-भिन्न चीजों की दुकान करता है, जुआरी का मन जुए में लगा रहता है, नशेड़ी नशे का सेवन करके जीता है, त्यों प्रभु-भक्त प्रभु भजन में ही जीता है॥१॥ प्रत्येक व्यक्ति अपनी-अपनी चाह में लीन है, दरअसल जिधर प्रभु ने उनको लगाया है, उधर ही सब लगे हुए हैं॥१॥ रहाउ॥ जैसे मेघों को देखकर मोर खुशी से नाचने लगते हैं, चाँद को देखकर कमलिनी विकसित हो जाती है, माता अपने बच्चे को देखकर

आनंद पाती है, वैसे ही भक्तजन ईश्वर को जपकर जीवन पाते हैं॥२॥ जिस तरह शेर को माँस का भोजन बड़ा पसंद आता है, युद्ध देखकर शूरवीरों के मन में उल्लास पैदा हो जाता है, कंजूस को धन से बहुत प्रेम होता है, उसी तरह हरि-भक्तों को हरि का आधार है॥३॥ एक ईश्वर के रंग में ही तमाम रंग हैं और हरि के नाम में ही सर्व सुखों के सुख हैं। हे नानक! गुरु जिसे प्रदान करता है, उसे ही यह सुखों का भण्डार प्राप्त होता है॥४॥२॥

बसंतु महला ५ ॥ तिसु बसंतु जिसु प्रभु क्रिपालु ॥ तिसु बसंतु जिसु गुरु दइआलु ॥ मंगलु तिस कै जिसु एकु कामु ॥ तिसु सद बसंतु जिसु रिदै नामु ॥ १ ॥ ग्रिहि ता के बसंतु गनी ॥ जा कै कीरतनु हरि धुनी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रीति पारब्रहम मउलि मना ॥ गिआनु कमाईऐ पूछि जनां ॥ सो तपसी जिसु साधसंगु ॥ सद धिआनी जिसु गुरहि रंगु ॥ २ ॥ से निरभउ जिन्ह भउ पइआ ॥ सो सुखीआ जिसु भ्रमु गइआ ॥ सो इकांती जिसु रिदा थाइ ॥ सोई निहचलु साच ठाइ ॥ ३ ॥ एका खोजै एक प्रीति ॥ दरसन परसन हीत चीति ॥ हरि रंग रंगा सहजि माणु ॥ नानक दास तिसु जन कुरबाणु ॥ ४ ॥ ३ ॥

जिस पर प्रभु कृपालु होता है, उसी के लिए वसंत में खुशियाँ ही खुशियाँ हैं। जिस पर गुरु दयालु होता है, उसी के लिए वसंत में खुशियाँ हैं। जिसका एक ही काम प्रभु भजन है, उसी के लिए खुशियों के मंगल हैं, जिसके हृदय में प्रभु नाम अवस्थित है, उसके लिए सदा वसंत का आनंद है॥१॥ उस घर में वसंत का आनंद है, जहाँ ईश्वर का संकीर्तन हो रहा होता है॥१॥ रहाउ॥ परब्रह्म से प्रेम उत्पन्न होने से मन खिल जाता है। भक्तजनों से अनुरोध कर ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। वही तपस्वी है, जो सत्संग करता है। जिसके मन में गुरु से प्रेम है, वही ध्यानी है॥२॥ वास्तव में वही निडर है, जिसे ईश्वर का भय प्राप्त है। वही सुखी है, जिसका भ्रम निवृत्त हो गया है। वही एकांती है, जिसने हृदय में स्थान बना लिया है। दरअसल वही निश्चल एवं शाश्वत ठिकाना है॥३॥ एक ईश्वर की प्रीति में रत होकर वह उसी को खोजता है और उसके मन में प्रभु दर्शनों की चाह होती है। वह सब रंगों में सहज स्वाभाविक प्रभु रंग का आनंद पाता है, दास नानक उस जिज्ञासु पर कुर्बान जाता है॥४॥३॥

बसंतु महला ५ ॥ जीअ प्राण तुम्ह पिंड दीन्ह ॥ मुगध सुंदर धारि जोति कीन्ह ॥ सभि जाचिक प्रभ तुम्ह दइआल ॥ नामु जपत होवत निहाल ॥ १ ॥ मेरे प्रीतम कारण करण जोग ॥ हउ पावउ तुम ते सगल थोक ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नामु जपत होवत उधार ॥ नामु जपत सुख सहज सार ॥ नामु जपत पति सोभा होइ ॥ नामु जपत बिघनु नाही कोइ ॥ २ ॥ जा कारणि इह दुलभ देह ॥ सो बोलु मेरे प्रभू देहि ॥ साधसंगति महि इहु बिस्रामु ॥ सदा रिदै जपी प्रभ तेरो नामु ॥ ३ ॥ तुझ बिनु दूजा कोइ नाहि ॥ सभु तेरो खेलु तुझ महि समाहि ॥ जिउ भावै तिउ राखि ले ॥ सुखु नानक पूरा गुरु मिले ॥ ४ ॥ ४ ॥

हे परमपिता! यह आत्मा, प्राण, शरीर तुम्हारा दिया हुआ है, अपनी ज्योति स्थापित कर तूने मुझ मूर्ख को सुन्दर बना दिया है। हे प्रभु! तू दया का भण्डार है और हम सभी याचक हैं, तेरा नाम जपने से हम आनंद विभोर हो जाते हैं॥१॥ हे मेरे प्रियतम! तू करने करवाने में समर्थ है, हम तुम से ही सब वस्तुएँ प्राप्त करते हैं॥१॥ रहाउ॥ हरिनाम का जाप करने से संसार से उद्धार होता है, हरिनाम का जाप करने से सहज स्वाभाविक सुखों की प्राप्ति होती है। प्रभु नाम का जाप करने से संसार में शोभा एवं प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। भगवान का नाम जपने से कोई विघ्न नहीं

आता॥२॥ जिस प्रभु भजन के लिए यह दुर्लभ देह प्राप्त होती है, वही बोल मेरे प्रभु! मुझे प्रदान करो। हे प्रभु! साधु संगत में यह सुख का स्थान प्राप्त हो कि वहां हृदय में सदा तेरे नाम का जाप होता रहे॥३॥ तेरे बिना दूसरा कोई नहीं, दुनिया में सब तेरी लीला चल रही है और सृष्टि के जीव तुझ में विलीन हो जाते हैं। जैसे तू चाहता है, वैसे ही बचा लो। नानक का मत है कि सच्चा सुख पूर्ण गुरु से ही मिलता है॥४॥४॥

बसंतु महला ५ ॥ प्रभ प्रीतम मेरै संगि राइ ॥ जिसहि देखि हउ जीवा माइ ॥ जा कै सिमरनि दुखु न होइ ॥ करि दइआ मिलावहु तिसहि मोहि ॥ १ ॥ मेरे प्रीतम प्रान अधार मन ॥ जीउ प्रान सभु तेरो धन ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा कउ खोजहि सुरि नर देव ॥ मुनि जन सेख न लहहि भेव ॥ जा की गति मिति कही न जाइ ॥ घटि घटि घटि घटि रहिआ समाइ ॥ २ ॥ जा के भगत आनंद मै ॥ जा के भगत कउ नाही खै ॥ जा के भगत कउ नाही भै ॥ जा के भगत कउ सदा जै ॥ ३ ॥ कउन उपमा तेरी कही जाइ ॥ सुखदाता प्रभु रहिओ समाइ ॥ नानकु जाचै एकु दानु ॥ करि किरपा मोहि देहु नामु ॥ ४ ॥ ५ ॥

हे माँ! प्रियतम प्रभु मेरे संग ही बसा हुआ है, जिसे देखकर मैं जीता हूँ, जिसका स्मरण करने से दुख प्रभावित नहीं करता, दया करके मुझे उससे मिला दो॥१॥ हे मेरे प्रियतम! तू ही मेरे मन एवं प्राणों का आधार है, यह आत्मा एवं प्राण सब तेरा धन है॥१॥ रहाउ॥ जिसे मनुष्य एवं देवता खोज रहे हैं, मुनिजन एवं शेषनाग सरीखे जिसका रहस्य नहीं पा सके, जिसकी महिमा एवं शक्ति का वर्णन नहीं किया जा सकता, वह सर्वशक्तिमान घट घट में व्याप्त है॥२॥ जिसके भक्त सदा आनंदमय रहते हैं, जिसके भक्तों को कोई नुक्सान नहीं होता, जिसके भक्तों को कोई भय नहीं, जिसके भक्तों की सदा जय-जयकार होती है॥३॥ हे प्रभु! तेरी उपमा अवर्णनीय है, तू पूरे संसार को सुख प्रदान करने वाला है, सर्वव्यापक है। नानक केवल यही दान चाहता है कि कृपा करके मुझे नाम प्रदान करो॥४॥५॥

बसंतु महला ५ ॥ मिलि पाणी जिउ हरे बूट ॥ साधसंगति तिउ हउमै छूट ॥ जैसी दासे धीर मीर ॥ तैसे उधारन गुरह पीर ॥ १ ॥ तुम दाते प्रभ देनहार ॥ निमख निमख तिसु नमसकार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिसहि परापति साधसंगु ॥ तिसु जन लागा पारब्रहम रंगु ॥ ते बंधन ते भए मुकति ॥ भगत अराधहि जोग जुगति ॥ २ ॥ नेत्र संतोखे दरसु पेखि ॥ रसना गाए गुण अनेक ॥ त्रिसना बूझी गुर प्रसादि ॥ मनु आघाना हरि रसहि सुआदि ॥ ३ ॥ सेवकु लागो चरण सेव ॥ आदि पुरख अपरंपर देव ॥ सगल उधारण तेरो नामु ॥ नानक पाइओ इहु निधानु ॥ ४ ॥ ६ ॥

जिस तरह पानी मिलने से पेड़-पौधे हरे भरे हो जाते हैं, वैसे ही साधु-पुरुषों की संगत करने से अहम् दूर हो जाता है। जैसे नौकर को मालिक का अवलम्ब होता है, वैसे ही गुरु पीर अपने शिष्य का संसार के दुखों से उद्धार कर देता है॥१॥ हे प्रभु! एकमात्र तू ही दाता है, सम्पूर्ण जगत को देने वाला है, हमारा पल-पल तुझे प्रणाम है॥१॥ रहाउ॥ जिसे साधु-पुरुषों का संग प्राप्त होता है, उसी व्यक्ति को परब्रह्म से प्रेम होता है। वह संसार के बन्धनों से छूटकर मुक्ति पा लेता है, ऐसा भगत ईश्वर की आराधना की योग युक्ति ही अपनाता है॥२॥ ईश्वर के दर्शन करके नेत्र संतुष्ट हो गए हैं और रसना उसके ही अनंत गुण गाती है। गुरु की कृपा से तृष्णा बुझ गई है और प्रभु भजन के आनंद से मन तृप्त हो गया है॥३॥ सेवक तो अपरंपार, आदिपुरुष ईश्वर की चरण

सेवा में ही लीन रहता है। हे देवाधिदेव! तेरा नाम संसार का उद्धार करने वाला है और नानक ने यह सुखों का भण्डार पा लिया है॥ ४॥ ६॥

बसंतु महला ५ ॥ तुम बड दाते दे रहे ॥ जीअ प्राण महि रवि रहे ॥ दीने सगले भोजन खान ॥ मोहि निरगुन इकु गुनु न जान ॥ १ ॥ हउ कछू न जानउ तेरी सार ॥ तू करि गति मेरी प्रभ दइआर ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जाप न ताप न करम कीति ॥ आवै नाही कछू रीति ॥ मन महि राखउ आस एक ॥ नाम तेरे की तरउ टेक ॥ २ ॥ सरब कला प्रभ तुम्ह प्रबीन ॥ अंतु न पावहि जलहि मीन ॥ अगम अगम ऊचह ते ऊच ॥ हम थोरे तुम बहुत मूच ॥ ३ ॥ जिन तू धिआइआ से गनी ॥ जिन तू पाइआ से धनी ॥ जिनि तू सेविआ सुखी से ॥ संत सरणि नानक परे ॥ ४ ॥ ७ ॥

हे परमेश्वर! तू ही सबसे बड़ा दाता है, सब लोगों को दे रहा है, आत्मा एवं प्राणों में तू ही अवस्थित है, खाने के लिए सब भोजन दे रहा है, किन्तु मुझ जैसा गुणविहीन तेरे किसी एहसान को नहीं जान पाया॥ १॥ मैं तेरी महानता को बिल्कुल नहीं जानता, हे दयालु प्रभु! तू ही मेरी मुक्ति कर॥ १॥ रहाउ॥ न कोई जाप किया, न तपस्या की, न ही शुभ कर्म किया और तो और कोई रस्म-रिवाज भी नहीं आती। बस मन में एक यही उम्मीद है कि तेरे नाम के सहारे संसार-सागर से पार हो जाऊँगा॥ २॥ हे प्रभु! तुम सर्व शक्तियों में निपुण हो और जल में रहने वाली मछलियों की मानिंद तेरा रहस्य नहीं पा सके। तू असीम, अगम्य एवं ऊँचे से ऊँचा महान् है। हम तुच्छ हैं और तुम पूरे विश्व में बहुत बड़े हो॥ ३॥ जिसने तेरा ध्यान किया है, वही यशस्वी है, जिसने तुझे पाया है, वास्तव में वही धनवान है। नानक का कथन है कि हे प्रभु! जिसने तेरी भक्ति-अर्चना की है, वही सुखी है और वह संतों की शरण में ही पड़ा रहता है॥ ४॥ ७॥

बसंतु महला ५ ॥ तिसु तू सेवि जिनि तू कीआ ॥ तिसु अराधि जिनि जीउ दीआ ॥ तिस का चाकरु होहि फिरि डानु न लागै ॥ तिस की करि पोतदारी फिरि दूखु न लागै ॥ १ ॥ एवड भाग होहि जिसु प्राणी ॥ सो पाए इहु पदु निरबाणी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दूजी सेवा जीवनु बिरथा ॥ कछू न होई है पूरन अरथा ॥ माणस सेवा खरी दुहेली ॥ साध की सेवा सदा सुहेली ॥ २ ॥ जे लोड़हि सदा सुखु भाई ॥ साधू संगति गुरहि बताई ॥ ऊहा जपीऐ केवल नाम ॥ साधू संगति पारगराम ॥ ३ ॥ सगल तत महि ततु गिआनु ॥ सरब धिआन महि एकु धिआनु ॥ हरि कीरतन महि ऊतम धुना ॥ नानक गुर मिलि गाइ गुना ॥ ४ ॥ ८ ॥

हे मनुष्य! जिसने तुझे बनाया है, उसी की तू उपासना कर। जिसने तुझे प्राण दिए हैं, उसी की आराधना कर। अगर तू उसका सेवक बन जाएगा तो पुनः कोई दण्ड प्राप्त नहीं होगा। अगर तू उसकी नियामतों का कोषाध्यक्ष मानकर चले तो पुनः कोई दुख भी पास नहीं फटकेगा॥ १॥ जिस प्राणी के इतने अहोभाग्य होते हैं, वही यह उच्च पद प्राप्त करता है॥ १॥ रहाउ॥ ईश्वर के अतिरिक्त किसी अन्य की सेवा से जीवन व्यर्थ ही जाता है और कोई कामना अथवा जरूरत पूरी नहीं होती। लोगों की सेवा से दुख ही नसीब होता है, मगर साधु-महात्मा की सेवा करने से सदा सुखों की लब्धि होती है॥ २॥ हे भाई! यदि तू सदा सुख पाना चाहता है तो गुरु ने यही सन्मार्ग बताया कि साधु पुरुषों की संगत करो। वहाँ केवल ईश्वर के नाम का जाप किया जाता है और साधु-पुरुषों की संगत में ही मुक्ति होती है॥ ३॥ सब तत्वों में ज्ञान तत्व सर्वश्रेष्ठ है। सब ध्यानों में केवल परमात्मा का ध्यान फलप्रद है। उत्तम ध्वनि ईश्वर के संकीर्तन में होती है। नानक फुरमाते हैं कि गुरु को मिलकर भगवान का गुणगान करो॥ ४॥ ८॥

बसंतु महला ५ ॥ जिसु बोलत मुखु पवितु होइ ॥ जिसु सिमरत निरमल है सोइ ॥ जिसु अराधे जमु किछु न कहै ॥ जिस की सेवा सभु किछु लहै ॥ १ ॥ राम राम बोलि राम राम ॥ तिआगहु मन के सगल काम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिस के धारे धरणि अकासु ॥ घटि घटि जिस का है प्रगासु ॥ जिसु सिमरत पतित पुनीत होइ ॥ अंत कालि फिरि फिरि न रोइ ॥ २ ॥ सगल धरम महि ऊतम धरम ॥ करम करतूति कै ऊपरि करम ॥ जिस कउ चाहहि सुरि नर देव ॥ संत सभा की लगहु सेव ॥ ३ ॥ आदि पुरखि जिसु कीआ दानु ॥ तिस कउ मिलिआ हरि निधानु ॥ तिस की गति मिति कही न जाइ ॥ नानक जन हरि हरि धिआइ ॥ ४ ॥ ६ ॥

जिसका नाम जपने से मुँह पवित्र हो जाता है, जिसका स्मरण करने से मान-प्रतिष्ठा प्राप्त होती है, जिसकी आराधना करने से यम भी तंग नहीं करता, जिसकी भक्ति करने से सबकुछ प्राप्त होता है॥१॥ प्रेम से राम राम जपते रहो और मन की सब लालसाओं को त्याग दो॥१॥ रहाउ॥ उस अनंतशक्ति परमेश्वर ने धरती और आकाश को टिकाया हुआ है, घट घट में उस प्रभु का आलोक है। जिसका स्मरण करने से पतित जीव भी पावन हो जाते हैं, अंतकाल पुनः पुनः पछताना नहीं पड़ता॥२॥ ईशोपासना सब धर्मों में उत्तम धर्म है, जितने भी कर्म हैं, उन से ईश्वर की सेवा ही बड़ा कर्म है। जिस सर्वशक्तिमान को मनुष्य एवं देवता भी पाने के आकांक्षी हैं, संतों की सभा में उसके भजन में तल्लीन रहो॥३॥ जिस पुरुष को आदिपुरुष ने दान दिया है, उसे ही हरिनाम रूपी सुखों की निधि प्राप्त हुई है। नानक का कथन है कि उसकी महिमा बताई नहीं जा सकती, अतः ईश्वर के ध्यान में निमग्न रहो॥४॥६॥

बसंतु महला ५ ॥ मन तन भीतरि लागी पिआस ॥ गुरि दइआलि पूरी मेरी आस ॥ किलविख काटे साधसंगि ॥ नामु जपिओ हरि नाम रंगि ॥ १ ॥ गुर परसादि बसंतु बना ॥ चरन कमल हिरदै उरि धारे सदा सदा हरि जसु सुना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ समरथ सुआमी कारण करण ॥ मोहि अनाथ प्रभ तेरी सरण ॥ जीअ जंत तेरे आधारि ॥ करि किरपा प्रभ लेहि निसतारि ॥ २ ॥ भव खंडन दुख नास देव ॥ सुरि नर मुनि जन ता की सेव ॥ धरणि अकासु जा की कला माहि ॥ तेरा दीआ सभि जंत खाहि ॥ ३ ॥ अंतरजामी प्रभ दइआल ॥ अपणे दास कउ नदरि निहालि ॥ करि किरपा मोहि देहु दानु ॥ जपि जीवै नानकु तेरो नामु ॥ ४ ॥ १० ॥

मन तन में तीव्र लालसा लगी हुई थी, दयालु गुरु ने मेरी आशा पूरी कर दी है। साधु पुरुषों की संगत ने सब पाप काट दिए हैं, हमने प्रेमपूर्वक हरिनाम का ही जाप किया है॥१॥ गुरु की कृपा से बसंत का मौसम बन गया है, हृदय में प्रभु चरणों को ही धारण किया है। मैं हर पल ईश्वर का यश सुनता हूँ॥१॥ रहाउ॥ हे प्रभु ! तू सर्वशक्तिमान है, समूचे विश्व का स्वामी है, सर्वकर्ता है, मैं अनाथ तेरी शरण में आया हूँ। सब जीवों को तेरा ही आसरा है, कृपा करके संसार से मुक्ति प्रदान करो॥२॥ हे देवाधिदेव ! तू संसार के जन्म-मरण के बन्धन को तोड़ने वाला है, दुखों को नाश करने वाला है। मनुष्य, देवगण एवं मुनिजन तेरी भक्ति करते हैं। तुमने धरती एवं आकाश को अपनी शक्ति से टिकाया हुआ है। सभी जीव तेरा दिया खा रहे हैं॥३॥ हे प्रभु ! तू अन्तर्यामी है, दयालु है, अपने दास पर कृपा-दृष्टि कर दो। नानक विनती करते हैं कि कृपा करके मुझे यह दान दो कि तेरा नाम जपकर जीता रहूँ॥४॥१०॥

बसंतु महला ५ ॥ राम रंगि सभ गए पाप ॥ राम जपत कछु नही संताप ॥ गोबिंद जपत सभि मिटे अंधेर ॥ हरि सिमरत कछु नाहि फेर ॥ १ ॥ बसंतु हमारै राम रंगु ॥ संत जना सिउ सदा संगु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संत जनी कीआ उपदेसु ॥ जह गोबिंद भगतु सो धंनि देसु ॥ हरि भगतिहीन उदिआन थानु ॥ गुर प्रसादि घटि घटि पछानु ॥ २ ॥ हरि कीरतन रस भोग रंगु ॥ मन पाप करत तू सदा संगु ॥ निकटि पेखु प्रभु करणहार ॥ ईत ऊत प्रभ कारज सार ॥ ३ ॥ चरन कमल सिउ लगो धिआनु ॥ करि किरपा प्रभि कीनो दानु ॥ तेरिआ संत जना की बाछउ धूरि ॥ जपि नानक सुआमी सद हजूरि ॥ ४ ॥ ११ ॥

राम की प्रेम-भक्ति में निमग्न होने से सब पाप दूर हो जाते हैं। राम का जाप करने से कोई कष्ट प्रभावित् नहीं करता। ईश्वर का जाप करने से अज्ञान के सभी अंधेरे मिट जाते हैं और उसका स्मरण करने से जन्म-मरण का बन्धन नहीं रहता॥१॥ ईश्वर की भक्ति में निमग्न रहना ही हमारा बसंत का मौसम है और संतजनों से ही संग बना रहता है॥१॥ रहाउ॥ संतजनों ने उपदेश किया है कि जहाँ ईश्वर का भक्त रहता है, वह नगर धन्य है। जहाँ परमात्मा की भक्ति नहीं होती, वह स्थान जंगल समान है और गुरु की कृपा से घट घट में पहचान होती है॥२॥ ईश्वर का संकीर्तन ही तमाम खुशियों एवं रसों को भोगना है। हे मन! पाप करते हुए तू जरा संकोच कर, क्योंकि वह सदैव साथ है, उस रचनहार प्रभु को समीप ही देख। लोक-परलोक में प्रभु ही सब कार्य सम्पन्न करने वाला है॥३॥ हमारा प्रभु-चरणों से ध्यान लग गया है, कृपा करके प्रभु ने यह दान किया है। नानक की विनती है कि हे मेरे स्वामी! मैं तेरे संतजनों की चरण-धूल चाहता हूँ और तेरा नाम जपकर तुझे सदा साक्षात् ही मानता हूँ॥४॥११॥

बसंतु महला ५ ॥ सचु परमेसरु नित नवा ॥ गुर किरपा ते नित चवा ॥ प्रभ रखवाले माई बाप ॥ जा कै सिमरणि नही संताप ॥ १ ॥ खसमु धिआई इक मनि इक भाइ ॥ गुर पूरे की सदा सरणाई साचै साहिबि रखिआ कंठि लाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अपणे जन प्रभि आपि रखे ॥ दुसट दूत सभि भ्रमि थके ॥ बिनु गुर साचे नही जाइ ॥ दुखु देस दिसंतरि रहे धाइ ॥ २ ॥ किरतु ओन्हा का मिटसि नाहि ॥ ओइ अपणा बीजिआ आपि खाहि ॥ जन का रखवाला आपि सोइ ॥ जन कउ पहुचि न सकसि कोइ ॥ ३ ॥ प्रभि दास रखे करि जतनु आपि ॥ अखंड पूरन जा को प्रतापु ॥ गुण गोबिंद नित रसन गाइ ॥ नानकु जीवै हरि चरण धिआइ ॥ ४ ॥ १२ ॥

परमेश्वर शाश्वत-स्वरूप एवं अनंत है। गुरु की कृपा से निरंतर उसका नाम जपता हूँ। माता-पिता की तरह प्रभु हमारा रखवाला है और उसका स्मरण करने से कोई मुसीबत नहीं आती॥ १॥ एकाग्रचित् होकर मालिक की बंदगी करो, पूरे गुरु की शरण में रहकर सच्चे मालिक ने गले लगा लिया है॥१॥ रहाउ॥ प्रभु स्वयं ही अपने भक्त की रक्षा करता है और कामादिक दुष्ट दूत सभी भटक कर थक जाते हैं। सच्चे गुरु के बिना कहीं आसरा नहीं मिलता और देश-देशांतर भटकने वाले लोग दुख ही पाते हैं॥२॥ उनके भाग्य को बदला नहीं जा सकता, वे अपने किए कर्मों का स्वयं ही फल खाते हैं। भक्त का रक्षक स्वयं परमेश्वर है और उस भक्त तक कोई बुरी बला पहुँच नहीं सकती॥३॥ प्रभु स्वयं प्रयास कर दास की रक्षा करता है और उसका प्रताप अखण्ड एवं पूर्ण है। हे सज्जनों, जिह्वा से प्रतिदिन प्रभु के गुण गाओ। नानक केवल हरि-चरणों के ध्यान में ही जी रहा है॥४॥१२॥

बसंतु महला ५ ॥ गुर चरण सरेवत दुखु गइआ ॥ पारब्रहमि प्रभि करी मइआ ॥ सरब मनोरथ पूरन काम ॥ जपि जीवै नानकु राम नाम ॥ १ ॥ सा रुति सुहावी जितु हरि चिति आवै ॥ बिनु सतिगुर दीसै बिललांती साकतु फिरि फिरि आवै जावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ से धनवंत जिन हरि प्रभु रासि ॥ काम क्रोध गुर सबदि नासि ॥ भै बिनसे निरभै पदु पाइआ ॥ गुर मिलि नानकि खसमु धिआइआ ॥ २ ॥ साधसंगति प्रभि कीओ निवास ॥ हरि जपि जपि होई पूरन आस ॥ जलि थलि महीअलि रवि रहिआ ॥ गुर मिलि नानकि हरि हरि कहिआ ॥ ३ ॥ असट सिधि नव निधि एह ॥ करमि परापति जिसु नामु देह ॥ प्रभ जपि जपि जीवहि तेरे दास ॥ गुर मिलि नानक कमल प्रगास ॥ ४ ॥ १३ ॥

गुरु की चरण वंदना से दुख दूर हो गया है। परब्रह्म प्रभु ने कृपा की है, जिससे सभी मनोरथ पूरे हो गए हैं। नानक तो राम नाम जप कर ही जी रहा है॥१॥ वही मौसम सुहावना है, जब ईश्वर याद आता है। सतगुरु के बिना पूरी दुनिया दुखों में रोती दिखाई दे रही है, ईश्वर से विमुख जीव बार-बार जन्मता-मरता है॥१॥ रहाउ॥ वही धनवान है, जिसके पास प्रभु रूपी राशि है। गुरु के उपदेश से काम क्रोध का नाश होता है। भय नष्ट हो जाता है और निर्भय पद प्राप्त हो जाता है। हे नानक! गुरु को मिलकर मालिक का ध्यान किया है॥२॥ प्रभु ने हमारा साधु पुरुषों की संगत में निवास बना दिया है और प्रभु का नाम जपकर हर आशा पूरी हो गई है। समुद्र, पृथ्वी एवं अंतरिक्ष में केवल वही व्याप्त है। गुरु को मिलकर नानक ने ईश्वर का यश उच्चारण किया है॥३॥ प्रभु का नाम अठारह सिद्धियाँ एवं नौ निधियाँ है, नाम भी उसे प्राप्त होता है, जिस पर प्रभु की कृपा होती है। हे प्रभु! तेरे दास तुझे जप जपकर जीवन पा रहे हैं और गुरु को मिलकर नानक का हृदय कमल खिल गया है॥४॥१३॥

बसंतु महला ५ घरु १ इक तुके १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

सगल इछा जपि पुंनीआ ॥ प्रभि मेले चिरी विछुंनिआ ॥ १ ॥ तुम रवहु गोबिंदै रवण जोगु ॥ जितु रविऐ सुख सहज भोगु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करि किरपा नदरि निहालिआ ॥ अपणा दासु आपि सम्हालिआ ॥ २ ॥ सेज सुहावी रसि बनी ॥ आइ मिले प्रभ सुख धनी ॥ ३ ॥ मेरा गुणु अवगणु न बीचारिआ ॥ प्रभ नानक चरण पूजारिआ ॥ ४ ॥ १ ॥ १४ ॥

परमात्मा का जप करने से सभी कामनाएँ पूरी हो गई हैं। बहुत लम्बे समय से बिछुड़ा हुआ था, अब प्रभु से मिलाप हो गया है॥१॥ हे जीव! तुम ईश्वर की पूजा करो, वही पूजा के योग्य है, जिसकी पूजा करने से परम सुखों का आनंद प्राप्त होता है॥१॥ रहाउ॥ प्रभु ने कृपा-दृष्टि करके आनंदित कर दिया है और अपने दास की स्वयं ही संभाल की है॥२॥ हृदय रूपी सेज सुन्दर हो गई है, सुखों का मालिक प्रभु आ मिला है॥३॥ उसने मेरे गुण-अवगुण का बिल्कुल ख्याल नहीं किया। नानक ने तो प्रभु-चरणों की ही पूजा-अर्चना की है॥४॥१॥१४॥

बसंतु महला ५ ॥ किलबिख बिनसे गाइ गुना ॥ अनदिनु उपजी सहज धुना ॥ १ ॥ मनु मउलिओ हरि चरन संगि ॥ करि किरपा साधू जन भेटे नित रातौ हरि नाम रंगि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करि किरपा प्रगटे गोपाल ॥ लड़ि लाइ उधारे दीन दइआल ॥ २ ॥ इहु मनु होआ साध धूरि ॥ नित देखै सुआमी हजूरि ॥ ३ ॥ काम क्रोध त्रिसना गई ॥ नानक प्रभ किरपा भई ॥ ४ ॥ २ ॥ १५ ॥

परमात्मा का यशोगान करने से पाप नष्ट हो जाते हैं और हर पल मन में परम सुख की ध्वनि उत्पन्न होती है॥१॥ परमात्मा के चरणों में रत रहने से मन खिल गया है। जब ईश्वर ने कृपा की तो साधुजनों से संपर्क हो गया, अब नित्य प्रभु नाम की प्रशस्ति में लीन रहता हूँ॥१॥ रहाउ॥ कृपा करके ईश्वर प्रगट हो गया है, उस दीनदयाल ने चरणों में लगाकर उद्धार कर दिया है॥ २॥ हमारा यह मन साधु पुरुषों की चरण-धूल बन गया है और नित्य स्वामी को पास ही देखता है॥३॥ नानक फुरमाते हैं कि प्रभु की कृपा हुई तो काम, क्रोध एवं तृष्णा दूर हो गई॥४॥२॥१५॥

बसंतु महला ५ ॥ रोग मिटाए प्रभू आपि ॥ बालक राखे अपने कर थापि ॥ १ ॥ सांति सहज ग्रिहि सद बसंतु ॥ गुर पूरे की सरणी आए कलिआण रूप जपि हरि हरि मंतु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सोग संताप कटे प्रभि आपि ॥ गुर अपुने कउ नित नित जापि ॥ २ ॥ जो जनु तेरा जपे नाउ ॥ सभि फल पाए निहचल गुण गाउ ॥ ३ ॥ नानक भगता भली रीति ॥ सुखदाता जपदे नीत नीति ॥ ४ ॥ ३ ॥ १६ ॥

प्रभु ने स्वयं ही रोग मिटा दिया है, उसने हाथ रखकर बालक (हरिगोबिंद) की रक्षा की है॥ १॥ घर में सुख-शान्ति एवं आनंद उत्पन्न हो गया है। पूरे गुरु की शरण में आकर कल्याण रूप 'हरि हरि' मंत्र का ही जाप किया है॥१॥ रहाउ॥ प्रभु ने शोक एवं गम को काट दिया है। मैं नित्य अपने गुरु का जाप करता हूँ॥२॥ हे प्रभु! जो व्यक्ति तेरा नाम जपता है, वह तेरे गुण गाकर निश्चय ही सब फल प्राप्त करता है॥३॥ नानक का मत है कि भक्तों का भला शिष्टाचार है कि वे हर वक्त सुखदाता ईश्वर को ही जपते रहते हैं॥४॥३॥१६॥

बसंतु महला ५ ॥ हुकमु करि कीन्हे निहाल ॥ अपने सेवक कउ भइआ दइआलु ॥ १ ॥ गुरि पूरै सभु पूरा कीआ ॥ अंम्रित नामु रिद महि दीआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करमु धरमु मेरा कछु न बीचारिओ ॥ बाह पकरि भवजलु निसतारिओ ॥ २ ॥ प्रभि काटि मैलु निरमल करे ॥ गुर पूरे की सरणी परे ॥ ३ ॥ आपि करहि आपि करणैहारे ॥ करि किरपा नानक उधारे ॥ ४ ॥ ४ ॥ १७ ॥

प्रभु ने हुक्म करके निहाल कर दिया है और अपने सेवक पर दयालु हो गया है॥१॥ पूर्ण गुरु ने हर कार्य पूरा कर दिया है, हृदय में अमृत नाम प्रदान किया है॥१॥ रहाउ॥ उसने मेरे कर्म धर्म का कोई ख्याल नहीं किया और बाँह से पकड़कर मुझे संसार-सागर से पार उतार दिया है॥२॥ प्रभु ने मेरी बुराई की मैल को काटकर निर्मल कर दिया है, अब पूर्ण गुरु की शरण में पड़ा रहता हूँ॥३॥ यह ईश्वर की लीला है कि वह सर्वकर्ता स्वयं ही करता है। हे नानक! वह कृपा करके उद्धार कर देता है॥४॥४॥१७॥

बसंतु महला ५ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

देखु फूल फूल फूले ॥ अहं तिआगि तिआगे ॥ चरन कमल पागे ॥ तुम मिलहु प्रभ सभागे ॥ हरि चेति मन मेरे ॥ रहाउ ॥ सघन बासु कूले ॥ इकि रहे सूकि कठूले ॥ बसंत रुति आई ॥ परफूलता रहे ॥ १ ॥ अब कलू आइओ रे ॥ इकु नामु बोवहु बोवहु ॥ अन रूति नाही नाही ॥ मतु भरमि भूलहु भूलहु ॥ गुर मिले हरि पाए ॥ जिसु मसतकि है लेखा ॥ मन रुति नाम रे ॥ गुन कहे नानक हरि हरे हरि हरे ॥ २ ॥ १८ ॥

हे मनुष्य ! अहम् को पूर्णतया त्याग दे, फिर देख खुशियों के फूल ही फूल खिले हुए हैं। चरण कमल में लीन होने से तुम्हें प्रभु मिल सकता है, इसलिए हे मेरे मन ! ईश्वर का चिंतन कर लो॥ रहाउ॥ कुछ पेड़ छायादार, खुशबूदार एवं कोमल होते हैं परन्तु कुछ पेड़ शुष्क एवं कठोर लकड़ी वाले होते हैं। बसंत ऋतु के आगमन पर पूरी वनस्पति प्रफुल्लित हो जाती है॥१॥ हे जीव ! अब कलियुग आ गया है, शरीर रूपी खेत में प्रभु नाम बो लो, अन्य मौसम (जन्म) शायद बोया नहीं जा सकेगा। अतः प्रभु का नाम बो लो। हे मन ! किसी भ्रम में मत भूलो क्योंकि गुरु के मिलने पर ही परमात्मा प्राप्त होता है, जिसके मस्तक पर भाग्य होता है। हे मन ! यह मौसम (अर्थात् मनुष्य जन्म) प्रभु नाम के सिमरन का है, अतः नानक भी ईश्वर का यशोगान कर रहा है॥२॥१८॥

बसंतु महला ५ घरु २ हिंडोल ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

होइ इकत्र मिलहु मेरे भाई दुबिधा दूरि करहु लिव लाइ ॥ हरि नामै के होवहु जोड़ी गुरमुखि बैसहु सफा विछाइ ॥ १ ॥ इन्ह बिधि पासा ढालहु बीर ॥ गुरमुखि नामु जपहु दिनु राती अंत कालि नह लागै पीर ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करम धरम तुम्ह चउपड़ि साजहु सतु करहु तुम्ह सारी ॥ कामु क्रोधु लोभु मोहु जीतहु ऐसी खेल हरि पिआरी ॥ २ ॥ उठि इसनानु करहु परभाते सोए हरि आराधे ॥ बिखड़े दाउ लंघावै मेरा सतिगुरु सुख सहज सेती घरि जाते ॥ ३ ॥ हरि आपे खेलै आपे देखै हरि आपे रचनु रचाइआ ॥ जन नानक गुरमुखि जो नरु खेलै सो जिणि बाजी घरि आइआ ॥ ४ ॥ १ ॥ १९ ॥

हे मेरे भाई ! आप सब एकत्रित होकर सत्संग में मिल जाओ और ईश्वर में ध्यान लगाकर दुविधा को दूर करो। हरिनाम का भजन करने वालों के साथ जोड़ी बनाओ और गुरु के सन्मुख चौपड़ की बिसात बिछाकर बैठ जाओ॥१॥ हे भाई ! इस तरीके से बाजी खेलकर शुभ कर्मों का पासा फैंको। गुरु के सन्मुख दिन-रात परमात्मा के नाम का जाप करो, इससे अन्तिम समय तुम्हें कोई दुख-तकलीफ नहीं लगेगी॥१॥ रहाउ॥ तुम शुभ कर्म एवं धर्म की चौपड़ बनाओ और सच्चाई की गोटियाँ तैयार कर लो। काम, क्रोध, लोभ एवं मोह पर विजय पा लो, यही खेल ईश्वर को प्रिय है॥२॥ प्रभात काल उठकर स्नान करो और ईश्वर की आराधना में लीन हो जाओ। इस तरह मेरा सच्चा गुरु जीवन के विकट दांव से पार उतार देता है और जीव सुखपूर्वक अपने सच्चे घर पहुँच जाता है॥३॥ ईश्वर स्वयं ही खेल खेलता है, देखता भी स्वयं ही है और उसने ही यह जगत रचना रची हुई है। हे नानक ! जो व्यक्ति गुरु के सान्निध्य में जिन्दगी रूपी खेल खेलता है, वहीं जीवन बाजी जीतकर अपने घर आता है॥४॥१॥१९॥

बसंतु महला ५ हिंडोल ॥ तेरी कुदरति तूहै जाणहि अउरु न दूजा जाणै ॥ जिस नो क्रिपा करहि मेरे पिआरे सोई तुझै पछाणै ॥ १ ॥ तेरिआ भगता कउ बलिहारा ॥ थानु सुहावा सदा प्रभ तेरा रंग तेरे अपारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तेरी सेवा तुझ ते होवै अउरु न दूजा करता ॥ भगतु तेरा सोई तुधु भावै जिस नो तू रंगु धरता ॥ २ ॥ तू वड दाता तू वड दाना अउरु नही को दूजा ॥ तू समरथु सुआमी मेरा हउ किआ जाणा तेरी पूजा ॥ ३ ॥ तेरा महलु अगोचरु मेरे पिआरे बिखमु तेरा है भाणा ॥ कहु नानक ढहि पइआ दुआरै रखि लेवहु मुगध अजाणा ॥ ४ ॥ २ ॥ २० ॥

हे स्रष्टा ! अपनी कुदरत को तू ही जानता है, कोई दूसरा नहीं जानता। हे मेरे प्यारे ! जिस पर तू कृपा करता है, वही तुझे पहचान पाता है॥१॥ मैं तेरे भक्तों पर कुर्बान जाता हूँ। हे प्रभु ! तेरा स्थान बहुत सुहावना है और तेरी लीलाएँ विचित्र हैं॥१॥ रहाउ॥ तेरी सेवा भक्ति तेरे

प्रोत्साहन से ही होती है, अन्य कोई भी तेरी मर्जी के बिना नहीं कर सकता। जो तुझे अच्छा लगता है, वही तेरा भक्त है, जिसे तू भक्ति के रंग में रंग देता है॥२॥ तू सबसे बड़ा दाता है, तू बहुत बुद्धिमान है और तेरे सरीखा दूसरा कोई नहीं। हे मेरे स्वामी! तू तो सर्वशक्तिमान है, फिर भला मैं तेरी पूजा की महत्ता क्या जान सकता हूँ॥३॥ हे मेरे प्यारे! जहाँ तू रहता है, वह हमारी पहुँच से परे है और तेरी रज़ा को मानकर चलना भी हमारे लिए बहुत मुश्किल है। नानक विनती करते हैं कि हे मालिक! मैं तेरे द्वार पर नतमस्तक हूँ, मुझ मूर्ख अनजान को बचा लो॥४॥२॥२०॥

बसंतु हिंडोल महला ५ ॥ मूलु न बूझै आपु न सूझै भरमि बिआपी अहं मनी ॥ १ ॥ पिता पारब्रहम प्रभ धनी ॥ मोहि निसतारहु निरगुनी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ओपति परलउ प्रभ ते होवै इह बीचारी हरि जनी ॥ २ ॥ नाम प्रभू के जो रंगि राते कलि महि सुखीए से गनी ॥ ३ ॥ अवरु उपाउ न कोई सूझै नानक तरीऐ गुर बचनी ॥ ४ ॥ ३ ॥ २१ ॥

अहम्-भावना की वजह से भ्रम में व्याप्त मनुष्य अपने मूल परमेश्वर को नहीं समझता और न ही अपने आप को सूझता है॥१॥ हे परब्रह्म प्रभु! तू हमारा पिता एवं स्वामी है, मुझ गुणविहीन को संसार के बन्धनों से मुक्त करवा दो॥१॥ रहाउ॥ भक्तजनों ने यही विचार किया है कि सृष्टि की उत्पत्ति एवं विनाश प्रभु की रज़ा से होता है॥२॥ जो व्यक्ति प्रभु के नाम रंग में रत रहते हैं, कलियुग में वही सुखी माने जाते हैं॥३॥ हे नानक! अन्य कोई कारगर उपाय नहीं सूझता, केवल गुरु के वचनों से संसार-सागर से पार हुआ जा सकता है॥४॥३॥२१॥

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥ रागु बसंतु हिंडोल महला ९ ॥ साधो इहु तनु मिथिआ जानउ ॥ या भीतरि जो रामु बसतु है साचो ताहि पछानो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इहु जगु है संपति सुपने की देखि कहा ऐडानो ॥ संगि तिहारै कछू न चालै ताहि कहा लपटानो ॥ १ ॥ उसतति निंदा दोऊ परहरि हरि कीरति उरि आनो ॥ जन नानक सभ ही मै पूरन एक पुरख भगवानो ॥ २ ॥ १ ॥

हे सज्जनो! इस शरीर को नाशवान मानो और इसके भीतर जो ईश्वर विद्यमान है, उसे ही शाश्वत समझो॥१॥ रहाउ॥ यह दुनिया सपने में मिली हुई दौलत के बराबर है, इसको देखकर क्योंकर अभिमानी बने हुए हो। तुम्हारे साथ कोई भी वस्तु साथ नहीं जाएगी, फिर भला क्योंकर इससे लिपट रहे हो॥१॥ प्रशंसा एवं निंदा दोनों को त्याग दो और ईश्वर के संकीर्तन को मन में बसा लो। हे नानक! एक अद्वितीय परमेश्वर सब लोगों में मौजूद है॥२॥१॥

बसंतु महला ९ ॥ पापी हीऐ मै कामु बसाइ ॥ मनु चंचलु या ते गहिओ न जाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जोगी जंगम अरु संनिआस ॥ सभ ही परि डारी इह फास ॥ १ ॥ जिहि जिहि हरि को नामु सम्हारि ॥ ते भव सागर उतरे पारि ॥ २ ॥ जन नानक हरि की सरनाइ ॥ दीजै नामु रहै गुन गाइ ॥ ३ ॥ २ ॥

पापी मनुष्य के दिल में कामवासना बसी रहती है, अतः उसका चंचल मन नियंत्रण में नहीं आता॥१॥ रहाउ॥ बड़े-बड़े योगी, ब्रह्मचारी और सन्यासी इत्यादि सब पर कामवासना ने अपना यह शिकंजा डाला हुआ है॥१॥ जिस-जिस जीव ने भी ईश्वर के नाम की भक्ति की है, वे संसार-सागर से पार उतर गए हैं॥२॥ नानक विनती करते हैं कि भक्त ईश्वर की शरण में है, उसको नाम प्रदान करो ताकि तेरा गौरवगान करता रहे॥३॥२॥

बसंतु महला ६ ॥ माई मै धनु पाइओ हरि नामु ॥ मनु मेरो धावन ते छूटिओ करि बैठो बिसरामु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ माइआ ममता तन ते भागी उपजिओ निरमल गिआनु ॥ लोभ मोह एह परसि न साकै गही भगति भगवान ॥ १ ॥ जनम जनम का संसा चूका रतनु नामु जब पाइआ ॥ त्रिसना सकल बिनासी मन ते निज सुख माहि समाइआ ॥ २ ॥ जा कउ होत दइआलु किरपा निधि सो गोबिंद गुन गावै ॥ कहु नानक इह बिधि की संपै कोऊ गुरमुखि पावै ॥ ३ ॥ ३ ॥

हे माँ ! मैंने हरि-नाम रूपी धन पा लिया है, जिससे मेरा मन विकारों की ओर दौड़ने से हट गया है और नाम-स्मरण में सुखपूर्वक टिक कर बैठ गया है॥१॥ रहाउ॥ शरीर से माया, ममता दूर हुई तो निर्मल ज्ञान उत्पन्न हो गया। जब से भगवान की भक्ति की है, लोभ एवं मोह स्पर्श नहीं करते॥१॥ रहाउ॥ जब हरि-नाम रूपी रत्न पाया तो जन्म-जन्मांतर का संशय निवृत्त हो गया। मन से सारी तृष्णा नाश हो गई है और परमसुख में लीन हूँ॥२॥ जिस पर कृपानिधि दयालु होता है, वही जीव परमात्मा के गुण गाता है। हे नानक ! इस तरह की संपति कोई गुरुमुख ही प्राप्त करता है॥३॥३॥

बसंतु महला ६ ॥ मन कहा बिसारिओ राम नामु ॥ तनु बिनसै जम सिउ परै कामु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इहु जगु धूए का पहार ॥ तै साचा मानिआ किह बिचारि ॥ १ ॥ धनु दारा संपति ग्रेह ॥ कछु संगि न चालै समझ लेह ॥ २ ॥ इक भगति नाराइन होइ संगि ॥ कहु नानक भजु तिह एक रंगि ॥ ३ ॥ ४ ॥

हे मन ! परमात्मा का नाम क्योंकर भुला दिया है ? जब शरीर खत्म हो जाता है तो यम के सन्मुख कर्मों के हिसाब के लिए पेश होना पड़ता है॥१॥ रहाउ॥ यह जगत धुएँ का पहाड़ है, तू क्या सोचकर इसे सच मान बैठा है॥१॥ यह भलीभांति समझ ले कि धन-दौलत, प्यारी पत्नी, संपत्ति तथा सुन्दर घर में से कुछ भी साथ नहीं जाता॥२॥ एकमात्र ईश्वर की भक्ति ही साथ निभाती है। अतः नानक का कथन है कि निमग्न होकर उसका भजन करते रहो॥३॥४॥

बसंतु महला ६ ॥ कहा भूलिओ रे झूठे लोभ लाग ॥ कछु बिगरिओ नाहिन अजहु जाग ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सम सुपनै कै इहु जगु जानु ॥ बिनसै छिन मै साची मानु ॥ १ ॥ संगि तेरै हरि बसत नीत ॥ निस बासुर भजु ताहि मीत ॥ २ ॥ बार अंत की होइ सहाइ ॥ कहु नानक गुन ता के गाइ ॥ ३ ॥ ५ ॥

हे मनुष्य ! संसार के झूठे लोभ में फँसकर क्यों भूल रहे हो, अब भी कुछ बिगड़ा नहीं, सावधान हो जा॥१॥ रहाउ॥ इस संसार को सपने के समान जान और इस सच्चाई को भी मान ले कि यह पल में ही समाप्त हो जाता है॥१॥ ईश्वर सदैव तेरे साथ रहता है, हे मित्र ! दिन-रात उसके भजन में निमग्न रहो॥२॥ नानक का कथन है कि अन्तिम समय ईश्वर ही सहायता करता है, अतः उसके गुण गाते रहो॥३॥५॥

बसंतु महला १ असटपदीआ घरु १ दुतुकीआ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

जगु कऊआ नामु नही चीति ॥ नामु बिसारि गिरै देखु भीति ॥ मनूआ डोलै चीति अनीति ॥ जग सिउ तूटी झूठ परीति ॥ १ ॥ कामु क्रोधु बिखु बजरु भारु ॥ नाम बिना कैसे गुन चारु ॥ १ ॥ रहाउ

॥ घरु बालू का घूमन घेरि ॥ बरखसि बाणी बुदबुदा हेरि ॥ मात्र बूंद ते धरि चकु फेरि ॥ सरब जोति नामै की चेरि ॥ २ ॥ सरब उपाइ गुरू सिरि मोरु ॥ भगति करउ पग लागउ तोर ॥ नामि रतो चाहउ तुझ ओरु ॥ नामु दुराइ चलै सो चोरु ॥ ३ ॥ पति खोई बिखु अंचलि पाइ ॥ साच नामि रतो पति सिउ घरि जाइ ॥ जो किछु कीन्हसि प्रभु रजाइ ॥ भै मानै निरभउ मेरी माइ ॥ ४ ॥ कामनि चाहै सुंदरि भोगु ॥ पान फूल मीठे रस रोग ॥ खीलै बिगसै तेतो सोग ॥ प्रभ सरणागति कीन्हसि होग ॥ ५ ॥ कापड़ु पहिरसि अधिकु सीगारु ॥ माटी फूली रूपु बिकारु ॥ आसा मनसा बांधो बारु ॥ नाम बिना सूना घरु बारु ॥ ६ ॥ गाछहु पुत्री राज कुआरि ॥ नामु भणहु सचु दोतु सवारि ॥ प्रिउ सेवहु प्रभ प्रेम अधारि ॥ गुर सबदी बिखु तिआस निवारि ॥ ७ ॥ मोहनि मोहि लीआ मनु मोहि ॥ गुर कै सबदि पछाना तोहि ॥ नानक ठाढे चाहहि प्रभू दुआरि ॥ तेरे नामि संतोखे किरपा धारि ॥ ८ ॥ १ ॥

यह संसार कौआ है, परमात्मा को याद नहीं करता। यह प्रभु का नाम भुलाकर बुराई की रोटियाँ चुगता है। दिल में दुष्टता व बुरा आचरण भरा रहने की वजह से इसका मन डोलता रहता है, ऐसा देखकर जगत से हमारी झूठी प्रीति टूट गई है॥१॥ काम, क्रोध का विष भारी बोझ है, फिर भला प्रभु नाम का भजन किए बिना कैसे सद्व्यवहार बन सकता है॥१॥ रहाउ॥ यह तन रेत का घर है, जो संसारिक भंवर में फंसा हुआ है और जिंदगी बारिश में बुलबुले की मानिंद है। रचनहार ने प्रकृति का चक्र घुमाकर बूँद मात्र से तन की रचना की है, सबमें उसकी ज्योति विद्यमान है और आत्मा उसके नाम की सेविका है॥२॥ पूरे संसार को उत्पन्न करने वाला परमेश्वर ही मेरा गुरु है। मेरी यही तमन्ना है कि तेरे चरणों में लीन रहकर तेरी भक्ति में रत रहूँ। तेरे नाम-स्मरण में लीन रहूँ और तुझे ही चाहता रहूँ। जो व्यक्ति परमात्मा के नाम भजन से दूर रहकर चलता है, वह चोर समान है॥३॥ वह विषय-विकारों में लीन रहकर अपनी प्रतिष्ठा खो देता है। पर जो परमात्मा के सच्चे नाम में लीन रहता है, वह सम्मानपूर्वक अपने सच्चे घर जाता है। जो कुछ परमात्मा करता है, अपनी मर्जी से करता है। हे मेरी माता! जो उसका भय मानता है, वही निर्भय है॥४॥ जीव रूपी कामिनी सुन्दर पदार्थों का भोग चाहती है, परन्तु पान-फूल मीठे रस सब रोग ही पैदा करते हैं। जितना वह संसार के पदार्थों में रत रहकर खुश होती है, उतना ही दुखी होती है। प्रभु की शरण में रहना चाहिए, वह जो करता है, वही होता है॥ ५॥ जीव रूपी कामिनी सुन्दर वस्त्र धारण करती है और बहुत सारे शृंगार करती है। अपना सुन्दर शरीर देखकर वह बहुत प्रसन्न होती है और उसका रूप विकारों की ओर प्रोत्साहित करता है। वह जीवन की लालसाओं एवं कामनाओं के कारण अपने घर को ज्ञान के बिना बंद कर लेती है, परन्तु प्रभु नाम के बिना उसका घर बार बिल्कुल सूना है॥६॥ हे राजकुमारी, राजपुत्रियो! उठो, जाओ ब्रह्ममुहूर्त के वक्त परमात्मा के नाम की स्तुति करो। प्रभु के प्रेम को आसरा बनाकर उस प्रियतम की उपासना करो। गुरु के उपदेश द्वारा विकारों की प्यास का निवारण करो॥ ७॥ हे प्यारे प्रभु! तूने यह मन मोह लिया है और गुरु के उपदेश द्वारा उसे पहचान लिया है। गुरु नानक विनती करते हैं कि हे प्रभु! हम तेरे द्वार पर खड़े हैं, चाहते हैं कि कृपा करो ताकि तेरे नाम से संतोष प्राप्त हो सके॥८॥१॥

बसंतु महला १ ॥ मनु भूलउ भरमसि आइ जाइ ॥ अति लुबध लुभानउ बिखम माइ ॥ नह असथिरु दीसै एक भाइ ॥ जिउ मीन कुंडलीआ कंठि पाइ ॥ १ ॥ मनु भूलउ समझसि साचि नाइ ॥ गुर सबदु बीचारे सहज भाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनु भूलउ भरमसि भवर तार ॥ बिल बिरथे चाहै

बहु बिकार ॥ मैगल जिउ फाससि कामहार ॥ कड़ि बंधनि बाधिओ सीस मार ॥ २ ॥ मनु मुगधौ दादरु भगतिहीनु ॥ दरि भ्रसट सरापी नाम बीनु ॥ ता कै जाति न पाती नाम लीन ॥ सभि दूख सखाई गुणह बीन ॥ ३ ॥ मनु चलै न जाई ठाकि राखु ॥ बिनु हरि रस राते पति न साखु ॥ तू आपे सुरता आपि राखु ॥ धरि धारण देखै जाणै आपि ॥ ४ ॥ आपि भुलाए किसु कहउ जाइ ॥ गुरु मेले बिरथा कहउ माइ ॥ अवगण छोडउ गुण कमाइ ॥ गुर सबदी राता सचि समाइ ॥ ५ ॥ सतिगुर मिलिऐ मति ऊतम होइ ॥ मनु निरमलु हउमै कढै धोइ ॥ सदा मुकतु बंधि न सकै कोइ ॥ सदा नामु वखाणै अउरु न कोइ ॥ ६ ॥ मनु हरि कै भाणै आवै जाइ ॥ सभ महि एको किछु कहणु न जाइ ॥ सभु हुकमो वरतै हुकमि समाइ ॥ दूख सूख सभ तिसु रजाइ ॥ ७ ॥ तू अभुलु न भूलौ कदे नाहि ॥ गुर सबदु सुणाए मति अगाहि ॥ तू मोटउ ठाकुरु सबद माहि ॥ मनु नानक मानिआ सचु सलाहि ॥ ८ ॥ २ ॥

भूला हुआ मन भटकता एवं आता जाता रहता है, वह इतना लोभी बन जाता है कि विषय-विकारों के लोभ में ही व्याप्त रहता है। न ही ईश्वर की भक्ति में स्थिर दिखाई देता है। इसकी दशा तो इस प्रकार है ज्यों मछली गले में काँटा फंसा लेती है॥१॥ भूला हुआ मन सच्चे नाम के सुमिरन से ही सही रास्ते को समझता है और सहज-स्वभाव गुरु शब्द का चिंतन करता है॥१॥ रहाउ॥ भूला हुआ मन भंवरे की तरह भटकता है और व्यर्थ ही बहुत सारे विकारों की चाह करता है। इसका हाल तो इस तरह है ज्यों हाथी कामवासना में फंसा रहता है, जंजीर के साथ बंधकर सिर पर चोटें सहता है॥२॥ परमात्मा की भक्ति से विहीन मूर्ख मन मेंढक समान है। प्रभु के द्वार से निकाला हुआ, शापित एवं नाम से विहीन है। ऐसे व्यक्ति की न कोई जाति है, न वंश है और उसका कोई नाम तक नहीं लेता। गुणों से विहीन होने के कारण सभी दुख उसके साथी बन जाते हैं॥३॥ मन बहुत चंचल है, बिल्कुल नहीं टिकता, इसे काबू में रखना चाहिए। ईश्वर की भक्ति रस में रत हुए बिना इसकी कोई प्रतिष्ठा नहीं और न ही कोई भरोसा करता है। हे परमेश्वर ! तू स्वयं ध्यान रखने वाला और स्वयं ही बचाने वाला है। दुनिया को बनाकर स्वयं ही देखता एवं जानता है॥४॥ ईश्वर स्वयं ही भुला देता है तो फिर किसके पास जाकर फरियाद की जाए। हे माँ! गुरु से भेंटवार्ता कर उसे मन की व्यथा बताई जा सकती है। अवगुणों को छोड़कर गुणों की कमाई करो। गुरु के उपदेश में रत रहकर सत्य में लीन होना चाहिए॥५॥ अगर सच्चा गुरु मिल जाए तो बुद्धि उत्तम हो जाती है। अहम् की मैल को धो कर मन निर्मल हो जाता है। जीव सदा के लिए मुक्त हो जाता है और कोई बन्धन उसे बांध नहीं सकता। वह सदा प्रभु के नाम की चर्चा करता है और किसी अन्य की बात नहीं करता॥६॥ मन ईश्वर की रज़ा से ही आता जाता है, सब में एक ईश्वर ही मौजूद है और उसकी रज़ा पर एतराज नहीं किया जा सकता। सब में उसका हुक्म चल रहा है और पूरा संसार उसके हुक्म में विलीन है। संसार के समस्त दुख-सुख उसकी रज़ा से प्राप्त होते हैं॥७॥ हे ईश्वर ! तू भूलों से रहित है और कभी भूल नहीं करता। जिसे गुरु उपदेश सुनाता है, उसकी बुद्धि उज्ज्वल हो जाती है। हे निरंकार ! तू बड़ा मालिक है और शब्द में विद्यमान है। गुरु नानक फुरमाते हैं कि सच्चे परमेश्वर की स्तुति से मन आनंदित हो गया है॥८॥२॥

बसंतु महला १ ॥ दरसन की पिआस जिसु नर होइ ॥ एकतु राचै परहरि दोइ ॥ दूरि दरदु मथि अंम्रितु खाइ ॥ गुरमुखि बूझै एक समाइ ॥ १ ॥ तेरे दरसन कउ केती बिललाइ ॥ विरला को चीनसि गुर सबदि मिलाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बेद वखाणि कहहि इकु कहीऐ ॥ ओहु बेअंतु अंतु किनि लहीऐ

॥ एको करता जिनि जगु कीआ ॥ बाझु कला धरि गगनु धरीआ ॥ २ ॥ एको गिआनु धिआनु धुनि बाणी ॥ एकु निरालमु अकथ कहाणी ॥ एको सबदु सचा नीसाणु ॥ पूरे गुर ते जाणै जाणु ॥ ३ ॥ एको धरमु द्रिड़ै सचु कोई ॥ गुरमति पूरा जुगि जुगि सोई ॥ अनहदि राता एक लिव तार ॥ ओहु गुरमुखि पावै अलख अपार ॥ ४ ॥ एको तखतु एको पातिसाहु ॥ सरबी थाई वेपरवाहु ॥ तिस का कीआ त्रिभवण सारु ॥ ओहु अगमु अगोचरु एकंकारु ॥ ५ ॥ एका मूरति साचा नाउ ॥ तिथै निबड़ै साचु निआउ ॥ साची करणी पति परवाणु ॥ साची दरगह पावै माणु ॥ ६ ॥ एका भगति एको है भाउ ॥ बिनु भै भगती आवउ जाउ ॥ गुर ते समझि रहै मिहमाणु ॥ हरि रसि राता जनु परवाणु ॥ ७ ॥ इत उत देखउ सहजे रावउ ॥ तुझ बिनु ठाकुर किसै न भावउ ॥ नानक हउमै सबदि जलाइआ ॥ सतिगुरि साचा दरसु दिखाइआ ॥ ८ ॥ ३ ॥

जिस पुरुष को प्रभु दर्शन की तीव्र लालसा होती है, वह दुविधा को त्यागकर केवल प्रभु में ही लीन रहता है। वह नाम अमृत का मंथन करके सेवन करता है, जिससे उसका दुख दर्द दूर हो जाता है। गुरु से तथ्य को बूझकर वह एक प्रभु में समाया रहता है॥ १॥ हे परमेश्वर! तेरे दर्शन के लिए कितने ही लोग तरसते रहते हैं परन्तु कोई विरला ही गुरु के उपदेश में लीन रहकर पहचानता है॥ १॥ रहाउ॥ वेद व्याख्या करके कहते हैं कि एक ईश्वर की भक्ति करो, वह बेअंत है और उसका रहस्य कौन पा सकता है। एक वही रचयिता है, जिसने पूरे जगत को बनाया है। उसने बिना किसी सहारे के धरती एवं गगन को स्थापित किया हुआ है॥ २॥ ईश्वरीय वाणी की धुन एकमात्र ज्ञान एवं ध्यान है, एकमात्र वही संसार से निर्लिप्त है, जिसकी कथा अकथनीय है। एक शब्द ही ईश्वर का सच्चा निशान है और पूरे गुरु से मनुष्य इस बात को जान पाता है॥ ३॥ जो कोई प्रभु-भक्ति को सच्चा धर्म मानकर बसा लेता है, वह गुरु के उपदेशानुसार युग-युग सफल होता है। वह अनाहत नाद में लीन होकर ईश्वर में लगन लगाए रखता है। वह गुरु के माध्यम से अलख परमात्मा को पा लेता है॥ ४॥ एक परमेश्वर ही पूरे विश्व का बादशाह है और एक उसका ही सिंहासन स्थापित है। वह बेपरवाह है, सब में व्याप्त है। तीनों लोकों का सार भी उसका बनाया हुआ है, वह एक ओंकार अपहुँच एवं मन-वाणी से परे है॥ ५॥ यह सम्पूर्ण सृष्टि उसका स्वरूप है, उसका नाम शाश्वत है, वह अपने दरबार में हर जीव के साथ सच्चा न्याय करता है। जो सत्कर्म करता है, उसे ही प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। ऐसा जीव प्रभु के सच्चे दरबार में सम्मान पाता है॥ ६॥ एक ईश्वर की भक्ति और एक उसका प्रेम ही मोक्ष का साधन है। प्रभु की भक्तिभाव के बिना आवागमन बना रहता है। गुरु से अच्छी तरह समझ कर मेहमान की तरह रहना चाहिए और जो व्यक्ति ईश्वर की भक्ति में लीन रहता है, वही सफल होता है॥ ७॥ हे मालिक! इधर-उधर तुझे ही देखता हूँ और सहज स्वभाव तेरी भक्ति में लीन हूँ। तेरे सिवा किसी को नहीं चाहता। गुरु नानक का फुरमान है कि जब जीव ने गुरु के शब्द द्वारा अहम् को जलाया तो सच्चे गुरु ने उसे ईश्वर के दर्शन करा दिए॥ ८॥ ३॥

बसंतु महला १ ॥ चंचलु चीतु न पावै पारा ॥ आवत जात न लागै बारा ॥ दूखु घणो मरीऐ करतारा ॥ बिनु प्रीतम को करै न सारा ॥ १ ॥ सभ ऊतम किसु आखउ हीना ॥ हरि भगती सचि नामि पतीना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अउखध करि थाकी बहुतेरे ॥ किउ दुखु चूकै बिनु गुर मेरे ॥ बिनु हरि भगती दूख घणेरे ॥ दुख सुख दाते ठाकुर मेरे ॥ २ ॥ रोगु वडो किउ बांधउ धीरा ॥ रोगु बुझै सो काटै पीरा ॥ मै अवगण मन माहि सरीरा ॥ ढूढत खोजत गुरि मेले बीरा ॥ ३ ॥ गुर का सबदु दारू हरि नाउ ॥

जिउ तू राखहि तिवै रहाउ ॥ जगु रोगी कह देखि दिखाउ ॥ हरि निरमाइलु निरमलु नाउ ॥ ४ ॥ घर महि घरु जो देखि दिखावै ॥ गुर महली सो महलि बुलावै ॥ मन महि मनूआ चित महि चीता ॥ ऐसे हरि के लोग अतीता ॥ ५ ॥ हरख सोग ते रहहि निरासा ॥ अंम्रितु चाखि हरि नामि निवासा ॥ आपु पछाणि रहै लिव लागा ॥ जनमु जीति गुरमति दुखु भागा ॥ ६ ॥ गुरि दीआ सचु अंम्रितु पीवउ ॥ सहजि मरउ जीवत ही जीवउ ॥ अपणो करि राखहु गुर भावै ॥ तुमरो होइ सु तुझहि समावै ॥ ७ ॥ भोगी कउ दुखु रोग विआपै ॥ घटि घटि रवि रहिआ प्रभु जापै ॥ सुख दुख ही ते गुर सबदि अतीता ॥ नानक रामु रवै हित चीता ॥ ८ ॥ ४ ॥

चंचल मन संसार-सागर से पार नहीं उतरता और पुनः पुनः संसार में आता जाता है। हे ईश्वर ! इस कारण बहुत दुख भोगने पड़ते हैं और तेरे बिना हमारी कोई संभाल नहीं करता॥ १॥ जब सभी लोग अच्छे हैं तो फिर भला किसको बुरा कह सकता हूँ। जो परमात्मा की भक्ति करता है, सच्चे नाम के संकीर्तन में लीन रहता है, उसी का मन संतुष्ट होता है॥ १॥ रहाउ॥ बहुत सारी दवाइयों का इस्तेमाल कर थक गई हूँ, लेकिन गुरु के बिना क्योंकर मेरा दुखों से छुटकारा हो सकता है। परमात्मा की भक्ति के बिना बहुत दुख सहने पड़ते हैं लेकिन यह दुख सुख भी देने वाला मेरा मालिक ही है॥ २॥ मेरा रोग बहुत बड़ा है, फिर भला मुझे क्योंकर हौसला हो सकता है। ईश्वर मेरा रोग जानता है, वही मेरी पीड़ा काट सकता है। मेरे मन में अवगुण ही मौजूद हैं, खोज तलाश करते हुए गुरु से संपर्क होगा तो वह अवगुण दूर कर देगा॥ ३॥ इस रोग की दवा गुरु का शब्द हरिनाम है। हे प्रभु ! जैसे तू रखता है, वैसे ही हमने रहना है। जब पूरा जगत ही रोगी है, तो फिर भला किसको अपना रोग दिखाऊँ। केवल ईश्वर ही पवित्र पावन है, उसका नाम भी पावन है॥ ४॥ जो हृदय घर में भगवान के दर्शन पाकर अन्य जिज्ञासुओं को दर्शन करवाता है, वह गुरु भगवान के घर में बुलाता है। उनका मन स्थिरचित हो जाता है, ऐसे ईश्वर के उपासक मोह-माया से अलिप्त रहते हैं॥ ५॥ वे खुशी एवं गम से निर्लिप्त रहते हैं और ईश्वर के नामामृत को चखकर उसी में लीन रहते हैं। जो आत्म-ज्ञान पा कर ईश्वर की लगन में लगे रहते हैं, वे अपना जीवन जीत लेते हैं और गुरु के मतानुसार इनके दुख भी समाप्त हो जाते हैं॥ ६॥ गुरु का प्रदान किया हुआ ईशोपासना रूपी सच्चा अमृतपान करो, इस तरह सहज स्वाभाविक विषय-विकारों की ओर से मरकर जीते रहो। अगर गुरु को उपयुक्त लगे तो अपना बनाकर रखेगा। जो तुम्हारा (भक्त) होता है, वह तुझ में ही विलीन होता है॥ ७॥ भोगी व्यक्ति को दुख-रोग सताते रहते हैं, पर जो प्रभु की अर्चना करता है, उसे सब में प्रभु ही दृष्टिगत होता है। गुरु के वचनों से वह संसार के सुखों एवं दुखों से अलिप्त रहता है। गुरु नानक फुरमान करते हैं कि वह प्रेमपूर्वक दत्तचित होकर ईश्वर की उपासना में रत रहता है॥ ८॥ ४॥

बसंतु महला १ इक तुकीआ ॥ मतु भसम अंधूले गरबि जाहि ॥ इन बिधि नागे जोगु नाहि ॥ १ ॥ मूढ़े काहे बिसारिओ तै राम नाम ॥ अंत कालि तेरै आवै काम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर पूछि तुम करहु बीचारु ॥ जह देखउ तह सारिगपाणि ॥ २ ॥ किआ हउ आखा जां कछू नाहि ॥ जाति पति सभ तेरै नाइ ॥ ३ ॥ काहे मालु दरबु देखि गरबि जाहि ॥ चलती बार तेरो कछू नाहि ॥ ४ ॥ पंच मारि चितु रखहु थाइ ॥ जोग जुगति की इहै पांइ ॥ ५ ॥ हउमै पैखड़ु तेरे मनै माहि ॥ हरि न चेतहि मूड़े मुकति जाहि ॥ ६ ॥ मत हरि विसरिऐ जम वसि पाहि ॥ अंत कालि मूड़े चोट खाहि ॥ ७ ॥ गुर सबदु बीचारहि आपु जाइ ॥ साच जोगु मनि वसै आइ ॥ ८ ॥ जिनि जीउ पिंडु दिता तिसु चेतहि नाहि ॥ मड़ी मसाणी मूड़े जोगु नाहि ॥ ९ ॥ गुण नानकु बोलै भली बाणि ॥ तुम होहु सुजाखे लेहु पछाणि ॥ १० ॥ ५ ॥

अरे मूर्ख! शरीर पर भस्म लगाकर अभिमान नहीं करना चाहिए, क्योंकि नागा बनकर इस विधि से योग नहीं होता॥१॥ ओह मूर्ख! तूने ईश्वर का नाम क्यों भुला दिया है, क्योंकि अन्तिम समय यही तेरे काम आना है॥१॥ रहाउ॥ गुरु से पूछकर तुम चिंतन कर लो, जहां भी दृष्टि जाएगी, वहाँ ईश्वर ही विद्यमान हैं॥२॥ हे परमेश्वर! जब कुछ भी अपना नहीं, कैसे कह सकता हूँ, यह मेरा है। तेरा नाम ही मेरी जाति एवं प्रतिष्ठा है॥३॥ तू धन दौलत को देखकर क्यों अभिमान करता है, क्योंकि संसार से चलते समय तेरे साथ कुछ भी नहीं जाने वाला॥४॥ कामादिक पांच विकारों को मारकर अपना मन स्थिर करके रखो, योग युक्ति की यही आधारशिला है॥५॥ तेरे मन में अभिमान का बन्धन पड़ा हुआ है, हे मूर्ख! ईश्वर का तू चिंतन नहीं करता, जिससे मुक्ति प्राप्त होनी है॥६॥ परमात्मा को मत भुलाओ, अन्यथा यम शिकंजे में ले लेगा। हे मूर्ख! अंतकाल तू कष्ट भोगता रहेगा॥७॥ जब गुरु उपदेश का चिंतन कर अहम् दूर होता है तो मन में सच्चा योग बस जाता है॥८॥ हे मूर्ख! जिसने तुझे शरीर एवं प्राण दिए हैं, उसका तू चिन्तन नहीं करता। श्मशान घाट में भी सच्चा योग नहीं है॥६॥ नानक यही कल्याणकारी एवं भली बात कहता है कि तुम ज्ञानवान होकर सत्य को पहचान लो॥१०॥५॥

बसंतु महला १ ॥ दुबिधा दुरमति अधुली कार ॥ मनमुखि भरमै मझि गुबार ॥ १ ॥ मनु अंधुला अंधुली मति लागै ॥ गुर करणी बिनु भरमु न भागै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनमुखि अंधुले गुरमति न भाई ॥ पसू भए अभिमानु न जाई ॥ २ ॥ लख चउरासीह जंत उपाए ॥ मेरे ठाकुर भाणे सिरजि समाए ॥ ३ ॥ सगली भूलै नही सबदु अचारु ॥ सो समझै जिसु गुरु करतारु ॥ ४ ॥ गुर के चाकर ठाकुर भाणे ॥ बखसि लीए नाही जम काणे ॥ ५ ॥ जिन कै हिरदै एको भाइआ ॥ आपे मेले भरमु चुकाइआ ॥ ६ ॥ बेमुहताजु बेअंतु अपारा ॥ सचि पतीजै करणैहारा ॥ ७ ॥ नानक भूले गुरु समझावै ॥ एकु दिखावै साचि टिकावै ॥ ८ ॥ ६ ॥

दुविधा और दुर्मति अज्ञानांध कार्यों में प्रवृत्त करती है और स्वेच्छाचारी उलझनों में भटकता है॥१॥ अज्ञानांध मन अंधी मति में ही तल्लीन रहता है और गुरु द्वारा बताया कार्य किए बिना उसका भ्रम दूर नहीं होता॥१॥ रहाउ॥ अंधे स्वेच्छाचारी को गुरु-मत अच्छी नहीं लगती। इस तरह वह पशु बन जाता है और उसका अभिमान दूर नहीं होता॥२॥ ईश्वर ने चौरासी लाख योनियों वाले जीवों को उत्पन्न किया है, जब मेरे मालिक की मर्जी होती है तो वह उनकी रचना कर देता है और तदन्तर वे उसी में विलीन हो जाते हैं॥३॥ जिनके पास शब्द-गुरु एवं सही जीवन आचरण नहीं, ऐसे सब लोग भूले हुए हैं। इस तथ्य को वही समझता है, जिसका गुरु-परमेश्वर मार्गदर्शन करने वाला है॥४॥ गुरु के सेवक ईश्वर की रज़ा में खुश रहते हैं। परमेश्वर कृपा करके उनको बचा लेता है और वे यम के शिकंजे में नहीं पड़ते॥५॥ जिनके हृदय को ईश्वर भाया है, वह स्वयं ही मिलकर भ्रम दूर कर देता है॥६॥ स्रष्टा परमेश्वर किसी पर मोहताज नहीं, वह बे-अंत एवं अपार है, वह कर्ता-पुरुष सत्य एवं कीर्तिगान से ही प्रसन्न होता है॥७॥ गुरु नानक फुरमाते हैं कि भूल करने वाले जीव को गुरु ही समझाकर सही रास्ता बताता है, वह एक परम सत्य को दिखाता है और सत्य में स्थिर करता है॥८॥६॥

बसंतु महला १ ॥ आपे भवरा फूल बेलि ॥ आपे संगति मीत मेलि ॥ १ ॥ ऐसी भवरा बासु ले ॥ तरवर फूले बन हरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपे कवला कंतु आपि ॥ आपे रावे सबदि थापि ॥ २ ॥ आपे बछरू गऊ खीरु ॥ आपे मंदरु थंम्हु सरीरु ॥ ३ ॥ आपे करणी करणहारु ॥ आपे गुरमुखि करि

बीचारु ॥ ४ ॥ तू करि करि देखहि करणहारु ॥ जोति जीअ असंख देइ अधारु ॥ ५ ॥ तू सरु सागरु गुण गहीरु ॥ तू अकुल निरंजनु परम हीरु ॥ ६ ॥ तू आपे करता करण जोगु ॥ निहकेवलु राजन सुखी लोगु ॥ ७ ॥ नानक ध्रापे हरि नाम सुआदि ॥ बिनु हरि गुर प्रीतम जनमु बादि ॥ ८ ॥ ७ ॥

ईश्वर स्वयं ही भँवरा, फूल एवं बेल है और वह स्वयं ही सज्जनों की संगत में मिलाने वाला है॥१॥ ऐसा भँवरा बनकर खुशबू प्राप्त कर कि पेड़-पौधे, फल फूल, वन सब हरे भरे महसूस हों॥१॥ रहाउ॥ लक्ष्मी एवं लक्ष्मीपति नारायण स्वयं ही है। वह शब्द में स्थित होकर स्वयं ही रमण कर रहा है॥२॥ बछड़ा, गाय और दूध भी वह स्वयं ही है। वह स्वयं ही शरीर रूपी मंदिर को स्थापित रखने वाला स्तंभ है॥३॥ वह स्वयं ही कारण और करने वाला भी वही है और वह स्वयं ही गुरुमुख बनकर चिंतन करता है॥४॥ हे स्रष्टा! तू सर्वशक्तिमान है और सृष्टि रचना कर तू ही संभाल करता है। तू असंख्य जीवों को अपनी ज्योति द्वारा आसरा देता है॥५॥ तू गुणों का सरोवर एवं गहरा सागर है। तू कुलातीत, कालिमा से परे एवं परम हीरा है॥६॥ तू ही बनाने वाला है, सबकुछ कर सकने में परिपूर्ण है। तू स्वाधीन राजा है और तेरी प्रजा सुखी है॥७॥ हे नानक! परमात्मा के नाम स्वाद से ही तृप्ति होती है और प्रियतम गुरु परमेश्वर के बिना जिंदगी व्यर्थ है॥८॥७॥

बसंतु हिंडोलु महला १ घरु २ १ॐ सतिगुर प्रसादि ॥

नउ सत चउदह तीनि चारि करि महलति चारि बहाली ॥ चारे दीवे चहु हथि दीए एका एका वारी ॥ १ ॥ मिहरवान मधुसूदन माधौ ऐसी सकति तुम्हारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ घरि घरि लसकरु पावकु तेरा धरमु करे सिकदारी ॥ धरती देग मिलै इक वेरा भागु तेरा भंडारी ॥ २ ॥ ना साबूरु होवै फिरि मंगै नारदु करे खुआरी ॥ लबु अधेरा बंदीखाना अउगण पैरि लुहारी ॥ ३ ॥ पूंजी मार पवै नित मुदगर पापु करे कुोटवारी ॥ भावै चंगा भावै मंदा जैसी नदरि तुम्हारी ॥ ४ ॥ आदि पुरख कउ अलहु कहीऐ सेखां आई वारी ॥ देवल देवतिआ करु लागा ऐसी कीरति चाली ॥ ५ ॥ कूजा बांग निवाज मुसला नील रूप बनवारी ॥ घरि घरि मीआ सभनां जीआं बोली अवर तुमारी ॥ ६ ॥ जे तू मीर महीपति साहिबु कुदरति कउण हमारी ॥ चारे कुंट सलामु करहिगे घरि घरि सिफति तुम्हारी ॥ ७ ॥ तीरथ सिंम्रिति पुंन दान किछु लाहा मिलै दिहाड़ी ॥ नानक नामु मिलै वडिआई मेका घड़ी सम्हाली ॥ ८ ॥ १ ॥ ८ ॥

{गुरु नानक देव जी इस पद में कलियुग के प्रभाव, मुसलमानी राज्य एवं प्रभु की अल्लाह के नाम से बंदगी, हिन्दुस्तान में हिन्दुओं पर अत्याचार एवं देव मन्दिरों में मुगल बादशाओं द्वारा लगाए जा रहे टैक्स की तरफ इशारा कर रहे हैं। पर वे इसे मालिक की रज़ा मानते हैं।}

हे स्रष्टा! नवखण्ड, सप्तद्वीप, चौदह भवन, तीन लोक एवं चार युगों की रचना कर तुमने सम्पूर्ण सृष्टि को स्थापित कर दिया। वेद रूपी चार दीए तथा सतयुग, त्रेता, द्वापर एवं कलियुग को एक एक युग का मौका प्रदान कर दिया॥१॥ हे मेहरबान परमेश्वर! तुम्हारी शक्ति ऐसी है॥१॥ रहाउ॥ हर जीव में तेरी ज्योति विद्यमान है, यह तेरी सेना है और धर्मराज इनका अधिपति है। धरती बहुत बड़ी देग है, जहां से एक बार ही सब कुछ मिल जाता है और किए गए कर्मों के आधार पर फल मिलता है॥२॥ मन संतुष्ट नहीं होता, जीव बार-बार कामना करता है और झगड़ा करने वाला दुखी होता है। लालच मनुष्य के लिए घोर अंधेरा एवं कैदखाना है और उसके पैर में अवगुणों की बेड़ी पड़ी हुई है॥३॥ मनुष्य की दौलत यह है कि हर रोज मुदगरों की मार

पड़ रही है और पाप कोतवाल का कार्य करता है। हे ईश्वर! जैसी तुम्हारी कृपा-दृष्टि होती है, वैसा ही मनुष्य हो जाता है, अगर तुझे अच्छा लगे तो मनुष्य अच्छा बन जाता है और अगर बुरा लगे तो वह बुरा इन्सान बन जाता है॥४॥ अब इस कलियुग में मुसलमानों का शासन आ गया है, आदिपुरुष परमेश्वर को 'अल्लाह' कहा जा रहा है। ऐसी प्रथा चल पड़ी है कि देवताओं के मन्दिरों पर टैक्स लगाया जा रहा है॥५॥ हे ईश्वर! मुसलमानों ने हाथ में कूजा ले लिया है, बांग् दी जा रही है, नमाज पढ़ी जा रही है, मुसल्ला नजर आ रहा है, लोगों ने नीली वेशभूषा धारण कर ली है और सब ओर अल्लाह-हू-अकबर हो रहा है, घर-घर में मियाँ जी मियाँ जी कहा जा रहा है, और सब लोगों की बोली (उर्दू) बदल गई है॥६॥ हे मालिक! तू सम्पूर्ण विश्व का बादशाह है, यदि यह (मुसलमानी राज्य) तेरी मर्जी है, तो हम जीवों की क्या जुर्रत है? चारों दिशाएँ तुझे सलाम करती हैं और घर-घर में तेरी प्रशंसा का गान हो रहा है॥७॥ तीर्थ-यात्रा, स्मृतियों के पाठ एवं दान-पुण्य से तो कुछ दिन भर का लाभ मिलता है, मगर गुरु नानक साहिब का फुरमान है कि यदि परमात्मा के नाम का घड़ी भर सिमरन किया जाए तो ही सच्ची बड़ाई प्राप्त होती है॥८॥१॥८॥

बसंतु हिंडोलु घरु २ महला ४ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

कांइआ नगरि इकु बालकु वसिआ खिनु पलु थिरु न रहाई ॥ अनिक उपाव जतन करि थाके बारं बार भरमाई ॥ १ ॥ मेरे ठाकुर बालकु इकतु घरि आणु ॥ सतिगुरु मिलै त पूरा पाईऐ भजु राम नामु नीसाणु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इहु मिरतकु मड़ा सरीरु है सभु जगु जितु राम नामु नही वसिआ ॥ राम नामु गुरि उदकु चुआइआ फिरि हरिआ होआ रसिआ ॥ २ ॥ मै निरखत निरखत सरीरु सभु खोजिआ इकु गुरमुखि चलतु दिखाइआ ॥ बाहरु खोजि मुए सभि साकत हरि गुरमती घरि पाइआ ॥ ३ ॥ दीना दीन दइआल भए है जिउ क्रिसनु बिदर घरि आइआ ॥ मिलिओ सुदामा भावनी धारि सभु किछु आगै दालदु भंजि समाइआ ॥ ४ ॥ राम नाम की पैज वडेरी मेरे ठाकुरि आपि रखाई ॥ जे सभि साकत करहि बखीली इक रती तिलु न घटाई ॥ ५ ॥ जन की उसतति है राम नामा दह दिसि सोभा पाई ॥ निंदकु साकतु खवि न सकै तिलु अपणै घरि लूकी लाई ॥ ६ ॥ जन कउ जनु मिलि सोभा पावै गुण महि गुण परगासा ॥ मेरे ठाकुर के जन प्रीतम पिआरे जो होवहि दासनि दासा ॥ ७ ॥ आपे जलु अपरंपरु करता आपे मेलि मिलावै ॥ नानक गुरमुखि सहजि मिलाए जिउ जलु जलहि समावै ॥ ८ ॥ १ ॥ ६ ॥

शरीर रूपी नगर में मन रूपी एक नादान बालक रहता है, जो पल भर भी टिक कर नहीं रहता। इसके लिए अनेक उपाय इस्तेमाल कर थक गए हैं परन्तु बार-बार यह भटकता है॥१॥ हे मेरे ठाकुर! इस बालक को तुम ही स्थिर रख सकते हो। अगर सतगुरु से साक्षात्कार हो जाए तो पूर्ण परमेश्वर प्राप्त होता है। राम नाम का भजन करो, यही सच्चा रास्ता है॥१॥ रहाउ॥ अगर शरीर में राम नाम नहीं बसा तो यह मुर्दा और मिट्टी की ढेरी है। पूरा संसार नाम के बिना लाश समान है। जब गुरु राम नाम रूपी जल मुँह में डालता है तो यह पुनः हरा भरा हो जाता है॥२॥ मैंने जांच पड़ताल कर पूरे शरीर को खोजा है और गुरु ने मुझे एक कौतुक दिखाया है कि बाहर खोजते हुए सभी मायावी जीव मर खप गए हैं मगर गुरु की धारणा का अनुसरण करते हुए प्रभु को हृदय-घर में ही पा लिया है॥३॥ ईश्वर निर्धनों पर ऐसे दयालु होता है, ज्यों श्रीकृष्ण

विदुर के घर आया था। जब सुदामा श्रद्धा भावना से श्रीकृष्ण से मिला तो उन्होंने सब चीजें उसके घर पहुँचाकर सुदामा की गरीबी को दूर किया था॥ ४॥ राम नाम का भजन करने वाले की प्रतिष्ठा बहुत बड़ी है और मेरे मालिक ने स्वयं उसकी रक्षा की है। यदि सभी मायावी जीव चुगली एवं निन्दा करते रहे तो फिर भी एक तिल भर उसकी शोभा में कमी नहीं आती॥ ५॥ राम नाम का भजन करने वाला भक्त ही प्रशंसा का पात्र है और वह संसार भर में शोभा प्राप्त करता है, मगर निन्दा करने वाला मायावी जीव भक्त की शोभा बर्दाश्त नहीं करता और तृष्णा की अग्नि में जलता रहता है॥ ६॥ ईश्वर का भक्त अन्य भक्तगणों से मिलकर शोभा पाता है और उसके गुणों में और भी बढ़ौत्तरी होती है। जो ईश्वर के दासों के दास बन जाते हैं, वही भक्त मेरे प्रभु को प्यारे लगते हैं॥ ७॥ अपरंपार कर्ता आप ही जल है और स्वयं ही गुरुमुखों से मिलाता है। हे नानक! वह स्वाभाविक ही गुरु के संपर्क में मिला लेता है, ज्यों जल जल में विलीन हो जाता है॥ ८॥ १॥ ६॥

बसंतु महला ५ घरु १ दुतुकीआ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सुणि साखी मन जपि पिआर ॥ अजामलु उधरिआ कहि एक बार ॥ बालमीकै होआ साधसंगु ॥ ध्रू कउ मिलिआ हरि निसंग ॥ १ ॥ तेरिआ संता जाचउ चरन रेन ॥ ले मसतकि लावउ करि क्रिपा देन ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गनिका उधरी हरि कहै तोत ॥ गजइंद्र धिआइओ हरि कीओ मोख ॥ बिप्र सुदामे दालदु भंज ॥ रे मन तू भी भजु गोबिंद ॥ २ ॥ बधिकु उधारिओ खमि प्रहार ॥ कुबिजा उधरी अंगुसट धार ॥ बिदरु उधारिओ दासत भाइ ॥ रे मन तू भी हरि धिआइ ॥ ३ ॥ प्रहलाद रखी हरि पैज आप ॥ बसत्र छीनत द्रोपती रखी लाज ॥ जिनि जिनि सेविआ अंत बार ॥ रे मन सेवि तू परहि पार ॥ ४ ॥ धंनै सेविआ बाल बुधि ॥ त्रिलोचन गुर मिलि भई सिधि ॥ बेणी कउ गुरि कीओ प्रगासु ॥ रे मन तू भी होहि दासु ॥ ५ ॥ जैदेव तिआगिओ अहंमेव ॥ नाई उधरिओ सैनु सेव ॥ मनु डीगि न डोलै कहूं जाइ ॥ मन तू भी तरसहि सरणि पाइ ॥ ६ ॥ जिह अनुग्रहु ठाकुरि कीओ आपि ॥ से तैं लीने भगत राखि ॥ तिन का गुणु अवगणु न बीचारिओ कोइ ॥ इह बिधि देखि मनु लगा सेव ॥ ७ ॥ कबीरि धिआइओ एक रंग ॥ नामदेव हरि जीउ बसहि संगि ॥ रविदास धिआए प्रभ अनूप ॥ गुर नानक देव गोविंद रूप ॥ ८ ॥ १ ॥

हे मन! प्रेम से शिक्षाओं को सुनकर जाप कर। केवल एक बार नारायण का उच्चारण करने से अजामल का उद्धार हो गया। वाल्मीकि को साधुओं की संगत प्राप्त हुई तो वह पार हो गया। भक्त ध्रुव को दर्शन देकर ईश्वर प्राप्त हुआ॥ १॥ हे प्रभु! तेरे संतजनों की चरणरज चाहता हूँ, इसे लेकर माथे पर लगाऊँ, कृपा करके प्रदान करो॥ १॥ रहाउ॥ तोते को हरिनाम का पाठ करवाती हुई गणिका का उद्धार हो गया। हाथी ने ध्यान किया तो परमात्मा ने उसे मगरमच्छ से मुक्त करवाया। श्रीकृष्ण ने ब्राह्मण सुदामा की गरीबी को दूर किया। हे मन! तू भी ईश्वर का भजन कर ले॥ २॥ श्रीकृष्ण के पैर पर तीर से प्रहार करने वाले शिकारी का उद्धार किया। अंगूठे के स्पर्श मात्र से ही कुब्जा का उद्धार हो गया। सेवा भाव के कारण विदुर का पार उतारा कर दिया। हे मन! तू भी ईश्वर का ध्यान कर ले॥ ३॥ ईश्वर ने स्वयं अपने प्रिय भक्त प्रहलाद की लाज रखी। जब कौरवों की सभा में द्रौपदी के वस्त्रों का हरण किया जा रहा था तो ईश्वर ने ही लाज बचाई। जिस-जिसने भी मुसीबत के समय ईश्वर का स्मरण किया, उसे मुक्ति प्राप्त हुई।

हे मन! तू भी परमेश्वर का स्मरण कर ले, संसार-सागर से पार उतर जाओगे॥ ४॥ भोलेभाले बालबुद्धि भक्त धन्ना ने ईश्वर की अर्चना की तो प्रभु को पा लिया। त्रिलोचन ने गुरु को मिलकर सफलता प्राप्त की। बेणी को गुरु ने सत्य का ज्ञान प्रदान किया। हे मन! तू भी ईश्वर का दास बन जा॥ ५॥ जयदेव ने अहम्-भावना को त्याग दिया और सैन नाई भी ईश्वर की सेवा कर संसार-सागर से पार उतर गया। भक्त सैन का मन न ही विचलित हुआ और न ही डगमगाया। हे मन! तू भी ईश्वर शरण की लालसा कर॥ ६॥ हे ठाकुर! जिस पर तूने कृपा की है, उन भक्तों को तूने स्वयं बचा लिया है। उनके गुण-अवगुण की ओर तनिक ध्यान नहीं दिया। इस तरह देखकर यह मन भी ईश्वर की भक्ति में लग गया है॥ ७॥ भक्त कबीर ने प्रेमपूर्वक ईश्वर का ध्यान किया और नामदेव के साथ सदैव परमात्मा बसा रहा। रविदास ने भी प्रभु का भजन किया। नानक का कथन है कि *(हरिनाम के रसिया, दुनिया का कल्याण करने वाले)* गुरु नानक देव जी देवाधिदेव परमेश्वर का रूप हुए हैं॥ ८॥ १॥

बसंतु महला ५ ॥ अनिक जनम भ्रमे जोनि माहि ॥ हरि सिमरन बिनु नरकि पाहि ॥ भगति बिहूना खंड खंड ॥ बिनु बूझे जमु देत डंड ॥ १ ॥ गोबिंद भजहु मेरे सदा मीत ॥ साच सबद करि सदा प्रीति ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संतोखु न आवत कहूं काज ॥ धूंम बादर सभि माइआ साज ॥ पाप करंतौ नह संगाइ ॥ बिखु का माता आवै जाइ ॥ २ ॥ हउ हउ करत बधे बिकार ॥ मोह लोभ डूबौ संसार ॥ कामि क्रोधि मनु वसि कीआ ॥ सुपनै नामु न हरि लीआ ॥ ३ ॥ कब ही राजा कब मंगनहारु ॥ दूख सूख बाधौ संसार ॥ मन उधरण का साजु नाहि ॥ पाप बंधन नित पउत जाहि ॥ ४ ॥ ईठ मीत कोऊ सखा नाहि ॥ आपि बीजि आपे ही खांहि ॥ जा कै कीन्है होत बिकार ॥ से छोडि चलिआ खिन महि गवार ॥ ५ ॥ माइआ मोहि बहु भरमिआ ॥ किरत रेख करि करमिआ ॥ करणैहारु अलिपतु आपि ॥ नही लेपु प्रभ पुंन पापि ॥ ६ ॥ राखि लेहु गोबिंद दइआल ॥ तेरी सरणि पूरन क्रिपाल ॥ तुझ बिनु दूजा नही ठाउ ॥ करि किरपा प्रभ देहु नाउ ॥ ७ ॥ तू करता तू करणहारु ॥ तू ऊचा तू बहु अपारु ॥ करि किरपा लड़ि लेहु लाइ ॥ नानक दास प्रभ की सरणाइ ॥ ८ ॥ २ ॥

हम जीव अनेक जन्म योनियों में घूमते हैं, भगवान का स्मरण किए बिना नरक भोगते हैं। भगवान की भक्ति से विहीन जीव दुख-तकलीफों में पड़ा रहता है और ईश्वर को समझे बिना यम उसे दण्ड प्रदान करता है॥ १॥ हे मेरे मित्र! सदा ईश्वर का भजन करो और सच्चे शब्द से ही सदा प्रेम करो॥ १॥ रहाउ॥ किसी भी काम से संतोष प्राप्त नहीं होता और यह माया का प्रपंच बादल के धुएं की तरह है। पाप करते हुए मनुष्य संकोच नहीं करता और बुराईयों के जहर में लीन रहकर आवागमन में पड़ा रहता है॥ २॥ मनुष्य जितना अभिमान करता है, उसके विकारों में उतनी ही बढ़ौत्तरी होती है, इस तरह पूरा संसार लोभ मोह में डूब रहा है। काम, क्रोध ने मन को वशीभूत किया हुआ है, जिस कारण मनुष्य सपने में भी परमात्मा का नाम नहीं लेता॥ ३॥ मनुष्य कभी अमीर बन जाता है तो कभी सड़क पर भीख मांगने वाला भिखारी बन जाता है, इस तरह पूर्ण संसार दुख सुख में बंधा हुआ है। वह मन के उद्धार का कोई कार्य नहीं करता और नित्य पापों के बन्धन में पड़ा रहता है॥ ४॥ अंतकाल घनिष्ठ मित्रों में से कोई साथ नहीं देता और मनुष्य अपने किए शुभाशुभ कर्मों का ही फल पाता है। जिस धन दौलत को इकट्ठा करने में पाप करता है, उसे मूर्ख मनुष्य पल में ही छोड़कर चला जाता है॥ ५॥ माया मोह की वजह से जीव भटकता रहता है परन्तु कर्मरेख के आधार पर ही वह कर्म करता है। विधाता इन सब से आप अलिप्त है

और पाप-पुण्य का प्रभु पर कोई असर नहीं पड़ता॥ ६॥ हे दयालु परमेश्वर! मुझे संसार के बन्धनों से बचा लो, तू पूर्ण कृपालु है, तेरी शरण में आया हूँ, तेरे बिना अन्य कोई ठिकाना नहीं। हे प्रभु! कृपा करके नाम प्रदान करो॥७॥ हे परमेश्वर! तू ही संसार का कर्ता है, तू ही सब करने वाला है, तू महान् है, तू अपरंपार है। नानक विनती करते हैं कि कृपा करके अपने चरणों में लगा लो, दास तो प्रभु की शरण में पड़ा हुआ है॥ ८॥ २॥

बसंत की वार महलु ५ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

हरि का नामु धिआइ कै होहु हरिआ भाई ॥ करमि लिखंतै पाईऐ इह रुति सुहाई ॥ वणु त्रिणु त्रिभवणु मउलिआ अंम्रित फलु पाई ॥ मिलि साधू सुखु ऊपजै लथी सभ छाई ॥ नानकु सिमरै एकु नामु फिरि बहुड़ि न धाई ॥ १ ॥ पंजे बधे महाबली करि सचा ढोआ ॥ आपणे चरण जपाइअनु विचि दयु खड़ोआ ॥ रोग सोग सभि मिटि गए नित नवा निरोआ ॥ दिनु रैणि नामु धिआइदा फिरि पाइ न मोआ ॥ जिस ते उपजिआ नानका सोई फिरि होआ ॥ २ ॥ किथहु उपजै कह रहै कह माहि समावै ॥ जीअ जंत सभि खसम के कउणु कीमति पावै ॥ कहनि धिआइनि सुणनि नित से भगत सुहावै ॥ अगमु अगोचरु साहिबो दूसरु लवै न लावै ॥ सचु पूरै गुरि उपदेसिआ नानकु सुणावै ॥ ३ ॥ १ ॥

हे भाई! परमात्मा के नाम का गहन चिंतन करके तुम आनंदित हो जाओ, क्योंकि (प्रभु चिंतन के लिए) यह सुहावनी ऋतु अर्थात् मानव जन्म का अवसर उत्तम भाग्य से प्राप्त होता है। नाम रूपी अमृत फल पाकर प्रकृति तीनों लोक खिल उठे हैं। साधु-महात्मा को मिलकर सुख उत्पन्न होता है और दुखों की छाया दूर हो जाती है। नानक अद्वितीय परमेश्वर का स्मरण करता है, जिससे पुनः योनि चक्र में दौड़ना नहीं पड़ेगा॥१॥ जिसने भी सत्यस्वरूप परमेश्वर का सहारा लिया है, उसने कामादिक पाँच महाबली विकारों को बांध लिया है। प्रभु सुख दुख में साथ देकर अपने चरणों का ही जाप करवाता है। ऐसे जीव के रोग एवं गम सभी मिट जाते हैं और तंदरुस्त रहता है। वह दिन-रात प्रभु नाम का ध्यान करता हुआ जन्म-मरण से मुक्त हो जाता है। हे नानक! ऐसा भक्त जिस प्रभु से उत्पन्न होता है, उसी का रूप हो जाता है॥२॥ जीवात्मा कहाँ से पैदा होता है, कहाँ रहता और किस में विलीन हो जाता है। सब जीव मालिक के उत्पन्न किए हैं, कोई भी इसकी महत्ता नहीं पा सकता। जो ईश्वर की महिमा गाते हैं, उसका ध्यान करते हैं, नित्य भजन सुनते हैं, वही भक्त सुन्दर हैं। संसार का मालिक मन-वाणी से परे एवं अपहुँच है, कोई दूसरा उसके गुणों के बराबर तक नहीं पहुँचता। नानक तो पूर्ण गुरु का सच्चा उपदेश ही सुना रहा है॥३॥१॥

बसंतु बाणी भगतां की ॥ कबीर जी घरु १ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

मउली धरती मउलिआ अकासु ॥ घटि घटि मउलिआ आतम प्रगासु ॥ १ ॥ राजा रामु मउलिआ अनत भाइ ॥ जह देखउ तह रहिआ समाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दुतीआ मउले चारि बेद ॥ सिंम्रिति मउली सिउ कतेब ॥ २ ॥ संकरु मउलिओ जोग धिआन ॥ कबीर को सुआमी सभ समान ॥ ३ ॥ १ ॥

सम्पूर्ण धरती एवं आकाश ब्रह्म ज्योति से व्यापक है। हर मनुष्य में सर्वात्मा ही विद्यमान है॥ १॥ हे भाई! अनेक प्रकार से परब्रह्म परमेश्वर प्रकाशमान है, जहाँ भी मेरी दृष्टि जाती है, वहाँ ईश्वर ही व्याप्त है॥ १॥ रहाउ॥ द्वितीय- ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद एवं अथर्ववेद, अठारह

स्मृतियाँ तथा कतेब भी उसकी ज्योति से ही प्रकाशमान हैं॥२॥ योग में ध्यानशील भोलेशंकर भी उसकी ज्योति से ज्योतिष्मान हुए हैं। कबीर का स्वामी सब में समान रूप से व्याप्त है॥३॥१॥

पंडित जन माते पढ़ि पुरान ॥ जोगी माते जोग धिआन ॥ संनिआसी माते अहंमेव ॥ तपसी माते तप कै भेव ॥ १ ॥ सभ मद माते कोऊ न जाग ॥ संग ही चोर घरु मुसन लाग ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जागै सुकदेउ अरु अकूरु ॥ हणवंतु जागै धरि लंकूरु ॥ संकरु जागै चरन सेव ॥ कलि जागे नामा जैदेव ॥ २ ॥ जागत सोवत बहु प्रकार ॥ गुरमुखि जागै सोई सारु ॥ इसु देही के अधिक काम ॥ कहि कबीर भजि राम नाम ॥ ३ ॥ २ ॥

पण्डित पुराणों के पाठ-पठन में लीन हैं, योगी पुरुष योगाभ्यास के ध्यान में तल्लीन हैं। सन्यासी अपने अहंकार में मस्त हैं, तपस्वी अपनी तपस्या के भेद में लीन हैं॥१॥ सभी लोग अपनी-अपनी क्रिया में मस्त हैं परन्तु कोई भी जागृत नहीं और साथ ही साथ कामादिक चोर जीवों के घर को लूटने में तल्लीन हैं॥१॥ रहाउ॥ शुकदेव और भक्त अक्रूर (विकारों से) जागृत रहे। लम्बी पूँछ वाले भक्त हनुमान मोह-माया से सावधान बने रहे। ईश्वर की चरण सेवा में शिवशंकर जागृत हैं। कलियुग में भक्त नामदेव और भक्त जयदेव प्रभु-भक्ति में जागृत कहे जा सकते हैं॥२॥ यह जागना और सोना भी बहुत प्रकार का है। गुरमुख पुरुषों का जागना श्रेष्ठ है। कबीर जी कहते हैं कि राम नाम का भजन ही इस शरीर के लिए अधिकतर लाभदायक है॥३॥२॥

जोइ खसमु है जाइआ ॥ पूति बापु खेलाइआ ॥ बिनु स्रवणा खीरु पिलाइआ ॥ १ ॥ देखहु लोगा कलि को भाउ ॥ सुति मुकलाई अपनी माउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पगा बिनु हुरीआ मारता ॥ बदनै बिनु खिर खिर हासता ॥ निद्रा बिनु नरु पै सोवै ॥ बिनु बासन खीरु बिलोवै ॥ २ ॥ बिनु असथन गऊ लवेरी ॥ पैडे बिनु बाट घनेरी ॥ बिनु सतिगुर बाट न पाई ॥ कहु कबीर समझाई ॥ ३ ॥ ३ ॥

(माया रूपी) पत्नी ने अपने पति को जन्म दिया है, मन रूपी पुत्र अपने पिता (आत्मा) को खेला रहा है और बिना स्तनों के ही आत्मा को दुग्धपान करवाया जा रहा है॥१॥ हे लोगो! कलियुग का वैभव बड़ा निराला है, (मन रूपी) पुत्र ने (माया रूपी) अपनी माता से विवाह रचा लिया है॥१॥ रहाउ॥ यह पैरों के बिना छलांगें मार रहा है, मुँह के बिना ही खिल खिलाकर हंस रहा है। यह निद्रा के बिना ही मनुष्य के तन में लम्बी नींद सोता है और बर्तनों के बिना दूध को बिलो रहा है॥२॥ माया रूपी गाय स्तनों के बिना (विकारों का) दूध दे रही है। सत्य रूपी रास्ता पाए बिना मनुष्य के लिए जन्म-मरण का लम्बा रास्ता बन गया है। कबीर जी समझाते हैं कि सच्चे गुरु के बिना सच्चा रास्ता नहीं पाया जा सकता॥३॥३॥

प्रहलाद पठाए पड़न साल ॥ संगि सखा बहु लीए बाल ॥ मोकउ कहा पढ़ावसि आल जाल ॥ मेरी पटीआ लिखि देहु स्री गोपाल ॥ १ ॥ नही छोडउ रे बाबा राम नाम ॥ मेरो अउर पढ़न सिउ नही कामु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संडै मरकै कहिओ जाइ ॥ प्रहलाद बुलाए बेगि धाइ ॥ तू राम कहन की छोडु बानि ॥ तुझु तुरतु छडाऊ मेरो कहिओ मानि ॥ २ ॥ मोकउ कहा सतावहु बार बार ॥ प्रभि जल थल गिरि कीए पहार ॥ इकु रामु न छोडउ गुरहि गारि ॥ मोकउ घालि जारि भावै मारि डारि ॥ ३ ॥ काढि खड़गु कोपिओ रिसाइ ॥ तुझ राखनहारो मोहि बताइ ॥ प्रभ थंभ ते निकसे कै बिसथार ॥ हरनाखसु छेदिओ नख बिदार ॥ ४ ॥ ओइ परम पुरख देवाधि देव ॥ भगति हेति नरसिंघ भेव ॥ कहि कबीर को लखै न पार ॥ प्रहलाद उधारे अनिक बार ॥ ५ ॥ ४ ॥

जब प्रहलाद को पढ़ने के लिए पाठशाला में भेज दिया गया तो वहाँ उसने बहुत सारे बच्चों को अपना साथी बनाकर प्रभु भजन में लगा लिया। एक दिन उसने अपने अध्यापकों से कहा कि प्रभु के अतिरिक्त आप मुझे क्यों गलत पढ़ा रहे हो। आपसे अनुरोध है कि मेरी तख्ती पर परमात्मा का नाम लिख दो॥१॥ हे बाबा! मैं राम नाम का जाप हरगिज नहीं छोड़ूँगा और मेरी कुछ अन्य पाठ-पठन की कोई इच्छा नहीं॥१॥ रहाउ॥ तदन्तर प्रहलाद के अध्यापकों शण्ड एवं अमरक ने राज़ा हिरण्यकशिपु को जाकर शिकायत की तो उसने शीघ्र ही प्रहलाद को बुला लिया। (राजा ने कहा—) तू राम नाम जपने की आदत छोड़ दे, मेरा कहना मान ले, मैं तुझे तुरंत स्वतंत्र कर दूँगा॥२॥ प्रहलाद ने प्रत्युत्तर दिया कि आप मुझे बार-बार क्यों तंग कर रहे हो? समुद्र, पृथ्वी, पर्वत एवं पहाड़ प्रभु ने बनाए हुए हैं। मैं राम नाम का जाप किसी भी कीमत पर छोड़ नहीं सकता, ऐसा करना तो मेरे लिए गुरु जाप के प्रति गाली (तिरस्कार) के बराबर है। आप चाहे मुझे जिंदा जला दो या आपको भला लगे तो बेशक मुझे मार डालो॥३॥ यह सुनकर हिरण्यकशिपु आगबबूला हो गया और तलवार निकाल कर कहने लगा, "मुझे बताओ तुझे बचाने वाला कहाँ है? तब भयानक नृसिंह रूप धारण कर प्रभु स्तंभ से निकल आया और दुष्ट हिरण्यकशिपु को अपने नाखुनों से चीरकर खत्म कर दिया॥४॥ उस परमपुरुष देवाधिदेव ने अपने भक्त की भक्ति से प्रसन्न होकर नृसिंह रूप धारण किया। कबीर जी कहते हैं कि उस अनंतशक्ति का रहस्य नहीं पाया जा सकता और उस प्रभु ने अनेक बार अपने भक्त प्रहलाद की संकट के समय रक्षा की॥५॥४॥

इसु तन मन मधे मदन चोर ॥ जिनि गिआन रतनु हिरि लीन मोर ॥ मै अनाथु प्रभ कहउ काहि ॥ को को न बिगूतो मै को आहि ॥ १ ॥ माधउ दारुन दुखु सहिओ न जाइ ॥ मेरो चपल बुधि सिउ कहा बसाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सनक सनंदन सिव सुकादि ॥ नाभि कमल जाने ब्रहमादि ॥ कबि जन जोगी जटाधारि ॥ सभ आपन अउसर चले सारि ॥ २ ॥ तू अथाहु मोहि थाह नाहि ॥ प्रभ दीना नाथ दुखु कहउ काहि ॥ मोरो जनम मरन दुखु आथि धीर ॥ सुख सागर गुन रउ कबीर ॥ ३ ॥ ५ ॥

इस तन एवं मन में कामदेव सरीखा चोर दाखिल हो गया है, जिसने मेरे ज्ञान रूपी रत्न को चुरा लिया है। हे प्रभु! मुझ जैसा असहाय अपनी दास्तां किसको जाकर बताए। इस काम की वजह से कौन-कौन पीड़ित नहीं हुआ है, फिर भला मैं क्या चीज हूँ॥१॥ हे परमेश्वर! काम का भयानक दुख बर्दाश्त नहीं होता, मेरी चंचल बुद्धि की भला क्या मजाल है॥१॥ रहाउ॥ सनक, सनंदन, शिव, शुक इत्यादि, नाभिकमल से उत्पन्न ब्रह्मा, कवि, योगी तथा जटाधारी सभी अपना जीवन बिताकर चले गए॥२॥ हे प्रभु! तू अथाह है, तेरे सिवा मेरा कोई किनारा नहीं। हे दीनानाथ! तेरे अलावा अपना दुख किसे बताऊँ। कबीर जी कहते हैं कि हे सुखों के सागर! मेरे जन्म-मरण का दुख निवृत्त करके शान्ति प्रदान करो ताकि तेरे यशोगान में तल्लीन रहूँ॥३॥५॥

नाइकु एकु बनजारे पाच ॥ बरध पचीसक संगु काच ॥ नउ बहीआं दस गोनि आहि ॥ कसनि बहतरि लागी ताहि ॥ १ ॥ मोहि ऐसे बनज सिउ नहीन काजु ॥ जिह घटै मूलु नित बढै बिआजु ॥ रहाउ ॥ सात सूत मिलि बनजु कीन ॥ करम भावनी संग लीन ॥ तीनि जगाती करत रारि ॥ चलो बनजारा हाथ झारि ॥ २ ॥ पूंजी हिरानी बनजु टूट ॥ दह दिस टांडो गइओ फूटि ॥ कहि कबीर मन सरसी काज ॥ सहज समानो त भरम भाज ॥ ३ ॥ ६ ॥

जीवात्मा रूपी एक मुखिया के ज्ञानेन्द्रियाँ रूपी पाँच व्यापारी हैं। बैल रूप में प्रकृतियाँ हैं, जिनका साथ कच्चा है। गोलकों के रूप में नौ बहियाँ हैं, दस इन्द्रियाँ बोरियाँ हैं और इसको कसने

के लिए बहत्तर नाड़ियाँ भी जुड़ी हुई हैं॥१॥ मेरा ऐसा व्यापार करने से कोई वास्ता नहीं, जिसे करने से मूलधन घट जाए और ब्याज में नित्य बढ़ौत्तरी हो॥ रहाउ॥ दरअसल इन व्यापारियों ने साथ मिलकर बहुत प्रकार के सूतों (विकारों) का व्यापार कर लिया है और अपने कृत कर्मों को साथ ले लिया है। तीन गुण भी बहुत हंगामा करते हैं, अंततः पाँच व्यापारी हाथ झाड़कर चल पड़ते हैं॥२॥ जब साँसों की पूंजी छीन ली जाती है, तब व्यापार टूट जाता है और मनुष्य का काफिला दसों दिशाओं में तितर बितर हो जाता है। कबीर जी कहते हैं कि हे मन! तेरा काम तभी सिद्ध होगा, अगर तू सहजावस्था में लीन होगा, इस तरह तेरा भ्रम भी दूर हो जाएगा॥३॥६॥

बसंतु हिंडोलु घरु २ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

माता जूठी पिता भी जूठा जूठे ही फल लागे ॥ आवहि जूठे जाहि भी जूठे जूठे मरहि अभागे ॥ १ ॥ कहु पंडित सूचा कवनु ठाउ ॥ जहां बैसि हउ भोजनु खाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिहबा जूठी बोलत जूठा करन नेत्र सभि जूठे ॥ इंद्री की जूठि उतरसि नाही ब्रहम अगनि के लूठे ॥ २ ॥ अगनि भी जूठी पानी जूठा जूठी बैसि पकाइआ ॥ जूठी करछी परोसन लागा जूठे ही बैठि खाइआ ॥ ३ ॥ गोबरु जूठा चउका जूठा जूठी दीनी कारा ॥ कहि कबीर तेई नर सूचे साची परी बिचारा ॥ ४ ॥ १ ॥ ७ ॥

अब जबकि माता जूठी है, पिता भी जूठा है तो इनके पैदा होने वाले बच्चे भी जूठे ही होंगे। जन्म लेने वाले जूठे हैं, बुराईयों में लिप्त रहकर मरने वाले भी जूठे हैं, ऐसे दुर्भाग्यशाली जीव जूठन में पड़े मौत को प्राप्त होंगे॥१॥ हे पण्डित! बताओ कौन-सा ठिकाना पवित्र है, जहाँ बैठकर भोजन कर सकता हूँ॥१॥ रहाउ॥ (झूठ बोलने के कारण) जीभ झूठी है, (अपशब्द बोलने के कारण) वचन मैले हैं, (चुगली सुनने के कारण) कान जूठे हैं, (पराया रूप देखने की वजह से) नेत्र सभी जूठे हैं। हे पण्डित! ब्राह्मण होने के अभिमान की आग में तू जल रहा है परन्तु कामवासना की मैल तेरी उतरती ही नहीं॥२॥ अग्नि भी अपवित्र है, (गंदगी की वजह से) पानी अशुद्ध है, खाना पकाने वाली स्त्री भी जूठी है, परोसने वाली कलछी भी जूठी है, जो बैठकर रोटी खाता है, वह व्यक्ति भी तो अपवित्र ही है॥३॥ गोबर तथा चौका भी अपवित्र है तथा चौके पर खींची लकीरें मलिन हैं। कबीर जी कहते हैं कि दरअसल वही व्यक्ति शुद्ध हैं, जिनके मन में सच्चे विचार विद्यमान हैं॥४॥१॥७॥

रामानंद जी घरु १ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

कत जाईऐ रे घर लागो रंगु ॥ मेरा चितु न चलै मनु भइओ पंगु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ एक दिवस मन भई उमंग ॥ घसि चंदन चोआ बहु सुगंध ॥ पूजन चाली ब्रहम ठाइ ॥ सो ब्रहमु बताइओ गुर मन ही माहि ॥ १ ॥ जहा जाईऐ तह जल पखान ॥ तू पूरि रहिओ है सभ समान ॥ बेद पुरान सभ देखे जोइ ॥ ऊहां तउ जाईऐ जउ ईहां न होइ ॥ २ ॥ सतिगुर मै बलिहारी तोर ॥ जिनि सकल बिकल भ्रम काटे मोर ॥ रामानंद सुआमी रमत ब्रहम ॥ गुर का सबदु काटै कोटि करम ॥ ३ ॥ १ ॥

अरे भाई! हम किसी अन्य जगह क्यों जाएँ? जब घर में ही (प्रभु-भक्ति में) सुख-आनंद है। मेरा चित्त दोलायमान नहीं होता, अब यह टिक गया है॥१॥ रहाउ॥ एक दिन मेरे मन में

महत्वाकांक्षा हुई। फिर मैं चंदन घिसकर, खुशबू एवं अन्य सुगन्धित पदार्थ लेकर ठाकुर जी की पूजा के लिए मन्दिर की ओर चलने लगी। परन्तु गुरु ने मन में ईश्वर का दर्शन बता दिया॥१॥ हम तीर्थ स्थानों एवं मन्दिर में मूर्तियों के पास चले जाते हैं (कि यहाँ ईश्वर है) परन्तु हे ईश्वर! तू सब में समान रूप से व्याप्त है। वेद-पुराणों सबका विश्लेषण करके देख लिया है, (यही निष्कर्ष है कि) वहाँ (तीर्थों-मन्दिरों में) तभी जाने की आवश्यकता है, यदि ईश्वर हमारे अन्तर्मन में विद्यमान नहीं॥२॥ हे सच्चे गुरु! मैं तुझ पर कुर्बान हूँ, जिसने मेरे भ्रमों एवं सब उलझनों को काट दिया है। रामानंद जी का कथन है कि हमारा स्वामी परब्रह्म सर्वव्यापक है और गुरु का उपदेश करोड़ों कर्मों को नष्ट करता है॥३॥१॥

बसंतु बाणी नामदेउ जी की १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

साहिबु संकटवै सेवकु भजै ॥ चिरंकाल न जीवै दोऊ कुल लजै ॥ १ ॥ तेरी भगति न छोडउ भावै लोगु हसै ॥ चरन कमल मेरे हीअरे बसैं ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जैसे अपने धनहि प्रानी मरनु मांडै ॥ तैसे संत जनां राम नामु न छाडैं ॥ २ ॥ गंगा गइआ गोदावरी संसार के कामा ॥ नाराइणु सुप्रसंन होइ त सेवकु नामा ॥ ३ ॥ १ ॥

यदि मालिक किसी संकट में आ जाए और नौकर (संकट की घड़ी में) डरता हुआ भाग जाए तो अधिक समय जिंदा नहीं रहता और उस नौकर तथा उसकी कुल की बदनामी ही होती है॥१॥ हे परमेश्वर! मैं तेरी भक्ति बिल्कुल नहीं छोड़ूँगा, चाहे दुनिया के लोग मेरी हँसी उड़ाते रहें। तेरे चरण कमल मेरे हृदय में बसते रहें॥१॥ रहाउ॥ जैसे प्राणी अपने धन अथवा पत्नी की रक्षा के लिए मरने मारने पर उतारू हो जाता है, वैसे ही संतजन राम नाम का जाप हरगिज नहीं छोड़ते॥ २॥ गंगा, गया तथा गोदावरी सरीखे तीर्थ स्थानों की यात्रा निरा संसार के कर्मकाण्ड ही हैं। नामदेव जी कहते हैं कि यदि ईश्वर परम प्रसन्न हो जाए तो ही सेवक की सेवा सफल होती है॥३॥१॥

लोभ लहरि अति नीझर बाजै ॥ काइआ डूबै केसवा ॥ १ ॥ संसारु समुंदे तारि गोबिंदे ॥ तारि लै बाप बीठुला ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनिल बेड़ा हउ खेवि न साकउ ॥ तेरा पारु न पाइआ बीठुला ॥ २ ॥ होहु दइआलु सतिगुरु मेलि तू मोकउ ॥ पारि उतारे केसवा ॥ ३ ॥ नामा कहै हउ तरि भी न जानउ ॥ मोकउ बाह देहि बाह देहि बीठुला ॥ ४ ॥ २ ॥

हे ईश्वर! लोभ की लहरें बहुत उछल रही हैं और यह शरीर इसमें ही डूब रहा है॥१॥ हे परमेश्वर! इस संसार-सागर से मुझे पार उतार दो। हे पिता परमेश्वर! मुझे पार उतार दो॥ १॥ रहाउ॥ मेरी यह जीवन नैया तेज आँधी में फँस गई है, जिसे मेरा चप्पू आगे ले जाने में नाकामयाब है। हे प्रभु! तेरी कृपा बिना पार नहीं हो सकता॥२॥ नामदेव जी विनती करते हैं कि मैं तैरना भी नहीं जानता, हे प्रभु! बाँह देकर मुझे बचा लो॥४॥२॥

सहज अवलि धूड़ि मणी गाडी चालती ॥ पीछै तिनका लै करि हांकती ॥ १ ॥ जैसे पनकत थ्रूटिटि हांकती ॥ सरि धोवन चाली लाडुली ॥ १ ॥ रहाउ ॥ धोबी धोवै बिरह बिराता ॥ हरि चरन मेरा मनु राता ॥ २ ॥ भणति नामदेउ रमि रहिआ ॥ अपने भगत पर करि दइआ ॥ ३ ॥ ३ ॥

पहले (पाप रूपी) धूल से भरी वस्त्रों (शरीर) की गाड़ी धीरे-धीरे चलती है और डंडा लेकर पीछे धोबिन उस गाड़ी को हाँकती है॥१॥ जैसे-जैसे धोबिन इस गाड़ी को धोने की तरफ आवाज देकर हाँकती है, वह सिर पर गन्दे वस्त्रों को धोने के लिए ले जाती है, इसी प्रकार जीव स्त्री भी

अपने कर्मों को धोने के लिए सत्संग में चल पड़ती है॥१॥ रहाउ॥ गुरु रूपी धोबी सत्संग में आई जीव-स्त्री के मन को प्रेमपूर्वक पावन कर देता है। मेरा मन भी ईश्वर के चरणों में ही रत है॥२॥ नामदेव जी कहते हैं कि ईश्वर सबमें बसा हुआ है और अपने भक्तों पर सदा दया करता है॥३॥३॥

बसंतु बाणी रविदास जी की ੧ओं सतिगुर प्रसादि ॥

तुझहि सुझंता कछू नाहि ॥ पहिरावा देखे ऊभि जाहि ॥ गरबवती का नाही ठाउ ॥ तेरी गरदनि ऊपरि लवै काउ ॥ १ ॥ तू कांइ गरबहि बावली ॥ जैसे भादउ खूंबराजु तू तिस ते खरी उतावली ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जैसे कुरंक नही पाइओ भेदु ॥ तनि सुगंध ढूढै प्रदेसु ॥ अप तन का जो करे बीचारु ॥ तिसु नही जमकंकरु करे खुआरु ॥ २ ॥ पुत्र कलत्र का करहि अहंकारु ॥ ठाकुरु लेखा मगनहारु ॥ फेड़े का दुखु सहै जीउ ॥ पाछे किसहि पुकारहि पीउ पीउ ॥ ३ ॥ साधू की जउ लेहि ओट ॥ तेरे मिटहि पाप सभ कोटि कोटि ॥ कहि रविदास जुो जपै नामु ॥ तिसु जाति न जनमु न जोनि कामु ॥ ४ ॥ १ ॥

तुझे कुछ भी समझ नहीं आ रही, केवल सुन्दर पहरावा देखकर गर्व कर रही हो परन्तु अभिमानी को कहीं भी ठौर-ठिकाना प्राप्त नहीं होता, मौत रूपी कौआ तेरी गर्दन पर मंडरा रहा है॥१॥ अरे बावली! तू क्यों अहंकार कर रही है। जिस प्रकार भादों के महीने में कुकुरमत्ता उगकर नष्ट हो जाता है, तू उससे भी अधिक उतावली हो रही है॥१॥ रहाउ॥ जैसे हिरण को कस्तूरी का भेद पता नहीं चलता और अपने तन में विद्यमान सुगन्ध बाहर ढूँढता रहता है, जो अपने शरीर के महत्व का चिंतन करता है, उसे यमदूत तंग नहीं करता॥२॥ जीव प्रिय पुत्रों एवं अपनी पत्नी का अहंकार करता है, पर यह नहीं सोचता कि मालिक कर्मों का हिसाब मांगने वाला है। जीव को अपने किए कर्मों का फल रूपी दुख भोगना पड़ता है, मरणोपरांत अपना प्रिय किसे पुकार पाता है॥३॥ यदि तू साधु की शरण पा ले तो तेरे करोड़ों पाप मिट जाएंगे। रविदास जी कहते हैं कि जो परमात्मा का नाम जपता है, उसकी जाति एवं जन्म-मरण छूट जाता है और योनि से कोई नाता नहीं रह पाता॥४॥१॥

बसंतु कबीर जीउ ੧ओं सतिगुर प्रसादि ॥

सुरह की जैसी तेरी चाल ॥ तेरी पूंछट ऊपरि झमक बाल ॥ १ ॥ इस घर महि है सु तू ढूंढि खाहि ॥ अउर किस ही के तू मति ही जाहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चाकी चाटहि चूनु खाहि ॥ चाकी का चीथरा कहां लै जाहि ॥ २ ॥ छीके पर तेरी बहुतु डीठि ॥ मतु लकरी सोटा तेरी परै पीठि ॥ ३ ॥ कहि कबीर भोग भले कीन ॥ मति कोऊ मारै ईंट ढेम ॥ ४ ॥ १ ॥

{कबीर जी घर में आए कुत्ते को संबोधन करते हुए कहते हैं।}

तेरी चाल गाय जैसी है और पूँछ पर बाल भी चमक रहे हैं॥१॥ इस घर में जो कुछ है, तू उसे ढूँढ कर खा ले, तू किसी अन्य के घर में मत जाना॥१॥ रहाउ॥ चक्की का जो आटा है, उसे चाटकर खा ले, पर यह चक्की का चिथड़ा कहां ले जा रहा है॥२॥ छीके पर तूने बहुत नजर टिकाई हुई है, इस बात का ख्याल रखना कहीं लकड़ी का डण्डा तेरी पीठ पर न पड़ जाए॥३॥ कबीर जी कहते हैं कि तूने अच्छी तरह से खा लिया है, चुपके से चले जाओ, कहीं कोई तुझे ईंट-पत्थर न मार दे॥४॥१॥

रागु सारग चउपदे महला १ घरु १

१ओं सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

वह परमपिता परमेश्वर अद्वितीय है, नाम उसका 'सत्य' है, वह कर्ता पुरुष सर्वशक्तिमान है, वह निर्भय है, वह वैर से रहित है, वह कालातीत अमर है, वह जन्म-मरण से स्वतंत्र है, वह स्वयं प्रकाशमान हुआ है, गुरु कृपा से प्राप्ति होती है।

अपुने ठाकुर की हउ चेरी ॥ चरन गहे जगजीवन प्रभ के हउमै मारि निबेरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पूरन परम जोति परमेसर प्रीतम प्रान हमारे ॥ मोहन मोहि लीआ मनु मेरा समझसि सबदु बीचारे ॥ १ ॥ मनमुख हीन होछी मति झूठी मनि तनि पीर सरीरे ॥ जब की राम रंगीलै राती राम जपत मन धीरे ॥ २ ॥ हउमै छोडि भई बैरागनि तब साची सुरति समानी ॥ अकुल निरंजन सिउ मनु मानिआ बिसरी लाज लुोकानी ॥ ३ ॥ भूर भविख नाही तुम जैसे मेरे प्रीतम प्रान अधारा ॥ हरि कै नामि रती सोहागनि नानक राम भतारा ॥ ४ ॥ १ ॥

मैं अपने मालिक की दासी हूँ, मैंने जगत के जीवनदाता प्रभु के चरण पकड़ लिए हैं और अहम् को मारकर खत्म कर दिया है॥१॥ रहाउ॥ पूर्ण परम ज्योति परमेश्वर हमें प्राणों से भी प्यारा है, उस प्रभु ने मेरा मन मोह लिया है और शब्द के चिंतन से ही उसे समझा जाता है॥१॥ स्वेच्छाचारी हीन, ओछा एवं झूठी मति वाला होता है और उसके मन तन में पीड़ा ही रहती है। जब से रंगीले प्रभु की भक्ति में रत हुआ हूँ, उसका जाप करते हुए मन को शान्ति मिल गई है॥२॥ जब से अहम् भावना छोड़कर वैराग्यवान हुई हूँ, तब से मेरी अन्तरात्मा ईश्वर में विलीन है। कुल रहित, कालिमा से परे परमेश्वर के साथ मन प्रसन्न हो गया है और सारी लोक लाज भूल गई है॥३॥ हे मेरे प्रियतम! तू ही मेरे प्राणों का आधार है, तेरे जैसा भूत भविष्य में कोई नहीं। गुरु नानक फुरमाते हैं कि जीव रूपी सुहागिन प्रभु के नाम स्मरण में लीन है और प्रभु ही उसका पति है॥४॥१॥

सारग महला १ ॥ हरि बिनु किउ रहीऐ दुखु बिआपै ॥ जिहवा सादु न फीकी रस बिनु बिनु प्रभ कालु संतापै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जब लगु दरसु न परसै प्रीतम तब लगु भूख पिआसी ॥ दरसनु देखत ही मनु मानिआ जल रसि कमल बिगासी ॥ १ ॥ ऊनवि घनहरु गरजै बरसै कोकिल मोर बैरागै ॥ तरवर बिरख बिहंग भुइअंगम घरि पिरु धन सोहागै ॥ २ ॥ कुचिल कुरूपि कुनारि कुलखनी पिर का सहजु न जानिआ ॥ हरि रस रंगि रसन नही त्रिपती दुरमति दूख समानिआ ॥ ३ ॥ आइ न जावै ना दुखु पावै ना दुख दरदु सरीरे ॥ नानक प्रभ ते सहज सुहेली प्रभ देखत ही मनु धीरे ॥ ४ ॥ २ ॥

प्रभु के बिना कैसे रहा जाए, हर तरफ दुख ही दुख है। प्रभु भजन के आनंद बिना जीभ का स्वाद भी फीका है और प्रभु के बिना काल भी परेशान करता है॥१॥ रहाउ॥ जब तक प्रभु के

दर्शन नहीं मिलते तब तक भूखी प्यासी ही रहती हूँ। प्रभु के दर्शन पाकर मन आनंदित हो जाता है, जिस प्रकार जल में कमल खिल जाता है॥१॥ बादल झुककर गरज बरस रहे हैं और मोर एवं कोयल खुशी से झूम रहे हैं। ज्यों पेड़-पौधे, पक्षी एवं सांप जल वर्षा से झूमते हैं वैसे ही सुहागिन अपने पति के घर में होने पर आनंद मनाती है॥२॥ जिसने पति प्रभु के सहज-आनंद को नहीं जाना, वह मैली, कुरुप, कुलक्षणा स्त्री है। जिसकी रसना हरि रस के प्रेम में तृप्त नहीं होती, वह खोटी बुद्धि के कारण दुखों में पड़ी रहती है॥३॥ गुरु नानक फुरमाते हैं कि जिस जीव-स्त्री को प्रभु से सहज सुख प्राप्त होता है, उसके दर्शन से मन को शान्ति मिलती है, उसका आवागमन छूट जाता है, न दुखी होती है और उसके शरीर का दुख-दर्द समाप्त हो जाता है॥४॥२॥

सारग महला १ ॥ दूरि नाही मेरो प्रभु पिआरा ॥ सतिगुर बचनि मेरो मनु मानिआ हरि पाए प्रान अधारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इन बिधि हरि मिलीऐ वर कामनि धन सोहागु पिआरी ॥ जाति बरन कुल सहसा चूका गुरमति सबदि बीचारी ॥ १ ॥ जिसु मनु मानै अभिमानु न ता कउ हिंसा लोभु विसारे ॥ सहजि रवै वरु कामणि पिर की गुरमुखि रंगि सवारे ॥ २ ॥ जारउ ऐसी प्रीति कुटंब सनबंधी माइआ मोह पसारी ॥ जिसु अंतरि प्रीति राम रसु नाही दुबिधा करम बिकारी ॥ ३ ॥ अंतरि रतन पदारथ हित कौ दुरै न लाल पिआरी ॥ नानक गुरमुखि नामु अमोलकु जुगि जुगि अंतरि धारी ॥ ४ ॥ ३ ॥

मेरा प्यारा प्रभु कहीं दूर नहीं है। सतगुरु के वचनों से मेरा मन संतुष्ट हो गया तो प्राणों के आधार प्रभु को प्राप्त कर लिया॥१॥ रहाउ॥ इस तरीके से जीव रूपी कामिनी को हरि रूपी वर मिलता है और उस प्यारी को सुहाग मिल जाता है। गुरु-मत के शब्द का चिंतन करते हुए जाति-वर्ण एवं कुल का संशय दूर हो गया है॥१॥ जिसका मन परितृप्त हो जाता है, उसे अभिमान नहीं होता और वह हिंसा व लोभ को भुला देता है। जीव रूपी कामिनी स्वाभाविक ही पति-प्रभु के साथ आनंद करती है और गुरु के माध्यम से उसका प्रेम रंग संवर जाता है॥२॥ ऐसा प्रेम त्याग देना चाहिए, जो परिवार एवं रिश्तेदारों के साथ मोह-माया फैलाता है। जिसके अन्तर्मन में ईश्वर से प्रेम नहीं, वह दुविधा एवं विकारयुक्त कर्म करता है॥३॥ जिसके मन में प्रेम पदार्थ रूपी रत्न विद्यमान होता है, वह दुनिया से छिपा नहीं रहता। गुरु नानक का कथन है कि ऐसा गुरमुख युग युग प्रभु का अमूल्य नाम मन में बसाए रखता है॥४॥३॥

सारंग महला ४ घरु १ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

हरि के संत जना की हम धूरि ॥ मिलि सतसंगति परम पदु पाइआ आतम रामु रहिआ भरपूरि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतिगुरु संतु मिलै सांति पाईऐ किलविख दुख काटे सभि दूरि ॥ आतम जोति भई परफूलित पुरखु निरंजनु देखिआ हजूरि ॥ १ ॥ वडै भागि सतसंगति पाई हरि हरि नामु रहिआ भरपूरि ॥ अठसठि तीरथ मजनु कीआ सतसंगति पग नाए धूरि ॥ २ ॥ दुरमति बिकार मलीन मति होछी हिरदा कुसुधु लागा मोह कूरु ॥ बिनु करमा किउ संगति पाईऐ हउमै बिआपि रहिआ मनु झूरि ॥ ३ ॥ होहु दइआल क्रिपा करि हरि जी मागउ सतसंगति पग धूरि ॥ नानक संतु मिलै हरि पाईऐ जनु हरि भेटिआ रामु हजूरि ॥ ४ ॥ १ ॥

हम ईश्वर के भक्तजनों की मात्र चरणरज हैं। सत्संग में मिलकर परमपद पाया है और ज्ञान हो गया है कि ईश्वर सबमें व्याप्त है॥१॥ रहाउ॥ यदि सच्चा गुरु संत मिल जाए तो ही शान्ति

प्राप्त होती है और वह सभी पाप दुख काट कर दूर कर देता है। जब ईश्वर के साक्षात् दर्शन किए तो हमारी अन्तरात्मा प्रफुल्लित हो गई॥१॥ अहोभाग्य से हमें सत्संग प्राप्त हुई है, जहाँ ज्ञान हो गया कि ईश्वर सर्व व्याप्त है। सत्संगियों की चरण-धूल में स्नान करके हमने अड़सठ तीर्थों के स्नान का फल प्राप्त कर लिया है॥२॥ दुर्मति एवं विकारों से मलिन हमारी बुद्धि ओछी हो गई है और अशुद्ध हृदय को झूठा मोह लगा हुआ है। उत्तम भाग्य के बिना संगत कैसे प्राप्त हो सकती है, अहम्-भावना में लीन मन परेशान रहता है॥३॥ हे प्रभु! दयालु हो जाओ, कृपा करो, मैं सत्संगियों की चरण-धूल ही चाहता हूँ। नानक का मत है कि जब संत महापुरुष से साक्षात्कार होता है तो ईश्वर की प्राप्ति हो जाती है और वह प्रत्यक्ष ही परमेश्वर से मिला देता है॥४॥१॥

सारंग महला ४ ॥ गोबिंद चरनन कउ बलिहारी ॥ भवजलु जगतु न जाई तरणा जपि हरि हरि पारि उतारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हिरदै प्रतीति बनी प्रभ केरी सेवा सुरति बीचारी ॥ अनदिनु राम नामु जपि हिरदै सरब कला गुणकारी ॥ १ ॥ प्रभु अगम अगोचरु रविआ स्रब ठाई मनि तनि अलख अपारी ॥ गुर किरपाल भए तब पाइआ हिरदै अलखु लखारी ॥ २ ॥ अंतरि हरि नामु सरब धरणीधर साकत कउ दूरि भइआ अहंकारी ॥ त्रिसना जलत न कबहू बूझहि जूऐ बाजी हारी ॥ ३ ॥ ऊठत बैठत हरि गुन गावहि गुरि किंचत किरपा धारी ॥ नानक जिन कउ नदरि भई है तिन की पैज सवारी ॥ ४ ॥ २ ॥

हम परमात्मा के चरणों पर कुर्बान हैं। यह संसार-समुद्र तैरा नहीं जा सकता, यदि परमात्मा का जाप किया जाए तो पार उतारा हो जाता है॥१॥ रहाउ॥ हृदय में प्रभु के प्रति निष्ठा बनी तो सेवा का विचार किया। ईश्वर सर्वशक्तिमान एवं गुणों का भण्डार है, दिन-रात हृदय में उसके नाम का जाप करो॥१॥ अपहुँच, मन-वाणी से परे प्रभु सब स्थानों पर रमण कर रहा है और मन तन में भी वही अलख अपार है। जब गुरु कृपालु हुआ तो हृदय में अदृष्ट प्रभु के दर्शन हो गए॥२॥ समूची पृथ्वी को धारण करने वाला परमेश्वर अन्तर्मन में ही है लेकिन मायावी अहंकारी को वह दूर ही लगता है। तृष्णा की अग्नि में जलता हुआ वह कभी नहीं समझता और अपनी जीवन बाजी जुए में हार देता है॥३॥ जब गुरु की थोड़ी-सी कृपा होती है तो मनुष्य उठते-बैठते सदैव परमात्मा के गुण गाता है। हे नानक! जिन पर ईश्वर की करुणा-दृष्टि हुई है, उसने उनकी लाज रख ली है॥४॥२॥

सारग महला ४ ॥ हरि हरि अंम्रित नामु देहु पिआरे ॥ जिन ऊपरि गुरमुखि मनु मानिआ तिन के काज सवारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो जन दीन भए गुर आगै तिन के दूख निवारे ॥ अनदिनु भगति करहि गुर आगै गुर कै सबदि सवारे ॥ १ ॥ हिरदै नामु अंम्रित रसु रसना रसु गावहि रसु बीचारे ॥ गुर परसादि अंम्रित रसु चीन्हिआ ओइ पावहि मोख दुआरे ॥ २ ॥ सतिगुरु पुरखु अचलु अचला मति जिसु द्रिड़ता नामु अधारे ॥ तिसु आगै जीउ देवउ अपुना हउ सतिगुर कै बलिहारे ॥ ३ ॥ मनमुख भ्रमि दूजै भाइ लागे अंतरि अगिआन गुबारे ॥ सतिगुरु दाता नदरि न आवै ना उरवारि न पारे ॥ ४ ॥ सरबे घटि घटि रविआ सुआमी सरब कला कल धारे ॥ नानकु दासनि दासु कहत है करि किरपा लेहु उबारे ॥ ५ ॥ ३ ॥

हे प्यारे परमेश्वर! मुझे अमृत-नाम प्रदान करो। जिनका मन गुरु पर पूर्ण विश्वस्त हो गया है, उनके सभी कार्य सिद्ध हो गए हैं॥१॥ रहाउ॥ जो लोग गुरु के समक्ष विनम्र भावना से आए हैं, उसने उनके दुखों का निवारण कर दिया है। वे दिन-रात गुरु के सन्मुख भक्ति करते हैं और

गुरु के उपदेश से उनका जीवन संवर जाता है॥१॥ जिनके हृदय में अमृत नाम का रस है, जीभ से हरि नाम रस का गुणगान करते और इस नाम रस का चिंतन करते हैं। जो गुरु की कृपा से अमृत-नाम की महत्ता जान लेते हैं, वही मोक्ष प्राप्त करते हैं॥२॥ सच्चा गुरु अडोल है, उसका मत भी अडोल है और प्रभु नाम के आधार वह दृढ़ रहता है। ऐसे सतगुरु पर मैं बलिहारी जाता हूँ और मन-तन, प्राण इत्यादि अपना सर्वस्व उसे अर्पण करता हूँ॥३॥ स्वेच्छाचारी व्यक्ति द्वैतभाव की वजह से भटकता रहता है और उसके अन्तर्मन में अज्ञान का अंधेरा बना रहता है। ऐसे जीव को दाता सतगुरु नजर नहीं आता, परिणामस्वरूप वह लोक-परलोक कहीं का नहीं रहता॥४॥ सब शरीरों में स्वामी प्रभु ही विद्यमान है और उस सर्वशक्तिमान ने सर्व शक्तियों को धारण किया हुआ है। नानक स्वयं को दासों का दास मानते हुए विनती करते हैं कि हे परमेश्वर! कृपा करके मुझे संसार-सागर से बचा लो॥५॥३॥

सारग महला ४ ॥ गोबिद की ऐसी कार कमाइ ॥ जो किछु करे सु सति करि मानहु गुरमुखि नामि रहहु लिव लाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गोबिद प्रीति लगी अति मीठी अवर विसरि सभ जाइ ॥ अनदिनु रहसु भइआ मनु मानिआ जोती जोति मिलाइ ॥ १ ॥ जब गुण गाइ तब ही मनु त्रिपतै सांति वसै मनि आइ ॥ गुर किरपाल भए तब पाइआ हरि चरणी चितु लाइ ॥ २ ॥ मति प्रगास भई हरि धिआइआ गिआनि तति लिव लाइ ॥ अंतरि जोति प्रगटी मनु मानिआ हरि सहजि समाधि लगाइ ॥ ३ ॥ हिरदै कपटु नित कपटु कमावहि मुखहु हरि हरि सुणाइ ॥ अंतरि लोभु महा गुबारा तुह कूटै दुख खाइ ॥ ४ ॥ जब सुप्रसंन भए प्रभ मेरे गुरमुखि परचा लाइ ॥ नानक नाम निरंजनु पाइआ नामु जपत सुखु पाइ ॥ ५ ॥ ४ ॥

ईश्वर के ऐसे अद्भुत कौतुक हैं, अतः जो कुछ भी वह करता है, उसे सत्य मान लो और गुरुमुख बनकर उसके नाम में निमग्न रहो॥१॥ रहाउ॥ ईश्वर के साथ इतना अधिक मधुर प्रेम लगा है कि अन्य सब कुछ भूल गया है। अब दिन-रात मन में आनंद उत्पन्न हो गया है और आत्म-ज्योति परम-ज्योति में ही विलीन रहती है॥१॥ जब ईश्वर का गुणगान किया तो मन तृप्त हो गया और मन को शान्ति प्राप्त हुई। जब गुरु कृपालु होता है तो ईश्वर के चरणों में चित्त लग जाता है और उसकी प्राप्ति हो जाती है॥२॥ परमात्मा का ध्यान करने से बुद्धि में आलोक हो गया है और ज्ञान तत्व में लगन लगी है। जिसका मन तृप्त हो गया है, उसके अन्तर्मन में ज्ञान ज्योति प्रगट हो गई है और उसकी ईश्वर में स्वाभाविक समाधि लगी रहती है॥३॥ जिसके हृदय में कपट होता है, वह प्रतिदिन कपटमय कार्य करता है, चाहे मुँह से हरि हरि सुनाता हो। जिसके मन में लोभ एवं अज्ञान का अंधेरा होता है, वह व्यर्थ कार्य कर दुख ही भोगता है॥४॥ जब प्रभु सुप्रसन्न होता है तो गुरु के माध्यम से सत्य की जानकारी हो जाती है। नानक फुरमाते हैं कि तब ईश्वर का नाम प्राप्त हो जाता है और उसके नाम का जाप करते हुए सुख उपलब्ध होता है॥५॥४॥

सारग महला ४ ॥ मेरा मनु राम नामि मनु मानी ॥ मेरै हीअरै सतिगुरि प्रीति लगाई मनि हरि हरि कथा सुखानी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दीन दइआल होवहु जन ऊपरि जन देवहु अकथ कहानी ॥ संत जना मिलि हरि रसु पाइआ हरि मनि तनि मीठ लगानी ॥ १ ॥ हरि कै रंगि रते बैरागी जिन्ह गुरमति नामु पछानी ॥ पुरखै पुरखु मिलिआ सुखु पाइआ सभ चूकी आवण जानी ॥ २ ॥ नैणी बिरहु देखा प्रभ

सुआमी रसना नामु वखानी ॥ स्रवणी कीरतनु सुनउ दिनु राती हिरदै हरि हरि भानी ॥ ३ ॥ पंच जना गुरि वसगति आणे तउ उनमनि नामि लगानी ॥ जन नानक हरि किरपा धारी हरि रामै नामि समानी ॥ ४ ॥ ५ ॥

मेरा मन राम नाम में पूर्ण आनंदित हो गया है। सतगुरु ने मेरे हृदय में ऐसी प्रीति लगाई है कि मन को हरि कथा सुखदायी लगती है॥ १॥ रहाउ॥ हे दीनदयाल! भक्तों पर दयालु हो जाओ और अकथ कहानी का भेद प्रदान कर दो। भक्तजनों के संग मिलकर हरिनाम रस पाया है और मन तन को यही मधुर लगता है॥ १॥ जिन्होंने गुरु के उपदेश द्वारा प्रभु नाम को पहचान लिया है, वे वैराग्यवान होकर प्रभु के रंग में ही लीन रहते हैं। परमपुरुष से साक्षात्कार कर सुख पा लिया है और आवागमन दूर हो गया है॥ २॥ इन नयनों को प्रभु-दर्शन की तीव्र लालसा लगी हुई है और जीभ से नाम की चर्चा करता हूँ। कानों से दिन-रात परमात्मा का भजन कीर्तन सुनता हूँ और हृदय में प्रभु ही अच्छा लगता है॥ ३॥ जब गुरु ने कामादिक पांच विकारों को वशीभूत कर दिया तो नाम में तल्लीन हो गया। हे नानक! ईश्वर की कृपा हुई तो राम नाम के सुमिरन में लीन हो गया॥ ४॥ ५॥

सारग महला ४ ॥ जपि मन राम नामु पढ़ु सारु ॥ राम नाम बिनु थिरु नही कोई होरु निहफल सभु बिसथारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ किआ लीजै किआ तजीऐ बउरे जो दीसै सो छारु ॥ जिसु बिखिआ कउ तुम्ह अपुनी करि जानहु सा छाडि जाहु सिरि भारु ॥ १ ॥ तिलु तिलु पलु पलु अउध फुनि घाटै बूझि न सकै गवारु ॥ सो किछु करै जि साथि न चालै इहु साकत का आचारु ॥ २ ॥ संत जना कै संगि मिलु बउरे तउ पावहि मोख दुआरु ॥ बिनु सतसंग सुखु किनै न पाइआ जाइ पूछहु बेद बीचारु ॥ ३ ॥ राणा राउ सभै कोऊ चालै झूठु छोडि जाइ पासारु ॥ नानक संत सदा थिरु निहचलु जिन राम नामु आधारु ॥ ४ ॥ ६ ॥

हे मन! राम नाम का जाप एवं पठन करो, यही सार है। राम नाम के बिना कोई स्थिर नहीं, अन्य सब विस्तार निष्फल हैं॥ १॥ रहाउ॥ हे पगले! संसार से क्या लिया जाए और क्या छोड़ा जाए, जो भी दिखाई दे रहा है, सब धूल समान है। जिस संपत्ति रूपी विष को तुम अपना समझते हो, उसे छोड़ दो, क्योंकि ये पापों का भार है॥ १॥ तिल तिल हर पल जीवन अवधि घटती जा रही है, लेकिन गंवार मनुष्य इस बात को समझता नहीं। मायावी मनुष्य का यही आचरण है कि वह वही कुछ करता है, जो साथ नहीं जाता॥ २॥ हे बावले! अगर संत पुरुषों की संगत में मिलकर रहेगा तो ही मोक्ष प्राप्त होगा। बेशक वेदों का चिंतन कर लो, वे भी हामी भरते हैं कि सत्संग के बिना किसी ने भी सुख नहीं पाया है॥ ३॥ राजा-महाराजा सब लोग झूठ के प्रसार को छोड़कर चलायमान हैं। नानक फुरमाते हैं कि संत पुरुष सदा निश्चल हैं, जिनके पास राम नाम का आसरा है॥ ४॥ ६॥

सारग महला ४ घरु ३ दुपदा ੧ਓ सतिगुर प्रसादि ॥

काहे पूत झगरत हउ संगि बाप ॥ जिन के जणे बडीरे तुम हउ तिन सिउ झगरत पाप ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिसु धन का तुम गरबु करत हउ सो धनु किसहि न आप ॥ खिन महि छोडि जाइ बिखिआ रसु तउ लागै पछुताप ॥ १ ॥ जो तुमरे प्रभ होते सुआमी हरि तिन के जापहु जाप ॥ उपदेसु करत नानक जन तुम कउ जउ सुनहु तउ जाइ संताप ॥ २ ॥ १ ॥ ७ ॥

{वर्णनीय है कि बाबा पृथी चंद गुरु रामदास जी के बड़े सुपुत्र थे। जब गुरु जी ने अपने छोटे सुपुत्र गुरु अर्जुन देव जी को गुरुगद्दी सौंपी थी तो बाबा पृथी चंद ने बड़ा विरोध किया था।}

हे पुत्र! अपने पिता से क्यों झगड़ा कर रहे हो? जिन्होंने जन्म देकर तुम्हें बड़ा किया है, उनके साथ झगड़ा करना पाप है॥ १॥ रहाउ॥ जिस धन का तुम अहंकार करते हो, वह धन किसी का अपना नहीं बना है। जहर रूपी यह धन पल में छोड़ जाता है तो बाद में पछतावा होता है॥ १॥ जो प्रभु तुम्हारा स्वामी है, उसका ही जाप करो। नानक तुमको उपदेश करते हैं, यदि इसे ध्यानपूर्वक सुनोगे तो तुम्हारा दुख दूर हो जाएगा॥ २॥ १॥ ७॥

सारग महला ४ घरु ५ दुपदे पड़ताल ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

जपि मन जगंनाथ जगदीसरो जगजीवनो मनमोहन सिउ प्रीति लागी मै हरि हरि हरि टेक सभ दिनसु सभ राति ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि की उपमा अनिक अनिक अनिक गुन गावत सुक नारद ब्रहमादिक तव गुन सुआमी गनिन न जाति ॥ तू हरि बेअंतु तू हरि बेअंतु तू हरि सुआमी तू आपे ही जानहि आपनी भांति ॥ १ ॥ हरि कै निकटि निकटि हरि निकट ही बसते ते हरि के जन साधू हरि भगात ॥ ते हरि के जन हरि सिउ रलि मिले जैसे जन नानक सललै सलल मिलाति ॥ २ ॥ १ ॥ ८ ॥

हे मन! जगत के स्वामी, जीवनदाता, जगदीश्वर का जाप करो, उस प्यारे प्रभु से प्रेम लगा हुआ है और हर दिन हर रात उसी का मुझे आसरा है॥ १॥ रहाउ॥ ईश्वर की अनेकानेक महिमाएँ हैं। शुकदेव, नारद एवं ब्रह्मा इत्यादि उसके ही गुण गाते हैं। हे स्वामी! तेरे उपकारों को गिना नहीं जा सकता। हे हरि! तू बेअन्त है, बेअन्त है। हे स्वामी! तू स्वयं ही अपनी विशेषताओं को जानता है॥ १॥ जो ईश्वर के निकट ही बसते हैं, वे साधु पुरुष ईश्वर के परम भक्त हैं। नानक फुरमाते हैं कि ईश्वर के भक्त ईश्वर के साथ यूं मिल जाते हैं, जैसे पानी पानी में मिल जाता है॥ २॥ १॥ ८॥

सारंग महला ४ ॥ जपि मन नरहरे नरहर सुआमी हरि सगल देव देवा स्री राम राम नामा हरि प्रीतमु मोरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जितु ग्रिहि गुन गावते हरि के गुन गावते राम गुन गावते तितु ग्रिहि वाजे पंच सबद वड भाग मथोरा ॥ तिन्ह जन के सभि पाप गए सभि दोख गए सभि रोग गए कामु क्रोधु लोभु मोहु अभिमानु गए तिन्ह जन के हरि मारि कढे पंच चोरा ॥ १ ॥ हरि राम बोलहु हरि साधू हरि के जन साधू जगदीसु जपहु मनि बचनि करमि हरि हरि आराधू हरि के जन साधू ॥ हरि राम बोलि हरि राम बोलि सभि पाप गवाधू ॥ नित नित जागरणु करहु सदा सदा आनंदु जपि जगदीसुोरा ॥ मन इछे फल पावहु सभै फल पावहु धरमु अरथु काम मोखु जन नानक हरि सिउ मिले हरि भगत तोरा ॥ २ ॥ २ ॥ ६ ॥

हे मन! नारायण का जाप करो, वह श्रीहरि सभी देवताओं का भी पूज्य देव है, वह श्री राम ही मेरा प्रियतम है॥ १॥ रहाउ॥ जिस घर में परमात्मा का गुणगान होता है, राम का यशोगान होता है, उस घर में अनगिनत खुशियाँ एवं आनंद हो जाता है, अहोभाग्य जाग जाते हैं। उन भक्तों के सभी पाप, दोष, रोग, काम-क्रोध, लोभ, मोह एवं अभिमान दूर हो जाता है। ईश्वर उन भक्तों के कामादिक पांच विकारों को मारकर निकाल देता है॥ १॥ ईश्वर के भक्त, साधु पुरुष राम नाम ही बोलते हैं और उस जगदीश का ही जाप करते हैं। ईश्वर के भक्त मन, वचन एवं कर्म से हरि की आराधना करते हैं। वे राम नाम बोलकर अपने सब पापों का निवारण करते हैं। वे नित्य जागृत

रहते हैं और सदा जगदीश्वर को जपकर आनंद पाते हैं। वे धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष एवं मनवांछित फल पाते हैं। हे नानक ! भक्तजन ईश्वर की भक्ति में ही लीन रहते हैं॥ २॥ २॥ ६॥

सारग महला ४ ॥ जपि मन माधो मधुसूदनो हरि स्रीरंगो परमेसरो सति परमेसरो प्रभु अंतरजामी ॥ सभ दूखन को हंता सभ सूखन को दाता हरि प्रीतम गुन गाओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि घटि घटे घटि बसता हरि जलि थले हरि बसता हरि थान थानंतरि बसता मै हरि देखन को चाओ ॥ कोई आवै संतो हरि का जनु संतो मेरा प्रीतम जनु संतो मोहि मारगु दिखलावै ॥ तिसु जन के हउ मलि मलि धोवा पाओ ॥ १ ॥ हरि जन कउ हरि मिलिआ हरि सरधा ते मिलिआ गुरमुखि हरि मिलिआ ॥ मेरै मनि तनि आनंद भए मै देखिआ हरि राओ ॥ जन नानक कउ किरपा भई हरि की किरपा भई जगदीसुर किरपा भई ॥ मै अनदिनो सद सद सदा हरि जपिआ हरि नाओ ॥ २ ॥ ३ ॥ १० ॥

हे मन ! माधव, मधुसूदन, श्रीहरि, श्रीरंग, सत्यस्वरूप परमेश्वर, अन्तर्यामी प्रभु का भजन करो। वह सब दुखों को नष्ट करने वाला है, सब सुख प्रदान करने वाला है, उस प्रियतम हरि के गुण गाओ॥ १॥ रहाउ॥ ईश्वर सब में व्याप्त है, हर शरीर में रहता है, समुद्र, पृथ्वी में वही रहता है, देश-देशान्तर सब में बसा हुआ है। मुझे तो हरि दर्शन का चाव है। यदि कोई संत, ईश्वर का भक्त, मेरा प्रियतम संत मेरे पास आए और मुझे सच्चा मार्ग दिखाए तो उस महापुरुष के मल-मलकर मैं पैर धोता रहूँ॥ १॥ ईश्वर के भक्त को पूर्ण श्रद्धा से ही ईश्वर मिला है और गुरु के सान्निध्य में उसी से साक्षात्कार हुआ है। जब मुझे ईश्वर के दर्शन हुए तो मेरे मन तन में आनंद हो गया। नानक का कथन है कि जब मुझ पर जगदीश्वर श्रीहरि की कृपा हुई तो मैंने दिन-रात हरि नाम का जाप किया है॥ २॥ ३॥ १०॥

सारग महला ४ ॥ जपि मन निरभउ ॥ सति सति सदा सति ॥ निरवैरु अकाल मूरति ॥ आजूनी संभउ ॥ मेरे मन अनदिनुो धिआइ निरंकारु निराहारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि दरसन कउ हरि दरसन कउ कोटि कोटि तेतीस सिध जती जोगी तट तीरथ परभवन करत रहत निराहारी ॥ तिन जन की सेवा थाइ पई जिन्ह कउ किरपाल होवतु बनवारी ॥ १ ॥ हरि के हो संत भले ते ऊतम भगत भले जो भावत हरि राम मुरारी ॥ जिन्ह का अंगु करै मेरा सुआमी तिन्ह की नानक हरि पैज सवारी ॥ २ ॥ ४ ॥ ११ ॥

हे मन ! ईश्वर का भजन करो, वह निर्भय है, सदा शाश्वत-स्वरूप है, वह वैर-भावना से रहित है, वह कालातीत ब्रह्म मूर्ति अमर है, वह जन्म-मरण से परे है, वह स्वतः प्रकाशमान हुआ है, वह भोजन पानी से रहित है। हे मेरे मन ! सदैव उस निरंकार का चिंतन करो॥ १॥ रहाउ॥ परमात्मा के दर्शन के लिए तैंतीस करोड़ देवता, सिद्ध, ब्रह्मचारी, योगी, तटों-तीर्थों की यात्रा करते एवं व्रत-उपवास रखते हैं। उन भक्तों की सेवा सफल होती है, जिन पर ईश्वर कृपालु होता है॥ १॥ ईश्वर के वही संत एवं उत्तम भक्त भले हैं, जो प्रभु को प्रिय लगते हैं। हे नानक ! मेरा स्वामी जिनका साथ देता है, उनकी ही लाज बचाता है॥ २॥ ४॥ ११॥

सारग महला ४ पड़ताल ॥ जपि मन गोविंदु हरि गोविंदु गुणी निधानु सभ स्रिसटि का प्रभो मेरे मन हरि बोलि हरि पुरखु अबिनासी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि का नामु अंम्रितु हरि हरि हरे सो पीऐ जिसु रामु पिआसी ॥ हरि आपि दइआलु दइआ करि मेलै जिसु सतिगुरू सो जनु हरि हरि अंम्रित नामु चखासी ॥ १ ॥ जो जन सेवहि सद सदा मेरा हरि हरे तिन का सभु दूखु भरमु भउ जासी ॥ जनु नानकु नामु लए तां जीवै जिउ चात्रिकु जलि पीऐ त्रिपतासी ॥ २ ॥ ५ ॥ १२ ॥

हे मन! गोविंद का भजन कर, वह गुणों का भण्डार है, सम्पूर्ण सृष्टि का मालिक है, वह परमपुरुष अनश्वर है, अतः उसका नामोच्चारण कर॥१॥ रहाउ॥ परमात्मा का नाम अमृतमय है, वही इसका पान करता है, जिसे ईश्वर स्वयं पिलाता है। दयालु परमेश्वर दया करके जिसका सतगुरु से साक्षात्कार करवा देता है, वही जिज्ञासु हरिनामामृत चखता है॥१॥ जो भक्त सदा मेरे हरि की उपासना करते हैं, उनका दुख, भ्रम एवं भय सब दूर हो जाता है। नानक प्रभु का नाम जपकर जीवन पाता है, ज्यों चातक स्वाति बूंद पाकर तृप्त होता है॥२॥५॥१२॥

सारग महला ४ ॥ जपि मन सिरी रामु ॥ राम रमत रामु ॥ सति सति रामु ॥ बोलहु भईआ सद राम रामु रामु रवि रहिआ सरबगे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रामु आपे आपि आपे सभु करता रामु आपे आपि आपि सभतु जगे ॥ जिसु आपि क्रिपा करे मेरा राम राम राम राइ सो जनु राम नाम लिव लागे ॥ १ ॥ राम नाम की उपमा देखहु हरि संतहु जो भगत जनां की पति राखै विचि कलिजुग अगे ॥ जन नानक का अंगु कीआ मेरै राम राइ दुसमन दूख गए सभि भगे ॥ २ ॥ ६ ॥ १३ ॥

हे मन! श्री राम का जाप कर लो, सम्पूर्ण सृष्टि में 'राम राम' बसा हुआ है। राम सदा सत्य है, शाश्वत स्वरूप है। हे भाई! सदैव राम राम बोलो, वह सर्वव्यापक है॥१॥ रहाउ॥ केवल राम ही सम्पूर्ण विश्व का नियंता है, सर्वशक्तिमान है, सृष्टि का कर्ता है, विश्व के कण-कण में केवल राम ही व्याप्त है। जिस पर मेरा राम कृपा करता है, वही भक्त राम नाम की भक्ति में लगन लगाता है॥१॥ हे सज्जनो! राम नाम की कीर्ति देखो! जो घोर कलियुग में भी भक्तजनों की प्रतिष्ठा बचाता है। नानक का कथन है कि मेरे राम ने दास (नानक) का साथ दिया है, जिससे सभी दुश्मन एवं दुख भाग गए हैं॥२॥६॥१३॥

सारंग महला ५ चउपदे घरु १ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

सतिगुर मूरति कउ बलि जाउ ॥ अंतरि पिआस चात्रिक जिउ जल की सफल दरसनु कदि पांउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनाथा को नाथु सरब प्रतिपालकु भगति वछलु हरि नाउ ॥ जा कउ कोइ न राखै प्राणी तिसु तू देहि असराउ ॥ १ ॥ निधरिआ धर निगतिआ गति निथाविआ तू थाउ ॥ दह दिस जांउ तहां तू संगे तेरी कीरति करम कमाउ ॥ २ ॥ एकसु ते लाख लाख ते एका तेरी गति मिति कहि न सकाउ ॥ तू बेअंतु तेरी मिति नही पाईऐ सभु तेरो खेलु दिखाउ ॥ ३ ॥ साधन का संगु साध सिउ गोसटि हरि साधन सिउ लिव लाउ ॥ जन नानक पाइआ है गुरमति हरि देहु दरसु मनि चाउ ॥ ४ ॥ १ ॥

मैं प्रेम की मूर्ति सतगुरु पर बलिहारी जाता हूँ। ज्यों चातक को स्वाति जल की प्यास होती है, वैसे ही मेरे अन्तर्मन में गुरु दर्शन की तीव्र लालसा है, कब दर्शन पाऊँगा॥१॥ रहाउ॥ परमात्मा भक्तवत्सल है, बेसहारों का सहारा है, सबका पोषक है। जिस प्राणी को कोई शरण नहीं देता है, उसे तू ही आसरा देता है॥१॥ हे परमेश्वर! तू ही बेसहारा लोगों का सहारा है, निर्बल गरीब व्यक्तियों का तू ही बल है और बेघर लोगों का तू ही घर है। दसों दिशाओं में जिधर भी जाता हूँ, वहां तू ही साथ देता है और सदा तेरा कीर्तिगान करता हूँ॥२॥ एक से ही तू लाखों हो जाता है और लाखों से ही एक हो जाता है, तेरी शक्ति एवं महत्ता का मैं वर्णन नहीं कर सकता। तू बे-अन्त है, तेरा रहस्य नहीं पाया जा सकता और दृष्टिमान समूचा विश्व-प्रसार तेरी लीला है॥३॥ साधु सज्जनों की संगत, साधुओं से गोष्ठी एवं साधु पुरुषों के संग प्रभु से प्रेम बना हुआ है। नानक की विनती है कि गुरु से उपदेश पाया है, हे प्रभु! दर्शन दो, मन में यही चाव है॥४॥१॥

सारग महला ५ ॥ हरि जीउ अंतरजामी जान ॥ करत बुराई मानुख ते छपाई साखी भूत पवान ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बैसनौ नामु करत खट करमा अंतरि लोभ जूठान ॥ संत सभा की निंदा करते डूबे सभ अगिआन ॥ १ ॥ करहि सोम पाकु हिरहि पर दरबा अंतरि झूठ गुमान ॥ सासत्र बेद की बिधि नही जाणहि बिआपे मन कै मान ॥ २ ॥ संधिआ काल करहि सभि वरता जिउ सफरी दंफान ॥ प्रभू भुलाए ऊझड़ि पाए निहफल सभि करमान ॥ ३ ॥ सो गिआनी सो बैसनौ पढ़िआ जिसु करी क्रिपा भगवान ॥ ओनि सतिगुरु सेवि परम पदु पाइआ उधरिआ सगल बिस्वान ॥ ४ ॥ किआ हम कथह किछु कथि नही जाणह प्रभ भावै तिवै बोलान ॥ साधसंगति की धूरि इक मांगउ जन नानक पइओ सरान ॥ ५ ॥ २ ॥

ईश्वर अन्तर्यामी है, मन की हर भावना को जानने वाला है। बुराई करते हुए मनुष्य लोगों से छिपा सकता है, लेकिन वायु की मानिंद ईश्वर हर जगह पर साक्षी है॥१॥ रहाउ॥ कोई मनुष्य अपना नाम वैष्णव बताता है, वह (यज्ञ, अध्यापन, अध्ययन दान इत्यादि) छः कर्म करता है, फिर भी उसके अन्तर्मन में लोभ की जूठन विद्यमान रहती है। जो संत सभा की निंदा करते हैं, ऐसे सभी लोग अज्ञान में डूबे रहते हैं॥१॥ कोई पुरुष सोम-पाक यज्ञ करता है, पराया धन छीनता है और उसके मन में झूठ का घमण्ड बना रहता है। वह शास्त्र एवं वेदों की विधि को नहीं जानता और मन के अभिमान में चकनाचूर रहता है॥२॥ वह संध्याकाल की आरती एवं व्रत उपवास करके ढोंगी ही सिद्ध होता है। (लेकिन जीव बेचारा भी क्या कर सकता है) क्योंकि, जिसे प्रभु ने भुला दिया है, वह गलत रास्ते पर ही चलता है, और किए गए सभी कर्म निष्फल होते हैं॥३॥ वास्तव में वही ज्ञानी, वही वैष्णव एवं पढ़ा लिखा है, जिस पर भगवान कृपा करता है। उन्होंने ही सतगुरु की सेवा करके परमपद (मोक्ष) पा लिया है और उनके पथ-प्रदर्शन पर सब लोगों का उद्धार हुआ है॥४॥ हम क्या कथन करें, कुछ भी कथन नहीं जानते, दरअसल जैसे प्रभु चाहता है, वैसे ही बोलते हैं। नानक विनती करते हैं कि वह तेरी शरण में आ पड़ा है और साधु पुरुषों की चरण-धूल ही चाहता है॥५॥२॥

सारग महला ५ ॥ अब मोरो नाचनो रहो ॥ लालु रगीला सहजे पाइओ सतिगुर बचनि लहो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कुआर कंनिआ जैसे संगि सहेरी प्रिअ बचन उपहास कहो ॥ जउ सुरिजनु ग्रिह भीतरि आइओ तब मुखु काजि लजो ॥ १ ॥ जिउ कनिको कोठारी चड़िओ कबरो होत फिरो ॥ जब ते सुध भए है बारहि तब ते थान थिरो ॥ २ ॥ जउ दिनु रैनि तऊ लउ बजिओ मूरत घरी पलो ॥ बजावनहारो ऊठि सिधारिओ तब फिरि बाजु न भइओ ॥ ३ ॥ जैसे कुंभ उदक पूरि आनिओ तब ओहु भिंन द्रिसटो ॥ कहु नानक कुंभु जलै महि डारिओ अंभै अंभ मिलो ॥ ४ ॥ ३ ॥

अब मेरा इधर-उधर घूमना खत्म हो गया है, गुरु के वचन द्वारा मैंने स्वाभाविक ही रंगीला प्रभु पा लिया है॥१॥ जैसे कुंवारी कन्या अपनी सहेलियों के साथ प्रियतम-पति के बारे में खूब हंसी मजाक करती है। विवाह होने पर, जब पति घर में आता है तो वह शर्माती हुई मुँह ढंकती है॥१॥ जैसे कुठाली में पड़कर सोना बहुत उछल कूद करता है, जब शुद्ध हो जाता है तो स्थिर हो जाता है। (वैसे ही जीव है)॥२॥ जब तक दिन-रात है, जब तक हर घड़ी, पल व मुहूर्त घड़ियाल बजता है वैसे ही जिंदगी चलती है। जब बजाने वाला उठकर चला जाता है तो यह घड़ियाल फिर नहीं बजता (जीवन साँसें छूटने पर जिंदगी खत्म हो जाती है)॥३॥ जैसे घड़े

को पानी से भरकर लाया जाता है तो यह भिन्न ही दिखाई देता है। हे नानक ! घड़े से भरे हुए पानी को पानी में ही मिला दिया जाता है तो पानी आत्मा परमात्मा में मिलकर एक रूप ही हो जाता है॥४॥३॥

सारग महला ५ ॥ अब पूछे किआ कहा ॥ लैनो नामु अंम्रित रसु नीको बावर बिखु सिउ गहि रहा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दुलभ जनमु चिरंकाल पाइओ जातउ कउडी बदलहा ॥ काथूरी को गाहकु आइओ लादिओ कालर बिरख जिवहा ॥ १ ॥ आइओ लाभु लाभन कै ताई मोहनि ठागउरी सिउ उलझि पहा ॥ काच बादरै लालु खोई है फिरि इहु अउसरु कदि लहा ॥ २ ॥ सगल पराध एकु गुणु नाही ठाकुरु छोडह दासि भजहा ॥ आई मसटि जड़वत की निआई जिउ तसकरु दरि सांन्हिहा ॥ ३ ॥ आन उपाउ न कोऊ सूझै हरि दासा सरणी परि रहा ॥ कहु नानक तब ही मन छुटीऐ जउ सगले अउगन मेटि धरहा ॥ ४ ॥ ४ ॥

अब पूछने पर क्या बताया जाए ? लेना तो अमृतमय मीठा रस ईश्वर का नाम है, लेकिन बावला मनुष्य विषय-विकारों में ही लीन रहा॥१॥ रहाउ॥ चिरंकाल पश्चात् दुर्लभ मानव जन्म प्राप्त हुआ किन्तु कौड़ियों के बदले जीवन बर्बाद कर दिया। प्रभु भजन रूपी कस्तूरी का ग्राहक बनकर आया था, अफसोस ! बैल (मूर्ख) बनकर अपने ऊपर मिट्टी लाद ली है॥१॥ यह मनुष्य जीवन का लाभ पाने के लिए आया था परन्तु मोहिनी ठग-बूटी में ही उलझा रहा। कांच के बदले में अमूल्य हीरे ल़ाल को खो दिया है, फिर यह सुनहरी अवसर क़ब मिलेगा॥२॥ मनुष्य में अपराध ही अपराध भरे हुए हैं, कोई अच्छाई नहीं, यह मालिक को छोड़कर उसकी दासी माया की स्तुति करता है। जिस प्रकार चोर दरवाजे में फंसकर मूर्छित हो जाता है, वैसे ही मनुष्य माया में लिप्त होकर जड़ बना हुआ खामोश है॥३॥ मुझे अन्य कोई उपाय नहीं सूझता, अतः प्रभु-भक्तों की शरण में पड़ा रहता हूँ। हे नानक ! जब सभी अवगुणों को मिटा दिया जाता है, तब ही मन बन्धनों से मुक्त होता है॥४॥४॥

सारग महला ५ ॥ माई धीरि रही प्रिअ बहुतु बिरागिओ ॥ अनिक भांति आनूप रंग रे तिन्ह सिउ रुचै न लागिओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ निसि बासुर प्रिअ प्रिअ मुखि टेरउ नींद पलक नही जागिओ ॥ हार कजर बसत्र अनिक सीगार रे बिनु पिर सभै बिखु लागिओ ॥ १ ॥ पूछउ पूछउ दीन भांति करि कोऊ कहै प्रिअ देसांगिओ ॥ हींओ देंउ सभु मनु तनु अरपउ सीसु चरण परि राखिओ ॥ २ ॥ चरण बंदना अमोल दासरो देंउ साधसंगति अरदागिओ ॥ करहु क्रिपा मोहि प्रभू मिलावहु निमख दरसु पेखागिओ ॥ ३ ॥ द्रिसटि भई तब भीतरि आइओ मेरा मनु अनदिनु सीतलागिओ ॥ कहु नानक रसि मंगल गाए सबदु अनाहदु बाजिओ ॥ ४ ॥ ५ ॥

हे माई ! मेरा हौसला खत्म हो गया है, प्रियतम प्रभु के प्रेम में वैराग्यवान हो गई हूँ। अनेक प्रकार के अनुपम रंगों में मेरी कोई दिलचस्पी नहीं॥१॥ रहाउ॥ मैं दिन-रात प्रियतम का नाम जपती रहती हूँ, उसके बिना आँखों में नींद नहीं आती, जागती रहती हूँ। सुन्दर हार, काजल, वस्त्र एवं अनेक प्रकार के श्रृंगार प्रभु के बिना सभी जहर लगते हैं॥१॥ मैं विनम्रतापूर्वक पूछती हूँ, कोई मुझे प्रियतम प्रभु का देश बता दे। मैं अपना तन, मन, सर्वस्व उसे अर्पण कर दूंगी और अपना शीश उसके चरणों में रख दूंगी॥२॥ मैं चरण वंदना करती हुई बिना मूल्य के ही उसकी दासी हूँ और साधु-पुरुषों की संगत में प्रार्थना करती हूँ कि कृपा करके मुझे प्रभु से मिला दो ताकि

पल भर दर्शन पा लूँ॥ ३॥ जब कृपा-दृष्टि हुई तो प्रभु मन में आ बसा और मेरा मन सदैव के लिए शीतल हो गया। हे नानक! तब आनंद से मंगलगान किया और अनाहद शब्द ही गाया॥ ४॥ ५॥

सारग महला ५ ॥ माई सति सति सति हरि सति सति सति साधा ॥ बचनु गुरू जो पूरै कहिओ मै छीकि गांठरी बाधा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ निसि बासुर नखिअत्र बिनासी रवि ससीअर बेनाधा ॥ गिरि बसुधा जल पवन जाइगो इकि साध बचन अटलाधा ॥ १ ॥ अंड बिनासी जेर बिनासी उतभुज सेत बिनाधा ॥ चारि बिनासी खटहि बिनासी इकि साध बचन निहचलाधा ॥ २ ॥ राज बिनासी ताम बिनासी सातकु भी बेनाधा ॥ द्रिसटिमान है सगल बिनासी इकि साध बचन आगाधा ॥ ३ ॥ आपे आपि आप ही आपे सभु आपन खेलु दिखाधा ॥ पाइओ न जाई कही भांति रे प्रभु नानक गुर मिलि लाधा ॥ ४ ॥ ६ ॥

हे माँ! सच्चिदानंद परम-परमेश्वर सत्य है, शाश्वत-स्वरूप है और साधु-पुरुष भी सत्य हैं। गुरु ने जो पूर्ण वचन कहा है, मैंने उसे गांठ में बांध लिया है॥ १॥ रहाउ॥ दिन-रात, नक्षत्र नाशवान हैं, सूर्य एवं चन्द्रमा भी नष्ट हो जाएंगे। पर्वत, पृथ्वी, जल, पवन इत्यादि खत्म हो जाएंगे, एकमात्र साधुओं का वचन अटल है॥ १॥ अण्डे से उत्पन्न होने वाले जीव, पसीने से उत्पन्न होने वाले, वनस्पति से उत्पन्न होने वाले तथा माँ के गर्भ से पैदा होने वाले जीव सब नाशवान हैं। चार वेद तथा छः शास्त्र भी नष्ट होने वाले हैं, केवल साधुओं का वचन निश्चल है॥ २॥ रजोगुण, तमोगुण तथा सतोगुण भी नष्ट होने वाले हैं। आँखों से जो कुछ भी दिखाई दे रहा है, सब नाशवान है, केवल साधुओं का वचन ही अथाह असीम है॥ ३॥ अपने आप में परमात्मा ही सर्वस्व है और अपनी लीला ही सब दिखा रहा है। नानक का कथन है कि हे भाई! किसी भी तरीके से उसे पाना संभव नहीं, परन्तु गुरु मिल जाए तो प्रभु प्राप्त हो जाता है॥ ४॥ ६॥

सारग महला ५ ॥ मेरै मनि बासिबो गुर गोबिंद ॥ जहां सिमरनु भइओ है ठाकुर तहां नगर सुख आनंद ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जहां बीसरै ठाकुरु पिआरो तहां दूख सभ आपद ॥ जह गुन गाइ आनंद मंगल रूप तहां सदा सुख संपद ॥ १ ॥ जहा स्रवन हरि कथा न सुनीऐ तह महा भइआन उदिआनद ॥ जहां कीरतनु साधसंगति रसु तह सघन बास फलांनद ॥ ३ ॥ बिनु सिमरन कोटि बरख जीवै सगली अउध ब्रिथानद ॥ एक निमख गोबिंद भजनु करि तउ सदा सदा जीवानद ॥ ३ ॥ सरनि सरनि सरनि प्रभ पावउ दीजै साधसंगति किरपानद ॥ नानक पूरि रहिओ है सरब मै सगल गुणा बिधि जांनद ॥ ४ ॥ ७ ॥

मेरे मन में गुरु परमेश्वर ही बस रहा है। जहाँ मालिक का स्मरण होता है, वहाँ सुख एवं आनंद ही स्थित रहता है॥ १॥ रहाउ॥ जहाँ प्यारा प्रभु भूल जाता है, वहाँ दुख एवं सब विपत्तियां घर कर लेती हैं। जहाँ परमेश्वर के आनंद मंगल-रूप का गुणगान होता है, वहाँ सदैव सुख-सम्पदा कायम रहती है॥ १॥ जहाँ कानों से हरि कथा को सुना नहीं जाता, वहाँ महा भयानक वीराना ही है। जहाँ सज्जन पुरुषों की संगत में परमेश्वर का संकीर्तन होता है, वहां आनंद एवं फल-फूलों की महक विद्यमान रहती है॥ २॥ भगवान के सिमरन बिना करोड़ों वर्ष जीना भी व्यर्थ है और तमाम उम्र व्यर्थ ही सिद्ध होती है। यदि एक पल गोविन्द का भजन किया जाए तो सदा सदा के लिए जीवन आनंदमय हो जाता है॥ ३॥ कृपा करके सज्जन पुरुषों की संगत प्रदान करो ताकि

प्रभु की शरण पा लूँ। नानक फुरमाते हैं कि सर्वशक्तिमान, सर्व गुणों का भण्डार परमेश्वर सबमें पूर्ण रूप से व्याप्त है॥ ४॥ ७॥

सारग महला ५ ॥ अब मोहि राम भरोसउ पाए ॥ जो जो सरणि परिओ करुणानिधि ते ते भवहि तराए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुखि सोइओ अरु सहजि समाइओ सहसा गुरहि गवाए ॥ जो चाहत सोई हरि कीओ मन बांछत फल पाए ॥ १ ॥ हिरदै जपउ नेत्र धिआनु लावउ स्रवनी कथा सुनाए ॥ चरणी चलउ मारगि ठाकुर कै रसना हरि गुण गाए ॥ २ ॥ देखिओ द्रिसटि सरब मंगल रूप उलटी संत कराए ॥ पाइओ लालु अमोलु नामु हरि छोडि न कतहू जाए ॥ ३ ॥ कवन उपमा कउन बडाई किआ गुन कहउ रीझाए ॥ होत क्रिपाल दीन दइआ प्रभ जन नानक दास दसाए ॥ ४ ॥ ८ ॥

अब मैंने राम का भरोसा पा लिया है, जो जो करुणा के भण्डार परमेश्वर की शरण में पड़ा है, वह संसार-सागर से तैर गया है॥ १॥ रहाउ॥ अब मैं सुखी और परम आनंद में लीन हूँ, गुरु ने मेरी शंकाओं को दूर कर दिया है। जो चाहता था, परमेश्वर ने पूरा कर दिया है और मुझे मनवांछित फल प्राप्त हो गया है॥ १॥ मैं हृदय में प्रभु का नाम जपता हूँ, नेत्र उसके ध्यान में लीन हैं और कानों से हरि कथा सुनता हूँ। मैं पैरों से मालिक के मार्ग पर चलता हूँ और जिह्वा से प्रभु के गुण गाता हूँ॥ २॥ मैं अपनी आँखों से सर्व मंगल रूप देखता हूँ, संतों ने मेरा ज़ीवन बदल दिया है। मैंने हरिनाम रूपी अमूल्य रत्न पा लिया है, जिसे अब बिल्कुल नहीं छोड़ सकता॥ ३॥ परमात्मा की क्या उपमा वर्णन करूँ, कौन-सी महिमा एवं क्या गुण गाऊँ कि वह खुश हो जाए। हे नानक! दीनों पर दया करने वाला प्रभु सदैव अपने दासों पर कृपालु है॥ ४॥ ८॥

सारग महला ५ ॥ ओइ सुख का सिउ बरनि सुनावत ॥ अनद बिनोद पेखि प्रभ दरसन मनि मंगल गुन गावत ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बिसम भई पेखि बिसमादी पूरि रहे किरपावत ॥ पीओ अंम्रित नामु अमोलक जिउ चाखि गूंगा मुसकावत ॥ १ ॥ जैसे पवनु बंध करि राखिओ बूझ न आवत जावत ॥ जा कउ रिदै प्रगासु भइओ हरि उआ की कही न जाइ कहावत ॥ २ ॥ आन उपाव जेते किछु कहीअहि तेते सीखे पावत ॥ अचिंत लालु ग्रिह भीतरि प्रगटिओ अगम जैसे परखावत ॥ ३ ॥ निरगुण निरंकार अबिनासी अतुलो तुलिओ न जावत ॥ कहु नानक अजरु जिनि जरिआ तिस ही कउ बनि आवत ॥ ४ ॥ ९ ॥

वह सुख किस तरह बताकर सुनाऊँ, प्रभु के दर्शनों से खुशियाँ एवं उल्लास उत्पन्न हो जाता है और मन उसके ही गुण गाता है॥ १॥ रहाउ॥ कृपालु प्रभु की अद्भुत लीलाओं को देखकर चकित हो गई हूँ। ज्यों गूंगा व्यक्ति मिठाई खा कर अपनी खुशी का इजहार करता है, वैसे ही मैंने अमूल्य नाम अमृत का पान किया है॥ १॥ जैसे प्राण-वायु को शरीर में बाँध कर रखा हुआ है और उसके आने जाने की खबर नहीं होती, वैसे ही जिसके हृदय में परम-सत्य का प्रकाश होता है, उसकी कीर्ति का वर्णन नहीं किया जा सकता॥ २॥ अन्य जितने भी उपाय हैं, सबका इस्तेमाल कर लिया है। मेरा प्रभु नैसर्गिक हृदय घर में प्रगट हो गया है, ज्यों अगम को जानने का बल मिला है॥ ३॥ वह निर्गुण निराकार, अविनाशी, अतुल्य है, उसकी महिमा की तुलना नहीं की जा सकती। हे नानक! जिसने अजरावस्था को प्राप्त कर लिया है, उसी को सफलता प्राप्त हुई है॥ ४॥ ९॥

सारग महला ५ ॥ बिखई दिनु रैनि इव ही गुदारै ॥ गोबिंदु न भजै अहंबुधि माता जनमु जूऐ जिउ हारै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नामु अमोला प्रीति न तिस सिउ पर निंदा हितकारै ॥ छापरु बांधि सवारै त्रिण को दुआरै पावकु जारै ॥ १ ॥ कालर पोट उठावै मूंडहि अंम्रितु मन ते डारै ॥ ओढै बसत्र काजर महि परिआ बहुरि बहुरि फिरि झारै ॥ २ ॥ काटै पेडु डाल परि ठाढौ खाइ खाइ मुसकारै ॥ गिरिओ जाइ रसातलि परिओ छिटी छिटी सिर भारै ॥ ३ ॥ निरवैरै संगि वैरु रचाए पहुचि न सकै गवारै ॥ कहु नानक संतन का राखा पारब्रहमु निरंकारै ॥ ४ ॥ १० ॥

विलासी पुरुष दिन-रात व्यर्थ ही गुजार देता है, वह गोविंद का भजन नहीं करता और अहंकार में लीन रहकर अपनी जीवन बाजी को जुए में हार देता है॥ १॥ रहाउ॥ वह अमूल्य प्रभु-नाम से प्रेम नहीं करता और पराई निंदा को ही लाभदायक मानता है। वह तिनकों को संवार कर झोंपड़ी तैयार करता है और द्वार पर माया की अग्नि जला लेता है॥ १॥ वह सिर पर मिट्टी की पोटली उठा लेता है और अमृत को मन से निकाल देता है। वह काजल में पड़े हुए वस्त्रों को पहनता है और बार-बार उनको झाड़ता है॥ २॥ जिस पेड़ की डाल पर खड़ा होता है, उस पेड़ को काट देता है और विषय-विकारों का सेवन कर मुस्कुराता है। परिणामस्वरूप सिर के बल गिरता जाता है और रसातल में पड़ता है॥ ३॥ वह सज्जन पुरुषों से वैर करता है, लेकिन वह मूर्ख अपनी कोशिश में सफल नहीं होता। हे नानक! निराकार परब्रह्म सदैव भक्तजनों की रक्षा करने वाला है॥ ४॥ १०॥

सारग महला ५ ॥ अवरि सभि भूले भ्रमत न जानिआ ॥ एकु सुधाखरु जा कै हिरदै वसिआ तिनि बेदहि ततु पछानिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ परविरति मारगु जेता किछु होईऐ तेता लोग पचारा ॥ जउ लउ रिदै नही परगासा तउ लउ अंध अंधारा ॥ १ ॥ जैसे धरती साधै बहु बिधि बिनु बीजै नही जांमै ॥ राम नाम बिनु मुकति न होई है तुटै नाही अभिमानै ॥ २ ॥ नीरु बिलोवै अति स्रमु पावै नैनू कैसे रीसै ॥ बिनु गुर भेटे मुकति न काहू मिलत नही जगदीसै ॥ ३ ॥ खोजत खोजत इहै बीचारिओ सरब सुखा हरि नामा ॥ कहु नानक तिसु भइओ परापति जा कै लेखु मथामा ॥ ४ ॥ ११ ॥

अन्य सभी लोग भूले हुए हैं और उन्होंने सत्य को नहीं जाना। जिसके हृदय में एक शुद्ध अक्षर ओंकार बस गया है, उसने वेदों के सार तत्व को पहचान लिया है॥ १॥ रहाउ॥ जितना भी प्रवृत्ति-मार्ग अपनाया जाता है, उतना ही लोकाचार है। जब तक हृदय में सत्य का आलोक नहीं होता, तब तक ज्ञान का घोर अंधेरा ही बना रहता है॥ १॥ जिस प्रकार धरती पर अनेक प्रकार से सिंचाई की जाए परन्तु बीज बोए बिना खेती नहीं जंमती। वैसे ही राम नाम के स्मरण बिना मुक्ति प्राप्त नहीं होती और न ही अभिमान समाप्त होता है॥ २॥ अगर सख्त मेहनत करके जल को बिलोया जाए, तो भी मक्खन प्राप्त नहीं होता। इसी प्रकार गुरु से साक्षात्कार के बिना मुक्ति प्राप्त नहीं होती और न ही परमेश्वर मिलता है॥ ३॥ खोजते-खोजते यही निष्कर्ष पाया है कि परमेश्वर का नाम ही सर्व सुख प्रदान करने वाला है। हे नानक! यह उसको ही प्राप्त होता है, जिसका उत्तम भाग्य होता है॥ ४॥ ११॥

सारग महला ५ ॥ अनदिनु राम के गुण कहीऐ ॥ सगल पदारथ सरब सूख सिधि मन बांछत फल लहीऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आवहु संत प्रान सुखदाते सिमरह प्रभु अबिनासी ॥ अनाथह नाथु दीन दुख भंजन पूरि रहिओ घट वासी ॥ १ ॥ गावत सुनत सुनावत सरधा हरि रसु पी वडभागे ॥ कलि

कलेस मिटे सभि तन ते राम नाम लिव जागे ॥ २ ॥ कामु क्रोधु झूठु तजि निंदा हरि सिमरनि बंधन तूटे ॥ मोह मगन अहं अंध ममता गुर किरपा ते छूटे ॥ ३ ॥ तू समरथु पारब्रहम सुआमी करि किरपा जनु तेरा ॥ पूरि रहिओ सरब महि ठाकुरु नानक सो प्रभु नेरा ॥ ४ ॥ १२ ॥

हर पल भगवान की महिमागान करनी चाहिए, इससे सब पदार्थ, सर्व सुख, सिद्धियाँ एवं मनवांछित फल की प्राप्ति होती है॥१॥ रहाउ॥ हे सज्जनो! आओ, प्राणों को सुख देने वाले, अविनाशी प्रभु की आराधना करें। अनाथों का नाथ, दीन-दुखियों के दुख नाश करने वाला दिल में ही बसा हुआ है॥१॥ भाग्यशाली पुरुष प्रभु के गुण गाता, उसका यश सुनता-सुनाता है और श्रद्धापूर्वक हरि रस का पान करता है। यदि राम नाम में ध्यान लगाया जाए तो तन से सभी कलह-कलेश मिट जाते हैं॥२॥ काम, क्रोध, झूठ एवं निंदा को छोड़कर परमेश्वर का स्मरण करने से सब बन्धनों से छुटकारा हो जाता है। गुरु की कृपा से मोह में मग्न, अहंकार में अंधा हुआ जीव ममत्व इत्यादि सब बन्धनों से मुक्त हो जाता है॥३॥ हे परब्रह्म स्वामी! तू सर्वशक्तिमान है, अपने भक्त पर कृपा करो। नानक का कथन है कि मालिक सब में मौजूद है और वह प्रभु हमारे निकट ही है॥४॥१२॥

सारग महला ५ ॥ बलिहारी गुरदेव चरन ॥ जा कै संगि पारब्रहमु धिआईऐ उपदेसु हमारी गति करन ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दूख रोग भै सगल बिनासे जो आवै हरि संत सरन ॥ आपि जपै अवरह नामु जपावै वड समरथ तारन तरन ॥ १ ॥ जा को मंत्रु उतारै सहसा ऊणे कउ सुभर भरन ॥ हरि दासन की आगिआ मानत ते नाही फुनि गरभ परन ॥ २ ॥ भगतन की टहल कमावत गावत दुख काटे ता के जनम मरन ॥ जा कउ भइओ क्रिपालु बीठुला तिनि हरि हरि अजर जरन ॥ ३ ॥ हरि रसहि अघाने सहजि समाने मुख ते नाही जात बरन ॥ गुर प्रसादि नानक संतोखे नामु प्रभू जपि जपि उधरन ॥ ४ ॥ १३ ॥

मैं गुरुदेव के चरणों पर कुर्बान जाता हूँ, जिनके साथ परब्रह्म का ध्यान होता है और उनका उपदेश हमारी मुक्ति करता है॥१॥ रहाउ॥ जो भी संतों की शरण में आता है, उसके दुख, रोग भय सब नाश हो जाते हैं। वे स्वयं तो परमात्मा का जाप करते ही हैं, अन्य लोगों को भी नाम का ही जाप करवाते हैं। वे इतने समर्थ हैं कि जीव को संसार-सागर से पार उतार देते हैं॥१॥ जिनका मंत्र सब संदेह समाप्त कर देता है और खाली को पूर्णतया भर देता है, उन ईश्वर-भक्तों की आज्ञा मानने से पुनः गर्भ योनि में नहीं आना पड़ता॥२॥ जो भक्तों की सेवा करते हैं, उनके गुण गाते हैं, उनके जन्म-मरण के दुख कट जाते हैं। जिन पर ईश्वर कृपालु होता है, ऐसे लोग प्रभु भजन करते हुए अमर हो जाते हैं॥३॥ जो हरि रस से तृप्त होकर सहजावस्था में लीन रहते हैं, उनकी कीर्ति मुँह से वर्णन नहीं की जा सकती। हे नानक! गुरु की कृपा से प्रभु नाम का स्मरण करके संतुष्ट हो गए हैं और प्रभु का निरंतर जाप करके उनकी मुक्ति हो गई है॥४॥१३॥

सारग महला ५ ॥ गाइओ री मै गुण निधि मंगल गाइओ ॥ भले संजोग भले दिन अउसर जउ गोपालु रीझाइओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संतह चरन मोरलो माथा ॥ हमरे मसतकि संत धरे हाथा ॥ १ ॥ साधह मंत्रु मोरलो मनूआ ॥ ता ते गतु होए त्रै गुनीआ ॥ २ ॥ भगतह दरसु देखि नैन रंगा ॥ लोभ मोह तूटे भ्रम संगा ॥ ३ ॥ कहु नानक सुख सहज अनंदा ॥ खोल्हि भीति मिले परमानंदा ॥ ४ ॥ १४ ॥

अरी सखी! मैंने गुणों के भण्डार निरंकार का ही मंगलगान किया है। वे संयोग, दिन एवं अवसर सब भले हैं, जब प्रभु को प्रसन्न किया॥१॥ रहाउ॥ मेरा माथा संत पुरुषों के चरणों में नत है, उन्होंने हमारे माथे पर अपना (आशीष) हाथ रख दिया है॥१॥ जब से साधुओं के मंत्र (उपदेश) का अभ्यास किया है, हमारा तीन गुणों से छुटकारा हो गया है॥२॥ भक्तों के दर्शन पाकर नयनों में प्रभु का रंग लग गया है और लोभ, मोह एवं भ्रम समाप्त हो गए हैं॥३॥ हे नानक! अब सहज सुख एवं आनंद प्राप्त हुआ है, अज्ञान की दीवार को खोलकर परमानंद मिला है॥४॥१४॥

सारग महला ५ घरु २ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

कैसे कहउ मोहि जीअ बेदनाई ॥ दरसन पिआस प्रिअ प्रीति मनोहर मनु न रहै बहु बिधि उमकाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चितवनि चितवउ प्रिअ प्रीति बैरागी कदि पावउ हरि दरसाई ॥ जतन करउ इहु मनु नही धीरै कोऊ है रे संतु मिलाई ॥ १ ॥ जप तप संजम पुंन सभि होमउ तिसु अरपउ सभि सुख जांई ॥ एक निमख प्रिअ दरसु दिखावै तिसु संतन कै बलि जांई ॥ २ ॥ करउ निहोरा बहुतु बेनती सेवउ दिनु रैनाई ॥ मानु अभिमानु हउ सगल तिआगउ जो प्रिअ बात सुनाई ॥ ३ ॥ देखि चरित्र भई हउ बिसमनि गुरि सतिगुरि पुरखि मिलाई ॥ प्रभ रंग दइआल मोहि ग्रिह महि पाइआ जन नानक तपति बुझाई ॥ ४ ॥ १ ॥ १५ ॥

मैं अपने दिल का दर्द कैसे बताऊँ। प्यारे प्रभु के दर्शन की तीव्र लालसा एवं प्रेम बना हुआ है और मन अनेक प्रकार से महत्वाकांक्षी है॥१॥ रहाउ॥ प्रियतम के प्रेम में वैराग्यवान चित्त यही चिन्तना करता है कि कब हरि का दर्शन प्राप्त होगा। अनेक कोशिशों के बावजूद इस मन को धैर्य नहीं होता, कोई संत ही प्रभु से मिलाप करा दे॥१॥ मैं जप, तप, संयम तथा पुण्य इत्यादि का बलिदान देकर उसे सभी सुख अर्पण कर दूंगी। यदि एक पल भर प्रियतम प्रभु के दर्शन करवा दे तो उस संत पुरुष पर कुर्बान हूँ॥२॥ मैं मनौती एवं बहुत विनती करती हूँ और दिन-रात सेवा में तल्लीन रहती हूँ। जो प्रियतम की बात सुनाता है, उसके लिए मान-अभिमान त्याग दूँगी॥३॥ गुरु-सतगुरु ने जब मिलाप करवाया तो उसका चरित देख आश्चर्यचकित हो गई। हे नानक! दयालु प्रभु को हृदय-घर में पा कर सारी जलन बुझ गई है॥४॥१॥१५॥

सारग महला ५ ॥ रे मूढ़े तू किउ सिमरत अब नाही ॥ नरक घोर महि उरध तपु करता निमख निमख गुण गांही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनिक जनम भ्रमतौ ही आइओ मानस जनमु दुलभाही ॥ गरभ जोनि छोडि जउ निकसिओ तउ लागो अन ठांही ॥ १ ॥ करहि बुराई ठगाई दिनु रैनि निहफल करम कमाही ॥ कणु नाही तुह गाहण लागे धाइ धाइ दुख पांही ॥ २ ॥ मिथिआ संगि कूड़ि लपटाइओ उरझि परिओ कुसमांही ॥ धरम राइ जब पकरसि बवरे तउ काल मुखा उठि जाही ॥ ३ ॥ सो मिलिआ जो प्रभू मिलाइआ जिसु मसतकि लेखु लिखांही ॥ कहु नानक तिन्ह जन बलिहारी जो अलिप रहे मन मांही ॥ ४ ॥ २ ॥ १६ ॥

अरे मूर्ख! अब तू परमेश्वर का सिमरन क्यों नहीं करता, गर्भ रूपी घोर नरक में उलटा पड़ा हुआ तप करता था और पल-पल गुण गाता था॥१॥ रहाउ॥ अनेक जन्म भटकने के पश्चात् अब दुर्लभ मानव जन्म प्राप्त हुआ है। गर्भ-योनि को छोड़कर ज्यों ही बाहर निकले तो तुम संसार में लीन हो गए॥१॥ तुम दिन-रात बुराई एवं छल-कपट करते हो और व्यर्थ कर्म ही कर रहे हो। तुम अनाज विहीन कृषि की गहाई में लगे हुए हो और दुख पा रहे हो॥२॥ अरे पगले! जब

धर्मराज पकड़ कर ले जाएगा तो मुँह काला करवा कर उठ जाओगे॥३॥ वही प्रभु से मिला है, जिसे उसने स्वयं मिलाया है और जिसके मस्तक पर भाग्य होता है। नानक फुरमाते हैं कि मैं उन पर कुर्बान जाता हूँ, जो मन में अलिप्त रहते हैं॥४॥२॥१६॥

सारग महला ५ ॥ किउ जीवनु प्रीतम बिनु माई ॥ जा के बिछुरत होत मिरतका ग्रिह महि रहनु न पाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जीअ हींअ प्रान को दाता जा कै संगि सुहाई ॥ करहु क्रिपा संतहु मोहि अपुनी प्रभ मंगल गुण गाई ॥ १ ॥ चरन संतन के माथे मेरे ऊपरि नैनहु धूरि बांछाई ॥ जिह प्रसादि मिलीऐ प्रभ नानक बलि बलि ता कै हउ जाई ॥ २ ॥ ३ ॥ १७ ॥

हे माई! प्रियतम प्रभु के बिना किस तरह जिंदा रहा जा सकता है, जिसके बिछुड़ने से शरीर लाश बराबर हो जाता है और घर में मृत शरीर रह नहीं पाता॥१॥ रहाउ॥ आत्मा, हृदय व प्राण देने वाले प्रभु के साथ रहना ही सुखदायी है। हे भक्तजनो! मुझ पर कृपा करो, ताकि अपने प्रभु का गुणगान करता रहूँ॥१॥ संतों के चरण मेरे माथे पर ही रहें और नयनों से उनकी चरणरज की ही आकांक्षा है। हे नानक! जिसकी कृपा से प्रभु से मिलाप होता है, उस पर पुनः पुनः कुर्बान जाता हूँ॥२॥३॥१७॥

सारग महला ५ ॥ उआ अउसर कै हउ बलि जाई ॥ आठ पहर अपना प्रभु सिमरनु वडभागी हरि पांई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भलो कबीरु दासु दासन को ऊतमु सैनु जनु नाई ॥ ऊच ते ऊच नामदेउ समदरसी रविदास ठाकुर बणि आई ॥ १ ॥ जीउ पिंडु तनु धनु साधन का इहु मनु संत रेनाई ॥ संत प्रतापि भरम सभि नासे नानक मिले गुसाई ॥ २ ॥ ४ ॥ १८ ॥

मैं उस अवसर पर बलिहारी जाता हूँ, जब आठ प्रहर अपने प्रभु का चिंतन करके अहोभाग्य से उसे पा लिया॥१॥ रहाउ॥ दासों के दास भक्त कबीर भले हैं और सैन भक्त उत्तम हैं। भक्त नामदेव महान् हैं और समदर्शी रविदास की प्रभु से प्रीति बनी रही॥१॥ यह शरीर, प्राण, तन, धन इत्यादि सब साधु-पुरुषों पर न्यौछावर है और यह मन संतजनों की चरणरज समान है। गुरु नानक फुरमाते हैं कि संत पुरुषों के प्रताप से सभी भ्रम दूर हो गए हैं और मालिक मिल गया है॥२॥४॥१८॥

सारग महला ५ ॥ मनोरथ पूरे सतिगुर आपि ॥ सगल पदारथ सिमरनि जा कै आठ पहर मेरे मन जापि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अंम्रित नामु सुआमी तेरा जो पीवै तिस ही त्रिपतास ॥ जनम जनम के किलबिख नासहि आगै दरगह होइ खलास ॥ १ ॥ सरनि तुमारी आइओ करते पारब्रहम पूरन अबिनास ॥ करि किरपा तेरे चरन धिआवउ नानक मनि तनि दरस पिआस ॥ २ ॥ ५ ॥ १९ ॥

सद्गुरु ने मेरी मनोकामनाएँ पूरी कर दी हैं। जिसका स्मरण करने से सभी पदार्थ प्राप्त होते हैं, हे मेरे मन! आठ प्रहर उसका जाप कर॥१॥ रहाउ॥ हे स्वामी! जो तेरा नामामृत पान करता है, वह तृप्त हो जाता है। उसके जन्म-जन्मांतर के पाप नष्ट हो जाते हैं और आगे प्रभु-दरबार में मुक्ति होती है॥१॥ हे पूर्ण अविनाशी, परब्रह्म कर्ता! मैं तुम्हारी शरण में आया हूँ। कृपा करो ताकि तेरे चरणों का ध्यान करता रहूँ, नानक के मन तन में तेरे दर्शन की ही तीव्र आकांक्षा है॥२॥५॥१९॥

सारग महला ५ घरु ३ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

मन कहा लुभाईऐ आन कउ ॥ ईत ऊत प्रभु सदा सहाई जीअ संगि तेरै काम कउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अंम्रित नामु प्रिअ प्रीति मनोहर इहै अघावन पांन कउ ॥ अकाल मूरति है साध संतन की ठाहर नीकी धिआन कउ ॥ १ ॥ बाणी मंत्रु महा पुरखन की मनहि उतारन मांन कउ ॥ खोजि लहिओ नानक सुख थानां हरि नामा बिस्राम कउ ॥ २ ॥ १ ॥ २० ॥

हे मन ! संसार की चीजों की ओर क्यों लुब्ध हो रहे हो ? इहलोक-परलोक प्रभु सदा सहायक है, वह प्राणों का साथी ही तेरे काम आने वाला है॥१॥ रहाउ॥ प्रियतम का नाम अमृतमय है, उसका मनोहर प्रेम ही तृप्ति प्रदान करने वाला है। उस कालातीत ब्रह्म मूर्ति परमेश्वर का ध्यान करने के लिए साधु-संतों की संगत ही अच्छा ठिकाना है॥१॥ महापुरुषों की वाणी ऐसा महामंत्र है, जो मन का अभिमान निवृत्त कर देती है। नानक फुरमाते हैं कि प्रभु का नाम शान्ति प्रदान करने वाला है, अतः इस सुख के स्थान को खोज लो॥२॥१॥२०॥

सारग महला ५ ॥ मन सदा मंगल गोबिंद गाइ ॥ रोग सोग तेरे मिटहि सगल अघ निमख हीऐ हरि नामु धिआइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ छोडि सिआनप बहु चतुराई साधू सरणी जाइ पाइ ॥ जउ होइ क्रिपालु दीन दुख भंजन जम ते होवै धरम राइ ॥ १ ॥ एकस बिनु नाही को दूजा आन न बीओ लवै लाइ ॥ मात पिता भाई नानक को सुखदाता हरि प्रान साइ ॥ २ ॥ २ ॥ २१ ॥

हे मन ! सदा भगवान का मंगल-गान करो। यदि पल भर हृदय में हरिनाम का ध्यान करोगे तो तेरे सभी पाप, रोग एवं शोक मिट जाएँगे॥१॥ रहाउ॥ अपनी बुद्धिमानी एवं चतुराई को छोड़कर साधुओं की शरण में पड़ जाओ। दीनों के दुख नाश करने वाला प्रभु जब कृपालु होता है तो यम भी धर्मराज सरीखा आचरण करता है॥१॥ एक परमेश्वर के अतिरिक्त दूसरा कोई नहीं है और कोई अन्य उसकी बराबरी नहीं कर सकता। नानक का मत है कि माता-पिता एवं भाई समान प्राणों का स्वामी परमेश्वर ही सुख प्रदान करने वाला है॥२॥२॥२१॥

सारग महला ५ ॥ हरि जन सगल उधारे संग के ॥ भए पुनीत पवित्र मन जनम जनम के दुख हरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मारगि चले तिन्ही सुखु पाइआ जिन्ह सिउ गोसटि से तरे ॥ बूडत घोर अंध कूप महि ते साधू संगि पारि परे ॥ १ ॥ जिन्ह के भाग बडे है भाई तिन्ह साधू संगि मुख जुरे ॥ तिन्ह की धूरि बांछै नित नानकु प्रभु मेरा किरपा करे ॥ २ ॥ ३ ॥ २२ ॥

परमात्मा के भक्त अपने संगियों का भी उद्धार कर देते हैं। उनका मन पवित्र होता है और जन्म-जन्म के दुखों को हरण कर लेते हैं॥१॥ रहाउ॥ जो भी सन्मार्ग चले हैं, उन्होंने सुख ही पाया है, जिनके साथ उनके प्रवचन हुए, वे भी संसार-सागर से तैर गए हैं। जो अज्ञान के घोर अंधकूप में गिरे हुए थे, वे साधु-पुरुषों की संगत में पार उतर गए हैं॥१॥ हे भाई ! जिनके उत्तम भाग्य होते हैं, वे साधुओं की संगत में ही सम्मिलित रहते हैं। नानक कथन करते हैं कि हम भी उनकी चरण-धूलि के आकांक्षी हैं, यदि मेरा प्रभु कृपा करे तो मिल जाए॥२॥३॥२२॥

सारग महला ५ ॥ हरि जन राम राम राम धिआंए ॥ एक पलक सुख साध समागम कोटि बैकुंठह पांए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दुलभ देह जपि होत पुनीता जम की त्रास निवारै ॥ महा पतित के पातिक उतरहि हरि नामा उरि धारै ॥ १ ॥ जो जो सुनै राम जसु निरमल ता का जनम मरण दुखु नासा ॥ कहु नानक पाईऐ वडभागीं मन तन होइ बिगासा ॥ २ ॥ ४ ॥ २३ ॥

भक्तजन परमात्मा के गहन चिंतन में ही लीन रहते हैं। साधु पुरुषों की संगत में एक पल भर रहने से करोड़ों स्वर्गों के सुखों का फल प्राप्त होता है॥१॥ रहाउ॥ परमेश्वर का जप करने से दुर्लभ शरीर पवित्र हो जाता है और यम की पीड़ा का निवारण कर देता है। हरिनाम को हृदय में धारण करने से महा पापियों के भी पाप उतर जाते हैं॥१॥ जो ज़ो पावन राम यश सुनता है, उसका जन्म-मरण का दुख नाश हो जाता है। नानक फुरमाते हैं कि अहोभाग्य से (हरि यश) प्राप्त होता है और मन तन खिल उठता है॥२॥४॥२३॥

सारग महला ५ दुपदे घरु ४ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

मोहन घरि आवहु करउ जोदरीआ ॥ मानु करउ अभिमानै बोलउ भूल चूक तेरी प्रिअ चिरीआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ निकटि सुनउ अरु पेखउ नाही भरमि भरमि दुख भरीआ ॥ होइ क्रिपाल गुर लाहि पारदो मिलउ लाल मनु हरीआ ॥ १ ॥ एक निमख जे बिसरै सुआमी जानउ कोटि दिनस लख बरीआ ॥ साधसंगति की भीर जउ पाई तउ नानक हरि संगि मिरीआ ॥ २ ॥ १ ॥ २४ ॥

हे प्रभु! मैं हाथ जोड़कर प्रार्थना करती हूँ, घर चले आओ। चाहे मान करती हूँ, अभिमान में बोलती हूँ, इन भूल-चूक के बावजूद भी तेरी दासी हूँ॥१॥ रहाउ॥ मैंने सुना है कि तू निकट है और देखती नहीं, भ्रम में पड़कर दुखों से भरी हुई हूँ। जब गुरु कृपालु होकर अज्ञान का पर्दा उतार देता है तो प्रभु को मिलकर मन खिल उठता हूँ॥१॥ यदि एक पल भी स्वामी भूलता है तो वह समय करोड़ों दिवस एवं लाख बरस मानती हूँ। हे नानक! जब साधु पुरुषों की संगत प्राप्त हुई तो मेरा प्रभु मुझे मिल गया॥२॥१॥२४॥

सारग महला ५ ॥ अब किआ सोचउ सोच बिसारी ॥ करणा सा सोई करि रहिआ देहि नाउ बलिहारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चहु दिस फूलि रही बिखिआ बिखु गुर मंत्रु मूखि गरुड़ारी ॥ हाथ देइ राखिओ करि अपुना जिउ जल कमला अलिपारी ॥ १ ॥ हउ नाही किछु मै किआ होसा सभ तुम ही कल धारी ॥ नानक भागि परिओ हरि पाछै राखु संत सदकारी ॥ २ ॥ २ ॥ २५ ॥

अब भला क्या सोचना है, हमने सब परेशानियों को भुला दिया है। जो ईश्वर ने करना है, वही कर रहा है। हे जगदीश्वर! मुझे नाम प्रदान करो, मैं तुझ पर कुर्बान हूँ॥१॥ रहाउ॥ चारों दिशाओं में मोह-माया का जहर फैला हुआ है और गुरु का मंत्र गारुड़ी है, जो इस जहर को खत्म कर सकता है। ईश्वर ने अपना सेवक मानकर हाथ देकर बचाया है, ज्यों कमल जल में अलिप्त रहता है॥१॥ मैं नाचीज कुछ भी नहीं हूँ और भला मुझसे क्या हो सकता है, सब तुम्हारी ही शक्ति कार्य कर रही है। हे नानक! ईश्वर की भक्ति में तल्लीन हो गया हूँ और संतों के सदके बचाव हुआ है॥२॥२॥२५॥

सारग महला ५ ॥ अब मोहि सरब उपाव बिरकाते ॥ करण कारण समरथ सुआमी हरि एकसु ते मेरी गाते ॥ १ ॥ रहाउ ॥ देखे नाना रूप बहु रंगा अन नाही तुम भांते ॥ देंहि अधारु सरब कउ ठाकुर जीअ प्रान सुखदाते ॥ १ ॥ भ्रमतौ भ्रमतौ हारि जउ परिओ तउ गुर मिलि चरन पराते ॥ कहु नानक मै सरब सुखु पाइआ इह सूखि बिहानी राते ॥ २ ॥ ३ ॥ २६ ॥

अब मैंने सभी उपाय पूर्णतया त्याग दिए हैं, स्वामी प्रभु सब करने-करवाने में समर्थ है और एक वही मेरी मुक्ति कर सकता है॥१॥ रहाउ॥ मैंने विभिन्न प्रकार के बहुत सारे रूप रंग देखे

हैं, परन्तु तेरे जैसा कोई नहीं। हे प्रभु! तू सबका मालिक है, आसरा देने वाला है और तू ही प्राणों का सुखदाता है॥१॥ भटकते-भटकते जब हार गया तो गुरु को मिलकर उसके चरणों में पड़ गया। नानक कथन करते हैं कि इस तरह मैंने सर्व सुखों को पा लिया और अब मेरी जीवन-रात्रि सुखमय व्यतीत हो रही है॥२॥३॥२६॥

सारग महला ५ ॥ अब मोहि लबधिओ है हरि टेका ॥ गुर दइआल भए सुखदाई अंधुलै माणिकु देखा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काटे अगिआन तिमर निरमलीआ बुधि बिगास बिबेका ॥ जिउ जल तरंग फेनु जल होई है सेवक ठाकुर भए एका ॥ १ ॥ जह ते उठिओ तह ही आइओ सभ ही एकै एका ॥ नानक द्रिसटि आइओ सब ठाई प्राणपती हरि समका ॥ २ ॥ ४ ॥ २७ ॥

अब मुझे भगवान का आश्रय प्राप्त हो गया है। सुखदाता गुरु (मुझ पर) दयालु हुआ तो इस अंधे ने नाम रूपी माणिक्य देख लिया॥१॥ रहाउ॥ उसने निर्मल बुद्धि और विवेक प्रदान कर मेरा अज्ञान का अंधेरा काट दिया है। ज्यों जल की तरंग और जल एक ही होते हैं, वैसे ही यह सेवक और मालिक एक रूप हो गए हैं॥१॥ जहाँ से उत्पन्न हुआ, वहाँ ही विलीन हो गया और सब एक ही एक हो गया है। नानक कथन करते हैं कि प्राणपति हरि समान रूप से हर जगह पर दृष्टिगत हो रहा है॥२॥४॥२७॥

सारग महला ५ ॥ मेरा मनु एकै ही प्रिअ मांगै ॥ पेखि आइओ सरब थान देस प्रिअ रोम न समसरि लागै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मै नीरि अनिक भोजन बहु बिंजन तिन सिउ द्रिसटि न करै रुचांगै ॥ हरि रसु चाहै प्रिअ प्रिअ मुखि टेरै जिउ अलि कमला लोभांगै ॥ १ ॥ गुण निधान मनमोहन लालन सुखदाई सरबांगै ॥ गुरि नानक प्रभ पाहि पठाइओ मिलहु सखा गलि लागै ॥ २ ॥ ५ ॥ २८ ॥

मेरा मन एकमात्र प्रिय प्रभु को ही चाहता है। मैं सभी स्थान एवं देश देख आया हूँ लेकिन मेरे प्रिय के रोम बराबर भी कोई नहीं॥१॥ रहाउ॥ मुझे अनेक प्रकार के स्वादिष्ट भोजन एवं व्यंजन दिए गए परन्तु इनकी ओर मेरी कोई दिलचस्पी नहीं। मैं हरि रस ही चाहता हूँ, मुँह से प्रिय प्रिय बोलता हूँ, ज्यों भँवरा कमल पर लोलुप होता है॥१॥ गुणों का भण्डार प्रियतम प्रभु सुख प्रदान करने वाला है, सर्वव्यापी है। नानक का कथन है कि गुरु ने मुझे प्रभु के पास भेजा है, ताकि उस सखा को गले लगाकर मिलो॥२॥५॥२८॥

सारग महला ५ ॥ अब मोरो ठाकुर सिउ मनु मानां ॥ साध क्रिपाल दइआल भए है इहु छेदिओ दुसटु बिगाना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तुम ही सुंदर तुमहि सिआने तुम ही सुघर सुजाना ॥ सगल जोग अरु गिआन धिआन इक निमख न कीमति जानां ॥ १ ॥ तुम ही नाइक तुम्हहि छत्रपति तुम पूरि रहे भगवाना ॥ पावउ दानु संत सेवा हरि नानक सद कुरबानां ॥ २ ॥ ६ ॥ २९ ॥

अब मेरा मन ठाकुर जी के प्रति पूर्ण विश्वस्त हो गया है। साधु पुरुष हम पर दयालु कृपालु हुए हैं और उन्होंने द्विधाभाव को काट डाला है॥१॥ रहाउ॥ हे प्रभु! तुम ही सुन्दर, तुम ही समझदार और तुम ही चतुर हो। सभी योग, ज्ञान एवं ध्यान भी हरिनाम की महत्ता को समझ नहीं सके॥१॥ तुम ही नायक, तुम ही छत्रपति हो, हे भगवान! तुम संसार के कण कण में विद्यमान हो। नानक विनती करते हैं कि हे प्रभु! मैं संतों की सेवा का ही दान चाहता हूँ और तुझ पर सदा कुर्बान हूँ॥२॥६॥२९॥

सारग महला ५ ॥ मेरै मनि चीति आए प्रिअ रंगा ॥ बिसरिओ धंधु बंधु माइआ को रजनि सबाई जंगा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि सेवउ हरि रिदै बसावउ हरि पाइआ सतसंगा ॥ ऐसो मिलिओ मनोहरु प्रीतमु सुख पाए मुख मंगा ॥ १ ॥ प्रिउ अपना गुरि बसि करि दीना भोगउ भोग निसंगा ॥ निरभउ भए नानक भउ मिटिआ हरि पाइओ पाठंगा ॥ २ ॥ ७ ॥ ३० ॥

प्रियतम प्रभु का प्रेम मेरे मन में अवस्थित हो गया है। इससे माया का बन्धन व संसारिक कार्य भूल गया है और जीवन-रात्रि विकारों से संघर्ष करते व्यतीत होती है॥१॥ रहाउ॥ परमात्मा की अर्चना करता हूँ, उसे दिल में बसाता हूँ और सत्संग में परमात्मा को ही पाया है। अब ऐसा प्रियतम प्रभु मिला है, जिससे मनवांछित सुख प्राप्त हुआ है॥१॥ गुरु ने प्रिय प्रभु को मेरे वश में कर दिया है और निश्चिंत होकर उससे आनंद करती हूँ। हे नानक! प्रभु को पाकर निर्भय हो गया हूँ और सारा भय मिट गया है॥२॥७॥३०॥

सारग महला ५ ॥ हरि जीउ के दरसन कउ कुरबानी ॥ बचन नाद मेरे स्रवनहु पूरे देहा प्रिअ अंकि समानी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ छूटरि ते गुरि कीई सोहागनि हरि पाइओ सुघड़ सुजानी ॥ जिह घर महि बैसनु नही पावत सो थानु मिलिओ बासानी ॥ १ ॥ उन्ह कै बसि आइओ भगति बछलु जिनि राखी आन संतानी ॥ कहु नानक हरि संगि मनु मानिआ सभ चूकी काणि लोकानी ॥ २ ॥ ८ ॥ ३१ ॥

मैं श्री हरि के दर्शन को कुर्बान जाती हूँ। मेरे कानों में उसके वचनों का सुरीला स्वर बज रहा है और यह शरीर प्रियतम के चरणों में लीन है॥१॥ रहाउ॥ परित्यक्त स्त्री से गुरु ने मुझे सुहागिन बना दिया है और चतुर प्रभु को मैंने प्राप्त कर लिया है। जिस घर में बैठना भी नसीब नहीं हो रहा था, अब वह स्थान बसने के लिए मिल गया है॥१॥ जिसने संतों की मान-प्रतिष्ठा को बचाया है, वह भक्तवत्सल उन भक्तजनों के ही वश में आया है। हे नानक! श्री हरि के संग मेरा मन तृप्त हो गया है और दुनिया की निर्भरता सब चूक गई है॥२॥८॥३१॥

सारग महला ५ ॥ अब मोरो पंचा ते संगु तूटा ॥ दरसनु देखि भए मनि आनद गुर किरपा ते छूटा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बिखम थान बहुत बहु धरीआ अनिक राख सूरूटा ॥ बिखम गार्ह करु पहुचै नाही संत सानथ भए लूटा ॥ १ ॥ बहुतु खजाने मेरै पालै परिआ अमोल लाल आखूटा ॥ जन नानक प्रभि किरपा धारी तउ मन महि हरि रसु घूटा ॥ २ ॥ ६ ॥ ३२ ॥

अब मेरा पाँच विकारों से संबंध टूट गया है। गुरु की कृपा से मैं मुक्त हो गया हूँ और हरि-दर्शन करके मन को आनंद प्राप्त हुआ है॥१॥ रहाउ॥ मानव देह बहुत विषम स्थान है, जिसे पार पाना मुश्किल है और काम, क्रोध, लोभ, मोह एवं अहंकार रूपी योद्धा इसे संरक्षण देते हैं। इसके चारों तरफ गहरी खाई है, जहाँ हाथ नहीं पहुँचता। परन्तु जब संत सहायता करते हैं तो ये खत्म हो जाते हैं॥१॥ मुझे नाम रूपी अमूल्य रत्नों एवं सुखों का अक्षुण्ण भण्डार प्राप्त हुआ है। हे नानक! जब प्रभु की कृपा हुई तो मन में हरिनाम रस का पान किया॥२॥६॥३२॥

सारग महला ५ ॥ अब मेरो ठाकुर सिउ मनु लीना ॥ प्रान दानु गुरि पूरै दीआ उरझाइओ जिउ जल मीना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काम क्रोध लोभ मद मतसर इह अरपि सगल दानु कीना ॥ मंत्रु द्रिड़ाइ हरि अउखधु गुरि दीओ तउ मिलिओ सगल प्रबीना ॥ १ ॥ ग्रिहु तेरा तू ठाकुरु मेरा गुरि हउ खोई प्रभु दीना ॥ कहु नानक मै सहज घरु पाइआ हरि भगति भंडार खजीना ॥ २ ॥ १० ॥ ३३ ॥

अब मेरा मन मालिक की भक्ति में लीन है। पूरे गुरु ने प्राणों का दान दिया है और जल में मछली की तरह उसमें तल्लीन हूँ॥१॥ रहाउ॥ काम, क्रोध, लोभ एवं अभिमान इत्यादि इन सबको छोड़ दिया है। जब गुरु ने मंत्र प्रदान कर हरिनाम रूपी औषधि दी तो प्रवीण प्रभु मिल गया॥१॥ यह घर तेरा है, तू मेरा मालिक है, गुरु ने अहम्-भावना को खो कर प्रभु से मिला दिया है। हे नानक! मैंने सहज स्वाभाविक हृदय-घर में हरि-भक्ति का भण्डार पा लिया है॥२॥१०॥३३॥

सारग महला ५ ॥ मोहन सभि जीअ तेरे तू तारहि ॥ छुटहि संघार निमख किरपा ते कोटि ब्रहमंड उधारहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करहि अरदासि बहुतु बेनंती निमख निमख साम्हारहि ॥ होहु क्रिपाल दीन दुख भंजन हाथ देइ निसतारहि ॥ १ ॥ किआ ए भूपति बपुरे कहीअहि कहु ए किस नो मारहि ॥ राखु राखु राखु सुखदाते सभु नानक जगतु तुम्हारहि ॥ २ ॥ ११ ॥ ३४ ॥

हे प्रभु! सभी जीव तेरे हैं और तू मुक्तिदाता है। तेरी थोड़ी-सी कृपा से जनसंहार समाप्त हो जाता है और करोड़ों ब्रह्माण्डों का उद्धार हो जाता है॥१॥ रहाउ॥ हम प्रार्थना करते हैं, तुझे विनती करते हैं, हर पल तेरी स्मृति में लीन रहते हैं। हे दीनों के दुखनाशक! कृपालु हो जाओ और हाथ देकर निस्तारा करो॥१॥ ये जो बादशाह हैं, इनके बारे में भला क्या कहा जाए? बताओ ये किसको मार सकते हैं? नानक विनती करते हैं कि हे सुखदाता! समूचा जगत तुम्हारा है, रक्षा करो॥२॥११॥३४॥

सारग महला ५ ॥ अब मोहि धनु पाइओ हरि नामा ॥ भए अचिंत त्रिसन सभ बुझी है इहु लिखिओ लेखु मथामा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ खोजत खोजत भइओ बैरागी फिरि आइओ देह गिरामा ॥ गुरि क्रिपालि सउदा इहु जोरिओ हथि चरिओ लालु अगामा ॥ १ ॥ आन बापार बनज जो करीअहि तेते दूख सहामा ॥ गोबिद भजन के निरभै वापारी हरि रासि नानक राम नामा ॥ २ ॥ १२ ॥ ३५ ॥

अब हमने हरिनाम रूपी धन पा लिया है, अब हम बेफिक्र हो गए हैं, सारी तृष्णा बुझ गई है और यही भाग्य में लिखा हुआ था॥१॥ रहाउ॥ खोजते-खोजते वैराग्यवान हो गया था तो फिर शरीर रूपी गांव में भ्रमण किया। गुरु की कृपा से यह सौदा किया और अमूल्य नाम रूपी हीरा मिल गया॥१॥ अन्य जितने भी वाणिज्य व्यापार किए जाएँ, इनसे उतने दुख ही नसीब होते हैं। नानक का मत है कि गोविन्द भजन का व्यापार करने वाले निर्भय हैं और राम नाम ही उनकी जीवन राशि है॥२॥१२॥३५॥

सारग महला ५ ॥ मेरै मनि मिसट लगे प्रिअ बोला ॥ गुरि बाह पकरि प्रभ सेवा लाए सद दइआलु हरि ढोला ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रभ तू ठाकुरु सरब प्रतिपालकु मोहि कलत्र सहित सभि गोला ॥ माणु ताणु सभु तूहै तूहै इकु नामु तेरा मै ओल्हा ॥ १ ॥ जे तखति बैसालहि तउ दास तुम्हारे घासु बढावहि केतक बोला ॥ जन नानक के प्रभ पुरख बिधाते मेरे ठाकुर अगह अतोला ॥ २ ॥ १३ ॥ ३६ ॥

मेरे मन को प्रिय की वाणी ही मीठी लगती है। गुरु ने बाँह पकड़ कर प्रभु-सेवा में लगाया है, वह मेरा पति प्रभु सदा दयालु है॥१॥ रहाउ॥ हे प्रभु! तू मालिक है, सबका प्रतिपालक है, मैं तेरी पत्नी हूँ और अन्य सभी तेरी दासियाँ हैं। तू ही हमारा मान-सम्मान एवं बल है और तेरा नाम मेरा एकमात्र आसरा है॥१॥ यदि तू सिंहासन पर बैठा देगा तो भी तुम्हारे दास हैं और यदि

घास काटने में लगा दोगे तो भी कुछ नहीं बोल सकते। नानक का प्रभु परमपुरुष विधाता है, मेरा मालिक असीम व अतुलनीय है॥ २॥ १३॥ ३६॥

सारग महला ५ ॥ रसना राम कहत गुण सोहं ॥ एक निमख ओपाइ समावै देखि चरित मन मोहं ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिसु सुणिऐ मनि होइ रहसु अति रिदै मान दुख जोहं ॥ सुखु पाइओ दुखु दूरि पराइओ बणि आई प्रभ तोहं ॥ १ ॥ किलविख गए मन निरमल होई है गुरि काढे माइआ द्रोहं ॥ कहु नानक मै सो प्रभु पाइआ करण कारण समरथोहं ॥ २ ॥ १४ ॥ ३७ ॥

जिह्वा परमात्मा का यशोगान करती हुई शोभान्वित होती है। वह पल भर में बनाकर बिगाड़ देता है, उसकी लीला देखकर मन मोहित हो गया है॥१॥ रहाउ॥ जिस हरिनाम को सुनने से मन खिल उठता है और हृदय का अभिमान एवं दुख नष्ट होता है। हे प्रभु ! तुझसे ही हमारी प्रीति बन गई है, सुख पा लिया है और दुख दूर हो गए हैं॥१॥ गुरु ने अन्तर्मन से माया के द्वेष को निकाल दिया है, जिससे सब पाप दूर हो गए हैं और मन निर्मल हो गया है। हे नानक ! जो सर्वकर्ता, सर्वशक्तिमान है, मैंने उस प्रभु को पा लिया है॥२॥१४॥३७॥

सारग महला ५ ॥ नैनहु देखिओ चलतु तमासा ॥ सभ हू दूरि सभ हू ते नेरै अगम अगम घट वासा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अभूलु न भूलै लिखिओ न चलावै मता न करै पचासा ॥ खिन महि साजि सवारि बिनाहै भगति वछल गुणतासा ॥ १ ॥ अंध कूप महि दीपकु बलिओ गुरि रिदै कीओ परगासा ॥ कहु नानक दरसु पेखि सुखु पाइआ सभ पूरन होई आसा ॥ २ ॥ १५ ॥ ३८ ॥

इन नयनों से अद्भुत कौतुक तमाशे को देखा है कि ईश्वर सबसे दूर भी है, सबके समीप भी है, वह अगम्य असीम है और हर हृदय में बसा हुआ है॥१॥ रहाउ॥ वह कोई भूल नहीं करता, न ही कोई हुक्म लिखकर देता है और न ही पचास सलाहकारों से कोई विचार-विमर्श करता है। वह पल भर में बनाकर तोड़ देता है, वह भक्ति से प्रेम करने वाला और गुणों का भण्डार है॥१॥ मन रूपी अंधकूप में ज्ञान का दीपक तभी प्रज्वलित होता है, जब गुरु हृदय में प्रकाश करता है। नानक फुरमाते हैं कि प्रभु के दर्शनों से सुख प्राप्त हो गया है और सब कामनाएँ पूरी हो गई हैं॥२॥१५॥३८॥

सारग महला ५ ॥ चरनह गोबिंद मारगु सुहावा ॥ आन मारग जेता किछु धाईऐ तेतो ही दुखु हावा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नेत्र पुनीत भए दरसु पेखे हसत पुनीत टहलावा ॥ रिदा पुनीत रिदै हरि बसिओ मसत पुनीत संत धूरावा ॥ १ ॥ सरब निधान नामि हरि हरि कै जिसु करमि लिखिआ तिनि पावा ॥ जन नानक कउ गुरु पूरा भेटिओ सुखि सहजे अनद बिहावा ॥ २ ॥ १६ ॥ ३९ ॥

परमात्मा का मार्ग ही चरणों के लिए सुखमय है, क्योंकि अन्य मार्गों पर जितनी भी दौड़-धूप होती है, उतने ही दुखों का सामना करना पड़ता है॥१॥ रहाउ॥ उसके दर्शन करने से आँखें पवित्र होती हैं, सेवा करने से हाथ पवित्र होते हैं, भगवान के बसने से हृदय पवित्र होता है और संतों की चरण धूलि शीश पावन कर देती है॥१ ॥ प्रभु का नाम सर्व सुखों का भण्डार है, पर जिसके भाग्य में लिखा होता है, वही इसे पाता है। नानक की पूर्ण गुरु से भेंट हुई है, जिससे जीवन स्वाभाविक सुखमय एवं आनंदपूर्वक बीत रहा है॥२॥१६॥३९॥

सारग महला ५ ॥ धिआइओ अंति बार नामु सखा ॥ जह मात पिता सुत भाई न पहुचै तहा तहा तू रखा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अंध कूप ग्रिह महि तिनि सिमरिओ जिसु मसतकि लेखु लिखा ॥ खूल्हे बंधन मुकति गुरि कीनी सभ तूहै तुही दिखा ॥ १ ॥ अंम्रित नामु पीआ मनु त्रिपतिआ आघाए रसन चखा ॥ कहु नानक सुख सहजु मै पाइआ गुरि लाही सगल तिखा ॥ २ ॥ १७ ॥ ४० ॥

हरिनाम का ध्यान करो, अन्तिम समय यही साथ निभाता है, जहाँ माता-पिता, पुत्र एवं भाई नहीं पहुँचते, वहाँ प्रभु ही रक्षा करता है॥१॥ रहाउ॥ ह्रदय रूपी अंधे कुएं में उसने ही परमात्मा का स्मरण किया है, जिसके ललाट पर भाग्य लिखा है। उसके सब बन्धन खुल गए हैं, गुरु ने मुक्ति प्रदान की और हर जगह तू ही तू दिखा दिया॥१॥ हरि-नामामृत का पान करके मन तृप्त हो गया और जीभ इसे चखकर आनंदित हो गई। हे नानक! इस प्रकार मैंने स्वाभाविक सुख पाया और गुरु ने मेरी प्यास बुझा दी॥२॥१७॥४०॥

सारग महला ५ ॥ गुर मिलि ऐसे प्रभू धिआइआ ॥ भइओ क्रिपालु दइआलु दुख भंजनु लगै न ताती बाइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जेते सास सास हम लेते तेते ही गुण गाइआ ॥ निमख न बिछुरै घरी न बिसरै सद संगे जत जाइआ ॥ १ ॥ हउ बलि बलि बलि बलि चरन कमल कउ बलि बलि गुर दरसाइआ ॥ कहु नानक काहू परवाहा जउ सुख सागरु मै पाइआ ॥ २ ॥ १८ ॥ ४१ ॥

गुरु को मिलकर (इस प्रकार) प्रभु का चिंतन किया तो वह दुखनाशक हम पर दयालु कृपालु हो गया, जिस कारण अब कोई दुख-तकलीफ प्रभावित नहीं करती॥१॥ रहाउ॥ हम जितनी जीवन-साँसें लेते हैं, उतनी बार हरि के गुण गाते हैं। वह पल भर भी नहीं बिछुड़ता, एक घड़ी भी नहीं भूलता, जिधर जाता हूँ, सदा साथ रहता है॥१॥ मैं उसके चरणों पर बलिहारी हूँ, गुरु दर्शनों पर कुर्बान जाता हूँ। हे नानक! सुखों के सागर प्रभु को पा कर अब मुझे कोई परवाह नहीं॥२॥१८॥४१॥

सारग महला ५ ॥ मेरै मनि सबदु लगो गुर मीठा ॥ खुल्हिओ करमु भइओ परगासा घटि घटि हरि हरि डीठा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पारब्रहम आजोनी संभउ सरब थान घट बीठा ॥ भइओ परापति अंम्रित नामा बलि बलि प्रभ चरणीठा ॥ १ ॥ सतसंगति की रेणु मुखि लागी कीए सगल तीरथ मजनीठा ॥ कहु नानक रंगि चलूल भए है हरि रंगु न लहै मजीठा ॥ २ ॥ १६ ॥ ४२ ॥

मेरे मन को गुरु का उपदेश ही मीठा लगा है, हमारा भाग्य खुल गया है, ह्रदय में आलोक हुआ है और घट-घट में ईश्वर ही दिखाई दे रहा है॥१॥ रहाउ॥ परब्रह्म परमेश्वर जन्म-मरण से रहित है, स्वयंभू है, सम्पूर्ण संसार में व्याप्त है। हमें अमृतमय प्रभु-नाम प्राप्त हुआ है और हम प्रभु-चरणों पर कुर्बान हैं॥१॥ सत्संग की चरण-धूल मुँह पर लगाई है, जो समस्त तीर्थों का स्नान करने का फल है। हे नानक! परमात्मा के प्रेम रंग में लाल हो गए हैं और यह पक्का रंग कभी नहीं उतरता॥२॥१६॥४२॥

सारग महला ५ ॥ हरि हरि नामु दीओ गुरि साथे ॥ निमख बचनु प्रभ हीअरै बसिओ सगल भूख मेरी लाथे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ क्रिपा निधान गुण नाइक ठाकुर सुख समूह सभ नाथे ॥ एक आस मोहि तेरी सुआमी अउर दुतीआ आस बिराथे ॥ १ ॥ नैण त्रिपतासे देखि दरसावा गुरि कर धारे मेरै माथे ॥ कहु नानक मै अतुल सुखु पाइआ जनम मरण भै लाथे ॥ २ ॥ २० ॥ ४३ ॥

गुरु ने मुझे परमात्मा का नाम दिया है, उसके निमेष वचन से प्रभु दिल में बस गया है और मेरी सारी भूख दूर हो गई है॥१॥ रहाउ॥ हे मालिक! तू कृपानिधान है, गुणों का स्वामी और सर्व सुखों का नाथ है। मुझे केवल तेरी ही आशा है और अन्य आशाएँ तो सब व्यर्थ हैं॥१॥ गुरु ने मेरे माथे पर अपना हाथ रखा और दर्शन करके आँखें तृप्त हो गईं। हे नानक! मैंने असीम सुख पा लिया है और जन्म-मरण का भय दूर हो गया है॥२॥२०॥४३॥

सारग महला ५ ॥ रे मूढ़े आन काहे कत जाई ॥ संगि मनोहरु अंम्रितु है रे भूलि भूलि बिखु खाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रभ सुंदर चतुर अनूप बिधाते तिस सिउ रुच नही राई ॥ मोहनि सिउ बावर मनु मोहिओ झूठि ठगउरी पाई ॥ १ ॥ भइओ दइआलु क्रिपालु दुख हरता संतन सिउ बनि आई ॥ सगल निधान घरै महि पाए कहु नानक जोति समाई ॥ २ ॥ २१ ॥ ४४ ॥

अरे मूर्ख ! तू कहीं और क्यों जाता है ? मनोहर अमृत तो तेरे संग ही है, फिर भी भूल-भूलकर जहर खा रहा है॥१॥ रहाउ॥ सुन्दर प्रभु चतुर, अनुपम एवं विधाता है, उससे तेरी थोड़ी-सी भी दिलचस्पी नहीं। अरे बावले ! माया-मोहिनी ने तेरा मन मोह लिया है और झूठी ठगबूटी प्राप्त कर ली है॥१॥ जब दुखों को नाश करने वाला दयालु परमेश्वर कृपालु होता है तो संत पुरुषों के संग प्रीति बनी रहती है। हे नानक ! इस तरह सर्व सुखों के भण्डार घर में ही प्राप्त हो जाते हैं और आत्म-ज्योति परम-ज्योति में विलीन हो जाती है॥२॥२१॥४४॥

सारग महला ५ ॥ ओअं प्रिअ प्रीति चीति पहिलरीआ ॥ जो तउ बचनु दीओ मेरे सतिगुर तउ मै साज सीगरीआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हम भूलह तुम सदा अभूला हम पतित तुम पतित उधरीआ ॥ हम नीच बिरख तुम मैलागर लाज संगि संगि बसरीआ ॥ १ ॥ तुम गंभीर धीर उपकारी हम किआ बपुरे जंतरीआ ॥ गुर क्रिपाल नानक हरि मेलिओ तउ मेरी सूखि सेजरीआ ॥ २ ॥ २२ ॥ ४५ ॥

प्रिय ओम् का प्रेम तो पूर्व से चित में मौजूद है। हे मेरे सच्चे गुरु ! जब से तूने वचन दिया है, तब से मैंने भक्ति रूपी शृंगार कर लिया है॥१॥ रहाउ॥ हम सदैव भूल करते हैं, परन्तु तुम कभी भूल नहीं करते। हम पतित हैं और तुम पतितों के उद्धारक हो। हम तुच्छ वृक्ष हैं परन्तु तुम मलयगिरि की मानिंद महकदार हो, तुम्हारे संग ही रहते हैं, लाज रखना॥१॥ तुम गंभीर, सहनशील एवं उपकारी हो, लेकिन हम जीव बेचारे तेरे आगे क्या चीज हैं। नानक का कथन है कि जब गुरु ने कृपालु होकर प्रभु से मिला दिया तो मेरी सेज सुखदायक हो गई॥२॥२२॥४५॥

सारग महला ५ ॥ मन ओइ दिनस धंनि परवानां ॥ सफल ते घरी संजोग सुहावे सतिगुर संगि गिआनां ॥ १ ॥ रहाउ ॥ धंनि सुभाग धंनि सोहागा धंनि देत जिनि मानां ॥ इहु तनु तुम्हरा सभु ग्रिहु धनु तुमरा हींउ कीओ कुरबानां ॥ १ ॥ कोटि लाख राज सुख पाए इक निमख पेखि द्रिसटानां ॥ जउ कहहु मुखहु सेवक इह बैसीऐ सुख नानक अंतु न जानां ॥ २ ॥ २३ ॥ ४६ ॥

हे मन ! वह दिन धन्य एवं परवान है। वह घड़ी सफल और संयोग सुहावना है, जब सतगुरु के संग ज्ञान-ध्यान की प्राप्ति हुई॥१॥ रहाउ॥ मेरा सौभाग्य धन्य है, मेरा सुहाग धन्य है, जिसे मान-प्रतिष्ठा देता है, वह भी धन्य है। यह तन, घर, धन सब कुछ तुम्हारा है और मैंने इस हृदय को तुझ पर कुर्बान कर दिया है॥१॥ एक पल दर्शन करने से लाखों-करोड़ों राज सुखों की प्राप्ति होती है। नानक का कथन है कि अगर तू मुँह से कह दे कि सेवक यहाँ बैठना है तो इस सुख का अन्त भी नहीं जाना जा सकता॥२॥२३॥४६॥

सारग महला ५ ॥ अब मोरो सहसा दूखु गइआ ॥ अउर उपाव सगल तिआगि छोडे सतिगुर सरणि पइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सरब सिधि कारज सभि सवरे अहं रोग सगल ही खइआ ॥ कोटि पराध खिन महि खउ भई है गुर मिलि हरि हरि कहिआ ॥ १ ॥ पंच दास गुरि वसगति कीने मन निहचल निरभइआ ॥ आइ न जावै न कत ही डोलै थिरु नानक राजइआ ॥ २ ॥ २४ ॥ ४७ ॥

अब मेरा संशय, दुख दूर हो गया है, क्योंकि अन्य सब उपाय छोड़कर सतगुरु की शरण में पड़ गया हूँ॥१॥ रहाउ॥ सर्व सिद्धियां प्राप्त हुईं, सभी कार्य पूरे हो गए हैं और अहम् का रोग समाप्त हो गया है। गुरु को मिलकर हरिनाम जपा तो पल में करोड़ों अपराध नष्ट हो गए॥१॥ गुरु ने कामादिक पाँच दासों को वश में कर दिया है, जिससे मन निश्चल एवं निर्भय हो गया है। अब यह न ही कहीं आता जाता है, न ही विचलित होता है। नानक का कथन है कि अब वह स्थिर रहता है॥२॥२४॥४७॥

सारग महला ५ ॥ प्रभु मेरो इत उत सदा सहाई ॥ मनमोहनु मेरे जीअ को पिआरो कवन कहा गुन गाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ खेलि खिलाइ लाड लाडावै सदा सदा अनदाई ॥ प्रतिपालै बारिक की निआई जैसे मात पिताई ॥ १ ॥ तिसु बिनु निमख नही रहि सकीऐ बिसरि न कबहू जाई ॥ कहु नानक मिलि संतसंगति ते मगन भए लिव लाई ॥ २ ॥ २५ ॥ ४८ ॥

मेरा प्रभु लोक-परलोक सदा सहायता करने वाला है। वह मनमोहन मेरे प्राणों को प्रिय है, उसका बेशक कितना ही गुणगान किया जाए, कम है॥१॥ रहाउ॥ वह खेल खेलाता, लाड लडाता और सर्वदा आनंद प्रदान करता है। वह माता-पिता की तरह बालक समझकर परवरिश करता है॥१॥ उसके बिना पल भर भी रहा नहीं जा सकता, अतः वह कभी भी न भूले। हे नानक ! संतों की संगत में मिलकर मैं प्रभु के ध्यान में मग्न रहता हूँ॥२॥२५॥४८॥

सारग महला ५ ॥ अपना मीतु सुआमी गाईऐ ॥ आस न अवर काहू की कीजै सुखदाता प्रभु धिआईऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सूख मंगल कलिआण जिसहि घरि तिस ही सरणी पाईऐ ॥ तिसहि तिआगि मानुखु जे सेवहु तउ लाज लोनु होइ जाईऐ ॥ १ ॥ एक ओट पकरी ठाकुर की गुर मिलि मति बुधि पाईऐ ॥ गुण निधान नानक प्रभु मिलिआ सगल चुकी मुहताईऐ ॥ २ ॥ २६ ॥ ४९ ॥

अपने मित्र स्वामी का स्तुतिगान करो, किसी अन्य की आशा मत करो, सुखदाता प्रभु का चिंतन करो॥१॥ रहाउ॥ जिसके घर सुख ही सुख-मंगल एवं कल्याण है, उसकी शरण में आओ। उसे त्याग कर यदि मनुष्य की सेवा करोगे तो लज्जित होकर मरोगे॥१॥ एक मालिक का आसरा पकड़ा है और गुरु को मिलकर उत्तम बुद्धि प्राप्त हुई है। हे नानक ! गुणों का भण्डार प्रभु मिल गया है, जिससे लोगों की मोहताजी समाप्त हो गई है॥२॥२६॥४९॥

सारग महला ५ ॥ ओट सताणी प्रभ जीउ मेरै ॥ द्रिसटि न लिआवउ अवर काहू कउ माणि महति प्रभ तेरै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अंगीकारु कीओ प्रभि अपुनै काढि लीआ बिखु घेरै ॥ अंम्रित नामु अउखधु मुखि दीनो जाइ पइआ गुर पैरै ॥ १ ॥ कवन उपमा कहउ एक मुख निरगुण के दातेरै ॥ काटि सिलक जउ अपुना कीनो नानक सूख घनेरै ॥ २ ॥ २७ ॥ ५० ॥

मेरे प्रभु की शरण बहुत मजबूत है। हे प्रभु ! तेरे बड़प्पन एवं महानता की वजह से किसी अन्य को नजर में नहीं लाता॥१॥ रहाउ॥ प्रभु ने साथ देकर विकारों के घेरे से निकाल लिया है। जब गुरु के पैरों में पड़ा तो उसने मुँह में हरि-नामामृत की औषधि प्रदान की॥१॥ हे निर्गुणों के दाता ! एक मुख में से तेरी क्या महिमा गा सकता हूँ। नानक की विनती है कि अगर बन्धनों को काटकर मुझे अपना बना लो तो अनेक सुख प्राप्त होंगे॥२॥२७॥५०॥

सारग महला ५ ॥ प्रभ सिमरत दूख बिनासी ॥ भइओ क्रिपालु जीअ सुखदाता होई सगल खलासी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अवरु न कोऊ सूझै प्रभ बिनु कहु को किसु पहि जासी ॥ जिउ जाणहु तिउ

राखहु ठाकुर सभु किछु तुम ही पासी ॥ १ ॥ हाथ देइ राखे प्रभि अपुने सद जीवन अबिनासी ॥ कहु नानक मनि अनदु भइआ है काटी जम की फासी ॥ २ ॥ २८ ॥ ५१ ॥

प्रभु का सिमरन करने से दुखों का अंत हो जाता है। जीवों को सुख देने वाला जब कृपालु होता है तो सब बन्धनों से मुक्ति मिल जाती है॥१॥ प्रभु के अतिरिक्त अन्य कोई नहीं सूझता, फिर भला किसके पास प्रार्थना की जा सकती है। हे मालिक! जैसे ठीक समझते हो, वैसे ही रखो, हमारा सब कुछ तुम्हारे पास है॥१॥ अविनाशी प्रभु ने हाथ देकर रक्षा की है, वह सदा जीवन देने वाला है। नानक फुरमाते हैं कि उसने यम का फंदा काट दिया है और मन में आनंद उत्पन्न हो गया है॥२॥२८॥५१॥

सारग महला ५ ॥ मेरो मनु जत कत तुझहि सम्हारै ॥ हम बारिक दीन पिता प्रभ मेरे जिउ जानहि तिउ पारै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जब भूखौ तब भोजनु मांगै अघाए सूख सघारै ॥ तब अरोग जब तुम संगि बसतौ छुटकत होइ रवारै ॥ १ ॥ कवन बसेरो दास दासन को थापिउ थापनहारै ॥ नामु न बिसरै तब जीवनु पाईऐ बिनती नानक इह सारै ॥ २ ॥ २९ ॥ ५२ ॥

मेरा मन हर वक्त तुझे ही याद करता है। हे मेरे पिता प्रभु! हम दीन बच्चे हैं, जैसे उचित समझो, वैसे पार उतार दो॥१॥ रहाउ॥ जब भूख लगती है, तब भोजन मांगते हैं और तुम हमें तृप्त करके सुख ही सुख देते हो। जब तुम्हारे साथ रहते हैं, तब आरोग्य होते हैं, लेकिन साथ छूटने से धूल हो जाते हैं॥१॥ हे बनाने वाले! तूने ही हमें बनाया है, तेरे दासों के दास को तेरे सिवा कहाँ रहना है। नानक विनती करते हैं कि हे प्रभु! हमारे लिए यही उपयोगी है कि तेरा नाम न भूले, इससे ही तो जीवन प्राप्त होता है॥२॥२९॥५२॥

सारग महला ५ ॥ मन ते भै भउ दूरि पराइओ ॥ लाल दइआल गुलाल लाडिले सहजि सहजि गुन गाइओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर बचनाति कमात क्रिपा ते बहुरि न कतहू धाइओ ॥ रहत उपाधि समाधि सुख आसन भगति वछलु ग्रिहि पाइओ ॥ १ ॥ नाद बिनोद कोड आनंदा सहजे सहजि समाइओ ॥ करना आपि करावन आपे कहु नानक आपि आपाइओ ॥ २ ॥ ३० ॥ ५३ ॥

मन से भय-संकट दूर हो गया है, प्यारे, लाडले, दयालु परमेश्वर का ही यशोगान किया है॥१॥ रहाउ॥ गुरु के वचनों अनुसार जीवन-आचरण अपनाया है और उसकी कृपा से पुनः कहीं और नहीं दौड़ता। इससे सब उपाधियों से रहित हो गया हूँ, सुख समाधि में लीन हूँ और हृदय-घर में भक्तवत्सल प्रभु को पा लिया है॥१॥ नाद, विनोद एवं आनंदपूर्वक सहजावस्था में तल्लीन हूँ। हे नानक! ईश्वर सर्वस्व है, वह स्वयं ही कर रहा है और स्वयं ही करवाने वाला है॥२॥३०॥५३॥

सारग महला ५ ॥ अंम्रित नामु मनहि आधारो ॥ जिनि दीआ तिस कै कुरबानै गुर पूरे नमसकारो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बूझी त्रिसना सहजि सुहेला कामु क्रोधु बिखु जारो ॥ आइ न जाइ बसै इह ठाहर जह आसनु निरंकारो ॥ १ ॥ एकै परगटु एकै गुपता एकै धुंधूकारो ॥ आदि मधि अंति प्रभु सोई कहु नानक साचु बीचारो ॥ २ ॥ ३१ ॥ ५४ ॥

परमात्मा का अमृत नाम मन का अवलंब है। जिसने यह दिया है, उस पर कुर्बान हूँ और पूर्ण गुरु को हमारा करबद्ध प्रणाम है॥१॥ रहाउ॥ स्वाभाविक सुख प्राप्त हुआ है, सारी तृष्णा बुझ गई है और काम-क्रोध के जहर को जला दिया है। अब आता जाता नहीं, उस ठिकाने में बस गया हूँ, जहाँ निरंकार विद्यमान है॥१॥ केवल ओंकार ही प्रगट रूप में व्याप्त है, एक वही प्रच्छन्न

रूप में विद्यमान है और निर्लिप्त होकर धुंध रूप में भी एकमात्र वही स्थित है। नानक का सच्चा विचार है कि आदि, मध्य एवं अंत में वह प्रभु ही विद्यमान है॥२॥ ३१॥ ५४॥

सारग महला ५ ॥ बिनु प्रभ रहनु न जाइ घरी ॥ सरब सूख ताहू कै पूरन जा कै सुखु है हरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मंगल रूप प्रान जीवन धन सिमरत अनद घना ॥ वड समरथु सदा सद संगे गुन रसना कवन भना ॥ १ ॥ थान पवित्रा मान पवित्रा पवित्र सुनन कहनहारे ॥ कहु नानक ते भवन पवित्रा जा महि संत तुम्हारे ॥ २ ॥ ३२ ॥ ५५ ॥

प्रभु बिना घड़ी भर भी रहा नहीं जाता। जिसने परमात्मा को परम सुख समझा है, उसी के सर्व सुख पूर्ण हुए हैं॥१॥ रहाउ॥ प्राण, जीवन, धन, कल्याण रूप भगवान का स्मरण आनंद ही आनंद देने वाला है। एकमात्र वही बड़ा है, सर्वशक्तिमान है, सदैव साथ है, इस जिह्वा से उसके किस-किस गुण का गान करूँ॥१॥ वह स्थान पवित्र है, मान-सम्मान पवित्र है, तेरा यश सुनने एवं गाने वाले भी पवित्र हैं। नानक कथन करते हैं कि हे प्रभु! जहाँ तुम्हारे संत रहते हैं, वह भवन भी पवित्र पावन है॥२॥३२॥५५॥

सारग महला ५ ॥ रसना जपती तूही तूही ॥ मात गरभ तुम ही प्रतिपालक म्रित मंडल इक तुही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तुमहि पिता तुम ही फुनि माता तुमहि मीत हित भ्राता ॥ तुम परवार तुमहि आधारा तुमहि जीअ प्रानदाता ॥ १ ॥ तुमहि खजीना तुमहि जरीना तुम ही माणिक लाला ॥ तुमहि पारजात गुर ते पाए तउ नानक भए निहाला ॥ २ ॥ ३३ ॥ ५६ ॥

हे प्रभु! यह रसना केवल तेरा ही नाम जपती है। माता के गर्भ में तुमने ही पालन-पोषण किया और मृत्युलोक में भी केवल तू ही बचाने वाला है॥१॥ रहाउ॥ तुम ही हमारे पिता हो, तुम ही हमारी माता हो और तुम ही हितचिंतक भाई हो। तुम ही परिवार हो, तुम्हारा ही आसरा है और तुम ही जीवन-प्राण देने वाले हो॥१॥ तुम ही खुशियों के भण्डार हो, तुम ही रत्न-जवाहर हो, तुम्हीं अमूल्य लाल-माणिक्य हो। नानक का कथन है कि तुम्हीं पारिजात हो, जो गुरु से प्राप्त होते हो तो हम निहाल हो जाते हैं॥२॥३३॥५६॥

सारग महला ५ ॥ जाहू काहू अपुनो ही चिति आवै ॥ जो काहू को चेरो होवत ठाकुर ही पहि जावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अपने पहि दूख अपने पहि सूखा अपुने ही पहि बिरथा ॥ अपुने पहि मानु अपुने पहि ताना अपने ही पहि अरथा ॥ १ ॥ किन ही राज जोबनु धन मिलखा किन ही बाप महतारी ॥ सरब थोक नानक गुर पाए पूरन आस हमारी ॥ २ ॥ ३४ ॥ ५७ ॥

जहाँ कहाँ (खुशी अथवा गम में) अपना शुभचिंतक ही याद आता है। जो किसी का चेला होता है, वह मालिक के ही पास जाता है॥१॥ रहाउ॥ दुख हो या सुख हो अपने (हितैषी) के सन्मुख ही इज़हार किया जाता है। चाहे दिल का हाल हो, वह अपने को ही बताया जाता है। अपने पर ही मान होता है, अपने को ही बल माना जाता है। कोई आवश्यकता हो तो अपने के पास ही आया जाता है॥१॥ किसी ने राज्य, यौवन, धन-संपति को अपनी जरूरत मान लिया है और किसी को अपने माता-पिता का ही आसरा है। हे नानक! गुरु से मुझे सब चीजें प्राप्त हो गई हैं और मेरी सब कामनाएँ पूरी हो गई हैं॥२॥३४॥५७॥

सारग महला ५ ॥ झूठो माइआ को मद मानु ॥ ध्रोह मोह दूरि करि बपुरे संगि गोपालहि जानु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मिथिआ राज जोबन अरु उमरे मीर मलक अरु खान ॥ मिथिआ कापर सुगंध चतुराई मिथिआ भोजन पान ॥ १ ॥ दीन बंधरो दास दासरो संतह की सारान ॥ मांगनि मांगउ होइ अचिंता मिलु नानक के हरि प्रान ॥ २ ॥ ३५ ॥ ५८ ॥

धन-दौलत का अभिमान झूठा है। हे दीन मनुष्य ! अपना ईर्ष्या-द्वेष व मोह दूर कर यह बात मान ले कि ईश्वर मेरे साथ ही है॥१॥ रहाउ॥ राज्य, यौवन, उमराव, मीर, मलिक और खान सब मिथ्या हैं। सुन्दर कपड़े, सुगन्धियाँ, चतुराई, भोजन एवं पान भी झूठे हैं॥१॥ हे दीनबंधु ! मैं तेरे दासों का दास हूँ और संतों की शरण में रहता हूँ। मैं तुझसे मांगता हूँ, निश्चिंत तेरी भक्ति ही चाहता हूँ। हे नानक के प्राण प्रभु ! मुझे मिलो॥२॥३५॥५८॥

सारग महला ५ ॥ अपुनी इतनी कछू न सारी ॥ अनिक काज अनिक धावरता उरझिओ आन जंजारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दिउस चारि के दीसहि संगी ऊहां नाही जह भारी ॥ तिन सिउ राचि माचि हितु लाइओ जो कामि नही गावारी ॥ १ ॥ हउ नाही नाही किछु मेरा ना हमरो बसु चारी ॥ करन करावन नानक के प्रभ संतन संगि उधारी ॥ २ ॥ ३६ ॥ ५९ ॥

मनुष्य ने अपना कुछ भी नहीं संवारा, अनेक कार्यों में भागदौड़ और अन्य जंजालों में ही उलझा रहा॥१॥ रहाउ॥ (सुख के समय में) चार दिन के जो साथी दिखाई देते हैं, भारी विपत्ति के समय ये भी साथ नहीं देते। मनुष्य उनके साथ प्रेम लगाकर घुला-मिला रहता है, जो मूर्ख बिल्कुल काम नहीं आते॥१॥ मैं कुछ भी नहीं, न ही मेरा कुछ अपना है और हमारा कोई वश नहीं चल सकता। हे नानक के प्रभु ! तू ही सब करने करवाने वाला है और संतों की संगत में ही उद्धार होता है॥२॥३६॥५९॥

सारग महला ५ ॥ मोहनी मोहत रहै न होरी ॥ साधिक सिध सगल की पिआरी तुटै न काहू तोरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ खटु सासत्र उचरत रसनागर तीरथ गवन न थोरी ॥ पूजा चक्र बरत नेम तपीआ ऊहा गैलि न छोरी ॥ १ ॥ अंध कूप महि पतित होत जगु संतहु करहु परम गति मोरी ॥ साधसंगति नानकु भइओ मुकता दरसनु पेखत भोरी ॥ २ ॥ ३७ ॥ ६० ॥

मोहिनी माया पूरे संसार को मोहित करती है और किसी के रोकने पर भी नहीं रुकती। साधक, सिद्ध पुरुषों सबकी प्राण प्यारी है और किसी के तोड़ने पर भी नहीं टूटती॥१॥ रहाउ॥ जिह्वा से छः शास्त्रों का उच्चारण करने या तीर्थ यात्रा करने पर भी इसका प्रभाव कम नहीं होता। पूजा करने वाले, माथे पर तिलक लगाने वाले, व्रत-उपवास, नियम धारण करने वाले तथा तपस्वियों का भी यह साथ नहीं छोड़ती॥१॥ यह जगत अज्ञान के अंधे कुएं में गिरकर पतित हो रहा है। हे संत पुरुषो ! मेरी परमगति कर दो। नानक फुरमाते हैं कि सच्चे साधुओं की संगत में किंचित दर्शन मात्र से मुक्ति प्राप्त हो जाती है॥२॥३७॥६०॥

सारग महला ५ ॥ कहा करहि रे खाटि खाटुली ॥ पवनि अफार तोर चामरो अति जजरी तेरी रे माटुली ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ऊही ते हरिओ ऊहा ले धरिओ जैसे बासा मास देत झाटुली ॥ देवनहारु बिसारिओ अंधुले जिउ सफरी उदरु भरै बहि हाटुली ॥ १ ॥ साद बिकार बिकार झूठ रस जह जानो तह भीर बाटुली ॥ कहु नानक समझु रे इआने आजु कालि खुल्है तेरी गांठुली ॥ २ ॥ ३८ ॥ ६१ ॥

हे प्राणी ! धन-दौलत कमा कर तू क्या कर रहा है ? तेरा शरीर हवा से भर कर फूल गया है और देह रूपी तेरी मटकी बहुत पुरानी हो गई है॥१॥ रहाउ॥ जैसे बाज मॉंस को झपट कर ले जाता है, उसी तरह तुम धन को छीनकर किसी अन्य जगह रख देते हो। हे अंधे ! तुझे देने वाला परमात्मा भूल गया है, जैसे यात्री दुकान में बैठकर अपना पेट भर लेता है, मगर खाना देने वाले को भुला देता है॥१॥ तू विकारों के स्वाद एवं झूठ रसों में ही मस्त है, जहाँ जाना है, वह रास्ता बहुत मुश्किल है। नानक कहते हैं कि हे मूर्ख ! इस तथ्य को समझ लो, आज अथवा कल तेरी मौत निश्चय है॥२॥३८॥६१॥

सारग महला ५ ॥ गुर जीउ संगि तुहारै जानिओ ॥ कोटि जोध उआ की बात न पुछीऐ तां दरगह भी मानिओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कवन मूलु प्रानी का कहीऐ कवन रूपु द्रिसटानिओ ॥ जोति प्रगास भई माटी संगि दुलभ देह बखानिओ ॥ १ ॥ तुम ते सेव तुम ते जप तापा तुम ते ततु पछानिओ ॥ करु मसतकि धरि कटी जेवरी नानक दास दसानिओ ॥ २ ॥ ३९ ॥ ६२ ॥

हे गुरु ! तुम्हारी संगत में परम सत्य को जाना है। करोड़ों योद्धा घूम रहे हैं, कोई उनकी बात नहीं पूछता तो तूने ही प्रभु-दरबार में यश दिलवाया है॥१॥ रहाउ॥ यह कैसे बताया जाए कि प्राणी का मूल क्या है, किस रूप में दृष्टिगत होता है। जब मिट्टी रूपी शरीर में प्राण-ज्योति का आलोक हो गया तो इसे दुर्लभ देह कहा जाने लगा॥१॥ हे सद्‌गुरु ! तुम्हीं से सेवा, जप-तप और सार-तत्व को समझा है। नानक का कथन है कि मुझ दासानुदास के मस्तक पर हाथ धरकर तूने मौत की जंजीर काट दी है॥२॥३९॥६२॥

सारग महला ५ ॥ हरि हरि दीओ सेवक कउ नाम ॥ मानसु का को बपुरो भाई जा को राखा राम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपि महा जनु आपे पंचा आपि सेवक कै काम ॥ आपे सगले दूत बिदारे ठाकुर अंतरजाम ॥ १ ॥ आपे पति राखी सेवक की आपि कीओ बंधान ॥ आदि जुगादि सेवक की राखै नानक को प्रभु जान ॥ २ ॥ ४० ॥ ६३ ॥

ईश्वर ने सेवक को नाम-स्मरण दिया है। हे भाई ! जिसको बचाने वाला खुद परमात्मा है, फिर मनुष्य भला उसका क्या बिगाड़ सकता है॥१॥ रहाउ॥ वह स्वयं ही प्रधान है, स्वयं ही पंच है और वह स्वयं ही सेवक के कार्य सम्पन्न करता है। उस अन्तर्यामी मालिक ने स्वयं ही सब दुष्टों को खत्म कर दिया है॥१॥ उसने स्वयं ही अपने सेवक की प्रतिष्ठा बचाई है और स्वयं ही स्थिरता प्रदान की है। हे नानक ! इस तथ्य को जान लो कि युग-युग से प्रभु अपने भक्तों की रक्षा कर रहा है॥२॥४०॥६३॥

सारग महला ५ ॥ तू मेरे मीत सखा हरि प्रान ॥ मनु धनु जीउ पिंडु सभु तुमरा इहु तनु सीतो तुमरै धान ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तुम ही दीए अनिक प्रकारा तुम ही दीए मान ॥ सदा सदा तुम ही पति राखहु अंतरजामी जान ॥ १ ॥ जिन संतन जानिआ तू ठाकुर ते आए परवान ॥ जन का संगु पाईऐ वडभागी नानक संतन कै कुरबान ॥ २ ॥ ४१ ॥ ६४ ॥

हे पिता परमेश्वर ! तू ही मेरा मित्र, हितैषी एवं प्राण है। यह आत्मा, शरीर, मन एवं धन सब तुम्हारा है और तुम्हीं ने यह शरीर बनाकर दिया है॥१॥ रहाउ॥ तुम्हीं ने अनेक प्रकार की चीजें प्रदान की हैं, तुम्हीं ने मान-प्रतिष्ठा प्रदान की है। हे अन्तर्यामी ! सर्वदा तू ही हमारी लाज रखता है॥१॥ हे ठाकुर ! जिन सज्जनों ने तुझे जान लिया है, उनका जन्म सफल हो गया है। नानक

फुरमाते हैं कि संतजनों की संगत उत्तम भाग्य से ही प्राप्त होती है और मैं तो संतों पर कुर्बान जाता हूँ॥ २॥ ४१॥ ६४॥

सारग महला ५ ॥ करहु गति दइआल संतहु मोरी ॥ तुम समरथ कारन करना तूटी तुम ही जोरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जनम जनम के बिखई तुम तारे सुमति संगि तुमारै पाई ॥ अनिक जोनि भ्रमते प्रभ बिसरत सासि सासि हरि गाई ॥ १ ॥ जो जो संगि मिले साधू कै ते ते पतित पुनीता ॥ कहु नानक जा के वडभागा तिनि जनमु पदारथु जीता ॥ २ ॥ ४२ ॥ ६५ ॥

हे दयालु संतो! मेरी मुक्ति करो; तुम करने-करवाने में समर्थ हो और मेरी टूटी प्रीति को तुम्हीं ने जोड़ा है॥ १॥ रहाउ॥ जन्म-जन्मांतर के विकारी जीवों को तुमने संसार-सागर से तार दिया है और तुम्हारी संगत में सुमति प्राप्त की है। जो प्रभु को भुलाकर अनेक योनियों में घूम रहे थे, अब वे श्वास-श्वास हरि का कीर्तिगान कर रहे हैं॥ १॥ जो जो साधु पुरुषों की संगत में सम्मिलित हुए, वे पतित से पावन हो गए। हे नानक! जो भाग्यशाली है, उसने मानव-जन्म जीत लिया है॥ २॥ ४२॥ ६५॥

सारग महला ५ ॥ ठाकुर बिनती करन जनु आइओ ॥ सरब सूख आनंद सहज रस सुनत तुहारो नाइओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ क्रिपा निधान सूख के सागर जसु सभ महि जा को छाइओ ॥ संतसंगि रंग तुम कीए अपना आपु द्रिसटाइओ ॥ १ ॥ नैनहु संगि संतन की सेवा चरन झारी केसाइओ ॥ आठ पहर दरसनु संतन का सुखु नानक इहु पाइओ ॥ २ ॥ ४३ ॥ ६६ ॥

हे ठाकुर! दास तेरे पास विनती करने आया है। तुम्हारा नाम-कीर्तन सुनने से सर्व सुख, आनंद एवं स्वाभाविक रस प्राप्त होता है॥ १॥ रहाउ॥ हे कृपानिधान! तू सुखों का सागर है, समूचे विश्व में तेरा यश फैला हुआ है। संतों के संग तुम ही आनंद करते हो और अपना आप प्रगट करते हो॥ १॥ इन नयनों से संतों की सेवा में तल्लीन हूँ और बालों से उनके ही चरण झाड़ता हूँ। हे नानक! आठ प्रहर संतों का दर्शन यही परम सुख पाया है॥ २॥ ४३॥ ६६॥

सारग महला ५ ॥ जा की राम नाम लिव लागी ॥ सजनु सुरिदा सुहेला सहजे सो कहीऐ बडभागी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रहित बिकार अलप माइआ ते अहंबुधि बिखु तिआगी ॥ दरस पिआस आस एकहि की टेक हीऐं प्रिअ पागी ॥ १ ॥ अचिंत सोइ जागनु उठि बैसनु अचिंत हसत बैरागी ॥ कहु नानक जिनि जगतु ठगाना सु माइआ हरि जन ठागी ॥ २ ॥ ४४ ॥ ६७ ॥

जिसकी परमात्मा के नाम में लगन लगी रहती है, दरअसल वही सज्जन, हमसफर, स्वाभाविक सुखी एवं भाग्यशाली माना जाता है॥ १॥ रहाउ॥ वह विकारों से रहित रहता है, मोह-माया से निर्लिप्त रहकर अहंकार बुद्धि के जहर को त्याग देता है। प्रियतम के प्रेम में लीन हृदय केवल उसका ही आसरा चाहता है और उसके दर्शनों की प्यास ही मेरी आशा है॥ १॥ अब निश्चिंत होकर उठना, बैठना, जागना हो गया है और निश्चिंत होकर हँसते-खेलते हुए वैराग्यवान रहते हैं। हे नानक! जिसने पूरे जगत को ठग लिया है, उस माया को हरि-भक्तों ने ठग लिया है॥ २॥ ४४॥ ६७॥

सारग महला ५ ॥ अब जन ऊपरि को न पुकारै ॥ पूकारन कउ जो उदमु करता गुरु परमेसरु ता कउ मारै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ निरवैरै संगि वैरु रचावै हरि दरगह ओहु हारै ॥ आदि जुगादि

प्रभ की वडिआई जन की पैज सवारै ॥ १ ॥ निरभउ भए सगल भउ मिटिआ चरन कमल आधारै ॥ गुर कै बचनि जपिओ नाउ नानक प्रगट भइओ संसारै ॥ २ ॥ ४५ ॥ ६८ ॥

अब इस सेवक के खिलाफ कोई दोषारोपण या शिकायत नहीं करता। जो भी शिकायत करने की कोशिश करता है, गुरु परमेश्वर उसे सजा देता है॥१॥ रहाउ॥ जो सज्जनों के साथ शत्रुता करता है, वह ईश्वर के दरबार में हारता है। युग-युग से प्रभु की कीर्ति है कि वह भक्तजनों की लाज बचाता आया है॥१॥ हर भय मिट गया है, निर्भय हो गए हैं और प्रभु के चरण कमल ही हमारा आसरा है। नानक का कथन है कि गुरु के वचनों से नाम का जाप किया है और संसार में उसका नाम प्रख्यात हो गया है॥२॥४५॥६८॥

सारग महला ५ ॥ हरि जन छोडिआ सगला आपु ॥ जिउ जानहु तिउ रखहु गुसाई पेखि जीवां परतापु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर उपदेसि साध की संगति बिनसिओ सगल संतापु ॥ मित्र सत्र पेखि समतु बीचारिओ सगल संभाखन जापु ॥ १ ॥ तपति बुझी सीतल आघाने सुनि अनहद बिसम भए बिसमाद ॥ अनदु भइआ नानक मनि साचा पूरन पूरे नाद ॥ २ ॥ ४६ ॥ ६९ ॥

प्रभु-भक्त ने अहम्-भाव को बिल्कुल त्याग दिया है। हे मालिक ! ज्यों उचित समझते हो, त्यों ही हमें रखो, तुम्हारा यश देखकर ही जीवन पा रहे हैं॥१॥ रहाउ॥ गुरु के उपदेश व साधुओं की संगत में सारा दुख-संताप समाप्त हो गया है। हमने मित्र एवं शत्रु को एक समान मानकर यही चिन्तन किया है कि सज्जनों से वार्तालाप ही जाप है॥१॥ मेरी जलन बुझ गई है, मन शीतल व तृप्त हो गया है, अनाहद ध्वनि सुनकर विस्मित हो गया हूँ। हे नानक ! पूर्ण नाम को सुनकर मन सच्चा व आनंदमय हो गया है॥२॥४६॥६९॥

सारग महला ५ ॥ मेरै गुरि मोरो सहसा उतारिआ ॥ तिसु गुर कै जाईऐ बलिहारी सदा सदा हउ वारिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर का नामु जपिओ दिनु राती गुर के चरन मनि धारिआ ॥ गुर की धूरि करउ नित मजनु किलविख मैलु उतारिआ ॥ १ ॥ गुर पूरे की करउ नित सेवा गुरु अपना नमसकारिआ ॥ सरब फला दीन्हे गुरि पूरै नानक गुरि निसतारिआ ॥ २ ॥ ४७ ॥ ७० ॥

मेरे गुरु ने मेरा संशय-भय दूर कर दिया है। सो ऐसे गुरु पर कुर्बान जाता हूँ, सदैव उस पर न्यौछावर हूँ॥१॥ रहाउ॥ मैं दिन-रात गुरु का नाम जपता रहता हूँ और गुरु-चरणों को मन में बसा लिया है। मैं प्रतिदिन गुरु की चरण-धूल में स्नान करता हूँ, इस प्रकार पापों की मैल उतार ली है॥१॥ मैं नित्य पूरे गुरु की सेवा करता हूँ और अपने गुरु की ही वन्दना करता हूँ। नानक फुरमाते हैं कि पूरे गुरु ने मुझे सभी मनवांछित फल प्रदान कर दिए हैं और उसने मेरी संसार के बन्धनों से मुक्ति कर दी है॥२॥४७॥७०॥

सारग महला ५ ॥ सिमरत नामु प्रान गति पावै ॥ मिटहि कलेस त्रास सभ नासै साधसंगि हितु लावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि हरि हरि हरि मनि आराधे रसना हरि जसु गावै ॥ तजि अभिमानु काम क्रोधु निंदा बासुदेव रंगु लावै ॥ १ ॥ दामोदर दइआल आराधहु गोबिंद करत सोहावै ॥ कहु नानक सभ की होइ रेना हरि हरि दरसि समावै ॥ २ ॥ ४८ ॥ ७१ ॥

ईश्वर का नाम सिमरन करने से प्राणों को मुक्ति मिलती है। यदि साधु पुरुषों के साथ प्रेम लगाया जाए तो सभी कलह-कलेश एवं पीड़ाएँ मिट जाती हैं॥१॥ रहाउ॥ मेरा मन परमात्मा की

आराधना करता है और जिह्वा उसी का यशोगान करती है। अभिमान, काम, क्रोध व निंदा को तजकर मैंने ईश्वर से ही प्रेम लगाया हुआ है॥१॥ दयालु परमेश्वर की आराधना व संकीर्तन करते हुए ही जीव सुन्दर लगता है। नानक का मत है कि जो सबकी चरण-धूलि बन जाता है, वह ईश्वर के दर्शनों में ही लीन रहता है॥२॥४८॥७१॥

सारग महला ५ ॥ अपुने गुर पूरे बलिहारै ॥ प्रगट प्रतापु कीओ नाम को राखे राखनहारै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ निरभउ कीए सेवक दास अपने सगले दूख बिदारै ॥ आन उपाव तिआगि जन सगले चरन कमल रिद धारै ॥ १ ॥ प्रान अधार मीत साजन प्रभ एकै एकंकारै ॥ सभ ते ऊच ठाकुरु नानक का बार बार नमसकारै ॥ २ ॥ ४६ ॥ ७२ ॥

मैं अपने पूर्ण गुरु पर बलिहारी जाता हूँ। उसने हरिनाम की कीर्ति पूरे संसार में फैला दी है, उस बचाने वाले ने मुझे बचा लिया है॥१॥ रहाउ॥ उसने अपने सेवक-दासों के सभी दुख निवृत्त करके निर्भय कर दिया है। सेवक ने अन्य उपाय त्याग कर हृदय में उसके चरण-कमल को ही धारण किया है॥१॥ केवल एक अद्वितीय परमात्मा ही प्राणों का आसरा है, वही हमारा मित्र एवं साजन है। नानक का मालिक सबसे बड़ा है और उसे हमारी बार-बार वन्दना है॥२॥ ४६॥७२॥

सारग महला ५ ॥ बिनु हरि है को कहा बतावहु ॥ सुख समूह करुणा मै करता तिसु प्रभ सदा धिआवहु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जा कै सूति परोए जंता तिसु प्रभ का जसु गावहु ॥ सिमरि ठाकुरु जिनि सभु किछु दीना आन कहा पहि जावहु ॥ १ ॥ सफल सेवा सुआमी मेरे की मन बांछत फल पावहु ॥ कहु नानक लाभु लाहा लै चालहु सुख सेती घरि जावहु ॥ २ ॥ ५० ॥ ७३ ॥

जरा बताओ! ईश्वर के अतिरिक्त क्या कोई अन्य (विधाता) है। वह सुखों का भण्डार, करुणामय एवं स्रष्टा है, अतः ऐसे प्रभु का हरदम ध्यान करो॥१॥ रहाउ॥ तमाम जीव उसके सूत्र में पिरोए हुए हैं, सो ऐसे प्रभु का यश गाओ। जिसने सबकुछ दिया है, उस मालिक का स्मरण करो, कहीं अन्य पूजा के लिए क्यों जाते हो॥१॥ एकमात्र मेरे स्वामी की सेवा ही सफल है, मन में जैसी कामना होगी, वैसा ही फल पाओगे। हे नानक! प्रभु-सेवा का लाभ साथ ले चलो और सुखपूर्वक घर जाओ॥२॥५०॥७३॥

सारग महला ५ ॥ ठाकुर तुम्ह सरणाई आइआ ॥ उतरि गइओ मेरे मन का संसा जब ते दरसनु पाइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनबोलत मेरी बिरथा जानी अपना नामु जपाइआ ॥ दुख नाठे सुख सहजि समाए अनद अनद गुण गाइआ ॥ १ ॥ बाह पकरि कढि लीने अपुने ग्रिह अंध कूप ते माइआ ॥ कहु नानक गुरि बंधन काटे बिछुरत आनि मिलाइआ ॥ २ ॥ ५१ ॥ ७४ ॥

हे ठाकुर! मैं तुम्हारी शरण में आया हूँ। जबसे तेरा दर्शन पाया है, मेरे मन का संशय दूर हो गया है॥१॥ रहाउ॥ बिना कुछ बोले ही तूने मेरी मन की व्यथा जान ली और अपने नाम का जाप करवाया। मेरे सब दुख दूर हो गए, परम सुख में लीन हूँ और आनंदपूर्वक तेरा ही गुणगान किया है॥१॥ तूने बांह पकड़कर माया के अंधे कुएँ से निकाल लिया और अपने घर पहुँचाया है। नानक का कथन है कि गुरु ने संसार के सब बन्धन काट दिए हैं और बिछुड़े हुए को मिला दिया है॥२॥५१॥७४॥

सारग महला ५ ॥ हरि के नाम की गति ठांढी ॥ बेद पुरान सिम्रिति साधू जन खोजत खोजत काढी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिव बिरंच अरु इंद्र लोक ता महि जलतौ फिरिआ ॥ सिमरि सिमरि सुआमी भए सीतल दूखु दरदु भ्रमु हिरिआ ॥ १ ॥ जो जो तरिओ पुरातनु नवतनु भगति भाइ हरि देवा ॥ नानक की बेनंती प्रभ जीउ मिलै संत जन सेवा ॥ २ ॥ ५२ ॥ ७५ ॥

हरि-नाम का संकीर्तन सदैव मन को शान्ति प्रदान करने वाला है। वेदों, पुराणों एवं स्मृतियों इत्यादि का विश्लेषण करके साधु पुरुषों ने यही निष्कर्ष निकाला है॥१॥ रहाउ॥ शिव, ब्रह्मा और इंद्रलोक तमोगुण में जलते रहे। पर ईश्वर का स्मरण करके शीतल हो गए और उनका दुख-दर्द एवं भ्रम दूर हो गया॥१॥ प्राचीन युग अथवा आधुनिक युग जो-जो संसार-सागर से पार हुआ है, वह परमात्मा की भक्ति से ही हुआ है। नानक की विनती है कि संतजनों की सेवा से ही प्रभु मिलता है॥२॥५२॥७५॥

सारग महला ५ ॥ जिहवे अंम्रित गुण हरि गाउ ॥ हरि हरि बोलि कथा सुनि हरि की उचरहु प्रभ को नाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ राम नामु रतन धनु संचहु मनि तनि लावहु भाउ ॥ आन बिभूत मिथिआ करि मानहु साचा इहै सुआउ ॥ १ ॥ जीअ प्रान मुकति को दाता एकस सिउ लिव लाउ ॥ कहु नानक ता की सरणाई देत सगल अपिआउ ॥ २ ॥ ५३ ॥ ७६ ॥

जिह्वा से अमृतमय हरि के गुण गाओ। 'हरि-हरि' बोलो, हरि की कथा सुनो; हरि-नाम का स्तुतिगान करो॥१॥ रहाउ॥ राम नाम अमूल्य रत्न है, यही धन इकट्ठा करो और मन तन से प्रेम लगाओ। अन्य सब विभूतियों को झूठा मानो, राम नाम ही सच्चा लाभ है॥१॥ आत्मा व प्राणों को मुक्ति देने वाला केवल परमेश्वर ही है, अतः उसी से लगन लगाओ। हे नानक! उसी की शरण में आओ, जो सबको रोजी रोटी देता है॥२॥५३॥७६॥

सारग महला ५ ॥ होती नही कवन कछु करणी ॥ इहै ओट पाई मिलि संतह गोपाल एक की सरणी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पंच दोख छिद्र इआ तन महि बिखै बिआधि की करणी ॥ आस अपार दिनस गणि राखे ग्रसत जात बलु जरणी ॥ १ ॥ अनाथह नाथ दइआल सुख सागर सरब दोख भै हरणी ॥ मनि बांछत चितवत नानक दास पेखि जीवा प्रभ चरणी ॥ २ ॥ ५४ ॥ ७७ ॥

मुझसे कोई (अच्छा) कार्य नहीं होता। संत पुरुषों से मिलकर भगवान की शरण में आने का संरक्षण पा लिया है॥१॥ रहाउ॥ इस तन में कामादिक पाँच दोषों के ऐब हैं और विषय-विकारों के कार्य तन में रोग पैदा करते हैं। आशाएँ बे-अन्त हैं, जिन्दगी के दिन थोड़े ही हैं और बुढ़ापा शारीरिक बल को खाता जा रहा है॥१॥ अनाथों का नाथ, सुखों का सागर, दयालु परमेश्वर सब पाप एवं भय हरण करने वाला है। हे प्रभु! दास नानक की यही मनोकामना है कि तुम्हारे चरणों को देखकर जीता रहूँ॥२॥५४॥७७॥

सारग महला ५ ॥ फीके हरि के नाम बिनु साद ॥ अंम्रित रसु कीरतनु हरि गाईऐ अहिनिसि पूरन नाद ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिमरत सांति महा सुखु पाईऐ मिटि जाहि सगल बिखाद ॥ हरि हरि लाभु साधसंगि पाईऐ घरि लै आवहु लादि ॥ १ ॥ सभ ते ऊच ऊच ते ऊचो अंतु नही मरजाद ॥ बरनि न साकउ नानक महिमा पेखि रहे बिसमाद ॥ २ ॥ ५५ ॥ ७८ ॥

हरि के नाम बिना सब स्वाद फीके हैं। हरि-कीर्तन अमृतमय रस है, हरि का कीर्तिगान करने से दिन-रात खुशियाँ बनी रहती हैं॥१॥ रहाउ॥ परमात्मा के स्मरण से महासुख व शान्ति प्राप्त होती है और सब दुख-शोक मिट जाते हैं। हरि-भजन का लाभ साधु-पुरुषों की संगत में ही प्राप्त होता है, इसे लादकर घर ले आओ॥१॥ ईश्वर महान् है, ऊँचे से भी ऊँचा है, उसकी गरिमा का रहस्य नहीं पाया जा सकता। नानक कथन करते हैं कि ईश्वर की महिमा का वर्णन नहीं किया जा सकता, देखकर बड़ा विस्मय हो रहा है॥२॥५५॥७८॥

सारग महला ५ ॥ आइओ सुनन पड़न कउ बाणी ॥ नामु विसारि लगहि अन लालचि बिरथा जनमु पराणी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ समझु अचेत चेति मन मेरे कथी संतन अकथ कहाणी ॥ लाभु लैहु हरि रिदै अराधहु छुटकै आवण जाणी ॥ १ ॥ उदमु सकति सिआणप तुम्हरी देहि त नामु वखाणी ॥ सेई भगत भगति से लागे नानक जो प्रभ भाणी ॥ २ ॥ ५६ ॥ ७९ ॥

मनुष्य इस दुनिया में हरि-वाणी सुनने और पढ़ने के लिए आया है। परन्तु हरि-नाम को भुलाकर अन्य लालचों में लगकर अपना जन्म व्यर्थ गंवा रहा है॥१॥ रहाउ॥ हे मेरे मन! जाग और सावधान हो जा, संत-महात्मा पुरुषों ने जो अकथ कहानी कथन की है, उसे समझ। हृदय में ईश्वर की आराधना का लाभ प्राप्त कर, आवागमन से छुटकारा हो जाएगा॥१॥ हे हरि! अगर तुम मुझे उद्यम शक्ति एवं बुद्धिमानी प्रदान करो तो तेरे नाम की चर्चा करता रहूँ। नानक कथन करते हैं कि जो प्रभु को अच्छे लगते हैं, वही भक्त भक्ति में निमग्न होते हैं॥२॥५६॥७९॥

सारग महला ५ ॥ धनवंत नाम के वणजारे ॥ सांझी करहु नाम धनु खाटहु गुर का सबदु वीचारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ छोडहु कपटु होइ निरवैरा सो प्रभु संगि निहारे ॥ सचु धनु वणजहु सचु धनु संचहु कबहू न आवहु हारे ॥ १ ॥ खात खरचत किछु निखुटत नाही अगनत भरे भंडारे ॥ कहु नानक सोभा संगि जावहु पारब्रहम कै दुआरे ॥ २ ॥ ५७ ॥ ८० ॥

असल में हरिनाम के व्यापारी ही धनवान हैं। इनके साथ मेल-मिलाप बनाकर हिस्सेदारी करो; और गुरु के उपदेश का चिन्तन करते हुए हरिनाम धन की कमाई करो॥१॥ रहाउ॥ जो छल-कपट छोड़कर निर्वेर सज्जन बनकर रहता है, वह प्रभु को आसपास ही देखता है। वह सच्चे नाम धन का व्यापार करता है, सच्चा धन ही संचित करता, इस तरह कभी हार का मुँह नहीं देखता॥१॥ हरिनाम के असंख्य ही भण्डार भरे हुए हैं, इसे खाने अथवा खर्च करने से कभी कमी नहीं आती। हे नानक! इस तरह शोभापूर्वक परब्रह्म के द्वार पर जाओ॥२॥५७॥८०॥

सारग महला ५ ॥ प्रभ जी मोहि कवनु अनाथु बिचारा ॥ कवन मूल ते मानुखु करिआ इहु परतापु तुहारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जीअ प्राण सरब के दाते गुण कहे न जाहि अपारा ॥ सभ के प्रीतम स्रब प्रतिपालक सरब घटां आधारा ॥ १ ॥ कोइ न जाणै तुमरी गति मिति आपहि एक पसारा ॥ साध नाव बैठावहु नानक भव सागरु पारि उतारा ॥ २ ॥ ५८ ॥ ८१ ॥

हे प्रभु! मुझ अनाथ, बेचारे, नाचीज को किस आधार पर तूने मनुष्य बना दिया, यह सब तुम्हारा प्रताप है॥१॥ रहाउ॥ तुम जीवन, प्राण इत्यादि सब देने वाले हो, तुम्हारे अपार गुण अकथनीय हैं। तू सबका प्रियतम है, समूचे संसार का प्रतिपालक है, सबके हृदय का आसरा है॥१॥ तुम्हारी महिमा व शक्ति को कोई नहीं जानता और संसार का प्रसार तेरा ही है। नानक का कथन है कि साधु पुरुषों की नाव में बैठने से संसार-सागर से पार उतारा हो जाता है॥२॥५८॥८१॥

सारग महला ५ ॥ आवै राम सरणि वडभागी ॥ एकस बिनु किछु होरु न जाणै अवरि उपाव तिआगी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मन बच क्रम आराधै हरि हरि साधसंगि सुखु पाइआ ॥ अनद बिनोद अकथ कथा रसु साचै सहजि समाइआ ॥ १ ॥ करि किरपा जो अपुना कीनो ता की ऊतम बाणी ॥ साधसंगि नानक निसतरीऐ जो राते प्रभ निरबाणी ॥ २ ॥ ५९ ॥ ८२ ॥

कोई खुशकिस्मत ही परमात्मा की शरण में आता है। वह प्रभु के अतिरिक्त किसी अन्य को नहीं मानता और अन्य सब उपाय त्याग देता है॥१॥ रहाउ॥ वह मन, वचन एवं कर्म से ईश्वर की आराधना करता है और साधु पुरुषों की संगत में सुख पाता है। वह अकथनीय कथा के रस में आनंद विनोद करता है और सहज स्वाभाविक परम सत्य में लीन रहता है॥१॥ कृपा करके भगवान ने जिसे अपना बना लिया है, उसकी वाणी उत्तम है। नानक फुरमाते हैं कि जो लोग प्रभु की भक्ति में रत रहते हैं, साधुसंगत में वे जगत-सागर से मुक्त हो जाते हैं॥२॥५९॥८२॥

सारग महला ५ ॥ जा ते साधू सरणि गही ॥ सांति सहजु मनि भइओ प्रगासा बिरथा कछु न रही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ होहु क्रिपाल नामु देहु अपुना बिनती एह कही ॥ आन बिउहार बिसरे प्रभ सिमरत पाइओ लाभु सही ॥ १ ॥ जह ते उपजिओ तही समानो साई बसतु अही ॥ कहु नानक भरमु गुरि खोइओ जोती जोति समही ॥ २ ॥ ६० ॥ ८३ ॥

जबसे साधु महापुरुष की शरण ली है, मन में परम सुख व शान्ति का आलोक हो गया है और कोई दुख-दर्द नहीं रहा॥१॥ रहाउ॥ हे प्रभु! हमने यही विनती की है कि कृपालु होकर अपना नाम प्रदान करो। प्रभु-स्मरण से अन्य सभी व्यवहार भूल गए हैं और यही सच्चा लाभ पाया है॥१॥ जहाँ से उत्पन्न हुए, वहीं समा गए, वहीं बस रहे हैं। नानक फुरमाते हैं कि गुरु ने मेरा भ्रम दूर कर दिया है और आत्म-ज्योति परम-ज्योति में विलीन हो गई है॥२॥६०॥८३॥

सारग महला ५ ॥ रसना राम को जसु गाउ ॥ आन सुआद बिसारि सगले भलो नाम सुआउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चरन कमल बसाइ हिरदै एक सिउ लिव लाउ ॥ साधसंगति होहि निरमलु बहुड़ि जोनि न आउ ॥ १ ॥ जीउ प्रान अधारु तेरा तू निथावे थाउ ॥ सासि सासि सम्हालि हरि हरि नानक सद बलि जाउ ॥ २ ॥ ६१ ॥ ८४ ॥

हे सज्जनो! जिह्वा से राम का यशोगान करो। अन्य संसारिक स्वाद भुला दो, क्योंकि हरिनाम भजन का स्वाद सबसे उत्तम है॥१॥ रहाउ॥ हरि के चरण-कमल हृदय में बसाकर केवल उसी में लगन लगाओ। साधु पुरुषों की संगत में मन निर्मल हो जाता है और पुनः योनि चक्र में नहीं आना पड़ता॥१॥ हे प्रभु! आत्मा एवं प्राणों को तेरा ही आसरा है, तू आश्रयहीनों का आश्रय है। नानक का कथन है कि मैं श्वास-श्वास से प्रभु का चिंतन करता हूँ और उस पर सदैव कुर्बान जाता हूँ॥२॥६१॥८४॥

सारग महला ५ ॥ बैकुंठ गोबिंद चरन नित धिआउ ॥ मुकति पदारथु साधू संगति अंम्रितु हरि का नाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ऊतम कथा सुणीजै स्रवणी मइआ करहु भगवान ॥ आवत जात दोऊ पख पूरन पाईऐ सुख बिस्राम ॥ १ ॥ सोधत सोधत ततु बीचारिओ भगति सरेसट पूरी ॥ कहु नानक इक राम नाम बिनु अवर सगल बिधि ऊरी ॥ २ ॥ ६२ ॥ ८५ ॥

भगवान के चरणों का नित्य ध्यान ही वैकुण्ठ है। साधु-संगत में मोक्षदायक अमृत हरिनाम मिलता है॥१॥ रहाउ॥ हे भगवान! कृपा करो, ताकि कानों से उत्तम कथा सुनता रहूँ। इससे

जीवन-मृत्यु दोनों ही पक्ष पूर्ण होते हैं और सुख-शान्ति मिलती है॥ १॥ खोजते-खोजते यही सार-तत्व निकला है कि भक्ति ही श्रेष्ठ एवं पूर्ण है। हे नानक! राम नाम के सिवा अन्य सभी तरीके अधूरे व असफल हैं॥ २॥ ६२॥ ८५॥

सारग महला ५ ॥ साचे सतिगुरू दातारा ॥ दरसनु देखि सगल दुख नासहि चरन कमल बलिहारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सति परमेसरु सति साध जन निहचलु हरि का नाउ ॥ भगति भावनी पारब्रहम की अबिनासी गुण गाउ ॥ १ ॥ अगमु अगोचरु मिति नही पाईऐ सगल घटा आधारु ॥ नानक वाहु वाहु कहु ता कउ जा का अंतु न पारु ॥ २ ॥ ६३ ॥ ८६ ॥

सच्चा सतिगुरु सबको देने वाला है, उसके दर्शनों से सभी दुख दूर हो जाते हैं, मैं उसके चरण-कमल पर कुर्बान जाता हूँ॥ १॥ रहाउ॥ परमेश्वर सत्य है, साधुजन सत्य हैं और हरि का नाम निश्चल है। हे सज्जनो! परब्रह्म की भक्ति करो, उस अविनाशी के गुण गाओ॥ १॥ वह अपहुँच, मन-वाणी से परे है, उसकी शक्ति का रहस्य नहीं पाया जा सकता, वह सबका आसरा है। नानक का कथन है कि उस परमात्मा की प्रशंसा करो, जिसका कोई अन्त व आर-पार नहीं॥ २॥ ६३॥ ८६॥

सारग महला ५ ॥ गुर के चरन बसे मन मेरै ॥ पूरि रहिओ ठाकुरु सभ थाई निकटि बसै सभ नेरै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बंधन तोरि राम लिव लाई संतसंगि बनि आई ॥ जनमु पदारथु भइओ पुनीता इछा सगल पुजाई ॥ १ ॥ जा कउ क्रिपा करहु प्रभ मेरे सो हरि का जसु गावै ॥ आठ पहर गोबिंद गुन गावै जनु नानकु सद बलि जावै ॥ २ ॥ ६४ ॥ ८७ ॥

गुरु के चरण मेरे मन में बस गए हैं। मालिक हर स्थान में मौजूद है, निकट ही रहता है, सबसे पास है॥ १॥ रहाउ॥ संतों के संग प्रेम हुआ तो बन्धनों को तोड़कर हमने ईश्वर में लगन लगा ली। हमारा जन्म पावन हो गया और सब कामनाएँ पूरी हो गईं॥ १॥ जिस पर मेरा प्रभु कृपा करता है, वही उसका यशोगान करता है। हे नानक! वह आठ प्रहर गोविंद के गुण गाता है, मैं सदैव उस पर बलिहारी जाता हूँ॥ २॥ ६४॥ ८७॥

सारग महला ५ ॥ जीवनु तउ गनीऐ हरि पेखा ॥ करहु क्रिपा प्रीतम मनमोहन फोरि भरम की रेखा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कहत सुनत किछु सांति न उपजत बिनु बिसास किआ सेखां ॥ प्रभू तिआगि आन जो चाहत ता कै मुखि लागै कालेखा ॥ १ ॥ जा कै रासि सरब सुख सुआमी आन न मानत भेखा ॥ नानक दरस मगन मनु मोहिओ पूरन अरथ बिसेखा ॥ २ ॥ ६५ ॥ ८८ ॥

जीवन तो ही सफल माना जाए यदि परमेश्वर के दर्शन हो जाएँ। हे प्रियतम प्रभु! कृपा करके भ्रम की रेखा को फोड़ दो॥ १॥ रहाउ॥ कहने अथवा सुनने से शान्ति प्राप्त नहीं होती और बिना विश्वास के कोई क्या सीख सकता है। प्रभु को त्याग कर जो अन्य को चाहता है, उसके मुँह पर कालिमा ही लगती है॥ १॥ जिसके पास सर्व सुख देने वाला ईश्वर है, वह किसी सम्प्रदाय अथवा देवी-देवता को नहीं मानता। हे नानक! ईश्वर के दर्शनों में निमग्न मन मोहित हो जाता है और सर्वमनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं॥ २॥ ६५॥ ८८॥

सारग महला ५ ॥ सिमरन राम को इकु नाम ॥ कलमल दगध होहि खिन अंतरि कोटि दान इसनान ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आन जंजार ब्रिथा स्रमु घालत बिनु हरि फोकट गिआन ॥ जनम मरन संकट

ते छूटै जगदीस भजन सुख धिआन ॥ १ ॥ तेरी सरनि पूरन सुख सागर करि किरपा देवहु दान ॥ सिमरि सिमरि नानक प्रभ जीवै बिनसि जाइ अभिमान ॥ २ ॥ ६६ ॥ ८६ ॥

केवल राम नाम का सिमरन करो, इससे पल में सब पाप-अपराध जल जाते हैं और करोड़ों दान-स्नान का फल प्राप्त होता है॥१॥ रहाउ॥ अन्य जंजालों में मेहनत करना बेकार है और प्रभु के बिना सब ज्ञान अनुपयोगी हैं। जगदीश्वर का भजन करने से जन्म-मरण के संकट से छुटकारा हो जाता है और उसके ध्यान में रत रहने से सुखों की प्राप्ति होती है॥१॥ हे पूर्ण सुखसागर! मैं तेरी शरण में आया हूँ, कृपा करके भक्ति का दान दो। नानक की विनती है कि हे प्रभु! तेरे सुमिरन से ही जीता हूँ और इससे मेरा अभिमान नष्ट हो जाता है॥२॥६६॥८६॥

सारग महला ५ ॥ धूरतु सोई जि धुर कउ लागै ॥ सोई धुरंधरु सोई बसुंधरु हरि एक प्रेम रस पागै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बलबंच करै न जानै लाभै सो धूरतु नही मूढ़ा ॥ सुआरथु तिआगि असारथि रचिओ नह सिमरै प्रभु रूड़ा ॥ १ ॥ सोई चतुरु सिआणा पंडितु सो सूरा सो दानां ॥ साधसंगि जिनि हरि हरि जपिओ नानक सो परवाना ॥ २ ॥ ६७ ॥ ९० ॥

असली धूर्त वही है, जो ओंकार के चिंतन में लीन होता है। वही सर्वोत्तम है, वही धनवान् है, जो परमात्मा के प्रेम-रस में निमग्न होता है॥१॥ रहाउ॥ जो छल-कपट करता है, परन्तु लाभ को नहीं जानता, ऐसा व्यक्ति धूर्त नहीं, असल में मूर्ख है। वह लाभ छोड़कर नुक्सान वाले ही कार्यों में रचा रहता है और सुन्दर प्रभु का भजन नहीं करता॥१॥ वास्तव में वही चतुर, बुद्धिमान, पण्डित है, वही शूरवीर एवं दानशील है। जिसने साधु संगत में परमात्मा का जाप किया है, नानक का कथन है कि वही प्रभु को परवान होता है॥२॥६७॥९०॥

सारग महला ५ ॥ हरि हरि संत जना की जीवनि ॥ बिखै रस भोग अंम्रित सुख सागर राम नाम रसु पीवनि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संचनि राम नाम धनु रतना मन तन भीतरि सीवनि ॥ हरि रंग रांग भए मन लाला राम नाम रस खीवनि ॥ १ ॥ जिउ मीना जल सिउ उरझानो राम नाम संगि लीवनि ॥ नानक संत चात्रिक की निआई हरि बूंद पान सुख थीवनि ॥ २ ॥ ६८ ॥ ९१ ॥

परमात्मा ही भक्तजनों का जीवन है, वे अमृतमय सुखसागर राम नाम का ही रस पान करते हैं और इसी रस को भोगते हैं॥१॥ रहाउ॥ वे राम नाम धन को संचित करते हैं और मन तन में इसी में तल्लीन रहते हैं। उनका मन प्रभु के रंग में लाल रहता है और वे राम नाम का रस ही सेवन करते हैं॥१॥ ज्यों मछली जल में उलझी रहती है, वैसे ही वे राम नाम में लीन रहते हैं। हे नानक! संत चातक की तरह हरि-बूंद का पान करके सुख पाते हैं॥२॥६८॥९१॥

सारग महला ५ ॥ हरि के नामहीन बेताल ॥ जेता करन करावन तेता सभि बंधन जंजाल ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बिनु प्रभ सेव करत अन सेवा बिरथा काटै काल ॥ जब जमु आइ संघारै प्रानी तब तुमरो कउनु हवाल ॥ १ ॥ राखि लेहु दास अपुने कउ सदा सदा किरपाल ॥ सुख निधान नानक प्रभु मेरा साधसंगि धन माल ॥ २ ॥ ६९ ॥ ९२ ॥

ईश्वर के नाम से विहीन मनुष्य प्रेत समान है। जितना भी वह (कर्मकाण्ड) करता करवाता है, उतने ही उसके लिए सभी बन्धन जंजाल बन जाते हैं॥१॥ रहाउ॥ वह प्रभु सेवा की अपेक्षा अन्य (देवताओं) की सेवा करके समय बर्बाद करता है। हे प्राणी! जब यम आकर मारेगा, तब तुम्हारा

कौन ख्याल रखेगा॥१॥ हे प्रभु! अपने दास को बचा लो, तू सदैव कृपालु है। नानक का कथन है कि मेरा प्रभु सुखों का घर है और साधु महापुरुषों की संगत ही मेरी धन-दौलत है॥२॥६६॥६२॥

सारग महला ५ ॥ मनि तनि राम को बिउहारु ॥ प्रेम भगति गुन गावन गीधे पोहत नह संसारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ स्रवणी कीरतनु सिमरनु सुआमी इहु साध को आचारु ॥ चरन कमल असथिति रिद अंतरि पूजा प्रान को आधारु ॥ १ ॥ प्रभ दीन दइआल सुनहु बेनंती किरपा अपनी धारु ॥ नामु निधानु उचरउ नित रसना नानक सद बलिहारु ॥ २ ॥ ७० ॥ ६३ ॥

मन तन में राम स्मरण का व्यवहार बनाना चाहिए, वह तो प्रेम-भक्ति एवं गुणगान से ही प्रसन्न होता है और संसार के बन्धन प्रभावित नहीं करते॥१॥ रहाउ॥ कानों से प्रभु का संकीर्तन सुनना एवं भजन करना ही साधु पुरुषों का जीवन-आचरण है। उनका हृदय प्रभु के चरण-कमल में स्थिर रहता है और प्रभु की पूजा ही उनके प्राणों का आसरा है॥१॥ हे दीनदयाल प्रभु! मेरी विनती सुनो; अपनी कृपा करो, ताकि रसना से नित्य सुखों की निधि नाम का उच्चारण करूँ। नानक तुझ पर सदा बलिहारी जाता है॥२॥७०॥६३॥

सारग महला ५ ॥ हरि के नामहीन मति थोरी ॥ सिमरत नाहि सिरीधर ठाकुर मिलत अंध दुख घोरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि के नाम सिउ प्रीति न लागी अनिक भेख बहु जोरी ॥ तूटत बार न लागै ता कउ जिउ गागरि जल फोरी ॥ १ ॥ करि किरपा भगति रसु दीजै मनु खचित प्रेम रस खोरी ॥ नानक दास तेरी सरणाई प्रभ बिनु आन न होरी ॥ २ ॥ ७१ ॥ ६४ ॥

ईश्वर के नाम से विहीन मनुष्य मंदबुद्धि कहलाता है। वह श्रीधर ठाकुर जी का स्मरण नहीं करता और घोर दुख ही पाता है॥१॥ रहाउ॥ वह ईश्वर के नाम से प्रीति नहीं लगाता और अनेक वेष धारण करता है। ऐसा प्रेम टूटते देरी नहीं लगती, ज्यों टूटी गागर में जल नहीं ठहरता॥१॥ यदि भगवान कृपा करके भक्ति का रस प्रदान करे तो मन प्रेम-रस में तल्लीन रहे। हे प्रभु! दास नानक तेरी शरण में आया है और तेरे सिवा मेरा कोई नहीं॥२॥७१॥६४॥

सारग महला ५ ॥ चितवउ वा अउसर मन माहि ॥ होइ इकत्र मिलहु संत साजन गुण गोबिंद नित गाहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बिनु हरि भजन जेते काम करीअहि तेते बिरथे जांहि ॥ पूरन परमानंद मनि मीठो तिसु बिनु दूसर नाहि ॥ १ ॥ जप तप संजम करम सुख साधन तुलि न कछूऐ लाहि ॥ चरन कमल नानक मनु बेधिओ चरनह संगि समाहि ॥ २ ॥ ७२ ॥ ६५ ॥

मैं मन में उस शुभावसर का चिन्तन करता हूँ कि सज्जन संतों के साथ मिलकर परमात्मा का गुणगान किया जाए॥१॥ रहाउ॥ परमात्मा के भजन बिना जितने कार्य हम करते हैं, सब बेकार ही जाते हैं। पूर्ण परमानंद ही मन को मधुर लगता है, उसके सिवा दूसरा कोई नहीं॥१॥ मंत्रों का जप, तपस्या, संयम, कर्म तथा सभी सुख साधन प्रभु-भजन के मुकाबले शून्य हैं। नानक फुरमाते हैं कि मन प्रभु के चरण-कमल में बिंध गया है और चरणों में ही विलीन है॥२॥७२॥६५॥

सारग महला ५ ॥ मेरा प्रभु संगे अंतरजामी ॥ आगै कुसल पाछै खेम सूखा सिमरत नामु सुआमी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साजन मीत सखा हरि मेरै गुन गुोपाल हरि राइआ ॥ बिसरि न जाई निमख हिरदै ते पूरै गुरू मिलाइआ ॥ १ ॥ करि किरपा राखे दास अपने जीअ जंत वसि जा कै ॥ एका लिव पूरन परमेसुर भउ नही नानक ता कै ॥ २ ॥ ७३ ॥ ६६ ॥

अन्तर्यामी मेरा प्रभु सदैव साथ है। स्वामी का नाम स्मरण करने से सदैव कुशल एवं सुख की लब्धि होती है॥१॥ रहाउ॥ ईश्वर ही मेरा सज्जन, मित्र एवं हितैषी है और उसके ही गुण गाता हूँ। वह पल भर हृदय से भूल न जाए, इसलिए पूर्ण गुरु ने मुझे उससे मिला दिया है॥१॥ वह कृपा करके अपने दास की रक्षा करता है, सभी जीव उसी के वश में है। हे नानक! केवल पूर्ण परमेश्वर में ही लगन लगी हुई है और उसे कोई भय नहीं॥२॥७३॥६६॥

सारग महला ५ ॥ जा कै राम को बलु होइ ॥ सगल मनोरथ पूरन ताहू के दूखु न बिआपै कोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो जनु भगतु दासु निजु प्रभ का सुणि जीवां तिसु सोइ ॥ उदमु करउ दरसनु पेखन कौ करमि परापति होइ ॥ १ ॥ गुर परसादी द्रिसटि निहारउ दूसर नाही कोइ ॥ दानु देहि नानक अपने कउ चरन जीवां संत धोइ ॥ २ ॥ ७४ ॥ ६७ ॥

जिसका बल ईश्वर होता है, उसके सभी मनोरथ पूर्ण होते हैं और कोई दुख प्रभावित नहीं करता॥१॥ रहाउ॥ जो व्यक्ति प्रभु का भक्त एवं दास है, उसकी कीर्ति सुनकर जी रहा हूँ। उसके दर्शन का प्रयत्न करता हूँ, पर यह भाग्य से ही प्राप्त होता है॥१॥ गुरु की कृपा से आँखों से प्रभु को निहारता हूँ, अन्य किसी को नहीं। नानक की विनती है कि अपने सेवक को यह दान दो कि संतों के चरण धो कर जीता रहूँ॥२॥७४॥६७॥

सारग महला ५ ॥ जीवतु राम के गुण गाइ ॥ करहु क्रिपा गोपाल बीठुले बिसरि न कब ही जाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनु तनु धनु सभु तुमरा सुआमी आन न दूजी जाइ ॥ जिउ तू राखहि तिव ही रहणा तुम्हरा पैन्है खाइ ॥ १ ॥ साधसंगति कै बलि बलि जाई बहुड़ि न जनमा धाइ ॥ नानक दास तेरी सरणाई जिउ भावै तिवै चलाइ ॥ २ ॥ ७५ ॥ ६८ ॥

मैं राम के गुण गा कर जीता हूँ। हे परमेश्वर! कृपा करो, कभी भूल मत जाना॥१॥ रहाउ॥ हे स्वामी! मन, तन, धन सब तुम्हारा दिया हुआ है, तेरे सिवा मैं किसी को नहीं मानता। जैसे तू रखता है, वैसे ही रहना है और तुम्हारा दिया खाना एवं पहनना है॥१॥ मैं साधु-पुरुषों पर कुर्बान जाता हूँ, इनकी संगत में आवागमन से मुक्ति हो जाती है। हे प्रभु! दास नानक तेरी शरण में है, ज्यों चाहते हो, वैसे ही चलाना॥२॥७५॥६८॥

सारग महला ५ ॥ मन रे नाम को सुख सार ॥ आन काम बिकार माइआ सगल दीसहि छार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ग्रिहि अंध कूप पतित प्राणी नरक घोर गुबार ॥ अनिक जोनी भ्रमत हारिओ भ्रमत बारं बार ॥ १ ॥ पतित पावन भगति बछल दीन किरपा धार ॥ कर जोड़ि नानकु दानु मांगै साधसंगि उधार ॥ २ ॥ ७६ ॥ ६६॥

हे मन! हरि-नाम सर्व सुखों का सार है और अन्य कार्य माया के विकार हैं, जो सब धूल नज़र आते हैं॥१॥ रहाउ॥ पतित प्राणी अंधे कुएं में पड़कर घोर नरक के अंधेरे में डूब जाता है। वह अनेक योनियों में भटकता हुआ पुनः पुनः भटकता है॥१॥ हे परमेश्वर! तू पतितों को पावन करने वाला है, भक्तवत्सल है, दीनों पर कृपा धारण करने वाला है। नानक हाथ जोड़कर कामना करते हैं कि साधुजनों की संगत में हमारा उद्धार करो॥२॥७६॥६६॥

सारग महला ५ ॥ बिराजित राम को परताप ॥ आधि बिआधि उपाधि सभ नासी बिनसे तीनै ताप ॥ १ ॥ रहाउ ॥ त्रिसना बुझी पूरन सभ आसा चूके सोग संताप ॥ गुण गावत अचुत अबिनासी

मन तन आतम ध्राप ॥ १ ॥ काम क्रोध लोभ मद मतसर साधू कै संगि खाप ॥ भगति वछल भै काटनहारे नानक के माई बाप ॥ २ ॥ ७७ ॥ १०० ॥

ईश्वर की महिमा सब ओर फैली हुई है, इससे आधि, व्याधि, उपाधि, तीन प्रकार के रोग विनष्ट हो जाते हैं॥१॥ रहाउ॥ हमारी तृष्णा बुझ गई है, सभी आकांक्षाएं पूर्ण हुई हैं और शोक संताप समाप्त हुए हैं। अविनाशी निरंकार का गुणगान करते हुए मन, तन एवं आत्मा को तृप्ति मिली है॥१॥ साधु-महात्मा की संगत में जीव का काम, क्रोध, लोभ, ईर्ष्या-द्वेष का अन्त हो जाता है। नानक का माई-बाप निरंकार भक्तवत्सल एवं सब भय काटनेवाला है॥२॥७७॥१००॥

सारग महला ५ ॥ आतुरु नाम बिनु संसार ॥ त्रिपति न होवत कूकरी आसा इतु लागो बिखिआ छार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पाइ ठगउरी आपि भुलाइओ जनमत बारो बार ॥ हरि का सिमरनु निमख न सिमरिओ जमकंकर करत खुआर ॥ १ ॥ होहु क्रिपालु दीन दुख भंजन तेरिआ संतह की रावार ॥ नानक दासु दरसु प्रभ जाचै मन तन को आधार ॥ २ ॥ ७८ ॥ १०१ ॥

प्रभु नाम बिना पूरी दुनिया व्याकुल है। कुतिया आशा से इसकी तृप्ति नहीं होती और इसे विकारों की मिट्टी लगी रहती है॥१॥ रहाउ॥ परब्रह्म ने ठग-बूटी डालकर मनुष्य को स्वयं भुलाया हुआ है, इसी वजह से वह बार-बार जन्मता-मरता है। वह एक पल भी परमात्मा का भजन नहीं करता, अतः यमदूत इसे तंग करता है॥१॥ हे करुणानिधि ! तू दीनों के दुख नाश करने वाला है, कृपा करो, हम तेरे संत पुरुषों की धूल हैं। दास नानक प्रभु दर्शन ही चाहता है, वही मन तन का आसरा है॥२॥७८॥१०१॥

सारग महला ५ ॥ मैला हरि के नाम बिनु जीउ ॥ तिनि प्रभि साचै आपि भुलाइआ बिखै ठगउरी पीउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कोटि जनम भ्रमतौ बहु भांती थिति नही कतहू पाई ॥ पूरा सतिगुरु सहजि न भेटिआ साकतु आवै जाई ॥ १ ॥ राखि लेहु प्रभ संम्रिथ दाते तुम प्रभ अगम अपार ॥ नानक दास तेरी सरणाई भवजलु उतरिओ पार ॥ २ ॥ ७९ ॥ १०२ ॥

परमेश्वर के नाम बिना जीव मैला है। दरअसल विकारों की ठगबूटी पिला कर सच्चे प्रभु ने स्वयं ही इसे भुला दिया है॥१॥ रहाउ॥ वह अनेक प्रकार से करोड़ों जन्म भटकता है और इसे कहीं स्थिरता प्राप्त नहीं होती। पूर्ण सतिगुरु से इसकी मुलाकात नहीं होती, जिस कारण शाक्त जीव आता जाता है॥१॥ हे प्रभु ! तू समर्थ, दाता, अगम्य अपार है, मुझे बचा लो। दास नानक तेरी शरण में संसार-सागर से पार उतर गया है॥२॥७९॥१०२॥

सारग महला ५ ॥ रमण कउ राम के गुण बाद ॥ साधसंगि धिआईऐ परमेसरु अंम्रित जा के सुआद ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिमरत एकु अचुत अबिनासी बिनसे माइआ माद ॥ सहज अनद अनहद धुनि बाणी बहुरि न भए बिखाद ॥ १ ॥ सनकादिक ब्रहमादिक गावत गावत सुक प्रहिलाद ॥ पीवत अमिउ मनोहर हरि रसु जपि नानक हरि बिसमाद ॥ २ ॥ ८० ॥ १०३ ॥

अर्चना के लिए परमात्मा का भजन बढ़िया है। साधु पुरुषों के साथ परमेश्वर की अर्चना करो, इसका स्वाद अमृतमय है॥१॥ रहाउ॥ अटल अविनाशी प्रभु का स्मरण करने से माया का अभिमान समाप्त हो जाता है। अनाहद वाणी की ध्वनि में परम आनंद प्राप्त होता है और सुख-तकलीफ का दुबारा सामना नहीं करना पड़ता॥१॥ सनक-सनंदन, ब्रह्मा, शुकदेव, प्रहलाद

इत्यादि सब परमात्मा के गुण गाते हैं। हे नानक! अद्‌भुत हरि रस के अमृत जल का पान करने से परमानंद प्राप्त होता है॥ २॥ ८०॥ १०३॥

सारग महला ५ ॥ कीन्हे पाप के बहु कोट ॥ दिनसु रैनी थकत नाही कतहि नाही छोट ॥ १ ॥ रहाउ ॥ महा बजर बिख बिआधी सिरि उठाई पोट ॥ उघरि गईआं खिनहि भीतरि जमहि ग्रासे झोट ॥ १ ॥ पसु परेत उसट गरधभ अनिक जोनी लेट ॥ भजु साधसंगि गोबिंद नानक कछु न लागै फेट ॥ २ ॥ ८१ ॥ १०४ ॥

मनुष्य ने पापों का बहुत बड़ा दुर्ग बनाया हुआ है। वह दिन-रात इसमें थकता नहीं और न ही कभी पापों में छूट आती है॥१॥ रहाउ॥ इस तरह मनुष्य ने सिर पर महावज्र विषय रोगों की पोटली उठाई हुई है। वह पल में ही खुल जाती है और मौत उसे अपना शिकार बना लेती है॥१॥ तदन्तर मनुष्य पशु-प्रेत, ऊँट, गधे इत्यादि अनेक योनियों में भ्रमता है। नानक अनुरोध करते हैं कि हे मनुष्य! साधु पुरुषों के साथ ईश्वर का भजन कर लो, फिर कोई चोट नहीं लगेगी॥२॥८१॥१०४॥

सारग महला ५ ॥ अंधे खावहि बिसू के गटाक ॥ नैन स्रवन सरीरु सभु हुटिओ सासु गइओ तत घाट ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनाथ रञाणि उदरु ले पोखहि माइआ गईआ हाटि ॥ किलबिख करत करत पछुतावहि कबहु न साकहि छांटि ॥ १ ॥ निंदकु जमदूती आइ संघारिओ देवहि मूंड उपरि मटाक ॥ नानक आपन कटारी आपस कउ लाई मनु अपना कीनो फाट ॥ २ ॥ ८२ ॥ १०५ ॥

अन्धे व्यक्ति पापों का जहर खाते हैं। उनकी आँखें, कान, शरीर सब कमजोर हो गया है और श्वास-तत्व भी कम हो गया है॥१॥ रहाउ॥ गरीबों को कष्ट पहुँचा कर अपना पेट भरते हैं, परन्तु ऐसी दौलत भी अंततः साथ छोड़ जाती है। इस तरह उम्र भर पाप करते-करते पछताते हैं, मगर पाप-धन का कभी साथ नहीं छोड़ते॥१॥ निंदक को यमदूत आकर मार देता है और सिर से पटकता है। हे नानक! व्यक्ति अपने पापों की कटार अपने ऊपर मारता है और अपने मन को चोटिल करता है॥२॥८२॥१०५॥

सारग महला ५ ॥ टूटी निंदक की अध बीच ॥ जन का राखा आपि सुआमी बेमुख कउ आइ पहूची मीच ॥ १ ॥ रहाउ ॥ उस का कहिआ कोइ न सुणई कही न बैसणु पावै ॥ ईहां दुखु आगै नरकु भुंचै बहु जोनी भरमावै ॥ १ ॥ प्रगटु भइआ खंडी ब्रहमंडी कीता अपणा पाइआ ॥ नानक सरणि निरभउ करते की अनद मंगल गुण गाइआ ॥ २ ॥ ८३ ॥ १०६ ॥

निंदक लोगों की अधबीच में ही जीवन डोर टूट जाती है। भक्तों को बचाने वाला स्वयं मालिक है, परन्तु विमुख जीव के पास मौत आ पहुँचती है॥१॥ रहाउ॥ उसकी फरियाद कोई नहीं सुनता और कहीं भी वह आसरा नहीं पाता। यहाँ दुखी रहता है, आगे नरक भोगता है, इस प्रकार अनेक योनियों में भटकता है॥१॥ ऐसा व्यक्ति दुनिया भर में मशहूर हो जाता है और अपने किए कर्मों का ही फल पाता है। हे नानक! बिना किसी डर के स्रष्टा की शरण में आओ और आनंद मंगल से उसका गुणानुवाद करो॥२॥८३॥१०६॥

सारग महला ५ ॥ त्रिसना चलत बहु परकारि ॥ पूरन होत न कतहु बातहि अंति परती हारि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सांति सूख न सहजु उपजै इहै इसु बिउहारि ॥ आप पर का कछु न जानै काम क्रोधहि जारि ॥ १ ॥ संसार सागरु दुखि बिआपिओ दास लेवहु तारि ॥ चरन कमल सरणाइ नानक सद सदा बलिहारि ॥ २ ॥ ८४ ॥ १०७ ॥

तृष्णा बहुत प्रकार से चलती है, मगर यह कभी पूरी नहीं होती और अन्त में प्राणी हार जाता है॥ १॥ रहाउ॥ दरअसल इसका यही व्यवहार है कि इसकी वजह से मन में सुख, शान्ति एवं आनंद उत्पन्न नही होता। व्यक्ति काम, क्रोध की अग्नि में जलता रहता है और इसे अपने अथवा पराए की भी जानकारी नहीं होती॥ १॥ हे प्रभु! संसार-सागर के दुखों में लीन दास को पार उतार लो। नानक तेरे चरण-कमल की शरण में है और सदैव तुझ पर बलिहारी जाता है॥ २॥ ८४॥ १०७॥

सारग महला ५ ॥ रे पापी तै कवन की मति लीन ॥ निमख घरी न सिमरि सुआमी जीउ पिंडु जिनि दीन ॥ १ ॥ रहाउ ॥ खात पीवत सवंत सुखीआ नामु सिमरत खीन ॥ गरभ उदर बिललाट करता तहां होवत दीन ॥ १ ॥ महा माद बिकार बाधा अनिक जोनि भ्रमीन ॥ गोबिंद बिसरे कवन दुख गनीअहि सुखु नानक हरि पद चीन्ह ॥ २ ॥ ८५ ॥ १०८ ॥

अरे पापी! तूने किस की शिक्षा ली है। जिसने प्राण-शरीर सब दिया है, उस मालिक का पल भर भजन नहीं करते॥ १॥ रहाउ॥ खाना-पीना, सोना तूने सुख बना लिया है परन्तु ईश्वर का नाम-स्मरण करने में तकलीफ होती है। माँ के पेट में तू प्रार्थना करता फिरता था और वहाँ दीन बना हुआ था॥ १॥ जीव मोह-माया के नशे और विकारों में फँसकर अनेक योनियों में घूमता है। ईश्वर को भूलने से दुखों की गिनती भी संभव नहीं, हे नानक! परमेश्वर के चरणों को जानने से परम सुख मिलता है॥ २॥ ८५॥ १०८॥

सारग महला ५ ॥ माई री चरनह ओट गही ॥ दरसनु पेखि मेरा मनु मोहिओ दुरमति जात बही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अगह अगाधि ऊच अबिनासी कीमति जात न कही ॥ जलि थलि पेखि पेखि मनु बिगसिओ पूरि रहिओ स्रब मही ॥ १ ॥ दीन दइआल प्रीतम मनमोहन मिलि साधह कीनो सही ॥ सिमरि सिमरि जीवत हरि नानक जम की भीर न फही ॥ २ ॥ ८६ ॥ १०९ ॥

हे माई! मैंने हरि-चरणों का आसरा लिया है। उसके दर्शन करके मेरा मन मोहित हो गया है और खोटी बुद्धि समाप्त हो गई है॥ १॥ रहाउ॥ वह अगम्य, असीम, सर्वोच्च एवं अनश्वर है, उसका मूल्यांकन नहीं किया जा सकता। जल, भूमि में हरि को देखकर मन खिल उठा है, वह सब में पूर्ण रूप से व्याप्त है॥ १॥ दीनदयाल प्रियतम परमेश्वर को साधु पुरुषों में अनुभव किया जाता है। हे नानक! ईश्वर का सुमिरन करने से जीवन मिलता है, इस तरह मौत की पीड़ा में नहीं आना पड़ता॥ २॥ ८६॥ १०९॥

सारग महला ५ ॥ माई री मनु मेरो मतवारो ॥ पेखि दइआल अनद सुख पूरन हरि रसि रपिओ खुमारो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ निरमल भए ऊजल जसु गावत बहुरि न होवत कारो ॥ चरन कमल सिउ डोरी राची भेटिओ पुरखु अपारो ॥ १ ॥ करु गहि लीने सरबसु दीने दीपक भइओ उजारो ॥ नानक नामि रसिक बैरागी कुलह समूहां तारो ॥ २ ॥ ८७ ॥ ११० ॥

हे माँ! मेरा मन मतवाला हो गया है। दयालु हरि को देखकर आनंद एवं सुख की प्राप्ति हुई है और हरिनाम रस की खुमारी छा गई है॥ १॥ रहाउ॥ परमात्मा के पावन यशोगान से मन निर्मल हो गया है, अब पुनः मलिन नहीं होता। उसके चरण-कमल से डोरी लगी है और उस परमपुरुष से ही साक्षात्कार हुआ है॥ १॥ उसने हमारा हाथ पकड़ा है, सब कुछ दे दिया है और ज्ञान-दीपक से उजाला कर दिया है। नानक का कथन है कि हरि-नाम रस में वैराग्यवान प्राणी अपनी समस्त वंशावलि को पार उतार देता है॥ २॥ ८७॥ ११०॥

सारग महला ५ ॥ माई री आन सिमरि मरि जांहि ॥ तिआगि गोबिदु जीअन को दाता माइआ संगि लपटाहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नामु बिसारि चलहि अन मारगि नरक घोर महि पाहि ॥ अनिक सजांई गणत न आवै गरभै गरभि भ्रमाहि ॥ १ ॥ से धनवंते से पतिवंते हरि की सरणि समाहि ॥ गुर प्रसादि नानक जगु जीतिओ बहुरि न आवहि जांहि ॥ २ ॥ ८८ ॥ १११ ॥

हे माँ ! प्रभु के सिवा अन्य को याद करना मृत्यु समान है। जीवों को देने वाले परमेश्वर को त्याग कर मनुष्य माया के संग लिपटा रहता है॥१॥ रहाउ॥ वह प्रभु नाम को भुलाकर कुपथ पर चलता है, अन्ततः घोर नरक में पड़ता है। वह इतनी सजा भोगता है, जिसकी गणना नहीं की जा सकती और वह गर्भ योनियों में ही भटकता है॥१॥ वही धनवान् तथा इज्जतदार है, जो परमात्मा की शरण में आता है। हे नानक ! गुरु की कृपा से वह जगत को जीत लेता है और जन्म-मरण से मुक्त हो जाता है॥२॥८८॥१११॥

सारग महला ५ ॥ हरि काटी कुटिलता कुठारि ॥ भ्रम बन दहन भए खिन भीतरि राम नाम परहारि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काम क्रोध निंदा परहरीआ काढे साधू कै संगि मारि ॥ जनमु पदारथु गुरमुखि जीतिआ बहुरि न जूऐ हारि ॥ १ ॥ आठ पहर प्रभ के गुण गावह पूरन सबदि बीचारि ॥ नानक दासनि दासु जनु तेरा पुनह पुनह नमसकारि ॥ २ ॥ ८९ ॥ ११२ ॥

ईश्वर ने हमारी कुटिलता को कुल्हाड़ी से काट दिया है। हम भ्रम के वन में जल रहे थे, जिसे राम नाम ने पल में ठण्डा कर दिया है॥१॥रहाउ ॥ साधु पुरुषों की संगत में काम, क्रोध, निन्दा को मारकर निकाल दिया है। गुरु के सान्निध्य में मानव-जीवन को जीत लिया है और पुनः जुए में नहीं हारता॥१॥ पूर्ण शब्द के चिन्तन द्वारा आठ प्रहर मैं प्रभु का गुणगान करता हूँ। हे प्रभु ! नानक तेरे दासों का दास है और बार-बार तुझे प्रणाम करता है॥२॥८९॥११२॥

सारग महला ५ ॥ पोथी परमेसर का थानु ॥ साधसंगि गावहि गुण गोबिंद पूरन ब्रहम गिआनु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साधिक सिध सगल मुनि लोचहि बिरले लागै धिआनु ॥ जिसहि क्रिपालु होइ मेरा सुआमी पूरन ता को कामु ॥ १ ॥ जा कै रिदै वसै भै भंजनु तिसु जानै सगल जहानु ॥ खिनु पलु बिसरु नही मेरे करते इहु नानकु मांगै दानु ॥ २ ॥ ९० ॥ ११३ ॥

पावन आदि ग्रंथ में परमेश्वर का ही आवास है। साधु-पुरुष मिलकर प्रभु का गुणगान करते हैं और उनको पूर्ण ब्रह्म-ज्ञान की प्राप्ति होती है॥१॥ रहाउ॥ साधक, सिद्ध, सभी मुनिजन आकांक्षा करते हैं, पर विरले का ही ध्यान लगता है। जिस पर मेरा स्वामी कृपालु होता है, उसकी हर कामना पूर्ण होती है॥१॥ जिसके हृदय में भयभंजन परमेश्वर बस जाता है, उसे समूचा संसार जानता है। हे मेरे प्रभु ! नानक यही वर चाहता है कि तू पल भर भी भूल मत जाना॥२॥९०॥११३॥

सारग महला ५ ॥ वूठा सरब थाई मेहु ॥ अनद मंगल गाउ हरि जसु पूरन प्रगटिओ नेहु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चारि कुंट दह दिसि जल निधि ऊन थाउ न केहु ॥ क्रिपा निधि गोबिंद पूरन जीअ दानु सभ देहु ॥ १ ॥ सति सति हरि सति सुआमी सति साधसंगेहु ॥ सति ते जन जिन परतीति उपजी नानक नह भरमेहु ॥ २ ॥ ९१ ॥ ११४ ॥

हर जगह पर कृपा की बारिश हुई है। आनंद-मंगल से हरि का यश गाओ, उसका प्रेम चारों

ओर प्रगट हो गया है॥१॥ रहाउ॥ दसों दिशाओं, पूर्व-पश्चिम, उत्तर-दक्षिण सबमें प्रेम का सागर ईश्वर विद्यमान है, उसके बिना कोई स्थान नहीं। कृपानिधि पूर्ण परमेश्वर सब को देता रहता है॥१॥ ईश्वर सत्य है, शाश्वत-स्वरूप है और साधुओं की संगत भी सत्य है। हे नानक! जिन लोगों के मन में सत्य पर पूर्ण निष्ठा होती है, वे कभी नहीं भटकते॥२॥६१॥११४॥

सारग महला ५ ॥ गोबिद जीउ तू मेरे प्रान अधार ॥ साजन मीत सहाई तुम ही तू मेरो परवार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करु मसतकि धारिओ मेरै माथै साधसंगि गुण गाए ॥ तुमरी क्रिपा ते सभ फल पाए रसकि राम नाम धिआए ॥ १ ॥ अबिचल नीव धराई सतिगुरि कबहू डोलत नाही ॥ गुर नानक जब भए दइआरा सरब सुखा निधि पांही ॥ २ ॥ ६२ ॥ ११५ ॥

हे गोविन्द! तू मेरे प्राणों का आसरा है। तू ही मेरा साजन, मित्र एवं मददगार है और तू ही मेरा परिवार है॥१॥ रहाउ॥ तूने मेरे माथे पर अपना हाथ रखा तो साधुओं के संग तेरे ही गुण गाए। तुम्हारी कृपा से सभी फल प्राप्त हुए हैं और आनंदपूर्वक तेरे नाम का भजन किया है॥१॥ सच्चे गुरु ने भक्ति की अटल नींव स्थापित की है, अब मन कभी नहीं डोलता। हे नानक! जब गुरु परमेश्वर दयालु हो गया तो सर्व सुखों के भण्डार पा लिए॥२॥६२॥११५॥

सारग महला ५ ॥ निबही नाम की सचु खेप ॥ लाभु हरि गुण गाइ निधि धनु बिखै माहि अलेप ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जीअ जंत सगल संतोखे आपना प्रभु धिआइ ॥ रतन जनमु अपार जीतिओ बहुड़ि जोनि न पाइ ॥ १ ॥ भए क्रिपाल दइआल गोबिद भइआ साधू संगु ॥ हरि चरन रासि नानक पाई लगा प्रभ सिउ रंगु ॥ २ ॥ ६३ ॥ ११६ ॥

ईश्वर के नाम का सच्चा व्यवसाय ही निभने वाला है। ईश्वर के गुणानुवाद से सुखों का लाभ होता है और विकारों से निर्लिप्त रहा जाता है॥१ ॥रहाउ॥ अपने प्रभु का भजन करके सभी जीवों को संतोष प्राप्त हुआ है। उन्होंने अपना अमूल्य जीवन जीत लिया है और योनि-चक्र से मुक्ति पा गए हैं॥१॥ जब दयालु प्रभु कृपा करता है तो साधु पुरुषों की संगत मिल जाती है। हे नानक! फिर हरि-चरणों की राशि प्राप्त हो जाती है और प्रभु से ही रंग लगा रहता है॥२॥ ६३॥११६॥

सारग महला ५ ॥ माई री पेखि रही बिसमाद ॥ अनहद धुनी मेरा मनु मोहिओ अचरज ता के स्वाद ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मात पिता बंधप है सोई मनि हरि को अहिलाद ॥ साधसंगि गाए गुन गोबिंद बिनसिओ सभु परमाद ॥ १ ॥ डोरी लपटि रही चरनह संगि भ्रम भै सगले खाद ॥ एकु अधारु नानक जन कीआ बहुरि न जोनि भ्रमाद ॥ २ ॥ ६४ ॥ ११७ ॥

हे माँ! प्रभु का कौतुक देखकर आश्चर्यचकित हो गई हूँ। मेरा मन अनहद धुन से मोहित हो गया है और उसका आनंद अद्भुत है॥१॥ रहाउ॥ ईश्वर ही मेरा माता-पिता एवं बंधु है और मन को उसी से अटूट प्रेम है। साधु पुरुषों के साथ गोविंद के गुण गाए हैं, जिससे सभी भूलें नष्ट हो गई हैं॥१॥ मेरी डोरी उसके चरणों के साथ लिपट गई है और सभी भ्रम भय दूर हो गए हैं। हे नानक! दास ने एक ईश्वर को आसरा बना लिया है और अब वह पुनः योनियों के चक्र से छूट गया है॥२॥६४॥११७॥

सारग महला ५ ॥ माई री माती चरण समूह ॥ एकसु बिनु हउ आन न जानउ दुतीआ भाउ सभ लूह ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तिआगि गोपाल अवर जो करणा ते बिखिआ के खूह ॥ दरस पिआस मेरा मनु

मोहिओ काढी नरक ते धूह ॥ १ ॥ संत प्रसादि मिलिओ सुखदाता बिनसी हउमै हूह ॥ राम रंगि राते दास नानक मउलिओ मनु तनु जूह ॥ २ ॥ ९५ ॥ ११८ ॥

हे माँ ! प्रभु के चरणों में लीन हूँ। एक प्रभु के बिना अन्य को नहीं जानती और सब द्वैतभाव मिट गया है॥१॥ रहाउ॥ ईश्वर वंदना को त्यागकर अन्य की अर्चना करना तो विषय-विकारों के कूप में गिरना है। उसके दर्शनों की प्यास ने मेरा मन मोह लिया है और घोर नरक से निकाल लिया है॥१॥ संतों की कृपा से सुख देने वाला प्रभु मिला है और अहम्-भावना नष्ट हो गई है। प्रभु रंग में लीन दास नानक का मन तन खिल उठा है॥२॥९५॥११८॥

सारग महला ५ ॥ बिनसे काच के बिउहार ॥ राम भजु मिलि साधसंगति इहै जग महि सार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ईत ऊत न डोलि कतहू नामु हिरदै धारि ॥ गुर चरन बोहिथ मिलिओ भागी उतरिओ संसार ॥ १ ॥ जलि थलि महीअलि पूरि रहिओ सरब नाथ अपार ॥ हरि नामु अंम्रितु पीउ नानक आन रस सभि खार ॥ २ ॥ ९६ ॥ ११९ ॥

हे भाई ! कच्चे रीति रिवाज, व्यवहार सब नाशवान हैं। साधू-महात्मा की संगत में परमात्मा का भजन करो; यही जगत में श्रेष्ठतम है॥१॥ रहाउ॥ प्रभु-नाम हृदय में धारण कर लो, इधर उधर कदापि नहीं डोल सकोगे। जिस भाग्यशाली को गुरु-चरण रूपी जहाज मिल जाता है, वह संसार-सागर से पार उतर जाता है॥१॥ जल, धरती, आकाश में सबका मालिक ही विद्यमान है। नानक अनुरोध करते हैं, हे भाई ! हरिनामामृत पान करो, क्योंकि अन्य सभी रस फीके हैं॥२॥९६॥११९॥

सारग महला ५ ॥ ता ते करण पलाह करे ॥ महा बिकार मोह मद मातौ सिमरत नाहि हरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साधसंगि जपते नाराइण तिन के दोख जरे ॥ सफल देह धंनि ओइ जनमे प्रभ कै संगि रले ॥ १ ॥ चारि पदारथ असट दसा सिधि सभ ऊपरि साध भले ॥ नानक दास धूरि जन बांछै उधरहि लागि पले ॥ २ ॥ ९७ ॥ १२० ॥

मनुष्य तो ही रोता-चिल्लाता है, क्योंकि वह महा विकारों तथा मोह के नशे में मस्त रहता है और परमात्मा का भजन नहीं करता॥१॥ रहाउ॥ जो साधुजनों के साथ परमात्मा का जाप करते हैं, उनके पाप-दोष दूर हो जाते हैं। उनका शरीर और जन्म सफल एवं धन्य है, जो प्रभु के साथ मिले रहते हैं॥१॥ भले साधुजन तो काम, क्रोध, अर्थ, धर्म, मोक्ष एवं अठारह सिद्धियों से भी ऊपर हैं। दास नानक उनकी चरण-धूल की आकांक्षा करता है और उनके सान्निध्य में मुक्ति का अभिलाषी है॥२॥९७॥१२०॥

सारग महला ५ ॥ हरि के नाम के जन कांखी ॥ मनि तनि बचनि एही सुखु चाहत प्रभ दरसु देखहि कब आखी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तू बेअंतु पारब्रहम सुआमी गति तेरी जाइ न लाखी ॥ चरन कमल प्रीति मनु बेधिआ करि सरबसु अंतरि राखी ॥ १ ॥ बेद पुरान सिम्रिति साधू जन इह बाणी रसना भाखी ॥ जपि राम नामु नानक निसतरीऐ होरु दुतीआ बिरथी साखी ॥ २ ॥ ९८ ॥ १२१ ॥

हरि-भक्त हरिनाम की अभिलाषा करते हैं। वे मन, तन, वचन से केवल यही सुख चाहते हैं कि प्रभु के दर्शन कब होंगे॥१॥ रहाउ॥ हे परब्रह्म स्वामी ! तू बे-अन्त है, तेरी कीर्ति बताई नहीं जा सकती। मेरा मन तेरे चरण-कमल के प्रेम में बिंध गया है और इसे सर्वस्व मानकर अन्तर्मन में रखा हुआ है॥१॥ वेद, पुराण, स्मृतियों एवं साधुजनों ने अपनी जीभ से यही बात बताई है

कि राम नाम का जाप कर मुक्ति पा लो। नानक फुरमाते हैं कि इसके अतिरिक्त अन्य सब बातें बेकार हैं॥ २॥ ६८॥ १२१॥

सारग महला ५ ॥ माखी राम की तू माखी ॥ जह दुरगंध तहा तू बैसहि महा बिखिआ मद चाखी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कितहि असथानि तू टिकनु न पावहि इह बिधि देखी आखी ॥ संता बिनु तै कोइ न छाडिआ संत परे गोबिद की पाखी ॥ १ ॥ जीअ जंत सगले तै मोहे बिनु संता किनै न लाखी ॥ नानक दासु हरि कीरतनि राता सबदु सुरति सचु साखी ॥ २ ॥ ६६ ॥ १२२ ॥

हे माया! दरअसल तू परमात्मा की मक्खी है। जहाँ दुर्गन्ध होती है, वहाँ तू बैठ जाती है और महा विकारों को चखती रहती है॥१॥ रहाउ॥ इन आँखों से मैंने यही देखा है कि तू किसी भी स्थान पर टिक नहीं पाती। संतों के अलावा तूने किसी को नहीं छोड़ा, संत पुरुष तो गोविन्द की भक्ति में तल्लीन रहते हैं॥१॥ संसार के सब जीवों को तूने मोह लिया है और संतों के अतिरिक्त तेरा भेद कोई समझ नहीं पाया। दास नानक ईश्वर के कीर्तन में लीन है और उसने सुरति में शब्द को टिकाकर परम सत्य को साक्षात् पाया है॥२॥ ६६॥ १२२॥

सारग महला ५ ॥ माई री काटी जम की फास ॥ हरि हरि जपत सरब सुख पाए बीचे ग्रसत उदास ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करि किरपा लीने करि अपुने उपजी दरस पिआस ॥ संतसंगि मिलि हरि गुण गाए बिनसी दुतीआ आस ॥ १ ॥ महा उदिआन अटवी ते काढे मारगु संत कहिओ ॥ देखत दरसु पाप सभि नासे हरि नानक रतनु लहिओ ॥ २ ॥ १०० ॥ १२३ ॥

अरी माँ! मैंने मौत का फंदा काट दिया है, गृहस्थ जीवन में विरक्त रहकर ईश्वर का नाम जपकर सर्व सुख पा लिए हैं॥१॥ रहाउ॥ ईश्वर ने कृपा करके अपना बना लिया है, अतः मन में उसके दर्शनों की प्यास उत्पन्न हो गई है। संत पुरुषों की संगत में परमात्मा का गुणगान किया, जिससे अन्य सब आशाएँ समाप्त हो गई हैं॥१॥ संतों ने जग रूपी भयानक उजाड़ से निकालकर सच्चा मार्ग बतलाया है। नानक फुरमाते हैं कि संतों के दर्शन से सभी पाप नष्ट हो गए हैं और प्रभु रूपी रत्न पा लिया है॥२॥ १००॥ १२३॥

सारग महला ५ ॥ माई री अरिओ प्रेम की खोरि ॥ दरसन रुचित पिआस मनि सुंदर सकत न कोई तोरि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रान मान पति पित सुत बंधप हरि सरबसु धन मोर ॥ ध्रिगु सरीरु असत बिसटा क्रिम बिनु हरि जानत होर ॥ १ ॥ भइओ क्रिपाल दीन दुख भंजनु परा पूरबला जोर ॥ नानक सरणि क्रिपा निधि सागर बिनसिओ आन निहोर ॥ २ ॥ १०१ ॥ १२४ ॥

हे माई! मेरा मन प्रेम की खुमारी में निमग्न है। मन को सुन्दर प्रभु-दर्शनों की तीव्र लालसा लगी हुई है, जिसे कोई तोड़ नहीं सकता॥१॥ रहाउ॥ ईश्वर ही मेरा सर्वस्व है, वही मेरा प्राण, मान-प्रतिष्ठा, पिता, पुत्र, बंधु इत्यादि धन है। जो परमेश्वर के अतिरिक्त अन्य को मानता है, हड्डियों, विष्ठा एवं कीड़ों से भरा उसका शरीर धिक्कार योग्य है॥१॥ दीनों के दुख नाश करने वाला पूर्व जन्म के कर्म फल के कारण हम पर कृपालु हो गया है। नानक का कथन है कि मैंने कृपानिधि, प्रेम के सागर प्रभु की शरण ली है, जिससे लोगों की निर्भरता समाप्त हो गई है॥ २॥ १०१॥ १२४॥

सारग महला ५ ॥ नीकी राम की धुनि सोइ ॥ चरन कमल अनूप सुआमी जपत साधू होइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चितवता गोपाल दरसन कलमला कढु धोइ ॥ जनम मरन बिकार अंकुर हरि काटि छाडे खोइ ॥ १ ॥ परा पूरबि जिसहि लिखिआ बिरला पाए कोइ ॥ रवण गुण गोपाल करते नानका सचु जोइ ॥ २ ॥ १०२ ॥ १२५ ॥

राम भजन की सुरीली ध्वनि भली है। ईश्वर के अनुपम चरणों का जाप करने से जीव साधू कहलाता है॥१॥ रहाउ॥ परमात्मा के दर्शन का चिन्तन कर वह पापों को धो डालता है। वह जन्म-मरण एवं विकारों के बीज को काट देता है॥१॥ जिसके भाग्य में पूर्व से लिखा होता है, ऐसा कोई विरला ही भगवान को पाता है। हे नानक! वह तो कर्ता परमेश्वर के गुण गाते हुए उस परम सत्य को ही खोज रहे हैं॥२॥१०२॥ १२५॥

सारग महला ५ ॥ हरि के नाम की मति सार ॥ हरि बिसारि जु आन राचहि मिथन सभ बिसथार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साधसंगमि भजु सुआमी पाप होवत खार ॥ चरनारबिंद बसाइ हिरदै बहुरि जनम न मार ॥ १ ॥ करि अनुग्रह राखि लीने एक नाम अधार ॥ दिन रैनि सिमरत सदा नानक मुख ऊजल दरबारि ॥ २ ॥ १०३ ॥ १२६ ॥

हरि-नामोच्चारण करने वाले जिज्ञासु की बुद्धि उत्तम होती है। जो हरि को भुलाकर अन्य कर्मकाण्ड में तल्लीन होता है, उसका किया सब झूठा है॥१॥ रहाउ॥ साधु पुरुषों की सभा में भगवान का भजन करो, सब पाप नष्ट हो जाते हैं। प्रभु-चरणों को हृदय में बसाने से जन्म-मरण से मुक्ति हो जाती है॥१॥ एकमात्र नामोच्चारण के आधार पर प्रभु ने कृपा कर हमें बचा लिया है। नानक कथन करते हैं कि दिन-रात परमात्मा का स्मरण करो, इसके फलस्वरूप ईश्वर के दरबार में सम्मान प्राप्त होता है॥२॥१०३॥१२६॥

सारग महला ५ ॥ मानी तूं राम कै दरि मानी ॥ साधसंगि मिलि हरि गुन गाए बिनसी सभ अभिमानी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ धारि अनुग्रहु अपुनी करि लीनी गुरमुखि पूर गिआनी ॥ सरब सूख आनंद घनेरे ठाकुर दरस धिआनी ॥ १ ॥ निकटि वरतनि सा सदा सुहागनि दह दिस साई जानी ॥ प्रिअ रंग रंगि रती नाराइन नानक तिसु कुरबानी ॥ २ ॥ १०४ ॥ १२७ ॥

हे जीव-स्त्री! तुझे ईश्वर के दरबार में मान-प्रतिष्ठा प्राप्त हुई है, साधुजनों के साथ मिलकर भगवान का गुण-गान किया, जिससे अभिमान समाप्त हो गया॥१॥ रहाउ॥ प्रभु ने कृपा कर अपना बना लिया और गुरु से पूर्ण ज्ञान की प्राप्ति हुई। ठाकुर जी के दर्शनों एवं ध्यान में सर्व सुख एवं आनंद ही आनंद प्राप्त होता है॥१॥ वही सदा सुहागिन कहलाती है, जो प्रभु के आसपास रहती है और दसों दिशाओं में मशहूर होती है। नानक उस जीव-स्त्री पर कुर्बान जाता है, जो प्रियतम नारायण के रंग में लीन रहती है॥२॥१०४॥१२७॥

सारग महला ५ ॥ तुअ चरन आसरो ईस ॥ तुमहि पछानू साकु तुमहि संगि राखनहार तुमै जगदीस ॥ रहाउ ॥ तू हमरो हम तुमरे कहीऐ इत उत तुम ही राखे ॥ तू बेअंतु अपरंपरु सुआमी गुर किरपा कोई लाखै ॥ १ ॥ बिनु बकने बिनु कहन कहावन अंतरजामी जानै ॥ जा कउ मेलि लए प्रभु नानकु से जन दरगह माने ॥ २ ॥ १०५ ॥ १२८ ॥

हे ईश्वर ! मुझे तुम्हारे चरणों का आसरा है। मैं तुझे ही अपना परिचित, रिश्तेरदार एवं साथी मानता हूँ, तू ही मेरा रखवाला है, जगत का ईश्वर है॥ रहाउ॥ तू हमारा है, हम तुम्हारे कहलाते हैं, लोक-परलोक तू ही हमारी रक्षा करता है। तू बेअन्त है, अपरंपार है, केवल गुरु की कृपा से तुझे समझा जा सकता है॥१॥ हे अन्तर्यामी ! तू बिना बोले, हमारे बिना कहने-कहलवाने पर भी मन की हर भावना को जानता है। नानक फुरमाते हैं कि जिसे प्रभु अपने चरणों में मिला लेता है, वही उसके दरबार में सम्मान प्राप्त करता है॥२॥१०५॥१२८॥

सारंग महला ५ चउपदे घरु ५ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

हरि भजि आन करम बिकार ॥ मान मोहु न बुझत त्रिसना काल ग्रस संसार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ खात पीवत हसत सोवत अउध बिती असार ॥ नरक उदरि भ्रमंत जलतो जमहि कीनी सार ॥ १ ॥ पर द्रोह करत बिकार निंदा पाप रत कर झार ॥ बिना सतिगुर बूझ नाही तम मोह महां अंधार ॥ २ ॥ बिखु ठगउरी खाइ मूठो चिति न सिरजनहार ॥ गोबिंद गुपत होइ रहिओ निआरो मातंग मति अहंकार ॥ ३ ॥ करि क्रिपा प्रभ संत राखे चरन कमल अधार ॥ कर जोरि नानकु सरनि आइओ गोपाल पुरख अपार ॥ ४ ॥ १ ॥ १२९ ॥

हे लोगो ! भगवान का भजन कर लो, क्योंकि अन्य कर्म विकारयुक्त एवं बेकार हैं। मान-मोह में तृष्णा कभी नहीं बुझती और काल संसार को खा लेता है॥१॥ रहाउ॥ खाते-पीते, हँसते-सोते पूरी जिंदगी बेकार के कामों में व्यतीत हो जाती है। नरक रूपी पेट में भागदौड़ करते मनुष्य दुखों में जलता है और आखिरकार यम ही सजा देता है॥१॥ दूसरों से नफरत, द्रोह, विकार करते तथा निंदा एवं पाप में लीन रहकर मनुष्य हाथ झाड़ लेता है। सच्चे गुरु के बिना ज्ञान नहीं होता और मोह के महा अंधकार में पड़ा रहता है॥२॥ मनुष्य विषय-विकारों की ठगबूटी खाकर ठग जाता है परन्तु बनाने वाले को याद नहीं करता। वह हाथी की मानिंद बुद्धि के अहंकार में मस्त रहता है किन्तु अन्तर्मन में प्रच्छन्न रूप से व्याप्त ईश्वर को नहीं जानता॥३॥ प्रभु ने अपने चरण-कमल का आसरा देकर कृपा करके सज्जनों को बचाया है। नानक हाथ जोड़कर परमपुरुष परमेश्वर की शरण में आया है॥४॥१॥१२६॥

सारग महला ५ घरु ६ पड़ताल १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

सुभ बचन बोलि गुन अमोल ॥ किंकरी बिकार ॥ देखु री बीचार ॥ गुर सबदु धिआइ महलु पाइ ॥ हरि संगि रंग करती महा केल ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुपन री संसारु ॥ मिथनी बिसथारु ॥ सखी काइ मोहि मोहिली प्रिअ प्रीति रिदै मेल ॥ १ ॥ सरब री प्रीति पिआरु ॥ प्रभु सदा री दइआरु ॥ कांएं आन आन रुचीऐ ॥ हरि संगि संगि खचीऐ ॥ जउ साधसंग पाए ॥ कहु नानक हरि धिआए ॥ अब रहे जमहि मेल ॥ २ ॥ १ ॥ १३० ॥

हर पल शुभ वचन बोलो, यही अमूल्य गुण है। बुरे काम मत करो। हे जीव-स्त्री ! भलीभांति चिन्तन कर, शब्द-गुरु का ध्यान करने से मंजिल (प्रभु) प्राप्त होती है। वहाँ प्रभु के साथ आनंद-क्रीड़ा करोगी॥१॥ रहाउ॥ यह संसार एक सपना है, अन्य सब विस्तार झूठा है। हे सखी ! क्यों मोह-माया में मोहित होती हो, हृदय में प्रियतम का प्रेम बसा लो॥१॥ प्रभु सब से प्रेम करता है, वह सदा दयालु है, फिर भला अन्य कार्यों में क्योंकर दिलचस्पी रखती हो ? प्रभु की प्रेम-भक्ति

में तल्लीन रहो। हे नानक ! जब साधु पुरुषों का साथ प्राप्त होता है तो ही जीव परमात्मा का ध्यान करता है, तब यमदूतों से मिलाप नहीं होता॥ २॥ १॥ १३०॥

सारग महला ५ ॥ कंचना बहु दत करा ॥ भूमि दानु अरपि धरा ॥ मन अनिक सोच पवित्र करत ॥ नाही रे नाम तुलि मन चरन कमल लागे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चारि बेद जिहव भने ॥ दस असट खसट स्रवन सुने ॥ नही तुलि गोबिद नाम धुने ॥ मन चरन कमल लागे ॥ १ ॥ बरत संधि सोच चार ॥ क्रिआ कुंटि निराहार ॥ अपरस करत पाकसार ॥ निवली करम बहु बिसथार ॥ धूप दीप करते हरि नाम तुलि न लागे ॥ राम दइआर सुनि दीन बेनती ॥ देहु दरसु नैन पेखउ जन नानक नाम मिसट लागे ॥ २ ॥ २ ॥ १३१ ॥

बहुत सारा सोना दान करना, भूमि दान में अर्पित करना, अनेक शुद्धता अपनाकर मन को पवित्र करना, इन सबके बावजूद ये कर्म हरिनाम की तुलना में नहीं आते, अतः मन को प्रभु-चरणों में लीन करना चाहिए॥ १॥ रहाउ॥ जिह्वा से चार वेदों का पाठ करना, अठारह पुराण तथा छः शास्त्रों को कानों से सुनना, ये भी गोविन्द नामोच्चारण की ध्वनि के तुल्य नहीं, मन को चरण-कमल में तल्लीन करना चाहिए॥ १॥ व्रत-उपवास, संध्या-आरती, चार तरह का शुद्धिकरण, निराहार तीर्थ-यात्रा एवं अस्पृष्ट रसोई करना, निउली कर्म का बहुत सारा विस्तार, धूप-दीप भी ईश्वर के नाम की तुलना में नहीं आते। हे दयालु राम ! दीन की विनती सुनो; दर्शन दो, आँखों से तुझे ही देखना चाहता हूँ। दास नानक को तेरा नाम ही मीठा लगता है॥ २॥ २॥ १३१॥

सारग महला ५ ॥ रामै राम राम जापि रमत राम सहाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संतन कै चरन लागे काम क्रोध लोभ तिआगे गुर गोपाल भए क्रिपाल लबधि अपनी पाई ॥ १ ॥ बिनसे भ्रम मोह अंध टूटे माइआ के बंध पूरन सरबत्र ठाकुर नह कोऊ बैराई ॥ सुआमी सुप्रसंन भए जनम मरन दोख गए संतन कै चरन लागि नानक गुन गाई ॥ २ ॥ ३ ॥ १३२ ॥

राम नाम का जाप करो, अंततः राम ही सहायता करने वाला है॥ १॥ रहाउ॥ संतों के चरणों में आने से काम, क्रोध, लोभ का त्याग होता है और गुरु परमेश्वर की कृपा से मनोकामना पूरी हो जाती है॥ १॥ भ्रम विनष्ट होता है, मोह का अंधेरा समाप्त होता है, माया के सब बन्धन टूट जाते हैं। फिर मालिक हर जगह पर विद्यमान लगता है और कोई शत्रु नहीं रहता। जब स्वामी प्रसन्न होता है तो जन्म-मरण का दोष दूर हो जाता है। हे नानक ! संतजनों के चरणों में लगकर मनुष्य भगवान का ही गुणगान करता है॥ २॥ ३॥ १३२॥

सारग महला ५ ॥ हरि हरे हरि मुखहु बोलि हरि हरे मनि धारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ स्रवन सुनन भगति करन अनिक पातिक पुनहचरन ॥ सरन परन साधू आन बानि बिसारे ॥ १ ॥ हरि चरन प्रीति नीत नीति पावना महि महा पुनीत ॥ सेवक भै दूरि करन कलिमल दोख जारे ॥ कहत मुकत सुनत मुकत रहत जनम रहते ॥ राम राम सार भूत नानक ततु बीचारे ॥ २ ॥ ४ ॥ १३३ ॥

मुख से हरि-हरि नाम गाओ, हरि को मन में बसा लो॥ १॥ रहाउ॥ कानों से हरि संकीर्तन को सुनना, हरि-भक्ति करना अनेक पापों का प्रायश्चित है। अन्य सब भुलाकर साधुओं की शरण में आना चाहिए॥ १॥ सर्वदा हरि के चरणों में प्रेम लगाना पावनों में भी महा पवित्र है। यह भक्तों के भय दूर करने वाला है, सब पाप दोष जलाने वाला है। जो हरिनाम जपते हैं, हरि भजन सुनते हैं, वे संसार के बन्धनों से मुक्त हो जाते हैं, उनकी जन्म-मरण से मुक्ति हो जाती है। नानक इसी तथ्य का विचार करते हैं कि राम नाम ही संसार का सार तत्व है॥ २॥ ४॥ १३३॥

सारग महला ५ ॥ नाम भगति मागु संत तिआगि सगल कामी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रीति लाइ हरि धिआइ गुन गोबिंद सदा गाइ ॥ हरि जन की रेन बांछु दैनहार सुआमी ॥ १ ॥ सरब कुसल सुख बिस्राम आनदा आनंद नाम जम की कछु नाहि त्रास सिमरि अंतरजामी ॥ एक सरन गोबिंद चरन संसार सगल ताप हरन ॥ नाव रूप साधसंग नानक पारगरामी ॥ २ ॥ ५ ॥ १३४ ॥

हे भक्तो ! सब अभिलाषाओं को छोड़कर नाम भक्ति ही मांगो॥ १॥ रहाउ॥ प्रेम लगाकर भगवान का ध्यान करो, सदैव गोविन्द का गुणगान करो, हरि-भक्तों की चरण-धूल की चाह करो, मालिक सब कुछ देने वाला है॥ १॥ हरिनाम सब कुशल, सुख एवं आनंद ही आनंद प्रदान करता है। अन्तर्यामी प्रभु का भजन करने से यम का दुख भी प्रभावित नहीं करता। ईश्वर की चरण-शरण संसार के दुख-रोगों का हरण करने वाली है। नानक का कथन है कि नाव रूपी साधुओं की संगत संसार-सागर से पार उतारने वाली है॥ २॥ ५॥ १३४॥

सारग महला ५ ॥ गुन लाल गावउ गुर देखे ॥ पंचा ते एकु छूटा जउ साधसंगि पग रउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ द्रिसटउ कछु संगि न जाइ मानु तिआगि मोहा ॥ एकै हरि प्रीति लाइ मिलि साधसंगि सोहा ॥ १ ॥ पाइओ है गुण निधानु सगल आस पूरी ॥ नानक मनि अनंद भए गुरि बिखम गार्ह तोरी ॥ २ ॥ ६ ॥ १३५ ॥

गुरु को देखकर परमात्मा के गुण गाता हूँ। जब साधु पुरुषों से संगत हुई तो कामादिक पाँच विकारों से मुक्त हो गया॥ १॥ रहाउ॥ जो भी दृष्टिमान है, कुछ भी साथ नहीं जाता, इसलिए मोह-अभिमान को त्याग दो। केवल ईश्वर से प्रेम लगाओ और साधु-संगत में शोभा पाओ॥ १॥ गुणों का खजाना ईश्वर पाया तो मेरी सब आशाएँ पूरी हो गईं। नानक फुरमाते हैं कि गुरु ने बुराइयों के विषम गढ़ को तोड़ दिया है, जिससे मन में आनंद ही आनंद है॥ २॥ ६॥ १३५॥

सारग महला ५ ॥ मनि बिरागैगी ॥ खोजती दरसार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साधू संतन सेवि कै प्रिउ हीअरै धिआइओ ॥ आनंद रूपी पेखि कै हउ महलु पावउगी ॥ १ ॥ काम करी सभ तिआगि कै हउ सरणि परउगी ॥ नानक सुआमी गरि मिले हउ गुर मनावउगी ॥ २ ॥ ७ ॥ १३६ ॥

वैरागी मन हरि दर्शन ही खोजता है॥ १॥ रहाउ॥ साधु-संतों की सेवा में तल्लीन होकर हृदय में प्यारे प्रभु का ध्यान लगाया हुआ है। आनंद रूप प्रभु को देखकर उसका महल पाऊँगी॥ १॥ सब कामनाओं को छोड़कर उसकी शरण में पड़ी रहूँगी। हे नानक ! मैं गुरु को मनाऊँगी ताकि वह स्वामी से मिला दे॥ २॥ ७॥ १३६॥

सारग महला ५ ॥ ऐसी होइ परी ॥ जानते दइआर ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मातर पितर तिआगि कै मनु संतन पाहि बेचाइओ ॥ जाति जनम कुल खोईऐ हउ गावउ हरि हरी ॥ १ ॥ लोक कुटंब ते टूटीऐ प्रभ किरति किरति करी ॥ गुरि मोकउ उपदेसिआ नानक सेवि एक हरी ॥ २ ॥ ८ ॥ १३७ ॥

मेरी ऐसी दशा हो गई है, इसे दीनदयाल जानते हैं॥ १॥ रहाउ॥ माता-पिता को त्याग कर मैंने अपना मन संतजनों के पास बेच दिया है। जाति, जन्म, वंश इत्यादि खो कर भगवान के गुण गाती हूँ॥ १॥ लोक-लाज एवं परिवार से नाता तोड़कर प्रभु ने मुझे कृतार्थ कर दिया है। नानक फुरमाते हैं कि गुरु ने मुझे उपदेश दिया है कि केवल ईश्वर की उपासना करो॥ २॥ ८॥ १३७॥

सारग महला ५ ॥ लाल लाल मोहन गोपाल तू ॥ कीट हसति पाखाण जंत सरब मै प्रतिपाल तू ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नह दूरि पूरि हजूरि संगे ॥ सुंदर रसाल तू ॥ १ ॥ नह बरन बरन नह कुलह कुल ॥ नानक प्रभ किरपाल तू ॥ २ ॥ ६ ॥ १३८ ॥

हे प्यारे प्रभु ! तू सबका पालक है, कीट, हाथी, पत्थर एवं जीवों इत्यादि तू सबका पालन-पोषण करता है॥१॥ रहाउ॥ तू कहीं दूर नहीं, हमारे आसपास ही है। तू सुन्दर एवं रसीला है॥१॥ नानक का कथन है कि हे प्रभु ! वर्ण-जाति एवं कुल-वंश से तू रहित है, तू बड़ा रहमदिल है॥२॥६॥१३८॥

सारग मः ५ ॥ करत केल बिखै मेल चंद्र सूर मोहे ॥ उपजता बिकार दुंदर नउपरी झुनंतकार सुंदर अनिग भाउ करत फिरत बिनु गोपाल धोहे ॥ रहाउ ॥ तीनि भउने लपटाइ रही काच करमि न जात सही उनमत अंध धंध रचित जैसे महा सागर होहे ॥ १ ॥ उधरे हरि संत दास काटि दीनी जम की फास पतित पावन नामु जा को सिमरि नानक ओहे ॥ २ ॥ १० ॥ १३६ ॥ ३ ॥ १३ ॥ १५५ ॥

विषयों से जोड़ने वाली माया खेल करती है, इसने सूर्य एवं चन्द्रमा को भी मोहित किया हुआ है। इसकी पायल की सुन्दर झंकार से विकार पैदा होते हैं, यह अनेक प्रकार के हावभाव दिखाती है और ईश्वर के अतिरिक्त सबको धोखा देती है॥रहाउ॥ तीनों लोक माया में लिपटे हुए हैं और कर्मकाण्ड से इससे बचा नहीं जा सकता। दुनिया के लोग अन्धे धंधों में लीन हैं और महासागर की लहरों की तरह गोते खाते हैं॥१॥ ईश्वर के भक्तों की मुक्ति हो गई है और उनकी यम की फाँसी कट गई है। हे नानक ! जिसका नाम पतितों को पावन करने वाला है, उसी का भजन करो॥२॥१०॥१३६॥३॥१३॥१५५॥

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥ रागु सारंग महला ६ ॥ हरि बिनु तेरो को न सहाई ॥ कां की मात पिता सुत बनिता को काहू को भाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ धनु धरनी अरु संपति सगरी जो मानिओ अपनाई ॥ तन छूटै कछु संगि न चालै कहा ताहि लपटाई ॥ १ ॥ दीन दइआल सदा दुख भंजन ता सिउ रुचि न बढाई ॥ नानक कहत जगत सभ मिथिआ जिउ सुपना रैनाई ॥ २ ॥ १ ॥

हे मनुष्य ! भगवान के अलावा तेरा कोई सहायक नहीं। माता-पिता, पुत्र, पत्नी, भाई कौन किसका (सदा) हुआ है ?॥१॥ रहाउ॥ धन-दौलत, जमीन-जायदाद और सम्पत्ति जिसे तू अपना मान बैठा है। शरीर के छूटते ही इन में से कुछ साथ नहीं चलता, फिर क्यों इनसे लिपट रहा है॥१॥ ईश्वर दीनदयाल है, सदैव दुखों को दूर करने वाला है, लेकिन उसके साथ कोई दिलचस्पी नहीं बढ़ाई। नानक कहते हैं कि जैसे रात्रि का सपना है, वैसे ही समूचा जगत मिथ्या है॥२॥१॥

सारंग महला ६ ॥ कहा मन बिखिआ सिउ लपटाही ॥ या जग महि कोऊ रहनु न पावै इकि आवहि इकि जाही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कां को तनु धनु संपति कां की का सिउ नेहु लगाही ॥ जो दीसै सो सगल बिनासै जिउ बादर की छाही ॥ १ ॥ तजि अभिमानु सरणि संतन गहु मुकति होहि छिन माही ॥ जन नानक भगवंत भजन बिनु सुखु सुपनै भी नाही ॥ २ ॥ २ ॥

हे मन ! क्यों विषय-विकारों से लिपट रहा है। इस दुनिया में कोई सदा नहीं रहता, (मृत्यु अटल है, अतः) कोई आता है तो कोई जाता है॥१॥ रहाउ॥ यह तन, धन, संपति किसकी हुई है ? फिर क्यों इससे प्रेम लगा रहा है। जो कुछ दिखाई देता है, वह सब बादलों की छाया की

तरह नाशवान है॥१॥ अभिमान छोड़कर संतों की शरण लो, पल में मुक्ति प्राप्त होगी। नानक कथन करते हैं कि भगवान के भजन बिना सपने में भी सुख नसीब नहीं होता॥२॥२॥

सारंग महला ९ ॥ कहा नर अपनो जनमु गवावै ॥ माइआ मदि बिखिआ रसि रचिओ राम सरनि नही आवै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इहु संसारु सगल है सुपनो देखि कहा लोभावै ॥ जो उपजै सो सगल बिनासै रहनु न कोऊ पावै ॥ १ ॥ मिथिआ तनु साचो करि मानिओ इह बिधि आपु बंधावै ॥ जन नानक सोऊ जनु मुकता राम भजन चितु लावै ॥ २ ॥ ३ ॥

हे नर! क्यों अपना जन्म गंवा रहा है। तुम माया के नशे एवं विषयों के रस में लीन हो, परमात्मा की शरण में क्यों नहीं आते॥१॥ रहाउ॥ यह समूचा संसार सपने की तरह है, फिर इसे देखकर क्यों फिदा होते हो। जो भी उत्पन्न होता है, वह सब नष्ट हो जाता है, कोई भी यहाँ सदा नहीं रहता॥१॥ इस मिथ्या तन को तूने सच्चा मान लिया, इस तरीके से स्वयं ही झूठ में फँस गए हो। नानक का कथन है कि वही व्यक्ति संसार के बन्धनों से मुक्त होता है, जो परमात्मा के भजन में मन लगाता है॥२॥३॥

सारंग महला ९ ॥ मन करि कबहू न हरि गुन गाइओ ॥ बिखिआसकत रहिओ निसि बासुर कीनो अपनो भाइओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर उपदेसु सुनिओ नहि काननि पर दारा लपटाइओ ॥ पर निंदा कारनि बहु धावत समझिओ नह समझाइओ ॥ १ ॥ कहा कहउ मै अपुनी करनी जिह बिधि जनमु गवाइओ ॥ कहि नानक सभ अउगन मो महि राखि लेहु सरनाइओ ॥ २ ॥ ४ ॥ ३ ॥ १३ ॥ १३९ ॥ ४ ॥ १५९ ॥

हे मनुष्य! तूने मन लगाकर कभी ईश्वर का गुणगान नहीं किया। दिन-रात विषय-विकारों में आसक्त रहकर अपनी मनमर्जी करते रहे॥१॥ रहाउ॥ गुरु के उपदेश को कान लगाकर सुना नहीं और पराई नारी में ही लिपटे रहे। पराई निन्दा की वजह से बहुत भागदौड़ की परन्तु अच्छी बात समझाने पर भी समझ नहीं पाए॥१॥ मैं अपने कर्म किस तरह बताऊँ कि यह जन्म कैसे गंवा दिया है। नानक कहते हैं कि हे ईश्वर! मुझ में अवगुण ही अवगुण हैं, अपनी शरण में बचा लो॥२॥४॥३॥१३॥१३९॥४॥१५९॥

रागु सारग असटपदीआ महला १ घरु १ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

हरि बिनु किउ जीवा मेरी माई ॥ जै जगदीस तेरा जसु जाचउ मै हरि बिनु रहनु न जाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि की पिआस पिआसी कामनि देखउ रैनि सबाई ॥ स्रीधर नाथ मेरा मनु लीना प्रभु जानै पीर पराई ॥ १ ॥ गणत सरीरि पीर है हरि बिनु गुर सबदी हरि पांई ॥ होहु दइआल क्रिपा करि हरि जीउ हरि सिउ रहां समाई ॥ २ ॥ ऐसी रवत रवहु मन मेरे हरि चरणी चितु लाई ॥ बिसम भए गुण गाइ मनोहर निरभउ सहजि समाई ॥ ३ ॥ हिरदै नामु सदा धुनि निहचल घटै न कीमति पाई ॥ बिनु नावै सभु कोई निरधनु सतिगुरि बूझ बुझाई ॥ ४ ॥ प्रीतम प्रान भए सुनि सजनी दूत मुए बिखु खाई ॥ जब की उपजी तब की तैसी रंगुल भई मनि भाई ॥ ५ ॥ सहज समाधि सदा लिव हरि सिउ जीवां हरि गुन गाई ॥ गुर कै सबदि रता बैरागी निज घरि ताड़ी लाई ॥ ६ ॥ सुध रस नामु महा रसु मीठा निज घरि ततु गुसांईं ॥ तह ही मनु जह ही तै राखिआ ऐसी गुरमति पाई ॥ ७ ॥ सनक सनादि ब्रहमादि इंद्रादिक भगति रते बनि आई ॥ नानक हरि बिनु घरी न जीवां हरि का नामु वडाई ॥ ८ ॥ १ ॥

हे माँ! ईश्वर के बिना मेरा जीना संभव नहीं। हे जगदीश्वर! तेरी जय है। मैं तेरा ही यश चाहता हूँ, तेरे बिना मुझसे रहा नहीं जाता॥१॥ रहाउ॥ प्रभु-मिलन की प्यास में मैं प्यासी कामिनी रात भर उसी का रास्ता देखती हूँ। उस नाथ ने मेरा मन वश में कर लिया है और वह प्रभु ही मेरे दिल का दर्द जानता है॥१॥ प्रभु के बिना यह शरीर पीड़ा से भरा हुआ है और गुरु के उपदेश से ही प्रभु को पाया जाता है। हे प्रभु! दयालु होकर मुझ पर कृपा करो, ताकि तुझ में ही विलीन हो जाऊँ॥२॥ हे मेरे मन! यही कार्य करो कि परमात्मा के चरणों में चित लगा रहे। उसके मनोहर गुण गाकर हम आनंद से विस्मित हो गए और सहज स्वाभाविक प्रभु में लीन हो गए॥३॥ इस हृदय में सदा हरि-नाम की निश्चल ध्वनि बजती रहती है, जो न तो घटती है और इसकी महत्ता अवर्णनीय है। सच्चे गुरु ने भेद बताया है कि हरि-नाम के बिना प्रत्येक व्यक्ति निर्धन है॥४॥ हे सजनी! जरा सुनो; प्रियतम प्राण मेरे हो गए हैं और कामादिक विकार विष खाकर समाप्त हो गए हैं। जब से प्रेम उत्पन्न हुआ है, वह उतना ही है और मेरा मन उसके प्रेम में आसक्त है॥५॥ सहज स्वाभाविक मेरी परमात्मा से लगन लगी हुई है और उसके गुण गाकर जी रही हूँ। गुरु के उपदेश में लीन होकर वैराग्यवान हो गई हूँ और सच्चे घर में ही ध्यान लगाया हुआ है॥६॥ अमृतमय हरि-नाम ही मुझे मीठा महारस लगा है और अन्तर्मन में ही मालिक प्राप्त हो गया है। गुरु से ऐसी शिक्षा प्राप्त की कि जहाँ पर मन को टिकाया था, वहाँ पर ही टिका हुआ है॥७॥ सनक-सनंदन, ब्रह्मा, इन्द्र इत्यादि परमात्मा की भक्ति तें लीन रहकर सफल हुए। गुरु नानक फुरमाते हैं कि परमेश्वर के बिना घड़ी भर भी जीना दूभर है, क्योंकि परमेश्वर के नाम में ही सब बड़ाई है॥८॥१॥

सारग महला १ ॥ हरि बिनु किउ धीरै मनु मेरा ॥ कोटि कलप के दूख बिनासन साचु द्रिड़ाइ निबेरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ क्रोधु निवारि जले हउ ममता प्रेमु सदा नउ रंगी ॥ अनभउ बिसरि गए प्रभु जाचिआ हरि निरमाइलु संगी ॥ १ ॥ चंचल मति तिआगि भउ भंजनु पाइआ एक सबदि लिव लागी ॥ हरि रसु चाखि त्रिखा निवारी हरि मेलि लए बडभागी ॥ २ ॥ अभरत सिंचि भए सुभर सर गुरमति साचु निहाला ॥ मन रति नामि रते निहकेवल आदि जुगादि दइआला ॥ ३ ॥ मोहनि मोहि लीआ मनु मोरा बडै भाग लिव लागी ॥ साचु बीचारि किलविख दुख काटे मनु निरमलु अनरागी ॥ ४ ॥ गहिर गंभीर सागर रतनागर अवर नही अन पूजा ॥ सबदु बीचारि भरम भउ भंजनु अवरु न जानिआ दूजा ॥ ५ ॥ मनूआ मारि निरमल पदु चीनिआ हरि रस रते अधिकाई ॥ एकस बिनु मै अवरु न जानां सतिगुरि बूझ बुझाई ॥ ६ ॥ अगम अगोचरु अनाथु अजोनी गुरमति एको जानिआ ॥ सुभर भरे नाही चितु डोलै मन ही ते मनु मानिआ ॥ ७ ॥ गुर परसादी अकथउ कथीऐ कहउ कहावै सोई ॥ नानक दीन दइआल हमारे अवरु न जानिआ कोई ॥ ८ ॥ २ ॥

परमेश्वर के बिना मेरे मन को किस तरह धैर्य हो सकता है? वह करोड़ों कल्पों के दुखों को दूर करने वाला है और सत्य में विश्वस्त करके ही फैसला करता है॥१॥ रहाउ॥ क्रोध का निवारण हुआ तो अहम्-भावना एवं ममत्व जल गए और मन में नवरंग प्रेम बस गया। प्रभु के पास प्रार्थना की तो सभी भय दूर हो गए, अब निर्मल प्रभु साथ ही रहता है॥१॥ एक शब्द में लगन लगाई तो चंचल बुद्धि छोड़ दी, इस तरह भय नाशक प्रभु को पा लिया। हरि-नाम रस को चखकर अपनी प्यास बुझा ली और अहोभाग्य से परमात्मा से मिलन हो गया॥२॥ खाली पड़ा मन रूपी सरोवर पूर्णतया भर गया है और गुरु की शिक्षा से परम सत्य को देखकर निहाल हो गया है। मन परमात्मा के नाम में ही लीन है, वह युग-युगों से दया करने वाला है॥३॥ प्यारे प्रभु ने मेरा मन

मोह लिया है और बड़े भाग्य से उसमें ही लगन लगी है। परम सत्य का चिन्तन किया तो पाप दुख कट गए और मन निर्मल होकर उसी के प्रेम में रत है॥४॥ ईश्वर महान, गंभीर है, गुणों का सागर एवं रत्नों का भण्डार है, उसके सिवा अन्य कोई पूजनीय नहीं। शब्द-गुरु का चिन्तन करके भ्रम एवं भयनाशक परब्रह्म को ही माना है, उसके सिवा किसी को नहीं माना॥५॥ मन की वासना को मारकर निर्मल पद को जान लिया है और हरिनाम रस में अधिकतर रत हूँ। सच्चे गुरु ने भेद बता दिया है इसलिए एक ईश्वर के अतिरिक्त किसी अन्य को नहीं मानता॥६॥ गुरु-मतानुसार अगम्य, मन-वाणी से परे, संसार के मालिक, अजन्मा ईश्वर के ही रहस्य को जाना है। मन रूपी सरोवर भर गया है, अब मन विचलित नहीं होता और मन में ही मन पूर्ण विश्वस्त हो गया है॥७॥ गुरु की कृपा से अकथनीय (परमेश्वर) का कथन कर रहा हूँ, वही कहता हूँ जो प्रभु मुझ से कहलाता है। गुरु नानक कथन करते हैं– वह दीनदयालु परमेश्वर ही हमारा सब कुछ है, उसके सिवा किसी अन्य को नहीं मानता॥८॥२॥

सारग महला ३ असटपदीआ घरु १ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

मन मेरे हरि कै नामि वडाई ॥ हरि बिनु अवरु न जाणा कोई हरि कै नामि मुकति गति पाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सबदि भउ भंजनु जमकाल निखंजनु हरि सेती लिव लाई ॥ हरि सुखदाता गुरमुखि जाता सहजे रहिआ समाई ॥ १ ॥ भगतां का भोजनु हरि नाम निरंजनु पैन्हणु भगति बडाई ॥ निज घरि वासा सदा हरि सेवनि हरि दरि सोभा पाई ॥ २ ॥ मनमुख बुधि काची मनूआ डोलै अकथु न कथै कहानी ॥ गुरमति निहचलु हरि मनि वसिआ अंम्रित साची बानी ॥ ३ ॥ मन के तरंग सबदि निवारे रसना सहजि सुभाई ॥ सतिगुर मिलि रहीऐ सद अपुने जिनि हरि सेती लिव लाई ॥ ४ ॥ मनु सबदि मरै ता मुकतो होवै हरि चरणी चितु लाई ॥ हरि सरु सागरु सदा जलु निरमलु नावै सहजि सुभाई ॥ ५ ॥ सबदु वीचारि सदा रंगि राते हउमै त्रिसना मारी ॥ अंतरि निहकेवलु हरि रविआ सभु आतम रामु मुरारी ॥ ६ ॥ सेवक सेवि रहे सचि राते जो तेरै मनि भाणे ॥ दुबिधा महलु न पावै जगि झूठी गुण अवगण न पछाणे ॥ ७ ॥ आपे मेलि लए अकथु कथीऐ सचु सबदु सचु बाणी ॥ नानक साचे सचि समाणे हरि का नामु वखाणी ॥ ८ ॥ १ ॥

हे मेरे मन! सम्पूर्ण विश्व में केवल परमात्मा के नाम की ही कीर्ति है। परमात्मा के सिवा मैं किसी को नहीं मानता और परमात्मा के नाम से ही मुक्ति प्राप्त होती है॥१॥ रहाउ॥ शब्द द्वारा भयभंजन, यमकाल का नाश करने वाले ईश्वर में लगन लगाई है। गुरु के सान्निध्य में सुख देने वाले प्रभु को ही जाना है और सहज स्वाभाविक उसी में लीन हूँ॥१॥ हरि-नामोच्चारण ही भक्तों का भोजन है और भक्ति एवं संकीर्तन ही उनका जीवन-आचरण पहनावा है। भक्त सदैव हरि की अर्चना में लीन रहकर अपने सच्चे घर में बसे रहते हैं और प्रभु द्वार पर शोभा प्राप्त करते हैं॥२॥ मन की मर्जी अनुसार चलने वाले व्यक्ति की बुद्धि मंद होती है, उसका मन विचलित होता है और वह अकथ कहानी कथन नहीं कर पाता। गुरु की निश्चल मत से प्रभु मन में बस जाता है और उसकी वाणी भी अमृतमय हो जाती है॥३॥ मन की तरंगों को शब्द द्वारा रोका है और जीभ सहज स्वाभाविक आनंदित हो गई है। जिसने परमात्मा से हमारी लगन लगाई है, उस सतगुरु के संपर्क में रहना चाहिए॥४॥ जब हम मन को शब्द द्वारा (विकारों की ओर से) मारकर परमात्मा के चरणों में मन लगाते हैं, तो मुक्ति प्राप्त हो जाती है। परमात्मा ऐसा सरोवर अथवा

सागर है, जिसका नाम रूपी जल सदा निर्मल है। जो स्वाभाविक ही इसमें स्नान करता है, वही शान्ति पाता है॥५॥ शब्द का चिन्तन कर सदा उसके रंग में लीन हूँ और इसी से अहम् एवं तृष्णा को समाप्त किया है। अन्तर्मन में परमेश्वर ही रमण कर रहा है, सब में परमेश्वर ही व्याप्त है॥६॥ हे प्रभु ! वही सेवक सत्य में लीन होकर आराधना करते हैं, जो तेरे मन को अच्छे लगते हैं। दुविधाग्रस्त जीव-स्त्री का पति प्रभु से मिलन नहीं होता, उसे गुण-अवगुण की पहचान नहीं होती और जगत में झूठी कहलाती है॥७॥ ईश्वर स्वयं ही जीव को साथ मिला लेता है, उसी की रज़ा से अकथ कथा का कथन होता है, सच्चे शब्द एवं सच्ची वाणी से ही होता है। गुरु नानक फुरमाते हैं कि हरि-नाम की चर्चा करने वाले उस परम-सत्य में ही विलीन हो जाते हैं॥८॥१॥

सारग महला ३ ॥ मन मेरे हरि का नामु अति मीठा ॥ जनम जनम के किलविख भउ भंजन गुरमुखि एको डीठा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कोटि कोटंतर के पाप बिनासन हरि साचा मनि भाइआ ॥ हरि बिनु अवरु न सूझै दूजा सतिगुरि एकु बुझाइआ ॥ १ ॥ प्रेम पदारथु जिन घटि वसिआ सहजे रहे समाई ॥ सबदि रते से रंगि चलूले राते सहजि सुभाई ॥ २ ॥ रसना सबदु वीचारि रसि राती लाल भई रंगु लाई ॥ राम नामु निहकेवलु जाणिआ मनु त्रिपतिआ सांति आई ॥ ३ ॥ पंडित पढ़ि पढ़ि मोनी सभि थाके भ्रमि भेख थके भेखधारी ॥ गुर परसादि निरंजनु पाइआ साचै सबदि वीचारी ॥ ४ ॥ आवा गउणु निवारि सचि राते साच सबदु मनि भाइआ ॥ सतिगुरु सेवि सदा सुखु पाईऐ जिनि विचहु आपु गवाइआ ॥ ५ ॥ साचै सबदि सहज धुनि उपजै मनि साचै लिव लाई ॥ अगम अगोचरु नामु निरंजनु गुरमुखि मंनि वसाई ॥ ६ ॥ एकस महि सभु जगतो वरतै विरला एकु पछाणै ॥ सबदि मरै ता सभु किछु सूझै अनदिनु एको जाणै ॥ ७ ॥ जिस नो नदरि करे सोई जनु बूझै होरु कहणा कथनु न जाई ॥ नानक नामि रते सदा बैरागी एक सबदि लिव लाई ॥ ८ ॥ २ ॥

हे मेरे मन ! परमात्मा का नाम बहुत मधुर है। यह जन्म-जन्म के पाप एवं भय को नाश करने वाला है और गुरु के माध्यम से दर्शन होते हैं॥१॥ रहाउ॥ करोड़ों जन्मों के पापों को खत्म करने वाला सच्चा प्रभु ही मेरे मन को भाया है। सच्चे गुरु ने एक भेद बता दिया है, जिससे प्रभु बिना अन्य कोई नहीं सूझता॥१॥ जिनके दिल में प्रेम बस गया है, वे सुख-शान्ति में लीन रहते हैं। प्रभु-शब्द में लीन होने वाले जिज्ञासुओं को प्रेम चढ़ा रहता है और सहज स्वाभाविक ही रत रहते हैं॥२॥ मेरी जिह्वा ने शब्द का विचार किया और उसी के रस में रंगकर लाल हो गई है। राम नाम के भेद को जानकर मन तृप्त हो गया है और शान्ति प्राप्त हो गई है॥३॥ पण्डित ग्रंथों का पाठ-पठन कर एवं मौनधारी मौन धारण कर थक गए हैं। वेषाडम्बरी लोग वेष धारण कर थक गए हैं। उस निरंकार की प्राप्ति तो गुरु की कृपा एवं सच्चे शब्द का चिन्तन करने से ही होती है॥४॥ जिनके मन को सच्चा शब्द अच्छा लगा है, वे आवागमन का निवारण कर सत्य में लीन हो गए हैं। जिन्होंने अहम्-भावना को दूर करके सच्चे गुरु की सेवा की है, उनको सदा सुख प्राप्त हुआ है॥५॥ सच्चे शब्द से मन में ध्वनि उत्पन्न होती है, जिससे प्रभु में लगन लग जाती है। अगम्य, मन-वाणी से परे, पावन हरिनाम गुरु मन में बसा देता है॥६॥ कोई विरला ही इस रहस्य को जानता है कि एक ईश्वर ही समूचे जगत में कार्यशील है। शब्द द्वारा मन की वासनाओं को मारकर मनुष्य को पूर्ण जानकारी हो जाती है और वह एक परमेश्वर की सत्ता को मानता है॥७॥ वही समझता है, जिस पर कृपा-दृष्टि करता है, कोई अन्य कथन नहीं कर सकता। गुरु नानक का मत है कि हरिनाम में लीन रहने वाले सदा वैरागी बने रहते हैं और उनकी केवल प्रभु शब्द में ही लगन लगी रहती है॥८॥२॥

सारग महला ३ ॥ मन मेरे हरि की अकथ कहाणी ॥ हरि नदरि करे सोई जनु पाए गुरमुखि विरलै जाणी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि गहिर गंभीरु गुणी गहीरु गुर कै सबदि पछानिआ ॥ बहु बिधि करम करहि भाइ दूजै बिनु सबदै बउरानिआ ॥ १ ॥ हरि नामि नावै सोई जनु निरमलु फिरि मैला मूलि न होई ॥ नाम बिना सभु जगु है मैला दूजै भरमि पति खोई ॥ २ ॥ किआ द्रिड़ां किआ संग्रहि तिआगी मै ता बूझ न पाई ॥ होहि दइआलु क्रिपा करि हरि जीउ नामो होइ सखाई ॥ ३ ॥ सचा सचु दाता करम बिधाता जिसु भावै तिसु नाइ लाए ॥ गुरू दुआरै सोई बूझै जिस नो आपि बुझाए ॥ ४ ॥ देखि बिसमादु इहु मनु नही चेते आवा गउणु संसारा ॥ सतिगुरु सेवे सोई बूझै पाए मोख दुआरा ॥ ५ ॥ जिन्ह दरु सूझै से कदे न विगाड़हि सतिगुरि बूझ बुझाई ॥ सचु संजमु करणी किरति कमावहि आवण जाणु रहाई ॥ ६ ॥ से दरि साचै साचु कमावहि जिन गुरमुखि साचु अधारा ॥ मनमुख दूजै भरमि भुलाए ना बूझहि वीचारा ॥ ७ ॥ आपे गुरमुखि आपे देवै आपे करि करि वेखै ॥ नानक से जन थाइ पए है जिन की पति पावै लेखै ॥ ८ ॥ ३ ॥

हे मेरे मन ! हरि की कथा अकथनीय है। जिस पर परमेश्वर कृपा करता है, वही भक्त गुरु द्वारा इस कथा का भेद जानता है॥१॥ रहाउ॥ गुरु के उपदेश से ज्ञान हुआ है कि ईश्वर गहन-गंभीर एवं गुणों का भण्डार है। जिन्हें शब्द का भेद प्राप्त नहीं होता, वे द्वैतभाव में अनेक प्रकार के कर्म करके बावले बने फिरते हैं॥१॥ जो हरिनाम में स्नान करता है, वही व्यक्ति निर्मल है और पुनः उसे कोई मैल नहीं लगती। हरि-नाम बिना समूचा जगत मलिन है और द्वैतभाव में अपनी इज्जत खो रहा है॥२॥ क्या दृढ़ करूँ, क्या इकट्ठा करूँ, किसका त्याग करूँ, मुझे तो कुछ समझ नहीं आ रहा। हे प्रभु ! दयालु होकर कृपा करो, तेरा नाम ही अन्त में सहायक है॥३॥ परमात्मा शाश्वत-स्वरूप है, संसार को देने वाला है, कर्मों को बनाने वाला है, जिसे चाहता है, उसे नाम-स्मरण में लगा देता है। गुरु के द्वारा वही भेद को समझता है, जिसे स्वयं ज्ञान-शक्ति देता है॥४॥ अद्‌भुत खेल-तमाशे देखकर मन को इस बात की होश नहीं कि यह संसार तो आवागमन है। सतगुरु की सेवा करने वाला इस रहस्य को बूझ लेता है और मोक्ष पा लेता है॥५॥ सतगुरु ने रहस्य बताया है कि जिनको प्रभु दर की सूझ हो जाती है, वे अपना नाता कभी नहीं बिगाड़ते। वे सत्य एवं संयम का आचरण अपनाते हुए कर्म करते हैं और उनका आवागमन निवृत्त हो जाता है॥६॥ जिनको गुरु ने सत्य नाम का आसरा प्रदान कर दिया है, वही सत्यशील हैं और सत्कर्म ही करते हैं। मन की मतानुसार चलने वाले द्वैतभाव में पड़कर भ्रमों में भटके रहते हैं और तथ्य को नहीं बूझते॥७॥ परमेश्वर ही गुरु है, देने वाला भी वह स्वयं ही है और वह स्वयं ही जगत लीला कर करके देखता है। नानक फुरमाते हैं कि वही व्यक्ति सफल होते हैं, जिनको लोक-परलोक में सम्मान मिलता है॥८॥३॥

सारग महला ५ असटपदीआ घरु १ १ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

गुसाईं परतापु तुहारो डीठा ॥ करन करावन उपाइ समावन सगल छत्रपति बीठा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ राणा राउ राज भए रंका उनि झूठे कहणु कहाइओ ॥ हमरा राजनु सदा सलामति ता को सगल घटा जसु गाइओ ॥ १ ॥ उपमा सुनहु राजन की संतहु कहत जेत पाहूचा ॥ बेसुमार वड साह दातारा ऊचे ही ते ऊचा ॥ २ ॥ पवनि परोइओ सगल अकारा पावक कासट संगे ॥ नीरु धरणि करि राखे एकत कोइ न किस ही संगे ॥ ३ ॥ घटि घटि कथा राजन की चालै घरि घरि तुझहि उमाहा ॥ जीअ जंत

सभि पाछै करिआ प्रथमे रिजकु समाहा ॥ ४ ॥ जो किछु करणा सु आपे करणा मसलति काहू दीन्ही ॥ अनिक जतन करि करह दिखाए साची साखी चीन्ही ॥ ५ ॥ हरि भगता करि राखे अपने दीनी नामु वडाई ॥ जिनि जिनि करी अवगिआ जन की ते तैं दीए रुढ़ाई ॥ ६ ॥ मुकति भए साधसंगति करि तिन के अवगन सभि परहरिआ ॥ तिन कउ देखि भए किरपाला तिन भव सागरु तरिआ ॥ ७ ॥ हम नान्हे नीच तुम्हे बड साहिब कुदरति कउण बीचारा ॥ मनु तनु सीतलु गुर दरस देखे नानक नामु अधारा ॥ ८ ॥ १ ॥

हे मालिक ! मैंने तुम्हारी महिमा देखी है। तू सर्वकर्ता है, जीवों को पैदा करने एवं नाश करने वाला है, सर्वशक्तिमान है और समूचे संसार में बादशाह की तरह विराजमान है॥ १॥ रहाउ॥ दुनियावी राणा, राव एवं राजा तो पल में कंगाल हो जाते हैं और उनके दावे भी झूठे सिद्ध होते हैं। लेकिन हमारा राजन सदैव शाश्वत है, पूरी दुनिया उसी का यशोगान कर रही है॥ १॥ हे भक्तजनो ! मेरे राजन प्रभु की कीर्ति सुनो, अपनी समर्थानुसार वर्णन करता हूँ। वह बेशुमार है, सबसे बड़ा बादशाह, देने वाला और ऊँचे से भी ऊँचा है॥ २॥ उसने समूचे आकार को प्राण रूपी वायु से पिरोया हुआ है और अग्नि लकड़ी में स्थित की हुई है। पानी और पृथ्वी को एक स्थान पर ही रखा हुआ है, फिर भी कोई किसी के साथ नहीं अर्थात् पानी एवं पृथ्वी अलग-अलग ही हैं॥ ३॥ हर घर में मेरे राजन प्रभु की कथा चल रही है और घट-घट में उसे पाने की उमंग है। (वाह ! क्या खूब है) वह जीवों को उत्पन्न करने से पूर्व ही उनकी रोजी-रोटी का इंतजाम कर देता है॥ ४॥ जो कुछ करता है, वह अपनी मर्जी से ही करता है और कोई उसे सलाह-मशविरा नहीं देता। हम लोग अनेक यत्न करके दिखावा करते हैं परन्तु सच्ची शिक्षा से तथ्य की सूझ होती है॥ ५॥ हरि ने अपने भक्तों की सदैव रक्षा की है और नाम देकर कीर्ति प्रदान की है। जिस-जिसने भक्तों का अपमान किया है, हे हरि ! तूने उनको खत्म कर दिया है॥ ६॥ जो साधु-पुरुषों की संगत में मुक्ति पा गए, उनके सभी अवगुण समाप्त कर दिए। उनको देखकर तुम कृपालु हो गए और उनको संसार-सागर से पार उतार दिया॥ ७॥ हम बहुत तुच्छ एवं नीच हैं, हे मालिक ! तू महान है, हमारी इतनी हैसियत नहीं कि तुम्हारी शक्ति पर विचार कर सकें। नानक का कथन है कि गुरु के दर्शनों से मन तन शीतल हो गया है और हरि-नाम ही हमारा आसरा है॥ ८॥ १॥

सारंग महला ५ असटपदी घरु ६ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

अगम अगाधि सुनहु जन कथा ॥ पारब्रहम की अचरज सभा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सदा सदा सतिगुर नमसकार ॥ गुर किरपा ते गुन गाइ अपार ॥ मन भीतरि होवै परगासु ॥ गिआन अंजनु अगिआन बिनासु ॥ १ ॥ मिति नाही जा का बिसथारु ॥ सोभा ता की अपर अपार ॥ अनिक रंग जा के गने न जाहि ॥ सोग हरख दुहहू महि नाहि ॥ २ ॥ अनिक ब्रहमे जा के बेद धुनि करहि ॥ अनिक महेस बैसि धिआनु धरहि ॥ अनिक पुरख अंसा अवतार ॥ अनिक इंद्र ऊभे दरबार ॥ ३ ॥ अनिक पवन पावक अरु नीर ॥ अनिक रतन सागर दधि खीर ॥ अनिक सूर ससीअर नखिआति ॥ अनिक देवी देवा बहु भांति ॥ ४ ॥ अनिक बसुधा अनिक कामधेन ॥ अनिक पारजात अनिक मुखि बेन ॥ अनिक अकास अनिक पाताल ॥ अनिक मुखी जपीऐ गोपाल ॥ ५ ॥ अनिक सासत्र सिम्रिति पुरान ॥ अनिक जुगति होवत बखिआन ॥ अनिक सरोते सुनहि निधान ॥ सरब जीअ पूरन भगवान ॥ ६ ॥ अनिक धरम अनिक कुमेर ॥ अनिक बरन अनिक कनिक सुमेर ॥ अनिक सेख नवतन नामु लेहि ॥ पारब्रहम

का अंतु न तेहि ॥ ७ ॥ अनिक पुरीआ अनिक तह खंड ॥ अनिक रूप रंग ब्रहमंड ॥ अनिक बना अनिक फल मूल ॥ आपहि सूखम आपहि असथूल ॥ ८ ॥ अनिक जुगादि दिनस अरु राति ॥ अनिक परलउ अनिक उतपाति ॥ अनिक जीअ जा के ग्रिह माहि ॥ रमत राम पूरन स्रब ठांइ ॥ ६ ॥ अनिक माइआ जा की लखी न जाइ ॥ अनिक कला खेलै हरि राइ ॥ अनिक धुनित ललित संगीत ॥ अनिक गुपत प्रगटे तह चीत ॥ १० ॥ सभ ते ऊच भगत जा कै संगि ॥ आठ पहर गुन गावहि रंगि ॥ अनिक अनाहद आनंद झुनकार ॥ उआ रस का कछु अंतु न पार ॥ ११ ॥ सति पुरखु सति असथानु ॥ ऊच ते ऊच निरमल निरबानु ॥ अपुना कीआ जानहि आपि ॥ आपे घटि घटि रहिओ बिआपि ॥ क्रिपा निधान नानक दइआल ॥ जिनि जपिआ नानक ते भए निहाल ॥ १२ ॥ १ ॥ २ ॥ २ ॥ ३ ॥ ७ ॥

हे जिज्ञासुओ ! अगम्य असीम कथा सुनो; परब्रह्म की सृष्टि रूपी सभा आश्चर्यजनक है॥१॥ रहाउ॥ सतगुरु को हमारा सदैव प्रणाम है, क्योंकि गुरु की कृपा से भगवान का गुणगान किया है। इसी से मन में आलोक होता है और ज्ञान का सुरमा लगाने से अज्ञान नष्ट हो जाता है॥१॥ उसके प्रसार की कोई सीमा नहीं, उसकी शोभा अपरंपार है। उसके अनेक रंग हैं, जिनकी गणना नहीं की जा सकती। वह खुशी एवं गम दोनों से रहित है॥२॥ अनेक ब्रह्मा वेदों की ध्वनि में उसकी प्रशंसा गा रहे हैं। अनेकानेक शिवशंकर बैठकर उसी के ध्यान में निमग्न हैं। अनेकों पुरुष उसी के अंशावतार हैं। अनेकों इन्द्र उसके दरबार में हुक्म का पालन करने के लिए खड़े हैं॥३॥ अनेक किस्म की वायु, अग्नि और पानी कार्यशील है, अनेक प्रकार के रत्न, दूध-दही के सागर उसकी उत्पति है। अनेकानेक सूर्य, चन्द्रमा एवं नक्षत्र हैं, अनेक प्रकार के देवी-देवता हैं॥४॥ अनेक पृथ्वियाँ और अनेक कामधेनु हैं, उसके अनेक पारिजात हैं और अनेकों ही बांसुरी बजाने वाले मोहन हैं। अनेक आकाश एवं अनेक पाताल हैं। ऐसे भक्तजन भी अनेकानेक हैं,जो मुख से परमात्मा का नाम जप रहे हैं॥५॥ शास्त्र, स्मृतियाँ एवं पुराण भी अनेकानेक हैं। अनेक तरीकों से ईश्वर की चर्चा हो रही है। अनेकों ही श्रोता हैं, जो सुखों के भण्डार परमात्मा का यश सुनते हैं। लेकिन समस्त जीवों का पालक केवल भगवान है॥६॥ मृत्यु के व्यवस्थापक धर्मराज एवं धन के देवता कुबेर भी अनेकानेक हैं। वरुण देवता तथा सोने के सुमेर पर्वत भी अनेकों हैं। ऐसे शेषनाग भी अनेक हैं, जो नित्य परमात्मा का नया नाम लेते हैं, लेकिन फिर भी वे परब्रह्म का रहस्य जान नहीं पाते॥७॥ पुरियाँ एवं खण्ड-मण्डल भी अनेकानेक हैं। इस ब्रह्माण्ड के रूप-रंग भी अनेकानेक हैं। वन, फल-फूल भी अनेकानेक हैं। परब्रह्म परमेश्वर स्वयं ही सूक्ष्म एवं स्थूल है॥८॥ युग, दिन और रात अनेक हैं। सृष्टि का प्रलय एवं उत्पत्ति भी अनेक बार हुई। उसके घर में अनेकों ही जीव हैं, वह परिपूर्ण परमेश्वर विश्व-व्यापक है॥६॥ उसकी अनेक प्रकार की माया-लीला को समझा नहीं जा सकता, वह सम्पूर्ण विश्व का शहंशाह अनेक शक्तियों में लीला कर रहा है। अनेक प्रकार की ध्वनियों में मधुर संगीत गूंज रहा है। वहाँ अनेकानेक गुप्त शक्तियाँ मौजूद हैं॥१०॥ जिसके संग ईश्वर रहता है, वही सर्वोच्च भक्त है, वह आठ प्रहर भगवान के गुण गाता है। अनेक किस्म की अनाहत ध्वनि की आनंदमय झंकार होती रहती है और उस रस का कोई अंत एवं आर-पार नहीं॥११॥ वह परमपुरुष चिरस्थाई है, उसका स्थान भी अटल है। वह सर्वोच्च, पवित्र पावन एवं संसार से अलिप्त है। वह अनंतशक्ति परमेश्वर अपने किए का रहस्य स्वयं ही जानता है और घट घट में व्याप्त है। नानक फुरमाते हैं— वह कृपानिधान सब पर दया करने वाला है। नानक का कथन है कि जिसने भी परमात्मा का जाप किया है, वह निहाल हो गया है॥१२॥१॥२॥२॥३॥७॥

सारग छंत महला ५ १ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सभ देखीऐ अनभै का दाता ॥ घटि घटि पूरन है अलिपाता ॥ घटि घटि पूरनु करि बिसथीरनु जल तरंग जिउ रचनु कीआ ॥ हभि रस माणे भोग घटाणे आन न बीआ को थीआ ॥ हरि रंगी इक रंगी ठाकुरु संतसंगि प्रभु जाता ॥ नानक दरसि लीना जिउ जल मीना सभ देखीऐ अनभै का दाता ॥ १ ॥ कउन उपमा देउ कवन बडाई ॥ पूरन पूरि रहिओ स्रब ठाई ॥ पूरन मनमोहन घट घट सोहन जब खिंचै तब छाई ॥ किउ न अराधहु मिलि करि साधहु घरी मुहतक बेला आई ॥ अरथु दरबु सभु जो किछु दीसै संगि न कछहू जाई ॥ कहु नानक हरि हरि आराधहु कवन उपमा देउ कवन बडाई ॥ २ ॥ पूछउ संत मेरो ठाकुरु कैसा ॥ हींउ अरापउं देहु सदेसा ॥ देहु सदेसा प्रभ जीउ कैसा कह मोहन परवेसा ॥ अंग अंग सुखदाई पूरन ब्रहमाई थान थानंतर देसा ॥ बंधन ते मुकता घटि घटि जुगता कहि न सकउ हरि जैसा ॥ देखि चरित नानक मनु मोहिओ पूछै दीनु मेरो ठाकुरु कैसा ॥ ३ ॥ करि किरपा अपुने पहि आइआ ॥ धंनि सु रिदा जिह चरन बसाइआ ॥ चरन बसाइआ संत संगाइआ अगिआन अंधेरु गवाइआ ॥ भइआ प्रगासु रिदै उलासु प्रभु लोड़ीदा पाइआ ॥ दुखु नाठा सुखु घर महि वूठा महा अनंद सहजाइआ ॥ कहु नानक मै पूरा पाइआ करि किरपा अपुने पहि आइआ ॥ ४ ॥ १ ॥

सब में अभय, मुक्ति-दाता परमेश्वर को देखो। वह घट घट में विद्यमान है, फिर भी संसार से अलिप्त है। वह घट घट में प्रसार कर ऐसे व्याप्त है, जैसे जल एवं तरंगों की रचना की हुई है। वह सभी शरीरों में व्याप्त होकर सब रस भोग रहा है, उसके सिवा अन्य कोई नहीं। वह मालिक अनेक रंगों में भी एक है और संतों की संगत में उसका भेद जाना जाता है। हे नानक ! जल में मछली की तरह उसके ही दर्शन की लालसा है, सब में मुक्ति-दाता परमेश्वर के दर्शन करो॥१॥ उस अनंतशक्ति की क्या उपमा करूँ, उसकी क्या प्रशंसा करूँ। वह सम्पूर्ण विश्व में व्याप्त है, हर जगह पर मौजूद है। वह मनमोहन घट-घट में व्याप्त है, जब प्राण-शक्ति खींच लेता है तो शरीर धूल हो जाता है। जिंदगी का घड़ी भर का समय मिला है, मौत निश्चित है, फिर क्यों न साधु पुरुषों के साथ परमात्मा की आराधना की जाए। धन-दौलत जो कुछ दिखाई देता है, (मरणोपरांत) कुछ भी साथ नहीं जाता। नानक फुरमाते हैं कि उस अखिलेश्वर की क्या उपमा करूँ, उसकी प्रशंसा किस तरह की जाए, हमें तो हरदम हरि की आराधना करनी चाहिए॥२॥ मैं संतों से पूछता हूँ कि मेरा मालिक कैसा है। मुझे उसका संदेश दो, मैं तो हृदय एवं प्राण सर्वस्व उसे अर्पण कर दूँगा। मुझे कोई संदेश दो, मेरा प्रभु कैसा है, किस जगह पर रहता है। वह पूर्ण ब्रह्म सुखदायक आसपास है, देश-देशांतर सब में मौजूद है। वह बन्धनों से मुक्त है, घट-घट में वही विद्यमान है, वह प्रभु जैसा है, मैं उसकी महिमा बता नहीं सकता। नानक कथन करते हैं कि उसकी लीला देखकर मन मोहित हो गया है और विनम्रतापूर्वक पूछता हूँ कि मेरा मालिक कैसा है॥३॥ वह कृपा करके अन्तर्मन में आता है। वह हृदय धन्य है, जो उसके चरणों में प्रेम लगाता है। परमात्मा के चरण संतों की संगत में ही प्राप्त होते हैं और अज्ञान का अंधेरा दूर हो जाता है। प्रभु को पा कर हृदय में प्रकाश एवं उल्लास उत्पन्न हो गया है और सब कामनाएँ पूरी हो गई हैं। दुख दूर हुआ है, सुखों की लब्धि हो गई है और हृदय में सहज स्वाभाविक महा आनंद उत्पन्न हो चुका है। हे नानक ! मैंने पूर्ण परमेश्वर को पा लिया है और वह कृपा करके अन्तर्मन में आया है॥४॥१॥

सारंग की वार महला ४ राइ महमे हसने की धुनि ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सलोक महला २ ॥ गुरु कुंजी पाहू निवलु मनु कोठा तनु छति ॥ नानक गुर बिनु मन का ताकु न उघड़ै अवर न कुंजी हथि ॥ १ ॥

श्लोक महला २॥ मन रूपी घर जिसकी छत यह शरीर है, इसे माया का ताला लगा हुआ है और उस ताले की कुंजी गुरु (के पास) है। नानक फुरमाते हैं कि गुरु के बिना मन का दरवाजा नहीं खुलता, दरअसल गुरु बिना किसी अन्य के हाथ यह कुंजी नहीं है॥१॥

महला १ ॥ न भीजै रागी नादी बेदि ॥ न भीजै सुरती गिआनी जोगि ॥ न भीजै सोगी कीतै रोजि ॥ न भीजै रूपी मालीं रंगि ॥ न भीजै तीरथि भविऐ नंगि ॥ न भीजै दातीं कीतै पुंनि ॥ न भीजै बाहरि बैठिआ सुंनि ॥ न भीजै भेड़ि मरहि भिड़ि सूर ॥ न भीजै केते होवहि धूड़ ॥ लेखा लिखीऐ मन कै भाइ ॥ नानक भीजै साचै नाइ ॥ २ ॥

महला १॥ संगीत एवं वेदों के मंत्रोच्चारण से ईश्वर खुश नहीं होता। ज्ञान एवं योग-साधना से भी वह प्रसन्न नहीं होता। रोज गमगीन रहकर भी उसे खुश नहीं किया जा सकता। रूप-सौन्दर्य, मौज-मेला मनाकर भी प्रसन्न नहीं होता। निर्वस्त्र तीर्थ यात्रा और दान-पुण्य करने से भी परमात्मा प्रसन्न नहीं होता। शून्य समाधि में बैठे रहने पर भी नहीं रीझता और रणभूमि में योद्धा बनकर वीरगति पाने से भी खुश नहीं होता। शरीर पर भस्म लगाकर भी वह खुश नहीं होता। मन की अवस्था के अनुकूल हमारे कर्मों का हिसाब लिखा जाता है। गुरु नानक का कथन है कि ईश्वर केवल सच्चा नाम जपने से ही प्रसन्न होता है॥२॥

महला १ ॥ नव छिअ खट का करे बीचारु ॥ निसि दिन उचरै भार अठार ॥ तिनि भी अंतु न पाइआ तोहि ॥ नाम बिहूण मुकति किउ होइ ॥ नाभि वसत ब्रहमै अंतु न जाणिआ ॥ गुरमुखि नानक नामु पछाणिआ ॥ ३ ॥

महला १॥ कोई मनुष्य नौ व्याकरण, छः शास्त्रों का अभ्यास करता है, दिन-रात महाभारत के अठारह पर्वों का उच्चारण करता है। हे ईश्वर! इन सबके बावजूद भी उसे तेरा रहस्य प्राप्त नहीं होता। हरि-नाम से विहीन मुक्ति कैसे हो सकती है। कमल-नाभि में बसकर ब्रह्मा भी ईश्वर का रहस्य प्राप्त नहीं कर सका, हे नानक! गुरु के सान्निध्य में हरि-नाम की पहचान होती है॥३॥

पउड़ी ॥ आपे आपि निरंजना जिनि आपु उपाइआ ॥ आपे खेलु रचाइओनु सभु जगतु सबाइआ ॥ त्रै गुण आपि सिरजिअनु माइआ मोहु वधाइआ ॥ गुर परसादी उबरे जिन भाणा भाइआ ॥ नानक सचु वरतदा सभ सचि समाइआ ॥ १ ॥

पउड़ी॥ ईश्वर स्वजन्मा है, सर्वशक्तिमान है, वह मोह-माया की कालिमा से रहित है। समूचा जगत बनाकर उसने अपना एक खेल रचाया है। तीन गुणों की रचना कर उसने मोह-माया में वृद्धि की हुई है। जिसे परमात्मा की रज़ा अच्छी लगी है, गुरु की कृपा से उसका उद्धार हो गया है। हे नानक! वह परम-सत्य ही कार्यशील है और सब सत्य में ही विलीन है॥१॥

सलोक महला २ ॥ आपि उपाए नानका आपे रखै वेक ॥ मंदा किस नो आखीऐ जां सभना साहिबु एकु ॥ सभना साहिबु एकु है वेखै धंधै लाइ ॥ किसै थोड़ा किसै अगला खाली कोई नाहि ॥ आवहि नंगे जाहि नंगे विचे करहि विथार ॥ नानक हुकमु न जाणीऐ अगै काई कार ॥ १ ॥

श्लोक महला २॥ हे नानक! ईश्वर सबको उत्पन्न करता है, स्वयं ही अलग-अलग रखता है। बुरा किसको कहा जाए, जब सबका मालिक एक ही है। सबका मालिक एक प्रभु ही है, वह सबको अलग-अलग कार्यों में लगाकर देखता है। किसी जीव को उसने थोड़ा दिया है, किसी को अधिक दिया हुआ है, परन्तु खाली कोई नहीं है। सब जीव नंगे आते हैं, नंगे ही चले जाते है अर्थात् खाली ही आते और जाते हैं परन्तु फिर भी संसार में आडम्बर ही करते हैं। हे नानक! उसके हुक्म को जाना नहीं जा सकता क्योंकि इस बात की भी कोई खबर नहीं आगे किस कार्य में लगाने वाला है॥१॥

महला १ ॥ जिनसि थापि जीआं कउ भेजै जिनसि थापि लै जावै ॥ आपे थापि उथापै आपे एते वेस करावै ॥ जेते जीअ फिरहि अउधूती आपे भिखिआ पावै ॥ लेखै बोलणु लेखै चलणु काइतु कीचहि दावे ॥ मूलु मति परवाणा एहो नानकु आखि सुणाए ॥ करणी उपरि होइ तपावसु जे को कहै कहाए ॥ २ ॥

महला १॥ वह अनेक प्रकार के जीवों को संसार में भेजता है और अनेक प्रकार के जीवों को संसार से ले भी जाता है। वह स्वयं ही उत्पन्न कर नष्ट भी कर देता है और अनेक प्रकार के वेश करवाता है। जितने भी जीव साधु-फकीर बनकर घूमते हैं, उन्हें स्वयं ही भिक्षा देता है। हमारा बोलना एवं चलना सब भाग्यानुसार निश्चित है, फिर झूठे दावे करने का कोई लाभ नहीं। सच्ची बात यही स्वीकार्य है जो नानक कहकर सुना रहा है, कोई कुछ भी कहता कहलाता रहे, कर्मों के आधार पर ही न्याय होता है॥२॥

पउड़ी ॥ गुरमुखि चलतु रचाइओनु गुण परगटी आइआ ॥ गुरबाणी सद उचरै हरि मंनि वसाइआ ॥ सकति गई भ्रमु कटिआ सिव जोति जगाइआ ॥ जिन कै पोतै पुंनु है गुरु पुरखु मिलाइआ ॥ नानक सहजे मिलि रहे हरि नामि समाइआ ॥ २ ॥

पउड़ी॥ गुरु ने लीला रची है, जिससे सभी गुण प्रगट हो गए हैं। वह सदा गुरु की वाणी का उच्चारण करता है और प्रभु को मन में बसा लिया है। माया का प्रपंच दूर हो गया है, भ्रम कट गया है और ज्ञान ज्योति का दीपक प्रज्वलित हो गया है। जिनके पास पुण्य हैं, गुरु ने उन्हें परमात्मा से मिला दिया है। हे नानक! वे सहज स्वाभाविक प्रभु नाम में विलीन रहते हैं॥२॥

सलोक महला २ ॥ साह चले वणजारिआ लिखिआ देवै नालि ॥ लिखे उपरि हुकमु होइ लईऐ वसतु सम्हालि ॥ वसतु लई वणजारई वखरु बधा पाइ ॥ केई लाहा लै चले इकि चले मूलु गवाइ ॥ थोड़ा किनै न मंगिओ किसु कहीऐ साबासि ॥ नदरि तिना कउ नानका जि साबतु लाए रासि ॥ १ ॥

श्लोक महला २॥ परमात्मा रूपी शाह से जीव रूपी व्यापारी चल पड़ते हैं और वह उनका कर्मालेख साथ दे देता है। उस लिखे पर हुक्म होता है और उस अनुसार वस्तु मिलती है। इस तरह जीव रूपी व्यापारी वस्तुएँ खरीदते हैं और सामान लाद लेते हैं। कोई लाभ कमाकर साथ ले चलता है परन्तु कोई मूलधन भी गंवा देता है। इन दोनों में से किसी ने थोड़ा नहीं माँगा, फिर किसको शाबाशी दी जाए। नानक फुरमाते हैं कि कृपा-दृष्टि उन पर ही हुई जो अपने जीवन की राशि पूर्णतया बचाकर लाते हैं॥१॥

महला १ ॥ जुड़ि जुड़ि विछुड़े विछुड़ि जुड़े ॥ जीवि जीवि मुए मुए जीवे ॥ केतिआ के बाप केतिआ के बेटे केते गुर चेले हूए ॥ आगै पाछै गणत न आवै किआ जाती किआ हुणि हूए ॥ सभु करणा किरतु करि लिखीऐ करि करि करता करे करे ॥ मनमुखि मरीऐ गुरमुखि तरीऐ नानक नदरी नदरि करे ॥ २ ॥

महला १॥ जीव कितनी बार मिलते और बिछुड़ जाते हैं, बिछुड़कर दोबारा मिल जाते हैं। जन्म लेकर मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं और मरने के बाद पुनः जन्म लेते हैं। इस तरह जन्म-मरण का चक्र चलता रहता है। कभी किसी के बाप, किसी के बेटे, किसी के गुरु और किसी के शिष्य बनते हैं। आगे-पीछे का हिसाब नहीं लगाया जा सकता कि अतीत में क्या थे और अब वर्तमान में क्या हो गए हैं। सब कर्मों के अनुसार हो रहा है, जैसा भाग्य है, वैसा ही जीव कर रहा है, इस तरह विधाता करवाता जा रहा है। गुरु नानक फुरमाते हैं कि स्वेच्छाचारी मौत के चक्र में पड़ा रहता है, पर गुरु की शिक्षा पर चलने वाला मुक्त हो जाता है और ईश्वर समान कृपा-दृष्टि करता है॥ २॥

पउड़ी ॥ मनमुखि दूजा भरमु है दूजै लोभाइआ ॥ कूड़ु कपटु कमावदे कूड़ो आलाइआ ॥ पुत्र कलत्रु मोहु हेतु है सभु दुखु सबाइआ ॥ जम दरि बधे मारीअहि भरमहि भरमाइआ ॥ मनमुखि जनमु गवाइआ नानक हरि भाइआ ॥ ३ ॥

पउड़ी॥ मन की इच्छानुसार चलने वाला दुविधा एवं भ्रम में लीन रहता है और द्वैतभाव व लोभ-लालच में पड़ा रहता है। वह झूठ एवं छल-कपट का आचरण अपना कर झूठ ही बोलता है। इसका अपने पुत्र एवं पत्नी से मोह तथा प्रेम बना रहता है, जो सभी दुख पहुँचाते हैं। वह यम के द्वार पर दण्ड भोगता है और इस तरह भ्रम में ही भटकता है। हे नानक! स्वेच्छाचारी अपना जन्म गंवा देता है, संभवतः ईश्वर को यही मंजूर है॥ ३॥

सलोक महला २ ॥ जिन वडिआई तेरे नाम की ते रते मन माहि ॥ नानक अंम्रितु एकु है दूजा अंम्रितु नाहि ॥ नानक अंम्रितु मनै माहि पाईऐ गुर परसादि ॥ तिन्ही पीता रंग सिउ जिन्ह कउ लिखिआ आदि ॥ १ ॥

श्लोक महला २॥ जिनके पास हरि-नाम की कीर्ति है, वे मन में नामोच्चारण में ही लीन रहते हैं। हे नानक! अमृत एक हरि-नाम ही है, दूसरा कोई अमृत नहीं। नानक का कथन है कि गुरु की कृपा से अमृत मन में प्राप्त हो जाता है। जिनके भाग्य में पूर्व से ही लिखा है, उन्होंने प्रेमपूर्वक नामामृत का पान किया है॥ १॥

महला २ ॥ कीता किआ सालाहीऐ करे सोइ सालाहि ॥ नानक एकी बाहरा दूजा दाता नाहि ॥ करता सो सालाहीऐ जिनि कीता आकारु ॥ दाता सो सालाहीऐ जि सभसै दे आधारु ॥ नानक आपि सदीव है पूरा जिसु भंडारु ॥ वडा करि सालाहीऐ अंतु न पारावारु ॥ २ ॥

महला २॥ दुनिया की क्या सराहना करना? जिसने बनाया है, उस परमात्मा की प्रशंसा करो। हे नानक! एक ईश्वर के सिवा अन्य कोई दाता नहीं। उस स्रष्टा की स्तुति करो, जिसने सृष्टि रचना की है। उस दाता की सराहना करो, जो सबको आसरा दे रहा है। नानक कथन करते हैं कि वह सदैव रहने वाला है, उसके भण्डार पूर्ण हैं। अतः बड़ा मानकर उसी की स्तुति करो, जिसका कोई अन्त एवं आर-पार नहीं॥ २॥

पउड़ी ॥ हरि का नामु निधानु है सेविऐ सुखु पाई ॥ नामु निरंजनु उचरां पति सिउ घरि जांई ॥ गुरमुखि बाणी नामु है नामु रिदै वसाई ॥ मति पंखेरू वसि होइ सतिगुरू धिआईं ॥ नानक आपि दइआलु होइ नामे लिव लाई ॥ ४ ॥

पउड़ी॥ परमात्मा का नाम सुखों की निधि है, उसकी भक्ति से सुख प्राप्त होता है। पावन हरि-नामोच्चारण से मनुष्य सम्मानपूर्वक सच्चे घर जाता है। गुरु की वाणी नाम है, नाम को हृदय में बसाना चाहिए। सतगुरु का ध्यान करने से मति रूपी पक्षी वश में आता है। हे नानक! जिस पर भगवान दयालु होता है, वह नाम भजन में लीन रहता है॥४॥

सलोक महला २ ॥ तिसु सिउ कैसा बोलणा जि आपे जाणै जाणु ॥ चीरी जा की ना फिरै साहिबु सो परवाणु ॥ चीरी जिस की चलणा मीर मलक सलार ॥ जो तिसु भावै नानका साई भली कार ॥ जिन्हा चीरी चलणा हथि तिन्हा किछु नाहि ॥ साहिब का फुरमाणु होइ उठी करलै पाहि ॥ जेहा चीरी लिखिआ तेहा हुकमु कमाहि ॥ घले आवहि नानका सदे उठी जाहि ॥ १ ॥

श्लोक महला २॥ उसके आगे भला क्या बोलना, जो स्वयं अन्तर्यामी है। दरअसल वही मालिक माना जाता है, जिसके हुक्म को टाला नहीं जाता। वही नेता, शासक एवं सेनानायक है, जिसकी आज्ञा में सब लोग चलते हैं। नानक का कथन है कि जो ईश्वर को अच्छा लगता है, वही कार्य भला है। जिन्हें संसार से चलने का हुक्म आता है, उनके हाथ में कुछ भी नहीं होता। मालिक का फुरमान आते ही वे उठकर चल पड़ते हैं। जैसी मौत की चिड्डी लिखी होती है, वैसे ही उसके हुक्म को मानना पड़ता है। हे नानक! ईश्वर के भेजने पर जीव जन्म लेते हैं और मृत्यु का आह्वान होने पर शरीर छोड़ देते हैं॥१॥

महला २ ॥ सिफति जिना कउ बखसीऐ सेई पोतेदार ॥ कुंजी जिन कउ दितीआ तिन्हा मिले भंडार ॥ जह भंडारी हू गुण निकलहि ते कीअहि परवाणु ॥ नदरि तिन्हा कउ नानका नामु जिन्हा नीसाणु ॥ २ ॥

महला २॥ जिनको ईश्वर की स्तुति का दान प्राप्त हुआ है, वही पूंजीपति हैं। जिनको कुंजी प्राप्त होती है, उनको ही भण्डार मिलता है। वही दरबार में मान्य होता है, जिस भण्डारी के पास गुण मौजूद हैं। हे नानक! उन पर ही कृपा-दृष्टि होती है, जिनके पास हरिनाम का चिन्ह होता है॥२॥

पउड़ी ॥ नामु निरंजनु निरमला सुणिऐ सुखु होई ॥ सुणि सुणि मंनि वसाईऐ बूझै जनु कोई ॥ बहदिआ उठदेआ न विसरै साचा सचु सोई ॥ भगता कउ नाम अधारु है नामे सुखु होई ॥ नानक मनि तनि रवि रहिआ गुरमुखि हरि सोई ॥ ५ ॥

पउड़ी॥ पावन हरिनाम का संकीर्तन सुनने से सुख प्राप्त होता है। हरिनाम को सुन-सुनकर मन में बसाना चाहिए, जिसे कोई विरला ही बूझता है। उठते-बैठते सच्चा हरिनाम भूलना नहीं चाहिए। भक्तों का आसरा केवल हरिनाम है और वे नामोच्चारण में ही सुखी रहते हैं। हे नानक! गुरुमुखों के मन-तन में ईश्वर ही बसा हुआ है॥५॥

सलोक महला १ ॥ नानक तुलीअहि तोल जे जीउ पिछै पाईऐ ॥ इकसु न पुजहि बोल जे पूरे पूरा करि मिलै ॥ वडा आखणु भारा तोलु ॥ होर हउली मती हउले बोल ॥ धरती पाणी परबत भारु ॥ किउ कंडै तोलै सुनिआरु ॥ तोला मासा रतक पाइ ॥ नानक पुछिआ देइ पुजाइ ॥ मूरख अंधिआ अंधी धातु ॥ कहि कहि कहणु कहाइनि आपु ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ गुरु नानक का कथन है कि यदि दिल की भावना को पलड़े में रखा जाए तो ही तौल पूरा उतरता है (मात्र पूजा-पाठ से तोलना मुमकिन नहीं)। परमात्मा की निष्ठापूर्वक

उपासना के अतिरिक्त कोई जप-तप, मंत्र तुल्य नहीं, निष्ठापूर्वक नामोच्चारण, नामोपासना से ही प्रभु से मिला जा सकता है। परमात्मा को बड़ा मानना अथवा यशोगान ही भारी तौल है। अन्य बोलना व चतुराई हलके ही सिद्ध होते हैं। ईश्वर का स्तुतिगान धरती, पानी एवं पर्वत से भी भारी है, सुनार के तराजू पर भी इसे तौला नहीं जा सकता। नानक कथन करते हैं कि कर्मकाण्ड दरअसल तौले-माशे पुण्य फल की बात बताकर समझाने की कोशिश करता है। मूर्ख अज्ञानी की बातें भी अंधी ही होती हैं। वह कह-कहकर आत्म-प्रशंसा सिद्ध करता है॥ १॥

महला १ ॥ आखणि अउखा सुनणि अउखा आखि न जापी आखि ॥ इकि आखि आखहि सबदु भाखहि अरध उरध दिनु राति ॥ जे किहु होइ त किहु दिसै जापै रूपु न जाति ॥ सभि कारण करता करे घट अउघट घट थापि ॥ आखणि अउखा नानका आखि न जापै आखि ॥ २ ॥

महला १॥ ईश्वर की महिमा को कहना और सुनना मुश्किल है, उसकी महिमा करके उसके रहस्य की अनुभूति नहीं हो सकती। कोई दिन-रात उलटा लटक कर या सीधा एक ही शब्द रटता रहता है। अगर उसका एक रूप हो तो कुछ दिखाई दे, उसका रूप-जाति कोई नहीं है। सब ईश्वर ही करता है, छोटा-बड़ा सब वही बनाने वाला है; वह सर्वकर्ता है। गुरु नानक कथन करते हैं कि ईश्वर की महिमा का बखान बहुत मुश्किल है, उसके रहस्य की मात्र बखान से अनुभूति नहीं हो सकती॥ २॥

पउड़ी ॥ नाइ सुणिऐ मनु रहसीऐ नामे सांति आई ॥ नाइ सुणिऐ मनु त्रिपतीऐ सभ दुख गवाई ॥ नाइ सुणिऐ नाउ ऊपजै नामे वडिआई ॥ नामे ही सभ जाति पति नामे गति पाई ॥ गुरमुखि नामु धिआईऐ नानक लिव लाई ॥ ६ ॥

पउड़ी॥ हरि-नाम का संकीर्तन सुनने से मन प्रसन्न हो जाता है, इससे मन को शान्ति प्राप्त होती है। हरि-नाम की कीर्ति सुनने से मन तृप्त हो जाता है और सब दुख दूर होते हैं। हरि-नाम की महिमा सुनने से जगत में ख्याति होती है, समूची सृष्टि में हरिनाम का गौरवगान है। हरि-नाम ही जाति-प्रतिष्ठा है और इसी से मुक्ति होती है। गुरु नानक का मत है कि गुरुमुख बनकर हरि-नाम का ध्यान करो, नाम में ही लगन लगाओ॥ ६॥

सलोक महला १ ॥ जूठि न रागीं जूठि न वेदीं ॥ जूठि न चंद सूरज की भेदी ॥ जूठि न अंनी जूठि न नाई ॥ जूठि न मीहु वर्हिऐ सभ थाई ॥ जूठि न धरती जूठि न पाणी ॥ जूठि न पउणै माहि समाणी ॥ नानक निगुरिआ गुणु नाही कोइ ॥ मुहि फेरिऐ मुहु जूठा होइ ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ गीत-संगीत में कोई जूठन नहीं और न ही वेदों के सस्वर पाठ-पठन में कोई जूठन है। सूर्य एवं चाँद की वजह से होने वाले मौसम परिवर्तन (अमावस्या, पूर्णिमा इत्यादि माह-त्यौहार) में कोई जूठन नहीं। अनाज एवं तीर्थ स्नान में भी कोई अपवित्रता नहीं। सब स्थानों में बारिश होती है, इसमें भी कोई जूठन नहीं। धरती एवं पानी में भी जूठन नहीं। हर तरफ फैली हुई वायु में भी अपवित्रता नहीं। गुरु नानक का कथन है कि निगुरे जीव के पास कोई गुण नहीं होता, गुरु से विमुख होने के कारण मुँह जूठा ही होता है॥ १॥

महला १ ॥ नानक चुलीआ सुचीआ जे भरि जाणै कोइ ॥ सुरते चुली गिआन की जोगी का जतु होइ ॥ ब्रहमण चुली संतोख की गिरही का सतु दानु ॥ राजे चुली निआव की पड़िआ सचु धिआनु ॥ पाणी चितु न धोपई मुखि पीतै तिख जाइ ॥ पाणी पिता जगत का फिरि पाणी सभु खाइ ॥ २ ॥

(एक बार गुरु नानक देव जी हरिद्वार गए तो वहाँ पण्डित-ब्राह्मण अंजुलि में पानी भरकर सूर्य को दे रहे थे। यह देखकर जब गुरु जी गंगा में से अंजुलि भरकर सूर्य की ओर से पीठ करके पानी देने लगे तो ब्राह्मणों ने एतराज किया तो गुरु जी ने प्रत्युत्तर दिया–)

महला १॥ गुरु नानक उपदेश देते हैं कि यदि कोई अंजुलि भरना जानता हो तो ही शुद्ध एवं उपयोगी है (अर्थात् अपने कर्त्तव्य एवं संकल्प को पूरा निभाना जानता हो) विद्वान की अंजुलि (संकल्प) ज्ञान देना है और योगी की अंजुलि (कर्त्तव्य) ब्रह्मचार्य है। ब्राह्मण का कर्त्तव्य संतोष है और गृहस्थी का (कर्त्तव्य) सत्याचरण एवं दान-पुण्य है। राजा की अंजुलि (कर्त्तव्य) सच्चा न्याय करना है और शिक्षित का सत्य एवं ध्यान लगाना है। पानी से मन साफ नहीं होता, पानी पीने से प्यास ही बुझती है। पानी को जगत का पिता माना जाता है और पानी ही मौत का कारण भी बन जाता है। (इसलिए पानी की अंजुलि कर्त्तव्य एवं प्रण के लिए उचित नहीं)॥२॥

पउड़ी ॥ नाइ सुणिऐ सभ सिधि है रिधि पिछै आवै ॥ नाइ सुणिऐ नउ निधि मिलै मन चिंदिआ पावै ॥ नाइ सुणिऐ संतोखु होइ कवला चरन धिआवै ॥ नाइ सुणिऐ सहजु ऊपजै सहजे सुखु पावै ॥ गुरमती नाउ पाईऐ नानक गुण गावै ॥ ७ ॥

पउड़ी॥ परमात्मा का नाम सुनने से सब ऋद्धियाँ-सिद्धियाँ प्राप्त हो जाती हैं। हरि-नाम सुनने से नवनिधियाँ प्राप्त होती हैं और मन की समस्त कामनाएँ पूरी होती हैं। प्रभु-नाम श्रवण से संतोष होता है और धन-दौलत के ढेर लग जाते हैं। हरि-नाम श्रवण से स्वाभाविक शान्ति उत्पन्न होती है और सुखों की प्राप्ति होती है। गुरु की शिक्षा से ही हरि-नाम पाया जाता है, नानक तो हरि-नाम के गुण गा रहा है॥७॥

सलोक महला १ ॥ दुख विचि जंमणु दुखि मरणु दुखि वरतणु संसारि ॥ दुखु दुखु अगै आखीऐ पढ़ि पढ़ि करहि पुकार ॥ दुख कीआ पंडा खुल्हीआ सुखु न निकलिओ कोइ ॥ दुख विचि जीउ जलाइआ दुखीआ चलिआ रोइ ॥ नानक सिफती रतिआ मनु तनु हरिआ होइ ॥ दुख कीआ अगी मारीअहि भी दुखु दारू होइ ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ दुख में जन्म होता है और दुख में ही मृत्यु होती है। जन्म-मरण दुख ही दुख है, इस तरह संसार का व्यवहार दुखमय है। हर कोई अपने दुख ही दुख बता रहा है, पढ़-पढ़कर फरियाद करता है। सब ओर दुखों की गठरियां खुली हुई हैं और कोई सुख नहीं दिखाई देता। जीव दुख में दिल जला रहा है और दुखी की मृत्यु पर रो रहा है। गुरु नानक फुरमान करते हैं कि परमात्मा की स्तुति में लीन रहने से मन तन खिलता है और दुख की अग्नि में जल रहे मनुष्यों की दवा भी दुख ही है॥१॥

महला १ ॥ नानक दुनीआ भसु रंगु भसू हू भसु खेह ॥ भसो भसु कमावणी भी भसु भरीऐ देह ॥ जा जीउ विचहु कढीऐ भसू भरिआ जाइ ॥ अगै लेखै मंगिऐ होर दसूणी पाइ ॥ २ ॥

महला १॥ गुरु नानक फुरमान करते हैं कि यह दुनिया धूल ही धूल है, इसके खेल-तमाशे, खुशियां धूल मात्र ही हैं। दुनियावी कमाई भी धूल समान है, यह शरीर भी अन्त में धूल हो जाता है। अगर शरीर में से प्राण निकाल दिए जाएँ तो धूल मिट्टी ही भर जाता है। जब कर्मों का हिसाब-किताब मांगा जाता है तो दस गुणा और धूल प्राप्त होती है॥२॥

पउड़ी ॥ नाइ सुणिऐ सुचि संजमो जमु नेड़ि न आवै ॥ नाइ सुणिऐ घटि चानणा आन्हेरु गवावै ॥ नाइ सुणिऐ आपु बुझीऐ लाहा नाउ पावै ॥ नाइ सुणिऐ पाप कटीअहि निरमल सचु पावै ॥ नानक नाइ सुणिऐ मुख उजले नाउ गुरमुखि धिआवै ॥ ८ ॥

पउड़ी॥ हरि-नाम सुनने से शुद्धता एवं संयम प्राप्त होता है और यम भी पास नहीं फटकते। प्रभु का नाम सुनने से हृदय में ज्ञान का आलोक होता है और अज्ञान का अंधेरा दूर हो जाता है। परमात्मा का नाम श्रवण करने से आत्म-ज्ञान की प्राप्ति होती है और नाम से ही लाभ मिलता है। ईश्वर का नाम सुनने से सब पाप कट जाते हैं और निर्मल जीवन-आचरण प्राप्त होता है। गुरु नानक का कथन है कि प्रभु का नाम सुनने से मान-प्रतिष्ठा मिलती है, गुरु-मतानुसार चलने वाला प्रभु-नाम का ध्यान करता है॥ ८॥

सलोक महला १ ॥ घरि नाराइणु सभा नालि ॥ पूज करे रखै नावालि ॥ कुंगू चंनणु फुल चड़ाए ॥ पैरी पै पै बहुतु मनाए ॥ माणूआ मंगि मंगि पैन्है खाइ ॥ अंधी कंमी अंध सजाइ ॥ भुखिआ देइ न मरदिआ रखै ॥ अंधा झगड़ा अंधी सथै ॥ १ ॥

{श्री गुरु नानक देव जी इस पद में मूर्ति-पूजा का खण्डन एवं ढोंगी पुजारियों की आलोचना करते हैं।}

श्लोक महला १॥ पुजारी अपने घर अथवा मन्दिर में अन्य देवी-देवताओं सहित नारायण की मूर्ति रख लेता है। वह नित्य इनकी पूजा-अर्चना करता है और स्नान भी करवाता है। वह केसर, चन्दन एवं फूल चढ़ाता है और उनके पैरों में पड़-पड़कर मनाने का भरसक प्रयास करता है। (समाज की अजीब विडम्बना है कि) वह लोगों से (दान-दक्षिणा इत्यादि) मांग-मांगकर खाता-पहनता है। इस प्रकार अज्ञानपूर्ण कर्म में अन्धा दण्ड ही प्राप्त होता है। पत्थरों की मूर्तियाँ न तो भूखे लोगों का पेट भर सकती हैं और न ही मरने से बचा सकती हैं। फिर भला अन्धों की झुण्डली में अंधा झगड़ा किसलिए॥ १॥

महला १ ॥ सभे सुरती जोग सभि सभे बेद पुराण ॥ सभे करणे तप सभि सभे गीत गिआन ॥ सभे बुधी सुधि सभि सभि तीरथ सभि थान ॥ सभि पातिसाहीआ अमर सभि सभि खुसीआ सभि खान ॥ सभे माणस देव सभि सभे जोग धिआन ॥ सभे पुरीआ खंड सभि सभे जीअ जहान ॥ हुकमि चलाए आपणै करमी वहै कलाम ॥ नानक सचा सचि नाइ सचु सभा दीबानु ॥ २ ॥

महला १॥ सभी चिन्तन, योग-साधना, सभी वेद-पुराणों का पाठ-पठन, सभी कर्म, तपस्या, गीत, ज्ञान, सब बुद्धियाँ, शुद्धता, सभी तीर्थ, पावन स्थल, सब हकूमतें, सब कानून, सब खुशियां, सब भोजन, सभी मनुष्यों, देवताओं, योगियों, ध्यानशीलों, सब पुरियों, खण्डों, संसार के सब जीवों को ईश्वर अपने हुक्म से चला रहा है और कर्मों के अनुसार फल देता जा रहा है। गुरु नानक कथन करते हैं कि ईश्वर सत्य है, उसका नाम शाश्वत है, उसकी अदालत भी अटल है॥ २॥

पउड़ी ॥ नाइ मंनिऐ सुखु ऊपजै नामे गति होई ॥ नाइ मंनिऐ पति पाईऐ हिरदै हरि सोई ॥ नाइ मंनिऐ भवजलु लंघीऐ फिरि बिघनु न होई ॥ नाइ मंनिऐ पंथु परगटा नामे सभ लोई ॥ नानक सतिगुरि मिलिऐ नाउ मंनीऐ जिन देवै सोई ॥ ६ ॥

पउड़ी॥ हरिनाम का मनन करने से सुख ही सुख उत्पन्न होता है और नाम से ही मुक्ति होती है। नाम का मनन करने से संसार में इज्जत प्राप्त होती है और हृदय में ईश्वर ही बसता

है। यदि हरिनाम का मनन किया जाए तो संसार-सागर से पार हुआ जा सकता है, पुनः कोई विपत्ति का सामना नहीं करना पड़ता। प्रभु के नाम-मनन से सच्चा मार्ग प्राप्त होता है और नाम से दुनिया में कीर्ति होती है। हे नानक! यदि सच्चा गुरु मिल जाए तो ही हरिनाम का मनन होता है, जिसे वह देता है, वही पाता है॥ ६॥

सलोक मः १ ॥ पुरीआ खंडा सिरि करे इक पैरि धिआए ॥ पउणु मारि मनि जपु करे सिरु मुंड़ी तलै देइ ॥ किसु उपरि ओहु टिक टिकै किस नो जोरु करेइ ॥ किस नो कहीऐ नानका किस नो करता देइ ॥ हुकमि रहाए आपणै मूरखु आपु गणेइ ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ बड़े-बड़े नगरों एवं प्रदेशों को जीत लिया जाए, एक पैर पर खड़े होकर तपस्या की जाए। प्राणायाम कर जप किया जाए, शीर्षासन कर लिया जाए। जीव कोई भी तरीका अपना ले, बेशक कोई भी ताकत अपना ले। हे नानक! किसी को कहा नहीं जा सकता, ईश्वर किस को खुश होकर देता है। सब ईश्वर के हुक्म से हो रहा है, किन्तु मूर्ख यह मानता है कि यह मेरी शक्ति का फल है॥ १॥

मः १ ॥ है है आखां कोटि कोटि कोटी हू कोटि कोटि ॥ आखूं आखां सदा सदा कहणि न आवै तोटि ॥ ना हउ थकां न ठाकीआ एवड रखहि जोति ॥ नानक चसिअहु चुख बिंद उपरि आखणु दोसु ॥ २ ॥

महला १॥ मैं करोड़ों दफा परमात्मा की हस्ती, अनंतशक्ति, सर्वव्यापकता, सत्ता एवं महिमा की बात कहता रहूँ। मैं बेशक सदैव कहता रहूँ, वह शाश्वत, चिरस्थाई, अटल है और मेरे यह कहने में कोई कमी भी न आए। वह मुझे इतनी समर्था दे कि यह बात कहते कभी थक न पाऊँ, कोई रुकावट भी पेश न आए। गुरु नानक फुरमाते हैं कि इन सबके बावजूद भी उस सर्वशक्तिमान के बारे में जितना भी कहता हूँ, बहुत थोड़ा है, उसकी प्रशंसा के लिए कहना पूरा नहीं है॥ २॥

पउड़ी ॥ नाइ मंनिऐ कुलु उधरै सभु कुटंबु सबाइआ ॥ नाइ मंनिऐ संगति उधरै जिन रिदै वसाइआ ॥ नाइ मंनिऐ सुणि उधरे जिन रसन रसाइआ ॥ नाइ मंनिऐ दुख भुख गई जिन नामि चितु लाइआ ॥ नानक नामु तिनी सालाहिआ जिन गुरू मिलाइआ ॥ १० ॥

पउड़ी॥ हरिनाम के मनन से समूचे परिवार सहित कुल का उद्धार हो जाता है। नाम का मनन करने से उसकी संगत में उद्धार हो जाता है, जिसने दिल में परमात्मा को बसाया होता है। हरिनाम के मनन एवं श्रवण से उसी का उद्धार होता है, जो रसना से हरि का भजन करता है। हरिनाम के मनन से दुख एवं भूख भी दूर हो गई, जिसने नाम में मन लगाया है। गुरु नानक का फुरमान है कि उन्होंने ही ईश्वर का स्तुतिगान किया है, जिनका गुरु से साक्षात्कार हुआ है॥ १०॥

सलोक मः १ ॥ सभे राती सभि दिह सभि थितीं सभि वार ॥ सभे रुती माह सभि सभि धरतीं सभि भार ॥ सभे पाणी पउण सभि सभि अगनी पाताल ॥ सभे पुरीआ खंड सभि सभि लोअ लोअ आकार ॥ हुकमु न जापी केतड़ा कहि न सकीजै कार ॥ आखहि थकहि आखि आखि करि सिफतीं वीचार ॥ त्रिणु न पाइओ बपुड़ी नानकु कहै गवार ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ सभी दिन-रात, सब तिथियाँ एवं वार, मौसम, महीने, समूची धरती, पर्वत, हवा, पानी, अग्नि, पाताल, सभी प्रदेश, नगर, चौदह लोक, संसार सब कितना बड़ा है। परमात्मा

के हुक्म का रहस्य प्राप्त नहीं हो सकता, उसकी महिमा, उपलब्धियों एवं लीलाओं का वर्णन भी नहीं हो सकता। उसकी स्तुति करने वाले स्तुतिगान कर करके थक गए हैं। हे नानक! उन गंवारों को थोड़ा-सा भी रहस्य प्राप्त नहीं हुआ॥१॥

मः १ ॥ अखंी परणै जे फिरां देखां सभु आकारु ॥ पुछा गिआनी पंडितां पुछा बेद बीचार ॥ पुछा देवां माणसां जोध करहि अवतार ॥ सिध समाधी सभि सुणी जाइ देखां दरबारु ॥ अगै सचा सचि नाइ निरभउ भै विणु सारु ॥ होर कची मती कचु पिचु अंधिआ अंधु बीचारु ॥ नानक करमी बंदगी नदरि लंघाए पारि ॥ २ ॥

महला १॥ यदि आँखों के भार घूमकर सृष्टि को देखूँ। ज्ञानी, पण्डितों से सच्चाई पूछूँ, वेदों का चिन्तन करके रहस्य पूछूँ, देवताओं, मनुष्यों, योद्धाओं एवं अवतारों से तथ्य को पूछूँ। सिद्धों की समाधि में ईश्वर का यश सुन लूँ, उसके दरबार का वैभव जाकर देखूँ। आगे सब परम सत्य, निर्भय प्रभु का सच्चा नाम ही है। अन्य सब कच्ची बुद्धि, व्यर्थ एवं अज्ञानांध विचार है। गुरु नानक फुरमान करते हैं कि परमात्मा की कृपा से ही बंदगी होती है, यदि कृपा-दृष्टि हो जाए तो संसार-सागर से पार लंघा देती है॥२॥

पउड़ी ॥ नाइ मंनिऐ दुरमति गई मति परगटी आइआ ॥ नाउ मंनिऐ हउमै गई सभि रोग गवाइआ ॥ नाइ मंनिऐ नामु ऊपजै सहजे सुखु पाइआ ॥ नाइ मंनिऐ सांति ऊपजै हरि मंनि वसाइआ ॥ नानक नामु रतंनु है गुरमुखि हरि धिआइआ ॥ ११ ॥

पउड़ी॥ परमेश्वर के नाम-मनन से दुर्मति दूर हो जाती है और सद्बुद्धि प्रगट हो जाती है। यदि ईश्वर के नाम का मनन किया जाए तो अहम्-भाव एवं सब रोग दूर हो जाते हैं। प्रभु-नाम के मनन से हरिनामोच्चारण ही उपजता है और स्वाभाविक सुख-शान्ति प्राप्त होती है। नाम के मनन से मन में शान्ति पैदा होती है और प्रभु मन में अवस्थित होता है। हे नानक! हरि-नाम अमूल्य रत्न है, गुरुमुख ने परमात्मा का भजन किया है॥११॥

सलोक मः १ ॥ होरु सरीकु होवै कोई तेरा तिसु अगै तुधु आखां ॥ तुधु अगै तुधै सालाही मै अंधे नाउ सुजाखा ॥ जेता आखणु साही सबदी भाखिआ भाइ सुभाई ॥ नानक बहुता एहो आखणु सभ तेरी वडिआई ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ हे सृष्टिकर्ता! यदि कोई दूसरा तेरा शरीक हो तो उसके समक्ष तेरा ही यश गाऊँगा। तेरे पास तेरी प्रशंसा कर रहा हूँ, मैं बेशक अंधा हूँ, पर नाम मेरा दूरदर्शी पड़ गया है। जितना कहता हूँ, सब शब्दों में ही हो रहा है और कहना भी स्वभावानुसार ही है। गुरु नानक का कथन है कि मेरा अधिकतर यही कहना है कि सब तेरी कीर्ति है॥१॥

मः १ ॥ जां न सिआ किआ चाकरी जां जंमे किआ कार ॥ सभि कारण करता करे देखै वारो वार ॥ जे चुपै जे मंगिऐ दाति करे दातारु ॥ इकु दाता सभि मंगते फिरि देखहि आकारु ॥ नानक एवै जाणीऐ जीवै देवणहारु ॥ २ ॥

महला १॥ जब प्राणी का कोई अस्तित्व नहीं था, तब क्या नौकरी करता था। जब जन्म ले लिया तो फिर भला कौन-सी अपनी मर्जी से काम कर रहा है। परमेश्वर ही सब कारण करता है और बार-बार देखरेख करता है। यदि चुप रहा जाए अथवा मांगा जाए, वह देने वाला स्वेच्छा से देता है। यद्यपि

पूरा संसार घूमकर देखा जाए तो भी यही ज्ञात होता है कि एकमात्र ईश्वर ही दाता है, सब लोग भिखारी हैं। हे नानक! यही मानना चाहिए कि देने वाला परमेश्वर सदा शाश्वत है॥ २॥

पउड़ी ॥ नाइ मंनिऐ सुरति ऊपजै नामे मति होई ॥ नाइ मंनिऐ गुण उचरै नामे सुखि सोई ॥ नाइ मंनिऐ भ्रमु कटीऐ फिरि दुखु न होई ॥ नाइ मंनिऐ सालाहीऐ पापां मति धोई ॥ नानक पूरे गुर ते नाउ मंनीऐ जिन देवै सोई ॥ १२ ॥

पउड़ी॥ परमात्मा के नाम-मनन से ज्ञान एवं सद्‌बुद्धि उत्पन्न होती है। हरिनाम को मानने से गुणों का उच्चारण होता है और सुखों की प्राप्ति होती है। नाम-मनन से सब भ्रम कट जाते हैं और पुनः कोई दुख प्रभावित नहीं करता। नाम-मनन से पाप-बुद्धि धुल जाती है और ईश्वर का स्तुतिगान होता है। हे नानक! पूर्ण गुरु से ही हरि-नाम का मनन होता है, जिसे स्वयं ऐसी शक्ति देता है॥ १२॥

सलोक मः १ ॥ सासत्र बेद पुराण पढ़ंता ॥ पूकारंता अजाणंता ॥ जां बूझै तां सूझै सोई ॥ नानकु आखै कूक न होई ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ पण्डित शास्त्रों, वेदों एवं पुराणों का पठन करता है, सस्वर लोगों को सुनाता है। जब ज्ञान होता है तो ही तथ्य की सूझ होती है। हे नानक! फिर चिल्ला-चिल्लाकर लोगों को नहीं कहता॥ १॥

मः १ ॥ जां हउ तेरा तां सभु किछु मेरा हउ नाही तू होवहि ॥ आपे सकता आपे सुरता सकती जगतु परोवहि ॥ आपे भेजे आपे सदे रचना रचि रचि वेखै ॥ नानक सचा सची नांई सचु पवै धुरि लेखै ॥ २ ॥

महला १॥ जब मैं तेरा हूँ तो सबकुछ मेरा ही है, मैं नहीं तो भी तू ही होता है। तू सर्वशक्तिमान है, स्वयं ही बुद्धिमान है और अपनी शक्ति से संसार को पिरोया हुआ है। प्रभु स्वयं ही भेजता है, स्वयं ही बुला लेता है और सृष्टि की रचना करके देखता है। हे नानक! सच्चे नाम से ही जीव सत्यशील होता है और सत्यशील ही प्रभु दरबार में मान्य होता है॥ २॥

पउड़ी ॥ नामु निरंजन अलखु है किउ लखिआ जाई ॥ नामु निरंजन नालि है किउ पाईऐ भाई ॥ नामु निरंजन वरतदा रविआ सभ ठांई ॥ गुर पूरे ते पाईऐ हिरदै देइ दिखाई ॥ नानक नदरी करमु होइ गुर मिलीऐ भाई ॥ १३ ॥

पउड़ी॥ नाम निरञ्जन अदृष्ट है, उसे किस तरह देखा जा सकता है। पावन प्रभु नाम हमारे साथ ही है, उसे कैसे पाया जा सकता है। निरञ्जन नाम समूची सृष्टि में कार्यशील है। पूर्ण गुरु से ही प्राप्त होता है और हृदय में ही दिखाई देता है। नानक का कथन है कि हे भाई! पर गुरु भी प्रभु की कृपा-दृष्टि से ही मिलता है॥ १३॥

सलोक मः १ ॥ कलि होई कुते मुही खाजु होआ मुरदारु ॥ कूड़ु बोलि बोलि भउकणा चूका धरमु बीचारु ॥ जिन जीवंदिआ पति नही मुइआ मंदी सोइ ॥ लिखिआ होवै नानका करता करे सु होइ ॥ १ ॥

{गुरु नानक देव जी समाज में बढ़ते भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी, इंसाफ का हनन एवं बेइमानी की तरफ संकेत करते हैं।}

श्लोक महला १॥ कलियुग के लोग कुत्ते की तरह लालची हो गए हैं और रिश्वत एवं घूसखोरी ही इनका भोजन है। ये झूठ बोल-बोलकर भौंकते हैं और धर्म-कर्त्तव्य की बात खत्म हो गई है। जिनकी जिंदा रहते इज्जत नहीं, मरने के बाद भी बदनामी ही होती है। नानक कथन करते हैं कि चाहे भाग्यानुसार होता है, परन्तु जो ईश्वर करता है, वही होता है॥१॥

मः १ ॥ रंना होईआ बोधीआ पुरस होए सईआद ॥ सीलु संजमु सुच भंनी खाणा खाजु अहाजु ॥ सरमु गइआ घरि आपणै पति उठि चली नालि ॥ नानक सचा एकु है अउरु न सचा भालि ॥ २ ॥

{इस पद में गुरु साहिब देश में नारी शोषण, स्त्रियों पर जुल्म एवं उनकी लाचारी पर पर्दा उठाते हैं।}

महला १॥ मासूम स्त्रियाँ दुर्बल हो गई हैं और चतुर पुरुष अत्याचारी हो गए हैं (वे पुरुषों के जुल्म एवं वासना को बर्दाश्त कर रही हैं)। शील, संयम एवं शुद्धता दूर हो गई है और जायज-नाजायज सब खाया जा रहा है। (बलात्कार एवं कामवासना के कारण) शर्म तो घर से उठकर ही चली गई है, साथ ही (बहु-बेटियों की) इज्जत भी चली गई है। गुरु नानक का कथन है कि केवल ईश्वर ही सच्चा है, किसी अन्य में सच की तलाश मत करो॥२॥

पउड़ी ॥ बाहरि भसम लेपन करे अंतरि गुबारी ॥ खिंथा झोली बहु भेख करे दुरमति अहंकारी ॥ साहिब सबदु न ऊचरै माइआ मोह पसारी ॥ अंतरि लालचु भरमु है भरमै गावारी ॥ नानक नामु न चेतई जूऐ बाजी हारी ॥ १४ ॥

पउड़ी॥ मनुष्य बाहर शरीर पर भस्म लगा लेता है, पर अन्तर्मन में अभिमान ही भरा होता है। दुर्मति के कारण अहंकारी योगी की तरह गुदड़ी झोली धारण करके आडम्बर करता है। मालिक का नामोच्चारण नहीं करता और माया-मोह में लीन रहता है। मन में लालच एवं वहम ही रहता है और वह मूर्ख बनकर भटकता है। हे नानक! वह ईश्वर का चिंतन नहीं करता और अपनी जीवनबाजी जुए में हार देता है॥१४॥

सलोक मः १ ॥ लख सिउ प्रीति होवै लख जीवणु किआ खुसीआ किआ चाउ ॥ विछुड़िआ विसु होइ विछोड़ा एक घड़ी महि जाइ ॥ जे सउ वरिहआ मिठा खाजै भी फिरि कउड़ा खाइ ॥ मिठा खाधा चिति न आवै कउड़तणु धाइ जाइ ॥ मिठा कउड़ा दोवै रोग ॥ नानक अंति विगुते भोग ॥ झखि झखि झखणा झगड़ा झाख ॥ झखि झखि जाहि झखहि तिन्ह पासि ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ बेशक लाखों से हमारा प्रेम हो, लाखों वर्ष तक हमारी जिंदगी हो, इन सबके बावजूद ऐसी खुशियों और चाव का क्या फायदा, क्योंकि एक घड़ी में ही विछोड़ा हो जाता है और इनका वियोग दुखों भरा जहर होता है। चाहे सौ वर्ष तक सुखों भरा मीठा खाता रहे, फिर भी आखिरकार दुख रूपी कड़वा खाना ही पड़ता है। मीठा खाते याद ही नहीं आता परन्तु कड़वा (दुख) हर वक्त याद आता है। मीठा (सुख) एवं कड़वा (दुख) दोनों ही रोग हैं। हे नानक! मीठा-कड़वा भोगने की वजह से मनुष्य परेशान ही होता है। यह सब अनुपयोगी, फलहीन काम, फिजूल आचरण एवं बेकार का झगड़ा मोलना है। फिर भी दुनिया वाले इन विकारों की ओर भागे जाते हैं और इनको जीव पास रखते हैं॥१॥

मः १ ॥ कापड़ु काठु रंगाइआ रांगि ॥ घर गच कीते बागे बाग ॥ साद सहज करि मनु खेलाइआ ॥ तै सह पासहु कहणु कहाइआ ॥ मिठा करि कै कउड़ा खाइआ ॥ तिनि कउड़ै तनि रोगु जमाइआ

॥ जे फिरि मिठा पेड़ै पाइ ॥ तउ कउड़तणु चूकसि माइ ॥ नानक गुरमुखि पावै सोइ ॥ जिस नो प्रापति लिखिआ होइ ॥ २ ॥

महला १॥ लोग कपड़े एवं लकड़ी की चीजों को भिन्न-भिन्न रंगों में रंगते हैं। अपने घर की सफेदी कर सुन्दर बनाते हैं। इन आनंदों एवं सुखों में मन को बहलाते हैं और मालिक से डाँट-फटकार मिलती है। लोग विकारों की कड़वाहट को मीठा मानकर खाते हैं और यह कड़वाहट उनके तन में रोग पैदा करती है। हे माँ! यदि मनुष्य पुनः मीठे (हरि-नाम) में दिलचस्पी ले तो (माया का) कड़वापन दूर हो जाता है। गुरु नानक फुरमान करते हैं– गुरु से सत्य को वही पाता है, जिसके भाग्य में प्राप्ति होती है॥ २॥

पउड़ी ॥ जिन कै हिरदै मैलु कपटु है बाहरु धोवाइआ ॥ कूड़ु कपटु कमावदे कूड़ु परगटी आइआ ॥ अंदरि होइ सु निकलै नह छपै छपाइआ ॥ कूड़ै लालचि लगिआ फिरि जूनी पाइआ ॥ नानक जो बीजै सो खावणा करतै लिखि पाइआ ॥ १५ ॥

पउड़ी॥ जिनके हृदय में मैल एवं कपट होता है, वे केवल बाहर से स्वच्छ दिखाई देते हैं। वे झूठ एवं कपट का आचरण अपनाते हैं परन्तु उनका झूठ सामने आ ही जाता है। जो मनुष्य के अन्तर्मन में होता है, वह बाहर निकल ही आता है और वह छिपा नहीं रहता। झूठ एवं लालच में लिप्त रहने वाले पुनः योनियों में पड़ते हैं। हे नानक! विधाता का यही विधान है कि जो जैसा कर्म करता है, वैसा ही फल पाता है॥ १५॥

सलोक मः २ ॥ कथा कहाणी बेदीं आणी पापु पुंनु बीचारु ॥ दे दे लैणा लै लै देणा नरकि सुरगि अवतार ॥ उतम मधिम जातीं जिनसी भरमि भवै संसारु ॥ अंम्रित बाणी ततु वखाणी गिआन धिआन विचि आई ॥ गुरमुखि आखी गुरमुखि जाती सुरतीं करमि धिआई ॥ हुकमु साजि हुकमै विचि रखै हुकमै अंदरि वेखै ॥ नानक अगहु हउमै तुटै तां को लिखीऐ लेखै ॥ १ ॥

श्लोक महला २॥ जो कथा-कहानियाँ वेदों में आई हैं, उस में पाप-पुण्य की बात की गई है। (वेद कथन करते हैं–) दिया हुआ (सुख अथवा दुख) लेना है और ले-लेकर उसे ही देना है, इस प्रकार (फल रूप में) नरक स्वर्ग में जन्म है। वेदों के अनुसार बतलाया गया है कि उच्च अथवा निम्न जाति के लोग भ्रम के कारण संसार में भटकते हैं। दूसरी तरफ गुरु की अमृतवाणी सार तत्व की चर्चा करती है, दरअसल यह ज्ञान ध्यान की अवस्था में आई है। गुरु ने जो वाणी कही है, इसके तथ्य को उसी ने समझा है और ज्ञानवान् ने प्रभु-कृपा से ध्यान किया है। ईश्वर का हुक्म सर्वाधिकार सम्पन्न है, वह अपने हुक्म से संसार को बनाता है, हुक्म में ही लोगों को रखता है और हुक्म में ही पालन करता है। हे नानक! सर्वप्रथम अगर अहम् का अंत हो जाए तो ही कोई नवीन कर्मालेख लिखा जाता है॥ १॥

मः १ ॥ बेदु पुकारे पुंनु पापु सुरग नरक का बीउ ॥ जो बीजै सो उगवै खांदा जाणै जीउ ॥ गिआनु सलाहे वडा करि सचो सचा नाउ ॥ सचु बीजै सचु उगवै दरगह पाईऐ थाउ ॥ बेदु वपारी गिआनु रासि करमी पलै होइ ॥ नानक रासी बाहरा लदि न चलिआ कोइ ॥ २ ॥

महला १॥ वेद हामी भरते हैं कि स्वर्ग नरक का मूल पाप-पुण्य ही हैं। जीव जो (शुभाशुभ) बोता है, वही उत्पन्न होता है, उसे वही फल मिलता है। गुरु का ज्ञान परमात्मा को बड़ा मानकर

सराहना करता है कि वह सत्य एवं शाश्वत रूप है। सत्य को बोने से सत्य पैदा होता है और प्रभु-दरबार में प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। वेद व्यापारी ही हैं, जो ज्ञान राशि का पूंजी के रूप में इस्तेमाल करते हैं, पर ज्ञान तो प्रभु-कृपा से प्राप्त होता है। हे नानक! ज्ञान-राशि के बिना कोई भी लाभ कमाकर नहीं जाता॥ २॥

पउड़ी ॥ निंमु बिरखु बहु संचीऐ अंम्रित रसु पाइआ ॥ बिसीअरु मंत्रि विसाहीऐ बहु दूधु पीआइआ ॥ मनमुखु अभिंनु न भिजई पथरु नावाइआ ॥ बिखु महि अंम्रितु सिंचीऐ बिखु का फलु पाइआ ॥ नानक संगति मेलि हरि सभ बिखु लहि जाइआ ॥ १६ ॥

पउड़ी॥ अगर नीम का वृक्ष अमृत रस से सींच लिया जाए, इसके बावजूद कड़वा ही रहता है। साँप पर भरोसा करके मंत्र से उसे बहुत दूध पिलाया जाए तो भी वह अपनी आदत नहीं छोड़ता। मन की मर्जी करने वाला अपने स्वभावानुसार वैसा ही रहता है, जैसे पत्थर को स्नान कराने के बावजूद भी नहीं भीगता। यदि जहर में अमृत डाला जाए तो भी जहर का फल ही मिलता है। हे नानक! यदि प्रभु अच्छी संगत में मिला दे तो सारा जहर उतर जाता है॥ १६॥

सलोक मः १ ॥ मरणि न मूरतु पुछिआ पुछी थिति न वारु ॥ इकन्ही लदिआ इकि लदि चले इकन्ही बधे भार ॥ इकन्हा होई साखती इकन्हा होई सार ॥ लसकर सणै दमामिआ छुटे बंक दुआर ॥ नानक ढेरी छारु की भी फिरि होई छार ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ मौत कोई मुहूर्त नहीं पूछती और न ही किसी दिन या तिथि का इंतजार करती है। कई मौत की नींद सो गए हैं, कुछ मौत की आगोश में चले गए हैं और कुछ ऐसे भी हैं, जो पापों का बोझ उठाकर चलने के लिए तैयार हैं। कोई घोड़ा तैयार करके जाने के लिए तैयार है और कोई संभाल कर रहा है। आखिरकार बड़ी-बड़ी फौज, दमामे, सुन्दर घर द्वार छोड़ने ही पड़ते हैं। गुरु नानक साहिब चेताते हैं कि शरीर पहले भी धूल मिट्टी था और दोबारा मिट्टी ही हो जाता है॥ १॥

मः १ ॥ नानक ढेरी ढहि पई मिटी संदा कोटु ॥ भीतरि चोरु बहालिआ खोटु वे जीआ खोटु ॥ २ ॥

महला १॥ मिट्टी का शरीर रूपी किला खत्म होकर मिट्टी का ढेर बन जाता है। इसके भीतर चोर बैठा हुआ था, हे जीव! इस तरह सब दोष ही दोष है॥ २॥

पउड़ी ॥ जिन अंदरि निंदा दुसटु है नक वढे नक वढाइआ ॥ महा करूप दुखीए सदा काले मुह माइआ ॥ भलके उठि नित पर दरबु हिरहि हरि नामु चुराइआ ॥ हरि जीउ तिन की संगति मत करहु रखि लेहु हरि राइआ ॥ नानक पइऐ किरति कमावदे मनमुखि दुखु पाइआ ॥ १७ ॥

पउड़ी॥ जिनके अन्तर्मन में निन्दा है, ऐसे लोग दुष्ट तथा बेशर्म हैं और दूसरों का भी तिरस्कार करवाते हैं। माया में लीन वे सदैव दुखी एवं बदशक्ल होते हैं और अपना मुँह काला करवाते हैं। वे हर रोज सुबह उठकर पराया धन चुराते हैं और हरि-नाम जपने से मन चुराते हैं। हे प्रभु! ऐसे लोगों से मुझे बचा लो और इनकी संगत में हरगिज मत डालना। नानक का कथन है कि स्वेच्छाचारी कर्मालेखानुसार ही आचरण करते हैं और दुखी होते हैं॥ १७॥

सलोक मः ४ ॥ सभु कोई है खसम का खसमहु सभु को होइ ॥ हुकमु पछाणै खसम का ता सचु पावै कोइ ॥ गुरमुखि आपु पछाणीऐ बुरा न दीसै कोइ ॥ नानक गुरमुखि नामु धिआईऐ सहिला आइआ सोइ ॥ १ ॥

श्लोक महला ४॥ सब कुछ मालिक का है, उसी से समूची रचना होती है। जो मालिक के हुक्म को मानता है, वही सत्य पाता है। गुरु द्वारा आत्म-ज्ञान की पहचान होने से कोई बुरा दिखाई नहीं देता। हे नानक ! गुरु के माध्यम से हरि-नाम का चिंतन करने से जीवन सफल हो जाता है॥१॥

मः ४ ॥ सभना दाता आपि है आपे मेलणहारु ॥ नानक सबदि मिले न विछुड़हि जिना सेविआ हरि दातारु ॥ २ ॥

महला ४॥ सबको देने वाला ईश्वर ही है, वह स्वयं ही मिलाने वाला है। नानक फुरमाते हैं कि जो शब्द गुरु द्वारा दाता प्रभु की आराधना करता है, वह मिलकर कभी नहीं बिछुड़ता॥२॥

पउड़ी ॥ गुरमुखि हिरदै सांति है नाउ उगवि आइआ ॥ जप तप तीरथ संजम करे मेरे प्रभ भाइआ ॥ हिरदा सुधु हरि सेवदे सोहहि गुण गाइआ ॥ मेरे हरि जीउ एवै भावदा गुरमुखि तराइआ ॥ नानक गुरमुखि मेलिअनु हरि दरि सोहाइआ ॥ १८ ॥

पउड़ी॥ गुरमुख के अन्तर्मन में नाम-सुमिरन उत्पन्न हो जाता है, जिससे उसके हृदय में सदा शान्ति रहती है। उसका जप, तपस्या, तीर्थ एवं संयम मेरे प्रभु को उपयुक्त लगता है। वह शुद्ध हृदय से परमात्मा की आराधना करता है और गुण-गान करते सुन्दर लगता है। मेरे प्रभु को यही अच्छा लगता है, वह गुरमुख को संसार-सागर से पार कर देता है। हे नानक ! प्रभु गुरमुख को साथ मिला लेता है और वह उसके द्वार में सुन्दर लगता है॥१८॥

सलोक मः १ ॥ धनवंता इव ही कहै अवरी धन कउ जाउ ॥ नानकु निरधनु तितु दिनि जितु दिनि विसरै नाउ ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ धनवान् यही कहता है कि इससे भी अधिक धन-दौलत इकट्ठी की जाए। लेकिन नानक तो उस दिन खुद को निर्धन मानता है, जिस दिन उसे परमात्मा का नाम भूल जाता है॥१॥

मः १ ॥ सूरजु चड़ै विजोगि सभसै घटै आरजा ॥ तनु मनु रता भोगि कोई हारै को जिणै ॥ सभु को भरिआ फूकि आखणि कहणि न थंम्हीऐ ॥ नानक वेखै आपि फूक कढाए ढहि पवै ॥ २ ॥

महला १॥ ज्यों-ज्यों सूर्योदय एवं अस्त होता है, हर रोज उम्र घटती जाती है। मनुष्य का तन मन भोग-पदार्थों में लीन रहता है, कोई जिंदगी हार जाता है तो कोई जीत जाता है। हर कोई अभिमान से भरा हुआ है, समझाने के बावजूद भी बात नहीं मानता। गुरु नानक कथन करते हैं कि ईश्वर सब देखता है, प्राण छूटते ही मनुष्य खत्म हो जाता है॥२॥

पउड़ी ॥ सतसंगति नामु निधानु है जिथहु हरि पाइआ ॥ गुर परसादी घटि चानणा आन्हेरु गवाइआ ॥ लोहा पारसि भेटीऐ कंचनु होइ आइआ ॥ नानक सतिगुरि मिलिऐ नाउ पाईऐ मिलि नामु धिआइआ ॥ जिन्ह कै पोतै पुंनु है तिन्ही दरसनु पाइआ ॥ १९ ॥

पउड़ी॥ संतों की संगत हरिनाम रूपी सुखों का घर है, जहाँ परमात्मा प्राप्त होता है। गुरु

की प्रसन्नता से हृदय में उजाला होता है और अज्ञान का अन्धेरा दूर हो जाता है। (मनुष्य रूपी) लोहा (गुरु रूपी) पारस से मिलकर सोना हो जाता है। हे नानक! सतगुरु के मिलने से ही हरि-नाम प्राप्त होता है, तब परमेश्वर के नाम का ध्यान-मनन होता है। जिनके भाग्य में पुण्य फल होता है, उनको ही हरि-दर्शन प्राप्त होते हैं॥ १६॥

सलोक मः १ ॥ ध्रिगु तिना का जीविआ जि लिखि लिखि वेचहि नाउ ॥ खेती जिन की उजड़ै खलवाड़े किआ थाउ ॥ सचै सरमै बाहरे अगै लहहि न दादि ॥ अकलि एह न आखीऐ अकलि गवाईऐ बादि ॥ अकली साहिबु सेवीऐ अकली पाईऐ मानु ॥ अकली पढ़ि कै बुझीऐ अकली कीचै दानु ॥ नानकु आखै राहु एहु होरि गलां सैतानु ॥ १ ॥

{यहाँ पर गुरु नानक देव जी ने ताबीज, जंत्र-मंत्र, शब्द इत्यादि लिखकर बेचने वाले लोगों पर प्रहार किया है}

श्लोक महला १॥ (छी! छी!!) ऐसे व्यक्तियों का जीना धिक्कार योग्य है, जो नाम लिख-लिखकर बेच रहे हैं। खेती तो उजाड़ते जा रहे हैं, खलिहान के वक्त क्या बचेगा। (यदि नाम रूपी लाभ ही बेच दिया तो फल क्या मिलेगा) सत्य एवं मेहनत के बिना ईश्वर के आगे कोई श्रेय नहीं मिलता। यदि विवाद एवं झगड़े में बुद्धि को बर्बाद किया जाए तो बुद्धिमानी नहीं कहा जाता। काबलियत एवं बुद्धिमता से परमात्मा की उपासना करो, इस बुद्धिमता से ही मान-प्रतिष्ठा को प्राप्त किया जा सकता है। बुद्धि से पठन कर समझना चाहिए और अन्यों को भी बुद्धि प्रदान करो। गुरु नानक कथन करते हैं कि केवल यही सच्चा रास्ता है, अन्य बातें तो शैतानों का काम है॥ १॥

मः २ ॥ जैसा करै कहावै तैसा ऐसी बनी जरूरति ॥ होवहि लिंङ झिंङ नह होवहि ऐसी कहीऐ सूरति ॥ जो ओसु इछे सो फलु पाए तां नानक कहीऐ मूरति ॥ २ ॥

महला २॥ जरूरत इस बात की है कि जैसा कोई (भला-बुरा) आचरण करता है, वैसा ही स्वयं को कहला सकता है। ऐसा ही जीव सुन्दर रूप वाला कहा जाता है, जिसके पास गुण रूपी अंग हैं, बुराइयों से भरा कुरुप नहीं होना चाहिए। हे नानक! वही प्रतिष्ठित कहलाता है, जो ईश्वर को मनाता है, जो कामना करता है, वह वही फल पाता है॥ २॥

पउड़ी ॥ सतिगुरु अंम्रित बिरखु है अंम्रित रसि फलिआ ॥ जिसु परापति सो लहै गुर सबदी मिलिआ ॥ सतिगुर कै भाणै जो चलै हरि सेती रलिआ ॥ जमकालु जोहि न सकई घटि चानणु बलिआ ॥ नानक बखसि मिलाइअनु फिरि गरभि न गलिआ ॥ २० ॥

पउड़ी॥ सतगुरु अमृत का वृक्ष है, जिसे अमृत रस का फल लगता है। जिसे प्राप्त होता है, वही फल पाता है और गुरु के उपदेश से ही मिलता है। जो सतगुरु की रज़ा में चलता है, वह ईश्वर के साथ लीन हो जाता है। उसके हृदय में ज्ञान का आलोक होता है और यमदूत उसे तंग नहीं करते। हे नानक! ईश्वर कृपा करके अपने साथ मिला लेता है और पुनः वह गर्भ योनि में तंग नहीं होता॥ २०॥

सलोक मः १ ॥ सचु वरतु संतोखु तीरथु गिआनु धिआनु इसनानु ॥ दइआ देवता खिमा जपमाली ते माणस परधान ॥ जुगति धोती सुरति चउका तिलकु करणी होइ ॥ भाउ भोजनु नानका विरला त कोई कोइ ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ वही मनुष्य महत्वपूर्ण है, जिसका सत्य ही व्रत-उपवास, संतोष तीर्थ एवं ज्ञान-ध्यान स्नान होता है। वह दया को देवता एवं क्षमा भावना को जपने वाली माला मानता है। उसकी सच्ची जीवन-युक्ति ही धोती, सुरति चौका और शुभ कर्म ही तिलक होता है। लोगों से प्रेम करना भोजन होता है, गुरु नानक फुरमाते हैं, ऐसा मनुष्य कोई विरला ही होता है॥ १॥

महला ३ ॥ नउमी नेमु सचु जे करै ॥ काम क्रोधु त्रिसना उचरै ॥ दसमी दसे दुआर जे ठाकै एकादसी एकु करि जाणै ॥ दुआदसी पंच वसगति करि राखै तउ नानक मनु मानै ॥ ऐसा वरतु रहीजै पाडे होर बहुतु सिख किआ दीजै ॥ २ ॥

{नवमी, दसमी, एकादशी, द्वादशी सरीखे व्रतों पर गुरु साहिब पण्डित को समझाते हैं}

महला ३॥ यदि सत्य को नियम बनाया जाए तो वही नवमी है। काम, क्रोध एवं तृष्णा को छोड़ देना चाहिए। यदि दस इन्द्रियों को काबू में किया जाए तो वही दसमी है। एक परमेश्वर की सत्ता को मानना ही एकादशी है। पाँच विकारों को वश में रखा जाए तो द्वादशी है, गुरु नानक का कथन है कि इस तरह मन प्रसन्न हो सकता है। हे पण्डित जी! ऐसा व्रत रखना चाहिए, भला और अधिक शिक्षा देने का क्या लाभ है॥ २॥

पउड़ी ॥ भूपति राजे रंग राइ संचहि बिखु माइआ ॥ करि करि हेतु वधाइदे पर दरबु चुराइआ ॥ पुत्र कलत्र न विसहहि बहु प्रीति लगाइआ ॥ वेखदिआ ही माइआ धुहि गई पछुतहि पछुताइआ ॥ जम दरि बधे मारीअहि नानक हरि भाइआ ॥ २१ ॥

पउड़ी॥ बादशाह, राजा एवं भिखारी धन-दौलत इकट्ठा करने में लगे हुए हैं। जितना धन इकट्ठा करते हैं, उनका उतना ही मोह बढ़ता है और पराया धन चुराते हैं। इनका धन से इतना प्रेम लगा हुआ है कि अपने पुत्र एवं पत्नी पर भी विश्वास नहीं करते। देखते ही देखते दौलत छीन ली जाती है और बाद में पछताते हैं। हे नानक! ऐसे लोगों को यम के द्वार पर दण्ड प्राप्त होता है, ईश्वर को यही मंजूर है॥ २१॥

सलोक मः १ ॥ गिआन विहूणा गावै गीत ॥ भुखे मुलां घरे मसीति ॥ मखटू होइ कै कंन पड़ाए ॥ फकरु करे होरु जाति गवाए ॥ गुरु पीरु सदाए मंगण जाइ ॥ ता कै मूलि न लगीऐ पाइ ॥ घालि खाइ किछु हथहु देइ ॥ नानक राहु पछाणहि सेइ ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ ज्ञानविहीन पुजारी ईश्वर के गीत गाता है। धन का भूखा मुल्ला घर को मस्जिद बनाकर अपना साधन बनाता है। मनुष्य आलसी होकर कान फड़वा कर योगी बन जाता है और फकीर बनकर अपनी जाति गंवा देता है। कुछ गुरु-पीर कहलाकर माँगने जाते हैं। ऐसे लोगों के पैर बिल्कुल नहीं छूने चाहिएं। जो मेहनत करके निर्वाह करता है, दूसरों की मदद अथवा दान करता है, हे नानक! ऐसा व्यक्ति ही सच्चा जीवन राह पहचानता है॥ १॥

मः १ ॥ मनहु जि अंधे कूप कहिआ बिरदु न जाणन्ही ॥ मनि अंधै ऊंधै कवलि दिसन्हि खरे करूप ॥ इकि कहि जाणहि कहिआ बुझहि ते नर सुघड़ सरूप ॥ इकना नाद न बेद न गीअ रसु रस कस न जाणंति ॥ इकना सुधि न बुधि न अकलि सर अखर का भेउ न लहंति ॥ नानक से नर असलि खर जि बिनु गुण गरबु करंति ॥ २ ॥

महला १॥ मन से अज्ञानांध लोग कुएं के समान हैं, वे अपने वचन का पालन नहीं करते।

मन से अज्ञानांध लोगों का हृदय-कमल उलटा ही होता है और वे खड़े कुरुप ही दिखाई देते हैं। कुछ लोगों को बातचीत करने का तरीका होता है, वे कहे हुए वचन का भेद समझते हैं, दरअसल ऐसे मनुष्य ही बुद्धिमान एवं सुन्दर होते हैं। किसी को गीत-संगीत एवं वेदों का कोई ज्ञान नहीं और न ही भले-बुरे को जानते हैं। किसी को कोई होश नहीं होती, न बुद्धि होती है, न ही अक्ल होती है और तो और अक्षर-ज्ञान का भेद भी नहीं जानते। गुरु नानक फुरमाते हैं कि जो बिना गुणों के भी अहंकार करते हैं, ऐसे व्यक्ति असल में गधे ही हैं॥ २॥

पउड़ी ॥ गुरमुखि सभ पवितु है धनु संपै माइआ ॥ हरि अरथि जो खरचदे देंदे सुखु पाइआ ॥ जो हरि नामु धिआइदे तिन तोटि न आइआ ॥ गुरमुखां नदरी आवदा माइआ सुटि पाइआ ॥ नानक भगतां होरु चिति न आवई हरि नामि समाइआ ॥ २२ ॥

पउड़ी॥ गुरुमुखों के लिए धन, सम्पति, माया इत्यादि सब पवित्र हैं, जो प्रभु-सेवा में खर्च करते हैं, उन्हें देते हुए सुख ही मिलता है। हरि-नाम का ध्यान करने वालों को कोई कमी नहीं आती। गुरुमुखों को सब ओर ईश्वर ही दिखाई देता है, अतः माया को वे दूर फेंक देते हैं। हे नानक! भक्तों को अन्य कुछ याद नहीं आता, वे तो हरि-नाम चिंतन में लीन रहते हैं॥ २२॥

सलोक मः ४ ॥ सतिगुरु सेवनि से वडभागी ॥ सचै सबदि जिन्हा एक लिव लागी ॥ गिरह कुटंब महि सहजि समाधी ॥ नानक नामि रते से सचे बैरागी ॥ १ ॥

श्लोक महला ४॥ सतगुरु की सेवा करने वाले भाग्यशाली हैं, जिनकी सच्चे शब्द गान में लगन लगी रहती है। वे अपनी गृहस्थी परिवार में प्रभु के ध्यान में आनंद-मग्न रहते हैं। हे नानक! हरि-नाम में निमग्न रहने वाले ही सच्चे वैराग्यवान हैं॥ १॥

मः ४ ॥ गणतै सेव न होवई कीता थाइ न पाइ ॥ सबदै सादु न आइओ सचि न लगो भाउ ॥ सतिगुरु पिआरा न लगई मनहठि आवै जाइ ॥ जे इक विख अगाहा भरे तां दस विखां पिछाहा जाइ ॥ सतिगुर की सेवा चाकरी जे चलहि सतिगुर भाइ ॥ आपु गवाइ सतिगुरू नो मिलै सहजे रहै समाइ ॥ नानक तिन्हा नामु न वीसरै सचे मेलि मिलाइ ॥ २ ॥

महला ४॥ लाभ का हिसाब लगाकर की गई सेवा सफल नहीं होती, सब निष्फल हो जाता है। इससे शब्दगान का आनंद नहीं आता और न ही सत्य से प्रेम होता है। उसका सच्चे गुरु से प्रेम नहीं होता, वह मन के हठ से कार्य करके आता जाता रहता है। यदि वह एक कदम आगे उठाता है तो दस कदम पीछे चला जाता है। सतगुरु की सेवा वही सफल एवं फलदायक है, अगर गुरु की रज़ा में सेवा की जाए। अहम्-भावना को छोड़कर सतगुरु से मिलने वाला सुख-शान्ति में लीन रहता है। हे नानक! ऐसे व्यक्ति को परमात्मा का नाम हरगिज नहीं भूलता और वह सच्चे प्रभु से मिला रहता है॥ २॥

पउड़ी ॥ खान मलूक कहाइदे को रहणु न पाई ॥ गढ़ मंदर गच गीरीआ किछु साथि न जाई ॥ सोइन साखति पउण वेग ध्रिगु ध्रिगु चतुराई ॥ छतीह अंम्रित परकार करहि बहु मैलु वधाई ॥ नानक जो देवै तिसहि न जाणन्ही मनमुखि दुखु पाई ॥ २३ ॥

पउड़ी॥ बड़े-बड़े बादशाह एवं खान कहलाने वाले भी सदा नहीं रह पाते। भव्य महल और घर इत्यादि कुछ भी साथ नहीं जाता। अगर कोई सोने की काठी डालकर पवन की रफ्तार की

तरह घोड़े को दौड़ाता है, तो इसकी चतुराई पर धिक्कार है। छत्तीस प्रकार के स्वादिष्ट व्यंजन खाने वाला मनुष्य अपनी मैल में और भी वृद्धि करता है। हे नानक ! जो दे रहा है, उस परमात्मा को मानता नहीं, ऐसा स्वेच्छाचारी दुख ही पाता है॥ २३॥

सलोक मः ३ ॥ पढ़ि पढ़ि पंडित मोनी थके देसंतर भवि थके भेखधारी ॥ दूजै भाइ नाउ कदे न पाइनि दुखु लागा अति भारी ॥ मूरख अंधे त्रै गुण सेवहि माइआ कै बिउहारी ॥ अंदरि कपटु उदरु भरण कै ताई पाठ पड़हि गावारी ॥ सतिगुरु सेवे सो सुखु पाए जिन हउमै विचहु मारी ॥ नानक पड़णा गुनणा इकु नाउ है बूझै को बीचारी ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ वेद-शास्त्रों का पाठ-पठन कर पण्डित एवं मौन रहकर मौनी थक गए हैं, देश-देशान्तर भ्रमण करके वेषधारी साधु भी थक गए हैं। द्वैतभाव में नाम कभी प्राप्त नहीं होता और भारी दुख ही लगे रहते हैं। माया के व्यापारी मूर्ख एवं अन्धे हैं, जो तीन गुणों में लीन रहते हैं। इनके मन में कपट होता है, ऐसे गंवार अपना पेट भरने के लिए पाठ-पूजा करते हैं। जो अहम् को त्यागकर सतिगुरु की सेवा करते हैं, वही सुख प्राप्त करते हैं। हे नानक ! कोई मननशील इस तथ्य को समझता है कि केवल हरि-नाम का पठन एवं गुणानुवाद ही सफल है॥ १॥

मः ३ ॥ नांगे आवणा नांगे जाणा हरि हुकमु पाइआ किआ कीजै ॥ जिस की वसतु सोई लै जाइगा रोसु किसै सिउ कीजै ॥ गुरमुखि होवै सु भाणा मंने सहजे हरि रसु पीजै ॥ नानक सुखदाता सदा सलाहिहु रसना रामु रवीजै ॥ २ ॥

महला ३॥ दुनिया में खाली आना और खाली ही चले जाना है, यह विधाता का विधान है तो फिर भला आपत्ति कैसे की जा सकती है। (अपने की मृत्यु पर) किसी से गुस्सा करना ठीक नहीं, क्योंकि जिस (प्रभु) की वस्तु होती है, वही ले जाता है। जो गुरमुख होता है, वह परमात्मा की रज़ा को मानता है और स्वाभाविक ही हरि-नाम का पान करता है। हे नानक ! सदा सुखदाता की स्तुति करो, रसना से प्रभु भजन में निमग्न रहो॥ २॥

पउड़ी ॥ गढ़ि काइआ सीगार बहु भांति बणाई ॥ रंग परंग कतीफिआ पहिरहि धर माई ॥ लाल सुपेद दुलीचिआ बहु सभा बणाई ॥ दुखु खाणा दुखु भोगणा गरबै गरबाई ॥ नानक नामु न चेतिओ अंति लए छडाई ॥ २४ ॥

पउड़ी॥ शरीर रूपी किले को अनेक प्रकार से शृंगार कर बनाया गया है। जीव रंग-बिरंगे वस्त्र इस पर पहनता है। वह लाल, सफेद गद्दों, बिस्तरों को कमरे में सजाता है और अभिमान में दुखों को ही खाता एवं भोगता है। हे नानक ! लेकिन अन्तिम समय मुक्त करवाने वाले हरि-नाम को याद नहीं करता॥ २४॥

सलोक मः ३ ॥ सहजे सुखि सुती सबदि समाइ ॥ आपे प्रभि मेलि लई गलि लाइ ॥ दुबिधा चूकी सहजि सुभाइ ॥ अंतरि नामु वसिआ मनि आइ ॥ से कंठि लाए जि भंनि घड़ाइ ॥ नानक जो धुरि मिले से हुणि आणि मिलाइ ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ शब्द में लीन रहकर स्वाभाविक ही सुखी हूँ। प्रभु ने स्वयं गले लगाकर मिला लिया है। सहज स्वाभाविक दुविधा दूर हो गई है और मन में हरि-नाम आ बसा है। जो अन्तर्मन को तोड़कर नया बनाता है, ईश्वर उसे गले से लगा लेता है। हे नानक ! जिसके भाग्य

में आरम्भ से मिलन है, वे अब भी आकर मिल गए हैं॥ १॥

मः ३ ॥ जिन्ही नामु विसारिआ किआ जपु जापहि होरि ॥ बिसटा अंदरि कीट से मुठे धंधै चोरि ॥ नानक नामु न वीसरै झूठे लालच होरि ॥ २ ॥

महला ३॥ जिन्होंने हरि-नाम को भुला दिया है, उनके लिए अन्य पाठ-पूजा वृथा है। दुनियावी धंधों में लिप्त ऐसे लोग विष्ठा में कीट की मानिंद हैं। हे नानक! हमें परमात्मा का नाम विस्मृत न हो, क्योंकि अन्य लालच झूठे हैं॥ २॥

पउड़ी ॥ नामु सलाहनि नामु मंनि असथिरु जगि सोई ॥ हिरदै हरि हरि चितवै दूजा नही कोई ॥ रोमि रोमि हरि उचरै खिनु खिनु हरि सोई ॥ गुरमुखि जनमु सकारथा निरमलु मलु खोई ॥ नानक जीवदा पुरखु धिआइआ अमरा पदु होई ॥ २५ ॥

पउड़ी॥ जो हरि-नाम की सराहना करते हैं, नाम का मनन करते हैं, वही जगत में स्थिर हैं। उनके हृदय में परमात्मा की याद बनी रहती है एवं अन्य कोई नहीं होता। वे रोम-रोम से परमात्मा का नामोच्चारण करते हैं और पल-पल एक वही बना रहता है। ऐसे गुरमुखों का जन्म सफल होता है और मन की मैल दूर करके वे निर्मल बने रहते हैं। हे नानक! जीते जी परमेश्वर का ध्यान करने वाले मोक्ष के हकदार होते हैं॥ २५॥

सलोकु मः ३ ॥ जिनी नामु विसारिआ बहु करम कमावहि होरि ॥ नानक जम पुरि बधे मारीअहि जिउ संन्ही उपरि चोर ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ जो परमात्मा के नाम को भुलाकर अन्य कर्मकाण्डों में लीन रहते हैं। नानक का कथन है कि ऐसे लोगों की यमपुरी में ऐसे पिटाई होती है, जैसे चोरी करने वाले चोर का हाल होता है॥ १॥

मः ५ ॥ धरति सुहावड़ी आकासु सुहंदा जपंदिआ हरि नाउ ॥ नानक नाम विहूणिआ तिन्ह तन खावहि काउ ॥ २ ॥

महला ५॥ परमात्मा का भजन करने वाले जिज्ञासुओं के लिए धरती सुहावनी होती है और आकाश भी सुन्दर लगता है। हे नानक! नाम से विहीन लोगों का शरीर कौए ही खाते हैं॥ २॥

पउड़ी ॥ नामु सलाहनि भाउ करि निज महली वासा ॥ ओइ बाहुड़ि जोनि न आवनी फिरि होहि न बिनासा ॥ हरि सेती रंगि रवि रहे सभ सास गिरासा ॥ हरि का रंगु कदे न उतरै गुरमुखि परगासा ॥ ओइ किरपा करि कै मेलिअनु नानक हरि पासा ॥ २६ ॥

पउड़ी॥ जो प्रेमपूर्वक हरि-नाम की प्रशंसा करते हैं, वे अपने सच्चे घर में रहते हैं। ऐसे व्यक्ति पुनः योनियों में नहीं आते और न ही उनका अन्त होता है। वे साँस लेते, भोजन का निवाला लेते ईश्वर के रंग में लीन रहते हैं। इन गुरमुखों के मन में प्रकाश होता है और ईश्वर-भक्ति का रंग कभी नहीं उतरता। हे नानक! ईश्वर कृपा करके उन्हें साथ मिला लेता है॥ २६॥

सलोक मः ३ ॥ जिचरु इहु मनु लहरी विचि है हउमै बहुतु अहंकारु ॥ सबदै सादु न आवई नामि न लगै पिआरु ॥ सेवा थाइ न पवई तिस की खपि खपि होइ खुआरु ॥ नानक सेवकु सोई आखीऐ जो सिरु धरे उतारि ॥ सतिगुर का भाणा मंनि लए सबदु रखै उर धारि ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ जब तक यह मन संसार की लहरों में पड़ा रहता है, उतना ही अहंकार ग्रस्त रहता है। इसे शब्द का आनंद नहीं आता और न ही हरि-नाम से प्रेम लगता है। उसकी सेवा सफल नहीं होती और खप-खप कर ख्वार होता है। हे नानक ! सेवक वही कहलाता है, जो सर्वस्व अर्पण कर देता है, वह सच्चे गुरु की रज़ा को मान कर शब्द को हृदय में बसाकर रखता है॥१॥

मः ३ ॥ सो जपु तपु सेवा चाकरी जो खसमै भावै ॥ आपे बखसे मेलि लए आपतु गवावै ॥ मिलिआ कदे न वीछुड़ै जोती जोति मिलावै ॥ नानक गुर परसादी सो बुझसी जिसु आपि बुझावै ॥ २ ॥

महला ३॥ असल में वही जप, तपस्या, सेवा एवं चाकरी है, जो मालिक को अच्छी लगती है। अगर अहम्-भाव को दूर किया जाए तो प्रभु स्वयं ही कृपा करके मिला लेता है। वह मिलकर कभी जुदा नहीं होता और उसकी ज्योति परम-ज्योति में विलीन हो जाती है। हे नानक ! गुरु की कृपा से वही तथ्य को समझता है, जिसे वह समझाता है॥२॥

पउड़ी ॥ सभु को लेखे विचि है मनमुखु अहंकारी ॥ हरि नामु कदे न चेतई जमकालु सिरि मारी ॥ पाप बिकार मनूर सभि लदे बहु भारी ॥ मारगु बिखमु डरावणा किउ तरीऐ तारी ॥ नानक गुरि राखे से उबरे हरि नामि उधारी ॥ २७ ॥

पउड़ी॥ अभिमानी मनमुख व्यक्ति के प्रत्येक कर्म का हिसाब होता है। वह परमात्मा का कभी चिंतन नहीं करता और यमदूतों से दण्ड भोगता है। वह पाप-विकारों के सड़े लोहे का भारी भरकम बोझ लादकर घूमता है। संसार-समुद्र का रास्ता बहुत भयानक एवं मुश्किल है, इससे किस तरह पार हुआ जा सकता है ? गुरु नानक का कथन है कि प्रभु का नाम ही उद्धार करने वाला है और वही उबरता है, जिसे गुरु बचाता है॥२७॥

सलोक मः ३ ॥ विणु सतिगुर सेवे सुखु नही मरि जंमहि वारो वार ॥ मोह ठगउली पाईअनु बहु दूजै भाइ विकार ॥ इकि गुर परसादी उबरे तिसु जन कउ करहि सभि नमसकार ॥ नानक अनदिनु नामु धिआइ तू अंतरि जितु पावहि मोख दुआर ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ सच्चे गुरु की सेवा बिना सुख प्राप्त नहीं होता और जीव बार-बार जन्म-मरण में पड़ता है। मोह की ठगमूरि को डालकर द्वैतभाव एवं विकारों में लिप्त होता है। कोई गुरु की कृपा से उबर जाता है, ऐसे व्यक्ति को सभी नमस्कार करते हैं। नानक का कथन है कि हे बंधु ! तू अन्तर्मन में प्रतिदिन हरि-नाम का ध्यान कर, जिससे तुझे मोक्ष द्वार प्राप्त हो जाएगा॥१॥

मः ३ ॥ माइआ मोहि विसारिआ सचु मरणा हरि नामु ॥ धंधा करतिआ जनमु गइआ अंदरि दुखु सहामु ॥ नानक सतिगुरु सेवि सुखु पाइआ जिन्ह पूरबि लिखिआ करामु ॥ २ ॥

महला ३॥ माया के मोह में लोगों को सत्य, हरिनाम एवं मौत भी भूल गई है। संसार के काम-धंधे करते ही इनका जीवन गुजर जाता है और अन्तर्मन में दुख सहते हैं। हे नानक ! जिसके भाग्य में पूर्व से लिखा होता है, वह सतगुरु की सेवा करके सुख ही सुख पाता है॥२॥

पउड़ी ॥ लेखा पड़ीऐ हरि नामु फिरि लेखु न होई ॥ पुछि न सकै कोइ हरि दरि सद ढोई ॥ जमकालु मिलै दे भेट सेवकु नित होई ॥ पूरे गुर ते महलु पाइआ पति परगटु लोई ॥ नानक अनहद धुनी दरि वजदे मिलिआ हरि सोई ॥ २८ ॥

पउड़ी॥ हरि-नाम का चिंतन करने से पुनः कर्मों का लेखा-जोखा नहीं होता। फिर कोई पूछताछ नहीं होती और प्रभु के घर में सदैव शरण मिल जाती है। फिर यमराज भी आदरपूर्वक मिलता है और नित्य सेवा होती है। पूर्ण गुरु से ही मंजिल प्राप्त होती है और संसार में प्रतिष्ठा फैल जाती है। हे नानक! उसके घर में अनाहद संगीत गूंजता है और वह प्रभु मिल जाता है॥ २८॥

सलोक मः ३ ॥ गुर का कहिआ जे करे सुखी हू सुखु सारु ॥ गुर की करणी भउ कटीऐ नानक पावहि पारु ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ यदि गुरु के उपदेशानुसार कार्य किया जाए तो सुख ही सुख मिलता है। नानक फुरमाते हैं कि गुरु के निर्देशानुसार जीवन-आचरण अपनाने से संसार-सागर का भय कट जाता है और मुक्ति मिल जाती है॥ १॥

मः ३ ॥ सचु पुराणा ना थीऐ नामु न मैला होइ ॥ गुर कै भाणे जे चलै बहुड़ि न आवणु होइ ॥ नानक नामि विसारिऐ आवण जाणा दोइ ॥ २ ॥

महला ३॥ सत्य कदापि पुराना नहीं होता और न ही हरि-नाम मैला होता है। यदि गुरु की रज़ानुसार चला जाए तो पुनः आवागमन नहीं होता। हे नानक! हरि-नाम को विस्मृत करने से दुनिया में जन्म-मृत्यु दोनों ही बना रहता है॥ २॥

पउड़ी ॥ मंगत जनु जाचै दानु हरि देहु सुभाइ ॥ हरि दरसन की पिआस है दरसनि त्रिपताइ ॥ खिनु पलु घड़ी न जीवऊ बिनु देखे मरां माइ ॥ सतिगुरि नालि दिखालिआ रवि रहिआ सभ थाइ ॥ सुतिआ आपि उठालि देइ नानक लिव लाइ ॥ २६ ॥

पउड़ी॥ हे प्रभु! यह भिखारी तुझ से दान मांगता है, प्रेमपूर्वक प्रदान करो। मुझे हरि-दर्शन की प्यास है और दर्शनों से ही तृप्ति होती है। हे माँ! प्रभु को देखे बिना क्षण, पल एवं घड़ी भर जीना असंभव है, उसके बिना मर ही जाता हूँ। सतगुरु ने उसे पास ही दिखा दिया है, वह सब स्थानों में विद्यमान है। हे नानक! वह सोए हुए लोगों को जगाकर लगन में लगा देता है॥ २६॥

सलोक मः ३ ॥ मनमुख बोलि न जाणन्ही ओना अंदरि कामु क्रोधु अहंकारु ॥ थाउ कुथाउ न जाणन्ही सदा चितवहि बिकार ॥ दरगह लेखा मंगीऐ ओथै होहि कूड़िआर ॥ आपे स्रिसटि उपाईअनु आपि करे बीचारु ॥ नानक किस नो आखीऐ सभु वरतै आपि सचिआरु ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ स्वेच्छाचारी ठीक तरह से बोलना ही नहीं जानते, उनके अन्दर काम, क्रोध एवं अहंकार ही भरा रहता है। वे भले-बुरे को नहीं जानते और सदा विकार सोचते रहते हैं। जब ईश्वर की अदालत में कर्मों का हिसाब मांगा जाता है तो वहाँ झूठे सिद्ध होते हैं। ईश्वर स्वयं ही सृष्टि को उत्पन्न करने वाला है और स्वयं ही विचार करता है। हे नानक! सब में वह सत्य-स्वरूप ही कार्यशील है, उसके अलावा किससे प्रार्थना की जाए॥ १॥

मः ३ ॥ हरि गुरमुखि तिन्ही अराधिआ जिन्ह करमि परापति होइ ॥ नानक हउ बलिहारी तिन्ह कउ जिन्ह हरि मनि वसिआ सोइ ॥ २ ॥

महला ३॥ वही गुरमुख परमात्मा की आराधना करते हैं, जिनके भाग्य में प्राप्ति होती है। हे नानक! मैं उन पर बलिहारी जाता हूँ, जिन्होंने ईश्वर को मन में बसा लिया है॥ २॥

पउड़ी ॥ आस करे सभु लोकु बहु जीवणु जाणिआ ॥ नित जीवण कउ चितु गढ़ मंडप सवारिआ ॥ वलवंच करि उपाव माइआ हिरि आणिआ ॥ जमकालु निहाले सास आव घटै बेतालिआ ॥ नानक गुर सरणाई उबरे हरि गुर रखवालिआ ॥ ३० ॥

पउड़ी॥ जीवन को लम्बा मानकर सब लोग अनेकानेक आशाएँ करते हैं। नित्य जीने की सोच में अपने घर-द्वार को सुन्दर बनाते हैं। वे धोखे और मक्कारी के उपायों का इस्तेमाल करते हुए धन-दौलत चुराते हैं। यमराज इनकी जीवन-साँसें गिनता रहता है और भूत-रूपी मनुष्य की जीवनावधि कम होती जाती है। हे नानक ! गुरु परमेश्वर रखवाला है और गुरु की शरण में आने से बन्धनों से मुक्ति हो जाती है॥ ३०॥

सलोक मः ३ ॥ पड़ि पड़ि पंडित वादु वखाणदे माइआ मोह सुआइ ॥ दूजै भाइ नामु विसारिआ मन मूरख मिलै सजाइ ॥ जिन्हि कीते तिसै न सेवन्ही देदा रिजकु समाइ ॥ जम का फाहा गलहु न कटीऐ फिरि फिरि आवहि जाइ ॥ जिन कउ पूरबि लिखिआ सतिगुरु मिलिआ तिन आइ ॥ अनदिनु नामु धिआइदे नानक सचि समाइ ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ ग्रंथों-शास्त्रों को पढ़-पढ़कर पण्डित तर्क-वितर्क करते हैं और मोह-माया में पड़े रहते हैं। वे द्वैतभाव में लीन होकर ईश्वर को भुला देते हैं और ऐसे मूर्ख दण्ड प्राप्त करते हैं। जिसने पैदा किया है, रोजी-रोटी देकर निर्वाह कर रहा है, उसकी सेवा नहीं करते। इनका मौत का फंदा गले से नहीं कटता और पुनः पुनः जन्मते मरते हैं। सच्चा गुरु उनको ही मिलता है, जिसके भाग्य में पूर्व से लिखा होता है। हे नानक ! वे प्रतिदिन हरि-नाम का ध्यान करते हैं और परम सत्य में समाहित हो जाते हैं॥ १॥

मः ३ ॥ सचु वणजहि सचु सेवदे जि गुरमुखि पैरी पाहि ॥ नानक गुर कै भाणै जे चलहि सहजे सचि समाहि ॥ २ ॥

पउड़ी॥ जो गुरु के चरणों में आते हैं, वे सत्य का व्यापार करते हैं और परम सत्य की उपासना करते हैं। हे नानक ! गुरु की रज़ा में चलने वाले स्वाभाविक ही सत्य में विलीन हो जाते हैं॥ २॥

पउड़ी ॥ आसा विचि अति दुखु घणा मनमुखि चितु लाइआ ॥ गुरमुखि भए निरास परम सुखु पाइआ ॥ विचे गिरह उदास अलिपत लिव लाइआ ॥ ओना सोगु विजोगु न विआपई हरि भाणा भाइआ ॥ नानक हरि सेती सदा रवि रहे धुरि लए मिलाइआ ॥ ३१ ॥

पउड़ी॥ अनेक आशाओं में अत्याधिक दुख ही नसीब होता है, परन्तु स्वेच्छाचारी इनमें चित लगाता है। गुरुमुख सब आशाओं को छोड़कर परम सुख पाता है। वह गृहस्थ जीवन में विरक्त रहकर ईश्वर में लगन लगाता है। उसे कोई गम अथवा वियोग प्रभावित नहीं करता और वह ईश्वर की रज़ा में खुश रहता है। हे नानक ! ऐसा भक्त ईश्वर की भक्ति में लीन रहता है और उसी में मिल जाता है॥ ३१॥

सलोक मः ३ ॥ पराई अमाण किउ रखीऐ दिती ही सुखु होइ ॥ गुर का सबदु गुर थै टिकै होर थै परगटु न होइ ॥ अंन्हे वसि माणकु पइआ घरि घरि वेचण जाइ ॥ ओना परख न आवई अढु न पलै पाइ ॥ जे आपि परख न आवई तां पारखीआ थावहु लइओु परखाइ ॥ जे ओसु नालि चितु लाए तां वथु लहै नउ निधि पलै पाइ ॥ घरि होदै धनि जगु भुखा मुआ बिनु सतिगुर सोझी न होइ ॥ सबदु

सीतलु मनि तनि वसै तिथै सोगु विजोगु न कोइ ॥ वसतु पराई आपि गरबु करे मूरखु आपु गणाए ॥ नानक बिनु बूझे किनै न पाइओ फिरि फिरि आवै जाए ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ पराई अमानत को भला क्यों रखा जाए, इसे लौटा देने से ही सुख प्राप्त होता है। गुरु का शब्द तो गुरु के अन्तर में टिकता है और किसी अन्य मनुष्य में प्रगट नहीं होता। यदि अन्धे को माणिक्य मिल जाए तो वह घर-घर बेचने जाता है। इन लोगों को स्वयं कोई परख नहीं होती और कौड़ी भी प्राप्त नहीं होती। यदि स्वयं परख करनी नहीं आती तो पारखियों से परख करवा कर मूल्य पड़ सकता है। यदि ईश्वर से चित्त लगाया जाए तो नवनिधि रूपी नाम प्राप्त हो जाता है। हृदय घर में नाम धन होते हुए भी जगत भूखा मरता है और सच्चे गुरु के बिना सूझ नहीं होती। शीतल प्रभु-शब्द मन तन में बस जाए तो कोई शोक-वियोग प्रभावित नहीं करता। मूर्ख मनुष्य पराई वस्तु को अपना मानकर अहंकार करता है और अपना अहं ही जतलाता है। हे नानक ! सत्य को समझे बिना किसी ने ईश्वर को नहीं पाया और मनुष्य पुनः पुनः आता जाता है॥ १॥

मः ३ ॥ मनि अनदु भइआ मिलिआ हरि प्रीतमु सरसे सजण संत पिआरे ॥ जो धुरि मिले न विछुड़हि कबहू जि आपि मेले करतारे ॥ अंतरि सबदु रविआ गुरु पाइआ सगले दूख निवारे ॥ हरि सुखदाता सदा सलाही अंतरि रखां उर धारे ॥ मनमुखु तिन की बखीली कि करे जि सचै सबदि सवारे ॥ ओना दी आपि पति रखसी मेरा पिआरा सरणागति पए गुर दुआरे ॥ नानक गुरमुखि से सुहेले भए मुख ऊजल दरबारे ॥ २ ॥

महला ३॥ प्रियतम प्रभु को मिलकर मन में आनंद उत्पन्न हो गया है और प्यारे संत एवं सज्जन खुशी से खिल उठे हैं। यदि ईश्वर स्वयं ही मिला ले तो वे मिलकर कभी नहीं बिछुड़ते। गुरु को पाकर उनके अन्तर्मन में ब्रह्म शब्द अवस्थित होता है और सब दुखों का निवारण हो जाता है। वे सदैव सुखदाता परमेश्वर की प्रशंसा करते हैं और अन्तर्मन में उसे बसाकर रखते हैं। कोई मनमुख उनकी निंदा कैसे कर सकता है, जो सच्चे शब्द द्वारा संवर जाते हैं। मेरा प्यारा प्रभु स्वयं उनकी इज्जत रखता है, जो गुरु की शरण में आते हैं। हे नानक ! ऐसे व्यक्ति गुरु के सान्निध्य में सुखी रहते हैं और प्रभु के दरबार में उनका मुख उज्ज्वल होता है॥ २॥

पउड़ी ॥ इसतरी पुरखै बहु प्रीति मिलि मोहु वधाइआ ॥ पुत्रु कलत्रु नित वेखै विगसै मोहि माइआ ॥ देसि परदेसि धनु चोराइ आणि मुहि पाइआ ॥ अंति होवै वैर विरोधु को सकै न छडाइआ ॥ नानक विणु नावै ध्रिगु मोहु जितु लगि दुखु पाइआ ॥ ३२ ॥

पउड़ी॥ स्त्री-पुरुष का आपस में बहुत प्रेम होता है और उनका मिलन मोह में वृद्धि करता है। मोह-माया के कारण मनुष्य अपने प्रिय पुत्र एवं पत्नी को देखकर रोज़ खुश होता है। वह उनकी खातिर देश-प्रदेश से धन चोरी करके भी उनके लिए आता है। अंत में धन की वजह से वैर-विरोध ही होता है और कोई भी इससे बचा नहीं पाता। हे नानक ! प्रभु-नाम बिना ऐसे मोह को धिक्कार है, जिसकी वजह से दुख ही दुख प्राप्त होता है॥ ३२॥

सलोक मः ३ ॥ गुरमुखि अंम्रितु नामु है जितु खाधै सभ भुख जाइ ॥ त्रिसना मूलि न होवई नामु वसै मनि आइ ॥ बिनु नावै जि होरु खाणा तितु रोगु लगै तनि धाइ ॥ नानक रस कस सबदु सलाहणा आपे लए मिलाइ ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ गुरुमुख के लिए हरि-नाम अमृतमय है, जिससे तमाम भूख दूर हो जाती है। जब नाम मन में बस जाता है तो तृष्णा बिल्कुल नहीं रहती। हरि-नाम बिना अन्य खाने से शरीर में रोग ही लगता है। हे नानक ! शब्द की स्तुति को स्वादिष्ट व्यंजन माना जाए तो प्रभु स्वयं ही मिला लेता है॥ १॥

मः ३ ॥ जीआ अंदरि जीउ सबदु है जितु सह मेलावा होइ ॥ बिनु सबदै जगि आन्हेरु है सबदे परगटु होइ ॥ पंडित मोनी पड़ि पड़ि थके भेख थके तनु धोइ ॥ बिनु सबदै किनै न पाइओ दुखीए चले रोइ ॥ नानक नदरी पाईऐ करमि परापति होइ ॥ २ ॥

महला ३॥ सब जीवों में शब्द ही प्राण है, जिससे मालिक से मिलन होता है। शब्द के बिना जगत में अंधेरा है और शब्द से ही परम सत्य प्रगट होता है। ग्रंथों को पढ़-पढ़कर पण्डित एवं मौन धारण कर मौनी भी थक चुके हैं। वेषाडम्बरी साधु तीर्थों में शरीर को धोकर थक गए हैं। शब्द के बिना किसी ने परमात्मा को नहीं पाया और दुखी लोग रो कर संसार से चले गए हैं। हे नानक ! परमात्मा की प्राप्ति उसकी कृपा-दृष्टि से ही होती है॥ २॥

पउड़ी ॥ इसत्री पुरखै अति नेहु बहि मंदु पकाइआ ॥ दिसदा सभु किछु चलसी मेरे प्रभ भाइआ ॥ किउ रहीऐ थिरु जगि को कढहु उपाइआ ॥ गुर पूरे की चाकरी थिरु कंधु सबाइआ ॥ नानक बखसि मिलाइअनु हरि नामि समाइआ ॥ ३३ ॥

पउड़ी॥ स्त्री-पुरुष दोनों में अत्यंत प्रेम होता है और मिलकर विषय-विकारों की सलाह बनाते हैं। यह दृश्यमान समूचा संसार नाश होने वाला है और मेरे प्रभु को यही मंजूर है। जगत में किस तरह स्थिर रहा जा सकता है, इसका कोई उपाय निकालो। यदि पूरे गुरु की सेवा की जाए तो जीवन में स्थिर रहा जा सकता है। हे नानक ! जब वह कृपापूर्वक मिला देता है तो प्राणी हरि-नाम में विलीन हो जाता है॥ ३३॥

सलोक मः ३ ॥ माइआ मोहि विसारिआ गुर का भउ हेतु अपारु ॥ लोभि लहरि सुधि मति गई सचि न लगै पिआरु ॥ गुरमुखि जिना सबदु मनि वसै दरगह मोख दुआरु ॥ नानक आपे मेलि लए आपे बखसणहारु ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ माया मोह की वजह से मनुष्य ने गुरु का प्रेम भुला दिया है। लोभ की लहर में उसकी बुद्धि भ्रष्ट हो गई है और वह सत्य से प्रेम नहीं लगाता। गुरु के द्वारा जिनके मन में शब्द बस जाता है, उसे परमात्मा के दरबार में मोक्ष प्राप्त होता है। हे नानक ! वह रहमदिल प्रभु स्वयं अपने साथ मिला लेता है॥ १॥

मः ४ ॥ नानक जिसु बिनु घड़ी न जीवणा विसरे सरै न बिंद ॥ तिसु सिउ किउ मन रूसीऐ जिसहि हमारी चिंद ॥ २ ॥

महला ४॥ हे नानक ! जिसके बिना एक घड़ी भी जीना मुश्किल है, जिसे भुलाने से गुजारा नहीं हो सकता। उस प्रभु से भला क्यों रूठा जाए, जिसे हमारी चिंता लगी हुई है॥ २॥

मः ४ ॥ सावणु आइआ झिमझिमा हरि गुरमुखि नामु धिआइ ॥ दुख भुख काड़ा सभु चुकाइसी मीहु वुठा छहबर लाइ ॥ सभ धरति भई हरीआवली अंनु जंमिआ बोहल लाइ ॥ हरि अचिंतु बुलावै क्रिपा करि हरि आपे पावै थाइ ॥ हरि तिसहि धिआवहु संत जनहु जु अंते लए छडाइ ॥ हरि कीरति

भगति अनंदु है सदा सुखु वसै मनि आइ ॥ जिन्हा गुरमुखि नामु अराधिआ तिना दुख भुख लहि जाइ ॥ जन नानकु त्रिपतै गाइ गुण हरि दरसनु देहु सुभाइ ॥ ३ ॥

महला ४॥ धीरे-धीरे सावन आया है, गुरमुख हरि-नाम का भजन करके लुत्फ उठा रहे हैं। मूसलाधार बरसात होने के कारण सब दुख, भूख एवं चिंता दूर हो गई है। समूची धरती हरी भरी हो गई है और काफी मात्रा में अनाज की पैदावार हुई है। परमात्मा नैसर्गिक ही कृपा करके बुलाता है और सेवा सफल करता है। हे भक्तजनो ! उस परमपिता परमेश्वर का मनन करो, अंतकाल वही बचाने वाला है। परमात्मा की भक्ति एवं कीर्तिगान में आनंद ही आनंद है और मन में सदैव सुख बस जाता है। जो गुरु के सान्निध्य में हरि-नाम की आराधना करते हैं, उनका दुख भूख दूर हो जाते हैं। हे नानक! प्रभु के गुणगान से ही तृप्ति होती है और वह स्वाभाविक ही दर्शन देता है॥ ३॥

पउड़ी ॥ गुर पूरे की दाति नित देवै चड़ै सवाईआ ॥ तुसि देवै आपि दइआलु न छपै छपाईआ ॥ हिरदै कवलु प्रगासु उनमनि लिव लाईआ ॥ जे को करे उस दी रीस सिरि छाई पाईआ ॥ नानक अपड़ि कोइ न सकई पूरे सतिगुर की वडिआईआ ॥ ३४ ॥

पउड़ी॥ पूर्ण गुरु की बख्शिश में दिन-रात वृद्धि होती रहती है। वह दया का घर प्रसन्न होकर देता रहता है और छिपाने से छिप नहीं पाती। हृदय कमल खिल उठता है और जिज्ञासु एकाग्रचित होकर प्रभु के ध्यान में लीन रहता है। यदि कोई उसकी रीस करता है तो अपमानित ही होता है। हे नानक! पूर्ण सतगुरु की कीर्ति तक कोई पहुँच नहीं सकता॥ ३४॥

सलोक मः ३ ॥ अमरु वेपरवाहु है तिसु नालि सिआणप न चलई न हुजति करणी जाइ ॥ आपु छोडि सरणाइ पवै मंनि लए रजाइ ॥ गुरमुखि जम डंडु न लगई हउमै विचहु जाइ ॥ नानक सेवकु सोई आखीऐ जि सचि रहै लिव लाइ ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ सर्वोच्च शक्ति परमेश्वर का हुक्म अटल है, उसके साथ कोई चतुराई नहीं चल सकती और न ही एतराज किया जा सकता है। जो अपना अहम् छोड़कर शरण में आता है, उसकी रज़ा को मान लेता है, उस गुरुमुख को यम का दण्ड नहीं मिलता और उसका अभिमान समाप्त हो जाता है। हे नानक! असल में सेवक वही कहलाता है, जो परमात्मा के ध्यान में लीन रहता है॥ १॥

मः ३ ॥ दाति जोति सभ सूरति तेरी ॥ बहुतु सिआणप हउमै मेरी ॥ बहु करम कमावहि लोभि मोहि विआपे हउमै कदे न चूकै फेरी ॥ नानक आपि कराए करता जो तिसु भावै साई गल चंगेरी ॥२ ॥

महला ३॥ हे परमेश्वर ! यह प्राण दान एवं सौन्दर्य सब तेरा ही है। मेरे पास केवल अभिमान एवं चतुराई है। हम अनेक कर्म करते हैं, लोभ में लीन रहते हैं, पर अहम् कभी दूर नहीं होता। नानक का कथन है कि ईश्वर ही करवाता है, जो उसे ठीक लगता है, वही बात अच्छी है॥ २॥

पउड़ी मः ५ ॥ सचु खाणा सचु पैनणा सचु नामु अधारु ॥ गुरि पूरै मेलाइआ प्रभु देवणहारु ॥ भागु पूरा तिन जागिआ जपिआ निरंकारु ॥ साधू संगति लगिआ तरिआ संसारु ॥ नानक सिफति सलाह करि प्रभ का जैकारु ॥ ३५ ॥

पउड़ी महला ५॥ खाना-पहनना अर्थात् समूचा जीवन आचरण सत्य पर ही आधारित है और सच्चा नाम ही हमारा एकमात्र आसरा है। पूर्ण गुरु ही देने वाले प्रभु से मिलाने वाला है। जिसने निरंकार का नाम जपा है, उनका पूर्ण भाग्य जाग गया है। साधु पुरुषों की संगत में संसार-सागर से पार हुआ जा सकता है। हे नानक! प्रभु का स्तुतिगान करो; उसी की जय-जय करो॥३५॥

सलोक मः ५ ॥ सभे जीअ समालि अपणी मिहर करु ॥ अंनु पाणी मुचु उपाइ दुख दालदु भंनि तरु ॥ अरदासि सुणी दातारि होई सिसटि ठरु ॥ लेवहु कंठि लगाइ अपदा सभ हरु ॥ नानक नामु धिआइ प्रभ का सफलु घरु ॥ १ ॥

श्लोक महला ५॥ परमात्मा अपनी मेहर करके सब जीवों का पालन-पोषण करता है। वह अत्याधिक अनाज-पानी पैदा करता और लोगों की दुख-तकलीफों को दूर करके पार उतारता है। दाता ने प्रार्थना सुनी तो समूची सृष्टि को शांत कर दिया। वह दीनों को गले लगा लेता है और सब मुसीबतें दूर करता है। हे नानक! प्रभु नाम का ध्यान करो, उसका घर फलदायी है॥१॥

मः ५ ॥ वुठे मेघ सुहावणे हुकमु कीता करतारि ॥ रिजकु उपाइओनु अगला ठांढि पई संसारि ॥ तनु मनु हरिआ होइआ सिमरत अगम अपार ॥ करि किरपा प्रभ आपणी सचे सिरजणहार ॥ कीता लोड़हि सो करहि नानक सद बलिहार ॥ २ ॥

महला ५॥ ईश्वर का हुक्म हुआ तो सुन्दर बादल बरस उठे। अधिक मात्रा में अनाज उत्पन्न हुआ है और पूरे संसार को शान्ति प्राप्त हुई है। प्रभु के स्मरण से तन मन खिल गया है। संसार के रचयिता सच्चे प्रभु ने अपनी कृपा की है। हे प्रभु! जो तू चाहता है, वही करता है, नानक तुझ पर सदैव कुर्बान है॥२॥

पउड़ी ॥ वडा आपि अगंमु है वडी वडिआई ॥ गुर सबदी वेखि विगसिआ अंतरि सांति आई ॥ सभु आपे आपि वरतदा आपे है भाई ॥ आपि नाथु सभ नथीअनु सभ हुकमि चलाई ॥ नानक हरि भावै सो करे सभ चलै रजाई ॥ ३६ ॥ १ ॥ सुधु ॥

पउड़ी॥ वह प्रभु स्वयं तो बड़ा है, उसकी कीर्ति भी बहुत बड़ी है। गुरु के उपदेश से उसके दर्शन करके मन खिल गया है और शान्ति प्राप्त हुई है। सब में अपने आप वही कार्यशील है और स्वयं ही सब कुछ है। वह दुनिया का मालिक है, उसने सबको काबू किया हुआ है और सब पर उसी का हुक्म चल रहा है। नानक का कथन है कि जो परमात्मा चाहता है, वही करता है, सब लोग उसकी रज़ा में चलते हैं॥३६॥१॥शुद्ध-मूल के साथ मिलान है॥

रागु सारंग बाणी भगतां की ॥ कबीर जी ॥ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

कहा नर गरबसि थोरी बात ॥ मन दस नाजु टका चारि गांठी ऐंडौ टेढौ जातु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बहुतु प्रतापु गांउ सउ पाए दुइ लख टका बरात ॥ दिवस चारि की करहु साहिबी जैसे बन हर पात ॥ १ ॥ ना कोऊ लै आइओ इहु धनु ना कोऊ लै जातु ॥ रावन हूं ते अधिक छत्रपति खिन महि गए बिलात ॥ २ ॥ हरि के संत सदा थिरु पूजहु जो हरि नामु जपात ॥ जिन कउ क्रिपा करत है गोबिदु ते सतसंगि मिलात ॥ ३ ॥ मात पिता बनिता सुत संपति अंति न चलत संगात ॥ कहत कबीरु राम भजु बउरे जनमु अकारथ जात ॥ ४ ॥ १ ॥

हे नर! छोटी-सी बात का भी तू क्यों इतना अभिमान करता है? दस मन अनाज तथा चार पैसे तेरे पास हैं तो भी भला क्यों घमण्ड में टेढ़ा चलता है॥१॥ रहाउ॥ सौ गांव अथवा दो लाख टके की सम्पति प्राप्त करके लोगों में बहुत प्रताप फैल जाता है। जिस प्रकार वन के हरे पत्ते हैं, वैसे ही चार दिन की तुम्हारी प्रभुता है॥१॥ न कोई धन-दौलत लेकर आया है और न ही कोई इसे लेकर जाता है। रावण सरीखे कितने ही बड़े-बड़े छत्रपति भी पल में खत्म हो गए हैं॥२॥ ईश्वर के भक्त सदैव स्थिर हैं, जो ईश्वर का नाम जपते रहते हैं। जिन पर गोविन्द कृपा करता है, वही सत्संग में मिलते हैं॥३॥ माता-पिता, पत्नी-पुत्र एवं सम्पति अंत में कुछ भी साथ नहीं जाता। कबीर जी कहते हैं कि अरे पगले! भगवान का भजन कर लो; यह जीवन व्यर्थ ही बीतता जा रहा है॥४॥१॥

राजास्रम मिति नही जानी तेरी ॥ तेरे संतन की हउ चेरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हसतो जाइ सु रोवतु आवै रोवतु जाइ सु हसै ॥ बसतो होइ होइ सुो ऊजरु ऊजरु होइ सु बसै ॥ १ ॥ जल ते थल करि थल ते कूआ कूप ते मेरु करावै ॥ धरती ते आकासि चढावै चढे अकासि गिरावै ॥ २ ॥ भेखारी ते राजु करावै राजा ते भेखारी ॥ खल मूरख ते पंडितु करिबो पंडित ते मुगधारी ॥ ३ ॥ नारी ते जो पुरखु करावै पुरखन ते जो नारी ॥ कहु कबीर साधू को प्रीतमु तिसु मूरति बलिहारी ॥ ४ ॥ २ ॥

हे स्रष्टा! तेरी शक्ति का अंत जाना नहीं जा सकता। मैं तेरे संतों का सेवक मात्र हूँ॥१॥ रहाउ॥ जो संसार के सुखों में तल्लीन हो जाता है, वह रोता हुआ तेरे पास आता है। जो रोता हुआ अर्थात् सब त्याग देता है, वही खुश होता है। जो हमेशा के लिए बसना चाहता है, वह उजड़ जाता है और जो उजड़ कर अर्थात् वैराग्यवान हो जाता है, वही सुखी बसता है॥१॥ परमात्मा की मर्जी हो तो जहाँ पानी होता है, उसे सूखी जमीन कर देता है। सूखी जमीन को कुआं बना देता है। उसकी मर्जी हो तो कुएं पर पहाड़ बना देता है। वह छोटे से मनुष्य को बुलंदी पर पहुँचा देता है और बुलंदी पर पहुँचे हुए को नीचे गिरा देता है॥२॥ उसकी रज़ा हो तो वह भीख मांगने वाले को अमीर बना देता है और अमीर को कंगाल बना देता है। वह चाहे तो मूर्ख बेवकूफ को पण्डित बना देता है और पण्डित को मूर्ख बना देता है॥३॥ वह नारी से ही पुरुष को पैदा करवाता है और पुरुषों से ही नारियां पैदा करता है। कबीर जी कहते हैं कि वह अनंतशक्ति परमेश्वर साधुओं का प्राण-प्रियतम है, हम उस दया की मूर्ति पर कुर्बान हैं॥४॥२॥

सारंग बाणी नामदेउ जी की ॥ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

काएं रे मन बिखिआ बन जाइ ॥ भूलौ रे ठगमूरी खाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जैसे मीनु पानी महि रहै ॥ काल जाल की सुधि नही लहै ॥ जिहबा सुआदी लीलित लोह ॥ ऐसे कनिक कामनी बाधिओ मोह ॥ १ ॥ जिउ मधु माखी संचै अपार ॥ मधु लीनो मुखि दीनी छारु ॥ गऊ बाछ कउ संचै खीरु ॥ गला बांधि दुहि लेइ अहीरु ॥ २ ॥ माइआ कारनि स्रमु अति करै ॥ सो माइआ लै गाडै धरै ॥ अति संचै समझै नही मूढ़ ॥ धनु धरती तनु होइ गइओ धूड़ि ॥ ३ ॥ काम क्रोध त्रिसना अति जरै ॥ साधसंगति कबहू नही करै ॥ कहत नामदेउ ता ची आणि ॥ निरभै होइ भजीऐ भगवान ॥ ४ ॥ १ ॥

हे मन! क्योंकर विषय-विकारों के वन में जाते हो, ठगमूरि को खाकर तुम भूल कर रहे हो॥१॥ रहाउ॥ जैसे मछली पानी में रहती है, मगर मौत के जाल की उसे खबर नहीं होती। वह

जीभ के स्वाद कारण लोहा निगल लेती है, ऐसे ही मनुष्य भी सोने अथवा सुन्दर नारी के मोह में फँसा हुआ है॥ १॥ ज्यों मधुमक्खी बहुत सारा शहद इकट्ठा करती है, किन्तु शहद मनुष्य ले जाता है और उसे कुछ भी हासिल नहीं होता। गाय बछड़े के लिए दूध संचित करती है लेकिन ग्वाला रस्सी बांधकर सारा दूध दुह लेता है॥ २॥ मनुष्य धन की खातिर सख्त मेहनत करता है, वह धन लाकर जमीन में गाड़ देता है। अत्याधिक धन-दौलत जमा करके मूर्ख यह नहीं समझता कि धरती में दबे हुए धन की तरह यह शरीर भी मिट्टी हो जाता है॥ ३॥ वह काम-क्रोध एवं तृष्णा में जलता है परन्तु साधु पुरुषों की कभी संगत नहीं करता। नामदेव जी कहते हैं कि उसकी शरण में आओ और निडर होकर भगवान का भजन कर लो॥ ४॥ १॥

बदहु की न होड माधउ मो सिउ ॥ ठाकुर ते जनु जन ते ठाकुरु खेलु परिओ है तो सिउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपन देउ देहुरा आपन आप लगावै पूजा ॥ जल ते तरंग तरंग ते है जलु कहन सुनन कउ दूजा ॥ १ ॥ आपहि गावै आपहि नाचै आपि बजावै तूरा ॥ कहत नामदेउ तूं मेरो ठाकुरु जनु ऊरा तू पूरा ॥ २ ॥ २ ॥

हे ईश्वर ! मेरे साथ बेशक शर्त लगाकर देख लो, अगर हम सेवक ही न हों तुम मालिक कैसे माने जा सकते हो, दरअसल मालिक हो तो ही कोई सेवक होता है और सेवक हो तो ही मालिक का अस्तित्व है (अर्थात् हमारा और तुम्हारा नाता अलग नहीं हो सकता) सो मालिक एवं सेवक परस्पर एक ही खेल खेल रहे हैं॥ १॥ रहाउ॥ तू ही देवता है, मन्दिर भी तेरा है और तू स्वयं ही अपनी पूजा में लगाता है। जल से तरंग और तरंग से ही जल का अस्तित्व है, यह केवल कहने और सुनने को अलग है॥ १॥ वह स्वयं ही गा रहा है, स्वयं ही नचा रहा है और स्वयं शहनाई बजा रहा है। नामदेव जी कहते हैं कि तू ही मेरा मालिक है, मैं अधूरा हूँ और तू ही पूरा है॥ २॥ २॥

दास अनिंन मेरो निज रूप ॥ दरसन निमख ताप त्रई मोचन परसत मुकति करत ग्रिह कूप ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मेरी बांधी भगतु छडावै बांधै भगतु न छूटै मोहि ॥ एक समै मोकउ गहि बांधै तउ फुनि मो पै जबाबु न होइ ॥ १ ॥ मै गुन बंध सगल की जीवनि मेरी जीवनि मेरे दास ॥ नामदेव जा के जीअ ऐसी तैसो ता कै प्रेम प्रगास ॥ २ ॥ ३ ॥

नामदेव जी द्वारा ईश्वर की ओर से संबोधन है कि मेरा अनन्य भक्त वास्तव में मेरा ही रूप है। उसके दर्शनों से तीनों ताप दूर हो जाते हैं और उसके स्पर्श से गृहस्थी के कुएं से मुक्ति हो जाती है॥ १॥ रहाउ॥ मेरे लगाए बन्धनों से भक्त तो मुक्त करवा सकता है परन्तु यदि भक्त बन्धन में डाल दे मैं आज़ाद नहीं करता। एक समय यदि भक्त मुझे प्रेम-भक्ति में बाँध ले तो मैं पुनः जवाब नहीं दे सकता॥ १॥ मैं गुणों का खिंचा हुआ सबका जीवन हूँ, पर मेरे भक्त ही मेरा जीवन हैं। नामदेव जी कहते हैं कि जिसके दिल में यह बात जितनी घर करती है, उतना ही प्रेम प्रकाश होता है॥ २॥ ३॥

सारंग ॥ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

तै नर किआ पुरानु सुनि कीना ॥ अनपावनी भगति नही उपजी भूखै दानु न दीना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कामु न बिसरिओ क्रोधु न बिसरिओ लोभु न छूटिओ देवा ॥ पर निंदा मुख ते नही छूटी निफल भई सभ सेवा ॥ १ ॥ बाट पारि घरु मूसि बिरानो पेटु भरै अप्राधी ॥ जिहि परलोक जाइ अपकीरति सोई अबिदिआ साधी ॥ २ ॥ हिंसा तउ मन ते नही छूटी जीअ दइआ नही पाली ॥ परमानंद साधसंगति मिलि कथा पुनीत न चाली ॥ ३ ॥ १ ॥ ६ ॥

हे नर! पुराणों की कथा-कहानियाँ सुन कर भी तूने क्या कर लिया है। न मन में भक्ति-भावना उत्पन्न हुई और न ही किसी भूखे को भोजन करवाया॥१॥ रहाउ॥ कामनाओं को भूल नहीं पाए, क्रोध तुम्हारा समाप्त नहीं हुआ, न ही तेरा लोभ छूटा। पराई निंदा मुख से छूट न सकी, इस प्रकार तेरी सारी सेवा निष्फल हो गई॥१॥ रास्ते में लूटमार, लोगों के घर से चोरी करके पेट भरते रहे, पता नहीं कितने अपराध किए। जिससे परलोक में जाकर अपकीर्ति प्राप्त होती है, वही झूठा कार्य किया है॥२॥ हिंसा तेरे मन से छूट न सकी और न ही जीवों पर दया करने की भावना पैदा हुई। परमानंद जी कहते हैं कि साधु-सज्जनों की संगत में मिलकर कभी पावन कथा नहीं सुनी॥३॥१॥६॥

छाडि मन हरि बिमुखन को संगु ॥

हे मन! परमात्मा से विमुख लोगों का साथ छोड़ दो।

{उक्त पंक्ति भक्त सूरदास जी की है, लेकिन आगे की पंक्तियों में मतभेद के कारण एक ही पंक्ति रहने दी और गुरु अर्जुन देव जी ने पूर्ण पद लिख दिया।}

सारंग महला ५ सूरदास ॥ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

हरि के संग बसे हरि लोक ॥ तनु मनु अरपि सरबसु सभु अरपिओ अनद सहज धुनि झोक ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दरसनु पेखि भए निरबिखई पाए है सगले थोक ॥ आन बसतु सिउ काजु न कछूऐ सुंदर बदन अलोक ॥ १ ॥ सिआम सुंदर तजि आन जु चाहत जिउ कुसटी तनि जोक ॥ सूरदास मनु प्रभि हथि लीनो दीनो इहु परलोक ॥ २ ॥ १ ॥ ८ ॥

ईश्वर के उपासक ईशोपासना में लीन रहते हैं। वे तन-मन इत्यादि सर्वस्व अर्पण करके आनंदपूर्वक खुशी मनाते हैं॥१॥ रहाउ॥ वे दर्शन करके वासनाओं से रहित हो जाते हैं और उनकी समस्त मनोकामनाएँ पूरी होती हैं। प्रभु का सुन्दर मुखड़ा देखकर उनकी अन्य वस्तुओं से कोई चाह नहीं होती॥१॥ श्याम सुन्दर ईश्वर को त्यागकर किसी अन्य की चाहत तो कुष्ठी के तन में जोक की तरह है। पाँचवें नानक सूरदास के हवाले से कथन करते हैं– हे सूरदास! प्रभु ने मन को हाथ में लेकर वैकुण्ठ का सुख फल में दे दिया है॥२॥१॥८॥

सारंग कबीर जीउ ॥ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

हरि बिनु कउनु सहाई मन का ॥ मात पिता भाई सुत बनिता हितु लागो सभ फन का ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आगे कउ किछु तुलहा बांधहु किआ भरवासा धन का ॥ कहा बिसासा इस भांडे का इतनकु लागै ठनका ॥ १ ॥ सगल धरम पुंन फल पावहु धूरि बांछहु सभ जन का ॥ कहै कबीरु सुनहु रे संतहु इहु मनु उडन पंखेरू बन का ॥ २ ॥ १ ॥ ९ ॥

भगवान के बिना मन की सहायता कौन करने वाला है। क्योंकि माता-पिता, भाई, पुत्र एवं पत्नी से लगाया प्रेम झूठा है॥१॥ रहाउ॥ आगे पार उतरने के लिए बेड़ा तैयार कर लो, इस धन का क्या भरोसा है। इस शरीर रूपी बर्तन का भी कोई विश्वास नहीं, जरा-सी ठोकर लगते ही यह टूट जाता है॥१॥ सब धर्मों एवं पुण्य के फल में भक्तजनों की चरणरज ही पाना चाहता हूँ। कबीर जी कहते हैं कि हे सज्जनो! मेरी बात सुनो, यह मन वन में उड़ने वाला पक्षी है (पता नहीं कब, कहां उड़ जाएगा)॥२॥१॥९॥

रागु मलार चउपदे महला १ घरु १

१ ਓੰ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

वह परमपिता परमेश्वर केवल 'एक' है, नाम उसका सत्य है, वह सम्पूर्ण विश्व का स्रष्टा है, सर्वशक्तिमान है, उसे कोई भय नहीं, वह वैर भावना से रहित है, वह कालातीत ब्रह्ममूर्ति अमर है, वह योनियों के चक्र से रहित है, वह स्वजन्मा है, गुरु-कृपा से प्राप्त होता है।

खाणा पीणा हसणा सउणा विसरि गइआ है मरणा ॥ खसमु विसारि खुआरी कीनी ध्रिगु जीवणु नही रहणा ॥ १ ॥ प्राणी एको नामु धिआवहु ॥ अपनी पति सेती घरि जावहु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तुधनो सेवहि तुझु किआ देवहि मांगहि लेवहि रहहि नही ॥ तू दाता जीआ सभना का जीआ अंदरि जीउ तुही ॥ २ ॥ गुरमुखि धिआवहि सि अंम्रितु पावहि सेई सूचे होही ॥ अहिनिसि नामु जपहु रे प्राणी मैले हछे होही ॥ ३ ॥ जेही रुति काइआ सुखु तेहा तेहो जेही देही ॥ नानक रुति सुहावी साई बिनु नावै रुति केही ॥ ४ ॥ १ ॥

खाने-पीने, हँसने एवं सोने में मौत भी भूल गई है। मालिक को भुलाकर बहुत बुरा किया है, ऐसी जिंदगी को धिक्कार है, क्योंकि किसी ने सदा नहीं रहना, मृत्यु निश्चित है॥१॥ हे प्राणी ! एक परमेश्वर के नाम का ध्यान करो और प्रतिष्ठा सहित अपने सच्चे घर जाओ॥१॥ रहाउ॥ हे मालिक ! जो तेरी अर्चना करते हैं, ऐसे लोग तुझे क्या देते हैं, मांगने में संकोच नहीं करते और लेते ही रहते हैं, जो रहता नहीं। तू सब जीवों को देने वाला है और जीवों में प्राण-आत्मा तुम्हीं हो॥२॥ गुरमुख प्रभु-ध्यान में रत रहते हैं, नामामृत प्राप्त करते हैं और वही शुद्ध होते हैं। हे प्राणियो ! दिन-रात परमात्मा के नाम का जाप करो, पापों की मैल साफ हो जाएगी॥३॥ जैसा मौसम होता है, शरीर को वैसा ही सुख मिलता है और वैसा ही शरीर हो जाता है। गुरु नानक का कथन है कि वही मौसम सुहावना है, जब प्रभु का जाप होता है, प्रभु-नाम के ध्यान बिना मौसम बेकार है॥४॥१॥

मलार महला १ ॥ करउ बिनउ गुर अपने प्रीतम हरि वरु आणि मिलावै ॥ सुणि घनघोर सीतलु मनु मोरा लाल रती गुण गावै ॥ १ ॥ बरसु घना मेरा मनु भीना ॥ अंम्रित बूंद सुहानी हीअरै गुरि मोही मनु हरि रसि लीना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सहजि सुखी वर कामणि पिआरी जिसु गुर बचनी मनु मानिआ ॥ हरि वरि नारि भई सोहागणि मनि तनि प्रेमु सुखानिआ ॥ २ ॥ अवगण तिआगि भई बैरागनि असथिरु वरु सोहागु हरी ॥ सोगु विजोगु तिसु कदे न विआपै हरि प्रभि अपणी किरपा करी ॥ ३ ॥ आवण जाणु नही मनु निहचलु पूरे गुर की ओट गही ॥ नानक राम नामु जपि गुरमुखि धनु सोहागणि सचु सही ॥ ४ ॥ २ ॥

मैं अपने गुरु को विनती करती हूँ कि मुझे प्रियतम प्रभु से मिला दो। बादल सरीखा गुरु का उपदेश सुनकर मेरा मन शीतल हो गया है और प्रियतम के प्रेम में रत होकर उसके गुण गाता है॥१॥ गुरु के उपदेश रूपी बादल के बरसने से मेरा मन भीग गया है। उसकी अमृत की बूंद हृदय में सुहावनी हो गई है और गुरु ने मेरा मन हरि रस में लीन कर दिया है॥१॥ रहाउ॥ गुरु के वचन से जिसका मन संतुष्ट हो गया है, वही प्यारी जीव-स्त्री अपने पति-प्रभु के साथ सुखी है। जीव रूपी नारी परमेश्वर रूपी पति को पाकर सुहागिन हो गई है और उसके मन तन को प्रभु का प्रेम सुख पहुँचा रहा है॥२॥ अपने अटल सुहाग प्रभु को पाकर वह वैराग्यवान हो गई है और उसने अवगुणों को त्याग दिया है। जिस पर प्रभु ने अपनी कृपा की है, उसे शोक-वियोग कभी प्रभावित नहीं करता॥३॥ जिसने पूर्ण गुरु का आसरा लिया है, उसका मन तो निश्चल हुआ ही है, आवागमन भी मिट गया है। गुरु नानक का कथन है कि गुरु के द्वारा राम नाम का जाप करने वाली सुहागिन धन्य एवं सत्यशील है॥४॥२॥

मलार महला १ ॥ साची सुरति नामि नही त्रिपते हउमै करत गवाइआ ॥ पर धन पर नारी रतु निंदा बिखु खाई दुखु पाइआ ॥ सबदु चीनि भै कपट न छूटे मनि मुखि माइआ माइआ ॥ अजगरि भारि लदे अति भारी मरि जनमे जनमु गवाइआ ॥ १ ॥ मनि भावै सबदु सुहाइआ ॥ भ्रमि भ्रमि जोनि भेख बहु कीन्हे गुरि राखे सचु पाइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तीरथि तेजु निवारि न न्हाते हरि का नामु न भाइआ ॥ रतन पदारथु परहरि तिआगिआ जत को तत ही आइआ ॥ बिसटा कीट भए उत ही ते उत ही माहि समाइआ ॥ अधिक सुआद रोग अधिकाई बिनु गुर सहजु न पाइआ ॥ २ ॥ सेवा सुरति रहसि गुण गावा गुरमुखि गिआनु बीचारा ॥ खोजी उपजै बादी बिनसै हउ बलि बलि गुर करतारा ॥ हम नीच होते हीणमति झूठे तू सबदि सवारणहारा ॥ आतम चीनि तहा तू तारण सचु तारे तारणहारा ॥ ३ ॥ बैसि सुथानि कहां गुण तेरे किआ किआ कथउ अपारा ॥ अलखु न लखीऐ अगमु अजोनी तूं नाथां नाथणहारा ॥ किसु पहि देखि कहउ तू कैसा सभि जाचक तू दातारा ॥ भगतिहीणु नानकु दरि देखहु इकु नामु मिलै उरि धारा ॥ ४ ॥ ३ ॥

मनुष्य का मन परमेश्वर की स्मृति एवं नाम-स्मरण में तृप्त नहीं होता और अहम् करते ही वह जीवन गंवा देता है। वह पराए धन, पराई नारी में लीन रहकर निंदा का जहर खाते हुए दुख ही पाता है। शब्द को जानकर उसका भय एवं कपट नहीं छूटता और मन एवं मुँह से धन-दौलत की ही लालसा करता है। ऐसा स्वेच्छाचारी पापों का भारी बोझ लादकर कष्ट भोगता है और जन्म-मरण में जीवन व्यर्थ गंवा देता है॥१॥ जिसके मन को शब्द गुरु अच्छा लगता है, वही सुन्दर है। कोई भटक-भटक कर योनि-चक्र में बहुत वेष धारण करता है, पर जिसे गुरु बचा लेता है, वही सत्य को पाता है॥१॥ रहाउ॥ मनमति जीव तीर्थ पर भी क्रोध का निवारण कर स्नान नहीं करता और न ही उसे प्रभु का नाम अच्छा लगता है। वह नाम रूपी रत्न को त्यागकर जैसे खाली हाथ आया था, वैसे ही चला जाता है। इसी वजह से विष्ठा का कीड़ा विष्ठा में ही लीन रहता है। जीवन के अधिक स्वादों को पाने के कारण अधिक रोग लग जाते हैं और गुरु के बिना शान्ति प्राप्त नहीं होती॥२॥ कोई सेवा में लीन होकर प्रेम से प्रभु के गुण गाता है और गुरु से ज्ञान पा कर सत्य का चिन्तन करता है। सत्य की खोज करने वाला संसार में यश पाता है और वैर-विरोध करने वाला दुखों में नष्ट हो जाता है। मैं अपने गुरु-परमेश्वर पर कुर्बान जाता हूँ। हे प्रभु ! हम नीच, तुच्छ, मंदबुद्धि एवं झूठे हैं और तू उपदेश देकर जीवन संवारने वाला है। जिधर आत्मज्ञान

है, वहां तू है, तू उद्धार करने वाला, मुक्तिदाता है॥३॥ मैं संत पुरुषों के पावन स्थान पर बैठकर तेरा ही गुणगान करूँ, परन्तु तेरे कौन-कौन से गुण गाऊँ, तू अपरंपार है। हे प्रभु! तू अदृष्ट है, तेरे दर्शन नहीं किए जा सकते, तू अगम्य है, जन्म-मरण से रहित है, तू सबका मालिक है, सब जीव तेरे वश में हैं। मैं दर्शन करके किसे बताऊँ तू कैसा है, हम सब मांगने वाले हैं, तू देने वाला है। नानक का कथन है कि मैं भक्तिविहीन तेरा द्वार देख रहा हूँ, तेरा नाम मिल जाए तो मैं हृदय में धारण कर लूँ॥४॥३॥

मलार महला १ ॥ जिनि धन पिर का सादु न जानिआ सा बिलख बदन कुमलानी ॥ भई निरासी करम की फासी बिनु गुरि भरमि भुलानी ॥ १ ॥ बरसु घना मेरा पिरु घरि आइआ ॥ बलि जावां गुर अपने प्रीतम जिनि हरि प्रभु आणि मिलाइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नउतन प्रीति सदा ठाकुर सिउ अनदिनु भगति सुहावी ॥ मुकति भए गुरि दरसु दिखाइआ जुगि जुगि भगति सुभावी ॥ २ ॥ हम थारे त्रिभवण जगु तुमरा तू मेरा हउ तेरा ॥ सतिगुरि मिलिऐ निरंजनु पाइआ बहुरि न भवजलि फेरा ॥ ३ ॥ अपुने पिर हरि देखि विगासी तउ धन साचु सीगारो ॥ अकुल निरंजन सिउ सचि साची गुरमति नामु अधारो ॥ ४ ॥ मुकति भई बंधन गुरि खोल्हे सबदि सुरति पति पाई ॥ नानक राम नामु रिद अंतरि गुरमुखि मेलि मिलाई ॥ ५ ॥ ४ ॥

जिस स्त्री ने अपने पति-प्रभु के प्रेम का स्वाद नहीं लिया, दुख में रोते हुए उसका बदन मुरझा गया है। कर्मों के बन्धन में फंसी हुई वह निराश हो गई है और गुरु के बिना भ्रम में भटकती है॥१॥ हे बादल! तू बरस, मेरा पति प्रभु घर में आ गया है। मैं अपने प्रियतम गुरु पर बलिहारी जाती हूँ, जिसने मुझे प्रभु से मिला दिया है॥१॥ रहाउ॥ जिसकी नित्यनवीन प्रीति सदा ठाकुर जी से है, उसकी भक्ति अच्छी लगती है। गुरु ने भगवान के दर्शन करवाए तो उसकी बन्धनों से मुक्ति हो गई, अतः युग-युग ईश्वर की भक्ति ही शोभायमान है॥२॥ हे प्रभु! हम तेरे हैं, तीनों लोक एवं समूचा जगत तुम्हारा है, तू मेरा (मालिक) है और मैं तेरा (सेवक) हूँ। सतगुरु से मिलकर परमात्मा प्राप्त हुआ है और अब पुनः संसार-सागर का चक्र नहीं लगेगा॥३॥ अपने पति-प्रभु को देखकर जीव-स्त्री खिल गई है तो ही उसका सच्चा शृंगार हुआ है। प्रभु के साथ मिलकर वह सत्यशील हो गई है और गुरु की शिक्षा से हरि-नाम ही उसका आसरा बना है॥४॥ गुरु ने बन्धन खोल दिए तो मुक्ति प्राप्त हो गई और शब्द-गुरु से प्रतिष्ठा प्राप्त हुई है। हे नानक! राम नाम हृदय में धारण किया तो गुरु ने उसे ईश्वर से मिला दिया॥५॥४॥

महला १ मलार ॥ पर दारा पर धनु पर लोभा हउमै बिखै बिकार ॥ दुसट भाउ तजि निंद पराई कामु क्रोधु चंडार ॥ १ ॥ महल महि बैठे अगम अपार ॥ भीतरि अंम्रितु सोई जनु पावै जिसु गुर का सबदु रतनु आचार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दुख सुख दोऊ सम करि जानै बुरा भला संसार ॥ सुधि बुधि सुरति नामि हरि पाईऐ सतसंगति गुर पिआर ॥ २ ॥ अहिनिसि लाहा हरि नामु परापति गुरु दाता देवणहारु ॥ गुरमुखि सिख सोई जनु पाए जिस नो नदरि करे करतारु ॥ ३ ॥ काइआ महलु मंदरु घरु हरि का तिसु महि राखी जोति अपार ॥ नानक गुरमुखि महलि बुलाईऐ हरि मेले मेलणहार ॥ ४ ॥ ५ ॥

हे मनुष्य! पराई नारी, पराया धन, लोभ, अहंकार इत्यादि विषय-विकारों को छोड़ दो। दुष्ट स्वभाव, पराई निंदा, काम, क्रोध जैसे चाण्डाल को त्याग दो॥१॥ शरीर रूपी महल में

ही ईश्वर व्याप्त है, पर इस में से अमृत वही व्यक्ति पाता है, जो गुरु के उपदेश रूपी रत्न के अनुसार जीवन-आचरण अपनाता है॥ १॥ रहाउ॥ वह दुख-सुख दोनों को समान मानता है और संसार में बुरे-भले को एक दृष्टि से ही देखता है। गुरु के प्रेम से सत्संगत में ही ज्ञान, बुद्धि, विवेक तथा हरि-नाम प्राप्त होता है॥ २॥ दाता गुरु जिसे नाम देता है, वह दिन-रात हरि-नाम प्राप्ति का लाभ पाता है। गुरु से वही व्यक्ति शिक्षा प्राप्त करता है, जिस पर ईश्वर करुणा करता है॥ ३॥ शरीर रूपी महल परमात्मा का घर है, जिसमें उसकी ज्योति अवस्थित है। गुरु नानक फुरमाते हैं कि ईश्वर गुरु के द्वारा ही अपने महल में बुलाता है और मिलाने वाला प्रभु स्वयं ही मिला लेता है॥ ४॥ ५॥

मलार महला १ घरु २ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

पवणै पाणी जाणै जाति ॥ काइआं अगनि करे निभरांति ॥ जंमहि जीअ जाणै जे थाउ ॥ सुरता पंडितु ता का नाउ ॥ १ ॥ गुण गोबिंद न जाणीअहि माइ ॥ अणडीठा किछु कहणु न जाइ ॥ किआ करि आखि वखाणीऐ माइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ऊपरि दरि असमानि पइआलि ॥ किउ करि कहीऐ देहु वीचारि ॥ बिनु जिहवा जो जपै हिआइ ॥ कोई जाणै कैसा नाउ ॥ २ ॥ कथनी बदनी रहै निभरांति ॥ सो बूझै होवै जिसु दाति ॥ अहिनिसि अंतरि रहै लिव लाइ ॥ सोई पुरखु जि सचि समाइ ॥ ३ ॥ जाति कुलीनु सेवकु जे होइ ॥ ता का कहणा कहहु न कोइ ॥ विचि सनातंी सेवकु होइ ॥ नानक पण्हीआ पहिरै सोइ ॥ ४ ॥ १ ॥ ६ ॥

पवन-पानी इत्यादि पाँच तत्वों से उत्पत्ति को माना जाता है। बेशक शरीर के निर्माण में गर्भ-अग्नि भी भूमिका निभाती है। अगर जीव के जन्म लेने वाले मूल स्थान (ईश्वर) को मनुष्य जानता है तो ही ज्ञानवान है, उसी का नाम पण्डित कहा जा सकता है॥ १॥ हे माँ! परमात्मा के गुणों को जाना नहीं जा सकता और उसे देखे बिना भी कुछ नहीं कहा जा सकता। क्योंकर उसके गुणों की चर्चा की जाए॥ १॥ रहाउ॥ ऊपर आसमान, नीचे पाताल और मध्य धरती में परमेश्वर ही स्थित है, क्योंकर कहा जाए, विचार दीजिए। जीभ के बिना जो हृदय में जपता है, क्या कोई जानता है कि वह कैसे नाम जपता है॥ २॥ कहने-बोलने से परे हो जाता है। जिस पर दया करता है, वही बूझता है। वह दिन-रात ईश्वर के ध्यान में लीन रहता है, वही उत्तम पुरुष है और सत्य में समा जाता है॥ ३॥ अगर कोई उत्तम जाति में ईश्वर का सेवक हो जाए, मगर ईश्वर की स्तुति न करे तो जीवन बेकार है। हे नानक! अगर कोई छोटी जाति से ईश्वर का सेवक हो तो हमारी चमड़ी के जूते भी उसके पाँवों में पहनने के लिए हाजिर हैं॥ ४॥ १॥ ६॥

मलार महला १ ॥ दुखु वेछोड़ा इकु दुखु भूख ॥ इकु दुखु सकतवार जमदूत ॥ इकु दुखु रोगु लगै तनि धाइ ॥ वैद न भोले दारू लाइ ॥ १ ॥ वैद न भोले दारू लाइ ॥ दरदु होवै दुखु रहै सरीर ॥ ऐसा दारू लगै न बीर ॥ १ ॥ रहाउ ॥ खसमु विसारि कीए रस भोग ॥ तां तनि उठि खलोए रोग ॥ मन अंधे कउ मिलै सजाइ ॥ वैद न भोले दारू लाइ ॥ २ ॥ चंदन का फलु चंदन वासु ॥ माणस का फलु घट महि सासु ॥ सासि गइऐ काइआ ढलि पाइ ॥ ता कै पाछै कोइ न खाइ ॥ ३ ॥ कंचन काइआ निरमल हंसु ॥ जिसु महि नामु निरंजन अंसु ॥ दूख रोग सभि गइआ गवाइ ॥ नानक छूटसि साचै नाइ ॥ ४ ॥ २ ॥ ७ ॥

{सिक्ख इतिहास में वर्णन है कि एक बार गुरु नानक देव जी ने खाना-पीना त्याग दिया, वे विरक्त होकर प्रभु चिंतन में लीन रहने लगे तो माता तृप्ता जी को काफी चिंता हुई कि पुत्र शायद बीमार हो गया है। पिता महता कल्याण दास जी वैद्य को उपचार के लिए घर ले आए। वैद्य जी ने नब्ज देखी तो गुरु जी बिल्कुल ठीकठाक थे। वैद्य ने कहा, आपको क्या दुख है ? दवा दे देता हूँ। तब गुरु जी ने वैद्य को संबोधन करते हुए कहा--}

एक दुख किसी से वियोग का है, एक दुख भूख का है। एक दुख ताकतवर यमदूतों का है, जो जीव को साथ ले जाते हैं। जो शरीर को रोग लग जाता है, एक दुख यह भी है। अरे भोले वैद्य! कोई दवा मत लगाना॥१॥ हे भोले वैद्य जी! अपनी दवा का हमारे लिए कोई इस्तेमाल मत करो, क्योंकि दर्द होता है तो शरीर में दुख रहता ही है। हे भाई! ऐसी दवा का हम पर कोई असर नहीं होने वाला॥१॥ रहाउ॥ मालिक को भुलाकर जब रस एवं भोगों का आनंद प्राप्त किया तो शरीर में रोग लग गए। इसी कारण अंधे मन को सजा मिलती है। हे भोले वैद्य! कोई दवा मत लगाना॥२॥ चंदन की महत्ता उसकी खुशबू में है और मनुष्य का फल शरीर में चल रही साँसें हैं। जब साँसें छूट जाती हैं तो शरीर मिट्टी हो जाता है। तत्पश्चात् कोई भोजन ग्रहण नहीं करता॥३॥ सोने जैसी काया में आत्मा रूपी हंस है, जिस में प्रभु नाम का अंश है। प्रभु-नाम से सभी दुख रोग दूर होते हैं। गुरु नानक कथन करते हैं कि सच्चे नाम से ही दुख-रोगों से छुटकारा होता है॥४॥२॥७॥

मलार महला १ ॥ दुख महुरा मारण हरि नामु ॥ सिला संतोख पीसणु हथि दानु ॥ नित नित लेहु न छीजै देह ॥ अंत कालि जमु मारै ठेह ॥ १ ॥ ऐसा दारू खाहि गवार ॥ जितु खाधै तेरे जाहि विकार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ राजु मालु जोबनु सभु छांव ॥ रथि फिरंदै दीसहि थाव ॥ देह न नाउ न होवै जाति ॥ ओथै दिहु ऐथै सभ राति ॥ २ ॥ साद करि समधां त्रिसना घिउ तेलु ॥ कामु क्रोधु अगनी सिउ मेलु ॥ होम जग अरु पाठ पुराण ॥ जो तिसु भावै सो परवाण ॥ ३ ॥ तपु कागदु तेरा नामु नीसानु ॥ जिन कउ लिखिआ एहु निधानु ॥ से धनवंत दिसहि घरि जाइ ॥ नानक जननी धंनी माइ ॥ ४ ॥ ३ ॥ ८ ॥

दुख ऐसा जहर है, जिसे हरिनाम का सिमरन ही मारने वाला है। संतोष की शिला पर पीसा जाता है और हाथों से दान के रूप में दिया जाता है। प्रतिदिन ऐसी दवा लो, तेरा शरीर नष्ट नहीं होगा, अन्यथा अन्तिम समय यम तुझे मार देगा॥१॥ हे मूर्ख! ऐसी दवा का सेवन कर, जिसके सेवन से तेरे विकार दूर हो जाएँगे॥१॥ रहाउ॥ राज्य, माल एवं यौवन सब छाया की तरह हैं और सूर्य का चक्र घूमने से सब दिखाई देने लगता है। यह शरीर, नाम एवं जाति कुछ भी साथ नहीं जाता। वहाँ (परलोक में) दिन और यहाँ (इहलोक) रात होगी॥२॥ स्वादों को लकड़ियाँ एवं तृष्णा को घी, काम क्रोध को तेल बना (ज्ञान) अग्नि में मिलाओ। इस आहूति यज्ञ में और पुराणों का पाठ जो भी कर्म है, इन में जो प्रभु को उपयुक्त लगता है, वही स्वीकार होता है॥३॥ तपस्या रूपी कागज पर तेरा नाम-सुमिरन ही परवान है, जिसके भाग्य में लिखा होता है, वह नाम रूपी भण्डार पा लेता है। ऐसे धनवान् सच्चे घर में जाते दिखाई देते हैं। हे नानक! उनको जन्म देने वाली माता धन्य है॥४॥३॥८॥

मलार महला १ ॥ बागे कापड़ बोलै बैण ॥ लंमा नकु काले तेरे नैण ॥ कबहूं साहिबु देखिआ भैण ॥ १ ॥ ऊडां ऊडि चड़ां असमानि ॥ साहिब संम्रिथ तेरै ताणि ॥ जलि थलि डूंगरि देखां तीर ॥ थान थनंतरि साहिबु बीर ॥ २ ॥ जिनि तनु साजि दीए नालि खंभ ॥ अति त्रिसना उडणै की डंझ ॥ नदरि करे तां बंधां धीर ॥ जिउ वेखाले तिउ वेखां बीर ॥ ३ ॥ न इहु तनु जाइगा न जाहिगे खंभ ॥ पउणै पाणी अगनी का सनबंध ॥ नानक करमु होवै जपीऐ करि गुरु पीरु ॥ सचि समावै एहु सरीरु ॥ ४ ॥ ४ ॥ ९ ॥

तेरे कपड़े सफेद हैं, बातें तेरी मीठी हैं, नाक लम्बी एवं आँखें तेरी काली हैं। अरी बहिन! कभी मालिक को देखा है॥१॥ मैं उड़-उड़कर आसमान में चढ़ जाऊँ तो हे समर्थ मालिक! सब तेरी शक्ति से हुआ है, पानी, भूमि, पहाड़ों एवं नदियों के तट जहाँ देखता हूँ, स्थान-स्थान पर मालिक ही मौजूद है॥२॥ जिसने शरीर बनाकर साथ श्वास रूपी पंख दिए हैं, अत्यंत तृष्णा के कारण उड़ने की चाह लगी रहती है। यदि ईश्वर कृपा करे तो धैर्य हो। हे भाई! ज्यों सतगुरु दिखाए त्यों देखूं॥३॥ न यह शरीर साथ जाएगा और न ही श्वास जाएंगे। यह तो केवल पवन, पानी एवं अग्नि का नाता था। हे नानक! उत्तम कर्म हो तो गुरु-पीर अपनाकर ईश्वर के नाम का जाप होता है और यह शरीर सत्य में विलीन हो जाता है॥४॥४॥६॥

मलार महला ३ चउपदे घरु १ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

निरंकारु आकारु है आपे आपे भरमि भुलाए ॥ करि करि करता आपे वेखै जितु भावै तितु लाए ॥ सेवक कउ एहा वडिआई जा कउ हुकमु मनाए ॥ १ ॥ आपणा भाणा आपे जाणै गुर किरपा ते लहीऐ ॥ एहा सकति सिवै घरि आवै जीवदिआ मरि रहीऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ वेद पड़ै पड़ि वादु वखाणै ब्रहमा बिसनु महेसा ॥ एह त्रिगुण माइआ जिनि जगतु भुलाइआ जनम मरण का सहसा ॥ गुर परसादी एको जाणै चूकै मनहु अंदेसा ॥ २ ॥ हम दीन मूरख अवीचारी तुम चिंता करहु हमारी ॥ होहु दइआल करि दासु दासा का सेवा करी तुमारी ॥ एकु निधानु देहि तू अपणा अहिनिसि नामु वखाणी ॥ ३ ॥ कहत नानकु गुर परसादी बूझहु कोई ऐसा करे वीचारा ॥ जिउ जल ऊपरि फेनु बुदबुदा तैसा इहु संसारा ॥ जिस ते होआ तिसहि समाणा चूकि गइआ पासारा ॥ ४ ॥ १ ॥

निरंकार ने संसार बनाकर स्वयं ही लोगों को भ्रम में भुलाया हुआ है। वह सृष्टि-कर्ता पैदा करके स्वयं ही देखभाल करता है, जैसा चाहता है, उधर ही लगा देता है। उसके हुक्म को मानना ही सेवक की बड़ाई है॥१॥ अपनी रज़ा को वह स्वयं ही जानता है और गुरु की कृपा से ही समझा जाता है। इस माया-शक्ति से उलट कर सच्चे घर में आया जाए तो जीते जी विकारों की ओर से रहित रहा जाता है॥१॥ रहाउ॥ वेदों का पाठ-पठन कर पण्डितजन त्रिदेवों के बारे में वाद-विवाद करते हैं (वे कहते हैं) कि ब्रह्म (सृष्टिकर्ता), विष्णु (संसार का पोषक) एवं महेश (संहारक) है। यह माया त्रिगुणात्मक है, जिसने पूरे जगत को भुलाया हुआ है, जिस कारण जन्म-मरण का संशय बना हुआ है। गुरु की कृपा से जब ईश्वर का बोध हो जाता है तो मन से शंका दूर हो जाती है॥२॥ हे प्रभु! हम दीन, मूर्ख एवं नासमझ हैं, तुम ही हमारी चिंता करो। दयालु होकर अपने दासों का दास बना लो, ताकि तेरी सेवा में तल्लीन रहें। तुम नाम रूपी निधान प्रदान करो, ताकि दिन-रात तेरे नाम चिंतन में निमग्न रहें॥३॥ गुरु नानक कहते हैं कि गुरु की कृपा से इस रहस्य को समझकर कोई मनन कर सकता है। ज्यों जल के ऊपर बुलबुला होता है, वैसा ही यह संसार है। जिस परमेश्वर से उत्पन्न होता है, उसी में विलीन हो जाता है और सारा प्रसार खत्म हो जाता है॥४॥१॥

मलार महला ३ ॥ जिनी हुकमु पछाणिआ से मेले हउमै सबदि जलाइ ॥ सची भगति करहि दिनु राती सचि रहे लिव लाइ ॥ सदा सचु हरि वेखदे गुर कै सबदि सुभाइ ॥ १ ॥ मन रे हुकमु मंनि सुखु होइ ॥ प्रभ भाणा अपणा भावदा जिसु बखसे तिसु बिघनु न कोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ त्रै गुण सभा धातु है ना हरि भगति न भाइ ॥ गति मुकति कदे न होवई हउमै करम कमाहि ॥ साहिब भावै सो थीऐ

पइऐ किरति फिराहि ॥ २ ॥ सतिगुर भेटिऐ मनु मरि रहै हरि नामु वसै मनि आइ ॥ तिस की कीमति ना पवै कहणा किछू न जाइ ॥ चउथै पदि वासा होइआ सचै रहै समाइ ॥ ३ ॥ मेरा हरि प्रभु अगमु अगोचरु है कीमति कहणु न जाइ ॥ गुर परसादी बुझीऐ सबदे कार कमाइ ॥ नानक नामु सलाहि तू हरि हरि दरि सोभा पाइ ॥ ४ ॥ २ ॥

जिसने मालिक के हुक्म को पहचान लिया है, वह शब्द द्वारा अहम् को जलाकर सत्य में ही मिल गया है। वह दिन-रात सच्ची भक्ति करता है और परम-सत्य प्रभु के ध्यान में लीन रहता है। गुरु के उपदेश से उसे स्वाभाविक सब ओर सदैव सत्य प्रभु ही दृष्टिगत होता है॥१॥ हे मन ! परमात्मा का हुक्म मानने से ही सुख प्राप्त होता है। प्रभु को अपनी रज़ा मानने वाला ही पसंद है, जिसे कृपा कर समर्था प्रदान करता है, उसे कोई बाधा नहीं आती॥१॥ रहाउ॥ तीन गुणों में भटकन ही है, इससे न ईश्वर की भक्ति होती है, न ही प्रेम होता है। जीव अहम्-भाव में कर्म करता है और कभी मुक्ति प्राप्त नहीं होती। जो मालिक को मंजूर है, वही होता है और पथभ्रष्ट जीव कर्मों के बन्धन में पड़ा रहता है॥२॥ जब सतगुरु से संपर्क होता है, तो मन की वासनाएँ दूर हो जाती हैं और प्रभु का नाम मन में अवस्थित हो जाता है। उसकी महत्ता का वर्णन नहीं किया जा सकता और न ही कीर्ति बताई जा सकती है। वह तुरीयावस्था में स्थित होकर परम-सत्य में लीन रहता है॥३॥ मेरा प्रभु मन-वाणी से परे है, उसकी महिमा का वर्णन नहीं किया जा सकता। यदि गुरु की कृपा से शब्द द्वारा अभ्यास किया जाए तो उसका भेद समझा जा सकता है। गुरु नानक का कथन है कि हरिनाम का स्तुतिगान करो, इसी से सच्चे द्वार पर शोभा प्राप्त होती है॥४॥२॥

मलार महला ३ ॥ गुरमुखि कोई विरला बूझै जिस नो नदरि करेइ ॥ गुर बिनु दाता कोई नाही बखसे नदरि करेइ ॥ गुर मिलिऐ सांति ऊपजै अनदिनु नामु लएइ ॥ १ ॥ मेरे मन हरि अंम्रित नामु धिआइ ॥ सतिगुरु पुरखु मिलै नाउ पाईऐ हरि नामे सदा समाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनमुख सदा विछुड़े फिरहि कोइ न किस ही नालि ॥ हउमै वडा रोगु है सिरि मारे जमकालि ॥ गुरमति सतसंगति न विछुड़हि अनदिनु नामु सम्हालि ॥ २ ॥ सभना करता एकु तू नित करि देखहि वीचारु ॥ इकि गुरमुखि आपि मिलाइआ बखसे भगति भंडार ॥ तू आपे सभु किछु जाणदा किसु आगै करी पूकार ॥ ३ ॥ हरि हरि नामु अंम्रितु है नदरी पाइआ जाइ ॥ अनदिनु हरि हरि उचरै गुर कै सहजि सुभाइ ॥ नानक नामु निधानु है नामे ही चितु लाइ ॥ ४ ॥ ३ ॥

जिस पर परमेश्वर कृपा करता है, कोई विरला गुरमुख ही तथ्य को बूझता है। गुरु के बिना दाता कोई नहीं और कृपा करके केवल वही नाम प्रदान करता है। गुरु को मिलकर शान्ति उत्पन्न होती है और जीव प्रतिदिन हरिनाम जपता रहता है॥१॥ हे मेरे मन ! हरिनामामृत का चिन्तन कर। सच्चे गुरु के मिलने पर ही हरिनाम प्राप्त होता है और जीव हरिनाम में ही विलीन रहता है॥१॥ रहाउ॥ मनमुखी परमात्मा से बिछुड़ कर आवागमन में भटकता है, न कोई उसके पास गुण होता है, न ही उसका कोई साथ देता है। अहम् बहुत बड़ा रोग है और यमराज पटक कर मारता है। जो गुरु की शिक्षानुसार चलता है, अच्छी संगत में रहता है, नित्य हरिनाम जपता है, वह ईश्वर से नहीं बिछुड़ता॥२॥ हे ईश्वर ! केवल तू ही सबका रचयिता है और नित्य विचार कर देखभाल करता है। किसी गुरमुख को भक्ति का भण्डार प्रदान कर स्वयं ही मिला लेता है।

तू स्वयं सब कुछ जानता है, तेरे सिवा किसके समक्ष प्रार्थना की जाए॥ ३॥ परमात्मा का नाम अमृत के समान है और उसकी करुणा-दृष्टि से प्राप्त होता है। कोई जिज्ञासु गुरु के शांत-स्वभाव में दिन-रात हरि का नामोच्चारण करता है। हे नानक! हरि का नाम सुखों का भण्डार है, अतः नाम-स्मरण में ही मन लगाना चाहिए॥ ४॥ ३॥

मलार महला ३ ॥ गुरु सालाही सदा सुखदाता प्रभु नाराइणु सोई ॥ गुर परसादि परम पदु पाइआ वडी वडिआई होई ॥ अनदिनु गुण गावै नित साचे सचि समावै सोई ॥ १ ॥ मन रे गुरमुखि रिदै वीचारि ॥ तजि कूड़ु कुटंबु हउमै बिखु त्रिसना चलणु रिदै सम्हालि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतिगुरु दाता राम नाम का होरु दाता कोई नाही ॥ जीअ दानु देइ त्रिपतासे सचै नामि समाही ॥ अनदिनु हरि रविआ रिद अंतरि सहजि समाधि लगाही ॥ २ ॥ सतिगुर सबदी इहु मनु भेदिआ हिरदै साची बाणी ॥ मेरा प्रभु अलखु न जाई लखिआ गुरमुखि अकथ कहाणी ॥ आपे दइआ करे सुखदाता जपीऐ सारिंगपाणी ॥ ३ ॥ आवण जाणा बहुड़ि न होवै गुरमुखि सहजि धिआइआ ॥ मन ही ते मनु मिलिआ सुआमी मन ही मंनु समाइआ ॥ साचे ही सचु साचि पतीजै विचहु आपु गवाइआ ॥ ४ ॥ एको एकु वसै मनि सुआमी दूजा अवरु न कोई ॥ एको नामु अंम्रितु है मीठा जगि निरमल सचु सोई ॥ नानक नामु प्रभू ते पाईऐ जिन कउ धुरि लिखिआ होई ॥ ५ ॥ ४ ॥

गुरु की प्रशंसा करो, वह सदा सुख देने वाला है और वही नारायण रूप परमेश्वर है। जिसने गुरु की कृपा से मोक्ष पाया है, उसकी दुनिया में बहुत कीर्ति हुई है। जो प्रतिदिन प्रभु का गुणगान करता है, वह सत्य में समाहित हो जाता है॥ १॥ हे मन! हृदय में गुरु का चिंतन कर। झूठे परिवार, तृष्णा एवं अहंकार के जहर को त्याग दे और याद रख मौत अपरिहार्य है॥ १॥ रहाउ॥ सच्चा गुरु ही राम नाम का दाता है, अन्य कोई दाता नहीं। जीवन देकर उसने तृप्त किया है, अतः सच्चे नाम में समाहित रहते हैं। जिनके दिल में नित्य परमेश्वर लीन रहता है, वे सहज समाधि लगाते हैं॥ २॥ सच्चे गुरु के उपदेश ने यह मन प्रभु में लीन कर दिया है और हृदय में शुद्ध वाणी ही है। मेरा प्रभु अदृष्ट है, उसे देखा नहीं जा सकता, उसकी अकथ कहानी गुरु ने कथन की है। वह सुखदाता जब दया करता है तो प्रभु नाम का जाप होता है॥ ३॥ गुरु के द्वारा स्वाभाविक ईश्वर का ध्यान होता है और पुनः आवागमन नहीं होता। मन से ही मन स्वामी में मिल जाता है और मन प्रभु में लीन हो जाता है। अहम्-भावना को दूर करके सत्यशील सत्य में विश्वस्त होते हैं॥ ४॥ एक प्रभु ही मन में बसता है, दूसरा अन्य कोई नहीं। केवल हरि-नाम ही अमृत की तरह मीठा है और यही सत्य दुनिया में निर्मल है। हे नानक! प्रभु का नाम वही प्राप्त करता है, जिसके भाग्य में लिखा होता है॥ ५॥ ४॥

मलार महला ३ ॥ गण गंधरब नामे सभि उधरे गुर का सबदु वीचारि ॥ हउमै मारि सद मंनि वसाइआ हरि राखिआ उरि धारि ॥ जिसहि बुझाए सोई बूझै जिस नो आपे लए मिलाइ ॥ अनदिनु बाणी सबदे गांवै साचि रहै लिव लाइ ॥ १ ॥ मन मेरे खिनु खिनु नामु सम्हालि ॥ गुर की दाति सबद सुखु अंतरि सदा निबहै तेरै नालि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनमुख पाखंडु कदे न चूकै दूजै भाइ दुखु पाए ॥ नामु विसारि बिखिआ मनि राते बिरथा जनमु गवाए ॥ इह वेला फिरि हथि न आवै अनदिनु सदा पछुताए ॥ मरि मरि जनमै कदे न बूझै विसटा माहि समाए ॥ २ ॥ गुरमुखि नामि रते से उधरे गुर का सबदु वीचारि ॥ जीवन मुकति हरि नामु धिआइआ हरि राखिआ उरि धारि ॥ मनु तनु निरमलु निरमल

मति ऊतम ऊतम बाणी होई ॥ एको पुरखु एकु प्रभु जाता दूजा अवरु न कोई ॥ ३ ॥ आपे करे कराए प्रभु आपे आपे नदरि करेइ ॥ मनु तनु राता गुर की बाणी सेवा सुरति समेइ ॥ अंतरि वसिआ अलख अभेवा गुरमुखि होइ लखाइ ॥ नानक जिसु भावै तिसु आपे देवै भावै तिवै चलाइ ॥ ४ ॥ ५ ॥

गुरु के उपदेश का चिंतन कर हरि-नाम जपते हुए गण-गंधर्व सबका उद्धार हो गया। अहम् को मारकर उन्होंने परमात्मा को सदा के लिए मन में बसा लिया है। जिसे वह सच्चाई समझाता है, वही समझता है, जिसे स्वयं ही अपने साथ मिला लेता है। वह दिन-रात वाणी से प्रभु शब्द का गान करता है और सच्चे की लगन में लीन रहता है॥१॥ हे मेरे मन ! हर पल हरि-नाम स्मरण करो। गुरु का प्रदान किया शब्द मन को सदैव सुख देने वाला है और यह सदा साथ निभाता है॥१॥ रहाउ॥ स्वेच्छाचारी का पाखण्ड कभी दूर नहीं होता और वह द्वैतभाव में दुख ही पाता है। उसका मन प्रभु के नाम को भुलाकर विषय-विकारों में लीन रहता है, जिस कारण वह अपना जीवन व्यर्थ ही गंवा देता है। प्रभु-स्मरण के लिए यह जीवन पुनः प्राप्त नहीं होता और सदा पछताता है। वह मर-मरकर जन्मता है, कभी तथ्य को नहीं बूझता और विष्ठा में ही लीन रहता है॥२॥ गुरु के उपदेश का मनन करके गुरमुख हरि-नाम में ही लीन रहते हैं और उनका उद्धार हो जाता है। वे परमात्मा को मन में बसाकर उसका ध्यान करते हैं और जीवन्मुक्त हो जाते हैं। उनका मन तन निर्मल हो जाता है, बुद्धि भी निर्मल हो जाती है और उत्तम वचन ही बोलते हैं। वे एक परमपुरुष प्रभु को जानते हैं और अन्य कोई नहीं॥३॥ प्रभु स्वयं ही करता और करवाता है और स्वयं ही कृपा करता है। उनका मन तन गुरु की वाणी में लीन रहता है और सुरति सेवा में समाई रहती है। वह अदृष्ट एवं रहस्यातीत प्रभु मन में बसा हुआ है, पर जो गुरमुख होता है, उसे ही दर्शन देता है। नानक फुरमाते हैं कि जैसा ईश्वर को उपयुक्त लगता है, उसे वह स्वयं ही (नाम-दर्शन) देता है और अपनी मर्जी से ही सबको चलाता है॥४॥५॥

मलार महला ३ दुतुके ॥ सतिगुर ते पावै घरु दरु महलु सु थानु ॥ गुर सबदी चूकै अभिमानु ॥ १ ॥ जिन कउ लिलाटि लिखिआ धुरि नामु ॥ अनदिनु नामु सदा सदा धिआवहि साची दरगह पावहि मानु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मन की बिधि सतिगुर ते जाणै अनदिनु लागै सद हरि सिउ धिआनु ॥ गुर सबदि रते सदा बैरागी हरि दरगह साची पावहि मानु ॥ २ ॥ इहु मनु खेलै हुकम का बाधा इक खिन महि दह दिस फिरि आवै ॥ जां आपे नदरि करे हरि प्रभु साचा तां इहु मनु गुरमुखि ततकाल वसि आवै ॥ ३ ॥ इसु मन की बिधि मन हू जाणै बूझै सबदि वीचारि ॥ नानक नामु धिआइ सदा तू भव सागरु जितु पावहि पारि ॥ ४ ॥ ६ ॥

सच्चे गुरु से ही परमात्मा का घर-द्वार, महल, सुन्दर स्थान प्राप्त होता है। गुरु के उपदेश से अभिमान समाप्त हो जाता है॥१॥ विधाता के विधानानुसार जिसके भाग्य में हरि-नाम लिखा होता है, वह सदा परमेश्वर का भजन करता है और सच्चे दरबार में सम्मान प्राप्त करता है॥१॥ रहाउ॥ जब मनुष्य सच्चे गुरु से मन को वशीभूत करने की विधि जान लेता है तो प्रभु ध्यान में ही लीन रहता है। जीव गुरु के शब्द में लीन रहकर सदा वैराग्यवान रहता है और प्रभु के सच्चे दरबार में यश प्राप्त करता है॥२॥ हुक्म का बंधा हुआ यह मन अनेक खेल खेलता है और पल में ही दसों दिशाओं में घूम आता है। जब सच्चा प्रभु स्वयं करुणा-दृष्टि करता है तो यह मन गुरु के सान्निध्य में तुरंत वश में आ जाता है॥३॥ शब्द के चिन्तन द्वारा यह सूझ प्राप्त होती है कि मन को वशीभूत करने का तरीका मन ही जानता है। नानक का कथन है कि हे भाई ! तू सदैव हरि-नाम का चिंतन कर, जिससे भवसागर से पार हो जाएगा॥४॥६॥

मलार महला ३ ॥ जीउ पिंडु प्राण सभि तिस के घटि घटि रहिआ समाई ॥ एकसु बिनु मै अवरु न जाणा सतिगुरि दीआ बुझाई ॥ १ ॥ मन मेरे नामि रहउ लिव लाई ॥ अदिसटु अगोचरु अपरंपरु करता गुर कै सबदि हरि धिआई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनु तनु भीजै एक लिव लागै सहजे रहे समाई ॥ गुर परसादी भ्रमु भउ भागै एक नामि लिव लाई ॥ २ ॥ गुर बचनी सचु कार कमावै गति मति तब ही पाई ॥ कोटि मधे किसहि बुझाए तिनि राम नामि लिव लाई ॥ ३ ॥ जह जह देखा तह एको सोई इह गुरमति बुधि पाई ॥ मनु तनु प्रान धरंी तिसु आगै नानक आपु गवाई ॥ ४ ॥ ७ ॥

यह शरीर, आत्मा एवं प्राण सब ईश्वर की रचना है और वही घट घट में समा रहा है। सच्चे गुरु ने यह रहस्य समझा दिया है, इसलिए एक ईश्वर के सिवा मैं अन्य किसी को नहीं मानता॥१॥ हे मेरे मन! हरि-नाम में लगन लगाकर रखो, वह अदृष्ट, मन-वाणी से परे, अपरंपार, कर्ता-पुरुष है। गुरु के उपदेश से परमात्मा का भजन करो॥१॥ रहाउ॥ जब प्रभु भक्ति में लगन लगती है तो मन तन भीग उठता है और स्वाभाविक ही उसमें लीन रहता है। गुरु की कृपा से भ्रम एवं भय भाग जाते हैं और एक प्रभु में लौ लगी रहती है॥२॥ जो गुरु के वचनों से भक्ति का सच्चा कार्य करता है, उसे ज्ञान प्राप्त होता है। करोड़ों में से किसी विरले को ही गुरु समझाता है और उसकी राम नाम में लगन लगी रहती है॥३॥ गुरु की शिक्षा से यह ज्ञान प्राप्त हुआ है, जहाँ देखता हूँ, वहाँ एक प्रभु ही विद्यमान है। हे नानक! अहम्-भाव को दूर कर मैं यह मन, तन, प्राण सर्वस्व प्रभु के आगे अर्पण करता हूँ॥४॥७॥

मलार महला ३ ॥ मेरा प्रभु साचा दूख निवारणु सबदे पाइआ जाई ॥ भगती राते सद बैरागी दरि साचै पति पाई ॥ १ ॥ मन रे मन सिउ रहउ समाई ॥ गुरमुखि राम नामि मनु भीजै हरि सेती लिव लाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मेरा प्रभु अति अगम अगोचरु गुरमति देइ बुझाई ॥ सचु संजमु करणी हरि कीरति हरि सेती लिव लाई ॥ २ ॥ आपे सबदु सचु साखी आपे जिन्ह जोती जोति मिलाई ॥ देही काची पउणु वजाए गुरमुखि अंम्रितु पाई ॥ ३ ॥ आपे साजे सभ कारै लाए सो सचु रहिआ समाई ॥ नानक नाम बिना कोई किछु नाही नामे देइ वडाई ॥ ४ ॥ ८ ॥

मेरा सच्चा प्रभु दुखों का निवारण करने वाला है, जो शब्द-गुरु द्वारा ही प्राप्त होता है। जो प्रभु-भक्ति में लीन होता है, वह सदा वैराग्यवान रहता है और सच्चे दरबार में सम्मान प्राप्त करता है॥१॥ हे मन! भगवान की अर्चना में लीन रहो। गुरु के द्वारा राम नाम के सुमिरन से मन प्रसन्न हो जाता है और प्रभु में लौ लगी रहती है॥१॥ रहाउ॥ मेरा प्रभु अपहुँच, मन-वाणी से परे है, गुरु की शिक्षा यह भेद बताती है। सत्य, संयम, शुभ कर्म करो, ईश्वर का कीर्तिगान करो और उसकी लगन में लीन रहो॥२॥ ईश्वर ही शब्द है, सत्य रूप में साक्षी है, जिसने अपनी ज्योति हमारी ज्योति में मिलाई हुई है। यह शरीर नाशवान् है, इसमें प्राणों का संचार चल रहा है और गुरु से ही नाम अमृत प्राप्त होता है॥३॥ परमात्मा स्वयं ही संसार बनाकर लोगों को काम-धंधे में लगाता है और वह परम-सत्य सर्वव्याप्त है। हे नानक! हरि-नाम के सिवा कोई कुछ नहीं और नाम-स्मरण से जीव को बड़ाई प्रदान करता है॥४॥८॥

मलार महला ३ ॥ हउमै बिखु मनु मोहिआ लदिआ अजगर भारी ॥ गरुड़ु सबदु मुखि पाइआ हउमै बिखु हरि मारी ॥ १ ॥ मन रे हउमै मोहु दुखु भारी ॥ इहु भवजलु जगतु न जाई तरणा गुरमुखि तरु हरि तारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ त्रै गुण माइआ मोहु पसारा सभ वरतै आकारी ॥ तुरीआ गुणु सतसंगति

पाईऐ नदरी पारि उतारी ॥ २ ॥ चंदन गंध सुगंध है बहु बासना बहकारि ॥ हरि जन करणी ऊतम है हरि कीरति जगि बिसथारि ॥ ३ ॥ क्रिपा क्रिपा करि ठाकुर मेरे हरि हरि हरि उर धारि ॥ नानक सतिगुरु पूरा पाइआ मनि जपिआ नामु मुरारि ॥ ४ ॥ ६ ॥

अहम् के जहर ने मन को मोहित किया हुआ था और अजगर जैसा पापों का भारी बोझ लादा हुआ था। जब गुरु ने गारुड़ी मंत्र सरीखा शब्द मुँह में डाला तो ईश्वर ने अहम् के जहर को खत्म कर दिया॥१॥ हे मन! अहम् एवं मोह का दुख बहुत भारी है। इस संसार-सागर से पार नहीं हुआ जा सकता, पर गुरु ही इससे पार करवाता है॥१॥ रहाउ॥ समूचे संसार में त्रिगुण माया का मोह फैला हुआ है। तुरीयावस्था सत्संगत में प्राप्त होती है और उसकी कृपा से जीव संसार-सागर से पार उतर जाता है॥२॥ ज्यों चन्दन की सुगन्ध श्रेष्ठ है, जो सब ओर अपनी महक फैला देती है। इसी तरह हरि-भक्तों का आचरण उत्तम है, जो पूरे जगत में हरि की कीर्ति को फैलाते हैं॥३॥ हे मेरे ठाकुर! मुझ पर कृपा करो, ताकि हरि-नाभ हृदय में धारण कर लूँ। गुरु नानक का कथन है कि पूर्ण सतगुरु को पाकर मन में ईश्वर का नाम जपता रहता हूँ॥४॥६॥

मलार महला ३ घरु २ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

इहु मनु गिरही कि इहु मनु उदासी ॥ कि इहु मनु अवरनु सदा अविनासी ॥ कि इहु मनु चंचलु कि इहु मनु बैरागी ॥ इसु मन कउ ममता किथहु लागी ॥ १ ॥ पंडित इसु मन का करहु बीचारु ॥ अवरु कि बहुता पड़हि उठावहि भारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ माइआ ममता करतै लाई ॥ एहु हुकमु करि सिसटि उपाई ॥ गुर परसादी बूझहु भाई ॥ सदा रहहु हरि की सरणाई ॥ २ ॥ सो पंडितु जो तिहां गुणा की पंड उतारै ॥ अनदिनु एको नामु वखाणै ॥ सतिगुर की ओहु दीखिआ लेइ ॥ सतिगुर आगै सीसु धरेइ ॥ सदा अलगु रहै निरबाणु ॥ सो पंडितु दरगह परवाणु ॥ ३ ॥ सभनां महि एको एकु वखाणै ॥ जां एको वेखै तां एको जाणै ॥ जा कउ बखसे मेले सोइ ॥ ऐथै ओथै सदा सुखु होइ ॥ ४ ॥ कहत नानकु कवन बिधि करे किआ कोइ ॥ सोई मुकति जा कउ किरपा होइ ॥ अनदिनु हरि गुण गावै सोइ ॥ सासत्र बेद की फिरि कूक न होइ ॥ ५ ॥ १ ॥ १० ॥

यह मन गृहस्थी है या यह उदासी है। क्या यह मन वर्ण-जातियों से रहित होकर सदा अविनाशी रहता है। क्या मन चंचल है या वैराग्यवान् है। जरा यह तो बताओ, इस मन को ममत्व की भावना कहाँ से लगी थी॥१॥ पण्डित जी! इस मन का चिन्तन करके सच्ची बात बताओ और अन्य बहुत पढ़कर भार मत उठाओ॥१॥ रहाउ॥ यह माया-ममता सृष्टि-कर्ता ने ही लगाई है और उसने हुक्म करके सम्पूर्ण सृष्टि उत्पन्न की है। हे भाई! गुरु की कृपा से इस रहस्य को समझ लो और सदैव परमात्मा की शरण में रहो॥२॥ वास्तव में पण्डित तो वही माना जाता है, जो तीन गुणों की गठरी को सिर से उतार देता है और दिन-रात एक ईश्वर के नाम की चर्चा करता है। वह सच्चे गुरु से दीक्षा लेता है और सतगुरु के समक्ष ही शीश अर्पण करता है। वह संसार से सदा अलिप्त रहता है, ऐसा पण्डित ही परमेश्वर के दरबार में मान्य होता है॥३॥ सब लोगों में एक ईश्वर की स्तुति करता है। वह केवल अद्वैत प्रभु को देखता है और एक को मानता है। जिस पर कृपा-दृष्टि करता है, उसे साथ मिला लेता है। ऐसा व्यक्ति लोक-परलोक में सदा सुखी रहता है॥४॥ गुरु नानक कहते हैं कि मुक्ति के लिए कोई कौन-सा तरीका अपनाए। दरअसल

मुक्ति वही प्राप्त करता है, जिस पर प्रभु-कृपा होती है। वह दिन-रात परमात्मा के गुण गाता है और शास्त्रों एवं वेदों की पुनः बात नहीं करता॥ ५॥ १॥ १०॥

मलार महला ३ ॥ भ्रमि भ्रमि जोनि मनमुख भरमाई ॥ जमकालु मारे नित पति गवाई ॥ सतिगुर सेवा जम की काणि चुकाई ॥ हरि प्रभु मिलिआ महलु घरु पाई ॥ १ ॥ प्राणी गुरमुखि नामु धिआइ ॥ जनमु पदारथु दुबिधा खोइआ कउडी बदलै जाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करि किरपा गुरमुखि लगै पिआरु ॥ अंतरि भगति हरि हरि उरि धारु ॥ भवजलु सबदि लंघावणहारु ॥ दरि साचै दिसै सचिआरु ॥ २ ॥ बहु करम करे सतिगुरु नही पाइआ ॥ बिनु गुर भरमि भूले बहु माइआ ॥ हउमै ममता बहु मोहु वधाइआ ॥ दूजै भाइ मनमुखि दुखु पाइआ ॥ ३ ॥ आपे करता अगम अथाहा ॥ गुर सबदी जपीऐ सचु लाहा ॥ हाजरु हजूरि हरि वेपरवाहा ॥ नानक गुरमुखि नामि समाहा ॥ ४ ॥ २ ॥ ११ ॥

भूल-भ्रम में फंसा हुआ स्वेच्छाचारी योनियों में भटकता रहता है। यमराज उसे मारता रहता है और वह अपनी इज्जत खो देता है। यदि सच्चे गुरु की सेवा की जाए तो मौत का डर दूर हो जाता है और हृदय-घर में ही प्रभु मिल जाता है॥ १॥ हे प्राणी ! गुरु के द्वारा हरि-नाम का मनन करो, यह जीवन तू दुविधा में गंवा रहा है, जो कौड़ियों के भाव जा रहा है॥ १॥ रहाउ॥ हे ईश्वर ! कृपा करो, गुरु के द्वारा तुझसे प्रेम लगा रहे। मन में ईश्वर की भक्ति धारण करो, शब्द-गुरु ही भयानक संसार-समुद्र से पार उतारने वाला है और सच्चे द्वार पर जीव सत्यशील दिखाई देता है॥ २॥ मनुष्य अनेक कर्मकाण्ड करता है, पर सतगुरु को नहीं पाता और गुरु के बिना धन-दौलत के लिए भ्रम में भूला रहता है। वह अपने अहम्, ममत्व एवं मोह में वृद्धि कर लेता है, इस कारण द्वैतभाव में स्वेच्छाचारी दुख ही पाता है॥ ३॥ ईश्वर ही कर्ता है, वह अगम्य, अथाह है। गुरु के उपदेश द्वारा प्रभु का नाम जपने से सच्चा लाभ प्राप्त होता है। परमेश्वर बे-परवाह है, हमारे समीप ही है। गुरु नानक का कथन है कि गुरमुख नाम में समाहित रहता है॥ ४॥ २॥ ११॥

मलार महला ३ ॥ जीवत मुकत गुरमती लागे ॥ हरि की भगति अनदिनु सद जागे ॥ सतिगुरु सेवहि आपु गवाइ ॥ हउ तिन जन के सद लागउ पाइ ॥ १ ॥ हउ जीवां सदा हरि के गुण गाई ॥ गुर का सबदु महा रसु मीठा हरि कै नामि मुकति गति पाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ माइआ मोहु अगिआनु गुबारु ॥ मनमुख मोहे मुगध गवार ॥ अनदिनु धंधा करत विहाइ ॥ मरि मरि जंमहि मिलै सजाइ ॥ २ ॥ गुरमुखि राम नामि लिव लाई ॥ कूड़ै लालचि ना लपटाई ॥ जो किछु होवै सहजि सुभाइ ॥ हरि रसु पीवै रसन रसाइ ॥ ३ ॥ कोटि मधे किसहि बुझाई ॥ आपे बखसे दे वडिआई ॥ जो धुरि मिलिआ सु विछुड़ि न जाई ॥ नानक हरि हरि नामि समाई ॥ ४ ॥ ३ ॥ १२ ॥

गुरु की शिक्षाओं में प्रवृत्त रहने वाले जीवन्मुक्त हुए हैं। वे दिन-रात परमात्मा की भक्ति करते हैं और अपना अहम् छोड़कर सच्चे गुरु की सेवा में तल्लीन रहते हैं। मैं सदा ऐसे लोगों के चरणों में लगता हूँ॥ १॥ भगवान का गुणगान ही हमारा जीवन है। गुरु का उपदेश मुझे महारस की तरह मीठा लगता है और परमात्मा के नाम-स्मरण से मुक्ति प्राप्त हुई है॥ १॥ रहाउ॥ संसार में माया-मोह और अज्ञान का अंधेरा फैला हुआ है, अपनी मन की मर्जी करने वाले मूर्ख गंवार इसी में मुग्ध रहते हैं। दिन-रात संसार का काम-धंधा करते हुए ही उनकी जिन्दगी व्यतीत हो जाती है, इस तरह बार-बार मर-मर कर जन्मते हैं और यम से दण्ड प्राप्त करते हैं॥ २॥ गुरमुख राम-नाम में लगन लगाए रखता है और झूठे लालच में नहीं पड़ता। संसार में जो

कुछ भी होता है, वह स्वाभाविक ही होता है। नाम रसिया तो हरिरस पान में लीन रहते हैं॥ ३॥ करोड़ों में कोई विरला ही है, जिसे रहस्य समझाता है और वह कृपापूर्वक यश प्रदान कर देता है। जो परमात्मा से मिल जाता है, वह उससे कभी नहीं बिछुड़ता। हे नानक! तदंतर वह परमेश्वर के नाम में ही विलीन रहता है॥ ४॥ ३॥ १२॥

मलार महला ३ ॥ रसना नामु सभु कोई कहै ॥ सतिगुरु सेवे ता नामु लहै ॥ बंधन तोड़े मुकति घरि रहै ॥ गुर सबदी असथिरु घरि बहै ॥ १ ॥ मेरे मन काहे रोसु करीजै ॥ लाहा कलजुगि राम नामु है गुरमति अनदिनु हिरदै रवीजै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बाबीहा खिनु खिनु बिललाइ ॥ बिनु पिर देखे नींद न पाइ ॥ इहु वेछोड़ा सहिआ न जाइ ॥ सतिगुरु मिलै तां मिलै सुभाइ ॥ २ ॥ नामहीणु बिनसै दुखु पाइ ॥ त्रिसना जलिआ भूख न जाइ ॥ विणु भागा नामु न पाइआ जाइ ॥ बहु बिधि थाका करम कमाइ ॥ ३ ॥ त्रै गुण बाणी बेद बीचारु ॥ बिखिआ मैलु बिखिआ वापारु ॥ मरि जनमहि फिरि होहि खुआरु ॥ गुरमुखि तुरीआ गुणु उरि धारु ॥ ४ ॥ गुरु मानै मानै सभु कोइ ॥ गुर बचनी मनु सीतलु होइ ॥ चहु जुगि सोभा निरमल जनु सोइ ॥ नानक गुरमुखि विरला कोइ ॥ ५ ॥ ४ ॥ १३ ॥ ६ ॥ १३ ॥ २२ ॥

जिह्वा से तो हर कोई हरि-नामोच्चारण करता है, लेकिन सच्चे गुरु की सेवा से ही हरिनाम का फल प्राप्त होता है। फिर वह संसार के बन्धनों को तोड़कर मुक्ति घर में रहता है और गुरु के उपदेश से सच्चे घर में स्थिर होता है॥ १॥ हे मेरे मन! किस बात का क्रोध कर रहे हो, क्योंकि कलियुग में लाभ केवल राम नाम का ही है, अतः गुरु-मतानुसार प्रतिदिन हृदय में नाम का चिंतन करो॥ १॥ रहाउ॥ जिज्ञासु पपीहा हर पल तरसता है और प्रिय को देखे बिना उसे नींद नहीं आती। यह वियोग उससे सहन नहीं होता। जब सच्चा गुरु मिल जाता है तो जिज्ञासु पपीहे को स्वाभाविक ही प्रभु मिल जाता है॥ २ ॥ हरिनाम से विहीन जीव बहुत दुख पाता है, वह तृष्णा में जलता है, उसकी भूख दूर नहीं होती। जीव अनेक तरीकों से कर्मकाण्ड करता हुआ थक जाता है लेकिन भाग्य के बिना किसी को हरिनाम प्राप्त नहीं होता॥ ३॥ वह त्रिगुणात्मक वेद-वाणी का चिंतन करता है, विषय-विकारों की जो मलिनता है, उसी का व्यापार करता है। जिस कारण वह जन्म-मरण के चक्र में पुनः ख्वार होता है। परन्तु गुरमुख जीव तुरीयावस्था में पहुँचकर हृदय में प्रभु को धारण करता है॥ ४॥ जो गुरु का मान-सम्मान करता है, हर कोई उसका आदर करता है। गुरु के वचनों से मन शीतल हो जाता है। ऐसा व्यक्ति निर्मल होता है, चारों युगों में उसी की शोभा होती है। हे नानक! ऐसा कोई विरला गुरमुख ही होता है॥५॥ ४॥१३॥ ६॥ १३॥ २२॥

रागु मलार महला ४ घरु १ चउपदे १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

अनदिनु हरि हरि धिआइओ हिरदै मति गुरमति दूख विसारी ॥ सभ आसा मनसा बंधन तूटे हरि हरि प्रभि किरपा धारी ॥ १ ॥ नैनी हरि हरि लागी तारी ॥ सतिगुरु देखि मेरा मनु बिगसिओ जनु हरि भेटिओ बनवारी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिनि ऐसा नामु विसारिआ मेरा हरि हरि तिस कै कुलि लागी गारी ॥ हरि तिस कै कुलि परसूति न करीअहु तिसु बिधवा करि महतारी ॥ २ ॥ हरि हरि आनि मिलावहु गुरु साधू जिसु अहिनिसि हरि उरि धारी ॥ गुरि डीठै गुर का सिखु बिगसै जिउ बारिकु देखि महतारी ॥ ३ ॥ धन पिर का इक ही संगि वासा विचि हउमै भीति करारी ॥ गुरि पूरै हउमै भीति तोरी जन नानक मिले बनवारी ॥ ४ ॥ १ ॥

हर समय हृदय में परमात्मा का मनन किया है, गुरु की शिक्षा से हमारे दुखों का निवारण हुआ है। प्रभु ने कृपा की तो सब आशाएँ एवं बन्धन टूट गए॥१॥ इन नयनों में परमात्मा की लगन लगी हुई है। सतगुरु को देखकर मेरा मन खिल उठा है और ईश्वर से साक्षात्कार हो गया है॥१॥ रहाउ॥ जिसने मेरे प्रभु का नाम भुला दिया है, उसके वंश को कलंक ही लगा है। हे हरि! उस कुल में बच्चे का जन्म नहीं होना चाहिए, वहाँ जन्म देने वाली माँ विधवा ही अच्छी है ताकि बच्चे को जन्म न दे सके॥२॥ हे परमेश्वर! मुझे उस सच्चे गुरु से मिला दो, जिसने हृदय में तेरे नाम का ध्यान किया है। गुरु का दर्शन करके गुरु का शिष्य यूं खुश होता है, जैसे माता को देखकर बच्चा खुशी से खिल उठता है॥३॥ जीव-स्त्री एवं पति-प्रभु का एक साथ ही निवास है, परन्तु बीच में अहंकार की कड़ी दीवार है। हे नानक! जब पूर्ण गुरु अहंकार की दीवार को तोड़ देता है तो प्रभु से मिलाप हो जाता है॥४॥१॥

मलार महला ४ ॥ गंगा जमुना गोदावरी सरसुती ते करहि उदमु धूरि साधू की ताई ॥ किलविख मैलु भरे परे हमरै विचि हमरी मैलु साधू की धूरि गवाई ॥ १ ॥ तीरथि अठसठि मजनु नाई ॥ सतसंगति की धूरि परी उडि नेत्री सभ दुरमति मैलु गवाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जाहरनवी तपै भागीरथि आणी केदारु थापिओ महसाई ॥ कांसी क्रिसनु चरावत गाऊ मिलि हरि जन सोभा पाई ॥ २ ॥ जितने तीरथ देवी थापे सभि तितने लोचहि धूरि साधू की ताई ॥ हरि का संतु मिलै गुर साधू लै तिस की धूरि मुखि लाई ॥ ३ ॥ जितनी स्रिसटि तुमरी मेरे सुआमी सभ तितनी लोचै धूरि साधू की ताई ॥ नानक लिलाटि होवै जिसु लिखिआ तिसु साधू धूरि दे हरि पारि लंघाई ॥ ४ ॥ २ ॥

गंगा, यमुना, गोदावरी एवं सरस्वती सरीखी पावन नदियाँ भी साधुओं की चरण-धूलि को पाने का प्रयास करती हैं। दरअसल इनका कथन है कि हमारे भीतर पापों की मैल से भरे हुए लोग स्नान करते हैं और हमारी मैल साधु पुरुषों की चरण-धूलि ही समाप्त करती है॥१॥ हरिनाम अड़सठ तीर्थों के स्नान का फल है। जब सत्संगति की धूल उड़कर आँखों में पड़ती है तो दुर्मति की सब मैल दूर हो जाती है॥१॥ रहाउ॥ राजा भागीरथ कठोर तपस्या करके गंगा को पृथ्वी पर लेकर आए, शिवशंकर ने केदारनाथ की स्थापना की। काशी एवं वृंदावन जहाँ श्रीकृष्ण गाएँ चराते रहे, इन सब तीर्थों ने हरि-भक्तों से ही शोभा प्राप्त की है॥२॥ जितने भी तीर्थ देवी-देवताओं ने स्थापित किए हैं, सभी साधु-पुरुषों की चरण-धूल की आकांक्षा करते हैं। इन तीर्थों का कथन है कि अगर ईश्वर का भक्त, साधु एवं गुरु मिले तो हम उनकी चरण-धूल मुख पर लगा लें॥३॥ हे मेरे स्वामी! जितनी भी तुम्हारी सृष्टि है, सृष्टि के सब लोग साधुओं की चरण-धूल ही चाहते हैं। नानक का कथन है कि जिसके मस्तक पर भाग्य लिखा होता है, ईश्वर उसे साधू की चरण-धूल देकर संसार-सागर से मुक्त कर देता है॥४॥२॥

मलार महला ४ ॥ तिसु जन कउ हरि मीठ लगाना जिसु हरि हरि क्रिपा करै ॥ तिस की भूख दूख सभि उतरै जो हरि गुण हरि उचरै ॥ १ ॥ जपि मन हरि हरि हरि निसतरै ॥ गुर के बचन करन सुनि धिआवै भव सागरु पारि परै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तिसु जन के हम हाटि बिहाझे जिसु हरि हरि क्रिपा करै ॥ हरि जन कउ मिलिआं सुखु पाईऐ सभ दुरमति मैलु हरै ॥ २ ॥ हरि जन कउ हरि भूख लगानी जनु त्रिपतै जा हरि गुन बिचरै ॥ हरि का जनु हरि जल का मीना हरि बिसरत फूटि मरै ॥ ३ ॥ जिनि एह प्रीति लाई सो जानै कै जानै जिसु मनि धरै ॥ जनु नानकु हरि देखि सुखु पावै सभ तन की भूख टरै ॥ ४ ॥ ३ ॥

जिस पर परमात्मा अपनी कृपा करता है, उसी व्यक्ति को वह अच्छा लगता है। जो परमात्मा का स्तुतिगान एवं नामोच्चारण करता है, उसकी हर भूख एवं दुख दूर हो जाता है॥१॥ हे मन! ईश्वर का नाम जपने से ही मुक्ति होती है। जो गुरु के वचनों को सुनकर मनन करता है, वह संसार-सागर से पार हो जाता है॥१॥ रहाउ॥ जिस पर परमात्मा की कृपा है, उस भक्त के लिए हम बाज़ार में बिकने को तैयार हैं। हरि-भक्त को मिलकर परम-सुख प्राप्त होता है और वह दुर्मति की सब मैल दूर कर देता है॥२॥ हरि-भक्त को हरि-भक्ति की लालसा लगी रहती है। जब वह हरि का कीर्तिगान करता है तो तृप्त हो जाता है। हरि का भक्त हरिनाम रूपी जल की मछली की तरह है और हरि को भूलने पर जल बिन मछली की तरह मर जाता है॥३॥ जिस ईश्वर ने यह प्रेम लगाया है, वही जानता है या जिस व्यक्ति के मन में धारण करता है, उसे ही जानकारी होती है। हे नानक! ऐसा व्यक्ति ईश्वर के दर्शनों से सुख की अनुभूति करता है और उसके तन की तमाम भूख समाप्त हो जाती है॥४॥३॥

मलार महला ४ ॥ जितने जीअ जंत प्रभि कीने तितने सिरि कार लिखावै ॥ हरि जन कउ हरि दीन्ह वडाई हरि जनु हरि कारै लावै ॥ १ ॥ सतिगुरु हरि हरि नामु द्रिड़ावै ॥ हरि बोलहु गुर के सिख मेरे भाई हरि भउजलु जगतु तरावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो गुर कउ जनु पूजे सेवे सो जनु मेरे हरि प्रभ भावै ॥ हरि की सेवा सतिगुरु पूजहु करि किरपा आपि तरावै ॥ २ ॥ भरमि भूले अगिआनी अंधुले भ्रमि भ्रमि फूल तोरावै ॥ निरजीउ पूजहि मड़ा सरेवहि सभ बिरथी घाल गवावै ॥ ३ ॥ ब्रहमु बिंदे सो सतिगुरु कहीऐ हरि हरि कथा सुणावै ॥ तिसु गुर कउ छादन भोजन पाट पटंबर बहु बिधि सति करि मुखि संचहु तिसु पुंन की फिरि तोटि न आवै ॥ ४ ॥ सतिगुरु देउ परतखि हरि मूरति जो अंम्रित बचन सुणावै ॥ नानक भाग भले तिसु जन के जो हरि चरणी चितु लावै ॥ ५ ॥ ४ ॥

जितने भी जीव-जन्तु प्रभु ने पैदा किए हैं, सब अपना कर्म लिखवा कर संसार में आते हैं। परमात्मा ने अपने भक्तों को कीर्ति प्रदान की है, भक्तजन भक्ति में लीन रहते हैं और सब लोगों को भक्ति में लगाते हैं॥१॥ सच्चा गुरु हरि का नाम-सुमिरन दृढ़ कराता है। हे मेरे भाई! गुरु के शिष्यो, हरि का नामोच्चारण करो, यही भयानक संसार-सागर से तैराता है॥१॥ रहाउ॥ जो व्यक्ति गुरु की पूजा एवं सेवा करता है, वही मेरे प्रभु को प्रिय लगता है। ईश्वर की उपासना करो, सबसे पहले सच्चे गुरु का पूजन करो, वह कृपा करके स्वयं संसार-सागर से तिरा देता है॥२॥ भ्रम में भूला हुआ अज्ञानांध अज्ञानी जीव मूर्तियों पर फूल भेंट करता है। वह पत्थर की मूर्तियों की पूजा-अर्चना करता है, समाधियों पर शीश निवाता है और अपनी मेहनत व्यर्थ गंवा देता है॥३॥ जो ब्रह्म को जानता है, वही सच्चा गुरु कहलाता है और हरि की कथा सुनाता है। उस गुरु को अनेक प्रकार के भोजन, सुन्दर वस्त्र इत्यादि सर्वस्व अर्पण करो, उसे सत्य मानकर उसकी शिक्षाओं को ग्रहण करो, उस पुण्य से पुनः कोई कमी नहीं आएगी॥४॥ सच्चा गुरु साक्षात् परमात्मा की मूर्ति है, जो जिज्ञासुओं को अमृत वचन सुनाता है। हे नानक! उसी व्यक्ति के अहोभाग्य हैं, जो परमात्मा के चरणों में मन लगाता है॥५॥४॥

मलार महला ४ ॥ जिन्ह कै हीअरै बसिओ मेरा सतिगुरु ते संत भले भल भांति ॥ तिन्ह देखे मेरा मनु बिगसै हउ तिन कै सद बलि जांत ॥ १ ॥ गिआनी हरि बोलहु दिनु राति ॥ तिन्ह की त्रिसना भूख सभ उतरी जो गुरमति राम रसु खांति ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि के दास साध सखा जन जिन मिलिआ लहि जाइ भरांति ॥ जिउ जल दुध भिंन भिंन काढै चुणि हंसुला तिउ देही ते चुणि काढै साधू हउमै

ताति ॥ २ ॥ जिन कै प्रीति नाही हरि हिरदै ते कपटी नर नित कपटु कमांति ॥ तिन कउ किआ कोई देइ खवालै ओइ आपि बीजि आपे ही खांति ॥ ३ ॥ हरि का चिहनु सोई हरि जन का हरि आपे जन महि आपु रखांति ॥ धनु धंनु गुरू नानकु समदरसी जिनि निंदा उसतति तरी तरांति ॥ ४ ॥ ५ ॥

जिनके हृदय में मेरा सतिगुरु बस गया है, वे संत पुरुष हर प्रकार से उत्तम एवं भले हैं। उनके दर्शनों से मेरा मन खिल उठता है और मैं इन महापुरुषों पर सदा कुर्बान जाता हूँ॥ १॥ उन ज्ञानियों के साथ दिन-रात हरि का नामोच्चारण करो। जो गुरु की शिक्षा द्वारा राम नाम रस का आस्वादन लेते हैं, उनकी तृष्णा एवं भूख सब उतर जाती है॥ १॥ रहाउ॥ ईश्वर के भक्त, साधुजन ही सच्चे मित्र हैं, जिनको मिलकर भ्रम-भ्रांति दूर हो जाती है। ज्यों हंस जल में से दूध को अलग-अलग कर देता है, वैसे ही साधु-महात्मा जन शरीर में से अभिमान की पीड़ा को निकाल देते हैं॥ २॥ जिनके मन में परमात्मा का प्रेम नहीं होता, ऐसे कपटी लोग प्रतिदिन कपट करते हैं। ऐसे लोगों को भला कोई बुलाकर क्या देगा, क्या खिलाएगा। वे जो भी अच्छा बुरा बोते हैं, वही खाते हैं॥ ३॥ जो ईश्वर का गुण है, वही उसके भक्तों में है और ईश्वर भक्तों में ही स्वयं को स्थिर रखता है। समदर्शी गुरु नानक धन्य एवं प्रशंसा के पात्र हैं, जिन्होंने निन्दा एवं स्तुति से मुक्त होकर अन्य लोगों को भी इससे पार कर दिया है॥ ४॥ ५॥

मलार महला ४ ॥ अगमु अगोचरु नामु हरि ऊतमु हरि किरपा ते जपि लइआ ॥ सतसंगति साध पाई वडभागी संगि साधू पारि पइआ ॥ १ ॥ मेरै मनि अनदिनु अनदु भइआ ॥ गुर परसादि नामु हरि जपिआ मेरे मन का भ्रमु भउ गइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिन हरि गाइआ जिन हरि जपिआ तिन संगति हरि मेलहु करि मइआ ॥ तिन का दरसु देखि सुखु पाइआ दुखु हउमै रोगु गइआ ॥ २ ॥ जो अनदिनु हिरदै नामु धिआवहि सभु जनमु तिना का सफलु भइआ ॥ ओइ आपि तरे स्रिसटि सभ तारी सभु कुलु भी पारि पइआ ॥ ३ ॥ तुधु आपे आपि उपाइआ सभु जगु तुधु आपे वसि करि लइआ ॥ जन नानक कउ प्रभि किरपा धारी बिखु डुबदा काढि लइआ ॥ ४ ॥ ६ ॥

अपहुँच, मन-वाणी से परे परमात्मा का नाम सर्वोत्तम है और उसकी कृपा से ही नाम का जाप किया है। मैं भाग्यशाली हूँ, जो मुझे सच्चे साधु की संगत प्राप्त हुई, साधु की संगत में संसार-सागर से पार हो गया हूँ॥ १॥ मेरे मन में आनंद ही आनंद हो गया है, गुरु की कृपा से हरिनाम का जाप किया, जिससे मन का भ्रम एवं भय दूर हो गया॥ १॥ रहाउ॥ जिन्होंने परमात्मा का गुणगान किया है, हरिनाम जपा है, हे प्रभु! दया करके उनकी संगत में मिला दो। उनके दर्शन से परम-सुख प्राप्त होता है और अहम् एवं दुख का रोग दूर हो जाता है॥ २॥ जो दिन-रात हृदय में हरिनाम का ध्यान करते हैं, उनका पूरा जन्म सफल हो जाता है। वे स्वयं तो पार होते ही हैं, सारी दुनिया को भी पार उतार देते हैं, और तो और उनकी समूची वंशावलि भी संसार-सागर से पार हो जाती है॥ ३॥ हे सर्वेश्वर! समूचा जग तूने स्वयं उत्पन्न किया है और स्वयं ही अपने वश में किया हुआ है। नानक पर प्रभु ने कृपा धारण की है और विषय-विकारों में डूब रहे को बाहर निकाल लिया है॥ ४॥ ६॥

मलार महला ४ ॥ गुर परसादी अंम्रितु नही पीआ त्रिसना भूख न जाई ॥ मनमुख मूढ़ जलत अहंकारी हउमै विचि दुखु पाई ॥ आवत जात बिरथा जनमु गवाइआ दुखि लागै पछुताई ॥ जिस ते उपजे तिसहि न चेतहि ध्रिगु जीवणु ध्रिगु खाई ॥ १ ॥ प्राणी गुरमुखि नामु धिआई ॥ हरि हरि क्रिपा

करे गुरु मेले हरि हरि नामि समाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनमुख जनमु भइआ है बिरथा आवत जात लजाई ॥ कामि क्रोधि डूबे अभिमानी हउमै विचि जलि जाई ॥ तिन सिधि न बुधि भई मति मधिम लोभ लहरि दुखु पाई ॥ गुर बिहून महा दुखु पाइआ जम पकरे बिललाई ॥ २ ॥ हरि का नामु अगोचरु पाइआ गुरमुखि सहजि सुभाई ॥ नामु निधानु वसिआ घट अंतरि रसना हरि गुण गाई ॥ सदा अनंदि रहै दिनु राती एक सबदि लिव लाई ॥ नामु पदारथु सहजे पाइआ इह सतिगुर की वडिआई ॥ ३ ॥ सतिगुर ते हरि हरि मनि वसिआ सतिगुर कउ सद बलि जाई ॥ मनु तनु अरपि रखउ सभु आगै गुर चरणी चितु लाई ॥ अपणी क्रिपा करहु गुर पूरे आपे लैहु मिलाई ॥ हम लोह गुर नाव बोहिथा नानक पारि लंघाई ॥ ४ ॥ ७ ॥

जो गुरु की कृपा से हरिनाम-अमृत का पान नहीं करते, उनकी तृष्णा एवं भूख दूर नहीं होती। मन की मर्जी करने वाले हठधर्मी मूर्ख लोग अहंकार में जलते हैं और अहम्-भाव में दुख ही प्राप्त करते हैं। आवागमन में उनका जीवन व्यर्थ जाता है और दुखों में लीन होकर पछताते हैं। जिस परमेश्वर से उत्पन्न होते हैं, उसको याद नहीं करते, उनके जीवन एवं खान-पान को धिक्कार है॥१॥ हे प्राणी ! गुरमुख बनकर हरिनाम का भजन करो, जब प्रभु कृपा करता है तो गुरु से मिला देता है, तदन्तर जीव हरिनाम स्मरण में लीन रहता है॥१॥ रहाउ॥ स्वेच्छाचारी का जीवन व्यर्थ ही जाता है और जन्म-मरण के चक्र में लज्जित होता है। वह अभिमानी बनकर काम-क्रोध में डूबता है और अहम् में जलता रहता है। उसके पास न गुणसंपन्नता होती है, न सद्बुद्धि होती है, वह मंदमति के कारण लोभ की लहरों में पड़कर दुख ही पाता है। गुरु से विहीन रहकर वे महादुख पाते हैं, जब मौत पकड़ती है तो चिल्लाते हैं॥२॥ प्रभु का अगोचर नाम गुरु के कोमल शांत-स्वभाव से प्राप्त होता है। तदन्तर हरिनाम रूपी सुखों का भण्डार अन्तर्मन में अवस्थित हो जाता है और जिह्वा प्रभु का गुणगान करती है। वह एक प्रभु-शब्द की लगन में दिन-रात आनंदित रहता है। यह सच्चे गुरु का बड़प्पन है कि हरिनाम रूपी पदार्थ नैसर्गिक ही प्राप्त होता है॥३॥ सतगुरु से प्रभु मन में अवस्थित हुआ है, इसलिए सतगुरु पर मैं सदैव कुर्बान जाता हूँ। मैं मन-तन सर्वस्व उसके आगे अर्पण करता हूँ और गुरु चरणों में दिल लगा लिया है। अपनी कृपा करके पूर्ण गुरु स्वयं ही मिला लेता है। हे नानक ! हम लोहे के समान है, गुरु नैया एवं जहाज है, जिसके संग संसार-सागर से पार उतर जाते हैं॥४॥७॥

मलार महला ४ पड़ताल घरु ३ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

हरि जन बोलत स्रीराम नामा मिलि साधसंगति हरि तोर ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि धनु बनजहु हरि धनु संचहु जिसु लागत है नही चोर ॥ १ ॥ चाव्रिक मोर बोलत दिनु राती सुनि घनिहर की घोर ॥ २ ॥ जो बोलत है म्रिग मीन पंखेरू सु बिनु हरि जापत है नही होर ॥ ३ ॥ नानक जन हरि कीरति गाई छूटि गइओ जम का सभ सोर ॥ ४ ॥ १ ॥ ८ ॥

भक्तजन श्री राम नाम का उच्चारण करते हैं, साधुसंगत में मिल बैठकर वे प्रभु का भजनगान करते हैं॥१॥ रहाउ॥ हरिनाम धन का व्यापार करो, इसी धन को संचित करो, इस धन को चोर भी चोरी नहीं करते॥१॥ बादलों की गूँज सुनकर मोर एवं चातक दिन-रात बोलते हैं॥२॥ वैसे ही जो हिरन, मछलियाँ एवं पक्षी बोलते हैं, वे भी प्रभु के बिना किसी अन्य का जाप नहीं करते॥

३॥ नानक का कथन है कि जिन भक्तों ने ईश्वर का कीर्ति-गान किया है, उनका यम का भय छूट गया है॥४॥१॥८॥

मलार महला ४ ॥ राम राम बोलि बोलि खोजते बडभागी ॥ हरि का पंथु कोऊ बतावै हउ ता कै पाइ लागी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि हमारो मीतु सखाई हम हरि सिउ प्रीति लागी ॥ हरि हम गावहि हरि हम बोलहि अउरु दुतीआ प्रीति हम तिआगी ॥ १ ॥ मनमोहन मोरो प्रीतम रामु हरि परमानंदु बैरागी ॥ हरि देखे जीवत है नानकु इक निमख पलो मुखि लागी ॥ २ ॥ २ ॥ ६ ॥ ६ ॥ १३ ॥ ६ ॥ ३१ ॥

राम राम बोलते भाग्यशाली व्यक्ति उसी को खोजते हैं। यदि कोई मुझे परमात्मा का मार्ग बता दे तो मैं उसी के पांवों में लगा रहूँ॥१॥ रहाउ॥ परमात्मा हमारा मित्र एवं शुभचिन्तक है और उसी से हमारी प्रीति लगी हुई है। हम परमात्मा के गुण गाते हैं, उसके नाम का उच्चारण करते हैं और द्वैतभाव का प्रेम हमने त्याग दिया है॥१॥ एकमात्र वही मेरा मनमोहन एवं प्रियतम है और वही परमानंद एवं वैराग्यवान है। हे नानक! परमात्मा के दर्शन ही हमारा जीवन है, एक पल के लिए दर्शन मिल जाए॥२॥२॥६॥६॥१३॥६॥३१॥

रागु मलार महला ५ चउपदे घरु १ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

किआ तू सोचहि किआ तू चितवहि किआ तूं करहि उपाए ॥ ता कउ कहहु परवाह काहू की जिह गोपाल सहाए ॥ १ ॥ बरसै मेघु सखी घरि पाहुन आए ॥ मोहि दीन क्रिपा निधि ठाकुर नव निधि नामि समाए ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनिक प्रकार भोजन बहु कीए बहु बिंजन मिसटाए ॥ करी पाकसाल सोच पवित्रा हुणि लावहु भोगु हरि राए ॥ २ ॥ दुसट बिदारे साजन रहसे इहि मंदिर घर अपनाए ॥ जउ ग्रिहि लालु रंगीओ आइआ तउ मै सभि सुख पाए ॥ ३ ॥ संत सभा ओट गुर पूरे धुरि मसतकि लेखु लिखाए ॥ जन नानक कंतु रंगीला पाइआ फिरि दूखु न लागै आए ॥ ४ ॥ १ ॥

हे जीव! तू क्या सोचता है, क्या याद करता है, तू कौन-सा उपाय आजमा रहा है। जिसकी परमात्मा सहायता करने वाला है, उसे तो तनिक भी किसी की परवाह नहीं होती॥१॥ हे सत्संगी सखी! खुशी के बादल बरस रहे हैं, घर में पति-प्रभु आ गया है। मैं दीन कृपानिधान, नवनिधि-प्रदाता प्रभु के नाम में विलीन हूँ॥१॥ रहाउ॥ हमने अनेक प्रकार के भोजन, विभिन्न व्यंजन एवं मिठाइयाँ तैयार की हैं। रसोई को पावन एवं शुद्ध किया है, हे प्रभु! भोग-प्रसाद ग्रहण कीजिए॥२॥ इस हृदय-घर को प्रभु ने अपनाया तो दुष्ट विकारों का नाश हो गया और गुण रूपी सज्जन खुशी से खिल उठे। जब रंगीला प्रभु हृदय घर में आया तो मुझे सर्व सुख प्राप्त हुए॥३॥ विधाता ने भाग्य में लिखा हुआ था, इसी कारण संतों की सभा एवं पूर्ण गुरु का आसरा प्राप्त हुआ। नानक का कथन है कि रंगीले प्रभु को पाकर अब पुनः कोई दुख-दर्द नहीं लगता॥४॥१॥

मलार महला ५ ॥ खीर अधारि बारिकु जब होता बिनु खीरै रहनु न जाई ॥ सारि सम्हालि माता मुखि नीरै तब ओहु त्रिपति अघाई ॥ १ ॥ हम बारिक पिता प्रभु दाता ॥ भूलहि बारिक अनिक लख बरीआ अन ठउर नाही जह जाता ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चंचल मति बारिक बपुरे की सरप अगनि कर मेलै ॥ माता पिता कंठि लाइ राखै अनद सहजि तब खेलै ॥ २ ॥ जिस का पिता तू है मेरे सुआमी तिसु बारिक भूख कैसी ॥ नव निधि नामु निधानु ग्रिहि तेरै मनि बांछै सो लैसी ॥ ३ ॥ पिता

क्रिपालि आगिआ इह दीनी बारिकु मुखि मांगै सो देना ॥ नानक बारिकु दरसु प्रभ चाहै मोहि ह्रिदै बसहि नित चरना ॥ ४ ॥ २ ॥

जब छोटा-सा बच्चा दूध के आसरे होता है तो दूध के बिना वह बिल्कुल नहीं रहता। देखभाल करने वाली माता जब मुँह में दूध देती है तो वह तृप्त हो जाता है ॥१॥ हे दाता प्रभु! हम तेरे बच्चे हैं और तू हमारा पिता है। यदि बालक लाखों बार गलती करता है तो पिता के सिवा उसका अन्य कोई ठौर-ठिकाना नहीं होता॥१॥ रहाउ॥ बेचारे बालक की बुद्धि इतनी चंचल होती है कि वह सांप एवं अग्नि दोनों को हाथ लगाता है। जब माता-पिता उसे गले से लगाकर रखते हैं, तब वह आनंद एवं खुशी में खेलता है॥२॥ हे मेरे स्वामी! जिसका तू पिता है, उस बालक को भला कैसी भूख होगी। नवनिधि एवं सुखों का भण्डार नाम तेरे घर में है। जैसी मनोकामना होती है, वही मिलता है॥३॥ कृपालु पिता ने यह आज्ञा कर दी है कि बालक मुख से जो मांगता है, उसे दे देना। हे नानक! यह बालक प्रभु दर्शन ही चाहता है और कामना करता है कि मेरे हृदय में सदैव प्रभु के चरण बसे रहें॥४॥२॥

मलार महला ५ ॥ सगल बिधी जुरि आहरु करिआ तजिओ सगल अंदेसा ॥ कारजु सगल अरंभिओ घर का ठाकुर का भारोसा ॥ १ ॥ सुनीऐ बाजै बाज सुहावी ॥ भोरु भइआ मै प्रिअ मुख पेखे ग्रिहि मंगल सुहलावी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनूआ लाइ सवारे थानां पूछउ संता जाए ॥ खोजत खोजत मै पाहुन मिलिओ भगति करउ निवि पाए ॥ २ ॥ जब प्रिअ आइ बसे ग्रिहि आसनि तब हम मंगलु गाइआ ॥ मीत साजन मेरे भए सुहेले प्रभु पूरा गुरू मिलाइआ ॥ ३ ॥ सखी सहेली भए अनंदा गुरि कारज हमरे पूरे ॥ कहु नानक वरु मिलिआ सुखदाता छोडि न जाई दूरे ॥ ४ ॥ ३ ॥

सभी तरीकों का चिन्तन करके हमने सब भ्रमों को त्याग देने का कार्य किया है। मालिक पर भरोसा करके घर में भक्ति का कार्य आरम्भ किया है॥१॥ संगीत की सुखमय ध्वनियां सुनाई दे रही हैं। ज्ञान की सुबह हो गई है, मुझे प्रभु के दर्शन प्राप्त हुए हैं और घर में खुशियों का मंगलगान हो रहा है॥१॥ रहाउ॥ मन लगाकर सभी स्थानों को सुन्दर बनाया है और संतों से जाकर पूछती हूँ कि प्रभु कहाँ है। खोजते-खोजते मुझे पति-परमेश्वर मिल गया है और उसके पैरों में झुककर उसकी भक्ति करती हूँ॥२॥ जब प्रियतम-प्रभु हृदय-घर में आसन लगाकर बस गया तो हमने उसी का मंगलगान किया। प्रभु ने पूर्ण गुरु से मिलाप करवाया तो मेरे मित्र एवं सज्जन सभी सुखी हो गए॥३॥ पूर्ण गुरु ने हमारे सभी कार्य पूरे कर दिए हैं, जिससे सत्संगी सखी-सहेलियां आनंदमय हो गई हैं। हे नानक! सुख देने वाला पति-परमेश्वर मिल गया है, अब उसे छोड़कर कहीं दूर नहीं जाता॥४॥३॥

मलार महला ५ ॥ राज ते कीट कीट ते सुरपति करि दोख जठर कउ भरते ॥ क्रिपा निधि छोडि आन कउ पूजहि आतम घाती हरते ॥ १ ॥ हरि बिसरत ते दुखि दुखि मरते ॥ अनिक बार भ्रमहि बहु जोनी टेक न काहू धरते ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तिआगि सुआमी आन कउ चितवत मूड़ मुगध खल खर ते ॥ कागर नाव लंघहि कत सागरु ब्रिथा कथत हम तरते ॥ २ ॥ सिव बिरंचि असुर सुर जेते काल अगनि महि जरते ॥ नानक सरनि चरन कमलन की तुम्ह न डारहु प्रभ करते ॥ ३ ॥ ४ ॥

राजा से लेकर कीट एवं कीट से लेकर स्वर्गाधिपति देवराज इन्द्र तक अपने पापों के कारण योनि-चक्र भोगते हैं। जो कृपानिधान को छोड़कर किसी अन्य की पूजा करता है, वह आत्मघाती

एवं लुटेरा है॥१॥ ईश्वर को भुलाकर सब दुखों में मरते हैं। वे अनेक बार विभिन्न योनियों में भटकते हैं लेकिन उनको कहीं भी आसरा नहीं मिलता॥१॥ रहाउ॥ जो लोग स्वामी को त्यागकर किसी अन्य को याद करते हैं, ऐसे व्यक्ति मूर्ख, बेवकूफ एवं गधे ही हैं। कागज की नाव पर सागर कैसे पार किया जा सकता है, लोग बेकार ही कहते हैं कि हम तैर गए हैं॥२॥ शिवशंकर, ब्रह्मा, राक्षस एवं देवता इत्यादि काल की अग्नि में जलते हैं। नानक प्रार्थना करते हैं कि हे कर्ता प्रभु! हम तेरे चरण-कमल की शरण में हैं, तुम हमें दूर मत करना॥३॥४॥

रागु मलार महला ५ दुपदे घरु १ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

प्रभ मेरे ओइ बैरागी तिआगी ॥ हउ इकु खिनु तिसु बिनु रहि न सकउ प्रीति हमारी लागी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ उन कै संगि मोहि प्रभु चिति आवै संत प्रसादि मोहि जागी ॥ सुनि उपदेसु भए मन निरमल गुन गाए रंगि रांगी ॥ १ ॥ इहु मनु देइ कीए संत मीता क्रिपाल भए बडभागी ॥ महा सुखु पाइआ बरनि न साकउ रेनु नानक जन पागी ॥ २ ॥ १ ॥ ५ ॥

जो मेरे प्रभु के वैरागी एवं सन्यासी हैं, उनके साथ ही हमारी प्रीति लगी हुई है और उनके बिना एक पल भी रह नहीं सकता॥१॥ रहाउ॥ उनके साथ मुझे प्रभु याद आता है और संतों की कृपा से जाग्रत हो गया हूँ। उनका उपदेश सुनकर मेरा मन निर्मल हो गया है और प्रेम के रंग में रंग कर मैं प्रभु का गुणानुवाद करता हूँ॥१॥ यह मन अर्पण करके संत पुरुषों को अपना मित्र बना लिया है, मैं भाग्यशाली हूँ, जो उनकी कृपा हुई है। नानक का कथन है कि संत-पुरुषों की चरण-धूल से महा सुख प्राप्त हुआ है, जो वर्णन नहीं किया जा सकता॥२॥१॥५॥

मलार महला ५ ॥ माई मोहि प्रीतमु देहु मिलाई ॥ सगल सहेली सुख भरि सूती जिह घरि लालु बसाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मोहि अवगन प्रभु सदा दइआला मोहि निरगुनि किआ चतुराई ॥ करउ बराबरि जो प्रिअ संगि रातीं इह हउमै की ढीठाई ॥ १ ॥ भई निमाणी सरनि इक ताकी गुर सतिगुर पुरख सुखदाई ॥ एक निमख महि मेरा सभु दुखु काटिआ नानक सुखि रैनि बिहाई ॥ २ ॥ २ ॥ ६ ॥

हे माई! मुझे प्रियतम से मिला दो। जिनके हृदय-घर में प्रभु बसता है, वे सभी सहेलियाँ सुखपूर्वक रहती हैं॥१॥ रहाउ॥ मुझ में अवगुण ही अवगुण हैं। मेरा प्रभु सदा दयालु है, मैं गुणविहीन क्या चतुराई कर सकती हूँ। जो प्रियतम प्रभु में लीन है, अगर उसकी बराबरी करती हूँ तो यह मेरे अहंकार की निर्लज्जता है॥१॥ मैंने विनम्र होकर सुख देने वाले गुरु की शरण ली है। हे नानक! उसने एक पल में मेरा सारा दुख काट दिया है और जीवन-रात्रि सुख में व्यतीत हो रही है॥२॥२॥६॥

मलार महला ५ ॥ बरसु मेघ जी तिलु बिलमु न लाउ ॥ बरसु पिआरे मनहि सधारे होइ अनदु सदा मनि चाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हम तेरी धर सुआमीआ मेरे तू किउ मनहु बिसारे ॥ इसत्री रूप चेरी की निआई सोभ नही बिनु भरतारे ॥ १ ॥ बिनउ सुनिओ जब ठाकुर मेरै बेगि आइओ किरपा धारे ॥ कहु नानक मेरो बनिओ सुहागो पति सोभा भले अचारे ॥ २ ॥ ३ ॥ ७ ॥

हे बादल सतगुरु! प्रेम एवं ज्ञान की वर्षा कर दो, कोई देरी मत करो। हे प्यारे! सुख की वर्षा कर दो, मन को तेरा ही आसरा है, बरसने से आनंद मिल जाएगा, मन को यही चाव है॥

१॥ रहाउ॥ हे मेरे स्वामी! हमें तेरा ही अवलम्ब है, तूने क्यों मन से भुला दिया है। कोमल स्वभाव, दासी की तरह स्त्री अपने पति के बिना शोभा प्राप्त नहीं करती॥१॥ जब ठाकुर जी ने मेरी विनती सुनी तो कृपा करके आ गया। हे नानक! मेरा पति प्रभु सुहाग बन गया है, अब शोभा, आचरण, प्रतिष्ठा सब भले हैं॥२॥३॥७॥

मलार महला ५ ॥ प्रीतम साचा नामु धिआइ ॥ दूख दरद बिनसै भव सागरु गुर की मूरति रिदै बसाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दुसमन हते दोखी सभि विआपे हरि सरणाई आइआ ॥ राखनहारै हाथ दे राखिओ नामु पदारथु पाइआ ॥ १ ॥ करि किरपा किलविख सभि काटे नामु निरमलु मनि दीआ ॥ गुण निधानु नानक मनि वसिआ बाहुड़ि दूख न थीआ ॥ २ ॥ ४ ॥ ८ ॥

प्रियतम प्रभु के सच्चे नाम का ही चिंतन किया है। जब गुरु की मूर्ति को मन में बसाया तो संसार-सागर के दुख-दर्द नष्ट हो गए॥१॥ रहाउ॥ जब मैं भगवान की शरण में आया तो दुश्मनों का अंत हुआ और सब पापी दुखों में लीन हो गए। बचाने वाले प्रभु ने हाथ देकर मुझे बचाया है और नाम पदार्थ ही प्राप्त हुआ है॥१॥ उसने कृपा करके मेरे सब पाप काट दिए हैं और निर्मल नाम मन को दे दिया है। नानक फुरमाते हैं कि गुणों का भण्डार प्रभु मन में अवस्थित हो गया है, अतः पुनः कोई दुख नहीं सताता॥२॥४॥८॥

मलार महला ५ ॥ प्रभ मेरे प्रीतम प्रान पिआरे ॥ प्रेम भगति अपनो नामु दीजै दइआल अनुग्रहु धारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिमरउ चरन तुहारे प्रीतम रिदै तुहारी आसा ॥ संत जना पहि करउ बेनती मनि दरसन की पिआसा ॥ १ ॥ बिछुरत मरनु जीवनु हरि मिलते जन कउ दरसनु दीजै ॥ नाम अधारु जीवन धनु नानक प्रभ मेरे किरपा कीजै ॥ २ ॥ ५ ॥ ९ ॥

हे मेरे प्रियतम प्रभु! तू प्राणों से भी प्यारा है। दयालु कृपालु होकर मुझे अपनी प्रेम भक्ति एवं नाम ही दीजिए॥१॥ रहाउ॥ हे प्रियतम! मैं तुम्हारे चरणों का स्मरण करता हूँ और हृदय में तुम्हारी ही आशा है। मैं संतजनों के पास विनती करता हूँ कि मेरे मन में दर्शनों की ही तीव्र लालसा है॥१॥ हे प्रभु! तुझसे बिछुड़ना मरने के बराबर है, तेरा मिलन ही एकमात्र जीवन है, दास को दर्शन दीजिए। नानक प्रार्थना करते हैं कि हे प्रभु! तेरा नाम ही जीवन का आसरा एवं धन है, मुझ पर कृपा करो॥२॥५॥६॥

मलार महला ५ ॥ अब अपने प्रीतम सिउ बनि आई ॥ राजा रामु रमत सुखु पाइओ बरसु मेघ सुखदाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इकु पलु बिसरत नही सुख सागरु नामु नवै निधि पाई ॥ उदौतु भइओ पूरन भावी को भेटे संत सहाई ॥ १ ॥ सुख उपजे दुख सगल बिनासे पारब्रहम लिव लाई ॥ तरिओ संसारु कठिन भै सागरु हरि नानक चरन धिआई ॥ २ ॥ ६ ॥ १० ॥

अब अपने प्रियतम प्रभु के संग मेरी प्रीति लगी हुई है। राजा राम का मनन करते हुए परम सुख प्राप्त हुआ है और गुरु ने सुखों की बरसात की है॥१॥ रहाउ॥ सुखसागर परमेश्वर एक पल भी नहीं भूलता और नामोच्चारण से नवनिधि प्राप्त हुई है। हमारा भाग्योदय हुआ तो सहायक संतों से भेंट हो गई॥१॥ परब्रह्म में लगन लगाई तो सुख उत्पन्न हो गए और सब दुख समाप्त हो गए। हे नानक! हरि-चरणों का ध्यान किया तो कठिन एवं भयानक संसार-सागर पार कर लिया॥२॥६॥१०॥

मलार महला ५ ॥ घनिहर बरसि सगल जगु छाइआ ॥ भए क्रिपाल प्रीतम प्रभ मेरे अनद मंगल सुख पाइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मिटे कलेस त्रिसन सभ बूझी पारब्रहमु मनि धिआइआ ॥ साधसंगि जनम मरन निवारे बहुरि न कतहू धाइआ ॥ १ ॥ मनु तनु नामि निरंजनि रातउ चरन कमल लिव लाइआ ॥ अंगीकारु कीओ प्रभि अपनै नानक दास सरणाइआ ॥ २ ॥ ७ ॥ ११ ॥

गुरु ने ज्ञान एवं उपदेश की वर्षा करके पूरे जगत को छाया दे दी है। मेरा प्रियतम प्रभु कृपालु हुआ तो आनंद एवं मंगल सुख प्राप्त हो गया॥१॥ रहाउ॥ परब्रह्म का मन में ध्यान करने से सब क्लेश मिट गए हैं और तृष्णा बुझ गई है। साधु पुरुषों की संगत में जन्म-मरण का निवारण हुआ है, अब इधर-उधर नहीं भटकता॥१॥ यह मन तन परमात्मा के पावन नाम में ही लीन है और उसी के चरण-कमल में लगन लगाई हुई है। नानक का कथन है कि प्रभु ने अपने साथ मिलाकर दास को शरण में ले लिया है॥२॥७॥११॥

मलार महला ५ ॥ बिछुरत किउ जीवे ओइ जीवन ॥ चितहि उलास आस मिलबे की चरन कमल रस पीवन ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिन कउ पिआस तुमारी प्रीतम तिन कउ अंतरु नाही ॥ जिन कउ बिसरै मेरो रामु पिआरा से मूए मरि जांहीं ॥ १ ॥ मनि तनि रवि रहिआ जगदीसुर पेखत सदा हजूरे ॥ नानक रवि रहिओ सभ अंतरि सरब रहिआ भरपूरे ॥ २ ॥ ८ ॥ १२ ॥

हे परब्रह्म ! तुझसे बिछुड़कर यह जीवन कैसे जीया जा सकता है ? तेरे मिलन की आशा में मन में उत्साह बना हुआ है और तेरे चरण-कमल का रस पीना चाहता हूँ॥१॥ रहाउ॥ हे मेरे प्रियतम ! जिनको तेरे दर्शनों की तीव्र लालसा है, उनको कोई भेदभाव नहीं होता। जिनको मेरा प्यारा राम भूल जाता है, वे मरते ही रहते हैं॥१॥ जगदीश्वर मेरे मन तन में ही अवस्थित है और मैं सदा उसे आस-पास ही देखता हूँ। हे नानक ! ईश्वर सबके अन्तर्मन में स्थित है, वह सर्वव्यापक है॥२॥८॥१२॥

मलार महला ५ ॥ हरि कै भजनि कउन कउन न तारे ॥ खग तन मीन तन म्रिग तन बराह तन साधू संगि उधारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ देव कुल दैत कुल जख्य किंनर नर सागर उतरे पारे ॥ जो जो भजनु करै साधू संगि ता के दूख बिदारे ॥ १ ॥ काम करोध महा बिखिआ रस इन ते भए निरारे ॥ दीन दइआल जपहि करुणामै नानक सद बलिहारे ॥ २ ॥ ६ ॥ १३ ॥

परमात्मा के भजन द्वारा किस-किस की मुक्ति न हुई, पक्षी का शरीर धारण करने वाले (जटायु), मछली का शरीर धारण करने वाले (मत्स्यावतार), हिरण का शरीर धारण करने वाले (मरीचि ऋषि) एवं वाराह का रूप धारण करने वाला (वाराहावतार) इत्यादि सबका महापुरुषों की संगत में उद्धार हो गया॥१॥ रहाउ॥ देव कुल, दैत्य कुल, यक्ष, किन्नर, मनुष्य सब संसार-सागर से पार उतर गए। जो जो साधु-महापुरुषों के साथ परमात्मा का भजन करते हैं, उनके दुखों का अंत हो जाता है॥१॥ संत-पुरुष काम, क्रोध एवं महाविकारों के रस से अलिप्त ही रहते हैं। वे दीनदयाल, करुणामय परमेश्वर का जाप करते हैं, नानक सदैव उन पर कुर्बान जाता है॥२॥६॥१३॥

मलार महला ५ ॥ आजु मै बैसिओ हरि हाट ॥ नामु रासि साझी करि जन सिउ जांउ न जम कै घाट ॥ १ ॥ रहाउ ॥ धारि अनुग्रहु पारब्रहमि राखे भ्रम के खुल्हे कपाट ॥ बेसुमार साहु प्रभु पाइआ

लाहा चरन निधि खाट ॥ १ ॥ सरनि गही अचुत अबिनासी किलबिख काढे है छांटि ॥ कलि कलेस मिटे दास नानक बहुरि न जोनी माट ॥ २ ॥ १० ॥ १४ ॥

आज मैं ईश्वर के बाज़ार अर्थात् सत्संगत में बैठा हुआ हूँ और भक्तजनों के साथ हरिनाम राशि की हिस्सेदारी की है, जिस कारण यम के रास्ते पर नहीं जाऊँगा॥१॥ रहाउ॥ परब्रह्म ने कृपा करके रक्षा की है और भ्रम के कपाट खोल दिए हैं। मैंने गुणों के अनंत भण्डार, शाह प्रभु को पा लिया है और सुखमय चरणों का लाभ प्राप्त किया है॥१॥ मैंने अटल, अविनाशी परमेश्वर की शरण ली है और उसने पापों को छांट कर निकाल दिया है। दास नानक के सभी दुख-क्लेश मिट गए हैं और वह योनियों के चक्र से मुक्त हो गया है॥२॥१०॥१४॥

मलार महला ५ ॥ बहु बिधि माइआ मोह हिरानो ॥ कोटि मधे कोऊ बिरला सेवकु पूरन भगतु चिरानो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इत उत डोलि डोलि स्रमु पाइओ तनु धनु होत बिरानो ॥ लोग दुराइ करत ठगिआई होतौ संगि न जानो ॥ १ ॥ म्रिग पंखी मीन दीन नीच इह संकट फिरि आनो ॥ कहु नानक पाहन प्रभ तारहु साधसंगति सुख मानो ॥ २ ॥ ११ ॥ १५ ॥

माया मोह अनेक प्रकार से मनुष्य को ठग रहा है। करोड़ों में से कोई विरला सेवक है, जो अनंतकाल से परमात्मा का पूर्ण भक्त माना जाता है॥१॥ रहाउ॥ इधर-उधर भागदौड़ करके मनुष्य बहुत मेहनत करता है और आखिरकार तन मन पराया हो जाता है। लोगों से छिपकर छल, कपट, धोखा देकर धन दौलत तो जमा करता है लेकिन जो परमात्मा आस-पास ही है, उसका मनन नहीं करता॥१॥ जब कर्मों का हिसाब होता है तो हिरण, पक्षी, मछली दीन एवं नीच इन योनियों के संकट में पुनः आता है। नानक प्रार्थना करते हैं कि हे प्रभु! मुझ सरीखे पत्थर को संसार-सागर से पार करवा दो, ताकि साधु पुरुषों की संगत में सुख उपलब्ध हो जाए॥२॥११॥१५॥

मलार महला ५ ॥ दुसट मुए बिखु खाई री माई ॥ जिस के जीअ तिन ही रखि लीने मेरे प्रभ कउ किरपा आई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अंतरजामी सभ महि वरतै तां भउ कैसा भाई ॥ संगि सहाई छोडि न जाई प्रभु दीसै सभनी ठाईं ॥ १ ॥ अनाथा नाथु दीन दुख भंजन आपि लीए लड़ि लाई ॥ हरि की ओट जीवहि दास तेरे नानक प्रभ सरणाई ॥ २ ॥ १२ ॥ १६ ॥

हे साई! दुष्ट पाप-विकार जहर खाकर मौत की नींद सो गए हैं। जिसके जीव थे, उसी ने बचा लिया है। मेरे प्रभु ने कृपा की है॥१॥ रहाउ॥ अन्तर्यामी परमेश्वर सब में व्याप्त है तो कोई भय कैसे हो सकता है। वह सहायता करने वाला हमारे साथ ही है, उसे छोड़कर नहीं जाता, मेरा प्रभु सब स्थानों में दिखाई देता है॥१॥ वह गरीबों का मसीहा है, दीनों के दुख नाश करने वाला है और वह स्वयं ही गले लगा लेता है। नानक का कथन है कि हे प्रभु! भक्त तेरे आसरे ही जीते हैं और तेरी शरण में ही पड़े रहते हैं॥२॥१२॥१६॥

मलार महला ५ ॥ मन मेरे हरि के चरन रवीजै ॥ दरस पिआस मेरो मनु मोहिओ हरि पंख लगाइ मिलीजै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ खोजत खोजत मारगु पाइओ साधू सेव करीजै ॥ धारि अनुग्रहु सुआमी मेरे नामु महा रसु पीजै ॥ १ ॥ त्राहि त्राहि करि सरनी आए जलतउ किरपा कीजै ॥ करु गहि लेहु दास अपुने कउ नानक अपुनो कीजै ॥ २ ॥ १३ ॥ १७ ॥

मेरा मन परमात्मा के चरणों में ही लीन है। उसके दर्शनों की तीव्र लालसा ने मन को मोहित कर दिया है। हे प्रभु ! पंख लगाकर तुझसे ही मिलना चाहता हूँ॥१॥ रहाउ॥ खोजते-खोजते यही रास्ता प्राप्त हुआ है कि साधु महापुरुषों की सेवा करो। हे मेरे स्वामी ! ऐसी कृपा धारण करो कि नाम का महारस पान किया जाए॥१॥ "हमें बचा लो, हमारी रक्षा करो" यही कहते हुए तेरी शरण में आए हैं, इस जलते मन पर कृपा करो। नानक की विनती है कि अपने दास का हाथ थाम लो और कृपा करके उसे अपना बना लो॥२॥१३॥१७॥

मलार मः ५ ॥ प्रभ को भगति बछलु बिरदाइओ ॥ निंदक मारि चरन तल दीने अपुनो जसु वरताइओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जै जै कारु कीनो सभ जग महि दइआ जीअन महि पाइओ ॥ कंठि लाइ अपुनो दासु राखिओ ताती वाउ न लाइओ ॥ १ ॥ अंगीकारु कीओ मेरे सुआमी भ्रमु भउ मेटि सुखाइओ ॥ महा अनंद करहु दास हरि के नानक बिस्वासु मनि आइओ ॥ २ ॥ १४ ॥ १८ ॥

भक्तों से प्रेम करना प्रभु का स्वभाव है, अतः वह निंदकों को मार कर अपने चरणों के नीचे दबा देता है और इस प्रकार सम्पूर्ण विश्व में अपने यश को फैलाता है॥१॥ रहाउ॥ समूचे जगत में उसी की जय-जयकार हो रही है, वह सदैव जीवों पर दया करता है। वह अपने भक्तों को गले से लगाकर रखता है और उनको कोई गर्म वायु अर्थात् दुख तकलीफ छूने नहीं देता॥१॥ मेरे स्वामी प्रभु ने सहायता की तो भ्रम भय मिटाकर सुख प्राप्त कर दिया। हे भक्तो ! तुम महा आनंद प्राप्त करो, नानक के मन में परमात्मा पर पूर्ण विश्वास बन गया है॥२॥१४॥१८॥

रागु मलार महला ५ चउपदे घरु २ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

गुरमुखि दीसै ब्रहम पसारु ॥ गुरमुखि त्रै गुणीआं बिसथारु ॥ गुरमुखि नाद बेद बीचारु ॥ बिनु गुर पूरे घोर अंधारु ॥ १ ॥ मेरे मन गुरु गुरु करत सदा सुखु पाईऐ ॥ गुर उपदेसि हरि हिरदै वसिओ सासि गिरासि अपणा खसमु धिआईऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर के चरण विटहु बलि जाउ ॥ गुर के गुण अनदिनु नित गाउ ॥ गुर की धूड़ि करउ इसनानु ॥ साची दरगह पाईऐ मानु ॥ २ ॥ गुरु बोहिथु भवजल तारणहारु ॥ गुरि भेटिऐ न होइ जोनि अउतारु ॥ गुर की सेवा सो जनु पाए ॥ जा कउ करमि लिखिआ धुरि आए ॥ ३ ॥ गुरु मेरी जीवनि गुरु आधारु ॥ गुरु मेरी वरतणि गुरु परवारु ॥ गुरु मेरा खसमु सतिगुर सरणाई ॥ नानक गुरु पारब्रहमु जा की कीम न पाई ॥ ४ ॥ १ ॥ १९ ॥

गुरु-मुख को सम्पूर्ण संसार ब्रह्म रूप फैला हुआ दिखाई देता है, सब ओर तीन गुणों का विस्तार दृष्टिगत होता है। गुरु का शब्द वेद मंत्रों का चिंतन है और पूर्ण गुरु के बिना घोर अंधकार है॥१॥ हे मेरे मन ! गुरु का नाम जपने से सदैव सुख प्राप्त होता है। गुरु के उपदेश से परमात्मा हृदय में अवस्थित होता है, अतः श्वास-ग्रास से अपने मालिक का चिंतन करो॥१॥ रहाउ॥ गुरु के चरणों पर कुर्बान जाना चाहिए। प्रतिदिन गुरु के गुण गाओ। गुरु की चरण-धूल में स्नान करो एवं सच्चे दरबार में सम्मान प्राप्त करो॥२॥ गुरु भयानक संसार-सागर से पार उतारने वाला जहाज है। यदि गुरु से साक्षात्कार हो जाए तो जन्म-मरण का चक्र छूट जाता है। गुरु की सेवा वही व्यक्ति प्राप्त करता है, जिसके भाग्य में विधाता ने लिखा होता है॥३॥ गुरु ही मेरा जीवन है, एकमात्र वही मेरा आसरा है। गुरु ही मेरा जीवन-आचरण एवं परिवार है। गुरु ही मेरा मालिक है, अतः उस सच्चे गुरु की शरण में रहता हूँ। नानक फुरमाते हैं कि गुरु ही परब्रह्म है, उसकी महत्ता अवर्णनीय है॥४॥१॥१९॥

मलार महला ५ ॥ गुर के चरन हिरदै वसाए ॥ करि किरपा प्रभि आपि मिलाए ॥ अपने सेवक कउ लए प्रभु लाइ ॥ ता की कीमति कही न जाइ ॥ १ ॥ करि किरपा पूरन सुखदाते ॥ तुम्हरी क्रिपा ते तूं चिति आवहि आठ पहर तेरै रंगि राते ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गावणु सुनणु सभु तेरा भाणा ॥ हुकमु बूझै सो साचि समाणा ॥ जपि जपि जीवहि तेरा नांउ ॥ तुझ बिनु दूजा नाही थाउ ॥ २ ॥ दुख सुख करते हुकमु रजाइ ॥ भाणै बखस भाणै देइ सजाइ ॥ दुहां सिरिआं का करता आपि ॥ कुरबाणु जांई तेरे परताप ॥ ३ ॥ तेरी कीमति तूहै जाणहि ॥ तू आपे बूझहि सुणि आपि वखाणहि ॥ सेई भगत जो तुधु भाणे ॥ नानक तिन कै सद कुरबाणे ॥ ४ ॥ २ ॥ २० ॥

जब गुरु के चरण हृदय में बस जाते हैं तो प्रभु कृपा करके स्वयं ही मिला लेता है। प्रभु अपने जिस सेवक को भक्ति में लगा लेता है, उसकी महत्ता व्यक्त नहीं की जा सकती॥१॥ हे पूर्ण सुखदाता! कृपा करो, तुम्हारी कृपा से ही तू स्मरण आता है और आठ प्रहर तेरी भक्ति में लीन रहते हैं॥१॥ रहाउ॥ हे स्रष्टा! तेरा कीर्तिगान करना एवं सुनना सब तेरी रज़ा है। जो हुक्म मानता है, वह सत्य में लीन हो जाता है। हम तेरा नाम जप जपकर ही जीते हैं और तेरे सिवा अन्य कोई ठिकाना नहीं॥२॥ दुख एवं सुख परमात्मा के हुक्म एवं रज़ा के अन्तर्गत है। वह अपनी रज़ा से किसी को क्षमा कर देता है तो किसी को सजा देता है। लोक-परलोक दोनों का कर्ता स्वयं परमात्मा है, हे रचनहार! तेरे यश पर कुर्बान जाता हूँ॥३॥ अपनी महिमा तू ही जानता है। तू स्वयं समझता, सुनता और स्वयं बखान करता है। वही अनन्य भक्त हैं, जो तुझे अच्छे लगते हैं। नानक फुरमाते हैं कि हम उन पर सदैव कुर्बान जाते हैं॥४॥२॥२०॥

मलार महला ५ ॥ परमेसरु होआ दइआलु ॥ मेघु वरसै अंम्रित धार ॥ सगले जीअ जंत त्रिपतासे ॥ कारज आए पूरे रासे ॥ १ ॥ सदा सदा मन नामु सम्हालि ॥ गुर पूरे की सेवा पाइआ ऐथै ओथै निबहै नालि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दुखु भंना भै भंजनहार ॥ आपणिआ जीआ की कीती सार ॥ राखनहार सदा मिहरवान ॥ सदा सदा जाईऐ कुरबान ॥ २ ॥ कालु गवाइआ करतै आपि ॥ सदा सदा मन तिस नो जापि ॥ द्रिसटि धारि राखे सभि जंत ॥ गुण गावहु नित नित भगवंत ॥ ३ ॥ एको करता आपे आप ॥ हरि के भगत जाणहि परताप ॥ नावै की पैज रखदा आइआ ॥ नानकु बोलै तिस का बोलाइआ ॥ ४ ॥ ३ ॥ २१ ॥

परमेश्वर दयालु हुआ है, अमृतमय वर्षा हुई है। सब जीव तृप्त हो गए हैं और सभी कार्य सम्पन्न हो गए हैं॥१॥ हे मन! सदैव हरिनाम की आराधना करो; यह पूर्ण गुरु की सेवा से ही प्राप्त होता है और लोक-परलोक में साथ निभाता है॥१॥ रहाउ॥ सब भय नष्ट करने वाले ईश्वर ने दुखों का नाश कर दिया है और अपने जीवों की संभाल की है। वह संसार का रखवाला है, सदैव मेहरबान है, हम उस पर सदैव कुर्बान जाते हैं॥२॥ कर्ता-पुरुष ने मौत को भी दूर कर दिया है, मन में सदैव उसका जाप करो। वह अपनी कृपा-दृष्टि धारण करके सब जीवों की रक्षा करता है, नित्य भगवान के गुण गाओ॥३॥ एकमात्र परमेश्वर ही कर्ता है, भगवान के भक्त उसका प्रताप जानते हैं। परमात्मा अनंतकाल से अपने नाम की लाज रखता आ रहा है और नानक वही बोल रहा है, जो वह उससे बुलवा रहा है॥४॥३॥२१॥

मलार महला ५ ॥ गुर सरणाई सगल निधान ॥ साची दरगहि पाईऐ मानु ॥ भ्रमु भउ दूखु दरदु सभु जाइ ॥ साधसंगि सद हरि गुण गाइ ॥ १ ॥ मन मेरे गुरु पूरा सालाहि ॥ नामु निधानु जपहु दिनु राती मन चिंदे फल पाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतिगुर जेवडु अवरु न कोइ ॥ गुरु पारब्रहमु परमेसरु सोइ ॥ जनम मरण दूख ते राखै ॥ माइआ बिखु फिरि बहुड़ि न चाखै ॥ २ ॥ गुर की महिमा कथनु न जाइ ॥ गुरु परमेसरु साचै नाइ ॥ सचु संजमु करणी सभु साची ॥ सो मनु निरमलु जो गुर संगि राची ॥ ३ ॥ गुरु पूरा पाईऐ वड भागि ॥ कामु क्रोधु लोभु मन ते तिआगि ॥ करि किरपा गुर चरण निवासि ॥ नानक की प्रभ सचु अरदासि ॥ ४ ॥ ४ ॥ २२ ॥

गुरु की शरण में सर्व सुखों के भण्डार प्राप्त होते हैं, सच्चे दरबार में मान-सम्मान प्राप्त होता है, भ्रम, भय, दुख-दर्द सब मिट जाता है। साधु-महापुरुषों के साथ परमात्मा का गुणगान करो॥ १॥ हे मेरे मन ! पूर्ण गुरु की स्तुति करो, सुखों के भण्डार हरिनाम का दिन-रात जाप करो और मनवांछित फल पा लो॥१॥ रहाउ॥ सतगुरु सरीखा अन्य कोई नहीं है, गुरु ही परब्रह्म है, वही परम परमेश्वर है। वह जन्म-मरण के दुखों से बचाने वाला है। फिर माया का जहर पुनः नहीं चखना पड़ता॥२॥ गुरु की महिमा अकथनीय है। सच्चे नाम का चिंतन करने वाले जिज्ञासुओं के लिए गुरु ही परमेश्वर है। उनका जीवन-आचरण, संयम एवं सब सत्य है। वही मन निर्मल होता है, जो गुरु के साथ लीन रहता है॥३॥ भाग्यशाली को ही पूर्ण गुरु प्राप्त होता है और काम, क्रोध एवं लोभ का मन से त्याग हो जाता है। नानक की प्रभु के समक्ष सच्ची प्रार्थना है कि कृपा करके गुरु के चरणों में ही रखना॥४॥४॥२२॥

रागु मलार महला ५ पड़ताल घरु ३ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

गुर मनारि प्रिअ दइआर सिउ रंगु कीआ ॥ कीनो री सगल सीगार ॥ तजिओ री सगल बिकार ॥ धावतो असथिरु थीआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ऐसे रे मन पाइ कै आपु गवाइ कै करि साधन सिउ संगु ॥ बाजे बजहि म्रिदंग अनाहद कोकिल री राम नामु बोलै मधुर बैन अति सुहीआ ॥ १ ॥ ऐसी तेरे दरसन की सोभ अति अपार प्रिअ अमोघ तैसे ही संगि संत बने ॥ भव उतार नाम भने ॥ रम राम राम माल ॥ मनि फेरते हरि संगि संगीआ ॥ जन नानक प्रिउ प्रीतमु थीआ ॥ २ ॥ १ ॥ २३ ॥

हे सत्संगी सहेली ! गुरु को मनाकर दयालु प्रियतम के संग आनंद किया है। शुभ गुण रूपी सब श्रृंगार किए हैं, सब विकारों को त्याग दिया है तथा चंचल मन को स्थिर कर लिया है॥१॥ रहाउ॥ हे मन ! अहम् छोड़कर साधु पुरुषों की संगत करो, इस प्रकार प्रभु को पाकर सुख मनाया है। खुशियों के बाजे बज रहे हैं, संतों की जिह्वा राम नाम जपती हुई कोयल की तरह मीठे एवं अत्यंत सुंदर वचन बोल रही है॥१॥ हे प्रियतम ! तेरे दर्शनों की शोभा अत्यंत अपार है, वैसे ही संतों के मन में दर्शनों का चाव है। वे संसार-सागर से पार उतरने के लिए राम नाम जपते हैं और राम नाम का मंत्र ही उनकी माला है। जो ईश्वर के संगी-साथियों के साथ हरिनाम की माला फेरते हैं, हे नानक ! उनको प्रियतम प्रभु प्राणों से भी प्रिय होता है॥२॥१॥२३॥

मलार महला ५ ॥ मनु घनै भ्रमै बनै ॥ उमकि तरसि चालै ॥ प्रभ मिलबे की चाह ॥ १ ॥ रहाउ ॥ त्रै गुन माई मोहि आई कहंउ बेदन काहि ॥ १ ॥ आन उपाव सगर कीए नहि दूख साकहि लाहि ॥ भजु सरनि साधू नानका मिलु गुन गोबिंदहि गाहि ॥ २ ॥ २ ॥ २४ ॥

यह मन घने वन में भटकता फिरता है, प्रभु मिलन की चाह में उमंगपूर्ण चाल चलता है॥ १॥ रहाउ॥ तीन गुणों वाली माया मोहित कर रही है, मैं अपनी पीड़ा किसको बताऊँ॥१॥ अन्य सभी उपाय इस्तेमाल कर लिए हैं, पर दुख दूर नहीं हो सके। हे नानक! साधु महापुरुषों की शरण में मिलकर परमात्मा का भजन गान करो॥२॥२॥२४॥

मलार महला ५ ॥ प्रिअ की सोभ सुहावनी नीकी ॥ हाहा हूहू गंध्रब अपसरा अनंद मंगल रस गावनी नीकी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ धुनित ललित गुनग्य अनिक भांति बहु बिधि रूप दिखावनी नीकी ॥ १ ॥ गिरि तर थल जल भवन भरपुरि घटि घटि लालन छावनी नीकी ॥ साधसंगि रामईआ रसु पाइओ नानक जा कै भावनी नीकी ॥ २ ॥ ३ ॥ २५ ॥

प्रियतम प्रभु की शोभा सुन्दर एवं भली है। गंधर्व एवं स्वर्ग की अप्सराएँ प्रभु के मीठे गुण गा रही हैं॥१॥ रहाउ॥ उसकी सुन्दर शोभा को अनेक प्रकार से गुणवान् उच्चारण कर रहे हैं और अपना सुन्दर रूप दिखा रहे हैं॥१॥ पहाड़, पेड़, धरती, जल, भवन, घट-घट में व्याप्त प्रियतम प्रभु की प्रशंसा गा रहे हैं। हे नानक! जिनके अन्तर्मन में पूर्ण श्रद्धा-भावना है, वे साधु-महात्मा जनों के साथ ईश्वर के गुणगान का आनंद पा रहे हैं॥२॥३॥२५॥

मलार महला ५ ॥ गुर प्रीति पिआरे चरन कमल रिद अंतरि धारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दरसु सफलिओ दरसु पेखिओ गए किलबिख गए ॥ मन निरमल उजीआरे ॥ १ ॥ बिसम बिसमै बिसम भई ॥ अघ कोटि हरते नाम लई ॥ गुर चरन मसतकु डारि पही ॥ प्रभ एक तूंही एक तुही ॥ भगत टेक तुहारे ॥ जन नानक सरनि दुआरे ॥ २ ॥ ४ ॥ २६ ॥

प्यारे गुरु के चरण-कमल को मन में धारण किया है॥१॥ रहाउ॥ गुरु का दर्शन फलदायक है, दर्शन करने से सब पाप दूर हो जाते हैं और मन निर्मल एवं उज्ज्वल हो जाता है॥१॥ यह अद्‌भुत लीला देखकर बड़ा आश्चर्य होता है कि परमात्मा का नाम लेने से करोड़ों पाप नाश हो जाते हैं। गुरु के चरणों में शीश रख दिया है, हे प्रभु! एक तू ही हमारा रखवाला है, एक तू ही हमारा आसरा है। भक्त तुम्हारी शरण में हैं। नानक का कथन है कि हम तेरे द्वार पर तेरी शरण में आए हैं॥२॥४॥२६॥

मलार महला ५ ॥ बरसु सरसु आगिआ ॥ होहि आनंद सगल भाग ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संत संगे मनु परफड़ै मिलि मेघ धर सुहाग ॥ १ ॥ घनघोर प्रीति मोर ॥ चितु चात्रिक बूंद ओर ॥ ऐसो हरि संगे मन मोह ॥ तिआगि माइआ धोह ॥ मिलि संत नानक जागिआ ॥ २ ॥ ५ ॥ २७ ॥

हे गुरु रूपी बादल! भगवान की आज्ञा से नाम की वर्षा कर दो, सबके भाग्य जाग जाएँ और आनंद ही आनंद हो॥१॥ रहाउ॥ संत पुरुषों के साथ मन यूं खिल उठता है, जिस प्रकार धरती बादलों को देखकर खुश होती है॥१॥ ज्यों बादलों की ध्वनि सुनकर मोर में प्रेम उत्पन्न होता है, पपीहे का मन स्वाति बूँद से आनंदमय होता है, वैसे ही परमात्मा के साथ मन मोहित है। हे नानक! माया एवं ईर्ष्या द्वेष को त्याग दिया है और संतों को मिलकर सावधान हो गया हूँ॥२॥५॥२७॥

मलार महला ५ ॥ गुन गोपाल गाउ नीत ॥ राम नाम धारि चीत ॥ १ ॥ रहाउ ॥ छोडि मानु तजि गुमानु मिलि साधूआ कै संगि ॥ हरि सिमरि एक रंगि मिटि जांहि दोख मीत ॥ १ ॥ पारब्रहम भए दइआल ॥ बिनसि गए बिखै जंजाल ॥ साध जनां कै चरन लागि ॥ नानक गावै गोबिंद नीत ॥ २ ॥ ६ ॥ २८ ॥

हे सज्जनो! नित्य परमात्मा का गुणगान करो; मन में राम नाम को धारण करो॥ १॥ रहाउ॥ मान अभिमान को छोड़कर साधु पुरुषों के साथ मिलकर रहो। हे मित्र! एकाग्रचित होकर ईश्वर का स्मरण करो, सब पाप-दोष मिट जाएँगे॥ १॥ जब परब्रह्म दयालु होता है तो विषय-विकारों के जंजाल नष्ट हो जाते हैं। हे नानक! साधुजनों के चरणों में लगकर सदैव ईश्वर का यशोगान करो॥ २॥ ६॥ २८॥

मलार महला ५ ॥ घनु गरजत गोबिंद रूप ॥ गुन गावत सुख चैन ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि चरन सरन तरन सागर धुनि अनहता रस बैन ॥ १ ॥ पथिक पिआस चित सरोवर आतम जलु लैन ॥ हरि दरस प्रेम जन नानक करि किरपा प्रभ दैन ॥ २ ॥ ७ ॥ २६ ॥

गुरु रूपी बादल ईश्वर की कीर्ति गा रहा है। गुरु शरण में परमेश्वर के गुण गाते हुए सुख चैन मिलता है॥ १॥ रहाउ॥ ईश्वर के चरणों की शरण संसार-सागर से पार उतारने वाली है, मधुर वचनों से अनाहत ध्वनि ही गूंज रही है॥ १॥ जब जिज्ञासु को प्रभु मिलन की प्यास लगती है तो वह अपना चित नाम-जल के सरोवर में लगाता है। भक्तों को प्रभु-दर्शनों का ही प्रेम है, नानक कथन करते हैं कि प्रभु कृपा करके ही दर्शन देता है॥ २॥ ७॥ २६॥

मलार महला ५ ॥ हे गोबिंद हे गोपाल हे दइआल लाल ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रान नाथ अनाथ सखे दीन दरद निवार ॥ १ ॥ हे सम्रथ अगम पूरन मोहि मइआ धारि ॥ २ ॥ अंध कूप महा भइआन नानक पारि उतार ॥ ३ ॥ ८ ॥ ३० ॥

हे गोविन्द, हे जगत पालक, हे दीनदयालु!॥ १॥ रहाउ॥ हे प्राणनाथ! हे गरीबों के साथी! तू दीनों के दर्द दूर करने वाला है॥ १॥ हे सर्वशक्तिमान, अगम्य परिपूर्ण परमेश्वर! मुझ पर अपनी कृपा करो॥ २॥ नानक की विनती है कि जगत रूपी महा भयानक अंधे कुएं से पार उतार दो॥ ३॥ ८॥ ३०॥

मलार महला १ असटपदीआ घरु १ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

चकवी नैन नींद नहि चाहै बिनु पिर नींद न पाई ॥ सूरु चरै प्रिउ देखै नैनी निवि निवि लागै पांई ॥ १ ॥ पिर भावै प्रेमु सखाई ॥ तिसु बिनु घड़ी नही जगि जीवा ऐसी पिआस तिसाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सरवरि कमलु किरणि आकासी बिगसै सहजि सुभाई ॥ प्रीतम प्रीति बनी अभ ऐसी जोती जोति मिलाई ॥ २ ॥ चात्रिकु जल बिनु प्रिउ प्रिउ टेरै बिलप करै बिललाई ॥ घनहर घोर दसौ दिसि बरसै बिनु जल पिआस न जाई ॥ ३ ॥ मीन निवास उपजै जल ही ते सुख दुख पुरबि कमाई ॥ खिनु तिलु रहि न सकै पलु जल बिनु मरनु जीवनु तिसु तांई ॥ ४ ॥ धन वांढी पिरु देस निवासी सचे गुर पहि सबदु पठाईं ॥ गुण संग्रहि प्रभु रिदै निवासी भगति रती हरखाई ॥ ५ ॥ प्रिउ प्रिउ करै सभै है जेती गुर भावै प्रिउ पाई ॥ प्रिउ नाले सद ही सचि संगे नदरी मेलि मिलाई ॥ ६ ॥ सभ महि जीउ जीउ है सोई घटि घटि रहिआ समाई ॥ गुर परसादि घर ही परगासिआ सहजे सहजि समाई ॥ ७ ॥ अपना काजु सवारहु आपे सुखदाते गोसांईं ॥ गुर परसादि घर ही पिरु पाइआ तउ नानक तपति बुझाई ॥ ८ ॥ १ ॥

प्रियतम की जुदाई में चकवी की आँखों में नींद नहीं आती, प्रियतम के बिना जागती रहती है। जब सूर्योदय होता है तो अपने प्रियतम को आँखों से देखकर झुक-झुक कर नमन करती है॥

१॥ प्रियतम का सहाई प्रेम ही अच्छा लगता है। उसके दर्शनों की ऐसी प्यास लगी है कि उसके बिना संसार में घड़ी भर जीना मुश्किल हो गया है॥१॥ रहाउ॥ कमल सरोवर में रहता है, सूरज की किरण आकाश में है, सहज स्वाभाविक किरण से ही कमल खिल उठता है। प्रियतम प्रभु के साथ ऐसा प्रेम हो गया है, ज्यों ज्योति में ज्योति मिल जाती है॥२॥ चातक जल के बिना प्रिय प्रिय रटता हुआ बिलबिलाता है। बादल दसों दिशाओं में गूंजता हुआ तो बरसता है, ज्यों चातक की स्वाति बूंद बिना प्यास दूर नहीं होती, वैसे ही भक्तों की स्थिति है, जिनकी प्यास हरिनाम जल से ही दूर होती है॥३॥ मछली जल में रहती है, वही उत्पन्न होती है और पूर्व कर्मों के कारण सुख दुख पाती है। वह जल के बिना पल भी रह नहीं सकती, जल ही उसका जीवन है और जल बिना वह मर जाती है वैसे ही परमात्मा की भक्ति भक्तों के जीवन का आधार है॥४॥ परदेस में बैठी जीव-स्त्री सच्चे गुरु के द्वारा देश में रहने वाले प्रियतम प्रभु को सन्देश भेजती है। वह गुणों को इकट्ठा कर प्रभु को दिल में बसाती है और उसकी भक्ति में लीन रहकर प्रसन्न होती है॥५॥ सब जीव-स्त्रियां प्रियतम को पाना चाहती हैं, जब गुरु को उपयुक्त लगता है, वे प्रियतम को पा लेती हैं। गुरु कृपा करके सदा के लिए प्रभु से मिला देता है॥६॥ सब में प्राण ज्योति व्याप्त है, घट-घट में वह प्रभु ही समा रहा है। गुरु की कृपा से हृदय घर में ही सत्य का आलोक हो गया है और सहज स्वाभाविक प्रभु में विलीन हूँ॥७॥ वह सुख देने वाला मालिक स्वयं ही अपने कार्य सम्पन्न करता है। गुरु नानक फुरमाते हैं कि गुरु की कृपा से जब हृदय घर में प्रभु को पा लिया तो शान्ति प्राप्त हो गई॥८॥१॥

मलार महला १ ॥ जागतु जागि रहै गुर सेवा बिनु हरि मै को नाही ॥ अनिक जतन करि रहणु न पावै आचु काचु ढरि पांही ॥ १ ॥ इसु तन धन का कहहु गरबु कैसा ॥ बिनसत बार न लागै बवरे हउमै गरबि खपै जगु ऐसा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जै जगदीस प्रभू रखवारे राखै परखै सोई ॥ जेती है तेती तुझ ही ते तुम्ह सरि अवरु न कोई ॥ २ ॥ जीअ उपाइ जुगति वसि कीनी आपे गुरमुखि अंजनु ॥ अमरु अनाथ सरब सिरि मोरा काल बिकाल भरम भै खंजनु ॥ ३ ॥ कागद कोटु इहु जगु है बपुरो रंगनि चिहन चतुराई ॥ नान्ही सी बूंद पवनु पति खोवै जनमि मरै खिनु ताईं ॥ ४ ॥ नदी उपकंठि जैसे घरु तरवरु सरपनि घरु घर माही ॥ उलटी नदी कहां घरु तरवरु सरपनि डसै दूजा मन मांही ॥ ५ ॥ गारुड़ गुर गिआनु धिआनु गुर बचनी बिखिआ गुरमति जारी ॥ मन तन हेंव भए सचु पाइआ हरि की भगति निरारी ॥ ६ ॥ जेती है तेती तुधु जाचै तू सरब जीआं दइआला ॥ तुम्हरी सरणि परे पति राखहु साचु मिलै गोपाला ॥ ७ ॥ बाधी धंधि अंध नही सूझै बधिक करम कमावै ॥ सतिगुर मिलै त सूझसि बूझसि सच मनि गिआनु समावै ॥ ८ ॥ निरगुण देह साच बिनु काची मै पूछउ गुरु अपना ॥ नानक सो प्रभु प्रभू दिखावै बिनु साचे जगु सुपना ॥ ९ ॥ २ ॥

गुरु की सेवा में जागरूक सेवक को यह ज्ञान हो जाता है कि ईश्वर के बिना मेरा कोई आधार नहीं। ज्यों आँच पर काँच ढल जाता है, वैसे ही अनेक कोशिशें करने पर भी शरीर वैसा नहीं रहता और ढल जाता है॥१॥ हे भाई! बताओ, इस तन एवं धन का अहंकार किसलिए है। अरे पगले! इसे नाश होते कोई देरी नहीं लगती, अभिमान में पूरा जगत ऐसे ही तबाह हो रहा है॥१॥रहाउ॥ सम्पूर्ण सृष्टि में जगदीश की जय-जयकार हो रही है, वही रखवाला है और वही परख करता है। जितनी भी दुनिया है, उसी से उत्पन्न होती है, तुम्हारे जैसा अन्य कोई नहीं॥२॥ सब जीवों को उत्पन्न करके परमात्मा ने जीवन-युक्ति अपने वश में की हुई है और ज्ञान का सुरमा देने वाला

गुरु भी वह स्वयं ही है। वह अमर है, स्वयंभू है, सर्वशक्तिमान है, वह काल का भी काल है और वह भ्रम एवं भय को नष्ट करने वाला है॥३॥ यह जगत् कागज का एक किला है, इसकी रंगीनी, चिन्ह, चतुराई ही है। छोटी-सी बूंद एवं पवन चलने से इसकी शोभा खत्म हो जाती है और पल में जीवन मृत्यु में बदल जाता है॥४॥ अगर नदी के किनारे कोई घर अथवा पेड़ हो और उस घर में नागिन रहती हो। नदी के उलटते ही घर एवं पेड़ तबाह हो जाते हैं और नागिन घर से उजड़ कर द्वैतभाव में लोगों को डंसने लगती है॥५॥ गुरु का ज्ञान, ध्यान, वचन एवं शिक्षा गारुड़ी मंत्र के रूप में जहर को समाप्त कर देता है। मन तन शांत हो जाते हैं, सत्य एवं भगवान की विलक्षण भक्ति प्राप्त होती है॥६॥ हे परमात्मा ! जितनी भी दुनिया है, तुझ से ही मांगती है, तू सब जीवों पर दया करता है। हम तुम्हारी शरण में आ गए हैं, हमारी लाज रखना, हम सत्य में ही मिलना चाहते हैं॥७॥ अपने-अपने काम-धंधों में व्यस्त लोग अज्ञानांध हैं, उन्हें कोई सूझ नहीं होती, इसी वजह से हत्या एवं अत्याचार के काम करते हैं। जब सच्चा गुरु मिल जाता है तो भले-बुरे की समझ आ जाती है, मन में सत्य एवं ज्ञान का आलोक हो जाता है॥८॥ जब मैंने अपने गुरु से पूछा तो उन्होंने बताया कि यह गुणविहीन शरीर सत्य के बिना नाशवान् है। हे नानक ! गुरु ही प्रभु के दर्शन करवाता है, सत्य के बिना पूरा जगत सपना है॥६॥२॥

मलार महला १ ॥ चात्रिक मीन जल ही ते सुखु पावहि सारिंग सबदि सुहाई ॥ १ ॥ रैनि बबीहा बोलिओ मेरी माई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रिअ सिउ प्रीति न उलटै कबहू जो तै भावै साई ॥ २ ॥ नीद गई हउमै तनि थाकी सच मति रिदै समाई ॥ ३ ॥ रूखीं बिरखीं ऊडउ भूखा पीवा नामु सुभाई ॥ ४ ॥ लोचन तार ललता बिललाती दरसन पिआस रजाई ॥ ५ ॥ प्रिअ बिनु सीगारु करी तेता तनु तापै कापरु अंगि न सुहाई ॥ ६ ॥ अपने पिआरे बिनु इकु खिनु रहि न सकंउ बिन मिले नींद न पाई ॥ ७ ॥ पिरु नजीकि न बूझै बपुड़ी सतिगुरि दीआ दिखाई ॥ ८ ॥ सहजि मिलिआ तब ही सुखु पाइआ त्रिसना सबदि बुझाई ॥ ६ ॥ कहु नानक तुझ ते मनु मानिआ कीमति कहनु न जाई ॥ १० ॥ ३ ॥

चातक एवं मछली जल से ही सुख प्राप्त करते हैं और हिरण को संगीत की ध्वनि ही अच्छी लगती है॥१॥ हे मेरी माई ! रात भर जिज्ञासु पपीहा बोलता है॥१॥ रहाउ॥ प्रियतम प्रभु के साथ प्रेम कभी समाप्त नहीं होता है, जो प्रभु को अच्छा लगता है, वही प्रेम है॥२॥ प्रभु के प्रेम में नींद दूर हो गई है, शरीर से अभिमान थक गया है और हृदय में सच्चा उपदेश समा गया है॥३॥ बेशक पेड़ों-वृक्षों पर पक्षियों की तरह उड़ता हूँ तो भी भूखा रहता हूँ, सहज स्वाभाविक नामामृत को पी कर तृप्त होता हूँ॥४॥ आँखें तरस रही हैं, जीभ सूख रही है दर्शनों की प्यास के लिए॥५॥ प्रियतम के बिना जितना श्रृंगार करती हूँ, शरीर उतना ही जलता है और कपड़े भी सुन्दर नहीं लग रहे॥६॥ अपने प्रियतम के बिना एक पल भी रह नहीं सकती और उसके मिलन बिना नींद नहीं आती॥७॥ प्रियतम प्रभु निकट ही था, मैं बेचारी समझ नहीं पाई। परन्तु सच्चे गुरु ने दर्शन करा दिए हैं॥८॥ जब सहज स्वाभाविक प्रभु से मिलन हुआ तो परम सुख पाया और उसके शब्द से सारी तृष्णा बुझ गई॥६॥ नानक का कथन है कि हे ईश्वर ! मेरा मन तुझ से संतुष्ट हो गया है, इसका मूल्यांकन नहीं किया जा सकता॥१०॥३॥

मलार महला १ असटपदीआ घरु २ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

अखली ऊंडी जलु भर नालि ॥ डूगरु ऊचउ गडु पातालि ॥ सागरु सीतलु गुर सबद वीचारि ॥ मारगु मुकता हउमै मारि ॥ १ ॥ मै अंधुले नावै की जोति ॥ नाम अधारि चला गुर कै भै भेति ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतिगुर सबदी पाधरु जाणि ॥ गुर कै तकीऐ साचै ताणि ॥ नामु सम्हालसि रूड़ी बाणि ॥ थैं भावै दरु लहसि पिराणि ॥ २ ॥ ऊडां बैसा एक लिव तार ॥ गुर कै सबदि नाम आधार ॥ ना जलु डूंगरु न ऊची धार ॥ निज घरि वासा तह मगु न चालणहार ॥ ३ ॥ जितु घरि वसहि तूहै बिधि जाणहि बीजउ महलु न जापै ॥ सतिगुर बाझहु समझ न होवी सभु जगु दबिआ छापै ॥ करण पलाव करै बिललातउ बिनु गुर नामु न जापै ॥ पल पंकज महि नामु छडाए जे गुर सबदु सिञापै ॥ ४ ॥ इकि मूरख अंधे मुगध गवार ॥ इकि सतिगुर कै भै नाम अधार ॥ साची बाणी मीठी अंम्रित धार ॥ जिनि पीती तिसु मोख दुआर ॥ ५ ॥ नामु भै भाइ रिदै वसाही गुर करणी सचु बाणी ॥ इंदु वरसै धरति सुहावी घटि घटि जोति समाणी ॥ कालरि बीजसि दुरमति ऐसी निगुरे की नीसाणी ॥ सतिगुर बाझहु घोर अंधारा डूबि मुए बिनु पाणी ॥ ६ ॥ जो किछु कीनो सु प्रभू रजाइ ॥ जो धुरि लिखिआ सु मेटणा न जाइ ॥ हुकमे बाधा कार कमाइ ॥ एक सबदि राचै सचि समाइ ॥ ७ ॥ चहु दिसि हुकमु वरतै प्रभ तेरा चहु दिसि नाम पतालं ॥ सभ महि सबदु वरतै प्रभ साचा करमि मिलै बैआलं ॥ जांमणु मरणा दीसै सिरि ऊभौ खुधिआ निद्रा कालं ॥ नानक नामु मिलै मनि भावै साची नदरि रसालं ॥ ८ ॥ १ ॥ ४ ॥

पृथ्वी जल के भार से झुकी हुई है, पर्वत ऊँचे हैं और खाइयाँ पाताल तक हैं। गुरु की शिक्षा का मनन करने से संसार-सागर शीतल हो जाता है, अहम् को मारकर मुक्ति का मार्ग सरल हो जाता है॥१॥ मुझ अंधे के पास प्रभु-नाम की ज्योति है और गुरु के प्रेम एवं शांत स्वभाव द्वारा नाम के आसरे ही चला जाता है॥१॥ रहाउ॥ गुरु की शिक्षा से ही रास्ते की जानकारी होती है और गुरु के आसरे सच्चा बल प्राप्त होता है। सुन्दर वाणी से नाम स्मरण करता है और यदि तुझे मंजूर हो तो तेरा द्वार पहचान लेता है॥२॥ चाहे चला जाऊँ या बैठा रहूँ, एक ईश्वर में ध्यान लगा हुआ है। गुरु के उपदेश से जिसके पास नाम का आसरा है, उसे जल, पर्वत एवं ऊँची धाराएँ भी प्रभावित नहीं करतीं। उसे सच्चे घर में निवास मिल जाता है और किसी कठिन रास्ते पर नहीं चलना पड़ता॥३॥ जिस घर में रहता है, तू ही विधि जानता है, किसी अन्य को ज्ञान नहीं होता। सतगुरु के बिना समझ नहीं होती और पूरा संसार अज्ञान के कचरे में दबा पड़ा है। रोता-चिल्लाता है, परन्तु गुरु के बिना हरिनाम का सुमिरन नहीं होता। यदि गुरु की शिक्षा को पहचान लिया जाए तो पल में ही प्रभु नाम द्वारा बन्धनों से छुटकारा हो जाता है॥४॥ कुछ मूर्ख, अंधे, अनाड़ी एवं गंवार लोग हैं, कई ऐसे भी हैं जो सतिगुरु के प्रेम में नाम-स्मरण के आसरे जी रहे हैं। गुरु की वाणी शुद्ध, मीठी एवं अमृत की धारा के समान है, जिसने इसका पान किया है, उसे मुक्ति मिल गई है॥५॥ श्रद्धा-भावना से प्रभु का नाम हृदय में बसाओ, गुरु की वाणी द्वारा सच्चा कार्य करो। जब वर्षा होती है तो धरती सुन्दर हो जाती है, घट घट में ईश्वर की ज्योति व्याप्त है। जैसे बंजर धरती में बीज बोने से कोई लाभ नहीं होता, वैसे ही खोटी बुद्धि वाले निगुरे की यही निशानी है कि जितना भी उसे उपदेश दिया जाए, उस पर कोई असर नहीं होता। गुरु के बिना घोर अंधेरा ही है और प्राणी बिना पानी के ही डूब मरता है॥६॥ जो कुछ होता है, वह प्रभु की रज़ा है। जो

विधाता लिख देता है, उसे बदला नहीं जा सकता। जीव उसके हुक्म के अन्तर्गत ही कर्म करता है। एक शब्द में लीन व्यक्ति सत्य में विलीन हो जाता है॥७॥ हे प्रभु! चारों दिशाओं में तेरा हुक्म चलता है, चहुं दिशाओं एवं पाताल में तेरा नाम ही फैला हुआ है। सबमें शब्द ही व्याप्त है और कर्म से ही सच्चा प्रभु मिलता है। जन्म-मरण, भूख, नींद एवं काल सिर पर खड़े दिखाई दे रहे हैं। हे नानक! यदि ईश्वर की करुणा-दृष्टि हो जाए तो मन को भाने वाला नाम मिल जाता है॥८॥१॥४॥

मलार महला १ ॥ मरण मुकति गति सार न जानै ॥ कंठे बैठी गुर सबदि पछानै ॥ १ ॥ तू कैसे आड़ि फाथी जालि ॥ अलखु न जाचहि रिदै सम्हालि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ एक जीअ कै जीआ खाही ॥ जलि तरती बूडी जल माही ॥ २ ॥ सरब जीअ कीए प्रतपानी ॥ जब पकड़ी तब ही पछुतानी ॥ ३ ॥ जब गलि फास पड़ी अति भारी ॥ ऊडि न साकै पंख पसारी ॥ ४ ॥ रसि चूगहि मनमुखि गावारि ॥ फाथी छूटहि गुण गिआन बीचारि ॥ ५ ॥ सतिगुरु सेवि तूटै जमकालु ॥ हिरदै साचा सबदु सम्हालु ॥ ६ ॥ गुरमति साची सबदु है सारु ॥ हरि का नामु रखै उरि धारि ॥ ७ ॥ से दुख आगै जि भोग बिलासे ॥ नानक मुकति नही बिनु नावै साचे ॥ ८ ॥ २ ॥ ५ ॥

लोग मृत्यु एवं मुक्ति की उपयोगिता को नहीं जानते। किनारे पर बैठी जीव-स्त्री ही गुरु के उपदेश द्वारा जान पाती है॥१॥ हे जीव रूपी पक्षी! तू क्योंकर जाल में फंसी हुई है। अदृष्ट को देख नहीं पाती, अपने हृदय में परमात्मा का चिंतन कर॥१॥ रहाउ॥ अपना पेट भरने के लिए तू कितने ही जीवों को खाती है। जल में तैरते हुए जल में डूब मरती हो॥२॥ सब जीवों को तूने दुखी किया है, जब पकड़ी गई तो पछताना पड़ा॥३॥ जब गले में मौत का भारी फंदा पड़ता है तो पंख फैलाकर उड़ नहीं सकती॥४॥ मूर्ख स्वेच्छाचारी भोग विलासों का दाना चुगता रहता है परन्तु सद्गुणों एवं ज्ञान का चिंतन करने से बन्धनों के फंदे से छुटकारा होता है॥५॥ सतगुरु की सेवा से यमकाल का भय नष्ट हो जाता है और हृदय में सच्चे उपदेश का मनन करता है॥६॥ गुरु की शिक्षा शाश्वत है और उसका शब्द ही उपयोगी है। उसी से परमात्मा का नाम हृदय में अवस्थित होता है॥७॥ जो लोग भोग-विलासों में लीन रहते हैं, वे केवल दुख ही दुख पाते हैं। गुरु नानक का मत है कि सच्चे नाम के स्मरण बिना मुक्ति संभव नहीं॥८॥२॥५॥

मलार महला ३ असटपदीआ घरु १ ॥ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

करमु होवै ता सतिगुरु पाईऐ विणु करमै पाइआ न जाइ ॥ सतिगुरु मिलिऐ कंचनु होईऐ जां हरि की होइ रजाइ ॥ १ ॥ मन मेरे हरि हरि नामि चितु लाइ ॥ सतिगुर ते हरि पाईऐ साचा हरि सिउ रहै समाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतिगुर ते गिआनु ऊपजै तां इह संसा जाइ ॥ सतिगुर ते हरि बुझीऐ गरभ जोनी नह पाइ ॥ २ ॥ गुर परसादी जीवत मरै मरि जीवै सबदु कमाइ ॥ मुकति दुआरा सोई पाए जि विचहु आपु गवाइ ॥ ३ ॥ गुर परसादी सिव घरि जंमै विचहु सकति गवाइ ॥ अचरु चरै बिबेक बुधि पाए पुरखै पुरखु मिलाइ ॥ ४ ॥ धातुर बाजी संसारु अचेतु है चलै मूलु गवाइ ॥ लाहा हरि सतसंगति पाईऐ करमी पलै पाइ ॥ ५ ॥ सतिगुर विणु किनै न पाइआ मनि वेखहु रिदै बीचारि ॥ वडभागी गुरु पाइआ भवजलु उतरे पारि ॥ ६ ॥ हरि नामां हरि टेक है हरि हरि नामु अधारु ॥ क्रिपा करहु गुरु मेलहु हरि जीउ पावउ मोख दुआरु ॥ ७ ॥ मसतकि लिलाटि लिखिआ धुरि ठाकुरि मेटणा न जाइ ॥ नानक से जन पूरन होए जिन हरि भाणा भाइ ॥ ८ ॥ १ ॥

ईश्वर की कृपा हो तो सच्चा गुरु प्राप्त हो जाता है और कृपा के बिना वह प्राप्त नहीं होता। जब परमात्मा की इच्छा होती है तो सच्चे गुरु से मिलकर जीव सोने की तरह शुद्ध हो जाता है॥ १॥ हे मेरे मन! परमात्मा के नाम में ध्यान लगाओ। सच्चे गुरु से परमात्मा प्राप्त होता है और जीव सत्यस्वरूप प्रभु में विलीन रहता है॥१॥ रहाउ॥ जब सच्चे गुरु की शिक्षा से ज्ञान उत्पन्न होता है तो हर संशय दूर हो जाता है। सतगुरु से ही ईश्वर का रहस्य प्राप्त होता है और गर्भ योनियों से छुटकारा हो जाता है॥२॥ गुरु की कृपा से जो जीते जी विकारों की ओर से मरकर शब्द के अनुरूप आचरण करता है, वह जीवन्मुक्त हो जाता है। जो मन में से अहम्-भाव को निवृत्त कर देते हैं, वही मुक्ति प्राप्त करते हैं॥३॥ गुरु की कृपा से जीव जब चेतना के घर जन्म लेता है तो माया-शक्ति को दूर कर देता है। वह सहनशीलता अपनाकर विवेक बुद्धि प्राप्त करता और महापुरुष गुरु के संपर्क में रहकर प्रभु से मिल जाता है॥४॥ नासमझ संसार बाजी खेलता है और अपना मूल गंवा कर चला जाता है। यदि सत्संगति में हरिनाम का स्तुतिगान किया जाए तो ही लाभ प्राप्त होता है, पर यह भी बड़े भाग्य से ही प्राप्त होता है॥५॥ मन में चिंतन करके देख लो, सतगुरु के बिना किसी को ईश्वर प्राप्त नहीं हुआ। जो भाग्यशाली होते हैं, वे गुरु को पाकर संसार-सागर से पार उतर जाते हैं॥६॥ हरिनाम ही हमारा अवलम्ब है और हरिनाम का ही आसरा है। हे ईश्वर! कृपा करके गुरु से मिला दो, ताकि मोक्ष द्वार प्राप्त हो जाए॥७॥ मालिक ने प्रारम्भ से जो भाग्य मस्तक पर लिख दिया है, उसे टाला नहीं जा सकता। नानक कथन करते हैं कि जिनको ईश्वर की रज़ा अच्छी लगती है, वही व्यक्ति पूर्ण माने जाते हैं॥८॥१॥

मलार महला ३ ॥ बेद बाणी जगु वरतदा त्रै गुण करे बीचारु ॥ बिनु नावै जम डंडु सहै मरि जनमै वारो वार ॥ सतिगुर भेटे मुकति होइ पाए मोख दुआरु ॥ १ ॥ मन रे सतिगुरु सेवि समाइ ॥ वडै भागि गुरु पूरा पाइआ हरि हरि नामु धिआइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि आपणै भाणै स्रिसटि उपाई हरि आपे देइ अधारु ॥ हरि आपणै भाणै मनु निरमलु कीआ हरि सिउ लागा पिआरु ॥ हरि कै भाणै सतिगुरु भेटिआ सभु जनमु सवारणहारु ॥ २ ॥ वाहु वाहु बाणी सति है गुरमुखि बूझै कोइ ॥ वाहु वाहु करि प्रभु सालाहीऐ तिसु जेवडु अवरु न कोइ ॥ आपे बखसे मेलि लए करमि परापति होइ ॥ ३ ॥ साचा साहिबु माहरो सतिगुरि दीआ दिखाइ ॥ अंम्रितु वरसै मनु संतोखीऐ सचि रहै लिव लाइ ॥ हरि कै नाइ सदा हरीआवली फिरि सुकै ना कुमलाइ ॥ ४ ॥ बिनु सतिगुर किनै न पाइओ मनि वेखहु को पतीआइ ॥ हरि किरपा ते सतिगुरु पाईऐ भेटै सहजि सुभाइ ॥ मनमुख भरमि भुलाइआ बिनु भागा हरि धनु न पाइ ॥ ५ ॥ त्रै गुण सभा धातु है पड़ि पड़ि करहि वीचारु ॥ मुकति कदे न होवई नहु पाइन्हि मोख दुआरु ॥ बिनु सतिगुर बंधन न तुटही नामि न लगै पिआरु ॥ ६ ॥ पड़ि पड़ि पंडित मोनी थके बेदां का अभिआसु ॥ हरि नामु चिति न आवई नह निज घरि होवै वासु ॥ जमकालु सिरहु न उतरै अंतरि कपट विणासु ॥ ७ ॥ हरि नावै नो सभु को परतापदा विणु भागां पाइआ न जाइ ॥ नदरि करे गुरु भेटीऐ हरि नामु वसै मनि आइ ॥ नानक नामे ही पति ऊपजै हरि सिउ रहां समाइ ॥ ८ ॥ २ ॥

वेद-वाणी के अनुरूप पूरा जगत कार्यशील है, तीन गुणों का चिंतन करता है। हरिनाम के मनन बिना यमराज से दण्ड भोगता है और बार-बार मरता एवं जन्मता है। जिसकी सतगुरु से भेंट होती है, वह मुक्ति पा लेता है और मोक्ष द्वार में प्रवेश कर जाता है॥१॥ हे मन! सच्चे गुरु की सेवा में तल्लीन रहो, क्योंकि पूर्ण गुरु बड़े भाग्य से ही प्राप्त होता है, तदन्तर हरिनाम का ध्यान

किया जाता है॥१॥ रहाउ॥ परमेश्वर अपनी मर्जी से ही समूची सृष्टि को उत्पन्न करता है और रिजक देकर स्वयं ही आसरा प्रदान करता है। ईश्वरेच्छा से मन निर्मल होता है और परमेश्वर के साथ प्रेम उत्पन्न होता है। परमात्मा की रज़ा से सतगुरु से साक्षात्कार होता है और वह जीवन सफल कर देता है॥२॥ कोई गुरु से ही इस रहस्य को समझता है कि परमात्मा की वाणी सत्य एवं प्रशंसनीय है। वह वाह-वाह करता प्रभु की सराहना करता है, क्योंकि उस जैसा बड़ा अन्य कोई नहीं। वह स्वयं ही कृपा करके अपने साथ मिला लेता है और उत्तम भाग्य से ही प्राप्त होता है॥३॥ वह सच्चा मालिक सर्वाधिकार सम्पन्न है, गुरु ने उसके दर्शन करवाए हैं। जब नाम अमृत की वर्षा होती है तो मन संतुष्ट हो जाता है और प्रभु में ध्यान लगा रहता है। परमात्मा के नाम-स्मरण से मन सदा हरा-भरा रहता है, फिर सूख कर मुरझाता नहीं॥४॥ मन में भलीभांति मनन करके देख लो, सतगुरु के बिना किसी ने परमात्मा को नहीं पाया। प्रभु की कृपा से सतगुरु प्राप्त होता है और स्वाभाविक ही उससे भेंट होती है। स्वेच्छाचारी भ्रम में भूला रहता है और भाग्य के बिना उसे हरिनाम धन प्राप्त नहीं होता॥५॥ तीन गुण केवल माया ही है और पण्डित पढ़-पढ़कर चिंतन करते हैं। उससे कभी मुक्ति प्राप्त नहीं होती और न ही मोक्ष का द्वार मिलता है। सतगुरु के बिना संसार के बन्धन नहीं टूटते और न ही हरिनाम से प्रेम लगता है॥६॥ वेदों के पाठ-पठन का अभ्यास करके पण्डित एवं मौनी भी थक गए हैं। इससे परमात्मा के नाम का स्मरण नहीं होता और न ही सच्चे घर में निवास प्राप्त होता है। मृत्यु का भय सिर से दूर नहीं होता और अन्तर्मन का कपट नष्ट कर देता है॥७॥ निःसंकोच सब लोग हरिनाम के आकांक्षी हैं, पर यह भाग्य के बिना प्राप्त नहीं होता। ईश्वर की कृपा से जब गुरु से भेंट होती है तो मन में हरिनाम अवस्थित हो जाता है। हे नानक! हरिनाम से ही संसार में यश मिलता है और जीव हरि में ही लीन रहता है॥८॥२॥

मलार महला ३ असटपदी घरु २ ॥ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

हरि हरि क्रिपा करे गुर की कारै लाए ॥ दुखु पल्हरि हरि नामु वसाए ॥ साची गति साचै चितु लाए ॥ गुर की बाणी सबदि सुणाए ॥ १ ॥ मन मेरे हरि हरि सेवि निधानु ॥ गुर किरपा ते हरि धनु पाईऐ अनदिनु लागै सहजि धिआनु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बिनु पिर कामणि करे संीगारु ॥ दुहचारणी कहीऐ नित होइ खुआरु ॥ मनमुख का इहु बादि आचारु ॥ बहु करम द्रिड़ावहि नामु विसारि ॥ २ ॥ गुरमुखि कामणि बणिआ सीगारु ॥ सबदे पिरु राखिआ उर धारि ॥ एकु पछाणै हउमै मारि ॥ सोभावंती कहीऐ नारि ॥ ३ ॥ बिनु गुर दाते किनै न पाइआ ॥ मनमुख लोभि दूजै लोभाइआ ॥ ऐसे गिआनी बूझहु कोइ ॥ बिनु गुर भेटे मुकति न होइ ॥ ४ ॥ कहि कहि कहणु कहै सभु कोइ ॥ बिनु मन मूए भगति न होइ ॥ गिआन मती कमल परगासु ॥ तितु घटि नामै नामि निवासु ॥ ५ ॥ हउमै भगति करे सभु कोइ ॥ ना मनु भीजै ना सुखु होइ ॥ कहि कहि कहणु आपु जाणाए ॥ बिरथी भगति सभु जनमु गवाए ॥ ६ ॥ से भगत सतिगुर मनि भाए ॥ अनदिनु नामि रहे लिव लाए ॥ सद ही नामु वेखहि हजूरि ॥ गुर कै सबदि रहिआ भरपूरि ॥ ७ ॥ आपे बखसे देइ पिआरु ॥ हउमै रोगु वडा संसारि ॥ गुर किरपा ते एहु रोगु जाइ ॥ नानक साचे साचि समाइ ॥ ८ ॥ १ ॥ ३ ॥ ५ ॥ ८ ॥

जिस पर ईश्वर कृपा करता है, उसे गुरु की सेवा में लगा देता है। वह उसके दुखों को दूर करके ईश्वर के नाम-स्मरण में तल्लीन करता है। यदि सच्चे परमेश्वर में ध्यान लगाएं तो सच्ची गति होती है, गुरु की वाणी शब्द सुनाती है॥१॥ हे मेरे मन! ईश्वर की उपासना सर्व सुखों का भण्डार है और गुरु की कृपा से ही हरिनाम धन प्राप्त होता है, तदन्तर सहज स्वाभाविक परमात्मा में ध्यान लगा रहता है॥१॥ रहाउ॥ जो स्त्री अपने पति के बिना शृंगार करती है, वह कुलच्छनी कहलाती है और हर रोज़ दुखी होती है। स्वेच्छाचारी पुरुष का भी ऐसा ही बुरा आचरण होता है, वह परमात्मा के नाम को भूलकर अनेक कर्मकाण्ड करता है॥२॥ गुरमुख जीव-स्त्री ही भला शृंगार करती है। वह गुरु के उपदेश द्वारा प्रियतम प्रभु को अपने हृदय में बसाकर रखती है। वह अहंकार को समाप्त कर एक प्रभु को पहचानती है, इस प्रकार ऐसी स्त्री ही शोभावान कही जाती है॥३॥ गुरु के बिना कोई भी दाता को नहीं पा सका और स्वेच्छाचारी लालच एवं द्वैतभाव में ही लिप्त रहता है। कोई ज्ञानी ही इस तथ्य को बूझता है कि गुरु से भेंट के बिना मुक्ति नहीं होती॥४॥ बातें कर-करके हर कोई भक्ति की बात करता है परन्तु मन को मारे बिना भक्ति नहीं होती। ज्ञान बुद्धि से ही हृदय कमल खिलता है। जिस दिल में नाम होता है, वह प्रभु नाम में ही लीन रहता है॥५॥ लोग अहम्-भाव में भक्ति करते हैं, इससे न मन भीगता है और न ही सुख प्राप्त होता है। वे बातें करके अपने अहम् को सिद्ध करते हैं। ऐसी भक्ति व्यर्थ ही जाती है और वे पूरा जीवन खो देते हैं॥६॥ वही भक्त सतगुरु के मन को भाते हैं जो रात-दिन नाम-स्मरण में लीन रहते हैं। वे सदैव प्रभु को साक्षात् देखते हैं और गुरु के उपदेश द्वारा प्रभु भक्ति में लीन रहते हैं॥७॥ प्रभु कृपा करता है, अपना प्रेम प्रदान करता है। संसार में अभिमान बहुत बड़ा रोग है और गुरु की कृपा से ही यह रोग दूर होता है। हे नानक! जीव सत्यशील बनकर सत्य में ही लीन रहता है॥८॥१॥३॥५॥८॥

रागु मलार छंत महला ५ ॥ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

प्रीतम प्रेम भगति के दाते ॥ अपने जन संगि राते ॥ जन संगि राते दिनसु राते इक निमख मनहु न वीसरै ॥ गोपाल गुण निधि सदा संगे सरब गुण जगदीसरै ॥ मनु मोहि लीना चरन संगे नाम रसि जन माते ॥ नानक प्रीतम क्रिपाल सदहूं किनै कोटि मधे जाते ॥ १ ॥ प्रीतम तेरी गति अगम अपारे ॥ महा पतित तुम्ह तारे ॥ पतित पावन भगति वछल क्रिपा सिंधु सुआमीआ ॥ संतसंगे भजु निसंगे रंउ सदा अंतरजामीआ ॥ कोटि जनम भ्रमंत जोनी ते नाम सिमरत तारे ॥ नानक दरस पिआस हरि जीउ आपि लेहु सम्हारे ॥ २ ॥ हरि चरन कमल मनु लीना ॥ प्रभ जल जन तेरे मीना ॥ जल मीन प्रभ जीउ एक तूहै भिंन आन न जानीऐ ॥ गहि भुजा लेवहु नामु देवहु तउ प्रसादी मानीऐ ॥ भजु साधसंगे एक रंगे क्रिपाल गोबिद दीना ॥ अनाथ नीच सरणाइ नानक करि मइआ अपुना कीना ॥ ३ ॥ आपस कउ आपु मिलाइआ ॥ भ्रम भंजन हरि राइआ ॥ आचरज सुआमी अंतरजामी मिले गुण निधि पिआरिआ ॥ महा मंगल सूख उपजे गोबिंद गुण नित सारिआ ॥ मिलि संगि सोहे देखि मोहे पुरबि लिखिआ पाइआ ॥ बिनवंति नानक सरनि तिन की जिन्ही हरि हरि धिआइआ ॥ ४ ॥ १ ॥

प्रेम व भक्ति का दाता ईश्वर अपने भक्तों में लीन रहता है। वह दिन-रात भक्तों के अनुराग में रत रहता है और एक पल भी मन से नहीं भूलता। वह संसार का पालक है, वह गुणों का भण्डार सदैव साथ रहता है, वह जगदीश्वर सर्वगुण सम्पन्न है। उसके चरणों की संगत ने मन मोह लिया

है, भक्तजन हरिनाम के रस में मस्त रहते हैं। हे नानक! वह प्रियतम प्रभु कृपा का घर है, करोड़ों में से कोई विरला ही उसकी महिमा को जानता है॥१॥ हे प्रियतम प्रभु! तेरी महिमा अगम्य अपार है, महा पतित जीवों को भी तूने संसार-सागर से पार कर दिया है। हे स्वामी! तू पापियों को पावन करने वाला है, भक्तों से प्रेम करने वाला एवं कृपा का समुद्र है। हे अन्तर्यामी! संत पुरुषों की संगत में निःसंकोच तेरे भजन में लीन रहूँ। जो करोड़ों जन्मों से योनियों में भटक रहे थे, नाम-स्मरण करके वे भी मुक्त हो गए हैं। नानक की विनती है कि हे श्री हरि! तेरे दर्शनों की तीव्र लालसा है, स्वयं ही संभाल लो॥२॥ मेरा मन परमात्मा के चरण कमल में लीन है। हे प्रभु! तू जल की तरह है और भक्त तेरी मछलियाँ हैं। जल एवं मछली एक तू ही है, इसे अलग नहीं माना जा सकता। हमारी बांह पकड़कर नाम ही प्रदान करो, तो ही तेरी कृपा मानेंगे। साधुओं की संगत में एकाग्रचित होकर कृपालु परमेश्वर का भजन करो। नानक की विनती है कि हे परमपिता! हम अनाथ एवं दीन तेरी शरण में आए हैं, दया करके अपना बना लो॥३॥ ईश्वर ने अपने आपको आप ही मिलाया है और वह हरि-प्रभु सब भ्रम नाश करने वाला है। उस स्वामी की लीलाएँ अद्भुत हैं, वह अन्तर्यामी, गुणों का भण्डार, प्रियतम अपनी कृपा से ही मिलता है। हे परमेश्वर! नित्य तेरा गुणगान करने से महामंगल एवं सुख उत्पन्न होता है। तुझसे मिलकर ही जीव शोभा देता है, तेरे दर्शन मन को मोह लेने वाले हैं और उत्तम भाग्य से ही प्राप्त होता है। नानक विनती करते हैं कि हम उनकी शरण चाहते हैं, जिन्होंने परमात्मा का ध्यान किया है॥४॥१॥

वार मलार की महला १ राणे कैलास तथा मालदे की धुनि ॥ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

सलोक महला ३ ॥ गुरि मिलिऐ मनु रहसीऐ जिउ वुठै धरणि सीगारु ॥ सभ दिसै हरीआवली सर भरे सुभर ताल ॥ अंदरु रचै सच रंगि जिउ मंजीठै लालु ॥ कमलु विगसै सचु मनि गुर कै सबदि निहालु ॥ मनमुख दूजी तरफ है वेखहु नदरि निहालि ॥ फाही फाथे मिरग जिउ सिरि दीसै जमकालु ॥ खुधिआ त्रिसना निंदा बुरी कामु क्रोधु विकरालु ॥ एनी अखी नदरि न आवई जिचरु सबदि न करे बीचारु ॥ तुधु भावै संतोखीआं चूकै आल जंजालु ॥ मूलु रहै गुरु सेविऐ गुर पउड़ी बोहिथु ॥ नानक लगी ततु लै तूं सचा मनि सचु ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ गुरु को मिलकर मन यूं खिल जाता है, जैसे वर्षा होने से धरती की सजावट हो जाती है। हर जगह हरियाली ही दिखाई देती है और तालाब व सरोवर पानी से भर जाते हैं। मन सत्य के रंग में लीन होकर मजीठ की तरह लाल हो जाता है। सत्य में मन कमल की तरह खिल उठता है और गुरु के उपदेश से निहाल हो जाता है। ध्यानपूर्वक देख लो, स्वेच्छाचारी उलटा ही चलता है। फंदे में फंसे हिरण की तरह सिर पर मौत ही नजर आती है। भूख, तृष्णा एवं निंदा बहुत बुरी है और काम, क्रोध विकराल चाण्डाल समान है। जब तक वह शब्द का चिंतन नहीं करता, उसे आँखों से कुछ नजर नहीं आता। हे स्रष्टा! जब तुझे उपयुक्त लगता है तो मन को संतोष मिलता है और व्यर्थ के जंजाल दूर हो जाते हैं। गुरु की सेवा से ही मनुष्य की जड़ मजबूत होती है, गुरु ही ऐसी सीढ़ी है जो मंजिल तक पहुँचाती है, गुरु ही ऐसा जहाज है, जो संसार-सागर से पार उतारता है। हे नानक! जब लगन लगती है तो मन सत्यशील होकर सत्य में लीन रहता है॥१॥

महला १ ॥ हेको पाधरु हेकु दरु गुर पउड़ी निज थानु ॥ रूड़उ ठाकुरु नानका सभि सुख साचउ नामु ॥ २ ॥

महला १॥ मंजिल एक ही है, द्वार भी एक (प्रभु) ही है। गुरु ही उस स्थान तक पहुँचने के लिए सीढ़ी है। हे नानक! ईश्वर अत्यंत सुन्दर है और सभी सुख सच्चे नाम के सिमरन में हैं॥२॥

पउड़ी ॥ आपीन्है आपु साजि आपु पछाणिआ ॥ अंबरु धरति विछोड़ि चंदोआ ताणिआ ॥ विणु थंम्हा गगनु रहाइ सबदु नीसाणिआ ॥ सूरजु चंदु उपाइ जोति समाणिआ ॥ कीए राति दिनंतु चोज विडाणिआ ॥ तीरथ धरम वीचार नावण पुरबाणिआ ॥ तुधु सरि अवरु न कोइ कि आखि वखाणिआ ॥ सचै तखति निवासु होर आवण जाणिआ ॥ १ ॥

पउड़ी॥ परमात्मा स्वतः प्रकाशमान हुआ, संसार बनाकर स्वयं ही पहचान दी। आसमान को धरती से अलग कर विशाल चंदोआ स्थापित कर दिया। अपने हुक्म से गगन को बिना स्तंभ के सहारा दिया हुआ है। सूर्य एवं चांद को उत्पन्न कर दुनिया को रोशनी प्रदान की। उसने दिन-रात बनाकर अद्भुत लीला की है। धर्म का विचार करते हुए तीर्थों पर स्नान के लिए पर्वों की रचना कर दी। हे स्रष्टा! क्या कहकर व्याख्या करूँ, तुझ सरीखा अन्य कोई नहीं। तू ही सच्चे सिंहासन पर अटल रूप में विराजमान है, अन्य दुनिया आवागमन में पड़ी हुई है॥१॥

सलोक मः १ ॥ नानक सावणि जे वसै चहु ओमाहा होइ ॥ नागां मिरगां मछीआं रसीआं घरि धनु होइ ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ गुरु नानक का कथन है कि जब सावन के मौसम में बरसात आती है तो इन चारों को बहुत खुशी मिलती है-

क) नागों को छोटे-छोटे जीवों के रूप में खाने को मिलता है। ख) पशुओं को गर्मी से निजात मिलती है। ग) मछलियों को भरपूर पानी मिलता है। घ) धनवानों को धन-दौलत के साधनों से खुशी प्राप्त होती है॥१॥

मः १ ॥ नानक सावणि जे वसै चहु वेछोड़ा होइ ॥ गाई पुता निरधना पंथी चाकरु होइ ॥ २ ॥

महला १॥ गुरु नानक का कथन है कि सावन के मौसम में भरपूर वर्षा होने से चारों को तकलीफ भी झेलनी पड़ती है। क) गाय बछड़ों से अलग होकर चरने लग जाती है और बैल जोतने लग जाते हैं। ख) निर्धनों को काम-धंधा नहीं मिलता। ग) जलथल की वजह से राहगीरों को बहुत मुश्किल होती है। घ) नौकर-चाकरों को वर्षा में भी अधिक मशक्कत करनी पड़ती है॥२॥

पउड़ी ॥ तू सचा सचिआरु जिनि सचु वरताइआ ॥ बैठा ताड़ी लाइ कवलु छपाइआ ॥ ब्रहमै वडा कहाइ अंतु न पाइआ ॥ ना तिसु बापु न माइ किनि तू जाइआ ॥ ना तिसु रूपु न रेख वरन सबाइआ ॥ ना तिसु भुख पिआस रजा धाइआ ॥ गुर महि आपु समोइ सबदु वरताइआ ॥ सचे ही पतीआइ सचि समाइआ ॥ २ ॥

पउड़ी॥ हे परमेश्वर! तू शाश्वत है, सत्यशील है, सच्चा इन्साफ करके सत्य में कार्यशील है। हृदय कमल में गुप्त रूप में समाधि लगाई हुई है। ब्रह्मा स्वयं को बड़ा कहलाता है, पर वह भी रहस्य नहीं पा सका। न उसका पिता है, न कोई माता है, किस प्रकार जन्म हुआ, इसका भी कोई रहस्य नहीं पा सकता। वह रूप, चिन्ह एवं वर्ण से भी रहित है। उसे कोई भूख-प्यास प्रभावित नहीं करती, वह पूर्णरूपेण तृप्त है। गुरु में स्वयं को समाकर उपदेश बांटता है। वह सत्य से ही प्रसन्न होता है और सत्य में ही लीन है॥२॥

सलोक मः १ ॥ वैदु बुलाइआ वैदगी पकड़ि ढंढोले बांह ॥ भोला वैदु न जाणई करक कलेजे माहि ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ रोगी समझ कर वैद्य को बुलाया गया तो वह बाँह पकड़ कर नब्ज ढूँढने लग गया। पर भोला वैद्य नहीं जानता कि दिल में क्या दर्द है॥१॥

मः २ ॥ वैदा वैदु सुवैदु तू पहिलां रोगु पछाणु ॥ ऐसा दारू लोड़ि लहु जितु वंञै रोगा घाणि ॥ जितु दारू रोग उठिअहि तनि सुखु वसै आइ ॥ रोगु गवाइहि आपणा त नानक वैदु सदाइ ॥ २ ॥

महला २॥ वैद्य जी! माना कि आप कुशल वैद्य हैं, पहले रोग को तो पहचान लो। ऐसी दवा ढूँढ लो जिससे रोग बिल्कुल नष्ट हो जाए। जिस दवा से रोग दूर हो और शरीर में सुख उत्पन्न हो। नानक कथन करते हैं, वैद्य तभी माना जाए यदि रोग नष्ट हो जाए॥२॥

पउड़ी ॥ ब्रहमा बिसनु महेसु देव उपाइआ ॥ ब्रहमे दिते बेद पूजा लाइआ ॥ दस अवतारी रामु राजा आइआ ॥ दैता मारे धाइ हुकमि सबाइआ ॥ ईस महेसुरु सेव तिन्ही अंतु न पाइआ ॥ सची कीमति पाइ तखतु रचाइआ ॥ दुनीआ धंधै लाइ आपु छपाइआ ॥ धरमु कराए करम धुरहु फुरमाइआ ॥ ३ ॥

पउड़ी॥ सृष्टिकर्ता ने ब्रह्मा, विष्णु, महेश इत्यादि देवताओं को उत्पन्न किया। ब्रह्मा को वेद देकर पूजा-पाठ में लगाया। विष्णु के दस अवतारों में दशरथ-पुत्र राजा राम का भी जन्म हुआ, जिसने परमात्मा के हुक्म से राक्षसों का संहार किया। ईश, महेश्वर इत्यादि रुद्र भी उपासना करके परमेश्वर का अंत नहीं पा सके। परमेश्वर ने सच्चा सिंहासन बनाकर अपनी महत्ता प्रदान की है। दुनिया को भिन्न-भिन्न कार्यों में लगाकर स्वयं को गुप्त रखा हुआ है। वह विधाता कर्मानुसार सच्चा इन्साफ ही करता है॥३॥

सलोक मः २ ॥ सावणु आइआ हे सखी कंतै चिति करेहु ॥ नानक झूरि मरहि दोहागणी जिन्ह अवरी लागा नेहु ॥ १ ॥

श्लोक महला २॥ हे सखी! सावन का सुहावना मौसम आ गया है, पति-प्रभु का स्मरण करो। नानक का कथन है कि जो पति-प्रभु के अलावा किसी अन्य के साथ प्रेम लगाती हैं, ऐसी बदनसीब स्त्रियाँ दुखों में ही घिरी रहती हैं॥१॥

मः २ ॥ सावणु आइआ हे सखी जलहरु बरसनहारु ॥ नानक सुखि सवनु सोहागणी जिन्ह सह नालि पिआरु ॥ २ ॥

महला २॥ हे सखी! सावन का महीना आया है, बादल खूब बरसात कर रहे हैं। नानक फुरमाते हैं कि जिन्होंने प्रभु से प्रेम लगाया हुआ है, ऐसी सुहागिन स्त्रियाँ सुख में लीन हैं॥२॥

पउड़ी ॥ आपे छिंझ पवाइ मलाखाड़ा रचिआ ॥ लथे भड़थू पाइ गुरमुखि मचिआ ॥ मनमुख मारे पछाड़ि मूरख कचिआ ॥ आपि भिड़ै मारे आपि आपि कारजु रचिआ ॥ सभना खसमु एकु है गुरमुखि जाणीऐ ॥ हुकमी लिखै सिरि लेखु विणु कलम मसवाणीऐ ॥ सतसंगति मेलापु जिथै हरि गुण सदा वखाणीऐ ॥ नानक सचा सबदु सलाहि सचु पछाणीऐ ॥ ४ ॥

पउड़ी॥ ईश्वर ने स्वयं जीवन-संघर्ष डालकर संसार रूपी मल्ल-अखाड़ा बनाया है। जीव जबरदस्त मुकाबला करते हैं, गुरमुख सहर्ष रचे रहते हैं। मूर्ख एवं कच्चे स्वेच्छाचारी जीवन मुकाबले में पराजित हो जाते हैं। सब ईश्वर की ही लीला है, वह स्वयं मुकाबला करता है, मारने वाला भी स्वयं ही है और स्वयं ही कार्य रचता है। गुरु से यही सच्चाई पता लगती है कि सबका मालिक एक ही है। बिना कलम एवं स्याही के विधाता अपने हुक्म से सबका भाग्य लिखता है। सत्संगत वह मिलाप है, जहाँ सदैव परमात्मा के गुणों का बखान होता है। हे नानक! सच्चे परमेश्वर की स्तुति से सत्य की पहचान होती है॥४॥

सलोक मः ३ ॥ ऊंनवि ऊंनवि आइआ अवरि करेंदा वंन ॥ किआ जाणा तिसु साह सिउ केव रहसी रंगु ॥ रंगु रहिआ तिन्ह कामणी जिन्ह मनि भउ भाउ होइ ॥ नानक भै भाइ बाहरी तिन तनि सुखु न होइ ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ झुक-झुककर बादल के रूप में प्रभु ही आया है, वह अनेक प्रकार के रंग करता है। मैं यह भी नहीं जानता कि प्रभु से प्रेम कैसे रहेगा। जिसके मन में श्रद्धा एवं प्रेम होता है, उस जीव रूपी कामिनी से ही प्रेम रहता है। हे नानक! श्रद्धा-प्रेम के बिना तन को कभी सुख नसीब नहीं होता॥१॥

मः ३ ॥ ऊंनवि ऊंनवि आइआ वरसै नीरु निपंगु ॥ नानक दुखु लागा तिन्ह कामणी जिन्ह कंतै सिउ मनि भंगु ॥ २ ॥

महला ३॥ बादल रूप में झुक-झुककर प्रभु ही आकर प्रेम का जल बरसा रहा है। हे नानक! वह जीव रूपी कामिनी दुखी ही रहती है, जिसका प्रभु से मन टूटा हुआ है॥२॥

पउड़ी ॥ दोवै तरफा उपाइ इकु वरतिआ ॥ बेद बाणी वरताइ अंदरि वादु घतिआ ॥ परविरति निरविरति हाठा दोवै विचि धरमु फिरै रैबारिआ ॥ मनमुख कचे कूड़िआर तिन्ही निहचउ दरगह हारिआ ॥ गुरमती सबदि सूर है कामु क्रोधु जिन्ही मारिआ ॥ सचै अंदरि महलि सबदि सवारिआ ॥ से भगत तुधु भावदे सचै नाइ पिआरिआ ॥ सतिगुरु सेवनि आपणा तिन्हा विटहु हउ वारिआ ॥ ५ ॥

पउड़ी॥ गृहस्थ एवं सन्यास रूपी दो रास्ते बनाकर एक वही कार्यशील है। वेद वाणी का प्रसार कर उसमें विवाद उत्पन्न कर दिया। प्रवृत्ति (गृहस्थ जीवन) एवं निवृत्ति (संसार से त्याग) दोनों के बीच में धर्म वकील बना हुआ है। स्वेच्छाचारी जीव झूठे ही सिद्ध होते हैं और वे निश्चय ही प्रभु दरबार में हारते हैं। गुरु-मतानुसार शब्द के अनुरूप चलने वाले योद्धा हैं, जो काम-क्रोध को खत्म कर देते हैं। सत्य में लीन रहने वाले शब्द द्वारा जीवन संवार लेते हैं। हे प्रभु! वही भक्त तुझे अच्छे लगते हैं, जो सच्चे नाम से प्रेम करते हैं। जो अपने सतिगुरु की सेवा करते हैं, मैं उन पर कुर्बान जाता हूँ॥५॥

सलोक मः ३ ॥ ऊंनवि ऊंनवि आइआ वरसै लाइ झड़ी ॥ नानक भाणै चलै कंत कै सु माणे सदा रली ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ झुक-झुककर बादल आया है और खूब वर्षा कर रहा है। हे नानक! जो प्रभु की रज़ा में चलते हैं, वे सदा आनंद मनाते हैं॥१॥

मः ३ ॥ किआ उठि उठि देखहु बपुड़ें इसु मेघै हथि किछु नाहि ॥ जिनि एहु मेघु पठाइआ तिसु राखहु मन मांहि ॥ तिस नो मंनि वसाइसी जा कउ नदरि करेइ ॥ नानक नदरी बाहरी सभ करण पलाह करेइ ॥ २ ॥

महला ३॥ हे जीव! उठ-उठकर भला क्या देख रहे हो? इस बादल के हाथ में कुछ नहीं। जिसने इस बादल को भेजा है, उस प्रभु को मन में बसाकर रखो। दरअसल जिस पर अपनी कृपा करता है, वही उसे मन में बसाता है। हे नानक! ईश्वर की कृपा-दृष्टि के बिना सब करुणा प्रलाप करते हैं॥२॥

पउड़ी ॥ सो हरि सदा सरेवीऐ जिसु करत न लागै वार ॥ आडाणे आकास करि खिन महि ढाहि उसारणहार ॥ आपे जगतु उपाइ कै कुदरति करे वीचार ॥ मनमुख अगै लेखा मंगीऐ बहुती होवै मार ॥ गुरमुखि पति सिउ लेखा निबड़ै बखसे सिफति भंडार ॥ ओथै हथु न अपड़ै कूक न सुणीऐ पुकार ॥ ओथै सतिगुरु बेली होवै कढि लए अंती वार ॥ एना जंता नो होर सेवा नही सतिगुरु सिरि करतार ॥ ६ ॥

पउड़ी॥ उस परमात्मा की सदैव वंदना करो, जिसे रचना करने में कोई समय नहीं लगता। वह रचनाकार सर्वशक्तिमान है, जो पल में आकाश को तम्बू की तरह स्थापित कर गिराने-बनाने वाला है। वह जगतु को उत्पन्न कर कुदरत पर विचार करता है। जब स्वेच्छाचारी के कर्मों का हिसाब होता है, तो वह कठोर दण्ड भोगता है। गुरुमुख का सम्मानपूर्वक हिसाब निपटता है और उसे स्तुति का भण्डार प्रदान किया जाता है। परलोक में कोई कोशिश नहीं चलती और न ही कोई फरियाद सुनी जाती है। वहाँ सच्चा गुरु ही मददगार होता है और अन्तिम समय बचा लेता है। जिनका सतगुरु रखवाला है, उन जीवों को कोई अन्य सेवा की जरूरत नहीं॥६॥

सलोक मः ३ ॥ बाबीहा जिस नो तू पूकारदा तिस नो लोचै सभु कोइ ॥ अपणी किरपा करि कै वससी वणु त्रिणु हरिआ होइ ॥ गुर परसादी पाईऐ विरला बूझै कोइ ॥ बहदिआ उठदिआ नित धिआईऐ सदा सदा सुखु होइ ॥ नानक अंम्रितु सद ही वरसदा गुरमुखि देवै हरि सोइ ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ हे जीव रूपी पपीहे! जिसे तू पुकार रहा है, उसे सब पाना चाहते हैं। वह अपनी कृपा करके ही बरसता है, जिससे पूरी प्रकृति हरित हो जाती है। गुरु की कृपा से प्राप्त होता है, इस तथ्य को कोई विरला ही समझता है। उठते-बैठते उसके ध्यान में लीन होने से सदैव सुख प्राप्त होता है। हे नानक! यह अमृत सदैव ही बरसता है और गुरु ही हरिनाम स्मरण का अमृत प्रदान करता है॥१॥

म: ३ ॥ कलमलि होई मेदनी अरदासि करे लिव लाइ ॥ सचै सुणिआ कंनु दे धीरक देवै सहजि सुभाइ ॥ इंद्रै नो फुरमाइआ वुठा छहबर लाइ ॥ अनु धनु उपजै बहु घणा कीमति कहणु न जाइ ॥ नानक नामु सलाहि तू सभना जीआ देदा रिजकु संबाहि ॥ जितु खाधै सुखु ऊपजै फिरि दूखु न लागै आइ ॥ २ ॥

महला ३॥ दुख-पापों से बेचैन होकर पृथ्वी ने ध्यान लगाकर प्रार्थना की। परमात्मा ने ध्यानपूर्वक प्रार्थना सुनी तो सहज स्वाभाविक उसे हौंसला दिया। इन्द्र को हुक्म किया कि मूसलाधार बरसात करो, इतना अधिक अन्न पैदा हो कि मूल्यांकन न किया जा सके। नानक का

कथन है कि परमात्मा का स्तुतिगान करो, वह सब जीवों को रोज़ी रोटी देकर पोषण कर रहा है। जिसका दिया खाने से सुख उत्पन्न होता है और पुनः दुख नहीं लगता॥ २॥

पउड़ी ॥ हरि जीउ सचा सचु तू सचे लैहि मिलाइ ॥ दूजै दूजी तरफ है कूड़ि मिलै न मिलिआ जाइ ॥ आपे जोड़ि विछोड़िऐ आपे कुदरति देइ दिखाइ ॥ मोहु सोगु विजोगु है पूरबि लिखिआ कमाइ ॥ हउ बलिहारी तिन कउ जो हरि चरणी रहे लिव लाइ ॥ जिउ जल महि कमलु अलिपतु है ऐसी बणत बणाइ ॥ से सुखीए सदा सोहणे जिन्ह विचहु आपु गवाइ ॥ तिन्ह सोगु विजोगु कदे नही जो हरि कै अंकि समाइ ॥ ७ ॥

पउड़ी॥ हे प्रभु ! तू शाश्वत रूप है और जो सत्यशील हैं, उनको साथ मिला लेता है। जो द्वैतभाव में लीन रहते हैं, वे सत्य से उलट ही चलते हैं, ऐसे झूठे लोग सत्य में कभी मिल नहीं सकते। वह स्वयं जोड़ने एवं दूर करने वाला है और अपनी कुदरत दिखा रहा है। मोह, गम एवं वियोग इत्यादि सब पूर्व कर्मों का फल है। जो ईश्वर के चरणों में लीन रहते हैं, मैं उन पर सदैव बलिहारी जाता हूँ। जैसे जल में कमल अलिप्त रहता है, वैसा ही जीवन-आचरण बनाना चाहिए। वही लोग वास्तव में सुखी एवं सदैव सुन्दर हैं, जो मन में से अहंकार को समाप्त करते हैं। जो ईश्वर की भक्ति में लीन रहते हैं, उन्हें कोई गम एवं वियोग प्रभावित नहीं करता॥ ७॥

सलोक मः ३ ॥ नानक सो सालाहीऐ जिसु वसि सभु किछु होइ ॥ तिसै सरेविहु प्राणीहो तिसु बिनु अवरु न कोइ ॥ गुरमुखि हरि प्रभु मनि वसै तां सदा सदा सुखु होइ ॥ सहसा मूलि न होवई सभ चिंता विचहु जाइ ॥ जो किछु होइ सु सहजे होइ कहणा किछू न जाइ ॥ सचा साहिबु मनि वसै तां मनि चिंदिआ फलु पाइ ॥ नानक तिन का आखिआ आपि सुणे जि लइअनु पंनै पाइ ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ नानक की विनती है कि उस परमात्मा का स्तुतिगान करो; जिसके वश में सब कुछ हो रहा है। हे प्राणियो ! उसी की अर्चना करो, उसके सिवा अन्य कोई नहीं (करने वाला)। गुरु के द्वारा जब मन में प्रभु अवस्थित होता है, तो सदैव सुख ही सुख होता है। संशय बिल्कुल नहीं होता और सब चिंताएँ मन से दूर हो जाती हैं। जो कुछ होता है, वह स्वाभाविक ही होता है, उस बारे कुछ कहा नहीं जा सकता। जब सच्चा मालिक मन में अवस्थित होता है तो मनोवांछित फल प्राप्त होता है। हे नानक ! जिनको प्रभु अपना बना लेता है, उनकी विनती स्वयं ही सुनता है और हर बात पूरी करता है॥ १॥

मः ३ ॥ अंम्रितु सदा वरसदा बूझनि बूझणहार ॥ गुरमुखि जिन्ही बुझिआ हरि अंम्रितु रखिआ उरि धारि ॥ हरि अंम्रितु पीवहि सदा रंगि राते हउमै त्रिसना मारि ॥ अंम्रितु हरि का नामु है वरसै किरपा धारि ॥ नानक गुरमुखि नदरी आइआ हरि आतम रामु मुरारि ॥ २ ॥

महला ३॥ कोई समझदार ही इस तथ्य को समझता है कि हरि का नामामृत सदैव बरसता है। गुरु से जिसने यह तथ्य समझा है, वह हरिनामामृत को हृदय में बसाकर रखता है। वह अहम् एवं तृष्णा को समाप्त कर हरिनामामृत ही पान करता है और सदा उसके रंग में लीन रहता है। हरि का नाम अमृत है और उसकी कृपा से ही बरसता है। नानक का कथन है कि गुरु की कृपा से प्रभु अन्तर्मन में अवस्थित होता है॥ २॥

पउड़ी ॥ अतुलु किउ तोलीऐ विणु तोले पाइआ न जाइ ॥ गुर कै सबदि वीचारीऐ गुण महि रहै समाइ ॥ अपणा आपु आपि तोलसी आपे मिलै मिलाइ ॥ तिस की कीमति ना पवै कहणा किछू न

जाइ ॥ हउ बलिहारी गुर आपणे जिनि सची बूझ दिती बुझाइ ॥ जगतु मुसै अंम्रितु लुटीऐ मनमुख बूझ न पाइ ॥ विणु नावै नालि न चलसी जासी जनमु गवाइ ॥ गुरमती जागे तिन्ही घरु रखिआ दूता का किछु न वसाइ ॥ ८ ॥

पउड़ी॥ ईश्वर अतुलनीय है, फिर भला कैसे तोला जा सकता है, उसके गुणों को तोले बिना पाया भी नहीं जा सकता। गुरु के उपदेश द्वारा चिंतन करके उसके गुणों में लीन रहना चाहिए। वह स्वयं ही अपनी महिमा को तौलने वाला है और अपने आप ही मिला लेता है। वह महान् है, उसका मूल्यांकन नहीं किया जा सकता, उसकी कीर्ति बताई नहीं जा सकती। मैं अपने गुरु पर कुर्बान जाता हूँ, जिसने सच्ची बात बताई है। संसार धोखा खा रहा है, नामामृत लूटना चाहिए, परन्तु स्वेच्छाचारी इस तथ्य को नहीं समझ पा रहा। परमात्मा के नाम बिना कुछ साथ नहीं जाता और मनुष्य अपना जीवन गंवा देता है। गुरु के उपदेशानुसार चलने वाले सावधान रहते हैं, अपने घर को बचा लेते हैं, नहीं तो यमदूतों का भरोसा नहीं॥ ८॥

सलोक मः ३ ॥ बाबीहा ना बिललाइ ना तरसाइ एहु मनु खसम का हुकमु मंनि ॥ नानक हुकमि मंनिऐ तिख उतरै चड़ै चवगलि वंनु ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ हे पपीहे रूपी मन ! यह रोना और दुखी होना छोड़ दो, तुम्हें अपने मालिक का हुक्म मानना चाहिए। नानक का कथन है कि उसका हुक्म मानने से सारी प्यास मिट जाती है और खुशी का चौगुना रंग चढ़ने लगता है॥ १॥

मः ३ ॥ बाबीहा जल महि तेरा वासु है जल ही माहि फिराहि ॥ जल की सार न जाणही तां तूं कूकण पाहि ॥ जल थल चहु दिसि वरसदा खाली को थाउ नाहि ॥ एतै जलि वरसदै तिख मरहि भाग तिना के नाहि ॥ नानक गुरमुखि तिन सोझी पई जिन वसिआ मन माहि ॥ २ ॥

महला ३॥ अरे पपीहे ! जल में तेरा निवास है और जल में ही तू विचरण करता है। तू जल की कद्र नहीं जानता, जिसकी वजह से रोता-चिल्लाता है। परमात्मा रूपी जल सर्वव्याप्त है, कोई भी स्थान उससे ख़ाली नहीं है। नानक फुरमाते हैं कि गुरु से जिनको सूझ प्राप्त होती है, उनके मन में प्रभु अवस्थित हो जाता है॥ २॥

पउड़ी ॥ नाथ जती सिध पीर किनै अंतु न पाइआ ॥ गुरमुखि नामु धिआइ तुझै समाइआ ॥ जुग छतीह गुबारु तिस ही भाइआ ॥ जला बिंबु असरालु तिनै वरताइआ ॥ नीलु अनीलु अगंमु सरजीतु सबाइआ ॥ अगनि उपाई वादु भुख तिहाइआ ॥ दुनीआ कै सिरि कालु दूजा भाइआ ॥ रखै रखणहारु जिनि सबदु बुझाइआ ॥ ६ ॥

पउड़ी॥ बड़े-बड़े नाथ, सन्यासी, सिद्ध एवं पीरों में से कोई भी ईश्वर का रहस्य नहीं पा सका। गुरु के द्वारा नाम का ध्यान करने वाले तुझ में ही समाहित हो गए। छत्तीस युगों तक घोर अंधेरा परमात्मा की मर्जी थी, जगत-रचना से पूर्व भयानक जल ही जल फैला हुआ था। वह सृष्टिकर्ता शाश्वत स्वरूप, अनादि, असीम एवं अगम्य है। उसी ने अग्नि, लालच, भूख एवं प्यास को उत्पन्न किया है और द्वैतभाव में दुनिया के सिर पर मौत खड़ी कर दी है। परन्तु जिसने शब्द-गुरु द्वारा समझ लिया है, दुनिया के रखवाले ने उसी की रक्षा की है॥ ६॥

सलोक मः ३ ॥ इहु जलु सभ तै वरसदा वरसै भाइ सुभाइ ॥ से बिरखा हरीआवले जो गुरमुखि रहे समाइ ॥ नानक नदरी सुखु होइ एना जंता का दुखु जाइ ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ ईश्वर रूपी जल सर्वत्र बरसता है और प्रेम स्वभाव बरसता रहता है। लेकिन जीव रूपी वही वृक्ष हरे भरे होते हैं, जो गुरु के उपदेशानुसार लीन रहते हैं। हे नानक! उसकी कृपा-दृष्टि होने पर ही सुख उत्पन्न होता है और जीवों का दुख दूर हो जाता है॥१॥

मः ३ ॥ भिंनी रैणि चमकिआ वुठा छहबर लाइ ॥ जितु वुठै अनु धनु बहुतु ऊपजै जां सहु करे रजाइ ॥ जितु खाधै मनु त्रिपतीऐ जीआं जुगति समाइ ॥ इहु धनु करते का खेलु है कदे आवै कदे जाइ ॥ गिआनीआ का धनु नामु है सद ही रहै समाइ ॥ नानक जिन कउ नदरि करे तां इहु धनु पलै पाइ ॥ २ ॥

महला ३॥ सुहावनी रात बिजली चमकती है तो मूसलाधार बरसात होने लगती है। जब मालिक की मर्जी होती है तो इस बरसात से अधिक मात्रा में अन्न धन पैदा होता है। जिस नाम का सेवन करने से मन तृप्त हो जाता है और जीवों की जीवन-युक्ति उसी में लीन है। यह धन ईश्वर की लीला है, कभी आता है तो कभी जाता है। प्रभु का नाम ज्ञानी पुरुषों का सच्चा धन है और वे सदैव नाम-स्मरण में लीन रहते हैं। हे नानक! जिस पर अपनी कृपा करता है, वही व्यक्ति नाम-धन प्राप्त करता है॥२॥

पउड़ी ॥ आपि कराए करे आपि हउ कै सिउ करी पुकार ॥ आपे लेखा मंगसी आपि कराए कार ॥ जो तिसु भावै सो थीऐ हुकमु करे गावारु ॥ आपि छडाए छुटीऐ आपे बखसणहारु ॥ आपे वेखै सुणे आपि सभसै दे आधारु ॥ सभ महि एकु वरतदा सिरि सिरि करे बीचारु ॥ गुरमुखि आपु वीचारीऐ लगै सचि पिआरु ॥ नानक किस नो आखीऐ आपे देवणहारु ॥ १० ॥

पउड़ी॥ जब करने करवाने वाला स्वयं ईश्वर ही है तो उसके सिवा किसके पास फरियाद की जाए। उसकी लीला अद्भुत है, वह स्वयं ही कर्म करवाता है और स्वयं ही कर्मों का हिसाब मांगता है। मूर्ख मनुष्य व्यर्थ ही हुक्म करता रहता है, दरअसल जो ईश्वर को उपयुक्त लगता है, वही होता है। वह क्षमावान् है, मुक्ति तभी होती है, जब वह मुक्त करवाता है। वही देखता एवं सुनता है और सबको आसरा देता है। सब जीवों में एक परमेश्वर ही विद्यमान है और वही विचार करता है। वही सच्चे प्रभु से प्रेम करते हैं, जो गुरु के द्वारा आत्म-चिंतन करते हैं। हे नानक! जब परमात्मा ही सब देने वाला है तो फिर किसी को (दाता) कैसे कहा जा सकता है॥१०॥

सलोक मः ३ ॥ बाबीहा एहु जगतु है मत को भरमि भुलाइ ॥ इहु बाबींहा पसू है इस नो बूझणु नाहि ॥ अंम्रितु हरि का नामु है जितु पीतै तिख जाइ ॥ नानक गुरमुखि जिन्ह पीआ तिन्ह बहुड़ि न लागी आइ ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ हे बाबीहे! यह जो जगत है, कोई भ्रम में मत भटकना। यह जीव पशु समान है, उसे कोई समझ नहीं। परमात्मा का नाम अमृतमय है, जिसका पान करने से प्यास बुझ जाती है। नानक का कथन है कि जिसने गुरु के द्वारा अमृतपान किया है, उसे पुनः प्यास नहीं लगती॥३॥

मः ३ ॥ मलारु सीतल रागु है हरि धिआइऐ सांति होइ ॥ हरि जीउ अपणी क्रिपा करे तां वरतै सभ लोइ ॥ वुठै जीआ जुगति होइ धरणी नो सीगारु होइ ॥ नानक इहु जगतु सभु जलु है जल ही ते सभ कोइ ॥ गुर परसादी को विरला बूझै सो जनु मुकतु सदा होइ ॥ २ ॥

महला ३॥ बेशक मलार शीतल राग है, पर इस राग द्वारा प्रभु का भजन करने से ही शान्ति प्राप्त होती है। ईश्वर अपनी कृपा करता है तो समूचे संसार को सुख-शान्ति प्राप्त होती है। उसके बरसने से जीने की युक्ति प्राप्त होती है और पूरी धरती का शिंगार हो जाता है। हे नानक! यह जगत सब जल ही जल है और जल से ही सब कुछ होता है। गुरु की कृपा से कोई विरला ही तथ्य को समझता है और वह सदा के लिए मुक्ति पा लेता है॥ २॥

पउड़ी ॥ सचा वेपरवाहु इको तू धणी ॥ तू सभु किछु आपे आपि दूजे किसु गणी ॥ माणस कूड़ा गरबु सची तुधु मणी ॥ आवा गउणु रचाइ उपाई मेदनी ॥ सतिगुरु सेवे आपणा आइआ तिसु गणी ॥ जे हउमै विचहु जाइ त केही गणत गणी ॥ मनमुख मोहि गुबारि जिउ भुला मंझि वणी ॥ कटे पाप असंख नावै इक कणी ॥ ११ ॥

पउड़ी॥ हे परमेश्वर! एकमात्र तू ही सबका मालिक है, सर्वाधिकार सम्पन्न है। तू सर्वशक्तिमान है, कोई दूसरा बड़ा नहीं माना जा सकता। मनुष्य का अहंकार झूठा है, तेरी महिमा ही सच्ची है। दुनिया को पैदा करके जन्म-मरण बना दिया। जो सतिगुरु की सेवा करता है, उसी का जन्म सफल माना जाता है। जब मन से अहम् दूर हो जाता है तो छोटा-बड़ा मानने की बात समाप्त हो जाती है। स्वेच्छाचारी मोह एवं घमण्ड में लीन रहता है, उसकी दशा इस प्रकार है जैसे कोई जंगल में भटकता है। यदि थोड़ा-सा प्रभु का नाम-स्मरण किया जाए तो इससे असंख्य ही पाप कट जाते हैं॥ ११॥

सलोक मः ३ ॥ बाबीहा खसमै का महलु न जाणही महलु देखि अरदासि पाइ ॥ आपणै भाणै बहुता बोलहि बोलिआ थाइ न पाइ ॥ खसमु वडा दातारु है जो इछे सो फल पाइ ॥ बाबीहा किआ बपुड़ा जगतै की तिख जाइ ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ जीव रूपी पपीहा अपने मालिक का ठिकाना नहीं जानता, यदि प्रार्थना करे तो ठिकाना देख सकता है। अपनी मर्जी से वह बहुत बोलता है, परन्तु ऐसा बोलना स्वीकार नहीं होता। केवल मालिक ही बड़ा दाता है, जो कामना होगी, वही फल प्राप्त होगा। बेचारा जीव रूपी पपीहा भला क्या, पूरे जगत की प्यास बुझ जाती है॥ १॥

मः ३ ॥ बाबीहा भिंनी रैणि बोलिआ सहजे सचि सुभाइ ॥ इहु जलु मेरा जीउ है जल बिनु रहणु न जाइ ॥ गुर सबदी जलु पाईऐ विचहु आपु गवाइ ॥ नानक जिसु बिनु चसा न जीवदी सो सतिगुरि दीआ मिलाइ ॥ २ ॥

महला ३॥ जीव रूपी पपीहा सुहावनी रात को सहज स्वाभाविक ही बोला कि परमेश्वर रूपी जल ही मेरा जीवन है, इसके बिना मैं जीवित नहीं रह सकता। यदि मन में से अहम्-भाव दूर किया जाए, गुरु के उपदेश द्वारा परमेश्वर रूपी जल प्राप्त हो जाता है। हे नानक! जिसके बिना एक पल भी जीना मुश्किल है, सच्चा गुरु ही उससे मिलाने वाला है॥ २॥

पउड़ी ॥ खंड पताल असंख मै गणत न होई ॥ तू करता गोविंदु तुधु सिरजी तुधै गोई ॥ लख चउरासीह मेदनी तुझ ही ते होई ॥ इकि राजे खान मलूक कहहि कहावहि कोई ॥ इकि साह सदावहि संचि धनु दूजै पति खोई ॥ इकि दाते इक मंगते सभना सिरि सोई ॥ विणु नावै बाजारीआ भीहावलि होई ॥ कूड़ निखुटे नानका सचु करे सु होई ॥ १२ ॥

पउड़ी॥ संसार में असंख्य खण्ड पाताल हैं, मुझ से इनकी गणना नहीं की जा सकती। हे ईश्वर ! तू कर्ता पुरुष है, दरअसल तूने ही संसार बनाया है और तूने ही इसे नष्ट किया है। चौरासी लाख योनियों वाली पृथ्वी तुझ से ही उत्पन्न हुई है। कोई स्वयं को राजा, खान एवं बादशाह कहलाता है। कोई धन दौलत जमा करके शाह बुलवा रहा है और द्वैतभाव में अपनी इज्जत खो रहा है। कुछ लोग दाता बने हुए हैं, कुछ दर-दर भीख मांग रहे हैं परन्तु सबका मालिक एक ही है। प्रभु-नाम के बिना सब सौदा करने में लीन हैं और मौत का डर बना हुआ है। गुरु नानक फुरमाते हैं कि झूठ का सदैव अंत होता है और वही होता है, जो ईश्वर करता है॥ १२॥

सलोक मः ३ ॥ बाबीहा गुणवंती महलु पाइआ अउगणवंती दूरि ॥ अंतरि तेरै हरि वसै गुरमुखि सदा हजूरि ॥ कूक पुकार न होवई नदरी नदरि निहाल ॥ नानक नामि रते सहजे मिले सबदि गुरू कै घाल ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ हे पपीहे! गुणवान ही ईश्वर का ठिकाना प्राप्त करता है, पर अवगुणी ईश्वर से दूर रहता है। ईश्वर तेरे मन में ही अवस्थित है और गुरु के द्वारा वह सदा समीप दिखाई देता है। अधिक शोर एवं पुकार करने से कुछ नहीं होता, अपितु कृपा-दृष्टि से ही सुख प्रदान करता है। हे नानक! शब्द गुरु की साधना द्वारा नाम में लीन रहने वाले स्वाभाविक ही मिल जाते हैं॥ १॥

मः ३ ॥ बाबीहा बेनती करे करि किरपा देहु जीअ दान ॥ जल बिनु पिआस न ऊतरै छुटकि जांहि मेरे प्रान ॥ तू सुखदाता बेअंतु है गुणदाता नेधानु ॥ नानक गुरमुखि बखसि लए अंति बेली होइ भगवानु ॥ २ ॥

महला ३॥ जिज्ञासु प्रार्थना करता है कि कृपा करके मुझे जीवन दान दो। प्रभु-नाम रूपी जल के बिना मेरी प्यास दूर नहीं होती, मेरे तो प्राण ही छूट जाते हैं। हे परमेश्वर ! तू सर्व सुख देने वाला है, बेअन्त है, गुण प्रदान करने वाला एवं शान्ति का भण्डार है। नानक विनती करते हैं कि हे भगवान! गुरु के द्वारा क्षमा कर दो, अन्तिम समय तू ही सहायता करता है॥ २॥

पउड़ी ॥ आपे जगतु उपाइ कै गुण अउगण करे बीचारु ॥ त्रै गुण सरब जंजालु है नामि न धरे पिआरु ॥ गुण छोडि अउगण कमावदे दरगह होहि खुआरु ॥ जूऐ जनमु तिनी हारिआ कितु आए संसारि ॥ सचै सबदि मनु मारिआ अहिनिसि नामि पिआरि ॥ जिनी पुरखी उरि धारिआ सचा अलख अपारु ॥ तू गुणदाता निधानु हहि असी अवगणिआर ॥ जिसु बखसे सो पाइसी गुर सबदी वीचारु ॥ १३ ॥

पउड़ी॥ जगत को उत्पन्न करके ईश्वर स्वयं ही गुण-अवगुण का विचार करता है। माया के तीन गुण ही सब झंझट परेशानी है, जिसकी वजह से जीव प्रभु-नाम से प्रेम नहीं करता। जो लोग गुणों को छोड़कर अवगुण अपनाते हैं, वे प्रभु के दरबार में दुखी ही होते हैं। वे अपना जीवन

जुए में हार देते हैं, फिर किसलिए संसार में आए थे। सच्चे उपदेश से मन को मारा जा सकता है, फिर सदैव प्रभु नाम से प्रेम लगा रहता है। जिन पुरुषों ने सत्यस्वरूप अलख अपार प्रभु को हृदय में धारण किया है, उनका मानना है कि तू गुणों का दाता एवं सुखों का भण्डार है, हम अवगुणों से भरे हुए हैं। जिस पर कृपा करता है, गुरु के उपदेश का चिंतन करके वही उसे पा लेता है॥ १३॥

सलोक मः ५ ॥ राति न विहावी साकतां जिन्हा विसरै नाउ ॥ राती दिनस सुहेलीआ नानक हरि गुण गांउ ॥ १ ॥

श्लोक महला ५॥ जिनको परमात्मा का नाम भूल जाता है, ऐसे अनीश्वरवादी लोगों की जीवन रात्रि नहीं कटती। हे नानक! परमात्मा का गुणगान करने वाले भक्तों का दिन-रात दोनों ही सुखद होता है॥ १॥

मः ५ ॥ रतन जवेहर माणका हभे मणी मथंनि ॥ नानक जो प्रभि भाणिआ सचै दरि सोहंनि ॥ २ ॥

महला ५॥ बेशक रत्न, जवाहर, माणिक्य इत्यादि रत्न सब पास हों, लेकिन हे नानक! जो प्रभु को अच्छे लगते हैं, सच्चे दरबार में वही सुन्दर लगते हैं॥ २॥

पउड़ी ॥ सचा सतिगुरु सेवि सचु सम्हालिआ ॥ अंति खलोआ आइ जि सतिगुर अगै घालिआ ॥ पोहि न सकै जमकालु सचा रखवालिआ ॥ गुर साखी जोति जगाइ दीवा बालिआ ॥ मनमुख विणु नावै कूड़िआर फिरहि बेतालिआ ॥ पसू माणस चंमि पलेटे अंदरहु कालिआ ॥ सभो वरतै सचु सचै सबदि निहालिआ ॥ नानक नामु निधानु है पूरै गुरि देखालिआ ॥ १४ ॥

पउड़ी॥ सच्चे सतिगुरु की सेवा में तल्लीन होकर परमात्मा की आराधना करनी चाहिए। सतिगुरु की सेवा करने से अन्तिम समय वह सेवा फल रूप में मदद करती है। जब सच्चा प्रभु रखवाला बन जाता है तो यमराज भी पास नहीं फटकता। गुरु की शिक्षा का दीया मनुष्य अपने अन्तर्मन में प्रज्वलित करता है। प्रभु नाम से विहीन स्वेच्छाचारी झूठे ही सिद्ध होते हैं और प्रेतों की तरह भटकते हैं। मनुष्य की त्वचा में ऐसे लोग पशु ही हैं, जिनका मन काला ही होता है। गुरु के सच्चे उपदेश से बोध होता है कि सबमें सत्यस्वरूप प्रभु ही व्याप्त है। हे नानक! पूर्ण गुरु ने दिखा दिया है कि परमात्मा का नाम ही सुखों का भण्डार है॥ १४॥

सलोक मः ३ ॥ बाबीहै हुकमु पछाणिआ गुर कै सहजि सुभाइ ॥ मेघु वरसै दइआ करि गूड़ी छहबर लाइ ॥ बाबीहे कूक पुकार रहि गई सुखु वसिआ मनि आइ ॥ नानक सो सालाहीऐ जि देंदा सभनां जीआ रिजकु समाइ ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ गुरु के कोमल शांत स्वभाव से जीव रूपी पपीहे को परमात्मा के हुक्म की पहचान हुई है। परमात्मा की दया से बादलों ने मूसलाधार बरसात की है। पपीहे की पुकार दूर हो गई है और मन में सुख बस गया है। हे नानक! उस परमेश्वर की स्तुति करो, जो सब जीवों को रोज़ी रोटी देकर पोषण कर रहा है॥ १॥

मः ३ ॥ चात्रिक तू न जाणही किआ तुधु विचि तिखा है कितु पीतै तिख जाइ ॥ दूजै भाइ

भरंमिआ अंम्रित जलु पलै न पाइ ॥ नदरि करे जे आपणी तां सतिगुरु मिलै सुभाइ ॥ नानक सतिगुर ते अंम्रित जलु पाइआ सहजे रहिआ समाइ ॥ २ ॥

महला ३॥ हे चातक ! तू नहीं जानता कि तुझे क्या प्यास लगी है और क्या पीने से प्यास दूर हो सकती है। द्वैतभाव में भटकने से नाम रूपी अमृत जल प्राप्त नहीं होता। जब अपनी कृपा करता है तो स्वाभाविक ही सतगुरु मिल जाता है। हे नानक ! सच्चे गुरु से ही अमृत जल प्राप्त होता है और जीव स्वाभाविक सुख में लीन रहता है॥२॥

पउड़ी ॥ इकि वण खंडि बैसहि जाइ सदु न देवही ॥ इकि पाला ककरु भंनि सीतलु जलु हेंवही ॥ इकि भसम चढ़ावहि अंगि मैलु न धोवही ॥ इकि जटा बिकट बिकराल कुलु घरु खोवही ॥ इकि नगन फिरहि दिनु राति नींद न सोवही ॥ इकि अगनि जलावहि अंगु आपु विगोवही ॥ विणु नावै तनु छारु किआ कहि रोवही ॥ सोहनि खसम दुआरि जि सतिगुरु सेवही ॥ १५ ॥

पउड़ी॥ कुछ लोग वन में जाकर बैठ जाते हैं और चुप रहकर किसी से नहीं बोलते। कुछ कठोर सर्दी की परवाह न करके ठण्डे जल में ही रहते हैं, कई अपने शरीर के अंगों पर भस्म लगाकर मैल नहीं धोते। कुछ ऐसे भी हैं जो विकराल जटाएँ धारण करके अपने वंश एवं गृहस्थी को छोड़ देते हैं तो कई लोग नग्न ही घूमते हैं, दिन-रात सोते तक नहीं। कुछ आग जलाकर अपने अंगों को बिगाड़ते हैं। प्रभु के नाम बिना शरीर राख बन जाता है, किसी की मृत्यु पर रोने का क्या फायदा। जो सतिगुरु की सेवा करते हैं, मालिक के द्वार पर वही शोभा देते हैं॥१५॥

सलोक मः ३ ॥ बाबीहा अंम्रित वेलै बोलिआ तां दरि सुणी पुकार ॥ मेघै नो फुरमानु होआ वरसहु किरपा धारि ॥ हउ तिन कै बलिहारणै जिनी सचु रखिआ उरि धारि ॥ नानक नामे सभ हरीआवली गुर कै सबदि वीचारि ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ जब भोर के समय पपीहे ने फरियाद की तो प्रभु के दरबार में सुनी गई। बादलों को हुक्म हुआ कि कृपा करके वर्षा करो। मैं उन पर कुर्बान जाता हूँ, जिन्होंने ईश्वर को मन में बसा लिया है। हे नानक ! गुरु के उपदेश द्वारा मनन कर लो, प्रभु के नाम से सब हरा-भरा हो जाता है॥१॥

मः ३ ॥ बाबीहा इव तेरी तिखा न उतरै जे सउ करहि पुकार ॥ नदरी सतिगुरु पाईऐ नदरी उपजै पिआरु ॥ नानक साहिबु मनि वसै विचहु जाहि विकार ॥ २ ॥

महला ३॥ हे पपीहे ! यदि सौ बार भी फरियाद करोगे तो इस तरह तेरी प्यास दूर नहीं होगी। प्रभु-कृपा से सतगुरु प्राप्त होता है और कृपा से ही प्रेम उत्पन्न होता है। हे नानक ! जब मालिक मन में बस जाता है तो सब विकार दूर हो जाते हैं॥२॥

पउड़ी ॥ इकि जैनी उझड़ पाइ धुरहु खुआइआ ॥ तिन मुखि नाही नामु न तीरथि न्हाइआ ॥ हथी सिर खोहाइ न भदु कराइआ ॥ कुचिल रहहि दिन राति सबदु न भाइआ ॥ तिन जाति न पति न करमु जनमु गवाइआ ॥ मनि जूठै वेजाति जूठा खाइआ ॥ बिनु सबदै आचारु न किन ही पाइआ ॥ गुरमुखि ओअंकारि सचि समाइआ ॥ १६ ॥

पउड़ी॥ कुछ जैनी लोग हैं, पथभ्रष्ट रहते हैं, विधाता ने आरम्भ से ही उनका ऐसा भाग्य बनाया है। वे मुँह से प्रभु-नाम का भजन नहीं करते और न ही तीर्थों पर स्नान करते हैं। वे अपना सिर नहीं मुंडवाते बल्कि हाथों से सिर के बाल खींचकर निकाल देते हैं। वे दिन-रात मैले ही रहते हैं और उनको ईश्वर-शब्द से प्रेम नहीं होता। न उनकी जाति है, न प्रतिष्ठा है, न ही कोई कर्म है, इस तरह वे अपना जीवन व्यर्थ ही गंवा देते हैं। ऐसे लोगों के मन में जूठन ही विद्यमान होती है और जूठन का ही भोजन लेते हैं। शब्द-गुरु के आचरण के बिना किसी को परमेश्वर प्राप्त नहीं हुआ। जो गुरमुख बन जाता है, वह ओंकार में ही लीन रहता है॥ १६॥

सलोक मः ३ ॥ सावणि सरसी कामणी गुर सबदी वीचारि ॥ नानक सदा सुहागणी गुर कै हेति अपारि ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ सावन के महीने में गुरु के उपदेश का चिंतन करने वाली जीव-स्त्री ही प्रसन्न होती है। हे नानक! गुरु के प्रेम से वह सदा सुहागिन रहती है॥ १॥

मः ३ ॥ सावणि दझै गुण बाहरी जिसु दूजै भाइ पिआरु ॥ नानक पिर की सार न जाणई सभु सीगारु खुआरु ॥ २ ॥

महला ३॥ जिसे द्वैतभाव से प्रेम होता है, ऐसी गुणविहीन स्त्री सावन के मौसम में भी दुखों में ही जलती है। हे नानक! वह पति-प्रभु की कद्र नहीं जानती और उसके सब श्रृंगार व्यर्थ ही सिद्ध होते हैं॥ २॥

पउड़ी ॥ सचा अलख अभेउ हठि न पतीजई ॥ इकि गावहि राग परीआ रागि न भीजई ॥ इकि नचि नचि पूरहि ताल भगति न कीजई ॥ इकि अंनु न खाहि मूरख तिना किआ कीजई ॥ त्रिसना होई बहुतु किवै न धीजई ॥ करम वधहि कै लोअ खपि मरीजई ॥ लाहा नामु संसारि अंम्रितु पीजई ॥ हरि भगती असनेहि गुरमुखि घीजई ॥ १७ ॥

पउड़ी॥ वह सच्चा अदृष्ट अभेद परमात्मा हठ कर्म से नहीं रीझता। कोई राग-रागनियां गाता है, इससे भी वह खुश नहीं होता। कुछ अनेक तालों पर नाचते हैं, परन्तु भक्ति नहीं करते। कोई भोजन खाना छोड़ देते हैं, इन मूर्खों का क्या किया जाए। मन में बहुत तृष्णा उत्पन्न होती है और किसी भी प्रकार से धैर्य नहीं होता। अनेक लोग कर्मकाण्ड में फंसकर मर खप जाते हैं। संसार में हरिनाम अमृत का पान ही लाभदायक है। गुरु के द्वारा परमात्मा की भक्ति में स्नेह पैदा होता है॥ १७॥

सलोक मः ३ ॥ गुरमुखि मलार रागु जो करहि तिन मनु तनु सीतलु होइ ॥ गुर सबदी एकु पछाणिआ एको सचा सोइ ॥ मनु तनु सचा सचु मनि सचे सची सोइ ॥ अंदरि सची भगति है सहजे ही पति होइ ॥ कलिजुग महि घोर अंधारु है मनमुख राहु न कोइ ॥ से वडभागी नानका जिन गुरमुखि परगटु होइ ॥ १ ॥

श्लोक महला ३॥ जो गुरु के निर्देशानुसार मलार राग गाता है, उसके मन तन को शान्ति प्राप्त होती है। गुरु की शिक्षा से एक प्रभु की पहचान होती है और एकमात्र वही सच्चा है। जिसके मन में सच्चा प्रभु अवस्थित होता है, उसी का मन सच्चा होता है और वह सच्चे की उपासना में

ही लीन रहता है। जिसके अन्तर्मन में सच्ची भक्ति उत्पन्न होती है, वह स्वाभाविक ही सम्मान प्राप्त करता है। कलियुग में अज्ञान का घोर अंधकार फैला हुआ है, स्वेच्छाचारी को कोई रास्ता नहीं मिलता। हे नानक ! गुरु के द्वारा जिनके अन्तर्मन में प्रभु प्रगट होता है, वही भाग्यशाली हैं॥ १॥

मः ३ ॥ इंदु वरसै करि दइआ लोकां मनि उपजै चाउ ॥ जिस कै हुकमि इंदु वरसदा तिस कै सद बलिहारै जांउ ॥ गुरमुखि सबदु सम्हालीऐ सचे के गुण गाउ ॥ नानक नामि रते जन निरमले सहजे सचि समाउ ॥ २ ॥

महला ३॥ जब दया करके इन्द्र देवता बारिश करता है तो लोगों के मन में चाव उत्पन्न हो जाता है। जिस परमात्मा के हुक्म से इन्द्र देवता वर्षा करता है, मैं उस पर सदैव बलिहारी जाता हूँ। गुरु के द्वारा शब्द की संभाल करते हुए ईश्वर का गुणगान करो। हे नानक ! वही लोग निर्मल हैं, जो प्रभु-नाम में तल्लीन रहते हैं और वे स्वाभाविक ही सत्य में समाहित हो जाते हैं॥ २॥

पउड़ी ॥ पूरा सतिगुरु सेवि पूरा पाइआ ॥ पूरै करमि धिआइ पूरा सबदु मंनि वसाइआ ॥ पूरै गिआनि धिआनि मैलु चुकाइआ ॥ हरि सरि तीरथि जाणि मनूआ नाइआ ॥ सबदि मरै मनु मारि धंनु जणेदी माइआ ॥ दरि सचै सचिआरु सचा आइआ ॥ पुछि न सकै कोइ जां खसमै भाइआ ॥ नानक सचु सलाहि लिखिआ पाइआ ॥ १८ ॥

पउड़ी॥ पूर्ण गुरु की सेवा से ही पूर्ण परमेश्वर प्राप्त किया जाता है। पूर्ण कर्म से उसका ध्यान होता है और पूर्ण शब्द से ही मन में बसाया जाता है। पूर्ण ज्ञान ध्यान से ही मन की मैल दूर होती है। हरिनाम रूपी तीर्थ सरोवर को जानकर मन उसमें स्नान करता है। जो शब्द-गुरु द्वारा मन को मारता है, उसे जन्म देने वाली माता धन्य है। कोई सत्यशील ही सच्चे प्रभु के द्वार पर आकर सच्चा माना जाता है। जो ईश्वर को स्वीकार होता है, उस पर कोई हस्तक्षेप नहीं कर सकता। हे नानक ! सच्चे परमेश्वर का स्तुतिगान करो और फल पा लो॥ १८॥

सलोक मः १ ॥ कुलहां देंदे बावले लैंदे वडे निलज ॥ चूहा खड न मावई तिकलि बंन्है छज ॥ देन्हि दुआई से मरहि जिन कउ देनि सि जाहि ॥ नानक हुकमु न जापई किथै जाइ समाहि ॥ फसलि अहाड़ी एकु नामु सावणी सचु नाउ ॥ मै महदूदु लिखाइआ खसमै कै दरि जाइ ॥ दुनीआ के दर केतड़े केते आवहि जांहि ॥ केते मंगहि मंगते केते मंगि मंगि जाहि ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ ऐसे दंभी गुरु पीर दरअसल बावले ही हैं, जो अपने चेलों को सेली-टोपी देकर अपना उत्तराधिकारी नियुक्त करते हैं और इन्हें लेने वाले मुरशिद के चेले भी बड़े बेशर्म हैं। इनकी दशा तो यूं है जैसे चूहा स्वयं तो बिल में घुस नहीं सकता और कमर से छाज बांध लेता है। लोगों को दुआएँ देने वाले ऐसे ढोंगी आप तो मरते ही हैं और इनसे दुआएँ पाने वाले भी मर जाते हैं। हे नानक ! इनको ईश्वर का हुक्म मालूम नहीं होता, आखिरकार किधर जा समाते हैं। केवल परमात्मा का नाम ही आषाढ़ की फसल है और सच्चा नाम ही सावन की फसल है। नाम ही मेरी जीवन राशि है, यह मैंने एक ऐसा पट्टा लिखवाया है, जो मालिक के द्वार पर जाता है। दुनिया के (पीरों-मुरशिदों के) कितने ही द्वार हैं, कितने ही वहां आते जाते हैं, कितने ही भिखारी इन से मांगते हैं और मांग-मांग कर चले जाते हैं॥ १॥

मः १ ॥ सउ मणु हसती घिउ गुड़ु खावै पंजि सै दाणा खाइ ॥ डकै फूकै खेह उडावै साहि गइऐ पछुताइ ॥ अंधी फूकि मुई देवानी ॥ खसमि मिटी फिरि भानी ॥ अधु गुल्हा चिड़ी का चुगणु गैणि चड़ी बिललाइ ॥ खसमै भावै ओहा चंगी जि करे खुदाइ खुदाइ ॥ सकता सीहु मारे सै मिरिआ सभ पिछै पै खाइ ॥ होइ सताणा घुरै न मावै साहि गइऐ पछुताइ ॥ अंधा किस नो बुकि सुणावै ॥ खसमै मूलि न भावै ॥ अक सिउ प्रीति करे अक तिडा अक डाली बहि खाइ ॥ खसमै भावै ओहो चंगा जि करे खुदाइ खुदाइ ॥ नानक दुनीआ चारि दिहाड़े सुखि कीतै दुखु होई ॥ गला वाले हैनि घणेरे छडि न सकै कोई ॥ मखीं मिठै मरणा ॥ जिन तू रखहि तिन नेड़ि न आवै तिन भउ सागरु तरणा ॥ २॥

महला १॥ हाथी सवा मन घी गुड़ और सवा पाँच मन दाना खाता है। वह खा पीकर डकारता फूँकता और धूल उड़ाता है, जब साँसें निकल जाती हैं तो पछताता है। अहंकार में अंधी एवं बावली हुई दुनिया हाथी की मानिंद फुंकारती है। जब अहंकार को निकाल देती है तो ही प्रभु को अच्छी लगती है। चिड़िया का चोगा आधा दाना है, दाना चुगकर नभ में उड़ती हुई चहकती है। दरअसल वही मालिक को अच्छी लगती है, जो खुदा-खुदा रटती है। ताकतवर शेर सैकड़ों पशुओं को मार देता है और तत्पश्चात् कितने ही जीव खाते हैं। ताकतवर शेर अपनी माँद में नहीं समाता और जब श्वास निकलते हैं तो पछताता है। अंधा किसको चिल्ला-चिल्ला कर सुनाता है, मालिक को ऐसा कदापि अच्छा नहीं लगता। आक का टिड्डा आक से ही प्रीति करता है और आक की डाली पर बैठकर खाता है। मालिक को वही अच्छा लगता है, जो खुदा का नाम जपता है। हे नानक ! यह दुनिया चार दिनों का मेला है, सुख-सुविधाओं के उपरांत दुख ही नसीब होता है। बातें बनाने वाले तो बहुत सारे व्यक्ति हैं, पर कोई भी धन-दौलत एवं सुखों को नहीं छोड़ता। मक्खियां मीठे पर ही मरती हैं। हे परमेश्वर ! जिनकी तू रक्षा करता है, उनके निकट मोह-माया भी नहीं आती और वे संसार-सागर से पार हो जाते हैं॥ २॥

पउड़ी ॥ अगम अगोचरु तू धणी सचा अलख अपारु ॥ तू दाता सभि मंगते इको देवणहारु ॥ जिनी सेविआ तिनी सुखु पाइआ गुरमती वीचारु ॥ इकना नो तुधु एवै भावदा माइआ नालि पिआरु ॥ गुर कै सबदि सलाहीऐ अंतरि प्रेम पिआरु ॥ विणु प्रीती भगति न होवई विणु सतिगुर न लगै पिआरु ॥ तू प्रभु सभि तुधु सेवदे इक ढाढी करे पुकार ॥ देहि दानु संतोखीआ सचा नामु मिलै आधारु ॥ १६ ॥

पउड़ी॥ हे सृष्टिकर्ता ! तू ही मालिक है, अपहुँच, मन-वाणी से परे, शाश्वत-स्वरूप एवं अदृष्ट है। तू ही दाता है, सब लोग मांगने वाले हैं, एकमात्र तू ही दुनिया को देने वाला है। गुरु के मतानुसार चिंतन किया है कि जिसने भी तेरी पूजा-अर्चना की, उसने ही सुख प्राप्त किया है। यह तेरी ही रज़ा है कि कुछ लोगों का धन-दौलत से प्रेम बना रहे। मन में प्रेम बसाकर गुरु के उपदेश से ईश्वर की स्तुति करो। प्रेम के बिना भक्ति नहीं होती और सच्चे गुरु के बिना प्रेम नहीं लगता। एक गवैया यही पुकार कर रहा है कि हे प्रभु ! तू महान् है, सब लोग तेरी ही आराधना करते हैं। हमें तो यही संतोषपूर्वक दान देना कि तेरे सच्चे नाम का आसरा बना रहे॥ १६॥

सलोक मः १ ॥ राती कालु घटै दिनि कालु ॥ छिजै काइआ होइ परालु ॥ वरतणि वरतिआ सरब जंजालु ॥ भुलिआ चुकि गइआ तप तालु ॥ अंधा झखि झखि पइआ झेरि ॥ पिछै रोवहि लिआवहि

फेरि ॥ बिनु बूझे किछु सूझै नाही ॥ मोइआ रोंहि रोंदे मरि जांहीं ॥ नानक खसमै एवै भावै ॥ सेई मुए जिनि चिति न आवै ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ रात और दिन में समय गुजर जाता है और शरीर खत्म हो जाता है। व्यक्ति का जीवन संसार के धंधों में लीन रहता है और वह परमात्मा की भक्ति एवं स्मरण को भुलाकर चूक जाता है। अज्ञानांध व्यक्ति व्यर्थ के कार्यों में धक्के खाता है। मौत के बाद परिजन रोते हैं, उसकी जिंदगी के लिए परमात्मा से अनुरोध करते हैं। परन्तु सत्य को समझे बिना कोई सूझ नहीं होती। मरने वाले पर रोते-रोते वे स्वयं ही मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं। हे नानक! दरअसल मालिक को यही मंजूर है और असल में मरते वे हैं, जिनको परमात्मा याद नहीं आता॥ १॥

म: १ ॥ मुआ पिआरु प्रीति मुई मुआ वैरु वादी ॥ वंनु गइआ रूपु विणसिआ दुखी देह रुली ॥ किथहु आइआ कह गइआ किहु न सीओ किहु सी ॥ मनि मुखि गला गोईआ कीता चाउ रली ॥ नानक सचे नाम बिनु सिर खुर पति पाटी ॥ २ ॥

महला १॥ मृत्यु के साथ ही मनुष्य का प्रेम-प्यार सब खत्म हो जाता है, मौत की आगोश में जाते ही सब वैर एवं झगड़े भी नष्ट हो जाते हैं। सुन्दर रूप-रंग भी नाश हो जाता है और दुखी शरीर मिट्टी में मिल जाता है। मृत्यु के उपरांत लोग बातें करते हैं (जीव) कहाँ से आया था और कहाँ चला गया है, क्या था और क्या हो गया। मन तथा मुँह से बातें चलती हैं और जिंदगी के मौज मेले में मस्त रहता है। हे नानक! सच्चे नाम बिना सिर से पैरों तक सब प्रतिष्ठा खत्म हो जाती है॥ २॥

पउड़ी ॥ अंम्रित नामु सदा सुखदाता अंते होइ सखाई ॥ बाझु गुरू जगतु बउराना नावै सार न पाई ॥ सतिगुरु सेवहि से परवाणु जिन्ह जोती जोति मिलाई ॥ सो साहिबु सो सेवकु तेहा जिसु भाणा मंनि वसाई ॥ आपणै भाणै कहु किनि सुखु पाइआ अंधा अंधु कमाई ॥ बिखिआ कदे ही रजै नाही मूरख भुख न जाई ॥ दूजै सभु को लगि विगुता बिनु सतिगुर बूझ न पाई ॥ सतिगुरु सेवे सो सुखु पाए जिस नो किरपा करे रजाई ॥ २० ॥

पउड़ी॥ परमात्मा का नाम अमृत समान है, सदा सुख देने वाला है और अन्त में यही सहायता करता है। गुरु के बिना जगत बावला बना रहता है और हरिनाम को महत्व नहीं देता। जो अपनी आत्मा को परमेश्वर से मिला देता है, सतगुरु की सेवा में तल्लीन रहने वाला वही भक्त स्वीकार होता है। जो परमात्मा की रज़ा को मन में बसा लेता है, ऐसा सेवक अपने मालिक-प्रभु का रूप हो जाता है। जरा बताओ, अपनी मर्जी करने वाले किस व्यक्ति ने सुख पाया है, अज्ञानांध व्यक्ति कुटिल कर्म ही करता है। भौतिक पदार्थों से कभी तृप्ति नहीं होती और मूर्ख की भूख कदाचित दूर नहीं होती। द्वैतभाव में लीन रहने वाले सब लोग तंग होते हैं और सतगुरु के बिना ज्ञान प्राप्त नहीं होता। लेकिन जिस पर परमात्मा अपनी इच्छा से कृपा करता है, सतगुरु की सेवा करके वही सुख पाता है॥ २०॥

सलोक मः १ ॥ सरमु धरमु दुइ नानका जे धनु पलै पाइ ॥ सो धनु मित्रु न कांढीऐ जितु सिरि चोटां खाइ ॥ जिन कै पलै धनु वसै तिन का नाउ फकीर ॥ जिन्ह कै हिरदै तू वसहि ते नर गुणी गहीर ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ गुरु नानक का कथन है कि जिनके पास हरिनाम रूपी धन होता है, उनके पास शालीनता एवं धर्म दोनों ही होते हैं। उस धन-दौलत को साथी नहीं मानना चाहिए, जिसकी वजह से मुसीबतें एवं दण्ड भोगना पड़े। जिनके पास अत्याधिक धन-दौलत होता है, उनका नाम भिखारी होना चाहिए, क्योंकि धन होने के बावजूद भी वे धन ही मांगते रहते हैं। हे ईश्वर! जिनके हृदय में तू बसता है, ऐसे व्यक्ति ही गुणवान हैं॥ १॥

मः १ ॥ दुखी दुनी सहेड़ीऐ जाइ त लगहि दुख ॥ नानक सचे नाम बिनु किसै न लथी भुख ॥ रूपी भुख न उतरै जां देखां तां भुख ॥ जेते रस सरीर के तेते लगहि दुख ॥ २ ॥

महला १॥ दुनिया दुख-तकलीफें झेल कर दौलत इकट्ठी करती है, जब दौलत चली जाती है तो और भी दुखी होती है। हे नानक! परमात्मा की भक्ति के बिना किसी की भूख दूर नहीं होती। बेशक कितना ही सुन्दर रूप देखा जाए, लालसा दूर नहीं होती, जिधर भी देखा जाए, रूप-सौन्दर्य एवं धन की लालसा लगी हुई है। शरीर के जितने भी रस हैं, उतने ही दुख नसीब होते हैं॥ २॥

मः १ ॥ अंधी कंमी अंधु मनु मनि अंधै तनु अंधु ॥ चिकड़ि लाइऐ किआ थीऐ जां तुटै पथर बंधु ॥ बंधु तुटा बेड़ी नही ना तुलहा ना हाथ ॥ नानक सचे नाम विणु केते डुबे साथ ॥ ३ ॥

महला १॥ बुरे काम करने से मन भी बुरा हो जाता है, जब मन अज्ञानांध बुरा हो जाता है तो शरीर भी बुरा हो जाता है। जहां पत्थर का बांध भी टूट जाता है, वहां पर चूना-गारा लगाने का कोई फायदा नहीं। जब बांध टूट जाता है तो बेड़ी भी नहीं, तुलहा नहीं तो पार होना भी नसीब नहीं होता। हे नानक! परमात्मा के स्मरण से विहीन मनुष्य कितने ही साथियों को साथ लेकर डूब जाता है॥ ३॥

मः १ ॥ लख मण सुइना लख मण रुपा लख साहा सिरि साह ॥ लख लसकर लख वाजे नेजे लखी घोड़ी पातिसाह ॥ जिथै साइरु लंघणा अगनि पाणी असगाह ॥ कंधी दिसि न आवई धाही पवै कहाह ॥ नानक ओथै जाणीअहि साह केई पातिसाह ॥ ४ ॥

महला १॥ यदि लाखों मन सोना एवं लाखों मन चांदी हो, लाखों बादशाहों का भी बड़ा बादशाह हो। लाखों की तादाद में सेना, हथियार, घोड़े इत्यादि का मालिक हो। मगर जहां संसार-समुद्र को पार करना है, वहाँ अथाह अग्नि एवं पानी मौजूद है। किनारा नजर नहीं आता और चीख-चिल्लाहट ही सुनाई देती है। हे नानक! कौन बादशाह है, कौन शाह है, वहाँ पर ही माना जाता है॥ ४॥

पउड़ी ॥ इकन्हा गलीं जंजीर बंदि रबाणीऐ ॥ बधे छुटहि सचि सचु पछाणीऐ ॥ लिखिआ पलै पाइ सो सचु जाणीऐ ॥ हुकमी होइ निबेड़ु गइआ जाणीऐ ॥ भउजल तारणहारु सबदि पछाणीऐ ॥ चोर जार जूआर पीड़े घाणीऐ ॥ निंदक लाइतबार मिले हढ़वाणीऐ ॥ गुरमुखि सचि समाइ सु दरगह जाणीऐ ॥ २१ ॥

पउड़ी॥ किसी के गले में बंदगी की जंजीर पड़ जाती है, वह परम सत्य को मानकर संसार के बन्धनों से मुक्त हो जाता है। दरअसल इस सच्चाई को मानना चाहिए कि पूर्व कर्मानुसार फल भोगना पड़ता है। उसके हुक्म के अन्तर्गत ही किए कर्मों का फैसला होता है। यह भी जान लो कि भयानक संसार-सागर से शब्द-गुरु ही पार करवाने वाला है। चोरों, जुआरियों एवं बुरे लोगों

को कोल्हू में पिराया जाता है। चुगलखोर, निंदक पापियों को कठोर दण्ड प्राप्त होता है। गुरु के द्वारा सत्य में लीन रहने वाले ही प्रभु की अदालत में इज्जत के हकदार बनते हैं॥ २१॥

सलोक मः २ ॥ नाउ फकीरै पातिसाहु मूरख पंडितु नाउ ॥ अंधे का नाउ पारखू एवै करे गुआउ ॥ इलति का नाउ चउधरी कूड़ी पूरे थाउ ॥ नानक गुरमुखि जाणीऐ कलि का एहु निआउ ॥ १ ॥

श्लोक महला २॥ *(कलियुग में सब उलट ही चल रहा है क्योंकि)* दौलत के पुजारी को बादशाह माना जा रहा है, मूर्ख व्यक्ति विद्वान के नाम से मशहूर हो रहा है। अज्ञानांध को पारखी माना जा रहा है, इस तरह की बातें हो रही हैं। बदमाशी करने वाले का नाम चौधरी है और झूठ एवं मक्कारी का हर तरफ बोलबाला है। हे नानक ! गुरु से यही सच्चाई पता चलती है कि कलियुग का यह उलटा ही इंसाफ है॥ १॥

मः १ ॥ हरणां बाजां तै सिकदारां एन्हा पढ़िआ नाउ ॥ फांधी लगी जाति फहाइनि अगै नाही थाउ ॥ सो पड़िआ सो पंडितु बीना जिन्ही कमाणा नाउ ॥ पहिलो दे जड़ अंदरि जंमै ता उपरि होवै छांउ ॥ राजे सीह मुकदम कुते ॥ जाइ जगाइन्हि बैठे सुते ॥ चाकर नहदा पाइन्हि घाउ ॥ रतु पितु कुतिहो चटि जाहु ॥ जिथै जीआं होसी सार ॥ नकीं वढीं लाइतबार ॥ २ ॥

महला १॥ हिरण की तरह *(व्यक्ति जिस कुटिल कार्य में फंस जाता है, वे अपने अन्य संगियों को भी उसी दलदल में फंसा देता है)* बाज सरीखे *(चालबाज अपनों को ही लूटते हैं)* और सरकारी कर्मचारी अपनों के साथ रिश्वत एवं अत्याचार करते हैं। जिस फंदे में फंसे होते हैं, अपने सगे-संबंधियों को भी फंसा देते हैं और आगे ठिकाना नहीं मिलता। दरअसल वही शिक्षित, पण्डित एवं विद्वान माने जाते हैं, जो प्रभु उपासना का कर्म करते हैं। सर्वप्रथम भूमि में पौधे की जड़ लगती है, तदन्तर वृक्ष बना कर छांव देता है। आजकल स्थिति यह है कि राजे शेर की मानिंद अत्याचार करके जनता का लहू बहा रहे हैं और सरकारी कर्मचारी कुत्तों की तरह किसी भी जगह पहुँच कर अच्छे भले लोगों को परेशान कर रहे हैं। नौकर नाखुनों की तरह लोगों को जख्म पहुँचाते हैं और कुत्तों की तरह जनता पर जुल्म करके उनका खून चूस रहे हैं। जहाँ प्रभु की अदालत में किए कर्मों का हिसाब होगा, ऐसे बुरे लोगों की नाक काट दी जाएगी॥ २॥

पउड़ी ॥ आपि उपाए मेदनी आपे करदा सार ॥ भै बिनु भरमु न कटीऐ नामि न लगै पिआरु ॥ सतिगुर ते भउ ऊपजै पाईऐ मोख दुआर ॥ भै ते सहजु पाईऐ मिलि जोती जोति अपार ॥ भै ते भैजलु लंघीऐ गुरमती वीचारु ॥ भै ते निरभउ पाईऐ जिस दा अंतु न पारावारु ॥ मनमुख भै की सार न जाणन्ही त्रिसना जलते करहि पुकार ॥ नानक नावै ही ते सुखु पाइआ गुरमती उरि धार ॥ २२ ॥

पउड़ी॥ निरंकार स्वयं दुनिया को उत्पन्न करता है और स्वयं ही रोजी देकर पोषण करता है। प्रभु भय-भाव बिना भ्रम नहीं कटता और न ही प्रभु नाम से प्रेम उत्पन्न होता है। सतगुरु से ही परमात्मा के प्रति श्रद्धा भाव उत्पन्न होता है और मोक्ष का द्वार प्राप्त हो जाता है। प्रभु-भय से ही सुख शान्ति प्राप्त होती है और आत्म-ज्योति परम-ज्योति में विलीन हो जाती है। गुरु की शिक्षाओं का मनन करके परमात्मा के भय-भाव से ही भयानक संसार समुद्र से पार हुआ जाता है। भय से निर्भय प्रभु प्राप्त होता है, जिसका कोई अन्त एवं आर-पार नहीं। स्वेच्छाचारी प्रभु भय-भाव का महत्व नहीं जानते और तृष्णा में जलते हुए पुकार करते रहते हैं। हे नानक ! गुरु की शिक्षानुसार प्रभु-नाम को हृदय में बसाकर ही परम सुख पाया जाता है॥ २२॥

सलोक मः १ ॥ रूपै कामै दोसती भुखै सादै गंढु ॥ लबै मालै घुलि मिलि मिचलि ऊंघै सउड़ि पलंघु ॥ भंउकै कोपु खुआरु होइ फकड़ु पिटे अंधु ॥ चुपै चंगा नानका विणु नावै मुहि गंधु ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ रूप-जवानी की कामवासना से दोस्ती है और भूख का स्वाद से नाता है। लालची धन दौलत से ही घुलमिल जाता है और नींद से ऊँघे हुए जीव के लिए छोटी-सी जगह भी पलंग बन जाता है। क्रोध कुत्ते की तरह भौंकता है, ख्वार होता है और अन्धा बनकर व्यर्थ चिल्लाता है। हे नानक! चुप रहना ही भला है, अन्यथा हरिनाम के बिना मुँह से गंदगी निकलती है॥ १॥

मः १ ॥ राजु मालु रूपु जाति जोबनु पंजे ठग ॥ एनी ठगीं जगु ठगिआ किनै न रखी लज ॥ एना ठगन्हि ठग से जि गुर की पैरी पाहि ॥ नानक करमा बाहरे होरि केते मुठे जाहि ॥ २ ॥

महला १॥ राज, माल, रूप, जाति एवं यौवन पाँचों ही ठग हैं। इन ठगों ने पूरे जगत को ठग लिया है और कोई शर्म नहीं रखी। जो गुरु के चरणों में लीन हो गए हैं, इन ठगों को उन्होंने ही ठगा है। हे नानक! दुर्भाग्यशाली कितने ही लोग लुटते जा रहे हैं॥ २॥

पउड़ी ॥ पड़िआ लेखेदारु लेखा मंगीऐ ॥ विणु नावै कूड़िआरु अउखा तंगीऐ ॥ अउघट रुधे राह गलीआं रोकीआं ॥ सचा वेपरवाहु सबदि संतोखीआं ॥ गहिर गभीर अथाहु हाथ न लभई ॥ मुहे मुहि चोटा खाहु विणु गुर कोइ न छुटसी ॥ पति सेती घरि जाहु नामु वखाणीऐ ॥ हुकमी साह गिराह देंदा जाणीऐ ॥ २३ ॥

पउड़ी॥ किसी लायक पढ़े-लिखे पुरुष से यदि हिसाब मांगा जाए तो वह जिम्मेदार बनता है। ईश्वर के नाम से विहीन व्यक्ति झूठा ही सिद्ध होता है और मुश्किल एवं तंगी काटता है। उसके लिए सभी राह कठिन एवं गलियों में बाधा उत्पन्न होती है। सच्चा बेपरवाह प्रभु शब्द के चिंतन से संतोष प्रदान करता है। वह गहन गंभीर एवं अथाह है, उस तक पहुँचना संभव नहीं। ईश्वर से विमुख रहने वाला दुख, मुसीबतें एवं परेशानियां झेलता है और गुरु के बिना कोई मुक्त नहीं होता। प्रभु नाम की चर्चा करके सम्मानपूर्वक अपने सच्चे घर जाओ। यह सच्चाई जान लो कि ईश्वर अपने हुक्म से जीवन-सांसें एवं रोजी-रोटी देता है॥ २३॥

सलोक मः १ ॥ पउणै पाणी अगनी जीउ तिन किआ खुसीआ किआ पीड़ ॥ धरती पाताली आकासी इकि दरि रहनि वजीर ॥ इकना वडी आरजा इकि मरि होहि जहीर ॥ इकि दे खाहि निखुटै नाही इकि सदा फिरहि फकीर ॥ हुकमी साजे हुकमी ढाहे एक चसे महि लख ॥ सभु को नथै नथिआ बखसे तोड़े नथ ॥ वरना चिहना बाहरा लेखे बाझु अलखु ॥ किउ कथीऐ किउ आखीऐ जापै सचो सचु ॥ करणा कथना कार सभ नानक आपि अकथु ॥ अकथ की कथा सुणेइ ॥ रिधि बुधि सिधि गिआनु सदा सुखु होइ ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ हवा, पानी, अग्नि इत्यादि पंच तत्वों तथा प्राणों का संचार करके प्राणी को बना दिया। उसे अनेक खुशियाँ एवं दुख-दर्द भी मिलते हैं। कोई धरती, आकाश, पाताल पर रहता है तो कोई किसी द्वार पर वजीर में खुश रहता है। किसी को लम्बी उम्र हासिल होती है तो कोई मरकर दुख भोगता है। कोई इतना धनवान होता है, जितना भी उपयोग करता है, कभी कमी नहीं आती तो कोई फकीर बनकर घर-घर मांगता फिरता है। ईश्वर अपने हुक्मानुसार एक

पल में लाखों बनाकर नष्ट भी कर देता है। समूची दुनिया को मालिक ने अपने नियंत्रण में किया हुआ है, अपनी रज़ा से वह हुक्म करके नुकेल तोड़ देता है। वह रूप-रंग, वर्ण जाति से रहित है, वह कर्म दोषों से भी रहित है। उसकी क्या महिमा कथन की जाए, उसके उपकारों का वर्णन भी नहीं किया जा सकता, एकमात्र वह सत्यस्वरूप ही सबकुछ है। करना एवं कथन सब उसी का कर्म है। हे नानक ! वह स्वयं अकथनीय है। जो अकथ की कथा सुनता है, उसे ऋद्धियाँ, सिद्धियाँ, बुद्धि एवं सुखों का घर सब प्राप्त हो जाता है॥ १॥

मः १ ॥ अजरु जरै त नउ कुल बंधु ॥ पूजै प्राण होवै थिरु कंधु ॥ कहां ते आइआ कहां एहु जाणु ॥ जीवत मरत रहै परवाणु ॥ हुकमै बूझै ततु पछाणै ॥ इहु परसादु गुरू ते जाणै ॥ होंदा फड़ीअगु नानक जाणु ॥ ना हउ ना मै जूनी पाणु ॥ २ ॥

महला १॥ जो असह्य को सहन कर लेता है, उसके नौ द्वार वशीभूत हो जाते हैं। यदि प्राण रहने तक परमात्मा की पूजा-अर्चना की जाए तो शरीर स्थिर हो जाता है। कहाँ से आया है, कहाँ जाना है, जन्म-मरण से मुक्त होकर वही स्वीकार होता है। जो उसके हुक्म को मानता है, वह सार तत्व को पहचान लेता है। यह प्रसाद गुरु से ही मिलता है। हे नानक ! अभिमानी अक्सर पकड़ा जाता है, यदि अहम्-भाव न हो तो योनियों में नहीं पड़ता॥ २॥

पउड़ी ॥ पढ़ीऐ नामु सालाह होरि बुधी मिथिआ ॥ बिनु सचे वापार जनमु बिरथिआ ॥ अंतु न पारावारु न किन ही पाइआ ॥ सभु जगु गरबि गुबारु तिन सचु न भाइआ ॥ चले नामु विसारि तावणि ततिआ ॥ बलदी अंदरि तेलु दुबिधा घतिआ ॥ आइआ उठी खेलु फिरै उवतिआ ॥ नानक सचै मेलु सचै रतिआ ॥ २४ ॥

पउड़ी॥ हरिनाम का पाठ करो, उसी का स्तुतिगान करो, अन्य कार्यों में बुद्धि झूठी सिद्ध होती है। हरिनाम सरीखे सच्चे व्यापार बिना जीवन व्यर्थ है। ईश्वर का रहस्य एवं आर-पार कोई नहीं पा सका। समूचा जगत अहंकार में लीन है और उसे सत्य अच्छा नहीं लगता। परमात्मा के नाम को भुलाकर जाने वाले गर्म तवे में ही तपते हैं। ऐसे लोग जलती कड़ाही में दुविधा का तेल डालते हैं। व्यक्ति जिंदगी का खेल खेलकर संसार से चला जाता है। गुरु नानक फुरमाते हैं कि जो लोग परम सत्य प्रभु में मिल जाते हैं, वे उसी में रत रहते हैं॥ २४॥

सलोक मः १ ॥ पहिलां मासहु निंमिआ मासै अंदरि वासु ॥ जीउ पाइ मासु मुहि मिलिआ हडु चंमु तनु मासु ॥ मासहु बाहरि कढिआ मंमा मासु गिरासु ॥ मुहु मासै का जीभ मासै की मासै अंदरि सासु ॥ वडा होआ वीआहिआ घरि लै आइआ मासु ॥ मासहु ही मासु ऊपजै मासहु सभो साकु ॥ सतिगुरि मिलिऐ हुकमु बुझीऐ तां को आवै रासि ॥ आपि छुटे नह छूटीऐ नानक बचनि बिणासु ॥ १ ॥

{एक बार गुरु नानक देव जी सूर्य ग्रहण के समय जब कुरुक्षेत्र पहुँचे तो पण्डितों ने चर्चा करते हुए कहा कि मांस खाना पाप है। गुरु जी ने समझाते हुए मांस खाने या न खाने के वहमों को दूर किया।}

श्लोक महला १॥ सबसे पहले मांस पिता के वीर्य से गर्भ धारण होता है और नौ महीने तक पेट रूपी मांस में रहता है। प्राणों का संचार हुआ तो समयानुसार मुँह, हड्डी, त्वचा, शरीर सब मांस ही मिलता है। गर्भाशय मांस से बाहर निकल कर बच्चे का जन्म होता है तो स्तनपान मांस रूप में खुराक मिलती है। इसका मुँह एवं जीभ भी मांस की होती है और मांस में ही सांस लेता है। जब बड़ा होता है तो विवाह रचा कर स्त्री के रूप में मांस ही घर ले आता है। मांस से मांस संभोग कर बच्चों के रूप में मांस पैदा करता है और मांस से ही सब रिश्ते, भाई, बहन, माता-पिता

इत्यादि होते हैं। यदि सतिगुरु मिल जाए, ईश्वर की रज़ा को समझा जाए तो ही जीवन सफल होता है। हे नानक! अपने आप मुक्त नहीं हुआ जाता और व्यर्थ बातों से नुक्सान ही होता है॥१॥

मः १ ॥ मासु मासु करि मूरखु झगड़े गिआनु धिआनु नही जाणै ॥ कउणु मासु कउणु सागु कहावै किसु महि पाप समाणे ॥ गैंडा मारि होम जग कीए देवतिआ की बाणे ॥ मासु छोडि बैसि नकु पकड़हि राती माणस खाणे ॥ फड़ु करि लोकां नो दिखलावहि गिआनु धिआनु नही सूझै ॥ नानक अंधे सिउ किआ कहीऐ कहै न कहिआ बूझै ॥ अंधा सोइ जि अंधु कमावै तिसु रिदै सि लोचन नाही ॥ मात पिता की रकतु निपंने मछी मासु न खांही ॥ इसत्री पुरखै जां निसि मेला ओथै मंधु कमाही ॥ मासहु निंमे मासहु जंमे हम मासै के भांडे ॥ गिआनु धिआनु कछु सूझै नाही चतुरु कहावै पांडे ॥ बाहर का मासु मंदा सुआमी घर का मासु चंगेरा ॥ जीअ जंत सभि मासहु होए जीइ लइआ वासेरा ॥ अभखु भखहि भखु तजि छोडहि अंधु गुरू जिन केरा ॥

महला १॥ कुछ मूर्ख लोग (स्वयं मांस खाना त्यागकर) मांस खाने पर झगड़ा करते हैं परन्तु उनको ज्ञान-ध्यान की जानकारी नहीं होती। क्या मांस है, क्या शाक-सब्जी है, किस में पाप है, यह नहीं जानते। (माना जाता है कि) देवता मांस पर स्वाभाविक ही प्रसन्न होते हैं, इसलिए देवताओं को खुश करने के लिए होम-यज्ञ करके गैंडे की बलि दी जाती थी। कुछ मांस खाना छोड़कर मांस की दुर्गन्ध आने पर भी नाक पकड़ लेते हैं परन्तु रात को वासना का शिकार बनाकर मांस ही तो खा जाते हैं। वे नाक पकड़ कर लोगों को दिखाते हैं परन्तु ज्ञान-ध्यान की कोई सूझ नहीं होती। हे नानक! अन्धे को क्या बताया जाए, सच्चाई बताने पर भी नहीं समझता। अन्धा वही है जो कुटिल कर्म करता है, उसका हृदय तो है, मगर ज्ञान की आँखें नहीं। हम लोग माता-पिता के रक्त-वीर्य से उत्पन्न हुए हैं, परन्तु मांस मछली को नहीं खाते। जब रात को स्त्री पुरुष का संयोग होता है तो मैथुन क्रिया मांस से ही करते हैं। हम मांस से बनते हैं, मांस से जन्म लेते हैं और मांस के ही हम शरीर हैं। पण्डित जी! आप स्वयं को चतुर कहला रहे हो, लेकिन ज्ञान-ध्यान की आपको कोई सूझ-बूझ नहीं। बाहर के मांस (जीव) को बुरा मानता है और घर का मांस (पत्नी-बच्चे) अच्छा लगता है। जीव-जन्तु सब मांस से उत्पन्न होते हैं और प्राण भी शरीर रूपी मांस में स्थित हैं। जिनका गुरु अन्धा होता है, वे मेहनत का खाना छोड़कर हराम का खाते हैं।

मासहु निंमे मासहु जंमे हम मासै के भांडे ॥ गिआनु धिआनु कछु सूझै नाही चतुरु कहावै पांडे ॥ मासु पुराणी मासु कतेबीं चहु जुगि मासु कमाणा ॥ जजि काजि वीआहि सुहावै ओथै मासु समाणा ॥ इसत्री पुरख निपजहि मासहु पातिसाह सुलतानां ॥ जे ओइ दिसहि नरकि जांदे तां उन्ह का दानु न लैणा ॥ देंदा नरकि सुरगि लैदे देखहु एहु धिङाणा ॥ आपि न बूझै लोक बुझाए पांडे खरा सिआणा ॥ पांडे तू जाणै ही नाही किथहु मासु उपंना ॥ तोइअहु अंनु कमादु कपाहां तोइअहु त्रिभवणु गंना ॥ तोआ आखै हउ बहु बिधि हछा तोऐ बहुतु बिकारा ॥ एते रस छोडि होवै संनिआसी नानकु कहै विचारा ॥ २ ॥

हम मांस के शरीर रूपी बर्तन हैं, मांस (पिता के वीर्य) से बनते हैं और मांस (माँ के पेट से) से ही हमारा जन्म होता है। पण्डित जी! आप स्वयं को चतुर कहला रहे हो, पर ज्ञान-ध्यान की कोई सूझ नहीं। पुराणों एवं कुरान में भी मांस का ही जिक्र है और चारों युग मांस का ही आचरण है। यज्ञ कार्य एवं विवाह-शादी पर भी मांस है, क्योंकि यज्ञ में आहूति बलि और विवाह में कन्या को लाया जाता है। कितने ही स्त्री-पुरुष, बादशाह एवं सुलतान इत्यादि मांस से ही

पैदा होते हैं। यदि ऐसे लोग नरक में जाते दिखाई देते हैं तो आपको उनका दान नहीं लेना चाहिए। यह तो सरासर नाइंसाफी है कि दान देने वाला नरक में जाता है और लेने वाला (पण्डित ब्राह्मण) स्वर्ग का हकदार बनता है। वाह, पण्डित जी! वाह!! कितने बुद्धिमान एवं भले बन रहे हो, स्वयं तो समझते नहीं, परन्तु लोगों को उपदेश दे रहे हो। अरे पण्डित! तू जानता ही नहीं कि मांस कहाँ से उत्पन्न होता है। पानी से अन्न, गन्ना कपास होता है और तीनों लोकों की रचना भी पानी से ही हुई है। यदि यह कहा जाए कि पानी अनेक प्रकार से अच्छा है तो पानी में भी बहुत विकार हैं और अपना रूप बदल कर अनेक प्रकार के रस बन जाता है। अतः सब पदार्थ छोड़कर ही पण्डित वैष्णव अथवा सन्यासी कहलाने का हकदार हो सकता है। नानक सब पाखण्ड एवं आडम्बरों को छोड़कर यही बात बताता है॥ २॥

पउड़ी ॥ हउ किआ आखा इक जीभ तेरा अंतु न किन ही पाइआ ॥ सचा सबदु वीचारि से तुझ ही माहि समाइआ ॥ इकि भगवा वेसु करि भरमदे विणु सतिगुर किनै न पाइआ ॥ देस दिसंतर भवि थके तुधु अंदरि आपु लुकाइआ ॥ गुर का सबदु रतंनु है करि चानणु आपि दिखाइआ ॥ आपणा आपु पछाणिआ गुरमती सचि समाइआ ॥ आवा गउणु बजारीआ बाजारु जिनी रचाइआ ॥ इकु थिरु सचा सालाहणा जिन मनि सचा भाइआ ॥ २५ ॥

पउड़ी॥ हे सृष्टिकर्ता! मैं किस प्रकार तेरी महिमा वर्णन करूँ, दरअसल मेरी एक ही जीभ है, तेरा रहस्य कोई नहीं पा सका। जिसने सच्चे शब्द का मनन किया है, वह तुझ में ही समाहित हो गया है। कई लोग भगवा वेष धारण करके भ्रमण करते हैं परन्तु सच्चे गुरु के बिना किसी ने भी ईश्वर को नहीं पाया। वे देश-देशांतर भ्रमण करके थक गए हैं लेकिन ये नहीं जानते तू अन्तर्मन में गुप्त रूप से व्याप्त है। गुरु का शब्द अमूल्य रत्न है, इसका आलोक करके स्वयं ही दिखाया है। कोई गुरु की शिक्षानुसार आत्म-ज्ञान को पहचान कर सत्य में ही विलीन हो गया है। कई वेषाडम्बरी आडम्बर एवं ढोंग करते हैं, परिणामस्वरूप जन्म-मरण के चक्र में पड़े रहते हैं। जिनके मन को परमात्मा अच्छा लगता है, वे एकाग्रचित होकर उस सच्चे प्रभु की प्रशंसा करते हैं॥ २५॥

सलोक मः १ ॥ नानक माइआ करम बिरखु फल अंम्रित फल विसु ॥ सभ कारण करता करे जिसु खवाले तिसु ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ गुरु नानक कथन करते हैं कि माया कर्मों का एकमात्र वह वृक्ष है, जिसे सुख रूपी अमृत एवं दुख रूपी जहर का फल लगा हुआ है। परमात्मा सर्वकर्ता है, जैसा फल खिलाता है, वैसा ही खाना पड़ता है॥ १॥

मः २ ॥ नानक दुनीआ कीआं वडिआईआं अगी सेती जालि ॥ एनी जलीईं नामु विसारिआ इक न चलीआ नालि ॥ २ ॥

महला २॥ हे नानक! लोगों की प्रशंसा को आग में जला देना चाहिए। इस कमबख्त ने परमात्मा का नाम भुला दिया है और इन में से एक भी साथ नहीं निभाती॥ २॥

पउड़ी ॥ सिरि सिरि होइ निबेड़ु हुकमि चलाइआ ॥ तेरै हथि निबेड़ु तूहै मनि भाइआ ॥ कालु चलाए बंनि कोइ न रखसी ॥ जरु जरवाणा कंन्हि चड़िआ नचसी ॥ सतिगुरु बोहिथु बेड़ु सचा रखसी ॥ अगनि भखै भड़हाड़ु अनदिनु भखसी ॥ फाथा चुगै चोग हुकमी छुटसी ॥ करता करे सु होगु कूड़ु निखुटसी ॥ २६ ॥

पउड़ी॥ ईश्वर के हुक्म में ही दुनिया चलती है, हर व्यक्ति का कर्मानुसार फैसला होता है। हे मालिक! हमारे कर्मों का फैसला तेरे हाथ है, तू ही मन को प्यारा लगता है। मौत हर किसी को साथ ले जाती है, कोई भी जिंदा नहीं बचने वाला। सितमगर बुढ़ापा कंधे पर चढ़कर नाचता है। सच्चा गुरु ही पार करवाने वाला जहाज है और सत्य के रास्ते पर चलने वालों की ईश्वर रक्षा करता है। विकारों की आग की ज्वाला जल रही है, जो प्रतिदिन मनुष्य को जलाने में लगी हुई है। कर्म-बन्धन में फंसा मनुष्य फल भोग रहा है, और ईश्वर ही मुक्त करता है। जो ईश्वर करेगा, वह निश्चय होगा, झूठ का अन्त ही होता है॥ २६॥

सलोक मः १ ॥ घर महि घरु देखाइ देइ सो सतिगुरु पुरखु सुजाणु ॥ पंच सबद धुनिकार धुनि तह बाजै सबदु नीसाणु ॥ दीप लोअ पाताल तह खंड मंडल हैरानु ॥ तार घोर बाजिंत्र तह साचि तखति सुलतानु ॥ सुखमन कै घरि रागु सुनि सुंनि मंडलि लिव लाइ ॥ अकथ कथा बीचारीऐ मनसा मनहि समाइ ॥ उलटि कमलु अंम्रिति भरिआ इहु मनु कतहु न जाइ ॥ अजपा जापु न वीसरै आदि जुगादि समाइ ॥ सभि सखीआ पंचे मिले गुरमुखि निज घरि वासु ॥ सबदु खोजि इहु घरु लहै नानकु ता का दासु ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ वह मेधावी सतिगुरु ही है, जो हृदय-घर में परमात्मा का घर दिखा देता है। पाँच शब्दों की मधुर ध्वनि और शब्द ही वहाँ गूंजता है। द्वीप, लोक, पाताल एवं खण्ड-मण्डल भी चकित कर देते हैं। वहाँ सृष्टि का बादशाह परमेश्वर ही सच्चे सिंहासन पर आसीन है, वहां अनाहत धुन ही बजती है। सुषुम्ना के घर में आत्मा राग में लीन होती है और शून्य मण्डल में ध्यान लगाती है। अकथनीय कथा का तभी चिंतन होता है, जब मन की कामनाएँ दूर हो जाती हैं। हृदय कमल माया से उलट कर अमृत से भर जाता है और यह मन चलायमान नहीं होता। अन्तर्मन को अजपा जाप नहीं भूलता और युग-युगांतर ईश्वर ही स्थित है। सब सखियों (ज्ञानेन्द्रियों) को पाँच शुभ गुण (दया, धर्म, संतोष इत्यादि) मिल जाते हैं और गुरु के द्वारा मन सच्चे घर में निवास पा लेता है। जो शब्द को खोज कर यह घर पा लेते हैं, नानक उनका दास है॥ १॥

मः १ ॥ चिलिमिलि बिसीआर दुनीआ फानी ॥ कालूबि अकल मन गोर न मानी ॥ मन कमीन कमतरीन तू दरीआउ खुदाइआ ॥ एकु चीजु मुझै देहि अवर जहर चीज न भाइआ ॥ पुराब खाम कूजै हिकमति खुदाइआ ॥ मन तुआना तू कुदरती आइआ ॥ सग नानक दीबान मसताना नित चड़ै सवाइआ ॥ आतस दुनीआ खुनक नामु खुदाइआ ॥ २ ॥

महला १॥ दुनिया की रंगीली जगमगाहट फना होने वाली है। इसके बावजूद खोटा मन मृत्यु को स्वीकार नहीं करता। यह मन नीच एवं कमीना है, हे खुदा! तू दरियादिल है, मुझे केवल एक ही चीज अपनी बंदगी देना, अन्य चीजें तो जहर की तरह हैं, जो मुझे अच्छी नहीं लगतीं। यह शरीर पानी से भरा हुआ कच्चा प्याला है, हे खुदा! यह भी तेरी विचित्र कला है। तू ताकतवर हैं और तेरी शक्ति से ही संसार में आया हूँ। नानक तेरे दरबार का कुत्ता है और तेरी वफादारी में मस्त बना हुआ है, (तेरी मेहर की) मस्ती नित्य बढ़ती रहे। हे खुदा! यह दुनिया आग है और तेरा नाम शान्ति प्रदान करने वाला है॥ २॥

पउड़ी नवी मः ५ ॥ सभो वरतै चलतु चलतु वखाणिआ ॥ पारब्रहमु परमेसरु गुरमुखि जाणिआ ॥ लथे सभि विकार सबदि नीसाणिआ ॥ साधू संगि उधारु भए निकाणिआ ॥ सिमरि सिमरि दातारु सभि रंग माणिआ ॥ परगटु भइआ संसारि मिहर छावाणिआ ॥ आपे बखसि मिलाए सद कुरबाणिआ ॥ नानक लए मिलाइ खसमै भाणिआ ॥ २७ ॥

{यह पउड़ी श्री गुरु अर्जुन देव जी की है। इस वार में बाकी पउड़ियाँ श्री गुरु नानक देव जी की संकलित हैं।}

पउड़ी नवी महला ५॥ सब ईश्वर की लीला हो रही है और उसकी लीला का ही वर्णन हो रहा है। गुरु के द्वारा परब्रह्म परमेश्वर को जाना है। शब्द की ध्वनि से सब विकार निवृत्त हो गए हैं। साधु पुरुषों की संगत करने से मासूमों का उद्धार हो जाता है। उस देने वाले ईश्वर का भजन करने से खुशियाँ ही खुशियाँ प्राप्त होती हैं। पूरे संसार में उसकी कृपा-दृष्टि फैल गई है। वह स्वयं ही कृपा करके मिला लेता है, मैं उस पर सदैव कुर्बान हूँ। हे नानक ! जब मालिक को ठीक लगता है तो वह जीव को साथ मिला लेता है॥ २७॥

सलोक मः १ ॥ धंनु सु कागदु कलम धंनु धनु भांडा धनु मसु ॥ धनु लेखारी नानका जिनि नामु लिखाइआ सचु ॥ १ ॥

श्लोक महला १॥ वह कागज एवं कलम धन्य है, वह स्याही तथा दवात भी धन्य है। गुरु नानक का कथन है कि वह लिखने वाला भी धन्य एवं भाग्यवान् है, जिसने सच्चे प्रभु का यश लिखा है॥ १॥

मः १ ॥ आपे पटी कलम आपि उपरि लेखु भि तूं ॥ एको कहीऐ नानका दूजा काहे कू ॥ २ ॥

महला १॥ वह पट्टी एवं कलम स्वयं प्रभु ही है। हे प्रभु ! पट्टी के ऊपर लिखा लेख भी तू ही है। गुरु नानक फुरमान करते हैं कि एक परमपिता प्रभु का ही यशोगान करना है, किसी दूसरे को कैसे बड़ा कहा जाए ?॥ २॥

पउड़ी ॥ तूं आपे आपि वरतदा आपि बणत बणाई ॥ तुधु बिनु दूजा को नही तू रहिआ समाई ॥ तेरी गति मिति तूहै जाणदा तुधु कीमति पाई ॥ तू अलख अगोचरु अगमु है गुरमति दिखाई ॥ अंतरि अगिआनु दुखु भरमु है गुर गिआनि गवाई ॥ जिसु क्रिपा करहि तिसु मेलि लैहि सो नामु धिआई ॥ तू करता पुरखु अगंमु है रविआ सभ ठाई ॥ जितु तू लाइहि सचिआ तितु को लगै नानक गुण गाई ॥ २८ ॥ १ ॥ सुधु

पउड़ी॥ हे परमपिता ! तू विश्व-व्यापक है, तूने स्वयं ही सम्पूर्ण विश्व बनाया है। तेरे सिवा दूसरा कोई कर्ता नहीं, तू सृष्टि के कण-कण में विद्यमान है। अपनी विशाल महानता को तू स्वयं ही जानता है, तू ही सही महत्व कर सकता है। तू अदृश्य है, ज्ञानेन्द्रियों से परे है, असीम है और गुरु की शिक्षा से दृष्टिगत होता है। मन में अज्ञान, दुख एवं भ्रम ने घर किया हुआ है, जिसे गुरु का ज्ञान ही समाप्त करता है। जिस पर परमात्मा कृपा करता है, उसे मिला लेता है और वही परमात्मा का भजन करता है। हे परमपिता ! तू संसार बनाने वाला है, सर्वशक्तिमान है, अपहुँच है और हर जगह पर तू ही विद्यमान है। जिधर तू लगाता है, मनुष्य उधर ही लगता है, हे सत्यस्वरूप ! नानक सदैव तेरे ही गुण गाता है॥ २८॥ १॥ शुद्ध

रागु मलार बाणीं भगत नामदेव जीउ की ॥ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

सेवीले गोपाल राइ अकुल निरंजन ॥ भगति दानु दीजै जाचहि संत जन ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जां चै घरि दिग दिसै सराइचा बैकुंठ भवन चित्रसाला सपत लोक सामानि पूरीअले ॥ जां चै घरि लछिमी कुआरी चंदु सूरजु दीवड़े कउतकु कालु बपुड़ा कोटवालु सु करा सिरी ॥ सु ऐसा राजा स्री नरहरी ॥ १ ॥ जां चै घरि कुलालु ब्रहमा चतुर मुखु डांवड़ा जिनि बिस्व संसारु राचीले ॥ जां कै घरि ईसरु बावला जगत गुरू तत सारखा गिआनु भाखीले ॥ पापु पुंनु जां चै डांगीआ दुआरै चित्र गुपतु लेखीआ ॥ धरम राइ परुली प्रतिहारु ॥ सो ऐसा राजा स्री गोपालु ॥ २ ॥ जां चै घरि गण गंधरब रिखी बपुड़े ढाढीआ गावंत आछै ॥ सरब सासत्र बहु रूपीआ अनगरूआ आखाड़ा मंडलीक बोल बोलहि काछे ॥ चउर ढूल जां चै है पवणु ॥ चेरी सकति जीति ले भवणु ॥ अंड टूक जा चै भसमती ॥ सो ऐसा राजा त्रिभवण पती ॥ ३ ॥ जां चै घरि कूरमा पालु सहस्र फनी बासकु सेज वालूआ ॥ अठारह भार बनासपती मालणी छिनवै करोड़ी मेघ माला पाणीहारीआ ॥ नख प्रसेव जा चै सुरसरी ॥ सपत समुंद जां चै घड़थली ॥ एते जीअ जां चै वरतणी ॥ सो ऐसा राजा त्रिभवण धणी ॥ ४ ॥ जां चै घरि निकट वरती अरजनु ध्रू प्रहलादु अंबरीकु नारदु नेजै सिध बुध गण गंधरब बानवै हेला ॥ एते जीअ जां चै हहि घरी ॥ सरब बिआपिक अंतर हरी ॥ प्रणवै नामदेउ तां ची आणि ॥ सगल भगत जा चै नीसाणि ॥ ५ ॥ १ ॥

सृष्टि पालक, कुलातीत, माया की कालिमा से रहित प्रभु की उपासना करो। भक्तजन भक्ति का दान चाहते हैं, हे भक्तवत्सल! अपनी भक्ति दीजिए॥ १॥ उसके घर में दस दिशाओं का शामियाना फैला हुआ है, समूचा वैकुण्ठ उसकी चित्रशाला है और वह समूचे विश्व में समान रूप से व्याप्त है। उसके घर में नवयुवती लक्ष्मी रह रही है, चाँद और सूर्य संसार को रोशनी देने वाले दीपक हैं। काल रूपी कोतवाल जिससे सब लोग डरते हैं, वह बेचारा उसके सामने कुछ भी नहीं। सो समूचे विश्व का राजा श्रीहरि पूज्य एवं वंदनीय है॥ १॥ उसके घर में चार मुखों वाला ब्रह्मा रूपी सर्जक है, जो पूरे विश्व एवं लोगों को बनाने वाला है। उसके घर में जगदगुरु शिवशंकर है, जो मौत का ज्ञान देता है। उसके द्वार में पाप-पुण्य कर्मों का हिसाब करने वाला छोटा-सा मुनीम चित्रगुप्त भी बैठा हुआ है और मौत लाने वाला यमराज रूपी दरबान भी है। संसार का पालनहार ऐसा राजा ही बड़ा है, पूजनीय है॥ २॥ उस घर पर गण-गंधर्व, ऋषि एवं वादक ईश्वर का यश गा रहे हैं। सब शास्त्र स्वांग भर रहे हैं अर्थात् शास्त्रानुसार लोग कर्मकाण्ड कर रहे हैं, दुनिया छोटा-सा अखाड़ा है, दुनिया के लोग उसी के गुण गा रहे हैं। उसके घर में चंवर रूप में वायु बह रही है, उसकी दासी माया ने समूचे संसार को जीत लिया है, पृथ्वी-नभ उसका चूल्हा है। सो तीनों लोकों का स्वामी प्रभु महान् है॥ ३॥ उसके घर में विष्णुावतार कूर्म पलंग समान है, हजार फनों वाला शेषनाग सेज की रस्सियां हैं। अठारह भार वाली वनस्पति मालिन है, छियान्वे करोड़ मेघमाला उसका पानी भरने वाले हैं। गंगा उसके नाखुनों का रक्त मात्र है, सात समुद्र घड़थली है। दुनिया के सब जीव उसके बर्तन हैं। सो तीनों लोकों का मालिक वह राजा प्रभु महान् है॥ ४॥ अर्जुन, भक्त ध्रुव, प्रहलाद, अंबरीक, नारद, सिद्ध, बुद्ध, गण-गंधर्व उसके सेवक हैं। उसके घर में अनगिनत जीव हैं। वह हरि सर्वव्यापक है। नामदेव विनती करते हैं कि हम उस परमेश्वर की शरण में हैं और सब भक्तजन उसकी कीर्ति बताने वाले चिन्ह हैं॥ ५॥ १॥

मलार ॥ मोकउ तूं न बिसारि तू न बिसारि ॥ तू न बिसारे रामईआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आलावंती इहु भ्रमु जो है मुझ ऊपरि सभ कोपिला ॥ सूदु सूदु करि मारि उठाइओ कहा करउ बाप बीठुला ॥ १ ॥ मूए हूए जउ मुकति देहुगे मुकति न जानै कोइला ॥ ए पंडीआ मोकउ ढेढ कहत तेरी पैज पिछंउडी होइला ॥ २ ॥ तू जु दइआलु क्रिपालु कहीअतु हैं अतिभुज भइओ अपारला ॥ फेरि दीआ देहुरा नामे कउ पंडीअन कउ पिछवारला ॥ ३ ॥ २ ॥

{एक बार भक्त नामदेव जी को ब्राह्मण पण्डितों ने निम्न जाति का मानकर मन्दिर से बाहर निकाल दिया तो उनका मन बड़ा दुखी हुआ और उन्होंने प्रार्थना की।}

हे ईश्वर ! तुम मुझे मत भुलाओ, मुझे न भूलना, मुझे हरगिज न भुलाना॥१॥ रहाउ॥ इन पण्डितों को अपनी ऊँची जाति का भ्रम है, जिसकी वजह से मुझ पर सभी गुस्सा हो गए हैं। शूद्र-शूद्र कह कर उन्होंने मारपीट कर मुझे मन्दिर से बाहर निकाल फैंका है। हे मेरे पिता प्रभु ! इनके आगे मैं अकेला क्या कर सकता हूँ॥१॥ यदि तूने मुझे मरने के बाद मुक्ति दे दी तो तेरी दी हुई मुक्ति का किसी को पता नहीं लगना। ये पण्डित मुझे नीच कह रहे हैं, इस से तेरी अपनी प्रतिष्ठा कम हो रही है (क्या तेरी भक्ति करने वाला कोई नीच रह सकता है?)॥ २॥ तू सब पर दयालु है, कृपा का घर कहलाता है, तू ही बाहुबली एवं सर्वशक्तिमान है। भक्त नामदेव की प्रार्थना सुनकर ईश्वर ने मन्दिर का मुँह उसकी तरफ कर दिया और पण्डितों की तरफ पीठ कर दी॥३॥२॥

मलार बाणी भगत रविदास जी की १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

नागर जनां मेरी जाति बिखिआत चंमारं ॥ रिदै राम गोबिंद गुन सारं ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुरसरी सलल क्रित बारुनी रे संत जन करत नही पानं ॥ सुरा अपवित्र नत अवर जल रे सुरसरी मिलत नहि होइ आनं ॥ १ ॥ तर तारि अपवित्र करि मानीऐ रे जैसे कागरा करत बीचारं ॥ भगति भागउतु लिखीऐ तिह ऊपरे पूजीऐ करि नमसकारं ॥ २ ॥ मेरी जाति कुट बांढला ढोर ढोवंता नितहि बानारसी आस पासा ॥ अब बिप्र परधान तिहि करहि डंडउति तेरे नाम सरणाइ रविदासु दासा ॥ ३ ॥ १ ॥

हे नगर के लोगो ! यह बात विख्यात है कि मेरी जाति चमार है (जिसको आप छोटा मानते हो, परन्तु) मेरे हृदय में परमात्मा ही बसा हुआ है, उसी के गुण गाता हूँ॥१॥ रहाउ॥ गंगाजल से तैयार की हुई शराब भक्तजन पान नहीं करते। मगर अपवित्र शराब एवं चाहे दूषित पानी भी हो, वे गंगा में मिलकर उससे अलग नहीं होते बल्कि गंगा ही हो जाते हैं॥१॥ ताड़ के पेड़ को अपवित्र माना जाता है, उसी पेड़ से कागज बनकर आता है। तदन्तर जब भगवान की भक्ति-स्तुति उस पर लिख दी जाती है तो वह पूजनीय बन जाता है और लोग उस पर शीश निवाते हैं॥२॥ मेरी जाति के लोग अभी भी बनारस के आस-पास नित्य मृत पशु ढोते हैं। रविदास कहते हैं कि हे परमात्मा ! तेरे नाम एवं शरण के कारण अब बड़े-बड़े ब्राह्मण हमें दण्डवत प्रणाम कर रहे हैं॥३॥१॥

मलार ॥ हरि जपत तेऊ जना पदम कवलास पति तास सम तुलि नही आन कोऊ ॥ एक ही एक अनेक होइ बिसथरिओ आन रे आन भरपूरि सोऊ ॥ रहाउ ॥ जा कै भागवतु लेखीऐ अवरु नही पेखीऐ तास की जाति आछोप छीपा ॥ बिआस महि लेखीऐ सनक महि पेखीऐ नाम की नामना सपत दीपा ॥ १ ॥ जा कै ईदि बकरीदि कुल गऊ रे बधु करहि मानीअहि सेख सहीद पीरा ॥ जा कै बाप वैसी करी पूत ऐसी सरी तिहू रे लोक परसिध कबीरा ॥ २ ॥ जा के कुटंब के ढेढ सभ ढोर ढोवंत फिरहि अजहु बंनारसी आस पासा ॥ आचार सहित बिप्र करहि डंडउति तिन तनै रविदास दासान दासा ॥ ३ ॥ २ ॥

जो श्रीहरि का जाप करते हैं, उसके चरणों की पूजा करते हैं, ऐसे भक्तों के समान अन्य कोई नहीं। वह एक ही है और एक वही अनेक रूपों में फैला हुआ है, उसी को दिल में बसाओ॥ रहाउ॥ जिसके घर में भगवान का भजन होता है, अन्य कुछ दिखाई नहीं देता, उस नामदेव की जाति छींबा अछूत है। व्यास की रचना तथा सनक की रचनाओं में हरिनाम की कीर्ति है, जो सातों द्वीपों में फैली हुई है॥ १॥ जिसके जहाँ ईद-बकरीद के त्यौहारों पर गो-वध होता था, शेखों एवं पीरों को मानते थे, जिसका पिता यह सब करता था, उसके पुत्र ने वह कर दिया कि वह कबीर दुनिया भर में प्रसिद्ध हो गया॥ २॥ जिसके परिवार के वंशज अब भी बनारस के आसपास पशु ढोते हैं, दासों के दास रविदास को ब्राह्मण समाज आदरपूर्वक दण्डवत प्रणाम करता है॥ ३॥ २॥

मलार १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

मिलत पिआरो प्रान नाथु कवन भगति ते ॥ साधसंगति पाई परम गते ॥ रहाउ ॥ मैले कपरे कहा लउ धोवउ ॥ आवैगी नीद कहा लगु सोवउ ॥ १ जोई जोई जोरिओ सोई सोई फाटिओ ॥ झूठै बनजि उठि ही गई हाटिओ ॥ २ ॥ कहु रविदास इओ जब लेखो ॥ जोई जोई कीनो सोई सोई देखिओ ॥ ३ ॥ १ ॥ ३ ॥

प्राणों से प्यारा प्रभु किस भक्ति से मिलता है और साधु जनों की संगत में परमगति संभव है॥ २॥ रहाउ॥ पराई निंदा द्वारा मैले कपड़े कहाँ तक धोऊँगा। नींद आएगी तो कहाँ सो सकूँगा॥ १॥ जो जो कुटिल कर्म करके लेखा-जोखा इकट्ठा किया था, वह हिसाब फट गया है। झूठे व्यापार की दुकान बंद ही हो गई है॥ २॥ रविदास जी कहते हैं कि जब कर्मों का हिसाब होता है तो जो-जो शुभाशुभ कर्म किया होता है, वही दिखाई देता है॥ ३॥ १॥ ३॥

रागु कानड़ा चउपदे महला ४ घरु १

१ ओं सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

वह अनंतशक्ति परमात्मा एक है, नाम उसका सत्य है, वह सृष्टि को बनानेवाला है, सर्वशक्तिमान है, वह निर्भय है, वह वैर भावना से रहित है, वह कालातीत ब्रह्म-मूर्ति सदा अमर है, वह जन्म-मरण के चक्र से रहित है, स्वजन्मा है, गुरु की कृपा से प्राप्त होता है।

मेरा मनु साध जनां मिलि हरिआ ॥ हउ बलि बलि बलि बलि साध जनां कउ मिलि संगति पारि उतरिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि हरि क्रिपा करहु प्रभ अपनी हम साध जनां पग परिआ ॥ धनु धनु साध जिन हरि प्रभु जानिआ मिलि साधू पतित उधरिआ ॥ १ ॥ मनूआ चलै चलै बहु बहु बिधि मिलि साधू वसगति करिआ ॥ जिउं जल तंतु पसारिओ बधकि ग्रसि मीना वसगति खरिआ ॥ २ ॥ हरि के संत संत भल नीके मिलि संत जना मलु लहीआ ॥ हउमै दुरतु गइआ सभु नीकरि जिउ साबुनि कापरु करिआ ॥ ३ ॥ मसतकि लिलाटि लिखिआ धुरि ठाकुरि गुर सतिगुर चरन उर धरिआ ॥ सभु दालदु दूख भंज प्रभु पाइआ जन नानक नामि उधरिआ ॥ ४ ॥ १ ॥

मेरा मन साधुजनों से मिलकर प्रसन्न हो गया है, अतः मैं साधुजनों पर बलिहारी जाता हूँ, दरअसल इनकी संगत में संसार-सागर से पार उतारा होता है॥१॥ रहाउ॥ हे प्रभु ! अपनी कृपा करो, हम साधुजनों के पैरों में पड़े हुए हैं। वे साधु पुरुष धन्य हैं, जिन्होंने प्रभु (की महिमा) को जाना है। साधुओं को मिलकर पापियों का उद्धार हो जाता है॥१॥ चंचल मन अनेक प्रकार से दोलायमान होता है, पर साधुओं को मिलकर वश में आता है। यह इस प्रकार है, जैसे जल में शिकारी ने जाल बिछा दिया होता है और मछली को फंसा लेता है॥२॥ ईश्वर के संत भले एवं नेक हैं, इन संतजनों को मिलकर पापों की मैल दूर होती है। जैसे कपड़े को साबुन से साफ किया जाता है, वैसे ही अहम् एवं द्वैतभाव सब निकल गया है॥३॥ मालिक ने प्रारम्भ से ही माथे पर भाग्य लिखा हुआ था, गुरु के चरणों को मन में बसा लिया है। सब दरिद्र एवं दुख दूर करने वाले प्रभु को पा लिया है, हे नानक! हरिनाम से उद्धार हो गया है॥४॥१॥

कानड़ा महला ४ ॥ मेरा मनु संत जना पग रेन ॥ हरि हरि कथा सुनी मिलि संगति मनु कोरा हरि रंगि भेन ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हम अचित अचेत न जानहि गति मिति गुरि कीए सुचित चितेन ॥ प्रभि दीन दइआलि कीओ अंगीक्रितु मनि हरि हरि नामु जपेन ॥ १ ॥ हरि के संत मिलहि मन प्रीतम कटि देवउ हीअरा तेन ॥ हरि के संत मिले हरि मिलिआ हम कीए पतित पवेन ॥ २ ॥ हरि के जन ऊतम जगि कहीअहि जिन मिलिआ पाथर सेन ॥ जन की महिमा बरनि न साकउ ओइ ऊतम हरि हरि केन ॥ ३ ॥ तुम्ह हरि साह वडे प्रभ सुआमी हम वणजारे रासि देन ॥ जन नानक कउ दइआ प्रभ धारहु लदि वाखरु हरि हरि लेन ॥ ४ ॥ २ ॥

मेरा मन संतजनों के पैरों की धूल समान है। अच्छी संगति में मिलकर हरि कथा सुनी तो कोरा मन प्रभु प्रेम में भीग गया॥१॥ रहाउ॥ हम नासमझ, बुद्धिमान ईश्वर की महानता को नहीं जानते, पर गुरु ने हमें बुद्धिमान एवं समझदार बना दिया है। दीनदयाल प्रभु ने अंगीकार किया है, मन प्रभु का नाम जप रहा है॥१॥ यदि प्रभु के प्रिय भक्तों से मिलन हो जाए तो हृदय को भी काट कर सौंप दूँ। प्रभु के भक्तों को मिलकर ही प्रभु मिला है, हम जैसे पापी भी पावन हो गए हैं॥२॥ परमात्मा की उपासना करने वाले संसार में उत्तम कहलाते हैं, जिनको मिलकर पत्थर दिल भी कोमल हो जाते हैं। मैं भक्तों की महिमा वर्णन नहीं कर सकता, क्योंकि परमात्मा ने उनको उत्तम बना दिया है॥३॥ हे प्रभु! एकमात्र तुम ही बड़े सौदागर हो, हम व्यापारियों को तुम ही राशि देते हो। नानक विनती करते हैं कि हे प्रभु! दया करो, हम नाम का सौदा लाद कर ले जाएँ॥४॥२॥

कानड़ा महला ४ ॥ जपि मन राम नाम परगास ॥ हरि के संत मिलि प्रीति लगानी विचे गिरह उदास ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हम हरि हिरदै जपिओ नामु नरहरि प्रभि क्रिपा करी किरपास ॥ अनदिनु अनदु भइआ मनु बिगसिआ उदम भए मिलन की आस ॥ १ ॥ हम हरि सुआमी प्रीति लगाई जितने सास लीए हम ग्रास ॥ किलबिख दहन भए खिन अंतरि तूटि गए माइआ के फास ॥ २ ॥ किआ हम किरम किआ करम कमावहि मूरख मुगध रखे प्रभ तास ॥ अवगनीआरे पाथर भारे सतसंगति मिलि तरे तरास ॥ ३ ॥ जेती स्रिसटि करी जगदीसरि ते सभि ऊच हम नीच बिखिआस ॥ हमरे अवगुन संगि गुर मेटे जन नानक मेलि लीए प्रभ पास ॥ ४ ॥ ३ ॥

हे मन! प्रकाश स्वरूप राम नाम का जाप करो, प्रभु के भक्तों के साथ मिलकर प्रेम लगाओ और गृहस्थ जीवन में मोह-माया से विरक्त रहो॥१॥ रहाउ॥ हमने हृदय में प्रभु का नाम जपा, तो कृपालु प्रभु ने कृपा कर दी। हर दिन आनंद ही आनंद हो गया है, मन खिल गया है, अब तो प्रभु मिलन की लालसा लगी हुई है॥१॥ हमने जितनी साँसें लीं, भोजन किया, उतना ही प्रभु से प्रेम लगाए रखा। पल भर में सब पाप नष्ट हो गए और माया का फंदा टूट गया॥२॥ हम क्या कीट समान जीव हैं और क्या कर्म करते हैं, हम जैसे मूर्ख गंवारों की तो भी प्रभु रक्षा करता है। हम अवगुणों से भरे हुए भारी पत्थर समान हैं, जो सत्संगति में मिलकर ही संसार-सागर से तैर सकते हैं॥ ३॥ जगदीश्वर ने जितनी भी सृष्टि बनाई है, सब ऊँचे हैं और हम नीच विषय-विकारों में प्रवृत्त हैं। हे नानक! जब गुरु मिलता है तो हमारे सब अवगुण मिट जाते हैं और वह प्रभु से मिला देता है॥४॥३॥

कानड़ा महला ४ ॥ मेरै मनि राम नामु जपिओ गुर वाक ॥ हरि हरि क्रिपा करी जगदीसरि दुरमति दूजा भाउ गइओ सभ झाक ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नाना रूप रंग हरि केरे घटि घटि रामु रविओ गुपलाक ॥ हरि के संत मिले हरि प्रगटे उघरि गए बिखिआ के ताक ॥ १ ॥ संत जना की बहुतु बहु सोभा जिन उरि धारिओ हरि रसिक रसाक ॥ हरि के संत मिले हरि मिलिआ जैसे गऊ देखि बछराक ॥ २ ॥ हरि के संत जना महि हरि हरि ते जन ऊतम जनक जनाक ॥ तिन हरि हिरदै बासु बसानी छूटि गई मुसकी मुसकाक ॥ ३ ॥ तुम्हरे जन तुम्ह ही प्रभ कीए हरि राखि लेहु आपन अपनाक ॥ जन नानक के सखा हरि भाई मात पिता बंधप हरि साक ॥ ४ ॥ ४ ॥

हे मेरे मन ! गुरु के वचनानुसार राम नाम का जाप किया। जगदीश्वर हरि ने मुझ पर कृपा की है, जिससे दुर्मति एवं द्वैतभाव सब दूर हो गया है॥१॥ रहाउ॥ परमात्मा के अनेक रूप रंग हैं, वह घट घट में अदृष्ट रूप में व्याप्त है। यदि परमात्मा के भक्तों से मिलाप हो जाए तो वह प्रभु प्रगट हो जाता है और विषय-विकारों के द्वार खुल जाते हैं॥१॥ भक्तजनों की बहुत शोभा है, जिन्होंने प्रेम से प्रभु को हृदय में धारण किया हुआ है। जैसे गाय को देखकर बछड़ा आ मिलता है, वैसे ही परमात्मा के भक्तों से मिलकर परमात्मा मिल जाता है॥२॥ प्रभु तो भक्तजनों में ही रहता है और प्रभु के भक्त सब लोगों से उत्तम एवं भले हैं। उनके हृदय में ऐसी खुशबू होती है कि सब दुर्गन्धियां दूर हो जाती हैं॥३॥ हे प्रभु ! हम तुम्हारे सेवक हैं, तुमने ही बनाया है, अपना बनाकर हमें बचा लो। दास नानक का कथन है कि प्रभु ही हमारा मित्र, भाई, माता-पिता, बंधु एवं संबंधी है॥४॥४॥

कानड़ा महला ४ ॥ मेरे मन हरि हरि राम नामु जपि चीति ॥ हरि हरि वसतु माइआ गढ़ि वेढ़ी गुर कै सबदि लीओ गड़ु जीति ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मिथिआ भरमि भरमि बहु भ्रमिआ लुबधो पुत्र कलत्र मोह प्रीति ॥ जैसे तरवर की तुछ छाइआ खिन महि बिनसि जाइ देह भीति ॥ १ ॥ हमरे प्रान प्रीतम जन ऊतम जिन मिलिआ मनि होइ प्रतीति ॥ परचै रामु रविआ घट अंतरि असथिरु रामु रविआ रंगि प्रीति ॥ २ ॥ हरि के संत संत जन नीके जिन मिलिआं मनु रंगि रंगीति ॥ हरि रंगु लहै न उतरै कबहू हरि हरि जाइ मिलै हरि प्रीति ॥ ३ ॥ हम बहु पाप कीए अपराधी गुरि काटे कटित कटीति ॥ हरि हरि नामु दीओ मुखि अउखधु जन नानक पतित पुनीति ॥ ४ ॥ ५ ॥

हे मेरे मन ! एकाग्रचित होकर परमात्मा के नाम का मनन करो। हरिनाम रूपी वस्तु माया के किले में विद्यमान है, गुरु के उपदेश द्वारा इस किले को जीत लो॥१॥ रहाउ॥ मैं झूठे भ्रम में भटकता रहा, पुत्र-पत्नी के मोह-प्रेम में ही तल्लीन रहा। जैसे पेड़ की तुच्छ छाया समाप्त हो जाती है, वैसे ही शरीर रूपी दीवार पल में नाश हो जाती है॥१॥ ऐसे उत्तम भक्त हमें प्राणों से भी प्यारे हैं, जिनको मिलकर मन में निष्ठा उत्पन्न होती है। प्रभु अन्तर्मन में व्याप्त है, इनकी संगत में प्रभु से प्रेम दृढ़ हो जाता है॥२॥ ईश्वर के भक्तजन भले हैं, जिनको मिलकर मन प्रभु के रंग में रंगीन हो जाता है। ऐसा प्रभु-रंग कभी नहीं उतरता और जीव प्रभु के प्रेम में प्रभु से मिल जाता है॥३॥ हम जैसे अपराधियों ने अनेक पाप किए हैं, पर गुरु ने सब पाप-दोष काट दिए हैं। हे नानक ! पतितों को पावन करने के लिए गुरु हरिनाम रूपी औषधि ही देता है॥४॥५॥

कानड़ा महला ४ ॥ जपि मन राम नाम जगंनाथ ॥ घूमन घेर परे बिखु बिखिआ सतिगुर काढि लीए दे हाथ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुआमी अभै निरंजन नरहरि तुम्ह राखि लेहु हम पापी पाथ ॥ काम क्रोध बिखिआ लोभि लुभते कासट लोह तरे संगि साथ ॥ १ ॥ तुम्ह वड पुरख बड अगम अगोचर हम ढूढि रहे पाई नही हाथ ॥ तू परै परै अपरंपरु सुआमी तू आपन जानहि आपि जगंनाथ ॥ २ ॥ अद्रिसटु अगोचर नामु धिआए सतसंगति मिलि साधू पाथ ॥ हरि हरि कथा सुनी मिलि संगति हरि हरि जपिओ अकथ कथ काथ ॥ ३ ॥ हमरे प्रभ जगदीस गुसाई हम राखि लेहु जगंनाथ ॥ जन नानकु दासु दास दासन को प्रभ करहु क्रिपा राखहु जन साथ ॥ ४ ॥ ६ ॥

हे मन ! जगत के मालिक परमेश्वर का भजन कर लो, हम विषय-विकारों के भँवर में पड़े हुए थे, लेकिन सतिगुरु ने हाथ देकर बाहर निकाल लिया है॥१॥ हे नारायण ! तू हमारा स्वामी है, अभय है, मोह-माया की कालिमा से परे है, कृपा करके हम पापी पत्थरों को तुम बचा लो। हम

काम-क्रोध, विषय-विकारों एवं लोभ में मगन थे, ज्यों लोहा लकड़ी के साथ पार हो जाता है, यूं ही हमें पार उतार दो॥१॥ हे हरि! तुम महान् हो, सर्वशक्तिमान हो, ज्ञानेन्द्रियों से परे हो, हम तुझे ढूँढते रहे, पर तेरा साथ नहीं पा सके। तू परे से परे है, अपरंपार है, हमारा स्वामी है, पूरे जगत का मालिक है, तू अपनी महानता स्वयं ही जानता है॥२॥ जब अदृश्य, मन-वाणी से परे मानकर नाम का ध्यान किया तो सत्संगत में सन्मार्ग मिल गया। सच्ची संगत में हरि कथा सुनी, अकथनीय कथा का आनंद प्राप्त किया, हरि का भजन किया॥३॥ हे जगदीश्वर, जगत-पालक, जगन्नाथ प्रभु! हमारी रक्षा करो। नानक दासों के दासों का भी दास है, हे प्रभु! कृपा करके अपने भक्तों के साथ रख लो॥४॥६॥

कानड़ा महला ४ पड़ताल घरु ५ ॥ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

मन जापहु राम गुपाल ॥ हरि रतन जवेहर लाल ॥ हरि गुरमुखि घड़ि टकसाल ॥ हरि हो हो किरपाल ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तुमरे गुन अगम अगोचर एक जीह किआ कथै बिचारी राम राम राम राम लाल ॥ तुमरी जी अकथ कथा तू तू तू ही जानहि हउ हरि जपि भई निहाल निहाल निहाल ॥ १ ॥ हमरे हरि प्रान सखा सुआमी हरि मीता मेरे मनि तनि जीह हरि हरे हरे राम नाम धनु माल ॥ जा को भागु तिनि लीओ री सुहागु हरि हरि हरे हरे गुन गावै गुरमति हउ बलि बले हउ बलि बले जन नानक हरि जपि भई निहाल निहाल निहाल ॥ २ ॥ १ ॥ ७ ॥

हे मन! परमात्मा का जाप करो। हरिनाम ही रत्न, जवाहर एवं माणिक्य है। गुरु की टकसाल में हरिनाम बनता है। जब कृपालु होता है तो प्राप्त हो जाता है॥१॥ रहाउ॥ हे प्रभु! तुम्हारे गुण बे-अन्त हैं, ज्ञानेन्द्रियों की पहुँच से परे हैं, मेरी एक जीभ बेचारी कैसे कथन कर सकती है। तुम्हारी कथा अकथनीय है, जिसे केवल तू ही जानता है। मैं हरिनाम का भजन करके निहाल हो गया हूँ॥१॥ ईश्वर ही हमारा प्राण-सखा है, वही हमारा स्वामी एवं परम मित्र है, मेरे मन, तन, जीभ में वही अवस्थित है और हर समय उसी का नाम जपता हूँ, वही हमारी धन-दौलत है। जिसका उत्तम भाग्य होता है, उसे ही पति-प्रभु मिलता है और गुरु के उपदेश से वह परमात्मा का गुण-गान करता है। हे नानक! मैं उस पर कुर्बान जाता हूँ, और ईश्वर का जाप कर निहाल हो गया हूँ॥२॥१॥७॥

कानड़ा महला ४ ॥ हरि गुन गावहु जगदीस ॥ एका जीह कीचै लख बीस ॥ जपि हरि हरि सबदि जपीस ॥ हरि हो हो किरपीस ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि किरपा करि सुआमी हम लाइ हरि सेवा हरि जपि जपे हरि जपि जपे जपु जापउ जगदीस ॥ तुमरे जन रामु जपहि ते ऊतम तिन कउ हउ घुमि घुमे घुमि घुमि जीस ॥ १ ॥ हरि तुम वड वडे वडे वड ऊचे सो करहि जि तुधु भावीस ॥ जन नानक अंम्रितु पीआ गुरमती धनु धंनु धनु धंनु धंनु गुरू साबीस ॥ २ ॥ २ ॥ ८ ॥

ईश्वर के गुण गाओ, एक जिह्वा को बीस लाख बनाकर परमात्मा का जाप करो, यही शब्द जपने योग्य है। प्रभु की कृपा सदैव बनी रहेगी॥१॥ रहाउ॥ ईश्वर ने कृपा करके हमें अपनी सेवा में लगा लिया है, अब तो हर वक्त उसका नाम जप-जपकर आनंद मना रहे हैं। हे राम! तुम्हारे भक्त नित्य तुम्हारा नाम जपते हैं, उन उत्तम लोगों पर सर्वदा कुर्बान जाता हूँ॥१॥ हे प्रभु! तुम बड़े हो, बहुत बड़े हो, महान् हो, जो तुझे ठीक लगता है, वही करते हो। नानक का कथन है कि गुरु के उपदेश से हरिनाम अमृत पान किया है, ऐसा गुरु धन्य है, पूजनीय एवं प्रशंसा के लायक है॥२॥२॥८॥

कानड़ा महला ४ ॥ भजु रामो मनि राम ॥ जिसु रूप न रेख वडाम ॥ सतसंगति मिलु भजु राम ॥ बड हो हो भाग मथाम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जितु ग्रिहि मंदरि हरि होतु जासु तितु घरि आनदो आनंदु भजु राम राम राम ॥ राम नाम गुन गावहु हरि प्रीतम उपदेसि गुरू गुर सतिगुरा सुखु होतु हरि हरे हरि हरे हरे भजु राम राम राम ॥ १ ॥ सभ सिसटि धार हरि तुम किरपाल करता सभु तू तू तू राम राम राम ॥ जन नानको सरणागती देहु गुरमती भजु राम राम राम ॥ २ ॥ ३ ॥ ६ ॥

हे मन! राम का भजन करो, उसका कोई रूप अथवा आकार नहीं, वही बड़ा है। सत्संगति में मिलकर राम का भजन करो, भाग्यशाली हो जाओ॥१॥ रहाउ॥ जिस घर में परमात्मा का यशोगान होता है, वहाँ आनंद ही आनंद बना रहता है। अतः राम ही राम भजते रहो। गुरु के उपदेश से प्रियतम प्रभु के गुण गाओ, सुख ही सुख उपलब्ध होता है, अतः भगवान का भजन करते रहो॥१॥ हे हरि! तुम समूची सृष्टि के रचयिता हो, कृपा का घर हो। तू ही सब कुछ है। नानक की विनती है कि हे प्रभु! शरण प्रदान करो, गुरु-मतानुसार राम नाम का भजन करता हूँ॥२॥३॥६॥

कानड़ा महला ४ ॥ सतिगुर चाटउ पग चाट ॥ जितु मिलि हरि पाधर बाट ॥ भजु हरि रसु रस हरि गाट ॥ हरि हो हो लिखे लिलाट ॥ १ ॥ रहाउ ॥ खट करम किरिआ करि बहु बहु बिसथार सिध साधिक जोगीआ करि जट जटा जट जाट ॥ करि भेख न पाईऐ हरि ब्रहम जोगु हरि पाईऐ सतसंगती उपदेसि गुरू गुर संत जना खोलि खोलि कपाट ॥ १ ॥ तू अपरंपरु सुआमी अति अगाहु तू भरपुरि रहिआ जल थले हरि इकु इको इक एकै हरि थाट ॥ तू जाणहि सभ बिधि बूझहि आपे जन नानक के प्रभ घटि घटे घटि घटे घटि हरि घाट ॥ २ ॥ ४ ॥ १० ॥

मैं गुरु के पैरों को चूमता हूँ, जिससे प्रभु मिलन का रास्ता प्राप्त होता है। खूब मजे लेकर भगवान का भजन करो, भाग्य में लिखा है तो प्रभु का प्रेम से कीर्तन करो॥१॥ रहाउ॥ छः कर्मों और बहुत सारे कर्मकाण्डों का सिद्ध-साधक, योगियों ने विस्तार किया हुआ है और अपनी जटाएं बढ़ा रखी हैं। किसी वेषाडम्बर से परमात्मा प्राप्त नहीं होता। परमात्मा की प्राप्ति सत्संगत एवं गुरु के उपदेश से ही होती है, चूंकि गुरु संतजन मन के कपाट को खोलकर ब्रह्म का भेद बतलाते हैं॥१॥ हे स्वामी! तू अपरंपार है, असीम है, तू सबमें भरपूर है। जल-थल हर स्थान पर एक परमेश्वर ही व्याप्त है। तू अन्तर्यामी है, सर्वज्ञाता है। दास नानक का प्रभु घट-घट में व्याप्त है॥२॥४॥१०॥

कानड़ा महला ४ ॥ जपि मन गोबिद माधो ॥ हरि हरि अगम अगाधो ॥ मति गुरमति हरि प्रभु लाधो ॥ धुरि हो हो लिखे लिलाधो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बिखु माइआ संचि बहु चितै बिकार सुखु पाईऐ हरि भजु संत संत संगती मिलि सतिगुरू गुरु साधो ॥ जिउ छुहि पारस मनूर भए कंचन तिउ पतित जन मिलि संगती सुध होवत गुरमती सुध हाधो ॥ १ ॥ जिउ कासट संगि लोहा बहु तरता तिउ पापी संगि तरे साध साध संगती गुर सतिगुरू गुर साधो ॥ चारि बरन चारि आस्रम है कोई मिलै गुरू गुर नानक सो आपि तरै कुल सगल तराधो ॥ २ ॥ ५ ॥ ११ ॥

हे मन! ईश्वर का भजन करो, वह अगम्य अथाह है। गुरु की शिक्षा से प्रभु प्राप्त हो जाता है, विधाता ने प्रारम्भ से ऐसा भाग्य लिखा होता है॥१॥ रहाउ॥ मनुष्य धन-दौलत के जहर को इकट्ठा करने के लिए बहुत विकार सोचता है, लेकिन परम सुख संतों की संगत में परमात्मा का

भजन करने से ही प्राप्त होता है, अतः गुरु की साधना करो। जैसे पारस को छू कर लोहा सोना बन जाता है, वैसे ही अच्छी संगत में पापी भी शुद्ध हो जाते हैं, गुरु-मतानुसार अभ्यास करो॥१॥ ज्यों लकड़ी के साथ लोहा पार हो जाता है, वैसे ही पापी व्यक्ति साधुओं की संगत में पार हो जाते हैं, अतः गुरु की सेवा करो। चार वर्णों अथवा चार आश्रमों में से जो भी कोई गुरु को मिलता है, गुरु नानक का वचन है कि वह स्वयं तो भवजल से पार उतरता ही है, अपनी वंशावलि को भी तिरा देता है॥२॥५॥११॥

कानड़ा महला ४ ॥ हरि जसु गावहु भगवान ॥ जसु गावत पाप लहान ॥ मति गुरमति सुनि जसु कान ॥ हरि हो हो किरपान ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तेरे जन धिआवहि इक मनि इक चिति ते साधू सुख पावहि जपि हरि हरि नामु निधान ॥ उसतति करहि प्रभ तेरीआ मिलि साधू साध जना गुर सतिगुरू भगवान ॥ १ ॥ जिन कै हिरदै तू सुआमी ते सुख फल पावहि ते तरे भव सिंधु ते भगत हरि जान ॥ तिन सेवा हम लाइ हरे हम लाइ हरे जन नानक के हरि तू तू तू तू तू भगवान ॥ २ ॥ ६ ॥ १२ ॥

हे भक्तजनो! भगवान का यश गाओ, हरि-यश गाने से पाप दूर हो जाते हैं। गुरु-मतानुसार कानों से हरि का यश सुनो, हरि कृपा करने वाला है॥१॥ रहाउ॥ हे प्रभु! भक्तजन एकाग्रचित होकर तेरा ध्यान करते हैं। परमात्मा का नाम सुखों का घर है, इस तरह साधु-महात्मा जन नाम जपकर सुख ही पाते हैं। हे प्रभु! गुरु-सतगुरु के साथ मिलकर साधुजन तेरी उस्तति करते हैं॥१॥ हे स्वामी! जिनके हृदय में तू रहता है, वे सर्व सुख एवं फल पाते हैं और भक्तों के साथ संसार-समुद्र से पार हो जाते हैं। उनकी सेवा में हमें लगाए रखना, हे नानक के प्रभु! तू ही तू तू ही हमारा सर्वस्व है॥२॥६॥१२॥

कानड़ा महला ५ घरु २ १ॐ सतिगुर प्रसादि ॥

गाईऐ गुण गोपाल क्रिपा निधि ॥ दुख बिदारन सुखदाते सतिगुर जा कउ भेटत होइ सगल सिधि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिमरत नामु मनहि साधारै ॥ कोटि पराधी खिन महि तारै ॥ १ ॥ जा कउ चीति आवै गुरु अपना ॥ ता कउ दूखु नही तिलु सुपना ॥ २ ॥ जा कउ सतिगुरु अपना राखै ॥ सो जनु हरि रसु रसना चाखै ॥ ३ ॥ कहु नानक गुरि कीनी मइआ ॥ हलति पलति मुख ऊजल भइआ ॥ ४ ॥ १॥

कृपानिधि ईश्वर का गुणानुवाद करो। वह सब दुख नष्ट करने वाला है, सुखों का दाता है, वही सच्चा गुरु है, जिससे साक्षात्कार होते ही सर्व सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं॥१॥ रहाउ॥ प्रभु का नाम स्मरण करने से मन को शान्ति प्राप्त होती है, (नाम स्मरण से) करोड़ों अपराधी पल में तिर गए हैं॥१॥ जिसे अपना गुरु याद आता है, उसे सपने में भी कोई दुख नहीं छूता॥२॥ जिसे अपना सतिगुरु बचाता है, वह भक्त अपनी जिह्वा से ईश्वर का जाप करता है॥३॥ नानक फुरमाते हैं कि गुरु ने कृपा की है, लोक-परलोक में मुख उज्ज्वल हो गया है॥४॥१॥

कानड़ा महला ५ ॥ आराधउ तुझहि सुआमी अपने ॥ ऊठत बैठत सोवत जागत सासि सासि सासि हरि जपने ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ता कै हिरदै बसिओ नामु ॥ जा कउ सुआमी कीनो दानु ॥ १ ॥ ता कै हिरदै आई सांति ॥ ठाकुर भेटे गुर बचनांति ॥ २ ॥ सरब कला सोई परबीन ॥ नाम मंत्रु जा कउ गुरि दीन ॥ ३ ॥ कहु नानक ता कै बलि जाउ ॥ कलिजुग महि पाइआ जिनि नाउ ॥ ४ ॥ २ ॥

हे स्वामी ! मैं तेरी ही आराधना करता हूँ, उठते-बैठते, सोते-जागते, श्वास-श्वास तेरा ही जाप करता हूँ॥१॥ रहाउ॥ उसी के हृदय में हरिनाम बसता है, जिसे स्वामी दान करता है॥ १॥ उसी के हृदय को शान्ति प्राप्त होती है, जिसकी गुरु के वचनों से ठाकुर जी से भेंट होती है॥२॥ वही सर्व कलाओं में प्रवीण होता है, जिसे गुरु हरिनाम मंत्र देता है॥३॥ हे नानक ! जिसने कलियुग में हरिनाम पाया है, मैं उस पर बलिहारी जाता हूँ॥४॥२॥

कानड़ा महला ५ ॥ कीरति प्रभ की गाउ मेरी रसनां ॥ अनिक बार करि बंदन संतन ऊहां चरन गोबिंद जी के बसना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनिक भांति करि दुआरु न पावउ ॥ होइ क्रिपालु त हरि हरि धिआवउ ॥ १ ॥ कोटि करम करि देह न सोधा ॥ साधसंगति महि मनु परबोधा ॥ २ ॥ त्रिसन न बूझी बहु रंग माइआ ॥ नामु लैत सरब सुख पाइआ ॥ ३ ॥ पारब्रहम जब भए दइआल ॥ कहु नानक तउ छूटे जंजाल ॥ ४ ॥ ३ ॥

हे मेरी रसना ! प्रभु की कीर्ति-गान करो, अनेक बार संत पुरुषों की वन्दना करो, क्योंकि प्रभु जी के चरण यहीं बसते हैं॥१॥ रहाउ॥ अनेक कोशिशें करने पर भी द्वार प्राप्त नहीं होता, जब कृपालु होता है तो व्यक्ति परमात्मा का ध्यान करने लगता है॥१॥ करोड़ों कर्मकाण्ड करने पर भी शरीर शुद्ध नहीं होता, मगर साधु-पुरुषों की संगत में मन को ज्ञान प्राप्त होता है॥२॥ माया के अनेक रंगों में तृष्णा नहीं बुझती, प्रभु का नाम लेते ही सर्व सुख प्राप्त हो जाते हैं॥३॥ हे नानक ! जब परब्रह्म दयालु होता है तो संसार के झंझटों से छुटकारा हो जाता है॥४॥३॥

कानड़ा महला ५ ॥ ऐसी मांगु गोबिद ते ॥ टहल संतन की संगु साधू का हरि नामां जपि परम गते ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पूजा चरना ठाकुर सरना ॥ सोई कुसलु जु प्रभ जीउ करना ॥ १ ॥ सफल होत इह दुरलभ देही ॥ जा कउ सतिगुरु मइआ करेही ॥ २ ॥ अगिआन भरमु बिनसै दुख डेरा ॥ जा कै ह्रिदै बसहि गुर पैरा ॥ ३ ॥ साधसंगि रंगि प्रभु धिआइआ ॥ कहु नानक तिनि पूरा पाइआ ॥ ४ ॥ ४ ॥

ईश्वर से हमारी यही कामना है कि संतों की सेवा में तल्लीन रहकर हरिनाम जपता रहूँ और इस तरह परमगति प्राप्त हो जाए॥१॥ ठाकुर जी की चरण-शरण में पूजा-अर्चना करता रहूँ। जो प्रभु करता है, वही अच्छा होता है॥१॥ जिस पर सतगुरु दया करता है, उसका दुर्लभ शरीर सफल हो जाता है॥२॥ अज्ञान, भ्रम एवं दुखों का डेरा उसी का नष्ट होता है, जिसके हृदय में गुरु चरण बस जाते हैं॥३॥ गुरु नानक फुरमाते हैं– जो साधु संगत में दत्तचित होकर प्रभु का ध्यान करता है, उसी को पूर्ण परमेश्वर की प्राप्ति होती है॥४॥४॥

कानड़ा महला ५ ॥ भगति भगतन हूं बनि आई ॥ तन मन गलत भए ठाकुर सिउ आपन लीए मिलाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गावनहारी गावै गीत ॥ ते उधरे बसे जिह चीत ॥ १ ॥ पेखे बिंजन परोसनहारै ॥ जिह भोजनु कीनो ते त्रिपतारै ॥ २ ॥ अनिक स्वांग काछे भेखधारी ॥ जैसो सा तैसो द्रिसटारी ॥ ३ ॥ कहन कहावन सगल जंजार ॥ नानक दास सचु करणी सार ॥ ४ ॥ ५ ॥

भक्ति भक्तजनों को ही शोभा देती है। इनका तन मन परमात्मा में तल्लीन रहता है और उसी में समाहित हो जाते हैं॥१॥ रहाउ॥ वैसे तो पूरी दुनिया भगवान के गीत गाती है, लेकिन उन लोगों का ही उद्धार होता है, जिसके मन में बसता है॥१॥ बेशक भोजन परोसने वाला अनेक व्यंजनों को देखता है, पर तृप्त केवल भोजन करने वाला ही होता है॥२॥ वेषधारी अनेक स्वांग

रचता है, परन्तु जो असल में होता है, वही दिखाई देता है॥३॥ बातें करना अथवा करवाना सब जंजाल है। दास नानक का अनुरोध है कि सत्कर्म ही सार है॥४॥५॥

कानड़ा महला ५ ॥ तेरो जनु हरि जसु सुनत उमाहिओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनहि प्रगासु पेखि प्रभ की सोभा जत कत पेखउ आहिओ ॥ १ ॥ सभ ते परै परै ते ऊचा गहिर गंभीर अथाहिओ ॥ २ ॥ ओति पोति मिलिओ भगतन कउ जन सिउ परदा लाहिओ ॥ ३ ॥ गुर प्रसादि गावै गुण नानक सहज समाधि समाहिओ ॥ ४ ॥ ६ ॥

हे प्रभु! भक्त तेरा यश सुनकर खुशी से खिल उठा है॥१॥ रहाउ॥ प्रभु की शोभा देखकर मन में आलोक हो जाता है, जहाँ भी देखता हूँ, वही दिखाई देता है॥१॥ तू सबसे परे है, महान् है, गहन-गम्भीर एवं अथाह है॥२॥ वह भक्तों के साथ ओत-प्रोत की तरह मिला रहता है और दास से पर्दा उतार देता है॥३॥ हे नानक! गुरु की कृपा से वह ईश्वर के गुण गाता है और सहज समाधि में लीन रहता है॥४॥६॥

कानड़ा महला ५ ॥ संतन पहि आपि उधारन आइओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दरसन भेटत होत पुनीता हरि हरि मंत्रु द्रिड़ाइओ ॥ १ ॥ काटे रोग भए मन निरमल हरि हरि अउखधु खाइओ ॥ २ ॥ असथित भए बसे सुख थाना बहुरि न कतहू धाइओ ॥ ३ ॥ संत प्रसादि तरे कुल लोगा नानक लिपत न माइओ ॥ ४ ॥ ७ ॥

संसार का उद्धार करने के लिए ईश्वर स्वयं संत-महापुरुषों के पास आता है॥१॥ रहाउ॥ उनके दर्शन करने से प्राणी पवित्र हो जाता है और हरिनाम मंत्र दृढ़ करवाता है॥१॥ हरिनाम औषधि सेवन करने से सब रोग कट जाते हैं और मन निर्मल हो जाता है॥२॥ तदन्तर प्राणी निश्चिंत होकर सुखपूर्वक रहता है और पुनः इधर-उधर नहीं दौड़ता॥३॥ हे नानक! संतों की कृपा से लोगों की मुक्ति होती है और वे मोह-माया में लिप्त नहीं होते॥४॥७॥

कानड़ा महला ५ ॥ बिसरि गई सभ ताति पराई ॥ जब ते साधसंगति मोहि पाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ना को बैरी नही बिगाना सगल संगि हम कउ बनि आई ॥ १ ॥ जो प्रभ कीनो सो भल मानिओ एह सुमति साधू ते पाई ॥ २ ॥ सभ महि रवि रहिआ प्रभु एकै पेखि पेखि नानक बिगसाई ॥ ३ ॥ ८ ॥

जब से मुझे साधु-पुरुषों की संगति प्राप्त हुई है, लोगों से ईर्ष्या-द्वेष सब भूल गई है॥१॥ रहाउ॥ न कोई शत्रु है, न ही कोई पराया है, मेरा सब के साथ प्रेम बन गया है॥१॥ जो प्रभु करता है, उसे भला मानना चाहिए, यह सुमति मैंने साधु से प्राप्त की है॥२॥ सब में एक प्रभु ही व्याप्त है, हे नानक! यह देख-देखकर मन खिल गया है॥३॥८॥

कानड़ा महला ५ ॥ ठाकुर जीउ तुहारो परना ॥ मानु महतु तुम्हारै ऊपरि तुम्हरी ओट तुम्हारी सरना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तुम्हरी आस भरोसा तुम्हरा तुमरा नामु रिदै लै धरना ॥ तुमरो बलु तुम संगि सुहेले जो जो कहहु सोई सोई करना ॥ १ ॥ तुमरी दइआ मइआ सुखु पावउ होहु क्रिपाल त भउजलु तरना ॥ अभै दानु नामु हरि पाइओ सिरु डारिओ नानक संत चरना ॥ २ ॥ ९ ॥

हे ठाकुर जी! मुझे तुम्हारा ही आसरा है। मेरा मान-महत्व तुझ पर निर्भर है, तुम्हारा ही अवलम्ब है, तुम्हारी शरण में आया हूँ॥१॥ रहाउ॥ मुझे तुम्हारी ही आशा है, तुम्हारा ही भरोसा है और तुम्हारा ही नाम हृदय में धारण करता हूँ। मुझे तुम्हारा ही बल है, तेरे साथ ही सुखी हूँ,

जो-जो कहते हो, मैं वही करता हूँ॥१॥ तुम्हारी दया से ही सुख पाता हूँ, यदि तू कृपालु हो जाए तो संसार-सागर से पार उतर सकता हूँ। नानक का कथन है कि जब संतों के चरणों में नतमस्तक हो गया तो अभयदान हरिनाम पा लिया॥२॥६॥

कानड़ा महला ५ ॥ साध सरनि चरन चितु लाइआ ॥ सुपन की बात सुनी पेखी सुपना नाम मंत्रु सतिगुरू द्रिड़ाइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नह त्रिपतानो राज जोबनि धनि बहुरि बहुरि फिरि धाइआ ॥ सुखु पाइआ त्रिसना सभ बुझी है सांति पाई गुन गाइआ ॥ १ ॥ बिनु बूझे पसू की निआई भ्रमि मोहि बिआपिओ माइआ ॥ साधसंगि जम जेवरी काटी नानक सहजि समाइआ ॥ २ ॥ १० ॥

साधु महापुरुष के चरण-कमल में मन लगाया है। मैंने दुनिया के सपना होने की बात सुनी थी, अब सच्चे गुरु ने नाम उपदेश दिया तो सच्चाई को देख लिया है कि यह सपना ही है॥१॥ रहाउ॥ राज्य, यौवन, धन-दौलत इत्यादि से व्यक्ति तृप्त नहीं होता और बार-बार अधिकाधिक पाने की लालसा करता है। परमात्मा के गुणगान से शान्ति प्राप्त होती है, सब तृष्णा बुझ जाती है और सुख ही सुख मिलता है॥१॥ सत्य को समझे बिना जीव पशु की तरह है और भ्रम, मोह एवं माया में ही व्याप्त रहता है। हे नानक! साधु पुरुष के साथ हमारी मृत्यु की जंजीर कट गई है और स्वाभाविक ही सत्य में लीन हो गया हूँ॥२॥१०॥

कानड़ा महला ५ ॥ हरि के चरन हिरदै गाइ ॥ सीतला सुख सांति मूरति सिमरि सिमरि नित धिआइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सगल आस होत पूरन कोटि जनम दुखु जाइ ॥ १ ॥ पुंन दान अनेक किरिआ साधू संगि समाइ ॥ ताप संताप मिटे नानक बाहुड़ि कालु न खाइ ॥ २ ॥ ११ ॥

परमात्मा के चरणों का हृदय में स्तुतिगान करो, शीतल सुख शान्ति की मूर्ति प्रभु का नित्य स्मरण करो॥१॥ रहाउ॥ इसके फलस्वरूप सब आशाएँ पूर्ण होती हैं और करोड़ों जन्मों के दुख दूर हो जाते हैं॥१॥ साधुजनों के साथ दान-पुण्य एवं अनेक कर्मों का फल है। हे नानक! इस तरह सब ताप-संताप मिट जाते हैं और पुनः मृत्यु भी ग्रास नहीं बनाती॥२॥११॥

कानड़ा महला ५ घरु ३ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

कथीऐ संतसंगि प्रभ गिआनु ॥ पूरन परम जोति परमेसुर सिमरत पाईऐ मानु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आवत जात रहे स्रम नासे सिमरत साधू संगि ॥ पतित पुनीत होहि खिन भीतरि पारब्रहम कै रंगि ॥ १ ॥ जो जो कथै सुनै हरि कीरतनु ता की दुरमति नास ॥ सगल मनोरथ पावै नानक पूरन होवै आस ॥ २ ॥ १ ॥ १२ ॥

संत-महापुरुषों के साथ प्रभु का ज्ञान कथन करना चाहिए। पूर्ण परम ज्योति परमेश्वर का सुमिरन करने से मान-सम्मान प्राप्त होता है॥१॥ रहाउ॥ साधुओं के साथ भगवान का स्मरण करने से आवागमन दूर हो जाता है और हर श्रम नष्ट हो जाता है। परब्रह्म के रंग में लीन होने वाले पापी भी पल में पावन हो जाते हैं॥१॥ जो-जो हरि-कीर्तन सुनता या कथन करता, उसकी दुर्मति नाश हो जाती है। हे नानक! वह सभी मनोरथ प्राप्त करता है और उसकी हर आशा पूर्ण होती है॥२॥१॥१२॥

कानड़ा महला ५ ॥ साधसंगति निधि हरि को नाम ॥ संगि सहाई जीअ कै काम ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संत रेनु निति मजनु करै ॥ जनम जनम के किलबिख हरै ॥ १ ॥ संत जना की ऊची बानी ॥ सिमरि सिमरि तरे नानक प्रानी ॥ २ ॥ २ ॥ १३ ॥

साधु पुरुषों की संगत में सुखों का भण्डार हरिनाम है, यही सच्चा साथी एवं सहायक है, जो जीव के काम आता है॥१॥ रहाउ॥ नित्य संतों की चरणरज में स्नान करना चाहिए, इससे जन्म-जन्मांतर के पाप खत्म हो जाते हैं॥१॥ संतजनों की वाणी बहुत ऊँची है, हे नानक! स्मरण करने वाला प्राणी संसार-समुद्र से पार हो जाता है॥२॥२॥१३॥

कानड़ा महला ५ ॥ साधू हरि हरे गुन गाइ ॥ मान तनु धनु प्रान प्रभ के सिमरत दुखु जाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ईत ऊत कहा लुोभावहि एक सिउ मनु लाइ ॥ १ ॥ महा पवित्र संत आसनु मिलि संगि गोबिदु धिआइ ॥ २ ॥ सगल तिआगि सरनि आइओ नानक लेहु मिलाइ ॥ ३ ॥ ३ ॥ १४ ॥

हे साधु पुरुषो! परमात्मा का गुण-गान करो। मान-सम्मान, तन, धन, प्रण सब यही है और प्रभु के स्मरण से सब दुख दूर हो जाते हैं॥१॥ रहाउ॥ इधर-उधर क्यों लोभ करते हो, एक ईश्वर में मन लगाओ॥१॥ संतों का स्थान महा पवित्र है, इनके साथ मिलकर ईश्वर का चिंतन करो ॥२॥ नानक की विनती है कि मैं सब त्याग कर शरण में आया हूँ, साथ मिला लो॥३॥३॥१४॥

कानड़ा महला ५ ॥ पेखि पेखि बिगसाउ साजन प्रभु आपना इकांत ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आनदा सुख सहज मूरति तिसु आन नाही भांति ॥ १ ॥ सिमरत इक बार हरि हरि मिटि कोटि कसमल जांति ॥ २ ॥ गुण रमंत दूख नासहि रिद भइअंत सांति ॥ ३ ॥ अंम्रिता रसु पीउ रसना नानक हरि रंगि रात ॥ ४ ॥ ४ ॥ १५ ॥

मैं अपने सज्जन प्रभु को देख-देख कर खुशी मनाता हूँ॥१॥ रहाउ॥ वह आनंद एवं परम सुख की मूर्ति है, उसके अलावा अन्य कुछ भी अच्छा नहीं लगता॥१॥ एक बार परमात्मा का स्मरण करने से करोड़ों पाप-दोष मिट जाते हैं॥२॥ उसका गुणानुवाद करने से दुख नाश हो जाते हैं और हृदय को शान्ति प्राप्त होती है॥३॥ नानक की विनती है कि ईश्वर के रंग में लीन होकर रसना से हरिनाम रूपी अमृत रस का पान करो॥४॥४॥१५॥

कानड़ा महला ५ ॥ साजना संत आउ मेरै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आनदा गुन गाइ मंगल कसमला मिटि जाहि परेरै ॥ १ ॥ संत चरन धरउ माथै चांदना ग्रिहि होइ अंधेरै ॥ २ ॥ संत प्रसादि कमलु बिगसै गोबिंद भजउ पेखि नेरै ॥ ३ ॥ प्रभ क्रिपा ते संत पाए वारि वारि नानक उह बेरै ॥ ४ ॥ ५ ॥ १६ ॥

हे सज्जनो, संत पुरुषो! मेरे पास आओ॥१॥ रहाउ॥ संतों के संग परमात्मा का गुणानुवाद करने से आनंद एवं खुशियां मिलती हैं और सब पाप-दोष मिट जाते हैं॥१॥ संतों के चरणों में शीश नवाने से अंधेरे घर में रोशनी हो जाती है॥२॥ संतों की कृपा से हृदय कमल खिल उठता है और ईश्वर को निकट मानकर उसका ही भजन होता है॥३॥ हे नानक! प्रभु की कृपा से जब संतों को पाया था, उस शुभ समय पर कुर्बान जाता हूँ॥४॥५॥१६॥

कानड़ा महला ५ ॥ चरन सरन गोपाल तेरी ॥ मोह मान धोह भरम राखि लीजै काटि बेरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बूडत संसार सागर ॥ उधरे हरि सिमरि रतनागर ॥ १ ॥ सीतला हरि नामु तेरा ॥ पूरनो ठाकुर

प्रभु मेरा ॥ २ ॥ दीन दरद निवारि तारन ॥ हरि क्रिपा निधि पतित उधारन ॥ ३ ॥ कोटि जनम दूख करि पाइओ ॥ सुखी नानक गुरि नामु द्रिड़ाइओ ॥ ४ ॥ ६ ॥ १७ ॥

हे ईश्वर ! मैं तेरे चरणों की शरण में आया हूँ। मोह, अभिमान, धोखे एवं भ्रम की जंजीर को काट कर मुझे बचा लो॥१॥ रहाउ॥ मैं संसार-सागर में डूब रहा था लेकिन परमात्मा के स्मरण से संसार-समुद्र से पार हो गया हूँ॥१॥ हे परमेश्वर! तेरा नाम मन को शीतलता प्रदान करने वाला है, तू ही मेरा पूर्ण मालिक है॥२॥ तू दीनों का दर्द दूर करके पार उतारने वाला है। परमात्मा कृपा का भण्डार है, पतितों का उद्धार करने वाला है॥३॥ करोड़ों जन्म दुख ही पाया था, नानक का कथन है कि जब से गुरु ने हरिनाम दृढ़ करवाया है, सुखी हूँ॥४॥६॥१७॥

कानड़ा महला ५ ॥ धनि उह प्रीति चरन संगि लागी ॥ कोटि जाप ताप सुख पाए आइ मिले पूरन बडभागी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मोहि अनाथु दासु जनु तेरा अवर ओट सगली मोहि तिआगी ॥ भोर भरम काटे प्रभ सिमरत गिआन अंजन मिलि सोवत जागी ॥ १ ॥ तू अथाहु अति बडो सुआमी क्रिपा सिंधु पूरन रतनागी ॥ नानकु जाचकु हरि हरि नामु मांगै मसतकु आनि धरिओ प्रभ पागी ॥ २ ॥ ७ ॥ १८ ॥

परमात्मा के चरणों में लगा वह प्रेम धन्य है। इससे करोड़ों जप, तपस्या का फल एवं सुख प्राप्त हुआ है और पूर्ण भाग्यशाली हूँ, जो प्रभु से आ मिला हूँ॥१॥ रहाउ॥ हे प्रभु! मैं अनाथ तेरा दास हूँ, मैंने अन्य सब आसरे त्याग दिए हैं। प्रभु के स्मरण से छोटा-सा भ्रम भी कट गया है और ज्ञान का अञ्जन लगाने से मोह-माया की नींद से जाग गया हूँ॥१॥ तू अथाह है, बहुत बड़ा स्वामी है, कृपा का समुद्र एवं पूर्ण रत्नों की खान है। नानक विनती करता है कि हे प्रभु! मैं याचक बनकर हरिनाम ही मांगता हूँ और अपना मस्तक भी तेरे चरणों में धरता हूँ॥२॥७॥१८॥

कानड़ा महला ५ ॥ कुचिल कठोर कपट कामी ॥ जिउ जानहि तिउ तारि सुआमी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तू समरथु सरनि जोगु तू राखहि अपनी कल धारि ॥ १ ॥ जाप ताप नेम सुचि संजम नाही इन बिधे छुटकार ॥ गरत घोर अंध ते काढहु प्रभ नानक नदरि निहारि ॥ २ ॥ ८ ॥ १९ ॥

मैं मैला, कठोरदिल, धोखेबाज एवं कामी हूँ। हे स्वामी! जैसे भी ठीक लगे, मुझे संसार-सागर से मुक्त कर दो॥१॥ रहाउ॥ तू समर्थ है, शरण देने योग्य है, अपनी शक्ति से मुझे बचा लो॥१॥ पूजा-पाठ, तपस्या, नियम, शुद्धता एवं संयम इत्यादि इन तरीकों से छुटकारा संभव नहीं। नानक प्रार्थना करता है कि हे प्रभु! मैं माया के घोर अंधेरे में गत हूँ, कृपा-दृष्टि करके बाहर निकाल लो॥२॥८॥१९॥

कानड़ा महला ५ घरु ४ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

नाराइन नरपति नमसकारै ॥ ऐसे गुर कउ बलि बलि जाईऐ आपि मुकतु मोहि तारै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कवन कवन कवन गुन कहीऐ अंतु नही कछु पारै ॥ लाख लाख लाख कई कोरै को है ऐसो बीचारै ॥ १ ॥ बिसम बिसम बिसम ही भई है लाल गुलाल रंगारै ॥ कहु नानक संतन रसु आई है जिउ चाखि गूंगा मुसकारै ॥ २ ॥ १ ॥ २० ॥

जो नारायण-स्वरूप परम परमेश्वर को प्रणाम करता है, ऐसे गुरु को कुर्बान जाता हूँ, जो स्वयं तो संसार के बन्धनों से मुक्त है, मुझे भी पार उतार देता है॥१॥ रहाउ॥ उसके किस-किस गुण का कथन किया जाए, कोई अंत एवं आर-पार नहीं। लाखों एवं कई करोड़ों में कौन ऐसा व्यक्ति है, जो सबका विचार करता है॥१॥ दुनिया उसके प्रेम लाल रंग में आश्चर्यचकित हो गई है। हे नानक ! संत पुरुषों को ऐसा आनंद प्राप्त होता है, ज्यों गूँगा मिठाई खाकर मुस्कुराहट व्यक्त करता है॥२॥१॥२०॥

कानड़ा महला ५ ॥ न जानी संतन प्रभ बिनु आन ॥ ऊच नीच सभ पेखि समानो मुखि बकनो मनि मान ॥ १ ॥ रहाउ ॥ घटि घटि पूरि रहे सुख सागर भै भंजन मेरे प्रान ॥ मनहि प्रगासु भइओ भ्रमु नासिओ मंत्रु दीओ गुर कान ॥ १ ॥ करत रहे क्रतग्य करुणा मै अंतरजामी ग्यान ॥ आठ पहर नानक जसु गावै मांगन कउ हरि दान ॥ २ ॥ २ ॥ २१ ॥

भक्तजन प्रभु के सिवा किसी अन्य को नहीं जानते। कोई ऊँचा हो अथवा नीचा हो, वे सब को समान ही मानते हैं। वे मुँह से प्रभु का भजन करते हैं और मन में उसी का मनन करते हैं॥१॥ रहाउ॥ घट घट में सुखों का सागर ईश्वर ही व्याप्त है, वह सब भय नाश करने वाला है, वही मेरे प्राण हैं। गुरु ने मुझे ऐसा मंत्र दिया है, जिससे मन में प्रकाश हो गया है और भ्रम नष्ट हो गया है॥१॥ वह करुणामय, ज्ञान का सागर, अन्तर्यामी हमें कृतार्थ करता रहता है। गुरु नानक का कथन है कि परमात्मा से भक्ति दान मांगने के लिए वह आठ प्रहर उसी का यशोगान करता है॥२॥२॥२१॥

कानड़ा महला ५ ॥ कहन कहावन कउ कई केतै ॥ ऐसो जनु बिरलो है सेवकु जो तत जोग कउ बेतै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दुखु नाही सभु सुखु ही है रे एकै एकी नेतै ॥ बुरा नही सभु भला ही है रे हार नही सभ जेतै ॥ १ ॥ सोगु नाही सदा हरखी है रे छोडि नाही किछु लेतै ॥ कहु नानक जनु हरि हरि हरि है कत आवै कत रमतै ॥ २ ॥ ३ ॥ २२ ॥

कहने-कहलवाने वाले तो पता नहीं कितने ही हैं, परन्तु ऐसा कोई सेवक विरला ही होता है जो तत्ववेत्ता कहलाता है॥१॥ रहाउ॥ ऐसे भक्त एक ईश्वर को ही नयनों में बसाकर रखते हैं, उनके लिए कोई दुख नहीं होता अपितु सब सुख ही सुख मानते हैं। उनके लिए कोई बुरा नहीं, सब भला ही भला है, वे सदैव विजय प्राप्त करते हैं और जीवन में कभी हार नहीं मानते॥१॥ उनके लिए कोई गम नहीं, सदा खुशी ही रहती है और भक्ति के आनंद को छोड़कर कुछ भी नहीं लेते। हे नानक ! हरि-भक्त हरि की भक्ति में लीन रहता है, वह कहाँ आता और कहाँ भटकता है अर्थात् आवागमन से मुक्त हो जाता है॥२॥३॥२२॥

कानड़ा महला ५ ॥ हीए को प्रीतमु बिसरि न जाइ ॥ तन मन गलत भए तिह संगे मोहनी मोहि रही मोरी माइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जै जै पहि कहउ ब्रिथा हउ अपुनी तेऊ तेऊ गहे रहे अटकाइ ॥ अनिक भांति की एकै जाली ता की गंठि नही छोराइ ॥ १ ॥ फिरत फिरत नानक दासु आइओ संतन ही सरनाइ ॥ काटे अगिआन भरम मोह माइआ लीओ कंठि लगाइ ॥ २ ॥ ४ ॥ २३ ॥

मेरे हृदय से प्रियतम प्रभु भूल मत जाना, मेरा तन मन उसी में लीन है, पर मोहिनी माया भी मुझे मोह रही है॥१॥ रहाउ॥ जिस-जिसके पास अपनी व्यथा बताता हूँ, वही व्यक्ति को माया ने जकड़ा और अटका रखा है, यह अनेक प्रकार का एक मायाजाल है, उसकी गांठ छुड़ाई नहीं

जा सकती॥ १॥ दास नानक भटक-भटक कर संत पुरुषों की शरण में आया है। उन्होंने मेरे अज्ञान, भ्रम, मोह-माया का जाल काटकर गले लगा लिया है॥ २॥ ४॥ २३॥

कानड़ा महला ५ ॥ आनद रंग बिनोद हमारै ॥ नामो गावनु नामु धिआवनु नामु हमारे प्रान अधारै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नामो गिआनु नामु इसनाना हरि नामु हमारे कारज सवारै ॥ हरि नामो सोभा नामु बडाई भउजलु बिखमु नामु हरि तारै ॥ १ ॥ अगम पदारथ लाल अमोला भइओ परापति गुर चरनारै ॥ कहु नानक प्रभ भए क्रिपाला मगन भए हीअरै दरसारै ॥ २ ॥ ५ ॥ २४ ॥

हमारे यहाँ आनंद, खुशियाँ एवं हर्षोल्लास बन गया है। हम हरिनाम का गुण-गान करते हैं, नाम का ही ध्यान-मनन करते हैं और हरिनाम ही हमारे प्राणों का आधार है॥ १॥ रहाउ॥ हरिनाम ही हमारा ज्ञान एवं स्नान है, हरिनाम का मनन हमारे सब कार्य सम्पन्न करता है। हरिनाम से ही शोभा एवं कीर्ति प्राप्त होती है, हरिनाम भयानक संसार-समुद्र से तारने वाला है॥ १॥ यह अगम्य, अमूल्य हरिनाम रूपी पदार्थ गुरु के चरणों में प्राप्त हुआ है। हे नानक ! प्रभु की कृपा हुई तो हृदय में उसके दर्शन करके अन्तर्मन उसी में मग्न हो गया॥ २॥ ५॥ २४॥

कानड़ा महला ५ ॥ साजन मीत सुआमी नेरो ॥ पेखत सुनत सभन कै संगे थोरै काज बुरो कह फेरो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नाम बिना जेतो लपटाइओ कछू नही नाही कछु तेरो ॥ आगै द्रिसटि आवत सभ परगट ईहा मोहिओ भरम अंधेरो ॥ १ ॥ अटकिओ सुत बनिता संग माइआ देवनहारु दातारु बिसेरो ॥ कहु नानक एकै भारोसउ बंधन काटनहारु गुरु मेरो ॥ २ ॥ ६ ॥ २५ ॥

हमारा सज्जन, मित्र, स्वामी निकट ही है। वह सबके साथ रहकर देखता एवं सुनता है, फिर छोटे से जीवन में भला क्यों बुरे काम करते हो॥ १॥ रहाउ॥ हरिनाम स्मरण के बिना जितना भी दुनिया के रंगों में लिपटते हो, इन में से कुछ भी तेरा नहीं। आगे परलोक में किए सब कर्म प्रगट हो जाते हैं, क्यों भ्रम के अंधेरे में यहाँ मोहित हो॥ १॥ जीव अपने पुत्र, पत्नी एवं धन-दौलत में अटका हुआ है और देने वाले दाता को उसने भुला दिया है। हे नानक ! मुझे तो केवल सब बन्धन काटने वाले मेरे गुरु पर ही भरोसा है॥ २॥ ६॥ २५॥

कानड़ा महला ५ ॥ बिखै दलु संतनि तुम्हरै गाहिओ ॥ तुमरी टेक भरोसा ठाकुर सरनि तुम्हारी आहिओ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जनम जनम के महा पराछत दरसनु भेटि मिटाहिओ ॥ भइओ प्रगासु अनद उजीआरा सहजि समाधि समाहिओ ॥ १ ॥ कउनु कहै तुम ते कछु नाही तुम समरथ अथाहिओ ॥ क्रिपा निधान रंग रूप रस नामु नानक लै लाहिओ ॥ २ ॥ ७ ॥ २६ ॥

मैंने तुम्हारे भक्तजनों की मदद से विषय-विकारों के दल को कुचल दिया है। हे ठाकुर ! तुम्हारा ही आसरा एवं भरोसा है, तुम्हारी शरण में आया हूँ॥ १॥ रहाउ॥ तुम्हारे दर्शनों से जन्म-जन्म के बड़े पाप-दोष मिट गए हैं। मन में आनंद के उजाले से प्रकाश हो गया है, स्वाभाविक समाधि में लीन हूँ॥ १॥ तुम सर्वशक्तिमान एवं अथाह हो, फिर भला कौन कहता है कि तुम से कुछ नहीं होता। नानक विनती करते हैं कि हे कृपा के भण्डार ! तुम्हारे नाम से सब रंग, रूप एवं रस इत्यादि प्राप्त हो गए हैं॥ २॥ ७॥ २६॥

कानड़ा महला ५ ॥ बूडत प्रानी हरि जपि धीरै ॥ बिनसै मोहु भरमु दुखु पीरै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सिमरउ दिनु रैनि गुर के चरना ॥ जत कत पेखउ तुमरी सरना ॥ १ ॥ संत प्रसादि हरि के गुन गाइआ ॥ गुर भेटत नानक सुखु पाइआ ॥ २ ॥ ८ ॥ २७ ॥

डूबते हुए प्राणी को ईश्वर के जाप से ही धैर्य प्राप्त होता है। फिर मोह, भ्रम एवं उसके दुखों की पीड़ा समाप्त हो जाती है॥१॥ रहाउ॥ मैं दिन-रात गुरु के चरणों का स्मरण करता हूँ, जिधर देखता हूँ, तुम्हारी शरण पाता हूँ॥१॥ संतों की कृपा से ईश्वर का गुणगान किया है। हे नानक! गुरु को मिल कर सुख पा लिया है॥२॥८॥२७॥

कानड़ा महला ५ ॥ सिमरत नामु मनहि सुखु पाईऐ ॥ साध जना मिलि हरि जसु गाईऐ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करि किरपा प्रभ रिदै बसेरो ॥ चरन संतन कै माथा मेरो ॥ १ ॥ पारब्रहम कउ सिमरहु मनां ॥ गुरमुखि नानक हरि जसु सुनां ॥ २ ॥ ६ ॥ २८ ॥

ईश्वर के नाम-स्मरण से मन में सुख प्राप्त होता है। अतः साधु-महात्मा जनों के साथ मिलकर भगवान का यश गाना चाहिए॥१॥ रहाउ॥ हे प्रभु! कृपा करके हृदय में बसे रहो, मेरा माथा संतों के चरणों में पड़ा हुआ है॥१॥ मन में परब्रह्म का चिंतन करो। नानक का कथन है कि गुरु से परमात्मा का यश सुनो॥२॥६॥२८॥

कानड़ा महला ५ ॥ मेरे मन प्रीति चरन प्रभ परसन ॥ रसना हरि हरि भोजनि त्रिपतानी अखीअन कउ संतोखु प्रभ दरसन ॥ १ ॥ रहाउ ॥ करननि पूरि रहिओ जसु प्रीतम कलमल दोख सगल मल हरसन ॥ पावन धावन सुआमी सुख पंथा अंग संग काइआ संत सरसन ॥ १ ॥ सरनि गही पूरन अबिनासी आन उपाव थकित नही करसन ॥ करु गहि लीए नानक जन अपने अंध घोर सागर नही मरसन ॥ २ ॥ १० ॥ २६ ॥

मेरे मन में प्रभु के चरण स्पर्श की प्रीति लगी हुई है। यह जिह्वा हरिनाम भोजन से तृप्त हो गई है और प्रभु के दर्शनों से आँखों को संतोष प्राप्त हुआ है॥१॥ रहाउ॥ कानों में प्रियतम प्रभु का यश भर रहा है, जिसके फलस्वरूप सब पाप-दोष दूर हो गए हैं। यह पैर स्वामी की ओर दौड़ते हैं, जो सुख का रास्ता है और यह शरीर संतों के संग खिला रहता है॥१॥ अन्य उपायों से थक कर सब छोड़कर पूर्ण अविनाशी प्रभु की शरण ली है। हे नानक! ईश्वर ने अपने सेवक का हाथ थामकर बचा लिया है और अब वह भयानक संसार-सागर में नहीं डूबता॥२॥१०॥२६॥

कानड़ा महला ५ ॥ कुहकत कपट खपट खल गरजत मरजत मीचु अनिक बरीआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अहं मत अन रत कुमित हित प्रीतम पेखत भ्रमत लाख गरीआ ॥ १ ॥ अनित बिउहार अचार बिधि हीनत मम मद मात कोप जरीआ ॥ करुण क्रिपाल गोपाल दीन बंधु नानक उधरु सरनि परीआ ॥ २ ॥ ११ ॥ ३० ॥

जिनके अन्तर्मन में नष्ट करने वाला कपट चिल्लाता है, कामादिक दुष्ट गर्जता है, ऐसे लोग अनेक बार मृत्यु को प्राप्त होते हैं॥१॥ रहाउ॥ मैं अभिमान एवं अन्य रसों में लीन हूँ। दुष्टों से प्रेम बनाया हुआ है। हे प्रियतम प्रभु! तुम देख ही रहे हो कि मैं लाखों गलियों में भटक रहा हूँ॥१॥ मेरा आचरण व्यवहार बुरा है, मैं अनियमित जीवन बिताता हूँ और ममता के नशे में मस्त होकर क्रोध की अग्नि में जलता रहता हूँ। हे परमेश्वर! तू करुणामय, कृपालु एवं दीनों का हमदर्द है, नानक तेरी शरण में पड़ा है, उद्धार कर दो॥२॥११॥३०॥

कानड़ा महला ५ ॥ जीअ प्रान मान दाता ॥ हरि बिसरते ही हानि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गोबिंद तिआगि आन लागहि अंम्रितो डारि भूमि पागहि ॥ बिखै रस सिउ आसकत मूड़े काहे सुख मानि ॥ १ ॥ कामि क्रोधि लोभि बिआपिओ जनम ही की खानि ॥ पतित पावन सरनि आइओ उधरु नानक जानि ॥ २ ॥ १२ ॥ ३१ ॥

परमात्मा हमें जीवन, प्राण एवं मान-सम्मान देने वाला है। उस दाता प्रभु को भुलाने से हानि ही होती है॥ १॥ रहाउ॥ ईश्वर को त्याग कर अन्य भौतिक पदार्थों में लगने वाले लोग अमृत को फैंककर धूल ही चाटते हैं। मूर्ख लोग विषय-विकारों के रस में आसक्त रहते हैं, फिर भला कैसे सुख पा सकते हैं॥ १॥ काम, क्रोध एवं लोभ में लीन रहना ही जन्म-मरण का मूल कारण है। नानक की विनती है कि यह समझ लो कि पतितपावन परमेश्वर की शरण में आने से मुक्ति होती है॥ २॥ १२॥ ३१॥

कानड़ा महला ५ ॥ अविलोकउ राम को मुखारबिंद ॥ खोजत खोजत रतनु पाइओ बिसरी सभ चिंद ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चरन कमल रिदै धारि ॥ उतरिआ दुखु मंद ॥ १ ॥ राज धनु परवारु मेरै सरबसो गोबिंद ॥ साधसंगमि लाभु पाइओ नानक फिरि न मरंद ॥ २ ॥ १३ ॥ ३२ ॥

मैं परमात्मा के मुखमण्डल को निहारता हूँ। खोजते-खोजते मैंने हरिनाम रत्न पा लिया है, जिससे मेरी सब चिन्ताएँ दूर हो गई हैं॥ १॥ रहाउ॥ जब से परमात्मा के चरण-कमल को हृदय में धारण किया है, दुख-क्लेश दूर हो गया है॥ १॥ मेरा राज्य, धन, परिवार इत्यादि सर्वस्व ईश्वर ही है। हे नानक ! साधु-पुरुषों की संगत में ऐसा लाभ पाया है कि जन्म-मरण से मुक्त हो गया हूँ॥ २॥ १३॥ ३२॥

कानड़ा महला ५ घरु ५ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

प्रभ पूजहो नामु अराधि ॥ गुर सतिगुर चरनी लागि ॥ हरि पावहु मनु अगाधि ॥ जगु जीतो हो हो गुर किरपाधि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनिक पूजा मै बहु बिधि खोजी सा पूजा जि हरि भावासि ॥ माटी की इह पुतरी जोरी किआ एह करम कमासि ॥ प्रभ बाह पकरि जिसु मारगि पावहु सो तुधु जंत मिलासि ॥ १ ॥ अवर ओट मै कोइ न सूझै इक हरि की ओट मै आस ॥ किआ दीनु करे अरदासि ॥ जउ सभ घटि प्रभू निवास ॥ प्रभ चरनन की मनि पिआस ॥ जन नानक दासु कहीअतु है तुम्हरा हउ बलि बलि सद बलि जास ॥ २ ॥ १ ॥ ३३ ॥

प्रभु की पूजा करो, हरिनाम की आराधना करो, गुरु के चरणों में तल्लीन रहो। निष्ठापूर्वक मन में ही परमात्मा को पा लो। गुरु की कृपा से जगत को जीत लो॥ १॥ रहाउ॥ मैंने अनेक प्रकार से पूजा-अर्चना की है, लेकिन पूजा वही है, जो परमात्मा को अच्छी लगती है। मिट्टी के पुतले मानव में क्या बल है कि वह कोई कर्म कर सके। प्रभु बांह पकड़कर जिस मार्ग पर लगा देता है, जीव उसी में मिल जाता है॥ १॥ मुझे अन्य कोई आसरा नहीं सूझता, केवल ईश्वर का आसरा ही मेरी आशा है। यह दीन क्या प्रार्थना करे, जब सब में प्रभु ही व्याप्त है। मुझे तो प्रभु के चरणों की मन में प्यास लगी हुई है। नानक का कथन है कि हे प्रभु ! मैं तुम्हारा दास कहलाता हूँ और सदैव तुझ पर कुर्बान जाता हूँ॥ २॥ १॥ ३३॥

कानड़ा महला ५ घरु ६ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

जगत उधारन नाम प्रिअ तैरै ॥ नव निधि नामु निधानु हरि कैरै ॥ हरि रंग रंग रंग अनूपैरै ॥ काहे रे मन मोहि मगनैरै ॥ नैनहु देखु साध दरसैरै ॥ सो पावै जिसु लिखतु लिलैरै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सेवउ साध संत चरनैरै ॥ बांछउ धूरि पवित्र करैरै ॥ अठसठि मजनु मैलु कटैरै ॥ सासि सासि धिआवहु मुखु

नही मोरै ॥ किछु संगि न चालै लाख करोरै ॥ प्रभ जी को नामु अंति पुकरोरै ॥ १ ॥ मनसा मानि एक निरंकेरै ॥ सगल तिआगहु भाउ दूजेरै ॥ कवन कहां हउ गुन प्रिअ तेरै ॥ बरनि न साकउ एक टुलेरै ॥ दरसन पिआस बहुतु मनि मेरै ॥ मिलु नानक देव जगत गुर केरै ॥ २ ॥ १ ॥ ३४ ॥

हे प्रभु ! तेरा नाम ही संसार का उद्धार करने वाला है। हरि का नाम ही नवनिधि एवं सुखों का भण्डार है। अनेक रंगों में रंगा हुआ प्रभु अद्वितीय है। हे मन ! क्यों मोह-माया में मग्न है। आँखों से साधु-पुरुषों के दर्शन करो। जिसके भाग्य में लिखा होता है, वही प्रभु को पाता है॥१॥ रहाउ॥ मैं साधु-संतों के चरणों की सेवा करता हूँ, उनकी चरण-धूल की अभिलाषा करता हूँ, जो पवित्र कर देती है। यह अड़सठ तीर्थों में स्नान करने के फल समान है, जो पापों की मैल काट देती है। मैं श्वास-श्वास से ईश्वर का ध्यान करता हूँ और उससे विमुख नहीं होता। लाखों-करोड़ों कुछ भी साथ नहीं जाता और प्रभु का नाम ही अंत में सहायक होता है॥१॥ मन में केवल निरंकार का मनन करो और द्वैतभाव सब त्याग दो। हे प्रभु ! मैं तेरे कौन-से गुण का वर्णन करूँ, मैं तो तेरे एक गुण का भी वर्णन नहीं कर सकता। मेरे मन में तेरे दर्शनों की तीव्र लालसा है, हे जगत्-गुरु ! नानक को आन मिलो॥२॥१॥३४॥

कानड़ा महला ५ ॥ ऐसी कउन बिधे दरसन परसना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आस पिआस सफल मूरति उमगि हीउ तरसना ॥ १ ॥ दीन लीन पिआस मीन संतना हरि संतना ॥ हरि संतना की रेन ॥ हीउ अरपि देन ॥ प्रभ भए है किरपेन ॥ मानु मोहु तिआगि छोडिओ तउ नानक हरि जीउ भेटना ॥ २ ॥ २ ॥ ३५ ॥

ऐसा कौन-सा तरीका है, जिससे भगवान के दर्शन हो जाएँ॥१॥ रहाउ॥ सब मनोकामनाएँ पूरी करने वाले प्रभु की तीव्र लालसा लगी हुई है और मन उसके दर्शनों की उमंग में तरस रहा है॥१॥ मैं विनम्रतापूर्वक भक्तजनों की शरण में आया हूँ, प्रभु की प्यास में मछली की तरह तड़प रहा हूँ और हरि-भक्तों की चरणधूल का इच्छुक हूँ। मैंने अपना हृदय भी अर्पण कर दिया है, प्रभु मुझ पर कृपालु हो गया है। हे नानक ! यदि मान-मोह को छोड़ दिया जाए तो ही परमात्मा से भेंट होती है॥२॥२॥३५॥

कानड़ा महला ५ ॥ रंगा रंग रंगन के रंगा ॥ कीट हसत पूरन सभ संगा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बरत नेम तीरथ सहित गंगा ॥ जलु हेवत भूख अरु नंगा ॥ पूजाचार करत मेलंगा ॥ चक्र करम तिलक खाटंगा ॥ दरसनु भेटे बिनु सतसंगा ॥ १ ॥ हठि निग्रहि अति रहत बिटंगा ॥ हउ रोगु बिआपै चुकै न भंगा ॥ काम क्रोध अति त्रिसन जरंगा ॥ सो मुकतु नानक जिसु सतिगुरु चंगा ॥ २ ॥ ३ ॥ ३६ ॥

हे जिज्ञासुओ ! इस जगत-तमाशे में भगवान अनेक प्रकार के रंगों में विद्यमान है। वह कीड़े से लेकर हाथी तक सब में व्याप्त है॥१॥ रहाउ॥ कोई व्रत-उपवास रखता है, कोई नियम धारण करता है, कोई गंगा सहित अनेक तीर्थों में स्नान करता है। कोई जल एवं बर्फ को सहता है, कोई भूखा और कोई नंगा ही रहता है। कुछ लोग पदमासन लगाकर पूजा-अर्चना करते हैं। कई चक्र-कर्म एवं षटांग तिलक करते हैं। इन सबके बावजूद सत्संग के बिना भगवान के दर्शन प्राप्त नहीं होते॥१॥ कोई व्यक्ति हठपूर्वक इन्द्रियों को रोकता है, शीर्षासन लगाता है, लेकिन मन में अहंकार का रोग रहता है, वासनाएं दूर नहीं होतीं। मनुष्य काम-क्रोध एवं तृष्णा की अग्नि में जलता है। गुरु नानक का कथन है कि जिसे सच्चा गुरु मिल जाता है, वह संसार के बन्धनों से मुक्त हो जाता है॥२॥३॥३६॥

कानड़ा महला ५ घरु ७ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

तिख बूझि गई गई मिलि साध जना ॥ पंच भागे चोर सहजे सुखैनो हरे गुन गावती गावती गावती दरस पिआरि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जैसी करी प्रभ मो सिउ मो सिउ ऐसी हउ कैसे करउ ॥ हीउ तुम्हारे बलि बले बलि बले बलि गई ॥ १ ॥ पहिले पै संत पाइ धिआइ धिआइ प्रीति लाइ ॥ प्रभ थानु तेरो केहरो जितु जंतन करि बीचारु ॥ अनिक दास कीरति करहि तुहारी ॥ सोई मिलिओ जो भावतो जन नानक ठाकुर रहिओ समाइ ॥ एक तूही तूही तूही ॥ २ ॥ १ ॥ ३७ ॥

साधुजनों को मिलकर सारी तृष्णा बुझ गई है। परमात्मा के गुण गाते-गाते कामादिक पांच चोर भाग गए हैं, स्वाभाविक सुख प्राप्त हुआ है और प्रभु के दर्शनों से प्रेम बना हुआ है॥ १॥ रहाउ॥ हे प्रभु! तूने मुझ पर जैसा उपकार किया है, मैं वैसा कैसे कर सकता हूँ। मैं हृदय से तुझ पर कुर्बान जाता हूँ॥ १॥ पहले संतों के चरणों में पड़कर प्रेम लगाकर तेरा ध्यान किया है। हे प्रभु! तेरा वह स्थान कैसा है, जहाँ बैठकर तू जीवों के पोषण का विचार करता है। अनेक भक्तजन तेरी कीर्ति करते हैं। नानक का कथन है कि जो चाहता था, वही मिल गया है और ठाकुर जी में ही लीन हूँ। हे परमेश्वर! केवल तू ही (दाता) तू ही (पूज्य) तू ही (सर्वस्व) है॥ २॥ १॥ ३७॥

कानड़ा महला ५ घरु ८ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

तिआगीऐ गुमानु मानु पेखता दइआल लाल हां हां मन चरन रेन ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि संत मंत गुपाल गिआन धिआन ॥ १ ॥ हिरदै गोबिंद गाइ चरन कमल प्रीति लाइ दीन दइआल मोहना ॥ क्रिपाल दइआ मइआ धारि ॥ नानकु मागै नामु दानु ॥ तजि मोहु भरमु सगल अभिमानु ॥ २ ॥ १ ॥ ३८ ॥

मान-अभिमान छोड़ दो, दयालु प्रभु सब देख रहा है। हे मन! प्रभु-चरणों की धूल बन जाओ॥ १॥ रहाउ॥ संतों का मंत्र है कि ईश्वर का ध्यान करो, यही ज्ञान है॥ १॥ हृदय से प्रभु का स्तुतिगान करो, उसके चरण कमल से प्रीति लगाओ, वह दीनों पर दयालु है। हे कृपानिधि! दया करो, नानक तो मोह, भ्रम, अभिमान सब छोड़कर हरिनाम दान ही मांगता है॥ २॥ १॥ ३८॥

कानड़ा महला ५ ॥ प्रभ कहन मलन दहन लहन गुर मिले आन नही उपाउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तटन खटन जटन होमन नाही डंडधार सुआउ ॥ १ ॥ जतन भांतन तपन भ्रमन अनिक कथन कथते नही थाह पाई ठाउ ॥ सोधि सगर सोधना सुखु नानका भजु नाउ ॥ २ ॥ २ ॥ ३९ ॥

प्रभु का भजन पापों की मैल को जला देने वाला है और वह गुरु के साक्षात्कार से ही मिलता है, इसके अतिरिक्त अन्य कोई कारगर उपाय नहीं॥ १॥ रहाउ॥ तीर्थ स्नान, अध्ययन, अध्यापन दान देना अथवा लेना इन षट कर्मों, लम्बी जटाएँ धारण करने, होम-यज्ञ और योगियों की तरह दण्ड लिए घूमना, इनका कोई लाभ नहीं॥ १॥ अनेक प्रकार के यत्नों, तपस्या, देश भ्रमण, अनेक बातें करने का कोई फायदा अथवा ठौर नहीं। हे नानक! भलीभांति विश्लेषण करने के पश्चात् यही माना है कि परमात्मा के भजन से ही सच्चा सुख मिलता है॥ २॥ २॥ ३९॥

कानड़ा महला ५ घरु ६ ੧ओं सतिगुर प्रसादि ॥

पतित पावनु भगति बछलु भै हरन तारन तरन ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नैन तिपते दरसु पेखि जसु तोखि सुनत करन ॥ १ ॥ प्रान नाथ अनाथ दाते दीन गोबिद सरन ॥ आस पूरन दुख बिनासन गही ओट नानक हरि चरन ॥ २ ॥ १ ॥ ४० ॥

हे जिज्ञासुओ ! ईश्वर पतित-पापी लोगों को पावन करने वाला है, भक्तवत्सल, सब भय हरण करने वाला एवं मुक्तिप्रदाता है॥१॥ रहाउ॥ उसके दर्शनों से आँखें तृप्त हो जाती हैं और यश सुनने से कान आनंदित हो जाते हैं॥१॥ वह हमारे प्राणों का नाथ, दीन-दुखियों, अनाथों का दाता है, शरण देने वाला है। गुरु नानक का कथन है कि ईश्वर सब आशाएँ पूरी करने वाला है, दुख-तकलीफ का नाश करने वाला है। अतः उसी के चरणों का आसरा ले लिया है॥२॥१॥४०॥

कानड़ा महला ५ ॥ चरन सरन दइआल ठाकुर आन नाही जाइ ॥ पतित पावन बिरदु सुआमी उधरते हरि धिआइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सैसार गार बिकार सागर पतित मोह मान अंध ॥ बिकल माइआ संगि धंध ॥ करु गहे प्रभ आपि काढहु राखि लेहु गोबिंद राइ ॥ १ ॥ अनाथ नाथ सनाथ संतन कोटि पाप बिनास ॥ मनि दरसनै की पिआस ॥ प्रभ पूरन गुनतास ॥ क्रिपाल दइआल गुपाल नानक हरि रसना गुन गाइ ॥ २ ॥ २ ॥ ४१ ॥

मैं दयालु प्रभु के चरणों की शरण में रहता हूँ, अतः अन्य नहीं जाता। पतितों को पावन करना स्वामी का स्वभाव हैं, जो परमात्मा के ध्यान में लीन रहते हैं, उनकी मुक्ति हो जाती है॥ १॥ रहाउ॥ यह संसार-सागर विकारों के कीचड़ से भरा हुआ है, मुझ सरीखा पतित मोह-अभिमान में अंधा बना हुआ है और माया के धंधों से लिप्त रहता है। प्रभु स्वयं ही हाथ थामकर निकालने वाला है, हे गोविंद ! मुझे बचा लो॥१॥ अनाथों का नाथ, भक्तजनों का स्वामी करोड़ों ही पाप दूर करने वाला है। मन में उसी के दर्शनों की प्यास बनी हुई है। प्रभु गुणों का पूर्ण भण्डार है। वह कृपानिधि सदैव दया करने वाला है, संसार का पालक है। अतः नानक तो हरदम अपनी जीभ से परमात्मा के गुण गाता है॥२॥२॥४१॥

कानड़ा महला ५ ॥ वारि वारउ अनिक डारउ ॥ सुखु प्रिअ सुहाग पलक रात ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कनिक मंदर पाट सेज सखी मोहि नाहि इन सिउ तात ॥ १ ॥ मुकत लाल अनिक भोग बिनु नाम नानक हात ॥ रूखो भोजनु भूमि सैन सखी प्रिअ संगि सूखि बिहात ॥ २ ॥ ३ ॥ ४२ ॥

मैं अपने पति-प्रभु के रात के थोड़े-से सुहाग-सुख पर अनेकों सुख कुर्बान कर दूँ॥१॥ रहाउ॥ हे सत्संगी सखी ! मुझे स्वर्ण सरीखा, सुन्दर घर, रेशमी कपड़ों, सुखदायक सेज इत्यादि इन से कोई रुचि नहीं॥१॥ नानक का कथन है कि परमात्मा के नाम बिना अनेक भोग-विलास एवं हीरे-मोती सब नाशवान हैं। हे सखी ! अपने पति-प्रभु के साथ रुखा-सूखा भोजन एवं भूमि पर शयन इत्यादि ही सुखमय है॥२॥३॥४२॥

कानड़ा महला ५ ॥ अहं तोरो मुखु जोरो ॥ गुरु गुरु करत मनु लोरो ॥ प्रिअ प्रीति पिआरो मोरो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ग्रिहि सेज सुहावी आगनि चैना तोरो री तोरो पंच दूतन सिउ संगु तोरो ॥ १ ॥ आइ न जाइ बसे निज आसनि ऊंध कमल बिगसोरो ॥ छुटकी हउमै सोरो ॥ गाइओ री गाइओ प्रभ नानक गुनी गहेरो ॥ २ ॥ ४ ॥ ४३ ॥

अभिमान छोड़कर प्रभु-भक्ति में लगन लगाओ। गुरु-गुरु जपना ही मन की आकांक्षा बनाओ। प्रिय प्रभु से प्रेम प्रीति लगाए रखो॥ १॥ रहाउ॥ कामादिक पाँच दुष्टों से नाता तोड़ लो, इससे हृदय-घर सुहावनी सेज बन जाएगा और मन रूपी आंगन में सुख-शान्ति हो जाएगी॥ १॥ आवागमन मिट जाएगा, अपने मूल घर में निवास बन जाएगा और हृदय रूपी अर्ध कमल विकसित हो जाएगा। तुम्हारे अहम् का शोर समाप्त हो जाएगा। नानक का कथन है कि हे सत्संगी सखी! हमने गुणों के गहरे सागर प्रभु का स्तुतिगान किया है॥ २॥ ४॥ ४३॥

कानड़ा मः ५ घरु ६ ॥ तां ते जापि मना हरि जापि ॥ जो संत बेद कहत पंथु गाखरो मोह मगन अहं ताप ॥ रहाउ ॥ जो राते माते संगि बपुरी माइआ मोह संताप ॥ १ ॥ नामु जपत सोऊ जनु उधरै जिसहि उधारहु आप ॥ बिनसि जाइ मोह भै भरमा नानक संत प्रताप ॥ २ ॥ ५ ॥ ४४ ॥

हे मन! परमात्मा का जाप करो, संत-महात्मा जनों एवं वेदों का कथन है कि जीवन-मार्ग बहुत कठिन है, जीव मोह, अभिमान के ताप में ही मगन रहता है, तभी तो जाप करने के लिए कहा है॥ रहाउ॥ जो माया के मोह में लीन रहते हैं, वे दुखी ही रहते हैं॥ १॥ परमात्मा का नाम जपकर उसी व्यक्ति का उद्धार होता है, जिसका वह स्वयं उद्धार करता है। हे नानक! संत पुरुषों के प्रताप से मोह, भय एवं भ्रम सब विनष्ट हो जाते हैं॥ २॥ ५॥ ४४॥

कानड़ा महला ५ घरु १० १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

ऐसो दानु देहु जी संतहु जात जीउ बलिहारि ॥ मान मोही पंच दोही उरझि निकटि बसिओ ताकी सरनि साधूआ दूत संगु निवारि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कोटि जनम जोनि भ्रमिओ हारि परिओ दुआरि ॥ १ ॥ किरपा गोबिंद भई मिलिओ नामु अधारु ॥ दुलभ जनमु सफलु नानक भव उतारि पारि ॥ २ ॥ १ ॥ ४५ ॥

हे संत पुरुषो! ऐसा दान दीजिए, जिस पर हमारे प्राण कुर्बान हो जाएं। मैं अहंकार में लीन था, कामादिक पाँच दुष्टों में उलझकर इन्हीं के पास रहता था, इन दुष्टों से छूटने के लिए साधुओं की शरण ग्रहण की है॥ १॥ रहाउ॥ करोड़ों जन्म योनियों में भटकने के पश्चात् हारकर मालिक के द्वार पर आ गया हूँ॥ १॥ ईश्वर की कृपा से हरिनाम का आसरा मिल गया है। हे नानक! हरिनाम से ही दुर्लभ मानव जन्म सफल होता है और जीव संसार-सागर से पार उतर जाता है॥ २॥ १॥ ४५॥

कानड़ा महला ५ घरु ११ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

सहज सुभाए आपन आए ॥ कछू न जानौ कछू दिखाए ॥ प्रभु मिलिओ सुख बाले भोले ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संजोगि मिलाए साध संगाए ॥ कतहू न जाए घरहि बसाए ॥ गुन निधानु प्रगटिओ इह चोलै ॥ १ ॥ चरन लुभाए आन तजाए ॥ थान थनाए सरब समाए ॥ रसकि रसकि नानकु गुन बोलै ॥ २ ॥ १ ॥ ४६ ॥

भगवान सहज स्वाभाविक स्वतः ही मिल गया है। मैं कुछ भी नहीं जानता, यह कौतुक कैसे हो गया है। भोलेपन से प्रभु आ मिला है, जिससे परम सुख पाया है॥ १॥ रहाउ॥ संयोग से साधु पुरुषों की संगत मिल गई है। मन कहीं नहीं भटकता और स्थिर रहता है। वह गुणों का भण्डार इस जन्म

में प्रगट हो गया है॥१॥ अन्य सब छोड़कर प्रभु के चरणों में लगन लग गई है। वह सृष्टि के हर स्थान पर समाया हुआ है। नानक तो मज़े लेकर उसके ही गुण गाता है॥२॥१॥४६॥

कानड़ा महला ५ ॥ गोबिंद ठाकुर मिलन दुराईं ॥ परमिति रूपु अगंम अगोचर रहिओ सरब समाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कहनि भवनि नाही पाइओ पाइओ अनिक उकति चतुराई ॥ १ ॥ जतन जतन अनिक उपाव रे तउ मिलिओ जउ किरपाई ॥ प्रभू दइआर क्रिपार क्रिपा निधि जन नानक संत रेनाई ॥ २ ॥ २ ॥ ४७॥

जगत के ठाकुर प्रभु को मिलना बहुत मुश्किल है, वह अपहुँच, मन-ज्ञानेन्द्रियों से परे, अनुमान से परे, सुन्दर रूप वाला सर्वव्याप्त है॥१॥ रहाउ॥ कथन करने एवं तीर्थ यात्रा का भ्रमण करने से वह पाया नहीं जाता, किसी चतुराई एवं अनेक उक्तियों से भी वह प्राप्त नहीं होता॥१॥ हम बेशक लाखों यत्न कर लें, चाहे अनेक उपाय आजमा लें, वह तभी मिलता है, जब अपनी कृपा करता है। प्रभु दयालु, कृपालु एवं कृपा का घर है और दास नानक केवल संतों की धूल मात्र है॥२॥२॥४७॥

कानड़ा महला ५ ॥ माई सिमरत राम राम राम ॥ प्रभ बिना नाही होरु ॥ चितवउ चरनारबिंद सासन निसि भोर ॥ १ ॥ रहाउ ॥ लाइ प्रीति कीन आपन तूटत नही जोरु ॥ प्रान मनु धनु सरबसो हरि गुन निधे सुख मोर ॥ १ ॥ ईत ऊत राम पूरनु निरखत रिद खोरि ॥ संत सरन तरन नानक बिनसिओ दुखु घोर ॥ २ ॥ ३ ॥ ४८ ॥

हे माई! राम का स्मरण करते रहो, प्रभु के सिवा अन्य कोई सहायक नहीं। सुबह-शाम, श्वास-श्वास से उसके चरणारविंद का चिन्तन करो॥१॥ रहाउ॥ प्रेम लगाकर उसे अपना बना लो, यह प्रेम जोड़ कभी नहीं टूटता। गुणों का भण्डार परमेश्वर ही मेरा प्राण, मन, धन सर्वस्व है, वही मेरा सुख है॥१॥ लोक-परलोक सर्वत्र ईश्वर ही विद्यमान है, मैंने हृदय में झांककर देख लिया है। हे नानक! संतों की शरण में आने से मुक्ति प्राप्त हो जाती है और घोर दुख भी नष्ट हो जाते हैं॥२॥३॥४८॥

कानड़ा महला ५ ॥ जन को प्रभु संगे असनेहु ॥ साजनो तू मीतु मेरा ग्रिहि तेरै सभु केहु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मानु मांगउ तानु मांगउ धनु लखमी सुत देह ॥ १ ॥ मुकति जुगति भुगति पूरन परमानंद परम निधान ॥ भै भाइ भगति निहाल नानक सदा सदा कुरबान ॥ २ ॥ ४ ॥ ४९ ॥

भक्तों का प्रभु से ही प्रेम होता है। हे साजन प्रभु! तू ही मेरा मित्र है, तेरे घर में सब कुछ है॥१॥ रहाउ॥ मैं मान-प्रतिष्ठा, धन-दौलत, पुत्र एवं स्वास्थ्य इत्यादि सब कुछ तुझसे मांगता हूँ॥१॥ वह पूर्ण परमानंद एवं सुखों का घर है, मुक्ति, युक्ति, सब कामनाएँ पूर्ण करने वाला है। नानक का कथन है कि हम उसकी भाव-भक्ति से निहाल हैं और सदैव उस पर कुर्बान जाते हैं॥२॥४॥४९॥

कानड़ा महला ५ ॥ करत करत चरच चरच चरचरी ॥ जोग धिआन भेख गिआन फिरत फिरत धरत धरत धरचरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अहं अहं अहै अवर मूड़ मूड़ मूड़ बवरई ॥ जति जात जात जात सदा सदा सदा सदा काल हई ॥ १ ॥ मानु मानु मानु तिआगि मिरतु मिरतु निकटि निकटि सदा हई ॥ हरि हरे हरे भाजु कहतु नानकु सुनहु रे मूड़ बिनु भजन भजन भजन अहिला जनमु गई ॥ २ ॥ ५ ॥ ५० ॥ १२ ॥ ६२ ॥

योगाभ्यासी, ध्यानशील, वेषाडम्बरी, ज्ञानवान, भ्रमण करने वाले तथा धरती पर रहने वाले सब लोग परमात्मा की चर्चा करते रहते हैं॥१॥ रहाउ॥ कई लोग अभिमान में लीन रहते हैं और कई मूर्ख बावले हुए फिरते हैं। वे जहाँ-जहाँ जाते हैं, मृत्यु सदैव बनी रहती है॥१॥ मान-अभिमान त्याग दो, मृत्यु सदा पास है। परमात्मा का भजन करो, नानक कहते हैं कि अरे मूर्ख ! मेरी बात सुन, भगवान के भजन बिना जीवन व्यर्थ जा रहा है॥२॥५॥५०॥१२॥६२॥

कानड़ा असटपदीआ महला ४ घरु १ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

जपि मन राम नामु सुखु पावैगो ॥ जिउ जिउ जपै तिवै सुखु पावै सतिगुरु सेवि समावैगो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ भगत जनां की खिनु खिनु लोचा नामु जपत सुखु पावैगो ॥ अन रस साद गए सभ नीकरि बिनु नावै किछु न सुखावैगो ॥ १ ॥ गुरमति हरि हरि मीठा लागा गुरु मीठे बचन कढावैगो ॥ सतिगुर बाणी पुरखु पुरखोतम बाणी सिउ चितु लावैगो ॥ २ ॥ गुरबाणी सुनत मेरा मनु द्रविआ मनु भीना निज घरि आवैगो ॥ तह अनहत धुनी बाजहि नित बाजे नीझर धार चुआवैगो ॥ ३ ॥ राम नामु इकु तिल तिल गावै मनु गुरमति नामि समावैगो ॥ नामु सुणै नामो मनि भावै नामे ही त्रिपतावैगो ॥ ४ ॥ कनिक कनिक पहिरे बहु कंगना कापरु भांति बनावैगो ॥ नाम बिना सभि फीक फिकाने जनमि मरै फिरि आवैगो ॥ ५ ॥ माइआ पटल पटल है भारी घरु घूमनि घेरि घुलावैगो ॥ पाप बिकार मनूर सभि भारे बिखु दुतरु तरिओ न जावैगो ॥ ६ ॥ भउ बैरागु भइआ है बोहिथु गुरु खेवटु सबदि तरावैगो ॥ राम नामु हरि भेटीऐ हरि रामै नामि समावैगो ॥ ७ ॥ अगिआनि लाइ सवालिआ गुर गिआनै लाइ जगावैगो ॥ नानक भाणै आपणै जिउ भावै तिवै चलावैगो ॥ ८ ॥ १ ॥

हे मन ! राम नाम का जाप कर लो, इसी से सुख प्राप्त होगा। ज्यों-ज्यों जाप करोगे, त्यों-त्यों परम सुख मिलेगा और सतगुरु की सेवा में लीन रहोगे॥१॥ रहाउ॥ भक्तजनों की हर पल हरिनाम जपने की कामना रहती है, इसी से उनको सुख प्राप्त होता है। उनको अन्य रसों का स्वाद भूल जाता है और नाम के बिना कुछ भी अच्छा नहीं लगता॥१॥ गुरु की शिक्षा से हरिनाम ही मीठा लगा है और गुरु मीठे वचन ही बोलता है। सतिगुरु की वाणी से पुरुषोत्तम परमेश्वर का ज्ञान मिलता है, अतः गुरु की वाणी से मन लगाओ॥२॥ गुरु की वाणी सुनकर मेरा मन द्रवित हो गया है और भीगा मन आत्मस्वरूप में आता है। वहाँ अनाहत ध्वनि गूँजती है, अमृतधारा बहती है॥३॥ जो पल भर के लिए राम नाम का भजन गाता है, गुरु की शिक्षा से उसका मन नाम में ही लीन हो जाता है। ऐसा जिज्ञासु राम नाम का संकीर्तन सुनता, नाम ही उसके मन को अच्छा लगता है और नाम से ही वह तृप्त होता है॥४॥ बेशक स्वर्ण के आभूषण, कंगन एवं सुन्दर वस्त्र धारण कर लो, हरिनाम बिना सभी व्यर्थ हैं और पुनः जन्म-मरण का चक्र बना रहता है॥५॥ माया का पर्दा बहुत भारी है और यह भूल-भुलैया में डालकर मनुष्य को तबाह करता है। पाप-विकारों ने लोहे की तरह भारी कर दिया है, इससे दुस्तर संसार-समुद्र से पार नहीं हुआ जा सकता॥६॥ ईश्वर के प्रेम एवं वैराग्य भाव को जहाज बना लो, गुरु खेवट अपने शब्द द्वारा संसार-समुद्र से पार करवा देगा। राम नाम के चिंतन से प्रभु से साक्षात्कार हो सकता है और राम नाम में लीन हो जाओगे॥७॥ प्रभु मनुष्य को अज्ञान की निद्रा में डाल देता है, गुरु का ज्ञान ही इससे जगाने वाला है। नानक फुरमाते हैं— परमेश्वर की रज़ा शिरोधार्य है, जैसे उसे उचित लगता है, वैसे ही संसार को चलाता है॥८॥१॥

कानड़ा महला ४ ॥ जपि मन हरि हरि नामु तरावैगो ॥ जो जो जपै सोई गति पावै जिउ ध्रू प्रहिलादु समावैगो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ क्रिपा क्रिपा क्रिपा करि हरि जीउ करि किरपा नामि लगावैगो ॥ करि किरपा सतिगुरू मिलावहु मिलि सतिगुर नामु धिआवैगो ॥ १ ॥ जनम जनम की हउमै मलु लागी मिलि संगति मलु लहि जावैगो ॥ जिउ लोहा तरिओ संगि कासट लगि सबदि गुरू हरि पावैगो ॥ २ ॥ संगति संत मिलहु सतसंगति मिलि संगति हरि रसु आवैगो ॥ बिनु संगति करम करै अभिमानी कढि पाणी चीकड़ु पावैगो ॥ ३ ॥ भगत जना के हरि रखवारे जन हरि रसु मीठ लगावैगो ॥ खिनु खिनु नामु देइ वडिआई सतिगुर उपदेसि समावैगो ॥ ४ ॥ भगत जना कउ सदा निवि रहीऐ जन निवहि ता फल गुन पावैगो ॥ जो निंदा दुसट करहि भगता की हरनाखस जिउ पचि जावैगो ॥ ५ ॥ ब्रहम कमल पुतु मीन बिआसा तपु तापन पूज करावैगो ॥ जो जो भगतु होइ सो पूजहु भरमन भरमु चुकावैगो ॥ ६ ॥ जात नजाति देखि मत भरमहु सुक जनक पगीं लगि धिआवैगो ॥ जूठन जूठि पई सिर ऊपरि खिनु मनूआ तिलु न डुलावैगो ॥ ७ ॥ जनक जनक बैठे सिंघासनि नउ मुनी धूरि लै लावैगो ॥ नानक क्रिपा क्रिपा करि ठाकुर मै दासनि दास करावैगो ॥ ८ ॥ २ ॥

हे मन! हरिनाम का जाप करो, संसार-समुद्र से तैर जाओगे। जो भी जाप करता है, वही मुक्ति पाता है, ज्यों भक्त ध्रुव एवं भक्त प्रहलाद हरि में लीन हो गए॥१॥ रहाउ॥ हे श्रीहरि! कृपा करो, कृपा करके हमारी नाम स्मरण में लगन लगाओ। अपनी कृपा करके सच्चे गुरु से मिला दो, गुरु से मिलकर हरिनाम का ध्यान होता है॥१॥ जो जन्म-जन्मांतर की अहंकार की मैल लगी होती है, सत्संगत में मिलकर वह मैल उतर जाती है। जैसे लोहा लकड़ी के साथ लगकर तैर जाता है, वैसे ही शब्द गुरु द्वारा परमात्मा प्राप्त होता है॥२॥ संतों की संगत में मिलकर रहना चाहिए, क्योंकि संतों की संगत में हरिनाम का रस प्राप्त होता है। कुछ अभिमानी लोग संतों की संगत के बिना कर्म करते हैं, जिस कारण गुण रूपी पानी को छोड़कर कीचड़ ही पाते हैं॥३॥ परमात्मा भक्तों की रक्षा करने वाला है और भक्तजनों को हरि भजन ही मीठा लगता है। वे क्षण-क्षण नाम की कीर्ति प्रदान करते हैं और सच्चे गुरु के उपदेश से जीव उसी में लीन रहता है॥४॥ भक्तजनों के सन्मुख सदा विनम्र रहना चाहिए, विनम्र रहने से सर्व गुण एवं फल प्राप्त होते हैं। जो दुष्ट लोग भक्तों की निंदा करते हैं, हिरण्यकशिपु की तरह समाप्त हो जाते हैं॥५॥ नाभिकमल में विराजमान कमल-पुत्र ब्रह्मा तथा मत्स्य कुल में उत्पन्न मछोदरी-पुत्र ऋषि व्यास ने तपस्या करके अपनी पूजा-अर्चना करवाई है। जो-जो भक्ति करता है, वही पूज्य हो जाता है और बड़े से बड़ा भ्रम दूर हो जाता है॥६॥ ऊँची अथवा निम्न जाति देखकर भ्रम में मत पड़ो। शुकदेव ने राजा जनक के चरणों में लगकर ही ध्यान किया। जब वह दीक्षा के लिए आया यज्ञ के समय, राजा जनक ने उनको इंतजार करने के लिए कहा, उनके सिर पर जूठन भी पड़ी, परन्तु उनका मन बिल्कुल नहीं डगमगाया॥७॥ राजसिंहासन में विराजमान राजा जनक ने (भृगु, वसिष्ठ, अत्रि, मरीचि, पुलस्त्य इत्यादि) नौ मुनियों की चरण-धूल ही मुखमण्डल पर लगाई। नानक विनती करते हैं कि हे ठाकुर! कृपा करके मुझे दासों का दास बना लो॥८॥२॥

कानड़ा महला ४ ॥ मनु गुरमति रसि गुन गावैगो ॥ जिहवा एक होइ लख कोटी लख कोटी कोटि धिआवैगो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सहस फनी जपिओ सेखनागै हरि जपतिआ अंतु न पावैगो ॥ तू अथाहु अति अगमु अगमु है मति गुरमति मनु ठहरावैगो ॥ १ ॥ जिन तू जपिओ तेई जन नीके हरि जपतिअहु कउ

सुखु पावैगो ॥ बिदर दासी सुतु छोक छोहरा क्रिसनु अंकि गलि लावैगो ॥ २ ॥ जल ते ओपति भई है कासट कासट अंगि तरावैगो ॥ राम जना हरि आपि सवारे अपना बिरदु रखावैगो ॥ ३ ॥ हम पाथर लोह लोह बड पाथर गुर संगति नाव तरावैगो ॥ जिउ सतसंगति तरिओ जुलाहो संत जना मनि भावैगो ॥ ४ ॥ खरे खरोए बैठत ऊठत मारगि पंथि धिआवैगो ॥ सतिगुर बचन बचन है सतिगुर पाधरु मुकति जनावैगो ॥ ५ ॥ सासनि सासि सासि बलु पाई है निहसासनि नामु धिआवैगो ॥ गुर परसादी हउमै बूझै तौ गुरमति नामि समावैगो ॥ ६ ॥ सतिगुरु दाता जीअ जीअन को भागहीन नही भावैगो ॥ फिरि एह वेला हाथि न आवै परतापै पछुतावैगो ॥ ७ ॥ जे को भला लोड़ै भल अपना गुर आगै ढहि ढहि पावैगो ॥ नानक दइआ दइआ करि ठाकुर मै सतिगुर भसम लगावैगो ॥ ८ ॥ ३ ॥

हे मन ! गुरु-मतानुसार परमपिता परमेश्वर का गुणगान करो। यदि एक जीभ लाखों-करोड़ों हो जाएं तो भी करोड़ों बार उसी का भजन करो ॥१॥ रहाउ ॥ शेषनाग ने हजारों फनों से हरि का जाप किया, पर जाप करके रहस्य नहीं पा सका। हे ईश्वर ! तू अथाह है, ज्ञानेन्द्रियों से परे है, मन गुरु की शिक्षा से टिकता है ॥१॥ जिन्होंने तेरा जाप किया है, वही लोग उत्तम हैं। परमात्मा का जाप करने से ही सुख प्राप्त होता है। दासी पुत्र विदुर को अछूत माना जाता था परन्तु भाव-भक्ति के कारण श्रीकृष्ण ने उसे गले से लगा लिया ॥२॥ लकड़ी जल से उत्पन्न हुई है और जल में ही तैरती रहती है। हरि स्वयं अपने भक्तों को संवारता है और अपने विरद् की सदा लाज रखता है ॥३॥ हम बहुत बड़े पत्थर एवं लोहे की तरह हैं, केवल गुरु संगत की नाव में ही संसार-समुद्र से तैरते हैं। जैसे संतों की सच्ची संगत में जुलाहा कबीर संसार-सागर से पार हो गया, वैसे ही सत्कर्म से संतजनों के मन को अच्छे लग सकते हैं ॥४॥ खड़े हुए, बैठते अथवा उठते समय या रास्ते में चलते समय ईश्वर का ध्यान-मनन किया जा सकता है। सतिगुरु का वचन ही वास्तव में सतिगुरु है अर्थात् गुरु अथवा उसके वचन में कोई अन्तर नहीं, वही मुक्ति का मार्ग बतलाता है ॥५॥ श्वास-श्वास प्रभु का स्मरण करने से बल प्राप्त होता है, श्वासों के बिना भी नाम का ध्यान होता है। गुरु की कृपा से अहम्-भाव दूर हो जाए तो गुरु-उपदेशानुसार जीव हरिनाम में समाहित हो जाता है ॥६॥ सतगुरु सब जीवों का दाता है, परन्तु दुर्भाग्यशाली लोगों को अच्छा नहीं लगता। मनुष्य जीवन का यह सुनहरी अवसर पुनः हाथ नहीं आता और मनुष्य दुखी होकर पछताता है ॥७॥ यदि अपना भला चाहते हो तो गुरु के सन्मुख झुक जाओ। नानक विनती करते हैं कि हे ईश्वर ! मुझ पर दया कीजिए, गुरु की चरणरज माथे पर लगाना चाहता हूँ ॥८॥३॥

कानड़ा महला ४ ॥ मनु हरि रंगि राता गावैगो ॥ भै भै त्रास भए है निरमल गुरमति लागि लगावैगो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि रंगि राता सद बैरागी हरि निकटि तिना घरि आवैगो ॥ तिन की पंक मिलै तां जीवा करि किरपा आपि दिवावैगो ॥ १ ॥ दुबिधा लोभि लगे है प्राणी मनि कोरै रंगु न आवैगो ॥ फिरि उलटिओ जनमु होवै गुर बचनी गुरु पुरखु मिलै रंगु लावैगो ॥ २ ॥ इंद्री दसे दसे फुनि धावत त्रै गुणीआ खिनु न टिकावैगो ॥ सतिगुर परचै वसगति आवै मोख मुकति सो पावैगो ॥ ३ ॥ ओअंकारि एको रवि रहिआ सभु एकस माहि समावैगो ॥ एको रूपु एको बहु रंगी सभु एकतु बचनि चलावैगो ॥ ४ ॥ गुरमुखि एको एकु पछाता गुरमुखि होइ लखावैगो ॥ गुरमुखि जाइ मिलै निज महली अनहद सबदु बजावैगो ॥ ५ ॥ जीअ जंत सभ सिसटि उपाई गुरमुखि सोभा पावैगो ॥ बिनु गुर भेटे को महलु न

पावै आइ जाइ दुखु पावैगो ॥ ६ ॥ अनेक जनम विछुड़े मेरे प्रीतम करि किरपा गुरू मिलावैगो ॥ सतिगुर मिलत महा सुखु पाइआ मति मलीन बिगसावैगो ॥ ७ ॥ हरि हरि क्रिपा करहु जगजीवन मै सरधा नामि लगावैगो ॥ नानक गुरू गुरू है सतिगुरु मै सतिगुरु सरनि मिलावैगो ॥ ८ ॥ ४ ॥

हे मन! ईश्वर के रंग में लीन होकर उसी का गुणगान करो। इससे सब भय एवं चिन्ता दूर हो जाती है, गुरु के उपदेश से निर्मल मन प्रभु की लगन में लीन रहता है॥१॥ रहाउ॥ ईश्वर के रंग में लीन जीव सदा वैराग्यवान रहता है और परमात्मा उसके हृदय घर में ही रहता है। यदि ऐसे भक्तों की चरण-धूल मिल जाए तो जीवन बना रहता है और प्रभु कृपा करके स्वयं ही दिलवाता है॥१॥ दुविधा एवं लोभ में लीन प्राणी का मन कोरा ही रहता है और उसे प्रभु-रंग नहीं चढ़ता। जब गुरु मिल जाता है तो मन बदल जाता है, गुरु के वचनों से जीव का नया जन्म होता है, फिर उसे प्रभु-भक्ति का रंग लगा रहता है॥२॥ दसों इन्द्रियाँ दसों दिशाओं में भागती हैं और तीन गुणों के कारण पल भर भी नहीं टिकतीं। जब सतगुरु से साक्षात्कार होता है तो वह वश में आ जाती हैं और मुक्ति प्राप्त हो जाती है॥३॥ केवल ओमकार सम्पूर्ण सृष्टि में व्याप्त है और सब ने उस एक में ही लीन होना है। वह एक ही रूप वाला है, अनेक रंगों में विद्यमान है। समूचा संसार उस 'एक' के ही वचन से चलता है॥४॥ गुरु उस एक अनंतशक्ति को ही मानता है और वही रहस्य को जानता है। गुरु के द्वारा जीव अपने सच्चे घट में जा मिलता है और उसके अन्तर्मन में अनहद शब्द गूँजता रहता है॥५॥ जीव-जन्तु समूची सृष्टि को उत्पन्न करके परमेश्वर ने गुरु को ही शोभा प्रदान की है। गुरु के साक्षात्कार बिना ईश्वर प्राप्त नहीं होता, अन्यथा जीव जन्म-मरण के चक्र में दुख पाता है॥६॥ हे मेरे प्रियतम! हम अनेक जन्मों से बिछुड़े हुए हैं, कृपा करके गुरु से मिला दो। सच्चे गुरु को मिलकर परम सुख प्राप्त होता है और मलिन बुद्धि भी खिल उठती है॥७॥ हे परमेश्वर! कृपा करो और मुझे श्रद्धापूर्वक नाम-कीर्तन में लगा दो। नानक का कथन है कि गुरु ही परमेश्वर है, गुरु-परमेश्वर एक रूप हैं और मुझे सच्चे गुरु की शरण में मिला दो॥८॥४॥

कानड़ा महला ४ ॥ मन गुरमति चाल चलावैगो ॥ जिउ मैगलु मसतु दीजै तलि कुंडे गुर अंकसु सबदु द्रिड़ावैगो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चलतौ चलै चलै दह दह दिसि गुरु राखै हरि लिव लावैगो ॥ सतिगुरु सबदु देइ रिद अंतरि मुखि अंम्रितु नामु चुआवैगो ॥ १ ॥ बिसीअर बिसू भरे है पूरन गुरु गरुड़ सबदु मुखि पावैगो ॥ माइआ भुइअंग तिसु नेड़ि न आवै बिखु झारि झारि लिव लावैगो ॥ २ ॥ सुआनु लोभु नगर महि सबला गुरु खिन महि मारि कढावैगो ॥ सतु संतोखु धरमु आनि राखे हरि नगरी हरि गुन गावैगो ॥ ३ ॥ पंकज मोह निघरतु है प्रानी गुरु निघरत काढि कढावैगो ॥ त्राहि त्राहि सरनि जन आए गुरु हाथी दे निकलावैगो ॥ ४ ॥ सुपनंतरु संसारु सभु बाजी सभु बाजी खेलु खिलावैगो ॥ लाहा नामु गुरमति लै चालहु हरि दरगह पैधा जावैगो ॥ ५ ॥ हउमै करै करावै हउमै पाप कोइले आनि जमावैगो ॥ आइआ कालु दुखदाई होए जो बीजे सो खवलावैगो ॥ ६ ॥ संतहु राम नामु धनु संचहु लै खरचु चले पति पावैगो ॥ खाइ खरचि देवहि बहुतेरा हरि देदे तोटि न आवैगो ॥ ७ ॥ राम नाम धनु है रिद अंतरि धनु गुर सरणाई पावैगो ॥ नानक दइआ दइआ करि दीनी दुखु दालदु भंजि समावैगो ॥ ८ ॥ ५ ॥

हे मन! गुरु-उपदेशानुसार जीवन-आचरण अपनाना चाहिए। ज्यों मस्त हाथी को अंकुश के नीचे रखा जाता है, वैसे ही गुरु अपने शब्द के अंकुश से चलाता है॥१॥ रहाउ॥ मन दसों

दिशाओं में दोलायमान होता है, लेकिन गुरु इसे रोककर परमात्मा के ध्यान में लगाता है। सतिगुरु ह्रदय में शब्द ही देता है और मुख में हरिनाम अमृत डाल देता है॥ १॥ माया रूपी सांप वासनाओं के जहर से भरा हुआ है और पूर्ण गुरु शब्द रूपी गारुड़ी मंत्र मुख में डालता है। तदन्तर माया रूपी सांप उसके निकट नहीं आता और वासना का जहर उतर कर परमात्मा में ध्यान लग जाता है॥ २॥ लोभ रूपी कुत्ता शरीर रूपी नगर में शक्तिशाली है लेकिन गुरु पल में ही इसे मार कर निकाल देता है। ईश्वर की नगरी में सत्य, संतोष, धर्म इत्यादि शुभ गुणों को टिकाया गया हैं और वहाँ परमात्मा का गुणगान होता है॥ ३॥ जब प्राणी मोह के कीचड़ में गिरता है तो गुरु उसे निकाल लेता है। 'बचाओ-बचाओ' की प्रार्थना करते हुए जीव शरण में आते हैं और गुरु हाथ देकर इनको बचाता है॥ ४॥ समूचा संसार सपने की बाजी है और प्रभु ही जीवनबाजी का खेल खेलाता है। गुरु के उपदेशानुसार हरिनाम संकीर्तन का लाभ प्राप्त करो और प्रभु के दरबार में सम्मान सहित जाओ॥ ५॥ मनुष्य सब अभिमान में करता और करवाता है और पापों का कोयला जमा करता है। जब दुखदायक काल आता है तो जो बोया होता है, वही फल खाना पड़ता है॥ ६॥ हे सज्जनो! राम नाम रूपी धन इकट्ठा करो, इसका उपयोग करने से प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। नाम धन का जितना उपयोग एवं खर्च करोगे, ईश्वर देता ही रहेगा और किसी चीज की कमी नहीं आती॥ ७॥ राम नाम रूपी धन ह्रदय में ही है और यह धन गुरु की शरण में ही प्राप्त होता है। नानक का कथन है कि ईश्वर ने दया की है, जिससे सब दुख एवं दारिद्रय दूर हो गए हैं॥ ८॥ ५॥

कानड़ा महला ४ ॥ मनु सतिगुर सरनि धिआवैगो ॥ लोहा हिरनु होवै संगि पारस गुनु पारस को होइ आवैगो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सतिगुरु महा पुरखु है पारसु जो लागै सो फलु पावैगो ॥ जिउ गुर उपदेसि तरे प्रहिलादा गुरु सेवक पैज रखावैगो ॥ १ ॥ सतिगुर बचनु बचनु है नीको गुर बचनी अंम्रितु पावैगो ॥ जिउ अंबरीकि अमरा पद पाए सतिगुर मुख बचन धिआवैगो ॥ २ ॥ सतिगुर सरनि सरनि मनि भाई सुधा सुधा करि धिआवैगो ॥ दइआल दीन भए है सतिगुर हरि मारगु पंथु दिखावैगो ॥ ३ ॥ सतिगुर सरनि पए से थापे तिन राखन कउ प्रभु आवैगो ॥ जे को सरु संधै जन ऊपरि फिरि उलटो तिसै लगावैगो ॥ ४ ॥ हरि हरि हरि हरि हरि सरु सेवहि तिन दरगह मानु दिवावैगो ॥ गुरमति गुरमति गुरमति धिआवहि हरि गलि मिलि मेलि मिलावैगो ॥ ५ ॥ गुरमुखि नादु बेदु है गुरमुखि गुर परचै नामु धिआवैगो ॥ हरि हरि रूपु हरि रूपो होवै हरि जन कउ पूज करावैगो ॥ ६ ॥ साकत नर सतिगुरु नही कीआ ते बेमुख हरि भरमावैगो ॥ लोभ लहरि सुआन की संगति बिखु माइआ करंगि लगावैगो ॥ ७ ॥ राम नामु सभ जग का तारकु लगि संगति नामु धिआवैगो ॥ नानक राखु राखु प्रभ मेरे सतसंगति राखि समावैगो ॥ ८ ॥ ६ ॥ छका १ ॥

हे मन! सतिगुरु की शरण का ध्यान करो, ज्यों पारस के स्पर्श से लोहा स्वर्ण हो जाता है, वैसे ही गुरु रूपी पारस से, वैसे ही गुण प्राप्त हो जाते हैं॥ १॥ रहाउ॥ महापुरुष सतिगुरु ऐसा पारस है, जिसके चरणों में लगने से मनोवांछित फल प्राप्त होते हैं। ज्यों गुरु के उपदेश से भक्त प्रहलाद संसार-सागर से पार हो गया, वैसे ही गुरु अपने शिष्यों की लाज रखता है॥ १॥ सतिगुरु का वचन उत्तम है और गुरु के वचन से अमृत प्राप्त होता है। ज्यों सतिगुरु के वचन से ध्यान करके अम्बरीष अमरपद पा गए, हम भी गुरु के वचन से ध्यान कर अमर पद प्राप्त करेंगे॥ २॥ जिसके मन को सतिगुरु की शरण में रहना अच्छा लगता है, वह हरिनाम अमृत का ही ध्यान करता है। सतिगुरु दीनों पर दयालु होता है और प्रभु-मिलन का मार्गदर्शन करता है॥ ३॥ जो

सतिगुरु की शरण में पड़ते हैं, वही स्थित होते हैं और प्रभु उनकी ही रक्षा करने के लिए आता है। यदि कोई भक्तों पर निंदा का बाण छोड़ता है तो वह उलटा उसे ही आ लगता है॥४॥ जो परमात्मा की उपासना करते हैं, उनको ही सच्चे दरबार में सम्मान प्राप्त होता है। जो गुरु की शिक्षानुसार परमात्मा का मनन करता है, वह उसे गले लगाकर मिला लेता है॥५॥ गुरु के मुख से निकला शब्द ही वेद है और गुरु की प्रसन्नता में नाम-ध्यान होता है। हरि की पूजा-अर्चना करते हुए भक्तजन हरि का रूप हो जाते हैं॥६॥ निरीश्वरवाद व्यक्ति गुरु धारण नहीं करता, ऐसे विमुख को परमात्मा भूलभुलैया में डाले रखता है। लोभ रूपी कुत्ते की संगत में माया मनुष्य को मुर्दा पशु की तरह कंकाल बनाकर रख देती है॥७॥ परमात्मा का नाम समूचे जगत का उद्धार करने वाला है, अतः अच्छी संगत में प्रभु-नाम का भजन करो। नानक विनती करते हैं कि हे मेरे प्रभु! मुझे संतों की संगत में ही रखो॥८॥६॥ छः शब्दों का जोड़ १॥

कानड़ा छंत महला ५ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

से उधरे जिन राम धिआए ॥ जतन माइआ के कामि न आए ॥ राम धिआए सभि फल पाए धनि धंनि ते बडभागीआ ॥ सतसंगि जागे नामि लागे एक सिउ लिव लागीआ ॥ तजि मान मोह बिकार साधू लगि तरउ तिन कै पाए ॥ बिनवंति नानक सरणि सुआमी बडभागि दरसनु पाए ॥ १ ॥ मिलि साधू नित भजह नाराइण ॥ रसकि रसकि सुआमी गुण गाइण ॥ गुण गाइ जीवह हरि अमिउ पीवह जनम मरणा भागए ॥ सतसंगि पाईऐ हरि धिआईऐ बहुड़ि दूखु न लागए ॥ करि दइआ दाते पुरख बिधाते संत सेव कमाइण ॥ बिनवंति नानक जन धूरि बांछहि हरि दरसि सहजि समाइण ॥ २ ॥ सगले जंत भजहु गोपालै ॥ जप तप संजम पूरन घालै ॥ नित भजहु सुआमी अंतरजामी सफल जनमु सबाइआ ॥ गोबिदु गाईऐ नित धिआईऐ परवाणु सोई आइआ ॥ जप ताप संजम हरि हरि निरंजन गोबिंद धनु संगि चालै ॥ बिनवंति नानक करि दइआ दीजै हरि रतनु बाधउ पालै ॥ ३ ॥ मंगलचार चोज आनंदा ॥ करि किरपा मिले परमानंदा ॥ प्रभ मिले सुआमी सुखहगामी इछ मन की पुंनीआ ॥ बजी बधाई सहजे समाई बहुड़ि दूखि न रुंनीआ ॥ ले कंठि लाए सुख दिखाए बिकार बिनसे मंदा ॥ बिनवंति नानक मिले सुआमी पुरख परमानंदा ॥ ४ ॥ १ ॥

वही लोग संसार से मुक्त हुए हैं, जिन्होंने परमात्मा का ध्यान किया है। माया के यत्न किसी काम नहीं आते। परमात्मा का चिंतन करने वाले सब फल प्राप्त करते हैं, ऐसे लोग धन्य एवं भाग्यशाली हैं। वे सत्संग में सावधान रहकर नाम-कीर्तन में लगे रहते हैं और उनकी एक ईश्वर में ही लगन लगी रहती है। अभिमान, मोह एवं विकारों को छोड़कर साधु पुरुषों के चरणों में लग जाओ और मुक्ति पा लो। नानक विनती करते हैं कि हे स्वामी! तेरी शरण में भाग्यशाली ही दर्शन पाते हैं॥ १॥ साधु-पुरुषों के संग मिलकर नित्य परमात्मा का भजन करो, खूब मजे लेकर आनंदपूर्वक स्वामी का गुणगान करो, गुणानुवाद करके हरिनाम अमृत पान करके जीवन पाओ, इस तरह जन्म-मरण से मुक्त हो जाओ। सत्संग में रहकर परमात्मा का मनन करने से पुनः कोई दुख नहीं लगता। हे दाता, परमपुरुष विधाता! दया करो और संतों की सेवा में तल्लीन रखो। नानक विनती करते हैं कि हे प्रभु! हम तो केवल भक्तजनों की चरण-धूल ही चाहते हैं और तेरे दर्शनों से सहजावस्था में लीन होते हैं॥२॥ सब जीव भगवान का भजन करते हैं, इसी से जप,

तपस्या, संयम इत्यादि सब कर्म पूरे हो जाते हैं। अतः नित्य अन्तर्यामी स्वामी का भजन करो, इसी से जन्म सफल होता है। जो ईश्वर का गुणानुवाद करते हैं, नित्य उसी के चिंतन में लीन रहते हैं, ऐसे लोगों का जन्म सफल हो जाता है। मायातीत परमेश्वर ही जप, तप एवं संयम है और प्रभु-नाम धन ही साथ चलता है। नानक विनती करते हैं कि हे प्रभु! दया पूर्वक नाम रत्न साथ बांध दो॥३॥ खुशी के गीत गाए जा रहे हैं, आनंद कौतुक हो गया है, कृपा करके परमानंद प्रभु मिल गया है। सुख देने वाला प्रभु मिल गया है, मन की कामना पूरी हो गई है। अब खुशियाँ ही खुशियाँ छा गई हैं, स्वाभाविक सुख मिला है और पुनः कोई दुख नहीं लगता। जब गले लगाकर मिलता है तो सुख ही प्राप्त होता है और पाप विकार सब बुराइयाँ दूर हो जाती हैं। नानक विनय करते हैं कि मुझे परमानंद स्वामी मिल गया है॥४॥१॥

कानड़े की वार महला ४ मूसे की वार की धुनी १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

सलोक मः ४ ॥ राम नामु निधानु हरि गुरमति रखु उर धारि ॥ दासन दासा होइ रहु हउमै बिखिआ मारि ॥ जनमु पदारथु जीतिआ कदे न आवै हारि ॥ धनु धनु वडभागी नानका जिन गुरमति हरि रसु सारि ॥ १ ॥

श्लोक महला ४॥ परमात्मा का नाम सुखों का घर है, गुरु के उपदेशानुसार इसे हृदय में बसाकर रखो। जो अहम् एवं विषय-विकारों को मारकर दासों का दास बनकर रहता है, वह जन्म जीत लेता है और कभी पराजित नहीं होता। हे नानक! जो गुरु की शिक्षानुसार परमात्मा का मनन करते हैं, वे भाग्यशाली हैं॥१॥

मः ४ ॥ गोविंदु गोविदु गोविदु हरि गोविदु गुणी निधानु ॥ गोविदु गोविदु गुरमति धिआईऐ ता दरगह पाईऐ मानु ॥ गोविदु गोविदु गोविदु जपि मुखु ऊजला परधानु ॥ नानक गुरु गोविंदु हरि जितु मिलि हरि पाइआ नामु ॥ २ ॥

महला ४॥ ईश्वर जगत का पालक है, गुणों का भण्डार है, उसी की महिमा गाओ। गुरु के उपदेश से ईश्वर का भजन करो, तो ही दरबार में सम्मान प्राप्त होता है। ईश्वर का जाप करने से मुख उज्ज्वल होता है और वही प्रमुख माना जाता है। हे नानक! गुरु परमेश्वर का रूप है, जिसे मिलकर हरिनाम प्राप्त होता है॥२॥

पउड़ी ॥ तूं आपे ही सिध साधिको तू आपे ही जुग जोगीआ ॥ तू आपे ही रस रसीअड़ा तू आपे ही भोग भोगीआ ॥ तू आपे आपि वरतदा तू आपे करहि सु होगीआ ॥ सतसंगति सतिगुर धंनु धनो धंन धंन धनो जितु मिलि हरि बुलग बुलोगीआ ॥ सभि कहहु मुखहु हरि हरि हरे हरि हरि हरे हरि बोलत सभि पाप लहोगीआ ॥ १ ॥

पउड़ी॥ हे परमेश्वर! तू स्वयं ही सिद्ध एवं साधक है और तू स्वयं ही योग-साधना करने वाला योगी है। तू स्वयं ही रस लेने वाला रसिया है और स्वयं ही भोग करने वाला भोगी है। तू स्वयं ही कार्यशील है और जो तू करता है, वही होता है। सतिगुरु की सच्ची संगत धन्य है, जहाँ मिलकर जिज्ञासु जन परमात्मा का संकीर्तन करते हैं। सभी अपने मुख से हरि-हरि बोलो, हरि की प्रशंसा करो, इससे सब पाप दूर हो जाते हैं॥१॥

सलोक मः ४ ॥ हरि हरि हरि हरि नामु है गुरमुखि पावै कोइ ॥ हउमै ममता नासु होइ दुरमति कढै धोइ ॥ नानक अनदिनु गुण उचरै जिन कउ धुरि लिखिआ होइ ॥ १ ॥

श्लोक महला ४॥ परमात्मा का नाम कोई विरला गुरुमुख ही पाता है। इससे अहम् एवं ममत्व नाश होता है और दुर्मति साफ हो जाती है। हे नानक! जिनके भाग्य में लिखा होता है, वे दिन-रात ईश्वर के गुणों का उच्चारण करते हैं॥ १॥

मः ४ ॥ हरि आपे आपि दइआलु हरि आपे करे सु होइ ॥ हरि आपे आपि वरतदा हरि जेवडु अवरु न कोइ ॥ जो हरि प्रभु भावै सो थीऐ जो हरि प्रभु करे सु होइ ॥ कीमति किनै न पाईआ बेअंतु प्रभू हरि सोइ ॥ नानक गुरमुखि हरि सालाहिआ तनु मनु सीतलु होइ ॥ २ ॥

महला ४॥ ईश्वर स्वयं दया का घर है, संसार में वही होता है, जो वह अपनी मर्जी से करता है। वह स्वयं ही सबमें कार्यशील है और उस जैसा अन्य कोई नहीं। जो प्रभु चाहता है, वही होता है और जो प्रभु करता है, वही संसार में होता है। प्रभु बेअन्त है, उसका मूल्यांकन कोई नहीं पा सका। हे नानक! गुरु के द्वारा परमात्मा की प्रशंसा करो, इससे तन मन शीतल हो जाता है॥ २॥

पउड़ी ॥ सभ जोति तेरी जगजीवना तू घटि घटि हरि रंग रंगना ॥ सभि धिआवहि तुधु मेरे प्रीतमा तू सति सति पुरख निरंजना ॥ इकु दाता सभु जगतु भिखारीआ हरि जाचहि सभ मंग मंगना ॥ सेवकु ठाकुरु सभु तूहै तूहै गुरमती हरि चंग चंगना ॥ सभि कहहु मुखहु रिखीकेसु हरे रिखीकेसु हरे जितु पावहि सभ फल फलना ॥ २ ॥

पउड़ी॥ हे संसार के जीवन! सब में तेरी ज्योति विद्यमान है। तू घट घट में व्याप्त है, रंग में रंगने वाला है। हे मेरे प्रियतम! सभी तेरा ध्यान करते हैं, तू शाश्वत-स्वरूप है, माया की कालिमा से रहित है। एकमात्र तू ही दाता है, समूचा जगत भिखारी है, सब तुझसे मांगते रहते हैं। मालिक एवं सेवक भी तू ही है और गुरु की शिक्षा से तू ही अच्छा लगता है। सभी मुख से परमात्मा का भजन करो, जिससे सभी फल प्राप्त होते हैं॥ २॥

सलोक मः ४ ॥ हरि हरि नामु धिआइ मन हरि दरगह पावहि मानु ॥ जो इछहि सो फलु पाइसी गुर सबदी लगै धिआनु ॥ किलविख पाप सभि कटीअहि हउमै चुकै गुमानु ॥ गुरमुखि कमलु विगसिआ सभु आतम ब्रहमु पछानु ॥ हरि हरि किरपा धारि प्रभ जन नानक जपि हरि नामु ॥ १ ॥

श्लोक महला ४॥ हे मन! परमात्मा का ध्यान करो, इसी से प्रभु दरबार में सम्मान प्राप्त होता है। जब गुरु के शब्द से ध्यान लगता है तो जो कामना होती है, वही फल प्राप्त होता है। सभी किल्विष पाप कट जाते हैं और अहम्-अभिमान दूर हो जाता है। गुरु द्वारा हृदय कमल खिल उठता है और अन्तर्मन में ब्रह्म की पहचान होती है। नानक की विनती है कि हे प्रभु! भक्तजनों पर कृपा करो, ताकि वे तेरा नाम जपते रहें॥ १॥

मः ४ ॥ हरि हरि नामु पवितु है नामु जपत दुखु जाइ ॥ जिन कउ पूरबि लिखिआ तिन मनि वसिआ आइ ॥ सतिगुर कै भाणै जो चलै तिन दालदु दुखु लहि जाइ ॥ आपणै भाणै किनै न पाइओ जन वेखहु मनि पतीआइ ॥ जनु नानकु दासन दासु है जो सतिगुर लागे पाइ ॥ २ ॥

महला ४॥ परमात्मा का नाम पवित्र है और नाम जपने से हर दुख दूर हो जाता है। जिनके भाग्य में लिखा है, उनके मन में आ बसा है। जो व्यक्ति सतिगुरु की रज़ानुसार चलते हैं, उनका

दुख-दारिद्रय निवृत्त हो जाता है। हे दुनिया वालो! मन में सोच-विचार कर लो, अपनी मर्जी से कोई ईश्वर को नहीं पा सका। नानक दासों का भी दास है, जो सतिगुरु के चरणों में तल्लीन है॥२॥

पउड़ी ॥ तूं थान थनंतरि भरपूरु हहि करते सभ तेरी बणत बणावणी ॥ रंग परंग सिसटि सभ साजी बहु बहु बिधि भांति उपावणी ॥ सभ तेरी जोति जोती विचि वरतहि गुरमती तुधै लावणी ॥ जिन होहि दइआलु तिन सतिगुरु मेलहि मुखि गुरमुखि हरि समझावणी ॥ सभि बोलहु राम रमो स्री राम रमो जितु दालदु दुख भुख सभ लहि जावणी ॥ ३ ॥

पउड़ी॥ हे ईश्वर! तू हर जगह पर विद्यमान है, यह सारी दुनिया तेरी ही बनाई हुई है। तूने अनेक रंगों वाली सृष्टि बनाई है और अनेक प्रकार के जीव उत्पन्न किए हैं। सब में तेरी ही ज्योति कार्यशील है और तू जीवों को गुरु की शिक्षानुसार तल्लीन करता है। जिस पर दयालु होता है, उसे सतगुरु से मिला देता है और गुरु द्वारा परम-सत्य का भेद समझा देता है। सभी राम का भजन करो, इससे दुख-भूख एवं दारिद्रय सब दूर हो जाता है॥३॥

सलोक मः ४ ॥ हरि हरि अंम्रितु नाम रसु हरि अंम्रितु हरि उर धारि ॥ विचि संगति हरि प्रभु वरतदा बुझहु सबद वीचारि ॥ मनि हरि हरि नामु धिआइआ बिखु हउमै कढी मारि ॥ जिन हरि हरि नामु न चेतिओ तिन जूऐ जनमु सभु हारि ॥ गुरि तुठै हरि चेताइआ हरि नामा हरि उर धारि ॥ जन नानक ते मुख उजले तितु सचै दरबारि ॥ १ ॥

श्लोक महला ४॥ परमात्मा का नाम अमृतमय एवं मीठा रस है, हरिनामामृत को हृदय में धारण करो। शब्द के चिंतन द्वारा इस तथ्य की सूझ होती है कि संगत में प्रभु कार्यशील है। यदि मन में परमात्मा के नाम का ध्यान किया जाए तो अहम् का जहर निकल जाता है। जो हरिनाम का चिंतन नहीं करता, वह पूरा जीवन जुए में हार जाता है। गुरु की प्रसन्नता से परमात्मा का चिंतन होता है और हरिनाम हृदय में अवस्थित हो जाता है। नानक फुरमाते हैं कि वही मुख सच्चे दरबार में उज्ज्वल होते हैं॥१॥

मः ४ ॥ हरि कीरति उतमु नामु है विचि कलिजुग करणी सारु ॥ मति गुरमति कीरति पाईऐ हरि नामा हरि उरि हारु ॥ वडभागी जिन हरि धिआइआ तिन सउपिआ हरि भंडारु ॥ बिनु नावै जि करम कमावणे नित हउमै होइ खुआरु ॥ जलि हसती मलि नावालीऐ सिरि भी फिरि पावै छारु ॥ हरि मेलहु सतिगुरु दइआ करि मनि वसै एकंकारु ॥ जिन गुरमुखि सुणि हरि मंनिआ जन नानक तिन जैकारु ॥ २॥

महला ४॥ कलियुग में ईश्वर का कीर्तिगान ही उत्तम कर्म है। गुरु के उपदेशानुसार हरिनाम का कीर्तिगान प्राप्त होता है और प्रभु हृदय में अवस्थित होता है। जिसने परमात्मा का ध्यान किया है, वही भाग्यशाली है, उसे हरि-भक्ति का भण्डार सौंपा गया है। नाम-संकीर्तन बिना जो कर्म किया जाता है, इससे नित्य अहम् में ख्वार होना पड़ता है। यह इस तरह है जैसे हाथी को जल में नहलाया जाता है तो फिर भी वह सिर पर धूल ही डालता है। हे ईश्वर! दया करके सतगुरु से मिला दो, ताकि मन में ओंकार बस जाए। नानक फुरमाते हैं कि जिसने गुरु से परमात्मा का नाम-संकीर्तन सुना है, मनन किया है, उसी की जय जयकार हुई है॥२॥

पउड़ी ॥ राम नामु वखरु है ऊतमु हरि नाइकु पुरखु हमारा ॥ हरि खेलु कीआ हरि आपे वरतै सभु जगतु कीआ वणजारा ॥ सभ जोति तेरी जोती विचि करते सभु सचु तेरा पासारा ॥ सभि धिआवहि

तुधु सफल से गावहि गुरमती हरि निरंकारा ॥ सभि चवहु मुखहु जगंनाथु जगंनाथु जगजीवनो जितु भवजल पारि उतारा ॥ ४ ॥

पउड़ी॥ राम का नाम ही उत्तम वस्तु है और समूची सृष्टि का नायक ईश्वर हमारा मालिक है। यह जगत-तमाशा ईश्वर ने रचा है, वह स्वयं ही कार्यशील है और समूचे जगत को उसने व्यापारी बनाया हुआ है। हे कर्ता पुरुष! सब में तेरी ज्योति विद्यमान है और सब ओर तेरा ही सत्य रूप में प्रसार है। हे निराकार! सभी तेरा ध्यान करते हैं, गुरु-मतानुसार तेरा गुणानुवाद कर अपना जीवन सफल करते हैं। हे भक्तजनो! सभी मुख से परमात्मा का भजन करो, वह जगत का मालिक, जगत का जीवन है, वही संसार-सागर से पार उतारने वाला है॥ ४॥

सलोक मः ४ ॥ हमरी जिहबा एक प्रभ हरि के गुण अगम अथाह ॥ हम किउ करि जपह इआणिआ हरि तुम वड अगम अगाह ॥ हरि देहु प्रभू मति ऊतमा गुर सतिगुर कै पगि पाह ॥ सतसंगति हरि मेलि प्रभ हम पापी संगि तराह ॥ जन नानक कउ हरि बखसि लैहु हरि तुठै मेलि मिलाह ॥ हरि किरपा करि सुणि बेनती हम पापी किरम तराह ॥ १ ॥

श्लोक महला ४॥ हे प्रभु! हमारी जिह्वा केवल एक है, लेकिन तेरे गुण अगम्य एवं अथाह हैं। हम नादान लोग भला क्योंकर तेरा जाप कर सकते हैं, तुम बहुत बड़े हो, अगम्य एवं असीम हो। हे प्रभु! हमें उत्तम बुद्धि प्रदान करो और गुरु के चरणों में लगा दो। हमें सत्संगति में मिला दो, हम पापियों को संगत द्वारा पार उतार दो। हे प्रभु! दास नानक को क्षमा कर दो, तेरी खुशी में मिलाप होता है। हे हरि! हमारी विनती सुनो, कृपा करके हम पापी कीटों को पार उतार दो॥ १॥

मः ४ ॥ हरि करहु क्रिपा जगजीवना गुरु सतिगुरु मेलि दइआलु ॥ गुर सेवा हरि हम भाईआ हरि होआ हरि किरपालु ॥ सभ आसा मनसा विसरी मनि चूका आल जंजालु ॥ गुरि तुठै नामु द्रिड़ाइआ हम कीए सबदि निहालु ॥ जन नानकि अतुटु धनु पाइआ हरि नामा हरि धनु मालु ॥ २ ॥

महला ४॥ हे श्री हरि! दया करके गुरु से मिला दो। गुरु की सेवा ही हमें अच्छी लगती है, प्रभु कृपालु हो गया है, जिससे सभी आशाएँ व वासनाएँ भूल गई हैं और मन से संसार के जंजाल छूट गए हैं। गुरु ने प्रसन्न होकर हरिनाम ही दृढ़ करवाया और शब्द द्वारा हमें निहाल कर दिया है। दास नानक ने हरिनाम रूपी अक्षुण्ण धन पा लिया है॥ २॥

पउड़ी ॥ हरि तुम्ह वड वडे वडे वड ऊचे सभ ऊपरि वडे वडौना ॥ जो धिआवहि हरि अपरंपरु हरि हरि हरि धिआइ हरे ते होना ॥ जो गावहि सुणहि तेरा जसु सुआमी तिन काटे पाप कटोना ॥ तुम जैसे हरि पुरख जाने मति गुरमति मुखि वड वड भाग वडोना ॥ सभि धिआवहु आदि सते जुगादि सते परतखि सते सदा सदा सते जनु नानकु दासु दसोना ॥ ५ ॥

पउड़ी॥ हे हरि! तुम बहुत बड़े हो, बड़े से भी बड़े, सर्वोच्च, सर्वोपरि एवं महान् हो। जो लोग अपरम्पार हरि का ध्यान करते हैं, वे हरि का ध्यान करके उसी का रूप हो जाते हैं। हे स्वामी! जो तेरा यश गाते अथवा सुनते हैं, उनके सब पाप कट जाते हैं। गुरु की शिक्षा से हरि-भक्ति को हरि जैसा माना है, वह बड़ा एवं भाग्यशाली है। सभी हरि का ध्यान करते हैं, एकमात्र वही सत्यस्वरूप है, युग-युगांतर सत्य है, अब भी सत्य है, सर्वदा सत्य रहने वाला है। दास नानक उसके दासों का दास है॥ ५॥

सलोक मः ४ ॥ हमरे हरि जगजीवना हरि जपिओ हरि गुर मंत ॥ हरि अगमु अगोचरु अगमु हरि हरि मिलिआ आइ अचिंत ॥ हरि आपे घटि घटि वरतदा हरि आपे आपि बिअंत ॥ हरि आपे सभ रस भोगदा हरि आपे कवला कंत ॥ हरि आपे भिखिआ पाइदा सभ सिसटि उपाई जीअ जंत ॥ हरि देवहु दानु दइआल प्रभ हरि मांगहि हरि जन संत ॥ जन नानक के प्रभ आइ मिलु हम गावह हरि गुण छंत ॥ १ ॥

श्लोक महला ४॥ हरि संसार का जीवन है, गुरु ने (हरिनाम) मंत्र दिया तो उसी का हमने जाप किया। वह मन-वाणी, ज्ञानेन्द्रियों से परे है और स्वाभाविक ही मिलता है। वह सब शरीरों में व्याप्त है और वह बे-अन्त है। वह कमलापति सब रसों को भोगता है। वह सम्पूर्ण सृष्टि को उत्पन्न करके सब जीवों को रोज़ी देता है। हे दयालु प्रभु! नाम दान दो, भक्तजन यही मांगते हैं। हे नानक के प्रभु! आकर दर्शन दे दो, हम तो तेरे ही गुण गाते हैं॥१॥

मः ४ ॥ हरि प्रभु सजणु नामु हरि मै मनि तनि नामु सरीरि ॥ सभि आसा गुरमुखि पूरीआ जन नानक सुणि हरि धीर ॥ २ ॥

महला ४॥ हे सज्जन प्रभु! हमारे मन, तन में तेरा नाम बस गया है। गुरु ने सभी आशाएँ पूरी कर दी हैं और हरिनाम यश सुनकर नानक को धैर्य हो गया है॥२॥

पउड़ी ॥ हरि ऊतमु हरिआ नामु है हरि पुरखु निरंजनु मउला ॥ जो जपदे हरि हरि दिनसु राति तिन सेवे चरन नित कउला ॥ नित सारि सम्हाले सभ जीअ जंत हरि वसै निकटि सभ जउला ॥ सो बूझै जिसु आपि बुझाइसी जिसु सतिगुरु पुरखु प्रभु सउला ॥ सभि गावहु गुण गोविंद हरे गोविंद हरे गोविंद हरे गुण गावत गुणी समउला ॥ ६ ॥

पउड़ी॥ हरिनाम सर्वोत्तम है, वह परमपुरुष, मायातीत एवं नित्य-नवीन है। जो दिन-रात हरि का जाप करते हैं, माया नित्य उनके चरणों की सेवा करती है। ईश्वर सब जीवों की नित्य संभाल करता है और वह सब के निकट ही बसता है। वही उसका रहस्य बूझता है, जिसे स्वयं समझाता है और जिस पर सतिगुरु की कृपा-दृष्टि होती है। सभी परमात्मा के गुण गाओ, उसका गुणगान कर गुणवान् बन जाओ॥६॥

सलोक मः ४ ॥ सुतिआ हरि प्रभु चेति मनि हरि सहजि समाधि समाइ ॥ जन नानक हरि हरि चाउ मनि गुरु तुठा मेले माइ ॥ १ ॥

श्लोक महला ४॥ हे अज्ञानी मन! प्रभु का चिंतन कर, सहज समाधि में लीन रहो। नानक के मन में प्रभु मिलन का चाव है और गुरु प्रसन्न होकर उससे मिलाता है॥१॥

मः ४ ॥ हरि इकसु सेती पिरहड़ी हरि इको मेरै चिति ॥ जन नानक इकु अधारु हरि प्रभ इकस ते गति पति ॥ २ ॥

महला ४॥ एकमात्र प्रभु से ही हमारा प्रेम है, एकमात्र वही मेरे दिल में बसा हुआ है। नानक फुरमाते हैं—प्रभु ही एकमात्र आसरा है, उसी से मुक्ति एवं मान-प्रतिष्ठा प्राप्त होती है॥२॥

पउड़ी ॥ पंचे सबद वजे मति गुरमति वडभागी अनहदु वजिआ ॥ आनद मूलु रामु सभु देखिआ गुर सबदी गोविदु गजिआ ॥ आदि जुगादि वेसु हरि एको मति गुरमति हरि प्रभु भजिआ ॥ हरि

देवहु दानु दइआल प्रभ जन राखहु हरि प्रभ लजिआ ॥ सभि धंनु कहहु गुरु सतिगुरू गुरु सतिगुरू जितु मिलि हरि पड़दा कजिआ ॥ ७ ॥

पउड़ी॥ गुरु की शिक्षा से पाँच शब्द गूँज उठे, अहोभाग्य से अनाहत नाद गूँजा। सब ओर आनंद का मूल स्रोत ईश्वर दृष्टिमान हुआ है और गुरु के शब्द से वही प्रगट हुआ है। युग-युगांतर एकमात्र वही स्थित है और गुरु की शिक्षा से प्रभु का भजन किया है। हे प्रभु! दयालु होकर नाम-दान प्रदान करो और भक्तजनों की लाज रखो। सभी कहो, गुरु धन्य है, सतगुरु धन्य है, जिसे मिलकर हमारे अवगुणों पर पर्दा पड़ा है॥ ७॥

सलोकु मः ४ ॥ भगति सरोवरु उछलै सुभर भरे वहंनि ॥ जिना सतिगुरु मंनिआ जन नानक वड भाग लहंनि ॥ १ ॥

श्लोक महला ४॥ भक्ति का सरोवर उछल रहा है और भरे सरोवर में भक्तगण बह रहे हैं। हे नानक! जिन्होंने सतगुरु का मनन किया है, वे भाग्यशाली हैं॥ १॥

मः ४ ॥ हरि हरि नाम असंख हरि हरि के गुन कथनु न जाहि ॥ हरि हरि अगमु अगाधि हरि जन कितु बिधि मिलहि मिलाहि ॥ हरि हरि जसु जपत जपंत जन इकु तिलु नही कीमति पाइ ॥ जन नानक हरि अगम प्रभ हरि मेलि लैहु लड़ि लाइ ॥ २ ॥

महला ४॥ परमात्मा के नाम अनगिनत हैं, उसके गुणों का कथन भी नहीं किया जा सकता। वह अपहुँच एवं असीम है और किस तरीके से प्रभु से मिलाप हो सकता है। जो ईश्वर का यशोगान करते हैं, वे उसकी महत्ता का थोड़ा-सा भी मूल्यांकन नहीं कर सकते। नानक का कथन है कि प्रभु स्वतः ही भक्तों को अपने चरणों में मिला लेता है॥ २॥

पउड़ी ॥ हरि अगमु अगोचरु अगमु हरि किउ करि हरि दरसनु पिखा ॥ किछु वखरु होइ सु वरनीऐ तिसु रूपु न रिखा ॥ जिसु बुझाए आपि बुझाइ देइ सोई जनु दिखा ॥ सतसंगति सतिगुर चटसाल है जितु हरि गुण सिखा ॥ धनु धंनु सु रसना धंनु कर धंनु सु पाधा सतिगुरू जितु मिलि हरि लेखा लिखा ॥ ८ ॥

पउड़ी॥ ईश्वर अपहुँच, मन-वाणी से परे है, उसके दर्शन कैसे हो सकते हैं। यदि कोई वस्तु हो तो उसका वर्णन किया जाए, उसका रूप एवं आकार नहीं। जिसे वह स्वयं समझाता है, वही व्यक्ति दर्शन करता है। सत्संगति गुरु की पाठशाला है, जहां गुणों की शिक्षा दी जाती है। वह जिह्वा धन्य है, वे हाथ धन्य हैं, वह गुरु अध्यापक भी धन्य है, जहाँ मिलकर प्रभु के गुणों को लिखा जाता है॥ ८॥

सलोक मः ४ ॥ हरि हरि नामु अंम्रितु है हरि जपीऐ सतिगुर भाइ ॥ हरि हरि नामु पवितु है हरि जपत सुनत दुखु जाइ ॥ हरि नामु तिनी आराधिआ जिन मसतकि लिखिआ धुरि पाइ ॥ हरि दरगह जन पैनाईअनि जिन हरि मनि वसिआ आइ ॥ जन नानक ते मुख उजले जिन हरि सुणिआ मनि भाइ ॥ १ ॥

श्लोक महला ४॥ परमात्मा का नाम अमृत का सागर है, गुरु के प्रेम में उसी का जाप करो। हरिनाम पवित्र है, उसका जाप करने एवं यश सुनने से दुख दर्द सब दूर हो जाते हैं। परमात्मा

के नाम की उन लोगों ने ही आराधना की है, जिनके माथे पर प्रारम्भ से भाग्य लिखा हुआ था। जिनके मन में वह बस जाता है, वही भक्त प्रभु दरबार में शोभा पाते हैं। हे नानक ! उन्हीं के मुख उज्ज्वल होते हैं, जो मन लगाकर परमात्मा का भजन सुनते हैं॥ १॥

मः ४ ॥ हरि हरि नामु निधानु है गुरमुखि पाइआ जाइ ॥ जिन धुरि मसतकि लिखिआ तिन सतिगुरु मिलिआ आइ ॥ तनु मनु सीतलु होइआ सांति वसी मनि आइ ॥ नानक हरि हरि चउदिआ सभु दालदु दुखु लहि जाइ ॥ २ ॥

महला ४॥ परमात्मा का नाम सुखों का घर है, जो गुरु द्वारा ही प्राप्त होता है। जिनके मस्तक पर पूर्व से ही लिखा होता है, उनको ही सतिगुरु मिलता है। मन तन शीतल हो जाता है और मन में शान्ति बस जाती है। हे नानक ! परमात्मा का यशोगान करने से दुख-दारिद्रय सब दूर हो जाते हैं॥ २॥

पउड़ी ॥ हउ वारिआ तिन कउ सदा सदा जिना सतिगुरु मेरा पिआरा देखिआ ॥ तिन कउ मिलिआ मेरा सतिगुरू जिन कउ धुरि मसतकि लेखिआ ॥ हरि अगमु धिआइआ गुरमती तिसु रूपु नही प्रभ रेखिआ ॥ गुर बचनि धिआइआ जिना अगमु हरि ते ठाकुर सेवक रलि एकिआ ॥ सभि कहहु मुखहु नर नरहरे नर नरहरे नर नरहरे हरि लाहा हरि भगति विसेखिआ ॥ ६ ॥

पउड़ी॥ मैं उन पर सदैव कुर्बान जाता हूँ, जिन्होंने मेरे प्यारे सतिगुरु के दर्शन किए हैं। मेरा सतिगुरु उनको ही मिला है, जिनके ललाट पर भाग्य लिखा हुआ है। गुरु की शिक्षा से परमात्मा का ध्यान किया है, उसका कोई रूप अथवा आकार चिन्ह नहीं। जिन्होंने गुरु के वचनों से परमात्मा का ध्यान किया है, वे सेवक एवं मालिक एक रूप ही हो गए हैं। सभी मुख से नारायण का नाम जपो, हरि की भक्ति से ही विशेष लाभ प्राप्त होता है॥ ६॥

सलोक मः ४ ॥ राम नामु रमु रवि रहे रमु रामो रामु रमीति ॥ घटि घटि आतम रामु है प्रभि खेलु कीओ रंगि रीति ॥ हरि निकटि वसै जगजीवना परगासु कीओ गुर मीति ॥ हरि सुआमी हरि प्रभु तिन मिले जिन लिखिआ धुरि हरि प्रीति ॥ जन नानक नामु धिआइआ गुर बचनि जपिओ मनि चीति ॥ १ ॥

श्लोक महला ४॥ परमात्मा का नाम सर्वव्याप्त है, उसी का भजन करो, वह घट घट में अवस्थित है, यह जगत-लीला उस प्रभु ने रची है। वह हमारे निकट ही बसता है, वह संसार का जीवन है, गुरु के उपदेश से यही ज्ञान प्रदान किया है। जगत का स्वामी प्रभु उनको ही मिलता है, जिनके भाग्य में लिखा होता है। हे नानक ! गुरु के वचन से परमात्मा के नाम का ध्यान किया है और मन में उसी का जाप किया है॥ १॥

मः ४ ॥ हरि प्रभु सजणु लोड़ि लहु भागि वसै वडभागि ॥ गुरि पूरै देखालिआ नानक हरि लिव लागि ॥ २ ॥

महला ४॥ सज्जन प्रभु को पा लो, यदि उत्तम भाग्य हो तो वह मन में बस जाता है। नानक फुरमाते हैं—पूर्ण गुरु ने परमात्मा के दर्शन करवाए हैं, अब उसी में लगन लगी हुई है॥ २॥

पउड़ी ॥ धनु धनु सुहावी सफल घड़ी जितु हरि सेवा मनि भाणी ॥ हरि कथा सुणावहु मेरे गुरसिखहु मेरे हरि प्रभ अकथ कहाणी ॥ किउ पाईऐ किउ देखीऐ मेरा हरि प्रभु सुघड़ु सुजाणी ॥ हरि मेलि दिखाए आपि हरि गुर बचनी नामि समाणी ॥ तिन विटहु नानकु वारिआ जो जपदे हरि निरबाणी ॥ १० ॥

पउड़ी॥ वह जीवन-घड़ी सफल, सुहावनी एवं धन्य है, जब ईश्वर की सेवा मन को अच्छी लगी। हे मेरे गुरु के शिष्यो! मुझे हरि-कथा सुनाओ, उस प्रभु की कथा अकथनीय है। मेरा चतुर प्रभु क्योंकर पाया जाता है, क्योंकर उसके दर्शन होते हैं? वह स्वयं ही मिलाता है, स्वयं ही दर्शन करवाता है और गुरु के वचनों से जीव प्रभु में ही विलीन हो जाता है। हे नानक! मैं उन लोगों पर कुर्बान जाता हूँ, जो ईश्वर का नाम जपते हैं॥ १०॥

सलोक मः ४ ॥ हरि प्रभ रते लोइणा गिआन अंजनु गुरु देइ ॥ मै प्रभु सजणु पाइआ जन नानक सहजि मिलेइ ॥ १ ॥

श्लोक महला ४॥ गुरु ने ज्ञान का सुरमा दिया तो ये आँखें प्रभु में ही लीन हो गईं। इस तरह हे नानक! मैंने सहज स्वाभाविक ही सज्जन प्रभु को पा लिया॥ १॥

मः ४ ॥ गुरमुखि अंतरि सांति है मनि तनि नामि समाइ ॥ नामु चितवै नामो पड़ै नामि रहै लिव लाइ ॥ नामु पदारथु पाईऐ चिंता गई बिलाइ ॥ सतिगुरि मिलिऐ नामु ऊपजै त्रिसना भुख सभ जाइ ॥ नानक नामे रतिआ नामो पलै पाइ ॥ २ ॥

महला ४॥ गुरमुख के अन्तर्मन में सुख शान्ति बसी रहती है, उसके मन तन में हरिनाम समाया रहता है। वह नाम का चिन्तन करता है, हरिनाम का पठन करता है और नाम में ही ध्यानशील रहता है। हरिनाम पदार्थ पाने से सब चिन्ता दूर हो जाती है। यदि सतगुरु से मिलाप हो जाए तो ही हरिनाम उपजता है और तृष्णा-भूख सब दूर हो जाती है। हे नानक! हरिनाम में तल्लीन रहने वाला नाम ही पाता है॥ २॥

पउड़ी ॥ तुधु आपे जगतु उपाइ कै तुधु आपे वसगति कीता ॥ इकि मनमुख करि हाराइअनु इकना मेलि गुरू तिना जीता ॥ हरि ऊतमु हरि प्रभ नामु है गुर बचनि सभागै लीता ॥ दुखु दालदु सभो लहि गइआ जां नाउ गुरू हरि दीता ॥ सभि सेवहु मोहनो मनमोहनो जगमोहनो जिनि जगतु उपाइ सभो वसि कीता ॥ ११ ॥

पउड़ी॥ हे प्रभु! तूने जगत को उत्पन्न करके अपने वश में किया हुआ है। किसी को स्वेच्छाचारी बनाकर जीवन में हरा दिया है और किसी को गुरु से मिलाकर जीवन-बाजी में जीत का हकदार बना दिया है। प्रभु का नाम उत्तम है और गुरु के वचन से कोई भाग्यशाली ही लेता है। जब गुरु ने हरिनाम प्रदान किया तो दुख-दारिद्रय सब दूर हो गए। सभी मन एवं जगत को मोहित करने वाले प्रभु का सुमिरन करो, जिसने जगत को उत्पन्न करके सब जीवों को वश में किया हुआ है॥ ११॥

सलोक मः ४ ॥ मन अंतरि हउमै रोगु है भ्रमि भूले मनमुख दुरजना ॥ नानक रोगु वञाइ मिलि सतिगुर साधू सजना ॥ १ ॥

श्लोक महला ४॥ मन में अहंकार का रोग लगा होता है, जिस कारण दुष्ट स्वेच्छाचारी पथभ्रष्ट हो जाते हैं। नानक का फुरमान है कि जब सतगुरु, सज्जन साधु मिलता है तो यह रोग दूर हो जाता है॥ १॥

मः ४ ॥ मनु तनु तामि सगारवा जां देखा हरि नैणे ॥ नानक सो प्रभु मै मिलै हउ जीवा सदु सुणे ॥ २ ॥

महला ४॥ जब आँखों से प्रभु के दर्शन किए तो मन तन सुन्दर हो गया। हे नानक! वह प्रभु मुझे मिल गया है, जिसका कीर्तन सुनकर मैं जीता हूँ॥ २॥

पउड़ी ॥ जगंनाथ जगदीसर करते अपरंपर पुरखु अतोलु ॥ हरि नामु धिआवहु मेरे गुरसिखहु हरि ऊतमु हरि नामु अमोलु ॥ जिन धिआइआ हिरदै दिनसु राति ते मिले नही हरि रोलु ॥ वडभागी संगति मिलै गुर सतिगुर पूरा बोलु ॥ सभि धिआवहु नर नाराइणो नाराइणो जितु चूका जम झगड़ु झगोलु ॥ १२ ॥

पउड़ी॥ ईश्वर सम्पूर्ण जगत का मालिक है, वह जगदीश्वर प्रकृति का रचनहार है, परे से परे, परमपुरुष एवं अतुलनीय है। हे मेरे गुरु के शिष्यो! हरिनाम का ध्यान करो, वह उत्तम एवं अमूल्य है। जिन्होंने हृदय में दिन-रात ध्यान किया है, वे प्रभु में मिल गए हैं, पथभ्रष्ट नहीं हुए। भाग्यशाली को संगत में पूर्ण गुरु का वचन मिलता है। हे भक्तजनो! सभी नारायण का भजन करो, जिसके फलस्वरूप यम का झगड़ा समाप्त हो जाता है॥ १२॥

सलोक मः ४ ॥ हरि जन हरि हरि चउदिआ सरु संधिआ गावार ॥ नानक हरि जन हरि लिव उबरे जिन संधिआ तिसु फिरि मार ॥ १ ॥

श्लोक महला ४॥ हरि-भक्त हरि भजन में लीन रहता है, यदि कोई मूर्ख तीर का निशाना छोड़ता है, नानक फुरमान करते हैं कि हरि-भक्ति में लीन भक्त तो इससे बच जाता है, परन्तु निशाना लगाने वाला स्वयं ही मौत की लपेट में आ जाता है॥ १॥

मः ४ ॥ अखी प्रेमि कसाईआ हरि हरि नामु पिखंन्हि ॥ जे करि दूजा देखदे जन नानक कढि दिचंन्हि ॥ २ ॥

महला ४॥ ये आँखें हरि-प्रेम में अनुरक्त हैं और प्रभु को देखती रहती हैं। हे नानक! यदि प्रभु के सिवा किसी अन्य को देखती हैं, तो ऐसी आँखों को निकाल देना चाहिए॥ २॥

पउड़ी ॥ जलि थलि महीअलि पूरनो अपरंपरु सोई ॥ जीअ जंत प्रतिपालदा जो करे सु होई ॥ मात पिता सुत भ्रात मीत तिसु बिनु नही कोई ॥ घटि घटि अंतरि रवि रहिआ जपिअहु जन कोई ॥ सगल जपहु गोपाल गुन परगटु सभ लोई ॥ १३ ॥

पउड़ी॥ जल, धरती, आकाश सर्वत्र ईश्वर ही व्याप्त है। वह जीव-जन्तु सबका पोषण करता है और जो करता है, वही होता है। वही हमारा माता-पिता, पुत्र, भाई एवं मित्र है, उसके सिवा अन्य कोई हमदर्द नहीं। वह घट घट में रमण कर रहा है और कोई विरला भक्त ही उसका जाप करता है। सभी परमात्मा का स्तुतिगान करो, सब लोकों में वही विद्यमान है॥ १३॥

सलोक मः ४ ॥ गुरमुखि मिले सि सजणा हरि प्रभ पाइआ रंगु ॥ जन नानक नामु सलाहि तू लुडि लुडि दरगहि वंञु ॥ १ ॥

श्लोक महला ४॥ जिसे सज्जन गुरु मिलता है, उसे ही प्रभु का प्रेम प्राप्त होता है। नानक का कथन है कि परमात्मा की स्तुति करो एवं खुशी-खुशी प्रभु के दरबार में जाओ॥ १॥

मः ४ ॥ हरि तूहै दाता सभस दा सभि जीअ तुम्हारे ॥ सभि तुधै नो आराधदे दानु देहि पिआरे ॥ हरि दातै दातारि हथु कढिआ मीहु वुठा सैसारे ॥ अंनु जंमिआ खेती भाउ करि हरि नामु सम्हारे ॥ जनु नानकु मंगै दानु प्रभ हरि नामु अधारे ॥ २ ॥

महला ४॥ हे ईश्वर! एकमात्र तू ही सबका दाता है, सभी जीव तुम्हारे हैं। सब लोग तुम्हारी आराधना करते हैं, हे प्यारे! तू ही देने वाला है। दाता प्रभु ने देने के लिए हाथ निकाला तो संसार

में वर्षा होने लगी। प्रेम की खेती करने वालों के अन्तर्मन में नाम रूपी अन्न उत्पन्न हुआ, सब प्रभु का नाम-स्मरण कर रहे हैं। नानक का कथन है कि मैं तो हरिनाम का ही आसरा मांगता हूँ॥२॥

पउड़ी ॥ इछा मन की पूरीऐ जपीऐ सुख सागरु ॥ हरि के चरन अराधीअहि गुर सबदि रतनागरु ॥ मिलि साधू संगि उधारु होइ फाटै जम कागरु ॥ जनम पदारथु जीतीऐ जपि हरि बैरागरु ॥ सभि पवहु सरनि सतिगुरू की बिनसै दुख दागरु ॥ १४ ॥

पउड़ी॥ सुखों के सागर ईश्वर का जाप करने से मन की हर कामना पूरी होती है। परमात्मा के चरणों की आराधना करो, गुरु का शब्द रत्नों का भण्डार है। साधु पुरुषों की संगत में मुक्ति प्राप्त होती है और यमराज का हिसाब खत्म हो जाता है। प्रेम की मूर्ति परमात्मा का भजन करने से जीवन सार्थक होता है। सभी गुरु की शरण में पड़ो, इससे तमाम दुख-तकलीफें नष्ट हो जाती हैं॥१४॥

सलोक मः ४ ॥ हउ ढूंढेंदी सजणा सजणु मैडै नालि ॥ जन नानक अलखु न लखीऐ गुरमुखि देहि दिखालि ॥ १ ॥

श्लोक महला ४॥ मैं सज्जन प्रभु को ढूँढती फिरती हूँ, परन्तु प्यारा सज्जन तो मेरे आसपास ही है। हे नानक! वह अदृष्ट है, दिखाई नहीं देता और गुरु ही उसके दर्शन करवाता है॥१॥

मः ४ ॥ नानक प्रीति लाई तिनि सचै तिसु बिनु रहणु न जाई ॥ सतिगुरु मिलै त पूरा पाईऐ हरि रसि रसन रसाई ॥ २ ॥

महला ४॥ नानक का कथन है कि सच्चे प्रभु से ऐसा प्रेम लगाया है कि उसके बिना अब रहा नहीं जाता। सतगुरु से साक्षात्कार हो जाए तो पूर्ण परमेश्वर प्राप्त होता है और रसना हरि के गुणगान में लीन रहती है॥२॥

पउड़ी ॥ कोई गावै को सुणै को उचरि सुनावै ॥ जनम जनम की मलु उतरै मन चिंदिआ पावै ॥ आवणु जाणा मेटीऐ हरि के गुण गावै ॥ आपि तरहि संगी तराहि सभ कुटंबु तरावै ॥ जनु नानकु तिसु बलिहारणै जो मेरे हरि प्रभ भावै ॥ १५ ॥ १ ॥ सुधु ॥

पउड़ी॥ कोई जिज्ञासु हरि के गुण गाता है, कोई श्रद्धालु हरि-संकीर्तन सुनता है, कोई परम भक्त नामोच्चारण करके जिज्ञासुओं को सुनाता है। इसके फलस्वरूप सब की जन्म-जन्म की पापों की मैल दूर होती है और मनोवांछित फल प्राप्त होता है। परमात्मा के गुणानुवाद से आवागमन मिट जाता है। हरि-भक्त स्वयं तो संसार-सागर से तैरता ही है, अपने संगी-साथियों एवं पूरे परिवार को पार करवा देता है। गुरु नानक का फुरमान है कि जो मेरे प्रभु को अच्छा लगता है, उस पर मैं सदैव बलिहारी जाता हूँ॥१५॥१॥ शुद्ध अर्थात् मूल से मिलाप किया हुआ है।

रागु कानड़ा बाणी नामदेव जीउ की ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

ऐसो राम राइ अंतरजामी ॥ जैसे दरपन माहि बदन परवानी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बसै घटा घट लीप न छीपै ॥ बंधन मुकता जातु न दीसै ॥ १ ॥ पानी माहि देखु मुखु जैसा ॥ नामे को सुआमी बीठलु ऐसा ॥ २ ॥ १ ॥

अन्तर्यामी परमेश्वर ऐसे दृष्टिगत होता है, जैसे दर्पण में चेहरा स्पष्ट दिखाई देता है॥१॥ रहाउ॥ वह घट घट में व्याप्त है, उसे मोह-माया का कोई दोष नहीं लगता। वह संसार के बन्धनों से मुक्त है, शाश्वत है॥१॥ जिस तरह पानी में मुख साफ दिखाई देता है, नामदेव का स्वामी प्रभु भी ऐसे ही साक्षात् दिखाई देता है॥२॥१॥

१ओं सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

वह अद्वितीय परमेश्वर केवल (ओंकार स्वरूप) एक है, नाम उसका सत्य है, वह संसार को बनाने वाला है, सर्वशक्तिमान है, निर्भय है, उसका किसी से वैर नहीं, वह कालातीत ब्रह्म मूर्ति सदा अमर है, वह जन्म-मरण के चक्र से रहित है, वह स्वतः प्रकाशमान हुआ, स्वयंभू है, गुरु-कृपा से प्राप्त होता है।

रामा रम रामै अंतु न पाइआ ॥ हम बारिक प्रतिपारे तुमरे तू बड पुरखु पिता मेरा माइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि के नाम असंख अगम हहि अगम अगम हरि राइआ ॥ गुणी गिआनी सुरति बहु कीनी इकु तिलु नही कीमति पाइआ ॥ १ ॥ गोबिद गुण गोबिद सद गावहि गुण गोबिद अंतु न पाइआ ॥ तू अमिति अतोलु अपरंपर सुआमी बहु जपीऐ थाह न पाइआ ॥ २ ॥ उसतति करहि तुमरी जन माधौ गुन गावहि हरि राइआ ॥ तुम्ह जल निधि हम मीने तुमरे तेरा अंतु न कतहू पाइआ ॥ ३ ॥ जन कउ क्रिपा करहु मधसूदन हरि देवहु नामु जपाइआ ॥ मै मूरख अंधुले नामु टेक है जन नानक गुरमुखि पाइआ ॥ ४ ॥ १ ॥

परमेश्वर सर्वत्र व्याप्त है, कोई भी उसका रहस्य नहीं पा सका। हे स्रष्टा ! हम बच्चों का तू ही पालन-पोषण करने वाला है, तू महान् है, तुम ही हमारे माता-पिता हो॥ १॥ रहाउ॥ ईश्वर के असंख्य नाम हैं, वह अगम्य, असीम एवं अपहुँच है। गुणवान एवं ज्ञानी लोगों ने बहुत मनन किया है, लेकिन वे तिल मात्र भी रहस्य नहीं पा सके॥ १॥ वे सदैव परमात्मा का गुणगान करते हैं, पर उसके गुणों का भेद प्राप्त नहीं होता। हे स्वामी ! तू असीम, अतुलनीय एवं परे से भी परे है, कितना ही जाप किया जाए, तेरी गहराई को पाया नहीं जा सकता॥ २॥ हे माधव ! भक्तजन तुम्हारी स्तुति करते हैं, तेरे गुण गाते हैं। तुम सागर हो, हम तुम्हारी मछलियाँ हैं, तेरा रहस्य नहीं पा सके॥ ३॥ हे दुष्टदमन ! सेवक पर जरा कृपा करो, अपने नाम का जाप करने के लिए बल प्रदान करो। नानक का कथन है कि मुझ सरीखे मूर्ख एवं अज्ञानांध का तो हरिनाम ही एकमात्र आसरा है, जो गुरु से मुझे प्राप्त हुआ है॥ ४॥ १॥

कलिआनु महला ४ ॥ हरि जनु गुन गावत हसिआ ॥ हरि हरि भगति बनी मति गुरमति धुरि मसतकि प्रभि लिखिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर के पग सिमरउ दिनु राती मनि हरि हरि हरि बसिआ ॥ हरि हरि हरि कीरति जगि सारी घसि चंदनु जसु घसिआ ॥ १ ॥ हरि जन हरि हरि हरि लिव लाई सभि साकत खोजि पइआ ॥ जिउ किरत संजोगि चलिओ नर निंदकु पगु नागनि छुहि जलिआ ॥ २ ॥ जन के तुम्ह हरि राखे सुआमी तुम्ह जुगि जुगि जन रखिआ ॥ कहा भइआ दैति करी बखीली सभ करि करि झरि परिआ ॥ ३ ॥ जेते जीअ जंत प्रभि कीए सभि कालै मुखि ग्रसिआ ॥ हरि जन हरि हरि हरि प्रभि राखे जन नानक सरनि पइआ ॥ ४ ॥ २ ॥

हरि-भक्त केवल हरि के गुण गाता हुआ अपनी खुशी का इजहार करता है। गुरु की शिक्षा से हरि-भक्ति में प्रीति लगाई, दरअसल प्रारम्भ से ही भाग्य में ऐसा लिखा हुआ था॥१॥ रहाउ॥ दिन-रात गुरु के चरणों का स्मरण करता हूँ, जिससे मन में भगवान बस गया है। ज्यों चन्दन को घिसकर खुशबू को फैलाया जाता है, वैसे ही भगवान की कीर्ति पूरे जगत में फैली हुई है॥१॥ हरि-भक्त ने हरि में लगन लगाई तो अनीश्वरवादी लोग ईर्ष्या अथवा विरोध करने लगे। जैसे कर्मानुसार निंदक व्यक्ति जीवन चलाता है, वैसे ही ईर्ष्या की अग्नि में जलता है, जैसे नागिन के डंक से मृत्यु हो जाती है॥२॥ हे स्वामी हरि! तुम अपने भक्तों के रखवाले हो, युग-युग से रक्षा करते आ रहे हो। दैत्य हिरण्यकशिपु ने निंदा की, पर भला क्या बिगाड़ सका, सभी कोशिशें करने के बावजूद अन्त में मौत की नींद ही सोया॥३॥ जितने भी जीव-जन्तु प्रभु ने पैदा किए हैं, सभी मौत के मुँह में जाने वाले हैं। नानक का फुरमान है कि परमात्मा ने सदैव ही भक्तों की रक्षा की है और भक्तजन उसी की शरण में पड़े हैं॥४॥२॥

कलिआन महला ४ ॥ मेरे मन जपु जपि जगंनाथे ॥ गुर उपदेसि हरि नामु धिआइओ सभि किलबिख दुख लाथे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ रसना एक जसु गाइ न साकै बहु कीजै बहु रसुनथे ॥ बार बार खिनु पल सभि गावहि गुन कहि न सकहि प्रभ तुमनथे ॥ १ ॥ हम बहु प्रीति लगी प्रभ सुआमी हम लोचह प्रभु दिखनथे ॥ तुम बड दाते जीअ जीअन के तुम जानहु हम बिरथे ॥ २ ॥ कोई मारगु पंथु बतावै प्रभ का कहु तिन कउ किआ दिनथे ॥ सभु तनु मनु अरपउ अरपि अरापउ कोई मेलै प्रभ मिलथे ॥ ३ ॥ हरि के गुन बहुत बहुत बहु सोभा हम तुछ करि करि बरनथे ॥ हमरी मति वसगति प्रभ तुमरै जन नानक के प्रभ समरथे ॥ ४ ॥ ३ ॥

हे मेरे मन! संसार के स्वामी प्रभु का भजन करो; यदि गुरु के उपदेश से परमात्मा का ध्यान किया जाए तो सब पाप-दुख निवृत्त हो जाते हैं॥१॥ रहाउ॥ हे प्रभु! हमारी एक जीभ तुम्हारा यश नहीं गा सकती, अतः अनेक जीभों वाला बना दो। अगर ये सभी बार-बार हर पल तुम्हारा गुणगान करेंगी तो भी तेरे गुणों का कथन नहीं कर सकतीं॥१॥ हे स्वामी प्रभु! हमने तुम्हारे साथ प्रेम लगा लिया है, अब हम तेरे ही दर्शन चाहते हैं। तुम सब जीवों के बड़े दाता हो, तुम ही हमारी पीड़ा को जानते हो॥२॥ अगर कोई मुझे प्रभु का मार्ग बताता है तो उसे भला क्या अर्पण करूँ? अगर कोई प्रभु से मिलाता है, तो तन-मन सर्वस्व अर्पण कर दूँ॥३॥ परमात्मा के गुण बेअंत हैं, उसकी शोभा बेशुमार है, हम तुच्छ मात्र ही वर्णन करते हैं। हे नानक के समर्थ प्रभु! हमारी बुद्धि सब तुम्हारे वश में है॥४॥३॥

कलिआन महला ४ ॥ मेरे मन जपि हरि गुन अकथ सुनथई ॥ धरमु अरथु सभु कामु मोखु है जन पीछै लगि फिरथई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सो हरि हरि नामु धिआवै हरि जनु जिसु बडभाग मथई ॥ जह दरगहि प्रभु लेखा मागै तह छुटै नामु धिआइथई ॥ १ ॥ हमरे दोख बहु जनम जनम के दुखु हउमै मैलु लगथई ॥ गुरि धारि क्रिपा हरि जलि नावाए सभ किलबिख पाप गथई ॥ २ ॥ जन कै रिद अंतरि प्रभु सुआमी जन हरि हरि नामु भजथई ॥ जह अंती अउसरु आइ बनतु है तह राखै नामु साथई ॥ ३ ॥ जन तेरा जसु गावहि हरि हरि प्रभ हरि जपिओ जगंनथई ॥ जन नानक के प्रभ राखे सुआमी हम पाथर रखु बुडथई ॥ ४ ॥ ४ ॥

हे मेरे मन! परमात्मा का भजन करो, उसके गुण अकथनीय सुने जाते हैं। धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इत्यादि सब भक्तों के पीछे लगे रहते हैं॥१॥ रहाउ॥ वही भक्त परमात्मा का ध्यान करता है, जिसके माथे पर सौभाग्य होता है। जहाँ प्रभु के दरबार में कर्मों का हिसाब मांगा जाता है, वहाँ हरिनाम का ध्यान करने वाला मुक्त हो जाता है॥१॥ हमने बहुत सारे दोष किए हैं, जन्म-जन्मांतर के दुख एवं अहंकार की मैल लगी हुई थी। गुरु ने कृपा करके हरिनाम जल में स्नान करवाया तो सब पाप-दोष निवृत्त हो गए॥२॥ दास के हृदय में प्रभु बसा हुआ है, अतः वह हरि-भजन में लीन रहता है। जब जीवन का अन्तिम समय आ जाता है, तब प्रभु का नाम ही साथी बनकर रक्षा करता है॥३॥ हे प्रभु! सेवक हरदम तेरा ही यश गाता है, जगत के मालिक का भजन करता है। हे नानक के प्रभु! तुम ही रक्षक हो, हम पत्थरों को डूबने से बचा लो॥४॥४॥

कलिआन महला ४ ॥ हमरी चितवनी हरि प्रभु जानै ॥ अउरु कोई निंद करै हरि जन की प्रभु ता का कहिआ इकु तिलु नही मानै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अउर सभ तिआगि सेवा करि अचुत जो सभ ते ऊच ठाकुरु भगवानै ॥ हरि सेवा ते कालु जोहि न साकै चरनी आइ पवै हरि जानै ॥ १ ॥ जा कउ राखि लेइ मेरा सुआमी ता कउ सुमति देइ पै कानै ॥ ता कउ कोई अपरि न साकै जा की भगति मेरा प्रभु मानै ॥ २ ॥ हरि के चोज विडान देखु जन जो खोटा खरा इक निमख पछानै ॥ ता ते जन कउ अनदु भइआ है रिद सुध मिले खोटे पछुतानै ॥ ३ ॥ तुम हरि दाते समरथ सुआमी इकु मागउ तुझ पासहु हरि दानै ॥ जन नानक कउ हरि क्रिपा करि दीजै सद बसहि रिदै मोहि हरि चरानै ॥ ४ ॥ ५ ॥

हमारी भावना को प्रभु भलीभांति जानता है। अगर कोई भक्त की निंदा करता है तो प्रभु उसका बिल्कुल कहना नहीं मानता॥१॥ रहाउ॥ अन्य सब कर्मकांड छोड़कर परमेश्वर की उपासना करो, जो सबसे बड़ा मालिक है। भगवान की अर्चना करने से काल भी बुरी नजर नहीं डालता, बल्कि भक्त के चरणों में आ पड़ता है॥१॥ जिसको मेरा स्वामी बचा लेता है, उसके कानों में सुमति डाल देता है। जिसकी भक्ति को मेरा प्रभु स्वीकार कर लेता है, उसका कोई कुछ बिगाड़ नहीं सकता॥२॥ हे लोगो! परमात्मा की अद्भुत लीला देखो, जो बुरे-भले को एक पल में पहचान लेता है। तभी तो सेवक को आनंद पैदा हो गया है, दरअसल साफ दिल वाले ईश्वर से मिल जाते हैं और खोटे इन्सान पछताते ही रहते हैं॥३॥ हे परमेश्वर! तू ही देने वाला है, सर्वशक्तिमान एवं जगत का स्वामी है, मैं तुझसे नाम दान मांगता हूँ। नानक विनती करते हैं कि हे प्रभु! मुझ पर कृपा करो, ताकि मेरे हृदय में सदैव तेरे चरण बसते रहें॥४॥५॥

कलिआन महला ४ ॥ प्रभ कीजै क्रिपा निधान हम हरि गुन गावहगे ॥ हउ तुमरी करउ नित आस प्रभ मोहि कब गलि लावहिगे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हम बारिक मुगध इआन पिता समझावहिगे ॥ सुतु खिनु खिनु भूलि बिगारि जगत पित भावहिगे ॥ १ ॥ जो हरि सुआमी तुम देहु सोई हम पावहगे ॥ मोहि दूजी नाही ठउर जिसु पहि हम जावहगे ॥ २ ॥ जो हरि भावहि भगत तिना हरि भावहिगे ॥ जोती जोति मिलाइ जोति रलि जावहगे ॥ ३ ॥ हरि आपे होइ क्रिपालु आपि लिव लावहिगे ॥ जनु नानकु सरनि दुआरि हरि लाज रखावहिगे ॥ ४ ॥ ६ ॥ छका १ ॥

हे कृपा के घर, प्रभु! हम पर कृपा करना ताकि तेरे गुण गाते रहें। मैं नित्य तुम्हारी आशा करता हूँ, मुझे कब गले लगाओगे॥१॥ रहाउ॥ हम मूर्ख एवं नादान बच्चे हैं, पिता-प्रभु ही समझाने वाला है। पुत्र हर पल गलती करके कार्य बिगाड़ता है, यूं लगता है जैसे जगत पिता को

यही अच्छा लगता है॥१॥ हे स्वामी! जो तुम देते हो, वही हम प्राप्त करते हैं। हमारा अन्य कोई ठौर-ठिकाना नहीं, जहाँ हम जा सकते हैं॥२॥ जो भक्त परमात्मा को प्यारे लगते हैं, उनको भी प्रभु प्राणों से प्यारा होता है। उनकी आत्म-ज्योति ईश्वर की परम-ज्योति में मिलकर एक ही हो जाती है॥३॥ ईश्वर स्वयं ही कृपालु होता है और स्वयं भक्ति में लगाता है। नानक का कथन है कि जो ईश्वर की शरण में आता है, वह उसी की लाज रखता है॥४॥६॥छका १॥

कलिआनु भोपाली महला ४ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

पारब्रहमु परमेसुरु सुआमी दूख निवारणु नाराइणे ॥ सगल भगत जाचहि सुख सागर भव निधि तरण हरि चिंतामणे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दीन दइआल जगदीस दमोदर हरि अंतरजामी गोबिंदे ॥ ते निरभउ जिन स्रीरामु धिआइआ गुरमति मुरारि हरि मुकंदे ॥ १ ॥ जगदीसुर चरन सरन जो आए ते जन भव निधि पारि परे ॥ भगत जना की पैज हरि राखै जन नानक आपि हरि क्रिपा करे ॥ २ ॥ १ ॥ ७ ॥

वह परब्रह्म परमेश्वर नारायण दुखों का निवारण करने वाला है। सब भक्त सुखों के सागर से मांगते हैं, वह संसार-समुद्र से पार उतारने वाला जहाज है और हर मनोकामना पूरी करने वाला है॥१॥ रहाउ॥ वह जगदीश्वर दीनों-दुखियों पर सदा अपनी दया बनाए रखता है, वह संतों का हमदर्द एवं मन की भावना को जानने वाला है। असल में वही निर्भय हैं, जिन्होंने श्री राम का ध्यान किया है, गुरु की शिक्षा से प्रभु की अर्चना करते हैं॥१॥ जो लोग जगदीश्वर के चरणों की शरण में आए हैं, वे संसार-समुद्र से पार उतर गए हैं। गुरु नानक का निष्ठापूर्वक यही वचन है कि ईश्वर स्वयं ही कृपा करके भक्तजनों की लाज बचाता है॥२॥१॥७॥

रागु कलिआनु महला ५ घरु १ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

हमारै एह किरपा कीजै ॥ अलि मकरंद चरन कमल सिउ मनु फेरि फेरि रीझै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आन जला सिउ काजु न कछूऐ हरि बूंद चात्रिक कउ दीजै ॥ १ ॥ बिनु मिलबे नाही संतोखा पेखि दरसनु नानकु जीजै ॥ २ ॥ १ ॥

हे कृपानिधान! हम पर यह कृपा करो, ज्यों भँवरा मकरन्द पर आसक्त रहता है, वैसे ही यह मन तेरे चरण-कमल पर बार-बार मंडराता रहे॥१॥ रहाउ॥ अन्य जल से मेरा कोई मतलब नहीं, मुझ पपीहे को हरिनाम रूपी बूँद प्रदान करो॥१॥ तेरे मिलन बिना संतोष नहीं होता, नानक तो तेरे दर्शन करके ही जीता है॥२॥१॥

कलिआन महला ५ ॥ जाचिकु नामु जाचै जाचै ॥ सरब धार सरब के नाइक सुख समूह के दाते ॥ १ ॥ रहाउ ॥ केती केती मांगनि मागै भावनीआ सो पाईऐ ॥ १ ॥ सफल सफल सफल दरसु रे परसि परसि गुन गाईऐ ॥ नानक तत तत सिउ मिलीऐ हीरै हीरु बिधाईऐ ॥ २ ॥ २ ॥

हे प्रभु! यह याचक तो बार-बार तुझसे नाम ही मांगता है। तू सबको धारण करने वाला है, सबका मालिक है और सब सुख देने वाला है॥१॥ रहाउ॥ यह दुनिया कितनी ही वस्तुएँ मांगती है और मुँह मांगी मुरादें प्राप्त करती है॥१॥ तेरे दर्शन जीवन सफल करने वाले हैं, तेरे चरणों में रहकर तेरे ही गुण गाते रहें। हे नानक! ज्यों (जल) तत्व (जल) तत्व से मिल जाता है, वैसे ईश्वर रूपी हीरे से मन रूपी हीरे को मिलाना चाहिए॥२॥२॥

कलिआन महला ५ ॥ मेरे लालन की सोभा ॥ सद नवतन मन रंगी सोभा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ब्रहम महेस सिध मुनि इंद्रा भगति दानु जसु मंगी ॥ १ ॥ जोग गिआन धिआन सेखनागै सगल जपहि तरंगी ॥ कहु नानक संतन बलिहारै जो प्रभ के सद संगी ॥ २ ॥ ३ ॥

मेरे प्रभु की शोभा सदैव नवीन एवं मन को रंगने वाली है॥१॥ रहाउ॥ ब्रह्मा, शिवशंकर, सिद्ध, मुनि एवं इन्द्र इत्यादि भक्ति एवं यश ही मांगते हैं॥१॥ बड़े-बड़े योगी, ज्ञानी, ध्यानी एवं शेषनाग इत्यादि सब परमात्मा का जाप करते हैं। नानक का कथन है कि मैं उन संत पुरुषों पर बलिहारी जाता हूँ, जो प्रभु वन्दना में लीन रहकर सदा उसी के साथ रहते हैं॥२॥३॥

कलिआन महला ५ घरु २ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

तेरै मानि हरि हरि मानि ॥ नैन बैन स्रवन सुनीऐ अंग अंगे सुख प्रानि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इत उत दह दिसि रविओ मेर तिनहि समानि ॥ १ ॥ जत कता तत पेखीऐ हरि पुरख पति परधान ॥ साधसंगि भ्रम भै मिटे कथे नानक ब्रहम गिआन ॥ २ ॥ १ ॥ ४ ॥

हे ईश्वर ! तेरी महिमा गाने से ही मान-सम्मान प्राप्त होता है। आँखों से दर्शन करने, जिह्वा से नामोच्चारण, कानों से कीर्तन सुनने से अंग-अंग एवं प्राणों को सुख प्राप्त होता है॥१॥ रहाउ॥ इधर-उधर, दसों दिशाओं, पर्वतों एवं तृण में समान रूप से ईश्वर ही व्याप्त है॥१॥ जहाँ भी देखा जाए, उधर प्रभु ही नज़र आता है, वह परम पुरुष, संसार का स्वामी एवं प्रधान है। नानक यही ब्रह्मज्ञान कथन करते हैं कि साधु पुरुषों की संगत में सब भ्रम भय मिट जाते हैं॥२॥१॥४॥

कलिआन महला ५ ॥ गुन नाद धुनि अनंद बेद ॥ कथत सुनत मुनि जना मिलि संत मंडली ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गिआन धिआन मान दान मन रसिक रसन नामु जपत तह पाप खंडली ॥ १ ॥ जोग जुगति गिआन भुगति सुरति सबद तत बेते जपु तपु अखंडली ॥ ओति पोति मिलि जोति नानक कछू दुखु न डंडली ॥ २ ॥ २ ॥ ५ ॥

संतों की मण्डली में मिलकर मुनिजन परमात्मा का गुणगान, शब्द की ध्वनि, आनंददायक वेद-ज्ञान का कथन एवं श्रवण करते हैं॥१॥रहाउ॥ वे ज्ञान-चर्चा करते हैं, ध्यानशील रहते हैं, मोह-माया को छोड़ने की प्रेरणा करते हैं, मन से प्रेमपूर्वक परमात्मा का नाम जपते और पापों का खण्डन करते हैं॥१॥ वे तत्व वेता योग-युक्ति, ज्ञान-भोग, शब्द का चिन्तन, जाप-तपस्या करते हैं। नानक फुरमाते हैं कि वे परम ज्योति में पूर्णतया मिल जाते हैं और उनको कोई दुख प्रभावित नहीं करता॥२॥२॥५॥

कलिआनु महला ५ ॥ कउनु बिधि ता की कहा करउ ॥ धरत धिआनु गिआनु ससत्रगिआ अजर पदु कैसे जरउ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बिसन महेस सिध मुनि इंद्रा कै दरि सरनि परउ ॥ १ ॥ काहू पहि राजु काहू पहि सुरगा कोटि मधे मुकति कहउ ॥ कहु नानक नाम रसु पाईऐ साधू चरन गहउ ॥ २ ॥ ३ ॥ ६ ॥

प्रभु-मिलन का क्या तरीका है, उसके लिए मुझे क्या करना चाहिए। अनेक व्यक्ति ध्यान लगाते हैं, शास्त्रज्ञ ज्ञान-चर्चा करते हैं, लेकिन इस असह्य अवस्था को किस तरह सहन करूँ॥

१॥ रहाउ॥ क्या मैं विष्णु, महेश, सिद्ध-मुनि अथवा इन्द्र के द्वार पर उनकी शरण में पड़ूँ॥१॥ कोई राज देता है, कोई स्वर्ग देता है, लेकिन मुक्ति करोड़ों में से किसी विरले के ही पास है। नानक का कथन है कि साधु पुरुषों के चरणों में आने से ही हरिनाम का रस प्राप्त होता है॥ २॥३॥६॥

कलिआन महला ५ ॥ प्रानपति दइआल पुरख प्रभ सखे ॥ गरभ जोनि कलि काल जाल दुख बिनासनु हरि रखे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नाम धारी सरनि तेरी ॥ प्रभ दइआल टेक मेरी ॥ १ ॥ अनाथ दीन आसवंत ॥ नामु सुआमी मनहि मंत ॥ २ ॥ तुझ बिना प्रभ किछू न जानू ॥ सरब जुग महि तुम पछानू ॥ ३ ॥ हरि मनि बसे निसि बासरो ॥ गोबिंद नानक आसरो ॥ ४ ॥ ४ ॥ ७ ॥

हे प्रभु! एकमात्र तू ही मेरे प्राणों का स्वामी है, तू दया का सागर है, परमपुरुष एवं सच्चा साथी है। तू ही गर्भ योनि (से मुक्त करने वाला), मौत के जाल एवं दुखों को नष्ट करके बचाने वाला है॥१॥ रहाउ॥ मैं नाम धारण करके तेरी शरण में आया हूँ, हे दयालु प्रभु! तू ही मेरा आसरा है॥१॥ मुझ सरीखे अनाथ एवं दीन को तेरी ही आशा है, हे स्वामी! तेरा नाम ही मन में मंत्र है॥२॥ हे प्रभु! तेरे सिवा मैं कुछ नहीं मानता और समूचे जगत में तुम्हें ही पहचानता हूँ॥३॥ नानक का कथन है कि मेरे मन में दिन-रात परमात्मा ही बसता है और उसका ही मुझे आसरा है॥४॥४॥७॥

कलिआन महला ५ ॥ मनि तनि जापीऐ भगवान ॥ गुर पूरे सुप्रसंन भए सदा सूख कलिआन ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सरब कारज सिधि भए गाइ गुन गुपाल ॥ मिलि साधसंगति प्रभू सिमरे नाठिआ दुख काल ॥ १ ॥ करि किरपा प्रभ मेरिआ करउ दिनु रैनि सेव ॥ नानक दास सरणागती हरि पुरख पूरन देव ॥ २ ॥ ५ ॥ ८ ॥

मन तन से भगवान का जाप करना चाहिए। पूर्ण गुरु के प्रसन्न होने पर सदैव सुख एवं कल्याण प्राप्त होता है॥१॥ रहाउ॥ ईश्वर के गुण-गान से सभी कार्य सिद्ध हो गए हैं। साधुजनों के संग मिलकर प्रभु का सिमरन किया तो दुख एवं काल दूर हो गए॥१॥ हे मेरे प्रभु! मुझ पर कृपा करो, ताकि दिन-रात तेरी सेवा में तल्लीन रहूँ। दास नानक तो पूर्णपरमेश्वर की शरण में आ गया है॥२॥५॥८॥

कलिआनु महला ५ ॥ प्रभु मेरा अंतरजामी जाणु ॥ करि किरपा पूरन परमेसर निहचलु सचु सबदु नीसाणु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि बिनु आन न कोई समरथु तेरी आस तेरा मनि ताणु ॥ सरब घटा के दाते सुआमी देहि सु पहिरणु खाणु ॥ १ ॥ सुरति मति चतुराई सोभा रूपु रंगु धनु माणु ॥ सरब सूख आनंद नानक जपि राम नामु कलिआणु ॥ २ ॥ ६ ॥ ६ ॥

अन्तर्यामी मेरा प्रभु सब जानने वाला है। हे पूर्णपरमेश्वर! तू शाश्वत है, कृपा करो, सच्चा शब्द ही परवाना है॥१॥ रहाउ॥ परमात्मा के अतिरिक्त अन्य कोई समर्थ नहीं, एकमात्र तेरी ही मुझे आशा है और तेरा ही मन में बल है। हे सब शरीरों के दाता, स्वामी! जो तू देता है, वही खाता एवं पहनता हूँ॥१॥ आत्मा, बुद्धि, चतुराई, शोभा, रूप-रंग, धन, मान-सम्मान, सर्व सुख एवं आनंद एकमात्र वही देने वाला है। नानक अनुरोध करते हैं कि राम नाम का भजन करो, इसी में कल्याण निहित है॥२॥६॥६॥

कलिआनु महला ५ ॥ हरि चरन सरन कलिआन करन ॥ प्रभ नामु पतित पावनो ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साधसंगि जपि निसंग जमकालु तिसु न खावनो ॥ १ ॥ मुकति जुगति अनिक सूख हरि भगति लवै न लावनो ॥ प्रभ दरस लुबध दास नानक बहुड़ि जोनि न धावनो ॥ २ ॥ ७ ॥ १० ॥

प्रभु-चरणों की शरण कल्याणकारी है। प्रभु का नाम पतितों को पावन कर देता है॥ १॥ रहाउ॥ जो साधुओं के साथ परमात्मा का भजन करते हैं, मौत उनको ग्रास नहीं बनाती॥ १॥ मुक्ति, युक्ति एवं अनेक सुख भी परमात्मा की भक्ति के बराबर नहीं पहुँचते। दास नानक तो प्रभु के दर्शन में ही आसक्त है, ताकि पुनः योनि-चक्र में भटकना न पड़े॥ २॥ ७॥ १०॥

कलिआन महला ४ असटपदीआ ॥ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

रामा रम रामो सुनि मनु भीजै ॥ हरि हरि नामु अंम्रितु रसु मीठा गुरमति सहजे पीजै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कासट महि जिउ है बैसंतरु मथि संजमि काढि कढीजै ॥ राम नामु है जोति सबाई ततु गुरमति काढि लईजै ॥ १ ॥ नउ दरवाज नवे दर फीके रसु अंम्रितु दसवे चुईजै ॥ क्रिपा क्रिपा किरपा करि पिआरे गुर सबदी हरि रसु पीजै ॥ २ ॥ काइआ नगरु नगरु है नीको विचि सउदा हरि रसु कीजै ॥ रतन लाल अमोल अमोलक सतिगुर सेवा लीजै ॥ ३ ॥ सतिगुरु अगमु अगमु है ठाकुरु भरि सागर भगति करीजै ॥ क्रिपा क्रिपा करि दीन हम सारिंग इक बूंद नामु मुखि दीजै ॥ ४ ॥ लालनु लालु लालु है रंगनु मनु रंगन कउ गुर दीजै ॥ राम राम राम रंगि राते रस रसिक गटक नित पीजै ॥ ५ ॥ बसुधा सपत दीप है सागर कढि कंचनु काढि धरीजै ॥ मेरे ठाकुर के जन इनहु न बाछहि हरि मागहि हरि रसु दीजै ॥ ६ ॥ साकत नर प्रानी सद भूखे नित भूखन भूख करीजै ॥ धावतु धाइ धावहि प्रीति माइआ लख कोसन कउ बिथि दीजै ॥ ७ ॥ हरि हरि हरि हरि हरि जन ऊतम किआ उपमा तिन्ह दीजै ॥ राम नाम तुलि अउरु न उपमा जन नानक क्रिपा करीजै ॥ ८ ॥ १ ॥

सृष्टि के कण-कण में राम ही व्याप्त है, राम नाम सुनने से मन प्रसन्न हो जाता है। परमात्मा का नाम अमृत की तरह मधुर है और गुरु की शिक्षा से सहज-स्वाभाविक इसका पान करो॥ १॥ रहाउ॥ जिस प्रकार लकड़ी में अग्नि मौजूद है और संयम से निकाल लिया जाता है, वैसे ही राम नाम सर्वत्र व्याप्त है और गुरु की शिक्षानुसार प्राप्त होता है॥ १॥ आँखें, नाक, कान इत्यादि शरीर के नौ द्वार व्यर्थ हैं और दसम द्वार से ही हरिनाम अमृत की धारा बहती है। हे प्यारे! कृपा करो, गुरु के उपदेश द्वारा हरिनाम अमृत का पान करवाओ॥ २॥ शरीर एक उत्तम नगरी है, जिसमें हरिनाम का सौदा किया जाता है। यदि गुरु की सेवा की जाए तो अमूल्य रत्न रूपी हरिनाम प्राप्त हो जाता है॥ ३॥ परमात्मा अगम्य है, प्रेम का सागर है, उसकी भक्ति करनी चाहिए। हे हरि! कृपा करके मुझ सरीखे पपीहे के मुँह में नाम की बूँद डाल दो॥ ४॥ प्यारा प्रभु प्रेम के रंग से भरा हुआ है, प्रेम के रंग से रंगने के लिए मन गुरु को अर्पण कर दो। प्रभु के रंग में लीन रहो और खूब मजे लेकर हरिनाम का पान करो॥ ५॥ यदि पृथ्वी, सात द्वीपों एवं सागरों से स्वर्ण निकाल कर भक्तजनों को दिया जाए तो मेरे प्रभु के भक्त इनकी आकांक्षा नहीं करते, बल्कि हरि-भक्ति एवं नाम अमृत ही चाहते हैं॥ ६॥ मायावी प्राणी सदा लालसा ही करते हैं, उनकी धन-दौलत की भूख कभी नहीं मिटती। वे माया से इतना प्रेम करते हैं कि उसे पाने के लिए लाखों कोस की दूरी तय करके भी पहुँच जाते हैं॥ ७॥ परमात्मा के भक्त उत्तम हैं, इनको क्या उपमा दी जाए। परमात्मा के नाम तुल्य अन्य कोई उपमा नहीं, नानक पर इनकी कृपा होती रहे॥ ८॥ १॥

कलिआन महला ४ ॥ राम गुरु पारसु परसु करीजै ॥ हम निरगुणी मनूर अति फीके मिलि सतिगुर पारसु कीजै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुरग मुकति बैकुंठ सभि बांछहि निति आसा आस करीजै ॥ हरि दरसन के जन मुकति न मांगहि मिलि दरसन त्रिपति मनु धीजै ॥ १ ॥ माइआ मोहु सबलु है भारी मोहु कालख दाग लगीजै ॥ मेरे ठाकुर के जन अलिपत है मुकते जिउ मुरगाई पंकु न भीजै ॥ २ ॥ चंदन वासु भुइअंगम वेड़ी किव मिलीऐ चंदनु लीजै ॥ काढि खड़गु गुर गिआनु करारा बिखु छेदि छेदि रसु पीजै ॥ ३ ॥ आनि आनि समधा बहु कीनी पलु बैसंतर भसम करीजै ॥ महा उग्र पाप साकत नर कीने मिलि साधू लूकी दीजै ॥ ४ ॥ साधू साध साध जन नीके जिन अंतरि नामु धरीजै ॥ परस निपरसु भए साधू जन जनु हरि भगवानु दिखीजै ॥ ५ ॥ साकत सूतु बहु गुरझी भरिआ किउ करि तानु तनीजै ॥ तंतु सूतु किछु निकसै नाही साकत संगु न कीजै ॥ ६ ॥ सतिगुर साधसंगति है नीकी मिलि संगति रामु रवीजै ॥ अंतरि रतन जवेहर माणक गुर किरपा ते लीजै ॥ ७ ॥ मेरा ठाकुरु वडा वडा है सुआमी हम किउ करि मिलह मिलीजै ॥ नानक मेलि मिलाए गुरु पूरा जन कउ पूरनु दीजै ॥ ८ ॥ २ ॥

हे परमेश्वर ! गुरु रूपी पारस का हमें स्पर्श करवा दो, हम जीव गुणविहीन एवं लोहे की तरह बुरे हैं, गुरु पारस को मिलकर हम भी गुणवान बन जाएँगे॥१॥ रहाउ॥ संसार के सब व्यक्ति स्वर्ग, मुक्ति एवं वैकुण्ठ की कामना लेकर नित्य आशा करते हैं। परन्तु परमात्मा के दर्शनाभिलाषी मुक्ति की आकांक्षा नहीं करते, अपितु प्रभु के दर्शनों से ही उनके मन को तृप्ति होती है॥१॥ माया का मोह शक्तिशाली है, यह मोह पापों की कालिमा का दाग लगा देता है। मेरे ईश्वर के भक्त मोह-माया से अलिप्त एवं मुक्त हैं, ज्यों पानी में तैरते समय मुर्गाबी के पंख नहीं भीगते॥२॥ चंदन की खुशबू सांपों से घिरी रहती है, चंदन को कैसे हासिल किया जा सकता है। गुरु ज्ञान रूपी भारी खड्ग लेकर विषय-विकारों को नष्ट करके हरिनाम अमृत का पान किया जा सकता है॥३॥ अनेक प्रकार की लकड़ियाँ इकट्ठी की गईं, पर अग्नि ने पल में ही राख बना दिया। मायावी मनुष्य महा उग्र पाप करते हैं, इन पापों को साधु पुरुषों से मिलकर ज्ञान की चिंगारी से जलाया जा सकता है॥४॥ साधु पुरुष भले एवं उत्तम हैं, जिनके अन्तर्मन में हरिनाम अवस्थित होता है। साधु पुरुषों से साक्षात्कार भगवान के दर्शन करने के समान है॥५॥ मायावी मनुष्य की जीवन डोर बहुत उलझनों से भरी होती है, वह क्योंकर ताना लगा सकता है। ऐसी उलझनों से भरी हुई जीवन डोर सुलझ नहीं सकती, अतः मायावी मनुष्य की संगत नहीं करनी चाहिए॥६॥ सतगुरु की संगत सबसे बढ़िया है, गुरु की संगत में तो हरदम राम का सिमरन होता है। हरिनाम रूपी अमूल्य रत्न, जवाहर एवं माणिक्य अन्तर्मन में ही है, जिसे गुरु कृपा से पाया जा सकता है॥७॥ मेरा मालिक बड़ा है, महान् है, हम क्योंकर उसे मिल सकते हैं। नानक का कथन है कि पूर्ण गुरु ही परमात्मा से मिलाकर सेवक को पूर्णता प्रदान करता है॥८॥२॥

कलिआनु महला ४ ॥ रामा रम रामो रामु रवीजै ॥ साधू साध साध जन नीके मिलि साधू हरि रंगु कीजै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जीअ जंत सभु जगु है जेता मनु डोलत डोल करीजै ॥ क्रिपा क्रिपा करि साधु मिलावहु जगु थंमन कउ थंमु दीजै ॥ १ ॥ बसुधा तलै तलै सभ ऊपरि मिलि साधू चरन रुलीजै ॥ अति ऊतम अति ऊतम होवहु सभ सिसटि चरन तल दीजै ॥ २ ॥ गुरमुखि जोति भली सिव नीकी आनि पानी सकति भरीजै ॥ मैन दंत निकसे गुर बचनी सारु चबि चबि हरि रसु पीजै ॥ ३ ॥ राम नाम अनुग्रहु बहु कीआ गुर साधू पुरख मिलीजै ॥ गुन राम नाम बिसथीरन कीए हरि सगल भवन जसु दीजै ॥ ४ ॥ साधू साध साध मनि प्रीतम बिनु देखे रहि न सकीजै ॥ जिउ जल मीन जलं जल

प्रीति है खिनु जल बिनु फूटि मरीजै ॥ ५ ॥ महा अभाग अभाग है जिन के तिन साधू धूरि न पीजै ॥ तिना तिसना जलत जलत नही बूझहि डंडु धरम राइ का दीजै ॥ ६ ॥ सभि तीरथ बरत जग्य पुंन कीए हिवै गालि गालि तनु छीजै ॥ अतुला तोलु राम नामु है गुरमति को पुजै न तोल तुलीजै ॥ ७ ॥ तव गुन ब्रहम ब्रहम तू जानहि जन नानक सरनि परीजै ॥ तू जल निधि मीन हम तेरे करि किरपा संगि रखीजै ॥ ८ ॥ ३ ॥

सृष्टि के कण-कण में परमात्मा विद्यमान है, केवल उसका ही भजन करो। साधु पुरुष भले एवं नेक हैं, साधुओं के साथ मिलकर ईश्वर का संकीर्तन करो॥१॥ रहाउ॥ समूचे संसार में जितने भी जीव हैं, सबका मन डोलता रहता है। हे प्रभु ! कृपा करके साधु पुरुषों से मिलाप करवा दो, जो समूचे जगत को आसरा देने वाले हैं॥१॥ धरती सबके नीचे रहती है और महापुरुषों की चरण-धूल से श्रेष्ठ हो जाती है। सबसे उत्तम बन जाओ और सम्पूर्ण सृष्टि को अपने चरणों के नीचे कर लो॥२॥ गुरुमुख में हरि नाम की ज्योति ही स्थापित होती है और माया भी उसकी सेवा में तल्लीन रहती है। गुरु के वचनों से मोम के दाँत निकलते हैं, इस द्वारा चबा चबाकर खाया जाता है और हरिनाम का ही पान होता है॥३॥ परमात्मा की कृपा हुई तो साधु-पुरुष गुरु से मिलाप हो गया। गुरु ने परमात्मा के गुणों का प्रसार किया है और समूचे लोकों में परमात्मा का यश प्रदान करता है॥४॥ साधु पुरुषों का मन प्रियतम में ही लीन रहता है और उसके दर्शनों के बिना उनसे रहा नहीं जाता। जैसे जल में रहने वाली मछली का प्रेम जल से होता है और जल के बिना प्राण ही त्याग देती है॥५॥ जो महा बदनसीब होते हैं, उनको साधुओं की चरण-धूल नहीं मिलती। वे तृष्णाग्नि में जलते रहते हैं, उनकी तृष्णाग्नि नहीं बुझती और वे यमराज से दण्ड के भागीदार बनते हैं॥६॥ लोग तीर्थ यात्रा करते हैं, व्रत-उपवास रखते हैं, यज्ञ करवाते हैं एवं दान-पुण्य करते हैं, बर्फ में शरीर को गला-गला कर कष्ट पहुँचाते हैं, परमात्मा का नाम अतुलनीय है, ये कर्म-धर्म गुरु की शिक्षा की बराबरी नहीं कर सकते और न ही इनकी नाम से तुलना हो सकती है॥७॥ हे ब्रह्म ! तेरे गुण अपार हैं, तू ही जानता है। दास नानक तेरी शरण में पड़ा है। तू सागर है, हम तुम्हारी मछलियां हैं, कृपा करके अपने साथ ही रखो॥८॥३॥

कलिआन महला ४ ॥ रामा रम रामो पूज करीजै ॥ मनु तनु अरपि धरउ सभु आगै रसु गुरमति गिआनु द्रिड़ीजै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ब्रहम नाम गुण साख तरोवर नित चुनि चुनि पूज करीजै ॥ आतम देउ देउ है आतमु रसि लागै पूज करीजै ॥ १ ॥ बिबेक बुधि सभ जग महि निरमल बिचरि बिचरि रसु पीजै ॥ गुर परसादि पदारथु पाइआ सतिगुर कउ इहु मनु दीजै ॥ २ ॥ निरमोलकु अति हीरो नीको हीरै हीरु बिधीजै ॥ मनु मोती सालु है गुर सबदी जितु हीरा परखि लईजै ॥ ३ ॥ संगति संत संगि लगि ऊचे जिउ पीप पलास खाइ लीजै ॥ सभ नर महि प्रानी ऊतमु होवै राम नामै बासु बसीजै ॥ ४ ॥ निरमल निरमल करम बहु कीने नित साखा हरी जड़ीजै ॥ धरमु फुलु फलु गुरि गिआनु द्रिड़ाइआ बहकार बासु जगि दीजै ॥ ५ ॥ एक जोति एको मनि वसिआ सभ ब्रहम द्रिसटि इकु कीजै ॥ आतम रामु सभ एकै है पसरे सभ चरन तले सिरु दीजै ॥ ६ ॥ नाम बिना नकटे नर देखहु तिन घसि घसि नाक वढीजै ॥ साकत नर अहंकारी कहीअहि बिनु नावै ध्रिगु जीवीजै ॥ ७ ॥ जब लगु सासु सासु मन अंतरि ततु बेगल सरनि परीजै ॥ नानक क्रिपा क्रिपा करि धारहु मै साधू चरन पखीजै ॥ ८ ॥ ४ ॥

हे सज्जनो ! राम हर जगह पर विद्यमान है, राम की ही अर्चना करो। मन, तन सर्वस्व उसके आगे अर्पण कर दो, गुरु-उपदेशानुसार ज्ञान दृढ़ करो॥१॥ रहाउ॥ ब्रह्म नाम एक ऐसा वृक्ष है,

जिसके अपार गुण शाखाएँ हैं, नित्य उसकी अर्चना करो। आत्मा पूज्य देव है और पूज्य देव ही आत्मा है, प्रेम से इसकी अर्चना करो॥१॥ विवेक बुद्धि समूचे जगत में निर्मल है, चिंतन करके नाम रस पान करो। गुरु की कृपा से नाम पदार्थ प्राप्त हुआ है, यह मन सतगुरु को न्यौछावर कर दो॥२॥ प्रभु नाम रूपी हीरा अमूल्य एवं सर्वोत्तम है, मन रूपी हीरे को नाम हीरे से बिंध लो। मन रूपी मोती गुरु के शब्द द्वारा जौहरी बन जाता है, जिससे नाम रूपी हीरे की परख होती है॥३॥ संतों की संगत में साधारण व्यक्ति महान् बन जाता है, ज्यों पीपल का वृक्ष पलाश के वृक्ष को स्वयं में विलीन कर लेता है। सब जीवों में मनुष्य सबसे उत्तम है, उस से राम नाम की महक आती है॥४॥ वह अनेक निर्मल कर्म करता है, अतः उसके सत्कर्मों की शाखाएँ हरी भरी रहती हैं। गुरु ने ज्ञान देकर समझाया है कि धर्म ही फल फूल है अतः इसकी खुशबू जगत में फैलाओ॥५॥ एक परम ज्योति मन में अवस्थित है, सब में एक ब्रह्म ही दृष्टिगोचर होता है। आत्मा-परमात्मा अभिन्न है, सबमें एक वही व्याप्त है, अतः सबके चरणों में सिर झुकाना चाहिए॥६॥ हरिनाम के बिना मनुष्य बेशर्म हैं, उन्होंने अपनी नाक ही काट ली है। निरीश्वरवादी मनुष्य अहंकारी कहलाते हैं, हरिनाम के बिना इनका जीना धिक्कार है॥७॥ जब तक जीवन-साँसें हैं, तत्क्षण प्रभु की शरण में पड़ो। नानक विनती करते हैं कि हे परमेश्वर! मुझ पर कृपा करो, ताकि मैं साधु-पुरुषों के चरण धोता रहूँ॥८॥४॥

कलिआन महला ४ ॥ रामा मै साधू चरन धुवीजै ॥ किलबिख दहन होहि खिन अंतरि मेरे ठाकुर किरपा कीजै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मंगत जन दीन खरे दरि ठाढे अति तरसन कउ दानु दीजै ॥ त्राहि त्राहि सरनि प्रभ आए मोकउ गुरमति नामु द्रिड़ीजै ॥ १ ॥ काम करोधु नगर महि सबला नित उठि उठि जूझु करीजै ॥ अंगीकारु करहु रखि लेवहु गुर पूरा काढि कढीजै ॥ २ ॥ अंतरि अगनि सबल अति बिखिआ हिव सीतलु सबदु गुर दीजै ॥ तनि मनि सांति होइ अधिकाई रोगु काटै सूखि सवीजै ॥ ३ ॥ जिउ सूरजु किरणि रविआ सरब ठाई सभ घटि घटि रामु रवीजै ॥ साधू साध मिले रसु पावै ततु निज घरि बैठिआ पीजै ॥ ४ ॥ जन कउ प्रीति लगी गुर सेती जिउ चकवी देखि सूरीजै ॥ निरखत निरखत रैनि सभ निरखी मुखु काढै अंम्रितु पीजै ॥ ५ ॥ साकत सुआन कहीअहि बहु लोभी बहु दुरमति मैलु भरीजै ॥ आपन सुआइ करहि बहु बाता तिना का विसाहु किआ कीजै ॥ ६ ॥ साधू साध सरनि मिलि संगति जितु हरि रसु काढि कढीजै ॥ परउपकार बोलहि बहु गुणीआ मुखि संत भगत हरि दीजै ॥ ७ ॥ तू अगम दइआल दइआ पति दाता सभ दइआ धारि रखि लीजै ॥ सरब जीअ जगजीवनु एको नानक प्रतिपाल करीजै ॥ ८ ॥ ५ ॥

हे राम! मैं साधु-पुरुषों के चरण धोना चाहता हूँ। हे मेरे ठाकुर! ऐसी कृपा करो कि पल में पाप-दोष नष्ट हो जाएँ॥१॥ रहाउ॥ भिखारी दीनता से तेरे द्वार पर खड़े हैं, इन तरस रहे जीवों को नाम-दान दो। हे प्रभु! तेरी शरण में आया हूँ, मुझे बचा लो और गुरु की शिक्षा द्वारा नाम ही दृढ़ करवाओ॥१॥ शरीर रूपी नगरी में काम क्रोध सशक्त हैं, जो नित्य लड़ते रहते हैं। हे पूर्णगुरु! अपना बनाकर बचा लो और इन दुष्टों को निकाल दो॥२॥ अन्तर्मन में विषय-विकारों की प्रचंड अग्नि ताकतवर है, अतः बर्फ समान शीतल शब्द-गुरु प्रदान करो। इससे तन-मन को शान्ति प्राप्त होगी, अधिकतर रोग कट जाएँगे और सुख प्राप्त होगा॥३॥ जैसे सूरज की किरणें हर जगह पर पहुँचती हैं, वैसे ही घट घट में ईश्वर व्याप्त है। जब साधु पुरुष से भेंट होती है तो हरिनाम रस का पान होता है॥४॥ सेवक की गुरु से ऐसी प्रीति लगी हुई है, ज्यों चकवी सूर्य दर्शन करके अपने प्रेम का इजहार करती है। वह रात भर देखती है, जब सूर्य मुँह

दिखाता है तो दर्शन का अमृतपान करती है॥५॥ मायावी व्यक्ति कुत्ते की तरह लालची कहलाता है और उसमें दुर्मति की बहुत मैल भरी होती है। अपने स्वार्थ के लिए वह बहुत बातें करता है, लेकिन ऐसे व्यक्ति पर कैसे विश्वास किया जा सकता है॥६॥ साधु पुरुषों की शरण में आओ, उनकी संगत में रहना चाहिए, जिससे हरिनाम रस प्राप्त किया जाए। गुणवान मनुष्य परोपकार की बातें करते हैं, अतः संतों एवं भक्तों के सम्मुख रहना चाहिए॥७॥ हे ईश्वर! तू अगम्य, दयालु, दया का भण्डार और सब को देने वाला है, दया करके हमें बचा लो। नानक का कथन है– सब जीवों का एकमात्र तू ही जीवनदाता है, सबका पोषण करता है॥८॥५॥

कलिआनु महला ४ ॥ रामा हम दासन दास करीजै ॥ जब लगि सासु होइ मन अंतरि साधू धूरि पिवीजै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संकरु नारदु सेखनाग मुनि धूरि साधू की लोचीजै ॥ भवन भवन पवितु होहि सभि जह साधू चरन धरीजै ॥ १ ॥ तजि लाज अहंकारु सभु तजीऐ मिलि साधू संगि रहीजै ॥ धरम राइ की कानि चुकावै बिखु डुबदा काढि कढीजै ॥ २ ॥ भरमि सूके बहु उभि सुक कहीअहि मिलि साधू संगि हरीजै ॥ ता ते बिलमु पलु ढिल न कीजै जाइ साधू चरनि लगीजै ॥ ३ ॥ राम नाम कीरतन रतन वथु हरि साधू पासि रखीजै ॥ जो बचनु गुर सति सति करि मानै तिसु आगै काढि धरीजै ॥ ४ ॥ संतहु सुनहु सुनहु जन भाई गुरि काढी बाह कुकीजै ॥ जे आतम कउ सुखु सुखु नित लोड़हु तां सतिगुर सरनि पवीजै ॥ ५ ॥ जे वड भागु होइ अति नीका तां गुरमति नामु द्रिड़ीजै ॥ सभु माइआ मोहु बिखमु जगु तरीऐ सहजे हरि रसु पीजै ॥ ६ ॥ माइआ माइआ के जो अधिकाई विचि माइआ पचै पचीजै ॥ अगिआनु अंधेरु महा पंथु बिखड़ा अहंकारि भारि लदि लीजै ॥ ७ ॥ नानक राम रम रमु रम रम रामै ते गति कीजै ॥ सतिगुरु मिलै ता नामु द्रिड़ाए राम नामै रलै मिलीजै ॥ ८ ॥ ६ ॥ छका १ ॥

हे ईश्वर! हमें दासों का दास बना लो। जब तक अन्तर्मन में जीवन साँसें चल रही हैं, साधु पुरुषों की चरण-धूल पान करते रहें॥१॥ रहाउ॥ शिवशंकर, देवर्षि नारद, शेषनाग एवं मुनिजन भी साधुओं की चरण-धूल चाहते हैं। जहाँ साधु अपने चरण रखते हैं, वे सभी स्थान पवित्र हो जाते हैं॥१॥ लाज, अहंकार सब छोड़कर साधु पुरुषों की संगत में रहना चाहिए। साधु धर्मराज का भय दूर करते हैं और विकारों के सागर में डूबने से बचा लेते हैं॥२॥ जो भ्रम में भटक कर सूख जाते हैं, खड़े-खड़े सूख जाते हैं, साधुओं के संग रहकर पुनः हरे भरे हो जाते हैं। अतः पल भर की देरी किए बिना साधुओं के चरणों में लग जाना चाहिए॥३॥ प्रभु नामकीर्तन रूपी अमूल्य रत्न साधुओं के पास मौजूद है। जो गुरु के वचन को सत्य मानता है, गुरु उसके सम्मुख नाम-रत्न निकाल कर रख देता है॥४॥ हे सज्जनो, हे मेरे भाई! मेरी बात जरा ध्यान से सुनना, गुरु बाँह उठाकर पुकार रहा है कि यदि आत्मा को नित्य सुख चाहते हो तो सतिगुरु की शरण में पड़ो॥ ५॥ यदि उत्तम भाग्य हो तो गुरु के उपदेश से हरिनाम का स्मरण होता है। तदन्तर माया-मोह के विषम संसार-समुद्र से पार हुआ जाता है और स्वाभाविक ही हरिनाम रस का पान होता है ॥६॥ जो लोग धन-दौलत के अभिलाषी होते हैं, वे धन में ही मरते खपते हैं। अज्ञान के अन्धेरे वाला रास्ता बहुत विषम है, परन्तु मनुष्य अहंकार का बोझ लाद लेता है॥ ७॥ गुरु नानक का फुरमान है कि राम-राम जपते रहो, राम नाम से मुक्ति होती है। जब सच्चा गुरु मिल जाता है तो वह नाम का जाप करवाता है, तदन्तर जीव राम नाम में विलीन हो जाता है॥८॥६॥ छः अष्टपदियों का जोड़।

१ओं सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

वह अनंतशक्ति परम-परमेश्वर केवल एक है, नाम उसका सत्य है। वह आदिपुरुष सम्पूर्ण विश्व को बनाने वाला है, सर्वशक्तिमान है। वह भय से रहित है, उसका किसी से वैर नहीं, वस्तुतः सब पर समान दृष्टि होने के कारण वह प्रेमस्वरूप है। वह कालातीत ब्रह्म मूर्ति सदा अमर है, वह जन्म-मरण के चक्र से परे है, अजन्मा है, वह स्वतः प्रकाशमान हुआ और गुरु की कृपा से प्राप्त होता है।

रागु परभाती बिभास महला १ चउपदे घरु १ ॥

नाइ तेरै तरणा नाइ पति पूज ॥ नाउ तेरा गहणा मति मकसूदु ॥ नाइ तेरै नाउ मंने सभ कोइ ॥ विणु नावै पति कबहु न होइ ॥ १ ॥ अवर सिआणप सगली पाजु ॥ जै बखसे तै पूरा काजु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नाउ तेरा ताणु नाउ दीबाणु ॥ नाउ तेरा लसकरु नाउ सुलतानु ॥ नाइ तेरै माणु महत परवाणु ॥ तेरी नदरी करमि पवै नीसाणु ॥ २ ॥ नाइ तेरै सहजु नाइ सालाह ॥ नाउ तेरा अंम्रितु बिखु उठि जाइ ॥ नाइ तेरै सभि सुख वसहि मनि आइ ॥ बिनु नावै बाधी जम पुरि जाइ ॥ ३ ॥ नारी बेरी घर दर देस ॥ मन कीआ खुसीआ कीचहि वेस ॥ जां सदे तां ढिल न पाइ ॥ नानक कूड़ु कूड़ो होइ जाइ ॥ ४ ॥ १ ॥

हे परमपिता ! तेरे नाम-स्मरण से संसार-समुद्र से तैरा जाता है, तेरे नाम-संकीर्तन से मानव की इज्जत होती है और वह पूज्य बनता है। तेरा नाम ही वैभव है, इसी से मकसद पूरा होता है। तेरा नाम सर्वव्यापक है, समूचा संसार तेरे नाम को ही मानता है। परमेश्वर के नाम बिना कभी इज्जत प्राप्त नहीं होती॥ १॥ अन्य सब चतुराइयाँ मात्र दिखावा ही हैं, जिस पर निरंकार अपनी बख्शिश कर देता है, उसका कार्य पूरा हो जाता है॥ १॥ रहाउ॥ तेरा नाम ही बल है और नाम ही हमारा आसरा है। तेरा नाम ही सेना है और नाम ही बादशाह है। तेरे नाम से ही मान-सम्मान प्राप्त होता है और तेरी कृपा-दृष्टि से जीवन सफल होता है॥ २॥ तेरे नाम से ही शान्ति प्राप्त होती है और नाम से ही सराहना होती है। तेरा नाम अमृतमय सुखों का घर है, जिससे दुखों भरा जहर दूर होता है। तेरे नाम मनन से मन में सब सुख उत्पन्न होते हैं और नाम से विहीन यमपुरी जाना पड़ता है॥ ३॥ मनुष्य नारी के प्रेम, सुन्दर घर, द्वार, देश में लिप्त रहता है, मन की खुशी के लिए अनेक आडम्बर करता है। परन्तु जब विधाता का बुलावा आता है तो कोई देरी नहीं होती। गुरु नानक का फुरमान है कि दुनिया के मौज-मेले, भौतिक पदार्थ सब झूठे हैं, मरणोपरांत कुछ साथ नहीं जाता, अतः सब झूठा सिद्ध होता है॥ ४॥ १॥

प्रभाती महला १ ॥ तेरा नामु रतनु करमु चानणु सुरति तिथै लोइ ॥ अंधेरु अंधी वापरै सगल लीजै खोइ ॥ १ ॥ इहु संसारु सगल बिकारु ॥ तेरा नामु दारू अवरु नासति करणहारु अपारु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पाताल पुरीआ एक भार होवहि लाख करोड़ि ॥ तेरे लाल कीमति ता पवै जां सिरै होवहि होरि ॥ २ ॥ दूखा ते सुख ऊपजहि सूखी होवहि दूख ॥ जितु मुखि तू सालाहीअहि तितु मुखि कैसी भूख ॥ ३ ॥ नानक मूरखु एकु तू अवरु भला सैसारु ॥ जितु तनि नामु न ऊपजै से तन होहि खुआर ॥ ४ ॥ २ ॥

हे प्रभु ! जहाँ तेरा नाम-रत्न है, तेरी कृपा का आलोक है, वहाँ ज्ञान का उजाला होता है। अज्ञानांध दुनिया में अंधेरा ही विद्यमान है, जिस कारण मनुष्य सब कुछ गंवा रहा है॥१॥ यह संसार पाप-विकारों से भरा हुआ है, हे कर्ता ! तेरा नाम ही दवा है, अन्य कुछ भी नहीं॥१॥ रहाउ॥ *(गुरु साहिब हरिनाम का महात्मय बताते हुए संकेत करते हैं)* यदि सभी पाताल, पुरियाँ, नगर इत्यादि तराजू के एक तरफ रख दें, इस तरह लाखों करोड़ और भी हों तो भी सही मूल्यांकन तब तक नहीं किया जा सकता, जब तक तोलने में अन्य बराबर की चीज़ें ना आ जाएँ॥२॥ दुखों के पश्चात् सुख प्राप्त होता है और सुखी रहने के उपरांत दुख भी आते हैं। जिस मुख से तेरी प्रशंसा की जाती है, उसे कोई भूख नहीं रहती॥३॥ गुरु नानक कथन करते हैं कि एकमात्र मैं ही मूर्ख हूँ, अन्य संसार भला है। लेकिन जिस शरीर में परमात्मा का नाम उत्पन्न नहीं होता, वह ख्वार ही होता है॥४॥२॥

प्रभाती महला १ ॥ जै कारणि बेद ब्रहमै उचरे संकरि छोडी माइआ ॥ जै कारणि सिध भए उदासी देवी मरमु न पाइआ ॥ १ ॥ बाबा मनि साचा मुखि साचा कहीऐ तरीऐ साचा होई ॥ दुसमनु दूखु न आवै नेड़ै हरि मति पावै कोई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अगनि बिंब पवणै की बाणी तीनि नाम के दासा ॥ ते तसकर जो नामु न लेवहि वासहि कोट पंचासा ॥ २ ॥ जे को एक करै चंगिआई मनि चिति बहुतु बफावै ॥ एते गुण एतीआ चंगिआईआ देइ न पछोतावै ॥ ३ ॥ तुधु सालाहनि तिन धनु पलै नानक का धनु सोई ॥ जे को जीउ कहै ओना कउ जम की तलब न होई ॥ ४ ॥ ३ ॥

जिस (परमेश्वर) को पाने के लिए ब्रह्मा ने वेदों का उच्चारण किया तथा भोलेशंकर ने माया छोड़ दी। जिसके लिए सिद्ध त्यागी बन गए और देवी-देवताओं ने भी रहस्य प्राप्त नहीं किया॥१॥ हे बाबा ! मन में सत्यस्वरूप का मनन करो, मुख से सच्चे प्रभु का भजन करो क्योंकि सच्चे परमेश्वर से ही मुक्ति मिलती है। अगर कोई ईश्वर का बोध पा ले तो दुश्मन एवं दुख भी उसके निकट नहीं आता॥१॥ रहाउ॥ यह सृष्टि अग्नि, जल एवं पवन की बनी हुई है और यह तीनों ही हरिनाम के दास हैं। जो परमात्मा का नाम नहीं लेता, वस्तुतः वह चोर है और पचासवें कोट में बसता है॥२॥ यदि कोई व्यक्ति एक भी भला कार्य करता है तो मन में बहुत एहसान जतलाता है। परन्तु ईश्वर में इतने गुण हैं, इतनी अच्छाइयाँ हैं कि लोगों को देता ही रहता है *(संसारी जीव ईश्वर से नियामतें पाकर भी उसका एहसान नहीं मानते)* परन्तु वह दातार देने के बाद एहसान की बात नहीं सोचता॥३॥ गुरु नानक का कथन है कि हे प्रभु ! तेरी स्तुति करने वाले को ही ऐश्वर्य प्राप्त होता है और तू ही मेरा धन है। यदि कोई इनका आदर करता है तो उसे यमराज को हिसाब नहीं देना पड़ता॥४॥३॥

प्रभाती महला १ ॥ जा कै रूपु नाही जाति नाही नाही मुखु मासा ॥ सतिगुरि मिले निरंजनु पाइआ तेरै नामि है निवासा ॥ १ ॥ अउधू सहजे ततु बीचारि ॥ जा ते फिरि न आवहु सैसारि ॥ १ ॥ रहाउ

॥ जा कै करमु नाही धरमु नाही नाही सुचि माला ॥ सिव जोति कंनहु बुधि पाई सतिगुरू रखवाला ॥ २ ॥ जा कै बरतु नाही नेमु नाही नाही बकबाई ॥ गति अवगति की चिंत नाही सतिगुरू फुरमाई ॥ ३ ॥ जा कै आस नाही निरास नाही चिति सुरति समझाई ॥ तंत कउ परम तंतु मिलिआ नानका बुधि पाई ॥ ४ ॥ ४ ॥

जिसका कोई रूप नहीं, कोई उच्च जाति नहीं, न ही सुन्दर चेहरा अथवा शरीर है, जब सतगुरु से मिलता है तो उसे ईश्वर की प्राप्ति हो जाती है और हरिनाम में ही लीन रहता है॥१॥ हे अवधूत योगी! सहज तत्व का चिंतन करो, जिससे पुनः संसार में आना न पड़े॥१॥ रहाउ॥ जिसका कोई कर्म नहीं, न ही धर्म है, न ही जपमाला है, जब सतगुरु रखवाला बनता है, तो उसे कल्याणमय ज्योति से विवेक बुद्धि प्राप्त होती है॥२॥ जो व्रत-उपवास नहीं रखता, न ही कोई नियम धारण करता है, जो शास्त्रानुसार चतुरता भरे वचन नहीं करता। सतिगुरु का फुरमान है कि उसे भले-बुरे की चिंता नहीं होती॥३॥ जिसे कोई आशा नहीं, आशाओं से रहित है, वह मन को समझाता है। हे नानक! विवेक बुद्धि को पाकर उसकी आत्मा परमात्मा में ही मिल जाती है॥४॥४॥

प्रभाती महला १ ॥ ता का कहिआ दरि परवाणु ॥ बिखु अंम्रितु दुइ सम करि जाणु ॥ १ ॥ किआ कहीऐ सरबे रहिआ समाइ ॥ जो किछु वरतै सभ तेरी रजाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रगटी जोति चूका अभिमानु ॥ सतिगुरि दीआ अंम्रित नामु ॥ २ ॥ कलि महि आइआ सो जनु जाणु ॥ साची दरगह पावै माणु ॥ ३ ॥ कहणा सुनणा अकथ घरि जाइ ॥ कथनी बदनी नानक जलि जाइ ॥ ४ ॥ ५ ॥

उस महापुरुष की कही बात प्रभु के दरबार में मान्य होती है, जो दुख-सुख को समान मानता है॥१॥ उसका क्या यश कथन किया जाए, वह तो पूरे संसार में विद्यमान है। हे परमेश्वर! जो कुछ हो रहा है, सब तेरी मर्जी से हो रहा है॥१॥ रहाउ॥ जब सतगुरु ने हरिनाम अमृत प्रदान किया तो मन में ज्ञान का उजाला हो गया और अभिमान समाप्त हो गया॥२॥ कलियुग में उसी व्यक्ति का जीवन सफल माना जाता है, जो सच्चे दरबार में सम्मान प्राप्त करता है॥३॥ उसका कहना सुनना अकथनीय प्रभु के घर में स्वीकार होता है, गुरु नानक कथन करते हैं कि बेकार की बातें तो जल जाने के बराबर हैं॥४॥५॥

प्रभाती महला १ ॥ अंम्रितु नीरु गिआनि मन मजनु अठसठि तीरथ संगि गहे ॥ गुर उपदेसि जवाहर माणक सेवे सिखु सो खोजि लहै ॥ १ ॥ गुर समानि तीरथु नही कोइ ॥ सरु संतोखु तासु गुरु होइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरु दरीआउ सदा जलु निरमलु मिलिआ दुरमति मैलु हरै ॥ सतिगुरि पाइऐ पूरा नावणु पसू परेतहु देव करै ॥ २ ॥ रता सचि नामि तल हीअलु सो गुरु परमलु कहीऐ ॥ जा की वासु बनासपति सउरै तासु चरण लिव रहीऐ ॥ ३ ॥ गुरमुखि जीअ प्रान उपजहि गुरमुखि सिव घरि जाईऐ ॥ गुरमुखि नानक सचि समाईऐ गुरमुखि निज पदु पाईऐ ॥ ४ ॥ ६ ॥

गुरु-ज्ञान द्वारा ही मन अमृत जल में स्नान करता है और अड़सठ तीर्थों का फल साथ ही ग्रहण करता है। गुरु का उपदेश अमूल्य मोती एवं माणिक्य है, जिसे शिष्य खोज सकता है॥१॥ गुरु के समान कोई तीर्थ नहीं, दरअसल गुरु ही संतोष का सरोवर है॥१॥ रहाउ॥ गुरु ऐसा दरिया है, जिसका जल सदैव निर्मल है, जिस में मिलने से दुर्मति की मैल दूर हो जाती है। सच्चे गुरु से साक्षात्कार होने पर तीर्थ-स्नान पूर्ण होता है और वह तो पशु प्रेतों को भी देवता समान

बना देता है॥२॥ जो दिल की गहराई तक सत्यनाम में लीन रहता है, उस गुरु को चन्दन कहना चाहिए, क्योंकि उसकी खुशबू से आस-पास की वनस्पति भी महकदार हो जाती है, अतः उसके चरणों में लीन रहना चाहिए॥३॥ गुरु से जीवन-प्राणों का संचार होता है, गुरु से शान्ति प्राप्त होती है। गुरु नानक फुरमान करते हैं– गुरु से ही सत्य में समाहित हुआ जाता है और गुरु के द्वारा आत्म-स्वरूप प्राप्त होता है॥४॥६॥

प्रभाती महला १ ॥ गुर परसादी विदिआ वीचारै पड़ि पड़ि पावै मानु ॥ आपा मधे आपु परगासिआ पाइआ अंम्रितु नामु ॥ १ ॥ करता तू मेरा जजमानु ॥ इक दखिणा हउ तै पहि मागउ देहि आपणा नामु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पंच तसकर धावत राखे चूका मनि अभिमानु ॥ दिसटि बिकारी दुरमति भागी ऐसा ब्रहम गिआनु ॥ २ ॥ जतु सतु चावल दइआ कणक करि प्रापति पाती धानु ॥ दूधु करमु संतोखु घीउ करि ऐसा मांगउ दानु ॥ ३ ॥ खिमा धीरजु करि गऊ लवेरी सहजे बछरा खीरु पीऐ ॥ सिफति सरम का कपड़ा मांगउ हरि गुण नानक रवतु रहै ॥ ४ ॥ ७ ॥

गुरु की कृपा से मनुष्य विद्या पाता है और पढ़कर ख्याति प्राप्त करता है। नामामृत को पाकर वह अन्तर्मन में प्रकाश अनुभव करता है॥१॥ हे कर्ता! तू मेरा यजमान है, मैं तुझसे एक दक्षिणा मांगता हूँ कि मुझे अपना नाम दो॥१॥ रहाउ॥ तुमने काम-क्रोध इत्यादि पाँच लुटेरों से मुझे बचा लिया है और मेरे मन का अभिमान दूर हो गया है। तुमने ऐसा ब्रह्मज्ञान प्रदान किया है कि विकारों वाली दृष्टि एवं खोटी बुद्धि भाग गई है॥२॥ यतीत्व-शालीनता के चावल, दया का गेहूँ, सत्य का धान रखकर पत्तल-दान प्राप्त करना चाहता हूँ। मैं ऐसा दान मांगता हूँ जिसमें तुम्हारी कृपा का दूध तथा संतोष का घी शामिल हो॥३॥ क्षमा तथा धैर्य की दुधारू गाय प्रदान करो, जिसका सहज ही बछड़ा दूध पीता है। नानक की विनती है कि मैं तुम्हारी स्तुति हेतु उद्यम का कपड़ा मांगता हूँ ताकि तेरे गुणगान में लीन रहूँ॥४॥७॥

प्रभाती महला १ ॥ आवतु किनै न राखिआ जावतु किउ राखिआ जाइ ॥ जिस ते होआ सोई परु जाणै जां उस ही माहि समाइ ॥ १ ॥ तूहै है वाहु तेरी रजाइ ॥ जो किछु करहि सोई परु होइबा अवरु न करणा जाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जैसे हरहट की माला टिंड लगत है इक सखनी होर फेर भरीअत है ॥ तैसो ही इहु खेलु खसम का जिउ उस की वडिआई ॥ २ ॥ सुरती कै मारगि चलि कै उलटी नदरि प्रगासी ॥ मनि वीचारि देखु ब्रहम गिआनी कउनु गिरही कउनु उदासी ॥ ३ ॥ जिस की आसा तिस ही सउपि कै एहु रहिआ निरबाणु ॥ जिस ते होआ सोई करि मानिआ नानक गिरही उदासी सो परवाणु ॥ ४ ॥ ८ ॥

जब जन्म से कोई रोक नहीं सका तो फिर भला मौत के मुँह में जाने से कैसे बचा जा सकता है। जिससे पैदा होता है, वही अच्छी तरह जानता है और जीव उसी में लीन हो जाता है॥१॥ वाह परमेश्वर! तू वाह वाह है, तेरी रज़ा सर्वोपरि है। जो कुछ तू करता है, वह निश्चय होता है, कोई दूसरा कुछ नहीं कर सकता॥१॥ रहाउ॥ जैसे रहट वाले कूप की माला में बर्तन चलता है, एक खाली होता है और दूसरा भरता जाता है, वैसे ही यह मालिक की लीला है, मरने के बाद दूसरा जन्म लेता है, इसी में उसकी कीर्ति है॥२॥ ज्ञान के मार्ग पर चलकर दृष्टि संसार से उलट कर प्रकाशमान हो गई है। हे ब्रह्मज्ञानी! मन में चिंतन करके देख लो कौन गृहस्थी है और कौन त्यागी है॥३॥ जिसने आशाओं को उत्पन्न किया है, उसी को सौंपकर जीव निर्वाण प्राप्त करता

है। गुरु नानक का फुरमान है कि जिस ईश्वर से पैदा हुआ है, वही मानता है कि असल में गृहस्थी अथवा त्यागी कौन परवान होता है॥ ४॥ ८॥

प्रभाती महला १ ॥ दिसटि बिकारी बंधनि बांधै हउ तिस कै बलि जाई ॥ पाप पुंन की सार न जाणै भूला फिरै अजाई ॥ १ ॥ बोलहु सचु नामु करतार ॥ फुनि बहुड़ि न आवण वार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ऊचा ते फुनि नीचु करतु है नीच करै सुलतानु ॥ जिनी जाणु सुजाणिआ जगि ते पूरे परवाणु ॥ २ ॥ ता कउ समझावण जाईऐ जे को भूला होई ॥ आपे खेल करे सभ करता ऐसा बूझै कोई ॥ ३ ॥ नाउ प्रभातै सबदि धिआईऐ छोडहु दुनी परीता ॥ प्रणवति नानक दासनि दासा जगि हारिआ तिनि जीता ॥ ४ ॥ ९ ॥

मैं उस व्यक्ति पर बलिहारी जाता हूँ, जो विकारों वाली दृष्टि को नियंत्रण में करता है। पाप-पुण्य की महत्ता को न जानने वाला बेकार ही भटकता फिरता है॥ १॥ जो ईश्वर के नाम का भजन करता है, वह पुनः संसार में नहीं आता॥ १॥ रहाउ॥ ईश्वर की रज़ा हो तो वह धनवान से भिखारी कर देता है और भिखारी को बादशाह बना देता है। जिन्होंने परमात्मा की महिमा को माना है, वही व्यक्ति संसार में पूर्ण परवान होते हैं॥ २॥ उसे ही समझाया जाता है, यदि कोई भूल करता है। इस सच्चाई को समझ लो कि परमात्मा स्वयं ही लीला करता है॥ ३॥ दुनिया का मोह-प्रेम छोड़कर प्रभातकाल ब्रह्म-शब्द का ध्यान करो। गुरु नानक विनती करते हैं कि ईश्वर का सेवक जीत गया है और जगत उसके सन्मुख हार गया है॥ ४॥ ९॥

प्रभाती महला १ ॥ मनु माइआ मनु धाइआ मनु पंखी आकासि ॥ तसकर सबदि निवारिआ नगरु वुठा साबासि ॥ जा तू राखहि राखि लैहि साबतु होवै रासि ॥ १ ॥ ऐसा नामु रतनु निधि मेरै ॥ गुरमति देहि लगउ पगि तेरै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनु जोगी मनु भोगीआ मनु मूरखु गावारु ॥ मनु दाता मनु मंगता मन सिरि गुरु करतारु ॥ पंच मारि सुखु पाइआ ऐसा ब्रहमु वीचारु ॥ २ ॥ घटि घटि एकु वखाणीऐ कहउ न देखिआ जाइ ॥ खोटो पूठो रालीऐ बिनु नावै पति जाइ ॥ जा तू मेलहि ता मिलि रहां जां तेरी होइ रजाइ ॥ ३ ॥ जाति जनमु नह पूछीऐ सच घरु लेहु बताइ ॥ सा जाति सा पति है जेहे करम कमाइ ॥ जनम मरन दुखु काटीऐ नानक छूटसि नाइ ॥ ४ ॥ १० ॥

मन मायावादी है, चलायमान है और आकाश के पक्षी की मानिंद उड़ता है। जब जीव शब्द द्वारा कामादिक लुटेरों का निवारण करता है तो शरीर रूपी नगरी का सुशील नागरिक बन जाता है। हे परमेश्वर ! जिसे तू मोह-माया से बचा लेता है, उसी की नाम-राशि सार्थक होती है॥ १॥ हरिनाम रूपी रत्नों का मेरे पास सुखों का भण्डार है। गुरु ने यही शिक्षा दी है कि तेरे चरणों में लीन रहूँ॥ १॥ रहाउ॥ मन योगी एवं भोगी है तथा मन मूर्ख एवं गंवार भी है। यह मन ही दानी और भिखारी है। मन पर गुरु परमेश्वर नियंता है। ब्रह्म का चिंतन करके कामादिक पाँच दुष्टों को मारकर ही सुख प्राप्त करता है॥ २॥ घट घट में एक परमेश्वर के व्यापक होने की बात की जाती है, पर कहने मात्र से देखा नहीं जाता। खोटे लोगों को उलटा लटका कर गर्भ योनि के दुखों में धकेल दिया जाता है और प्रभु नाम के बिना प्रतिष्ठा नहीं रहती। हे परमेश्वर ! जब तेरी रज़ा होती है तो तू स्वयं ही मिला लेता है॥ ३॥ ईश्वर के घर में जाति-धर्म की पूछ-पड़ताल नहीं होती। मनुष्य जैसे कर्म करता है, वैसे ही जाति एवं प्रतिष्ठा का हकदार बनता है। गुरु नानक का फुरमान है कि ईश्वर के नाम स्मरण से मुक्ति मिलती है और जन्म-मरण के सब दुख कट जाते हैं॥ ४॥ १०॥

प्रभाती महला १ ॥ जागतु बिगसै मूठो अंधा ॥ गलि फाही सिरि मारे धंधा ॥ आसा आवै मनसा जाइ ॥ उरझी ताणी किछु न बसाइ ॥ १ ॥ जागसि जीवण जागणहारा ॥ सुख सागर अंम्रित भंडारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कहिओ न बूझै अंधु न सूझै भोंडी कार कमाई ॥ आपे प्रीति प्रेम परमेसुरु करमी मिलै वडाई ॥ २ ॥ दिनु दिनु आवै तिलु तिलु छीजै माइआ मोहु घटाई ॥ बिनु गुर बूडो ठउर न पावै जब लग दूजी राई ॥ ३ ॥ अहिनिसि जीआ देखि सम्हालै सुखु दुखु पुरबि कमाई ॥ करमहीणु सचु भीखिआ मांगै नानक मिलै वडाई ॥ ४ ॥ ११ ॥

अज्ञान में अंधा बना हुआ मनुष्य स्वयं को जाग्रत मानकर खुशी महसूस करता है। काम-धंधों में लीन रहकर इसके गले में मोह-माया का फंदा पड़ जाता है। अनेक आशाएँ लेकर आता है और मन में ही लेकर संसार से चला जाता है। इसकी जीवन-डोर उलझी रहती है और इसका कोई वश नहीं चलता॥१॥ हे जीवनदाता! एकमात्र तू ही जाग्रत है, तू सुखों का सागर है और तेरे नामामृत के भण्डार भरे हुए हैं॥१॥ रहाउ॥ अन्धा मनुष्य कोई शिक्षा नहीं समझता, उसे कोई होश नहीं रहती और कुटिल कर्म ही करता है। ईश्वर स्वयं ही प्रेम भक्ति प्रदान करता है और उसकी कृपा से ही शोभा मिलती है॥२॥ जिन्दगी के दिन आकर चले जाते हैं, उम्र कम हो जाती है, लेकिन फिर भी माया का मोह नहीं घटता। जब तक द्वैतभाव रहता है, गुरु के बिना जीव डूबता है और उसे कोई ठौर-ठिकाना प्राप्त नहीं होता॥३॥ ईश्वर रात-दिन रोज़ी देकर जीवों का पोषण करता है और कर्मानुसार सुख दुख देता है। नानक विनती करते हैं कि हे परमेश्वर! मैं बदनसीब तो सच्चे-नाम की भिक्षा मांगता हूँ, जिससे मुझे बड़ाई मिल जाए॥४॥११॥

प्रभाती महला १ ॥ मसटि करउ मूरखु जगि कहीआ ॥ अधिक बकउ तेरी लिव रहीआ ॥ भूल चूक तेरै दरबारि ॥ नाम बिना कैसे आचार ॥ १ ॥ ऐसे झूठि मुठे संसारा ॥ निंदकु निंदै मुझै पिआरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिसु निंदहि सोई बिधि जाणै ॥ गुर कै सबदे दरि नीसाणै ॥ कारण नामु अंतरगति जाणै ॥ जिस नो नदरि करे सोई बिधि जाणै ॥ २ ॥ मै मैलौ ऊजलु सचु सोइ ॥ ऊतमु आखि न ऊचा होइ ॥ मनमुखु खूल्हि महा बिखु खाइ ॥ गुरमुखि होइ सु राचै नाइ ॥ ३ ॥ अंधौ बोलौ मुगधु गवारु ॥ हीणौ नीचु बुरौ बुरिआरु ॥ नीधन कौ धनु नामु पिआरु ॥ इहु धनु सारु होरु बिखिआ छारु ॥ ४ ॥ उसतति निंदा सबदु वीचारु ॥ जो देवै तिस कउ जैकारु ॥ तू बखसहि जाति पति होइ ॥ नानकु कहै कहावै सोइ ॥ ५ ॥ १२ ॥

अगर मैं चुप रहता हूँ तो दुनिया मुझे मूर्ख कहती है, परन्तु अधिक बोलने से तेरा ध्यान टूटता है। भूल-चूक तो तेरे दरबार में क्षमा होगी, नाम-स्मरण बिना कोई आचरण क्योंकर योग्य माना जा सकता है॥१॥ झूठ में संसार लुट रहा है। निंदक जिसकी निंदा करता है, वह मुझे प्यारा लगता है॥१॥ रहाउ॥ जिसकी निंदा करता है, वही असल में जीवन-युक्ति जानता है। वह गुरु के उपदेश द्वारा प्रभु के द्वार पर मान्य होता है और अन्तर्मन में परमात्मा को मानता है। जिस पर ईश्वर की करुणा-दृष्टि होती है, वही जीवन-युक्ति को समझता है॥२॥ मैं पापों से मलिन हूँ, केवल ईश्वर ही पावन है। उत्तम कहने से कोई बड़ा नहीं हो जाता। स्वेच्छाचारी विकारों का जहर सेवन करता है। पर जो गुरुमुख बन जाता है, वह परमात्मा के नाम स्मरण में लीन रहता है॥३॥ मूर्ख एवं गंवार व्यक्ति बुरे वचन ही बोलता है। हीन तथा नीच व्यक्ति बुरे से भी बुरा है। निर्धन को हरिनाम धन ही प्यारा लगता है। यह धन सार तत्व है, बाकी सब विकारों की धूल मात्र

है॥ ४॥ वह प्रभु किसी को प्रशंसा तो किसी को निंदा तथा किसी को शब्द-चिंतन की योग्यता प्रदान करता है। उस देने वाले को हमारा वंदन है। गुरु नानक का कथन है कि वह स्वयं ही सब करने वाला है, जिस पर कृपा करता है, उसे ही मान-प्रतिष्ठा प्राप्त होती है॥ ५॥ १२॥

प्रभाती महला १ ॥ खाइआ मैलु वधाइआ पैधै घर की हाणि ॥ बकि बकि वादु चलाइआ बिनु नावै बिखु जाणि ॥ १ ॥ बाबा ऐसा बिखम जालि मनु वासिआ ॥ बिबलु झागि सहजि परगासिआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बिखु खाणा बिखु बोलणा बिखु की कार कमाइ ॥ जम दरि बाधे मारीअहि छूटसि साचै नाइ ॥ २ ॥ जिव आइआ तिव जाइसी कीआ लिखि लै जाइ ॥ मनमुखि मूलु गवाइआ दरगह मिलै सजाइ ॥ ३ ॥ जगु खोटौ सचु निरमलौ गुर सबदीं वीचारि ॥ ते नर विरले जाणीअहि जिन अंतरि गिआनु मुरारि ॥ ४ ॥ अजरु जरै नीझरु झरै अमर अनंद सरूप ॥ नानकु जल कौ मीनु सै थे भावै राखहु प्रीति ॥ ५ ॥ १३ ॥

जीव खा-पीकर शरीर में मैल बढ़ाता है और बढ़िया वस्त्र पहनकर घर की हानि करता है। कड़वा बोलकर लड़ाई-झगड़ा उत्पन्न करता है, इस तरह प्रभु नाम बिना जहर ही है॥ १॥ हे बाबा! कठिन जगत-जाल में फँसा हुआ मन प्रभु-नाम के साबुन जल से धुलकर साफ हो जाता है॥ १॥ रहाउ॥ मनुष्य विष खाता है, जहर रूप कड़वा बोलता है और जहर रूप कुटिल कर्म करता है। जिस कारण यमराज के द्वार पर दण्ड भोगता है। लेकिन परमात्मा का नाम जपने से मुक्ति पा सकता है॥ २॥ मनुष्य जैसे खाली हाथ आता है, वैसे ही चला जाता है तथा कृत कर्मों का हिसाब साथ ले जाता है। स्वेच्छाचारी गुणों की राशि गँवा कर प्रभु के दरबार में दण्ड प्राप्त करता है॥ ३॥ शब्द-गुरु के चिंतन द्वारा बोध हुआ है कि संसार दोषयुक्त है, केवल सत्यस्वरूप ईश्वर ही पावन है। ऐसे व्यक्ति विरले ही माने जाते हैं, जिनके मन में ईश्वर का ज्ञान है॥ ४॥ अगर असह्य को सहन किया जाए तो अमर आनंद की धारा चलने लगती है। गुरु नानक विनय करते हैं कि हे प्रभु! जैसे मछली जल को चाहती है, वैसे ही हमारी तुमसे प्रीति बनी हुई है॥ ५॥ १३॥

प्रभाती महला १ ॥ गीत नाद हरख चतुराई ॥ रहस रंग फुरमाइसि काई ॥ पैन्हणु खाणा चीति न पाई ॥ साचु सहजु सुखु नामि वसाई ॥ १ ॥ किआ जानां किआ करै करावै ॥ नाम बिना तनि किछु न सुखावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जोग बिनोद स्वाद आनंदा ॥ मति सत भाइ भगति गोबिंदा ॥ कीरति करम कार निज संदा ॥ अंतरि रवतौ राज रविंदा ॥ २ ॥ प्रिउ प्रिउ प्रीति प्रेमि उर धारी ॥ दीना नाथु पीउ बनवारी ॥ अनदिनु नामु दानु ब्रतकारी ॥ त्रिपति तरंग ततु बीचारी ॥ ३ ॥ अकथौ कथउ किआ मै जोरु ॥ भगति करी कराइहि मोर ॥ अंतरि वसै चूकै मै मोर ॥ किसु सेवी दूजा नही होरु ॥ ४ ॥ गुर का सबदु महा रसु मीठा ॥ ऐसा अंम्रितु अंतरि डीठा ॥ जिनि चाखिआ पूरा पदु होइ ॥ नानक ध्रापिओ तनि सुखु होइ ॥ ५ ॥ १४ ॥

गीत-संगीत, खुशी, चतुराई, रंगरलियां, फरमाइशें, खाना-पहनना कुछ भी मन को पसंद नहीं आता। दरअसल परमात्मा के नाम में ही स्वाभाविक परम सुख मिलता है॥ १॥ मैं नहीं जानता कि ईश्वर क्या करता है और क्या करवाता है। हरिनामोच्चारण बिना शरीर को कुछ भी सुखकारी नहीं लगता॥ १॥ रहाउ॥ सच्चे प्रेम के फलस्वरूप ईश्वर की भक्ति मन में स्थित है, इसी से योग की खुशी एवं आनंद है। परमात्मा का कीर्तिगान ही मेरा कर्म है। अन्तर्मन में सूर्य-चांद की तरह प्रभु रमण कर रहा है॥ २॥ प्रियतम प्रभु का प्रेम मन में धारण कर लिया है, वह दीन-दुखियों का

हमदर्द है। मैं प्रतिदिन उसके नाम का व्रत रखता हूँ। परमतत्व का चिंतन करने से मन को तृप्ति प्राप्त हुई है॥३॥ मुझ में इतनी योग्यता नहीं कि मैं अकथनीय प्रभु के गुण कथन कर सकूँ। यदि वह करवाए तो ही उसकी भक्ति कर सकता हूँ। अहम्-भाव दूर होने पर ही वह मन में बसता है। हे विधाता! तुझ बिन मैं किसकी उपासना करूँ, क्योंकि तेरे सिवा कोई बड़ा नहीं॥४॥ गुरु का उपदेश मीठा महारस है, इस अमृत को मन में देख लिया है। जिसने भी इसे चखा है, उसे ही पूर्ण अवस्था प्राप्त हुई है। हे नानक! वह तृप्त हो गया है और उसके तन को सुख उपलब्ध हुआ है॥५॥१४॥

प्रभाती महला १ ॥ अंतरि देखि सबदि मनु मानिआ अवरु न रांगनहारा ॥ अहिनिसि जीआ देखि समाले तिस ही की सरकारा ॥ १ ॥ मेरा प्रभु रांगि घणौ अति रूड़ौ ॥ दीन दइआलु प्रीतम मनमोहनु अति रस लाल सगूड़ौ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ऊपरि कूपु गगन पनिहारी अंम्रितु पीवणहारा ॥ जिस की रचना सो बिधि जाणै गुरमुखि गिआनु वीचारा ॥ २ ॥ पसरी किरणि रसि कमल बिगासे ससि घरि सूरु समाइआ ॥ कालु बिधुंसि मनसा मनि मारी गुर प्रसादि प्रभु पाइआ ॥ ३ ॥ अति रसि रंगि चलूलै राती दूजा रंगु न कोई ॥ नानक रसनि रसाए राते रवि रहिआ प्रभु सोई ॥ ४ ॥ १५ ॥

अन्तर्मन में प्रभु-शब्द को देखकर मन प्रसन्न हो गया है, मन में यही निष्ठा है कि उस दाता के सिवा अन्य कोई प्रेम,भक्ति में रंगने वाला नहीं। वह नित्य जीवों का पालन-पोषण करता है, केवल उसी की सार्वभौमिकता है॥१॥ मेरे प्रभु का प्रेम-रंग अत्यंत गहरा है, वह अत्यंन्त सुन्दर है। वह दीन-दुखियों पर सदैव दयालु है, मन को मोहित करने वाला प्रियतम है, उसका प्रेम अत्यंत गहरा है॥१॥ रहाउ॥ ऊपर आकाश (दसम द्वार) में कुआँ है, बुद्धि पानी भरने वाली है और मन उस कुएँ का नामामृत पीता है। गुरु के ज्ञान द्वारा चिंतन करके पाया है कि जिसकी रचना है, वही विधि जानता है॥२॥ ज्ञान की किरण फैलने से हृदय कमल खिल उठा है और अन्तर्मन में ज्ञान की रोशनी हो गई है। काल को नाश करके वासनाएँ मन में ही दूर हो गईं और गुरु की कृपा से प्रभु को पा लिया है॥३॥ मैं गहरे प्रेम रंग में लीन हूँ और उसे कोई अन्य रंग नहीं भाता। हे नानक! यह जिह्वा हरिनाम में लीन है, वह प्रभु सर्वव्यापक है॥४॥१५॥

प्रभाती महला १ ॥ बारह महि रावल खपि जावहि चहु छिअ महि संनिआसी ॥ जोगी कापड़ीआ सिरखूथे बिनु सबदै गलि फासी ॥ १ ॥ सबदि रते पूरे बैरागी ॥ अउहठि हसत महि भीखिआ जाची एक भाइ लिव लागी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ब्रहमण वादु पड़हि करि किरिआ करणी करम कराए ॥ बिनु बूझे किछु सूझै नाही मनमुखु विछुड़ि दुखु पाए ॥ २ ॥ सबदि मिले से सूचाचारी साची दरगह माने ॥ अनदिनु नामि रतनि लिव लागे जुगि जुगि साचि समाने ॥ ३ ॥ सगले करम धरम सुचि संजम जप तप तीरथ सबदि वसे ॥ नानक सतिगुर मिलै मिलाइआ दूख पराछत काल नसे ॥ ४ ॥ १६ ॥

बारह सम्प्रदायों में विभक्त योगी तथा दस सम्प्रदायों में बंटे हुए सन्यासी मृत्यु को ही प्राप्त होते हैं। अनेक योगी, कापड़िया एवं सिर मुंडाकर रहने वाले भी प्रभु-शब्द बिना गले में मौत का फंदा ही डालते हैं॥१॥ जो प्रभु-शब्द में लीन रहते हैं, केवल वही पूर्ण वैराग्यवान हैं। वे अपने हाथ में भिक्षा ग्रहण करते हैं और उनकी परमात्मा में लगन लगी रहती है॥१॥ रहाउ॥ ब्राह्मण पाठ-पठन करते हैं और अनेक क्रिया-कर्म करते हैं। सत्य को जाने बिना उन्हें कुछ मालूम नहीं होता और मन के संकेतों पर चलकर ईश्वर से बिछुड़कर दुखी होते हैं॥२॥ जिसे प्रभु-शब्द मिल

जाता है, वही सत्यशील है और प्रभु के दरबार में प्रतिष्ठा प्राप्त करता है। जिनकी दिन-रात हरिनाम में लगन लगी रहती है, वे युग-युग सत्य में ही समाहित रहते हैं॥३॥ सभी कर्म-धर्म, शुद्धिकरण, संयम, जप-तपस्या प्रभु-शब्द में ही बसते हैं। गुरु नानक फुरमान करते हैं– जब सतगुरु से भेंट हो जाती है तो पाप-दुख एवं मृत्यु का भय नष्ट हो जाता है॥४॥१६॥

प्रभाती महला १ ॥ संता की रेणु साध जन संगति हरि कीरति तरु तारी ॥ कहा करै बपुरा जमु डरपै गुरमुखि रिदै मुरारी ॥ १ ॥ जलि जाउ जीवनु नाम बिना ॥ हरि जपि जापु जपउ जपमाली गुरमुखि आवै सादु मना ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर उपदेस साचु सुखु जा कउ किआ तिसु उपमा कहीऐ ॥ लाल जवेहर रतन पदारथ खोजत गुरमुखि लहीऐ ॥ २ ॥ चीनै गिआनु धिआनु धनु साचौ एक सबदि लिव लावै ॥ निरालंबु निरहारु निहकेवलु निरभउ ताड़ी लावै ॥ ३ ॥ साइर सपत भरे जल निरमलि उलटी नाव तरावै ॥ बाहरि जातौ ठाकि रहावै गुरमुखि सहजि समावै ॥ ४ ॥ सो गिरही सो दासु उदासी जिनि गुरमुखि आपु पछानिआ ॥ नानकु कहै अवरु नही दूजा साच सबदि मनु मानिआ ॥ ५ ॥ १७ ॥

हे लोगो! संतों की चरण-धूल लो, साधुजनों की संगत में परमात्मा का कीर्तिगान करो, इस तरह संसार के बन्धनों से मुक्त हो जाओ। जिस गुरमुख के हृदय में ईश्वर है, फिर यम बेचारा भी डरकर क्या बिगाड़ सकता है॥१॥ ईश्वर के नाम बिना जीना तो अग्नि में जल जाने के समान है। परमात्मा का भजन करो, गुरु के द्वारा हरिनाम की माला फेरते रहो, इसी से मन को आनंद प्राप्त होता है॥१॥ रहाउ॥ जिसके पास गुरु के उपदेशानुसार सच्चा सुख है, उसकी क्या उपमा की जाए। गुरु के द्वारा ही प्रभु-नाम रूपी अमूल्य रत्न-जवाहर प्राप्त होता है॥२॥ ज्ञानी, ध्यानशील ही सच्चे हरिनाम धन की पहचान करता है और केवल प्रभु-शब्द में लीन रहता है। वह परमात्मा में समाधि लगाता है, जो निरावलंब, भोजन पानी से रहित है, वासनाओं से परे एवं भय से परे है॥३॥ उसका मन, बुद्धि एवं पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ निर्मल जल से भर जाती हैं और मोह-माया से उलट रहकर जीवन-नैया चलाता है। वह संसार के मोह से मन को काबू रखता है और सहज-स्वाभाविक ही सत्य में विलीन हो जाता है॥४॥ वास्तव में वही गृहस्थी, सेवक एवं त्यागी है, जिसने गुरु के द्वारा आत्मज्ञान को जान लिया है। नानक कहते हैं कि जब सच्चे प्रभु में मन विश्वस्त हो जाता है, तो अन्य कोई दूसरा नहीं होता॥५॥१७॥

रागु प्रभाती महला ३ चउपदे ९ओं सतिगुर प्रसादि ॥

गुरमुखि विरला कोई बूझै सबदे रहिआ समाई ॥ नामि रते सदा सुखु पावै साचि रहै लिव लाई ॥ १ ॥ हरि हरि नामु जपहु जन भाई ॥ गुर प्रसादि मनु असथिरु होवै अनदिनु हरि रसि रहिआ अघाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अनदिनु भगति करहु दिनु राती इसु जुग का लाहा भाई ॥ सदा जन निरमल मैलु न लागै सचि नामि चितु लाई ॥ २ ॥ सुखु सीगारु सतिगुरू दिखाइआ नामि वडी वडिआई ॥ अखुट भंडार भरे कदे तोटि न आवै सदा हरि सेवहु भाई ॥ ३ ॥ आपे करता जिस नो देवै तिसु वसै मनि आई ॥ नानक नामु धिआइ सदा तू सतिगुरि दीआ दिखाई ॥ ४ ॥ १ ॥

कोई विरला पुरुष ही इस रहस्य को गुरु से समझता है कि परमात्मा कण-कण में व्याप्त है। वह हरिनाम में लीन रहकर सदैव सुख प्राप्त करता है और प्रभु-भक्ति में ही रत रहता है॥१॥ हे भाई! हरिनाम का जाप करो; गुरु की कृपा से मन स्थिर होता है और प्रतिदिन हरि-भजन में

तृप्त रहता है॥१॥ रहाउ॥ हे भाई! दिन-रात भगवान की भक्ति करो, इस जीवन-काल का यही लाभ है। जो परमात्मा में मन लगाता है, वह व्यक्ति सदा निर्मल रहता है और उसे पापों की मैल नहीं लगती॥२॥ हरिनाम की महिमा बहुत बड़ी है, सच्चे गुरु ने सुख का शृंगार दिखाया है। हे भाई! हरिनाम का भण्डार अक्षय है, इसमें कभी कमी नहीं आती, इसलिए ईश्वर की अर्चना करो॥३॥ जिसे कर्ता-परमेश्वर आप देता है, उसी के मन में नाम अवस्थित होता है। नानक विनती करते हैं कि सतगुरु ने प्रभु के दर्शन करवा दिए हैं, अतः हरिनाम का चिंतन करो॥४॥१॥

प्रभाती महला ३ ॥ निरगुणीआरे कउ बखसि लै सुआमी आपे लैहु मिलाई ॥ तू बिअंतु तेरा अंतु न पाइआ सबदे देहु बुझाई ॥ १ ॥ हरि जीउ तुधु विटहु बलि जाई ॥ तनु मनु अरपी तुधु आगै राखउ सदा रहां सरणाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपणे भाणे विचि सदा रखु सुआमी हरि नामो देहि वडिआई ॥ पूरे गुर ते भाणा जापै अनदिनु सहजि समाई ॥ २ ॥ तेरै भाणै भगति जे तुधु भावै आपे बखसि मिलाई ॥ तेरै भाणै सदा सुखु पाइआ गुरि त्रिसना अगनि बुझाई ॥ ३ ॥ जो तू करहि सु होवै करते अवरु न करणा जाई ॥ नानक नावै जेवडु अवरु न दाता पूरे गुर ते पाई ॥ ४ ॥ २ ॥

हे स्वामी! मुझ सरीखे गुणविहीन को क्षमा करके अपने साथ मिला लो। तू बे-अन्त है, तेरा रहस्य नहीं पाया जा सकता, अतः उपदेश देकर तथ्य समझा दो॥१॥ हे प्रभु! मैं तुझ पर कुर्बान जाता हूँ। मैं अपना तन-मन सब कुछ सौंपकर सदा तेरी शरण में रहना चाहता हूँ॥१॥ रहाउ॥ हे स्वामी! मुझे सदा अपनी रज़ा में रखना तथा हरिनाम की महिमा प्रदान करो। पूर्ण गुरु से ही तेरी रज़ा का बोध होता है, इस तरह मन दिन-रात सहजावस्था में लीन रहता है॥२॥ तेरी रज़ा से भक्ति होती है, जब तुझे उपयुक्त लगता है तो स्वयं ही कृपा करके मिला लेता है। तेरी रज़ा से सदैव सुख प्राप्त हुआ है और गुरु ने तृष्णाग्नि बुझा दी है॥३॥ हे परमेश्वर! जो तू करता है, वह निश्चय होता है, तेरे सिवा अन्य कोई करने वाला नहीं। गुरु नानक का फुरमान है कि हरिनाम सरीखा अन्य कोई दाता नहीं और पूर्ण गुरु से ही प्राप्त होता है॥४॥२॥

प्रभाती महला ३ ॥ गुरमुखि हरि सालाहिआ जिंना तिन सलाहि हरि जाता ॥ विचहु भरमु गइआ है दूजा गुर कै सबदि पछाता ॥ १ ॥ हरि जीउ तू मेरा इकु सोई ॥ तुधु जपी तुधै सालाही गति मति तुझ ते होई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरमुखि सालाहनि से सादु पाइनि मीठा अंम्रितु सारु ॥ सदा मीठा कदे न फीका गुर सबदी वीचारु ॥ २ ॥ जिनि मीठा लाइआ सोई जाणै तिसु विटहु बलि जाई ॥ सबदि सलाही सदा सुखदाता विचहु आपु गवाई ॥ ३ ॥ सतिगुरु मेरा सदा है दाता जो इछै सो फलु पाए ॥ नानक नामु मिलै वडिआई गुर सबदी सचु पाए ॥ ४ ॥ ३ ॥

जिन लोगों ने गुरु के माध्यम से ईश्वर का स्तुतिगान किया है, उन्होंने ही ईश-स्तुति को समझा है। गुरु के उपदेश से उनके मन से द्वैतभाव का भ्रम समाप्त हो गया है॥१॥ हे परमेश्वर! केवल तू ही मेरा सर्वस्व है। तेरा जाप करता हूँ, तेरा स्तुतिगान करता हूँ और तुझ से ही मुक्ति होती है॥१॥ रहाउ॥ गुरु के द्वारा ईश्वर की सराहना करने वाले नामामृत का मीठा स्वाद प्राप्त करते हैं। गुरु के उपदेश से बेशक चिंतन कर लो यह सदैव मीठा है, यह कभी फीका नहीं होता॥२॥ जिसने हरिनामामृत का मीठा स्वाद पाया है, वही जानता है और मैं उस पर बलिहारी जाता हूँ। मन में से अहम्-भाव दूर करके सुखदाता परमेश्वर की सदैव सराहना करो॥३॥ मेरा सतिगुरु सदा ही देने वाला है, जो कामना होती है, वही फल प्राप्त होता है। हे नानक! हरि नामोच्चारण से कीर्ति प्राप्त होती है और गुरु के उपदेश से ही सत्य प्राप्त होता है॥४॥३॥

प्रभाती महला ३ ॥ जो तेरी सरणाई हरि जीउ तिन तू राखन जोगु ॥ तुधु जेवडु मै अवरु न सूझै ना को होआ न होगु ॥ १ ॥ हरि जीउ सदा तेरी सरणाई ॥ जिउ भावै तिउ राखहु मेरे सुआमी एह तेरी वडिआई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो तेरी सरणाई हरि जीउ तिन की करहि प्रतिपाल ॥ आपि क्रिपा करि राखहु हरि जीउ पोहि न सकै जमकालु ॥ २ ॥ तेरी सरणाई सची हरि जीउ ना ओह घटै न जाइ ॥ जो हरि छोडि दूजै भाइ लागै ओहु जंमै तै मरि जाइ ॥ ३ ॥ जो तेरी सरणाई हरि जीउ तिना दूख भूख किछु नाहि ॥ नानक नामु सलाहि सदा तू सचै सबदि समाहि ॥ ४ ॥ ४ ॥

हे ईश्वर ! जो तेरी शरण में आता है, उसे तू बचाने में समर्थ है। तेरे जैसा शक्तिमान मुझे अन्य कोई प्रतीत नहीं होता, संसार में न कोई हुआ है और न ही कभी होगा॥१॥ अतः हे प्रभु ! मैं सदैव तेरी शरण में हूँ, हे मेरे स्वामी ! जैसा तुझे ठीक लगता है, वैसे ही रखो, यह तेरा बड़प्पन है॥१॥ रहाउ॥ जो तेरी शरण लेते हैं, उनकी तुम्हीं हिफाजत करते हो। हे प्रभु ! तू स्वयं कृपा करके बचाता है और यमराज भी उनके पास नहीं फटकता॥२॥ हे श्रीहरि ! तेरी शरण शाश्वत है, न यह कम होती है, न ही नष्ट होती है। जो भगवान को छोड़कर द्वैतभाव में लिप्त होते हैं, ऐसे लोग जन्म-मरण के बन्धन में पड़े रहते हैं॥३॥ हे परमेश्वर ! जो तेरी शरण में आ जाते हैं, वे संसार के दुखों अथवा लालसाओं से रहित हो जाते हैं। नानक अनुरोध करते हैं कि हे संसार के लोगो ! तुम सदैव परमात्मा की स्तुति करो, गुरु के सच्चे उपदेश द्वारा परमेश्वर में लीन हो जाओगे॥४॥४॥

प्रभाती महला ३ ॥ गुरमुखि हरि जीउ सदा धिआवहु जब लगु जीअ परान ॥ गुर सबदी मनु निरमलु होआ चूका मनि अभिमानु ॥ सफलु जनमु तिसु प्रानी केरा हरि कै नामि समान ॥ १ ॥ मेरे मन गुर की सिख सुणीजै ॥ हरि का नामु सदा सुखदाता सहजे हरि रसु पीजै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मूलु पछाणनि तिन निज घरि वासा सहजे ही सुखु होई ॥ गुर कै सबदि कमलु परगासिआ हउमै दुरमति खोई ॥ सभना महि एको सचु वरतै विरला बूझै कोई ॥ २ ॥ गुरमती मनु निरमलु होआ अंम्रितु ततु वखानै ॥ हरि का नामु सदा मनि वसिआ विचि मन ही मनु मानै ॥ सदा बलिहारी गुर अपुने विटहु जितु आतम रामु पछानै ॥ ३ ॥ मानस जनमि सतिगुरू न सेविआ बिरथा जनमु गवाइआ ॥ नदरि करे तां सतिगुरु मेले सहजे सहजि समाइआ ॥ नानक नामु मिलै वडिआई पूरै भागि धिआइआ ॥ ४ ॥ ५ ॥

हे मनुष्य ! जब तक जीवन-प्राण हैं, गुरु द्वारा परमात्मा का ध्यान करो। गुरु के उपदेश से मन निर्मल हो जाता है और मन का अभिमान निवृत्त हो जाता है। उसी प्राणी का जीवन सफल होता है, जो परमात्मा के नाम में लीन रहता है॥१॥ हे मेरे मन ! गुरु की शिक्षा सुनो। परमात्मा का नाम सदा सुख देने वाला है, अतः स्वाभाविक हरिनाम रस पान करो॥१॥ रहाउ॥ अपने मूल-परमेश्वर को मानने वाले ही आत्म-स्वरूप में रहते हैं और वे स्वाभाविक ही सुखी होते हैं। गुरु के उपदेश से हृदय-कमल खिल उठता है और अहम् एवं दुर्बुद्धि दूर हो जाती है। कोई विरला पुरुष ही इस सच्चाई को जानता है कि सब में एक परमेश्वर ही व्याप्त है॥२॥ गुरु की शिक्षा से ही मन निर्मल होता है और वह अमृतमय हरिनामोच्चारण करता है। परमात्मा का नाम सदा उसके मन में बस जाता है और उस पर विश्वस्त होता है। मैं अपने गुरु पर सदैव कुर्बान जाता हूँ, जिसने परमात्मा की मुझे पहचान दी है॥३॥ यदि मनुष्य जन्म में सतिगुरु की सेवा नहीं की तो जीवन व्यर्थ ही जाता है। जब ईश्वर की कृपा होती है तो सच्चे गुरु से संपर्क हो जाता है और

स्वाभाविक ही सहजावस्था प्राप्त होती है। हे नानक! परमात्मा के नाम से ही कीर्ति प्राप्त होती है और पूर्ण भाग्य से ही प्रभु का ध्यान होता है॥४॥५॥

प्रभाती महला ३ ॥ आपे भांति बणाए बहु रंगी सिसटि उपाइ प्रभि खेलु कीआ ॥ करि करि वेखै करे कराए सरब जीआ नो रिजकु दीआ ॥ १ ॥ कली काल महि रविआ रामु ॥ घटि घटि पूरि रहिआ प्रभु एको गुरमुखि परगटु हरि हरि नामु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुपता नामु वरतै विचि कलजुगि घटि घटि हरि भरपूरि रहिआ ॥ नामु रतनु तिना हिरदै प्रगटिआ जो गुर सरणाई भजि पइआ ॥ २ ॥ इंद्री पंच पंचे वसि आणै खिमा संतोखु गुरमति पावै ॥ सो धनु धनु हरि जनु वड पूरा जो भै बैरागि हरि गुण गावै ॥ ३ ॥ गुर ते मुहु फेरे जे कोई गुर का कहिआ न चिति धरै ॥ करि आचार बहु संपउ संचै जो किछु करै सु नरकि परै ॥ ४ ॥ एको सबदु एको प्रभु वरतै सभ एकसु ते उतपति चलै ॥ नानक गुरमुखि मेलि मिलाए गुरमुखि हरि हरि जाइ रलै ॥ ५ ॥ ६ ॥

प्रभु ने स्वयं ही अनेक प्रकार के (जीवों, पशु-पक्षियों इत्यादि) की सृष्टि बनाकर जगत-तमाशा रचा है। वह बनाकर सबका पोषण करता है और सब जीवों को रिजक देता है॥१॥ कलियुग में ईश्वर विद्यमान है। वह कण कण में व्याप्त है और गुरु के द्वारा हरिनाम के भजन द्वारा प्रगट होता है॥१॥ रहाउ॥ कलियुग में परमेश्वर गुप्त रूप से व्याप्त है, वह प्रत्येक शरीर में भरपूर है। जो गुरु की शरण में आता है, हरिनाम रत्न उसी के हृदय में प्रगट होता है॥२॥ वह गुरु से शिक्षा प्राप्त करके पाँच इन्द्रियों को काबू कर लेता है और क्षमा-संतोष की भावना धारण कर लेता है। वह हरि-भक्त भाग्यशाली एवं धन्य है, जो प्रेम-पूर्वक भगवान का गुणगान करता है॥३॥ यदि कोई गुरु से मुँह फेर लेता है, गुरु का वचन मन में धारण नहीं करता। वह कर्मकाण्ड करके बेशुमार धन दौलत जमा करता है, वह जो कुछ करता है, इसके बावजूद नरक में ही पड़ता है॥४॥ केवल शब्द ही व्याप्त है, वह प्रभु सर्वव्यापक है, केवल उसी का संसार में हुक्म चलता है और केवल एक परमेश्वर से ही पूरा संसार उत्पन्न हुआ है। हे नानक! गुरु के द्वारा जब ईश्वर से मिलाप होता है तो मनुष्य उसी में समाहित हो जाता है॥५॥६॥

प्रभाती महला ३ ॥ मेरे मन गुरु अपणा सालाहि ॥ पूरा भागु होवै मुखि मसतकि सदा हरि के गुण गाहि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अंम्रित नामु भोजनु हरि देइ ॥ कोटि मधे कोई विरला लेइ ॥ जिस नो अपणी नदरि करेइ ॥ १ ॥ गुर के चरण मन माहि वसाइ ॥ दुखु अन्हेरा अंदरहु जाइ ॥ आपे साचा लए मिलाइ ॥ २ ॥ गुर की बाणी सिउ लाइ पिआरु ॥ ऐथै ओथै एहु अधारु ॥ आपे देवै सिरजनहारु ॥ ३ ॥ सचा मनाए अपणा भाणा ॥ सोई भगतु सुघड़ु सोजाणा ॥ नानकु तिस कै सद कुरबाणा ॥ ४ ॥ ७ ॥ १७ ॥ ७ ॥ २४ ॥

हे मेरे मन! अपने गुरु की स्तुति करो; जो पूर्ण भाग्यशाली होता है, वह सदा परमात्मा के गुण गाता है॥१॥ रहाउ॥ ईश्वर नामामृत रूपी भोजन देता है, जिसे करोड़ों में से कोई विरला पुरुष ही पाता है और जिस पर अपनी कृपा-दृष्टि करता है॥१॥ गुरु के चरण मन में बसाने से दुख का अंधेरा दूर हो जाता है और ईश्वर स्वयं ही अपने साथ मिला लेता है॥२॥ गुरु की वाणी से प्रेम लगाओ, लोक-परलोक का यही आसरा है और वह स्रष्टा स्वयं ही प्रेम देता है॥३॥ ईश्वर अपनी रज़ा मनवाता है, उसकी रज़ा को मानने वाला भक्त बुद्धिमान एवं समझदार है और नानक तो उस पर सदैव कुर्बान है॥४॥७॥१७॥७॥२४॥

प्रभाती महला ४ बिभास १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

रसकि रसकि गुन गावह गुरमति लिव उनमनि नामि लगान ॥ अंम्रितु रसु पीआ गुर सबदी हम नाम विटहु कुरबान ॥ १ ॥ हमरे जगजीवन हरि प्रान ॥ हरि ऊतमु रिद अंतरि भाइओ गुरि मंतु दीओ हरि कान ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आवहु संत मिलहु मेरे भाई मिलि हरि हरि नामु वखान ॥ कितु बिधि किउ पाईऐ प्रभु अपुना मोकउ करहु उपदेसु हरि दान ॥ २ ॥ सतसंगति महि हरि हरि वसिआ मिलि संगति हरि गुन जान ॥ वडै भागि सतसंगति पाई गुरु सतिगुरु परसि भगवान ॥ ३ ॥ गुन गावह प्रभ अगम ठाकुर के गुन गाइ रहे हैरान ॥ जन नानक कउ गुरि किरपा धारी हरि नामु दीओ खिन दान ॥ ४ ॥ १ ॥

गुरु की शिक्षा द्वारा मज़े लेकर परमात्मा का गुणगान किया है और सहजावस्था में दत्तचित होकर हरिनाम में लगन लगी हुई है। गुरु के उपदेश से हरिनामामृत का रस पान किया है और हम हरिनाम पर कुर्बान हैं॥१॥ संसार का जीवन प्रभु ही हमारे प्राण हैं। गुरु ने जब कानों में मंत्र दिया तो हृदय में ईश्वर ही प्यारा लगने लगा॥१॥ रहाउ॥ हे मेरे भाई, संतजनो! आओ हम मिलकर हरिनाम की प्रशंसा करें। मुझे उपदेश प्रदान करो कि मैं अपने प्रभु को किस तरह पा सकता हूँ॥२॥ ईश्वर सत्संगत में बसा हुआ है, अतः संगत में मिलकर ईश्वर के गुणों को समझ लो। उत्तम भाग्य से गुरु की सत्संगत प्राप्त होती है और गुरु के चरण-स्पर्श से भगवान से मिलाप होता है॥३॥ हम प्रभु का गुणानुवाद करते हैं, उस मालिक के गुण गाकर विस्मित हो रहे हैं। नानक का कथन है कि गुरु ने कृपा करके हमें हरिनाम भजन का दान दिया है॥४॥१॥

प्रभाती महला ४ ॥ उगवै सूरु गुरमुखि हरि बोलहि सभ रैनि सम्हालहि हरि गाल ॥ हमरै प्रभि हम लोच लगाई हम करह प्रभू हरि भाल ॥ १ ॥ मेरा मनु साधू धूरि रवाल ॥ हरि हरि नामु द्रिड़ाइओ गुरि मीठा गुर पग झारह हम बाल ॥ १ ॥ रहाउ ॥ साकत कउ दिनु रैनि अंधारी मोहि फाथे माइआ जाल ॥ खिनु पलु हरि प्रभु रिदै न वसिओ रिनि बाधे बहु बिधि बाल ॥ २ ॥ सतसंगति मिलि मति बुधि पाई हउ छूटे ममता जाल ॥ हरि नामा हरि मीठ लगाना गुरि कीए सबदि निहाल ॥ ३ ॥ हम बारिक गुर अगम गुसाई गुर करि किरपा प्रतिपाल ॥ बिखु भउजल डुबदे काढि लेहु प्रभ गुर नानक बाल गुपाल ॥ ४ ॥ २ ॥

सुबह होते ही गुरुमुख-जन ईश्वर का भजन करते हैं और रात्रिकाल भी ईश्वर की स्मृति में लीन रहते हैं। प्रभु ने हमारे अन्तर्मन में ऐसी आकांक्षा उत्पन्न कर दी है कि हम उसी की खोज करते रहते हैं॥१॥ मेरा मन तो साधु-पुरुषों की चरण-धूल ही चाहता है। गुरु ने हरिनाम का जाप करवाया है और मैं अपने बालों से गुरु के पैर साफ करता हूँ॥१॥ रहाउ॥ निरीश्वरवादी दिन-रात मोह के अंधकार एवं माया के जाल में फँसा रहता है। उसके हृदय में पल भर भी प्रभु नहीं बसता, उसका बाल-बाल कर्ज में फँसा होता है॥२॥ सत्संगति में मिलने से उत्तम बुद्धि प्राप्त होती है और मोह-ममता के जाल से छुटकारा हो जाता है। मुझे तो हरिनाम ही मधुर लगता है और गुरु ने उपदेश देकर निहाल कर दिया है॥३॥ हम जीव तो बच्चे हैं, गुरु संसार का स्वामी है और वह कृपा करके हमारा पालन-पोषण करता है। नानक विनती करते हैं कि हे गुरु परमेश्वर! इस विषम संसार सागर में डूबने से बचा लो, हम तुम्हारे बच्चे हैं॥४॥२॥

प्रभाती महला ४ ॥ इकु खिनु हरि प्रभि किरपा धारी गुन गाए रसक रसीक ॥ गावत सुनत दोऊ भए मुकते जिना गुरमुखि खिनु हरि पीक ॥ १ ॥ मेरै मनि हरि हरि राम नामु रसु टीक ॥ गुरमुखि नामु सीतल जलु पाइआ हरि हरि नामु पीआ रसु झीक ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिन हरि हिरदै प्रीति लगानी तिना मसतकि ऊजल टीक ॥ हरि जन सोभा सभ जग ऊपरि जिउ विचि उडवा ससि कीक ॥ २ ॥ जिन हरि हिरदै नामु न वसिओ तिन सभि कारज फीक ॥ जैसे सीगारु करै देह मानुख नाम बिना नकटे नक कीक ॥ ३ ॥ घटि घटि रमईआ रमत राम राइ सभ वरतै सभ महि ईक ॥ जन नानक कउ हरि किरपा धारी गुर बचन धिआइओ घरी मीक ॥ ४ ॥ ३ ॥

जब प्रभु ने एक क्षण अपनी कृपा की तो हम प्रेमपूर्वक उसी के गुण गाने लग गए। जिसने गुरु से एक पल हरिनाम अमृत का पान किया है, उसके गुण गाने एवं सुनने वाले दोनों मुक्त हो जाते हैं॥१॥ हे मेरे मन! परमात्मा के भजन में लीन रहो, गुरु से हमने हरिनाम रूपी शीतल जल प्राप्त किया है और आनंदपूर्वक हरिनाम रस का पान किया है॥१॥ रहाउ॥ जिन्होंने हृदय में परमात्मा से प्रेम लगाया है, उनका जीवन सफल हो गया है। समूचे जगत में हरि-भक्तों की यों शोभा होती है, जैसे सितारों में चांद शोभा देता है॥२॥ जिन लोगों के दिल में प्रभु का नाम नहीं बसता, उनके सभी कार्य असफल होते हैं। नामविहीन मनुष्य इस तरह है, जैसे शृंगार करने के बावजूद नाक कटने पर नकटा कहलाता है॥३॥ सबमें एक परमेश्वर ही व्याप्त है, वह घट घट में विद्यमान है। दास नानक पर ईश्वर की कृपा हुई है और गुरु के वचनों से वह हरिनाम ध्यान में ही लीन रहता है॥४॥३॥

प्रभाती महला ४ ॥ अगम दइआल क्रिपा प्रभि धारी मुखि हरि हरि नामु हम कहे ॥ पतित पावन हरि नामु धिआइओ सभि किलबिख पाप लहे ॥ १ ॥ जपि मन राम नामु रवि रहे ॥ दीन दइआलु दुख भंजनु गाइओ गुरमति नामु पदारथु लहे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काइआ नगरि नगरि हरि बसिओ मति गुरमति हरि हरि सहे ॥ सरीरि सरोवरि नामु हरि प्रगटिओ घरि मंदरि हरि प्रभु लहे ॥ २ ॥ जो नर भरमि भरमि उदिआने ते साकत मूड़ मुहे ॥ जिउ म्रिग नाभि बसै बासु बसना भ्रमि भ्रमिओ झार गहे ॥ ३ ॥ तुम वड अगम अगाधि बोधि प्रभ मति देवहु हरि प्रभ लहे ॥ जन नानक कउ गुरि हाथु सिरि धरिओ हरि राम नामि रवि रहे ॥ ४ ॥ ४ ॥

मन-वाणी से परे, दयासागर प्रभु ने कृपा की तो हम हरिनाम का भजन करने लग गए। हरिनाम पापियों को पावन करने वाला है, उसका ध्यान करने से सब पाप-अपराध दूर हो गए हैं॥ १॥ हे मन! ईश्वर का जाप करो, वह सर्वव्यापक है, वह दीनों पर दया करने वाला है, दुखों को नाश करने वाला है, अतः उसी का स्तुतिगान करो। गुरु की शिक्षा द्वारा हरिनाम पदार्थ प्राप्त होता है॥१॥ रहाउ॥ शरीर रूपी नगरी में परमेश्वर ही बसा हुआ है और गुरु की शिक्षा से उसके दर्शन होते हैं। शरीर रूपी सरोवर में ही हरिनाम प्रगट होता है और हृदय घर में प्रभु की प्राप्ति हो जाती है॥२॥ जो व्यक्ति जंगलों में भटकता फिरता है, दरअसल ऐसा मायावी मूर्ख लुट जाता है, जैसे मृग के अन्दर सुगन्धि होती है, परन्तु वह झाड़ियों में भ्रमता फिरता है॥३॥ हे प्रभु! तुम बहुत बड़े, अगम्य, असीम एवं ज्ञानवान हो, ऐसा उपदेश प्रदान करो कि तुझे पा लें। सेवक नानक को गुरु का आशीर्वाद प्राप्त हुआ तो वह हरिनाम में लीन हो गया॥४॥४॥

प्रभाती महला ४ ॥ मनि लागी प्रीति राम नाम हरि हरि जपिओ हरि प्रभु वडफा ॥ सतिगुर बचन सुखाने हीअरै हरि धारी हरि प्रभ क्रिपफा ॥ १ ॥ मेरे मन भजु राम नाम हरि निमखफा ॥ हरि हरि दानु दीओ गुरि पूरै हरि नामा मनि तनि बसफा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ काइआ नगरि वसिओ घरि मंदरि जपि सोभा गुरमुखि करपफा ॥ हलति पलति जन भए सुहेले मुख ऊजल गुरमुखि तरफा ॥ २ ॥ अनभउ हरि हरि हरि लिव लागी हरि उर धारिओ गुरि निमखफा ॥ कोटि कोटि के दोख सभ जन के हरि दूरि कीए इक पलफा ॥ ३ ॥ तुमरे जन तुम ही ते जाने प्रभ जानिओ जन ते मुखफा ॥ हरि हरि आपु धरिओ हरि जन महि जन नानकु हरि प्रभु इकफा ॥ ४ ॥ ५ ॥

मन में हरिनाम से प्रीति लगी तो सच्चिदानंद सर्वेश्वर प्रभु का जाप किया। प्रभु की कृपा हुई तो सतगुरु के वचन हृदय में सुख प्रदान करने लगे॥१॥ हे मेरे मन! पल भर के लिए परमात्मा का भजन कर लो; पूर्णगुरु ने हरिनाम का दान प्रदान किया है और यह मन तन में अवस्थित हो गया है॥१॥ रहाउ॥ शरीर रूपी नगरी एवं हृदय-घर में ईश्वर ही बसा हुआ है और गुरु द्वारा जाप करके उसकी शोभा मालूम हुई है। गुरु के द्वारा यश प्राप्त होता है और लोक-परलोक में जीव सुख पाता है॥२॥ हमारी तो निर्भय परमात्मा में लगन लगी हुई है, गुरु की कृपा से प्रभु को मन में धारण कर लिया है। दया की मूर्ति परमात्मा ने भक्तों के करोड़ों पाप-दोष एक पल में दूर कर दिए हैं॥३॥ हे प्रभु! तुम्हारे भक्त तुम्हारी भक्ति से विख्यात होते हैं और तेरी कीर्ति भी भक्तों द्वारा ही है। नानक का फुरमान है कि हरिभक्त परमात्मा का रूप हैं और भक्त एवं परमात्मा अभिन्न हैं॥४॥५॥

प्रभाती महला ४ ॥ गुर सतिगुरि नामु द्रिड़ाइओ हरि हरि हम मुए जीवे हरि जपिभा ॥ धनु धंनु गुरू गुरु सतिगुरु पूरा बिखु डुबदे बाह देइ कढिभा ॥ १ ॥ जपि मन राम नामु अरधांभा ॥ उपजंपि उपाइ न पाईऐ कतहू गुरि पूरै हरि प्रभु लाभा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ राम नामु रसु राम रसाइणु रसु पीआ गुरमति रसभा ॥ लोह मनूर कंचनु मिलि संगति हरि उर धारिओ गुरि हरिभा ॥ २ ॥ हउमै बिखिआ नित लोभि लुभाने पुत कलत मोहि लुभिभा ॥ तिन पग संत न सेवे कबहू ते मनमुख भूंभर भरभा ॥ ३ ॥ तुमरे गुन तुम ही प्रभ जानहु हम परे हारि तुम सरनभा ॥ जिउ जानहु तिउ राखहु सुआमी जन नानकु दासु तुमनभा ॥ ४ ॥ ६ ॥ छका १ ॥

गुरु ने हरिनाम का जाप करवाया है, हरिनाम जपने से मृत प्राणी भी जिंदा हो गए हैं। वह पूर्ण गुरु महान् है, धन्य है, उसने हाथ देकर विषम संसार-सागर में डूबने से बचा लिया है॥१॥ हे मन! ईश्वर की अर्चना करो, केवल वही अर्चनीय है। बेशक अनेकों उपाय आजमा लो, प्राप्ति नहीं हो सकती, दरअसल प्रभु की प्राप्ति केवल पूर्णगुरु द्वारा ही होती है॥१॥ रहाउ॥ राम नाम रसों का घर है। गुरु के उपदेशानुसार राम रसायन का रस पान करो। सत्संगत में शामिल होने से लोहे सरीखा व्यक्ति भी स्वर्ण समान श्रेष्ठ हो जाता है और गुरु की कृपा से मानव-जीव हरि को हृदय में धारण करता है॥२॥ मनुष्य प्रतिदिन अहंकार एवं विषय-विकारों में लोभायमान रहता है, वह अपने पुत्र-पत्नी के मोह में फंसा रहता है। वह कभी संतों के चरणों की सेवा नहीं करता और मन के संकेतों पर चलता रहता है॥३॥ हे प्रभु! अपने गुणों को तुम ही जानते हो, हम तो हारकर तुम्हारी शरण में पड़ गए हैं। हे स्वामी! ज्यों तुम्हें ठीक लगता है, वैसे ही हमें रखो, दास नानक तो तुम्हारी सेवा में सदैव लीन है॥४॥६॥ छका १॥

प्रभाती बिभास पड़ताल महला ४ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

जपि मन हरि हरि नामु निधान ॥ हरि दरगह पावहि मान ॥ जिनि जपिआ ते पारि परान ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुनि मन हरि हरि नामु करि धिआनु ॥ सुनि मन हरि कीरति अठसठि मजानु ॥ सुनि मन गुरमुखि पावहि मानु ॥ १ ॥ जपि मन परमेसुरु परधानु ॥ खिन खोवै पाप कोटान ॥ मिलु नानक हरि भगवान ॥ २ ॥ १ ॥ ७ ॥

हे मन ! परमात्मा का नाम सुखों का घर है, अतः उसी का जाप करो, इसी से प्रभु-दरबार में सम्मान प्राप्त होता है। जिसने भी परमात्मा का नाम जपा है, वह संसार-सागर से मुक्त हो गया है॥१॥ रहाउ॥ हे मन ! जरा सुनो; ईश्वर के नाम का मनन करो, परमात्मा का कीर्तिगान अड़सठ तीर्थों के फल समान है, गुरु के द्वारा महिमागान करने से मान-सम्मान मिलता है॥१॥ हे मन ! संसार में परमेश्वर ही सर्वोपरि है, अतः उसी की वंदना करो, वह पल में करोड़ों पाप नष्ट कर देता है। नानक विनय करते हैं कि नाम जपकर जीव भगवान में ही मिल जाता है॥२॥१॥७॥

प्रभाती महला ५ बिभास १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

मनु हरि कीआ तनु सभु साजिआ ॥ पंच तत रचि जोति निवाजिआ ॥ सिहजा धरति बरतन कउ पानी ॥ निमख न विसारहु सेवहु सारिगपानी ॥ १ ॥ मन सतिगुरु सेवि होइ परम गते ॥ हरख सोग ते रहहि निरारा तां तू पावहि प्रानपते ॥ १ ॥ रहाउ ॥ कापड़ भोग रस अनिक भुंचाए ॥ मात पिता कुटंब सगल बनाए ॥ रिजकु समाहे जलि थलि मीत ॥ सो हरि सेवहु नीता नीत ॥ २ ॥ तहा सखाई जह कोइ न होवै ॥ कोटि अप्राध इक खिन महि धोवै ॥ दाति करै नही पछोतावै ॥ एका बखस फिरि बहुरि न बुलावै ॥ ३ ॥ किरत संजोगी पाइआ भालि ॥ साधसंगति महि बसे गुपाल ॥ गुर मिलि आए तुमरै दुआर ॥ जन नानक दरसनु देहु मुरारि ॥ ४ ॥ १ ॥

यह मन तन सर्वस्व ईश्वर ने बनाया है, पंच तत्वों को मिलाकर उसने प्राण ज्योति स्थापित की है। धरती को शय्या बना दिया और उपयोग के लिए पानी दे दिया। अतः उस बनाने वाले मालिक को कदापि न भुलाओ, उसकी भक्ति में ही लीन रहो॥१॥ हे मन ! सतगुरु की सेवा से परमगति होती है। यदि खुशी एवं गम से निर्लिप्त रहा जाए तो ही प्राणपति प्राप्त हो सकता है॥१॥ रहाउ॥ ईश्वर ने हमें सुन्दर वस्त्र, अनेक रस भोग प्रदान किए हैं। माता-पिता एवं पूरा परिवार बनाया है। वह रोज़ी रोटी देकर हमारी संभाल करता है, पानी, भूमि सर्वत्र हमारा मित्र की तरह ख्याल रखता है। सो ऐसे परमेश्वर की हर पल भक्ति करो॥२॥ जहाँ कोई सहायता करने वाला नहीं होता, वहाँ मददगार बनता है। वह करोड़ों पाप एक पल में धो देता है। वह देता ही रहता है, पर देकर पछतावा नहीं करता। वह इतना मेहरबान है कि एक ही दफा सबकुछ प्रदान कर देता है और मांगने के लिए पुनः नहीं बुलाता॥३॥ वह शुभ कर्मों के संयोग से ही प्राप्त होता है, वह पालनहार साधु-पुरुषों की संगत में बसता है। नानक विनती करते हैं कि हे प्रभु ! गुरु से मिलकर तुम्हारे द्वार पर आए हैं, अपने दर्शन दो॥४॥१॥

प्रभाती महला ५ ॥ प्रभ की सेवा जन की सोभा ॥ काम क्रोध मिटे तिसु लोभा ॥ नामु तेरा जन कै भंडारि ॥ गुन गावहि प्रभ दरस पिआरि ॥ १ ॥ तुमरी भगति प्रभ तुमहि जनाई ॥ काटि जेवरी जन लीए छडाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जो जनु राता प्रभ कै रंगि ॥ तिनि सुखु पाइआ प्रभ कै संगि ॥ जिसु

रसु आइआ सोई जानै ॥ पेखि पेखि मन महि हैरानै ॥ २ ॥ सो सुखीआ सभ ते ऊतमु सोइ ॥ जा कै हिदै वसिआ प्रभु सोइ ॥ सोई निहचलु आवै न जाइ ॥ अनदिनु प्रभ के हरि गुण गाइ ॥ ३ ॥ ता कउ करहु सगल नमसकारु ॥ जा कै मनि पूरनु निरंकारु ॥ करि किरपा मोहि ठाकुर देवा ॥ नानकु उधरै जन की सेवा ॥ ४ ॥ २ ॥

प्रभु की भक्ति से ही भक्तजनों की शोभा होती है। उनके काम-क्रोध, लोभ सब विकार मिट जाते हैं। हे प्रभु ! तेरा नाम भक्तों का भण्डार है, तेरे दर्शनों की चाह में वे तेरे गुण गाते हैं॥१॥ हे प्रभु ! अपनी भक्ति का रास्ता तूने ही समझाया है और भक्तों के बन्धनों को काटकर उनको मुक्त कर दिया है॥१॥ रहाउ॥ जो श्रद्धालु प्रभु के रंग में लीन रहता है, वह प्रभु के संग सुख प्राप्त करता है। जिसे आनंद प्राप्त हुआ है, वही जानता है और देख-देख कर मन में आश्चर्य होता है॥२॥ दरअसल वही सुखी एवं सबसे उत्तम होता है, जिसके हृदय में प्रभु बस जाता है। वही निश्चल होता है, उसका जन्म-मरण छूट जाता है, जो दिन-रात प्रभु के गुण गाता है॥३॥ सभी उसको प्रणाम करो, जिसके मन में पूर्णपरमेश्वर बसा हुआ है। नानक प्रार्थना करते हैं कि हे ठाकुर ! मुझ पर कृपा करो, क्योंकि तेरी भक्ति से ही दास का उद्धार संभव है॥४॥२॥

प्रभाती महला ५ ॥ गुन गावत मनि होइ अनंद ॥ आठ पहर सिमरउ भगवंत ॥ जा कै सिमरनि कलमल जाहि ॥ तिसु गुर की हम चरनी पाहि ॥ १ ॥ सुमति देवहु संत पिआरे ॥ सिमरउ नामु मोहि निसतारे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिनि गुरि कहिआ मारगु सीधा ॥ सगल तिआगि नामि हरि गीधा ॥ तिसु गुर कै सदा बलि जाईऐ ॥ हरि सिमरनु जिसु गुर ते पाईऐ ॥ २ ॥ बूडत प्रानी जिनि गुरहि तराइआ ॥ जिसु प्रसादि मोहै नही माइआ ॥ हलतु पलतु जिनि गुरहि सवारिआ ॥ तिसु गुर ऊपरि सदा हउ वारिआ ॥ ३ ॥ महा मुगध ते कीआ गिआनी ॥ गुर पूरे की अकथ कहानी ॥ पारब्रहम नानक गुरदेव ॥ वडै भागि पाईऐ हरि सेव ॥ ४ ॥ ३ ॥

यदि ईश्वर का गुणानुवाद किया जाए तो मन को बड़ा आनंद प्राप्त होता है, अतः आठ प्रहर भगवान का भजन करना चाहिए। जिसका सिमरन करने से पाप दूर हो जाते हैं, हम तो उस गुरु के चरणों में आ पड़े हैं॥१॥ हे प्यारे संतजनो ! हमें सुमति प्रदान करो, ताकि प्रभु का नाम-स्मरण करके मुझे मुक्ति प्राप्त हो जाए॥१॥ रहाउ॥ जिस गुरु ने सही रास्ता बताया है, सब त्याग कर हरिनाम में लीन कर दिया है। उस गुरु को सदैव कुर्बान जाना चाहिए, जिससे हरि-स्मरण प्राप्त होता है॥२॥ जिस गुरु ने डूबते प्राणियों को पार कर दिया है, जिसकी दया से मोह-माया प्रभावित नहीं करती, जिस गुरु ने लोक-परलोक संवार दिया है, उस गुरु पर मैं सदैव कुर्बान जाता हूँ॥३॥ जिसने महामूर्ख से हमें ज्ञानी बना दिया है, उस पूर्ण गुरु की कथा अकथनीय है। गुरु नानक स्पष्ट वचन करते हैं कि असल में परब्रह्म ही गुरुदेव है, जो उत्तम भाग्य से हरि-सेवा द्वारा प्राप्त होता है॥४॥३॥

प्रभाती महला ५ ॥ सगले दूख मिटे सुख दीए अपना नामु जपाइआ ॥ करि किरपा अपनी सेवा लाए सगला दुरतु मिटाइआ ॥ १ ॥ हम बारिक सरनि प्रभ दइआल ॥ अवगण काटि कीए प्रभि अपुने राखि लीए मेरै गुर गोपालि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ताप पाप बिनसे खिन भीतरि भए क्रिपाल गुसाई ॥ सासि सासि पारब्रहमु अराधी अपुने सतिगुर कै बलि जाई ॥ २ ॥ अगम अगोचरु बिअंतु सुआमी ता का अंतु

न पाईऐ ॥ लाहा खाटि होईऐ धनवंता अपुना प्रभू धिआईऐ ॥ ३ ॥ आठ पहर पारब्रहमु धिआई सदा सदा गुन गाइआ ॥ कहु नानक मेरे पूरे मनोरथ पारब्रहमु गुरु पाइआ ॥ ४ ॥ ४ ॥

उस सच्चिदानंद जगदीश ने हमारे सब दुख मिटाकर सुख प्रदान कर दिया है और अपने नाम का जाप करवाया है। उसने कृपा करके अपनी सेवा में लगाकर हमारे सब दोष मिटा दिए हैं॥१॥ हम नादान बालक जब दयालु प्रभु की शरण में आए तो उसने हमारे अवगुणों को दूर करके अपना बना लिया और मेरे गुरु परमेश्वर ने मुझे बचा लिया॥१॥ रहाउ॥ मालिक की कृपा होते ही पल में सब पाप-ताप नष्ट हो गए। मैं श्वास-श्वास से परब्रह्म की आराधना करता हूँ और अपने सतगुरु पर कुर्बान जाता हूँ॥२॥ हमारा स्वामी मन-वाणी, ज्ञानेन्द्रियों से परे है, बे-अन्त है, उसका रहस्य पाया नहीं जा सकता। अपने प्रभु का ध्यान करो, इससे लाभ कमाकर धनवान् हुआ जा सकता है॥३॥ हमने तो आठ प्रहर परब्रह्म का ध्यान किया है और सदैव उसके गुण गाते रहते हैं। नानक कथन करते हैं कि परब्रह्म गुरु को पाकर मेरा मनोरथ पूरा हो गया है॥४॥४॥

प्रभाती महला ५ ॥ सिमरत नामु किलबिख सभि नासे ॥ सचु नामु गुरि दीनी रासे ॥ प्रभ की दरगह सोभावंते ॥ सेवक सेवि सदा सोहंते ॥ १ ॥ हरि हरि नामु जपहु मेरे भाई ॥ सगले रोग दोख सभि बिनसहि अगिआनु अंधेरा मन ते जाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जनम मरन गुरि राखे मीत ॥ हरि के नाम सिउ लागी प्रीति ॥ कोटि जनम के गए कलेस ॥ जो तिसु भावै सो भल होस ॥ २ ॥ तिसु गुर कउ हउ सद बलि जाई ॥ जिसु प्रसादि हरि नामु धिआई ॥ ऐसा गुरु पाईऐ वडभागी ॥ जिसु मिलते राम लिव लागी ॥ ३ ॥ करि किरपा पारब्रहम सुआमी ॥ सगल घटा के अंतरजामी ॥ आठ पहर अपुनी लिव लाइ ॥ जनु नानकु प्रभ की सरनाइ ॥ ४ ॥ ५ ॥

ईश्वर का स्मरण करने से सब पाप दूर हो जाते हैं। गुरु ने सच्चे नाम की राशि प्रदान की है। भक्तजन प्रभु के दरबार में शोभा के पात्र बनते हैं और भक्ति करके सदैव सुन्दर लगते हैं॥१॥ हे मेरे भाई! परमात्मा के नाम का जाप करो; इससे सब रोग दोष नाश हो जाते हैं और मन से अज्ञान का अंधेरा समाप्त हो जाता है॥१॥ रहाउ॥ मित्र गुरु ने मुझे जन्म-मरण के चक्र से बचा लिया है और हमारी परमात्मा के नाम से प्रीति लग गई है। इससे करोड़ों जन्मों के दुख-क्लेश मिट गए हैं। जो उसे मंजूर है, वह अच्छा ही होता है॥२॥ मैं उस गुरु को सदैव कुर्बान जाता हूँ, जिसकी कृपा से परमात्मा का ध्यान किया है। सो ऐसा गुरु भाग्यशाली को ही प्राप्त होता है, जिसे मिलकर ईश्वर में लगन लगती है॥३॥ हे परब्रह्म स्वामी! कृपा करो, तू सबके दिल की जानता है। हे प्रभु! दास नानक तेरी शरण में है, आठ प्रहर अपनी भक्ति में लगाकर रखो॥४॥५॥

प्रभाती महला ५ ॥ करि किरपा अपुने प्रभि कीए ॥ हरि का नामु जपन कउ दीए ॥ आठ पहर गुन गाइ गुबिंद ॥ भै बिनसे उतरी सभ चिंद ॥ १ ॥ उबरे सतिगुर चरनी लागि ॥ जो गुरु कहै सोई भल मीठा मन की मति तिआगि ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनि तनि वसिआ हरि प्रभु सोई ॥ कलि कलेस किछु बिघनु न होई ॥ सदा सदा प्रभु जीअ कै संगि ॥ उतरी मैलु नाम कै रंगि ॥ २ ॥ चरन कमल सिउ लागो पिआरु ॥ बिनसे काम क्रोध अहंकार ॥ प्रभ मिलन का मारगु जानां ॥ भाइ भगति हरि सिउ मनु मानां ॥ ३ ॥ सुणि सजण संत मीत सुहेले ॥ नामु रतनु हरि अगह अतोले ॥ सदा सदा प्रभु गुण निधि गाईऐ ॥ कहु नानक वडभागी पाईऐ ॥ ४ ॥ ६ ॥

प्रभु ने कृपा करके मुझे अपना बना लिया है और मुझे हरिनाम जपने के लिए प्रदान कर दिया है। अब मैं आठ प्रहर ईश्वर का गुणगान करता रहता हूँ, जिससे सब भय नाश हो गए हैं और मेरी सारी चिंता दूर हो गई है॥ १॥ गुरु के चरणों में लगकर हम बन्धनों से मुक्त हो गए हैं। जो गुरु कहता है, वही भला है और हमने मन की चतुराई त्याग दी है॥ १॥ रहाउ॥ हमारे मन तन में केवल प्रभु ही बसा हुआ है, जिस कारण कोई कलह-क्लेश एवं विघ्न नहीं आता। प्रभु सदैव जीव के साथ रहता है और प्रभु के नाम में लीन होने से पापों की मैल दूर हो जाती है॥ २॥ हमारा तो प्रभु के चरणों से प्रेम लगा हुआ है, जिससे काम-क्रोध, अहंकार सब नष्ट हो गए हैं। मैंने तो प्रभु मिलन का ही मार्ग जाना है और परमात्मा की भक्ति से मन संतुष्ट हो गया है॥ ३॥ हे सज्जनो, संतो, सुखदायी मित्रो! सुनो; हरिनाम रत्न असीम है, इसकी तुलना नहीं की जा सकती। तुम सदैव गुणों के भण्डार प्रभु का गुणगान करो, नानक का कथन है कि वह भाग्यशाली को ही प्राप्त होता है॥ ४॥ ६॥

प्रभाती महला ५ ॥ से धनवंत सेई सचु साहा ॥ हरि की दरगह नामु विसाहा ॥ १ ॥ हरि हरि नामु जपहु मन मीत ॥ गुरु पूरा पाईऐ वडभागी निरमल पूरन रीति ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पाइआ लाभु वजी वाधाई ॥ संत प्रसादि हरि के गुन गाई ॥ २ ॥ सफल जनमु जीवन परवाणु ॥ गुर परसादी हरि रंगु माणु ॥ ३ ॥ बिनसे काम क्रोध अहंकार ॥ नानक गुरमुखि उतरहि पारि ॥ ४ ॥ ७ ॥

वही लोग धनवान् हैं, वही प्रभु दरबार में सच्चे साहूकार माने जाते हैं, जिनकी हरिनाम पर पूर्ण निष्ठा होती है॥ १॥ हे मेरे मित्र मन! हरिनाम का जाप करो; पूर्ण गुरु उत्तम भाग्य से ही प्राप्त होता है, जिसकी रीति पूर्ण निर्मल है॥ १॥ रहाउ॥ संतों की कृपा से ईश्वर का गुणगान करने से लाभ प्राप्त होता है और शुभकामनाएं मिलती हैं॥ २॥ गुरु की कृपा से ईश्वर-भक्ति का आनंद पाने से जन्म सफल होता है और तभी जीवन मान्य होता है॥ ३॥ नानक फुरमान करते हैं कि मनुष्य के काम-क्रोध अहंकार सब नष्ट हो जाते हैं और गुरु द्वारा वह संसार-समुद्र से पार उतर जाता है॥ ४॥ ७॥

प्रभाती महला ५ ॥ गुरु पूरा पूरी ता की कला ॥ गुर का सबदु सदा सद अटला ॥ गुर की बाणी जिसु मनि वसै ॥ दूखु दरदु सभु ता का नसै ॥ १ ॥ हरि रंगि राता मनु राम गुन गावै ॥ मुकतो साधू धूरी नावै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुर परसादी उतरे पारि ॥ भउ भरमु बिनसे बिकार ॥ मन तन अंतरि बसे गुर चरना ॥ निरभै साध परे हरि सरना ॥ २ ॥ अनद सहज रस सूख घनेरे ॥ दुसमनु दूखु न आवै नेरे ॥ गुरि पूरै अपुने करि राखे ॥ हरि नामु जपत किलबिख सभि लाथे ॥ ३ ॥ संत साजन सिख भए सुहेले ॥ गुरि पूरै प्रभ सिउ लै मेले ॥ जनम मरन दुख फाहा काटिआ ॥ कहु नानक गुरि पड़दा ढाकिआ ॥ ४ ॥ ८ ॥

पूर्ण गुरु की शक्ति भी पूर्ण है, गुरु का शब्द सदैव अटल है। जिसके मन में गुरु की वाणी बस जाती है, उसका दुख-दर्द सब निवृत्त हो जाता है॥ १॥ परमात्मा के रंग में लीन मन उसी के गुण गाता है। जो साधुओं की चरण-धूल में स्नान करता है, वह सब बन्धनों से मुक्त हो जाता है॥ १॥ रहाउ॥ गुरु की कृपा से जीव संसार-सागर से पार उतरता है और उसके भ्रम-भय, विकार नष्ट हो जाते हैं। जिसके मन तन में गुरु के चरण बस जाते हैं, वह निर्भय भावना से प्रभु

की शरण में पड़ता है॥२॥ वह सहज आनंद एवं अनेक सुख प्राप्त करता है, कोई दुश्मन अथवा दुख भी उसके पास नहीं फटकता। पूर्ण गुरु अपना बनाकर उसकी रक्षा करता है और परमात्मा का जाप करते हुए उसके सब पाप-दोष निवृत्त हो जाते हैं॥३॥ असल में संत, सज्जन एवं शिष्य ही सुखी रहते हैं, पूर्ण गुरु उनको प्रभु से मिला देता है। हे नानक! उनके जन्म-मरण के दुखों का फंदा कट जाता है और गुरु उनका पर्दा ढंकता है॥४॥८॥

प्रभाती महला ५ ॥ सतिगुरि पूरै नामु दीआ ॥ अनद मंगल कलिआण सदा सुखु कारजु सगला रासि थीआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चरन कमल गुर के मनि वूठे ॥ दूख दरद भ्रम बिनसे झूठे ॥ १ ॥ नित उठि गावहु प्रभ की बाणी ॥ आठ पहर हरि सिमरहु प्राणी ॥ २ ॥ घरि बाहरि प्रभु सभनी थाई ॥ संगि सहाई जह हउ जाई ॥ ३ ॥ दुइ कर जोड़ि करी अरदासि ॥ सदा जपे नानकु गुणतासु ॥ ४ ॥ ९ ॥

पूर्ण सतगुरु ने हरिनाम ही दिया है, जिससे आनंद-खुशियाँ, कल्याण एवं सदैव सुख प्राप्त हुआ है और हमारे सभी कार्य सम्पन्न हो गए हैं॥१॥ रहाउ॥ गुरु के चरण कमल मेरे मन में बस गए हैं, जिससे दुख-दर्द, झूठा भ्रम नाश हो गया है॥१॥ नित्य उठकर प्रभु की वाणी गाओ। हे प्राणी! आठ प्रहर परमात्मा का स्मरण करो॥२॥ घर बाहर हर स्थान पर प्रभु ही विद्यमान है, जहाँ भी हम जाते हैं, वहाँ साथ देकर सहायता करता है॥३॥ नानक दोनों हाथ जोड़कर प्रार्थना करते हैं कि सदैव गुणों के घर ईश्वर का जाप करो॥४॥९॥

प्रभाती महला ५ ॥ पारब्रहमु प्रभु सुघड़ सुजाणु ॥ गुरु पूरा पाईऐ वडभागी दरसन कउ जाईऐ कुरबाणु ॥ १ ॥ रहाउ ॥ किलबिख मेटे सबदि संतोखु ॥ नामु अराधन होआ जोगु ॥ साधसंगि होआ परगासु ॥ चरन कमल मन माहि निवासु ॥ १ ॥ जिनि कीआ तिनि लीआ राखि ॥ प्रभु पूरा अनाथ का नाथु ॥ जिसहि निवाजे किरपा धारि ॥ पूरन करम ता के आचार ॥ २ ॥ गुण गावै नित नित नित नवे ॥ लख चउरासीह जोनि न भवे ॥ ईहां ऊहां चरण पूजारे ॥ मुखु ऊजलु साचे दरबारे ॥ ३ ॥ जिसु मसतकि गुरि धरिआ हाथु ॥ कोटि मधे को विरला दासु ॥ जलि थलि महीअलि पेखै भरपूरि ॥ नानक उधरसि तिसु जन की धूरि ॥ ४ ॥ १० ॥

परब्रह्म प्रभु सर्वगुणसम्पन्न एवं बुद्धिमान है। पूर्णगुरु बड़े भाग्य से ही प्राप्त होता है, मैं उसके दर्शनों पर कुर्बान जाता हूँ॥१॥ रहाउ॥ गुरु के शब्द से सब पाप मिट गए हैं और मन को संतोष मिला है। परमात्मा का नाम आराधना के योग्य है। साधुओं की संगत में ज्ञान का प्रकाश होता है और प्रभु के चरण कमल मन में बस जाते हैं॥१॥ जिस मालिक ने हमें उत्पन्न किया, उसी ने बचा लिया है। पूर्ण प्रभु अनाथों का नाथ है। जिस पर वह कृपा-दृष्टि करता है, उसके सब आचरण एवं कर्म पूरे हो जाते हैं॥२॥ वह हर रोज़ ईश्वर के गुण गाता है और चौरासी लाख योनियों के चक्र से मुक्त हो ज़ाता है। लोक-परलोक में उसके चरणों की पूजा होती है और सच्चे दरबार में उसी का मुख उज्ज्वल होता है॥२॥ जिसके मस्तक पर गुरु हाथ रखता है, करोड़ों में ऐसा कोई विरला ही दास होता है। वह समुद्र, धरती, आकाश सब में ईश्वर को ही व्यापक देखता है। नानक फुरमान करते हैं कि उस भक्त की चरण-धूल से उद्धार हो जाता है॥४॥१०॥

प्रभाती महला ५ ॥ कुरबाणु जाई गुर पूरे अपने ॥ जिसु प्रसादि हरि हरि जपु जपने ॥ १ ॥ रहाउ ॥ अंम्रित बाणी सुणत निहाल ॥ बिनसि गए बिखिआ जंजाल ॥ १ ॥ साच सबद सिउ लागी प्रीति ॥ हरि प्रभु अपुना आइआ चीति ॥ २ ॥ नामु जपत होआ परगासु ॥ गुर सबदे कीना रिदै निवासु ॥ ३ ॥ गुर समरथ सदा दइआल ॥ हरि जपि जपि नानक भए निहाल ॥ ४ ॥ ११ ॥

मैं अपने पूर्णगुरु पर कुर्बान जाता हूँ, जिसकी कृपा से परमात्मा का जाप किया है॥ १॥ रहाउ॥ उसकी अमृतवाणी सुनने से मन निहाल हो गया है और विकारों के जंजाल नष्ट हो गए हैं॥ १॥ सच्चे शब्द से प्रीति लगाई तो अपना प्रभु ही याद आया॥ २॥ हरिनाम का जाप करने से ज्ञान का प्रकाश हुआ है और गुरु का उपदेश ह्रदय में बस गया है॥ ३॥ गुरु सर्वकला समर्थ एवं सदैव दयालु है। नानक का कथन है कि ईश्वर का जाप करके निहाल हो गए हैं॥ ४॥ ११॥

प्रभाती महला ५ ॥ गुरु गुरु करत सदा सुखु पाइआ ॥ दीन दइआल भए किरपाला अपणा नामु आपि जपाइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ संतसंगति मिलि भइआ प्रगास ॥ हरि हरि जपत पूरन भई आस ॥ १ ॥ सरब कलिआण सूख मनि वूठे ॥ हरि गुण गाए गुर नानक तूठे ॥ २ ॥ १२ ॥

'गुरु-गुरु' जपने से सदैव सुख प्राप्त हो गया है। दीनदयालु ने कृपा करके स्वयं ही मुझ से अपने नाम का जाप करवाया है॥ १॥ रहाउ॥ संतों की संगत में मिलने से ज्ञान का आलोक हो गया है और परमात्मा का जाप करने से हमारी हर आशा पूर्ण हो गई है॥ १॥ सर्व-कल्याण एवं सुख उपलब्ध हुआ है और मन आनंदित हो गया है। हे नानक! गुरु की प्रसन्नता से परमात्मा का गुणगान किया है॥ २॥ १२॥

प्रभाती महला ५ घरु २ बिभास १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

अवरु न दूजा ठाउ ॥ नाही बिनु हरि नाउ ॥ सरब सिधि कलिआन ॥ पूरन होहि सगल काम ॥ १ ॥ हरि को नामु जपीऐ नीत ॥ काम क्रोध अहंकारु बिनसै लगै एकै प्रीति ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नामि लागै दूखु भागै सरनि पालन जोगु ॥ सतिगुरु भेटै जमु न तेटै जिसु धुरि होवै संजोगु ॥ २ ॥ रैनि दिनसु धिआइ हरि हरि तजहु मन के भरम ॥ साधसंगति हरि मिलै जिसहि पूरन करम ॥ ३ ॥ जनम जनम बिखाद बिनसे राखि लीने आपि ॥ मात पिता मीत भाई जन नानक हरि हरि जापि ॥ ४ ॥ १ ॥ १३ ॥

परमात्मा के नाम बिना अन्य कोई ठौर-ठिकाना नहीं। इसी से सर्व सिद्धियाँ एवं कल्याण प्राप्त होता है और सब कार्य पूरे होते हैं॥ १॥ नित्य परमात्मा का नाम जपना चाहिए, इससे काम-क्रोध एवं अहंकार नाश हो जाता है और केवल प्रभु से प्रीति लगी रहती है॥ १॥ रहाउ॥ परमात्मा के नाम में लीन होने से सब दुख भाग जाते हैं और वही शरण देने एवं पालन करने में समर्थ है। जिस व्यक्ति का उत्तम भाग्य होता है, उसका सतगुरु से साक्षात्कार हो जाता है और यमराज उसे तंग नहीं करता॥ २॥ मन के भ्रम छोड़कर दिन-रात परमात्मा का भजन करो। जिस पर पूर्ण कृपा होती है, उसे साधुसंगत में परमात्मा मिल जाता है॥ ३॥ हमारे जन्म-जन्मांतर के दुख-गम नष्ट हो गए हैं, प्रभु ने स्वयं ही बचा लिया है। नानक कथन करते हैं कि परमात्मा ही हमारा माता-पिता, मित्र एवं भाई है, अतः उसी का जाप करो॥ ४॥ १॥ १३॥

प्रभाती महला ५ बिभास पड़ताल ੧ਓੰ सतिगुर प्रसादि ॥

रम राम राम राम जाप ॥ कलि कलेस लोभ मोह बिनसि जाइ अहं ताप ॥ १ ॥ रहाउ ॥ आपु तिआगि संत चरन लागि मनु पवितु जाहि पाप ॥ १ ॥ नानकु बारिकु कछू न जानै राखन कउ प्रभु माई बाप ॥ २ ॥ १ ॥ १४ ॥

राम-राम जपते रहो; इससे कलह-क्लेश, लोभ, मोह, अहम् एवं ताप सब नाश हो जाते हैं॥१॥रहाउ॥ अभिमान को त्यागकर संतों के चरणों में लगो, इससे मन पवित्र हो जाता है और पाप नष्ट हो जाते हैं॥१॥ नानक कथन करते हैं कि नादान बालक कुछ भी नहीं जानता, केवल प्रभु ही माता-पिता की तरह उसकी संभाल करता है॥२॥१॥१४॥

प्रभाती महला ५ ॥ चरन कमल सरनि टेक ॥ ऊच मूच बेअंतु ठाकुरु सरब ऊपरि तुही एक ॥ १ ॥ रहाउ ॥ प्रान अधार दुख बिदार दैनहार बुधि बिबेक ॥ १ ॥ नमसकार रखनहार मनि अराधि प्रभू मेक ॥ संत रेनु करउ मजनु नानक पावै सुख अनेक ॥ २ ॥ २ ॥ १५ ॥

हमें तो ईश्वर के चरण-कमल का ही आसरा है। हे मालिक! तू महान् है, बेअन्त है, केवल तू ही सबसे बड़ा है॥१॥ रहाउ॥ एकमात्र वही प्राणों का आसरा है, सब दुखों का निवारण करने वाला और विवेक बुद्धि देने वाला है॥१॥ हे सर्व रक्षक! हमारा तुझे नमस्कार है। हम तो मन में केवल प्रभु की आराधना करते रहते हैं। नानक का फुरमान है कि संतों की चरण-धूलि में स्नान करने से अनेकों ही सुख प्राप्त होते हैं॥२॥२॥१५॥

प्रभाती असटपदीआ महला १ बिभास ੧ਓੰ सतिगुर प्रसादि ॥

दुबिधा बउरी मनु बउराइआ ॥ झूठै लालचि जनमु गवाइआ ॥ लपटि रही फुनि बंधु न पाइआ ॥ सतिगुरि राखे नामु द्रिड़ाइआ ॥ १ ॥ ना मनु मरै न माइआ मरै ॥ जिनि किछु कीआ सोई जाणै सबदु वीचारि भउ सागरु तरै ॥ १ ॥ रहाउ ॥ माइआ संचि राजे अहंकारी ॥ माइआ साथि न चलै पिआरी ॥ माइआ ममता है बहु रंगी ॥ बिनु नावै को साथि न संगी ॥ २ ॥ जिउ मनु देखहि पर मनु तैसा ॥ जैसी मनसा तैसी दसा ॥ जैसा करमु तैसी लिव लावै ॥ सतिगुरु पूछि सहज घरु पावै ॥ ३ ॥ रागि नादि मनु दूजै भाइ ॥ अंतरि कपटु महा दुखु पाइ ॥ सतिगुरु भेटै सोझी पाइ ॥ सचै नामि रहै लिव लाइ ॥ ४ ॥ सचै सबदि सचु कमावै ॥ सची बाणी हरि गुण गावै ॥ निज घरि वासु अमर पदु पावै ॥ ता दरि साचै सोभा पावै ॥ ५ ॥ गुर सेवा बिनु भगति न होई ॥ अनेक जतन करै जे कोई ॥ हउमै मेरा सबदे खोई ॥ निरमल नामु वसै मनि सोई ॥ ६ ॥ इसु जग महि सबदु करणी है सारु ॥ बिनु सबदै होरु मोहु गुबारु ॥ सबदे नामु रखै उरि धारि ॥ सबदे गति मति मोख दुआरु ॥ ७ ॥ अवरु नाही करि देखणहारो ॥ साचा आपि अनूपु अपारो ॥ राम नाम ऊतम गति होई ॥ नानक खोजि लहै जनु कोई ॥ ८ ॥ १ ॥

बावली दुविधा ने इस मन को भी बावला बना दिया है। झूठे लालच में फँसकर अमूल्य जीवन गंवा दिया है। यह इस प्रकार जीव से लिपट रही है कि इसे पुनः रोका नहीं जा रहा। सच्चा गुरु ही प्रभु के नाम का जाप करवा कर इससे बचाता है॥१॥ न ही मन की वासनाएँ मिटती हैं और न ही माया का मोह समाप्त होता है। जिसने कुछ प्राप्त किया है, वही जानता है, शब्द के

चिंतन द्वारा वह भयानक संसार-सागर से पार उतर जाता है॥ १॥ रहाउ॥ माया संचित करके राजा अहंकारी बन जाते हैं, परन्तु प्यारी माया उनका साथ नहीं देती। माया-ममता अनेक रंग दिखाती है, पर परमात्मा के नाम बिना कोई साथ नहीं देता॥ २॥ मन जिस प्रकार किसी को देखता है, उसे वैसा ही दूसरे का मन लगता है। जैसी कामना होती है, वैसी दशा हो जाती है। वह जैसे कर्म करता है, वैसी ही लगन लग जाती है। गुरु के उपदेश का पालन करने से सहजावस्था प्राप्त होती है॥ ३॥ राग-संगीत में लीन मन द्वैतभाव में लिप्त रहता है। मन में छल-कपट की वजह से मनुष्य महा दुख प्राप्त करता है। जब सतगुरु से भेंट होती है तो ही ज्ञान प्राप्त होता है, फिर परमात्मा के नाम में ध्यान लगा रहता है॥ ४॥ वह गुरु के सच्चे उपदेश से सत्कर्म करता है और शुद्ध वाणी से परमात्मा का गुणानुवाद करता है। वह अपने सच्चे घर में रहकर अमर पदवी पा लेता है। इस तरह प्रभु के द्वार पर शोभा प्राप्त करता है॥ ५॥ बेशक कोई अनेक यत्न कर लो, परन्तु गुरु की सेवा बिना भक्ति नहीं होती। जब गुरु के वचन से अहम्-भाव दूर होता है तो मन में निर्मल नाम बस जाता है॥ ६॥ इस दुनिया में ब्रह्म-शब्द ही श्रेष्ठ प्राप्ति है। प्रभु-शब्द के बिना सब मोह एवं अंधकार है और शब्द से ही नाम हृदय में धारण होता है। शब्द की इतनी महत्ता है कि इससे मुक्ति प्राप्त होती है॥ ७॥ भगवान के बिना अन्य कोई भी नहीं है, जो रचना करके पोषण करने वाला हो। वह सत्यस्वरूप, अनुपम एवं अपार है। गुरु नानक उपदेश करते हैं— राम नाम के स्मरण से ही उत्तम गति होती है, कोई भी जिज्ञासु खोज कर पा ले॥ ८॥ १॥

प्रभाती महला १ ॥ माइआ मोहि सगल जगु छाइआ ॥ कामणि देखि कामि लोभाइआ ॥ सुत कंचन सिउ हेतु वधाइआ ॥ सभु किछु अपना इकु रामु पराइआ ॥ १ ॥ ऐसा जापु जपउ जपमाली ॥ दुख सुख परहरि भगति निराली ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुण निधान तेरा अंतु न पाइआ ॥ साच सबदि तुझ माहि समाइआ ॥ आवा गउणु तुधु आपि रचाइआ ॥ सेई भगत जिन सचि चितु लाइआ ॥ २ ॥ गिआनु धिआनु नरहरि निरबाणी ॥ बिनु सतिगुर भेटे कोइ न जाणी ॥ सगल सरोवर जोति समाणी ॥ आनद रूप विटहु कुरबाणी ॥ ३ ॥ भाउ भगति गुरमती पाए ॥ हउमै विचहु सबदि जलाए ॥ धावतु राखै ठाकि रहाए ॥ सचा नामु मंनि वसाए ॥ ४ ॥ बिसम बिनोद रहे परमादी ॥ गुरमति मानिआ एक लिव लागी ॥ देखि निवारिआ जल महि आगी ॥ सो बूझै होवै वडभागी ॥ ५ ॥ सतिगुरु सेवे भरमु चुकाए ॥ अनदिनु जागै सचि लिव लाए ॥ एको जाणै अवरु न कोइ ॥ सुखदाता सेवे निरमलु होइ ॥ ६ ॥ सेवा सुरति सबदि वीचारि ॥ जपु तपु संजमु हउमै मारि ॥ जीवन मुकतु जा सबदु सुणाए ॥ सची रहत सचा सुखु पाए ॥ ७ ॥ सुखदाता दुखु मेटणहारा ॥ अवरु न सूझसि बीजी कारा ॥ तनु मनु धनु हरि आगै राखिआ ॥ नानकु कहै महा रसु चाखिआ ॥ ८ ॥ २ ॥

पूरे संसार में माया का मोह फैला हुआ है। सुन्दर युवती को देखकर कामपिपासु उस पर लुब्ध हो जाता है। जीव ने अपने पुत्र एवं धन-दौलत से प्रेम लगाया हुआ है। सब चीजों को तो वह अपना मानता है, लेकिन एक परमेश्वर ही उसके लिए पराया बना हुआ है॥ १॥ माला लेकर ऐसा जाप करो कि दुख सुख से रहित होकर भक्ति में लीन हो जाओ॥ १॥ रहाउ॥ हे गुणों के खजाने! तेरा रहस्य कोई नहीं पा सकता, सच्चे शब्द द्वारा ही जीव तुझ में लीन होता है। जन्म-मरण तूने स्वयं ही बनाया है। वही परम भक्त है, जिसने परमात्मा में मन लगाया है॥ २॥ ईश्वर के ज्ञान ध्यान को सतगुरु के साक्षात्कार के बिना कोई नहीं जान सकता। सबके अन्तर्मन

में उसी की ज्योति फैली हुई है, मैं उस आनंदरूप प्रभु पर सदा कुर्बान जाता हूँ॥ ३॥ गुरु की शिक्षा से ही भाव-भक्ति प्राप्त होती है और शब्द से मन का अहंकार जल जाता है। इससे चंचल मन काबू में आ जाता है और सच्चा नाम मन में अवस्थित हो जाता है॥ ४॥ प्रमाद उत्पन्न करने वाले खेल-तमाशे खत्म हो जाते हैं। गुरु की शिक्षा पर भरोसा रखकर एक ईश्वर में ध्यान लगा रहता है। दर्शन करके जीव तृष्णाग्नि को नाम जल से दूर कर देता है। इस रहस्य को समझने वाला भाग्यशाली माना जाता है॥ ५॥ जीव यदि सतिगुरु की सेवा करे तो उसका हर भ्रम दूर हो जाता है, वह दिन-रात जाग्रत रहकर ईश्वर में ध्यानस्थ रहता है। एक परमशक्ति के अलावा वह किसी को नहीं मानता और सुखदाता प्रभु की उपासना से वह निर्मल हो जाता है॥ ६॥ जब शब्द के चिंतन द्वारा सेवा में ध्यान लगता है तो अहम् समाप्त हो जाता है, यही जप तप संयम है। शब्द को सुनने वाला जीवन्मुक्त होता है और सत्कर्म द्वारा सच्चा सुख पाता है॥ ७॥ ईश्वर सुख देने वाला है, सब दुखों को मिटाने वाला है, उसकी भक्ति के अतिरिक्त अन्य सब कर्म व्यर्थ हैं। नानक का कथन है कि जो जिज्ञासु अपना तन-मन धन सर्वस्व प्रभु के सम्मुख अर्पण करता है, उसे ही महारस प्राप्त होता है॥ ८॥ २॥

प्रभाती महला १ ॥ निवली करम भुअंगम भाठी रेचक पूरक कुंभ करै ॥ बिनु सतिगुर किछु सोझी नाही भरमे भूला बूडि मरै ॥ अंधा भरिआ भरि भरि धोवै अंतर की मलु कदे न लहै ॥ नाम बिना फोकट सभि करमा जिउ बाजीगरु भरमि भुलै ॥ १ ॥ खटु करम नामु निरंजनु सोई ॥ तू गुण सागरु अवगुण मोही ॥ १ ॥ रहाउ ॥ माइआ धंधा धावणी दुरमति कार बिकार ॥ मूरखु आपु गणाइदा बूझि न सकै कार ॥ मनसा माइआ मोहणी मनमुख बोल खुआर ॥ मजनु झूठा चंडाल का फोकट चार सींगार ॥ २ ॥ झूठी मन की मति है करणी बादि बिबादु ॥ झूठे विचि अहंकरणु है खसम न पावै सादु ॥ बिनु नावै होरु कमावणा फिका आवै सादु ॥ दुसटी सभा विगुचीऐ बिखु वाती जीवण बादि ॥ ३ ॥ ए भ्रमि भूले मरहु न कोई ॥ सतिगुरु सेवि सदा सुखु होई ॥ बिनु सतिगुर मुकति किनै न पाई ॥ आवहि जांहि मरहि मरि जाई ॥ ४ ॥ एहु सरीरु है त्रै गुण धातु ॥ इस नो विआपै सोग संतापु ॥ सो सेवहु जिसु माई न बापु ॥ विचहु चूकै तिसना अरु आपु ॥ ५ ॥ जह जह देखा तह तह सोई ॥ बिनु सतिगुर भेटे मुकति न होई ॥ हिरदै सचु एह करणी सारु ॥ होरु सभु पाखंडु पूज खुआरु ॥ ६ ॥ दुबिधा चूकै तां सबदु पछाणु ॥ घरि बाहरि एको करि जाणु ॥ एहा मति सबदु है सारु ॥ विचि दुबिधा माथै पवै छारु ॥ ७ ॥ करणी कीरति गुरमति सारु ॥ संत सभा गुण गिआनु बीचारु ॥ मनु मारे जीवत मरि जाणु ॥ नानक नदरी नदरि पछाणु ॥ ८ ॥ ३ ॥

मनुष्य न्योली कर्म करता है, कुण्डलिनी द्वारा साँस को भरने, रोकने तथा छोड़ने की क्रिया करता है। परन्तु सच्चे गुरु के बिना कोई ज्ञान नहीं होता और भ्रम में गलतियाँ करते हुए डूब मरता है। अज्ञानांध व्यक्ति शरीर को तो खूब साफ करता है, परन्तु उसकी मन की मैल कभी नहीं उतरती। प्रभु नाम के बिना सब कर्म व्यर्थ हैं, जिस प्रकार बाजीगर लोगों को भ्रम में डाल रखता है॥ १॥ परमात्मा का पावन नाम ही छः कर्म हैं। हे प्रभु ! तू गुणों का सागर है, लेकिन मुझ में केवल अवगुण ही भरे हुए हैं॥ १॥ रहाउ॥ मनुष्य माया के धंधों में भागदौड़ करता है, खोटी बुद्धि के कारण विकारयुक्त कार्य करता है। मूर्ख व्यक्ति अभिमान में आकर स्वयं को बड़ा मानता है, लेकिन सच्चे कार्य को नहीं समझता। माया में मोहित होकर वह वासनाओं में फंस जाता है, ऐसा स्वेच्छाचारी कटु वचन ही बोलता है। उस चाण्डाल का स्नान भी झूठा होता है और चार प्रकार

का कर्मों वाला शृंगार भी व्यर्थ सिद्ध होता है॥ २॥ उसकी मन की मति झूठी होती है और जीवन-आचरण वाद-विवाद ही बना रहता है। ऐसा अहंकारी झूठ में फंसा रहता है और मालिक का आनंद नहीं पाता। हरिनाम स्मरण बिना अन्य कर्म करने से आनंद प्राप्त नहीं होता। दुष्ट लोगों की संगत में रहने से दुख ही मिलते हैं और जहर पाने से जिन्दगी समाप्त ही होती है॥ ३॥ हे भ्रम में भूले हुए लोगो! किसी भूल में मत पड़ो, सतिगुरु की सेवा में तल्लीन रहने से सदैव सुख पाया जा सकता है। सतिगुरु के बिना किसी ने भी मुक्ति प्राप्त नहीं की, अन्यथा आवागमन में जीव बार-बार जन्मता-मरता है॥ ४॥ यह शरीर तीन गुणों का बना हुआ है और इसे शोक-संताप सताते रहते हैं। सो उस परमात्मा की उपासना करो, जिसकी कोई माता अथवा पिता नहीं। मन से तृष्णा एवं अहम् को दूर करो॥ ५॥ मैं जहाँ भी देखता हूँ, वहाँ परमेश्वर ही विद्यमान है। परन्तु सतगुरु से भेंट किए बिना मुक्ति नहीं होती। हृदय में सत्य को धारण करना ही उत्तम कर्म है, अन्य पूजा-पाठ सब पाखण्ड है॥ ६॥ जब दुविधा दूर होती है तो शब्द की पहचान हो जाती है। तब जीव घर बाहर एक प्रभु को ही मानता है। शब्द को मानना ही उत्तम बुद्धि है, दुविधा में अपमान ही प्राप्त होता है॥ ७॥ गुरु का उत्तम सिद्धांत यही है कि शुभ कर्म ही परमात्मा का कीर्ति-गान करना है। संत पुरुषों की संगत में प्रभु के गुणों एवं ज्ञान का चिंतन होता है। जो मन की वासनाओं को समाप्त कर देता है, वही जीवन्मुक्त माना जाता है। हे नानक! परमात्मा की कृपा-दृष्टि से ही इसकी पहचान होती है॥ ८॥ ३॥

प्रभाती महला १ दखणी ॥ गोतमु तपा अहिलिआ इसत्री तिसु देखि इंद्रु लुभाइआ ॥ सहस सरीर चिहन भग हूए ता मनि पछोताइआ ॥ १ ॥ कोई जाणि न भूलै भाई ॥ सो भूलै जिसु आपि भुलाए बूझै जिसै बुझाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ तिनि हरी चंदि प्रिथमी पति राजै कागदि कीम न पाई ॥ अउगणु जाणै त पुंन करे किउ किउ नेखासि बिकाई ॥ २ ॥ करउ अढाई धरती मांगी बावन रूपि बहानै ॥ किउ पइआलि जाइ किउ छलीऐ जे बलि रूपु पछानै ॥ ३ ॥ राजा जनमेजा दे मतीं बरजि बिआसि पढ़ाइआ ॥ तिन्हि करि जग अठारह घाए किरतु न चलै चलाइआ ॥ ४ ॥ गणत न गणीं हुकमु पछाणा बोली भाइ सुभाई ॥ जो किछु वरतै तुधै सलाहीं सभ तेरी वडिआई ॥ ५ ॥ गुरमुखि अलिपतु लेपु कदे न लागै सदा रहै सरणाई ॥ मनमुखु मुगधु आगै चेतै नाही दुखि लागै पछुताई ॥ ६ ॥ आपे करे कराए करता जिनि एह रचना रचीऐ ॥ हरि अभिमानु न जाई जीअहु अभिमाने पै पचीऐ ॥ ७ ॥ भुलण विचि कीआ सभु कोई करता आपि न भुलै ॥ नानक सचि नामि निसतारा को गुर परसादि अघुलै ॥ ८ ॥ ४ ॥

तपस्वी गौतम की खूबसूरत स्त्री अहल्या को देखकर देवराज इन्द्र उस पर मोहित हो गया (तो उसने छलपूर्वक उससे संभोग किया) जब गौतम ने श्राप दिया तो उसके शरीर पर भग के हजारों चिन्ह बन गए, तत्पश्चात् अपनी भूल के कारण वह मन में बहुत पछताया॥ १॥ हे भाई! कोई जान-बूझकर भूल मत करो। दरअसल वही भूल करता है, जिसे परमात्मा स्वयं भुला देता है और जिसे वह समझाता है, वही समझता है॥ १॥ रहाउ॥ पृथ्वीपति राजा हरिश्चन्द्र अपने भाग्य को समझ नहीं पाया। यदि वह अपने पुण्य कर्म को अवगुण मानता तो गुलामों की मण्डी में भला क्यों बिकता॥ २॥ वामन रूप धारण करके भगवान ने राजा बलि से अढ़ाई कदम भूमि मांगी। यद्यपि राजा बलि वामन रूप को पहचान लेता तो धोखा नहीं खाता और न ही पाताल में जाता॥ ३॥ मुनि व्यास ने राजा जनमेजय को उपदेश देकर समझाया (कि सुन्दर कन्या से विवाह मत करना, न ही यज्ञ इत्यादि करवाना) परन्तु उसने उपदेश का पालन नहीं किया, उसने पत्नी के

आग्रह पर यज्ञ करवाया और क्रोधित होकर अठारह ब्राह्मणों की हत्या करवा दी। इसके फलस्वरूप वह कोढ़ का शिकार हो गया, वस्तुतः भाग्य को कभी बदला नहीं जा सकता॥ ४॥ कितने ही ऐसे लोग हुए हैं, जिनकी मैं गणना नहीं कर सकता। परमात्मा के हुक्म को मानकर सहज-स्वाभाविक ही बोल रहा हूँ। हे प्रभु! जो कुछ हो रहा है, तेरी ही स्तुति है, सब तेरा बड़प्पन है॥ ५॥ गुरुमुख अलिप्त रहता है, उसे कभी पापों की मैल नहीं लगती और वह सदा प्रभु की शरण में रहता है। परन्तु मूर्ख स्वेच्छाचारी सत्य की ओर ध्यान नहीं देता और दुखी होने के उपरांत पछताता है॥ ६॥ जिसने इस संसार की रचना की है, वह बनाने वाला परमात्मा स्वयं ही सब करता और करवाता है। मनुष्य के दिल से अभिमान दूर नहीं होता और वह अभिमान में ही जलता रहता है॥ ७॥ उस कर्ता-परमेश्वर ने पूरे संसार को भूल करने लायक बना दिया है परन्तु वह स्वयं कोई भूल नहीं करता। गुरु नानक का फुरमान है कि गुरु की कृपा से जो परमात्मा का स्मरण करता है, वही जीव बन्धनों से मुक्ति पाता है॥ ८॥ ४॥

प्रभाती महला १ ॥ आखणा सुनणा नामु अधारु ॥ धंधा छुटकि गइआ वेकारु ॥ जिउ मनमुखि दूजै पति खोई ॥ बिनु नावै मै अवरु न कोई ॥ १ ॥ सुणि मन अंधे मूरख गवार ॥ आवत जात लाज नही लागै बिनु गुर बूडै बारो बार ॥ १ ॥ रहाउ ॥ इसु मन माइआ मोहि बिनासु ॥ धुरि हुकमु लिखिआ तां कहीऐ कासु ॥ गुरमुखि विरला चीन्है कोई ॥ नाम बिहूना मुकति न होई ॥ २ ॥ भ्रमि भ्रमि डोलै लख चउरासी ॥ बिनु गुर बूझे जम की फासी ॥ इहु मनूआ खिनु खिनु ऊभि पइआलि ॥ गुरमुखि छूटै नामु सम्हालि ॥ ३ ॥ आपे सदे ढिल न होइ ॥ सबदि मरै सहिला जीवै सोइ ॥ बिनु गुर सोझी किसै न होइ ॥ आपे करै करावै सोइ ॥ ४ ॥ झगड़ु चुकावै हरि गुण गावै ॥ पूरा सतिगुरु सहजि समावै ॥ इहु मनु डोलत तउ ठहरावै ॥ सचु करणी करि कार कमावै ॥ ५ ॥ अंतरि जूठा किउ सुचि होइ ॥ सबदी धोवै विरला कोइ ॥ गुरमुखि कोई सचु कमावै ॥ आवणु जाणा ठाकि रहावै ॥ ६ ॥ भउ खाणा पीणा सुखु सारु ॥ हरि जन संगति पावै पारु ॥ सचु बोलै बोलावै पिआरु ॥ गुर का सबदु करणी है सारु ॥ ७ ॥ हरि जसु करमु धरमु पति पूजा ॥ काम क्रोध अगनी महि भूंजा ॥ हरि रसु चाखिआ तउ मनु भीजा ॥ प्रणवति नानकु अवरु न दूजा ॥ ८ ॥ ५ ॥

ईश्वर का स्तुतिगान करना एवं उसका संकीर्तन सुनना ही हमारा आसरा बन चुका है और अन्य बेकार कार्यों से हम मुक्त हो गए हैं। ज्यों स्वेच्छाचारी द्वैतभाव में अपनी इज्जत खो देता है परन्तु उसका त्याग नहीं करता, इसी तरह मैं परमात्मा के नाम बिना किसी अन्य को नहीं मानता॥ १॥ हे अन्धे, मूर्ख, गंवार मन! मेरी बात सुन, पुनः जन्म-मरण में पड़कर तुझे शर्म नहीं आती, गुरु के बिना बार-बार डूब रहे हो॥ १॥ रहाउ॥ इस मन का माया-मोह में नाश होता है, जब प्रारम्भ से ही भाग्य में लिखा हुआ है तो कैसे कहा जाए। गुरु से कोई विरला पुरुष ही तथ्य को जानता है कि प्रभु-नाम से विहीन रहकर मुक्ति नहीं होती॥ २॥ मनुष्य चौरासी लाख योनियों के चक्र में घूमता रहता है और गुरु के बिना मौत के फंदे को नहीं समझता। यह मन पल-पल बड़ी-बड़ी बातें करता है और तो कभी निम्न हो जाता है। परन्तु गुरु के द्वारा हरिनाम स्मरण द्वारा ही बन्धनों से मुक्त होता है॥ ३॥ ईश्वर स्वयं मृत्यु का बुलावा देता है और कोई देरी नहीं होती। प्रभु-शब्द पर न्यौछावर होने वाला ही सुखद जीवन बिताता है। गुरु के बिना किसी को ज्ञान प्राप्त नहीं होता, संसार में करने-करवाने वाला स्वयं परमेश्वर है॥ ४॥ जो परमात्मा के गुण गाता है, उसके सब झगड़े समाप्त हो जाते हैं। पूर्ण सतगुरु उसे सहजावस्था में लीन कर देता है और यह

मन दोलायमान होने से रुक जाता है। इस प्रकार वह सत्कर्म करता है॥ ५॥ जिसका अन्तर्मन झूठ से भरा हुआ है, वह कैसे शुद्ध हो सकता है। कोई विरला पुरुष ही गुरु की शिक्षा से इसे शुद्ध करता है। कोई गुरुमुख ही सत्कर्म करता है, उसका आवागमन का चक्र समाप्त हो जाता है॥६॥ ईश्वर के भय में रहना ही खाना-पीना एवं सुखमय है। हरि-भक्त सत्संगत में संसार-सागर से मुक्त हो जाता है। वह सत्य बोलता है और प्रेम की भाषा ही बोलता रहता है। गुरु का उपदेश ही उसके लिए उत्तम कर्म है॥७॥ जो व्यक्ति ईश्वर के यशोगान को अपना कर्म-धर्म, पूजा-पाठ एवं प्रतिष्ठा मानता है, वह काम-क्रोध को ज्ञानाग्नि में जला देता है। गुरु नानक का कथन है कि हरिनाम रस से मन आनंदित हो जाता है और अन्य कोई नहीं रहता॥ ८॥ ५॥

प्रभाती महला १ ॥ राम नामु जपि अंतरि पूजा ॥ गुर सबदु वीचारि अवरु नही दूजा ॥ १ ॥ एको रवि रहिआ सभ ठाई ॥ अवरु न दीसै किसु पूज चड़ाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनु तनु आगै जीअड़ा तुझ पासि ॥ जिउ भावै तिउ रखहु अरदासि ॥ २ ॥ सचु जिहवा हरि रसन रसाई ॥ गुरमति छूटसि प्रभ सरणाई ॥ ३ ॥ करम धरम प्रभि मेरै कीए ॥ नामु वडाई सिरि करमां कीए ॥ ४ ॥ सतिगुर कै वसि चारि पदारथ ॥ तीनि समाए एक क्रितारथ ॥ ५ ॥ सतिगुरि दीए मुकति धिआनां ॥ हरि पदु चीन्हि भए परधाना ॥ ६ ॥ मनु तनु सीतलु गुरि बूझ बुझाई ॥ प्रभु निवाजे किनि कीमति पाई ॥ ७ ॥ कहु नानक गुरि बूझ बुझाई ॥ नाम बिना गति किनै न पाई ॥ ८ ॥ ६ ॥

अन्तर्मन में दत्तचित होकर ईश्वर का नाम जपना ही सच्ची पूजा है। गुरु के उपदेश का चिंतन करके देख लो, एक ईश्वर के अतिरिक्त किसी दूसरे का ख्याल नहीं रहता॥१॥ हर जगह पर एक परमेश्वर ही मौजूद है, अन्य कोई दृष्टिगत नहीं होता, फिर उसके अलावा किसकी पूजा-अर्चना की जाए॥१॥ रहाउ॥ हे परमपिता ! मन, तन, प्राण सब तुझे अर्पण है, मेरी प्रार्थना है कि जैसे तुम्हें ठीक लगता है, वैसे ही हमें रखो॥२॥ यह जिह्वा हरिनाम रस में लीन होकर रसमय हो गई है। गुरु की शिक्षा एवं प्रभु की शरण में आने से ही मुक्ति होती है॥३॥ मेरे प्रभु ने कर्म धर्म बनाए हैं लेकिन हरिनाम की बड़ाई को सर्वोत्तम कर्म बनाया है॥४॥ काम, अर्थ, धर्म एवं मोक्ष सतिगुरु के वश में हैं, तीन तो यही समा जाते हैं और चौथा (मोक्ष) कृतार्थ कर देता है॥५॥ सतिगुरु जीव को मुक्ति प्रदान करता है और परमात्मा के ध्यान में लगाता है। इस प्रकार हरिपद को जानकर जीव प्रतिष्ठा प्राप्त करते हैं॥६॥ गुरु के समझाने से मन तन शीतल हो जाता है। जिन्हें प्रभु शोभा प्रदान करता है, उनकी महत्ता कौन प्राप्त कर सकता है॥७॥ गुरु नानक फुरमाते हैं कि गुरु ने उपदेश देते हुए यही समझाया है कि हरिनाम के बिना किसी ने मुक्ति प्राप्त नहीं की॥८॥६॥

प्रभाती महला १ ॥ इकि धुरि बखसि लए गुरि पूरै सची बणत बणाई ॥ हरि रंग राते सदा रंगु साचा दुख बिसरे पति पाई ॥ १ ॥ झूठी दुरमति की चतुराई ॥ बिनसत बार न लागै काई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मनमुख कउ दुखु दरदु विआपसि मनमुखि दुखु न जाई ॥ सुख दुख दाता गुरमुखि जाता मेलि लए सरणाई ॥ २ ॥ मनमुख ते अभ भगति न होवसि हउमै पचहि दिवाने ॥ इहु मनूआ खिनु ऊभि पइआली जब लगि सबद न जाने ॥ ३ ॥ भूख पिआसा जगु भइआ तिपति नही बिनु सतिगुर पाए ॥ सहजै सहजु मिलै सुखु पाईऐ दरगह पैधा जाए ॥ ४ ॥ दरगह दाना बीना इकु आपे निरमल गुर की बाणी ॥ आपे सुरता सचु वीचारसि आपे बूझै पदु निरबाणी ॥ ५ ॥ जलु तरंग अगनी पवनै फुनि

त्रै मिलि जगतु उपाइआ ॥ ऐसा बलु छलु तिन कउ दीआ हुकमी ठाकि रहाइआ ॥ ६ ॥ ऐसे जन विरले जग अंदरि परखि खजानै पाइआ ॥ जाति वरन ते भए अतीता ममता लोभु चुकाइआ ॥ ७ ॥ नामि रते तीरथ से निरमल दुखु हउमै मैलु चुकाइआ ॥ नानकु तिन के चरन पखालै जिना गुरमुखि साचा भाइआ ॥ ८ ॥ ७ ॥

पूर्णगुरु ने ऐसी रीति बनाई है कि कुछ लोगों को प्रारम्भ से ही कृपा करके बचा लिया है। वे सदैव ईश्वर की भक्ति में लीन रहते हैं, उनके दुख-दर्द समाप्त हो जाते हैं और वे इज्जत प्राप्त करते हैं॥ १॥ दुर्मति की चतुराई झूठी है, जिसे नाश होते कोई समय नहीं लगता॥ १॥ रहाउ॥ स्वेच्छाचारी को दुख दर्द सताते रहते हैं, उसके दुखों का अन्त नहीं होता। जीव जब गुरु द्वारा सुख दुख देने वाले मालिक को जान लेता है तो वह शरण में लेकर उसे मिला लेता है॥ २॥ स्वेच्छाचारी से भगवान की भक्ति नहीं हो पाती, वह अहंकार में लीन रहकर बावला बना रहता है। यह मन जब तक प्रभु-शब्द को नहीं जानता, तब तक आकाश पाताल में ही भटकता है॥ ३॥ दुनिया भूख प्यास की शिकार बनी हुई है और सच्चे गुरु के बिना इसकी तृप्ति नहीं होती। जिसे सहज स्वाभाविक शान्ति मिलती है, वही सुख पाता है और प्रभु के दरबार में सम्मान का हकदार बनता है॥ ४॥ गुरु की निर्मल वाणी से ज्ञान प्राप्त होता है कि केवल परमात्मा ही बुद्धिमान है। वह स्वयं ध्यानपूर्वक सुनने वाला एवं चिंतनशील है और स्वयं निर्वाणपद को बूझता है॥ ५॥ उसने जल की तरंगों, अग्नि, पवन तीनों को मिलाकर जगत को उत्पन्न किया है। उसने जगत की चीजों में ऐसा बल-छल प्रदान किया है कि सब उसके हुक्म में बंधे हुए हैं॥ ६॥ संसार में ऐसे विरले ही व्यक्ति हैं, जो जाति-पाति, वर्ण, वासनाओं, मोह-ममता एवं लोभ से दूर रहते हैं और उनकी परख करके खजाने में डाल दिया जाता है॥ ७॥ वही लोग निर्मल होते हैं, जो प्रभु-नाम रूपी तीर्थ में स्नान करते हैं, उनका दुख, अभिमान एवं पापों की मैल दूर हो जाती है। गुरु नानक का फुरमान है कि उन महापुरुषों के चरण धोना हमारा अहोभाग्य है, जिनको ईश्वर प्यारा लगता है॥ ८॥ ७॥

प्रभाती महला ३ बिभास १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

गुर परसादी वेखु तू हरि मंदरु तेरै नालि ॥ हरि मंदरु सबदे खोजीऐ हरि नामो लेहु सम्हालि ॥ १ ॥ मन मेरे सबदि रपै रंगु होइ ॥ सची भगति सचा हरि मंदरु प्रगटी साची सोइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ हरि मंदरु एहु सरीरु है गिआनि रतनि परगटु होइ ॥ मनमुख मूलु न जाणनी माणसि हरि मंदरु न होइ ॥ २ ॥ हरि मंदरु हरि जीउ साजिआ रखिआ हुकमि सवारि ॥ धुरि लेखु लिखिआ सु कमावणा कोइ न मेटणहारु ॥ ३ ॥ सबदु चीन्हि सुखु पाइआ सचै नाइ पिआर ॥ हरि मंदरु सबदे सोहणा कंचनु कोटु अपार ॥ ४ ॥ हरि मंदरु एहु जगतु है गुर बिनु घोरंधार ॥ दूजा भाउ करि पूजदे मनमुख अंध गवार ॥ ५ ॥ जिथै लेखा मंगीऐ तिथै देह जाति न जाइ ॥ साचि रते से उबरे दुखीए दूजै भाइ ॥ ६ ॥ हरि मंदर महि नामु निधानु है ना बूझहि मुगध गवार ॥ गुर परसादी चीन्हिआ हरि राखिआ उरि धारि ॥ ७ ॥ गुर की बाणी गुर ते जाती जि सबदि रते रंगु लाइ ॥ पवितु पावन से जन निरमल हरि कै नामि समाइ ॥ ८ ॥ हरि मंदरु हरि का हाटु है रखिआ सबदि सवारि ॥ तिसु विचि सउदा एकु नामु गुरमुखि

लैनि सवारि ॥ ६ ॥ हरि मंदर महि मनु लोहटु है मोहिआ दूजै भाइ ॥ पारसि भेटिऐ कंचनु भइआ कीमति कही न जाइ ॥ १० ॥ हरि मंदर महि हरि वसै सरब निरंतरि सोइ ॥ नानक गुरमुखि वणजीऐ सचा सउदा होइ ॥ ११ ॥ १ ॥

हे जिज्ञासु ! गुरु की कृपा से तू देख ले, परमात्मा का घर तेरे साथ ही है। गुरु के शब्द से ही इसकी खोज होती है, अतः हरिनाम का भजन करो॥१॥ हे मेरे मन ! शब्द में लीन होने से ही रंग चढ़ता है। सच्ची भक्ति से हरि-मन्दिर प्रगट होता है और सच्ची शोभा मिलती है॥१॥ रहाउ॥ इस शरीर में परमात्मा ही बसा हुआ है, जो ज्ञान के आलोक से ही प्रगट होता है। मन-मर्जी करने वाले लोग उस पैदा करने वाले ईश्वर को नहीं मानते और उनका मानना है कि कहीं भी ईश्वर नहीं॥२॥ ईश्वर ने ही हरिमन्दिर की रचना की है और अपने हुक्म से संवार दिया है। जो भाग्य में लिखा है, वही करना है, इसे कोई बदल नहीं सकता॥३॥ यदि सच्चे नाम से प्रेम किया जाए, शब्द के भेद की पहचान हो जाए तो सुख प्राप्त हो सकता है। हरिमन्दिर शब्द से सुन्दर बना हुआ है, जो स्वर्ण के समान किले के रूप में है॥४॥ यह जगत हरि-मन्दिर (अर्थात् परमात्मा जगत में ही) है और गुरु के बिना हर तरफ घोर अन्धेरा बना हुआ है। जो लोग द्वैतभाव में पूजा करते हैं, वे मनमति, अन्धे एवं मूर्ख हैं॥५॥ जहाँ कर्मों का हिसाब मांगा जाता है, वहाँ पर शरीर अथवा जाति नहीं जाती। परमात्मा में लिप्त रहने वाले तो बच जाते हैं परन्तु द्वैतभाव में लिप्त रहने वाले दुख भोगते हैं॥६॥ हरि-मन्दिर में ही नाम रूपी सुखों का भण्डार है लेकिन मूर्ख गंवार मनुष्य इसे नहीं समझता। जो गुरु की कृपा से तथ्य को जान लेता है, वह ईश्वर को मन में बसा लेता है॥७॥ जब शब्द में लीन होकर प्रेम-रंग लग जाता है तो गुरु की वाणी से जानकारी हो जाती है। जो व्यक्ति परमात्मा के नाम में समा जाते हैं, वही पवित्र पावन एवं निर्मल होते हैं॥८॥ शरीर रूपी हरिमन्दिर में हरि की दुकान है, जहाँ शब्द को संवार कर रखा हुआ है। इसमें केवल नाम का ही सौदा होता है और गुरुमुख यह सौदा लेकर जीवन सफल कर लेते हैं॥ ६॥ प्रभु के घर में लोहे के समान मन भी है, जो द्वैतभाव में लीन रहता है। जब वह गुरु पारस से भेंट करता है, तो स्वर्ण समान गुणवान् बन जाता है, जिसका मूल्य बताया नहीं जा सकता॥ १०॥ शरीर रूपी हरिमन्दिर में परमात्मा ही बसता है, वही सर्वव्याप्त है। नानक फुरमान करते हैं कि यदि गुरमुख बनकर हरिनाम का व्यापार करें तो ही सच्चा सौदा हो सकता है॥११॥१॥

प्रभाती महला ३ ॥ भै भाइ जागे से जन जाग्रण करहि हउमै मैलु उतारि ॥ सदा जागहि घरु अपणा राखहि पंच तसकर काढहि मारि ॥ १ ॥ मन मेरे गुरमुखि नामु धिआइ ॥ जितु मारगि हरि पाईऐ मन सेई करम कमाइ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ गुरमुखि सहज धुनि ऊपजै दुखु हउमै विचहु जाइ ॥ हरि नामा हरि मनि वसै सहजे हरि गुण गाइ ॥ २ ॥ गुरमती मुख सोहणे हरि राखिआ उरि धारि ॥ ऐथै ओथै सुखु घणा जपि हरि हरि उतरे पारि ॥ ३ ॥ हउमै विचि जाग्रणु न होवई हरि भगति न पवई थाइ ॥ मनमुख दरि ढोई ना लहहि भाइ दूजै करम कमाइ ॥ ४ ॥ ध्रिगु खाणा ध्रिगु पैन्हणा जिन्हा दूजै भाइ पिआरु ॥ बिसटा के कीड़े बिसटा राते मरि जंमहि होहि खुआरु ॥ ५ ॥ जिन कउ सतिगुरु भेटिआ तिना विटहु बलि जाउ ॥ तिन की संगति मिलि रहां सचे सचि समाउ ॥ ६ ॥ पूरै भागि गुरु पाईऐ उपाइ कितै न पाइआ जाइ ॥ सतिगुर ते सहजु ऊपजै हउमै सबदि जलाइ ॥ ७ ॥ हरि सरणाई भजु मन मेरे सभ किछु करणै जोगु ॥ नानक नामु न वीसरै जो किछु करै सु होगु ॥ ८ ॥ २ ॥ ७ ॥ २ ॥ ६ ॥

जो परमात्मा के प्रेम एवं श्रद्धा में जाग्रत होता है, वही व्यक्ति अभिमान की मैल को उतार कर जागरण करने वाला है। वह सदा जाग्रत रहकर अपने घर की हिफाजत करता है और काम-क्रोध रूपी पाँच लुटेरों को मारकर निकाल देता है॥ १॥ हे मेरे मन! गुरु के द्वारा भगवान का ध्यान करो, वही कर्म करना चाहिए, जिससे परमात्मा प्राप्त होता है॥ १॥ रहाउ॥ गुरु के द्वारा सुख-शान्ति की ध्वनि उत्पन्न होती है और मन में से अभिमान एवं दुख निवृत्त हो जाते हैं। हरिनाम का चिंतन करने से मन में परमात्मा अवस्थित होता है और सहज स्वाभाविक ही उसका गुणगान होता है॥ २॥ गुरु की शिक्षा द्वारा परमेश्वर मन में अवस्थित होता है और जीव को प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। लोक-परलोक में अत्यंत सुख प्राप्त होता है, ईश्वर का जाप करने से जीव संसार-सागर से पार उतर जाता है॥ ३॥ अभिमान में लीन होने से जागरण नहीं होता और न ही परमात्मा की भक्ति सफल होती है। मन-मर्जी करने वाला द्वैतभाव में कर्म करता रहता है, जिस कारण उसे कहीं भी आसरा नहीं मिलता॥ ४॥ द्वैतभाव से प्रेम करने वाले लोगों का खाना-पहनना सब धिक्कार है। ऐसे विष्ठा के कीड़े विष्ठा में ही लीन रहते हैं और जन्म-मरण के चक्र में दुखी होते हैं॥ ५॥ जिनको सतगुरु मिल गया है, मैं उन पर कुर्बान जाता हूँ। उनकी संगत में मिलकर रहने से ईश्वर में लीन हुआ जाता है॥ ६॥ यदि पूर्ण भाग्य हो तो गुरु प्राप्त होता है और किसी अन्य उपाय द्वारा उसे पाया नहीं जाता। सतिगुरु ही मन में सुख-शान्ति उत्पन्न करता है और शब्द द्वारा अभिमान को जला देता है॥ ७॥ हे मेरे मन! परमात्मा की शरण में आओ, उसी का भजन करो, वह सब कुछ करने में समर्थ है। गुरु नानक का फुरमान है कि ईश्वर का नाम भुलाना नहीं चाहिए, जो कुछ वह करता है, वह निश्चय होता है॥ ८॥ २॥ ७॥ २॥ ६॥

बिभास प्रभाती महला ५ असटपदीआ ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

मात पिता भाई सुतु बनिता ॥ चूगहि चोग अनंद सिउ जुगता ॥ उरझि परिओ मन मीठ मोहारा ॥ गुन गाहक मेरे प्रान अधारा ॥ १ ॥ एकु हमारा अंतरजामी ॥ धर एका मै टिक एकसु की सिरि साहा वड पुरखु सुआमी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ छल नागनि सिउ मेरी टूटनि होई ॥ गुरि कहिआ इह झूठी धोही ॥ मुखि मीठी खाई कउराइ ॥ अंम्रित नामि मनु रहिआ अघाइ ॥ २ ॥ लोभ मोह सिउ गई विखोटि ॥ गुरि क्रिपालि मोहि कीनी छोटि ॥ इह ठगवारी बहुतु घर गाले ॥ हम गुरि राखि लीए किरपाले ॥ ३ ॥ काम क्रोध सिउ ठाटु न बनिआ ॥ गुर उपदेसु मोहि कानी सुनिआ ॥ जह देखउ तह महा चंडाल ॥ राखि लीए अपुनै गुरि गोपाल ॥ ४ ॥ दस नारी मै करी दुहागनि ॥ गुरि कहिआ एह रसहि बिखागनि ॥ इन सनबंधी रसातलि जाइ ॥ हम गुरि राखे हरि लिव लाइ ॥ ५ ॥ अहंमेव सिउ मसलति छोडी ॥ गुरि कहिआ इहु मूरखु होडी ॥ इहु नीघरु घरु कही न पाए ॥ हम गुरि राखि लीए लिव लाए ॥ ६ ॥ इन लोगन सिउ हम भए बैराई ॥ एक ग्रिह महि दुइ न खटांई ॥ आए प्रभ पहि अंचरि लागि ॥ करहु तपावसु प्रभ सरबागि ॥ ७ ॥ प्रभ हसि बोले कीए निआंएं ॥ सगल दूत मेरी सेवा लाए ॥ तूं ठाकुरु इहु ग्रिहु सभु तेरा ॥ कहु नानक गुरि कीआ निबेरा ॥ ८ ॥ १ ॥

माता-पिता, भाई, पुत्र एवं पत्नी इत्यादि परिजन मिलकर आनंदपूर्वक जीवन के सुख भोगते रहते हैं। मन मीठे मोह में फँसा हुआ है, लेकिन गुणों का ग्राहक निरंकार ही मेरे प्राणों का आसरा है॥ १॥ केवल ईश्वर ही हमारे दिल की भावना को जानता है, एकमात्र उसी का मुझे आसरा है,

वह बादशाहों का भी बादशाह है, महान् है॥१॥ रहाउ॥ धोखा देने वाली माया रूपी नागिन से मेरा नाता टूट गया है, दरअसल गुरु ने मुझे बताया है कि यह झूठी एवं धोखेबाज है। मुँह से तो यह मीठी लगती है, परन्तु खाने से कड़वी हो जाती है। मन को केवल हरिनाम अमृत से पूर्ण तृप्ति होती है॥२॥ लोभ, मोह से तो यह नुक्सान पहुँचाने वाली है, पर गुरु ने कृपालु होकर मुझे इससे छुड़वा लिया है। इस ठगिनी ने बहुत सारे घरों को तबाह कर दिया है, मगर गुरु ने कृपा करके मुझे इससे बचा लिया है॥३॥ गुरु का उपदेश मैंने कानों से सुना है, जिस कारण काम-क्रोध से कोई संबंध नहीं बन पाया। जिधर भी दृष्टि जाती है, उधर ये महाचाण्डाल (काम, क्रोध) नजर आ रहा है। लेकिन गुरु परमेश्वर ने मुझे इनसे बचा लिया है॥४॥ मैंने दस इन्द्रियों को छोड़कर दुहागिन बना दिया है, क्योंकि गुरु ने मुझे बतलाया कि इनका रस विषय-विकारों की अग्नि है। इनके साथ रिश्ता बनाकर रखने से रसातल में जाना पड़ता है। ईश्वर में ध्यान लगाने से गुरु ने मुझे बचा लिया है॥५॥ अभिमान से हमने बातचीत छोड़ दी है, क्योंकि गुरु ने मुझे निर्देश दिया कि यह बड़ा मूर्ख एवं जिदी है। घर से निकाले हुए बेघर अभिमान को कहीं घर नहीं मिलता। भगवान में ध्यान लगाने के कारण गुरु ने हमारी रक्षा की है॥६॥ (लोभ, मोह, काम, इन्द्रियों) इन लोगों के लिए हम पराए बन गए हैं, क्योंकि एक घर में दो नहीं रह सकते। हम प्रभु की शरण में आ गए हैं, हे प्रभु! अब तुम ही हमारा इन्साफ करो॥७॥ प्रभु ने मुस्कुराते हुए कहा कि हमने इन्साफ कर दिया है, (इन्साफ यह किया है कि) कामादिक सभी शत्रु मेरी सेवा में लगा दिए हैं। नानक कथन करते हैं कि गुरु ने फैसला कर दिया है कि यह घर तेरा है, अब तू इसका मालिक है॥८॥१॥

प्रभाती महला ५ ॥ मन महि क्रोधु महा अहंकारा ॥ पूजा करहि बहुतु बिसथारा ॥ करि इसनानु तनि चक्र बणाए ॥ अंतर की मलु कब ही न जाए ॥ १ ॥ इतु संजमि प्रभु किन ही न पाइआ ॥ भगउती मुद्रा मनु मोहिआ माइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पाप करहि पंचां के बसि रे ॥ तीरथि नाइ कहहि सभि उतरे ॥ बहुरि कमावहि होइ निसंक ॥ जम पुरि बांधि खरे कालंक ॥ २ ॥ घूघर बाधि बजावहि ताला ॥ अंतरि कपटु फिरहि बेताला ॥ वरमी मारी सापु न मूआ ॥ प्रभु सभ किछु जानै जिनि तू कीआ ॥ ३ ॥ पूंअर ताप गेरी के बसत्रा ॥ अपदा का मारिआ ग्रिह ते नसता ॥ देसु छोडि परदेसहि धाइआ ॥ पंच चंडाल नाले लै आइआ ॥ ४ ॥ कान फराइ हिराए टूका ॥ घरि घरि मांगै त्रिपतावन ते चूका ॥ बनिता छोडि बद नदरि पर नारी ॥ वेसि न पाईऐ महा दुखिआरी ॥ ५ ॥ बोलै नाही होइ बैठा मोनी ॥ अंतरि कलप भवाईऐ जोनी ॥ अंन ते रहता दुखु देही सहता ॥ हुकमु न बूझै विआपिआ ममता ॥ ६ ॥ बिनु सतिगुर किनै न पाई परम गते ॥ पूछहु सगल बेद सिंम्रिते ॥ मनमुख करम करै अजाई ॥ जिउ बालू घर ठउर न ठाई ॥ ७ ॥ जिस नो भए गोबिंद दइआला ॥ गुर का बचनु तिनि बाधिओ पाला ॥ कोटि मधे कोई संतु दिखाइआ ॥ नानकु तिन कै संगि तराइआ ॥ ८ ॥ जे होवै भागु ता दरसनु पाईऐ ॥ आपि तरै सभु कुटंबु तराईऐ ॥ १ ॥ रहाउ दूजा ॥ २ ॥

जिस व्यक्ति के मन में क्रोध एवं महा अहंकार भरा होता है, बेशक वह घण्टियाँ बजाकर, फूल भेंट करके अनेक प्रकार से पूजा-अर्चना कर रहा हो। वह नित्य स्नान करके तिलक लगाता रहे परन्तु उसके मन की मैल कभी दूर नहीं होती॥१॥ इन विधियों से कोई भी प्रभु को पा नहीं सकता। दिखावे के तौर पर भगवती के चिन्ह लगा लिए परन्तु मन माया में लीन रहता है॥१॥ रहाउ॥ पहले तो मनुष्य कामादिक पाँच विकारों के वश में अनेक पाप करता है, तदन्तर कहता

है कि तीर्थ स्नान से सब पाप धुल गए हैं। वह पुनः निडर होकर पाप-कर्म करने लग जाता है, ऐसे व्यक्ति को कलंक लगने के उपरांत यमपुरी धकेल दिया जाता है॥२॥ कुछ लोग पैरों में घुँघरू बांधकर ताल बजाते फिरते हैं, उनके मन में कपट बना रहता है और भटकते फिरते हैं। साँप की बाँबी को तो खत्म कर देते हैं परन्तु इससे साँप नहीं मरता। हे मानव! जिस प्रभु ने तुझे पैदा किया है, वह तेरी सब करतूतें जानता है॥३॥ कोई धूनी तापने लगता है, गेरुए वस्त्र धारण कर लेता है। मुसीबतों का मारा घर से भाग जाता है। वह देश छोड़कर परदेस चला जाता है। इन सबके बावजूद काम-क्रोध रूपी पाँच चाण्डाल साथ ही ले जाता है॥४॥ कोई जीव कान फड़वाकर सन्यासी बन जाता है और लोगों से रोटी मांगने लगता है। वह घर-घर मांगता फिरता है लेकिन तृप्त नहीं होता। वह अपनी पत्नी को छोड़कर पराई नारी पर बुरी नजर डालता है। ऐसा सन्यासी बनकर भी भगवान नहीं मिलता, अपितु वह महादुखी होता है॥५॥ कोई मौनी बनकर बैठ जाता है और किसी से नहीं बोलता। परन्तु मन में वासनाओं के कारण योनियों में भटकता रहता है। कोई भोजन को छोड़कर शरीर को दुख पहुँचाता है। माया-ममत्व में लीन रहकर वह मालिक के हुक्म को नहीं समझता॥६॥ सतगुरु के बिना किसी ने परमगति प्राप्त नहीं की, इस बारे में तो वेद एवं स्मृतियाँ भी हामी भरते हैं। मन-मर्जी करने वाला बेकार कर्म ही करता है, जिस प्रकार रेत का घर नहीं टिकता॥७॥ जिस पर ईश्वर दयालु हो जाता है, वह गुरु के वचन को धारण कर लेता है। करोड़ों में से कोई विरला ही संत दिखाई देता है, नानक फुरमान करते हैं— जिसकी संगत में मुक्ति हो जाती है॥८॥ यदि उत्तम भाग्य हो तो ही इनका दर्शन प्राप्त होता है, वह स्वयं तो पार उतरता ही है, अपने पूरे परिवार को भी संसार-सागर से पार उतार लेता है॥१॥ रहाउ दूसरा॥२॥

प्रभाती महला ५ ॥ सिमरत नामु किलबिख सभि काटे ॥ धरम राइ के कागर फाटे ॥ साधसंगति मिलि हरि रसु पाइआ ॥ पारब्रहमु रिद माहि समाइआ ॥ १ ॥ राम रमत हरि हरि सुखु पाइआ ॥ तेरे दास चरन सरनाइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ चूका गउणु मिटिआ अंधिआरु ॥ गुरि दिखलाइआ मुकति दुआरु ॥ हरि प्रेम भगति मनु तनु सद राता ॥ प्रभू जनाइआ तब ही जाता ॥ २ ॥ घटि घटि अंतरि रविआ सोइ ॥ तिसु बिनु बीजो नाही कोइ ॥ बैर बिरोध छेदे भै भरमां ॥ प्रभि पुंनि आतमै कीने धरमा ॥ ३ ॥ महा तरंग ते कांढै लागा ॥ जनम जनम का टूटा गांढा ॥ जपु तपु संजमु नामु सम्हालिआ ॥ अपुनै ठाकुरि नदरि निहालिआ ॥ ४ ॥ मंगल सूख कलिआण तिथाईं ॥ जह सेवक गोपाल गुसाई ॥ प्रभ सुप्रसंन भए गोपाल ॥ जनम जनम के मिटे बिताल ॥ ५ ॥ होम जग उरध तप पूजा ॥ कोटि तीरथ इसनानु करीजा ॥ चरन कमल निमख रिदै धारे ॥ गोबिंद जपत सभि कारज सारे ॥ ६ ॥ ऊचे ते ऊचा प्रभ थानु ॥ हरि जन लावहि सहजि धिआनु ॥ दास दासन की बांछउ धूरि ॥ सरब कला प्रीतम भरपूरि ॥ ७ ॥ मात पिता हरि प्रीतमु नेरा ॥ मीत साजन भरवासा तेरा ॥ करु गहि लीने अपुने दास ॥ जपि जीवै नानकु गुणतास ॥ ८ ॥ ३ ॥ २ ॥ ७ ॥ १२ ॥

परमात्मा का सिमरन करने से सब पाप-जुर्म कट जाते हैं और धर्मराज द्वारा बनाया गया शुभाशुभ कर्मों का हिसाब फाड़ दिया जाता है। जब साधु-महात्मा पुरुषों की संगत में मिलकर हरिनाम रस प्राप्त होता है तो हृदय में परब्रह्म समा जाता है॥१॥ ईश्वर का भजन करने से सच्चा सुख प्राप्त हुआ है, हे हरि! तेरे भक्त तेरी चरण शरण में आए हैं॥१॥ रहाउ॥ मेरा आवागमन

दूर हो गया है और अज्ञान का अन्धेरा मिट गया है। गुरु ने मुझे मुक्ति का द्वार दिखला दिया है। यह मन तन सदैव परमात्मा की प्रेम-भक्ति में लीन रहता है। जब प्रभु ने ज्ञान प्रदान किया तो ही मुझे समझ आई॥२॥ सृष्टि के कण-कण में परमेश्वर ही व्याप्त है, उसके सिवा दूसरा कोई बड़ा नहीं। हमारे भय-भ्रम, वैर-विरोध सब नष्ट हो गए हैं, पुण्यात्मा प्रभु ने अपने धर्म का पालन किया है॥३॥ प्रभु ने संसार-सागर की महा लहरों से निकाल कर हमें पार लगा दिया है और जन्म-जन्म का टूटा हुआ रिश्ता जुड़ गया है। ईश्वर का सिमरन ही जप-तप एवं संयम बन गया है, अपने मालिक की हम पर कृपा-दृष्टि हुई है॥४॥ जहाँ भक्तजन ईश्वर की भक्ति करते हैं, वहाँ सुख, कल्याण एवं खुशी का माहौल बना रहता है। प्रभु के सुप्रसन्न होने से जन्म-जन्म के दुख मिट जाते हैं॥५॥ लोग होम, यज्ञ, उलटा लटक कर तपस्या, पूजा-अर्चना, करोड़ों तीर्थों में स्नान करते हैं, परन्तु जो एक पल ईश्वर के चरण-कमल को हृदय में धारण करता है, परमात्मा का नाम जपता है, उसके सभीं कार्य सिद्ध हो जाते हैं॥६॥ प्रभु का स्थान सबसे ऊँचा है, हरिभक्त स्वाभाविक ही उसमें ध्यान लगाते हैं। हम तो भक्तजनों की चरण-धूल के आकांक्षी हैं, वह सर्वशक्तिमान प्रियतम प्रभु सब में व्याप्त है॥७॥ हे प्रियतम प्रभु ! तू माता-पिता की तरह हमारे निकट है। हे मेरे मीत साजन ! मुझे केवल तेरा ही भरोसा है। उसने हाथ थामकर भक्तों को अपना बना लिया है। गुरु नानक का कथन है कि हम तो गुणों के भण्डार परमेश्वर का जाप करके ही जीवन पा रहे हैं॥८॥३॥२॥७॥१२॥

बिभास प्रभाती बाणी भगत कबीर जी की १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

मरन जीवन की संका नासी ॥ आपन रंगि सहज परगासी ॥ १ ॥ प्रगटी जोति मिटिआ अंधिआरा ॥ राम रतनु पाइआ करत बीचारा ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जह अनंदु दुखु दूरि पइआना ॥ मनु मानकु लिव ततु लुकाना ॥ २ ॥ जो किछु होआ सु तेरा भाणा ॥ जो इव बूझै सु सहजि समाणा ॥ ३ ॥ कहतु कबीरु किलबिख गए खीणा ॥ मनु भइआ जगजीवन लीणा ॥ ४ ॥ १ ॥

जब परमात्मा अपने रंग में सहज स्वाभाविक प्रकाशमान हुआ तो मेरी जीवन-मृत्यु की शंका दूर हो गई॥१॥ अन्तर्मन में ज्ञान ज्योति प्रगट हुई और अज्ञान का अंधेरा मिट गया। चिंतन करते हुए परमात्मा रूपी रत्न पा लिया॥१॥ रहाउ॥ जहाँ आनंद उत्पन्न होता है, वहाँ से दुख दूर हो जाते हैं। मन रूपी माणिक्य प्रभु-प्रीति में लीन हो गया है॥२॥ जो कुछ होता है, सब तेरी रज़ा है। जो इस तथ्य को समझता है, वह सहज स्वाभाविक लीन हो जाता है॥३॥ कबीर जी कहते हैं कि सब पाप-दोष नष्ट हो गए हैं, चूंकि मन परमात्मा में लीन हो गया है॥४॥१॥

प्रभाती ॥ अलहु एकु मसीति बसतु है अवरु मुलखु किसु केरा ॥ हिंदू मूरति नाम निवासी दुह महि ततु न हेरा ॥ १ ॥ अलह राम जीवउ तेरे नाई ॥ तू करि मिहरामति साई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ दखन देसि हरी का बासा पछिमि अलह मुकामा ॥ दिल महि खोजि दिलै दिलि खोजहु एही ठउर मुकामा ॥ २ ॥ ब्रहमन गिआस करहि चउबीसा काजी मह रमजाना ॥ गिआरह मास पास कै राखे एकै माहि निधाना ॥ ३ ॥ कहा उडीसे मजनु कीआ किआ मसीति सिरु नांएं ॥ दिल महि कपटु निवाज गुजारै किआ हज काबै जांएं ॥ ४ ॥ एते अउरत मरदा साजे ए सभ रूप तुम्हारे ॥

कबीरु पूंगरा राम अलह का सभ गुर पीर हमारे ॥ ५ ॥ कहतु कबीरु सुनहु नर नरवै परहु एक की सरना ॥ केवल नामु जपहु रे प्रानी तब ही निहचै तरना ॥ ६ ॥ २ ॥

{मुसलमान खुदा को मस्जिद में मानकर बंदगी करता है, कबीर जी संबोधन करते हैं—} यदि अल्लाह केवल मस्जिद में ही रहता है तो (बताइए) बाकी मुल्क किसका है। (हिन्दू देवी-देवताओं की मूर्तियों को भगवान मानकर अर्चना करते हैं) हिन्दुओं का मानना है कि परमात्मा का निवास मूर्ति में है परन्तु दोनों ने ही सच्चाई को नहीं जाना *(कि परमात्मा तो सर्वव्यापक है, हर दिल में बसा हुआ है)* ॥१॥ हे अल्लाह ! (तू महान् है) हे राम ! मैं तो तेरे नाम के आसरे पर ही जिंदगी गुजार रहा हूँ। हे मालिक ! तू हम पर अपनी मेहर करता रह॥१॥ रहाउ॥ हिन्दुओं के विचारानुसार दक्षिण देश जगन्नाथ पुरी में हरि का निवास है और मुसलमान पश्चिम (मक्का) में अल्लाह का घर मानते हैं। *(कबीर जी समूची मानव जाति से आग्रह करते हैं)* हे मेरे भाई ! दिल में खोज करो, दिल में ही ढूँढो, इस दिल में ही मौला-परमेश्वर का ठिकाना है॥२॥ ब्राह्मण चौबीस एकादशियों के व्रत-उपवास रखते हैं और काजी रमजान के महीने रोज़े रखते हैं। लेकिन वे लोग अन्य ग्यारह महीनों को दरकिनार कर देते हैं और केवल रमजान के महीने में सुखों के घर अल्लाह को पाने का समय मानते हैं॥३॥ उड़ीसा में जगन्नाथ पर स्नान करने और मस्जिद में सिर झुकाने से क्या लाभ है। यदि दिल में कपट ही भरा हुआ है तो नमाज अदा करने या हज्ज के लिए काबे में जाने का भी कोई फायदा नहीं॥४॥ जितनी भी औरतें एवं मर्द बनाए हैं, हे परमेश्वर ! ये सब तुम्हारा ही रूप हैं। कबीर राम एवं अल्लाह का ही पुत्र है तथा उसके मतानुसर सभी हमारे गुरु पीर हैं॥५॥ कबीर जी कहते हैं कि हे नर नारियो ! मेरी बात जरा ध्यान से सुनो, (धर्मान्धता छोड़कर) उस एक परमात्मा की शरण में पड़ो। केवल प्रभु के नाम का जाप करो, हे प्राणियो ! तब निश्चय ही तुम संसार-सागर से पार हो जाओगे॥६॥२॥

प्रभाती ॥ अवलि अलह नूरु उपाइआ कुदरति के सभ बंदे ॥ एक नूर ते सभु जगु उपजिआ कउन भले को मंदे ॥ १ ॥ लोगा भरमि न भूलहु भाई ॥ खालिकु खलक खलक महि खालिकु पूरि रहिओ स्रब ठांई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ माटी एक अनेक भांति करि साजी साजनहारै ॥ ना कछु पोच माटी के भांडे ना कछु पोच कुंभारै ॥ २ ॥ सभ महि सचा एको सोई तिस का कीआ सभु कछु होई ॥ हुकमु पछानै सु एको जानै बंदा कहीऐ सोई ॥ ३ ॥ अलहु अलखु न जाई लखिआ गुरि गुड़ु दीना मीठा ॥ कहि कबीर मेरी संका नासी सरब निरंजनु डीठा ॥ ४ ॥ ३ ॥

सबसे पहले अल्लाह ने अपने नूर को पैदा किया, तदंतर उसकी कुदरत-शक्ति से सब लोगों की पैदाइश हुई। जब एक नूर से समूचा जगत पैदा हुआ है तो फिर कौन भला हो सकता है और किसे बुरा कहा जाए॥१॥ हे लोगो, हे मेरे भाई ! किसी भ्रम में मत भूलो। यह खलक (सृष्टि) खालिक (रचनहार) ने रची है और खालिक अपनी खलकत (रचना) में ही है। सृष्टि के हर स्थान पर वही मौजूद है॥१॥ रहाउ॥ उस बनाने वाले ने एक ही मिट्टी से अनेक प्रकार के जीवों की सृजना की है, न ही मिट्टी के बर्तन (मनुष्य) का कोई कसूर है और न ही बनानेवाले का कसूर है॥२॥ सब में एक परमेश्वर ही मौजूद है, उसका किया ही सब कुछ होता है। जो उसके हुक्म को मानता है, केवल उसी पर निष्ठा रखता है, वास्तव में वही नेक पुरुष कहलाता है॥३॥ अल्लाह

अदृष्ट है, वह दिखाई नहीं देता। गुरु ने मुझे उस गुड़ की मिठास प्रदान की है। कबीर जी कहते हैं कि मेरी सारी शंका समाप्त हो गई है, मुझे तो सब में ईश्वर ही दिखाई देता है॥ ४॥ ३॥

प्रभाती ॥ बेद कतेब कहहु मत झूठे झूठा जो न बिचारै ॥ जउ सभ महि एकु खुदाइ कहत हउ तउ किउ मुरगी मारै ॥ १ ॥ मुलां कहहु निआउ खुदाई ॥ तेरे मन का भरमु न जाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ पकरि जीउ आनिआ देह बिनासी माटी कउ बिसमिलि कीआ ॥ जोति सरूप अनाहत लागी कहु हलालु किआ कीआ ॥ २ ॥ किआ उजू पाकु कीआ मुहु धोइआ किआ मसीति सिरु लाइआ ॥ जउ दिल महि कपटु निवाज गुजारहु किआ हज काबै जाइआ ॥ ३ ॥ तूं नापाकु पाकु नही सूझिआ तिस का मरमु न जानिआ ॥ कहि कबीर भिसति ते चूका दोजक सिउ मनु मानिआ ॥ ४ ॥ ४ ॥

वेदों एवं कुरान को झूठा मत कहो; दरअसल झूठा वही है जो इनका चिंतन नहीं करता। तुम्हारा कहना है कि सब में एक खुदा ही मौजूद है तो फिर मुर्गी को क्यों मार रहे हो॥ १॥ हे मुल्ला ! मुझे बताओ, क्या यह खुदा का इंसाफ है, तेरे मन का भ्रम अभी दूर नहीं हुआ॥ १॥ रहाउ॥ जीव (मुर्गी) को पकड़ कर लाया, शरीर को नाश कर दिया, उसकी मिट्टी को खत्म कर दिया। जीव की ज्योति ईश्वर में ही मिल जाती है, फिर हलाल क्या किया॥ १॥ वुजू किया, हाथ-मुँह धोकर पवित्र हुए तथा मस्जिद में सिर झुकाया गया, इन सबका क्या फायदा, जब दिल में कपट ही है तो नमाज अदा करने या हज्ज के लिए काबे में जाने का कोई लाभ नहीं॥ ३॥ तू मन से अपवित्र है, पवित्र खुदा को नहीं समझा और न ही तूने उसके रहस्य को जाना है। कबीर जी कहते हैं कि इस तरह तू बहिश्त से वंचित हो गया और तेरा मन नरक में जाने के लिए तैयार है॥ ४॥ ४॥

प्रभाती ॥ सुंन संधिआ तेरी देव देवाकर अधपति आदि समाई ॥ सिध समाधि अंतु नही पाइआ लागि रहे सरनाई ॥ १ ॥ लेहु आरती हो पुरख निरंजन सतिगुर पूजहु भाई ॥ ठाढा ब्रहमा निगम बीचारै अलखु न लखिआ जाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ ततु तेलु नामु कीआ बाती दीपकु देह उज्यारा ॥ जोति लाइ जगदीस जगाइआ बूझै बूझनहारा ॥ २ ॥ पंचे सबद अनाहद बाजे संगे सारिंगपानी ॥ कबीर दास तेरी आरती कीनी निरंकार निरबानी ॥ ३ ॥ ५ ॥

हे जगत के मालिक ! हे देवाधिदेव ! हे आदिपुरुष ! शून्यावस्था में लीन होना ही तुम्हारी (प्रातः दोपहर, सायंकालीन) वंदना है। सिद्धों ने समाधि लगाकर तुम्हारा रहस्य नहीं पाया और वे तेरी शरण में लीन रहे हैं॥ १॥ हे भाई ! मायातीत ईश्वर की आरती करो, उस सतगुरु का पूजन करो। ब्रह्मा ने वेदों का चिंतन किया परन्तु अदृष्ट परमेश्वर के रहस्य को नहीं जान पाया॥ १॥ रहाउ॥ जब ज्ञान का तेल डालकर प्रभु के नाम की बाती का दीया प्रज्वलित किया जाता है तो देह में उजाला होता है। इससे ईश्वर नाम की ज्योति जगमगाती है, जिसे कोई समझदार ही समझता है॥ २॥ प्रभु के साक्षात्कार से पाँचों शब्द एवं अनाहत ध्वनि गूंज उठी है। दास कबीर का कथन है कि हे निराकार ! यह तेरी आरती है॥ ३॥ ५॥

प्रभाती बाणी भगत नामदेव जी की ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

मन की बिरथा मनु ही जानै कै बूझल आगै कहीऐ ॥ अंतरजामी रामु रवांई मै डरु कैसे चहीऐ ॥ १ ॥ बेधीअले गोपाल गोसाई ॥ मेरा प्रभु रविआ सरबे ठाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मानै हाटु मानै पाटु मानै है पासारी ॥ मानै बासै नाना भेदी भरमतु है संसारी ॥ २ ॥ गुर कै सबदि एहु मनु राता दुबिधा सहजि समाणी ॥ सभो हुकमु हुकमु है आपे निरभउ समतु बीचारी ॥ ३ ॥ जो जन जानि भजहि पुरखोतमु ता ची अबिगतु बाणी ॥ नामा कहै जगजीवनु पाइआ हिरदै अलख बिडाणी ॥ ४ ॥ १ ॥

मन की व्यथा मन ही जानता है या उसे समझने वाले (परमेश्वर) के आगे बताया जा सकता है। मैं अन्तर्यामी परमात्मा की भक्ति में लीन हूँ, फिर मुझे कैसे डर हो सकता है॥१॥ ईश्वर ने मुझे बिंध लिया है, मेरा प्रभु तो हर जगह पर विद्यमान है॥१॥ रहाउ॥ यह मन ही दुकान एवं नगर है और मन का ही प्रसार है। मन अनेक रंगों में रहता है और मन ही संसार में भ्रमता है॥२॥ यह मन जब गुरु के उपदेश में लीन हो जाता है तो स्वाभाविक ही दुविधा दूर हो जाती है। सब ओर परमात्मा का हुक्म व्याप्त है, वह निर्भय परमेश्वर को एक रूप ही मानता है॥३॥ जो व्यक्ति पुरुषोत्तम परमेश्वर का भजन करते हैं, उनकी वाणी अटल है। नामदेव जी कहते हैं कि उन्होंने अपने ह्रदय में संसार के जीवन, रहस्यमय परमात्मा को पा लिया है॥४॥१॥

प्रभाती ॥ आदि जुगादि जुगादि जुगो जुगु ता का अंतु न जानिआ ॥ सरब निरंतरि रामु रहिआ रवि ऐसा रूपु बखानिआ ॥ १ ॥ गोबिदु गाजै सबदु बाजै ॥ आनद रूपी मेरो रामईआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥ बावन बीखू बानै बीखे बासु ते सुख लागिला ॥ सरबे आदि परमलादि कासट चंदनु भैइला ॥ २ ॥ तुम्ह चे पारसु हम चे लोहा संगे कंचनु भैइला ॥ तू दइआलु रतनु लालु नामा साचि समाइला ॥ ३ ॥ २ ॥

स ष्टि रचना से पूर्व, अनादि काल से, (सतयुग, त्रैता, द्वापर, कलियुग) युग-युग ईश्वर ही मौजूद है, उसका रहस्य (ज्ञानी, ध्यानी, महात्मा, देवता, त्रिदेव इत्यादि) कोई नहीं पा सका। उसका यही रूप बताया गया है कि सब में निरन्तर रूप से केवल परमेश्वर ही विद्यमान है॥१॥ शब्द की ध्वनि से वह प्रगट हो रहा है, मेरा प्रभु आनंदस्वरूप है॥१॥ रहाउ॥ ज्यों चन्दन का व क्ष जंगल में होता है और सबको उसकी खुशबू का सुख प्राप्त होता है। इसी तरह ईश्वर सब जीवों का आदि है, सर्वगुण रूपी महक का मूल है, जिससे जीव रूपी लकड़ियाँ चन्दन बन जाती हैं॥२॥ हे परमेश्वर! तुम पारस हो और मैं लोहा हूँ लेकिन तेरी संगत में कंचन बन गया हूँ। तू दया का सागर है, अमूल्य रत्न है, नामदेव सदैव सत्यस्वरूप की आराधना में लीन रहता है॥३॥२॥

प्रभाती ॥ अकुल पुरख इकु चलितु उपाइआ ॥ घटि घटि अंतरि ब्रहमु लुकाइआ ॥ १ ॥ जीअ की जोति न जानै कोई ॥ तै मै कीआ सु मालूमु होई ॥ १ ॥ रहाउ ॥ जिउ प्रगासिआ माटी कुंभेउ ॥ आप ही करता बीठुलु देउ ॥ २ ॥ जीअ का बंधनु करमु बिआपै ॥ जो किछु कीआ सु आपै आपै ॥ ३ ॥ प्रणवति नामदेउ इहु जीउ चितवै सु लहै ॥ अमरु होइ सद आकुल रहै ॥ ४ ॥ ३ ॥

कुलातीत परम शक्ति परमेश्वर ने एक कौतुक रचा और प्रत्येक शरीर में वह ब्रह्म प्रच्छन्न रूप में व्याप्त हो गया॥ १॥ जीवों में व्याप्त उस परम-ज्योति को कोई नहीं जानता, परन्तु अच्छा-बुरा हम जो करते हैं, उसे मालूम हो जाता है॥ १॥ रहाउ॥ ज्यों मिट्टी से घड़ा तैयार होता है, वैसे ही परमात्मा सबको बनाने वाला है॥ २॥ जीवों के कर्म ही उनके बन्धन बन जाते हैं, (जीव लाचार है, उसके वश में कुछ नहीं) वस्तुतः शुभाशुभ सब करने-करवाने वाला परमात्मा आप ही है॥ ३॥ नामदेव प्रार्थना करते हैं कि यह जीव जैसी कामना करता है, वैसा ही फल प्राप्त करता है। यदि ईश्वर की भक्ति में लीन रहे तो जन्म-मरण से मुक्त हो जाता है॥ ४॥ ३॥

प्रभाती भगत बेणी जी की　　　　१ओं सतिगुर प्रसादि ॥

तनि चंदनु मसतकि पाती ॥ रिद अंतरि कर तल काती ॥ ठग दिसटि बगा लिव लागा ॥ देखि बैसनो प्रान मुख भागा ॥ १ ॥ कलि भगवत बंद चिरांमं ॥ क्रूर दिसटि रता निसि बादं ॥ १ ॥ रहाउ ॥ नितप्रति इसनानु सरीरं ॥ दुइ धोती करम मुखि खीरं ॥ रिदै छुरी संधिआनी ॥ पर दरबु हिरन की बानी ॥ २ ॥ सिल पूजसि चक्र गणेसं ॥ निसि जागसि भगति प्रवेसं ॥ पग नाचसि चितु अकरमं ॥ ए लंपट नाच अधरमं ॥ ३ ॥ म्रिग आसणु तुलसी माला ॥ कर ऊजल तिलकु कपाला ॥ रिदै कूड़ु कंठि रुद्राखं ॥ रे लंपट क्रिसनु अभाखं ॥ ४ ॥ जिनि आतम ततु न चीन्हिआ ॥ सभ फोकट धरम अबीनिआ ॥ कहु बेणी गुरमुखि धिआवै ॥ बिनु सतिगुर बाट न पावै ॥ ५ ॥ १ ॥

तन पर चंदन लगा लिया और माथे पर तुलसी पत्र लगा लिए। परन्तु हृदय में ऐसा लग रहा है कि हाथ में छुरी पकड़ी हुई है। दृष्टि धोखा देने की है और बगुले की तरह समाधि लगाई हुई है। देखने में ऐसा वैष्णव यूं लगता है, जैसे मुँह से प्राण ही छूट गए हैं॥ १॥ यह भक्त लम्बे समय तक वन्दना करता रहता है, लेकिन इसकी नजर बुरी है और रोज़ झगड़ों में लिप्त रहता है॥ १॥ रहाउ॥ वह प्रतिदिन शरीर को स्नान करवाता है, दो धोतियाँ धारण करता है और दूध पीता है। उसके हृदय में छुरी है और पराया धन छीनने की पुरानी आदत है॥ २॥ वह मूर्ति-पूजा करता, गणेश के चिन्ह लगाता है। रात को जागकर भक्ति करता है, पैरों से झूमता है, परन्तु इसका मन बुरे कर्मों में लीन रहता है। अरे लालची! ऐसे अधर्म करता है॥ ३॥ मृगशाला पर आसन लगा लिया, तुलसी-माला ले ली, उज्ज्वल हाथों से तिलक लगा लिया। हृदय में झूठ भरा हुआ है, गले में रुद्राक्ष पहन रखा है। अरे लंपट! कृष्ण-कृष्ण जपने का झूठा ढोंग कर रहे हो॥ ४॥ जिसने आत्म-तत्व को नहीं पहचाना, उसके सभी कर्म-धर्म बेकार हैं। बेणी जी कहते हैं कि जो गुरुमुख बनकर भगवान का ध्यान करता है, वही (सत्य को) प्राप्त करता है, अन्यथा गुरु के बिना किसी को सन्मार्ग प्राप्त नहीं होता॥ ५॥ १॥

१ओं सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

वह अनंतशक्ति परमपिता केवल एक है, उसका नाम सत्य है, वही सृष्टि की रचना करने वाला है, सर्वशक्तिमान है। वह भय से रहित है, उसका किसी से वैर नहीं वस्तुतः सब जीवों पर उसकी समान दृष्टि है। वह (भूत, वर्तमान, भविष्य से रहित) कालातीत, अनंत है। वह जन्म-मरण के चक्र से मुक्त है, वह स्वतः प्रकाशमान हुआ, गुरु-कृपा से प्राप्त होता है।

रागु जैजावंती महला ९ ॥

रामु सिमरि रामु सिमरि इहै तेरै काजि है ॥ माइआ को संगु तिआगु प्रभ जू की सरनि लागु ॥ जगत सुख मानु मिथिआ झूठो सभ साजु है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सुपने जिउ धनु पछानु काहे परि करत मानु ॥ बारू की भीति जैसे बसुधा को राजु है ॥ १ ॥ नानकु जनु कहतु बात बिनसि जैहै तेरो गातु ॥ छिनु छिनु करि गइओ कालु तैसे जातु आजु है ॥ २ ॥ १ ॥

हे मनुष्य ! परमात्मा का भजन कर, राम का भजन-संकीर्तन कर ले, यही तुम्हारा उपयुक्त कार्य है। माया का साथ छोड़कर प्रभु की शरण में आ जाओ। जगत के सुख एवं मान-सम्मान मिथ्या हैं और सब चीजें झूठी हैं॥१॥ रहाउ॥ इस तथ्य को पहचान ले कि यह धन-दौलत सब सपने की तरह है, फिर किस चीज़ का अभिमान कर रहे हो। संसार का राज तो रेत की दीवार की तरह नाशवान् है॥१॥ गुरु नानक यही बात कहते हैं कि तेरा शरीर खत्म हो जाना है। ज्यों पल-पल समय गुजर गया है, वैसे ही वर्तमान भी गुजर रहा है (राम भजन कर ले)॥२॥१॥

जैजावंती महला ९ ॥ रामु भजु रामु भजु जनमु सिरातु है ॥ कहउ कहा बार बार समझत नह किउ गवार ॥ बिनसत नह लगै बार ओरे सम गातु है ॥ १ ॥ रहाउ ॥ सगल भरम डारि देहि गोबिंद को नामु लेहि ॥ अंति बार संगि तेरै इहै एकु जातु है ॥ १ ॥ बिखिआ बिखु जिउ बिसारि प्रभ कौ जसु हीए धारि ॥ नानक जन कहि पुकारि अउसरु बिहातु है ॥ २ ॥ २ ॥

भगवान का भजन कर ले, (मैं पुनः आग्रह करता हूँ) हरि-भजन कर ले, क्योंकि तेरा जीवन गुजरता जा रहा है। मैं बार-बार यही कह रहा हूँ, अरे मूर्ख ! तू क्यों नहीं समझ रहा। इस शरीर को नष्ट होते देरी नहीं लगती, ओले की तरह यह शीघ्र ही पिघल जाता है॥१॥ रहाउ॥ सब

वहमों को छोड़कर भगवान का नाम जप ले, क्योंकि अन्तिम समय यही तेरे साथ जाता है॥ १॥ विषय-विकारों को भुलाकर प्रभु का यश मन में बसा ले। नानक पुकार-पुकार कर कह रहे हैं कि यह सुनहरी जीवन-अवसर बीतता जा रहा है॥ २॥ २॥

जैजावंती महला ६ ॥ रे मन कउन गति होइ है तेरी ॥ इह जग महि राम नामु सो तउ नही सुनिओ कानि ॥ बिखिअन सिउ अति लुभानि मति नाहिन फेरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥ मानस को जनमु लीनु सिमरनु नह निमख कीनु ॥ दारा सुख भइओ दीनु पगहु परी बेरी ॥ १ ॥ नानक जन कहि पुकारि सुपनै जिउ जग पसारु ॥ सिमरत नह किउ मुरारि माइआ जा की चेरी ॥ २ ॥ ३ ॥

(बुढ़ापा आने पर मौत निकट आ रही है) हे मन! तेरा क्या हाल हो गया है। (किस तरह मुक्ति होगी) इस जगत् में राम का नाम-संकीर्तन तो तूने सुना नहीं और न ही ध्यान दिया। उम्र भर विषय-विकारों में आसक्त रहे और इनकी ओर से अपनी बुद्धि को बिल्कुल नहीं हटाया॥ १॥ रहाउ॥ मनुष्य का जन्म मिला था, परन्तु एक पल भी भगवान का स्मरण नहीं किया। अपने पुत्र एवं पत्नी के सुखों की खातिर गुलाम बन गए और पैरों में जंजीर पड़ गई॥ १॥ नानक पुकार कर कहते हैं कि जगत का प्रसार सपने की तरह है, उस ईश्वर का सिमरन क्यों नहीं किया, जिसकी माया भी दासी है॥ २॥ ३॥

जैजावंती महला ६ ॥ बीत जैहै बीत जैहै जनमु अकाजु रे ॥ निसि दिनु सुनि कै पुरान समझत नह रे अजान ॥ कालु तउ पहूचिओ आनि कहा जैहै भाजि रे ॥ १ ॥ रहाउ ॥ असथिरु जो मानिओ देह सो तउ तेरउ होइ है खेह ॥ किउ न हरि को नामु लेहि मूरख निलाज रे ॥ १ ॥ राम भगति हीए आनि छाडि दे तै मन को मानु ॥ नानक जन इह बखानि जग महि बिराजु रे ॥ २ ॥ ४ ॥

हे प्राणी! यह जिन्दगी व्यर्थ ही गुजर रही है। हे नासमझ! दिन-रात पुराणों की कथा सुनकर भी समझ नहीं रहे। मृत्यु तो तेरे सामने आ गई है, फिर भला इससे बचकर किधर भागोगे॥ १॥ रहाउ॥ जिस शरीर को तूने स्थिर मान लिया है, उसने तो मिट्टी हो जाना है। हे बेशर्म मूर्ख! परमात्मा का नाम क्यों नहीं जप रहे॥ १॥ तू राम की भक्ति को अपने हृदय में बसा ले और मन का अभिमान छोड़ दे। नानक यही बात कहते हैं कि भक्ति करके संसार में भला जीवन गुजारो॥ २॥ ४॥

१ओं सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

ईश्वर केवल एक है, उसका नाम सत्य है। वही संसार को बनाने वाला है, वह सर्वशक्तिमान है। वह भय से रहित है, वह वैर भावना से परे है। वह कालातीत ब्रह्म मूर्ति चिरजीवी है, वह जन्म-मरण के चक्र से मुक्त है, वह स्वतः प्रगट हुआ है, गुरु की कृपा से प्राप्त होता है।

सलोक सहसक्रिती महला १ ॥

पढ़ि पुस्तक संधिआ बादं ॥ सिल पूजसि बगुल समाधं ॥ मुखि झूठु बिभूखन सारं ॥ त्रैपाल तिहाल बिचारं ॥ गलि माला तिलक लिलाटं ॥ दुइ धोती बसत्र कपाटं ॥ जो जानसि ब्रहमं करमं ॥ सभ फोकट निसचै करमं ॥ कहु नानक निसचौ ध्यिावै ॥ बिनु सतिगुर बाट न पावै ॥ १ ॥

पण्डित लोग धर्म ग्रंथों का पाठ-पठन करते हैं, संध्या की वन्दना-आरती करते हैं। पत्थर की मूर्ति को भगवान मानकर पूजा-अर्चना करते हैं और बगुलों की तरह समाधि लगाते हैं। वे मुँह से झूठ बोलकर लोहे को भी स्वर्ण का आभूषण बताते हैं। वे प्रतिदिन तीनों समय गायत्री मंत्र का जाप करते हैं। वे गले में माला एवं माथे पर तिलक लगाते हैं। वे दुहरी धोती एवं वस्त्र धारण करते हैं। लेकिन जो व्यक्ति परमात्मा की भक्ति को ही उत्तम कर्म मानते हैं, निश्चय ही जान लो उनके लिए अन्य सब कर्म व्यर्थ हैं। गुरु नानक का फुरमान है कि उचित तो यही है कि निश्चय रखकर ईश्वर का ध्यान किया जाए, लेकिन सच्चे गुरु के बिना यह रास्ता प्राप्त नहीं होता॥१॥

निहफलं तस्य जनमस्य जावद ब्रहम न बिंदते ॥ सागरं संसारस्य गुर परसादी तरहि के ॥ करण कारण समरथु है कहु नानक बीचारि ॥ कारणु करते वसि है जिनि कल रखी धारि ॥ २ ॥

जब तक मनुष्य परब्रह्म को नहीं मानता, उसकी उपासना नहीं करता, उसका जन्म निष्फल है। इस संसार-सागर से कोई गुरु की कृपा से ही पार होता है। नानक का यही विचार है कि वह सर्व करने-करवाने में पूर्ण समर्थ है। पूरा संसार उस बनाने वाले के वश में है, जो सर्व-शक्तियों में परिपूर्ण है॥२॥

जोग सबदं गिआन सबदं बेद सबदं त ब्राहमणह ॥ ख्यत्री सबदं सूर सबदं सूद्र सबदं परा क्रितह ॥ सरब सबदं त एक सबदं जे को जानसि भेउ ॥ नानक ता को दासु है सोई निरंजन देउ ॥ ३ ॥

योगियों का धर्म ज्ञान प्राप्त करना है, ब्राह्मणों का धर्म वेदों का अध्ययन करना (माना गया) है। क्षत्रियों का धर्म शूरवीरता का कार्य करना है और शूद्रों का धर्म लोगों की सेवा बन गया है। परन्तु सर्वश्रेष्ठ धर्म यह है कि केवल ईश्वर की भक्ति की जाए। जो मनुष्य इस भेद को जानता है, गुरु नानक फुरमाते हैं कि हमें उसकी दासता कबूल है और वस्तुतः वही परमात्मा का रूप है॥३॥

एक क्रिस्नं त सरब देवा देव देवा त आतमह ॥ आतमं स्री बास्वदेवस्य जे कोई जानसि भेव ॥ नानक ता को दासु है सोई निरंजन देव ॥ ४ ॥

सृष्टि का जन्मदाता, पोषक, संहारक एक परमेश्वर ही सब देवताओं का देवता और देवताओं की आत्मा है। यदि कोई इस रहस्य को जानता है। गुरु नानक फुरमाते हैं कि हम तो उसके दास (बनने को तैयार) हैं, वही ईश्वर का रूप होता है॥४॥

सलोक सहसक्रिती महला ५

१ओं सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

वह अद्वैत परमेश्वर केवल (ओंकार स्वरूप) एक ही है, उसका नाम सत्य है। वह सृष्टि का रचनहार है, सर्वशक्तिमान है। वह भय से रहित है, वह निर्वैर है। वह भूत, भविष्य, वर्तमान से परे, कालातीत ब्रह्म मूर्ति अटल है। वह जन्म-मरण के चक्र से मुक्त है। वह स्वतः प्रकाशमान हुआ है, गुरु की कृपा से प्राप्त होता है।

कतंच माता कतंच पिता कतंच बनिता बिनोद सुतह ॥ कतंच भ्रात मीत हित बंधव कतंच मोह कुटंब्यते ॥ कतंच चपल मोहनी रूपं पेखंते तिआगं करोति ॥ रहंत संग भगवान सिमरण नानक लबध्यं अचुत तनह ॥ १ ॥

माता-पिता कौन किसका है, पुत्र एवं पत्नी से मोह-प्रेम कहाँ साथ देते हैं? भाई, मित्र, शुभचिन्तक, रिश्तेदार एवं परिवार का मोह कहाँ साथ निभाता है। चंचल माया मोहित करती रहती है, यह भी देखते-देखते साथ छोड़ जाती है। गुरु नानक का फुरमान है कि भगवान का सिमरन ही साथ रहता है, जो महात्मा एवं भक्तजनों से ही प्राप्त होता है॥१॥

ध्रिगंत मात पिता सनेहं ध्रिग सनेहं भ्रात बांधवह ॥ ध्रिग स्नेहं बनिता बिलास सुतह ॥ ध्रिग स्नेहं ग्रिहारथ कह ॥ साधसंग स्नेह सत्यिं सुखयं बसंति नानकह ॥ २ ॥

माता-पिता के साथ झूठा प्रेम धिक्कार योग्य है, भाइयों एवं रिश्तेदारों का प्रेम भी धिक्कार योग्य है। पत्नी से प्रेम एवं पुत्र के साथ खुशी भी धिक्कार योग्य है। गृहस्थी के साथ स्नेह धिक्कार है। नानक स्पष्ट करते हैं कि साधु पुरुषों के साथ सच्चा स्नेह बनाने से जीवन सुखी रहता है॥२॥

मिथ्यंत देहं खीणंत बलनं ॥ बरधंति जरूआ हित्यंत माइआ ॥ अत्यंत आसा आथित्य भवनं ॥ गनंत स्वासा भैयान धरमं ॥ पतंति मोह कूप दुरलभ्य देहं तत आस्रयं नानक ॥ गोबिंद गोबिंद गोबिंद गोपाल क्रिपा ॥ ३ ॥

यह शरीर नाश होने वाला है, जिसका बल धीरे-धीरे खत्म हो जाता है। ज्यों-ज्यों उम्र बढ़ती है, माया से उतना ही मोह बढ़ता है। संसार में मनुष्य मेहमान की तरह है, लेकिन इसकी आशाओं में हरदम वृद्धि होती रहती है। भयानक यमराज जिन्दगी की साँसें गिनता रहता है, यह दुर्लभ शरीर मोह के कूप में गिरा रहता है, गुरु नानक फुरमाते हैं– वहाँ भी ईश्वर का ही आसरा है। हे प्रभु! हे जन्मदाता ! हे पालनहार! हम पर अपनी कृपा बनाए रखो॥३॥

काच कोटं रचंति तोयं लेपनं रकत चरमणह ॥ नवंत दुआरं भीत रहितं बाइ रूपं असथंभनह ॥ गोबिंद नामं नह सिमरंति अगिआनी जानंति असथिरं ॥ दुरलभ देह उधरंत साध सरण नानक ॥ हरि हरि हरि हरि हरि हरे जपंति ॥ ४ ॥

यह शरीर रूपी कच्चा किला जल रूपी वीर्य का बना हुआ है, जिस पर रक्त एवं चमड़ी का लेपन किया गया है। आँखें, मुँह, कान इत्यादि इसके नौ द्वार हैं, जिनको कोई दीवार नहीं और प्राण-वायु का स्तंभ है। अज्ञानी लोग भगवान का स्मरण नहीं करते और शरीर को स्थाई मानते हैं। गुरु नानक फुरमाते हैं कि दुर्लभ शरीर का तभी उद्धार होता है, जब वे साधुओं की शरण में परमेश्वर का नाम जपते हैं॥ ४॥

सुभंत तुयं अचुत गुणग्यं पूरनं बहुलो क्रिपाला ॥ गंभीरं ऊचै सरबगि अपारा ॥ भ्रितिआ प्रिअं बिस्राम चरणं ॥ अनाथ नाथे नानक सरणं ॥ ५ ॥

हे परमेश्वर ! तू पूरे विश्व में शोभायमान है, अटल है, गुणों का सागर है, सर्वव्यापक एवं कृपा का घर है। तू गहन-गंभीर, सबसे बड़ा, सर्वज्ञ एवं अपरंपार है। तू ही अपने भक्तों का प्यारा है, वे तेरे चरणों में ही सुख पाते हैं। नानक विनती करते हैं कि हे अनाथों के नाथ ! हम भी तेरी शरण में आए हैं॥ ५॥

म्रिगी पेखंत बधिक प्रहारेण लख्य आवधह ॥ अहो जस्य रखेण गोपालह नानक रोम न छेद्यते ॥ ६ ॥

एक मृगिनी को देखकर शिकारी अपने शस्त्र से प्रहार करता है। हे नानक ! जिसकी रक्षा ईश्वर करता है, उसका बाल भी बाँका नहीं हो पाता॥ ६॥

बहु जतन करता बलवंत कारी सेवंत सूरा चतुर दिसह ॥ बिखम थान बसंत ऊचह नह सिमरंत मरणं कदांचह ॥ होवंति आगिआ भगवान पुरखह नानक कीटी सास अकरखते ॥ ७ ॥

यदि कोई व्यक्ति बहुत साहसी एवं बलवान हो, चारों दिशाओं से शूरवीर भी उसकी रक्षा कर रहे हों। चाहे वह बहुत ऊँचे स्थान पर रहता हो, जिसे मृत्यु का कोई खौफ न हो। गुरु नानक फुरमान करते हैं— जब भगवान की आज्ञा होती है तो एक छोटी-सी चींटी भी उसकी जान निकाल लेती है॥ ७॥

सबदं रतं हितं मइआ कीरतं कली करम क्रितुआ ॥ मिटंति तत्रागत भरम मोहं ॥ भगवान रमणं सरबत्र थान्यिं ॥ द्रिसट तुयं अमोघ दरसनं बसंत साध रसना ॥ हरि हरि हरि हरे नानक प्रिअं जापु जपना ॥ ८ ॥

कलियुग में यही उत्तम कर्म हैं कि प्रभु-शब्द में लीन रहना चाहिए, लोगों से प्रेम तथा दया करो और नित्य परमात्मा का कीर्तिगान करो। इससे भ्रम-मोह सब मिट जाते हैं और सर्वत्र भगवान ही दिखाई देता है। हे परमेश्वर ! तू सब पर कृपा-दृष्टि करने वाला है, तेरे दर्शन कल्याणकारी हैं और तू साधुओं की जिह्वा पर बसता है, गुरु नानक का कथन है कि वे तो प्रिय हरिनाम ही जपते रहते हैं॥ ८॥

घटंत रूपं घटंत दीपं घटंत रवि ससीअर नख्यत्र गगनं ॥ घटंत बसुधा गिरि तर सिखंडं ॥ घटंत ललना सुत भ्रात हीतं ॥ घटंत कनिक मानिक माइआ स्वरूपं ॥ नह घटंत केवल गोपाल अचुत ॥ असथिरं नानक साध जन ॥ ६ ॥

सुन्दर रूप ध्वंस हो जाता है। द्वीप, सूर्य, चन्द्रमा, नक्षत्र, गगन का भी अंत हो जाता है। धरती, पहाड़, वृक्ष, शिखर का भी विध्वंस हो जाता है। प्रिय पुत्र, पत्नी, भाई, शुभचिंतक सब नष्ट हो जाते हैं। सोना, चांदी, धन-दौलत, सुंदर रूप भी क्षीण होता है। केवल ईश्वर ही अटल है, जिसका कभी अन्त नहीं होता। हे नानक! साधुजन भी स्थाई हैं॥ ६॥

नह बिलंब धरमं बिलंब पापं ॥ द्रिड़ंत नामं तजंत लोभं ॥ सरणि संतं किलबिख नासं प्रापतं धरम लख्यिण ॥ नानक जिह सुप्रसंन माधवह ॥ १० ॥

हे मनुष्य! धर्म करने में देरी मत करो, केवल पाप में देरी कर दो। लोभ छोड़कर हरिनाम में लीन रहो। संत-महात्मा जनों की शरण में सब पाप नाश हो जाते हैं, गुरु नानक फुरमान करते हैं— धर्म के गुण उसे ही प्राप्त होते हैं, जिस पर ईश्वर सुप्रसन्न होता है॥ १०॥

मिरत मोहं अलप बुध्यं रचंति बनिता बिनोद साहं ॥ जौबन बहिक्रम कनिक कुंडलह ॥ बचित्र मंदिर सोभंति बसत्रा इत्यंत माइआ ब्यापितं ॥ हे अचुत सरणि संत नानक भो भगवानए नमह ॥ ११ ॥

मंदबुद्धि जीव मोह-माया में ही लीन है और पत्नी के प्रेम व भोग-विलासों में रत रहता है। वह यौवन, सोने के आभूषणों की लालसा में रहता है। माया उसे इतना प्रभावित करती है कि वह सुन्दर घरों एवं शोभवान वस्त्रों में ही तल्लीन रहता है। नानक का कथन है कि हे अच्युत! तू ही भक्तों को शरण देने वाला है। हे भगवान! तुम्हारा हमें कोटि-कोटि प्रणाम है॥ ११॥

जनमं त मरणं हरखं त सोगं भोगं त रोगं ॥ ऊचं त नीचं नान्हा सु मूचं ॥ राजं त मानं अभिमानं त हीनं ॥ प्रविरति मारगं वरतंति बिनासनं ॥ गोबिंद भजन साध संगेण असथिरं नानक भगवंत भजनासनं ॥ १२ ॥

जहाँ जन्म हुआ है तो मृत्यु भी निश्चित है। खुशियाँ मिल रही हैं तो गम भी मिलने हैं। अनेक पदार्थ भोग रहे हो तो रोग भी उत्पन्न होने हैं। कोई ऊँचा है तो नीचा भी हो जाता है, अगर थोड़ा है तो बहुत ज्यादा भी है। राज्य प्राप्त होता है तो मान भी घर कर लेता है। अभिमान के कारण अनादर भी प्राप्त होता है। दरअसल दुनियादारी में सब नाशवान है। साधु पुरुषों के साथ परमात्मा का भजन ही स्थाई है, अतः नानक का फुरमान है कि भगवान के भजन में लीन रहो॥ १२॥

किरपंत हरीअं मति ततु गिआनं ॥ बिगसीध्यि बुधा कुसल थानं ॥ बस्यिंत रिखिअं तिआगि मानं ॥ सीतलंत रिदयं द्रिड़ु संत गिआनं ॥ रहंत जनमं हरि दरस लीणा ॥ बाजंत नानक सबद बीणां ॥ १३ ॥

जब भगवान अपनी कृपा कर देता है तो तत्व ज्ञान प्राप्त हो जाता है, बुद्धि का विकास होता है और सुख-शान्ति का स्थान प्राप्त होता है। इन्द्रियाँ वश में आ जाती हैं और अभिमान का त्याग होता है। संत-महात्मा पुरुषों से ज्ञान पा कर हृदय शीतल हो जाता है और हरि-दर्शन में लीन रहकर जन्म-मरण से मुक्ति हो जाती है। गुरु नानक फुरमाते हैं— फिर अन्तर्मन में शब्द की वीणा ही बजती रहती है॥ १३॥

कहंत बेदा गुणंत गुनीआ सुणंत बाला बहु बिधि प्रकारा ॥ द्रिड़ंत सुबिदिआ हरि हरि क्रिपाला ॥ नाम दानु जाचंत नानक दैनहार गुर गोपाला ॥ १४ ॥

गुणवान् पुरुष वेदों की व्याख्या करते हैं, जिनको जिज्ञासु अनेक प्रकार से श्रवण करते हैं। लेकिन जिस पर परमात्मा की कृपा होती है, वही उत्तम विद्या पाते हैं। हे नानक! वे नाम दान की कामना करते हैं, जिसे गुरु-परमेश्वर ही देने वाला है॥ १४॥

नह चिंता मात पित भ्रातह नह चिंता कछु लोक कह ॥ नह चिंता बनिता सुत मीतह प्रविरति माइआ सनबंधनह ॥ दइआल एक भगवान पुरखह नानक सरब जीअ प्रतिपालकह ॥ १५ ॥

माता-पिता, भाई की चिंता मत करो, न ही अन्य रिश्तेदारों की चिन्ता करो। पत्नी, पुत्र एवं दोस्तों की भी चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं, दरअसल ये दुनियादारी के संबंध मात्र माया के कारण हैं। नानक का फुरमान है कि भगवान इतना दयालु है कि वह सब जीवों को रोज़ी-रोटी देकर पोषण कर रहा है॥ १५॥

अनित्य वितं अनित्य चितं अनित्य आसा बहु बिधि प्रकारं ॥ अनित्य हेतं अहं बंधं भरम माइआ मलनं बिकारं ॥ फिरंत जोनि अनेक जठरागनि नह सिमरंत मलीण बुध्यं ॥ हे गोबिंद करत मइआ नानक पतित उधारण साध संगमह ॥ १६ ॥

धन-दौलत सदा नहीं रहती, मन की ख्वाहिशें अस्थाई हैं और अनेक प्रकार की कामनाएँ भी अल्पकालिक हैं। अहंकार के बन्धन में किया गया प्रेम, माया का भ्रम एवं मलिन विकार नाशवान हैं। खोटी बुद्धि वाला मनुष्य जठराग्नि में पड़कर अनेक योनियों में घूमता है, लेकिन ईश्वर का सुमिरन नहीं करता। नानक विनती करते हैं कि हे गोविन्द! कृपा करो, साधु पुरुषों की संगत में पतित-पापी जीवों का उद्धार कर दो॥ १६॥

गिरंत गिरि पतित पातालं जलंत देदीप्य बैस्वांतरह ॥ बहंति अगाह तोयं तरंगं दुखंत ग्रह चिंता जनमं त मरणह ॥ अनिक साधनं न सिध्यते नानक असथंभं असथंभं असथंभं सबद साध स्वजनह ॥ १७ ॥

मनुष्य बेशक पहाड़ से गिर जाए, पाताल में चला जाए, भड़कती हुई आग में जलता रहे। चाहे वह पानी की तरंगों में बहता हुआ कितना ही दुखी क्यों न हो परन्तु घर की चिन्ता इन सबसे दुखदायक है, यही जन्म-मरण का कारण है। अनेक साधनों का उपयोग करने पर भी घर की परेशानियां दूर नहीं होतीं। अतः नानक का जनमानस को फुरमान है कि साधु-महापुरुषों का वचन (हरिनाम) ही आसरा देने वाला है॥ १७॥

घोर दुख्यं अनिक हत्यं जनम दारिद्रं महा बिख्यादं ॥ मिटंत सगल सिमरंत हरि नाम नानक जैसे पावक कासट भसमं करोति ॥ १८ ॥

चाहे घोर दुख-मुसीबतें बनी हों, अनेक जुर्म किए हों, जन्म-जन्मांतर की गरीबी अथवा पाप-संकट से घिरे हुए हों। गुरु नानक फुरमान करते हैं– ईश्वर के भजन-सिमरन से ये सब यूं मिट जाते हैं, जैसे अग्नि लकड़ियों को जलाकर राख कर देती हैं॥ १८॥

अंधकार सिमरत प्रकासं गुण रमंत अघ खंडनह ॥ रिद बसंति भै भीत दूतह करम करत महा निरमलह ॥ जनम मरण रहंत स्रोता सुख समूह अमोघ दरसनह ॥ सरणि जोगं संत प्रिअ नानक सो भगवान खेमं करोति ॥ १६ ॥

परमात्मा का स्मरण करने से अंधेरे में भी उजाला हो जाता है, पापों का अन्त होता है, जीव गुणवान बन जाता है। जब भगवान ह्रदय में बस जाता है तो यमदूत भी डरने लगते हैं, शुभ कर्मों से मन पवित्र हो जाता है। हरि-कीर्तन सुनने से जीव जन्म-मरण के बन्धनों से मुक्त हो जाता है। ईश्वर के अमोघ दर्शनों से सर्व सुख प्राप्त होते हैं। भक्तों का प्यारा प्रभु शरण देने मे समर्थ है, गुरु नानक फुरमान करते हैं— भगवान हर सुख-कल्याण प्रदान करने वाला है॥ १६॥

पाछं करोति अग्रणीवह निरासं आस पूरनह ॥ निरधन भयं धनवंतह रोगीअं रोग खंडनह ॥ भगत्यं भगति दानं राम नाम गुण कीरतनह ॥ पारब्रहम पुरख दातारह नानक गुर सेवा किं न लभ्यते ॥ २० ॥

वह स्रष्टा पीछे रहने वाले (नाकामयाब) लोगों को सफलता की बुलंदी पर पहुँचा देता है और निराश व्यक्तियों की हर आशा पूरी कर देता है। उसकी रज़ा हो तो वह निर्धनों को धनवान् बना देता है और रोगियों के असाध्य रोग भी नष्ट कर देता है। वह भक्तों को भक्ति प्रदान करता है इस तरह भक्तजन राम नाम के गुणगान एवं कीर्तन में ही लीन रहते हैं। गुरु नानक फुरमाते हैं— परब्रह्म परमेश्वर इतना बड़ा दाता है, तो फिर उस गुरु की सेवा से क्या नहीं प्राप्त हो सकता॥२०॥

अधरं धरं धारणह निरधनं धन नाम नरहरह ॥ अनाथ नाथ गोबिंदह बलहीण बल केसवह ॥ सरब भूत दयाल अचुत दीन बांधव दामोदरह ॥ सरबग्य पूरन पुरख भगवानह भगति वछल करुणामयह ॥ घटि घटि बसंत बासुदेवह पारब्रहम परमेसुरह ॥ जाचंति नानक क्रिपाल प्रसादं नह बिसरंति नह बिसरंति नाराइणह ॥ २१ ॥

नारायण का नाम बेसहारा लोगों को सहारा देने वाला है, हरिनाम निर्धनों के लिए धन है। गोविन्द अनाथों का नाथ है, वह केशव बलहीन लोगों का बल है। वह पूरी दुनिया पर दया करने वाला है, अटल है, वही गरीबों का मसीहा है। वह परमपुरुष सर्वज्ञ है, भगवान अपने भक्तों से प्रेम करने वाला है एवं करुणामय है। वह परब्रह्म परमेश्वर घट घट में बसा हुआ है। नानक विनयपूर्वक कामना करते हैं कि हे कृपानिधि नारायण! ऐसी कृपा करो कि हम तुझे कभी विस्मृत न करें॥ २१॥

नह समरथं नह सेवकं नह प्रीति परम पुरखोतमं ॥ तव प्रसादि सिमरते नामं नानक क्रिपाल हरि हरि गुरं ॥ २२ ॥

हे परम पुरुषोत्तम! न ही मुझ में कोई योग्यता है, न ही तेरी भक्ति की है और न ही तुझसे प्रीति लगाई है। नानक विनती करते हैं कि हे परमेश्वर! तेरी कृपा से ही हम तेरा नाम-स्मरण करते हैं, तू कृपा का घर है॥ २२॥

भरण पोखण करंत जीआ बिस्राम छादन देवंत दानं ॥ स्रिजंत रतन जनम चतुर चेतनह ॥ वरतंति सुख आनंद प्रसादह ॥ सिमरंत नानक हरि हरि हरे ॥ अनित्य रचना निरमोह ते ॥ २३ ॥

जन्मदाता ईश्वर सब जीवों का भरण-पोषण करता है, वह हमारे रहने के लिए मकान, कपड़े इत्यादि अनेक सुविधाएँ देता है। उसने अमूल्य मानव जन्म देकर चतुर एवं बुद्धिमान बनाया है। उसकी कृपा से हम आनंदपूर्ण एवं सुखी रहते हैं। गुरु नानक कथन करते हैं– जो ईश्वर का स्मरण करते हैं, वे नाशवान् रचना के मोह से बचे रहते हैं॥ २३॥

दानं परा पूरबेण भुंचंते महीपते ॥ बिपरीत बुध्यं मारत लोकह नानक चिरंकाल दुख भोगते ॥ २४ ॥

बड़े-बड़े शासक पूर्व जन्म में किए पुण्य कर्म का फल भोगते हैं। हे नानक ! मृत्युलोक में विपरीत बुद्धि वाले लम्बे समय तक दुख भोगते हैं॥ २४॥

ब्रिथा अनुग्रहं गोबिंदह जस्य सिमरण रिदंतरह ॥ आरोग्यं महा रोग्यं बिसिम्रिते करुणामयह ॥ २५ ॥

जिनके दिल में ईश्वर का भजन-सिमरन होता है, वे दिल के दर्द को भी उसकी कृपा ही मानते हैं। परन्तु जिनको करुणामय परमेश्वर भूल जाता है, वे स्वस्थ होते हुए भी महारोगी हैं॥ २५॥

रमणं केवलं कीरतनं सुधरमं देह धारणह ॥ अंम्रित नामु नाराइण नानक पीवतं संत न त्रिप्यते ॥ २६ ॥

मनुष्य का धर्म केवल परमात्मा का कीर्तिगान करना है। हे नानक ! संतजन चाहे जितना भी नारायण के अमृतमय नाम का पान करते रहें, परन्तु वे तृप्त नहीं होते॥ २६॥

सहण सील संतं सम मित्रस्य दुरजनह ॥ नानक भोजन अनिक प्रकारेण निंदक आवध होइ उपतिसटते ॥ २७ ॥

संतजन सहनशील हैं, वे मित्रों एवं शत्रुओं को एक समान ही मानते हैं। हे नानक ! बेशक कोई अनेक प्रकार का भोजन लेकर आए, कोई निन्दा करे, चाहे कोई मारने के लिए आ जाए, वे सबको एक समान ही देखते हैं॥ २७॥

तिरसकार नह भवंति नह भवंति मान भंगनह ॥ सोभा हीन नह भवंति नह पोहंति संसार दुखनह ॥ गोबिंद नाम जपंति मिलि साध संगह नानक से प्राणी सुख बासनह ॥ २८ ॥

उनका न ही तिरस्कार होता है, न ही कभी मान-सम्मान भंग होता है। न ही वे शोभाहीन होते हैं और न ही संसार के दुख उनको प्रभावित करते हैं। नानक वचन करते हैं कि साधु पुरुषों के साथ मिलकर ईश्वर का नाम जपने वाले ऐसे प्राणी सदा सुखी रहते हैं॥ २८॥

सैना साध समूह सूर अजितं संनाहं तनि निंम्रताह ॥ आवधह गुण गोबिंद रमणं ओट गुर सबद कर चरमणह ॥ आरूड़ते अस्व रथ नागह बुझंते प्रभ मारगह ॥ बिचरते निरभयं सत्रु सैना धायंते गोपाल कीरतनह ॥ जितते बिस्व संसारह नानक वस्यं करोति पंच तसकरह ॥ २९ ॥

साधु मण्डली अजय शूरवीरों की सेना है, जिन्होंने तन पर नम्रता का कवच धारण किया हुआ है। ईश्वर का कीर्तिगान ही उनके शस्त्र हैं और शब्द-गुरु की ओट उनके हाथ की ढाल है। प्रभु मार्ग का परिचय ही उनके लिए हाथी, घोड़ों एवं रथों की सवारी है। वे निर्भय होकर रहते हैं और

ईश्वर का कीर्तन करते हुए कामादिक शत्रु सेना पर आक्रमण करते हैं। हे नानक ! ऐसे महारथी काम, क्रोध रूपी पाँच लुटेरों को वश में करके पूरे विश्व को विजय कर लेते हैं॥ २६॥

म्रिग त्रिसना गंधरब नगरं द्रुम छाया रचि दुरमतिह ॥ ततह कुटंब मोह मिथ्या सिमरंति नानक राम राम नामह ॥ ३० ॥

दुर्बुद्धि वाला मनुष्य मृगतृष्णा, गंधर्व नगरी एवं पेड़ की छाया समान जीवन रचता है। इसी तरह परिवार का मोह भी झूठा है अतः नानक का उपदेश है कि राम नाम का सिमरन करते रहो॥ ३०॥

नच बिदिआ निधान निगमं नच गुणग्य नाम कीरतनह ॥ नच राग रतन कंठं नह चंचल चतुर चातुरह ॥ भाग उदिम लबध्यं माइआ नानक साधसंगि खल पंडितह ॥ ३१ ॥

व्यक्ति के पास न ही वेद-विद्या का भण्डार है, न ही वह गुणज्ञ है, न तो वह नाम-संकीर्तन में लीन होता है। न ही उसका कंठ संगीत के योग्य है, और तो और वह चतुर एवं बुद्धिमान भी नहीं माना जाता। हे नानक ! यह सब उपलब्धि केवल उत्तम भाग्य से ही होती है और साधु पुरुषों की संगत में मूर्ख जीव भी पण्डित बन जाता है॥ ३१॥

कंठ रमणीय राम राम माला हसत ऊच प्रेम धारणी ॥ जीह भणि जो उतम सलोक उधरणं नैन नंदनी ॥ ३२ ॥

जिसके कण्ठ में राम नाम जपने की सुन्दर माला होती है, प्रेम धारण करना गोमुखी होता है। जिह्वा से जो उत्तम श्लोक उच्चारण करता है, ऐसा व्यक्ति आँखों को सुख देने वाली माया से मुक्त हो जाता है॥ ३२॥

गुर मंत्र हीणस्य जो प्राणी ध्रिगंत जनम भ्रसटणह ॥ कूकरह सूकरह गरधभह काकह सरपनह तुलि खलह ॥ ३३ ॥

जो प्राणी गुरु के मंत्र से विहीन रहते हैं, उनका जन्म धिक्कार योग्य एवं भ्रष्ट है। ऐसे मूर्ख तो असल में कुत्ते, सूअर, गधे, कौए एवं साँप समान हैं॥ ३३॥

चरणारबिंद भजनं रिदयं नाम धारणह ॥ कीरतनं साधसंगेण नानक नह द्रिसटंति जमदूतनह ॥ ३४ ॥

हे सज्जनो, ईश्वर के चरणों का भजन करो, हृदय में हरिनाम धारण करो। नानक का कथन है कि साधु पुरुषों के साथ परमात्मा का कीर्तन करो, यमदूत दृष्टि भी नहीं करते॥ ३४॥

नच दुरलभं धनं रूपं नच दुरलभं स्वरग राजनह ॥ नच दुरलभं भोजनं बिंजनं नच दुरलभं स्वछ अंबरह ॥ नच दुरलभं सुत मित्र भ्रात बांधव नच दुरलभं बनिता बिलासह ॥ नच दुरलभं बिदिआ प्रबीणं नच दुरलभं चतुर चंचलह ॥ दुरलभं एक भगवान नामह नानक लबध्यिं साधसंगि क्रिपा प्रभं ॥ ३५ ॥

न ही धन-दौलत दुर्लभ है, न ही रूप-सौन्दर्य दुर्लभ है तथा स्वर्ग का शासन भी दुर्लभ नहीं। विभिन्न व्यंजनों वाला भोजन भी दुर्लभ नहीं और न ही स्वच्छ वस्त्र दुर्लभ हैं। पुत्र, मित्र, भाई, रिश्तेदार भी दुर्लभ नहीं और न ही पत्नी के साथ भोग-विलास दुर्लभ है। विद्या में निपुण होना भी

दुर्लभ नहीं। अगर कोई चतुर-चालाक कहा जाए तो वह भी दुर्लभ नहीं। गुरु नानक फुरमान करते हैं— केवल भगवान का नाम कीर्तन ही दुर्लभ है और नाम सिर्फ साधुओं की संगत में प्रभु-कृपा से ही प्राप्त होता है॥ ३५॥

जत कतह ततह द्रिसटं स्वरग मरत पयाल लोकह ॥ सरबत्र रमणं गोबिंदह नानक लेप छेप न लिप्यते ॥ ३६ ॥

स्वर्गलोक, मृत्युलोक, पाताललोक जहाँ भी दृष्टि जाती है, ईश्वर ही दृष्टिगत होता है। नानक का फुरमान है कि परमेश्वर सर्वत्र व्याप्त है, वह कर्म दोषों, पाप-पुण्यों से रहित है॥ ३६॥

बिखया भयंति अंम्रितं द्रुसटां सखा स्वजनह ॥ दुखं भयंति सुखं भै भीतं त निरभयह ॥ थान बिहून बिस्राम नामं नानक क्रिपाल हरि हरि गुरह ॥ ३७ ॥

ईश्वर कृपा कर दे तो जहर भी अमृत हो जाता है, दुष्ट शत्रु भी सज्जन सखा बन जाते हैं। दुख सुखों में बदल जाता है और डरपोक मनुष्य भी निडर हो जाता है। स्थान विहीन को सुख का स्थान मिल जाता है। हे नानक! परमात्मा की कृपा से नाम-कीर्तन से सर्व सुख प्राप्त होते हैं॥ ३७॥

सरब सील ममं सीलं सरब पावन मम पावनह ॥ सरब करतब ममं करता नानक लेप छेप न लिप्यते ॥ ३८ ॥

सर्वशील प्रभु ही मुझे शील प्रदान करता है। वह सर्व पावन ही मुझे पावन करता है। सब कार्य करने वाला ही मेरा कर्ता है। हे नानक! वह पाप-दोषों से सदा मुक्त है॥ ३८॥

नह सीतलं चंद्र देवह नह सीतलं बावन चंदनह ॥ नह सीतलं सीत रुतेण नानक सीतलं साध स्वजनह ॥ ३९ ॥

न ही चन्द्र देव इतने शीतल हैं, न ही बावन चन्दन शीतल है। हे नानक! शरद ऋतु भी इतनी शीतल नहीं है, जितना साधु-महात्मा शीतल हैं॥ ३९॥

मंत्रं राम राम नामं ध्यानं सरबत्र पूरनह ॥ ग्यानं सम दुख सुखं जुगति निरमल निरवैरणह ॥ दयालं सरबत्र जीआ पंच दोख बिवरजितह ॥ भोजनं गोपाल कीरतनं अलप माया जल कमल रहतह ॥ उपदेसं सम मित्र सत्रह भगवंत भगति भावनी ॥ पर निंदा नह स्रोति स्रवणं आपु त्यिागि सगल रेणुकह ॥ खट लख्यण पूरनं पुरखह नानक नाम साध स्वजनह ॥ ४० ॥

साधु महापुरुषों का मंत्र केवल राम नाम जपना है, उनका ध्यान यही है कि ईश्वर सृष्टि के कण-कण में मौजूद है। सुख-दुख को एक समान मानना ही उनका ज्ञान है और उनकी जीवन-युक्ति पूरे संसार के साथ प्रेम करना है। वे सब जीवों पर दयालु रहते हैं और कामादिक पाँच दोषों को विवर्जित करते हैं। भगवान का भजन-कीर्तन ही उनका भोजन है और वे माया से यूं निर्लिप्त रहते हैं, जिस प्रकार जल में कमल रहता है। कोई मित्र हो अथवा शत्रु, वे सब को समान उपदेश देते हैं और भगवान की भक्ति ही उनको प्यारी लगती है। वे अपने कानों से पराई निन्दा नहीं सुनते और अहम्-भाव छोड़कर सबकी चरणरज बने रहते हैं। गुरु नानक फुरमान करते हैं— पूर्ण पुरुषों में यही छः लक्षण होते हैं और इनका नाम ही साधु महापुरुष कहलाता है॥ ४०॥

अजा भोगंत कंद मूलं बसंते समीपि केहरह ॥ तत्र गते संसारह नानक सोग हरखं बिआपते ॥ ४१ ॥

चाहे बकरी कंदमूल खाती हुई शेर के समीप ही रहती है, फिर भी उसे मौत का डर बना रहता है। गुरु नानक फुरमान करते हैं कि यही हाल संसार के लोगों का है, जिनको खुशियों के साथ-साथ गम भी मिलता है॥ ४१॥

छलं छिद्रं कोटि बिघनं अपराधं किलबिख मलं ॥ भरम मोहं मान अपमानं मदं माया बिआपितं ॥ म्रित्यु जनम भ्रमंति नरकह अनिक उपावं न सिध्यते ॥ निरमलं साध संगह जपंति नानक गोपाल नामं ॥ रमंति गुण गोबिंद नित प्रतह ॥ ४२ ॥

मनुष्य लोगों को धोखा देता है, करोड़ों विघ्न पैदा करता है, पाप-अपराधों की मैल में फंस जाता है। वह भ्रम, मोह, मान-अपमान, माया के नशे में लिप्त रहता है। जीवन-मृत्यु के चक्र में नरक भोगता है, परन्तु अनेक उपायों द्वारा भी बन्धनों से मुक्त नहीं होता। हे नानक! साधु पुरुषों के साथ परमात्मा का नाम जपने से ही जीवन निर्मल होता है, अतः प्रतिदिन ईश्वर का गुणानुवाद करो॥ ४२॥

तरण सरण सुआमी रमण सील परमेसुरह ॥ करण कारण समरथह दानु देत प्रभु पूरनह ॥ निरास आस करणं सगल अरथ आलयह ॥ गुण निधान सिमरंति नानक सगल जाचंत जाचिकह ॥ ४३ ॥

परमेश्वर की शरण में मुक्ति संभव है, वह शीलवान है, लीला करने वाला है। वह सब करने-करवाने में समर्थ है और पूर्ण प्रभु सबको देने वाला है। वह निराश लोगों की आशा पूरी करता है और सर्व सुख पदार्थों का घर है। हे नानक! संसार उस गुणों के भण्डार का सिमरन करता है और सभी विनयपूर्वक उसी से मांगते हैं॥ ४३॥

दुरगम सथान सुगमं महा दूख सरब सूखणह ॥ दुरबचन भेद भरमं साकत पिसनं त सुरजनह ॥ असथितं सोग हरखं भै खीणं त निरभवह ॥ भै अटवीअं महा नगर बासं धरम लख्यण प्रभ मइआ ॥ साध संगम राम राम रमणं सरणि नानक हरि हरि दयाल चरणं ॥ ४४ ॥

दुर्गम स्थान भी सुगम हो जाते हैं, बड़े से बड़े दुख सब सुखों में तबदील हो जाते हैं। दुर्वचन, भेद, मतावलंबी एवं चुगलखोर भी नेक एवं सज्जन बन जाते हैं। गम खुशियों में बदल जाता है और डरपोक व्यक्ति निडर बन जाता है। भयानक वन सरीखा क्षेत्र भी महा नगर में बदल जाता है। ऐसे धर्म के लक्षण तो प्रभु की कृपा से प्राप्त होते हैं। साधुओं की शरण में राम-राम का मंत्र जपना चाहिए। हे नानक! दयालु प्रभु के चरणों में सब संभव है॥ ४४॥

हे अजित सूर संग्रामं अति बलना बहु मरदनह ॥ गण गंधरब देव मानुख्यं पसु पंखी बिमोहनह ॥ हरि करणहारं नमसकारं सरणि नानक जगदीस्वरह ॥ ४५ ॥

{यहाँ पर गुरु जी ने मोह को संबोधन किया है} हे अजय महायोद्धा! तू इतना शक्तिशाली है कि तूने बड़े-बड़े वीरों का मर्दन कर दिया है। गण-गंधर्व, देवता, मनुष्य एवं पशु-पक्षियों को भी मोहित कर लिया है। नानक का कथन है कि उस सर्वकर्ता ईश्वर को हमारा कोटि-कोटि नमस्कार है, हम उस जगदीश्वर की शरण में हैं॥ ४५॥

हे कामं नरक बिस्रामं बहु जोनी भ्रमावणह ॥ चित हरणं त्रै लोक गंम्यं जप तप सील बिदारणह

॥ अलप सुख अवित चंचल ऊच नीच समावणह ॥ तव भै बिमुंचित साध संगम ओट नानक नाराइणह ॥ ४६ ॥

हे काम ! तू जीवों को नरक में पहुँचाने वाला है और अनेक योनियों में भटकाता है। तू लोगों का दिल चुराने वाला है, तीनों लोकों में गमन कर रहा है, तू जप, तप, शील नष्ट करने वाला है। तू थोड़ा-सा सुख देने वाला है, धनहीन करने वाला, चंचल बनाने वाला और बड़े अथवा छोटे सब में लीन होता है। नानक का कथन है कि तेरे भय से बचने के लिए साधु पुरुषों की संगत एवं परमात्मा का आसरा ले लिया है ॥ ४६ ॥

हे कलि मूल क्रोधं कदंच करुणा न उपरजते ॥ बिखयंत जीवं वस्यं करोति निरत्यं करोति जथा मरकटह ॥ अनिक सासन ताड़ंति जमदूतह तव संगे अधमं नरह ॥ दीन दुख भंजन दयाल प्रभु नानक सरब जीअ रख्या करोति ॥ ४७ ॥

हे क्रोध ! तू कलह-कलेश का मूल कारण है, तुझे तो कभी दया आती ही नहीं। तू विषयी जीवों को अपने वश में कर लेता है और जिस कारण वे बन्दर की तरह नाचते हैं। तेरी संगत में आकर भले व्यक्ति भी नीच बन जाते हैं और यमदूत उनको हुक्म देकर दण्ड पहुँचाते हैं। नानक का कथन है कि दीनों के दुख नाश करने वाला दयालु प्रभु ही सब जीवों की (क्रोध से) रक्षा करता है ॥ ४७ ॥

हे लोभा लंपट संग सिरमोरह अनिक लहरी कलोलते ॥ धावंत जीआ बहु प्रकारं अनिक भांति बहु डोलते ॥ नच मित्रं नच इसटं नच बाधव नच मात पिता तव लजया ॥ अकरणं करोति अखाद्यि खाद्यं असाज्यं साजि समजया ॥ त्राहि त्राहि सरणि सुआमी बिग्याप्ति नानक हरि नरहरह ॥ ४८ ॥

हे लोभ ! तूने तो बादशाह, अमीर, सब को अपने शिकंजे में डाला हुआ है और वे तेरी लहरों में फँसकर अनेक तमाशे करते हैं। तेरे वश में आकर जीव अनेक प्रकार से दौड़ते हैं और अनेक तरीकों से बहुत डोलते हैं। तुझे मित्र, इष्ट, रिश्तेदार, माता-पिता की कोई शर्म नहीं। तू न करने लायक भी काम करवाता है, न खाने योग्य चीज भी खिलाता है, समाज में न बनने वाली को भी बना देते हो। नानक प्रार्थना करते हैं कि हे नारायण ! हम तेरी शरण में आ गए हैं, इस लोभ से हमें बचा लो ॥ ४८ ॥

हे जनम मरण मूलं अहंकारं पापातमा ॥ मित्रं तजंति सत्रं द्रिड़ंति अनिक माया बिस्तीरनह ॥ आवंत जावंत थकंत जीआ दुख सुख बहु भोगणह ॥ भ्रम भयान उदिआन रमणं महा बिकट असाध रोगणह ॥ बैद्यं पारब्रहम परमेस्वर आराधि नानक हरि हरि हरे ॥ ४९ ॥

हे पापी अहंकार ! तू जन्म-मरण का मूल है। तू मित्रों से दूर करके शत्रुओं से नाता जोड़ता है और अनेक प्रकार से माया के प्रपंच फैलाता है। तेरे कारण जीव आवागमन में थक जाते हैं और बहुत सुख दुख भोगते हैं। वे भ्रम के भयानक जंगल में रहते हैं और महा विकट एवं असाध्य रोगों का शिकार हो जाते हैं। नानक का कथन है कि इन रोगों का उपचार करने वाला वैद्य एकमात्र परब्रह्म परमेश्वर है, अतः उस हरि की आराधना करो ॥ ४९ ॥

हे प्राण नाथ गोबिंदह क्रिपा निधान जगद गुरो ॥ हे संसार ताप हरणह करुणा मै सभ दुख हरो ॥ हे सरणि जोग दयालह दीना नाथ मया करो ॥ सरीर स्वसथ खीण समए सिमरंति नानक राम दामोदर माधवह ॥ ५० ॥

हे प्राणनाथ ! हे गोविन्द ! हे कृपा के घर ! हे जगदगुरु ! हे संसार के कष्ट हरण करने वाले ! हे करुणामय ! सब दुखों को दूर करो। हे शरण देने योग्य ! हे दयालु दीनानाथ ! कृपा करो। नानक विनती करते हैं कि हे प्रभु ! शरीर स्वस्थ अथवा बीमार हो, दोनों ही वक्त तेरा सिमरन करते रहें॥ ५०॥

चरण कमल सरणं रमणं गोपाल कीरतनह ॥ साध संगेण तरणं नानक महा सागर भै दुतरह ॥ ५१ ॥

हे ईश्वर ! तेरे चरण-कमल की शरण में तेरा ही कीर्तन करते रहें। नानक का कथन है कि यदि साधु-पुरुषों की संगत की जाए तो भयानक दुस्तर महासागर से पार हुआ जा सकता है॥ ५१॥

सिर मस्तक रख्या पारब्रहमं हस्त काया रख्या परमेस्वरह ॥ आतम रख्या गोपाल सुआमी धन चरण रख्या जगदीस्वरह ॥ सरब रख्या गुर दयालह भै दूख बिनासनह ॥ भगति वछल अनाथ नाथे सरणि नानक पुरख अचुतह ॥ ५२ ॥

हे परब्रह्म ! (आशीष देकर) सिर-मस्तक का संरक्षण करो, हे परमेश्वर ! इन हाथों एवं शरीर की रक्षा करें (हम कोई बुरा काम मत करें)। हे गोपाल ! हमारी आत्मा की रक्षा करना, धन एवं चरणों को, हे जगदीश्वर ! तू ही बचाने वाला है। हे दयालु गुरु ! सबकी रक्षा करना, भय-दुखों का नाश करना। नानक विनती करते हैं कि हे भक्तवत्सल ! अनाथों के नाथ ! हे अटल प्रभु ! हमें अपनी शरण में रखो॥ ५२॥

जेन कला धारिओ आकासं बैसंतरं कासट बेसटं ॥ जेन कला ससि सूर नख्यत्र जोत्यिं सासं सरीर धारणं ॥ जेन कला मात गरभ प्रतिपालं नह छेदंत जठर रोगणह ॥ तेन कला असथंभं सरोवरं नानक नह छिजंति तरंग तोयणह ॥ ५३ ॥

जिस ओंकार ने अपनी शक्ति से आकाश को धारण किया हुआ है, लकड़ी में अग्नि को टिकाया हुआ है। जिसकी शक्ति से सूर्य, चन्द्रमा एवं नक्षत्रों को ज्योति मिल रही है और जिससे शरीर में प्राणों का संचार हो रहा है। जिसकी शक्ति द्वारा माता के गर्भ में पालन होता है और पेट के रोग तकलीफ नहीं पहुँचाते। नानक का फुरमान है कि उस परमात्मा की शक्ति से संसार-सागर स्थित है, उस सागर के जल की लहरें हमें नुक्सान नहीं पहुँचातीं॥ ५३॥

गुसांई गरिस्ट रूपेण सिमरणं सरबत्र जीवणह ॥ लबध्यं संत संगेण नानक स्वछ मारग हरि भगतणह ॥ ५४ ॥

परमात्मा बहुत बड़ा है, पूजनीय है और उसका सिमरन सब लोगों का जीवन है। नानक का जनमानस को फुरमान है कि संत पुरुषों की संगत करो, हरि-भक्ति के पावन मार्ग पर चलो, तभी उसकी लब्धि होगी॥ ५४॥

मसकं भगनंत सैलं करदमं तरंत पपीलकह ॥ सागरं लंघंति पिंगं तम परगास अंधकह ॥ साध संगेणि सिमरंति गोबिंद सरणि नानक हरि हरि हरे ॥ ५५ ॥

मच्छर के समान कमजोर व्यक्ति पत्थर को तोड़कर रख दे, एक छोटी-सी चींटी कीचड़ से तैर कर पार लग जाए। लूला लंगड़ा व्यक्ति समुद्र को पार कर ले और अन्धा भी आँखों की रोशनी पा ले। ऐसा तो साधुओं की संगत में परमात्मा के सिमरन से ही संभव होता है, अतः नानक का फुरमान है कि हरि भजन में लीन रहो॥ ५५॥

तिलक हीणं जथा बिप्रा अमर हीणं जथा राजनह ॥ आवध हीणं जथा सूरा नानक धरम हीणं तथा बैस्नवह ॥ ५६ ॥

जैसे तिलक के बिना ब्राह्मण माननीय नहीं होता। जिस प्रकार अपनी अधिकार-शक्तियों के बिना राजा को कोई नहीं पूछता। गुरु नानक फुरमान करते हैं– जैसे अस्त्र-शस्त्रों के बिना शूरवीर (शोभा का हकदार नहीं) होता है, वैसे ही धर्म से विहीन वैष्णव व्यर्थ है॥ ५६॥

न संखं न चक्रं न गदा न सिआमं ॥ अस्चरज रूपं रहंत जनमं ॥ नेत नेत कथंति बेदा ॥ ऊच मूच अपार गोबिंदह ॥ बसंति साध रिदयं अचुत बुझंति नानक बडभागीअह ॥ ५७ ॥

न ही वह शंख, चक्र एवं गदा में है और न ही श्याम वर्ण है। उसका रूप आश्चर्य है, वह अजन्मा है। वेद उसे नेति नेति कहते हैं, अपरंपार ईश्वर बहुत बड़ा है। वह सिर्फ साधुओं के हृदय में ही बसता है, हे नानक! इस तथ्य को भाग्यशाली ही मानते हैं॥ ५७॥

उदिआन बसनं संसारं सनबंधी स्वान सिआल खरह ॥ बिखम सथान मन मोह मदिरं महां असाध पंच तसकरह ॥ हीत मोह भै भरम भ्रमणं अहं फांस तीख्यण कठिनह ॥ पावक तोअ असाध घोरं अगम तीर नह लंघनह ॥ भजु साधसंगि गोपाल नानक हरि चरण सरण उधरण क्रिपा ॥ ५८ ॥

मनुष्य एक जंगल समान संसार में रहता है, जहाँ (लोभ, शैतान, मूर्ख रूपी) कुत्ते, भेड़िए एवं गधे उसके संबंधी हैं। यह एक भयानक स्थान है, मन मोह के नशे में मस्त है, जहाँ काम, क्रोध रूपी पाँच महा असाध्य तस्कर विराजमान हैं। मोह, प्रेम, भय के भ्रम में लोग भटकते हैं और अहम् की फाँसी का बन्धन बहुत कठिन है। तृष्णाग्नि एवं वासना रूपी पानी बहुत उछल रहा है, इसके किनारे से पार होना बहुत मुश्किल है। संसार-सागर से पार होने के लिए बेहतर यही है कि साधु पुरुषों के साथ परमात्मा का भजन किया जाए। गुरु नानक फुरमाते हैं– प्रभु-चरणों की शरण लो, उसकी कृपा से मुक्ति निहित है॥ ५८॥

क्रिपा करंत गोबिंद गोपालह सगल्यं रोग खंडणह ॥ साध संगेणि गुण रमत नानक सरणि पूरन परमेसुरह ॥ ५६ ॥

जब परमात्मा कृपा करता है तो सब रोग नष्ट हो जाते हैं। नानक का फुरमान है कि साधु-पुरुषों की संगत में प्रभु का गुणगान करो, उस पूर्ण परमेश्वर की शरण लो॥ ५६॥

सिआमलं मधुर मानुख्यं रिदयं भूमि वैरणह ॥ निवंति होवंति मिथिआ चेतनं संत स्वजनह ॥ ६० ॥

मनुष्य निःसंकोच सुन्दर एवं मधुरभाषी हो, लेकिन यदि वह हृदय में वैर-भावना रखता हो तो उसका विनम्र होना झूठा है। अतः हे सज्जनो! ऐसे लोगों से होशियार ही रहना॥ ६०॥

अचेत मूड़ा न जाणंत घटंत सासा नित प्रते ॥ छिजंत महा सुंदरी कांइआ काल कंनिआ ग्रासते ॥ रचंति पुरखह कुटंब लीला अनित आसा बिखिआ बिनोद ॥ भ्रमंति भ्रमंति बहु जनम हारिओ सरणि नानक करुणामयह ॥ ६१ ॥

नासमझ मूर्ख व्यक्ति यह नहीं जानता कि जीवन-साँसें प्रतिदिन घटती जा रही हैं। महा सुन्दर शरीर टूटता जा रहा है और काल की कन्या रूप में बुढ़ापा निगलता जा रहा है। तो भी व्यक्ति परिवार की लीला में लीन है, उसकी आशाओं में वृद्धि होती जा रही है और खेल-तमाशों

में प्रवृत्त है। नानक विनती करते हैं कि अनेक जन्म भटकते-भटकते हार गए हैं, अब तो करुणामय प्रभु की शरण लो॥ ६१॥

हे जिहबे हे रसगे मधुर प्रिअ तुयं ॥ सत हतं परम बादं अवरत एथह सुध अछरणह ॥ गोबिंद दामोदर माधवे ॥ ६२ ॥

हे जिह्वा ! हे रसीली ! तुझे मीठी चीजें बहुत पसंद हैं। तूने सत्य बोलना छोड़ दिया है और झगड़ों में ही लीन हो। उचित तो यही है कि शुद्ध अक्षर गोबिंद, दामोदर, माधव का भजन कर॥ ६२॥

गरबंति नारी मदोन मतं ॥ बलवंत बलात कारणह ॥ चरन कमल नह भजंत त्रिण समानि ध्रिगु जनमनह ॥ हे पपीलका ग्रसटे गोबिंद सिमरण तुयं धने ॥ नानक अनिक बार नमो नमह ॥ ६३ ॥

सुन्दर नारी के मोह में मनुष्य अभिमान करता है, बलवान पुरुष अपने बल के कारण घमण्ड करता है। अगर परमात्मा के चरण कमल का भजन नहीं करता तो तृण समान है और उसके जीवन को धिक्कार है। हे नम्रतापूर्ण चींटी ! तू बहुत मजबूत है, क्योंकि तेरे पास गोविंद सिमरन का धन है। नानक तुझे अनेक बार नमन करते हैं॥ ६३॥

त्रिणं त मेरं सहकं त हरीअं ॥ बूडं त तरीअं ऊणं त भरीअं ॥ अंधकार कोटि सूर उजारं ॥ बिनवंति नानक हरि गुर दयारं ॥ ६४ ॥

एक तिनका भी पर्वत बन जाता है, सूखा स्थान हरा-भरा हो जाता है। डूब रहा व्यक्ति भी तैर जाता है, खाली भर जाता है। नानक विनती करते हैं कि गुरु परमेश्वर दयालु हो जाए तो अंधकार में करोड़ों सूर्य का उजाला हो जाता है॥ ६४॥

ब्रहमणह संगि उधरणं ब्रहम करम जि पूरणह ॥ आतम रतं संसार गहं ते नर नानक निहफलह ॥ ६५ ॥

उसी ब्राह्मण की संगत में उद्धार हो सकता है, जो ब्रह्म कर्म में पूर्ण हो। हे नानक ! जिसका मन संसार में लीन रहता है, ऐसा व्यक्ति निष्फल चला जाता है॥ ६५॥

पर दरब हिरणं बहु विघन करणं उचरणं सरब जीअ कह ॥ लउ लई त्रिसना अतिपति मन माए करम करत सि सूकरह ॥ ६६ ॥

जो लोग पराया धन छीनते हैं, बहुत विघ्न उत्पन्न करते हैं, अपने निर्वाह के लिए शिक्षा देते हैं, इसे ले लूँ। जिनकी तृष्णा समाप्त नहीं होती, मन माया में लीन रहता है। ऐसे कर्म करने वाले सूअर समान हैं॥ ६६॥

मते समेव चरणं उधरणं भै दुतरह ॥ अनेक पातिक हरणं नानक साध संगम न संसयह ॥ ६७ ॥ ४ ॥

जो व्यक्ति भगवान के चरणों में समाए रहते हैं, वे भयानक दुस्तर संसार-सागर से पार हो जाते हैं। गुरु नानक फुरमाते हैं– इसमें कोई शक नहीं, साधुओं की संगत में अनेकों पाप-दोष हरण हो जाते हैं॥ ६७॥ ४॥

महला ५ गाथा* १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

वह परब्रह्म केवल एक (ओंकार-स्वरूप) है, सतगुरु की कृपा से प्राप्ति होती है।

करपूर पुहप सुगंधा परस मानुख्य देहं मलीणं ॥ मजा रुधिर द्रुगंधा नानक अथि गरबेण अग्यानणो ॥ १ ॥

कपूर, पुष्प एवं अन्य सुगन्धियाँ मनुष्य के शरीर का स्पर्श करने से मलिन हो जाती हैं। गुरु नानक फुरमाते हैं– शरीर मज्जा, लहू तथा दुर्गन्ध से भरा हुआ है तो भी अज्ञानी मनुष्य इस पर अहंकार ही करता है॥१॥

परमाणो परजंत आकासह दीप लोअ सिखंडणह ॥ गछेण नैण भारेण नानक बिना साधू न सिध्यते ॥ २ ॥

यदि मनुष्य में इतनी समर्था हो कि वह परमाणु की तरह अणु बनकर आकाश तक सभी द्वीपों, लोकों एवं खण्डों से पल भर में भ्रमण करके ही आ जाए तो भी हे नानक! साधुओं का संग किए बिना उसका उद्धार नहीं होता॥२॥

जाणो सति होवंतो मरणो द्रिसटेण मिथिआ ॥ कीरति साथि चलंथो भणंति नानक साध संगेण ॥ ३ ॥

हे संसार के लोगो! इस सच्चाई को मान लो, मृत्यु निश्चय है, जो कुछ भी दिखाई दे रहा है, सब झूठा है। नानक प्रार्थना करते हैं कि साधु पुरुषों के साथ परमात्मा का कीर्तिगान ही साथ चलता है॥३॥

माया चित भरमेण इसट मित्रेखु बांधवह ॥ लबध्यं साध संगेण नानक सुख असथानं गोपाल भजणं ॥ ४ ॥

माया ने तो मन को इष्ट मित्रों एवं बन्धुओं में भटका रखा है। हे नानक! सुख का स्थान केवल साधुओं के साथ परमात्मा के भजन से ही मिलता है॥४॥

मैलागर संगेण निंमु बिरख सि चंदनह ॥ निकटि बसंतो बांसो नानक अहं बुधि न बोहते ॥ ५ ॥

---

*एक प्राचीन प्राकृत भाषा जिसमें संस्कृत पाली एवं अन्य बोलियों के शब्द हैं।

चन्दन के संग रहकर नीम का वृक्ष भी चन्दन सरीखा खुशबूदार हो जाता है। हे नानक! इसके विपरीत निकट रहने वाला बांस अहंकार के कारण महकदार नहीं होता॥ ५॥

गाथा गुंफ गोपाल कथं मथं मान मरदनह ॥ हतं पंच सत्रेण नानक हरि बाणे प्रहारणह ॥ ६ ॥

इस 'गाथा' में ईश्वर-स्तुति गूंथी हुई है, इसका मनन करने से मान-अभिमान सब खत्म हो जाते हैं। हे नानक! हरिनाम रूपी बाण के प्रहार से कामादिक पाँच शत्रुओं का अंत हो जाता है॥ ६॥

बचन साध सुख पंथा लहंथा बड करमणह ॥ रहंता जनम मरणेन रमणं नानक हरि कीरतनह ॥ ७ ॥

साधुओं के वचन से भाग्यशाली लोगों को ही सुख का रास्ता प्राप्त होता है। हे नानक! हरि का कीर्तन करने से जन्म-मरण के चक्र से छुटकारा हो जाता है॥ ७॥

पत्र भुरिजेण झड़ीयं नह जड़ीअं पेड संपता ॥ नाम बिहूण बिखमता नानक बहंति जोनि बासरो रैणी ॥ ८ ॥

जैसे पेड़ के पत्र टूटकर झड़ जाते हैं और दोबारा पेड़ की शाखा के साथ नहीं लगते। इसी तरह हे नानक! हरिनाम से विहीन व्यक्ति कष्ट ही भोगते हैं और दिन-रात योनियों के चक्र काटते हैं॥ ८॥

भावनी साध संगेण लभंतं बड भागणह ॥ हरि नाम गुण रमणं नानक संसार सागर नह बिआपणह ॥ ९ ॥

अहोभाग्य से साधुओं की संगत में प्रभु-भक्ति प्राप्त होती है। हे नानक! ईश्वर का गुणानुवाद करने से संसार-सागर का कष्ट प्रभावित नहीं करता॥ ९॥

गाथा गूड़ अपारं समझणं बिरला जनह ॥ संसार काम तजणं नानक गोबिंद रमणं साध संगमह ॥ १० ॥

गहरी-अपार 'गाथा' को कोई विरला पुरुष ही समझता है। हे नानक! वह संसार की कामनाओं को छोड़कर साधुओं के संग ईशोपासना में ही लीन रहता है॥ १०॥

सुमंत्र साध बचना कोटि दोख बिनासनह ॥ हरि चरण कमल ध्यानं नानक कुल समूह उधारणह ॥ ११ ॥

साधुओं के वचन उत्तम मंत्र हैं, जो करोड़ों दोषों का नाश कर देते हैं। हे नानक! परमात्मा के चरण-कमल का ध्यान समूची वंशावलि का उद्धार कर देता है॥ ११॥

सुंदर मंदर सैणह जेण मध्य हरि कीरतनह ॥ मुकते रमण गोबिंदह नानक लबध्यं बड भागणह ॥ १२ ॥

जहाँ परमात्मा का कीर्तिगान होता है, वास्तव में वही घर सुन्दर है। प्रभु का भजन करने वाले मुक्त हो जाते हैं, हे नानक! (प्रभु-भजन) भाग्यशाली को ही प्राप्त होता है॥ १२॥

हरि लबधो मित्र सुमितो ॥ बिदारण कदे न चितो ॥ जा का असथलु तोलु अमितो ॥ सोुई नानक सखा जीअ संगि कितो ॥ १३ ॥

हमें परम मित्र ईश्वर मिल गया है, वह कभी हमारा दिल नहीं तोड़ता। जिसका स्थान अतुलनीय एवं अमिट है, हे नानक! उसे ही मन से साथी बना लिया है॥ १३॥

अपजसं मिटंत सत पुत्रह ॥ सिमरतब्य रिदै गुर मंत्रणह ॥ प्रीतम भगवान अचुत ॥ नानक संसार सागर तारणह ॥ १४ ॥

ज्यों नेक पुत्र के कारण अपयश मिट जाता है, वैसे ही गुरु के उपदेश से हृदय में प्रभु का स्मरण करने से सुख-समृद्धि प्राप्त होती है। गुरु नानक फुरमाते हैं– जान से प्यारा भगवान सदैव अटल है, एक वही संसार-सागर से पार उतारने वाला है॥ १४॥

मरणं बिसरणं गोबिंदह ॥ जीवणं हरि नाम ध्यावणह ॥ लभणं साध संगेण ॥ नानक हरि पूरबि लिखणह ॥ १५ ॥

परमात्मा को भुलाना मरने के बराबर है, हरिनाम के ध्यान से ही जीवन है। हे नानक! हरिनाम साधुओं की संगत में पूर्व लिखे भाग्य से ही प्राप्त होता है॥ १५॥

दसन बिहून भुयंगं मंत्रं गारुड़ी निवारं ॥ ब्याधि उपाड़ण संतं ॥ नानक लबध करमणह ॥ १६ ॥

ज्यों गारुड़ी मंत्र सांप का जहर दूर करने वाला एवं दंत विहीन करने वाला है। इसी प्रकार संत सब दुख-रोगों को दूर करने वाले हैं, हे नानक! संतों की संगत भाग्य से ही प्राप्त होती है॥ १६॥

जथ कथ रमणं सरणं सरबत्र जीअणह ॥ तथ लगणं प्रेम नानक ॥ परसादं गुर दरसनह ॥ १७ ॥

जहाँ कहाँ परमात्मा मौजूद है, सब जीवों को शरण दे रहा है। गुरु नानक फुरमाते हैं– जब गुरु के दर्शन एवं कृपा होती है तो प्रभु से प्रेम लग जाता है॥ १७॥

चरणारबिंद मन बिध्यं ॥ सिध्यं सरब कुसलणह ॥ गाथा गावंति नानक भब्यं परा पूरबणह ॥ १८ ॥

मन ईश्वर के चरणों में बिंध गया है और सब कुशल-कल्याण प्राप्त हो गया है। गुरु नानक फुरमाते हैं– प्राचीन काल से भक्तजन उसकी गाथा गान कर रहे हैं॥ १८॥

सुभ बचन रमणं गवणं साध संगेण उधरणह ॥ संसार सागरं नानक पुनरपि जनम न लभ्यते ॥ १९ ॥

शुभ वचन, ईशोपासना, साधुओं की संगत में ईश्वर का गुणगान मनुष्य का उद्धार करता है। हे नानक! इस तरह संसार-सागर में दोबारा जन्म नहीं होता॥ १९॥

बेद पुराण सासत्र बीचारं ॥ एकंकार नाम उर धारं ॥ कुलह समूह सगल उधारं ॥ बडभागी नानक को तारं ॥ २० ॥

चारों वेद, अठारह पुराण एवं शास्त्रों का यही मत है कि ओंकार का नाम हृदय में धारण

करो। इससे समूची वंशावलि का उद्धार हो जाता है। हे नानक ! कोई भाग्यशाली ही पार उतरता है॥ २०॥

सिमरणं गोबिंद नामं उधरणं कुल समूहणह ॥ लबधिअं साध संगेण नानक वडभागी भेटंति दरसनह ॥ २१ ॥

ईश्वर के नाम का सिमरन करने से समूची कुल का उद्धार हो जाता है। गुरु नानक फुरमाते हैं– उत्तम भाग्य से ही साधु-संगत प्राप्त होती है, ऐसे खुशकिस्मत ही हरि-दर्शन पाते हैं॥ २१॥

सरब दोख परंतिआगी सरब धरम द्रिड़ंतणः॥ लबधेणि साध संगेणि नानक मसतकि लिख्यणः॥ २२ ॥

जो सब पाप-दोषों का त्याग करते हैं, सब धर्मों का पालन करते हैं। हे नानक ! जिनके भाग्य में लिखा होता है, साधुओं की संगत में उनको ईश्वर मिल जाता है॥ २२॥

होयो है होवंतो हरण भरण संपूरणः ॥ साधू सतम जाणो नानक प्रीति कारणं ॥ २३ ॥

संसार का संहारक एवं पालन-पोषण करने वाला ओअंकार सम्पूर्ण सृष्टि में व्याप्त है, वह सृष्टि रचना से पूर्व भी था और सदैव उसका अस्तित्व रहेगा। गुरु नानक फुरमाते हैं– इस सत्य को मान लो कि उससे प्रेम साधुओं के कारण ही होता है॥ २३॥

सुखेण बैण रतनं रचनं कसुंभ रंगणः ॥ रोग सोग बिओगं नानक सुखु न सुपनह ॥ २४ ॥

जो व्यक्ति संसार के सुखों, मीठे वचनों एवं माया के रंग में रचा रहता है। हे नानक ! वह रोगग्रस्त, गम एवं वियोग में पड़ा रहता है और उसे सपने में भी सुख नहीं मिलता॥ २४॥

फुनहे महला ५ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

वह परब्रह्म केवल एक (ओंकार-स्वरूप) है, सतगुरु की कृपा से प्राप्ति होती है।

हाथि कलंम अगंम मसतकि लेखावती ॥ उरझि रहिओ सभ संगि अनूप रूपावती ॥ उसतति कहनु न जाइ मुखहु तुहारीआ ॥ मोही देखि दरसु नानक बलिहारीआ ॥ १ ॥

{एक छंद का नाम फुनहे अर्थात् पुनः पुनः है, जैसे कि 'हरिहां' बार-बार आ रहा है}

हे विधाता! तेरे हाथ में कलम है, जिससे तू सबके ललाट पर भाग्य लिख रहा है। तू अनुपम एवं रूपवान है, सब के साथ लीन हो रहा है। मुझ में इतनी काबलियत नहीं कि मैं अपने मुख से तेरी प्रशंसा कर सकूँ। गुरु नानक का कथन है— हे सच्चिदानंद! तेरे दर्शन करके मोहित हो गया हूँ और मैं तुझ पर सदैव कुर्बान जाता हूँ॥ १॥

संत सभा महि बैसि कि कीरति मै कहां ॥ अरपी सभु सीगारु एहु जीउ सभु दिवा ॥ आस पिआसी सेज सु कंति विछाईऐ ॥ हरिहां मसतकि होवै भागु त साजनु पाईऐ ॥ २ ॥

संतजनों की सभा में बैठकर मैं निरंकार की कीर्ति गान करती हूँ। मैं अपना समूचा श्रृंगार उसे अर्पण करती हूँ और यह प्राण इत्यादि सर्वस्व उसे समर्पित कर दिए हैं। उस पति-प्रभु की आशा में सेज बिछाई हुई है। हरिहां, यदि माथे पर भाग्य हो तो सज्जन प्रभु प्राप्त हो जाता है॥ २॥

सखी काजल हार तंबोल सभै किछु साजिआ ॥ सोलह कीए सीगार कि अंजनु पाजिआ ॥ जे घरि आवै कंतु त सभु किछु पाईऐ ॥ हरिहां कंतै बाझु सीगारु सभु बिरथा जाईऐ ॥ ३ ॥

हे सखी! आँखों में काजल, गले में हार, होंठों पर लाली इत्यादि सब किया है। अञ्जन लगाकर मैंने सोलह श्रृंगार किए हैं। यदि पति-प्रभु घर में आ जाए तो सब कुछ सफल है। हरिहां, पति-प्रभु के बिना सारा श्रृंगार व्यर्थ ही जाता है॥ ३॥

जिसु घरि वसिआ कंतु सा वडभागणे ॥ तिसु बणिआ हभु सीगारु साई सोहागणे ॥ हउ सुती होइ अचिंत मनि आस पुराईआ ॥ हरिहां जा घरि आइआ कंतु त सभु किछु पाईआ ॥ ४ ॥

जिसके हृदय-घर में प्रभु बस जाता है, वही भाग्यशाली है। उसी का किया श्रृंगार सफल होता है, वही सुहागिन है। मैं बेफिक्र होकर सो रही हूँ, मेरे मन की आशा पूरी हो गई है। हरिहां, जब पति-प्रभु घर में आया तो सब कुछ प्राप्त हो गया॥ ४॥

आसा इती आस कि आस पुराईऐ ॥ सतिगुर भए दइआल त पूरा पाईऐ ॥ मै तनि अवगण बहुतु कि अवगण छाइआ ॥ हरिहां सतिगुर भए दइआल त मनु ठहराइआ ॥ ५ ॥

हे प्रभु! मिलन की आशा इतनी ज्यादा है कि मेरी आशा को पूरी कर दो। जब सतगुरु दया करता है तो आशा पूरी हो जाती है। मेरे तन में अवगुण ही अवगुण भरे हुए हैं। हरिहां, जब सतगुरु की दया हुई तो मेरा मन टिक गया॥ ५॥

कहु नानक बेअंतु बेअंतु धिआइआ ॥ दुतरु इहु संसारु सतिगुरू तराइआ ॥ मिटिआ आवा गउणु जां पूरा पाइआ ॥ हरिहां अंम्रितु हरि का नामु सतिगुर ते पाइआ ॥ ६ ॥

गुरु नानक फुरमाते हैं कि जिसने भी बेअन्त शक्ति परब्रह्म का ध्यान किया है, सतिगुरु ने उसे इस दुस्तर संसार-सागर से पार उतार दिया है। जब पूर्ण प्रभु प्राप्त हो जाता है तो आवागमन मिट जाता है। हरिहां, हरि का नाम अमृतमय है, जो सतिगुरु से प्राप्त होता है॥ ६॥

मेरै हाथि पदमु आगनि सुख बासना ॥ सखी मोरै कंठि रतंनु पेखि दुखु नासना ॥ बासउ संगि गुपाल सगल सुख रासि हरि ॥ हरिहां रिधि सिधि नव निधि बसहि जिसु सदा करि ॥ ७ ॥

मेरे हाथ में पदम चिन्ह है, घर आंगन में सुख ही सुख हो गया है। हे सखी! मेरे गले में हरिनाम रूपी रत्न है, जिसे देखकर दुख भाग गए हैं। जो सर्व सुखों का घर है, मैं उस हरि के साथ रहती हूँ। हरिहां, सब ऋद्धियाँ-सिद्धियाँ एवं नौ निधियां सदा प्रभु के हाथ में रहती हैं॥ ७॥

पर त्रिअ रावणि जाहि सेई ता लाजीअहि ॥ नितप्रति हिरहि पर दरबु छिद्र कत ढाकीअहि ॥ हरि गुण रमत पवित्र सगल कुल तारई ॥ हरिहां सुनते भए पुनीत पारब्रहमु बीचारई ॥ ८ ॥

जो पराई नारी के साथ रंगरलियां मनाते हैं, ऐसे लोग शर्मिन्दा ही होते हैं। जो लोग प्रतिदिन पराया धन चुराने में लगे रहते हैं, उनके ऐब कैसे ढंके जा सकते हैं। ईश्वर का गुणगान करने से मन पवित्र हो जाता है और पूरी कुल की मुक्ति हो जाती है। हरिहां, जो व्यक्ति परब्रह्म का चिंतन करते हैं, उसका यशोगान सुनते हैं, वे पवित्र हो जाते हैं॥ ८॥

ऊपरि बनै अकासु तलै धर सोहती ॥ दह दिस चमकै बीजुलि मुख कउ जोहती ॥ खोजत फिरउ बिदेसि पीउ कत पाईऐ ॥ हरिहां जे मसतकि होवै भागु त दरसि समाईऐ ॥ ९ ॥

ऊपर आकाश टिका हुआ है और नीचे हरी-भरी सुन्दर धरती है। दसों दिशाओं में चमकती बिजली इसके मुख को देखती है। देस-परदेस खोजती फिर रही हूँ, प्रभु को कैसे पाया जा सकता है। हरिहां, यदि माथे पर भाग्य हो तो दर्शन प्राप्त हो जाते हैं॥ ९॥

डिठे सभे थाव नही तुधु जेहिआ ॥ बधोहु पुरखि बिधातै तां तू सोहिआ ॥ वसदी सघन अपार अनूप रामदास पुर ॥ हरिहां नानक कसमल जाहि नाइऐ रामदास सर ॥ १० ॥

{यहाँ पर गुरु जी ने गुरु रामदास की नगरी अमृतसर की सराहना की है।}

हे गुरु की नगरी! मैंने सब स्थानों को देखा है, लेकिन तेरे जैसी कोई नगरी नहीं। दरअसल कर्ता पुरुष विधाता ने स्वयं तुझे बनाया तो ही तू शोभा दे रही है। अनुपम रामदासपुर (अमृतसर) में अनेक लोग रहते हैं। नानक कहते हैं कि यहां रामदास सरोवर में स्नान करने से सब पाप-दोष दूर हो जाते हैं॥ १०॥

चात्रिक चित सुचित सु साजनु चाहीऐ ॥ जिसु संगि लागे प्राण तिसै कउ आहीऐ ॥ बनु बनु फिरत उदास बूंद जल कारणे ॥ हरिहां तिउ हरि जनु मांगै नामु नानक बलिहारणे ॥ ११ ॥

चातक की तरह एकाग्रचित होकर सज्जन प्रभु से प्रेम करना चाहिए। जिससे प्राणों से बढ़कर प्रेम लग जाए, उसी को चाहना चाहिए। जैसे पपीहा स्वाति बूँद के लिए उदास होकर वन-वन भटकता है, वैसे ही हरिभक्त हरिनाम की कामना करते हैं। नानक फुरमाते हैं— हम तो उन जिज्ञासुओं पर कुर्बान जाते हैं॥ ११॥

मित का चितु अनूपु मरंमु न जानीऐ ॥ गाहक गुनी अपार सु ततु पछानीऐ ॥ चितहि चितु समाइ त होवै रंगु घना ॥ हरिहां चंचल चोरहि मारि त पावहि सचु धना ॥ १२ ॥

मित्र (प्रभु) का दिल अनुपम है, उसका रहस्य कोई नहीं जानता। गुणों के ग्राहक तथ्य को पहचान लेते हैं कि यदि दिल प्रभु में समा जाए तो अत्यंत आनंद प्राप्त होता है। हरिहां, अगर कामादिक चंचल चोरों को मार दिया जाए तो सच्चा धन (प्रभु) प्राप्त हो जाता है॥ १२॥

सुपनै ऊभी भई गहिओ की न अंचला ॥ सुंदर पुरख बिराजित पेखि मनु बंचला ॥ खोजउ ता के चरण कहहु कत पाईऐ ॥ हरिहां सोई जतंनु बताइ सखी प्रिउ पाईऐ ॥ १३ ॥

सपने में प्रभु को देखकर मैं उठकर बैठ गई लेकिन मैंने उसका आंचल क्यों नहीं पकड़ा। आप ही वजह बताते हैं कि प्रियतम प्रभु के सुन्दर रूप को देखकर मन मोहित हो गया था, इसलिए ध्यान न दिया। मैं उसके चरण ढूँढ रही हूँ, बताओ वह मुझे कैसे प्राप्त हो सकता है। हे सखी! वही उपाय बताना, जिससे प्रिय-प्रभु को पा लिया जाए॥ १३॥

नैण न देखहि साध सि नैण बिहालिआ ॥ करन न सुनही नादु करन मुंदि घालिआ ॥ रसना जपै न नामु तिलु तिलु करि कटीऐ ॥ हरिहां जब बिसरै गोबिद राइ दिनो दिनु घटीऐ ॥ १४ ॥

जो आँखें साधुओं के दर्शन नहीं करतीं, वे बेहाल हो जाती हैं। जो कान परमात्मा का भजन नहीं सुनते, उनको बंद कर देना चाहिए। जो जिह्वा हरिनाम नहीं जपती, उसके टुकड़े कर-करके काट देना चाहिए। हरिहां, जब परमात्मा भूल जाता है तो प्रतिदिन जीवन खत्म हो जाता है॥ १४॥

पंकज फाथे पंक महा मद गुंफिआ ॥ अंग संग उरझाइ बिसरते सुंफिआ ॥ है कोऊ ऐसा मीतु जि तोरै बिखम गांठि ॥ नानक इकु स्रीधर नाथु जि टूटे लेइ सांठि ॥ १५ ॥

भंवरे का पंख कमल-पुष्प की खुशबू में मदमस्त होकर उसी में फंस जाता है। फिर पंखुड़ियों से उलझ कर उसे उड़ना ही भूल जाता है। क्या कोई ऐसा मित्र है जो संसार की विषम गांठ को तोड़ दे। गुरु नानक कथन करते हैं— केवल एक मालिक प्रभु ही है जो अपने से टूटे हुए को जोड़ लेता है॥ १५॥

धावउ दसा अनेक प्रेम प्रभ कारणे ॥ पंच सतावहि दूत कवन बिधि मारणे ॥ तीखण बाण चलाइ नामु प्रभ ध्याईऐ ॥ हरिहां महां बिखादी घात पूरन गुरु पाईऐ ॥ १६ ॥

प्रभु प्रेम की खातिर मैं अनेक दिशाओं में दौड़ता फिर रहा हूँ। काम-क्रोध रूपी पाँच दुष्ट मुझे तंग कर रहे हैं, इनको किस उपाय से मारा जाए। (उत्तर—) प्रभु-नाम का ध्यान करो, यही तीक्षण बाण है। हरिहां, पूर्ण गुरु को पाकर महां दुखदायक विकारों का अन्त हो जाता है॥ १६॥

सतिगुर कीनी दाति मूलि न निखुटई ॥ खावहु भुंचहु सभि गुरमुखि छुटई ॥ अंम्रितु नामु निधानु दिता तुसि हरि ॥ नानक सदा अराधि कदे न जांहि मरि ॥ १७ ॥

सतगुरु ने हरिनाम रूपी ऐसा दान दिया है, जो कभी खत्म नहीं होता। सब इसका भोग (अर्थात् हरि-भजन) करो, गुरु के सान्निध्य में संसार के बन्धनों से मुक्ति हो जाती है। परमेश्वर ने प्रसन्न होकर हमें सुखों का घर अमृतमय हरिनाम दिया है। नानक प्रार्थना करते हैं कि हे सज्जनो! सदैव हरि की आराधना करो, जन्म-मरण का चक्र छूट जाता है॥ १७॥

जिथै जाए भगतु सु थानु सुहावणा ॥ सगले होए सुख हरि नामु धिआवणा ॥ जीअ करनि जैकारु निंदक मुए पचि ॥ साजन मनि आनंदु नानक नामु जपि ॥ १८ ॥

जहाँ भक्त जाता है, वह स्थान खुशहाल हो जाता है। हरिनाम का ध्यान करने से सब ओर सुख प्राप्त हो जाते हैं। सब जीव भक्त की जय-जयकार करते हैं परन्तु निन्दक दुखों में जलते हैं। गुरु नानक कथन करते हैं– हरिनाम का जाप करने से सज्जनों के मन में आनंद बना रहता है॥ १८॥

पावन पतित पुनीत कतह नही सेवीऐ ॥ झूठै रंगि खुआरु कहां लगु खेवीऐ ॥ हरिचंदउरी पेखि काहे सुखु मानिआ ॥ हरिहां हउ बलिहारी तिंन जि दरगहि जानिआ ॥ १६ ॥

जो पतितों को पावन करने वाला है, उस पावन-स्वरूप ईश्वर की हम कभी उपासना नहीं करते। संसार के झूठे रंगों में परेशान होते हैं तो इस तरह कब तक गुजारा होगा। हरिश्चन्द्र की नगरी समान संसार को देखकर सुख मानते हैं। हरिहां, हम तो उन भक्तों पर कुर्बान जाते हैं, जो प्रभु के दरबार में प्रतिष्ठा के पात्र बने हैं॥ १६॥

कीने करम अनेक गवार बिकार घन ॥ महा दुरगंधत वासु सठ का छारु तन ॥ फिरतउ गरब गुबारि मरणु नह जानई ॥ हरिहां हरिचंदउरी पेखि काहे सचु मानई ॥ २० ॥

मूर्ख व्यक्ति पाप-विकारयुक्त अनेक कर्म करता है। वह महा बदबूदार स्थान में रहता है और इस प्रकार मूर्ख का शरीर धूल में मिल जाता है। वह हरदम अहंकार में लीन रहता है और मौत को भी भुला देता है। हरिहां, वह नाशवान संसार को देखकर उसे ही सत्य मानता है॥ २०॥

जिस की पूजै अउध तिसै कउणु राखई ॥ बैदक अनिक उपाव कहां लउ भाखई ॥ एको चेति गवार काजि तेरै आवई ॥ हरिहां बिनु नावै तनु छारु ब्रिथा सभु जावई ॥ २१ ॥

जिसकी जिन्दगी के दिन पूरे हो जाते हैं तो फिर भला उसे मौत के मुँह से कौन बचा सकता है। चिकित्सक चाहे अनेक उपाय, दवा-परहेज एवं हिदायतें देता रहे, पर सब व्यर्थ है। अरे गंवार ! केवल परमात्मा का चिंतन कर, यही तेरे काम आना है। हरिहां, हरिनाम स्मरण बिना शरीर धूल समान है और सब वृथा ही जाता है॥ २१॥

अउखधु नामु अपारु अमोलकु पीजई ॥ मिलि मिलि खावहि संत सगल कउ दीजई ॥ जिसै परापति होइ तिसै ही पावणे ॥ हरिहां हउ बलिहारी तिंन्ह जि हरि रंगु रावणे ॥ २२ ॥

हरिनाम अमूल्य अपार औषधि है, इसका पान करना चाहिए। संत पुरुष मिलकर इसका सेवन करते हैं और अन्य जिज्ञासुओं को भी देते हैं। वही इस दवा को पाता है, जिसे संतों की प्राप्ति होती है। हरिहां, हम उन जिज्ञासुओं पर बलिहारी जाते हैं, जो परमात्मा के रंग में लीन रहते हैं॥ २२॥

वैदा संदा संगु इकठा होइआ ॥ अउखद आए रासि विचि आपि खलोइआ ॥ जो जो ओना करम सुकरम होइ पसरिआ ॥ हरिहां दूख रोग सभि पाप तन ते खिसरिआ ॥ २३ ॥

संतों की मण्डली वैद्य रूप में इकट्ठा होती है। तब हरिनाम रूपी औषधि अपना पूरा असर करती है, क्योंकि इसमें ईश्वर स्वयं विराजमान होता है। वे जो-जो कर्म करते हैं, वे सुकर्म बनकर लोगों में फैलते हैं। हरिहां, इस तरह दुख-रोग एवं सब पाप शरीर से निवृत्त हो जाते हैं॥ २३॥

चउबोले महला ५ ੧ਓ सतिगुर प्रसादि ॥

वह परब्रह्म केवल एक (ओंकार-स्वरूप) है, सतगुरु की कृपा से प्राप्ति होती है।

{एक छंद का नाम 'चउबोले' है, इसमें पंचम गुरु अर्जुन देव जी के शिष्य सम्मन, उसका पुत्र मूसन, जमाल एवं पतंग के संबंध में वचन व्यक्त किए गए हैं। सम्मन एवं मूसन शाहबाज़पुर के वासी थे, जो चोटी के कारीगर होने के कारण लाहौर में काम-धंधा करते थे। लाहौर में पतंग नामक एक धनवान था, जो धर्मात्मा एवं गुरु-घर का प्रेमी था और जमाल एक पठान था}

संमन जउ इस प्रेम की दम क्यिहु होती साट ॥ रावन हुते सु रंक नहि जिनि सिर दीने काटि ॥ १ ॥

हे सम्मन ! यदि प्रेम की खरीदारी धन-दौलत से हो सकती तो लंकापति रावण जैसा बादशाह कंगाल नहीं था, जिसने शिव को प्रसन्न करने के लिए ग्यारह बार अपना सिर काट कर भेंट कर दिया था॥ १॥

प्रीति प्रेम तनु खचि रहिआ बीचु न राई होत ॥ चरन कमल मनु बेधिओ बूझनु सुरति संजोग ॥ २ ॥

जिसका मन अपने प्रियतम के प्रेम में लीन रहता है, उसके भीतर थोड़ा-सा भी फर्क नहीं होता। मन तो प्रियतम के चरण-कमल में बिंध जाता है, अन्तरात्मा प्रेम लगन में लीन रहकर चेतन हो जाती है॥ २॥

सागर मेर उदिआन बन नव खंड बसुधा भरम ॥ मूसन प्रेम पिरंम कै गनउ एक करि करम ॥ ३ ॥

सागर, पर्वत, उद्यान, वन, नवखण्ड एवं धरती का भ्रमण कोई महत्व नहीं रखता। हे मूसन ! प्रियतम से प्रेम ही उत्तम कर्म माना जाता है, सच्चा प्रेमी सब पार कर जाता है॥ ३॥

मूसन मसकर प्रेम की रही जु अंबरु छाइ ॥ बीधे बांधे कमल महि भवर रहे लपटाइ ॥ ४ ॥

हे मूसन ! जिनके दिल रुपी अंबर में प्रेम की चांदनी छाई रहती है, वे कमल-फूल से भंवरे की तरह प्रेम में ही लिपटे रहते हैं॥ ४॥

जप तप संजम हरख सुख मान महत अरु गरब ॥ मूसन निमखक प्रेम परि वारि वारि देंउ सरब ॥ ५ ॥

पूजा-पाठ, संयम, खुशी, सुख मान-प्रतिष्ठा एवं गर्व इत्यादि हे मूसन ! थोड़े-से प्रेम की खातिर सब न्यौछावर कर दो॥ ५॥

मूसन मरमु न जानई मरत हिरत संसार ॥ प्रेम पिरंम न बेधिओ उरझिओ मिथ बिउहार ॥ ६ ॥

हे मूसन! संसार के लोग प्रेम का भेद नहीं जानते, मृत्यु के मुँह में जा रहे हैं और लुट रहे हैं। वे प्रियतम के प्रेम में लीन नहीं होते और झूठे धंधों में फँसे हुए हैं॥ ६॥

घबु दबु जब जारीऐ बिछुरत प्रेम बिहाल ॥ मूसन तब ही मूसीऐ बिसरत पुरख दइआल ॥ ७ ॥

जब किसी के घर धन-दौलत खत्म हो जाता है तो वह प्रेम के कारण वियोग में दुखी होता है। हे मूसन! दरअसल यह तभी लुटता है, जब दयालु प्रभु भूल जाता है॥ ७॥

जा को प्रेम सुआउ है चरन चितव मन माहि ॥ नानक बिरही ब्रहम के आन न कतहू जाहि ॥ ८ ॥

जिसे प्रेम लग जाता है, उसका मन प्रभु-चरणों में ही टिका रहता है। नानक का कथन है कि ब्रह्म से प्रेम करने वाले जिज्ञासु फिर अन्य कहीं नहीं जाते॥ ८॥

लख घाटीं ऊंचौ घनो चंचल चीत बिहाल ॥ नीच कीच निम्रित घनी करनी कमल जमाल ॥ ९ ॥

चंचल मन अनेकों ऊँची चोटियों पर चढ़ने का प्रयास करता है, परन्तु दुख पाता है। हे जमाल! कीचड़ को नीच माना जाता है, परन्तु विनम्र है, इसी से कमल का फूल उत्पन्न होता है॥ ९॥

कमल नैन अंजन सिआम चंद्र बदन चित चार ॥ मूसन मगन मरंम सिउ खंड खंड करि हार ॥ १० ॥

वह कमलनयन, जिसके नयनों में अञ्जन है, वह श्याम सुन्दर, जिसका मुख चन्द्र सरीखा है, चित को चुराने वाला है। हे मूसन! उसके प्रेम में लीन हूँ, उसके लिए गले के हार के टुकड़े-टुकड़े कर दूँ॥ १०॥

मगनु भइओ प्रिअ प्रेम सिउ सूध न सिमरत अंग ॥ प्रगटि भइओ सभ लोअ महि नानक अधम पतंग ॥ ११ ॥

प्रभु-प्रेम में इतना मग्न हो गया हूँ कि उसकी स्मृति में कोई होश नहीं रही। नानक का कथन है कि पतंगा स्वयं तो जल जाता है परन्तु दीए की ज्योति से अलग नहीं होता, इसी कारण पतंगे की कीर्ति लोक-प्रख्यात है॥ ११॥

सलोक भगत कबीर जीउ के १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

वह परब्रह्म केवल एक (ओंकार-स्वरूप) है, सतगुरु की कृपा से प्राप्ति होती है।

कबीर मेरी सिमरनी रसना ऊपरि रामु ॥ आदि जुगादी सगल भगत ता को सुखु बिस्रामु ॥ १ ॥

कबीर जी कथन करते हैं— जीभ से 'राम-राम' जपना ही मेरी माला है। जब से सृष्टि बनी है, युग-युगांतर सब भक्तों को इसी से सुख-शान्ति प्राप्त हो रही है॥ १॥

कबीर मेरी जाति कउ सभु को हसनेहारु ॥ बलिहारी इस जाति कउ जिह जपिओ सिरजनहारु ॥ २ ॥

कबीर जी कथन करते हैं कि मेरी (जुलाहा) जाति पर हर व्यक्ति हँसी उड़ाता था परन्तु मैं इस जाति पर बलिहारी जाता हूँ, जिसमें जीवन गुज़ार कर रचनहार परमेश्वर का भजन किया है॥ २॥

कबीर डगमग किआ करहि कहा डुलावहि जीउ ॥ सरब सूख को नाइको राम नाम रसु पीउ ॥ ३ ॥

कबीर जी उद्‌बोधन करते हैं कि हे मनुष्य ! क्यों डावांडोल हो रहा है, किसलिए घबरा रहा है। राम नाम सर्व सुखों का घर है, इसी का रस पान करो॥ ३॥

कबीर कंचन के कुंडल बने ऊपरि लाल जड़ाउ ॥ दीसहि दाधे कान जिउ जिन्ह मनि नाही नाउ ॥ ४ ॥

हे कबीर ! जो हीरे-मोतियों से जड़ित सोने के कुण्डल धारण करते हैं, जिनके मन में परमात्मा का नाम नहीं होता, वे तो ऐसे दिखाई देते हैं, जैसे कान जले हुए हों॥ ४॥

कबीर ऐसा एकु आधु जो जीवत मिरतकु होइ ॥ निरभै होइ कै गुन रवै जत पेखउ तत सोइ ॥ ५ ॥

हे कबीर ! ऐसा कोई एकाध ही होता है, जो जीवन्मुक्त होता है। वह निर्भय होकर ईश्वर के गुणगान में रत रहता है, जिधर देखता है, उसे वही दिखाई देता है॥ ५॥

कबीर जा दिन हउ मूआ पाछै भइआ अनंदु ॥ मोहि मिलिओ प्रभु आपना संगी भजहि गोबिंदु ॥ ६ ॥

हे कबीर ! जिस दिन मेरा अभिमान खत्म हो गया, आनंद ही आनंद उत्पन्न हो गया। मुझे अपना प्रभु मिल गया और अब संत संगियों के साथ भजन ही करता हूँ॥ ६॥

कबीर सभ ते हम बुरे हम तजि भलो सभु कोइ ॥ जिनि ऐसा करि बूझिआ मीतु हमारा सोइ ॥ ७ ॥

कबीर जी उद्‌बोधन करते हैं– जिसने इस तथ्य को समझ लिया है कि हम सबसे बुरे हैं, हमें छोड़कर हर कोई भला है, वही हमारा परम मित्र है॥ ७॥

कबीर आई मुझहि पहि अनिक करे करि भेस ॥ हम राखे गुर आपने उनि कीनो आदेसु ॥ ८ ॥

हे कबीर ! माया अनेकों रूप धारण करके मेरे पास आई, लेकिन गुरु-परमेश्वर ने हमारी रक्षा की है, अतः वह सिर झुका कर वापिस चली गई॥ ८॥

कबीर सोई मारीऐ जिह मूऐ सुखु होइ ॥ भलो भलो सभु को कहै बुरो न मानै कोइ ॥ ९ ॥

कबीर जी आग्रह करते हैं– उस अहम् को मारो, जिसके खत्म होने से परम सुख प्राप्त होता है। उसको मारने से हर कोई भला ही कहता है और कोई बुरा नहीं मानता॥ ६॥

कबीर राती होवहि कारीआ कारे ऊभे जंत ॥ लै फाहे उठि धावते सि जानि मारे भगवंत ॥ १० ॥

कबीर जी बतलाते हैं कि जब अंधेरी रात होती है तो चोर-लुटेरे बुरे काम के लिए उठ जाते हैं। वे चाकू-पिस्तौल इत्यादि सामान लेकर भागते फिरते हैं परन्तु सच मानो ऐसे लोगों को ईश्वर ने ही मारा हुआ है॥ १०॥

कबीर चंदन का बिरवा भला बेढ़िओ ढाक पलास ॥ ओइ भी चंदनु होइ रहे बसे जु चंदन पासि ॥ ११ ॥

{कबीर जी संत-महात्मा की तरफ संकेत करते हैं, जिनकी संगत का लोग लाभ प्राप्त करते हैं।}

हे कबीर ! चन्दन का पौधा भला है, जो ढाक प्लास के पौधों से घिरा रहता है। वस्तुतः चंदन के निकट रहने वाले पौधे भी चन्दन की तरह महकदार हो जाते हैं॥ ११॥

कबीर बांसु बडाई बूडिआ इउ मत डूबहु कोइ ॥ चंदन कै निकटे बसै बांसु सुगंधु न होइ ॥ १२ ॥

कबीर जी चेताते हैं कि बाँस अपने (लम्बे होने के) अभिमान में डूबा रहता है, इसी तरह कोई अपने बड़े होने के अभिमान में मत डूबना। बाँस बेशक चन्दन के निकट रहता है परन्तु सुगन्धित नहीं होता॥ १२॥

कबीर दीनु गवाइआ दुनी सिउ दुनी न चाली साथि ॥ पाइ कुहाड़ा मारिआ गाफलि अपुनै हाथि ॥ १३ ॥

हे कबीर ! दुनिया की खातिर मनुष्य अपना धर्म-ईमान छोड़ देता है परन्तु दुनिया साथ नहीं चलती। गाफिल व्यक्ति अपने हाथ से पाँवों पर कुल्हाड़ा ही मारता है॥ १३॥

कबीर जह जह हउ फिरिओ कउतक ठाओ ठाइ ॥ इक राम सनेही बाहरा ऊजरु मेरै भांइ ॥ १४ ॥

हे कबीर ! मैं जहाँ-जहाँ घूमा हूँ, हर जगह ईश्वर की लीला देखी है। प्यारे प्रभु के बिना मेरे लिए सब उजाड़ है॥ १४॥

कबीर संतन की झुंगीआ भली भठि कुसती गाउ ॥ आगि लगउ तिह धउलहर जिह नाही हरि को नाउ ॥ १५ ॥

हे कबीर ! भले पुरुषों की झोंपड़ी झूठे एवं पापियों के गांव से भली है। उन बड़े-बड़े महलों-कोठियों को आग लगा देनी चाहिए, जहाँ हरिनाम का भजन नहीं होता॥ १५॥

कबीर संत मूए किआ रोईऐ जो अपुने ग्रिहि जाइ ॥ रोवहु साकत बापुरे जु हाटै हाट बिकाइ ॥ १६ ॥

कबीर जी समझाते हैं कि संतों की मृत्यु पर भला क्या रोना, जो अपने सच्चे घर (प्रभु-चरणों) में चले जाते हैं। दरअसल उन बदनसीब मायावी लोगों पर रोना चाहिए, जो बुरे कर्मों के कारण (जन्म-मरण के चक्र में) पुनः बिकते फिरते हैं॥ १६॥

कबीर साकतु ऐसा है जैसी लसन की खानि ॥ कोने बैठे खाईऐ परगट होइ निदानि ॥ १७ ॥

कबीर जी बतलाते हैं– जैसी लहसुन की खान होती है, ऐसा ही मायावी पुरुष होता है, ज्यों कोने में बैठकर लहसुन खाया जाए तो उसकी दुर्गन्ध आसपास आने लग जाती है, इसी तरह उसके कर्म भी ज़ाहिर हो जाते हैं॥ १७॥

कबीर माइआ डोलनी पवनु झकोलनहारु ॥ संतहु माखनु खाइआ छाछि पीऐ संसारु ॥ १८ ॥

कबीर जी उद्बोधन करते हैं– माया मटकी के बराबर है और साँसें मथनी है। संत पुरुष परमात्मा का स्मरण करके माखन खाते हैं और संसार के लोग छाछ पीते हैं॥ १८॥

कबीर माइआ डोलनी पवनु वहै हिव धार ॥ जिनि बिलोइआ तिनि खाइआ अवर बिलोवनहार ॥ १६ ॥

हे कबीर ! यह माया दूध की मटकी है, जिसमें श्वासों की ठण्डी धारा चल रही है। जो ठीक तरह मंथन करता है, वह माखन खाता है, अन्य लोग मंथन ही करते रहते हैं॥ १६॥

कबीर माइआ चोरटी मुसि मुसि लावै हाटि ॥ एकु कबीरा ना मुसै जिनि कीनी बारह बाट ॥ २० ॥

कबीर जी कहते हैं– इस माया लुटेरी ने लोगों को धोखा दे-देकर अपनी दुकान सजाई है। यह केवल कबीर को धोखा नहीं दे सकी, जिसने इसके काट कर बारह टुकड़े कर दिए॥ २०॥

कबीर सूखु न एंह जुगि करहि जु बहुतै मीत ॥ जो चितु राखहि एक सिउ ते सुखु पावहि नीत ॥ २१ ॥

कबीर जी समझाते हैं– बहुत अधिक मित्र बनाने से इस दुनिया में सुख प्राप्त नहीं होता। जो अपने दिल में केवल परमात्मा को बसाए रखता है, वास्तव में वह नित्य ही सुख पाता है॥ २१॥

कबीर जिसु मरने ते जगु डरै मेरे मनि आनंदु ॥ मरने ही ते पाईऐ पूरनु परमानंदु ॥ २२ ॥

कबीर जी उद्बोधन करते हैं– जिस मौत से पूरा जगत डर रहा है, उस मौत से मेरे मन में आनंद ही आनंद हो रहा है। क्योंकि मरने के बाद ही पूर्ण परमानंद प्राप्त होता है॥ २२॥

राम पदारथु पाइ कै कबीरा गांठि न खोल्ह ॥ नही पटणु नही पारखू नही गाहकु नही मोलु ॥ २३ ॥

कबीर जी उद्‌बोधन करते हैं– परमात्मा को पाकर गाँठ मत खोल (अर्थात् लोगों को मत बता) क्योंकि न ही कोई भक्ति स्थल है, न ही पारखी है, न ही कोई भक्ति करने वाला ग्राहक है और न ही कोई महानता को समझता है॥ २३॥

कबीर ता सिउ प्रीति करि जा को ठाकुरु रामु ॥ पंडित राजे भूपती आवहि कउने काम ॥ २४ ॥

कबीर जी उपदेश करते हैं कि हे सज्जनो ! उन संत-भक्तों से प्रेम करो, जिन्होंने राम को अपना स्वामी मान लिया है। पण्डित, राजा-महाराजा किसी काम नहीं आने॥ २४॥

कबीर प्रीति इक सिउ कीए आन दुबिधा जाइ ॥ भावै लांबे केस करु भावै घररि मुडाइ ॥ २५ ॥

कबीर जी बतलाते हैं कि जब परमात्मा से प्रेम लग जाता है तो अन्य सब दुविधाएँ दूर हो जाती हैं। चाहे लम्बी जटाओं वाला साधु हो या सिर मुंडवा सन्यासी हो॥ २५॥

कबीर जगु काजल की कोठरी अंध परे तिस माहि ॥ हउ बलिहारी तिन कउ पैसि जु नीकसि जाहि ॥ २६ ॥

कबीर जी कथन करते हैं कि यह जगत (मोह, माया रूपी) काजल की कोठरी है और अज्ञानांध जीव इसमें पड़े रहते हैं। मैं उन सज्जनों पर कुर्बान जाता हूँ, जो कालिमा से बाहर निकल जाते हैं॥ २६॥

कबीर इहु तनु जाइगा सकहु त लेहु बहोरि ॥ नांगे पावहु ते गए जिन के लाख करोरि ॥ २७ ॥

हे कबीर ! यह तन नाश होना ही है, इसे बचाने का बेशक कोई भी उपाय कर लो, इसे बचा नहीं सकते। जिनके पास लाखों-करोड़ों रुपए थे, वे भी नंगे पाँव चले गए हैं॥ २७॥

कबीर इहु तनु जाइगा कवनै मारगि लाइ ॥ कै संगति करि साध की कै हरि के गुन गाइ ॥ २८ ॥

कबीर जी उद्‌बोधन करते हैं– यह तन नाशवान् है, इसे किसी अच्छे रास्ते पर जरूर लगाओ या तो साधु पुरुषों की संगत करो या फिर भगवान का गुणगान करो॥ २८॥

कबीर मरता मरता जगु मूआ मरि भी न जानिआ कोइ ॥ ऐसे मरने जो मरै बहुरि न मरना होइ ॥ २९ ॥

हे कबीर ! मरता-मरता संसार मर रहा है, लेकिन कोई भी मरने का भेद नहीं जानता। ऐसे मरना चाहिए कि पुनः मृत्यु प्राप्त न हो अर्थात् जन्म-मरण से मुक्ति ही मिल जाए॥ २९॥

कबीर मानस जनमु दुलंभु है होइ न बारै बार ॥ जिउ बन फल पाके भुइ गिरहि बहुरि न लागहि डार ॥ ३० ॥

कबीर जी उपदेश करते हैं कि मनुष्य जन्म दुर्लभ है, यह बार-बार प्राप्त नहीं होता। जैसे वन में फल पक कर भूमि पर गिर जाए तो दोबारा डाली पर नहीं लगता॥ ३०॥

कबीरा तुही कबीरु तू तेरो नाउ कबीरु ॥ राम रतनु तब पाईऐ जउ पहिले तजहि सरीरु ॥ ३१ ॥

कबीर जी उद्बोधन करते हैं कि तू ही कबीर है, तेरा नाम कबीर है (आत्मा-परमात्मा अभिन्न है) जब पहले संसारिक शरीर छोड़ा जाता है तो ही राम प्राप्त होता है॥ ३१॥

कबीर झंखु न झंखीऐ तुमरो कहिओ न होइ ॥ करम करीम जु करि रहे मेटि न साकै कोइ ॥ ३२ ॥

कबीर जी उद्बोधन करते हैं— फालतू बातें नहीं करनी चाहिएँ, तुम्हारे कहने से कुछ नहीं हो सकता। क्योंकि ईश्वर जो कुछ कर रहा है, उसे कोई बदल नहीं सकता॥ ३२॥

कबीर कसउटी राम की झूठा टिकै न कोइ ॥ राम कसउटी सो सहै जो मरि जीवा होइ ॥ ३३ ॥

हे कबीर! राम की कसौटी पर कोई भी झूठा व्यक्ति टिक नहीं पाता (उसका झूठ सामने आ ही जाता है) राम की कसौटी पर वही सच्चा सिद्ध होता है, जो मरजीवा होता है॥ ३३॥

कबीर ऊजल पहिरहि कापरे पान सुपारी खाहि ॥ एकस हरि के नाम बिनु बाधे जम पुरि जांहि ॥ ३४ ॥

कबीर जी उद्बोधन करते हैं कि बेशक साफ-सुथरे कपड़े पहन लिए जाएँ, चाहे पान-सुपारी खाया जाए, लेकिन परमात्मा के नाम बिन तो बांधकर यमपुरी ले जाया जाता है॥ ३४॥

कबीर बेड़ा जरजरा फूटे छेंक हजार ॥ हरूए हरूए तिरि गए डूबे जिन सिर भार ॥ ३५ ॥

हे कबीर! जब जीवन रूपी बेड़ा टूट-फूट कर पुराना हो जाता है तो उसमें हजारों छेद हो जाते हैं। शुभ कर्म करने वाले हल्के (भले पुरुष) तो तैर कर किनारे लग जाते हैं परन्तु जिनके सिर पर पापों का बोझ लदा होता है, वे डूब जाते हैं॥ ३५॥

कबीर हाड़ जरे जिउ लाकरी केस जरे जिउ घासु ॥ इहु जगु जरता देखि कै भइओ कबीरु उदासु ॥ ३६ ॥

हे कबीर! मनुष्य की हड्डियाँ ऐसे जलती हैं, जैसे लकड़ियाँ होती हैं और सिर के बाल घास की तरह जलते हैं। कबीर जी कथन करते हैं कि इस प्रकार लोगों को जलता देखकर मन उदास हो गया है॥ ३६॥

कबीर गरबु न कीजीऐ चाम लपेटे हाड ॥ हैवर ऊपरि छत्र तर ते फुनि धरनी गाड ॥ ३७ ॥

कबीर जी कथन करते हैं— तन पर अभिमान नहीं करना चाहिए, यह तो हड्डियों पर लपेटी चमड़ी मात्र है। जो घोड़ों पर सवारी एवं छत्र के नीचे विराजमान थे, अंततः वे भी धरती में गाड़ दिए गए॥ ३७॥

कबीर गरबु न कीजीऐ ऊचा देखि अवासु ॥ आजु कालि्ह भुइ लेटणा ऊपरि जामै घासु ॥ ३८॥

कबीर जी चेताते हैं कि ऊँचा मकान देखकर अभिमान नहीं करना चाहिए, क्योंकि आज अथवा कल ज़मीन पर लेटना है और ऊपर घास उग जाएगी॥ ३८॥

कबीर गरबु न कीजीऐ रंकु न हसीऐ कोइ ॥ अजहु सु नाउ समुंद्र महि किआ जानउ किआ होइ ॥ ३९ ॥

कबीर जी चेताते हैं कि अपने अमीर होने का अभिमान नहीं करना चाहिए और न ही किसी गरीब का मजाक उड़ाना चाहिए, क्योंकि जीवन-नैया अभी संसार-समुद्र में ही है, क्या पता पल में क्या हो जाए॥ ३९॥

कबीर गरबु न कीजीऐ देही देखि सुरंग ॥ आजु कालि्ह तजि जाहुगे जिउ कांचुरी भुयंग ॥ ४० ॥

हे कबीर! सुन्दर देह को देखकर अहंकार नहीं करना चाहिए, आज अथवा कल इसे छोड़ जाना है, जैसे साँप केंचुली छोड़ जाता है॥ ४०॥

कबीर लूटना है त लूटि लै राम नाम है लूटि ॥ फिरि पाछै पछुताहुगे प्रान जाहिंगे छूटि ॥ ४१ ॥

कबीर जी उद्बोधन करते हैं– हे जीव! अगर लूटना है तो राम नाम लूट ले, जितना हो सके लूट ले (अर्थात् परमात्मा का भजन कर ले) जब प्राण छूट जाएँगे तो बाद में पछतावा होगा॥ ४१॥

कबीर ऐसा कोई न जनमिओ अपनै घरि लावै आगि ॥ पांचउ लरिका जारि कै रहै राम लिव लागि ॥ ४२ ॥

हे कबीर! ऐसा कोई माई का लाल पैदा नहीं हुआ, जिसने अपने घर (अहम्) को आग लगाई हो या फिर पाँच लड़कों (अर्थात् विकारों) को जलाकर परमात्मा में ध्यान लगाया हो॥ ४२॥

को है लरिका बेचई लरिकी बेचै कोइ ॥ साझा करै कबीर सिउ हरि संगि बनजु करेइ ॥ ४३ ॥

क्या कोई ऐसा है, जो अपने लड़के (मोह) एवं लड़की (आशा-आकांक्षा) को बेच डाले। अगर है तो फिर वह कबीर के साथ हिस्सेदारी करके हरि-भजन का व्यापार कर सकता है॥ ४३॥

कबीर इह चेतावनी मत सहसा रहि जाइ ॥ पाछै भोग जु भोगवे तिन को गुडु लै खाहि ॥ ४४ ॥

कबीर जी कहते हैं कि हे मनुष्य! यह हमारी चेतावनी है, ताकि कोई शक की गुंजायश न रह जाए। भूतकाल में जो भोग-विलास किए, उनका अब कोई महत्व नहीं, उसका तो गुड़ भी खाने को नहीं मिल सकता॥ ४४॥

कबीर मै जानिओ पड़िबो भलो पड़िबे सिउ भल जोगु ॥ भगति न छाडउ राम की भावै निंदउ लोगु ॥ ४५ ॥

कबीर जी कहते हैं– (काशी में ब्राह्मणों को वेद-शास्त्र पढ़ता देखकर) पहले मैं विद्या को भला मान बैठा था और विद्या के उपरांत मैंने योग-साधना को उत्तम मान लिया। आखिरकार मेरी भक्ति में पूर्ण निष्ठा हुई। अब लोग भला मेरी कितनी ही निन्दा करें परन्तु मैं राम की भक्ति नहीं छोड़ूँगा॥ ४५॥

कबीर लोगु कि निंदै बपुड़ा जिह मनि नाही गिआनु ॥ राम कबीरा रवि रहे अवर तजे सभ काम ॥ ४६ ॥

हे कबीर! जिनके मन में ज्ञान नहीं, बेचारे ऐसे लोगों की निन्दा से कोई फर्क नहीं पड़ता। क्योंकि कबीर तो अन्य सब काम छोड़कर परमात्मा का ही भजन कर रहा है॥ ४६॥

कबीर परदेसी कै घाघरै चहु दिसि लागी आगि ॥ खिंथा जलि कोइला भई तागे आंच न लाग ॥ ४७ ॥

हे कबीर! जीव-परदेसी के जीवन रूपी घाघरे में चारों तरफ से आग लगी हुई है। शरीर रूपी गुदड़ी जलकर कोयला हो चुकी है परन्तु आत्मा रूपी सूत्र को जरा-सी आंच नहीं लगी॥४७॥

कबीर खिंथा जलि कोइला भई खापरु फूट मफूट ॥ जोगी बपुड़ा खेलिओ आसनि रही बिभूति ॥ ४८ ॥

हे कबीर! कफनी जलकर कोयला हो गई, जीव रूपी योगी का खप्पर भी टूट-फूट गया है। बेचारा जीव रूपी योगी अपना जीवन-तमाशा रचकर संसार से जा चुका है, अब तो आसन पर राख ही बची है॥ ४८॥

कबीर थोरै जलि माछुली झीवरि मेलिओ जालु ॥ इह टोघनै न छूटसहि फिरि करि समुंदु सम्हालि ॥ ४६ ॥

कबीर जी उद्‌बोधन करते हैं— (जीव रूपी) मछली थोड़े से जल में रहती है, काल रूपी मछुआरा जाल बिछाकर पकड़ लेता है। जीव देवी-देवताओं की अर्चना करके मौत से नहीं बच सकता, अतः समुद्र रूप परमात्मा का स्मरण करना चाहिए॥ ४६॥

कबीर समुंदु न छोडीऐ जउ अति खारो होइ ॥ पोखरि पोखरि ढूढते भलो न कहिहै कोइ ॥ ५० ॥

कबीर जी समझाते हैं कि चाहे पानी कितना ही खारा हो (अर्थात् कितनी ही मुसीबतों का सामना करना पड़े) परमात्मा रूपी समुद्र को नहीं छोड़ना चाहिए। दरअसल छोटे-छोटे तालाबों (देवी-देवताओं) का आसरा ढूँढने से कोई भला नहीं होता॥ ५०॥

कबीर निगुसांएं बहि गए थांघी नाही कोइ ॥ दीन गरीबी आपुनी करते होइ सु होइ ॥ ५१ ॥

कबीर जी कहते हैं कि निगुरे लोग संसार-समुद्र में बह गए हैं, दरअसल लंघाने वाला उनका कोई गुरु रूपी खेवट नहीं था। हमें अपने धर्म एवं विनम्रता में अडिग रहना चाहिए, जो परमात्मा करता है, उसे खुशी-खुशी मानना चाहिए॥ ५१॥

कबीर बैसनउ की कूकरि भली साकत की बुरी माइ ॥ ओह नित सुनै हरि नाम जसु उह पाप बिसाहन जाइ ॥ ५२ ॥

हे कबीर! वैष्णव की कुतिया भली एवं खुशकिस्मत है, परन्तु मायावी पुरुष की माँ बहुत बुरी है, क्योंकि कुतिया तो नित्य परमात्मा का यशोगान सुनती है, लेकिन माँ अपने पुत्र के पापों की कमाई में हिस्सेदार बन जाती है॥ ५२॥

कबीर हरना दूबला इहु हरीआरा तालु ॥ लाख अहेरी एकु जीउ केता बंचउ कालु ॥ ५३ ॥

हे कबीर! जीव रूपी हिरण बहुत कमजोर है, संसार रूपी ताल विषय-विकारों के जल से हरियाला है। जीव तो अकेला है परन्तु उसे लाखों ही पदार्थ रूपी शिकारी फँसाने वाले हैं, फिर यह बेचारा कब तक काल से बच सकता है॥ ५३॥

कबीर गंगा तीर जु घरु करहि पीवहि निरमल नीरु ॥ बिनु हरि भगति न मुकति होइ इउ कहि रमे कबीर ॥ ५४ ॥

कबीर जी कथन करते हैं कि यदि गंगा के किनारे अपना घर बना लिया जाए तो रोज़ पावन जल का पान हो सकता है। लेकिन हरि-भक्ति के बिना मुक्ति नहीं होती। यह कहकर कबीर जी राम-राम करते चले गए॥ ५४॥

कबीर मनु निरमलु भइआ जैसा गंगा नीरु ॥ पाछै लागो हरि फिरै कहत कबीर कबीर ॥ ५५ ॥

कबीर जी कहते हैं कि मेरा मन गंगाजल की तरह पावन हो गया है और कबीर-कबीर कहता प्रभु मेरे पीछे लग गया है॥ ५५॥

कबीर हरदी पीअरी चूंनां ऊजल भाइ ॥ राम सनेही तउ मिलै दोनउ बरन गवाइ ॥ ५६ ॥

कबीर जी कथन करते हैं— हल्दी पीली एवं चूना सफेद रंग का होता है। जब रंग-भेद एवं ऊँची-नीची जाति के भेदभाव को दूर कर दिया जाता है तो भक्त परमात्मा में मिलकर दोनों एक रूप हो जाते हैं॥ ५६॥

कबीर हरदी पीरतनु हरै चून चिहनु न रहाइ ॥ बलिहारी इह प्रीति कउ जिह जाति बरनु कुलु जाइ ॥ ५७ ॥

कबीर जी कथन करते हैं— हल्दी अपना पीलापन छोड़ देती है और चूने में सफेद रंग नहीं रहता। ऐसा प्रेम करने वालों पर मैं कुर्बान जाता हूँ, जिससे ऊँची एवं निम्न जाति, कुल एवं वर्ण का भेद मिट जाता है॥ ५७॥

कबीर मुकति दुआरा संकुरा राई दसएं भाइ ॥ मनु तउ मैगलु होइ रहिओ निकसो किउ कै जाइ ॥ ५८ ॥

कबीर जी समझाते हैं कि मुक्ति का द्वार राई के दसवें भाग के बराबर तंग है। मन अभिमान करके हाथी समान बड़ा हो रहा है तो फिर वह तंग रास्ते में क्योंकर निकल सकता है॥ ५८॥

कबीर ऐसा सतिगुरु जे मिलै तुठा करे पसाउ ॥ मुकति दुआरा मोकला सहजे आवउ जाउ ॥ ५६ ॥

कबीर जी सन्मार्ग बताते हुए कहते हैं कि यदि कोई ऐसा सतिगुरु मिल जाए जो प्रसन्न होकर कृपा करे तो मुक्ति का द्वार खुला हो जाएगा और उस में से सुगम ही आया-जाया जा सकता है॥ ५६॥

कबीर ना मोहि छानि न छापरी ना मोहि घरु नही गाउ ॥ मत हरि पूछै कउनु है मेरे जाति न नाउ ॥ ६० ॥

कबीर जी कहते हैं— न मेरी कोई कुटिया अथवा झोंपड़ी है, न मेरा कोई घर है और न ही रहने को गाँव है। यदि ईश्वर ने पूछ लिया कि तू कौन है ? तो मेरी कोई जाति एवं नाम भी नहीं फिर भला मैं क्या बताऊँगा कि कौन हूँ॥ ६०॥

कबीर मुहि मरने का चाउ है मरउ त हरि कै दुआर ॥ मत हरि पूछै कउनु है परा हमारै बार ॥ ६१ ॥

कबीर जी कहते हैं— मुझे मरने का बहुत चाव है परन्तु मुझे ईश्वर के द्वार पर मरने की ख्वाहिश है। वो इसलिए शायद परमात्मा पूछ ले कि हमारे द्वार पर कौन पड़ा हुआ है॥ ६१॥

कबीर ना हम कीआ न करहिगे ना करि सकै सरीरु ॥ किआ जानउ किछु हरि कीआ भइओ कबीरु कबीरु ॥ ६२ ॥

कबीर जी कहते हैं— न मैंने कुछ (अतीत में) किया है, न ही (भविष्य में) कुछ कर सकूँगा और न ही मेरा शरीर कुछ कर सकता है। मैं यह भी नहीं जानता, सब परमात्मा ने ही किया, जिससे दुनिया में कबीर के नाम से मशहूर हो गया हूँ॥ ६२॥

कबीर सुपनै हू बरड़ाइ कै जिह मुखि निकसै रामु ॥ ता के पग की पानही मेरे तन को चामु ॥ ६३ ॥

कबीर जी कथन करते हैं— सपने में बड़बड़ाते हुए जिस व्यक्ति के मुँह से राम नाम निकले तो हमारी इच्छा है कि हमारे शरीर की चमड़ी उसके पैरों की जूती बन जाए॥ ६३॥

कबीर माटी के हम पूतरे मानसु राखिओ नाउ ॥ चारि दिवस के पाहुने बड बड रूंधहि ठाउ ॥ ६४ ॥

कबीर जी बतलाते हैं— हम मिट्टी के पुतले हैं और हमारा नाम मनुष्य रखा हुआ है, चार दिन के लिए इस संसार में मेहमान के तौर पर आए हैं लेकिन अधिकाधिक स्थानों पर कब्जा जमाने का कार्य करते हैं॥ ६४॥

कबीर महिदी करि घालिआ आपु पीसाइ पीसाइ ॥ तै सह बात न पूछीऐ कबहु न लाई पाइ ॥ ६५ ॥

कबीर जी कहते हैं— मेहंदी की तरह अपने शरीर को पीस-पीस कर (जप-तप करके) मेहनत की। परन्तु फिर भी हे प्रभु! तूने हमारी बात न पूछी और न ही मेहनत करके पीसी हुई मेहंदी को कभी पैरों में लगाया॥ ६५॥

कबीर जिह दरि आवत जातिअहु हटकै नाही कोइ ॥ सो दरु कैसे छोडीऐ जो दरु ऐसा होइ ॥ ६६ ॥

हे कबीर! जिस दर पर आने-जाने में कोई नहीं रोकता, जो प्रभु का दर ऐसा हो, उस दर को कैसे छोड़ा जा सकता है॥ ६६॥

कबीर डूबा था पै उबरिओ गुन की लहरि झबकि ॥ जब देखिओ बेड़ा जरजरा तब उतरि परिओ हउ फरकि ॥ ६७ ॥

कबीर जी कथन करते हैं— मैं संसार-समुद्र में डूबने ही वाला था लेकिन हरि-गुणगान की लहरों के धक्के से बच गया। जब मैंने देखा कि शरीर रूपी बेड़ा पुराना हो गया तो इसमें से तुरंत ही उतर गया॥ ६७॥

कबीर पापी भगति न भावई हरि पूजा न सुहाइ ॥ माखी चंदनु परहरै जह बिगंध तह जाइ ॥ ६८ ॥

कबीर जी कहते हैं– पापी पुरुष को भक्ति अच्छी नहीं लगती और न ही परमात्मा की पूजा-अर्चना से लगाव होता है। ज्यों मक्खी चंदन को छोड़कर जहाँ दुर्गन्ध होती है, वहीं जाती है (वैसे ही पापी पुरुष भक्ति-पूजा को छोड़कर पाप कर्मों की ओर जाता है)॥ ६८॥

कबीर बैदु मूआ रोगी मूआ मूआ सभु संसारु ॥ एकु कबीरा ना मूआ जिह नाही रोवनहारु ॥ ६६ ॥

हे कबीर! बेशक कोई वैद्य है, चाहे कोई रोगी है, पूरा संसार मर रहा है। (अर्थात् ज्ञानी-अज्ञानी, विद्वान या मूर्ख सब मोह-माया की मौत से मर रहे हैं) परन्तु एकमात्र कबीर नहीं मरा, जिसे कोई रोने वाला नहीं॥ ६६॥

कबीर रामु न धिआइओ मोटी लागी खोरि ॥ काइआ हांडी काठ की ना ओह चर्है बहोरि ॥ ७० ॥

कबीर जी उद्बोधन करते हैं, हे लोगो! आपको परमात्मा का न भजन करने की बड़ी बीमारी लग गई है। शरीर रूपी लकड़ी की हांडी दोबारा आग पर नहीं चढ़ती अर्थात् मानव जन्म पुनः प्राप्त नहीं होता॥ ७०॥

कबीर ऐसी होइ परी मन को भावतु कीनु ॥ मरने ते किआ डरपना जब हाथि सिधउरा लीन ॥ ७१ ॥

हे कबीर! ऐसी बात हो गई कि सब अपने मन की इच्छानुसार किया तो फिर अब मौत से क्यों डरना, जब सती होने वाली सिंदूर लगा नारियल हाथ में पकड़ लेती है तो पति के वियोग में जलने को तैयार हो जाती है॥ ७१॥

कबीर रस को गांडो चूसीऐ गुन कउ मरीऐ रोइ ॥ अवगुनीआरे मानसै भलो न कहिहै कोइ ॥ ७२ ॥

हे कबीर! ज्यों रस के लिए गन्ने को चूसना पड़ता है तो फिर गुणों को पाने के लिए कितने ही दुख-कष्टों का सामना करना पड़े, हिम्मत करनी चाहिए। क्योंकि अवगुणी मनुष्य को कोई भला नहीं कहता॥ ७२॥

कबीर गागरि जल भरी आजु काल्हि जैहै फूटि ॥ गुरु जु न चेतहि आपनो अध माझि लीजहिगे लूटि ॥ ७३ ॥

कबीर जी उद्बोधन करते हैं– यह देह रूपी गागर श्वास रूपी जल से भरी हुई है, जिसने आज अथवा कल फूट जाना है। यदि अपने गुरु-परमेश्वर का स्मरण न किया तो रास्ते में ही लूट लिए जाओगे॥ ७३॥

कबीर कूकरु राम को मुतीआ मेरो नाउ ॥ गले हमारे जेवरी जह खिंचै तह जाउ ॥ ७४ ॥

कबीर जी कहते हैं– मैं राम का कुत्ता हूँ और मेरा नाम 'मोती' है। मेरे गले में मालिक ने जंजीर डाली हुई है, वह जिधर खींचता है, उधर ही जाता हूँ॥ ७४॥

कबीर जपनी काठ की किआ दिखलावहि लोइ ॥ हिरदै रामु न चेतही इह जपनी किआ होइ ॥ ७५ ॥

कबीर जी कहते हैं कि हे भाई ! तुलसी-रुद्राक्ष की माला लोगों को क्या दिखाते हो, यदि दिल में परमात्मा का चिंतन नहीं किया तो इस माला का कोई फायदा नहीं॥ ७५॥

कबीर बिरहु भुयंगमु मनि बसै मंतु न मानै कोइ ॥ राम बिओगी ना जीऐ जीऐ त बउरा होइ ॥ ७६ ॥

हे कबीर ! वियोग रूपी सांप जब मन को डंस लेता है तो उस पर किसी मंत्र का असर नहीं होता। ईश्वर-वियोग का दुख व्यक्ति को जिंदा नहीं रहने देता, परन्तु यदि वह जिंदा रहे तो बावला हो जाता है॥ ७६॥

कबीर पारस चंदनै तिन्ह है एक सुगंध ॥ तिह मिलि तेऊ ऊतम भए लोह काठ निरगंध ॥ ७७ ॥

कबीर जी बतलाते हैं— पारस एवं चन्दन में एक समान गुण हैं। पारस को मिलकर लोहा स्वर्ण हो जाता है और चन्दन को मिलकर मामूली लकड़ी खुशबूदार हो जाती है॥ ७७॥

कबीर जम का ठेंगा बुरा है ओहु नही सहिआ जाइ ॥ एकु जु साधू मोहि मिलिओ तिन्हि लीआ अंचलि लाइ ॥ ७८ ॥

हे कबीर ! यम की चोट बहुत बुरी है, इसे सहन नहीं किया जाता। मुझे एक साधु मिल गया है, उसने शरण में लेकर बचा लिया है॥ ७८॥

कबीर बैदु कहै हउ ही भला दारू मेरै वसि ॥ इह तउ बसतु गुपाल की जब भावै लेइ खसि ॥ ७९ ॥

कबीर जी कथन करते हैं कि वैद्य लोगों को कहता है कि मैं ही उत्तम हूँ, मेरे पास हर रोग का इलाज है। परन्तु वह इस बात से अनजान है कि कोई (वैद्य) भी मौत के मुँह से बचा नहीं सकता, क्योंकि यह जीवन तो ईश्वर की देन है, जब चाहता है, छीन लेता है॥ ७९॥

कबीर नउबति आपनी दिन दस लेहु बजाइ ॥ नदी नाव संजोग जिउ बहुरि न मिलहै आइ ॥ ८० ॥

कबीर जी कहते हैं कि हे मनुष्य ! अपनी शान-शौकत का डंका दस दिन बजा लो, ज्यों नदिया पार करने के लिए नाव में बैठे मुसाफिरों का मेल होता है और पार उतर कर दोबारा परस्पर नहीं मिलते, वैसे ही यह जीवन दोबारा नहीं मिलता॥ ८०॥

कबीर सात समुंदहि मसु करउ कलम करउ बनराइ ॥ बसुधा कागदु जउ करउ हरि जसु लिखनु न जाइ ॥ ८१ ॥

हे कबीर ! बेशक सात समुद्रों की स्याही को घोल लिया जाए, पूरी वनस्पति की कलमें बना ली जाएँ, पूरी पृथ्वी को ही कागज क्यों न बना लिया जाए, इसके बावजूद भी परमात्मा का यश लिखना संभव नहीं॥ ८१॥

कबीर जाति जुलाहा किआ करै हिरदै बसे गुपाल ॥ कबीर रमईआ कंठि मिलु चूकहि सरब जंजाल ॥ ८२ ॥

कबीर जी कहते हैं— जब मेरे दिल में ईश्वर ही बस चुका है तो फिर भला जुलाहा जाति से क्या फर्क पड़ सकता है। हे कबीर! राम मुझे मिल गया है, जिससे संसार के सब जंजाल दूर हो गए हैं॥ ८२॥

कबीर ऐसा को नही मंदरु देइ जराइ ॥ पांचउ लरिके मारि कै रहै राम लिउ लाइ ॥ ८३ ॥

कबीर जी कथन करते हैं— ऐसा कोई नहीं है, जो मोह रूपी घर को जला दे और पाँच कामादिक लड़कों को खत्म करके राम के ध्यान में लीन रहे॥ ८३॥

कबीर ऐसा को नही इहु तनु देवै फूकि ॥ अंधा लोगु न जानई रहिओ कबीरा कूकि ॥ ८४ ॥

कबीर जी कथन करते हैं कि ऐसा कोई शख्स नहीं, जो इस शरीर की वासनाओं को जला दे। कबीर चिल्ला-चिल्लाकर समझा रहा है परन्तु अन्धे अज्ञानी लोग इस बात को नहीं जानते॥ ८४॥

कबीर सती पुकारै चिह चड़ी सुनु हो बीर मसान ॥ लोगु सबाइआ चलि गइओ हम तुम कामु निदान ॥ ८५ ॥

कबीर जी कहते हैं कि सती अपने मृतक पति की चिता पर कहती है, हे श्मशान! मेरी बात सुनो, सब लोग इस संसार को छोड़कर चले गए हैं। अब हम तुम्हारा काम भी यही अंतकाल होना है॥ ८५॥

कबीर मनु पंखी भइओ उडि उडि दह दिस जाइ ॥ जो जैसी संगति मिलै सो तैसो फलु खाइ ॥ ८६ ॥

हे कबीर! मन पक्षी बना हुआ है, जो उड़-उड़कर दसों दिशाओं में जाता है। इसे जैसी संगत मिलती है, वैसा ही शुभाशुभ फल खाता है॥ ८६॥

कबीर जा कउ खोजते पाइओ सोई ठउरु ॥ सोई फिरि कै तू भइआ जा कउ कहता अउरु ॥ ८७ ॥

कबीर जी कहते हैं— जिसको ढूँढते फिर रहे थे, वही जगह पा ली है। जिस ईश्वर को तुम अपने से अलग मान रहे थे, उसी का रूप तुम हो गए हो॥ ८७॥

कबीर मारी मरउ कुसंग की केले निकटि जु बेरि ॥ उह झूलै उह चीरीऐ साकत संगु न हेरि ॥ ८८ ॥

कबीर जी कहते हैं कि बुरी संगत ही मनुष्य को मारती है। ज्यों केले के निकट बेरी होती है तो वह हवा से झूमती है, मगर केले का पेड़ उसके काँटों से चिरता है। अतः कुटिल लोगों की संगत मत करो, (अन्यथा बेकार में ही दण्ड भोगोगे)॥ ८८॥

कबीर भार पराई सिरि चरै चलिओ चाहै बाट ॥ अपने भारहि ना डरै आगै अउघट घाट ॥ ८६ ॥

हे कबीर! जीव के सिर पर (निन्दा का) पराया भार चढ़ता जाता है और इसे उठाकर रास्ता तय करना चाहता है। परन्तु वह अपने बुरे अथवा पाप कर्मों के भार से नहीं डरता कि आगे बहुत कठिन रास्ता है॥ ८६॥

कबीर बन की दाधी लाकरी ठाढी करै पुकार ॥ मति बसि परउ लुहार के जारै दूजी बार ॥ ६० ॥

कबीर जी (पाप कर्मों की मार से बचने के लिए) सावधान करते हुए कहते हैं कि जंगल की जली हुई लकड़ी पुकार करती है कि कहीं मैं लोहार के हाथ में न आ जाऊँ, अन्यथा मुझे दूसरी बार कोयला बनकर जला दिया जाएगा॥ ६०॥

कबीर एक मरंते दुइ मूए दोइ मरंतह चारि ॥ चारि मरंतह छह मूए चारि पुरख दुइ नारि ॥ ६१॥

हे कबीर! एक (मन) को मारने से दो (आशा-तृष्णा) मर जाते हैं। इन दोनों को मारने से चार (काम, क्रोध, लोभ, मोह) का भी अंत हो जाता है। चारों को मारा जाए तो छः मरते हैं। इन छः में दो स्त्रियाँ (आशा-तृष्णा) और चार पुरुष काम, क्रोध, लोभ, मोह हैं॥ ६१॥

कबीर देखि देखि जगु ढूंढिआ कहूं न पाइआ ठउरु ॥ जिनि हरि का नामु न चेतिओ कहा भुलाने अउर ॥ ६२ ॥

हे कबीर! देख-देखकर जगत में ढूँढ लिया, लेकिन कहीं शान्ति नहीं मिली। जिन्होंने ईश्वर का चिंतन नहीं किया, वे अन्यत्र भटकते फिरते हैं॥ ६२॥

कबीर संगति करीऐ साध की अंति करै निरबाहु ॥ साकत संगु न कीजीऐ जा ते होइ बिनाहु ॥ ६३ ॥

कबीर जी सदुपदेश देते हैं— साधु-महापुरुष की संगत करनी चाहिए, यही आखिर तक सहायता करती है। परन्तु कुटिल लोगों की संगत मत करो, जिससे जीवन नाश हो जाता है॥ ६३॥

कबीर जग महि चेतिओ जानि कै जग महि रहिओ समाइ ॥ जिन हरि का नामु न चेतिओ बादहि जनमें आइ ॥ ६४ ॥

कबीर जी कथन करते हैं— जिन्होंने ईश्वर को दुनिया में व्यापक मानकर उसका चिंतन किया, उनका जन्म सफल हो गया है, परन्तु जिन्होंने ईश्वर का भजन नहीं किया, उनका जन्म बेकार हो गया है॥ ६४॥

कबीर आसा करीऐ राम की अवरै आस निरास ॥ नरकि परहि ते मानई जो हरि नाम उदास ॥ ६५ ॥

हे कबीर! केवल राम की आशा करो, क्योंकि अन्य आशा निराश करने वाली है। जो परमात्मा के नाम से विमुख रहते हैं, उनको नरक में पड़ा मानना चाहिए॥ ६५॥

कबीर सिख साखा बहुते कीए केसो कीओ न मीतु ॥ चाले थे हरि मिलन कउ बीचै अटकिओ चीतु ॥ ६६ ॥

{कबीर जी दंभी गुरु-साधुओं की ओर संकेत करते हैं}

कबीर जी कहते हैं कि अपने शिष्य-चेले तो बहुत बना लिए लेकिन ईश्वर को मित्र न बनाया। परमात्मा से मिलन का संकल्प लेकर चले थे परन्तु इनका दिल बीच रास्ते में ही (अपनी सेवा-पूजा एवं ख्याति के लिए) अटक गया॥ ६६॥

कबीर कारनु बपुरा किआ करै जउ रामु न करै सहाइ ॥ जिह जिह डाली पगु धरउ सोई मुरि मुरि जाइ ॥ ६७ ॥

कबीर जी कहते हैं कि किसी काम को पूरा करने के लिए उसका कारण बेचारा क्या कर सकता है, यदि भगवान ही सहायता न करे। पेड़ की जिस डाली पर पैर रखा जाएगा, वही टूट जाएगी (ईश्वर की कृपा बिना सफलता नहीं मिलती)॥ ६७॥

कबीर अवरह कउ उपदेसते मुख मै परि है रेतु ॥ रासि बिरानी राखते खाया घर का खेतु ॥ ६८ ॥

हे कबीर! जो लोग दूसरों को उपदेश देते हैं, स्वयं उस पर पालन नहीं करते, उनके मुँह में अपमान की धूल ही पड़ती है। ऐसे व्यक्ति दूसरों के घर की हिफाजत करते अपना घर बर्बाद कर लेते हैं॥ ६८॥

कबीर साधू की संगति रहउ जउ की भूसी खाउ ॥ होनहारु सो होइहै साकत संगि न जाउ ॥ ६६ ॥

कबीर जी उद्‌बोधन करते हैं कि साधु-पुरुषों की संगत में रहना चाहिए, चाहे रुखा-सूखा भोजन ही नसीब हो, इस बात की चिंता मत करो, जो होना है वह तो होगा ही, लेकिन कुटिल लोगों की संगत कदापि न करो॥ ६६॥

कबीर संगति साध की दिन दिन दूना हेतु ॥ साकत कारी कांबरी धोए होइ न सेतु ॥ १०० ॥

कबीर जी उद्‌बोधन करते हैं कि साधु पुरुषों की संगत करने से दिन-ब-दिन ईश्वर से प्रेम में वृद्धि होती है। कुटिल व्यक्ति काले कंबल की तरह (दिल से काले) होते हैं, जो धोने से भी कभी सफेद नहीं होता॥ १००॥

कबीर मनु मूंडिआ नही केस मुंडाए कांइ ॥ जो किछु कीआ सो मन कीआ मूंडा मूंडु अजांइ ॥ १०१ ॥

कबीर जी कहते हैं– हे भाई! मन को तो मुँडवाया नहीं (अर्थात् साफ नहीं किया) फिर भला सिर के बाल किसलिए मुँडवा लिए, क्योंकि जो कुछ भी अच्छा-बुरा करता है, वह मन ही करता है। सिर को बेकार ही मुँडवा लिया, इस बेचारे का क्या कसूर है॥ १०१॥

कबीर रामु न छोडीऐ तनु धनु जाइ त जाउ ॥ चरन कमल चितु बेधिआ रामहि नामि समाउ ॥ १०२ ॥

हे कबीर! राम नाम नहीं छोड़ना चाहिए। यदि तन एवं धन चला जाए; नाश हो जाए, कोई परवाह मत करो। मन प्रभु के चरण कमल में लीन रखो, राम नाम में निमग्न रहो॥ १०२॥

कबीर जो हम जंतु बजावते टूटि गईं सभ तार ॥ जंतु बिचारा किआ करै चले बजावनहार ॥ १०३ ॥

हे कबीर! हम शरीर रूपी जो बाजा बजा रहे थे, उसकी सब तारें टूट चुकी हैं। यह बाजा बेचारा अब क्या कर सकता है, जब बजाने वाले प्राण ही छूट गए हैं॥ १०३॥

कबीर माइ मूंडउ तिह गुरू की जा ते भरमु न जाइ ॥ आप डुबे चहु बेद महि चेले दीए बहाइ ॥ १०४ ॥

हे कबीर ! उस गुरु की माता का सिर मूँड देना चाहिए, जिससे मन का भ्रम दूर नहीं होता। ऐसे गुरु स्वयं तो चार वेदों के कर्मकाण्ड में डूबे होते हैं, अपने चेलों को भी उस कर्मकाण्ड में बहा देते हैं॥ १०४॥

कबीर जेते पाप कीए राखे तलै दुराइ ॥ परगट भए निदान सभ जब पूछे धरम राइ ॥ १०५ ॥

हे कबीर ! व्यक्ति जितने भी पाप कर्म करता है, उसको लोगों से छिपाकर दिल में रखता है। परन्तु जब धर्मराज कर्मों का हिसाब पूछता है तो सब सामने आ जाते हैं॥ १०५॥

कबीर हरि का सिमरनु छाडि कै पालिओ बहुतु कुटंबु ॥ धंधा करता रहि गइआ भाई रहिआ न बंधु ॥ १०६ ॥

हे कबीर ! व्यक्ति भगवान का भजन छोड़कर परिवार के पालन-पोषण में लीन रहता है। वह काम धंधे करता भजन से वंचित रह जाता है और अन्त में भाई-बन्धु कोई नहीं रहता॥ १०६॥

कबीर हरि का सिमरनु छाडि कै राति जगावन जाइ ॥ सरपनि होइ कै अउतरै जाए अपुने खाइ ॥ १०७ ॥

कबीर जी कहते हैं— परमात्मा का सिमरन छोड़कर जो स्त्री रात को श्मशान में मुर्दा जगाने जाती है, वह नागिन बनकर जन्म लेती है और अपने ही बच्चों को खा जाती है॥ १०७॥

कबीर हरि का सिमरनु छाडि कै अहोई राखै नारि ॥ गदही होइ कै अउतरै भारु सहै मन चारि ॥ १०८ ॥

कबीर जी कथन करते हैं— जो नारी भगवान का सिमरन छोड़कर अहोई माता का व्रत रखती है, वह गधी बनकर अवतरित होती है और कई मन बोझ उठाती है॥ १०८॥

कबीर चतुराई अति घनी हरि जपि हिरदै माहि ॥ सूरी ऊपरि खेलना गिरै त ठाहर नाहि ॥ १०६ ॥

कबीर जी उद्बोधन करते हैं— सबसे बड़ी समझदारी तो यही है कि दिल में भगवान का भजन किया जाए, अन्यथा सूली पर चढ़ने के समान है, इससे यदि गिर पड़े तो कहीं आसरा नहीं मिलना॥ १०६॥

कबीर सोई मुखु धंनि है जा मुखि कहीऐ रामु ॥ देही किस की बापुरी पवित्रु होइगो ग्रामु ॥ ११० ॥

कबीर जी कथन करते हैं— वही मुख धन्य है, जिससे राम नाम कहा जाता है। शरीर बेचारे की तो क्या बात है, पूरा नगर ही पवित्र हो जाएगा, जिसमें राम नाम जपा जाएगा॥ ११०॥

कबीर सोई कुल भली जा कुल हरि को दासु ॥ जिह कुल दासु न ऊपजै सो कुल ढाकु पलासु ॥ १११ ॥

हे कबीर ! वही कुल भली है, जिसमें ईश्वर का भक्त उत्पन्न होता है। जिस कुल में ईश्वर-भक्त पैदा नहीं होता, वह कुल ढाक-प्लाश के समान व्यर्थ है॥ १११॥

कबीर है गइ बाहन सघन घन लाख धजा फहराहि ॥ इआ सुख ते भिख्या भली जउ हरि सिमरत दिन जाहि ॥ ११२ ॥

हे कबीर! बेशक कितने ही हाथी, घोड़े एवं सवारी के लिए वाहन हों, चाहे देश-प्रदेश में सत्ता के झण्डे झूलते हों। इन सुखों के बावजूद भिक्षा ही भली है, यदि दिन परमात्मा के सिमरन में गुजरता हो॥ ११२॥

कबीर सभु जगु हउ फिरिओ मांदलु कंध चढाइ ॥ कोई काहू को नही सभ देखी ठोकि बजाइ ॥ ११३ ॥

हे कबीर! कंधे पर ढोल रखकर मैं संसार भर में घूमा हूँ। सब लोगों को देखा है (हरेक स्वार्थी है) कोई किसी का नहीं॥ ११३॥

मारगि मोती बीथरे अंधा निकसिओ आइ ॥ जोति बिना जगदीस की जगतु उलंघे जाइ ॥ ११४ ॥

जीवन राह पर गुण रूपी मोती बिखरे हुए हैं, लेकिन अन्धा मनुष्य पास से ही निकलता जा रहा है। ईश्वर की ज्ञान-ज्योति के बिना जगत गुजरता जाता है॥ ११४॥

बूडा बंसु कबीर का उपजिओ पूतु कमालु ॥ हरि का सिमरनु छाडि कै घरि ले आया मालु ॥ ११५ ॥

कबीर जी कहते हैं कि पुत्र कमाल क्या पैदा हुआ, मेरा तो वंश ही डूब गया। भगवान का भजन छोड़कर यह तो घर में धन-दौलत ही ले आया है॥ ११५॥

कबीर साधू कउ मिलने जाईऐ साथि न लीजै कोइ ॥ पाछै पाउ न दीजीऐ आगै होइ सु होइ ॥ ११६ ॥

कबीर जी उद्बोधन करते हैं कि हे भाई! यदि साधु महापुरुष को मिलने जाना है तो किसी के साथ पर निर्भर मत रहो। यदि चल पड़े हो तो पीछे मत हटो, आगे जो होगा अथवा होना है, कोई चिंता न करो॥ ११६॥

कबीर जगु बाधिओ जिह जेवरी तिह मत बंधहु कबीर ॥ जैहहि आटा लोन जिउ सोन समानि सरीरु ॥ ११७ ॥

कबीर जी समझाते हैं कि जिस मोह-माया की जंजीर से संसार बंधा हुआ है, उससे अपने आपको मत बांधो। अन्यथा सोने जैसा शरीर आटे व नमक की तरह सस्ते भाव व्यर्थ जाएगा॥ ११७॥

कबीर हंसु उडिओ तनु गाडिओ सोझाई सैनाह ॥ अजहू जीउ न छोडई रंकाई नैनाह ॥ ११८ ॥

हे कबीर! (मौत करीब है) आत्मा उड़ने वाला है, शरीर खत्म हो रहा है। फिर भी इशारों से संबंधियों को समझाता है। अन्तकाल भी जीव आँखों की कंगालता नहीं छोड़ता॥ ११८॥

कबीर नैन निहारउ तुझ कउ स्रवन सुनउ तुअ नाउ ॥ बैन उचरउ तुअ नाम जी चरन कमल रिद ठाउ ॥ ११६ ॥

कबीर जी कहते हैं कि हे ईश्वर! इन नयनों से तुझे निहारता रहूँ, कानों से तेरा नाम-कीर्तन सुनता रहूँ, तेरे ही नामोच्चारण में लीन रहूँ और तेरे ही चरण कमल हृदय में बसाकर रखूँ॥ ११६॥

कबीर सुरग नरक ते मै रहिओ सतिगुर के परसादि ॥ चरन कमल की मउज महि रहउ अंति अरु आदि ॥ १२० ॥

कबीर जी कहते हैं कि सतिगुरु की कृपा से मैं स्वर्ग-नरक के चक्र से मुक्त हो गया हूँ। मैं आदि से अंत तक परमेश्वर के चरण-कमल की मौज में तल्लीन रहता हूँ॥ १२०॥

कबीर चरन कमल की मउज को कहि कैसे उनमान ॥ कहिबे कउ सोभा नही देखा ही परवानु ॥ १२१ ॥

कबीर जी कहते हैं— चरण-कमल की मौज का ठीक अनुमान किस तरह लगाया जाए, कहने से तो शोभा नहीं देता, परन्तु देखने से ही विश्वास होता है॥ १२१॥

कबीर देखि कै किह कहउ कहे न को पतीआइ ॥ हरि जैसा तैसा उही रहउ हरखि गुन गाइ ॥ १२२ ॥

हे कबीर! (चरण-कमल की मौज को) देखकर मैं किसे बताऊँ, क्योंकि बताने से किसी को भरोसा नहीं होता। यही कहना उचित है कि ईश्वर जैसा है वैसा ही है। अतः मैं उसके गुणगान में खुश रहता हूँ॥ १२२॥

कबीर चुगै चितारै भी चुगै चुगि चुगि चितारे ॥ जैसे बचरहि कूंज मन माइआ ममता रे ॥ १२३ ॥

हे कबीर! कूंज दाना चुगते अपने बच्चों को याद करती है, बार-बार दाना चुगते उनकी याद में लीन रहती है। ज्यों बच्चों की याद कूंज के मन में रहती है, वैसे ही व्यक्ति के मन में माया की ममता लगी रहती है॥ १२३॥

कबीर अंबर घनहरु छाइआ बरखि भरे सर ताल ॥ चात्रिक जिउ तरसत रहै तिन को कउनु हवालु ॥ १२४ ॥

हे कबीर! जब आसमान में बादल छा जाते हैं तो वर्षा करके सरोवरों एवं तालों को भर देते हैं परन्तु पपीहा फिर भी स्वाति बूँद को ही तरसता है, उसका क्या हाल होगा, वह कभी तृप्त नहीं हो सकता॥ १२४॥

कबीर चकई जउ निसि बीछुरै आइ मिलै परभाति ॥ जो नर बिछुरे राम सिउ ना दिन मिले न राति ॥ १२५ ॥

हे कबीर! चकवी बेशक अपने चकवे से रात्रिकाल को बिछुड़ जाती है लेकिन प्रभातकाल होते ही उसका मिलन हो जाता है। परन्तु जो व्यक्ति ईश्वर से बिछुड़ जाते हैं, वे न तो दिन को मिलते हैं, न ही रात को॥ १२५॥

कबीर रैनाइर बिछोरिआ रहु रे संख मझूरि ॥ देवल देवल धाहड़ी देसहि उगवत सूर ॥ १२६ ॥

कबीर जी कहते हैं कि समुद्र से बिछुड़े हुए हे शंख! तुम समुद्र में ही रहो, तेरे लिए बेहतर है, अन्यथा सूर्य चढ़ते ही मन्दिर में चिल्लाते फिरते हो॥ १२६॥

कबीर सूता किआ करहि जागु रोइ भै दुख ॥ जा का बासा गोर महि सो किउ सोवै सुख ॥ १२७ ॥

कबीर जी उद्बोधन करते हैं कि हे मनुष्य! क्यों अज्ञान की नींद में सो रहा है, जाग जा, मृत्यु-भय के दुखों से सावधान हो जा। जिस शरीर ने कब्र में रहना है, वह सुख की नींद कैसे सो सकता है॥ १२७॥

कबीर सूता किआ करहि उठि कि न जपहि मुरारि ॥ इक दिन सोवनु होइगो लांबे गोड पसारि ॥ १२८ ॥

कबीर जी उद्बोधन करते हैं कि हे प्राणी! क्यों अज्ञान की नींद में सो रहा है, उठकर बैठ और परमात्मा का भजन कर ले, क्योंकि एक न एक दिन तूने दोनों टांगें फैलाकर सदा की नींद सो जाना है॥ १२८॥

कबीर सूता किआ करहि बैठा रहु अरु जागु ॥ जा के संग ते बीछुरा ता ही के संगि लागु ॥ १२६ ॥

कबीर जी कहते हैं कि हे मनुष्य! तू सो कर क्यों समय बर्बाद कर रहा है, उठकर बैठ और जाग जा। जिस भगवान से बिछुड़ गए हो, उसकी चरण-शरण में लग जा॥ १२६॥

कबीर संत की गैल न छोडीऐ मारगि लागा जाउ ॥ पेखत ही पुंनीत होइ भेटत जपीऐ नाउ ॥ १३० ॥

कबीर जी उद्बोधन करते हैं कि हे लोगो! संतों का सान्निध्य कदापि न छोड़ो, उनके आदर्शों पर चलते रहो। उनके दर्शन से मन पवित्र हो जाता है, जब भेंट हो जाती है तो परमात्मा का भजन करते हैं॥ १३०॥

कबीर साकत संगु न कीजीऐ दूरहि जाईऐ भागि ॥ बासनु कारो परसीऐ तउ कछु लागै दागु ॥ १३१ ॥

कबीर जी सावधान करते हुए कहते हैं— कुटिल मायावी व्यक्ति की संगत मत करो, उससे तो दूर ही रहना चाहिए। ज्यों काले बर्तन को छूने से काला धब्बा लग जाता है, वैसे ही मायावी व्यक्ति का साथ कलंक लगा देता है॥ १३१॥

कबीरा रामु न चेतिओ जरा पहूंचिओ आइ ॥ लागी मंदिर दुआर ते अब किआ काढिआ जाइ ॥ १३२ ॥

कबीर जी कहते हैं कि बुढ़ापा आ गया है, परन्तु अभी तक भगवान का स्मरण नहीं किया। शरीर रूपी घर के द्वार पर बुढ़ापे की आग लग गई है, इससे बच निकलना असंभव है॥ १३२॥

कबीर कारनु सो भइओ जो कीनो करतारि ॥ तिसु बिनु दूसरु को नही एकै सिरजनहारु ॥ १३३॥

कबीर जी कहते हैं कि वही कार्य-कारण होता है, जो परमात्मा करता है। उसके सिवा कोई नहीं, केवल वही बनानेवाला है॥ १३३॥

कबीर फल लागे फलनि पाकनि लागे आंब ॥ जाइ पहूचहि खसम कउ जउ बीचि न खाही कांब ॥ १३४ ॥

हे कबीर! आम के पेड़ को फल लगते हैं और पकने लग जाते हैं। (जीव का जन्म होता

है और उम्र पूरी होने लगती है)। पक कर वही फल मालिक के पास पहुँचते हैं, जिनको कोई दाग-धब्बा नहीं लगता। अर्थात् जो बुरे कर्म करते हैं, वे प्रभु-दरबार से वंचित होकर योनियों में भटकते हैं॥ १३४॥

कबीर ठाकुरु पूजहि मोलि ले मनहठि तीरथ जाहि ॥ देखा देखी स्वांगु धरि भूले भटका खाहि ॥ १३५ ॥

कबीर जी बतलाते हैं कि लोग पत्थर की मूर्ति को मूल्य लेकर ठाकुर की पूजा करते हैं और मन के हठ से तीर्थ-यात्रा जाते हैं। देखा-देखी करके दूसरे भी स्वांग बनाकर सच्चाई से भूलकर भटकते हैं॥१३५॥

कबीर पाहनु परमेसुरु कीआ पूजै सभु संसारु ॥ इस भरवासे जो रहे बूडे काली धार ॥ १३६॥

कबीर जी मूर्ति-पूजा पर सख्त एतराज जतलाते हुए कहते हैं कि कितनी अफसोस की बात है। पत्थर को परमेश्वर मानकर पूरा संसार पूजा-वंदना कर रहा है परन्तु जो इस भरोसे में रहेगा कि मूर्ति-पूजा से मुक्ति हो जाएगी, वह तो काल की धारा में डूब जाएगा॥ १३६॥

कबीर कागद की ओबरी मसु के करम कपाट ॥ पाहन बोरी पिरथमी पंडित पाड़ी बाट ॥ १३७॥

कबीर जी समाज को चेताते हैं कि वेद-शास्त्रों की कोठरी में जन-साधारण कैद है, जिसके द्वार पर कर्मकाण्ड के कपाट लगे हुए हैं। मूर्ति-पूजा ने संसार को डुबो दिया है और पण्डित दक्षिणा-दान में लूट मचा रहे हैं॥१३७॥

कबीर कालि करंता अबहि करु अब करता सुइ ताल ॥ पाछै कछू न होइगा जउ सिर परि आवै कालु ॥ १३८ ॥

कबीर जी अनुरोध करते हैं कि जो कल करना है, वह आज ही कर लो और जो आज या अब करना है, वह तत्क्षण पूरा करो। क्योंकि जब मौत आ जाती है तो उसके बाद कुछ नहीं हो सकता॥१३८॥

कबीर ऐसा जंतु इकु देखिआ जैसी धोई लाख ॥ दीसै चंचलु बहु गुना मति हीना नापाक ॥ १३९ ॥

कबीर जी कहते हैं कि मैंने मन रूपी एक ऐसा जीव देखा है जैसे धुली हुई लाख होती है, जो बाहर से तो चमकीला, पर भीतर से काला है। यह देखने में बहुत चंचल-चतुर मालूम होता है परन्तु मतिहीन एवं नापाक है॥१३९॥

कबीर मेरी बुधि कउ जमु न करै तिसकार ॥ जिनि इहु जमूआ सिरजिआ सु जपिआ परविदगार ॥ १४० ॥

कबीर जी कहते हैं कि मेरी बुद्धि का यमराज भी तिरस्कार नहीं करता। क्योंकि जिसने इसे बनाया है, मैंने तो उस परवरदिगार का जाप किया है॥१४०॥

कबीरु कसतूरी भइआ भवर भए सभ दास ॥ जिउ जिउ भगति कबीर की तिउ तिउ राम निवास ॥ १४१ ॥

कबीर जी कहते हैं कि ईश्वर कस्तूरी रूप है और उसके सब भक्त भँवरे समान हैं। ज्यों-ज्यों वे भक्ति-वंदना करते हैं, त्यों-त्यों उनके मन में ईश्वर अवस्थित हो जाता है॥१४१॥

कबीर गहगचि परिओ कुटंब कै कांठै रहि गइओ रामु ॥ आइ परे धरम राइ के बीचहि धूमा धाम ॥ १४२ ॥

कबीर जी कथन करते हैं कि व्यक्ति जीवन भर अपने पुत्र-स्त्री इत्यादि परिवार में व्यस्त रहता है और राम भजन उसके गले में अटक जाता है। इस व्यस्तता के बीच ही यमराज के दूत लेने आ जाते हैं॥१४२॥

कबीर साकत ते सूकर भला राखै आछा गाउ ॥ उहु साकतु बपुरा मरि गइआ कोइ न लैहै नाउ ॥ १४३ ॥

कबीर जी उपदेश देते हैं कि मायावी पुरुष से तो सूअर ही भला है, जो विष्ठा खाकर जगह तो साफ रखता है। परन्तु मायावी पुरुष का मरने के बाद कोई नाम तक नहीं लेता, जिसने कितने ही कुटिल कर्म किए होते हैं॥१४३॥

कबीर कउडी कउडी जोरि कै जोरे लाख करोरि ॥ चलती बार न कछु मिलिओ लई लंगोटी तोरि ॥ १४४ ॥

कबीर जी कहते हैं कि व्यक्ति कौड़ी-कौड़ी (एक-एक पैसा) इकट्ठा करके लाखों रुपए जमा कर लेता है। अंततः संसार से चलते वक्त उसे कुछ भी नहीं मिलता और लंगोटी तक उतार ली जाती है॥१४४॥

कबीर बैसनो हूआ त किआ भइआ माला मेलीं चारि ॥ बाहरि कंचनु बारहा भीतरि भरी भंगार ॥ १४५ ॥

कबीर जी कहते हैं कि चार मालाएँ गले में डालकर वैष्णव बन गया तो कौन-सी बड़ी बात है। क्योंकि बाहर से ही समाज के सामने शुद्ध स्वर्ण प्रतीत होते हो परन्तु मन में मैल भरी हुई है॥१४५॥

कबीर रोड़ा होइ रहु बाट का तजि मन का अभिमानु ॥ ऐसा कोई दासु होइ ताहि मिलै भगवानु ॥ १४६ ॥

कबीर जी कथन करते हैं– अपने मन का अभिमान छोड़कर रास्ते का पत्थर बना रह, ताकि लोग गुजरते जाएँ। यदि कोई ऐसा उपकारी भक्त हो तो ही भगवान मिलता है॥१४६॥

कबीर रोड़ा हूआ त किआ भइआ पंथी कउ दुखु देइ ॥ ऐसा तेरा दासु है जिउ धरनी महि खेह ॥ १४७ ॥

कबीर जी इसी बात पर पुनः कहते हैं कि यदि रास्ते का पत्थर बन गए तो यह कौन-सी बड़ी बात है, क्योंकि वह तो मुसाफिर के पैर को चुभेगा और दुख ही प्रदान करेगा। परमात्मा का भक्त ऐसा (नरमदिल) होना चाहिए, ज्यों धरती पर मिट्टी होती है॥१४७॥

कबीर खेह हूई तउ किआ भइआ जउ उडि लागै अंग ॥ हरि जनु ऐसा चाहीऐ जिउ पानी सरबंग ॥ १४८ ॥

कबीर जी कहते हैं कि यदि धूल-मिट्टी भी बन गए तो इसमें कोई बड़ी बात नहीं, क्योंकि धूल भी उड़-उड़कर शरीर के अंगों को मलिन कर देती है। अतः हरि-भक्त ऐसा होना चाहिए ज्यों पानी सब में घुलमिल जाता है॥१४८॥

कबीर पानी हूआ त किआ भइआ सीरा ताता होइ ॥ हरि जनु ऐसा चाहीऐ जैसा हरि ही होइ ॥ १४६ ॥

कबीर जी सदुपदेश देते हैं कि यदि पानी की तरह बन गए तो यह भी कोई बड़ी बात नहीं क्योंकि पानी भी कभी ठण्डा और गर्म होता है। इसलिए हरि-भक्त ऐसा होना चाहिए जैसा हरि-रूप ही हो जाए॥१४६॥

ऊच भवन कनकामनी सिखरि धजा फहराइ ॥ ता ते भली मधूकरी संतसंगि गुन गाइ ॥ १५० ॥

यदि ऊँचे घर-मकान हों, धन-दौलत एवं सुन्दर स्त्री हो, बेशक चारों ओर शोहरत फैली हो। इन सबके बावजूद भिक्षा की रोटी अच्छी है, जिसे लेकर संतों की संगत में प्रभु का गुणगान होता है॥१५०॥

कबीर पाटन ते ऊजरु भला राम भगत जिह ठाइ ॥ राम सनेही बाहरा जम पुरु मेरे भांइ ॥ १५१ ॥

हे कबीर! आबाद शहर से उजाड़ इलाका कहीं अच्छा है, जहाँ परमात्मा के भक्त वंदना करते हैं। प्रभु-प्रेमियों के बिना जो स्थान है, वह तो मेरे लिए यमपुरी के समान है॥१५१॥

कबीर गंग जमुन के अंतरे सहज सुंन के घाट ॥ तहा कबीरै मटु कीआ खोजत मुनि जन बाट ॥ १५२ ॥

कबीर जी कथन करते हैं कि हमने गंगा-यमुना (इड़ा-पिंगला) के भीतर शून्यावस्था में अपने आप को स्थिर कर लिया है। कबीर ने वहाँ पर स्थान किया है, जिस रास्ते को मुनिजन ढूँढते हैं॥१५२॥

कबीर जैसी उपजी पेड ते जउ तैसी निबहै ओड़ि ॥ हीरा किस का बापुरा पुजहि न रतन करोड़ि ॥ १५३ ॥

हे कबीर! जैसी कोमलता व मृदुलता नए पौधे में होती है, यदि ऐसी ही (भक्ति-भावना) अंत तक बनी रहे तो फिर एक हीरा क्या बेचारा है, उस तक करोड़ों रत्न भी नहीं पहुँच सकते॥१५३॥

कबीरा एकु अचंभउ देखिओ हीरा हाट बिकाइ ॥ बनजनहारे बाहरा कउडी बदलै जाइ ॥ १५४ ॥

कबीर जी कहते हैं कि मैंने एक अद्भुत लीला देखी है कि हीरा दुकान पर बिकता है, परन्तु उसके पारखी जौहरी के बिना वह कौड़ियों के भाव जा रहा है। यह मानव जन्म एक हीरे के समान अमूल्य है, जो इसको प्रभु-भक्ति में नहीं लगाता, वह संसार के कार्यों में इसे व्यर्थ गंवा देता है॥१५४॥

कबीरा जहा गिआनु तह धरमु है जहा झूठु तह पापु ॥ जहा लोभु तह कालु है जहा खिमा तह आपि ॥ १५५ ॥

कबीर जी उपदेश देते हैं कि जहाँ ज्ञान होता है, वहीं धर्म है, जहाँ झूठ का बोलबाला होता है, वहाँ पाप ही रहता है। जहाँ लोभ-लालच बना रहता है, वहाँ मृत्यु खड़ी रहती है। जहाँ दया व क्षमा-भावना है, वहाँ स्वयं परमेश्वर है॥१५५॥

कबीर माइआ तजी त किआ भइआ जउ मानु तजिआ नही जाइ ॥ मान मुनी मुनिवर गले मानु सभै कउ खाइ ॥ १५६ ॥

कबीर जी उद्बोधन करते हैं कि यदि मान-अभिमान को नहीं छोड़ा तो फिर माया को छोड़ने का भी कोई फायदा नहीं। इस मान ने तो बड़े-बड़े ऋषि-मुनियों को भी ध्वस्त कर दिया है, दरअसल मान सब को खा जाता है॥१५६॥

कबीर साचा सतिगुरु मै मिलिआ सबदु जु बाहिआ एकु ॥ लागत ही भुइ मिलि गइआ परिआ कलेजे छेकु ॥ १५७ ॥

कबीर जी कहते हैं कि मुझे अब सच्चा गुरु मिला तो उसने मुझे एक उपदेश का राम-बाण मारा, जिसके लगते ही मैं धरती से मिल गया और मेरा दिल गुरु-प्रेम में बिंध गया॥१५७॥

कबीर साचा सतिगुरु किआ करै जउ सिखा महि चूक ॥ अंधे एक न लागई जिउ बांसु बजाईऐ फूक ॥ १५८ ॥

कबीर जी कहते हैं कि सच्चा गुरु भी भला क्या कर सकता है, यदि शिष्यों में खराबी-त्रुटियाँ हों। मूर्ख को कितनी ही शिक्षा दी जाए, यह वैसे ही है ज्यों बांस को फूँक से बजाया जाता है॥१५८॥

कबीर है गै बाहन सघन घन छत्रपती की नारि ॥ तासु पटंतर ना पुजै हरि जन की पनिहारि ॥ १५९ ॥

कबीर जी उपदेश देते हैं कि हाथी, घोड़े, रथ इत्यादि सुख-सुविधाओं से सम्पन्न बड़े राजा की रानी उस स्त्री की बराबरी नहीं कर सकती, जो प्रभु-भक्तों की सेविका है॥१५९॥

कबीर न्रिप नारी किउ निंदीऐ किउ हरि चेरी कउ मानु ॥ ओह मांग सवारै बिखै कउ ओह सिमरै हरि नामु ॥ १६० ॥

कबीर जी जनमानस को बताते हैं कि किसी बड़े राजा की रानी की क्यों निन्दा की जाए और संत-महात्मा की दासी को क्यों सम्मान दिया जाता है। इसका कारण यह है कि राजा की रानी अपनी काम पूर्ति के लिए अपनी मांग को सिंदूर से संवारती है और दासी परमात्मा का भजन करती रहती है॥१६०॥

कबीर थूनी पाई थिति भई सतिगुर बंधी धीर ॥ कबीर हीरा बनजिआ मान सरोवर तीर ॥ १६१॥

हे कबीर ! शब्द-गुरु रूपी स्तंभ मिला तो मन स्थिर हो गया और सतगुरु ने धैर्य व दृढ़ निश्चय प्रदान कर दिया। मैंने सत्संग रूपी मानसरोवर के किनारे हरिनाम रूपी हीरा खरीदा है॥१६१॥

कबीर हरि हीरा जन जउहरी ले कै मांडै हाट ॥ जब ही पाईअहि पारखू तब हीरन की साट ॥ १६२ ॥

हे कबीर ! हरिनाम रूपी हीरे के हरि-भक्त ही जौहरी हैं, जिसे लेकर वे मन रूपी दुकान पर सजा लेते हैं। जब कोई अन्य पारखी (अर्थात् साधु-महात्मा) मिलता है तो ही इसकी परख अर्थात् ज्ञान चर्चा होती है॥१६२॥

कबीर काम परे हरि सिमरीऐ ऐसा सिमरहु नित ॥ अमरा पुर बासा करहु हरि गइआ बहोरै बित ॥ १६३ ॥

कबीर जी उपदेश देते हैं कि काम पड़ने पर हम तत्क्षण परमात्मा को याद करते हैं, भलाई तो इसी में है कि उसे रोज़ याद करना चाहिए। तब स्वर्ग में निवास करने का सुवअसर भी प्राप्त होगा और परमात्मा रूपी धन भी मिल जाएगा॥१६३॥

कबीर सेवा कउ दुइ भले एकु संतु इकु रामु ॥ रामु जु दाता मुकति को संतु जपावै नामु ॥ १६४ ॥

कबीर जी उद्‌बोधन करते हैं कि सेवा के लिए दो ही भले हैं, एक संत और एक राम। क्योंकि राम मुक्ति देने वाला है और संत मुक्तिदाता का नाम जपवाता है॥१६४॥

कबीर जिह मारगि पंडित गए पाछै परी बहीर ॥ इक अवघट घाटी राम की तिह चड़ि रहिओ कबीर ॥ १६५ ॥

हे कबीर ! जिस कर्मकाण्ड रूपी मार्ग पर पण्डित चले गए हैं, उनके पीछे पूरा समाज चल पड़ा है। प्रभु-मार्ग की घाटी बहुत कठिन है, जिस पर कबीर चढ़ रहा है॥१६५॥

कबीर दुनीआ के दोखे मूआ चालत कुल की कानि ॥ तब कुलु किस का लाजसी जब ले धरहि मसानि ॥ १६६ ॥

कबीर जी कहते हैं— व्यक्ति दुनिया के फिक्रों (परंपरा-रीति-रिवाज) में ही मर जाता है और अपनी कुल की रीति को अपनाता है कि यदि कुल की रीति मैंने न की तो लोग क्या कहेंगे ? कबीर जी कहते हैं कि हे मनुष्य ! जब तेरे संबंधी तुझे श्मशान घाट चिता में जला देंगे तो फिर भला कुल की लाज कौन बचाने वाला होगा ?॥१६६॥

कबीर डूबहिगो रे बापुरे बहु लोगन की कानि ॥ पारोसी के जो हूआ तू अपने भी जानु ॥ १६७॥

कबीर जी कहते हैं कि अरे अभागे ! लोक-लाज में तू बेकार ही डूब जाएगा। जो पड़ोसी के साथ हुआ है, तू इस बात को मान ले कि तेरे साथ भी वही होना है (अर्थात् मौत निश्चय है)॥१६७॥

कबीर भली मधूकरी नाना बिधि को नाजु ॥ दावा काहू को नही बडा देसु बड राजु ॥ १६८ ॥

कबीर जी समझाते हैं कि भिक्षा में मिली रोटी भली है, जिस में कई प्रकार का अनाज होता है। भिखारी किसी जायदाद पर दावा नहीं करता, उसके लिए पूरा देश और बड़ा राज्य भी अपना ही प्रतीत होता है॥१६८॥

कबीर दावै दाझनु होतु है निरदावै रहै निसंक ॥ जो जनु निरदावै रहै सो गनै इंद्र सो रंक ॥ १६९ ॥

कबीर जी समझाते हैं कि (जमीन-जायदाद का) दावा करने से दुख-तकलीफ ही होती है

और किसी चीज़ पर दावा न करने से सुख उपलब्ध होता है। जो व्यक्ति निःशंक रहता है, वह इन्द्र सरीखे राजा को भी कंगाल मानता है॥१६६॥

कबीर पालि समुहा सरवरु भरा पी न सकै कोई नीरु ॥ भाग बडे तै पाइओ तूं भरि भरि पीउ कबीर ॥ १७० ॥

हे कबीर ! प्रभु नाम रूपी सरोवर किनारे तक भरा हुआ है, लेकिन कोई उस पानी को पी नहीं सकता। कबीर जी कहते हैं कि अहोभाग्य से इस नाम-जल को पा लिया है और जी भरकर पान कर रहा हूँ॥१७०॥

कबीर परभाते तारे खिसहि तिउ इहु खिसै सरीरु ॥ ए दुइ अखर ना खिसहि सो गहि रहिओ कबीरु ॥ १७१ ॥

कबीर जी उपदेश देते हैं कि जैसे दिन चढ़ते ही आकाश के तारे लुप्त हो जाते हैं, वैसे ही बुढ़ापे के कारण यह शरीर समाप्त हो जाता है। परन्तु 'राम' नाम के दो अक्षर कभी क्षीण नहीं होते, इसलिए कबीर ने उनको मन में बसा लिया है॥१७१॥

कबीर कोठी काठ की दह दिसि लागी आगि ॥ पंडित पंडित जलि मूए मूरख उबरे भागि ॥ १७२ ॥

कबीर जी कहते हैं कि यह जगत् रूपी घर लकड़ी का है, इसकी दसों दिशाओं में मोह-माया की आग लगी हुई है। अपने को पण्डित मानने वाले आत्माभिमानी इसी में जलकर मर रहे हैं परन्तु नासमझ कहे जाने वाले (नम्र-सुशील) इससे बचकर निकल गए हैं॥१७२॥

कबीर संसा दूरि करु कागद देह बिहाइ ॥ बावन अखर सोधि कै हरि चरनी चितु लाइ ॥ १७३ ॥

कबीर जी उपदेश देते हैं कि मन का संशय दूर करो, धर्म ग्रंथों का पाठ छोड़ दो। बावन अक्षरों का सार मानकर परमात्मा के चरणों में मन लगाओ॥ १७३॥

कबीर संतु न छाडै संतई जउ कोटिक मिलहि असंत ॥ मलिआगरु भुयंगम बेढिओ त सीतलता न तजंत ॥ १७४ ॥

कबीर जी उपदेश देते हैं कि बेशक करोड़ों ही दुष्ट-पापी मिल जाएँ परन्तु संत पुरुष अपना स्वभाव नहीं छोड़ता। जैसे चन्दन का पेड़ साँपों से लिपटा रहे परन्तु अपनी शीतलता नहीं छोड़ता॥१७४॥

कबीर मनु सीतलु भइआ पाइआ ब्रहम गिआनु ॥ जिनि जुआला जगु जारिआ सु जन के उदक समानि ॥ १७५ ॥

हे कबीर ! ब्रह्म ज्ञान पा कर मन शीतल-शांत हो गया है। जिस माया की ज्वाला ने पूरे जगत को जला दिया है, वह सेवक के लिए पानी समान ठण्डी हो गई है॥१७५॥

कबीर सारी सिरजनहार की जानै नाही कोइ ॥ कै जानै आपन धनी कै दासु दीवानी होइ ॥ १७६ ॥

हे कबीर ! उस सृजनहार की लीला को कोई नहीं जानता। या तो इसे स्वयं वह मालिक जानता है या उसके सान्निध्य में रहने वाला भक्त ही जान सकता है॥१७६॥

कबीर भली भई जो भउ परिआ दिसा गईं सभ भूलि ॥ ओरा गरि पानी भइआ जाइ मिलिओ ढलि कूलि ॥ १७७ ॥

हे कबीर ! यह बहुत अच्छा हुआ कि परमेश्वर का भय मन में पड़ गया, जिससे संसार की दिशा सब भूल गई है। जैसे ओला गर्मी से गल कर पानी रूप हो जाता है और ढाल पाकर बह जाता है॥१७७॥

कबीरा धूरि सकेलि कै पुरीआ बांधी देह ॥ दिवस चारि को पेखना अंति खेह की खेह ॥ १७८ ॥

हे कबीर ! ईश्वर ने पंच तत्व रूपी धूल को मिलाकर शरीर रूपी पुड़िया बांधी है। यह शरीर चार दिन का तमाशा है, आखिरकार शरीर रूपी मिट्टी मिट्टी में मिल जाती है॥१७८॥

कबीर सूरज चांद कै उदै भई सभ देह ॥ गुर गोबिंद के बिनु मिले पलटि भई सभ खेह ॥ १७९ ॥

हे कबीर ! सूरज चांद के उदय की तरह यह शरीर (नश्वर) है। गुरु-परमेश्वर के मिलाप बिना सब मिट्टी हो जाता है॥१७९॥

जह अनभउ तह भै नही जह भउ तह हरि नाहि ॥ कहिओ कबीर बिचारि कै संत सुनहु मन माहि ॥ १८० ॥

हे कबीर ! जहाँ परम सत्य का ज्ञान होता है, वहाँ मौत का भय नहीं होता। जहाँ सांसारिक भय हो, वहाँ ईश्वर नहीं। कबीर जी कहते हैं कि यह बात मैंने सोच-समझ कर कही है, हे सज्जनो ! आप इसे मन लगाकर सुनो॥१८०॥

कबीर जिनहु किछू जानिआ नही तिन सुख नीद बिहाइ ॥ हमहु जु बूझा बूझना पूरी परी बलाइ ॥ १८१ ॥

हे कबीर ! जिन्होंने कुछ सत्य अथवा ज्ञान को नहीं जाना, वे बेफिक्र होकर सुख की नींद सो रहे हैं। परन्तु जब मैंने सत्य को समझ लिया तो सब बलाएँ दूर हो गईं॥१८१॥

कबीर मारे बहुतु पुकारिआ पीर पुकारै अउर ॥ लागी चोट मरंम की रहिओ कबीरा ठउर ॥ १८२ ॥

कबीर जी कथन करते हैं— जब दुनियावी चोटें प्राप्त होती हैं तो मनुष्य उसके दर्द से बहुत चिल्लाता है। परन्तु हे कबीर ! जब किसी के मर्म पर चोट लगती है तो पुकारने योग्य भी नहीं रहता॥१८२॥

कबीर चोट सुहेली सेल की लागत लेइ उसास ॥ चोट सहारै सबद की तासु गुरू मै दास ॥ १८३ ॥

हे कबीर ! बरछे की चोट सुगम है, जिसके लगने पर कम से कम साँस तो ली जाती है। शब्द-गुरु की चोट सहना बहुत मुश्किल है, जो शब्द की चोट सहन कर ले, मैं उस गुरु का स्वयं को दास मानता हूँ॥१८३॥

कबीर मुलां मुनारे किआ चढहि सांई न बहरा होइ ॥ जा कारनि तूं बांग देहि दिल ही भीतरि जोइ ॥ १८४ ॥

कबीर जी उपदेश देते हैं कि हे मुल्ला! तू मीनार पर बांग देने के लिए क्यों चढ़ता है। बांग सुनने वाला मालिक बहरा नहीं। जिसके लिए तू बांग देता है, उसको तू अपने दिल में ही देख॥ १८४॥

सेख सबूरी बाहरा किआ हज काबे जाइ ॥ कबीर जा की दिल साबति नही ता कउ कहां खुदाइ ॥ १८५ ॥

हे शेख! यदि मन में संतोष नहीं तो हज्ज करने के लिए काबा क्योंकर जाया जाए। कबीर जी कहते हैं कि जिसका दिल ही साफ नहीं तो उसे कहाँ खुदा मिल सकता है॥ १८५॥

कबीर अलह की करि बंदगी जिह सिमरत दुखु जाइ ॥ दिल महि सांई परगटै बुझै बलंती नांइ ॥ १८६ ॥

कबीर जी आग्रह करते हैं कि अल्लाह की बंदगी करो, उसे याद करने से सब दुख-दर्द मिट जाते हैं। वह मालिक तो दिल में ही मिल जाता है और उसके नाम से संसार की तृष्णा बुझ जाती है॥१८६॥

कबीर जोरी कीए जुलमु है कहता नाउ हलालु ॥ दफतरि लेखा मांगीऐ तब होइगो कउनु हवालु ॥ १८७ ॥

कबीर जी कहते हैं कि एक तो मासूम जीव पर जोर-जबरदस्ती करके जुल्म करते हो और दूसरा इसे हलाल का नाम देते हो। जब खुदा के दफ्तर में तेरे कर्मों का हिसाब मांगा जाएगा तो तेरा क्या हाल होगा॥ १८७॥

कबीर खूबु खाना खीचरी जा महि अंम्रितु लोनु ॥ हेरा रोटी कारने गला कटावै कउनु ॥ १८८ ॥

कबीर जी मांस खाने पर आपत्ति जतलाते हुए कहते हैं कि दाल-खिचड़ी का खाना बहुत अच्छा है, जिसमें स्वादिष्ट नमकीन होता है। जीभ के चस्के के लिए मांसाहार हेतु जीव को मारना और फिर इसकी सजा भोगने के लिए अपना गला कौन कटाए? (मुझे यह स्वीकार नहीं)॥ १८८॥

कबीर गुरु लागा तब जानीऐ मिटै मोहु तन ताप ॥ हरख सोग दाझै नही तब हरि आपहि आपि ॥ १८९ ॥

कबीर जी कहते हैं कि गुरु से साक्षात्कार तब माना जाता है, जब मोह एवं तन के रोग मिट जाते हैं। फिर खुशी अथवा गम कोई असर नहीं करता, तब परमात्मा स्वयं होता है॥१८९॥

कबीर राम कहन महि भेदु है ता महि एकु बिचारु ॥ सोई रामु सभै कहहि सोई कउतकहार ॥ १९० ॥

कबीर जी कहते हैं कि राम कहने में भेद है, उस में एक समझने योग्य बात है। दशरथ पुत्र श्रीराम चन्द्र को सब लोग 'राम' ही कहते हैं और सर्वव्यापक लीला करने वाले रचयिता को भी राम ही कहा जाता है॥१९०॥

कबीर रामै राम कहु कहिबे माहि बिबेक ॥ एकु अनेकहि मिलि गइआ एक समाना एक ॥ १६१॥

कबीर जी कहते हैं कि 'राम' 'राम' जपते रहो, जपने में विवेक है। एक राम ही अनेकानेक रूपों में सब में समाया हुआ है, एक राम ही हर दिल में बस रहा है, वह समान रूप से एक ही है॥१६१॥

कबीर जा घर साध न सेवीअहि हरि की सेवा नाहि ॥ ते घर मरहट सारखे भूत बसहि तिन माहि ॥ १६२ ॥

कबीर जी कहते हैं कि जिस घर में साधु महापुरुषों की सेवा नहीं होती, न ही ईश्वर की पूजा-वंदना होती है, वह घर मरघट समान है और वहाँ भूत-प्रेत ही रहते हैं॥१६२॥

कबीर गूंगा हूआ बावरा बहरा हूआ कान ॥ पावहु ते पिंगुल भइआ मारिआ सतिगुर बान ॥ १६३ ॥

कबीर जी कहते हैं कि जिसको सतिगुरु ने अपने शब्द का बाण मारा, वह जुबान से गूंगा व बावला हो जाता है, कान से बहरा व पैरों से पिंगला हो जाता है अर्थात् जिसके मन में गुरु का उपदेश अवस्थित हो जाता है, वह जुबान से किसी को अपशब्द नहीं कहता, कानों से किसी की निन्दा नहीं सुनता और पैरों से चलकर किसी बुरे काम के लिए नहीं जाता॥१६३॥

कबीर सतिगुर सूरमे बाहिआ बानु जु एकु ॥ लागत ही भुइ गिरि परिआ परा करेजे छेकु ॥ १६४ ॥

कबीर जी कहते हैं कि पूर्णगुरु ने जिसको अपने उपदेश का एक बाण मारा, उसके लगते ही अहम् मिट गया और दिल प्रेम में बिंध गया॥१६४॥

कबीर निरमल बूंद अकास की परि गई भूमि बिकार ॥ बिनु संगति इउ मांनई होइ गई भठ छार ॥ १६५ ॥

हे कबीर! वर्षा के समय आकाश से निर्मल बूँद गिरकर बेकार ही भूमि में पड़ गई और वह किसी काम न आई। इस तरह मानो जैसे भट्ठी में पड़कर वस्तु जलकर राख हो जाती है, सत्संग के बिना व्यक्ति कुसंगति में नष्ट हो जाता है॥१६५॥

कबीर निरमल बूंद अकास की लीनी भूमि मिलाइ ॥ अनिक सिआने पचि गए ना निरवारी जाइ ॥ १६६ ॥

हे कबीर! आकाश की निर्मल बूँद यदि भूमि में मिला ली जाए तो वह धरती से अलग नहीं की जा सकती। अनेकों चतुर लोग मर खप जाते हैं परन्तु शिक्षा रूपी बूँद के असर में फर्क नहीं पड़ता॥ १६६॥

कबीर हज काबे हउ जाइ था आगै मिलिआ खुदाइ ॥ सांई मुझ सिउ लरि परिआ तुझै किन्हि फुरमाई गाइ ॥ १६७ ॥

(ईश्वर की विश्व-व्यापकता का निर्देश देते हुए) कबीर जी कथन करते हैं कि मैं हज्ज करने

के लिए काबे में जा रहा था कि आगे मुझे खुदा मिल गया। वह मालिक तो मेरे साथ झगड़ा करने लग गया और उसने कहा कि यह तुझे किसने फुरमाया है कि मैं काबे में ही हूँ॥१६७॥

कबीर हज काबै होइ होइ गइआ केती बार कबीर ॥ सांई मुझ महि किआ खता मुखहु न बोलै पीर ॥ १९८ ॥

कबीर जी कहते हैं कि मैं कई बार काबे में हज्ज करने के लिया गया परन्तु हे सांई! मुझ से क़्या गलती हो गई जो काबे का पीर (खुदा) मुँह से नहीं बोलता॥१६८॥

कबीर जीअ जु मारहि जोरु करि कहते हहि जु हलालु ॥ दफतरु दई जब काढि है होइगा कउनु हवालु ॥ १९९ ॥

कबीर जी कहते हैं कि जो लोग बलपूर्वक जीव-हत्या करते हैं और उसको हलाल कहते हैं, ऐसे लोगों का तब क्या हाल होगा, जब खुदा की अदालत में कर्मों का हिसाब मांगा जाएगा॥१६६॥

कबीर जोरु कीआ सो जुलमु है लेइ जबाबु खुदाइ ॥ दफतरि लेखा नीकसै मार मुहै मुहि खाइ ॥ २०० ॥

कबीर जी कहते हैं कि किसी पर जोर-जबरदस्ती करना जुल्म है, इसका जवाब खुदा अवश्य मांगेगा। जब खुदा के दरबार में कर्मों का हिसाब होगा तो बुरे कर्मों की सजा अवश्य मिलेगी॥ २००॥

कबीर लेखा देना सुहेला जउ दिल सूची होइ ॥ उसु साचे दीबान महि पला न पकरै कोइ ॥ २०१ ॥

हे कबीर! यदि दिल साफ हो तो हिसाब देना आसान हो जाता है। प्रभु के सच्चे दरबार में फिर कोई पूछताछ नहीं होती॥२०१॥

कबीर धरती अरु आकास महि दुइ तूं बरी अबध ॥ खट दरसन संसे परे अरु चउरासीह सिध ॥ २०२ ॥

कबीर जी कहते हैं कि धरती और आकाश सम्पूर्ण सृष्टि में हे द्वैतभाव! तू ही नाशरहित होकर फैली हुई है। छः दर्शन-योगी, सन्यासी, वैरागी, वैष्णव इत्यादि और चौरासी सिद्ध भी संशय में पड़े हुए हैं कि द्वैतभाव से किस तरह बचा जाए॥ २०२॥

कबीर मेरा मुझ महि किछु नही जो किछु है सो तेरा ॥ तेरा तुझ कउ सउपते किआ लागै मेरा ॥ २०३ ॥

कबीर जी विनयपूर्वक कहते हैं कि हे ईश्वर! मेरा मुझ में अपना कुछ नहीं, जो कुछ है, सब तेरा ही दिया हुआ है। अब यदि तेरी चीज़ तुझ को सौंप ही दूँ तो मेरा कोई नुक्सान नहीं॥२०३॥

कबीर तूं तूं करता तू हूआ मुझ महि रहा न हूं ॥ जब आपा पर का मिटि गइआ जत देखउ तत तू ॥ २०४ ॥

कबीर जी कहते हैं कि हे जगदीश्वर! तू तू (तेरा स्तुतिगान) करता मैं तेरा ही रूप हो गया

हूँ, अब मुझ में अहम् नहीं रहा। जब मेरा अपना-परायापन मिट गया तो जिधर देखता हूँ, वहाँ तू ही दिखाई देता है॥ २०४॥

कबीर बिकारह चितवते झूठे करते आस ॥ मनोरथु कोइ न पूरिओ चाले ऊठि निरास ॥ २०५ ॥

कबीर जी कहते हैं कि लोग पाप-विकारों को सोचते हैं और झूठी आशाओं में लीन रहते हैं। उनका कोई मनोरथ पूरा नहीं होता और वे जीवन से निराश ही चले जाते हैं॥ २०५॥

कबीर हरि का सिमरनु जो करै सो सुखीआ संसारि ॥ इत उत कतहि न डोलई जिस राखै सिरजनहार ॥ २०६ ॥

हे कबीर! जो परमात्मा का सिमरन करता है, वही संसार में सुखी रहता है। जिसकी रक्षा सृजनहार करता है, वह इधर-उधर बिल्कुल नहीं डोलता॥ २०६॥

कबीर घाणी पीड़ते सतिगुर लीए छडाइ ॥ परा पूरबली भावनी परगटु होई आइ ॥ २०७ ॥

हे कबीर! पापों की घानी में मुझे भी पेर दिया जाता, सतगुरु ने इससे बचा लिया है। पूर्व जन्म की श्रद्धा-भक्ति का फल प्राप्त हुआ है॥ २०७॥

कबीर टालै टोलै दिनु गइआ बिआजु बढंतउ जाइ ॥ ना हरि भजिओ न खतु फटिओ कालु पहूंचो आइ ॥ २०८ ॥

हे कबीर! टालमटोल करते जिन्दगी के दिन गुजर जाते हैं और विकारों पर और विकारों का ब्याज बढ़ता जाता है। न परमात्मा का भजन किया, न ही किए कर्मों का हिसाब खत्म होता है और मौत सिर पर खड़ी हो जाती है॥ २०८॥

महला ५ ॥ कबीर कूकरु भउकना करंग पिछै उठि धाइ ॥ करमी सतिगुरु पाइआ जिनि हउ लीआ छडाइ ॥ २०९ ॥

{जिनका शीर्षक महला ५ है, वे श्री गुरु अर्जुन देव जी ने उच्चारण किए हैं}

महला ५॥ पंचम गुरु कबीर जी के संदर्भ में कहते हैं– हे कबीर! मन रूपी कुत्ता बहुत भौंकता है और लालच में आकर हराम की चीज़ों के पीछे दौड़ता है। उत्तम भाग्य से सतगुरु को पा लिया है, जिसने मोह-माया से हमें बचा लिया है॥ २०९॥

महला ५ ॥ कबीर धरती साध की तसकर बैसहि गाहि ॥ धरती भारि न बिआपई उन कउ लाहू लाहि ॥ २१० ॥

महला ५॥ हे कबीर! यदि साधु-महात्मा जनों की धरती (सत्संग) पर चोर-लुटेरे बैठ भी जाएँ तो धरती (सत्संग) को उनके भार से कोई फर्क नहीं पड़ता, पर अच्छी संगत के कारण चोर-लुटेरे लाभ ही पाते हैं॥ २१०॥

महला ५ ॥ कबीर चावल कारने तुख कउ मुहली लाइ ॥ संगि कुसंगी बैसते तब पूछै धरम राइ ॥ २११ ॥

महला ५॥ गुरु जी कबीर जी के हवाले से कहते हैं– हे कबीर! जिस प्रकार चावलों के कारण छिलकों को मूसल से पीटा जाता है। वैसे ही बुरी संगत में बैठने वाले भले पुरुष से भी

धर्मराज पूछताछ करता है॥ २११॥

नामा माइआ मोहिआ कहै तिलोचनु मीत ॥ काहे छीपहु छाइलै राम न लावहु चीतु ॥ २१२ ॥

त्रिलोचन भक्त अपने मित्र नामदेव जी से कहते हैं, हे मित्र! क्योंकर माया के मोह में उलझे हुए हो, तुम इन कपड़ों को छींबने में लगे हुए हो, अपना मन ईश्वर-भजन में क्यों नहीं लगा रहे॥२१२॥

नामा कहै तिलोचना मुख ते रामु संम्हालि ॥ हाथ पाउ करि कामु सभु चीतु निरंजन नालि ॥ २१३ ॥

नामदेव जी प्रत्युत्तर देते हैं– हे त्रिलोचन! मैं अपने मुँह से परमात्मा का नाम जपता रहता हूँ, हाथ-पैरों से सब काम करता हूँ और इसके साथ ही मेरा मन ईश्वर की स्मृति में लीन रहता है॥२१३॥

महला ५ ॥ कबीरा हमरा को नही हम किस हू के नाहि ॥ जिनि इहु रचनु रचाइआ तिस ही माहि समाहि ॥ २१४ ॥

महला ५॥ गुरु अर्जुन देव जी कबीर जी के हवाले से कहते हैं, हे कबीर! संसार में हमारा कोई नहीं है, न ही हम किसी के साथी हैं। जिस परमेश्वर ने सृष्टि-रचना की है, उसी में लीन होना है॥२१४॥

कबीर कीचड़ि आटा गिरि परिआ किछू न आइओ हाथ ॥ पीसत पीसत चाबिआ सोई निबहिआ साथ ॥ २१५ ॥

कबीर जी उपदेश देते हैं कि जगत् रूपी कीचड़ में आटा गिरने के बाद कुछ भी नहीं मिलता। पीसते-पीसते जितना चबाया जाता है (अर्थात् जितना समय भक्ति-भजन में व्यतीत होता है) वही अन्त में साथ निभाता है॥२१५॥

कबीर मनु जानै सभ बात जानत ही अउगनु करै ॥ काहे की कुसलात हाथि दीपु कूए परै ॥ २१६ ॥

हे कबीर! मन अच्छा-बुरा सब जानता है, परन्तु जानकर भी गुनाह करता है। जिसके हाथ में दीया होने के बावजूद कुँए में गिर जाए तो उसका कैसे भला होगा॥२१६॥

कबीर लागी प्रीति सुजान सिउ बरजै लोगु अजानु ॥ ता सिउ टूटी किउ बनै जा के जीअ परान ॥ २१७ ॥

हे कबीर! हमारी तो सज्जन प्रभु से ही प्रीति लगी हुई है परन्तु नासमझ लोग हमें उसकी आराधना से रोक रहे हैं। जिसने यह जीवन-प्राण दिए हैं, उससे प्रेम तोड़ने के बाद कैसे जुड़ सकता है॥ २१७॥

कबीर कोठे मंडप हेतु करि काहे मरहु सवारि ॥ कारजु साढे तीनि हथ घनी त पउने चारि ॥ २१८ ॥

कबीर जी उपदेश देते हैं कि लोग अपने घरों-मकानों से प्रेम करके उनको संवारने में फँसे हुए हैं। परन्तु मरणोपरांत साढ़े तीन हाथ अथवा ज्यादा से ज्यादा पौने चार हाथ कब्र ने ही नसीब होना है॥२१८॥

कबीर जो मै चितवउ ना करै किआ मेरे चितवे होइ ॥ अपना चितविआ हरि करै जो मेरे चिति न होइ ॥ २१६ ॥

कबीर जी कहते हैं कि जो मैं सोचता हूँ, वह परमात्मा नहीं करता, फिर भला मेरे सोचने से क्या हो सकता है। परमात्मा अपनी मर्जी से वही करता है, जो मेरे मन में याद तक नहीं होता ॥२१६ ॥

मः ३ ॥ चिंता भि आपि कराइसी अचिंतु भि आपे देइ ॥ नानक सो सालाहीऐ जि सभना सार करेइ ॥ २२० ॥

{श्री गुरु अमरदास जी कबीर जी के उपरोक्त श्लोक के बारे में अपने विचार व्यक्त करते हैं}

महला ३ ॥ ईश्वर स्वयं ही चिंता में डालता है और स्वयं ही जीवों को चिंतामुक्त कर देता है। गुरु नानक अनुरोध करते हैं कि उस मालिक की सराहना करो, जो पूरी दुनिया की देखभाल कर रहा है ॥ २२० ॥

मः ५ ॥ कबीर रामु न चेतिओ फिरिआ लालच माहि ॥ पाप करंता मरि गइआ अउध पुनी खिन माहि ॥ २२१ ॥

महला ५ ॥ पंचम गुरु कबीर जी के संदर्भ में कहते हैं–हे कबीर ! जीव परमात्मा का चिंतन नहीं करता और लोभ-लालच में भटकता फिरता है। पाप कर्म करते जीवनावधि पूरी हो जाती है और वह मौत को प्यारा हो जाता है ॥ २२१ ॥

कबीर काइआ काची कारवी केवल काची धातु ॥ साबतु रखहि त राम भजु नाहि त बिनठी बात ॥ २२२ ॥

कबीर जी कहते हैं कि यह शरीर कच्ची मटकी है, केवल कच्ची धातु से बना हुआ है। यदि इसे ठीकठाक रखना है तो राम भजन कर लो, अन्यथा इसे नाशवान ही मानो ॥ २२२ ॥

कबीर केसो केसो कूकीऐ न सोईऐ असार ॥ राति दिवस के कूकने कबहू के सुनै पुकार ॥ २२३ ॥

कबीर जी समझाते हैं कि भगवान का भजन करते रहो, बेपरवाह होकर सोना नहीं चाहिए। रात-दिन भजन करने से कभी न कभी तो वह हमारी पुकार सुन ही लेगा ॥ २२३ ॥

कबीर काइआ कजली बनु भइआ मनु कुंचरु मय मंतु ॥ अंकसु ग्यानु रतनु है खेवटु बिरला संतु ॥ २२४ ॥

हे कबीर ! यह शरीर कदली वन समान बना हुआ है, जिसमें मन रूपी एक मदमस्त हाथी है। इस मस्त हाथी को काबू करने वाला ज्ञान रूपी अंकुश है, जिसे कोई विरला संत ही काबू में रखता है ॥ २२४ ॥

कबीर राम रतनु मुखु कोथरी पारख आगै खोलि ॥ कोई आइ मिलैगो गाहकी लेगो महगे मोलि ॥ २२५ ॥

हे कबीर ! राम नाम रूपी बहुमूल्य पोटली को किसी पारखी के सन्मुख ही खोलो। इसे खरीदने के लिए कोई ग्राहक आ जाएगा तो महँगे मूल्य पर लेगा ॥ २२५ ॥

कबीर राम नामु जानिओ नही पालिओ कटकु कुटंबु ॥ धंधे ही महि मरि गइओ बाहरि भई न बंब ॥ २२६ ॥

हे कबीर ! व्यक्ति अपने पूरे परिवार का पालन-पोषण करता रहता है, परन्तु ईश्वर का मनन नहीं करता। संसारिक काम-धंधों में ही वह दम तोड़ देता है, पर किसी को पता नहीं चलता कि कब संसार छोड़ गया॥ २२६॥

कबीर आखी केरे माटुके पलु पलु गई बिहाइ ॥ मनु जंजालु न छोडई जम दीआ दमामा आइ ॥ २२७ ॥

कबीर जी कथन करते हैं— आँख झपकने में ही पल-पल करके व्यक्ति की उम्र बीत जाती है। परन्तु फिर भी मन संसार के बन्धनों को नहीं छोड़ता, अंततः मौत का संदेश आ जाता है॥ २२७॥

कबीर तरवर रूपी रामु है फल रूपी बैरागु ॥ छाइआ रूपी साधु है जिनि तजिआ बादु बिबादु ॥ २२८ ॥

कबीर जी कथन करते हैं— परमात्मा वृक्ष की तरह है और वैराग्य उसका फल है। साधु-महात्मा उस वृक्ष की छाया हैं, जिन्होंने संसार के सब वाद-विवाद छोड़ दिए हैं॥ २२८॥

कबीर ऐसा बीजु बोइ बारह मास फलंत ॥ सीतल छाइआ गहिर फल पंखी केल करंत ॥ २२६ ॥

कबीर जी उपदेश देते हैं कि ऐसा बीज बोओ, जिससे बारह महीने फल मिलता रहे। जिस वृक्ष की छाया ठण्डी एवं गहरा फल हो, पक्षी उस पर बैठकर आनंद करते रहें॥ २२६॥

कबीर दाता तरवरु दया फलु उपकारी जीवंत ॥ पंखी चले दिसावरी बिरखा सुफल फलंत ॥ २३० ॥

हे कबीर ! दाता-परमेश्वर एक पेड़ समान है, जिसे दया का फल लगा हुआ है, वह उपकार करने वाला चिरंजीव है। साधुजन रूपी पक्षी अन्य देशों को चले जाते हैं और प्रार्थना करते हैं कि हे सुखमयी पेड़ ! तू सदा फलता फूलता रहे॥ २३०॥

कबीर साधू संगु परापती लिखिआ होइ लिलाट ॥ मुकति पदारथु पाईऐ ठाक न अवघट घाट ॥ २३१ ॥

हे कबीर ! जिसके माथे पर उत्तम भाग्य लिखा होता है, उसे ही साधु पुरुषों की संगत प्राप्त होती है। उनकी संगत में ही मुक्ति प्राप्त होती है और कठिन रास्ते में रुकावट पैदा नहीं होती॥ २३१॥

कबीर एक घड़ी आधी घरी आधी हूं ते आध ॥ भगतन सेती गोसटे जो कीने सो लाभ ॥ २३२ ॥

कबीर जी उपदेश देते हैं कि बेशक एक घड़ी या आधी घड़ी, आधी से भी आधी। जितने समय भक्तों से ज्ञान-गोष्ठी की जाए, लाभ ही लाभ प्राप्त होता है॥२३२॥

कबीर भांग माछुली सुरा पानि जो जो प्रानी खांहि ॥ तीरथ बरत नेम कीए ते सभै रसातलि जांहि ॥ २३३ ॥

कबीर जी मांस-मछली व शराब पर एतराज जतलाते हुए कहते हैं कि जो व्यक्ति भांग, शराब पीते हैं, मांस-मछली का भोजन करते हैं, उनके तीर्थ, व्रत-उपवास, कर्म-धर्म सब निष्फल हो जाते हैं ॥२३३॥

नीचे लोइन करि रहउ ले साजन घट माहि ॥ सभ रस खेलउ पीअ सउ किसी लखावउ नाहि ॥ २३४ ॥

हे कबीर ! साजन प्रभु को अपने दिल में बसाकर आँखें नीचे करके रहती हूँ। अपने प्रियतम के साथ सब आनंद प्राप्त करती हूँ, पर किसी को मैं इसका भेद नहीं बताती॥२३४॥

आठ जाम चउसठि घरी तुअ निरखत रहै जीउ ॥ नीचे लोइन किउ करउ सभ घट देखउ पीउ ॥ २३५ ॥

हे प्रभु ! आठ प्रहर, चौसठ घड़ी, मेरा दिल तुझे ही देखता रहता है। मैं अपनी आँखें नीचे क्यों करूँ, जबकि मैं सब में तुझे ही देखता हूँ॥ २३५॥

सुनु सखी पीअ महि जीउ बसै जीअ महि बसै कि पीउ ॥ जीउ पीउ बूझउ नही घट महि जीउ कि पीउ ॥ २३६ ॥

हे सखी ! सुन, पति-प्रभु में मेरे प्राण बसते हैं या प्राणों में प्यारा प्रभु बस रहा है। मैं अपने प्राणों व प्रभु को समझ नहीं सकती कि मेरे हृदय में मेरे प्राण हैं कि प्यारा प्रभु है॥ २३६॥

कबीर बामनु गुरू है जगत का भगतन का गुरु नाहि ॥ अरझि उरझि कै पचि मूआ चारउ बेदहु माहि ॥ २३७ ॥

कबीर जी स्पष्ट शब्दों में कहते हैं कि ब्राह्मण केवल जगत् के लोगों का ही गुरु है, परन्तु भक्तों का गुरु नहीं। जो स्वयं चार वेदों के कर्मकाण्ड की उलझन में मर खप रहा है (उसे भक्तों का गुरु नहीं माना जा सकता)॥ २३७॥

हरि है खांडु रेतु महि बिखरी हाथी चुनी न जाइ ॥ कहि कबीर गुरि भली बुझाई कीटी होइ कै खाइ ॥ २३८ ॥

ईश्वर चीनी समान है, जो संसार रूपी रेत में बिखरा हुआ है। इसे अहंकार रूपी हाथी बनकर चुना नहीं जा सकता। कबीर जी कहते हैं कि गुरु ने भली बात समझा दी है कि इस चीनी का आनंद केवल नम्रता रूपी चींटी बनकर ही लिया जा सकता है॥२३८॥

कबीर जउ तुहि साध पिरंम की सीसु काटि करि गोइ ॥ खेलत खेलत हाल करि जो किछु होइ त होइ ॥ २३९ ॥

कबीर जी कहते हैं कि यदि तुझे ईश्वर मिलन की अभिलाषा है तो अपना शीश काटकर उसे गेंद बना ले। इस गेंद से खेलते-खेलते मस्ती में रंग जा, जो कुछ होना है, उसकी परवाह मत करो॥ २३६॥

कबीर जउ तुहि साध पिरंम की पाके सेती खेलु ॥ काची सरसउं पेलि कै ना खलि भई न तेलु ॥ २४० ॥

कबीर जी कहते हैं कि यदि तुझे प्रभु मिलन की चाह है तो पक्के गुरु के साथ खेल। क्योंकि कच्चे गुरु से न इहलोक का सुख मिलता है न ही परलोक का। जैसे कच्ची सरसों को पेरने से न तेल प्राप्त होता है, न ही खली प्राप्त होती है॥२४०॥

ढूंढत डोलहि अंध गति अरु चीनत नाही संत ॥ कहि नामा किउ पाईऐ बिनु भगतहु भगवंतु ॥ २४१ ॥

अज्ञानांध व्यक्ति इधर-उधर भटकते रहते हैं परन्तु संत पुरुषों को पहचान नहीं पाते। नामदेव कहते हैं कि फिर भक्ति के बिना भगवान को कैसे पाया जा सकता है॥ २४१॥

हरि सो हीरा छाडि कै करहि आन की आस ॥ ते नर दोजक जाहिगे सति भाखै रविदास ॥ २४२ ॥

भक्त रविदास ने सच ही कहा है कि परमात्मा रूपी हीरे को छोड़कर जो लोग अन्य की आशा करते हैं, वे नरक में ही जाएँगे॥ २४२॥

कबीर जउ ग्रिहु करहि त धरमु करु नाही त करु बैरागु ॥ बैरागी बंधनु करै ता को बडो अभागु ॥ २४३ ॥

कबीर जी जनमानस को समझाते हैं कि यदि घर-गृहस्थी का जीवन अपना लिया है तो अपने धर्म-कर्त्तव्य का पालन करो, अन्यथा त्यागी बन जाओ। परन्तु यदि त्यागी बनकर भी संसार के बन्धनों में पड़ गए तो यह तुम्हारा दुर्भाग्य है॥ २४३॥

सलोक सेख फरीद के १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

वह परब्रह्म केवल एक (ओंकार-स्वरूप) है, सतगुरु की कृपा से प्राप्ति होती है।

जितु दिहाड़ै धन वरी साहे लए लिखाइ ॥ मलकु जि कंनी सुणीदा मुहु देखाले आइ ॥ जिंदु निमाणी कढीऐ हडा कू कड़काइ ॥ साहे लिखे न चलनी जिंदू कूं समझाइ ॥ जिंदु वहुटी मरणु वरु लै जासी परणाइ ॥ आपण हथी जोलि कै कै गलि लगै धाइ ॥ वालहु निकी पुरसलात कंनी न सुणी आइ ॥ फरीदा किड़ी पवंदीई खड़ा न आपु मुहाइ ॥ १ ॥

जिस दिन जीव-स्त्री का विवाह होना है, वह मुहूर्त पहले ही लिखा हुआ है। (अर्थात् जन्म के साथ ही मृत्यु का दिन भी पूर्व ही तय है) जिस मौत के फरिश्ते के बारे में कानों से सुना जाता था, वह आकर मुँह दिखा देता है। वह हड्डियों को तोड़-मरोड़कर बेचारे प्राणों को निकाल लेता है। इन प्राणों को अच्छी तरह समझा दो कि मौत का समय बदल नहीं सकता। प्राण रूपी दुल्हन के साथ मौत रूपी दूल्हा विवाह रचा कर ले ही जाता है। तो फिर भला अपने हाथों से प्राणों को विदा करके देह किसके गले लगकर आंसू बहाएगी। हे जीव ! क्या तूने कानों से सुना नहीं कि नरक की आग पर बना पुल बालों से भी बारीक है। फरीद जी अनुरोध करते हैं कि आवाजें आ रही हैं, उससे गुजरने के लिए तू खड़ा-खड़ा मत लुट॥१॥

फरीदा दर दरवेसी गाखड़ी चलां दुनीआं भति ॥ बंन्हि उठाई पोटली किथै वंञा घति ॥ २ ॥

हे फरीद ! रब के दर की फकीरी करना बहुत कठिन है, परन्तु मैं तो दुनियादारी की तरह ही चल रहा हूँ। दुनिया वालों की तरह मैंने भी गठरी बांधकर सिर पर उठाई हुई है, इसे छोड़कर कहाँ जाऊँ॥२॥

किझु न बुझै किझु न सुझै दुनीआ गुझी भाहि ॥ सांईं मेरै चंगा कीता नाही त हं भी दझां आहि ॥ ३ ॥

यह दुनिया छिपी हुई आग है, जिसमें कुछ समझ नहीं आता। मेरे मालिक ने बहुत अच्छा किया, जो रहम करके मुझे इससे बचा लिया, अन्यथा मैंने भी इसमें जल जाना था॥३॥

फरीदा जे जाणा तिल थोड़ड़े संमलि बुकु भरी ॥ जे जाणा सहु नंढड़ा तां थोड़ा माणु करी ॥ ४ ॥

हे फरीद ! यदि मुझे पता होता कि ये जीवन-साँसें थोड़ी हैं तो सोच-समझ कर जीवन व्यतीत करता। और यदि मुझे मालूम होता कि मेरा मालिक बेपरवाह है तो उसके आगे मैं बिल्कुल मान नहीं करता॥४॥

जे जाणा लड़ु छिजणा पीडी पाईं गंढि ॥ तै जेवडु मै नाहि को सभु जगु डिठा हंढि ॥ ५ ॥

यदि मुझे मालूम होता कि प्रेम का आँचल टूटने वाला है तो मैं मजबूत गांठ लगा देता। हे सच्चे मालिक! पूरी दुनिया घूम कर देख ली है, लेकिन तेरे जैसा दूसरा कोई नहीं॥५॥

फरीदा जे तू अकलि लतीफु काले लिखु न लेख ॥ आपनड़े गिरीवान महि सिरु नींवां करि देखु ॥ ६ ॥

फरीद जी कहते हैं कि हे भाई! यदि तू बुद्धिमान है तो अपने लिए बुरे कर्मों का हिसाब मत लिख, बल्कि अपने गिरेबान में सिर झुका कर देख कि तू कैसा है (अच्छे काम कर रहा है कि बुरे काम)॥ ६॥

फरीदा जो तै मारनि मुकीआं तिन्हा न मारे घुंमि ॥ आपनड़ै घरि जाईऐ पैर तिन्हा दे चुंमि ॥ ७॥

फरीद जी नम्रता की ओर बल देते हुए कहते हैं कि यदि कोई तुझे मुक्के मारता है तो पलट कर उसे मत मार। बल्कि उसके पैर चूमकर अपने घर चले जाओ॥ ७॥

फरीदा जां तउ खटण वेल तां तू रता दुनी सिउ ॥ मरग सवाई नीहि जां भरिआ तां लदिआ ॥ ८ ॥

हे फरीद! जब तेरा कमाई करने (अर्थात् रब का नाम जपने) का समय था तो तू दुनियादारी में ही लीन रहा। इस तरह मौत की नींव बढ़ती गई अर्थात् मौत निकट आती गई। जब जिंदगी पूरी हो गई तो पापों का बोझ लादकर चल पड़ा॥८॥

देखु फरीदा जु थीआ दाड़ी होई भूर ॥ अगहु नेड़ा आइआ पिछा रहिआ दूरि ॥ ९ ॥

फरीद जी समझाते हैं कि हे भाई! क्या हाल हो गया है, तेरी काली दाढ़ी भी अब सफेद हो गई है। आगे आने वाला मौत का समय निकट आ गया है, जिंदगी का समय भी दूर रह गया है॥ ९॥

देखु फरीदा जि थीआ सकर होई विसु ॥ सांई बाझहु आपणे वेदण कहीऐ किसु ॥ १० ॥

फरीद जी पुनः समझाते हैं कि देख ले, कैसी गुजर रही है। बुढ़ापे के कारण अब तो मीठी चीज़ें भी जहर की तरह कड़वी लगने लग गई हैं। अपने मालिक के बिना बुढ़ापे का दर्द किसे बताया जाए॥१०॥

फरीदा अखी देखि पतीणीआं सुणि सुणि रीणे कंन ॥ साख पकंदी आईआ होर करेंदी वंन ॥ ११ ॥

फरीद जी बुढ़ापे का हाल बताते हुए कहते हैं कि देख-देखकर आँखें भी कमज़ोर हो गई हैं (अब आँखों से साफ नज़र नहीं आ रहा) और सुन-सुनकर कान भी बहरे हो गए हैं (बुढ़ापे के कारण सुनाई भी नहीं दे रहा) जवानी गुजरते ही देह रूपी खेती पक गई है और इसने दूसरा ही रंग बना लिया है॥११॥

मः ३ ॥ फरीदा कालीं जिनी न राविआ धउली रावै कोइ ॥ करि सांई सिउ पिरहड़ी रंगु नवेला होइ ॥ १२ ॥

महला ३॥ गुरु अमरदास जी फरीद जी के हवाले से कहते हैं कि जिसने जवानी में मालिक की बंदगी नहीं की, अब भला बुढ़ापे में वह कैसे बंदगी कर सकता है। उचित तो यही है कि खुदा से मुहब्बत करते रहो, नया ही रंग पैदा होगा॥१२॥

मः ३ ॥ फरीदा काली धउली साहिबु सदा है जे को चिति करे ॥ आपणा लाइआ पिरमु न लगई जे लोचै सभु कोइ ॥ एहु पिरमु पिआला खसम का जै भावै तै देइ ॥ १३ ॥

महला ३॥ गुरु अमरदास जी बाबा फरीद जी के उपरोक्त श्लोक पर व्याख्या करते हुए कहते हैं– हे फरीद ! यदि कोई मालिक को याद करे तो सदैव कर सकता है, उसके लिए जवानी या बुढ़ापे की कोई अहमियत नहीं। चाहे हर कोई उसे चाहता है, परन्तु अपने लगाने से प्रेम नहीं लगता। यह प्रेम प्याला मालिक की बख्शिश है, जिसे चाहता है, उसे ही देता है॥१३॥

फरीदा जिन्ह लोइण जगु मोहिआ से लोइण मै डिठु ॥ कजल रेख न सहदिआ से पंखी सूइ बहिठु ॥ १४ ॥

हे फरीद ! जिन सुन्दर आँखों ने लोगों को मोहित किया हुआ था, उनको भी मैंने देख लिया है। पहले तो वे काजल की रेखा को भी सहन नहीं करती थीं परन्तु अब उन पर पक्षियों के बच्चे बैठे हुए हैं॥१४॥

फरीदा कूकेदिआ चांगेदिआ मती देदिआ नित ॥ जो सैतानि वंञाइआ से कित फेरहि चित ॥ १५ ॥

हे फरीद ! भले पुरुष रोज़ पुकार कर शिक्षा देते हुए समझाते हैं परन्तु जिन व्यक्तियों को शैतान ने खराब कर दिया है, उनका मन (अच्छे कामों की ओर) कैसे बदल सकता है॥१५॥

फरीदा थीउ पवाही दभु ॥ जे सांई लोड़हि सभु ॥ इकु छिजहि बिआ लताड़ीअहि ॥ तां साई दै दरि वाड़ीअहि ॥ १६ ॥

बाबा फरीद जी समझाते हैं कि यदि तू मालिक को पाना चाहता है तो रास्ते की घास की तरह विनम्र हो जा, जिसे कोई काटता है, कोई पैरों के नीचे रौंदता है तो फिर वह मालिक के दर पर पहुँचती है॥१६॥

फरीदा खाकु न निंदीऐ खाकू जेडु न कोइ ॥ जीवदिआ पैरा तलै मुइआ उपरि होइ ॥ १७ ॥

फरीद जी उपदेश देते हैं कि मिट्टी की निंदा मत करो, इस मिट्टी जैसा उपकारी कोई नहीं। यह जीते-जी पैरों के नीचे होती है और मरने के बाद ऊपर होती है॥१७॥

फरीदा जा लबु ता नेहु किआ लबु त कूड़ा नेहु ॥ किचरु झति लघाईऐ छपरि तुटै मेहु ॥ १८ ॥

फरीद जी कहते हैं कि यदि मन में लोभ ही भरा हो तो वहाँ प्रेम कैसे हो सकता है ? लोभ में किया प्रेम झूठा ही सिद्ध होता है। अगर छप्पर ही टूटा हुआ हो तो बरसात के दिनों में समय कैसे गुज़र सकता है, वैसे ही लोभ में प्रेम कदापि नहीं निभ सकता॥१८॥

फरीदा जंगलु जंगलु किआ भवहि वणि कंडा मोड़ेहि ॥ वसी रबु हिआलीऐ जंगलु किआ ढूढेहि ॥ १६ ॥

फरीद जी शिक्षा देते हुए कहते हैं कि हे भाई ! तू पेड़-पौधों को कुचलता हुआ जंगल-जंगल क्यों घूम रहा है ? रब तो तेरे दिल में ही बस रहा है, जंगल में क्योंकर ढूँढ रहा है॥१६॥

फरीदा इनी निकी जंघीऐ थल डूंगर भविओम्हि ॥ अजु फरीदै कूजड़ा सै कोहां थीओमि ॥ २० ॥

फरीद जी कहते हैं– जवानी के दिनों में इन छोटी-छोटी टांगों से मैं मैदान एवं पहाड़ियों में घूमता फिरता रहा। परन्तु बुढ़ापे के कारण आज मुझे वजु करने वाला छोटा-सा लोटा भी सौ कोस दूर लग रहा है॥२०॥

फरीदा राती वडीआं धुखि धुखि उठनि पास ॥ धिगु तिन्हा दा जीविआ जिना विडाणी आस ॥ २१ ॥

फरीद जी कहते हैं कि रातें अब लम्बी हो गई हैं, शरीर का अंग-अंग पीड़ा कर रहा है। ऐसे लोगों का जीना धिक्कार योग्य है, जो रब को छोड़कर पराई आशा में रहते हैं॥२१॥

फरीदा जे मै होदा वारिआ मिता आइड़िआं ॥ हेड़ा जलै मजीठ जिउ उपरि अंगारा ॥ २२ ॥

हे फरीद ! यदि अतिथि सज्जनों से मैं कुछ छिपाकर रखूँ तो मेरा शरीर आग के अंगारों में यूं जल जाए, ज्यों मजीठ जल जाती है॥२२॥

फरीदा लोड़ै दाख बिजउरीआं किकरि बीजै जटु ॥ हंढै उंन कताइदा पैधा लोड़ै पटु ॥ २३ ॥

हे फरीद ! किसान बोता तो बबूल है, परन्तु मेवों को खाना चाहता है। यूं ही जो व्यक्ति ऊन कातता फिरता है, वह रेशमी वस्त्र को पहनने की इच्छा लगा लेता है अर्थात् जीव काम तो थोड़ा-सा करता है, लेकिन उम्मीद ज्यादा की करता है॥२३॥

फरीदा गलीए चिकड़ु दूरि घरु नालि पिआरे नेहु ॥ चला त भिजै कंबली रहां त तुटै नेहु ॥ २४ ॥

बाबा फरीद कहते हैं, गली में कीचड़ है, जिससे प्रेम लगाया हुआ है, उसका घर दूर है। यदि मैं उसको मिलने जाता हूँ तो बारिश के कारण मेरा कंबल भीगता है और यदि नहीं जाता तो मेरा प्रेम टूटता है॥२४॥

भिजउ सिजउ कंबली अलह वरसउ मेहु ॥ जाइ मिला तिना सजणा तुटउ नाही नेहु ॥ २५ ॥

मेरा कम्बल बेशक भीग कर पानी से भर जाए, अल्लाह की रज़ा से बरसात होती रहे। मैं उन सज्जनों को जाकर जरूर मिलूँगा ताकि उनसे मेरा प्रेम टूट न जाए॥२५॥

फरीदा मै भोलावा पग दा मतु मैली होइ जाइ ॥ गहिला रूहु न जाणई सिरु भी मिटी खाइ ॥ २६ ॥

हे फरीद ! मुझे अपनी पगड़ी का फिक्र था कि कहीं यह मैली न हो जाए। परन्तु गाफिल रूह यह नहीं जानती कि आखिरकार सिर को भी मिट्टी ने ही खा जाना है॥२६॥

फरीदा सकर खंडु निवात गुड़ु माखिओ मांझा दुधु ॥ सभे वसतू मिठीआं रब न पुजनि तुधु ॥ २७ ॥

फरीद जी कहते हैं कि इसमें कोई शक नहीं कि शक्कर, खांड, मिश्री, गुड़, शहद एवं भैंस का दूध इत्यादि सब वस्तुएँ मीठी हैं परन्तु हे मेरे रब ! यह सब तेरी बराबरी नहीं कर सकतीं (क्योंकि तेरा नाम ही सबसे मीठा है)॥२७॥

फरीदा रोटी मेरी काठ की लावणु मेरी भुख ॥ जिना खाधी चोपड़ी घणे सहनिगे दुख ॥ २८ ॥

फरीद जी कहते हैं कि मेरी रोटी लकड़ी की है, इसी से मेरी भूख दूर हो जाती है। जो पाप-कर्म करके घी से चुपड़ी रोटी खाएँगे, वे बहुत दुख पाएँगे॥२८॥

रुखी सुखी खाइ कै ठंढा पाणी पीउ ॥ फरीदा देखि पराई चोपड़ी ना तरसाए जीउ ॥ २९ ॥

बाबा फरीद जी नेक कमाई का सादा भोजन करने की हिदायत देते हुए कहते हैं कि रूखी-सूखी दाल-रोटी खाकर ठण्डा पानी पी लो। हे फरीद ! पराई (अमीरों की) चुपड़ी हुई रोटी देखकर अपने दिल को मत तरसाओ॥२९॥

अजु न सुती कंत सिउ अंगु मुड़े मुड़ि जाइ ॥ जाइ पुछहु डोहागणी तुम किउ रैणि विहाइ ॥ ३० ॥

मैं तो केवल आज ही अपने प्रभु से दूर रही हूँ, जिससे मेरे हाथ-पैर पूरा शरीर दर्द कर रहा है। उन दुहागिनों से जाकर पूछो कि तुम्हारी जीवन-रात्रि कैसे गुजरी है॥३०॥

साहुरै ढोई ना लहै पेईऐ नाही थाउ ॥ पिरु वातड़ी न पुछई धन सोहागणि नाउ ॥ ३१ ॥

जिस स्त्री को न ससुराल (परलोक) में आसरा मिलता है, न ही पीहर (इहलोक) में कोई स्थान मिलता है। पति-प्रभु उसकी बात नहीं पूछता, फिर ऐसी स्त्री यदि खुद को सुहागिन कहती है तो ठीक नहीं॥३१॥

साहुरै पेईऐ कंत की कंतु अगंमु अथाहु ॥ नानक सो सोहागणी जु भावै बेपरवाह ॥ ३२ ॥

{यह श्लोक गुरु नानक देव जी का है। बाबा फरीद जी के उपरोक्त श्लोक को स्पष्ट करने के लिए, मारू राग की वार में से श्री गुरु अर्जुन देव जी ने लिखवाया}

ससुराल (परलोक) हो या पीहर (इहलोक) जीव-स्त्री तो प्रभु की ही है, वह अगम्य एवं अथाह है। गुरु नानक फुरमान करते हैं कि असल में वही सुहागिन है, जो प्रभु को अच्छी लगती है॥३२॥

नाती धोती संबही सुती आइ नचिंदु ॥ फरीदा रही सु बेड़ी हिंङु दी गई कथूरी गंधु ॥ ३३ ॥

नहा-धोकर, खूब सज-सँवर कर जीव-स्त्री बेफिक्र होकर मोह की नींद में सोई रही। पर हे फरीद ! उस स्त्री की कस्तूरी वाली गंध तो चली गई और वह हिंग की बदबू में पड़ी रही॥३३॥

जोबन जांदे ना डरां जे सह प्रीति न जाइ ॥ फरीदा कितीं जोबन प्रीति बिनु सुकि गए कुमलाइ ॥ ३४ ॥

अगर मेरी पति-प्रभु से प्रीति बनी रहे तो मुझे अपनी जवानी के जाने का भी कोई डर नहीं, हे फरीद ! प्रभु प्रीति के बिना कितने ही जीवों की जवानी सूख कर कुम्हला गई है॥३४॥

फरीदा चिंत खटोला वाणु दुखु बिरहु विछावण लेफु ॥ एहु हमारा जीवणा तू साहिब सचे वेखु ॥ ३५ ॥

फरीद जी कहते हैं कि चिंता हमारी चारपाई है, जो दुःख रूपी रस्सियों से बुनी हुई है और वियोग का दुख ही हमारा बिछौना एवं रजाई है। हे सच्चे मालिक ! तू हमारी दशा तो देख, यही हमारा जीवन है॥ ३५॥

बिरहा बिरहा आखीऐ बिरहा तू सुलतानु ॥ फरीदा जितु तनि बिरहु न ऊपजै सो तनु जाणु मसानु ॥ ३६ ॥

विरह-वियोग कहकर हर कोई दुखी हो रहा है। हे वियोग ! तू ही बादशाह है, क्योंकि फरीद जी कहते हैं, जिस शरीर में वियोग पैदा नहीं होता, उसे श्मशान के समान मानो, जहाँ नित्य आग जलती रहती है॥३६॥

फरीदा ए विसु गंदला धरीआं खंडु लिवाड़ि ॥ इकि राहेदे रहि गए इकि राधी गए उजाड़ि ॥ ३७ ॥

फरीद जी कहते हैं– यह दुनिया के पदार्थ जहर से भरे हुए साग की तरह हैं, जो मोह रूपी खाण्ड में लपेट रखे हैं। कुछ लोग इन पदार्थों को बोते-तैयार करते ही मर गए हैं और कुछ छोड़कर चले गए॥३७॥

फरीदा चारि गवाइआ हंढि कै चारि गवाइआ संमि ॥ लेखा रबु मंगेसीआ तू आंहो केर्हे कंमि ॥ ३८ ॥

फरीद जी कहते हैं कि हे जीव! दिन के चार प्रहर तूने मौज-मस्ती एवं खानपान में गंवा दिए और रात के चार प्रहर सो कर गंवा दिए। (रब की बंदगी न की) आखिरकार रब तुझसे हिसाब मांगेगा कि केवल तुम यही काम करते रहे॥ ३८॥

फरीदा दरि दरवाजै जाइ कै किउ डिठो घड़ीआलु ॥ एहु निदोसां मारीऐ हम दोसां दा किआ हालु ॥ ३९ ॥

फरीद जी (पाप-दोषों से सावधान करते हुए) कहते हैं कि हे भाई! तूने किसी के दरवाजे पर जाकर घड़ियाल बजता देखा है? जब यह बेचारा निर्दोष ही मार खाता है तो फिर हम दोषियों का पता नहीं क्या हाल होगा॥३९॥

घड़ीए घड़ीए मारीऐ पहरी लहै सजाइ ॥ सो हेड़ा घड़ीआल जिउ डुखी रैणि विहाइ ॥ ४० ॥

बेचारे घड़ियाल को हर घड़ी मार पड़ती है और हर प्रहर उपरांत सजा मिलती है। वह शरीर भी जो गुनहगार है, घड़ियाल की मानिंद अपनी उम्र रूपी रात्रि को यूँ ही दुखों में व्यतीत करता है॥ ४०॥

बुढा होआ सेख फरीदु कंबणि लगी देह ॥ जे सउ वर्हिआ जीवणा भी तनु होसी खेह ॥ ४१ ॥

शेख फरीद अब बूढ़ा हो गया है, बुढ़ापे के कारण उसका शरीर कांपने लग गया है। यदि सौ बरस भी जीने को मिल जाएँ तो भी इस शरीर ने मिट्टी ही होना है॥४१॥

फरीदा बारि पराइऐ बैसणा सांई मुझै न देहि ॥ जे तू एवै रखसी जीउ सरीरहु लेहि ॥ ४२ ॥

फरीद जी गुज़ारिश करते हैं कि हे मालिक! मुझे पराए द्वार पर बैठने मत देना अर्थात् किसी पर निर्भर मत करना। पर यदि तूने मुझे किसी पर निर्भर ही रखना है तो बेहतर है कि शरीर में से मेरी जान निकाल ले॥४२॥

कंधि कुहाड़ा सिरि घड़ा वणि कै सरु लोहारु ॥ फरीदा हउ लोड़ी सहु आपणा तू लोड़हि अंगिआर ॥ ४३ ॥

फरीद जी लोहार को संबोधन करते हैं कि तू कंधे पर कुल्हाड़ी और सिर पर पानी का घड़ा रखकर घूम रहा है। हे लोहार! तू उस वृक्ष को काटना चाहता है, जिसके नीचे मैं बैठा हुआ हूँ। फरीद जी कहते हैं कि मैं अपने मालिक को बंदगी द्वारा ढूँढ रहा हूँ और तू कोयले की तलाश में है॥ ४३॥

फरीदा इकना आटा अगला इकना नाही लोणु ॥ अगै गए सिंञापसनि चोटां खासी कउणु ॥ ४४ ॥

(बाबा फरीद जी अमीर अथवा गरीब पर टिप्पणी करते हुए कहते हैं) हे फरीद ! किसी के पास ज़रूरत से अधिक खाने के लिए आटा है और किसी के पास नमक तक नहीं। परलोक में जाकर ही पता चलेगा कि इन दोनों में से किसे दण्ड प्राप्त होता है॥४४॥

पासि दमामे छतु सिरि भेरी सडो रड ॥ जाइ सुते जीराण महि थीए अतीमा गड ॥ ४५ ॥

जिसके पास नगाड़े, सिर पर छत्र झूलते थे, शहनाइयाँ गूँजती थीं और भाट महिमा गाते थे। आखिरकार ऐसे राजा-महाराज भी कब्र-चिताओं में सदा की नींद सो गए और यतीमों में जा मिले॥४५॥

फरीदा कोठे मंडप माड़ीआ उसारेदे भी गए ॥ कूड़ा सउदा करि गए गोरी आइ पए ॥ ४६ ॥

हे फरीद ! सुन्दर घर, महल, भवन बनाने वाले भी संसार छोड़कर चले गए। वे दुनिया में झूठा सौदा करते हुए कब्र-श्मशानों में जा पड़े॥४६॥

फरीदा खिंथड़ि मेखा अगलीआ जिंदु न काई मेख ॥ वारी आपो आपणी चले मसाइक सेख ॥ ४७ ॥

हे फरीद ! शरीर रूपी कफनी को अनेकों नाड़ियों के टाँके लगे हुए हैं परन्तु प्राणों को कोई टाँका नहीं लगा हुआ है। अपनी-अपनी बारी आने पर सूफी पीर अथवा शेख सब चले गए हैं॥४७॥

फरीदा दुहु दीवी बलंदिआ मलकु बहिठा आइ ॥ गड़ु लीता घटु लुटिआ दीवड़े गइआ बुझाइ ॥ ४८ ॥

हे फरीद ! दो आँखों के दीयों के जलते ही मौत का फरिश्ता आकर बैठ गया। उसने शरीर रूपी किले पर कब्जा कर लिया, इस तरह आत्मा को लूटकर दो दीयों को बुझा गया। अर्थात् शरीर को प्राणविहीन करके आँखों की रोशनी बंद कर गया॥४८॥

फरीदा वेखु कपाहै जि थीआ जि सिरि थीआ तिलाह ॥ कमादै अरु कागदै कुंने कोइलिआह ॥ मंदे अमल करेदिआ एह सजाइ तिनाह ॥ ४९ ॥

फरीद जी कहते हैं कि देख ! कपास का क्या हाल हुआ है (बेलने में बेला गया) तिलों की क्या दशा हुई है। (कोल्हू में पेर कर तेल निकाल दिया गया) गन्ने को बेलन में डालकर रस निकाल दिया और कागज़ भी किस तरह पेरा जाता है। हाँडी को बारंबार आग पर रखकर खाना पकाया जाता है और कोयले को हर रोज़ जलाया जाता है। जो लोग बुरे कर्म करते हैं, उनको सख्त सजा मिलती है॥४९॥

फरीदा कंनि मुसला सूफु गलि दिलि काती गुड़ु वाति ॥ बाहरि दिसै चानणा दिलि अंधिआरी राति ॥ ५० ॥

फरीद जी दंभी फकीरों की ओर संकेत करते हुए कहते हैं कि बेशक कंधे पर मुसल्ला और गले पर कफनी ली हुई है। दिल में काटने के लिए छुरी है, मुँह में गुड़ की तरह मीठी-मीठी बातें करते हैं। बाहर से समाज के सामने भले पुरुष दिखाई दे रहे हैं, परन्तु दिल में काली रात की तरह बुरे हैं॥५०॥

फरीदा रती रतु न निकलै जे तनु चीरै कोइ ॥ जो तन रते रब सिउ तिन तनि रतु न होइ ॥ ५१ ॥

बाबा फरीद जी कहते हैं— रब की बंदगी में मस्त पुरुषों का यदि कोई शरीर चीर भी दे तो उनका रक्त नहीं निकलता। चूंकि रब की बंदगी में रत रहने वालों के शरीर में रक्त नहीं होता॥५१॥

मः ३ ॥ इहु तनु सभो रतु है रतु बिनु तंनु न होइ ॥ जो सह रते आपणे तितु तनि लोभु रतु न होइ ॥ भै पइऐ तनु खीणु होइ लोभु रतु विचहु जाइ ॥ जिउ बैसंतरि धातु सुधु होइ तिउ हरि का भउ दुरमति मैलु गवाइ ॥ नानक ते जन सोहणे जि रते हरि रंगु लाइ ॥ ५२ ॥

महला ३॥ श्री गुरु अमरदास जी बाबा फरीद के उपरोक्त श्लोक पर स्पष्ट करते हैं कि इस शरीर में रक्त ही रक्त है और रक्त के बिना शरीर नहीं होता। जो लोग अपने मालिक की बंदगी में लीन होते हैं, उनके शरीर में दरअसल लोभ रूपी रक्त नहीं होता। मालिक के भय में रहने से इनका शरीर क्षीण होता है और जिससे लोभ-रक्त निकल जाता है। जैसे अग्नि में स्वर्ण इत्यादि धातु शुद्ध हो जाती है, वैसे ही परमात्मा का भय दुर्मति की मैल दूर कर देता है। गुरु नानक कथन करते हैं कि वही भक्तजन सुन्दर हैं, जो परमात्मा की भक्ति में लीन होते हैं॥५२॥

फरीदा सोई सरवरु ढूढि लहु जिथहु लभी वथु ॥ छपड़ि ढूढै किआ होवै चिकड़ि डुबै हथु ॥ ५३ ॥

फरीद जी कहते हैं कि गुरु रूपी ऐसा सरोवर ढूँढ लो, जहाँ से सब वस्तुएँ प्राप्त होती हैं। मामूली तालाब ढूँढने का कोई लाभ नहीं, वहाँ तो कीचड़ में हाथ डूबेगा अर्थात् कुसंगति से बदनामी ही होगी॥५३॥

फरीदा नंढी कंतु न राविओ वडी थी मुईआसु ॥ धन कूकेंदी गोर में तै सह ना मिलीआसु ॥ ५४ ॥

हे फरीद ! जवानी में पति-प्रभु का सुख प्राप्त न किया और जब उम्र पूरी होने पर मर गई तो जीव-स्त्री कब्र में पुकार करती है, हे प्रभु ! मेरा तुझ से मिलन नहीं हुआ॥५४॥

फरीदा सिरु पलिआ दाड़ी पली मुछां भी पलीआं ॥ रे मन गहिले बावले माणहि किआ रलीआं ॥ ५५ ॥

फरीद जी कहते हैं कि सिर के बाल, दाढ़ी-मूँछें सफेद हो गए हैं अर्थात् बुढ़ापा आ गया है, परन्तु हे बावले मन ! अब भी तू रंगरलियाँ ही मना रहा है॥५५॥

फरीदा कोठे धुकणु केतड़ा पिर नीदड़ी निवारि ॥ जो दिह लधे गाणवे गए विलाड़ि विलाड़ि ॥ ५६ ॥

फरीद जी समझाते हैं कि घर की छत पर कितना भागा जा सकता है ? अर्थात् घर की छत समान यह जिंदगी भी थोड़ी ही है। अपनी नींद को दूर कर लो। जो दिन तुझे गिनती के मिले हैं, वे गुजरते जा रहे हैं॥ ५६॥

फरीदा कोठे मंडप माड़ीआ एतु न लाए चितु ॥ मिटी पई अतोलवी कोइ न होसी मितु ॥ ५७ ॥

बाबा फरीद सावधान करते हुए कहते हैं कि सुन्दर घर, मकान एवं महलों में दिल मत लगाओ। क्योंकि मरने के बाद तेरे ऊपर बेशुमार मिट्टी ही पड़नी है और कोई मित्र नहीं होगा॥५७॥

फरीदा मंडप मालु न लाइ मरग सताणी चिति धरि ॥ साई जाइ सम्हालि जिथै ही तउ वंञणा ॥ ५८ ॥

फरीद जी पुनः चेताते हैं कि बड़े मकानों एवं धन-दौलत से ही दिल न लगाओ, मौत अटल है, इसे सदा याद रखना। उस परलोक को भी याद रखो, जहाँ तूने जाना है॥५८॥

फरीदा जिन्ही कंमी नाहि गुण ते कंमड़े विसारि ॥ मतु सरमिंदा थीवही सांई दै दरबारि ॥ ५६ ॥

फरीद जी शिक्षा देते हुए कहते हैं कि जिन कामों से कोई फायदा नहीं, ऐसे काम बिल्कुल छोड़ दो। अन्यथा बुरे कामों के कारण तुम्हें मालिक के दरबार में शर्मिन्दा होना पड़ेगा॥५६॥

फरीदा साहिब दी करि चाकरी दिल दी लाहि भरांदि ॥ दरवेसां नो लोड़ीऐ रुखां दी जीरांदि ॥ ६० ॥

फरीद जी उपदेश देते हैं कि मालिक की सेवा करो और दिल का वहम निकाल दो। फकीरों को वस्तुतः पेड़ की तरह सहनशील होना चाहिए॥६०॥

फरीदा काले मैडे कपड़े काला मैडा वेसु ॥ गुनही भरिआ मै फिरा लोकु कहै दरवेसु ॥ ६१ ॥

फरीद जी कहते हैं कि मेरे कपड़े काले हैं, मेरी वेशभूषा भी काली है। मैं गुनाहों से भरा हुआ हूँ, इसके बावजूद भी लोग मुझे दरवेश कह रहे हैं॥६१॥

तती तोइ न पलवै जे जलि टुबी देइ ॥ फरीदा जो डोहागणि रब दी झूरेदी झूरेइ ॥ ६२ ॥

जली हुई खेती पुनः हरी-भरी नहीं होती, चाहे उसे ठण्डे जल में कितना ही डुबो दिया जाए। हे फरीद ! वैसे ही जो जीव-स्त्री परमात्मा से बिछुड़ी हुई है, वह सदैव दुखी रहती है॥६२॥

जां कुआरी ता चाउ वीवाही तां मामले ॥ फरीदा एहो पछोताउ वति कुआरी न थीऐ ॥ ६३ ॥

जब लड़की कुंआरी थी तो उसे विवाह करने का चाव था। जब विवाह हो गया तो वह घर-गृहस्थी के झंझटों में फँस गई। हे फरीद ! तदन्तर वह पछताती है कि वह दोबारा कुंआरी नहीं हो सकती॥६३॥

कलर केरी छपड़ी आइ उलथे हंझ ॥ चिंजू बोड़न्हि ना पीवहि उडण संदी डंझ ॥ ६४ ॥

हंस यदि कल्लर के तालाब में आकर बैठ जाएँ तो वे अपनी चोंच को पानी में डालने के बावजूद भी नहीं पीते और वहाँ से शीघ्र उड़ने का प्रयास करते हैं। (वैसे ही संत संसार की वासनाओं को देखकर प्रभु-चरणों में विराजने की कामना करते हैं)॥६४॥

हंसु उडरि कोध्रै पइआ लोकु विडारणि जाइ ॥ गहिला लोकु न जाणदा हंसु न कोध्रा खाइ ॥ ६५ ॥

यदि हंस उड़कर कोधरे के खेत पर आ जाए तो लोग उसको उड़ाने के लिए जाते हैं (अर्थात् यदि संत-महात्मा संसार में आए तो लोग उसे हटाने की कोशिश करते हैं) परन्तु भोले लोग ये नहीं जानते कि हंस कभी कोधरा नहीं खाता (अर्थात् संत संसार की मोह-माया से निर्लिप्त होता है)॥६५॥

चलि चलि गईआं पंखीआं जिन्ही वसाए तल ॥ फरीदा सरु भरिआ भी चलसी थके कवल इकल ॥ ६६ ॥

उन जीव रूपी पक्षियों की कतारें भी बारी-बारी से चली गईं, जिन्होंने जगत् रूपी सरोवर को बसाकर रौनक लगाई हुई थी। हे फरीद ! यह जगत् रूपी सरोवर भी सूख जाएगा, परन्तु संत रूपी अकेला कमल ही रहेगा॥६६॥

फरीदा इट सिराणे भुइ सवणु कीड़ा लड़िओ मासि ॥ केतड़िआ जुग वापरे इकतु पइआ पासि ॥ ६७ ॥

बाबा फरीद कहते हैं कि मरणोपरांत कब्र में सिर के नीचे ईंट रखकर धरती पर सोना पड़ेगा और बदन को कीड़े काट डालेंगे। इस तरह एक जगह पड़े कितने ही युग बीत जाने हैं॥६७॥

फरीदा भंनी घड़ी सवंनवी टुटी नागर लजु ॥ अजराईलु फरेसता कै घरि नाठी अजु ॥ ६८ ॥

हे फरीद ! सुन्दर शरीर रूपी घड़ा टूट-फूट गया है, साँसों की डोरी भी टूट चुकी है। अब मौत का फरिश्ता इजराईल किस घर का मेहमान है॥६८॥

फरीदा भंनी घड़ी सवंनवी टूटी नागर लजु ॥ जो सजण भुइ भारु थे से किउ आवहि अजु ॥ ६९ ॥

हे फरीद ! सुन्दर देह रूपी घड़ा नष्ट हो गया है, साँसों की डोर भी टूट गई है। जो व्यक्ति पापों के कारण केवल बोझ मात्र थे, अब उनको मनुष्य जन्म दोबारा कैसे मिल सकता है॥६९॥

फरीदा बे निवाजा कुतिआ एह न भली रीति ॥ कबही चलि न आइआ पंजे वखत मसीति ॥ ७० ॥

बाबा फरीद कहते हैं कि हे नमाज़ न पढ़ने वाले कुत्ते ! तेरा यह तरीका ठीक नहीं है कि तू कभी भी पाँच वक्त की नमाज के लिए मस्जिद में नहीं आता॥७०॥

उठु फरीदा उजू साजि सुबह निवाज गुजारि ॥ जो सिरु सांई ना निवै सो सिरु कपि उतारि ॥ ७१ ॥

(रब की बंदगी के लिए प्रेरित करते हुए) बाबा फरीद कहते हैं कि हे भाई ! उठ, हाथ-मुँह धोकर सुबह की नमाज अदा कर। जो सिर मालिक के आगे नहीं झुकता, उसे गर्दन से काट देना चाहिए॥७१॥

जो सिरु साई ना निवै सो सिरु कीजै कांइ ॥ कुंने हेठि जलाईऐ बालण संदै थाइ ॥ ७२ ॥

जो सिर मालिक के आगे नहीं झुकता, उस सिर का क्या करना चाहिए ? (स्वयं ही उत्तर देते हैं) उसको चुल्हे के नीचे ईंधन में जला देना चाहिए॥७२॥

फरीदा किथै तैडे मापिआ जिन्ही तू जणिओहि ॥ तै पासहु ओइ लदि गए तूं अजै न पतीणोहि ॥ ७३ ॥

बाबा फरीद समझाते हैं कि तेरे माता-पिता अब कहाँ हैं, जिन्होंने तुझे जन्म दिया था। वे भी देखते ही देखते तुझे छोड़कर चले गए हैं, परन्तु अब भी तुझे यकीन नहीं हो रहा (तूने भी मृत्यु को ही गले लगाना है)॥७३॥

फरीदा मनु मैदानु करि टोए टिबे लाहि ॥ अगै मूलि न आवसी दोजक संदी भाहि ॥ ७४ ॥

बाबा फरीद कहते हैं कि ऐ मनुष्य! अपने मन को मैदान की तरह समतल कर और ऊँचे-नीचे स्थान (द्वैत, अहंकार को) दूर कर। फिर नरक की अग्नि तुझे जलाने के लिए नहीं आएगी॥७४॥

महला ५ ॥ फरीदा खालकु खलक महि खलक वसै रब माहि ॥ मंदा किस नो आखीऐ जां तिसु बिनु कोई नाहि ॥ ७५ ॥

महला ५॥ पंचम गुरु उद्‌बोधन करते हैं, हे फरीद! परमपिता परमेश्वर अपनी दुनिया में ही है और दुनिया परमेश्वर में बस रही है। तो फिर भला किस व्यक्ति को बुरा कहा जाए, जब उसके सिवा कोई नहीं॥७५॥

फरीदा जि दिहि नाला कपिआ जे गलु कपहि चुख ॥ पवनि न इती मामले सहां न इती दुख ॥ ७६ ॥

हे फरीद! जिस दिन धाय ने पोषक नलिका को काटा था, यदि उस वक्त गला भी काट देती तो अच्छा होता। अन्यथा आज इतनी परेशानियों का सामना न करना पड़ता, न ही इतने दुख मुझे भोगने पड़ते॥७६॥

चबण चलण रतंन से सुणीअर बहि गए ॥ हेड़े मुती धाह से जानी चलि गए ॥ ७७ ॥

बुढ़ापे के कारण शरीर के सब अंग कमजोर हो गए हैं, जिस कारण दाँत खाने-चबाने, पैर चलने-फिरने, आँखें देखने से और कान सुनने से रह गए हैं। यह देखकर शरीर विह्वल होकर कहता है कि मेरे सब साथी मुझे छोड़कर चले गए हैं॥७७॥

फरीदा बुरे दा भला करि गुसा मनि न हढाइ ॥ देही रोगु न लगई पलै सभु किछु पाइ ॥ ७८॥

बाबा फरीद उपदेश देते हुए कथन करते हैं कि हे प्राणी! अगर कोई तेरे साथ बुरा करे तो उसका भी भला ही कर और मन में गुस्सा मत आने दे। इससे शरीर को कोई रोग अथवा बीमारी नहीं लगती और सब कुछ प्राप्त हो जाता है॥७८॥

फरीदा पंख पराहुणी दुनी सुहावा बागु ॥ नउबति वजी सुबह सिउ चलण का करि साजु ॥ ७९॥

हे फरीद! यह दुनिया एक सुन्दर बाग है, इसमें जीव रूपी पक्षी एक मेहमान की तरह हैं। सुबह होते ही जब (मृत्यु का) बिगुल बज जाता है तो सब उड़ने की तैयारी कर लेते हैं॥७९॥

फरीदा राति कथूरी वंडीऐ सुतिआ मिलै न भाउ ॥ जिंन्हा नैण नींद्रावले तिंन्हा मिलणु कुआउ ॥ ८० ॥

हे फरीद! जीवन-रात्रि को ईश्वर-भक्ति रूपी कस्तूरी वितरित की जाती है, जो लोग मोह की नींद में रहते हैं, उनको उस में से हिस्सा नहीं मिलता। जिनकी आँखें पूरी रात नींद में रहती हैं, उनको भक्ति रूपी कस्तूरी मिलना कठिन है॥८०॥

फरीदा मै जानिआ दुखु मुझ कू दुखु सबाइऐ जगि ॥ ऊचे चड़ि कै देखिआ तां घरि घरि एहा अगि ॥ ८१ ॥

बाबा फरीद कहते हैं कि मैं समझ रहा था कि एकमात्र मैं ही दुखी हूँ परन्तु यह दुख तो पूरी दुनिया में फैला हुआ है। मैंने दूर-दृष्टि से देखा तो मालूम हुआ कि हर घर में दुखों की भयंकर आग लगी हुई है॥८१॥

महला ५ ॥ फरीदा भूमि रंगावली मंझि विसूला बाग ॥ जो जन पीरि निवाजिआ तिंन्हा अंच न लाग ॥ ८२ ॥

महला ५॥ पंचम गुरु फरीद जी के हवाले से कहते हैं, हे फरीद! इस रंगबिरंगी सुन्दर धरती में काँटों भरा विषैला बाग लगा हुआ है। परन्तु जो व्यक्ति गुरु-पीर की कृपा पाता है, उसे दुखाग्नि की आँच नहीं लगती॥८२॥

महला ५ ॥ फरीदा उमर सुहावड़ी संगि सुवंनड़ी देह ॥ विरले केई पाईअनि जिन्हा पिआरे नेह ॥ ८३ ॥

महला ५॥ गुरु जी फरीद जी के हवाले से कहते हैं– हे फरीद! सुन्दर शरीर सहित यह जिंदगी बहुत सुन्दर है। जिनका परमात्मा से प्रेम होता है, ऐसे विरले ही प्राप्त होते हैं॥८३॥

कंधी वहण न ढाहि तउ भी लेखा देवणा ॥ जिधरि रब रजाइ वहणु तिदाऊ गंउ करे ॥ ८४ ॥

हे नदिया के बहाव! तू किनारों को मत तोड़, तुझे भी हिसाब देना है। लेकिन जिधर रब की रज़ा होती है, बहाव उधर ही चला जाता है॥८४॥

फरीदा डुखा सेती दिहु गइआ सूलां सेती राति ॥ खड़ा पुकारे पातणी बेड़ा कपर वाति ॥ ८५ ॥

बाबा फरीद कहते हैं कि हे मनुष्य! दिन दुखों में बीत गया और रात शूल चुभने की तरह गुजर गई। किनारे पर खड़ा गुरु रूपी मल्लाह पुकार रहा है कि तेरा जीवन रूपी बेड़ा भँवर में फँस गया है॥ ८५॥

लंमी लंमी नदी वहै कंधी केरै हेति ॥ बेड़े नो कपरु किआ करे जे पातण रहै सुचेति ॥ ८६ ॥

किनारों को ध्वस्त करने के लिए बहुत लम्बी नदी बह रही है। परन्तु यदि गुरु रूपी मल्लाह होशियार हो तो जीवन-बेड़े का भँवर भी कुछ बिगाड़ नहीं सकता॥८६॥

फरीदा गलीं सु सजण वीह इकु ढूंढेदी न लहां ॥ धुखां जिउ मांलीह कारणि तिंन्हा मा पिरी ॥ ८७ ॥

हे फरीद! बातों ही बातों में हमदर्दी जतलाने वाले तो बीस सज्जन मिल जाते हैं परन्तु दुख-तकलीफ में साथ देने वाला सच्चा साथी एक भी नहीं मिलता। मैं उन प्यारे सच्चे साथियों के मिलन के लिए उपले के चूर्ण की मानिंद जलता जा रहा हूँ॥८७॥

फरीदा इहु तनु भउकणा नित नित दुखीऐ कउणु ॥ कंनी बुजे दे रहां किती वगै पउणु ॥ ८८॥

फरीद जी कहते हैं कि यह शरीर कुत्ते की तरह बराबर भौंक रहा है (अर्थात् हर वक्त कामना कर रहा है) तो फिर इसके लिए हर वक्त कौन दुखी होवे। मैंने तो अपने कानों में रूई दी है, चाहे कितना भी तेज हवा की तरह बोले, मैं इसकी कोई बात नहीं सुनूँगा॥८८॥

फरीदा रब खजूरी पकीआं माखिअ नई वहंन्हि ॥ जो जो वंञैं डीहड़ा सो उमर हथ पवंनि ॥ ८६ ॥

{बाबा फरीद जी दुनिया की सुख-सुविधाओं एवं मीठे स्वादिष्ट पदार्थों को पकी हुई खजूरें एवं शहद की नदियों से उपमा देते हुए कहते हैं–}

हे फरीद! रब की खजूरें पकी हुई हैं और शहद की नदियाँ बह रही हैं। यहाँ जो भी दिन गुजरता है, वही व्यक्ति की उम्र को घटाता जा रहा है॥ ८६॥

फरीदा तनु सुका पिंजरु थीआ तलीआं खूंडहि काग ॥ अजै सु रबु न बाहुड़िओ देखु बंदे के भाग ॥ ९० ॥

बाबा फरीद कहते हैं, यह शरीर सूखकर हड्डियों का पिंजर हो गया है और कौए पैरों के तलवों पर चोंच मार रहे हैं। देख लो, व्यक्ति का बुरा भाग्य, अभी तक रब नहीं मिला॥९०॥

कागा करंग ढंढोलिआ सगला खाइआ मासु ॥ ए दुइ नैना मति छुहउ पिर देखन की आस ॥ ९१ ॥

फरीद जी कौए को संबोधन करते हुए कहते हैं कि हे काले कौए! बेशक ढूँढ-ढूँढ कर तूने मेरे शरीर का सारा मांस खा लिया है, परन्तु अब मेरे इन दो नयनों को मत छूना, क्योंकि इन्हीं से मुझे प्यारे प्रभु को देखने की आशा लगी हुई है॥९१॥

कागा चूंडि न पिंजरा बसै त उडरि जाहि ॥ जितु पिंजरै मेरा सहु वसै मासु न तिदू खाहि ॥ ९२ ॥

हे काले कौए! मेरे शरीर के पिंजर पर तू चोंच मत मार, बैठा हुआ है तो बेहतर है कि यहाँ से उड़ जा। जिस शरीर-पिंजर में मेरा मालिक रहता है, उसका मांस मत खा॥९२॥

फरीदा गोर निमाणी सडु करे निघरिआ घरि आउ ॥ सरपर मैथै आवणा मरणहु ना डरिआहु ॥ ९३ ॥

फरीद जी कथन करते हैं कि कब्र बेचारी आवाजें दे रही है कि हे बेघर जीव! अपने घर में चले आओ। आखिरकार तूने मेरे पास ही आना है, इसलिए मरने से मत डर॥९३॥

एनी लोइणी देखदिआ केती चलि गई ॥ फरीदा लोकां आपो आपणी मै आपणी पई ॥ ९४ ॥

इन आँखों से देखते ही देखते कितनी दुनिया चली गई है। फरीद जी कहते हैं– लोगों को अपनी चिंता लगी हुई है और मुझे अपनी (रब से मिलने की चिंता) लगी हुई है॥९४॥

आपु सवारहि मै मिलहि मै मिलिआ सुखु होइ ॥ फरीदा जे तू मेरा होइ रहहि सभु जगु तेरा होइ ॥ ९५ ॥

फरीद जी बताते हैं कि रब मुझ से कहता है कि हे फरीद! तू अपने आप को सुधार ले तो मेरा मिलन तुझसे हो जाएगा और मेरे मिलने से ही तुझे सच्चा सुख प्राप्त हो सकता है। अगर तू मेरा ही बनकर रहे तो फिर पूरी दुनिया ही तेरी हो जाएगी॥९५॥

कंधी उतै रुखड़ा किचरकु बंनै धीरु ॥ फरीदा कचै भांडै रखीऐ किचरु ताई नीरु ॥ ९६ ॥

नदिया के किनारे पर वृक्ष कब तक धैर्य कर सकता है? हे फरीद! कच्चे घड़े में कब तक पानी रखा जा सकता है, वैसे ही मौत भी निश्चय है॥९६॥

फरीदा महल निसखण रहि गए वासा आइआ तलि ॥ गोरां से निमाणीआ बहसनि रूहां मलि ॥ आखीं सेखा बंदगी चलणु अजु कि कलि ॥ ९७ ॥

हे फरीद! ऊँचे महल सूने रह गए और जमीन के नीचे कब्र में जगह मिल गई। इन बेचारी कब्रों पर रूहें हक जमाकर बैठ गई हैं। हे शेख फरीद! रब की बंदगी कर लो, क्योंकि आज या कल चले जाना है॥९७॥

फरीदा मउतै दा बंना एवै दिसै जिउ दरीआवै ढाहा ॥ अगै दोजकु तपिआ सुणीऐ हूल पवै काहाहा ॥ इकना नो सभ सोझी आई इकि फिरदे वेपरवाहा ॥ अमल जि कीतिआ दुनी विचि से दरगह ओगाहा ॥ ९८ ॥

बाबा फरीद कहते हैं— मौत का बांध भी ऐसा दिखाई दे रहा है, जैसे दरिया का किनारा कभी भी टूट जाता है। आगे तप्त अग्नि का नरक सुना जाता है, जहाँ दुष्ट-पापियों की हाहाकार मची हुई है। किसी को तो सब सूझ हो गई है (कि यहाँ नेक बनकर रहना है) तो कई बेपरवाह होकर फिर रहे हैं। जो अच्छे-बुरे कर्म किसी ने दुनिया में किए होते हैं, वही रब के दरबार में गवाह बनते हैं॥९८॥

फरीदा दरीआवै कंन्है बगुला बैठा केल करे ॥ केल करेदे हंझ नो अचिंते बाज पए ॥ बाज पए तिसु रब दे केलां विसरीआं ॥ जो मनि चिति न चेते सनि सो गाली रब कीआं ॥ ९९ ॥

हे फरीद! दरिया के किनारे पर बैठा हुआ जीव रूपी बगुला मौज-मेले करता है, मौज-मस्तियां करते हुए उसे अचानक ही बाज दबोच लेता है। रब की मर्जी से मौत रूपी बाज शिकंजे में ले लेता है और उसे सब खेल-तमाशे भूल जाते हैं। इसी तरह जो मन में याद तक नहीं होता, रब वही कर देता है॥९९॥

साढे त्रै मण देहुरी चलै पाणी अंनि ॥ आइओ बंदा दुनी विचि वति आसूणी बंन्हि ॥ मलकल मउत जां आवसी सभ दरवाजे भंनि ॥ तिन्हा पिआरिआ भाईआं अगै दिता बंन्हि ॥ वेखहु बंदा चलिआ चहु जणिआ दै कंन्हि ॥ फरीदा अमल जि कीते दुनी विचि दरगह आए कंमि ॥ १०० ॥

साढ़े तीन मन का शरीर भोजन-पानी की मदद से चलता है। दुनिया में व्यक्ति बहुत सारी आशाएँ लेकर आया था। मौत का फरिश्ता शरीर के सब दरवाजे तोड़कर आ जाता है। मरणोपरांत व्यक्ति के प्यारे भाई, रिश्तेदार दाह-संस्कार के लिए अर्थी पर बांध देते हैं। फिर देखो व्यक्ति की तकदीर चार सज्जनों के कंधे पर चला जा रहा है। हे फरीद! दुनिया में जो अच्छे-बुरे कर्म किए होते हैं, वही रब के दरबार में उसके काम आते हैं॥१००॥

फरीदा हउ बलिहारी तिन्ह पंखीआ जंगलि जिंन्हा वासु ॥ ककरु चुगनि थलि वसनि रब न छोडनि पासु ॥ १०१ ॥

फरीद जी कहते हैं कि मैं उन पक्षियों पर कुर्बान जाता हूँ, जो जंगल में रहते हैं। वे कंकर चुगते हैं, जमीन पर रहते हैं लेकिन रब की याद को नहीं छोड़ते॥१०१॥

फरीदा रुति फिरी वणु कंबिआ पत झड़े झड़ि पाहि ॥ चारे कुंडा ढूंढीआं रहणु किथाऊ नाहि ॥ १०२ ॥

बाबा फरीद कहते हैं कि (प्रकृति के नियमानुसार) मौसम बदल गया है (जवानी के बाद बुढ़ापा आ गया है), वृक्ष (रूपी शरीर) कांप रहा है, पतझड़ के कारण पत्ते गिर रहे हैं। मैंने चारों दिशाएँ ढूँढकर देख ली हैं परन्तु कहीं भी स्थिरता नहीं॥१०२॥

फरीदा पाड़ि पटोला धज करी कंबलड़ी पहिरेउ ॥ जिन्ही वेसी सहु मिलै सेई वेस करेउ ॥ १०३॥

हे फरीद ! मैं रेशमी कपड़े को फाड़कर टुकड़े-टुकड़े कर दूँ और मामूली कंबल ऊपर ले लूँ। जिस वेश से मेरा मालिक मिलता है, मैं वही धारण करने के लिए तैयार हूँ॥ १०३॥

मः ३ ॥ काइ पटोला पाड़ती कंबलड़ी पहिरेइ ॥ नानक घर ही बैठिआ सहु मिलै जे नीअति रासि करेइ ॥ १०४ ॥

महला ३॥ गुरु अमरदास जी उपरोक्त श्लोक का उत्तर देते हैं– हे जीव-स्त्री ! रेशमी वस्त्र को क्यों फाड़ रही हो, मामूली कंबल भी किसलिए पहन रही हो ? गुरु नानक फुरमाते हैं कि यदि दिल को साफ किया जाए तो परमात्मा घर बैठे ही मिल जाता है॥१०४॥

मः ५ ॥ फरीदा गरबु जिन्हा वडिआईआ धनि जोबनि आगाह ॥ खाली चले धणी सिउ टिबे जिउ मीहाहु ॥ १०५ ॥

महला ५॥ पंचम गुरु संबोधन करते हैं– हे फरीद ! जिन लोगों को धन-दौलत, शोहरत एवं जवानी का अहंकार होता है, वे परमात्मा के नाम से खाली ही चले जाते हैं, जैसे बरसात होने से ऊँचे टीले पानी के बिना सूखे रहते हैं॥ १०५॥

फरीदा तिना मुख डरावणे जिना विसारिओनु नाउ ॥ ऐथै दुख घणेरिआ अगै ठउर न ठाउ ॥ १०६ ॥

हे फरीद ! उनके मुँह (राक्षसों सरीखे) बहुत भयानक हैं, जिन्होंने परमात्मा का नाम भुला दिया है। ऐसे व्यक्ति संसार में अनेकों दुख भोगते ही हैं, परलोक में भी उनको कोई ठिकाना नहीं मिलता॥१०६॥

फरीदा पिछल राति न जागिओहि जीवदड़ो मुइओहि ॥ जे तै रबु विसारिआ त रबि न विसरिओहि ॥ १०७ ॥

फरीद जी कहते हैं, हे मनुष्य ! यदि भोर के समय नहीं जागे (बंदगी न की) तो समझो जीते जी भी मृत हो। यदि तूने रब को भुला दिया है तो रब ने तुझे नहीं भुलाया (वह तेरा हर काम देख रहा है।)॥१०७॥

मः ५ ॥ फरीदा कंतु रंगावला वडा वेमुहताजु ॥ अलह सेती रतिआ एहु सचावां साजु ॥ १०८ ॥

महला ५॥ गुरु अर्जुन देव जी संबोधित करते हैं–हे फरीद ! मालिक बड़ा रंगीला है, स्वाधीन है। अल्लाह की बंदगी में लीन रहना यही सच्चा शृंगार है॥१०८॥

मः ५ ॥ फरीदा दुखु सुखु इकु करि दिल ते लाहि विकारु ॥ अलह भावै सो भला तां लभी दरबारु ॥ १०६ ॥

महला ५॥ हे फरीद ! दुख-सुख को एक समान मानो और दिल से बुराइयों को निकाल दो। जो अल्लाह को मंजूर है, उसे ही भला मानो तो ही तुझे दरबार में इज्जत मिलेगी॥१०६॥

मः ५ ॥ फरीदा दुनी वजाई वजदी तूं भी वजहि नालि ॥ सोई जीउ न वजदा जिसु अलहु करदा सार ॥ ११० ॥

महला ५॥ गुरु अर्जुन देव जी संबोधित करते हैं– हे फरीद ! दुनिया के लोग माया के साथ ही क्रियाशील हैं और तू भी साथ ही नाच रहा है। परन्तु जिसकी अल्लाह संभाल करता है, वह जीव निर्लिप्त रहता है॥११०॥

मः ५ ॥ फरीदा दिलु रता इसु दुनी सिउ दुनी न कितै कंमि ॥ मिसल फकीरां गाखड़ी सु पाईऐ पूर करंमि ॥ १११ ॥

महला ५॥ हे फरीद ! दिल इस दुनियादारी में लीन है, परन्तु दुनिया किसी काम नहीं आती। फकीरों का रहन-सहन बहुत कठिन है, यह ऊँचे भाग्य से ही प्राप्त होता है॥१११॥

पहिलै पहरै फुलड़ा फलु भी पछा राति ॥ जो जागंन्हि लहंनि से साई कंनो दाति ॥ ११२ ॥

रात्रिकाल के प्रथम प्रहर की ईश-वन्दना एक फूल की तरह है तथा पिछली रात्रि अर्थात् भोर समय की वन्दना फल समान है। जो प्रभातकाल जागकर वन्दना करते हैं, उनको ही परमात्मा से कृपा रूपी फल प्राप्त होता है॥११२॥

दाती साहिब संदीआ किआ चलै तिसु नालि ॥ इकि जागंदे ना लहन्हि इकन्हा सुतिआ देइ उठालि ॥ ११३ ॥

{यह श्लोक गुरु नानक देव जी का सिरी राग की वार में है, जो फरीद जी के उपरोक्त श्लोक को स्पष्ट करके बताया है}

सम्पूर्ण नियामतें मालिक की हैं, किसी का कोई अख्तयार नहीं है कि दाता उसे भी अवश्य दे। कुछ जागकर भी उसकी नियामत को पा नहीं सकते और किसी सोए हुए को वह जगाकर भी दे देता है॥११३॥

दूढेदीए सुहाग कू तउ तनि काई कोर ॥ जिन्हा नाउ सुहागणी तिन्हा झाक न होर ॥ ११४ ॥

हे जीव स्त्री ! तू अपने सुहाग (प्रभु) को ढूँढ रही है (यदि नहीं मिला) तो तुझ में ही कोई कमी है। जिनका नाम सुहागिन है, उनको किसी अन्य की चाह नहीं॥११४॥

सबर मंझ कमाण ए सबरु का नीहणो ॥ सबर संदा बाणु खालकु खता न करी ॥ ११५ ॥

अन्तर्मन में यदि सहनशीलता की कमान हो और सहनशीलता का ही चिल्ला हो और तीर भी सहनशीलता का ही हो तो फिर ईश्वर इस तीर का निशाना चूकने नहीं देता॥११५॥

सबर अंदरि साबरी तनु एवै जालेन्हि ॥ होनि नजीकि खुदाइ दै भेतु न किसै देनि ॥ ११६ ॥

सहनशील व्यक्ति सहनशीलता में रहकर कठिन साधना द्वारा शरीर को जला देते हैं। वे

खुदा के निकट हो जाते हैं और यह भेद किसी को नहीं देते॥११६॥

सबरु एहु सुआउ जे तूं बंदा दिड़ु करहि ॥ वधि थीवहि दरीआउ टुटि न थीवहि वाहड़ा ॥ ११७ ॥

सहनशीलता ही जीवन का मनोरथ है, हे मनुष्य! यदि तू इसे पक्का कर ले तो बढ़कर दरिया बन जाओगे और फिर टूट कर छोटा-सा नाला नहीं बन पाओगे॥११७॥

फरीदा दरवेसी गाखड़ी चोपड़ी परीति ॥ इकनि किनै चालीऐ दरवेसावी रीति ॥ ११८ ॥

बाबा फरीद कहते हैं– फकीरी करना बहुत कठिन है, परन्तु तेरी यह प्रीति दिखावा-मात्र है। इस फकीरी राह पर तो कोई विरला ही चल पाता है॥११८॥

तनु तपै तनूर जिउ बालणु हड बलंन्हि ॥ पैरी थकां सिरि जुलां जे मूं पिरी मिलंन्हि ॥ ११९ ॥

मेरा शरीर तंदूर की तरह तप जाए, बेशक हड्डियाँ लकड़ियों की तरह जल जाएँ। पैरों से चलकर अगर थक भी जाऊँ तो सिर के बल पर चल पड़ूँ। यदि मुझे मालिक मिल जाए (तो सब कष्ट सहने को तैयार हूँ)॥११९॥

तनु न तपाइ तनूर जिउ बालणु हड न बालि ॥ सिरि पैरी किआ फेड़िआ अंदरि पिरी निहालि ॥ १२० ॥

{उपरोक्त श्लोक पर गुरु नानक देव जी टिप्पणी करते हैं}

हे फरीद! शरीर को तंदूर की तरह गर्म मत कर और न ही हड्डियों को लकड़ियों की तरह जला। सिर और पैरों ने तेरा क्या बिगाड़ा है (इनको क्यों दुखी कर रहा है) अन्तर्मन में ही मालिक को देख॥१२०॥

हउ ढूढेदी सजणा सजणु मैडे नालि ॥ नानक अलखु न लखीऐ गुरमुखि देइ दिखालि ॥ १२१॥

(यह श्लोक श्री गुरु रामदास जी का है, जो कानड़े की वार की १५वीं पउड़ी से है।)

(जीव-स्त्री कहती है) मैं जिस सज्जन प्रभु को ढूँढ रही हूँ, वह सज्जन तो मेरे साथ (मन में) ही है। हे नानक! उस अदृष्ट प्रभु को देखा नहीं जा सकता, वस्तुतः गुरु ही उसके दर्शन करवाता है॥१२१॥

हंसा देखि तरंदिआ बगा आइआ चाउ ॥ डुबि मुए बग बपुड़े सिरु तलि उपरि पाउ ॥ १२२ ॥

(निम्नलिखित दोनों श्लोक श्री गुरु अमरदास जी के हैं, जो वडहंस की वार में भी हैं)

हंसों (महापुरुषों) को (भवसागर में) तैरते देखकर बगुलों (ढोंगियों) को भी चाव पैदा हुआ, पर बगुले बेचारे पानी में डूब गए, उनका सिर नीचे और पैर ऊपर हो गए॥१२२॥

मै जाणिआ वड हंसु है तां मै कीता संगु ॥ जे जाणा बगु बपुड़ा जनमि न भेड़ी अंगु ॥ १२३ ॥

मैं समझा था कि यह कोई बड़ा हंस (महापुरुष) है, तो ही मैंने उसकी संगत की। परन्तु यदि मुझे मालूम हो जाता कि यह तो ढोंगी बगुला है तो कभी भी साथ न करती॥१२३॥

किआ हंसु किआ बगुला जा कउ नदरि धरे ॥ जे तिसु भावै नानका कागहु हंसु करे ॥ १२४ ॥

{यह श्लोक सिरी राग की वार में से गुरु नानक देव जी का है}

क्या हंस (बड़ा) और क्या बगुला (छोटा), जिस पर ईश्वर की कृपा-दृष्टि हो जाए, वही महान् है। गुरु नानक कथन करते हैं कि यदि मालिक की मर्जी हो तो वह काले कौए (बुरे) को भी (भला पुरुष) हंस बना देता है॥१२४॥

सरवर पंखी हेकड़ो फाहीवाल पचास ॥ इहु तनु लहरी गडु थिआ सचे तेरी आस ॥ १२५ ॥

जगत रूपी सरोवर में जीव रूपी अकेला ही पक्षी है, जिसे फँसाने वाले (कामादिक) पचास हैं। यह शरीर विकार रूपी लहरों में फँस गया है, इन में से निकलने के लिए हे प्रभु! तेरी ही आशा है॥१२५॥

कवणु सु अखरु कवणु गुणु कवणु सु मणीआ मंतु ॥ कवणु सु वेसो हउ करी जितु वसि आवै कंतु ॥ १२६ ॥

वह कौन-सा अक्षर (शब्द) है, कौन-सा गुण अथवा कौन-सा मंत्र है। मैं ऐसा कौन-सा वेष धारण करूँ, जिससे मेरा प्रभु मेरे वश में आ जाए॥१२६॥

निवणु सु अखरु खवणु गुणु जिहबा मणीआ मंतु ॥ ए त्रै भैणे वेस करि तां वसि आवी कंतु ॥ १२७ ॥

उत्तर है– नम्र भाषा अपनाओ, अगर कोई बुरा बोलता है तो क्षमा-भावना का गुण धारण करो, जीभ से मीठा बोलने का मंत्र अपनाओ। हे बहिन! ये तीन सद्गुण हैं, इनका वेष धारण करो, पति-प्रभु तेरे वश में आ जाएगा॥१२७॥

मति होदी होइ इआणा ॥ ताण होदे होइ निताणा ॥ अणहोदे आपु वंडाए ॥ को ऐसा भगतु सदाए ॥ १२८ ॥

जो बुद्धिमान होकर भी खुद को नासमझ समझता हो, बलवान होकर भी कमजोर बनकर रहे, (अर्थात् मासूम पर जुल्म न करे) जो कुछ भी पास हो, मिल-बांट कर खाता हो, (गरीबों को बांटता हो) दरअसल ऐसा मनुष्य ही परम भक्त कहलाता है॥१२८॥

इकु फिका न गालाइ सभना मै सचा धणी ॥ हिआउ न कैही ठाहि माणक सभ अमोलवे ॥ १२६ ॥

सब जीवों में सच्चा मालिक ही मौजूद है, इसलिए किसी को कड़वा या बुरा वचन मत बोलो। किसी का दिल मत दुखाओ, मोती रूपी हर दिल अमूल्य है॥१२६॥

सभना मन माणिक ठाहणु मूलि मचांगवा ॥ जे तउ पिरीआ दी सिक हिआउ न ठाहे कही दा ॥ १३० ॥

सबका मन मोती रूप है, इनको दुखी करना अच्छी बात नहीं। यदि तुझे ईश्वर को पाने की आकांक्षा है तो किसी के दिल को दर्द न पहुँचाओ॥१३०॥

★★★

१ओं सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

वह अद्वितीय ईश्वर जिसका वाचक ओम् है, केवल एक (ओंकार स्वरूप) है, उसका नाम सत्य है। वह आदिपुरुष देवी-देवताओं, जीवों सहित सम्पूर्ण संसार को बनाने वाला है, वह सर्वशक्तिमान है, वह भय से रहित है, वह निर्वेर (प्रेम की मूर्ति) है, वह कालातीत (अतीत, वर्तमान, भविष्य से परे) ब्रह्ममूर्ति शाश्वत-स्वरूप, अमर है, वह जन्म-मरण से मुक्त है, वह स्वजन्मा है, गुरु-कृपा से प्राप्त होता है।

सवये स्री मुखबाक्य महला ५ ॥

आदि पुरख करतार करण कारण सभ आपे ॥ सरब रहिओ भरपूरि सगल घट रहिओ बिआपे ॥ ब्यापतु देखीऐ जगति जानै कउनु तेरी गति सरब की रख्या करै आपे हरि पति ॥ अबिनासी अबिगत आपे आपि उतपति ॥ एकै तूही एकै अन नाही तुम भति ॥ हरि अंतु नाही पारावारु कउनु है करै बीचारु जगत पिता है स्रब प्रान को अधारु ॥ जनु नानकु भगतु दरि तुलि ब्रहम समसरि एक जीह किआ बखानै ॥ हां कि बलि बलि बलि बलि सद बलिहारि ॥ १ ॥

हे आदिपुरुष ! केवल तू ही बनानेवाला है, सम्पूर्ण सृष्टि का मूल है, करण कारण है, सब कुछ करने में परिपूर्ण है। तू सम्पूर्ण विश्व में विद्यमान है, तू सब शरीरों में व्याप्त है। पूरे जगत में फैला हुआ तू ही दृष्टिगत होता है, तेरी महिमा को कौन जानता है, तू सब की रक्षा कर रहा है, पूरे विश्व का मालिक है। तू अनश्वर है, अव्यक्त है, तू अपने आप ही उत्पन्न हुआ है। सृष्टि में एकमात्र तू ही बड़ा है, तेरे जैसा बड़ा कोई नहीं। हे परमेश्वर ! तेरा रहस्य एवं आर-पार कोई नहीं पा सकता, कौन विचार कर सकता है। तू जगत पिता है, सबके प्राणों का आसरा है। गुरु नानक फुरमाते हैं कि हे प्रभु ! तेरे दर पर मान्य ब्रह्म-रूप हो चुके भक्त का एक जीभ से कैसे बखान कर सकता हूँ। हाँ, मैं केवल उस पर सदैव कुर्बान जाता हूँ॥१॥

अंम्रित प्रवाह सरि अतुल भंडार भरि परै ही ते परै अपर अपार परि ॥ आपुनो भावनु करि मंत्रि न दूसरो धरि ओपति परलो एकै निमख तु घरि ॥ आन नाही समसरि उजीआरो निरमरि कोटि पराछत जाहि नाम लीए हरि हरि ॥ जनु नानकु भगतु दरि तुलि ब्रहम समसरि एक जीह किआ बखानै ॥ हां कि बलि बलि बलि बलि सद बलिहारि ॥ २ ॥

तेरे यहाँ अमृत का प्रवाह चल रहा है, जितने तेरे भण्डार भरे हुए हैं, उनकी भी तुलना नहीं की जा सकती। तू परे से परे, बेअंत है। तू सब अपनी मर्जी से करता है, किसी से सलाह-मशविरा

नहीं करता। तेरे हुक्म से एक पल में सृष्टि की उत्पति एवं प्रलय हो जाती है। तेरे बराबर कोई नहीं, तू निर्मल है, ज्ञान का उजाला है, तेरा नाम जपने से तो करोड़ों पाप दूर हो जाते हैं। गुरु नानक कथन करते हैं कि ईश्वर का भक्त जो उसी का रूप हो गया है, एक जीभ से उसकी क्या महिमा की जाए, हाँ, मैं केवल उस पर सदैव कुर्बान जाता हूँ॥२॥

सगल भवन धारे एक थें कीए बिसथारे पूरि रहिओ स्रब महि आपि है निरारे ॥ हरि गुन नाही अंत पारे जीअ जंत सभि थारे सगल को दाता एकै अलख मुरारे ॥ आप ही धारन धारे कुदरति है देखारे बरनु चिहनु नाही मुख न मसारे ॥ जनु नानकु भगतु दरि तुलि ब्रहम समसरि एक जीह किआ बखानै ॥ हां कि बलि बलि बलि बलि सद बलिहारि ॥ ३ ॥

ईश्वर ने समूचे लोक धारण किए हुए हैं, एक उसी से जगत का प्रसार हुआ है, वह सर्वव्यापक है और स्वयं ही अलिप्त है। ईश्वर की महिमा का कोई अन्त नहीं, संसार के सब जीव उसी के हैं, केवल वही सब को देने वाला है, वह दुष्टदमन है, अदृष्ट है। वह स्वयं ही पूरे जगत को आसरा दे रहा है, अपनी कुदरत को दिखा रहा है, फिर भी रंग, रूप, वर्ण, चित्र, मुँह से इतर है। गुरु नानक कहते हैं— जो भक्त प्रभु के दरबार में प्रभु रूप हो गए हैं, एक जीभ से उनका क्या बखान किया जाए। हाँ, उन पर मैं सदैव कुर्बान हूँ॥३॥

सरब गुण निधानं कीमति न ग्यानं ध्यानं ऊचे ते ऊचौ जानीजै प्रभ तेरो थानं ॥ मनु धनु तेरो प्रानं एकै सूति है जहानं कवन उपमा देउ बडे ते बडानं ॥ जानै कउनु तेरो भेउ अलख अपार देउ अकल कला है प्रभ सरब को धानं ॥ जनु नानकु भगतु दरि तुलि ब्रहम समसरि एक जीह किआ बखानै ॥ हां कि बलि बलि बलि बलि सद बलिहारि ॥ ४ ॥

हे प्रभु ! तू सर्व गुणों का भण्डार है, तेरे ज्ञान-ध्यान की महत्ता व्यक्त नहीं की जा सकती। तेरा स्थान सबसे ऊँचा है। मन, धन, प्राण सर्वस्व तेरा दिया हुआ है, पूरे संसार को तूने एक सूत्र में पिरोया हुआ है, तू इतना बड़ा है कि तेरी उपमा नहीं की जा सकती। तेरा रहस्य कोई नहीं जानता, तू अलख अपार देवाधिदेव, सर्वशक्तिमान है। हे प्रभु ! तू सबका पालन कर रहा है। दास नानक एक जीभ से उस भक्त का क्या बखान कर सकता है, जो ब्रह्म रूप हो गया है। हाँ, उस पर मैं केवल सदैव कुर्बान हूँ॥४॥

निरंकारु आकार अछल पूरन अबिनासी ॥ हरखवंत आनंत रूप निरमल बिगासी ॥ गुण गावहि बेअंत अंतु इकु तिलु नाही पासी ॥ जा कउ होंहि क्रिपाल सु जनु प्रभ तुमहि मिलासी ॥ धंनि धंनि ते धंनि जन जिह क्रिपालु हरि हरि भयउ ॥ हरि गुरु नानकु जिन परसिअउ सि जनम मरण दुह थे रहिओ ॥ ५ ॥

ईश्वर निराकार है, उससे कोई छल-कपट नहीं कर सकता, वह परिपूर्ण है, अविनाशी है। वह खुशियों का घर है, उसके रूप अनन्त हैं, वह पावनस्वरूप एवं सदा खिला रहने वाला है। जो बे-अन्त है, पूरी दुनिया उसका गुण-गान करती है, परन्तु उसके गुणों का एक तिल मात्र भी गायन नहीं करती। हे प्रभु ! जिस भक्त पर तेरी कृपा हो जाती है, वह तुझ में विलीन हो जाता है। वे भक्तजन धन्य हैं, जिन पर परमात्मा कृपालु हो गया है। जिसका परमेश्वर रूप गुरु नानक से साक्षात्कार हुआ है, वह जन्म-मरण दोनों से रहित हो गया है॥५॥

सति सति हरि सति सति सते सति भणीऐ ॥ दूसर आन न अवरु पुरखु पऊरातनु सुणीऐ ॥ अंम्रितु हरि को नामु लैत मनि सभ सुख पाए ॥ जेह रसन चाखिओ तेह जन त्रिपति अघाए ॥ जिह ठाकुरु सुप्रसंनु भयो सतसंगति तिह पिआरु ॥ हरि गुरु नानकु जिन्ह परसिओ तिन्ह सभ कुल कीओ उधारु ॥ ६ ॥

ईश्वर परमसत्य है, सत्यस्वरूप है, केवल वही सत्य कहा जाता है। उसके अतिरिक्त दूसरा कोई आदिपुरुष नहीं सुना। यदि अमृतमय हरिनाम जपा जाए तो मन को सर्व सुख प्राप्त हो जाते हैं। जिस जिज्ञासु ने अपनी जिह्वा से नाम का जाप किया है, वह तृप्त हो गया है। जिस पर मालिक प्रसन्न होता है, उसी का सत्संगत से प्रेम होता है। जिन जीवों का परमेश्वर रूप गुरु नानक से मिलाप हुआ है, उनकी समूची कुल का उद्धार हो गया है॥६॥

सचु सभा दीबाणु सचु सचे पहि धरिओ ॥ सचै तखति निवासु सचु तपावसु करिओ ॥ सचि सिरज्यिउ संसारु आपि आभुलु न भुलउ ॥ रतन नामु अपारु कीम नहु पवै अमुलउ ॥ जिह क्रिपालु होयउ गुोबिंदु सरब सुख तिनहू पाए ॥ हरि गुरु नानकु जिन्ह परसिओ ते बहुड़ि फिरि जोनि न आए ॥ ७ ॥

सत्यस्वरूप परमेश्वर की सभा अटल है, उसकी अदालत सदैव स्थिर है, वह सत्य रूप में स्थित है। उसका सिंहासन भी शाश्वत है, जहाँ वह विराजमान होता है, वह सच्चा इंसाफ ही करता है। सच्चे मालिक ने स्वयं ही संसार बनाया है और (जीव बेशक गलतियों का पुतला है परन्तु) वह कभी भूल नहीं करता। उसका नाम रत्न अपार है, जिसकी कीमत आँकना संभव नहीं, बल्कि अमूल्य है। जिस पर ईश्वर कृपालु होता है, उसे ही सर्व सुख प्राप्त होते हैं। जिन लोगों को हरि रूप गुरु नानक की चरण-शरण प्राप्त हुई, वे योनियों के चक्र से मुक्त हो गए॥७॥

कवनु जोगु कउनु ग्यानु ध्यानु कवन बिधि उस्तति करीऐ ॥ सिध साधिक तेतीस कोरि तिरु कीम न परीऐ ॥ ब्रहमादिक सनकादि सेख गुण अंतु न पाए ॥ अगहु गहिओ नही जाइ पूरि स्रब रहिओ समाए ॥ जिह काटी सिलक दयाल प्रभि सेइ जन लगे भगते ॥ हरि गुरु नानकु जिन्ह परसिओ ते इत उत सदा मुकते ॥ ८ ॥

वह कौन-सा योग, ज्ञान, ध्यान एवं तरीका है, जिससे परमात्मा की स्तुति की जाए। हे परमेश्वर ! बड़े-बड़े सिद्ध-साधक (हुए हैं), तेंतीस करोड़ देवता (माने जाते हैं लेकिन वे) भी तेरी महिमा नहीं जान पाए। ब्रह्मा, ब्रह्मा के पुत्र सनक, सनन्दन और इनके अलावा शेषनाग भी तेरे गुणों का रहस्य नहीं पा सके। तू अगम्य है, तुझे पकड़ में नहीं लिया जा सकता, इसके बावजूद भी सब में व्याप्त है। दयालु प्रभु ने जिसकी बन्धनों की रस्सी काट दी है, वही सेवक भक्ति में लगा है। जिसने परमेश्वर रूप गुरु नानक से चरण-शरण प्राप्त की, वह लोक-परलोक में से सदा के लिए मुक्त हो गया है॥८॥

प्रभ दातउ दातार पर्यिउ जाचकु इकु सरना ॥ मिलै दानु संत रेन जेह लगि भउजलु तरना ॥ बिनति करउ अरदासि सुनहु जे ठाकुर भावै ॥ देहु दरसु मनि चाउ भगति इहु मनु ठहरावै ॥ बलिओ चरागु अंध्यार महि सभ कलि उधरी इक नाम धरम ॥ प्रगटु सगल हरि भवन महि जनु नानकु गुरु पारब्रहमु ॥ ९ ॥

हे प्रभु ! तू दातार है, तू ही देने वाला है, मैं याचक तेरी शरण में आया हूँ। मुझे संत-पुरुषों की चरण-धूल प्रदान करो, जिसके द्वारा संसार-सागर को पार करना है। मैं विनती करता हूँ, यदि तेरी मर्जी हो तो मेरी अरदास सुन लो। मन में यह चाव है कि अपने दर्शन प्रदान करो, तेरी भक्ति से यह मन स्थिर होता है। अंधेरे में तेरे नाम का दीया प्रज्वलित हुआ है, जिससे कलियुगी जीवों का उद्धार हुआ है और तेरा नाम स्मरण ही धर्म-कर्म है। पंचम गुरु फुरमान करते हैं कि पूरे संसार में परब्रह्म रूप गुरु (नानक) प्रगट हुआ है॥६॥

सवये स्री मुखबाक्य महला ५ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

काची देह मोह फुनि बांधी सठ कठोर कुचील कुगिआनी ॥ धावत भ्रमत रहनु नही पावत पारब्रहम की गति नही जानी ॥ जोबन रूप माइआ मद माता बिचरत बिकल बडौ अभिमानी ॥ पर धन पर अपवाद नारि निंदा यह मीठी जीअ माहि हितानी ॥ बलबंच छपि करत उपावा पेखत सुनत प्रभ अंतरजामी ॥ सील धरम दया सुच नास्ति आइओ सरनि जीअ के दानी ॥ कारण करण समरथ सिरीधर राखि लेहु नानक के सुआमी ॥ १ ॥

यह शरीर जो नाश होने वाला है, मोह-माया में फँसा हुआ है। मैं मूर्ख, कठोर, पापों से मलिन एवं अज्ञानी हूँ। मन इधर-उधर दौड़ता रहता है, टिक नहीं पाता और इसने परब्रह्म की महिमा को नहीं जाना। यह यौवन, रूप-सौंदर्य माया के नशे में मस्त है और मैं बड़ा अभिमानी बनकर विचरन कर रहा हूँ। पराया धन, पराया झगड़ा, नारी एवं लोगों की निंदा ही मन को मीठी एवं अच्छी लगती है। मैं छिप-छिपकर छल-कपट एवं मक्कारी के उपाय करता हूँ, लेकिन अन्तर्यामी प्रभु सब करतूतें देख एवं सुन रहा है। मुझ में कोई शील, धर्म, दया, सादगी इत्यादि नहीं, अतः प्राणदाता प्रभु की शरण में आ गया हूँ। हे श्रीधर ! तू करण कारण है, सर्व समर्थ है, हे नानक के स्वामी ! मुझे संसार के बन्धनों से बचा लो॥१॥

कीरति करन सरन मनमोहन जोहन पाप बिदारन कउ ॥ हरि तारन तरन समरथ सभै बिधि कुलह समूह उधारन सउ ॥ चित चेति अचेत जानि सतसंगति भरम अंधेर मोहिओ कत धंउ ॥ मूरत घरी चसा पलु सिमरन राम नामु रसना संगि लउ ॥ होछउ काजु अलप सुख बंधन कोटि जनंम कहा दुख भंउ ॥ सिख्या संत नामु भजु नानक राम रंगि आतम सिउ रंउ ॥ २ ॥

ईश्वर का कीर्तिगान करना एवं उसकी शरण में आना, दोनों काम पापों को नष्ट करने वाले हैं। निरंकार संसार-समुद्र से पार उतारने वाला है, वह सब करने में समर्थ और सम्पूर्ण कुलों का उद्धार करने वाला है। हे अचेत मन ! संत पुरुषों की संगत में उपदेश लेकर ईश्वर का स्मरण कर, क्यों मोह के अंधेरे में भटक रहा है। जिह्वा से घड़ी, मुहूर्त, या पल भर राम नाम का स्मरण कर लो। ओच्छे कार्य अल्प सुख देने वाले हैं, करोड़ों जन्म बन्धनों में फंसकर दुख भोगने की तैयारी किसलिए कर रहे हो? गुरु नानक समझाते हैं कि संतों की शिक्षानुसार परमात्मा का भजन करो, अन्तर्मन में प्रभु-रंग में ही लीन रहो॥ २॥

रंचक रेत खेत तनि निरमित दुरलभ देह सवारि धरी ॥ खान पान सोधे सुख भुंचत संकट काटि बिपति हरी ॥ मात पिता भाई अरु बंधप बूझन की सभ सूझ परी ॥ बरधमान होवत दिन प्रति नित

आवत निकटि बिखंम जरी ॥ रे गुन हीन दीन माइआ क्रिम सिमरि सुआमी एक घरी ॥ करु गहि लेहु क्रिपाल क्रिपा निधि नानक काटि भरंम भरी ॥ ३ ॥

हे जीव! ईश्वर ने पिता का थोड़ा-सा वीर्य माँ के गर्भ में डालकर दुर्लभ शरीर बना दिया। तुझे खाने-पीने, अनेकों सुख-सुविधाएँ प्रदान कीं, तेरे संकटों को काट कर विपत्तियाँ हरण कर लीं। तुझे माता-पिता, भाई एवं रिश्तेरदारों को समझने की सूझ प्रदान की। धीरे-धीरे दिन-प्रतिदिन तू बढ़ता गया और इस तरह विषम बुढ़ापा निकट आ गया। हे गुणविहीन, दीन, माया के कीड़े! एक घड़ी भर उस स्वामी का स्मरण कर ले। नानक विनती करते हैं, हे कृपानिधि! कृपा करके हमारा हाथ थाम ले और भ्रम की गठरी काट दे॥३॥

रे मन मूस बिला महि गरबत करतब करत महां मुघनां ॥ संपत दोल झोल संगि झूलत माइआ मगन भ्रमत घुघना ॥ सुत बनिता साजन सुख बंधप ता सिउ मोहु बढिओ सु घना ॥ बोइओ बीजु अहं मम अंकुरु बीतत अउध करत अघनां ॥ मिरतु मंजार पसारि मुखु निरखत भुंचत भुगति भूख भुखना ॥ सिमरि गुपाल दइआल सतसंगति नानक जगु जानत सुपना ॥ ४ ॥

हे मन! तेरा आचरण इस प्रकार है, ज्यों चूहा बिल में अहंकार करता है और महांमूर्खों जैसी हरकतें करता है। तू माया के झूले को झूलता हुआ उसी में मस्त रहता है और उल्लू की तरह भटकता है। अपने पुत्र, पत्नी, दोस्तों एवं रिश्तेदारों के सुख के साथ तेरा बहुत मोह बढ़ गया है, जो तूने अहंकार का बीज बोया था, उसका अंकुर फूट गया है और पूरी जिन्दगी पापों में गुजर गई। मौत रूपी बिल्ली मुँह फैलाकर तुझे देख रही है, परन्तु संसार के सुख-वैभव भोगकर भूखा ही बना हुआ है। गुरु नानक का कथन है कि संसार को सपना मानकर सत्संगत में दयालु प्रभु का भजन करो॥४॥

देह न गेह न नेह न नीता माइआ मत कहा लउ गारहु ॥ छत्र न पत्र न चउर न चावर बहती जात रिदै न बिचारहु ॥ रथ न अस्व न गज सिंघासन छिन महि तिआगत नांग सिधारहु ॥ सूर न बीर न मीर न खानम संगि न कोऊ द्रिसटि निहारहु ॥ कोट न ओट न कोस न छोटा करत बिकार दोऊ कर झारहु ॥ मित्र न पुत्र कलत्र साजन सख उलटत जात बिरख की छांरहु ॥ दीन दयाल पुरख प्रभ पूरन छिन छिन सिमरहु अगम अपारहु ॥ स्रीपति नाथ सरणि नानक जन हे भगवंत क्रिपा करि तारहु ॥ ५ ॥

यह शरीर, घर, प्रेम इत्यादि कोई सदा रहने वाले नहीं। हे जीव! माया में मस्त होकर कब तक अभिमान कर सकते हो। शाही छत्र, हुक्मनामे, चँवर या चँवर करने वाले नाश हो जाएँगे, नदिया के बहाव की तरह तेरी उम्र गुजरती जा रही है, इस सच्चाई को हृदय में तुम सोच नहीं रहे। सुन्दर रथ, हाथी-घोड़े, सिंहासन इनको पल में छोड़कर खाली हाथ चले जाना है। बेशक आँखों से देख लो, कोई शूरवीर, योद्धा, सेनापति एवं उच्चाधिकारी कोई साथ नहीं चलता। किलों का आसरा एवं धन-दौलत से छुटकारा नहीं होगा, आखिरकार पाप करते दोनों हाथ झाड़कर ही जाना पड़ेगा। मित्र, पुत्र, पत्नी, सज्जन-सखा पेड़ की छांव की तरह साथ छोड़ देंगे। उचित यही है कि दीनदयालु, परम पुरुष, अगम अपार प्रभु का हर पल सिमरन करो। नानक विनती करते हैं कि हे श्रीपति, हे नाथ! तेरी शरण में आया हूँ। हे भगवंत! कृपा करके मुझे संसार-सागर से मुक्त कर दो॥५॥

प्रान मान दान मग जोहन हीतु चीतु दे ले ले पारी ॥ साजन सैन मीत सुत भाई ताहू ते ले रखी निरारी ॥ धावन पावन कूर कमावन इह बिधि करत अउध तन जारी ॥ करम धरम संजम सुच नेमा चंचल संगि सगल बिधि हारी ॥ पसु पंखी बिरख असथावर बहु बिधि जोनि भ्रमिओ अति भारी ॥ खिनु पलु चसा नामु नही सिमरिओ दीना नाथ प्रानपति सारी ॥ खान पान मीठ रस भोजन अंत की बार होत कत खारी ॥ नानक संत चरन संगि उधरे होरि माइआ मगन चले सभि डारी ॥ ६ ॥

जीवन की बाजी लगाकर, इज्जत को दांव पर लगाकर, दान लेकर, लूटकर तथा अनेक तरीकों से दिल लगाकर धन-दौलत को जमा किया। अपने सज्जनों-दोस्तों, मित्र, पुत्र एवं भाई इत्यादि से छिपाकर रखा। दौड़-धूप करके, झूठ की कमाई करते हुए पूरी जिंदगी इसी तरह गुजार दी। धर्म-कर्म, संयम, पवित्रता, नियम इत्यादि को अनेक तरीकों से चंचल माया के संग लगाकर खो दिया। जिसके फलस्वरूप पशु-पक्षी, पेड़ों, स्थावर पहाड़ों की योनियों में पड़े रहे। पर प्राणपति, दीनानाथ हरिनाम का क्षण-पल भर भी भजन नहीं किया। यह खान-पान, मीठे पदार्थ, भोजन इत्यादि अन्तिम समय सब कड़वे हो जाते हैं। गुरु नानक फुरमान करते हैं कि संतों के चरणों में ही मुक्ति होती है, अन्य माया में मग्न रहने वाले सब छोड़कर चले जाते हैं॥६॥

ब्रहमादिक सिव छंद मुनीसुर रसकि रसकि ठाकुर गुन गावत ॥ इंद्र मुनिंद्र खोजते गोरख धरणि गगन आवत फुनि धावत ॥ सिध मनुख्य देव अरु दानव इकु तिलु ता को मरमु न पावत ॥ प्रिअ प्रभ प्रीति प्रेम रस भगती हरि जन ता कै दरसि समावत ॥ तिसहि तिआगि आन कउ जाचहि मुख दंत रसन सगल घसि जावत ॥ रे मन मूड़ सिमरि सुखदाता नानक दास तुझहि समझावत ॥ ७ ॥

ब्रह्मा, शिव, वेद एवं मुनीश्वर इत्यादि आनंदपूर्वक ईश्वर के गुणों का गान करते हैं। इन्द्र, मुनिन्द्र, विष्णु उसी को खोजते हैं, वे कभी धरती में आते हैं और पुनः गगन में चले जाते हैं। बड़े-बड़े सिद्ध, मनुष्य, देव और दानव तिल मात्र भी परब्रह्म का रहस्य नहीं पाते। प्रियतम प्रभु की प्रीति, प्रेम भक्ति में निमग्न रहने वाले, हरि-भक्त उसके दर्शन में लीन रहते हैं। उसे छोड़कर तुम अन्य को चाहते हो, तुम्हारा मुँह, दाँत, जीभ सब घिस जाते हैं। हे मूर्ख मन ! दास नानक तुझे यही समझाते हैं कि सुख देने वाले परमेश्वर की वंदना करो॥७॥

माइआ रंग बिरंग करत भ्रम मोह कै कूपि गुबारि परिओ है ॥ एता गबु अकासि न मावत बिसटा अस्त क्रिमि उदरु भरिओ है ॥ दह दिस धाइ महा बिखिआ कउ पर धन छीनि अगिआन हरिओ है ॥ जोबन बीति जरा रोगि ग्रसिओ जमदूतन डंनु मिरतु मरिओ है ॥ अनिक जोनि संकट नरक भुंचत सासन दूख गरति गरिओ है ॥ प्रेम भगति उधरहि से नानक करि किरपा संतु आपि करिओ है ॥ ८ ॥

माया के रंग समाप्त हो जाते हैं, भ्रमवश जीव मोह के कुएं में पड़ा हुआ है। इतना अहंकार करता है कि आकाश में भी समा नहीं पाता, पेट विष्ठा, हड्डियों एवं कीड़ों से भरा हुआ है। वह दसों दिशाओं में दौड़ता है, विषय-विकारों में तल्लीन होकर पराया धन छीनने के कार्य करता है, अज्ञान ने इसी प्रकार ठगा हुआ है। यौवन बीत जाता है, बुढ़ापा आने के कारण मनुष्य रोगग्रस्त हो जाता है, यमदूत दण्ड प्रदान करते हैं और इस तरह मृत्यु को प्राप्त हो जाता है। जीव अनेक योनियों के संकट में नरक भोगता है और दुखों में पड़ा रहता है। गुरु नानक फुरमान करते हैं कि जिन्हें प्रभु ने अपनी कृपा करके संत बनाया है, वे प्रभु की प्रेम-भक्ति करके संसार के बन्धनों से मुक्त हो गए हैं॥८॥

गुण समूह फल सगल मनोरथ पूरन होई आस हमारी ॥ अउखध मंत्र तंत्र पर दुख हर सरब रोग खंडण गुणकारी ॥ काम क्रोध मद मतसर त्रिसना बिनसि जाहि हरि नामु उचारी ॥ इसनान दान तापन सुचि किरिआ चरण कमल हिरदै प्रभ धारी ॥ साजन मीत सखा हरि बंधप जीअ धान प्रभ प्रान अधारी ॥ ओट गही सुआमी समरथह नानक दास सदा बलिहारी ॥ ६ ॥

हरिनामोच्चारण से सर्व गुण एवं फल प्राप्त हुआ है, हमारी हर आशा एवं सब मनोरथ पूर्ण हुए हैं। हरिनाम रूपी औषधि ही मंत्र तंत्र है, जो दुखों का नाश करने, सर्व रोगों का निवारण करने के लिए उपयोगी है। हरिनाम का उच्चारण करने से काम, क्रोध, अभिमान एवं तृष्णा सब नष्ट हो जाते हैं। यदि प्रभु के चरण कमल को हृदय में धारण किया जाए तो स्नान, दान-पुण्य, तपस्या, शुद्धिकरण का फल प्राप्त हो जाता है। हरि ही हमारा साजन, मित्र, सखा एवं बंधु है और वही हमारा जीवन एवं प्राणाधार है। गुरु नानक कथन करते हैं कि हमने उस समर्थ स्वामी का आसरा लिया है और उस पर हम सदैव कुर्बान जाते हैं॥६॥

आवध कटिओ न जात प्रेम रस चरन कमल संगि ॥ दावनि बंधिओ न जात बिधे मन दरस मगि ॥ पावक जरिओ न जात रहिओ जन धूरि लगि ॥ नीरु न साकसि बोरि चलहि हरि पंथि पगि ॥ नानक रोग दोख अघ मोह छिदे हरि नाम खगि ॥ १ ॥ १० ॥

जो जिज्ञासु प्रभु के प्रेम रस एवं चरण कमल में अनुरक्त रहता है, उसे किसी शस्त्र अथवा हथियार से काटा नहीं जा सकता। जिसका मन भगवान के दर्शन-मार्ग में बिंध जाता है, उसे किसी रस्सी से बांधकर भी रोकना असंभव है। जो हरि-भक्तों की चरण-धूलि में लीन हो जाता है, उसे अग्नि भी जला नहीं पाती। जिसके पैर प्रभु-मार्ग पर चलते हैं, उसे पानी भी डुबा नहीं पाता। गुरु नानक कथन करते हैं कि हरिनाम रूपी बाण से समस्त रोग, दोष, पाप एवं मोह मिट जाते हैं॥१॥१०॥

उदमु करि लागे बहु भाती बिचरहि अनिक सासत्र बहु खटूआ ॥ भसम लगाइ तीरथ बहु भ्रमते सूखम देह बंधहि बहु जटूआ ॥ बिनु हरि भजन सगल दुख पावत जिउ प्रेम बढाइ सूत के हटूआ ॥ पूजा चक्र करत सोमपाका अनिक भांति थाटहि करि थटूआ ॥ २ ॥ ११ ॥ २० ॥

संसार अनेक प्रकार के कार्यों में लगा हुआ है, कई व्यक्ति छः शास्त्रों के चिंतन में लीन हैं। कोई विभूति लगाकर तीर्थ यात्रा करता है तो कोई शरीर को निर्बल करके जटाएँ धारण कर लेता है। परन्तु भगवान के भजन बिना सब दुख ही प्राप्त करते हैं, ज्यों मकड़ी जाल में फँस जाती है, वैसे ही इनका हाल होता है। लोग पूजा, तिलक, सोमपाक इत्यादि अनेक प्रकार के कर्मकाण्ड कर रहे हैं॥२॥११॥२०॥

सवईए महले पहिले के १* १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

वह परब्रह्म केवल एक (ओंकार-स्वरूप) है, सतगुरु की कृपा से प्राप्ति होती है।

इक मनि पुरखु धिआइ बरदाता ॥ संत सहारु सदा बिखिआता ॥ तासु चरन ले रिदै बसावउ ॥ तउ परम गुरू नानक गुन गावउ ॥ १ ॥

{वर्णनीय है कि गुरुओं के दरबार में भाट भी रहते थे, जिन्होंने पाँच गुरुओं का स्तुतिगान किया है। उक्त दस सवैयों में श्री गुरु नानक देव जी का यशोगान किया गया है।}

मैं एकाग्रचित होकर परम परमेश्वर का ध्यान करता हूँ, वह वर देने वाला है, संतों-भक्तों का सदा सहायक है, वह अखिलेश्वर सर्वदा कीर्तियोग्य है। मैं उसके चरण-कमल हृदय में बसाकर परम गुरु नानक देव जी के गुण गाता हूँ॥१॥

गावउ गुन परम गुरू सुख सागर दुरत निवारण सबद सरे ॥ गावहि गंभीर धीर मति सागर जोगी जंगम धिआनु धरे ॥ गावहि इंद्रादि भगत प्रहिलादिक आतम रसु जिनि जाणिओ ॥ कबि कल सुजसु गावउ गुर नानक राजु जोगु जिनि माणिओ ॥ २ ॥

मैं परम गुरु नानक देव जी के गुणों का गान करता हूँ। वे सुखों क सागर हैं, पापों का निवारण करने वाले हैं एवं शब्द के सरोवर हैं। गहन-गंभीर, धैर्यवान, बुद्धिमान व्यक्ति भी सुखसागर गुरु नानक का यशोगान करते हैं, बड़े-बड़े योगी, सन्यासी भी उनके ध्यान में लीन रहते है। इन्द्र सरीखे देवता, भक्त प्रहलाद इत्यादि, जिन्होंने आत्मानंद प्राप्त किया है, वे भी उनका स्तुतिगान करते हैं। कवि कल्ह का कथन है कि जिन्होंने राज-योग का आनंद प्राप्त किया, मैं उस गुरु नानक का सुयश गाता हूँ॥२॥

गावहि जनकादि जुगति जोगेसुर हरि रस पूरन सरब कला ॥ गावहि सनकादि साध सिधादिक मुनि जन गावहि अछल छला ॥ गावै गुण धोमु अटल मंडलवै भगति भाइ रसु जाणिओ ॥ कबि कल सुजसु गावउ गुर नानक राजु जोगु जिनि माणिओ ॥ ३ ॥

राजा जनक सरीखे एवं बड़े-बड़े योगीश्वर भी हरिनाम में लीन सर्वकला सम्पूर्ण गुरु नानक का यश गाते हैं। जिनको माया भी छल नहीं सकती, उनकी स्तुति ब्रह्मा जी के पुत्र सनक, सनंदन इत्यादि, सिद्ध-साधक एवं मुनिजन भी गाते हैं। जिसने भक्तिभाव द्वारा अटल पद धारण किया, उस भक्त ध्रुव एवं धौम्य ऋषि ने भी गुरु नानक का ही गुणगान किया। कवि "कल्ह" गुरु नानक देव जी का सुयश गाता है, जिन्होंने राज-योग का आनंद लिया है॥३॥

**आदि गुरु श्री गुरु नानक देव जी की स्तुति में उच्चरित सवैये*

गावहि कपिलादि आदि जोगेसुर अपरंपर अवतार वरो ॥ गावै जमदगनि परसरामेसुर कर कुठारु रघु तेजु हरिओ ॥ उधौ अक्रूर बिदरु गुण गावै सरबातमु जिनि जाणिओ ॥ कबि कल सुजसु गावउ गुर नानक राजु जोगु जिनि माणिओ ॥ ४ ॥

कपिल ऋषि आदि योगेश्वर उस ईश्वर के अवतार अपरंपार नानक की महिमा गाते हैं। जमदग्नि सुत परशुराम भी उनका मंगल कर रहा है, जिसने हाथ में परशु लेकर श्रीराम चन्द्र जी का तेज-प्रताप छीन लिया था। जिन्होंने सर्वात्म को जान लिया था, उस गुरु के गुण तो उद्धव, अक्रूर एवं विदुर भी गा रहे हैं। कवि कल्ह का कथन है कि जिन्होंने राज-योग का आनंद लिया, मैं उसी गुरु नानक देव जी का सुयश गान कर रहा हूँ॥४॥

गावहि गुण बरन चारि खट दरसन ब्रहमादिक सिमरंथि गुना ॥ गावै गुण सेसु सहस जिहबा रस आदि अंति लिव लागि धुना ॥ गावै गुण महादेउ बैरागी जिनि धिआन निरंतरि जाणिओ ॥ कबि कल सुजसु गावउ गुर नानक राजु जोगु जिनि माणिओ ॥ ५ ॥

ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र– चार वर्ण, योगी, सन्यासी, वैष्णव इत्यादि छः शास्त्र, ब्रह्मा इत्यादि सब लोग गुरु नानक का गुणगान करते हुए उनका स्मरण कर रहे हैं। हजार जिह्वाओं से युग-युग ध्यान लगाकर शेषनाग भी उनकी महिमा-गान में लीन है। जिसने निरन्तर ध्यान लगाकर ब्रह्म को जाना है, वैरागी शिवशंकर भी उनके स्तोत्र गा रहा है। कवि कल्ह का कथन है कि मैं गुरु नानक देव जी का यशोगान कर रहा हूँ, जिन्होंने राज-योग का आनंद लिया॥५॥

राजु जोगु माणिओ बसिओ निरवैरु रिदंतरि ॥ स्रिसटि सगल उधरी नामि ले तरिओ निरंतरि ॥ गुण गावहि सनकादि आदि जनकादि जुगह लगि ॥ धंनि धंनि गुरु धंनि जनमु सकयथु भलौ जगि ॥ पाताल पुरी जैकार धुनि कबि जन कल वखाणिओ ॥ हरि नाम रसिक नानक गुर राजु जोगु तै माणिओ ॥ ६ ॥

उस गुरु नानक ने राज-योग का पूर्ण आनंद लिया है, जिसके हृदय में निर्वैर ईश्वर बस रहा है। हरिनाम का जाप करके गुरु नानक देव जी स्वयं तो संसार-सागर से पार हुए ही हैं, उन्होंने समूची सृष्टि को भी पार उतार दिया है। ब्रह्मा-सुत सनक इत्यादि एवं जनक सरीखे युग-युग से गुण-गान कर रहे हैं। हे गुरु नानक! तू धन्य है, महान् है, प्रशंसा के योग्य है, दुनिया का भला करने के कारण तेरा जन्म सफल हो गया है। कवि कल्ह बखान करता है कि पातालपुरी से जय-जयकार की ध्वनि सुनाई दे रही है। हरिनाम के रसिया, गुरु नानक! तूने राज एवं योग दोनों का आनंद प्राप्त किया है॥६॥

सतजुगि तै माणिओ छलिओ बलि बावन भाइओ ॥ त्रेतै तै माणिओ रामु रघुवंसु कहाइओ ॥ दुआपुरि क्रिसन मुरारि कंसु किरतारथु कीओ ॥ उग्रसैण कउ राजु अभै भगतह जन दीओ ॥ कलिजुगि प्रमाणु नानक गुरु अंगदु अमरु कहाइओ ॥ स्री गुरू राजु अबिचलु अटलु आदि पुरखि फुरमाइओ ॥ ७ ॥

हे गुरु नानक! सतयुग में भी तूने ही राज-योग का आनंद लिया और वामनावतार में राजा बलि को छलना तेरी ही मर्जी थी। त्रेतायुग में तुम्हीं रघुवंशी राम कहलाए और तब भी तूने ही राज-योग का आनंद लिया। द्वापर युग में कृष्णावतार में तूने ही कंस को मुक्ति दी, राजा उग्रसेन को राज दिया और भक्तजनों को अभयदान दिया। कलियुग में भी साक्षी रूप में गुरु नानक, गुरु

अंगद, गुरु अमरदास कहलाए। अनादि परमपिता परमेश्वर का हुक्म है कि श्री गुरु नानक का राज्य सदा अविचल एवं अटल है॥७॥

गुण गावै रविदासु भगतु जैदेव त्रिलोचन ॥ नामा भगतु कबीरु सदा गावहि सम लोचन ॥ भगतु बेणि गुण रवै सहजि आतम रंगु माणै ॥ जोग धिआनि गुर गिआनि बिना प्रभ अवरु न जाणै ॥ सुखदेउ परीख्यतु गुण रवै गोतम रिखि जसु गाइओ ॥ कबि कल सुजसु नानक गुर नित नवतनु जगि छाइओ ॥ ८ ॥

भक्त रविदास, जयदेव, त्रिलोचन गुरु नानक जी का गुणानुवाद कर रहे हैं और भक्त नामदेव एवं कबीर भी समदृष्टि मानते हुए सदा गुरु नानक साहिब का स्तुतिगान करते हैं। भक्त बेणी भी उनके यशोगान में लीन है, जो सहजावस्था में आनंद पाता है और गुरु ज्ञान द्वारा उसी में ध्यानमग्न होकर प्रभु के सिवा किसी अन्य को नहीं मानता। शुकदेव, राजा परीक्षित एवं गौतम ऋषि भी गुरु नानक का मंगलगान कर रहे हैं। कवि कल्ह भी उस गुरु नानक का सुयश गा रहा है, जिसकी नित्यनवीन कीर्ति पूरे जगत में फैली हुई है॥८॥

गुण गावहि पायालि भगत नागादि भुयंगम ॥ महादेउ गुण रवै सदा जोगी जति जंगम ॥ गुण गावै मुनि ब्यासु जिनि बेद ब्याकरण बीचारिअ ॥ ब्रहमा गुण उचरै जिनि हुकमि सभ स्रिसटि सवारीअ ॥ ब्रहमंड खंड पूरन ब्रहमु गुण निरगुण सम जाणिओ ॥ जपु कल सुजसु नानक गुर सहजु जोगु जिनि माणिओ ॥ ९ ॥

पाताललोक में नाग, भुजंग इत्यादि भक्त भी (गुरु नानक का) कीर्ति-गान कर रहे हैं। महादेव, योगी, सन्यासी, जंगम इत्यादि सदा उसी के गौरव-गान में लीन रहते हैं। वेद एवं व्याकरण का चिंतन करने वाले मुनि व्यास भी गुरु नानक का ही गुणगान कर रहा है। जिसके हुक्म से समूची सृष्टि की सृजना हुई, वह ब्रह्मा भी स्तुतिगान कर रहा है। जिसने ब्रह्माण्ड के सब खण्डों में पूर्णब्रह्म को सगुण-निर्गुण रूप में एक समान माना है, जिस गुरु नानक ने सहज योग का आनंद लिया है, कवि कल्ह उसी का जाप करते हुए सुयश गा रहा है॥९॥

गुण गावहि नव नाथ धंनि गुरु साचि समाइओ ॥ मांधाता गुण रवै जेन चक्रवै कहाइओ ॥ गुण गावै बलि राउ सपत पातालि बसंतौ ॥ भरथरि गुण उचरै सदा गुर संगि रहंतौ ॥ दूरबा परूरउ अंगरै गुर नानक जसु गाइओ ॥ कबि कल सुजसु नानक गुर घटि घटि सहजि समाइओ ॥ १० ॥

गोरख, मच्छन्द्र, गोपी इत्यादि नौ नाथ भी गुण गाते हैं और उनका कथन है कि सत्य में समाहित गुरु नानक धन्य हैं। चक्रवर्ती कहे जाने वाले मानधाता भी गुणानुवाद करते हैं। सातवें पाताल में रहने वाला राजा बलि भी गुरु नानक का स्तुतिगान कर रहा है। गुरु नानक के संग रहने वाला भर्तृहरि योगी भी उनकी प्रशंसा गा रहा है। दुर्वासा ऋषि, राजा पुरुरवा एवं अंगिरा मुनि भी गुरु नानक का यशोगान कर रहे हैं। कवि कल्ह घट घट में समाहित गुरु नानक देव जी का सुयश गा रहा है॥१०॥

सवईए महले दूजे के २* १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

वह परब्रह्म केवल एक (ओंकार-स्वरूप) है, सतगुरु की कृपा से प्राप्ति होती है।

सोई पुरखु धंनु करता कारण करतारु करण समरथो ॥ सतिगुरू धंनु नानकु मसतकि तुम धरिओ जिनि हथो ॥ त धरिओ मसतकि हथु सहजि अमिउ वुठउ छजि सुरि नर गण मुनि बोहिय अगाजि ॥ मारिओ कंटकु कालु गरजि धावतु लीओ बरजि पंच भूत एक घरि राखि ले समजि ॥ जगु जीतउ गुर दुआरि खेलहि समत सारि रथु उनमनि लिव राखि निरंकारि ॥ कहु कीरति कलसहार सपत दीप मझार लहणा जगत्र गुरु परसि मुरारि ॥ १॥

सम्पूर्ण विश्व की रचना करने वाला वह कर्तापुरुष धन्य है, वह करण कारण है, सर्वशक्तिमान है। हे गुरु अंगद ! वह सतगुरु नानक भी धन्य है, जिसने तुम्हारे माथे पर वरदहस्त रखा। जब गुरु नानक ने माथे पर हाथ रखा तो स्वाभाविक ही अमृत-वर्षा होने लगी, जिससे देवता, मनुष्य, मुनिगण इत्यादि अमृत में भीग गए। तूने भयंकर काल को मारकर भगा दिया और कामादिक पाँच विकारों को रोककर मन को वशीभूत कर लिया। गुरु नानक के द्वार पर सर्वस्व सौंपकर तुमने पूरे जगत को जीत लिया है, समता की बाजी तुम खेल रहे हो और उन्मनावस्था में निरंकार में ध्यान लगा रखा है। कवि कलसहार का कथन है कि जगद्गुरु गुरु नानक देव जी के चरणों में लगकर भाई लहणा (गुरु अंगद) की कीर्ति सम्पूर्ण विश्व में फैल गई है॥१॥

जा की द्रिसटि अंम्रित धार कालुख खनि उतार तिमर अग्यान जाहि दरस दुआर ॥ ओइ जु सेवहि सबदु सारु गाखड़ी बिखम कार ते नर भव उतारि कीए निरभार ॥ सतसंगति सहज सारि जागीले गुर बीचारि निंमरी भूत सदीव परम पिआरि ॥ कहु कीरति कलसहार सपत दीप मझार लहणा जगत्र गुरु परसि मुरारि ॥ २ ॥

जिस गुरु अंगद की दृष्टि अमृत-धारा के समान है, पापों की कालिमा को दूर करने वाली है, उस गुरु के द्वार का दर्शन करने से अज्ञान का अन्धेरा मिट जाता है। जो लोग शब्द का चिंतन करते हैं, कठिन साधना करते हैं, ऐसे व्यक्तियों को गुरु ने संसार-सागर से पार उतार कर बन्धनों से मुक्त कर दिया है। वे सत्संगत में स्वाभाविक ही गुरु के वचनों द्वारा जाग्रत हो जाते हैं और नम्रतापूर्वक सदैव प्रेम प्यार में लीन रहते हैं। कलसहार का कथन है कि जगद्गुरु गुरु नानक की चरण-शरण में भाई लहणा (गुरु अंगद देव जी) की कीर्ति सम्पूर्ण विश्व में फैल गई है॥२॥

---

*श्री गुरु अंगद देव जी की स्तुति में उच्चरित सवैये

तै तउ द्रिड़िओ नामु अपारु बिमल जासु बिथारु साधिक सिध सुजन जीआ को अधारु ॥ तू ता जनिक राजा अउतारु सबदु संसारि सारु रहहि जगत्र जल पदम बीचार ॥ कलिप तरु रोग बिदारु संसार ताप निवारु आतमा त्रिबिधि तेरै एक लिव तार ॥ कहु कीरति कलसहार सपत दीप मझार लहणा जगत्र गुरु परसि मुरारि ॥ ३ ॥

हे गुरु अंगद ! तूने तो अपने मन में हरिनाम को ही बसाया है, तुम्हारा निर्मल यश हर तरफ फैला हुआ है, सिद्ध-साधक एवं संतजनों के जीवन का तू ही आसरा है। तू ही राजा जनक का अवतार है। संसार में तेरा उपदेश सर्वश्रेष्ठ है, जल में कमल की तरह तू जगत में अलिप्त रहता है। तू ही कल्पवृक्ष है, सर्व रोगों को दूर करने वाला और संसार के दुखों का निवारण करने वाला है। तीन गुणों वाले संसारी जीव एकाग्रचित होकर तेरा ध्यान करते हैं। कलसहार कहते हैं कि जगद्गुरु गुरु नानक देव जी की शरण में भाई लहणा (गुरु अंगद देव जी) की कीर्ति सम्पूर्ण सृष्टि में फैल गई है॥३॥

तै ता हदरथि पाइओ मानु सेविआ गुरु परवानु साधि अजगरु जिनि कीआ उनमानु ॥ हरि हरि दरस समान आतमा वंतगिआन जाणीअ अकल गति गुर परवान ॥ जा की द्रिसटि अचल ठाण बिमल बुधि सुथान प्रहिरि सील सनाहु सकति बिदारि ॥ कहु कीरति कलसहार सपत दीप मझार लहणा जगत्र गुरु परसि मुरारि ॥ ४ ॥

हे गुरु अंगद ! तूने हजरत नानक से मान-प्रतिष्ठा प्राप्त की है, गुरु नानक की तन-मन से सेवा करके सफल हुए, अजगर सरीखे असाध्य मन को ऊँचा किया है। तेरे दर्शन तो परमात्मा के दर्शन समान हैं, तुम पुण्यात्मा, ज्ञानवान, सर्वज्ञ हो, तुमने गुरु नानक की उच्चावस्था को जान लिया है, जिसकी दृष्टि अचल स्थान पर टिकी है, जिसकी बुद्धि निर्मल स्थान पर लगी हुई है, जिसने सहनशीलता का कवच धारण करके माया-शक्ति का नाश कर दिया है। कलसहार का कथन है कि जगद्गुरु गुरु नानक देव जी के चरणों में भाई लहणा (गुरु अंगद देव जी) की कीर्ति पूरे जगत में फैल गई है॥ ४॥

द्रिसटि धरत तम हरन दहन अघ पाप प्रनासन ॥ सबद सूर बलवंत काम अरु क्रोध बिनासन ॥ लोभ मोह वसि करण सरण जाचिक प्रतिपालण ॥ आतम रत संग्रहण कहण अंम्रित कल ढालण ॥ सतिगुरू कल सतिगुर तिलकु सति लागै सो पै तरै ॥ गुरु जगत फिरणसीह अंगरउ राजु जोगु लहणा करै ॥ ५ ॥

हे गुरु अंगद ! तुम्हारी कृपा-दृष्टि धारण करते ही अज्ञान का अंधेरा मिट जाता है, तुम अपराधों को जला देने वाले एवं पापों का नाश करने वाले हो। तुम शब्द के शूरवीर एवं बलवान हो, काम और क्रोध का नाश करने वाले हो। तुमने लोभ एवं मोह को वश में कर लिया है, शरण में आने वाले याचक का पालन-पोषण करने वाले हो। तुमने आत्म-प्रेम का भण्डार इकट्ठा किया हुआ है और तुम्हारा वचन अमृत शक्ति की धारा है। कलसहार का कथन है कि (गुरु नानक की गद्दी पर विराजमान) सतगुरु अंगद देव शिरोमणि गुरु हैं, जो निश्चय धारण करके गुरु-चरणों में लगता है, वह पार उतर जाता है। जगद्गुरु, बाबा फेरुमल का सुपुत्र भाई लहणा गुरु अंगद बनकर राज योग भोग रहा है॥ ५॥

सदा अकल लिव रहै करन सिउ इछा चारह ॥ द्रुम सपूर जिउ निवै खवै कसु बिमल बीचारह ॥ इहै ततु जाणिओ सरब गति अलखु बिडाणी ॥ सहज भाइ संचिओ किरणि अंम्रित कल बाणी ॥ गुर गमि प्रमाणु तै पाइओ सतु संतोखु ग्राहजि लयौ ॥ हरि परसिओ कलु समुलवै जन दरसनु लहणे भयौ ॥ ६ ॥

हे गुरु ! तेरा ध्यान सदैव परमात्मा में लगा रहता है और अपनी इच्छानुसार कार्य करने में तुम स्वतंत्र हो। जैसे फलों से भरा हुआ पेड़ झुका रहता है, वैसे ही पावन विचारधारा के कारण लोगों की बातों को सहन करते हो। तुमने यह तथ्य जान लिया है कि अद्‌भुत लीला करने वाला अलख प्रभु सब में विद्यमान है। तुमने अमृतवाणी द्वारा सहज स्वाभाविक सब को आकर्षित किया है। हे गुरु अंगद ! (गुरु नानक देव जी की गद्दी पर आसीन होकर) तुमने गुरु वाला पद पा लिया है और सत्य तेरे मन में अवस्थित है तथा संतोष को ग्रहण किया हुआ है। कलसहार का कथन है कि जिन लोगों ने भाई लहणा (गुरु अंगद देव) के दर्शन किए हैं, उन्होंने तो मानो ईश्वर का ही चरण स्पर्श पा लिया है॥६॥

मनि बिसासु पाइओ गहरि गहु हदरथि दीओ ॥ गरल नासु तनि नठयो अमिउ अंतरगति पीओ ॥ रिदि बिगासु जागिओ अलखि कल धरी जुगंतरि ॥ सतिगुरु सहज समाधि रविओ सामानि निरंतरि ॥ उदारउ चित दारिद हरन पिखंतिह कलमल त्रसन ॥ सद रंगि सहजि कलु उचरै जसु जंपउ लहणे रसन ॥ ७ ॥

तुम्हारे मन में विश्वास हो गया है, हजरत नानक ने गहन-गम्भीरता प्रदान की है। तुम्हारे तन में से मोह रूपी जहर नाश हो गया है और अन्तरात्मा ने नाम अमृतपान किया है। तुम्हारा हृदय खिलकर जाग्रत हो गया है, युग-युगांतर रहने वाले अलख ने अपनी शक्ति स्थापित कर दी है। जो प्रभु समान रूप से सब में मौजूद है, सतगुरु अंगद स्वाभाविक उसी की समाधि में लीन रहता है। हे गुरु अंगद ! तू उदारचित है, गरीबी को दूर करने वाला है, तेरे दर्शनों से पाप-दोष नाश हो जाते हैं। कलसहार कहता है कि वह सहज स्वभाव प्रेम से गुरु अंगद देव जी का यश उच्चारण करता है और रसना से उनका नाम जपता है॥७॥

नामु अवखधु नामु आधारु अरु नामु समाधि सुखु सदा नाम नीसाणु सोहै ॥ रंगि रतौ नाम सिउ कल नामु सुरि नरह बोहै ॥ नाम परसु जिनि पाइओ सतु प्रगटिओ रवि लोइ ॥ दरसनि परसिऐ गुरू कै अठसठि मजनु होइ ॥ ८ ॥

हरिनाम सर्व रोगों की औषधि है, नाम ही जीवन का आसरा है और नाम ही परम सुख प्रदान करने वाला है। हरिनाम पूरे विश्व में शोभायमान है। कलसहार का कथन है कि गुरु अंगद देव जी उस हरिनाम में लीन हैं, जो देवताओं एवं मनुष्यों को महक प्रदान कर रहा है। जिसने गुरु से नाम पाया है, उसकी कीर्ति सूर्य की तरह चमक रही है। सो उस गुरु अंगद देव जी के दर्शन एवं चरण स्पर्श से अड़सठ तीर्थों का स्नान हो जाता है॥८॥

सचु तीरथु सचु इसनानु अरु भोजनु भाउ सचु सदा सचु भाखंतु सोहै ॥ सचु पाइओ गुर सबदि सचु नामु संगती बोहै ॥ जिसु सचु संजमु वरतु सचु कबि जन कल वखाणु ॥ दरसनि परसिऐ गुरू कै सचु जनमु परवाणु ॥ ६ ॥

परम सत्य (हरिनाम) ही गुरु अंगद देव जी का तीर्थ, स्नान है, सच्चा हरिनाम जपना ही उनका भोजन एवं प्रेम है। गुरु जी सत्य बोलते (हरिनामोच्चारण करते) शोभा दे रहे हैं। गुरु नानक के शब्द द्वारा गुरु अंगद ने सत्य को प्राप्त किया और सच्चा नाम संगत को सुगन्धित कर रहा है। कवि कलसहार बखान करता है कि जिस गुरु अंगद का संयम, व्रत सब सत्य (हरिनाम) ही है, उस गुरु के दर्शनों से जन्म सफल हो जाता है॥६॥

अमिअ द्रिसटि सुभ करै हरै अघ पाप सकल मल ॥ काम क्रोध अरु लोभ मोह वसि करै सभै बल ॥ सदा सुखु मनि वसै दुखु संसारह खोवै ॥ गुरु नव निधि दरीआउ जनम हम कालख धोवै ॥ सु कहु टल गुरु सेवीऐ अहिनिसि सहजि सुभाइ ॥ दरसनि परसिऐ गुरू कै जनम मरण दुखु जाइ ॥ १० ॥

गुरु अंगद जिस पर भी अपनी शुभ अमृत दृष्टि करते हैं, उसके पाप-दोषों की मैल सब दूर हो जाती है। उन्होंने काम, क्रोध एवं लोभ, मोह सब को वश में कर लिया है। उनके मन में सदैव सुख बस रहा है और वे संसार के दुखों को दूर कर रहे हैं। गुरु अंगद नौ निधियों का दरिया है, जो हमारे जन्मों की पापों की मैल को दूर कर रहा है। कवि टल्ल (कलसहार) का कथन है कि दिन-रात सहज स्वभाव गुरु अंगद की सेवा करो, उस गुरु के दर्शन से जन्म-मरण का दुख निवृत्त हो जाता है॥१०॥

सवईए महले तीजे के ३* १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

वह परब्रह्म केवल एक (ओंकार-स्वरूप) है, सतगुरु की कृपा से प्राप्ति होती है।

सोई पुरखु सिवरि साचा जा का इकु नामु अछलु संसारे ॥ जिनि भगत भवजल तारे सिमरहु सोई नामु परधानु ॥ तितु नामि रसिकु नानकु लहणा थपिओ जेन स्रब सिधी ॥ कवि जन कल्य सबुधी कीरति जन अमरदास बिस्तरीया ॥ कीरति रवि किरणि प्रगटि संसारह साख तरोवर मवलसरा ॥ उतरि दखिणहि पुबि अरु पस्चमि जै जै कारु जपंथि नरा ॥ हरि नामु रसनि गुरमुखि बरदायउ उलटि गंग पस्चमि धरीआ ॥ सोई नामु अछलु भगतह भव तारणु अमरदास गुर कउ फुरिआ ॥ १ ॥

उस सत्यस्वरूप परम परमेश्वर का स्मरण करो, जिसका नाम संसार में अछल है। जिसने भक्तों को संसार-सागर से पार उतार दिया, उस उत्तम हरिनाम का सिमरन करो। गुरु नानक उस हरिनाम के रसिया थे, उस नाम द्वारा भाई लहणा गुरु अंगद के रूप में स्थापित हुए, जिनको सर्वसिद्धियाँ प्राप्त हुईं। कवि कल्ह का कथन है कि हरिनाम द्वारा सुबुद्धि वाले गुरु अमरदास जी का यश संसार भर में फैल गया है। जैसे मौलश्री के पेड़ की शाखाएँ फैलती हैं, वैसे ही गुरु अमरदास जी का यश सूर्य की किरणों की तरह सब ओर फैल गया है। जिस कारण उत्तर, दक्षिण, पूर्व, पश्चिम में लोग गुरु अमरदास जी की जय-जयकार कर रहे हैं। जो हरिनाम गुरु नानक ने रसना से उच्चरित करके जिज्ञासुओं को प्रदान किया और *(अपने शिष्य भाई लहणा को गुरु-गद्दी सौंपकर)* गंगा पश्चिम की ओर उलटी दिशा बहा दी। वह अछल नाम जो भक्तों को संसार-सागर से पार उतारने वाला है, वह गुरु अमरदास जी के अन्तर्मन में भी अवस्थित हो गया॥१॥

सिमरहि सोई नामु जख्य अरु किंनर साधिक सिध समाधि हरा ॥ सिमरहि नख्यत्र अवर ध्रू मंडल नारदादि प्रहलादि वरा ॥ ससीअरु अरु सूरु नामु उलासहि सैल लोअ जिनि उधरिआ ॥ सोई नामु अछलु भगतह भव तारणु अमरदास गुर कउ फुरिआ ॥ २ ॥

उस हरिनाम का सिमरन तो यक्ष, किन्नर, सिद्ध-साधक एवं शिव भी कर रहे हैं। अनेकों नक्षत्र, भक्त ध्रुव-मंडल, नारद मुनि, प्रहलाद भक्त भी उसी का जाप कर रहे हैं। सूर्य एवं चन्द्रमा भी हरिनाम को ही चाहते हैं, जिसने पत्थरों-पहाड़ों का भी उद्धार कर दिया है। वह अछल नाम जो भक्तों को संसार-सागर से मुक्त करने वाला है, वह गुरु अमरदास जी के मन में भी स्थिर हुआ है॥२॥

सोई नामु सिवरि नव नाथ निरंजनु सिव सनकादि समुधरिआ ॥ चवरासीह सिध बुध जितु राते अंबरीक भवजलु तरिआ ॥ उधउ अक्रूर तिलोचनु नामा कलि कबीर किलविख हरिआ ॥ सोई नामु अछलु भगतह भव तारणु अमरदास गुर कउ फुरिआ ॥ ३ ॥

श्री गुरु अमरदास जी की स्तुति में उच्चरित सवैये

उसी पावन-स्वरूप हरिनाम का जाप करके गोरख, मच्छंदर सरीखे नौ नाथ, शिव-शंकर सनक-सनंदन की भी मुक्ति हो गई। चौरासी सिद्ध, बुद्ध जिस नाम में लीन थे, राजा अम्बरीक भी भवसागर से तैर गए। उद्धव, अक्रूर, त्रिलोचन, नामदेव एवं कबीर ने भी कलियुग में हरिनाम से पापों का निवारण किया। वह छलरहित हरिनाम जो भक्तों का संसार-सागर से पार उतारा करने वाला है, वह गुरु अमरदास जी के मन में भी बस गया है॥३॥

तितु नामि लागि तेतीस धिआवहि जती तपीसुर मनि वसिआ ॥ सोई नामु सिमरि गंगेव पितामह चरण चित अंम्रित रसिआ ॥ तितु नामि गुरू गंभीर गरूअ मति सत करि संगति उधरीआ ॥ सोई नामु अछलु भगतह भव तारणु अमरदास गुर कउ फुरिआ ॥ ४ ॥

उस हरिनाम में लीन होकर तेंतीस करोड़ देवता भी ध्यान करते हैं, बड़े-बड़े ब्रह्मचारी एवं तपस्वियों के मन में भी नाम ही बसा हुआ है। गंगा-पुत्र भीष्म पितामह ने भी उस हरिनाम का स्मरण किया और प्रभु चरणों में चित लगाकर नामामृत का रस पाया। उस नाम में तल्लीन होकर गहन-गम्भीर गुरु द्वारा दृढ़-निश्चय धारण करने वाले लोगों का उद्धार हो रहा है। भक्तों को मुक्ति प्रदान करने वाला वह अछल हरिनाम गुरु अमरदास जी के अन्तर्मन में भी अवस्थित हुआ है॥४॥

नाम किति संसारि किरणि रवि सुरतर साखह ॥ उतरि दखिणि पुबि देसि पस्चमि जसु भाखह ॥ जनमु त इहु सकयथु जितु नामु हरि रिदै निवासै ॥ सुरि नर गण गंधरब छिअ दरसन आसासै ॥ भलउ प्रसिधु तेजो तनौ कल्य जोड़ि कर ध्याइअओ ॥ सोई नामु भगत भवजल हरणु गुर अमरदास तै पाइओ ॥ ५ ॥

हरिनाम की कीर्ति संसार में सूर्य की किरणों मानिंद यूं फैली हुई है, जैसे कल्पवृक्ष की शाखाएँ महक बिखेर रही हों। उत्तर, दक्षिण, पूर्व, पश्चिम के देशों में रहने वाले लोग परमात्मा का ही यश गा रहे हैं। उसी का जन्म सफल होता है, जिसके हृदय में परमात्मा का नाम अवस्थित होता है। देवता, मनुष्य, गण, गंधर्व एवं छः दर्शन-योगी, सन्यासी, वैष्णव इत्यादि भी हरिनाम की कामना कर रहे हैं। तेजभान जी के सुपुत्र भल्ला कुल में प्रसिद्ध अमरदास जी को कवि कल्ह हाथ जोड़ कर प्रार्थना करता है– हे गुरु अमरदास ! भक्तों को संसार के बन्धनों से मुक्ति प्रदान करने वाला परमेश्वर का नाम तुम्हें भी प्राप्त हुआ है॥५॥

नामु धिआवहि देव तेतीस अरु साधिक सिध नर नामि खंड ब्रहमंड धारे ॥ जह नामु समाधिओ हरखु सोगु सम करि सहारे ॥ नामु सिरोमणि सरब मै भगत रहे लिव धारि ॥ सोई नामु पदारथु अमर गुर तुसि दीओ करतारि ॥ ६ ॥

तेंतीस करोड़ देवता, सिद्ध-साधक एवं मनुष्य भी ईश्वर के नाम का ही ध्यान करते हैं, खण्ड-ब्रह्माण्ड सम्पूर्ण सृष्टि को नाम ने ही धारण किया हुआ है। जिन लोगों ने ईश्वर का मनन किया है, उन्होंने खुशी एवं गम को भी समान ही माना है। हरिनाम सर्व-शिरोमणि है, भक्तों ने इसी में ध्यान लगाया हुआ है। हे गुरु अमरदास ! परमेश्वर ने प्रसन्न होकर आपको वही हरिनाम पदार्थ ही प्रदान किया है॥६॥

सति सूरउ सीलि बलवंतु सत भाइ संगति सघन गरूअ मति निरवैरि लीणा ॥ जिसु धीरजु धुरि धवलु धुजा सेति बैकुंठ बीणा ॥ परसहि संत पिआरु जिह करतारह संजोगु ॥ सतिगुरू सेवि सुखु पाइओ अमरि गुरि कीतउ जोगु ॥ ७ ॥

गुरु अमरदास जी सत्य का सूरज हैं, सादगी में बलवान एवं उदारचित्त हैं, उनके शिष्य की मण्डली बहुत अधिक है, वह महान्, बुद्धिमान एवं प्रेम भावना सहित ईश्वर में लीन रहते हैं। जिनके धैर्य का धवल वैकुण्ठ में स्थित है अर्थात् गुरु जी का धैर्य संगत का नेतृत्व कर रहा है। जिसका परमात्मा से संयोग बन चुका है, उनसे सभी संत प्रेम करते हैं। गुरु अमरदास जी ने इस योग्य बना दिया है कि सतगुरु की सेवा में सब सुख पा रहे हैं॥ ७॥

नामु नावणु नामु रस खाणु अरु भोजनु नाम रसु सदा चाय मुखि मिस्ट बाणी ॥ धनि सतिगुरु सेविओ जिसु पसाइ गति अगम जाणी ॥ कुल संबूह समुधरे पायउ नाम निवासु ॥ सकयथु जनमु कल्युचरै गुरु परस्यिउ अमर प्रगासु ॥ ८ ॥

हरिनाम ही गुरु अमरदास का स्नान है, नाम जपना ही उनके खाने का रस एवं भोजन है। हरिनाम रस उनका चाव है और मुँह से वे बहुत मीठा बोलते हैं। जिस सतगुरु अंगद देव जी की उन्होंने सेवा की, वे धन्य हैं, जिनकी कृपा से उन्होंने प्रभु की महिमा को जाना है। गुरु जी ने समूह कुलों का उद्धार कर दिया, वे हरिनाम में ही लीन रहते थे। कवि कल्ह का कथन है कि जिन लोगों को विश्व-विख्यात श्री गुरु अमरदास जी के दर्शन प्राप्त हुए, उनका जीवन सफल हो गया है॥८॥

बारिजु करि दाहिणै सिधि सनमुख मुखु जोवै ॥ रिधि बसै बांवांगि जु तीनि लोकांतर मोहै ॥ रिदै बसै अकहीउ सोइ रसु तिन ही जातउ ॥ मुखहु भगति उचरै अमरु गुरु इतु रंगि रातउ ॥ मसतकि नीसाणु सचउ करमु कल्य जोड़ि कर ध्याइअउ ॥ परसिअउ गुरू सतिगुर तिलकु सरब इछ तिनि पाइअउ ॥ ६ ॥

गुरु अमरदास जी के दाएँ हाथ में पद्म स्थित है और सिद्धियाँ सन्मुख होकर उनका मुख निहार रही हैं। ऋद्धियाँ उनके बाएँ अंग पर मौजूद हैं, जो तीनों लोकों को मोहित करती हैं। उनके हृदय में अकथनीय ईश्वर अवस्थित है, जिसका आनंद उन्होंने जान लिया है। गुरु अमरदास जी मुखारबिंद से ईश्वर की भक्ति-वंदना का उच्चारण करते हैं और इस रंग में ही लीन हैं। उनके माथे पर ईश्वर-कृपा का चिन्ह है। कवि कल्ह हाथ जोड़कर कहता है कि जिसने सच्चे गुरु अमरदास जी का दर्शन-ध्यान किया है, उसकी सब कामनाएँ पूरी हो गई हैं॥६॥

(यह नौ सवैये भाट कलसहार ने गुरु अमरदास जी की स्तुति में उच्चरित किए हैं)

चरण त पर सकयथ चरण गुर अमर पवलि रय ॥ हथ त पर सकयथ हथ लगहि गुर अमर पय ॥ जीह त पर सकयथ जीह गुर अमरु भणिजै ॥ नैण त पर सकयथ नयणि गुरु अमरु पिखिजै ॥ स्रवण त पर सकयथ स्रवणि गुरु अमरु सुणिजै ॥ सकयथु सु हीउ जितु हीअ बसै गुर अमरदासु निज जगत पित ॥ सकयथु सु सिरु जालपु भणै जु सिरु निवै गुर अमर नित ॥ १ ॥ १० ॥

वही चरण सफल हैं, जो गुरु (अमरदास जी) के राह पर चलते हैं। वही हाथ सार्थक हैं, जो गुरु अमरदास जी के चरण छूते हैं। जीभ भी असल में वही सफल है, जो गुरु अमरदास जी का यशोगान करती है। जो आँखें गुरु अमरदास जी के दर्शन करती हैं, असल में वही सार्थक हैं। वही कान पूर्ण रूप से सफल हैं, जो गुरु अमरदास जी का उपदेश सुनते हैं। जिस हृदय में जगत पिता गुरु अमरदास जी बसते हैं, वही हृदय सफल है। भाट जालप का कथन है कि जो सिर नित्य गुरु अमरदास जी के सन्मुख झुकता है, असल में वही सफल होता है॥१॥१०॥

ति नर दुख नह भुख ति नर निधन नहु कहीअहि ॥ ति नर सोकु नहु हूऐ ति नर से अंतु न लहीअहि ॥ ति नर सेव नहु करहि ति नर सय सहस समपहि ॥ ति नर दुलीचै बहहि ति नर उथपि बिथपहि ॥ सुख लहहि ति नर संसार महि अभै पटु रिप मधि तिह ॥ सकयथ ति नर जालपु भणै गुर अमरदासु सुप्रसंनु जिह ॥ २ ॥ ११ ॥

(जिस पर गुरु अमरदास जी की प्रसन्नता होती है) ऐसा व्यक्ति कभी दुखी नहीं होता, वह भूख से रहित रहता है, ऐसे नर को निर्धन भी नहीं कहा जाता। ऐसे व्यक्ति को कोई गम-शोक नहीं होता, ऐसे व्यक्ति का रहस्य भी नहीं पाया जा सकता। ऐसा पुरुष न ही किसी पर निर्भर रहता है, अपितु हजारों चीजें देने में समर्थ होता है। ऐसा मनुष्य ऐश्वर्य सुख भोगता है और बुराइयों को दूर करके अच्छाई की स्थापना करता है। ऐसा मनुष्य संसार में सुख ही पाता है और शत्रुओं में सज्जन भावना से रहता है। जालप का कथन है कि उसी व्यक्ति का जीवन सार्थक होता है, जिस पर गुरु अमरदास जी सुप्रसन्न होते हैं॥ २॥ ११॥

तै पढिअउ इकु मनि धरिअउ इकु करि इकु पछाणिओ ॥ नयणि बयणि मुहि इकु इकु दुहु ठांइ न जाणिओ ॥ सुपनि इकु परतखि इकु इकस महि लीणउ ॥ तीस इकु अरु पंजि सिधु पैतीस न खीणउ ॥ इकहुं जि लाखु लखहु अलखु है इकु इकु करि वरनिअउ ॥ गुर अमरदास जालपु भणै तू इकु लोड़हि इकु मंनिअउ ॥ ३ ॥ १२ ॥

हे गुरु अमरदास! तूने एक परमेश्वर का ही मनन किया, मन में एक ओंकार का ही चिंतन किया, केवल एक परम-परमेश्वर को ही माना है। तेरे नयनों में, वचनों में, मुँह में केवल परब्रह्म ही बसा हुआ है और उस एक परमशक्ति के बिना किसी अन्य को नहीं माना। हे गुरु! तेरे सपने में भी हरिनाम बसा हुआ है और प्रत्यक्ष भी 'एक' उसी का तू रसिया बना रहता है और तुम एक प्रभु में ही लीन रहते हो। महीने के तीस दिनों में भी सर्वदा एक उसी का तू रसिया बना है और पंच तत्वों (पूरे जगत) में केवल वही है और पैंतीस अक्षरों में भी ईश-वंदना ही है। जिस एक परब्रह्म से लाखों प्राणी बने हैं, हम लाखों की समझ से परे हैं, हे गुरु अमरदास! तुमने उस एक अलख परमेश्वर का ही वर्णन किया है। जालप भाट का कथन है कि हे गुरु अमरदास! तुझे एक परमात्मा की ही अभिलाषा लगी हुई है और उस एक को ही श्रद्धापूर्वक मानते हो॥३॥१२॥

जि मति गही जैदेवि जि मति नामै संमाणी ॥ जि मति त्रिलोचन चिति भगत कंबीरहि जाणी ॥ रुकमांगद करतूति रामु जंपहु नित भाई ॥ अंमरीकि प्रहलादि सरणि गोबिंद गति पाई ॥ तै लोभु क्रोधु त्रिसना तजी सु मति ज़ल्य जाणी जुगति ॥ गुरु अमरदासु निज भगतु है देखि दरसु पावउ मुकति ॥ ४ ॥ १३ ॥

जो शिक्षा (नाम जपने की) जयदेव ने ग्रहण की, जो आस्था (हरिनाम में रत रहने की) नामदेव के मन में बसी थी, जो शिक्षा (ईश्वर का संकीर्तन करने की) त्रिलोचन के दिल में दृढ़ हो गई थी, जो सीख (हरिनाम की) भक्त कबीर ने समझी, इसी प्रकार राजा रुकमांगद का यही कर्म था कि वह राम नाम का नित्य जाप करता एवं करवाता था। हे भाई! नित्य राम नाम का जाप करो, इसी से राजा अंबरीष एवं भक्त प्रहलाद ने ईश्वर की शरण प्राप्त की। भाट जल्ह (जालप) का कथन है कि हे गुरु अमरदास! तुमने सुमति एवं युक्ति को जानकर लोभ, क्रोध एवं तृष्णा को त्याग दिया है। गुरु अमरदास जी ईश्वर के परम भक्त हैं, उनके दर्शनों से मुक्ति प्राप्त हुई है॥४॥१३॥

गुरु अमरदासु परसीऐ पुहमि पातिक बिनासहि ॥ गुरु अमरदासु परसीऐ सिध साधिक आसासहि ॥ गुरु अमरदासु परसीऐ धिआनु लहीऐ पउ मुकिहि ॥ गुरु अमरदासु परसीऐ अभउ लभै गउ चुकिहि ॥ इकु बिंनि दुगण जु तउ रहै जा सुमंत्रि मानवहि लहि ॥ जालपा पदारथ इतड़े गुर अमरदासि डिठै मिलहि ॥ ५ ॥ १४ ॥

गुरु अमरदास जी के चरण स्पर्श से पृथ्वी के पापों का नाश हो जाता है। गुरु अमरदास जी के चरण स्पर्श की बड़े-बड़े सिद्ध-साधक भी आकांक्षा करते हैं। गुरु अमरदास जी के चरण स्पर्श से ईश्वर में ध्यान लगता है और जन्म-मरण का चक्र समाप्त हो जाता है। गुरु अमरदास जी के चरण स्पर्श से अभय प्रभु प्राप्त होता है और आवागमन दूर हो जाता है। जो मनुष्य गुरु का उपदेश लेकर एक ईश्वर को समझ लेता है, उसका द्वैतभाव दूर हो जाता है। भाट जालप का कथन है कि इतने सब फल गुरु अमरदास जी के दर्शनों से ही मिलते हैं॥५॥१४॥

(गुरु अमरदास जी की स्तुति में यह पाँच सवैये भाट जालप के हैं)

सचु नामु करतारु सु द्रिड़ु नानकि संग्रहिअउ ॥ ता ते अंगदु लहणा प्रगटि तासु चरणह लिव रहिअउ ॥ तितु कुलि गुर अमरदासु आसा निवासु तासु गुण कवण वखाणउ ॥ जो गुण अलख अगंम तिनह गुण अंतु न जाणउ ॥ बोहिथउ बिधातै निरमयौ सभ संगति कुल उधरण ॥ गुर अमरदास कीरतु कहै त्राहि त्राहि तुअ पा सरण ॥ १ ॥ १५ ॥

गुरु नानक देव जी ने ईश्वर का शाश्वत नाम अपने दिल में पक्के तौर पर अवस्थित किया था, उन से भाई लहणा (गुरुगद्दी पर विराजमान होने के बाद) गुरु अंगद देव के रूप में विख्यात हुए, जिनका ध्यान अपने गुरु, गुरु नानक के चरणों में लीन रहता था। तदन्तर उसी गुरु नानक की कुल में से आशाओं का घर गुरु अमरदास जी कीर्तिमान हुए हैं, उनके कौन-कौन से गुण का बखान किया जा सके, जो गुण अलक्ष्य एवं अगम्य हैं, उन गुणों का रहस्य नहीं जानता। समूची संगत एवं कुलों का उद्धार करने के लिए विधाता ने गुरु अमरदास जी के रूप में एक जहाज बनाया है। भाट कीरत विनती करता है कि हे गुरु अमरदास! मैं तेरी शरण में आया हूँ, मुझे बचा लो॥१॥१५॥

आपि नराइणु कला धारि जग महि परवरियउ ॥ निरंकारि आकारु जोति जग मंडलि करियउ ॥ जह कह तह भरपूरु सबदु दीपकि दीपायउ ॥ जिह सिखह संग्रहिओ ततु हरि चरण मिलायउ ॥ नानक कुलि निंमलु अवतर्यिउ अंगद लहणे संगि हुअ ॥ गुर अमरदास तारण तरण जनम जनम पा सरणि तुअ ॥ २ ॥ १६ ॥

नारायण स्वयं ही अपनी शक्ति द्वारा (गुरु अमरदास जी के रूप में) दुनिया में प्रवृत्त हुआ है। निराकार परमेश्वर ने गुरु अमरदास का रूप धारण करके जगत् में अपनी ज्योति फैलाई है। जहाँ-कहाँ सर्वत्र शब्द प्रभु ही व्याप्त है और गुरु अमरदास रूपी दीपक द्वारा दीप्तिमान हुआ है। जिन शिष्यों ने शब्द को मन में बसाया, गुरु ने उनको तुरंत हरि-चरणों में विलीन कर दिया। भाई लहणा भाव गुरु अंगद देव जी की सेवा संगत में 'नानक' कुल में तीसरे गुरु, गुरु अमरदास का निर्मल अवतार हुआ है। हे गुरु अमरदास! तू मुक्तिदाता है, मैं जन्म-जन्मांतर तेरी शरण में रहना चाहता हूँ॥२॥१६॥

जपु तपु सतु संतोखु पिखि दरसनु गुर सिखह ॥ सरणि परहि ते उबरहि छोडि जम पुर की लिखह ॥ भगति भाइ भरपूरु रिदै उचरै करतारै ॥ गुरु गउहरु दरीआउ पलक डुबंत्यह तारै ॥ नानक कुलि निंमलु अवतर्यिउ गुण करतारै उचरै ॥ गुरु अमरदासु जिन्ह सेविअउ तिन्ह दुखु दरिद्रु परहरि परै ॥ ३ ॥ १७ ॥

गुरु अमरदास जी के दर्शनों से शिष्यों को जप, तप, सत्य, संतोष का फल प्राप्त होता है। जो गुरु की शरण में आते हैं, वे बच जाते हैं और यमपुरी के (कर्मों के) हिसाब को छोड़ देते हैं। गुरु अमरदास जी का हृदय भक्ति एवं प्रेम से भरा हुआ है और वे ईश्वर का गुणगान करते हैं। गुरु अमरदास जी शांत स्वभाव एवं दरियादिल हैं, वे पल में ही डूबते प्राणियों को पार उतार देते हैं। 'नानक' कुल में (गुरु अमरदास का) निर्मल अवतार हुआ है, जो ईश्वर का गुणानुवाद कर रहे हैं। जिन लोगों ने गुरु अमरदास की सेवा की है, उनके दुख-दारिद्र सब दूर हो गए हैं॥३॥ १७॥

चिति चितवउ अरदासि कहउ परु कहि भि न सकउ ॥ सरब चिंत तुझु पासि साधसंगति हउ तकउ ॥ तेरै हुकमि पवै नीसाणु तउ करउ साहिब की सेवा ॥ जब गुरु देखै सुभ दिसटि नामु करता मुखि मेवा ॥ अगम अलख कारण पुरख जो फुरमावहि सो कहउ ॥ गुर अमरदास कारण करण जिव तू रखहि तिव रहउ ॥ ४ ॥ १८ ॥

हे गुरु अमरदास! मैं दिल में सोचता हूँ कि तेरे पास प्रार्थना करूँ, परन्तु मैं कह भी नहीं सकता। मेरी सब चिन्ताएँ तेरे पास हैं अर्थात् तुझे हमारी चिन्ता है, मैं सत्संगति ही चाहता हूँ। तेरी आज्ञा से यदि मंजूरी मिल जाए तो परमात्मा की सेवा कर सकता हूँ। जब गुरु शुभ दृष्टि से देखता है तो ईश्वर का नाम रूपी मेवा मुँह में पड़ता है। हे अगम्य अलख ईश्वर रूप गुरु अमरदास! जो तू फुरमान करता है, मैं वही कहता हूँ। हे गुरु अमरदास! तू करण कारण है, जैसे तू रखता है, मैं वैसे ही रहता हूँ॥४॥१८॥ (यह चार सवैये भाट कीरत ने उच्चरित किए हैं)

भिखे के ॥ गुरु गिआनु अरु धिआनु तत सिउ ततु मिलावै ॥ सचि सचु जाणीऐ इक चितहि लिव लावै ॥ काम क्रोध वसि करै पवणु उडंत न धावै ॥ निरंकार कै वसै देसि हुकमु बुझि बीचारु पावै ॥ कलि माहि रूपु करता पुरखु सो जाणै जिनि किछु कीअउ ॥ गुरु मिल्यिउ सोइ भिखा कहै सहज रंगि दरसनु दीअउ ॥ १ ॥ १९ ॥

गुरु अमरदास जी ज्ञान का सागर हैं, वे ध्यानशील हैं, उनकी आत्मा परमात्मा में मिली हुई है। परम सत्य में लीन गुरु को सत्य का रूप मानना चाहिए, वे एकाग्रचित होकर ईश्वर की भक्ति में ही लीन हैं। उन्होंने काम-क्रोध को वश में किया हुआ है, जिस कारण उनका मन वायु की तरह इधर-उधर नहीं उड़ता। मन उनका निरंकार के देश में टिका हुआ है और उसके हुक्म को मानकर ज्ञान प्राप्त किया है। इस कलियुग में गुरु अमरदास जी परमात्मा का रूप हैं, इस तथ्य को वही जानता है, जिसने यह अद्भुत लीला की है। भाट भिक्खा का कथन है कि मुझे वह पूर्ण गुरु (अमरदास) मिला है, जिसने स्वाभाविक ही मुझे दर्शन दिए हैं॥१॥१९॥

रहिओ संत हउ टोलि साध बहुतेरे डिठे ॥ संनिआसी तपसीअह मुखहु ए पंडित मिठे ॥ बरसु एकु हउ फिरिओ किनै नहु परचउ लायउ ॥ कहतिअह कहती सुणी रहत को खुसी न आयउ ॥

हरि नामु छोडि दूजै लगे तिन्ह के गुण हउ किआ कहउ ॥ गुरु दयि मिलायउ भिखिआ जिव तू रखहि तिव रहउ ॥ २ ॥ २० ॥

मैं सच्चे संत महापुरुष की तलाश करता रहा, मैंने बहुत सारे साधुओं को भी देखा। कई सन्यासी, तपस्वी, मुँह से मधुरभाषी पण्डित जनों को भी देखा। मैं एक वर्ष इसी तरह घूमता रहा परन्तु किसी पर भी भरोसा पैदा नहीं हुआ। इनके बड़े-बड़े उपदेश तो सुनने को मिले परन्तु इनके जीवन-आचरण से मन खुश नहीं हुआ (अर्थात् ये बातें तो बड़ी-बड़ी करते थे मगर इनके आचरण से दिल दुखी ही हुआ)। जो हरिनाम को छोड़कर द्वैतभाव (संसारिक मोह) में लीन हैं, जो गुणों के लायक नहीं, उन लोगों के गुण मैं क्या कहूँ। भाट भिक्खा का कथन है कि ईश्वर ने सच्चे गुरु अमरदास से मिला दिया है, (हे गुरु !) जैसे तू रखना चाहता है, वैसे ही मैं रहने को तैयार हूँ॥ २॥ २०॥

(यह दो सवैये भाट भिक्खा ने उच्चारण किए हैं)

पहिरि समाधि सनाहु गिआनि है आसणि चड़िअउ ॥ ध्रंम धनखु कर गहिओ भगत सीलह सरि लड़िअउ ॥ भै निरभउ हरि अटलु मनि सबदि गुर नेजा गडिओ ॥ काम क्रोध लोभ मोह अपतु पंच दूत बिखंडिओ ॥ भलउ भूहालु तेजो तना न्रिपति नाथु नानक बरि ॥ गुर अमरदास सचु सल्य भणि तै दलु जितउ इव जुधु करि ॥ १ ॥ २१ ॥

समाधि रूपी कवच धारण करके ज्ञान रूपी घोड़े पर गुरु अमरदास जी ने आसन लगाया हुआ है। धर्म का धनुष हाथ में लेकर और भक्तों वाले शील रूपी तीर से वे विकारों से मुकाबला कर रहे हैं। प्रभु-भय के कारण वे निर्भय हैं, उन्होंने अपने मन में अटल हरि को बसाया हुआ है और शब्द गुरु का नेजा उन्होंने स्थापित किया हुआ है। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार– इन पाँच दुष्टों का उन्होंने संहार कर दिया है। तेजभान जी के सुपुत्र हे गुरु अमरदास ! तू भल्ला वंश में महान् है और गुरु नानक देव जी के वर से बादशाह के रूप में प्रख्यात हो गए हो। भाट सल्ह का कथन है कि हे गुरु अमरदास ! तुमने इस प्रकार युद्ध करके विकारों के दल को जीत लिया है॥ १॥ २१॥

घनहर बूंद बसुअ रोमावलि कुसम बसंत गनंत न आवै ॥ रवि ससि किरणि उदरु सागर को गंग तरंग अंतु को पावै ॥ रुद्र धिआन गिआन सतिगुर के कबि जन भल्य उनह जो गावै ॥ भले अमरदास गुण तेरे तेरी उपमा तोहि बनि आवै ॥ १ ॥ २२ ॥

बादलों की तमाम बूँदों, धरती की समस्त वनस्पति, वसंत के फूलों की गणना नहीं हो सकती। सूर्य-चन्द्रमा की किरणों, सागर के उदर एवं गंगा की लहरों का कोई अंत नहीं पा सकता। कवि भल्ह का कथन है कि शिवशंकर की तरह ध्यान लगाकर अथवा सतगुरु के ज्ञान द्वारा बेशक उपरोक्त पर कोई व्यक्ति वर्णन कर भी ले परन्तु भल्ला वंश के शिरोमणि हे गुरु अमरदास ! तेरे बेअन्त गुणों का कथन नहीं किया जा सकता, यदि तेरी उपमा की जाए तो तेरे जैसा तू आप ही है॥१॥२२॥

(गुरु अमरदास जी की स्तुति में उच्चरित २२ सवैयों में कलसहार के ९, जालप के ५, कीरत के ४, भिक्खे के २ और सल्ह एवं भल्ह का १-१ है)

सवईए महले चउथे के ४* १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

वह परब्रह्म केवल एक (ओंकार-स्वरूप) है, सतगुरु की कृपा से प्राप्ति होती है।

इक मनि पुरखु निरंजनु धिआवउ ॥ गुर प्रसादि हरि गुण सद गावउ ॥ गुन गावत मनि होइ बिगासा ॥ सतिगुर पूरि जनह की आसा ॥ सतिगुरु सेवि परम पदु पायउ ॥ अबिनासी अबिगतु धिआयउ ॥ तिसु भेटे दारिद्रु न चंपै ॥ कल्यसहारु तासु गुण जंपै ॥ जंपउ गुण बिमल सुजन जन केरे अमिअ नामु जा कउ फुरिआ ॥ इनि सतगुरु सेवि सबद रसु पाया नामु निरंजन उरि धरिआ ॥ हरि नाम रसिकु गोबिंद गुण गाहकु चाहकु तत समत सरे ॥ कवि कल्य ठकुर हरदास तने गुर रामदास सर अभर भरे ॥ १ ॥

मैं दत्तचित होकर मोह-माया की कालिमा से रहित सर्वशक्तिमान परमेश्वर की वन्दना करता हूँ और गुरु की कृपा से सर्वदा उस प्रभु के गुणों का गान करता हूँ। उसके गुणगान से ही मेरे मन को खुशी प्राप्त होती है। पूर्ण गुरु अपने सेवकों की हर आशा पूरी करता है। सतगुरु अमरदास जी की सेवा करके गुरु रामदास जी ने परमपद प्राप्त किया और अविनाशी अटल परमात्मा का भजन किया। उस गुरु रामदास को मिलने से दुख-दारिद्र समाप्त हो जाते हैं, भाट कलसहार उसी के गुण गा रहा है। मैं उस महापुरुष के (गुरु रामदास जी) के पावन गुणों का गान कर रहा हूँ, जिसे अमृतमय नाम की अनुभूति हुई है। उसने सतगुरु अमरदास जी की सेवा में तल्लीन रहकर शब्द का रस प्राप्त किया है और पावन नाम को ही हृदय में धारण किया। वे हरिनाम के रसिया हैं, गोविन्द के गुणों के सच्चे ग्राहक हैं, ईश्वर के अटूट प्रेमी एवं समदृष्टि का सरोवर हैं। कवि कलसहार का कथन है कि ठाकुर हरदास जी के सुपुत्र गुरु रामदास जी दिल रूपी खाली सरोवरों को नाम जल से भरने वाले हैं॥१॥

छुटत परवाह अमिअ अमरा पद अंम्रित सरोवर सद भरिआ ॥ ते पीवहि संत करहि मनि मजनु पुब जिनहु सेवा करीआ ॥ तिन भउ निवारि अनभै पदु दीना सबद मात्र ते उधर धरे ॥ कवि कल्य ठकुर हरदास तने गुर रामदास सर अभर भरे ॥ २ ॥

गुरु रामदास जी नामामृत का वह सरोवर है, जो सदैव भरा रहता है, जिसमें से मुक्ति प्रदान करने वाली अमृत की धारा बह रही है। संतपुरुष इसी का पान करते हैं और मन में तीर्थ-स्नान करते हैं, परन्तु स्नान वही भाग्यशाली करते हैं, जिन्होंने पूर्व जन्म सेवा की है। गुरु रामदास जी ने उनका भय दूर करके अभय पद प्रदान किया है और शब्द मात्र सुनाकर उद्धार कर दिया है। कवि कलसहार का कथन है कि ठाकुर हरदास के सुपुत्र गुरु रामदास जी दिल रूपी खाली सरोवरों को नाम जल से भरने वाले हैं॥ २॥

---

*श्री गुरु रामदास जी की स्तुति में उच्चरित सवैये

सतगुर मति गूढ़ बिमल सतसंगति आतमु रंगि चलूलु भया ॥ जाग्या मनु कवलु सहजि परकास्या अभै निरंजनु घरहि लहा ॥ सतगुरि दयालि हरि नामु द्रिढ़ाया तिसु प्रसादि वसि पंच करे ॥ कवि कल्य ठकुर हरदास तने गुर रामदास सर अभर भरे ॥ ३ ॥

सतगुरु रामदास जी की बुद्धि गहन-गंभीर है, उनकी सच्ची संगत भी निर्मल है और उनकी आत्मा ईश्वर के रंग में लीन रहती है। उनका मन सदा जाग्रत रहता है, हृदय कमल स्वाभाविक ही खिला हुआ है, उन्होंने पावनस्वरूप परमेश्वर को हृदय घर में पा लिया है। इनके सच्चे गुरु अमरदास जी ने दयालु होकर मन में हरिनाम ही दृढ़ करवाया, जिसकी कृपा से उन्होंने कामादिक पाँच विकारों को वश में किया। कवि कलसहार का कथन है कि ठाकुर हरदास जी के सुपुत्र गुरु रामदास जी खाली दिल रूपी सरोवरों को नाम जल से भर देते हैं॥३॥

अनभउ उनमानि अकल लिव लागी पारसु भेटिआ सहज घरे ॥ सतगुर परसादि परम पदु पाया भगति भाइ भंडार भरे ॥ मेटिआ जनमांतु मरण भउ भागा चितु लागा संतोख सरे ॥ कवि कल्य ठकुर हरदास तने गुर रामदास सर अभर भरे ॥ ४ ॥

गुरु रामदास जी ने पूर्ण ज्ञान एवं अनुभव पाया, ईश्वर में उनकी लगन लगी, क्योंकि पारस रूप गुरु अमरदास जी से भेंट हुई थी और स्वाभाविक शान्ति प्राप्त की। सतगुरु (अमरदास जी) की कृपा से उनको परमपद प्राप्त हुआ और भाव-भक्ति प्रेम के भण्डार उनमें भरे रहते थे। उनका मन संतोष के सरोवर (प्रभु) में लीन था, अतः उनका जन्म-मरण मिट चुका था और मृत्यु का भय निवृत्त हो गया था। कवि कलसहार का कथन है कि ठाकुर हरदास जी के सुपुत्र गुरु रामदास जी ने खाली सरोवर भी भर दिए हैं॥ ४॥

अभर भरे पायउ अपारु रिद अंतरि धारिओ ॥ दुख भंजनु आतम प्रबोधु मनि ततु बीचारिओ ॥ सदा चाइ हरि भाइ प्रेम रसु आपे जाणइ ॥ सतगुर कै परसादि सहज सेती रंगु माणइ ॥ नानक प्रसादि अंगद सुमति गुरि अमरि अमरु वरताइओ ॥ गुर रामदास कल्युचरै तैं अटल अमर पदु पाइओ ॥ ५ ॥

खाली दिल रूपी सरोवर भरने वाले गुरु रामदास जी ने ईश्वर को पा लिया है, मन में उसे ही बसाया है। दुख विनाशक, आत्मा को ज्ञान देने वाले परम तत्व (परमेश्वर) का ही मन में उन्होंने चिंतन किया। गुरु रामदास जी को सदैव हरि-भक्ति का चाव बना रहा है और इस प्रेम रस को वे स्वयं ही जानते हैं। सतगुरु (अमरदास जी) की कृपा से वे प्रभु प्रेम का स्वाभाविक ही आनंद पा रहे हैं। गुरु नानक की कृपा, गुरु अंगद देव की सुमति से गुरु अमरदास ने विधाता के विधान सेवा-सिमरन का पालन किया है। कवि कलसहार का कथन है कि हे गुरु रामदास! तुमने भी अटल अमर पद पा लिया है॥५॥

संतोख सरोवरि बसै अमिअ रसु रसन प्रकासै ॥ मिलत सांति उपजै दुरतु दूरंतरि नासै ॥ सुख सागरु पाइअउ दिंतु हरि मगि न हुटै ॥ संजमु सतु संतोखु सील संनाहु मफुटै ॥ सतिगुरु प्रमाणु बिध नै सिरिउ जगि जस तूरु बजाइअउ ॥ गुर रामदास कल्युचरै तै अभै अमर पदु पाइअउ ॥ ६ ॥

गुरु रामदास जी संतोष सरोवर में रहते हैं और अपनी जीभ से नामामृत का रस व्यक्त करते हैं। उनके दर्शन एवं मिलन से मन को शान्ति प्राप्त होती है और पाप इत्यादि दूर से ही नाश हो जाते हैं। उन्होंने सुखों के सागर हरि को पा लिया है, अतः हरि-भक्ति मार्ग से पीछे नहीं हटते।

गुरु रामदास जी ने संयम, सत्य, संतोष एवं शील स्वभाव का अटूट कवच धारण किया हुआ है। सतगुरु अमरदास की तरह गुरु रामदास को भी विधाता ने वैसा ही कीर्तिस्तंभ स्थापित किया है, पूरा जगत उनका यशोगान कर रहा है। कलसहार का कथन है कि हे गुरु रामदास! तूने अभय ईश्वर समान अमर पद पा लिया है॥ ६॥

जगु जितउ सतिगुर प्रमाणि मनि एकु धिआयउ ॥ धनि धनि सतिगुर अमरदासु जिनि नामु द्रिड़ायउ ॥ नव निधि नामु निधानु रिधि सिधि ता की दासी ॥ सहज सरोवरु मिलिओ पुरखु भेटिओ अबिनासी ॥ आदि ले भगत जितु लगि तरे सो गुरि नामु द्रिड़ाइअउ ॥ गुर रामदास कल्युचरै तै हरि प्रेम पदारथु पाइअउ ॥ ७ ॥

(गुरु अमरदास की तरह) गुरु रामदास ने पूरी दुनिया को जीत लिया है और मन में ईश्वर का ही ध्यान किया। सतिगुरु अमरदास धन्य धन्य हैं, जिन्होंने उनके मन में हरिनाम स्थापित किया। उन्होंने नौ निधियों वाला सुखों का भण्डार हरिनाम पाया है, ऋद्धियाँ-सिद्धियाँ उनकी दासियाँ हैं। इनको शान्ति का सरोवर मिल गया है, अविनाशी कर्तापुरुष से इनका साक्षात्कार हो गया है। सृष्टि रचना से अब तक जिस हरिनाम में लीन होकर भक्त संसार-सागर से पार हुए हैं, वह हरिनाम इनके गुरु अमरदास जी ने गुरु रामदास जी को दृढ़ करवाया। कलसहार भाट का कथन है कि हे गुरु रामदास! तूने भी हरि प्रेम-भक्ति रूपी पदार्थ को ही पाया है॥७॥

प्रेम भगति परवाह प्रीति पुबली न हुटइ ॥ सतिगुर सबदु अथाहु अमिअ धारा रसु गुटइ ॥ मति माता संतोखु पिता सरि सहज समायउ ॥ आजोनी संभविअउ जगतु गुर बचनि तरायउ ॥ अबिगत अगोचरु अपरपरु मनि गुर सबदु वसाइअउ ॥ गुर रामदास कल्युचरै तै जगत उधारणु पाइअउ ॥ ८॥

गुरु रामदास के मन में प्रेम-भक्ति का प्रवाह चलता रहता है, पूर्व जन्म का प्रेम बिल्कुल नही टूट पाया। सतिगुरु अमरदास के अथाह शब्द की अमृतधारा का रस वे आनंदपूर्वक लेते हैं। विवेक बुद्धि इनकी माता है, संतोष गुरु रामदास जी के पिता हैं, वे शान्ति के सरोवर में लीन रहते हैं। जन्म-मरण से मुक्त, स्वतः प्रकाशमान रूप गुरु (रामदास जी) ने वचनों द्वारा पूरे जगत को संसार-सागर से तिरा दिया है। वे अव्यक्त, ज्ञानेन्द्रियों से परे, अपरंपार रूप हैं और शब्द-गुरु को मन में बसाया हुआ है। भाट कलसहार (स्तुति करता हुआ) कहता है कि हे गुरु रामदास! तूने तो जगत उद्धारक परमेश्वर को पा लिया है॥८॥

जगत उधारणु नव निधानु भगतह भव तारणु ॥ अंम्रित बूंद हरि नामु बिसु की बिखै निवारणु ॥ सहज तरोवर फलिओ गिआन अंम्रित फल लागे ॥ गुर प्रसादि पाईअहि धंनि ते जन बडभागे ॥ ते मुकते भए सतिगुर सबदि मनि गुर परचा पाइअउ ॥ गुर रामदास कल्युचरै तै सबद नीसानु बजाइअउ ॥ ६ ॥

हरिनाम संसार का उद्धार करने वाला है, नवनिधान सुखों का घर है, भक्तों को संसार-सागर से पार उतारने वाला है, यह हरिनाम रूपी अमृत की बूँद गुरु रामदास जी के पास है, जो विश्व के विकार रूपी जहर का निवारण कर देती है। सहज-शान्ति का वृक्ष फला फूला है, जिस पर ज्ञान अमृत का फल लगा हुआ है, वे लोग धन्य एवं भाग्यशाली हैं, जो गुरु की कृपा से इसे प्राप्त करते हैं। जिन्होंने मन से गुरु रामदास पर श्रद्धा धारण की, प्रेम लगाया वे सतिगुरु के उपदेश द्वारा संसार के बन्धनों से मुक्त हो गए। भाट कलसहार का कथन है कि हे गुरु रामदास! तूने प्रभु-शब्द का बिगुल बजाया है अर्थात् सब ओर ब्रह्म शब्द का प्रसार कर दिया है॥६॥

सेज सधा सहजु छावाणु संतोखु सराइचउ सदा सील संनाहु सोहै ॥ गुर सबदि समाचरिओ नामु टेक संगादि बोहै ॥ आजोनीउ भल्यु अमलु सतिगुर संगि निवासु ॥ गुर रामदास कल्युचरै तुअ सहज सरोवरि बासु ॥ १० ॥

हे गुरु रामदास ! तूने श्रद्धा की सेज को बिछाया, सहज स्वभाव का शामियाना स्थित किया, संतोष को कनातों के रूप में स्थापित किया और शील-सादगी का सदैव कवच धारण किया, जो बहुत सुन्दर लग रहा है। आप ने गुरु के उपदेशानुसार जीवन-आचरण अपनाया (हरिनाम में रत रहे) और हरिनाम का आसरा आपके शिष्य-संगियों को खुशबू पहुँचा रहा है अर्थात् वे भी हरिभक्ति में लीन हो रहे हैं। तुम जन्म-मरण के बन्धन से मुक्त, महान्, पुण्यात्मा हो और सतिगुरु अमरदास की संगत में सेवा-सिमरन में ही मग्न रहे। कवि कलसहार का कथन है कि हे गुरु रामदास ! तुम शान्ति के सरोवर में रहते हो॥१०॥

गुरु जिन्ह कउ सुप्रसंनु नामु हरि रिदै निवासै ॥ जिन्ह कउ गुरु सुप्रसंनु दुरतु दूरंतरि नासै ॥ गुरु जिन्ह कउ सुप्रसंनु मानु अभिमानु निवारै ॥ जिन्ह कउ गुरु सुप्रसंनु सबदि लगि भवजलु तारै ॥ परचउ प्रमाणु गुर पाइअउ तिन सकयथउ जनमु जगि ॥ स्री गुरू सरणि भजु कल्य कबि भुगति मुकति सभ गुरू लगि ॥ ११ ॥

जिन पर गुरु (रामदास) प्रसन्न होता है, उनके मन में हरिनाम को बसा देता है। जिन लोगों पर गुरु (रामदास) की प्रसन्नता होती है, उनके पाप दूर से ही भाग जाते हैं। जिन पर गुरु सुप्रसन्न हो जाता है, उनका मान-अभिमान दूर हो जाता है। जिन पर गुरु की अपार खुशी हो जाती है, वे प्रभु-शब्द में लीन होकर संसार-सागर से पार उतर जाते हैं। जिन लोगों ने गुरु (रामदास) से सच्चा उपदेश पाया है, उनका जगत में जन्म सफल हो गया है। कवि कलसहार का कथन है कि महामहिम श्री गुरु रामदास की शरण लो, गुरु की शरण में मुक्ति भुक्ति सब प्राप्त हो जाते हैं॥११॥

सतिगुरि खेमा ताणिआ जुग जूथ समाणे ॥ अनभउ नेजा नामु टेक जितु भगत अघाणे ॥ गुरु नानकु अंगदु अमरु भगत हरि संगि समाणे ॥ इहु राज जोग गुर रामदास तुम्ह हू रसु जाणे ॥ १२ ॥

सतिगुरु रामदास ने भक्ति रूपी खेमा ताना है, संसार के जीव इसी के नीचे आ गए हैं। गुरु के हाथ में ज्ञान का नेजा है, हरिनाम का अवलम्ब है, जिससे भक्त संतुष्ट हो रहे हैं। (हरिनाम का सिमरन करके) गुरु नानक देव जी, गुरु अंगद देव, गुरु अमरदास एवं अन्य भक्त जन ईश्वर में समाहित हो गए हैं। हे गुरु रामदास ! इस राज योग का आनंद तुमने ही जाना है॥१२॥

जनकु सोइ जिनि जाणिआ उनमनि रथु धरिआ ॥ सतु संतोखु समाचरे अभरा सरु भरिआ ॥ अकथ कथा अमरा पुरी जिसु देइ सु पावै ॥ इहु जनक राजु गुर रामदास तुझ ही बणि आवै ॥ १३॥

जनक वही है, जिसने परम सत्य को जाना और वृत्ति को तुरीय पद में स्थापित किया। सत्य-संतोष को अपनाया और खाली मन को नाम से भर दिया। अकथनीय कथा उसे प्राप्त होती है, जिसे ईश्वर देता है, वही पाता है। यह जनक सरीखा राज हे गुरु रामदास ! तुझे ही शोभा देता है॥१३॥ (भाट कलसहार के १३ सवैये सम्पूर्ण)

सतिगुर नामु एक लिव मनि जपै द्रिढु तिन्ह जन दुख पापु कहु कत होवै जीउ ॥ तारण तरण खिन मात्र जा कउ द्रिस्टि धारै सबदु रिद बीचारै कामु क्रोधु खोवै जीउ ॥ जीअन सभन दाता अगम ग्यान बिख्याता अहिनिसि ध्यान धावै पलक न सोवै जीउ ॥ जा कउ देखत दरिद्रु जावै नामु सो निधानु पावै गुरमुखि ग्यानि दुरमति मैलु धोवै जीउ ॥ सतिगुर नामु एक लिव मनि जपै द्रिढु तिन जन दुख पाप कहु कत होवै जीउ ॥ १ ॥

जो एकाग्रचित होकर पूर्ण लगन से मन में सतिगुरु के नाम का जाप करता है, ऐसे व्यक्ति को दुख पाप कैसे घेर सकते हैं। गुरु संसार-सागर से पार उतारने वाला ऐसा जहाज है, जिस पर क्षण मात्र अपनी कृपा-दृष्टि धारण करता है, वह जिज्ञासु शब्द का हृदय में चिंतन करता है और उसके काम, क्रोध नष्ट हो जाते हैं। गुरु रामदास सब जीवों के दाता हैं, हरिनाम ज्ञान के व्याख्याता वही हैं, वे दिन-रात ईश्वर के ध्यान में निमग्न रहते हैं और थोड़ी देर भी अचेत नहीं होते। उनके दर्शनों से दरिद्रता दूर हो जाती है, हरिनाम रूपी सुखों का भण्डार जिज्ञासुओं को प्राप्त होता है। गुरु अपने मुख से ज्ञान प्रदान करता है और दुर्मति की मैल को साफ कर देता है। जो एकाग्रचित होकर मन में सतिगुरु का नाम जपता है, उसे दुख पाप कैसे स्पर्श कर सकते हैं॥१॥

धरम करम पूरै सतिगुरु पाई है ॥ जा की सेवा सिध साध मुनि जन सुरि नर जाचहि सबद सारु एक लिव लाई है ॥ फुनि जानै को तेरा अपारु निरभउ निरंकारु अकथ कथनहारु तुझहि बुझाई है ॥ भरम भूले संसार छुटहु जूनी संघार जम को न डंड काल गुरमति ध्याई है ॥ मन प्राणी मुगध बीचारु अहिनिसि जपु धरम करम पूरै सतिगुरु पाई है ॥ २ ॥

पूर्ण गुरु रामदास से धर्म-कर्म का फल प्राप्त हो जाता है। उनकी सेवा तो सिद्ध, साधक, मुनिजन, देवता एवं मनुष्य भी चाहते हैं और जिस सतिगुरु रामदास ने दत्तचित होकर एक ब्रह्म में लगन लगाई हुई है। हे गुरु रामदास! तेरा भेद कौन जान सकता है, तू अपार, निर्भय, निराकार का रूप है और तुझे अकथनीय प्रभु का बोध हो गया है। हे संसार के भूले लोगो! गुरु का उपदेश धारण करो, योनि चक्र से मुक्त हो जाओगे और काल का दण्ड प्राप्त नहीं होगा। हे मूर्ख प्राणी! जरा चिंतन कर, दिन-रात हरिनाम का जाप कर, धर्म-कर्म का फल सतिगुरु से प्राप्त हो सकता है॥२॥

हउ बलि बलि जाउ सतिगुर साचे नाम पर ॥ कवन उपमा देउ कवन सेवा सरेउ एक मुख रसना रसहु जुग जोरि कर ॥ फुनि मन बच क्रम जानु अनत दूजा न मानु नामु सो अपारु सारु दीनो गुरि रिद धर ॥ नल्य कवि पारस परस कच कंचना हुइ चंदना सुबासु जासु सिमरत अन तर ॥ जा के देखत दुआरे काम क्रोध ही निवारे जी हउ बलि बलि जाउ सतिगुर साचे नाम पर ॥ ३ ॥

मैं सतिगुरु रामदास के सच्चे नाम पर सर्वदा बलिहारी जाता हूँ। मैं किससे उपमा दूँ, कौन-सी सेवा करूँ, केवल हाथ जोड़कर मुँह रसना से स्तुतिगान कर सकता हूँ। मैं मन, वचन, कर्म से गुरु रामदास को ही मानता हूँ, किसी अन्य को नहीं मानता। गुरु ने वह अपार हरिनाम दिया है, जिसे मन में धारण किया हुआ है। कवि नल्ह का कथन है कि गुरु रामदास रूपी पारस के स्पर्श से कंचन सरीखा हो गया हूँ, ज्यों चंदन की खुशबू से अन्य पेड़-पौधे खुशबूदार हो जाते हैं। जिसके दर्शनों से काम-क्रोध का निवारण हो जाता है, उस सतिगुरु रामदास के सच्चे नाम पर मैं हरदम बलिहारी जाता हूँ॥३॥

राजु जोगु तखतु दीअनु गुर रामदास ॥ प्रथमे नानक चंदु जगत भयो आनंदु तारनि मनुख्य जन कीअउ प्रगास ॥ गुर अंगद दीअउ निधानु अकथ कथा गिआनु पंच भूत बसि कीने जमत न त्रास ॥ गुर अमरु गुरू स्री सति कलिजुगि राखी पति अघन देखत गतु चरन कवल जास ॥ सभ बिधि मान्यिउ मनु तब ही भयउ प्रसंनु राजु जोगु तखतु दीअनु गुर रामदास ॥ ४ ॥

(गुरु अमरदास जी ने गुरु रामदास जी की सेवा-भक्ति से प्रसन्न होकर उनको गुरु नानक की गद्दी पर आसीन किया)

गुरु रामदास जी को (तीसरे गुरु अमरदास जी ने) राज योग (अर्थात् गुरुगद्धी) के सिंहासन पर स्थापित किया। सर्वप्रथम चन्द्रमा के रूप में गुरु नानक देव जी संसार में प्रगट हुए, उनके आगमन से संसार को आनंद प्राप्त हुआ, मनुष्यों को संसार के बन्धनों से मुक्त करने के लिए उन्होंने हरिनाम का प्रकाश किया। तदन्तर गुरु अंगद देव जी को सुखनिधान नाम प्रदान किया, जिन्होंने प्रभु की अकथ कथा का ज्ञान प्रदान किया, उन्होंने पाँच विकारों को वश में किया और मौत भी उनको डरा न सकी। फिर श्री गुरु अमरदास ने महामहिम परम सत्य ईश्वर की सत्ता को स्वीकार किया, कलियुग में जीवों की लाज बचाई। उनके दर्शन एवं चरण-कमल के स्पर्श से शिष्यों के पाप दूर हुए। उसके बाद उन्होंने अपने शिष्य भाई जेठा को सब प्रकार से ज्ञान, भक्ति, सेवा के योग्य माना तो उनका मन बहुत प्रसन्न हुआ, श्री गुरु अमरदास जी ने (गुरु नानक की गद्दी) राज-योग के सिंहासन पर गुरु रामदास जी को आसीन कर दिया॥४॥

रड ॥ जिसहि धार्यिउ धरति अरु विउमु अरु पवणु ते नीर सर अवर अनल अनादि कीअउ ॥ ससि रिखि निसि सूर दिनि सैल तरूअ फल फुल दीअउ ॥ सुरि नर सपत समुद्र किअ धारिओ त्रिभवण जासु ॥ सोई एकु नामु हरि नामु सति पाइओ गुर अमर प्रगासु ॥ १ ॥ ५ ॥

जिस परमपिता परमेश्वर ने धरती और आकाश को धारण किया, वायु, पानी, सरोवर, अग्नि एवं अन्न-भोजन इत्यादि को उत्पन्न किया है, रात को दिखाई देने वाले चन्द्रमा एवं तारे बनाए, दिन में निकलने वाला सूर्य, पहाड़ों की रचना की, पेड़-पौधे, फल-फूल दिए हैं। देवता, मनुष्य, सात समुद्रों की सृजना करके तीन लोकों को जिस प्रभु ने धारण किया हुआ है। वह परम सत्य अद्वितीय हरिनाम गुरु रामदास ने अपने सच्चे गुरु अमरदास से प्राप्त किया॥१॥५॥

कचहु कंचनु भइअउ सबदु गुर स्रवणहि सुणिओ ॥ बिखु ते अंम्रितु हुयउ नामु सतिगुर मुखि भणिअउ ॥ लोहउ होयउ लालु नदरि सतिगुरु जदि धारै ॥ पाहण माणक करै गिआनु गुर कहिअउ बीचारै ॥ काठहु स्रीखंड सतिगुरि कीअउ दुख दरिद्र तिन के गइअ ॥ सतिगुरू चरन जिन्ह परसिआ से पसु परेत सुरि नर भइअ ॥ २ ॥ ६ ॥

जिसने गुरु का वचन कानों से सुना है, वह काँच से स्वर्ण हो गया है। जिसने अपने मुँह से सतिगुरु का नाम उच्चारण किया है, वह जहर से अमृत हो गया है। जब सतिगुरु की कृपा-दृष्टि होती है तो लोहे सरीखा व्यक्ति भी लाल समान गुणवान् हो जाता है। गुरु के ज्ञान का चिंतन करने से पत्थर सरीखा व्यक्ति अमूल्य मोती बन जाता है। सतिगुरु के चरण स्पर्श से लकड़ी चन्दन हो जाती है और दुख-दर्द सब दूर हो जाते हैं। जिन्होंने सतिगुरु रामदास का चरण-स्पर्श किया है, वे पशु प्रेत से देवता समान भले मनुष्य हो गए हैं॥२॥६॥

जामि गुरू होइ वलि धनहि किआ गारखु दिजइ ॥ जामि गुरू होइ वलि लख बाहे किआ किजइ ॥ जामि गुरू होइ वलि गिआन अरु धिआन अनन परि ॥ जामि गुरू होइ वलि सबदु साखी सु सचह घरि ॥ जो गुरू गुरू अहिनिसि जपै दासु भटु बेनति कहै ॥ जो गुरू नामु रिद महि धरै सो जनम मरण दुह थे रहै ॥ ३ ॥ ७ ॥

जब गुरु सहाई हो जाए तो व्यक्ति धन-दौलत के बावजूद अभिमान नहीं करता। जब गुरु सहायक बन जाता है तो लाखों लोग भी बुरा नहीं कर पाते। जब गुरु साथ हो तो ज्ञान और ध्यान पाकर जीव प्रभु के सिवा किसी को नहीं मानता। जब गुरु साथ हो जाता है तो जिज्ञासु को शब्द-गुरु का दर्शन होता है और वह सच्चे घर में टिक जाता है। दास नल्ह भाट विनती करता है कि जो व्यक्ति दिन-रात गुरु का नाम जपता है, जो गुरु (रामदास) के नाम को हृदय में धारण करता है, वह जन्म-मरण दोनों से मुक्त हो जाता है॥ ३॥ ७॥

गुर बिनु घोरु अंधारु गुरू बिनु समझ न आवै ॥ गुर बिनु सुरति न सिधि गुरू बिनु मुकति न पावै ॥ गुरु करु सचु बीचारु गुरू करु रे मन मेरे ॥ गुरु करु सबद सपुंन अघन कटहि सभ तेरे ॥ गुरु नयणि बयणि गुरु गुरु करहु गुरू सति कवि नल्य कहि ॥ जिनि गुरू न देखिअउ नहु कीअउ ते अकयथ संसार महि ॥ ४ ॥ ८ ॥

गुरु के बिना दुनिया में अज्ञान का अन्धेरा ही अन्धेरा है, गुरु के बिना समझ नहीं आती। गुरु बिना ज्ञान, सफलता एवं मुक्ति भी प्राप्त नहीं होती। हे मेरे मन! सच्ची बात यही है कि गुरु का यशोगान करो, उसी का नामोच्चारण करो। गुरु का शब्द जीवन सम्पन्न करने वाला है, वह तेरे सब पाप-दोष काटने वाला है। गुरु को आँखों में बसाओ, गुरु का नामोच्चारण करो, गुरु की स्तुति करो, कवि नल्ह का कथन है कि गुरु ही सत्य है। जिसने गुरु के दर्शन नहीं किए, न ही शरण ली, उस अभागे का संसार में जन्म व्यर्थ ही रहा॥४॥८॥

गुरू गुरू गुरु करु मन मेरे ॥ तारण तरण सम्रथु कलिजुगि सुनत समाधि सबद जिसु केरे ॥ फुनि दुखनि नासु सुखदायकु सूरउ जो धरत धिआनु बसत तिह नेरे ॥ पूरउ पुरखु रिदै हरि सिमरत मुखु देखत अघ जाहि परेरे ॥ जउ हरि बुधि रिधि सिधि चाहत गुरू गुरू गुरु करु मन मेरे ॥ ५ ॥ ९ ॥

हे मेरे मन! गुरु (रामदास) का स्तुतिगान करो, कलियुग में एकमात्र वही संसार के बन्धनों से मुक्त करने वाला एवं सर्वकला समर्थ है, उसका पावन उपदेश सुनने से जीव प्रभु-ध्यान में लीन हो जाता है। वह सुख देने वाला सूर्य है, जो उसका ध्यान धारण करता है, गुरु (रामदास) उसके निकट ही रहता है और फिर दुखों का नाश हो जाता है। वह पूर्ण पुरुष है, वह अपने मन में ईश्वर का स्मरण करता है, उसके दर्शनों से पाप-दोष निवृत्त हो जाते हैं। यदि बुद्धि, ऋद्धि-सिद्धि व ईश्वर को पाना चाहते हो तो हे मन! गुरु का स्तुतिगान करो, गुरु-गुरु जपते रहो॥ ५॥९॥

गुरू मुखु देखि गरू सुखु पायउ ॥ हुती जु पिआस पिऊस पिवंन की बंछत सिधि कउ बिधि मिलायउ ॥ पूरन भो मन ठउर बसो रस बासन सिउ जु दहं दिसि धायउ ॥ गोबिंद वालु गोबिंद पुरी सम जल्यन तीरि बिपास बनायउ ॥ गयउ दुखु दूरि बरखन को सु गुरू मुखु देखि गरू सुखु पायउ ॥ ६ ॥ १० ॥

जब गुरु अमरदास जी के भाई जेठा अर्थात् गुरु रामदास जी ने दर्शन किए तो उनको परम सुख प्राप्त हुआ। उनके मन में बरसों से अमृतपान की जो प्यास थी, उस अभिलाषा की सिद्धि हेतु ईश्वर ने भाई जेठा अर्थात् गुरु रामदास जी का शांति के पुंज गुरु अमरदास से मिलाप करवा दिया। जो मन रसों-वासनाओं के पीछे दसों दिशाओं में दौड़ता था, वह गुरु के मिलाप से तृप्त होकर टिक गया। ब्यास नदी के किनारे पर जिस नम्रता एवं प्रेम की मूर्ति गुरु अमरदास जी ने वैकुण्ठ समान गोइंदवाल नगर बसाया, उस गुरु के दर्शनों से गुरु रामदास जी को बहुत सुख प्राप्त हुआ और उनके वर्षों के दुख दूर हो गए॥६॥१०॥

समरथ गुरू सिरि हथु धर्यउ ॥ गुरि कीनी क्रिपा हरि नामु दीअउ जिसु देखि चरंन अघंन हर्यउ ॥ निसि बासुर एक समान धिआन सु नाम सुने सुतु भान डर्यउ ॥ भनि दास सु आस जगत्र गुरू की पारसु भेटि परसु कर्यउ ॥ रामदासु गुरू हरि सति कीयउ समरथ गुरू सिरि हथु धर्यउ ॥ ७ ॥ ११ ॥

समर्थ गुरु अमरदास ने गुरु रामदास के सिर पर हाथ रखा (अर्थात् आशीष देकर उन्हें शिष्य बना लिया), उस गुरु ने कृपा करके उनको हरिनाम प्रदान किया, जिस दया की मूर्ति सतिगुरु अमरदास के चरण दर्शन से पाप दूर हो जाते हैं। फिर वे दिन-रात हरि के ध्यान में लीन रहने लगे, उस हरिनाम को सुनकर तो सूर्य-पुत्र यमराज भी डरता हुआ पास नहीं फटकता। दास नल्ह का कथन है कि उनको जगद्गुरु की ही आशा थी, पारस समान महान् पुरुष गुरु अमरदास को मिलकर वे भी पारस की तरह महान् हो गए। गुरु रामदास जी को ईश्वर ने अटल बना दिया, समर्थ गुरु अमरदास ने उनके सिर पर हाथ धर दिया था॥७॥११॥

अब राखहु दास भाट की लाज ॥ जैसी राखी लाज भगत प्रहिलाद की हरनाखस फारे कर आज ॥ फुनि द्रोपती लाज रखी हरि प्रभ जी छीनत बसत्र दीन बहु साज ॥ सोदामा अपदा ते राखिआ गनिका पढ़त पूरे तिह काज ॥ स्री सतिगुर सुप्रसंन कलजुग होइ राखहु दास भाट की लाज ॥ ८ ॥ १२ ॥

हे पूर्णगुरु ! अब दास नल्ह भाट की इसी तरह लाज बचा लो, जैसे भक्त प्रहलाद की लाज बचाई थी और दुष्ट हिरण्यकशिपु को नाखुनों से फाड़ दिया था। हे प्रभु ! पुनः तुमने द्रोपदी की लाज बचाई, उसके वस्त्र छीने जा रहे थे तो उसे बहुत सारे वस्त्र प्रदान कर दिए। सुदामा को मुश्किलों से बचाया और राम-नाम पढ़ते गणिका का भी जीवन सफल हो गया। हे श्री सतिगुरु ! अब इस कलियुग में सुप्रसन्न होकर दास नल्ह भाट की भी लाज बचा लो॥८॥१२॥

झोलना ॥ गुरू गुरु गुरू गुरु गुरू जपु प्रानीअहु ॥ सबदु हरि हरि जपै नामु नव निधि अपै रसनि अहिनिसि रसै सति करि जानीअहु ॥ फुनि प्रेम रंग पाईऐ गुरमुखहि धिआईऐ अंन मारग तजहु भजहु हरि ग्यानीअहु ॥ बचन गुर रिदि धरहु पंच भू बसि करहु जनमु कुल उधरहु द्वारि हरि मानीअहु ॥ जउ त सभ सुख इत उत तुम बंछवहु गुरू गुरु गुरू गुरु गुरू जपु प्रानीअहु ॥ १ ॥ १३ ॥

हे प्राणियो, सर्वदा 'गुरु-गुरु-गुरु' जपते रहो, वह भी हरिनाम ही जपता है, वह अपने शिष्यों-जिज्ञासुओं को सुखों का भण्डार नाम ही देता है और अपनी जिह्वा से दिन-रात हरिनाम कीर्तन करता है, इस सत्य को मान लो। जो गुरु से उपदेश पाकर ध्यान करता है, वही प्रेम-रंग प्राप्त करता है। हे ज्ञानियो ! कोई अन्य रास्ता छोड़कर परमात्मा का भजन करते रहो। गुरु का वचन हृदय में धारण करने से पाँच विकार वश में आ जाते हैं, जन्म सफल हो जाता है एवं पूरी

कुल का उद्धार हो जाता है और प्रभु के द्वार पर सम्मान प्राप्त होता है। हे प्राणियो, यदि लोक-परलोक में तुम सर्व सुख पाना चाहते हो तो 'गुरु-गुरु-गुरु' जपते रहो॥१॥१३॥

गुरू गुरु गुरू गुरु गुरू जपि सति करि ॥ अगम गुन जानु निधानु हरि मनि धरहु ध्यानु अहिनिसि करहु बचन गुर रिदै धरि ॥ फुनि गुरू जल बिमल अथाह मजनु करहु संत गुरसिख तरहु नाम सच रंग सरि ॥ सदा निरवैरु निरंकारु निरभउ जपै प्रेम गुर सबद रसि करत द्रिड़ु भगति हरि ॥ मुगध मन भ्रमु तजहु नामु गुरमुखि भजहु गुरू गुरु गुरू गुरु गुरू जपु सति करि ॥ २ ॥ १४ ॥

गुरु को सत्य मानकर हरदम उसी का जाप करो और गुरु-गुरु जपते रहना। बेअंत गुणों को जानकर सुखनिधान हरि को मन में धारण करो, दिन-रात गुरु के वचन को हृदय में धारण करो। पुनः गुरु रूपी अथाह निर्मल जल सागर में स्नान करो, हे संतो, गुरु के शिष्यो! सच्चे नाम के सरोवर में तैरते रहना। जो गुरु (रामदास) सदैव निर्वैर, निराकार, निर्भय परमात्मा का जाप करता है, वह शब्द-गुरु के प्रेम एवं रस में हरि-भक्ति ही दृढ़ करवाता है। हे मूर्ख मन! भ्रम छोड़कर गुरु-परमेश्वर का भजन करो, गुरु को सत्य मानते हुए उसका जाप करो, गुरु-गुरु रटते रहो॥२॥१४॥

गुरू गुरु गुरु करहु गुरू हरि पाईऐ ॥ उदधि गुरु गहिर गंभीर बेअंतु हरि नाम नग हीर मणि मिलत लिव लाईऐ ॥ फुनि गुरू परमल सरस करत कंचनु परस मैलु दुरमति हिरत सबदि गुरु ध्याईऐ ॥ अंम्रित परवाह छुटकंत सद द्वारि जिसु ग्यान गुर बिमल सर संत सिख नाईऐ ॥ नामु निरबाणु निधानु हरि उरि धरहु गुरू गुरु गुरु करहु गुरू हरि पाईऐ ॥ ३ ॥ १५ ॥

गुरु के गुणों एवं महिमा का गान करो, क्योंकि गुरु से ही ईश्वर प्राप्त होता है। गुरु गहन-गंभीर, बेअंत एवं प्रेम का सागर है, उसमें ध्यान लगाने से ही हरिनाम रूपी मोती, हीरा एवं मणि मिलती है। पुनः गुरु का सान्निध्य सरस सुगन्धि भर देता है, वह स्वर्ण की तरह बना देता है, गुरु उपदेश का ध्यान दुर्मति की मैल दूर कर देता है। जिसके द्वार से सदैव अमृत का प्रवाह होता है, संत एवं शिष्य गुरु के ज्ञान रूपी निर्मल सरोवर में स्नान करते हैं। पावन, सुखनिधान हरिनाम हृदय में धारण करो, गुरु का स्तुतिगान कीजिए, गुरु-गुरु जपो, गुरु से ही परमेश्वर प्राप्त होता है॥३॥१५॥

गुरू गुरु गुरू गुरु गुरू जपु मंन रे ॥ जा की सेव सिव सिध साधिक सुर असुर गण तरहि तेतीस गुर बचन सुणि कंन रे ॥ फुनि तरहि ते संत हित भगत गुरु गुरु करहि तरिओ प्रहलादु गुर मिलत मुनि जंन रे ॥ तरहि नारदादि सनकादि हरि गुरमुखहि तरहि इक नाम लगि तजहु रस अंन रे ॥ दासु बेनति कहै नामु गुरमुखि लहै गुरू गुरु गुरू गुरु गुरू जपु मंन रे ॥ ४ ॥ १६ ॥ २६ ॥

हे मन! निरन्तर गुरु नाम-मंत्र का जाप करो, उसकी सेवा में तो शिव, सिद्ध, साधक, देव एवं असुर गण भी निमग्न हैं, गुरु का वचन कानों से सुनकर तेंतीस करोड़ देवता भी तैर गए। पुनः गुरु-गुरु जपते हुए संत, भक्त, जिज्ञासु भी मुक्त हो गए। गुरु को मिलकर भक्त प्रहलाद एवं मुनियों का भी उद्धार हो गया। नारद, सनक सनंदन इत्यादि गुरु के सान्निध्य में तिर गए और अन्य सब रस छोड़कर केवल नाम में लीन होकर वे मुक्त हो गए। दास नल्ह विनयपूर्वक कहता है कि हरिनाम गुरु से ही मिलता है, हे मन! हरदम 'गुरु-गुरु' जाप करते रहो॥४॥१६॥२६॥ (नल्ह भाट के १६ सवैये और भाट कलसहार के १३ सवैयों सहित कुल २६ सवैये पूरे हुए)

सिरी गुरू साहिबु सभ ऊपरि ॥ करी क्रिपा सतजुगि जिनि ध्रू परि ॥ स्री प्रहलाद भगत उधरीअं ॥ हस्त कमल माथे पर धरीअं ॥ अलख रूप जीअ लख्या न जाई ॥ साधिक सिध सगल सरणाई ॥ गुर के बचन सति जीअ धारहु ॥ माणस जनमु देह निस्तारहु ॥ गुरु जहाजु खेवटु गुरू गुर बिनु तरिआ न कोइ ॥ गुर प्रसादि प्रभु पाईऐ गुर बिनु मुकति न होइ ॥ गुरु नानकु निकटि बसै बनवारी ॥ तिनि लहणा थापि जोति जगि धारी ॥ लहणै पंथु धरम का कीआ ॥ अमरदास भले कउ दीआ ॥ तिनि स्री रामदासु सोढी थिरु थप्यउ ॥ हरि का नामु अखै निधि अप्यउ ॥ अप्यउ हरि नामु अखै निधि चहु जुगि गुर सेवा करि फलु लहीअं ॥ बंदहि जो चरण सरणि सुखु पावहि परमानंद गुरमुखि कहीअं ॥ परतखि देह पारब्रहमु सुआमी आदि रूपि पोखण भरणं ॥ सतिगुरु गुरु सेवि अलख गति जा की स्री रामदासु तारण तरणं ॥ १ ॥

गुरु-परमेश्वर सबका मालिक है, सबसे बड़ा है, जिसने सतयुग में भक्त ध्रुव पर कृपा की। उस श्रीहरि ने भक्त प्रहलाद का उद्धार किया, माथे पर हस्त-कमल धरकर उसका कल्याण किया। उसके अदृश्य रूप को जीव देख नहीं पाते। बड़े-बड़े सिद्ध-साधक सब उसी की शरण में रहते हैं। गुरु के वचन को सत्य मानकर दिल में धारण कर लो, इसी से मनुष्य जन्म एवं शरीर की मुक्ति हो सकती है। गुरु ही जहाज है, गुरु ही जहाज का खवैया है, गुरु के बिना कोई भी संसार-सागर से तैर नहीं पाया। गुरु की कृपा से प्रभु प्राप्त होता है और गुरु के बिना मुक्ति नहीं होती। गुरु नानक ईश्वर के निकट रहते थे, उन्होंने भाई लहणा को गुरुगद्दी पर मनोनीत करके संसार में ज्योति को फैलाया। गुरु नानक के परम शिष्य गुरु अंगद देव ने सत्य-धर्म का रास्ता (सेवा-सिमरन, हरिनाम का प्रचार) अपनाया। उसके बाद (सेवा की मूर्ति) अमरदास भल्ला को गुरुगद्दी पर विराजमान किया। उन्होंने (हरिनाम का मनन करके अपने परम शिष्य, हरिनाम के रसिया) श्री रामदास सोढी को गुरु नानक की गद्दी पर स्थापित किया और हरिनाम रूपी सुखनिधि प्रदान की। फिर श्री गुरु रामदास जी ने सुखनिधि हरिनाम का चारों दिशाओं में दान दिया अर्थात अनगिनत शिष्यों, भक्तों एवं जिज्ञासुओं को हरिनाम प्रदान किया। अपने गुरु (अमरदास) की निष्काम सेवा से उन्हें राज योग का फल प्राप्त हुआ। जो उनकी चरण-वंदना करते हैं, शरण में आते हैं, वे सर्व सुख एवं परमानंद पाते हैं और गुरुमुख कहलाने के हकदार हैं। गुरु रामदास जी देह रूप प्रत्यक्ष परब्रह्म परमेश्वर ही हैं, वे आदिपुरुष एवं संसार का भरण पोषण करने वाले हैं। इसलिए महामहिम सतिगुरु (रामदास) की सेवा करो, उनकी महिमा अवर्णनीय है, वस्तुतः श्री गुरु रामदास भव-सागर से पार उतारने वाले जहाज एवं मुक्तिदाता हैं॥१॥

जिह अंम्रित बचन बाणी साधू जन जपहि करि बिचिति चाओ ॥ आनंदु नित मंगलु गुर दरसनु सफलु संसारि ॥ संसारि सफलु गंगा गुर दरसनु परसन परम पवित्र गते ॥ जीतहि जम लोकु पतित जे प्राणी हरि जन सिव गुर ग्यानि रते ॥ रघुबंसि तिलकु सुंदरु दसरथ घरि मुनि बंछहि जा की सरणं ॥ सतिगुरु गुरु सेवि अलख गति जा की स्री रामदासु तारण तरणं ॥ २ ॥

जिसके अमृत वचनों एवं मधुरवाणी को साधुजन बड़े चाव एवं दिल से जपते हैं। जिससे नित्य आनंद एवं खुशी प्राप्त होती है, उस गुरु (रामदास) के दर्शनों से संसार में जन्म सफल हो जाता है। संसार में गुरु रामदास का दर्शन गंगा समान फलदायक है, उनके चरण-स्पर्श परम पवित्र करने वाले एवं मुक्ति प्रदायक हैं। पतित प्राणी भी दर्शन मात्र से यमलोक पर विजय पा

लेते हैं और भक्तगण कल्याणमय गुरु ज्ञान में रत रहते हैं। असल में गुरु रामदास राजा दशरथ के घर रघुवंश तिलक प्रिय राम अवतार में आए, उनकी शरण मुनि भी चाहते थे। सतिगुरु रामदास की सेवा करो, उनकी महिमा अवर्णनीय है, वास्तव में श्री गुरु रामदास संसार-सागर से पार उतारने वाले जहाज हैं॥२॥

संसारु अगम सागरु तुलहा हरि नामु गुरू मुखि पाया ॥ जगि जनम मरणु भगा इह आई हीऐ परतीति ॥ परतीति हीऐ आई जिन जन कै तिन्ह कउ पदवी उच भई ॥ तजि माइआ मोहु लोभु अरु लालचु काम क्रोध की ब्रिथा गई ॥ अवलोक्या ब्रहमु भरमु सभु छुटक्या दिब्य द्रिस्टि कारण करणं ॥ सतिगुरु गुरु सेवि अलख गति जा की स्री रामदासु तारण तरणं ॥ ३ ॥

यह संसार असीम सागर है, जिससे परमात्मा का नाम पार करवाने वाला जहाज है और यह गुरु से प्राप्त होता है। जब मन में हरिनाम के प्रति पूर्ण आस्था उत्पन्न होती है, तो जग में जन्म-मरण से मुक्ति हो जाती है। जिस व्यक्ति के मन में पूर्ण भरोसा हो जाता है, उसे ही उच्च पदवी प्राप्त होती है। वह माया-मोह एवं लोभ-लालच को छोड़ देता है और काम-क्रोध की पीड़ा से छूट जाता है। जिस सज्जन ने सर्वकर्त्ता, करण-कारण, दिव्य दृष्टि, परब्रह्म रूप गुरु रामदास को देखा है, उसके सब भ्रम छूट गए हैं। सतिगुरु की सेवा करो, जिसकी महिमा अवर्णनीय है, हे जिज्ञासुओ, श्री गुरु रामदास भवसागर से पार लंघाने वाले जहाज हैं॥३॥

परतापु सदा गुर का घटि घटि परगासु भया जसु जन कै ॥ इकि पड़हि सुणहि गावहि परभातिहि करहि इस्नानु ॥ इस्नानु करहि परभाति सुध मनि गुर पूजा बिधि सहित करं ॥ कंचनु तनु होइ परसि पारस कउ जोति सरूपी ध्यानु धरं ॥ जगजीवनु जगंनाथु जल थल महि रहिआ पूरि बहु बिधि बरनं ॥ सतिगुरु गुरु सेवि अलख गति जा की स्री रामदासु तारण तरणं ॥ ४ ॥

गुरु रामदास का प्रताप सर्वत्र फैला हुआ है, शिष्य, सेवक उनका ही यश गा रहे हैं। कोई प्रभात काल उठकर स्नान करके उनकी अमृतवाणी पढ़ते-सुनते एवं गाते हैं। वे प्रातः काल स्नान करके शुद्ध मन से गुरु की पूजा-अर्चना करते हैं। गुरु रूपी पारस के स्पर्श से उनका तन कंचन हो जाता है और ज्योति स्वरूप गुरु रामदास का ही वे ध्यान धारण करते हैं। संसार का जीवन, जगत का मालिक जल थल सबमें व्याप्त है, अनेक प्रकार से उसी का वर्णन हो रहा है। सो ऐसे परमेश्वर रूप गुरु (रामदास) की सेवा करो, उसकी महिमा अवर्णनीय है, हे जिज्ञासुओ, श्री गुरु रामदास भवसागर से पार करवाने वाले जहाज हैं॥४॥

जिनहु बात निस्चल ध्रूअ जानी तेई जीव काल ते बचा ॥ तिन्ह तरिओ समुद्रु रुद्रु खिन इक महि जलहर बिंब जुगति जगु रचा ॥ कुंडलनी सुरझी सतसंगति परमानंद गुरू मुखि मचा ॥ सिरी गुरू साहिबु सभ ऊपरि मन बच क्रंम सेवीऐ सचा ॥ ५ ॥

जिन्होंने गुरु की बात को ध्रुव की तरह निश्चय रूप में मान लिया है, ऐसे व्यक्ति काल से बच गए हैं। उन्होंने भयानक संसार-समुद्र एक पल में पार कर लिया है और वे यही मानते हैं कि यह जगत बादलों की छाया समान नश्वर है। गुरु की संगत में कुण्डलिनी सुलझ गई है और परमानंद की प्राप्ति हुई है। महामहिम गुरु ही मालिक है, सबसे बड़ा है, मन, वचन, कर्म से उसी की सेवा करनी चाहिए॥५॥

वाहिगुरू वाहिगुरू वाहिगुरू वाहि जीउ ॥ कवल नैन मधुर बैन कोटि सैन संग सोभ कहत मा जसोद जिसहि दही भातु खाहि जीउ ॥ देखि रूपु अति अनूपु मोह महा मग भई किंकनी सबद झनतकार खेलु पाहि जीउ ॥ काल कलम हुकमु हाथि कहहु कउनु मेटि सकै ईसु बंम्यु ग्यानु ध्यानु धरत हीऐ चाहि जीउ ॥ सति साचु स्री निवासु आदि पुरखु सदा तुही वाहिगुरू वाहिगुरू वाहिगुरू वाहि जीउ ॥ १ ॥ ६ ॥

{भाट गयंद श्री गुरु रामदास जी को वाहिगुरु परमात्मा रूप मानते हुए उनकी स्तुति करता है}

हे वाहिगुरु ! हे (गुरु रामदास) परमेश्वर ! वाह-वाह, तू प्रशंसनीय है, मैं तुझ पर कुर्बान हूँ। तुम्हारे नयन कमल समान हैं, तुम मधुर बोलने वाले हो, करोड़ों के साथ तू शोभा दे रहा है, जिसे यशोदा मैया दही चावल खाने के लिए देती थी, श्री गोपाल कृष्ण तुम ही हो। तेरा अनुपम रूप देखकर वह मोह में मोहित हो जाती थी, खेल-खेल में मधुर झंकार तुम ही करने वाले थे। मृत्यु की कलम तथा हुक्म तेरे ही हाथ में है, जिसे कोई बदल नहीं सकता। शिव, ब्रह्मा भी तेरे ज्ञान-ध्यान को हृदय में धारण करना चाहते हैं। तू शाश्वत रूप है, देवी लक्ष्मी तेरी सेवा में तल्लीन रहती है, तू रचनहार परमपुरुष है। हे परम परमेश्वर, वाहिगुरु ! तू स्तुति के योग्य है, तुझ पर मैं कुर्बान जाता हूँ॥१॥६॥

राम नाम परम धाम सुध बुध निरीकार बेसुमार सरबर कउ काहि जीउ ॥ सुथर चित भगत हित भेखु धरिओ हरनाखसु हरिओ नख बिदारि जीउ ॥ संख चक्र गदा पदम आपि आपु कीओ छदम अपरंपर पारब्रहम लखै कउनु ताहि जीउ ॥ सति साचु स्री निवासु आदि पुरखु सदा तुही वाहिगुरू वाहिगुरू वाहिगुरू वाहि जीउ ॥ २ ॥ ७ ॥

तेरा नाम राम है, तू वैकुण्ठ में विराजमान है, परमपवित्र है, बुद्धिमान है, निराकार, बे-अन्त है, तेरे सरीखा (हे गुरु रामदास) कोई नहीं। तू सदा रहने वाला है, स्थिरचित्त है, भक्तों से प्रेम करने वाला है, अपने भक्त की खातिर नृसिंहावतार धारण किया और दुष्ट हिरण्यकशिपु को नाखुनों से चीरकर फाड़ दिया। शंख, चक्र, गदा एवं पदम (हे गुरु रामदास) तुम्हीं ने धारण किया हुआ है, तू परे से परे है , वामनावतार में राजा बलि को तू ही छलने वाला है। हे परब्रह्म। तेरा रूप अव्यक्त है। (हे गुरु रामदास) तू सत्य है, शाश्वत स्वरूप है, तू ही आदिपुरुष है, देवी लक्ष्मी तेरी सेवा में तल्लीन है। तू सदा रहने वाला है, वाह-वाह मेरे वाहिगुरु (गुरु रामदास) तू महामहिम पूज्य है, मैं तुझ पर सर्वदा कुर्बान हूँ॥२॥७॥

पीत बसन कुंद दसन प्रिआ सहित कंठ माल मुकटु सीसि मोर पंख चाहि जीउ ॥ बेवजीर बडे धीर धरम अंग अलख अगम खेलु कीआ आपणै उछाहि जीउ ॥ अकथ कथा कथी न जाइ तीनि लोक रहिआ समाइ सुतह सिध रूपु धरिओ साहन कै साहि जीउ ॥ सति साचु स्री निवासु आदि पुरखु सदा तुही वाहिगुरू वाहिगुरू वाहिगुरू वाहि जीउ ॥ ३ ॥ ८ ॥

हे सतिगुरु रामदास ! पीले वस्त्रों में तू ही कृष्ण-कन्हैया है, तेरे मोतियों की तरह सफेद दाँत हैं, अपनी प्रिया (राधा) के साथ आनंद करता है, तेरे गले में वैजयंती माला है, मोर पंखों वाला शीश पर मुकुट धारण किया है। तू बेपरवाह है, बड़ा धैर्यवान, धर्म का पुंज, अलक्ष्य, अगम्य है, यह जगत-तमाशा तुमने अपनी इच्छा से ही बनाया है। तेरी महिमा अकथनीय है, इसका कथन हम नहीं कर सकते, तू तीनों लोकों में मौजूद है, सहज स्वाभाविक ही तूने रूप धारण किया

है, तू बादशाहों का भी बादशाह है। हे सतिगुरु रामदास! तू सत्य है, शाश्वत रूप है, कर्ता पुरुष है, देवी लक्ष्मी तेरी सेवा में तल्लीन है, तू सदैव रहने वाला है। वाह गुरु! वाह वाह! वाहिगुरु तू महान् है, तुझ पर मैं कुर्बान जाता हूँ॥३॥८॥

सतिगुरू सतिगुरू सतिगुरु गुबिंद जीउ ॥ बलिहि छलन सबल मलन भग्ति फलन कान्ह कुअर निहकलंक बजी डंक चढू दल रविंद जीउ ॥ राम रवण दुरत दवण सकल भवण कुसल करण सरब भूत आपि ही देवाधि देव सहस मुख फनिंद जीउ ॥ जरम करम मछ कछ हुअ बराह जमुना कै कूलि खेलु खेलिओ जिनि गिंद जीउ ॥ नामु सारु हीए धारु तजु बिकारु मन गयंद सतिगुरू सतिगुरू सतिगुर गुबिंद जीउ ॥ ४ ॥ ६ ॥

हे सतिगुरु रामदास! तू सर्वकर्ता ईश्वर है। राजा बलि को छलनेवाला तू ही है, तू पापी-अहंकारी पुरुषों का नाश करने वाला है, भक्ति फल देनेवाला है, तू कृष्ण कन्हैया है, पाप दोषों से रहित है, तेरी महिमा का डंका सब ओर बज रहा है, सूर्य एवं चन्द्रमा तेरी कीर्ति के लिए उदय होते हैं। हे राम! तू सर्वव्यापक है। तू पापों को जलाने वाला है, समस्त लोकों में कल्याण करने वाला है, पूरी दुनिया में मौजूद है, तू देवाधिदेव है, हजारों मुख वाला शेषनाग भी तू है। मत्स्यावतार, कच्छपावतार, वाराहावतार में तूने ही कर्म किए और यमुना के तट पर गेंद से खेल कर कालिय नाग का मर्दन तूने ही किया। भाट गयंद का मन से यही कथन है कि विकारों को छोड़कर नाम को हृदय में धारण करो, सतिगुरु रामदास करण-कारण, सृष्टि का पालक एवं विधाता है॥ ४॥ ६॥

सिरी गुरू सिरी गुरू सिरी गुरू सति जीउ ॥ गुर कहिआ मानु निज निधानु सचु जानु मंत्रु इहै निसि बासुर होइ कल्यानु लहहि परम गति जीउ ॥ कामु क्रोधु लोभु मोहु जण जण सिउ छाडु धोहु हउमै का फंधु काटु साधसंगि रति जीउ ॥ देह गेहु त्रिअ सनेहु चित बिलासु जगत एहु चरन कमल सदा सेउ द्रिड़ता करु मति जीउ ॥ नामु सारु हीए धारु तजु बिकारु मन गयंद सिरी गुरू सिरी गुरू सिरी गुरू सति जीउ ॥ ५ ॥ १० ॥

महामहिम पूज्य गुरु (रामदास) शाश्वत रूप है। गुरु जो शिक्षा देता है, उसका सहर्ष पालन करो, चूंकि यह सुखों की निधि सदैव साथ निभाने वाली है। इस सच्चे उपदेश को भलीभांति जान लो, रात-दिन आपका कल्याण होगा एवं परमगति की प्राप्ति होगी। काम, क्रोध, लोभ, मोह एवं लोगों से धोखा करना छोड़ दो, अभिमान का फंदा काट कर साधु पुरुषों की संगत में लीन रहो। यह शरीर, घर, स्त्री से प्रेम, यह जगत सब दिल का बहलावा है, अतः अपने मन में गुरु के चरण कमल को सदा के लिए दृढ़ करो। भाट गयंद का मन से आग्रह है कि हरिनाम सार को हृदय में धारण करो, विकारों को छोड़ दो। श्री गुरु रामदास सत्यस्वरूप एवं शाश्वत हैं॥५॥१०॥

सेवक कै भरपूर जुगु जुगु वाहगुरू तेरा सभु सदका ॥ निरंकारु प्रभु सदा सलामति कहि न सकै कोऊ तू कद का ॥ ब्रहमा बिसनु सिरे तै अगनत तिन कउ मोहु भया मन मद का ॥ चवरासीह लख जोनि उपाई रिजकु दीआ सभ हू कउ तद का ॥ सेवक कै भरपूर जुगु जुगु वाहगुरू तेरा सभु सदका ॥ १ ॥ ११ ॥

हे गुरु (रामदास) वाह वाह! युग-युग से तू भक्तों के दिल में बसा हुआ है, तेरी सब कृपा है। तू निराकार प्रभु है, तू सदा रहने वाला है, अटल है, कोई नहीं कह सकता कि तेरा अस्तित्व

कब से है अर्थात तू अनादि अकालमूर्ति है। तुमने अनगिनत ब्रह्मा, विष्णु इत्यादि उत्पन्न किए हैं, उनको मन के अहंकार का ही मोह है। तुमने चौरासी लाख योनियों को उत्पन्न किया और सब को रोज़ी-रोटी देकर उनका पालन कर रहा है। हे (गुरु) वाहिगुरु (रामदास)! युग-युग से तू भक्तों के दिलों में बसा हुआ है, सब तेरी कृपा है॥१॥११॥

वाहु वाहु का बडा तमासा ॥ आपे हसै आपि ही चितवै आपे चंदु सूरु परगासा ॥ आपे जलु आपे थलु थंम्हनु आपे कीआ घटि घटि बासा ॥ आपे नरु आपे फुनि नारी आपे सारि आप ही पासा ॥ गुरमुखि संगति सभै बिचारहु वाहु वाहु का बडा तमासा ॥ २ ॥ १२ ॥

यह सम्पूर्ण सृष्टि रूपी एक बड़ा खेल तमाशा गुरु ही रचकर चला रहा है। वह स्वयं ही हँसता है, स्वयं ही सोचता है और स्वयं ही चांद एवं सूर्य को रोशनी दे रहा है। जल एवं थल स्वयं गुरु ही है, सबका अवलम्ब है, घट-घट में वही बसा हुआ है। वह स्वयं ही नर है और फिर नारी भी स्वयं है। वह स्वयं ही जगत रूपी चौपड़ है और स्वयं ही जीव रूपी गोटियाँ है। गुरु की संगत में सब इसी तथ्य का चिंतन करते हैं कि सम्पूर्ण सृष्टि रूपी एक बड़ा खेल तमाशा गुरु ही रच कर चला रहा है॥२॥१२॥

कीआ खेलु बड मेलु तमासा वाहिगुरू तेरी सभ रचना ॥ तू जलि थलि गगनि पयालि पूरि रहया अंम्रित ते मीठे जा के बचना ॥ मानहि ब्रहमादिक रुद्रादिक काल का कालु निरंजन जचना ॥ गुर प्रसादि पाईऐ परमारथु सतसंगति सेती मनु खचना ॥ कीआ खेलु बड मेलु तमासा वाहगुरू तेरी सभ रचना ॥ ३ ॥ १३ ॥ ४२ ॥

हे वाहिगुरु (रामदास)! तू प्रशंसनीय है, यह संसार रूपी तमाशा सब तेरी रचना है, पंच तत्वों को मिलाकर खेल रचा है। तू जल, भूमि, गगन एवं आकाश सब में व्याप्त है, तेरे वचन अमृत की तरह मीठे हैं। ब्रह्मा, शिव इत्यादि देवी-देवता सब तेरा ही मनन करते हैं, तू काल का भी काल है, तू माया की कालिमा से रहित है, पूरी दुनिया तुझ से ही मांगती है। गुरु की कृपा से ही परमार्थ प्राप्त होता है और सत्संगति में मन हरिनाम सिमरन में लीन होता है। हे गुरु-परमेश्वर! तू प्रशंसा का हकदार है, यह संसार सब तेरी रचना है, पंच तत्वों को मिलाकर तूने बड़ा खेल तमाशा रचा है॥३॥१३॥४२॥

(१३ सवैये भाट गयंद के पूरे हुए, भाट कलसहार के १३, भाट नल्ह के १६ सवैयों सहित कुल ४२ सवैये पूरे हुए)

अगमु अनंतु अनादि आदि जिसु कोइ न जाणै ॥ सिव बिरंचि धरि ध्यानु नितहि जिसु बेदु बखाणै ॥ निरंकारु निरवैरु अवरु नही दूसर कोई ॥ भंजन गढ़ण समथु तरण तारण प्रभु सोई ॥ नाना प्रकार जिनि जगु कीओ जनु मथुरा रसना रसै ॥ स्री सति नामु करता पुरखु गुर रामदास चितह बसै ॥ १ ॥

परमेश्वर अगम्य, अनंत, अनादि है, उसका आरंभ कोई नहीं जानता। शिव, ब्रह्मा भी उसी का ध्यान करते हैं, नित्य वेद भी उसी की महिमा-गान करते हैं। वह निराकार है, प्रेम की मूर्ति है, उस जैसा बड़ा दूसरा कोई नहीं। वह तोड़ने एवं बनाने में पूर्ण समर्थ है, वह प्रभु संसार-सागर से पार उतारने वाला जहाज है। जिसने अनेक प्रकार का जगत बनाया है, मथुरा भाट रसना से उसी का यश गाता है। श्री सत्यस्वरूप सृष्टि रचयिता परमेश्वर गुरु रामदास के दिल में ही रहता है॥१॥

गुरू समरथु गहि करीआ ध्रुव बुधि सुमति सम्हारन कउ ॥ फुनि ध्रंम धुजा फहरंति सदा अघ पुंज तरंग निवारन कउ ॥ मथुरा जन जानि कही जीअ साचु सु अउर कछू न बिचारन कउ ॥ हरि नामु बोहिथु बडौ कलि मै भव सागर पारि उतारन कउ ॥ २ ॥

गुरु (रामदास) सर्वकला समर्थ है, इसलिए अटल विवेक बुद्धि, सुमति पाने के लिए उसी का आसरा लिया है। उसका धर्म ध्वज सदा फहराता है, वह पाप एवं वासनाओं की तरंगों का निवारण करने वाला है। दास मथुरा ने दिल में अच्छी तरह से समझकर सत्य ही बताया है, अन्य कुछ भी विचार योग्य नहीं। कलियुग में परमात्मा का नाम सबसे बड़ा जहाज है, केवल वही संसार-सागर से पार उतारने वाला है॥२॥

संतत ही सतसंगति संग सुरंग रते जसु गावत है ॥ ध्रम पंथु धरिओ धरनीधर आपि रहे लिव धारि न धावत है ॥ मथुरा भनि भाग भले उन्ह के मन इछत ही फल पावत है ॥ रवि के सुत को तिन्ह त्रासु कहा जु चरंन गुरू चितु लावत है ॥ ३ ॥

जो संतों की सत्संगत में आते हैं, वे रंग में रंगकर परमेश्वर का यश गाते हैं। दरअसल यह धर्म का रास्ता स्वयं ईश्वर ने चलाया है, जिन्होंने हरिनाम भक्ति में लगन लगाई है, फिर वे इधर-इधर नहीं भटकते। मथुरा भाट का कथन है कि ऐसे लोग भाग्यशाली हैं और मनोवांछित फल ही पाते हैं। जो गुरु (रामदास) के चरणों में मन लगाते हैं, उनको सूर्य पुत्र यमराज का भी कोई डर नहीं लगता॥३॥

निरमल नामु सुधा परपूरन सबद तरंग प्रगटित दिन आगरु ॥ गहिर गंभीरु अथाह अति बड सुभरु सदा सभ बिधि रतनागरु ॥ संत मराल करहि कंतूहल तिन जम त्रास मिटिओ दुख कागरु ॥ कलजुग दुरत दूरि करबे कउ दरसनु गुरू सगल सुख सागरु ॥ ४ ॥

सतिगुरु रामदास निर्मल नामामृत का एक सरोवर है, जो अमृत से परिपूर्ण है, जहाँ से दिन चढ़ते ही शब्द-गान की लहरें उठती हैं, यह गहरा गंभीर, अथाह, बहुत बड़ा है और हर प्रकार से परिपूर्ण एवं रत्नों का भण्डार है। संत रूपी हंस यहाँ कौतुक क्रीड़ा करते हैं, उनका मृत्यु का भय एवं दुखों का हिसाब मिट चुका है। कलियुग में पाप दूर करने के लिए गुरु रामदास का दर्शन सर्व सुखों का सागर है॥४॥

जा कउ मुनि ध्यानु धरै फिरत सगल जुग कबहु क कोऊ पावै आतम प्रगास कउ ॥ बेद बाणी सहित बिरंचि जसु गावै जा को सिव मुनि गहि न तजात कबिलास कंउ ॥ जा कौ जोगी जती सिध साधिक अनेक तप जटा जूट भेख कीए फिरत उदास कउ ॥ सु तिनि सतिगुरि सुख भाइ क्रिपा धारी जीअ नाम की बडाई दई गुर रामदास कउ ॥ ५ ॥

जिसका ध्यान मुनि धारण करते हैं, पूरे जगत में भ्रमण करते हैं और कभी-कभार ही कोई आत्म-प्रकाश पाता है। वेदवाणी सहित ब्रह्मा भी जिसके यश को गाता है, जिसके ध्यान में महादेव शिवशंकर भी कैलाश पर्वत को नहीं छोड़ता। जिसको पाने के लिए योगी, ब्रह्मचारी, सिद्ध, साधक अनेकानेक तपस्या में लीन रहते हैं, कई जटा-जूट धारण करके वेषाडम्बरी वैरागी बनकर फिरते रहते हैं। उस निरंकार के स्वरूप सतिगुरु अमरदास ने स्वाभाविक ही अपनी कृपा (गुरु रामदास पर) धारण की है और इस प्रकार हरिनाम की कीर्ति गुरु रामदास को प्रदान कर दी॥५॥

नामु निधानु धिआन अंतरगति तेज पुंज तिहु लोग प्रगासे ॥ देखत दरसु भटकि भ्रमु भजत दुख परहरि सुख सहज बिगासे ॥ सेवक सिख सदा अति लुभित अलि समूह जिउ कुसम सुबासे ॥ बिद्यमान गुरि आपि थप्यउ थिरु साचउ तखतु गुरू रामदासै ॥ ६ ॥

गुरु रामदास के पास नाम रूपी सुखों की निधि है, वे अन्तर्मन में ध्यानशील हैं, उनका तेज तीनों लोकों में फैला हुआ है। उनके दर्शनों से सब भ्रम-भटकन निवृत्त हो जाती है और दुख दूर होकर सुख एवं खुशियाँ प्राप्त होती हैं। सेवक और शिष्य सदैव ही उन पर यूं लुब्ध होते हैं, ज्यों खुशबूदार फूल पर भँवरा मंडराता है। गुरु अमरदास जी ने अपने जीते जी स्वयं गुरु रामदास जी को सच्चे सिंहासन (गुरु नानक की गद्दी) पर स्थापित किया॥६॥

तार्यउ संसारु माया मद मोहित अंम्रित नामु दीअउ समरथु ॥ फुनि कीरतिवंत सदा सुख संपति रिधि अरु सिधि न छोडइ सथु ॥ दानि बडौ अतिवंतु महाबलि सेवकि दासि कहिओ इहु तथु ॥ ताहि कहा परवाह काहू की जा कै बसीसि धरिओ गुरि हथु ॥ ७ ॥ ४६ ॥

माया के मद में मोहित दुनिया को समर्थ गुरु रामदास ने नामामृत प्रदान करके पार उतार दिया है। वे कीर्तिवान हैं, सुख-समृद्धि, ऋद्धियाँ और सिद्धियाँ उनका संग नहीं छोड़तीं। सेवक दास मथुरा यही तथ्य कहता है कि वे महादानी, बड़े उपकारी, अत्यंत महांबली एवं हरिनाम के परम भक्त हैं। जिसके सिर पर गुरु रामदास ने हाथ धरा हो, उसे किसी चीज की कोई परवाह नहीं रहती॥ ७॥ ४६॥

(मथुरा भाट के सात सवैयों सहित कुल उन्चास सवैये पूरे हुए)

तीनि भवन भरपूरि रहिओ सोई ॥ अपन सरसु कीअउ न जगत कोई ॥ आपुन आपु आप ही उपायउ ॥ सुरि नर असुर अंतु नही पायउ ॥ पायउ नही अंतु सुरे असुरह नर गण गंध्रब खोजंत फिरे ॥ अबिनासी अचलु अजोनी संभउ पुरखोतमु अपार परे ॥ करण कारण समरथु सदा सोई सरब जीअ मनि ध्याइयउ ॥ स्री गुर रामदास जयो जय जग महि तै हरि परम पदु पाइयउ ॥ १ ॥

तीनों लोकों में परब्रह्म परमेश्वर ही विद्यमान है, अपने जैसा उसने जगत में कोई उत्पन्न नहीं किया। अपने आपको भी उसने स्वयं ही पैदा किया है। देवता, मनुष्य एवं असुर कोई भी उसका रहस्य नहीं पा सका। देवता, असुर, मनुष्य, गण-गंधर्व सब उसे ही खोज रहे हैं, परन्तु उसका भेद किसी ने नहीं पाया। वह अविनाशी एवं अडोल है, वह योनियों के चक्र से मुक्त है और स्वयं ही प्रगट हुआ है। वह पुरुषोत्तम परमेश्वर परे से परे अपार है। वह करण-कारण, सर्वकला समर्थ है, सब जीव मन में उसी का ध्यान करते हैं। हे श्री गुरु रामदास! तुमने हरि-सा परमपद पा लिया है, जगत में तुम्हारी जय-जयकार हो रही है॥१॥

सतिगुरि नानकि भगति करी इक मनि तनु मनु धनु गोबिंद दीअउ ॥ अंगदि अनंत मूरति निज धारी अगम ग्यानि रसि रस्यउ हीअउ ॥ गुरि अमरदासि करतारु कीअउ वसि वाहु वाहु करि ध्याइयउ ॥ स्री गुर रामदास जयो जय जग महि तै हरि परम पदु पाइयउ ॥ २ ॥

सतिगुरु नानक देव जी ने दत्तचित्त होकर निरंकार की भक्ति की, उन्होंने अपना तन, मन, धन, सर्वस्व ईश्वर पर न्यौछावर कर दिया। गुरु अंगद देव जी ने प्रेम की मूर्ति परमेश्वर को अपने मन में बसाया और ज्ञान के कारण उनका दिल प्रेम रस में भीग गया। गुरु अमरदास ने

भक्ति द्वारा परमात्मा को वश में कर लिया और वाह-वाह बड़ा मानकर ध्यान किया। हे श्री गुरु रामदास ! तुमने प्रभु पद ही पा लिया है, पूरे जगत् में तेरी जय-जयकार हो रही है॥२॥

नारदु ध्रू प्रहलादु सुदामा पुब भगत हरि के जु गणं ॥ अंबरीकु जयदेव त्रिलोचनु नामा अवरु कबीरु भणं ॥ तिन कौ अवतारु भयउ कलि भिंतरि जसु जगत्र परि छाइयउ ॥ स्री गुर रामदास जयो जय जग महि तै हरि परम पदु पाइयउ ॥ ३ ॥

नारद, ध्रुव, प्रहलाद एवं सुदामा पूर्व से ही परमात्मा के अनन्य भक्त माने जाते हैं। अंबरीष, जयदेव, त्रिलोचन, नामदेव एवं कबीर सरीखे परम भक्तों का कलियुग में अवतार हुआ, इनका यश पूरे जगत में फैला हुआ है। पर, हे श्री गुरु रामदास ! तुमने तो परमात्मा का पद पा लिया है, जगत भर में तेरी जय जय हो रही है॥३॥

मनसा करि सिमरंत तुझै नर कामु क्रोधु मिटिअउ जु तिणं ॥ बाचा करि सिमरंत तुझै तिन्ह दुखु दरिद्रु मिटयउ जु खिणं ॥ करम करि तुअ दरस परस पारस सर बल्य भट जसु गाइयउ ॥ स्री गुर रामदास जयो जय जग महि तै हरि परम पदु पाइयउ ॥ ४ ॥

हे गुरु रामदास ! जो व्यक्ति दृढ़संकल्प से तुम्हारा स्मरण करते हैं, उनका काम-क्रोध सब मिट जाता है। जो मन, वचन से तुझे स्मरण करते हैं, पल में ही उनका दुख-दारिद्रय मिट जाता है। जो कर्मेन्द्रियों से तुम्हारा दर्शन व चरण स्पर्श करता है, पारस समान (महान्) हो जाता है, इसलिए बल्य भाट भी तुम्हारा ही यश गाता है। हे श्री गुरु रामदास ! तुमने ईश्वर का पद पा लिया है, संसार भर में तुम्हारी जय-जय हो रही है॥४॥

जिह सतिगुर सिमरंत नयन के तिमर मिटहि खिनु ॥ जिह सतिगुर सिमरंथि रिदै हरि नामु दिनो दिनु ॥ जिह सतिगुर सिमरंथि जीअ की तपति मिटावै ॥ जिह सतिगुर सिमरंथि रिधि सिधि नव निधि पावै ॥ सोई रामदासु गुरु बल्य भणि मिलि संगति धंनि धंनि करहु ॥ जिह सतिगुर लगि प्रभु पाईऐ सो सतिगुरु सिमरहु नरहु ॥ ५ ॥ ५४ ॥

जिस सतिगुरु (रामदास) के स्मरण से आँखों का अज्ञानाधंकार पल में मिट जाता है। जिस सतिगुरु (रामदास) का सिमरन करने से हृदय में दिनों-दिन हरिनाम अवस्थित होता है। जिस सतिगुरु का स्मरण करने से दिल की जलन मिट जाती है। जिस सतिगुरु को याद करने से ऋद्धियाँ-सिद्धियाँ एवं नौ निधियाँ प्राप्त होती हैं। भाट बल्ह का अनुरोध है कि उस गुरु रामदास की संगत में मिलकर प्रशंसागान करो। जिस सतिगुरु की शरण में प्रभु प्राप्त होता है, सो ऐसे सतिगुरु रामदास का हे लोगो ! हर वक्त स्मरण करो॥५॥५४॥

(भाट बल्ह के पाँच सवैये पूरे, कुल चौवन सवैये हुए)

जिनि सबदु कमाइ परम पदु पाइओ सेवा करत न छोडिओ पासु ॥ ता ते गउहरु ग्यान प्रगटु उजीआरउ दुख दरिद्र अंध्यार को नासु ॥ कवि कीरत जो संत चरन मुड़ि लागहि तिन्ह काम क्रोध जम को नही त्रासु ॥ जिव अंगदु अंगि संगि नानक गुर तिव गुर अमरदास कै गुरु रामदासु ॥ १ ॥

जिस (गुरु रामदास) ने ब्रह्म-शब्द की साधना करके परमपद पाया, अपने गुरु अमरदास जी की सेवा में तन-मन से तल्लीन रहे और उनका साथ कभी न छोड़ा, इसलिए परम ज्ञान का उजाला हुआ और दुख-दारिद्रय का अंधेरा नष्ट हो गया। कवि कीरत का कथन है कि जो शान्ति के पुंज, संत गुरु रामदास के चरणों में लगता है, उसका काम-क्रोध एवं यम का डर दूर हो जाता

है। जैसे गुरु अंगद देव जी गुरु नानक देव जी के अंग-संग सेवा में तल्लीन रहे, वैसे ही गुरु अमरदास की सेवा में गुरु रामदास जी रहे॥ १॥

जिनि सतिगुरु सेवि पदारथु पायउ निसि बासुर हरि चरन निवासु ॥ ता ते संगति सघन भाइ भउ मानहि तुम मलीआगर प्रगट सुबासु ॥ ध्रू प्रहलाद कबीर तिलोचन नामु लैत उपज्यो जु प्रगासु ॥ जिह पिखत अति होइ रहसु मनि सोई संत सहारु गुरू रामदासु ॥ २ ॥

जिस (गुरु रामदास) ने सतिगुरु अमरदास की सेवा में अनुरक्त रहकर हरिनाम पदार्थ पाया और दिन-रात प्रभु-चरणों में लीन रहे। उनकी शिष्य मण्डली बहुत अधिक है, जो उनके प्रेम भाव को मानती है और कहती है कि तुम साक्षात् चन्दन की सुगन्धि रूप में प्रगट हो। ध्रुव, प्रहलाद, कबीर, त्रिलोचन को परमात्मा का नाम जपते प्रकाश प्राप्त हुआ। जिसके दर्शन से मन को अपार खुशी प्राप्त होती है, वह गुरु रामदास सज्जन पुरुषों का सहायक है॥ २॥

नानकि नामु निरंजन जान्यउ कीनी भगति प्रेम लिव लाई ॥ ता ते अंगदु अंग संगि भयो साइरु तिनि सबद सुरति की नीव रखाई ॥ गुर अमरदास की अकथ कथा है इक जीह कछु कही न जाई ॥ सोढी स्रिस्टि सकल तारण कउ अब गुर रामदास कउ मिली बडाई ॥ ३ ॥

गुरु नानक ने ईश्वर के नाम को माना और लगन लगाकर उसकी प्रेम-भक्ति की। फिर (गुरु नानक के परम शिष्य भाई लहणा) प्रेम के सागर गुरु अंगद देव उनकी सेवा में निमग्न रहे और उन्होंने शब्द-सुरति की मजबूत आधारशिला रखी। गुरु अमरदास की कथा अकथनीय है*, एक जिह्वा से उनके गुणों का वर्णन नहीं किया जा सकता। समूची सृष्टि को संसार-सागर से पार उतारने के लिए अब सोढी वंश के सुलतान गुरु रामदास को कीर्ति प्राप्त हुई है॥३॥

हम अवगुणि भरे एकु गुणु नाही अंम्रितु छाडि बिखै बिखु खाई ॥ माया मोह भरम पै भूले सुत दारा सिउ प्रीति लगाई ॥ इकु उतम पंथु सुनिओ गुर संगति तिह मिलंत जम त्रास मिटाई ॥ इक अरदासि भाट कीरति की गुर रामदास राखहु सरणाई ॥ ४ ॥ ५८ ॥

हे सतिगुरु रामदास! हम जीव अवगुणों से भरे हुए हैं, एक भी हमारे पास गुण नहीं। नाम-कीर्तन रूपी अमृत को छोड़कर हम केवल विषय-वासनाओं का जहर सेवन कर रहे हैं। माया-मोह के भ्रम में पथभ्रष्ट हो गए हैं और पुत्र एवं पत्नी से ही प्रीति लगाई हुई है। सुनने में आया है कि गुरु की संगत एक उत्तम रास्ता है, उसके सम्पर्क में यम का डर मिट जाता है। भाट कीरत की केवल यही अरदास है कि हे गुरु रामदास! मुझे अपनी शरण में रख लो॥४॥५८॥

(भाट कीरत के चार सवैयों सहित कुल अट्ठावन सवैये पूरे हुए)

**सेवा के पुंज श्री गुरु अमरदास जी गुरु अंगद देव जी के स्नान के लिए ब्यास दरिया में से नित्य जल की गागर भरकर लाते थे। एक बार ठोकर लगने पर जब गिरे तो जुलाही ने कहा था, अमरू निथावा होगा। जब गुरु अंगद देव जी को इस बात का पता चला तो उन्होंने गुरु अमरदास जी को गुरुगद्दी का तिलक लगाकर वर दिया, "(गुरु) अमरदास जी निमानों के मान हैं, नितानों के तान हैं, निओटों की ओट हैं, निआसरों के आसरा हैं।"*

गुरु अमरदास जी ने प्रचुर मात्रा में वाणी लिखी, उन्होंने गोइंदवाल नगर बसाया और वहां बावली साहिब की रचना की, जहाँ चौरासी सीढ़ियाँ हैं, वहाँ जपुजी साहिब, सुखमनी साहिब, चौपई साहिब इत्यादि का पाठ करने से चौरासी योनियों का चक्र कट जाता है। उन्होंने बाईस मंजियों की स्थापना की, गुरु का लंगर एक पंक्ति में ग्रहण करने के लिए कहा। वे एक समाज सुधारक भी थे।

मोहु मलि बिवसि कीअउ कामु गहि केस पछाड़यउ ॥ क्रोधु खंडि परचंडि लोभु अपमान सिउ झाड़यउ ॥ जनमु कालु कर जोड़ि हुकमु जो होइ सु मंनै ॥ भव सागरु बंधिअउ सिख तारे सुप्रसंनै ॥ सिरि आतपतु सचौ तखतु जोग भोग संजुतु बलि ॥ गुर रामदास सचु सल्य भणि तू अटलु राजि अभगु दलि ॥ १ ॥

हे गुरु रामदास ! आप ने मोह का मलियामेट करके उसे बेबस ही कर दिया है, काम को केशों से पकड़कर आप ने पछाड़ दिया है, और तो और प्रचंड क्रोध के टुकड़े ही कर दिए हैं, लोभ अपमान को तहस नहस करके खत्म ही कर दिया है। जन्म एवं मृत्यु हाथ जोड़कर आपका हर हुक्म मानते हैं। आपने भव-सागर को बांध लिया है और प्रसन्न होकर अपने शिष्यों को मुक्ति दे रहे हो। आपके शीश पर छत्र विद्यमान है, अटल सिंहासन पर विराजमान हो, आपने योग एवं भोग दोनों को माना है। भाट सल्ह सत्य ही बताता है कि हे गुरु रामदास ! तुम्हारा राज अटल है और तुम्हारा दल अटूट है ॥१॥

तू सतिगुरु चहु जुगी आपि आपे परमेसरु ॥ सुरि नर साधिक सिध सिख सेवंत धुरह धुरु ॥ आदि जुगादि अनादि कला धारी त्रिहु लोअह ॥ अगम निगम उधरण जरा जंमिहि आरोअह ॥ गुर अमरदासि थिरु थपिअउ परगामी तारण तरण ॥ अघ अंतक बदै न सल्य कवि गुर रामदास तेरी सरण ॥ २ ॥ ६० ॥

हे सतिगुरु रामदास ! चारों युगों में तू ही सदा रहने वाला है, स्वयं निरंकार परमेश्वर है। देवता, मनुष्य, सिद्ध, साधक एवं शिष्य प्रारंभ से ही सेवा कर रहे हैं। युग-युगांतर, अनादि काल से तीनों लोकों में तेरी ही सत्ता का बोलबाला है। तुमने वेद-शास्त्रों का उद्धार किया, बुढ़ापे, जन्म-मरण से मुक्त हो। गुरु अमरदास जी ने स्थाई रूप में स्थापित किया, स्वयं तो मुक्त हो और अपने शिष्यों एवं अन्य लोगों को संसार-सागर से पार उतारने वाले जहाज हो। सल्ह कवि का कथन है कि हे गुरु रामदास ! जो तेरी शरण में आ जाता है, वह पापों एवं मृत्यु से मुक्त हो जाता है ॥२॥६०॥

(सल्ह कवि के दो सवैयों सहित कुल साठ सवैये सम्पन्न)

सवईए महले पंजवे के ५* १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

वह परब्रह्म केवल एक (ओंकार-स्वरूप) है, सतगुरु की कृपा से प्राप्ति होती है।

सिमरं सोई पुरखु अचलु अबिनासी ॥ जिसु सिमरत दुरमति मलु नासी ॥ सतिगुर चरण कवल रिदि धारं ॥ गुर अरजुन गुण सहजि बिचारं ॥ गुर रामदास घरि कीअउ प्रगासा ॥ सगल मनोरथ पूरी आसा ॥ तै जनमत गुरमति ब्रहमु पछाणिओ ॥ कल्य जोड़ि कर सुजसु वखाणिओ ॥ भगति जोग कौ जैतवारु हरि जनकु उपायउ ॥ सबदु गुरू परकासिओ हरि रसन बसायउ ॥ गुर नानक अंगद अमर लागि उतम पदु पायउ ॥ गुरु अरजुनु घरि गुर रामदास भगत उतरि आयउ ॥ १ ॥

मैं उस अचल, अविनाशी परमपुरुष, विधाता का सिमरन करता हूँ, जिसका सिमरन करने से दुर्मति की मैल दूर हो जाती है। मैं सतिगुरु नानक के चरण-कमल हृदय में बसाता हूँ और प्रेमपूर्वक गुरु अर्जुन देव जी का यशगान करता हूँ। वाणी के जहाज, गुरु अर्जुन देव जी ने गुरु रामदास जी के घर (बीबी भानी जी के उदर से सन् १५६३ ई. को गोइंदवाल) में जन्म लिया और सब मनोरथ एवं कामनाएँ पूरी हो गईं। हे गुरु अर्जुन! तुमने जन्म लेते गुरु-मत से ब्रह्म को पहचान लिया था। कल्ह कवि हाथ जोड़ कर तेरा ही यश गा रहा है। तुमने भक्ति एवं योग को जीत लिया था और परमेश्वर ने 'जनक' पैदा किया है। तुमने शब्द-गुरु को प्रगट किया है और अपनी रसना से हरिनाम का उच्चारण करते उसे दिल में बसाए रखा। तुमने गुरु नानक, गुरु अंगद, गुरु अमरदास जी के चरण कमल में लगकर उत्तम पद पा लिया है। इस तरह गुरु रामदास जी के घर हरि के परम भक्त गुरु अर्जुन देव जी का अवतार हुआ है॥१॥

बडभागी उनमानिअउ रिदि सबदु बसायउ ॥ मनु माणकु संतोखिअउ गुरि नामु द्रिढ़ायउ ॥ अगमु अगोचरु पारब्रहमु सतिगुरि दरसायउ ॥ गुरु अरजुनु घरि गुर रामदास अनभउ ठहरायउ ॥ २॥

गुरु अर्जुन देव जी भाग्यशाली हैं, शांतचित्त खिले हुए हैं और उनके हृदय में प्रभु-शब्द बसा हुआ है। हे गुरु अर्जुन देव ! आपके मन में माणिक्य रूपी संतोष है और गुरुदेव पिता ने आपको हरिनाम का जाप करवाया है। इस तरह सतिगुरु श्री रामदास जी ने आपको अपहुँच, ज्ञानेन्द्रियों से परे परब्रह्म का दर्शन करवाया है। गुरु रामदास जी के घर में ईश्वर ने गुरु अर्जुन देव को ज्ञान रूप में टिकाया है॥२॥

जनक राजु बरताइआ सतजुगु आलीणा ॥ गुर सबदे मनु मानिआ अपतीजु पतीणा ॥ गुरु नानकु सचु नीव साजि सतिगुर संगि लीणा ॥ गुरु अरजुनु घरि गुर रामदास अपरंपरु बीणा ॥ ३ ॥

**श्री गुरु अर्जुन देव जी की स्तुति में उच्चरित सवैये*

जनक सरीखे गुरु अर्जुन ने सत्य, धर्म एवं ज्ञान को सर्वत्र फैला दिया है, जिससे हर तरफ सतियुग ही विद्यमान लग रहा है। गुरु के उपदेश से आपका मन पूर्णतया तृप्त हो गया है, जो इससे पूर्व अतृप्त रहता था। गुरु नानक देव जी सत्य की आधारशिला रखकर सतिगुरु अर्जुन देव जी में समाहित हुए हैं। गुरु रामदास के घर गुरु अर्जुन देव जी अपरंपार रूप बने हुए हैं॥३॥

खेलु गूढ़उ कीअउ हरि राइ संतोखि समाचर्यिओ बिमल बुधि सतिगुरि समाणउ ॥ आजोनी संभविअउ सुजसु कल्य कवीअणि बखाणिअउ ॥ गुरि नानकि अंगदु वर्यउ गुरि अंगदि अमर निधानु ॥ गुरि रामदास अरजुनु वर्यउ पारसु परसु प्रमाणु ॥ ४ ॥

ईश्वर ने विचित्र ही लीला की है, गुरु अर्जुन देव जी शान्ति एवं संतोष में रहते हैं और वे निर्मल बुद्धि में लीन हैं। वे जन्म-मरण से रहित हैं, स्वयंभू परमेश्वर रूप हैं और कवि कल्ह उनका सुयश गा रहा है। गुरु नानक ने (सेवा भाव एवं भक्ति से प्रसन्न होकर) गुरु अंगद को वर प्रदान किया और गुरु अंगद ने तो गुरु अमरदास को कृपादृष्टि करके पूरा खजाना ही दे दिया। गुरु रामदास ने गुरु अर्जुन देव को वरदान देकर पारस की तरह बना दिया है॥४॥

सद जीवणु अरजुनु अमोलु आजोनी संभउ ॥ भय भंजनु पर दुख निवारु अपारु अनंभउ ॥ अगह गहणु भ्रमु भ्रांति दहणु सीतलु सुख दातउ ॥ आसंभउ उदविअउ पुरखु पूरन बिधातउ ॥ नानक आदि अंगद अमर सतिगुर सबदि समाइअउ ॥ धनु धंनु गुरू रामदास गुरु जिनि पारसु परसि मिलाइअउ ॥ ५ ॥

गुरु अर्जुन देव जी चिरंजीव हैं, उनके गुणों का मूल्य नहीं किया जा सकता है, वे जन्म-मरण के चक्र से स्वतंत्र हैं एवं स्वयंभू हैं। वे भय को समाप्त करने वाले हैं, लोगों के दुखों का निवारण करने वाले हैं, अपरंपार एवं ज्ञान की मूर्त्त हैं। वे अगम्य को पहुँचने वाले, भ्रम-भ्रांतियों का नाश करने वाले, शान्ति का घर एवं सुखों के दाता हैं। ऐसा लग रहा है, जैसे स्वयंभू, अनादि, पूर्ण पुरुष विधाता संसार में प्रगट हो गया है। आदि गुरु नानक, गुरु अंगद, गुरु अमरदास के वर से सतिगुरु अर्जुन शब्द में समाहित हैं। श्री गुरु रामदास जी धन्य हैं, जिन्होंने गुरु अर्जुन देव जी को पारस की तरह अपने जैसा (महान्) बना लिया है॥५॥

जै जै कारु जासु जग अंदरि मंदरि भागु जुगति सिव रहता ॥ गुरु पूरा पायउ बड भागी लिव लागी मेदनि भरु सहता ॥ भय भंजनु पर पीर निवारनु कल्यसहारु तोहि जसु बकता ॥ कुलि सोढी गुर रामदास तनु धरम धुजा अरजुनु हरि भगता ॥ ६ ॥

जिस गुरु अर्जुन की पूरी दुनिया में जय-जयकार हो रही है, वे पूर्ण सौभाग्यशाली हैं, वे ईश-वंदना में लीन रहते हैं। बड़े भाग्य से उन्होंने पूर्ण गुरु प्राप्त किया है, वे ईश्वर के ध्यान में लीन रहते हैं, पूरी पृथ्वी का भार सहन करते है। वे भय को नाश करने वाले, दूसरों की पीड़ा एवं दर्द का निवारण करने वाले हैं। भाट कलसहार उस महान् मूर्ति गुरु अर्जुन जी का यश गाता है। सोढी वंश के दीपक, गुरु रामदास जी के सुपुत्र, धर्म ध्वजा वाले, शान्ति के पुंज गुरु अर्जुन देव जी परमात्मा के परम भक्त हैं॥६॥

ध्रंम धीरु गुरमति गभीरु पर दुख बिसारणु ॥ सबद सारु हरि सम उदारु अहंमेव निवारणु ॥ महा दानि सतिगुर गिआनि मनि चाउ न हुटै ॥ सतिवंतु हरि नामु मंत्रु नव निधि न निखुटै ॥ गुर रामदास तनु सरब मै सहजि चंदोआ ताणिअउ ॥ गुर अरजुन कल्युचरै तै राज जोग रसु जाणिअउ ॥ ७ ॥

वे धर्मात्मा हैं, सहनशील हैं, गुरु-मत में गहन-गंभीर हैं, गुरु अर्जुन देव जी दूसरों के दुख दूर करने वाले हैं। वे शब्द में श्रेष्ठ, परमात्मा के समान उदारशील एवं अहंकार का निवारण करने वाले हैं। सतिगुरु अर्जुन देव जी महादानी एवं ज्ञानी हैं और उनके मन से ईशोपासना का चाव कभी नहीं छूटता। वे सत्यशील हैं और हरिनाम मंत्र रूपी सुखों की निधि उन से कभी खत्म नहीं होती। गुरु रामदास जी के सुपुत्र गुरु अर्जुन देव जी नभ की तरह सर्वव्यापक हैं और उन्होंने सहज स्वभाव का चंदोआ तान रखा है। कलसहार का कथन है कि हे गुरु अर्जुन! तुमने राज योग का रस जान लिया है॥७॥

भै निरभउ माणिअउ लाख महि अलखु लखायउ ॥ अगमु अगोचर गति गभीरु सतिगुरि परचायउ ॥ गुर परचै परवाणु राज महि जोगु कमायउ ॥ धंनि धंनि गुरु धंनि अभर सर सुभर भरायउ ॥ गुर गम प्रमाणि अजरु जरिओ सरि संतोख समाइयउ ॥ गुर अरजुन कल्युचरै तै सहजि जोगु निजु पाइयउ ॥ ८ ॥

गुरु अर्जुन देव जी ने अभय ईश्वर की अनुभूति की है, जो लाखों में अदृष्ट रूप से व्याप्त है। सतिगुरु रामदास ने आप को मन-वाणी से परे, अत्यंत गंभीर ईश्वर का उपदेश दिया। गुरु के उपदेश में सफल होकर गुरु अर्जुन देव जी ने राज में योग कर्म किया है। गुरु अर्जुन देव जी धन्य धन्य हैं, जिन्होंने खाली दिलों को नाम रस से भर दिया है। गुरु पदवी पाने के कारण वे अजर अवस्था में स्थिर रहे और संतोष के सरोवर में विलीन रहे। कवि कलसहार का कथन है कि हे गुरु अर्जुन! तुमने स्वाभाविक सहज योग पा लिया है॥८॥

अमिउ रसना बदनि बर दाति अलख अपार गुर सूर सबदि हउमै निवार्यउ ॥ पंचाहरु निदलिअउ सुंन सहजि निज घरि सहार्यउ ॥ हरि नामि लागि जग उधर्यउ सतिगुरु रिदै बसाइअउ ॥ गुर अरजुन कल्युचरै तै जनकह कलसु दीपाइअउ ॥ ६ ॥

हे गुरु अर्जुन! आप जी के मुखारबिंद से हरिनामामृत की वर्षा होती है, आप अपने शिष्यों-श्रद्धालुओं को वरदान देते हो, अलख अपार रूप परमात्मा हो, शब्द के सूरमा हो एवं अहंकार का निवारण करने वाले हो। हे गुरु अर्जुन! आप ने पाँच विकारों का अंत कर दिया है। आप जी ने अज्ञानता एवं विकारों का संहार कर दिया है, आप शून्यावस्था में सहज समाधि ईश्वर के ध्यान में रत रहते हो। हरिनाम संकीर्तन में तल्लीन होकर आप ने जगत के लोगों का उद्धार किया है और सतिगुरु रामदास को हृदय में बसाया है। कलसहार कवि का कथन है कि हे गुरु अर्जुन! तुमने जनक-सा ज्ञान दीपक प्रज्वलित किया है॥६॥

सोरठे ॥ गुरु अरजुनु पुरखु प्रमाणु पारथउ चालै नही ॥ नेजा नाम नीसाणु सतिगुर सबदि सवारिअउ ॥ १ ॥ भवजलु साइरु सेतु नामु हरी का बोहिथा ॥ तुअ सतिगुर सं हेतु नामि लागि जगु उधर्यउ ॥ २॥ जगत उधारणु नामु सतिगुर तुठै पाइअउ ॥ अब नाहि अवर सरि कामु बारंतरि पूरी पड़ी ॥ ३ ॥ १२ ॥

गुरु अर्जुन देव जी साक्षात् ईश्वर का रूप हैं, वे पांडव अर्जुन की तरह कर्म से विचलित नहीं होते। परमात्मा का नाम उनका नेजा है और सतिगुरु के उपदेश ने उनका जीवन सफल कर दिया है॥१॥ यह भवसागर दुस्तर है, हरिनाम सेतु एवं पार लंघाने वाला जहाज है। हे गुरु अर्जुन! तुम्हारा सतिगुरु से ही प्रेम लगा रहता है और प्रभु नाम में लगकर जगत का उद्धार कर

दिया है॥२॥ हे गुरु अर्जुन! सतिगुरु की प्रसन्नता से आप ने जगत का उद्धार करने के लिए हरिनाम प्राप्त किया है। गुरु-घर में सब पूरा हो गया है, अतः किसी अन्य से अब कोई लगाव नहीं॥३॥१२॥

जोति रूपि हरि आपि गुरू नानकु कहायउ ॥ ता ते अंगदु भयउ तत सिउ ततु मिलायउ ॥ अंगदि किरपा धारि अमरु सतिगुरु थिरु कीअउ ॥ अमरदासि अमरतु छत्रु गुर रामहि दीअउ ॥ गुर रामदास दरसनु परसि कहि मथुरा अंम्रित बयण ॥ मूरति पंच प्रमाण पुरखु गुरु अरजुनु पिखहु नयण ॥ १ ॥

ज्योति-स्वरूप परमेश्वर आप गुरु नानक कहलाया है। फिर उसी ज्योति से ज्योति मिलकर गुरु अंगद का अवतार हुआ। गुरु अंगद ने कृपा करके गुरु अमरदास जी को गुरु नानक गद्दी पर मनोनीत किया। फिर गुरु अमरदास ने यह अमृत छत्र गुरु रामदास को प्रदान कर दिया। मथुरा कवि का कथन है कि गुरु रामदास के दर्शन-स्पर्श से गुरु अर्जुन देव जी की वाणी अमृतमय हो गई। (कवि कहता है कि) निःसंकोच उसने पाँचवें गुरु, गुरु अर्जुन देव जी को साक्षात् ईश्वर मूर्ति के रूप में आँखों से देखा है॥१॥

सति रूपु सति नामु सतु संतोखु धरिओ उरि ॥ आदि पुरखि परतखि लिख्यउ अछरु मसतकि धुरि ॥ प्रगट जोति जगमगै तेजु भूअ मंडलि छायउ ॥ पारसु परसि परसु परसि गुरि गुरू कहायउ ॥ भनि मथुरा मूरति सदा थिरु लाइ चितु सनमुख रहहु ॥ कलजुगि जहाजु अरजुनु गुरू सगल स्रिस्टि लगि बितरहु ॥ २ ॥

गुरु अर्जुन देव जी सत्य के मूर्त रूप हैं और उन्होंने अपने हृदय में सत्यस्वरूप ईश्वर एवं सत्य-संतोष को धारण किया हुआ है। विधाता ने प्रारंभ से उनके माथे पर ऐसा भाग्य लिखा हुआ है। उनमें साक्षात् प्रभु-ज्योति जगमगा रही है और उनका तेज पूरे भूमण्डल में फैला हुआ है। वे गुरु रामदास रूपी पारस के स्पर्श से पारस रूप गुरु कहलाए हैं। मथुरा कवि का कथन है कि सत्य की मूर्ति गुरु अर्जुन में ध्यान लगाओ और मन लगाकर उनके सन्मुख रहो। गुरु अर्जुन देव जी कलियुग में जहाज समान हैं, पूरी सृष्टि उनके चरणों में लगकर संसार-सागर से पार उतर सकती है॥ २॥

तिह जन जाचहु जगत्र पर जानीअतु बासुर रयनि बासु जा को हितु नाम सिउ ॥ परम अतीतु परमेसुर कै रंगि रंग्यौ बासना ते बाहरि पै देखीअतु धाम सिउ ॥ अपर परंपर पुरख सिउ प्रेमु लाग्यौ बिनु भगवंत रसु नाही अउरै काम सिउ ॥ मथुरा को प्रभु स्रब मय अरजुन गुरु भगति कै हेति पाइ रहिओ मिलि राम सिउ ॥ ३ ॥

हे जिज्ञासुओ! उस दाता गुरु (अर्जुन) से (मुरादें) मांगो, जो पूरे जगत में माननीय है, जो दिन-रात प्रभु-भक्ति में लीन रहता है। वह परम वैराग्यवान है और परमेश्वर के रंग में रंगा हुआ है, वह वासनाओं से परे है और गृहस्थी भी दिखाई देता है। वह अपरंपार परमपुरुष के प्रेम में लीन रहता है और भगवंत भजन रस के अतिरिक्त उसे अन्य कोई काम नहीं। भाट मथुरा के लिए तो गुरु अर्जुन ही सर्वव्याप्त प्रभु है और भक्ति की खातिर वह तो हरदम राम में लीन रहता है॥३॥

अंतु न पावत देव सबै मुनि इंद्र महा सिव जोग करी ॥ फुनि बेद बिरंचि बिचारि रहिओ हरि जापु न छाड्यउ एक घरी ॥ मथुरा जन को प्रभु दीन दयालु है संगति स्रिस्टि निहालु करी ॥ रामदासि गुरू जग तारन कउ गुर जोति अरजुन माहि धरी ॥ ४ ॥

उस गुरु का अन्त सभी देवी-देवता, मुनि स्वर्गाधिपति इंद्र एवं योग-साधना में लीन महादेव शिव भी नहीं पा सके। ब्रह्मा वेदों का चिंतन करता रहा लेकिन उसने भी परमात्मा का जाप एक घड़ी भर नहीं छोड़ा। सेवक मथुरा का प्रभु गुरु अर्जुन दीनदयालु है, वह संगत-मण्डली सहित सम्पूर्ण सृष्टि को निहाल कर रहा है। दुनिया का उद्धार करने के लिए गुरु रामदास ने अपनी ज्योति गुरु अर्जुन देव में प्रविष्ट की है॥४॥

जग अउरु न याहि महा तम मै अवतारु उजागरु आनि कीअउ ॥ तिन के दुख कोटिक दूरि गए मथुरा जिन्ह अंम्रित नामु पीअउ ॥ इह पधति ते मत चूकहि रे मन भेदु बिभेदु न जान बीअउ ॥ परतछि रिदै गुर अरजुन कै हरि पूरन ब्रहमि निवासु लीअउ ॥ ५ ॥

जगत् में पापों से बचाने वाला उसके अतिरिक्त कोई नहीं, अतः ईश्वर ने गुरु अर्जुन देव के रूप में संसार में आकर अवतार धारण किया है। मथुरा भाट का कथन है कि जिन लोगों ने गुरु-संगत में हरिनामामृत का पान किया है, उनके करोड़ों दुख दूर हो गए हैं। हे सज्जनो ! इस सच्चाई से मत चूकना, कहीं यह भेद न मान लेना कि गुरु अर्जुन ईश्वर से भिन्न हैं। गुरु अर्जुन देव जी के हृदय में तो साक्षात् पूर्ण ब्रह्म ने निवास किया हुआ है॥५॥

जब लउ नही भाग लिलार उदै तब लउ भ्रमते फिरते बहु धायउ ॥ कलि घोर समुद्र मै बूडत थे कबहू मिटि है नही रे पछुतायउ ॥ ततु बिचारु यहै मथुरा जग तारन कउ अवतारु बनायउ ॥ जप्यउ जिन्ह अरजुन देव गुरू फिरि संकट जोनि गरभ न आयउ ॥ ६ ॥

जब तक माथे पर भाग्योदय नहीं हुआ, तब तक हम बहुत भटकते रहे। कलियुग के घोर समुद्र में डूब रहे थे और संसार समुद्र में डूबने का पश्चाताप कभी मिट नहीं रहा था। भाट मथुरा का कथन है कि सच्ची बात यही है कि दुनिया का उद्धार करने के लिए ईश्वर ने गुरु अर्जुन देव के रूप में अवतार धारण किया। जिन्होंने गुरु अर्जुन देव जी का जाप किया, वे पुनः गर्भ योनि के संकट में नहीं आए॥६॥

कलि समुद्र भए रूप प्रगटि हरि नाम उधारनु ॥ बसहि संत जिसु रिदै दुख दारिद्र निवारनु ॥ निरमल भेख अपार तासु बिनु अवरु न कोई ॥ मन बच जिनि जाणिअउ भयउ तिह समसरि सोई ॥ धरनि गगन नव खंड महि जोति स्वरूपी रहिओ भरि ॥ भनि मथुरा कछु भेदु नही गुरु अरजुनु परतख्य हरि ॥ ७ ॥ १९ ॥

कलियुग के समुद्र से संसार को मुक्त करने के लिए गुरु अर्जुन देव जी ईश्वर के रूप में प्रगट हुए हैं। जिनके हृदय में शान्ति एवं सत्य का स्रोत बस रहा है, वे दुख-दारिद्रय का निवारण करने वाला है। वे निर्मल हरि रूप हैं, उनके अतिरिक्त अन्य कोई नहीं। जिसने मन वचन से माना है, वह उस जैसा ही हो गया है। धरती, आकाश, नौ खण्डों में ज्योति स्वरूप (गुरु अर्जुन) ही विद्यमान है। मथुरा भाट का कथन है कि गुरु अर्जुन देव साक्षात् परमात्मा हैं, इसमें कोई फर्क नहीं॥७॥१९॥

{मथुरा भाट के सात सवैये पूरे। इस तरह कलसहार के बारह सवैयों को मिलाकर कुल उन्नीस हुए}

अजै गंग जलु अटलु सिख संगति सभ नावै ॥ नित पुराण बाचीअहि बेद ब्रहमा मुखि गावै ॥ अजै चवरु सिरि ढुलै नामु अंम्रितु मुखि लीअउ ॥ गुर अरजुन सिरि छत्रु आपि परमेसरि दीअउ ॥ मिलि नानक अंगद अमर गुर गुरु रामदासु हरि पहि गयउ ॥ हरिबंस जगति जसु संचर्यउ सु कवणु कहै स्री गुरु मुयउ ॥ १ ॥

गुरु अर्जुन देव जी के पास (हरिनामामृत रूप में) अटल एवं अजय गंगाजल बह रहा है, और समूची शिष्य मण्डली नित्य इसमें स्नान करती है। गुरु दरबार में नित्य हरिनाम का जाप, वाणी रूप पुराणों का पठन हो रहा है और ब्रह्मा मुख से वेद गा रहा है अर्थात् गुरु की वाणी पुराण-वेद हैं। गुरु के शीश पर अजय चँवर झूलता है और वे मुख से हरि-नामामृत का कीर्तन करते हैं। वस्तुतः गुरु अर्जुन देव के शीश पर यह छत्र स्वयं परमेश्वर ने ही सौंपा है। श्री गुरु नानक देव जी, श्री गुरु अंगद देव जी, श्री गुरु अमरदास जी (तदन्तर) श्री गुरु रामदास ओंकार स्वरूप परमेश्वर में विलीन हो गए। हरिबंस का कथन है कि पूरे जगत में गुरु का यश फैल गया है, अतः कोई नहीं कह सकता कि गुरु (रामदास जी) संसार में नहीं॥ १॥

देव पुरी महि गयउ आपि परमेस्वर भायउ ॥ हरि सिंघासणु दीअउ सिरी गुरु तह बैठायउ ॥ रहसु कीअउ सुर देव तोहि जसु जय जय जंपहि ॥ असुर गए ते भागि पाप तिन्ह भीतरि कंपहि ॥ काटे सु पाप तिन्ह नरहु के गुरु रामदासु जिन्ह पाइयउ ॥ छत्रु सिंघासनु पिरथमी गुर अरजुन कउ दे आइअउ ॥ २ ॥ २१ ॥ ९ ॥ ११ ॥ १० ॥ १० ॥ २२ ॥ ६० ॥ १४३ ॥

श्री गुरु रामदास जी देवपुरी वैकुण्ठ में चले गए, यह स्वयं परमेश्वर की रज़ा से हुआ। ईश्वर ने सिंहासन देकर श्री गुरु रामदास जी को विराजमान किया। देवताओं ने मंगलगान किया और यश गाते हुए वे जय-जयकार करने लगे। असुर सब भाग गए और उनके पाप मन में कांपने लगे। जिन्होंने श्री गुरु रामदास जी को प्राप्त किया है, उन लोगों के सब पाप कट गए हैं। इस तरह श्री गुरु रामदास जी पृथ्वी का छत्र व सिंहासन गुरु अर्जुन देव जी को सौंप आए हैं॥२॥२१॥ ९॥११॥१०॥ १०॥२२॥६०॥१४३॥

भाट हरिबंस के दो सवैये पूर्ण। कलसहार के ९ सवैयों एवं ३ सोरठों सहित १२ सवैयों पूरे हुए, मथुरा के ७ सवैये और हरिबंस के दो सवैयों सहित महला ५ के कुल २१ सवैये पूर्ण हुए। सवैये श्री मुखवाक्य महला ५, ९ एवं ११ सवैये– महला १ के १०, महला २ के १०, महला ३ के २२, महला ४ के ६०. अब सबका कुल जोड़ १४३ हुआ।

वह अद्वितीय ईश्वर जिसका वाचक ओम् है, केवल एक (ओंकार स्वरूप) है, नाम उसका सत्य है, वह देवी-देवता, मनुष्य सहित सम्पूर्ण सृष्टि की रचना करने वाला है, वह सर्वशक्तिमान है, वह भय से रहित है, (समदृष्टि के कारण) वह निर्वेर है, वह कालातीत है (भूत, वर्तमान, भविष्य से परे) वह ब्रह्ममूर्ति अमर है, वह जन्म-मरण के बन्धन से रहित है, वह अपने आप ही प्रगट हुआ है, गुरु-कृपा से प्राप्त होता है।

सलोक वारां ते वधीक ॥ महला १ ॥

(वे श्लोक जो 'आदिग्रंथ' की बाईस वारों में से बढ़ गए, जिनका उन वारों में संकलन नहीं हो सका। इसलिए गुरु अर्जुन देव जी ने उन श्लोकों का 'सलोक वारां ते वधीक' नामक शीर्षक पर संकलन किया)

उतंगी पैओहरी गहिरी गंभीरी ॥ ससुड़ि सुहीआ किव करी निवणु न जाइ थणी ॥ गचु जि लगा गिड़वड़ी सखीए धउलहरी ॥ से भी ढहदे डिठु मै मुंध न गरबु थणी ॥ १ ॥

{उल्लेखनीय है कि श्री गुरु नानक देव जी जब दूसरी बार संगलाद्वीप आए तो स्वर्गीय राजा शिवनाभ की रानी चंद्रकला अपने पुत्र राय सिंघ एवं पुत्रवधु चन्द्रकांता को साथ लेकर गुरु जी के दर्शन करने आई। रानी ने भेंट उपहार रखकर गुरु जी को शीश नवाया परन्तु उसकी पुत्रवधु ने यथायोग्य आदर नहीं किया। तब रानी ने अपनी पुत्रवधु को समझाया कि तुमने ठीक नहीं किया।}

(सास अपनी पुत्रवधु को कहती है) हे बड़े-बड़े, ऊँचे वक्षों (अर्थात् जवानी) में मस्त स्त्री ! कुछ गंभीरता एवं समझदारी तो कर। पुत्रवधु उत्तर देते हुए सास से कहती है कि मैं झुककर किस तरह प्रणाम कर पाऊँ, जबकि ऊँचे वक्षों के कारण मुझसे झुका ही नहीं जाता। हे सखी ! पर्वत की तरह ऊँचे-ऊँचे महल भी ध्वस्त होते देखे हैं, इसलिए तू बड़े वक्षों अर्थात् यौवन का अभिमान मत कर॥१॥

सुणि मुंधे हरणाखीए गूड़ा वैणु अपारु ॥ पहिला वसतु सिञाणि कै तां कीचै वापारु ॥ दोही दिचै दुरजना मित्रां कूं जैकारु ॥ जितु दोही सजण मिलनि लहु मुंधे वीचारु ॥ तनु मनु दीजै सजणा ऐसा हसणु सारु ॥ तिस सउ नेहु न कीचई जि दिसै चलणहारु ॥ नानक जिन्ही इव करि बुझिआ तिन्हा विटहु कुरबाणु ॥ २ ॥

हे हिरण की तरह सुन्दर नयनों वाली स्त्री ! एक बहुत गहरी भेद की बात सुन; पहले वस्तु को अच्छी तरह पहचान कर तो ही व्यापार करना चाहिए। दुर्जनों से दूर रहने की घोषणा करनी चाहिए और मित्रों की जयकार करो। जिस पुकार से सज्जनों से मिलन हो जाए, हे स्त्री ! उसी को सोचना चाहिए। अपना तन मन सज्जनों को अर्पण कर देना चाहिए, इसी से खुशी मिलती है। जिसने साथ छोड़कर चले जाना है, इससे कदापि प्रेम न करो। गुरु नानक फुरमान करते हैं कि जिसने इस सच्चाई को मान लिया है, मैं उस पर कुर्बान जाता हूँ॥२॥

जे तूं तारू पाणि ताहू पुछु तिड़ंन्ह कल ॥ ताहू खरे सुजाण वंञा एन्ही कपरी ॥ ३ ॥

हे जीव ! यदि तू पानी में तैरना चाहता है तो उनसे पूछ जिनको तैरना आता है। वही व्यक्ति समझदार हैं, जिनको लहरों का पूरा अनुभव है॥३॥

झड़ झखड़ ओहाड़ लहरी वहनि लखेसरी ॥ सतिगुर सिउ आलाइ बेड़े डुबणि नाहि भउ ॥ ४ ॥

बेशक कितना ही आँधी तूफान हो अथवा बाढ़ की लाखों लहरें बह रही हों। इस तरह की परिस्थिति में सतगुरु को याद करो, जहाज डूबने का डर नहीं रहेगा॥४॥

नानक दुनीआ कैसी होई ॥ सालकु मितु न रहिओ कोई ॥ भाई बंधी हेतु चुकाइआ ॥ दुनीआ कारणि दीनु गवाइआ ॥ ५ ॥

गुरु नानक उपदेश करते हैं– यह दुनिया कितनी अजीब (एवं स्वार्थी) है, यहाँ कोई सच्चा मित्र नहीं, भाई-बन्धु का प्रेम खत्म हो गया है। दुनिया की ख़ातिर इन्सान अपना धर्म गँवा देता है॥ ५॥

है है करि कै ओहि करेनि ॥ गल्हा पिटनि सिरु खोहेनि ॥ नाउ लैनि अरु करनि समाइ ॥ नानक तिन बलिहारै जाइ ॥ ६ ॥

किसी प्यारे की मृत्यु पर 'हाय-हाय' करना, रोना-चिल्लाना, गालों पर चपत एवं सिर के बाल नोचना ठीक नहीं। जो परमेश्वर का नाम जपते हैं और उसकी रज़ा को खुशी-खुशी मानते हैं। गुरु नानक का कथन है कि मैं उन पर कुर्बान जाता हूँ॥६॥

रे मन डीगि न डोलीऐ सीधे मारगि धाउ ॥ पाछै बाघु डरावणो आगै अगनि तलाउ ॥ सहसै जीअरा परि रहिओ मा कउ अवरु न ढंगु ॥ नानक गुरमुखि छुटीऐ हरि प्रीतम सिउ संगु ॥ ७ ॥

हे मन ! घबराना नहीं चाहिए, न ही दोलायमान होना चाहिए, बल्कि सच्चे एवं सीधे रास्ते पर चलते जाओ। पीछे लौटने की कोशिश की तो बाघ का डर लगता है और आगे अग्नि का तालाब है। मेरा दिल संशय में पड़ा हुआ है, मुझे कोई तरीका नहीं आता। गुरु नानक का कथन है कि परमात्मा की प्रेम-भक्ति में लीन होकर मुक्ति प्राप्त होती है॥७॥

बाघु मरै मनु मारीऐ जिसु सतिगुर दीखिआ होइ ॥ आपु पछाणै हरि मिलै बहुड़ि न मरणा होइ ॥ कीचड़ि हाथु न बूडई एका नदरि निहालि ॥ नानक गुरमुखि उबरे गुरु सरवरु सची पालि ॥ ८ ॥

जिसे सतिगुरु से उपदेश प्राप्त होता है, वह अपने मन को मार देता है तो बाघ (दुनिया का डर) स्वतः ही मर जाता है। जो आत्म-ज्ञान को पहचान लेता है, उसे ईश्वर मिल जाता है और दोबारा मृत्यु के चक्र में नहीं पड़ता। यदि मालिक की कृपा-दृष्टि हो जाए तो हाथ पाप-विकारों के कीचड़ में नहीं फँसते। गुरु नानक का मत है कि गुरु की शरण में जीव संसार के बन्धनों से मुक्त हो जाता है, क्योंकि गुरु सत्य का सरोवर एवं अटल दीवार है॥८॥

अगनि मरै जलु लोड़ि लहु विणु गुर निधि जलु नाहि ॥ जनमि मरै भरमाईऐ जे लख करम कमाहि ॥ जमु जागाति न लगई जे चलै सतिगुर भाइ ॥ नानक निरमलु अमर पदु गुरु हरि मेलै मेलाइ ॥ ६ ॥

यदि (तृष्णा की) अग्नि को खत्म करना है, तो हरिनाम-जल को ढूँढ लो, परन्तु गुरु के बिना नाम जल प्राप्त नहीं होता। लाखों कर्म करने के बाद जन्म-मरण का चक्र पड़ जाता है। यदि

सतिगुरु की शिक्षानुसार जीवन-रास्ता अपनाया जाए तो यम तंग नहीं करता। गुरु नानक का कथन है कि गुरु ही परमात्मा से मिलाता है और तब निर्मल पद प्राप्त होता है॥६॥

कलर केरी छपड़ी कऊआ मलि मलि नाइ ॥ मनु तनु मैला अवगुणी चिंजु भरी गंधी आइ ॥ सरवरु हंसि न जाणिआ काग कुपंखी संगि ॥ साकत सिउ ऐसी प्रीति है बूझहु गिआनी रंगि ॥ संत सभा जैकारु करि गुरमुखि करम कमाउ ॥ निरमलु न्हावणु नानका गुरु तीरथु दरीआउ ॥ १० ॥

(पाप रूपी) कीचड़ के सरोवर में (जीव रूपी) कौआ मल-मलकर नहाता है, जिससे मन तन मैला होकर अवगुणों से भर जाता है और चोंच भी उसकी गंदगी से भर जाती है। जीव रूपी कौआ दुष्टों की संगत में फँसकर संत रूपी हंसों की सरोवर को नहीं जानता। ज्ञानी पुरुषों से बेशक इस तथ्य को बूझ लो कि कुटिल लोगों से प्रेम इसी तरह है। संत पुरुषों की मण्डली में ईश्वर का भजन करो, गुरुमुख बनकर शुभ कर्म करो। गुरु नानक का मत है कि गुरु ही पावन तीर्थ है, जहाँ स्नान करने से तन मन निर्मल हो जाता है॥१०॥

जनमे का फलु किआ गणी जां हरि भगति न भाउ ॥ पैधा खाधा बादि है जां मनि दूजा भाउ ॥ वेखणु सुनणा झूठु है मुखि झूठा आलाउ ॥ नानक नामु सलाहि तू होरु हउमै आवउ जाउ ॥ ११ ॥

यदि ईश्वर की भक्ति एवं प्रेम नहीं किया तो जन्म लेने का कोई फल नहीं। यदि मन द्वैतभाव में लीन है तो खाना-पहनना पूरा जीवन आचरण बेकार है। देखना-सुनना भी झूठ है और मुँह से बात भी झूठी है। गुरु नानक फुरमान करते हैं कि परमात्मा की सराहना करो, अहम्-भाव के कारण जन्म-मरण का चक्र ही बना रहता है॥११॥

हैनि विरले नाही घणे फैल फकड़ु संसारु ॥ १२ ॥

ईश्वर की भजन-बंदगी करने वाले विरले ही हैं, ज्यादा नहीं, बाकी संसार के लोग दिखावा मात्र हैं और बेकार की बातें करने वाले हैं॥१२॥

नानक लगी तुरि मरै जीवण नाही ताणु ॥ चोटै सेती जो मरै लगी सा परवाणु ॥ जिस नो लाए तिसु लगै लगी ता परवाणु ॥ पिरम पैकामु न निकलै लाइआ तिनि सुजाणि ॥ १३ ॥

गुरु नानक फुरमान करते हैं– जिसके दिल पर प्रेम की चोट लगती है, वह तत्क्षण मौत को प्राप्त हो जाता है और जीने की शक्ति छूट जाती है। जो ऐसी प्रेम चोट से मरता है, वही सफल होता है। यह उसे ही लगती है, जिसे वह लगाता है और वही परवान होता है। यह प्रेम तीर ऐसा है, जो उन सज्जनों से निकलता ही नहीं॥१३॥

भांडा धोवै कउणु जि कचा साजिआ ॥ धातू पंजि रलाइ कूड़ा पाजिआ ॥ भांडा आणगु रासि जां तिसु भावसी ॥ परम जोति जागाइ वाजा वावसी ॥ १४ ॥

जिस शरीर रूपी बर्तन को कच्चा ही बनाया गया है, उसे भला कोई तीर्थ-स्नान से कैसे पवित्र कर सकता है। विधाता ने पाँच तत्वों को मिलाकर शरीर रूपी झूठा खिलौना बनाया है। जब उसकी मर्जी होती है तो वह शरीर रूपी बर्तन को गुरु के द्वारा पवित्र कर देता है। तब परम ज्योति को जगाकर सही जीवन का बाजा बजने लगता है॥१४॥

मनहु जि अंधे घूप कहिआ बिरदु न जाणनी ॥ मनि अंधै ऊंधै कवल दिसनि खरे करूप ॥ इकि कहि जाणनि कहिआ बुझनि ते नर सुघड़ सरूप ॥ इकना नादु न बेदु न गीअ रसु रसु कसु न जाणंति

॥ इकना सिधि न बुधि न अकलि सर अखर का भेउ न लहंति ॥ नानक ते नर असलि खर जि बिनु गुण गरबु करंत ॥ १५ ॥

जो व्यक्ति मन से घोर अन्धे अर्थात् महामूर्ख हैं, वे समझाने के बावजूद भी अपने कर्त्तव्य को नहीं जानते। वे मन से अन्धे हृदय कमल से भी उलटे हैं और भयानक ही दिखाई देते हैं। कुछ लोग कही गई बात जानते हैं, उपदेश को समझते हैं, ऐसे व्यक्ति बुद्धिमान हैं। कोई नाद तक नहीं जानता, किसी के पास कोई ज्ञान नहीं, कोई गीत-संगीत के आनंद को नहीं जानता और किसी को भले बुरे का कोई ज्ञान तक नहीं। कुछ ऐसे भी हैं, जिनके पास न कोई सिद्धि है, न बुद्धि है, न ही कोई अक्ल है और एक अक्षर का भी भेद नहीं जानते। गुरु नानक का फुरमान है कि दरअसल ऐसे व्यक्ति गधे के समान हैं, जो बिना किसी गुण के अभिमान करते हैं॥१५॥

सो ब्रहमणु जो बिंदै ब्रहमु ॥ जपु तपु संजमु कमावै करमु ॥ सील संतोख का रखै धरमु ॥ बंधन तोड़ै होवै मुकतु ॥ सोई ब्रहमणु पूजण जुगतु ॥ १६ ॥

असल में वही ब्राह्मण है, जो ब्रह्म को मानता है। वह पूजा-पाठ, सादगी में सत्कर्म करता है और शील-शान्ति, संतोष का धर्म पालन करता है। जो जगत के बन्धनों को तोड़कर मुक्त होता है, वही ब्राह्मण जगत में पूजनीय होता है॥१६॥

खत्री सो जु करमा का सूरु ॥ पुंन दान का करै सरीरु ॥ खेतु पछाणै बीजै दानु ॥ सो खत्री दरगह परवाणु ॥ लबु लोभु जे कूड़ु कमावै ॥ अपणा कीता आपे पावै ॥ १७ ॥

क्षत्रिय वही है, जो सत्कर्मों का शूरवीर माना जाता है। वह दान-पुण्य का जीवन अपनाता है। खेत को पहचान कर दान का बीज डालता है। ऐसा क्षत्रिय ही ईश्वर के दरबार में मान्य होता है। जो लोभ-लालच में झूठा कर्म करता है, वह अपने किए कर्मों का ही फल पाता है॥१७॥

तनु न तपाइ तनूर जिउ बालणु हड न बालि ॥ सिरि पैरी किआ फेड़िआ अंदरि पिरी सम्हालि ॥ १८ ॥

तन को तंदूर की तरह गर्म मत करो, न ही हड्डियों रूपी ईंधन को जलाओ। सिर-पैरों ने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है, मन में परमात्मा का स्मरण करो॥१८॥

सभनी घटी सहु वसै सह बिनु घटु न कोइ ॥ नानक ते सोहागणी जिन्हा गुरमुखि परगटु होइ ॥ १६ ॥

सब में ईश्वर बसा हुआ है, ऐसा कोई घट नहीं, जिसमें ईश्वर न हो। गुरु नानक का मत है कि वही सुहागिन है, जिसके मन में गुरु द्वारा ईश्वर प्रगट होता है॥१६॥

जउ तउ प्रेम खेलण का चाउ ॥ सिरु धरि तली गली मेरी आउ ॥ इतु मारगि पैरु धरीजै ॥ सिरु दीजै काणि न कीजै ॥ २० ॥

हे मानव ! अगर तुझे प्रेम का खेल खेलने का चाव है तो जान हथेली पर रखकर मेरी गली में चले आओ। अगर इस रास्ते पर पैर रखना है तो जान कुर्बान करने में संकोच मत करो॥२०॥

नालि किराड़ा दोसती कूड़ै कूड़ी पाइ ॥ मरणु न जापै मूलिआ आवै कितै थाइ ॥ २१ ॥

{यह श्लोक मूले किराड़ की ओर संकेत है, जिसने एक कागज पर मरना सच एवं जीना झूठ लिखा था। एक बार जब गुरु जी उसके घर गए तो उसकी पत्नी ने झूठ बोलकर कह दिया कि वह इस समय घर में नहीं। जो अंदर ही छिपा हुआ था और सांप के डंक से मृत्यु को प्राप्त हो गया}

बुज़दिल से दोस्ती झूठी ही सिद्ध हुई है। मूला किराड़ मौत के बारे में नहीं जानता, किसी भी स्थान पर आ जाती है॥२१॥

गिआन हीणं अगिआन पूजा ॥ अंध वरतावा भाउ दूजा ॥ २२ ॥

ज्ञानविहीन व्यक्ति अज्ञान की पूजा में लीन रहते हैं। वे द्वैतभाव में फँसकर झूठा व्यवहार ही करते हैं॥२२॥

गुर बिनु गिआनु धरम बिनु धिआनु ॥ सच बिनु साखी मूलो न बाकी ॥ २३ ॥

गुरु के बिना ज्ञान प्राप्त नहीं होता और धर्म के बिना ध्यान नहीं लगता। सत्य के बिना बिल्कुल हामी नहीं भरी जाती॥२३॥

माणू घलै उठी चलै ॥ सादु नाही इवेही गलै ॥ २४ ॥

इस बात का भी क्या मजा, जीव जैसा (खाली) भेजा गया, वैसे ही उठकर चला गया, कोई भजन-बंदगी एवं शुभ कर्म ही नहीं किया तो क्या फायदा॥२४॥

रामु झुरै दल मेलवै अंतरि बलु अधिकार ॥ बंतर की सैना सेवीऐ मनि तनि जुझु अपारु ॥ सीता लै गइआ दहसिरो लछमणु मूओ सरापि ॥ नानक करता करणहारु करि वेखै थापि उथापि ॥ २५ ॥

दशरथ-सुत श्रीरामचन्द्र को भी दुखी होना पड़ा, चाहे उनके मन में अधिकार बल भी था, (सुग्रीव, हनुमान सहित) बहुत सारी सेना मिला ली। वानरों की सेना सेवा के लिए तैयार हुई, मन तन में लड़ने का जोश भी था। दशानन रावण छलपूर्वक सीता का हरण करके ले गया था, श्राप की वजह से लक्ष्मण युद्ध में मूर्छित हो गया। गुरु नानक का फुरमान है कि ईश्वर सब करने वाला है, वही बनाने-बिगाड़ने वाला है॥२५॥

मन महि झूरै रामचंदु सीता लछमण जोगु ॥ हणवंतरु आराधिआ आइआ करि संजोगु ॥ भूला दैतु न समझई तिनि प्रभ कीए काम ॥ नानक वेपरवाहु सो किरतु न मिटई राम ॥ २६ ॥

रामचन्द्र सीता एवं लक्ष्मण के लिए दिल में बहुत दुखी हुए। उन्होंने हनुमान का स्मरण किया तो वह भी संयोग से उनके पास आ गया था। भूला हुआ दैत्य रावण यह नहीं समझ रहा था कि प्रभु ही (उसके अंत के लिए) सब काम कर रहा है। गुरु नानक फुरमान करते हैं कि ईश्वर बेपरवाह है, किए कर्मों का फल कदापि नहीं मिटता, अतः कर्मफल भोगना पड़ता है॥२६॥

लाहौर सहरु जहरु कहरु सवा पहरु ॥ २७ ॥

{गुरु नानक देव जी बाबर के हमले का संकेत देते हुए कहते हैं, उस समय हिन्दु-मुसलमान इत्यादि लाहौर निवासियों पर मुगलों ने मौत का तांडव रचा हुआ था)

लाहौर शहर में जुल्म का जहर फैला हुआ है, सवा प्रहर मासूम लोगों पर मौत का कहर मचा हुआ है॥२७॥

महला ३ ॥ लाहौर सहरु अंम्रित सरु सिफती दा घरु ॥ २८ ॥

महला ३॥ गुरु अमरदास जी कथन करते हैं, (गुरु रामदास के आने से) अब लाहौर शहर नामामृत का सरोवर तथा प्रभु-स्तुति का घर बन गया है॥२८॥

महला १ ॥ उदोसाहै किआ नीसानी तोटि न आवै अंनी ॥ उदोसीअ घरे ही वुठी कुड़िईं रंनी धंमी ॥ सती रंनी घरे सिआपा रोवनि कूड़ी कंमी ॥ जो लेवै सो देवै नाही खटे दंम सहंमी ॥ २९ ॥

महला १॥ उदो नामक अमीर शाह की क्या निशानी है? उसके घर में किसी चीज़ की कोई कमी नहीं। उसके पूरे घर में बेटी-बहू, पत्नी की चहलपहल है। घर में सात औरतें हैं जिस कारण रोज़ लड़ाई-झगड़ा बना रहता है, किसी का एक दूसरे से प्रेम नहीं। उदो शाह, जो किसी से रुपया, गहना या सौदा अमानत के तौर पर रख लेता है, वह वापिस नहीं देता, दुख देकर पैसा जमा करता है॥२९॥

पबर तूं हरीआवला कवला कंचन वंनि ॥ कै दोखड़ै सड़िओहि काली होईआ देहुरी नानक मै तनि भंगु ॥ जाणा पाणी ना लहां जै सेती मेरा संगु ॥ जितु डिठै तनु परफुड़ै चड़ै चवगणि वंनु ॥ ३०॥

हे सरोवर! तू पहले बहुत हरा-भरा था, स्वर्ण सरीखे कमल खिले रहते थे। (पर यह तो बता) किस कसूर के कारण तू जलकर काला हो गया है। गुरु नानक देव जी सरोवर के हवाले से कहते हैं कि मेरा शरीर टूटा हुआ है अर्थात् मुझे जल प्राप्त नहीं हो रहा। मैं जानता हूँ, जिस जल से मेरा जीवन है, वह मुझे नहीं मिल रहा। जिसे देखकर खिल जाता हूँ और चौगुणा रंग चढ़ जाता है॥३०॥

रजि न कोई जीविआ पहुचि न चलिआ कोइ ॥ गिआनी जीवै सदा सदा सुरती ही पति होइ ॥ सरफै सरफै सदा सदा एवै गई विहाइ ॥ नानक किस नो आखीऐ विणु पुछिआ ही लै जाइ ॥ ३१ ॥

कोई जितना भी जीवन गुजार ले, मगर जीने की तमन्ना बनी रहती है, संसार का कार्य पूरा नहीं होता। ज्ञानी पुरुष सदैव जीता है, प्रभु-ध्यान में प्रतिष्ठा प्राप्त करता है। धीरे-धीरे जीवन बेकार ही चला जाता है। गुरु नानक फुरमान करते हैं– किसी को क्या दोष दिया जाए, जब बिना इजाज़त ही वह ले जाता है॥३१॥

दोसु न देअहु राइ नो मति चलै जां बुढा होवै ॥ गलां करे घणेरीआ तां अंन्हे पवणा खाती टोवै ॥ ३२ ॥

धनवान को दोष मत दो, जब बूढ़ा हो जाता है तो उसकी बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है। वह बातें बहुत बड़ी-बड़ी करता है, पर अज्ञान के कारण नीचे ही गिरता है॥३२॥

पूरे का कीआ सभ किछु पूरा घटि वधि किछु नाही ॥ नानक गुरमुखि ऐसा जाणै पूरे मांहि समांही ॥ ३३ ॥

पूर्ण परमेश्वर का बनाया सब पूर्ण है, कम या अधिक कुछ नहीं। गुरु नानक फुरमान करते हैं कि गुरुमुख उसे ही माना जाता है, जो हरदम पूर्ण परमेश्वर के ध्यान में समाया रहता है॥३३॥

★★★

सलोक महला ३ ੧ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

वह परब्रह्म केवल एक (ओंकार-स्वरूप) है, सतगुरु की कृपा से प्राप्ति होती है।

अभिआगत एह न आखीअहि जिन कै मन महि भरमु ॥ तिन के दिते नानका तेहो जेहा धरमु ॥ १ ॥

जिसके दिल में लोभ भ्रम है, वह अभ्यागत नहीं कहा जा सकता। गुरु नानक कथन करते हैं कि उसको दिए दान का फल भी वैसा ही होता है॥१॥

अभै निरंजन परम पदु ता का भीखकु होइ ॥ तिस का भोजनु नानका विरला पाए कोइ ॥ २ ॥

गुरु नानक कहते हैं, जो अभय, मायातीत ईश्वर का भिक्षुक होता है, उसका भोजन (हरिनाम) कोई विरला (गुरु) ही जुटा पाता है॥२॥

होवा पंडितु जोतकी वेद पड़ा मुखि चारि ॥ नवा खंडा विचि जाणीआ अपने चज वीचार ॥ ३ ॥

बेशक पण्डित ज्योतिषी बन जाऊँ, मुख से चार वेदों का पाठ करूँ। परंतु अपने आचरण अथवा चरित्र की वजह से ही पूरे संसार में ख्याति पा सकता हूँ॥३॥

ब्रहमण कैली घातु कंञका अणचारी का धानु ॥ फिटक फिटका कोड़ु बदीआ सदा सदा अभिमानु ॥ पाहि एते जाहि वीसरि नानका इकु नामु ॥ सभ बुधी जालीअहि इकु रहै ततु गिआनु ॥ ४ ॥

ब्राह्मण-हत्या, गौ-वध, कन्या की हत्या एवं पापी-दुराचारी का धन-सब धिक्कार योग्य है, बुरे काम करके बुराइयों का कोढ़ पाना तथा सदा अभिमान बहुत बुरे हैं। गुरु नानक फुरमाते हैं– परमात्मा को विस्मृत करना इससे भी बड़ा पाप है। सब चतुराइयों को छोड़कर केवल तत्व ज्ञान ही रहता है॥४॥

माथै जो धुरि लिखिआ सु मेटि न सकै कोइ ॥ नानक जो लिखिआ सो वरतदा सो बूझै जिस नो नदरि होइ ॥ ५ ॥

विधाता ने जो भाग्य लेख लिख दिया है, उसे कोई बदल नहीं सकता। गुरु नानक कहते हैं– जो नसीब में लिखा है, वही होता है। जिस पर ईश्वर-कृपा होती है, वह इस सच्चाई को समझ लेता है॥५॥

जिनी नामु विसारिआ कूड़ै लालचि लगि ॥ धंधा माइआ मोहणी अंतरि तिसना अगि ॥ जिन्हा वेलि न तूंबड़ी माइआ ठगे ठगि ॥ मनमुखि बंन्हि चलाईअहि ना मिलही वगि सगि ॥ आपि भुलाए भुलीऐ आपे मेलि मिलाइ ॥ नानक गुरमुखि छुटीऐ जे चलै सतिगुर भाइ ॥ ६ ॥

जिन लोगों ने झूठे लालच में फँसकर ईश्वर को भुला दिया है, वे माया के मोह में काम-धंधों में लगे रहते हैं और उनके अन्तर्मन में तृष्णाग्नि जलती रहती है। जिनके हृदय में ईशोपासना की बेल नहीं, भक्ति रूपी फल नहीं, वे माया के धोखे में फँसे रहते हैं। स्वेच्छाचारियों को बांधकर ले जाया जाता है और महात्मा रूपी गाय तथा (दुष्ट रूपी) कुत्ते का मेल नहीं होता। जब ईश्वर आप ही हमें भुला देता है तो हम भूल जाते हैं और हमारा उससे मिलाप उसके आप मिलाने से ही होता है। गुरु नानक फुरमाते हैं कि यदि सतिगुरु की रज़ानुसार चला जाए तो गुरुमुख बनकर संसार के बन्धनों से छुटकारा हो जाता है॥६॥

सालाही सालाहणा भी सचा सालाहि ॥ नानक सचा एकु दरु बीभा परहरि आहि ॥ ७ ॥

परमात्मा की ही प्रशंसा करो; केवल वही प्रशंसा के लायक है। गुरु नानक का कथन है कि हे भाई ! परमात्मा का द्वार ही सच्चा है, अन्य दर छोड़ने योग्य है॥७॥

नानक जह जह मै फिरउ तह तह साचा सोइ ॥ जह देखा तह एकु है गुरमुखि परगटु होइ ॥ ८ ॥

गुरु नानक फुरमाते हैं— मैं जहाँ-जहाँ जाता हूँ, वहाँ एकमात्र ईश्वर ही है। जहाँ देखता हूँ, वहाँ एक वही मौजूद है और वह गुरु द्वारा ही प्रगट होता है॥८॥

दूख विसारणु सबदु है जे मंनि वसाए कोइ ॥ गुर किरपा ते मनि वसै करम परापति होइ ॥ ९ ॥

प्रभु-शब्द सब दुखों को दूर करने वाला है, कोई मन में बसा ले (इससे सब दुखों का अन्त होता है)। यह मन में गुरु की कृपा से ही बसता है और भाग्य से ही प्राप्त होता है॥९॥

नानक हउ हउ करते खपि मुए खूहणि लख असंख ॥ सतिगुर मिले सु उबरे साचै सबदि अलंख ॥ १० ॥

गुरु नानक फुरमाते हैं— अभिमान करते लाखों असंख्य लोग तबाह हो गए हैं। जिसे सतिगुरु मिला, वह सच्चे शब्द में लीन होकर बच गया है॥१०॥

जिना सतिगुरु इक मनि सेविआ तिन जन लागउ पाइ ॥ गुर सबदी हरि मनि वसै माइआ की भुख जाइ ॥ से जन निरमल ऊजले जि गुरमुखि नामि समाइ ॥ नानक होरि पतिसाहीआ कूड़ीआ नामि रते पातिसाह ॥ ११ ॥

जिन्होंने मन लगाकर सतिगुरु की सेवा की है, उन लोगों के चरणों में लग जाओ। गुरु के उपदेश से ईश्वर दिल में बसता है और माया की भूख निवृत्त हो जाती है। वही व्यक्ति मन से निर्मल एवं साफ़ है, जो गुरुमुख बनकर हरिनाम में विलीन रहते हैं। नानक फुरमाते हैं कि अन्य राजाधिकार झूठे हैं, प्रभु नाम में लीन रहने वाले ही असल में बादशाह हैं॥११॥

जिउ पुरखै घरि भगती नारि है अति लोचै भगती भाइ ॥ बहु रस सालणे सवारदी खट रस मीठे पाइ ॥ तिउ बाणी भगत सलाहदे हरि नामै चितु लाइ ॥ मनु तनु धनु आगै राखिआ सिरु वेचिआ गुर आगै जाइ ॥ भै भगती भगत बहु लोचदे प्रभ लोचा पूरि मिलाइ ॥ हरि प्रभु वेपरवाहु है कितु खाधै तिपताइ ॥ सतिगुर कै भाणै जो चलै तिपतासै हरि गुण गाइ ॥ धनु धनु कलजुगि नानका जि चले सतिगुर भाइ ॥ १२ ॥

ज्यों पति के घर में प्यारी पत्नी प्रेम-मुहब्बत की चाह करती है। वह खूब स्वादिष्ट भोजन एवं मिष्ठान तैयारी करती है। वैसे ही भक्तजन मन लगाकर वाणी से परमात्मा की प्रशंसा-गान करते हैं। वे अपना मन, तन, धन सर्वस्व आगे रख देते हैं और अपना सिर भी गुरु के सन्मुख भेंट कर देते हैं। भक्तगण भक्ति-भाव की बहुत आकांक्षा करते हैं और प्रभु उनकी हर चाह पूरी करता है और मिला लेता है। प्रभु बे-परवाह है, वह किस तरह तृप्त होता है। जो सतिगुरु की रज़ानुसार चलता है, गुणगान करता है तो ही प्रभु तृप्त होता है। गुरु नानक कथन करते हैं कि कलियुग में वही व्यक्ति प्रशंसा के पात्र हैं, जो सतिगुरु की रज़ा में चलते हैं॥ १२॥

सतिगुरू न सेविओ सबदु न रखिओ उर धारि ॥ धिगु तिना का जीविआ कितु आए संसारि ॥ गुरमती भउ मनि पवै तां हरि रसि लगै पिआरि ॥ नाउ मिलै धुरि लिखिआ जन नानक पारि उतारि ॥ १३ ॥

जो सतगुरु की सेवा नहीं करते, न ही शब्द-प्रभु को अपने दिल में बसाते हैं। ऐसे लोगों का जीना धिक्कार योग्य है, वे संसार में क्योंकर आए हैं। गुरु की शिक्षा से मन में श्रद्धा उत्पन्न होती है तो हरि से प्रेम लगन लग जाती है। नानक का कथन है कि जिसके भाग्य में प्रारम्भ से लिखा होता है, उसे ही हरिनाम प्राप्त होता है और वह संसार-सागर से मुक्त हो जाता है॥ १३॥

माइआ मोहि जगु भरमिआ घरु मुसै खबरि न होइ ॥ काम क्रोधि मनु हिरि लइआ मनमुख अंधा लोइ ॥ गिआन खड़ग पंच दूत संघारे गुरमति जागै सोइ ॥ नाम रतनु परगासिआ मनु तनु निरमलु होइ ॥ नामहीन नकटे फिरहि बिनु नावै बहि रोइ ॥ नानक जो धुरि करतै लिखिआ सु मेटि न सकै कोइ ॥ १४ ॥

दुनिया माया-मोह में भटक रही है, उसका घर लुट रहा है किन्तु उसे कोई खबर नहीं होती। काम-क्रोध ने मन को चुरा लिया है और मन-मर्जी करने वाला अन्धा बना हुआ है। जो गुरु के उपदेश से सजग होता है, वह ज्ञान की तलवार से पाँच विकारों का अन्त कर देता है। हरिनाम रत्न से जीव के अन्तर्मन में उजाला होता है, इससे मन तन निर्मल हो जाता है। ईश्वर के नाम से विहीन रहने वाले तिरस्कार ही पाते हैं और नाम के बिना बैठकर पछताते हैं। गुरु नानक फ़ुरमाते हैं– विधाता ने जो तकदीर में लिख दिया है, उसे कोई बदल नहीं सकता॥ १४॥

गुरमुखा हरि धनु खटिआ गुर कै सबदि वीचारि ॥ नामु पदारथु पाइआ अतुट भरे भंडार ॥ हरि गुण बाणी उचरहि अंतु न पारावारु ॥ नानक सभ कारण करता करै वेखै सिरजनहारु ॥ १५ ॥

गुरु के उपदेश का मनन करके गुरुमुख हरिनाम धन का लाभ प्राप्त करते हैं। नाम पदार्थ पाकर उनके भण्डार भर जाते हैं। वे वाणी से परमात्मा की सराहना करते हैं, जिसका कोई अन्त नहीं। हे नानक! स्रष्टा प्रभु सब करने-करवाने वाला है, वही सब देखता है॥ १५॥

गुरमुखि अंतरि सहजु है मनु चड़िआ दसवै आकासि ॥ तिथै ऊंघ न भुख है हरि अंम्रित नामु सुख वासु ॥ नानक दुखु सुखु विआपत नही जिथै आतम राम प्रगासु ॥ १६ ॥

गुरुमुख के अन्तर्मन में शान्ति बनी रहती है और उसका मन दसम द्वार में दाखिल हो जाता है, वहाँ पर कोई निद्रा अथवा भूख नहीं और हरिनाम अमृत का सुख रहता है। गुरु नानक फुरमान करते हैं कि जहाँ सर्वात्म है, वहाँ दुख-सुख का प्रभाव नहीं॥ १६॥

काम क्रोध का चोलड़ा सभ गलि आए पाइ ॥ इकि उपजहि इकि बिनसि जांहि हुकमे आवै जाइ ॥ जंमणु मरणु न चुकई रंगु लगा दूजै भाइ ॥ बंधनि बंधि भवाईअनु करणा कछू न जाइ ॥ १७ ॥

सब लोग काम-क्रोध का पहनावा धारण करके आते हैं। कोई जन्म लेता है तो कोई मृत्यु को प्राप्त हो जाता है, इस प्रकार ईश्वर के हुक्म से आवागमन बना रहता है। लोग द्वैतभाव में लीन रहते हैं, जिस कारण जन्म-मरण का चक्र दूर नहीं होता। जीव संसार के बन्धनों में पड़कर योनि-चक्र में भटकते रहते हैं और उनसे स्वयं कुछ भी किया नहीं जाता (सब परमात्मा की रज़ा में चल रहा है)॥१७॥

जिन कउ किरपा धारीअनु तिना सतिगुरु मिलिआ आइ ॥ सतिगुरि मिले उलटी भई मरि जीविआ सहजि सुभाइ ॥ नानक भगती रतिआ हरि हरि नामि समाइ ॥ १८ ॥

जिन पर ईश्वर कृपा करता है, उनका सतिगुरु से मिलन हो जाता है। सतिगुरु को मिलकर उनका जीवन बदल जाता है और सहज स्वाभाविक ही मरजीवा हो जाते हैं। हे नानक! वे भक्ति में लीन रहकर प्रभु में समा जाते हैं॥१८॥

मनमुख चंचल मति है अंतरि बहुतु चतुराई ॥ कीता करतिआ बिरथा गइआ इकु तिलु थाइ न पाई ॥ पुंन दानु जो बीजदे सभ धरम राइ कै जाई ॥ बिनु सतिगुरू जमकालु न छोडई दूजै भाइ खुआई ॥ जोबनु जांदा नदरि न आवई जरु पहुचै मरि जाई ॥ पुतु कलतु मोहु हेतु है अंति बेली को न सखाई ॥ सतिगुरु सेवे सो सुखु पाए नाउ वसै मनि आई ॥ नानक से वडे वडभागी जि गुरमुखि नामि समाई ॥ १९ ॥

स्वेच्छाचारी की बुद्धि चंचल है, वह मन में बहुत चतुराई करता है। उसका किया-कराया सब व्यर्थ हो जाता है और कुछ भी साकार नहीं होता। जो दान पुण्य करते हैं, यमराज के समक्ष पड़ताल होती है। सतिगुरु के बिना यमराज नहीं छोड़ता और वह द्वैतभाव में दुखी होता है। यौवन गुजरते मालूम नहीं होता, बुढ़ापा आ जाता है और मौत को प्यारा हो जाता है। पुत्र-पत्नी से मोह प्रेम बना हुआ था लेकिन अंतकाल कोई साथी नहीं बनता। सतिगुरु की सेवा से ही सुख प्राप्त होता है और मन में हरिनाम अवस्थित हो जाता है। हे नानक! वे लोग बहुत भाग्यशाली हैं, जो गुरु के द्वारा नाम में लीन रहते हैं॥१९॥

मनमुख नामु न चेतनी बिनु नावै दुख रोइ ॥ आतमा रामु न पूजनी दूजै किउ सुखु होइ ॥ हउमै अंतरि मैलु है सबदि न काढहि धोइ ॥ नानक बिनु नावै मैलिआ मुए जनमु पदारथु खोइ ॥ २० ॥

स्वेच्छाचारी परमात्मा के नाम को याद नहीं करता और नाम से वंचित होकर दुखी होता है। अन्तरात्मा में प्रभु की पूजा नहीं करता, फिर द्वैतभाव में कैसे सुख मिल सकता है। उसके मन में अहंकार की मैल भरी रहती है और शब्द से उस मैल को नहीं धोता। हे नानक! परमात्मा के नाम बिना स्वेच्छाचारी अहंकार की मैल में खत्म हो जाते हैं और अपना जीवन व्यर्थ ही खो देते हैं॥२०॥

मनमुख बोले अंधुले तिसु महि अगनी का वासु ॥ बाणी सुरति न बुझनी सबदि न करहि प्रगासु ॥ ओना आपणी अंदरि सुधि नही गुर बचनि न करहि विसासु ॥ गिआनीआ अंदरि गुर सबदु है नित हरि लिव सदा विगासु ॥ हरि गिआनीआ की रखदा हउ सद बलिहारी तासु ॥ गुरमुखि जो हरि सेवदे जन नानकु ता का दासु ॥ २१ ॥

मनमति लोग अंधे एवं बहरे हैं, उनके मन में तृष्णा की अग्नि ही रहती है। वे वाणी को नहीं समझते और न ही शब्द-प्रभु का प्रकाश करते हैं। उनको तो अपनी होश नहीं, गुरु के वचन पर भी भरोसा नहीं करते। ज्ञानी के मन में गुरु उपदेश अवस्थित होता है और वह ईश्वर के ध्यान में सदैव प्रसन्न रहता है। ज्ञानी को प्रभु ही मोह-माया से बचाता है, ऐसे व्यक्ति पर तो मैं सदैव कुर्बान जाता हूँ। गुरु नानक फुरमाते हैं कि जो गुरुमुख जन ईश्वर की आराधना करते हैं, हम उनके दास हैं॥२१॥

माइआ भुइअंगमु सरपु है जगु घेरिआ बिखु माइ ॥ बिखु का मारणु हरि नामु है गुर गरुड़ सबदु मुखि पाइ ॥ जिन कउ पूरबि लिखिआ तिन सतिगुरु मिलिआ आइ ॥ मिलि सतिगुर निरमलु होइआ बिखु हउमै गइआ बिलाइ ॥ गुरमुखा के मुख उजले हरि दरगह सोभा पाइ ॥ जन नानकु सदा कुरबाणु तिन जो चालहि सतिगुर भाइ ॥ २२ ॥

माया जहरीली नागिन है, इसके जहर ने पूरे जगत को घेर रखा है। हरिनाम इस जहर का अंत करने वाला है और गुरु रूपी गरुड़ शब्द मुख में डालता है। जिनके भाग्य में प्रारम्भ से लिखा होता है, उनका सतिगुरु से मिलाप हो जाता है। सतिगुरु से मिलकर मन निर्मल हो जाता है और अभिमान रूपी जहर बाहर निकल जाता है। गुरुमुख प्राणियों के मुख उज्ज्वल होते हैं और वे प्रभु-दरबार में शोभा के पात्र बनते हैं। गुरु नानक फुरमाते हैं– जो सतिगुरु की आज्ञानुसार चलते हैं, मैं उन पर सदैव कुर्बान जाता हूँ॥ २२॥

सतिगुर पुरखु निरवैरु है नित हिरदै हरि लिव लाइ ॥ निरवैरै नालि वैरु रचाइदा अपणै घरि लूकी लाइ ॥ अंतरि क्रोधु अहंकारु है अनदिनु जलै सदा दुखु पाइ ॥ कूड़ु बोलि बोलि नित भउकदे बिखु खाधे दूजै भाइ ॥ बिखु माइआ कारणि भरमदे फिरि घरि घरि पति गवाइ ॥ बेसुआ केरे पूत जिउ पिता नामु तिसु जाइ ॥ हरि हरि नामु न चेतनी करतै आपि खुआइ ॥ हरि गुरमुखि किरपा धारीअनु जन विछुड़े आपि मिलाइ ॥ जन नानकु तिसु बलिहारणै जो सतिगुर लागे पाइ ॥ २३ ॥

प्रेम की मूर्त्त सतिगुरु निर्वेर है, उसके दिल में हरदम प्रभु-भक्ति की लगन लगी रहती है। जो सज्जनों से वैर करता है, वह अपने घर में आग लगाता है। मन में क्रोध एवं अहंकार के कारण वह प्रतिदिन जलता है और सदैव दुखी होता है। वह झूठ बोल-बोलकर नित्य भौंकता है और द्वैतभाव में जहर सेवन करता है। ऐसे व्यक्ति माया जहर की खातिर भटकते हैं और घर-घर इज्जत गंवाते हैं। वेश्या के पुत्र की तरह उनको (गुरु) पिता का नाम नहीं मिलता। वे ईश्वर को याद नहीं करते और स्वयं ही दुख-तकलीफों में ख्वार होते हैं। परमात्मा कृपा करके स्वयं ही बिछुड़े हुओं को मिला लेता है। गुरु नानक फुरमाते हैं– जो सतिगुरु के चरणों में लगते हैं, मैं उन पर कुर्बान जाता हूँ॥२३॥

नामि लगे से ऊबरे बिनु नावै जम पुरि जांहि ॥ नानक बिनु नावै सुखु नही आइ गए पछुताहि ॥ २४ ॥

हरिनाम में लीन होने वाले तो बच जाते हैं, अन्यथा नाम से विहीन रहकर यमपुरी जाना पड़ता है। हे नानक! हरिनाम के बिना सुख प्राप्त नहीं होता और जीव आवागमन में पछताता रहता है॥२४॥

चिंता धावत रहि गए तां मनि भइआ अनंदु ॥ गुर प्रसादी बुझीऐ सा धन सुती निचिंद ॥ जिन कउ पूरबि लिखिआ तिन्हा भेटिआ गुर गोविंदु ॥ नानक सहजे मिलि रहे हरि पाइआ परमानंदु ॥ २५ ॥

जब चिन्ता-बेचैनी दूर हो जाती है तो मन में आनंद पैदा होता है। गुरु की कृपा से तथ्य को समझने वाली जीव-स्त्री बेफिक्र होकर सोती है। जिनके भाग्य में पूर्व से लिखा होता है, उनकी गुरु-परमेश्वर से भेंट हो जाती है। हे नानक! जो सहज-स्वाभाविक मिले रहते हैं, वही परमानंद प्रभु को पाते हैं॥२५॥

सतिगुरु सेवनि आपणा गुर सबदी वीचारि ॥ सतिगुर का भाणा मंनि लैनि हरि नामु रखहि उर धारि ॥ ऐथै ओथै मंनीअनि हरि नामि लगे वापारि ॥ गुरमुखि सबदि सिञापदे तितु साचै दरबारि ॥ सचा सउदा खरचु सचु अंतरि पिरमु पिआरु ॥ जमकालु नेड़ि न आवई आपि बखसे करतारि ॥ नानक नाम रते से धनवंत हैनि निरधनु होरु संसारु ॥ २६ ॥

जो गुरु-शब्द का चिंतन करते हुए सतिगुरु की सेवा करते हैं। सतिगुरु की रज़ा को मानकर परमात्मा को अपने दिल में बसाते हैं, वे लोक-परलोक में यश पाते हैं और हरिनाम के व्यापार में लीन रहते हैं। वे गुरु के उपदेश से सच्चे दरबार में माननीय होते हैं। इनके मन में प्रभु से प्रेम बना रहता है और इनका सौदा एवं खर्च सब सच्चा होता है। यमराज इनके निकट भी नहीं आता और प्रभु स्वयं ही बख्श देता है। गुरु नानक फुरमान करते हैं कि परमात्मा के नाम में लीन रहने वाले ही धनवान् हैं और बाकी संसार के लोग निर्धन हैं॥२६॥

जन की टेक हरि नामु हरि बिनु नावै ठवर न ठाउ ॥ गुरमती नाउ मनि वसै सहजे सहजि समाउ ॥ वडभागी नामु धिआइआ अहिनिसि लागा भाउ ॥ जन नानकु मंगै धूड़ि तिन हउ सद कुरबाणै जाउ ॥ २७ ॥

ईश्वर का नाम ही सेवक का आसरा है, ईश्वर के बिना उसका कोई ठिकाना नहीं। गुरु के उपदेश से मन में हरिनाम बसता है और वह सहज स्वाभाविक ही सत्य में विलीन हो जाता है। बड़े भाग्य से परमात्मा का मनन किया है, दिन-रात उसी से प्रेम लगा हुआ है। नानक का कथन है कि मैं तो प्रभु-भक्तों की चरण-धूल ही चाहता हूँ और उन पर सदैव कुर्बान जाता हूँ॥ २७॥

लख चउरासीह मेदनी तिसना जलती करे पुकार ॥ इहु मोहु माइआ सभु पसरिआ नालि चलै न अंती वार ॥ बिनु हरि सांति न आवई किसु आगै करी पुकार ॥ वडभागी सतिगुरु पाइआ बूझिआ ब्रहमु बिचारु ॥ तिसना अगनि सभ बुझि गई जन नानक हरि उरि धारि ॥ २८ ॥

चौरासी लाख योनियों वाली पृथ्वी तृष्णाग्नि में जलती हुई पुकार करती है कि यह माया-मोह सब ओर फैला हुआ है और अंत में कोई साथ नहीं देता। भगवान के बिना शान्ति प्राप्त नहीं होती, फिर किसके आगे पुकार की जाए। जिस भाग्यशाली ने सतिगुरु को प्राप्त किया है, उसने ब्रह्मज्ञान जान लिया है। गुरु नानक फुरमान करते हैं— जिन भक्तजनों ने ईश्वर को दिल में बसाया है, उनकी तृष्णाग्नि बुझ गई है॥२८॥

असी खते बहुतु कमावदे अंतु न पारावारु ॥ हरि किरपा करि कै बखसि लैहु हउ पापी वड गुनहगारु ॥ हरि जीउ लेखै वार न आवई तूं बखसि मिलावणहारु ॥ गुर तुठै हरि प्रभु मेलिआ सभ किलविख कटि विकार ॥ जिना हरि हरि नामु धिआइआ जन नानक तिन्ह जैकारु ॥ २९ ॥

हम बहुत गलतियाँ एवं कसूर करते हैं, जिनका कोई अन्त नहीं पाया जा सकता। हे परमेश्वर ! कृपा करके हमें क्षमा कर दो, हम पापी एवं बड़े गुनहगार हैं। यदि हमारे पापों का हिसाब करने लग गए तो अन्त नहीं हो पाएगा, तू कृपा करके चरणों में मिलाने वाला है। दरअसल गुरु प्रसन्न होकर प्रभु से मिलाने वाला है और वह सब पाप-विकार काट देता है। गुरु नानक फुरमाते हैं— जिन्होंने परमात्मा का भजन किया है, उनकी ही जग में कीर्ति हुई है॥२६॥

विछुड़ि विछुड़ि जो मिले सतिगुर के भै भाइ ॥ जनम मरण निहचलु भए गुरमुखि नामु धिआइ ॥ गुर साधू संगति मिलै हीरे रतन लभंन्हि ॥ नानक लालु अमोलका गुरमुखि खोजि लहंन्हि ॥ ३० ॥

अनेक जन्मों से बिछुड़े हुए जो सतिगुरु के प्रेम में मिले रहते हैं। जो गुरु की शरण में परमात्मा का ध्यान करते हैं, उनका जन्म-मरण निवृत्त हो जाता है। जो लोग गुरु साधु की संगत में आते हैं, उनको नाम रूपी अमूल्य हीरे एवं रत्न ही प्राप्त होते हैं। गुरु नानक फुरमान करते हैं— हरिनाम रूपी अमूल्य मोती गुरमुख जिज्ञासु ही खोजते हैं॥३०॥

मनमुख नामु न चेतिओ धिगु जीवणु धिगु वासु ॥ जिस दा दिता खाणा पैनणा सो मनि न वसिओ गुणतासु ॥ इहु मनु सबदि न भेदिओ किउ होवै घर वासु ॥ मनमुखीआ दोहागणी आवण जाणि मुईआसु ॥ गुरमुखि नामु सुहागु है मसतकि मणी लिखिआसु ॥ हरि हरि नामु उरि धारिआ हरि हिरदै कमल प्रगासु ॥ सतिगुरु सेवनि आपणा हउ सद बलिहारी तासु ॥ नानक तिन मुख उजले जिन अंतरि नामु प्रगासु ॥ ३१ ॥

मन की मर्जी करने वाले प्रभु-नाम का चिंतन नहीं करते, उनका जीना एवं रहना धिक्कार योग्य है। जिस दाता का दिया खाने-पहनने को मिलता है, उस गुणनिधान को वे दिल में नहीं बसाते। जब तक यह मन शब्द में बिंध नहीं पाता, सच्चे घर में कैसे रहा जा सकता है। स्वेच्छाचारी जीव-स्त्रियाँ दुहागिन हैं, आवागमन में पड़ी रहती हैं। गुरुमुख का हरिनाम सुहाग है और मस्तक पर यही चिन्ह लिखा है। जो परमात्मा को दिल में बसाता है, उसका हृदय-कमल खिल जाता है। जो अपने सतिगुरु की सेवा में लीन रहते हैं, मैं उन पर सदैव बलिहारी जाता हूँ। हे नानक ! उन्हीं के मुख उज्ज्वल होते हैं, जिनके मन में नाम का आलोक होता है॥३१॥

सबदि मरै सोई जनु सिझै बिनु सबदै मुकति न होई ॥ भेख करहि बहु करम विगुते भाइ दूजै परज विगोई ॥ नानक बिनु सतिगुर नाउ न पाईऐ जे सउ लोचै कोई ॥ ३२ ॥

जो शब्द द्वारा (मायावी वृत्ति की तरफ से) मरता है, वही व्यक्ति बन्धनों से मुक्त माना जाता है और शब्द के बिना मुक्ति प्राप्त नहीं होती। मनुष्य वेषाडम्बर करते हैं, बहुत सारे कर्मकाण्डों में पड़े रहते हैं और द्वैतभाव ने पूरी दुनिया को दुखों में डाल रखा है। हे नानक ! यदि कोई कितनी भी अभिलाषा करे, परन्तु गुरु के बिना नाम प्राप्त नहीं होता॥३२॥

हरि का नाउ अति वड ऊचा ऊची हू ऊचा होई ॥ अपड़ि कोइ न सकई जे सउ लोचै कोई ॥ मुखि संजम हछा न होवई करि भेख भवै सभ कोई ॥ गुर की पउड़ी जाइ चड़ै करमि परापति होई ॥ अंतरि आइ वसै गुर सबदु वीचारै कोइ ॥ नानक सबदि मरै मनु मानीऐ साचे साची सोइ ॥ ३३ ॥

परमात्मा का नाम सबसे बड़ा, सर्वोत्कृष्ट, ऊँचे से ऊँचा, कीर्तिमान है। उस तक कोई पहुँच नहीं सकता, बेशक कोई कितनी भी आकांक्षा करे। मुँह से बोलने से संयम नहीं होता, हर कोई

वेषों में घूम रहा है। गुरु की सीढ़ी पर भाग्यशाली ही चढ़ता है, जो कर्म-फल से प्राप्त होती है। जो कोई शब्द-गुरु का चिंतन करता है, उसके दिल में प्रभु बस जाता है। हे नानक! जो शब्द से (विकारों की ओर से) मरता है, उसी का मन संतुष्ट होता है और सच्चा यश पाता है॥३३॥

माइआ मोहु दुखु सागरु है बिखु दुतरु तरिआ न जाइ ॥ मेरा मेरा करदे पचि मुए हउमै करत विहाइ ॥ मनमुखा उरवारु न पारु है अध विचि रहे लपटाइ ॥ जो धुरि लिखिआ सु कमावणा करणा कछू न जाइ ॥ गुरमती गिआनु रतनु मनि वसै सभु देखिआ ब्रहमु सुभाइ ॥ नानक सतिगुरि बोहिथै वडभागी चड़ै ते भउजलि पारि लंघाइ ॥ ३४ ॥

माया-मोह दुखों का भयानक सागर है, इस कठिन सागर से तैरा नहीं जा सकता। अहम्-भाव करते कितने ही लोग खत्म हो गए हैं और अभिमान में ही उनकी जिन्दगी गुजर गई है। हठधर्मी व्यक्तियों को किनारा नहीं मिलता और वे बीच में ही रह जाते हैं। दरअसल जो विधाता ने तकदीर में लिख दिया है, वही करना पड़ता है, अन्य कुछ नहीं हो सकता। गुरु की शिक्षा से मन में ज्ञान बसता है और स्वाभाविक ही सब ओर ब्रह्म दिखाई देता है। हे नानक! सतिगुरु रूपी जहाज़ पर खुशकिस्मत ही चढ़ता है और वह संसार-समुद्र से पार हो जाता है॥३४॥

बिनु सतिगुर दाता को नही जो हरि नामु देइ आधारु ॥ गुर किरपा ते नाउ मनि वसै सदा रहै उरि धारि ॥ तिसना बुझै तिपति होइ हरि कै नाइ पिआरि ॥ नानक गुरमुखि पाईऐ हरि अपनी किरपा धारि ॥ ३५ ॥

गुरु के सिवा कोई दाता नहीं, जो हरिनाम का आसरा प्रदान करे। गुरु की कृपा से मन में हरिनाम बसता है, जो सदैव दिल में बसा रहता है। हरिनाम से प्रेम करने से तृष्णा बुझ जाती है, मन तृप्त हो जाता है। हे नानक! गुरु तब प्राप्त होता है, जब ईश्वर अपनी कृपा करता है॥३५॥

बिनु सबदै जगतु बरलिआ कहणा कछू न जाइ ॥ हरि रखे से उबरे सबदि रहे लिव लाइ ॥ नानक करता सभ किछु जाणदा जिनि रखी बणत बणाइ ॥ ३६ ॥

शब्द के बिना समूचा जगत बावला हो रहा है, इस बारे अन्य कुछ कहा नहीं जा सकता। जिनकी परमात्मा हिफाजत करता है, ऐसे लोग शब्द में लीन रहकर बच जाते हैं। हे नानक! जिसने रचना रची है, वह विधाता सब जानता है॥३६॥

होम जग सभि तीरथा पढ़ि पंडित थके पुराण ॥ बिखु माइआ मोहु न मिटई विचि हउमै आवणु जाणु ॥ सतिगुर मिलिऐ मलु उतरी हरि जपिआ पुरखु सुजाणु ॥ जिना हरि हरि प्रभु सेविआ जन नानकु सद कुरबाणु ॥ ३७ ॥

होम, यज्ञ, तीर्थ एवं वेद-पुराणों का पाठ-पठन करके पण्डित भी हताश हो गए हैं, लेकिन मोह-माया का जहर दूर नहीं होता और अभिमान में आवागमन बना रहता है। जब सतगुरु मिलता तो मन की मैल धुल जाती है और मन सुजान परमेश्वर का जाप करता है। गुरु नानक फुरमाते हैं कि हम उन पर सदैव कुर्बान हैं, जिन्होंने प्रभु की उपासना की है॥३७॥

माइआ मोहु बहु चितवदे बहु आसा लोभु विकार ॥ मनमुखि असथिरु ना थीऐ मरि बिनसि जाइ खिन वार ॥ वड भागु होवै सतिगुरु मिलै हउमै तजै विकार ॥ हरि नामा जपि सुखु पाइआ जन नानक सबदु वीचार ॥ ३८ ॥

अधिकांश व्यक्ति माया-मोह में फँसकर बहुत पाने की तमन्ना करते हैं, बहुत आशाएँ लगा लेते हैं, इस तरह लोभ तथा विकारों में पड़ जाते हैं। स्वेच्छाचारी को शान्ति प्राप्त नहीं होती और पल में नष्ट हो जाता है। अगर अच्छी किस्मत हो तो जीव को सतगुरु मिल जाता है और वह अभिमान-विकारों को छोड़ देता है। हे नानक ! शब्द का मुख्य विचार यही है कि परमात्मा का नाम जपने से ही सच्चा सुख प्राप्त होता है॥३८॥

बिनु सतिगुर भगति न होवई नामि न लगै पिआरु ॥ जन नानक नामु अराधिआ गुर कै हेति पिआरि ॥ ३६ ॥

गुरु के बिना भक्ति नहीं होती और न ही हरिनाम से प्रेम लगता है। हे नानक ! ईश्वर की आराधना गुरु के प्रेम व रज़ा से ही होती है॥३६॥

लोभी का वेसाहु न कीजै जे का पारि वसाइ ॥ अंति कालि तिथै धुहै जिथै हथु न पाइ ॥ मनमुख सेती संगु करे मुहि कालख दागु लगाइ ॥ मुह काले तिन्ह लोभीआं जासनि जनमु गवाइ ॥ सतसंगति हरि मेलि प्रभ हरि नामु वसै मनि आइ ॥ जनम मरन की मलु उतरै जन नानक हरि गुन गाइ ॥ ४० ॥

हे भाई ! जितना भी हो सके, लोभी व्यक्ति का ऐतबार मत करो। क्योंकि वह आखिरी वक्त वहाँ पर धोखा देता है, जहाँ बचना मुश्किल हो जाता है। स्वेच्छाचारी की संगत करने से मुँह में बदनामी की कालिमा लगती है। लोभियों की बेइज्जती होती है और वे अपना जीवन बेकार ही गंवा देते हैं। हे ईश्वर ! हमें सत्संगत में मिला दो, ताकि तेरा नाम हमारे मन में बस जाए। गुरु नानक फुरमान करते हैं कि ईश्वर की महिमागान करने से जन्म-मरण की मैल साफ हो जाती है॥४०॥

धुरि हरि प्रभि करतै लिखिआ सु मेटणा न जाइ ॥ जीउ पिंडु सभु तिस दा प्रतिपालि करे हरि राइ ॥ चुगल निंदक भुखे रुलि मुए एना हथु न किथाऊ पाइ ॥ बाहरि पाखंड सभ करम करहि मनि हिरदै कपटु कमाइ ॥ खेति सरीरि जो बीजीऐ सो अंति खलोआ आइ ॥ नानक की प्रभ बेनती हरि भावै बखसि मिलाइ ॥ ४१ ॥

प्रभु ने शुरु से जो तकदीर में लिख दिया है, उसे बदला या मिटाया नहीं जा सकता। प्राण, शरीर सब उसी का दिया हुआ है, वह स्रष्टा परमेश्वर ही हमारा पालन-पोषण करता है। चुगलखोर एवं निंदा करने वाले भूखे ही खत्म हो जाते हैं और उनको कुछ भी नहीं मिलता। वे बाहर से पाखण्ड एवं सब कर्म करते हैं, परन्तु उनके दिल में कपट ही भरा रहता है। शरीर रूपी खेत में जो अच्छा-बुरा बोया होता है, आखिर उसी का फल सामने आ जाता है। नानक की प्रभु से विनती है कि यदि तुझे ठीक लगे तो हमें बख्श कर अपने साथ मिला लो॥४१॥

मन आवण जाणु न सुझई ना सुझै दरबारु ॥ माइआ मोहि पलेटिआ अंतरि अगिआनु गुबारु ॥ तब नरु सुता जागिआ सिरि डंडु लगा बहु भारु ॥ गुरमुखां करां उपरि हरि चेतिआ से पाइनि मोख दुआरु ॥ नानक आपि ओहि उधरे सभ कुटंब तरे परवार ॥ ४२ ॥

मन को आवागमन की कोई सूझ नहीं और न ही प्रभु दरबार का ज्ञान है। मन माया-मोह में लीन होकर अज्ञान के अन्धेरे में ही रहता है। जब यम का भारी दण्ड लगता है तो ही व्यक्ति

मोह की निद्रा से जागता है। गुरमुख हरदम परमात्मा की स्तुति में लीन रहते हैं और वे मोक्ष प्राप्त कर लेते हैं। हे नानक! वे स्वयं तो मुक्त होते ही हैं, पूरे परिवार को पार करवा देते हैं ॥४२॥

सबदि मरै सो मुआ जापै ॥ गुर परसादी हरि रसि ध्रापै ॥ हरि दरगहि गुर सबदि सिञापै ॥ बिनु सबदै मुआ है सभु कोइ ॥ मनमुखु मुआ अपुना जनमु खोइ ॥ हरि नामु न चेतहि अंति दुखु रोइ ॥ नानक करता करे सु होइ ॥ ४३ ॥

असल में वही मरता है, जो शब्द से (विकारों की ओर से) मरता है। गुरु की कृपा से हरि भजन का आनंद प्राप्त होता और शब्द-गुरु से प्रभु-दरबार में सम्मान हासिल होता है। शब्द के बिना हर कोई मरता है, पर मनमुख मरकर अपना जीवन गंवा देते हैं। वे ईश्वर को स्मरण नहीं करते और आखिर में दुख-मुसीबतों में पड़कर रोते हैं। गुरु नानक फुरमाते हैं कि दरअसल (इनका भी कोई कसूर नहीं) जो परमेश्वर करता है, वही होता है॥४३॥

गुरमुखि बुढे कदे नाही जिन्हा अंतरि सुरति गिआनु ॥ सदा सदा हरि गुण रवहि अंतरि सहज धिआनु ॥ ओइ सदा अनंदि बिबेक रहहि दुखि सुखि एक समानि ॥ तिना नदरी इको आइआ सभु आतम रामु पछानु ॥ ४४ ॥

जिनके मन में ज्ञान-ध्यान होता है, ऐसे गुरुमुख कभी बूढ़े नहीं होते। वे अन्तर्मन में सहज स्वाभाविक ध्यान लगाए रखते हैं और सदैव परमात्मा की प्रशंसा व गुण गान में मस्त रहते हैं। वे सदैव आनंदमय एवं विवेकवान बने रहते हैं और दुख-सुख को बराबर ही मानते हैं। उनको सब में परमात्मा ही दिखाई देता है और अन्तरात्मा में उनको ब्रह्म की पहचान हो जाती है॥४४॥

मनमुखु बालकु बिरधि समानि है जिन्हा अंतरि हरि सुरति नाही ॥ विचि हउमै करम कमावदे सभ धरम राइ कै जांही ॥ गुरमुखि हछे निरमले गुर कै सबदि सुभाइ ॥ ओना मैलु पतंगु न लगई जि चलनि सतिगुर भाइ ॥ मनमुख जूठि न उतरै जे सउ धोवण पाइ ॥ नानक गुरमुखि मेलिअनु गुर कै अंकि समाइ ॥ ४५ ॥

स्वेच्छाचारी बच्चों-बूढ़ों की तरह हैं, जिनके मन में ईश्वर की स्मृति नहीं होती। वे अभिमान में फँसकर कर्म करते हैं, जिस कारण यमराज ही उनके कर्मों का हिसाब करता है। जो गुरु के उपदेश में रत रहते हैं, ऐसे गुरुमुख अच्छे एवं दिल से निर्मल हैं। वे सतिगुरु की रज़ानुसार जीवन-आचरण बिताते हैं और उनको कोई मोह-माया की मैल नहीं लगती। स्वेच्छाचारी को सौ बार भी धोया जाए परन्तु उसकी जूठन दूर नहीं होती। हे नानक! गुरुमुख गुरु की शरण में ही समाए रहते हैं॥४५॥

बुरा करे सु केहा सिझै ॥ आपणै रोहि आपे ही दझै ॥ मनमुखि कमला रगड़ै लुझै ॥ गुरमुखि होइ तिसु सभ किछु सुझै ॥ नानक गुरमुखि मन सिउ लुझै ॥ ४६ ॥

जो किसी का बुरा करता है, उसकी भी क्या दशा होती है। वह स्वयं भी क्रोध की ज्वाला में जलता रहता है। स्वेच्छाचारी पगला बना उलझनों में फँसा रहता है। जब गुरुमुख बन जाता है तो उसे सब ज्ञान हो जाता है। हे नानक! गुरमुख मन से ही जूझता है॥४६॥

जिना सतिगुरु पुरखु न सेविओ सबदि न कीतो वीचारु ॥ ओइ माणस जूनि न आखीअनि पसू ढोर गावार ॥ ओना अंतरि गिआनु न धिआनु है हरि सउ प्रीति न पिआरु ॥ मनमुख मुए विकार महि मरि जमहि वारो वार ॥ जीवदिआ नो मिलै सु जीवदे हरि जगजीवन उर धारि ॥ नानक गुरमुखि सोहणे तितु सचै दरबारि ॥ ४७ ॥

जिन्होंने सतगुरु की सेवा नहीं की, न ही ब्रह्म-शब्द का चिंतन किया है, वे मनुष्य नहीं, दरअसल ऐसे मूर्ख तो पशु कहलाने के हकदार हैं। उनके मन में कोई ज्ञान-ध्यान नहीं होता और वे ईश्वर से भी प्रेम नहीं करते। स्वेच्छाचारी विकारों में ही मरते हैं और बार-बार जन्म-मरण को प्राप्त होते हैं। जिसने दिल में परमात्मा को बसाया है, उस आत्मिक रूप से जीवित गुरमुख को मिलकर अन्य भी जिंदा हो जाते है। गुरु नानक फुरमान करते हैं कि प्रभु के दरबार में गुरमुख ही सुन्दर लगते हैं॥४७॥

हरि मंदरु हरि साजिआ हरि वसै जिसु नालि ॥ गुरमती हरि पाइआ माइआ मोह परजालि ॥ हरि मंदरि वसतु अनेक है नव निधि नामु समालि ॥ धनु भगवंती नानका जिना गुरमुखि लधा हरि भालि ॥ वडभागी गड़ मंदरु खोजिआ हरि हिरदै पाइआ नालि ॥ ४८ ॥

शरीर रूपी हरिमन्दिर की रचना हरि ने ही की है और वह उसी में रह रहा है। गुरु की शिक्षा से माया-मोह को दूर करने से ही हरि प्राप्त होता है। हरिमन्दिर में अनेक वस्तुएँ मौजूद हैं, सुखों के भण्डार हरिनाम का स्मरण करो। नानक फुरमान करते हैं— वह जीव-स्त्री धन्य एवं भाग्यशाली है, जिसने गुरु द्वारा प्रभु को प्राप्त किया है। उस भाग्यशाली ने शरीर रूपी मन्दिर में खोजकर प्रभु को पा लिया है॥४८॥

मनमुख दह दिसि फिरि रहे अति तिसना लोभ विकार ॥ माइआ मोहु न चुकई मरि जंमहि वारो वार ॥ सतिगुरु सेवि सुखु पाइआ अति तिसना तजि विकार ॥ जनम मरन का दुखु गइआ जन नानक सबदु बीचारि ॥ ४९ ॥

मनमति पुरुष तृष्णा, लोभ, विकारों में फँसकर दसों दिशाओं में भटकता रहता है। उसका माया-मोह दूर नहीं होता, जिस कारण वह बार-बार जन्मता मरता है। यदि तृष्णा एवं विकारों को छोड़कर सतिगुरु की सेवा की जाए तो सुख प्राप्त हो जाता है। गुरु नानक फुरमान करते हैं, जिन्होंने शब्द-गुरु का गहन चिंतन किया है, उनके जन्म-मरण का दुख दूर हो गया है॥४९॥

हरि हरि नामु धिआइ मन हरि दरगह पावहि मानु ॥ किलविख पाप सभि कटीअहि हउमै चुकै गुमानु ॥ गुरमुखि कमलु विगसिआ सभु आतम ब्रहमु पछानु ॥ हरि हरि किरपा धारि प्रभ जन नानक जपि हरि नामु ॥ ५० ॥

हे सज्जनो ! मन में हरिनाम का मनन करो, तभी प्रभु-दरबार में सम्मान प्राप्त होगा। (हरिनाम से) पाप-दोष सब कट जाते हैं और अहम्-अभिमान समाप्त हो जाता है। गुरुमुख का हृदय-कमल सदा खिला रहता है और उसे सब ओर ब्रह्म ही दिखाई देता है। गुरु नानक फुरमान करते हैं कि जब प्रभु अपनी कृपा की बरसात कर देता है तो जिज्ञासु भक्तजन हरिनाम जपते रहते हैं॥५०॥

धनासरी धनवंती जाणीऐ भाई जां सतिगुर की कार कमाइ ॥ तनु मनु सउपे जीअ सउ भाई लए हुकमि फिराउ ॥ जह बैसावहि बैसह भाई जह भेजहि तह जाउ ॥ एवडु धनु होरु को नही भाई जेवडु सचा नाउ ॥ सदा सचे के गुण गावां भाई सदा सचे कै संगि रहाउ ॥ पैनणु गुण चंगिआईआ भाई आपणी पति के साद आपे खाइ ॥ तिस का किआ सालाहीऐ भाई दरसन कउ बलि जाइ ॥ सतिगुर विचि वडीआ वडिआईआ भाई करमि मिलै तां पाइ ॥ इकि हुकमु मंनि न जाणनी भाई दूजै भाइ फिराइ ॥ संगति ढोई ना मिलै भाई बैसणि मिलै न थाउ ॥ नानक हुकमु तिना मनाइसी भाई जिना धुरे कमाइआ नाउ ॥ तिन्ह विटहु हउ वारिआ भाई तिन कउ सद बलिहारै जाउ ॥ ५१ ॥

धनासरी राग द्वारा गान करती हुई वही जीव-स्त्री धनवान् मानी जाती है, जो सतिगुरु की सेवा में तल्लीन रहती है। वह अपना तन, मन, प्राण सब गुरु को सौंप देती है और गुरु की आज्ञा मानती है। जहाँ सतिगुरु बैठाता है, बैठ जाती है, जहाँ भेजता है, वही चली जाती है। सच्चे नाम जैसा धन अन्य कोई नहीं। मैं सदा सच्चे प्रभु के गुण गाता हूँ और सदैव सच्चे के संग रहता हूँ। जो शुभ गुण एवं अच्छाइयों को धारण करता है, वह स्वयं प्रभु के आनंद को पाता है। उसकी क्या प्रशंसा की जाए, उसके दर्शनों पर कुर्बान जाना चाहिए। सतिगुरु में बहुत सारी खूबियाँ हैं और वह प्रभु-कृपा से ही प्राप्त होता है। किसी को हुक्म मानना नहीं आता और वह द्वैतभाव में फिरता है। उसे संगत मिलना तो दूर की बात है, बैठने को भी स्थान प्राप्त नहीं होता। गुरु नानक फुरमान करते हैं कि ईश्वर का हुक्म वही मानते हैं, जिन्होंने शुरु से हरिनाम की कमाई की होती है। मैं इन्हीं पर न्यौछावर हूँ और ऐसे लोगों पर सदैव कुर्बान जाता हूँ॥५१॥

से दाड़ीआं सचीआ जि गुर चरनी लगंन्हि ॥ अनदिनु सेवनि गुरु आपणा अनदिनु अनदि रहंन्हि ॥ नानक से मुह सोहणे सचै दरि दिसंन्हि ॥ ५२ ॥

वही दाढ़ियाँ सच्ची हैं, जो गुरु चरणों में लगती हैं। ऐसे लोग अपने गुरु की सेवा में तल्लीन रहते हैं और प्रतिदिन आनंदपूर्वक रहते हैं। हे नानक ! वही मुख सुन्दर हैं, जो सच्चे दरबार में दिखाई देते हैं॥५२॥

मुख सचे सचु दाड़ीआ सचु बोलहि सचु कमाहि ॥ सचा सबदु मनि वसिआ सतिगुर मांहि समांहि ॥ सची रासी सचु धनु उतम पदवी पांहि ॥ सचु सुणहि सचु मंनि लैनि सची कार कमाहि ॥ सची दरगह बैसणा सचे माहि समाहि ॥ नानक विणु सतिगुर सचु न पाईऐ मनमुख भूले जांहि ॥ ५३ ॥

जिनके मुख सच्चे और दाढ़ी भी सच्ची है, वे सत्य ही बोलते हैं और सत्कर्म ही करते हैं। उनके मन में सच्चा उपदेश ही बसता है और सतगुरु में लीन रहते हैं। उनकी जीवन-राशि एवं धन भी सच्चा है और उत्तम पदवी ही पाते हैं। वे सत्य ही सुनते हैं और सत्य को मन में बसाकर रखते हैं और सत्कर्म ही करते हैं। वे सच्चे दरबार में बैठकर सत्य में समा जाते हैं। हे नानक ! सतगुरु के बिना सत्य प्राप्त नहीं होता और मनमुखी भूले ही रहते हैं॥५३॥

बाबीहा प्रिउ प्रिउ करे जलनिधि प्रेम पिआरि ॥ गुर मिले सीतल जलु पाइआ सभि दूख निवारणहारु ॥ तिस चुकै सहजु ऊपजै चुकै कूक पुकार ॥ नानक गुरमुखि सांति होइ नामु रखहु उरि धारि ॥ ५४ ॥

जिज्ञासु पपीहा प्रेम समुद्र में प्रिय प्रिय करता है। जब गुरु मिलता है तो ही उसे हरिनाम रूपी शीतल जल प्राप्त होता है और उसके सब दुखों का निवारण हो जाता है। नाम जल से उसके अन्तर्मन में स्वाभाविक सुख उत्पन्न होता है और उसे उसकी सब कूक पुकार दूर हो जाती है। गुरु नानक फुरमाते हैं— गुरुमुख को ही शान्ति प्राप्त होती है और वह नाम को ही दिल में बसाकर रखता है ॥५४॥

बाबीहा तूं सचु चउ सचे सउ लिव लाइ ॥ बोलिआ तेरा थाइ पवै गुरमुखि होइ अलाइ ॥ सबदु चीनि तिख उतरै मंनि लै रजाइ ॥ चारे कुंडा झोकि वरसदा बूंद पवै सहजि सुभाइ ॥ जल ही ते सभ ऊपजै बिनु जल पिआस न जाइ ॥ नानक हरि जलु जिनि पीआ तिसु भूख न लागै आइ ॥ ५५ ॥

हे जिज्ञासु पपीहे ! तू सच ही बोल, परम सत्य परमेश्वर में लगन लगा। गुरु के सान्निध्य में गान करेगा तो तेरा किया गुणानुवाद फलदायक होगा। शब्द-गुरु को समझकर प्यास बुझ जाएगी, रज़ा को मानने से ही संभव है। फिर चारों तरफ से कृपा की बारिश हो जाती है और सहज स्वाभाविक नाम-बूँद मुख में पड़ती है। जल से ही सब उत्पन्न होता है और जल बिना प्यास दूर नहीं होती। हे नानक ! जो हरिनाम रूपी जल का पान करता है, उसे कोई भूख नहीं लगती ॥५५॥

बाबीहा तूं सहजि बोलि सचै सबदि सुभाइ ॥ सभु किछु तेरै नालि है सतिगुरि दीआ दिखाइ ॥ आपु पछाणहि प्रीतमु मिलै वुठा छहबर लाइ ॥ झिमि झिमि अंम्रितु वरसदा तिसना भुख सभ जाइ ॥ कूक पुकार न होवई जोती जोति मिलाइ ॥ नानक सुखि सवन्हि सोहागणी सचै नामि समाइ ॥ ५६ ॥

हे जिज्ञासु पपीहे ! तू सहज स्वाभाविक सच्चे उपदेश का उच्चारण कर। सतगुरु ने दिखा दिया है कि सब कुछ तेरे अन्तर में ही है। यदि आत्मज्ञान की पहचान हो जाए तो प्रियतम मिल जाता है और कृपा की बरसात होने लग जाती है। फिर नाम-अमृत की रिमझिम बरसात होती है, जिससे तृष्णा एवं भूख निवृत्त हो जाती है। आत्म-ज्योति परम-ज्योति में विलीन हो जाती है और कोई पुकार नहीं होती। हे नानक ! सच्चे नाम में लीन रहने वाली सुहागिन सदा सुखपूर्वक रहती है ॥५६॥

धुरहु खसमि भेजिआ सचै हुकमि पठाइ ॥ इंदु वरसै दइआ करि गूढ़ी छहबर लाइ ॥ बाबीहे तनि मनि सुखु होइ जां ततु बूंद मुहि पाइ ॥ अनु धनु बहुता उपजै धरती सोभा पाइ ॥ अनदिनु लोकु भगति करे गुर कै सबदि समाइ ॥ आपे सचा बखसि लए करि किरपा करै रजाइ ॥ हरि गुण गावहु कामणी सचै सबदि समाइ ॥ भै का सहजु सीगारु करिहु सचि रहहु लिव लाइ ॥ नानक नामो मनि वसै हरि दरगह लए छडाइ ॥ ५७ ॥

मालिक ने हुक्म करके भेजा, (गुरु रूपी) बादल ने दया करके (प्रेम की) बरसात की है। पपीहे का तन मन तभी सुखी होता है, जब उसके मुख में स्वाति बूँद पड़ती है। अन्न-धन बहुत अधिक उत्पन्न होता है और धरती भी शोभा पाती है। गुरु के उपदेश में लीन होकर जो लोग परमेश्वर की भक्ति करते हैं, परमेश्वर स्वयं ही अपनी मर्जी से कृपा करके उनको बख्श लेता है। जीव रूपी कामिनी सच्चे शब्द में लीन होकर परमात्मा का भजन गान करती है। वह श्रद्धा-भय का स्वाभाविक ही शृंगार करती है और प्रभु के ध्यान में लीन रहती है। हे नानक ! यदि हरिनाम मन में बस जाए तो प्रभु-दरबार में मुक्ति मिल जाती है ॥५७॥

बाबीहा सगली धरती जे फिरहि ऊडि चड़हि आकासि ॥ सतिगुरि मिलिऐ जलु पाईऐ चूकै भूख पिआस ॥ जीउ पिंडु सभु तिस का सभु किछु तिस कै पासि ॥ विणु बोलिआ सभु किछु जाणदा किसु आगै कीचै अरदासि ॥ नानक घटि घटि एको वरतदा सबदि करे परगास ॥ ५८ ॥

जिज्ञासु-पपीहा पूरी धरती पर घूमता है, आकाश में उड़ता है। जब गुरु मिल जाता है तो उसे नाम-जल प्राप्त होता है और उसकी भूख-प्यास मिट जाती है। यह प्राण-शरीर सर्वस्व परमात्मा की देन है, सब कुछ उसी के पास है। वह बिना बोले ही (सुख-दुख) सब जानता है, उसके आगे प्रार्थना ही करो। हे नानक! सब में एक ईश्वर ही व्याप्त है, शब्द-गुरु से उसका अन्तर्मन में प्रकाश होता है॥५८॥

नानक तिसै बसंतु है जि सतिगुरु सेवि समाइ ॥ हरि वुठा मनु तनु सभु परफड़ै सभु जगु हरीआवलु होइ ॥ ५६ ॥

गुरु नानक फुरमान करते हैं— जो सतिगुरु की सेवा में लीन रहता है, उसे वसन्त का आनंद प्राप्त होता है। प्रभु की प्रसन्नता से मन-तन खिल जाता है और पूरा जगत हरा-भरा हो जाता है॥५६॥

सबदे सदा बसंतु है जितु तनु मनु हरिआ होइ ॥ नानक नामु न वीसरै जिनि सिरिआ सभु कोइ ॥ ६० ॥

प्रभु-शब्द से सदैव खुशियाँ-ही-खुशियाँ हैं, जिससे तन मन हरा हो जाता है। गुरु नानक कथन करते हैं कि जिस विधाता ने समूची सृष्टि सहित हम सबको बनाया है, उस परमेश्वर का नाम हमें कभी न भूले॥ ६०॥

नानक तिना बसंतु है जिना गुरमुखि वसिआ मनि सोइ ॥ हरि वुठै मनु तनु परफड़ै सभु जगु हरिआ होइ ॥ ६१ ॥

हे नानक! जिन गुरुमुखों के मन में परमात्मा बस जाता है, वही वसंत मौसम का आनंद पाते हैं। ईश्वर की कृपा से मन-तन खिल उठता है और पूरा जगत प्रसन्न हो जाता है॥६१॥

वडड़ै झालि झलुंभलै नावड़ा लईऐ किसु ॥ नाउ लईऐ परमेसरै भंनण घड़ण समरथु ॥ ६२ ॥

(प्रश्न-) प्रभात काल उठकर किसका नाम जपना चाहिए?

(उत्तर-) उस परमेश्वर का नाम जपना चाहिए, जो तोड़ने-बनाने में समर्थ है॥६२॥

हरहट भी तूं तूं करहि बोलहि भली बाणि ॥ साहिबु सदा हदूरि है किआ उची करहि पुकार ॥ जिनि जगतु उपाइ हरि रंगु कीआ तिसै विटहु कुरबाणु ॥ आपु छोडहि तां सहु मिलै सचा एहु वीचारु ॥ हउमै फिका बोलणा बुझि न सका कार ॥ वणु त्रिणु त्रिभवणु तुझै धिआइदा अनदिनु सदा विहाण ॥ बिनु सतिगुर किनै न पाइआ करि करि थके वीचार ॥ नदरि करहि जे आपणी तां आपे लैहि सवारि ॥ नानक गुरमुखि जिन्ही धिआइआ आए से परवाणु ॥ ६३ ॥

अरे रहट! तू भी तू-तू करता है, बड़ी मधुर ध्वनि करता है। मालिक सदैव सामने है, क्यों ऊँची पुकार करता है। जिस ईश्वर ने जगत उत्पन्न करके लीला की है, उस पर मैं सदैव कुर्बान जाता हूँ। केवल यही सच्ची बात है कि अहम्-भाव को छोड़ दिया जाए तो प्रभु से मिलाप हो जाता

है। अहंकार भाव में कड़वा बोलने से भले-बुरे की समझ नहीं होती। तीनों लोक, पूरी कुदरत हे प्रभु ! तेरा ही भजन करती है और सदैव तेरी स्मृति में लीन रहती है। सतगुरु के बिना कोई भी ईश्वर को पा नहीं सका, बातें कर-करके सब थक गए हैं। जब मालिक अपनी कृपा-दृष्टि कर देता है तो स्वतः ही सफल कर देता है। गुरु नानक फुरमान करते हैं– जिन्होंने गुरु-चरणों में लगकर परमात्मा का भजन किया है, उनका जन्म सफल हो गया है॥६३॥

जोगु न भगवी कपड़ी जोगु न मैले वेसि ॥ नानक घरि बैठिआ जोगु पाईऐ सतिगुर कै उपदेसि ॥ ६४ ॥

भगवा वस्त्र धारण करने या मलिन वेष से योग प्राप्त नहीं होता। गुरु नानक फुरमान करते हैं– दरअसल योग की प्राप्ति सतिगुरु के उपदेश से घर बैठे ही हो जाती है॥६४॥

चारे कुंडा जे भवहि बेद पड़हि जुग चारि ॥ नानक साचा भेटै हरि मनि वसै पावहि मोख दुआर ॥ ६५ ॥

बेशक चारों दिशाओं में भ्रमण किया जाए, कोई फायदा नहीं या चारों युग वेदों का पाठ-पठन कर लो। गुरु नानक कथन करते हैं कि जब सच्चे गुरु से भेंट होती है तो ईश्वर मन में बसता है एवं सुगम ही मोक्ष मिल जाता है॥६५॥

नानक हुकमु वरतै खसम का मति भवी फिरहि चल चित ॥ मनमुख सउ करि दोसती सुख कि पुछहि मित ॥ गुरमुख सउ करि दोसती सतिगुर सउ लाइ चितु ॥ जंमण मरण का मूलु कटीऐ तां सुखु होवी मित ॥ ६६ ॥

गुरु नानक फुरमान करते हैं कि सब ओर मालिक का हुक्म चल रहा है, हे मित्र ! तेरी बुद्धि खराब हो गई है, चंचल मन दोलायमान हो गया है। मनमुखों से दोस्ती करके सुख की क्यों उम्मीद कर रहे हो। उचित तो यही है कि गुरमुखों से दोस्ती कर और सच्चे गुरु के साथ मन लगा। हे मित्र ! जन्म-मरण का बन्धन कट जाएगा और सुख पाओगे॥६६॥

भुलिआं आपि समझाइसी जा कउ नदरि करे ॥ नानक नदरी बाहरी करण पलाह करे ॥ ६७ ॥

जिस पर अपनी कृपा-दृष्टि कर देता है, भूले-भटके को सही की समझ मिल जाती है। नानक का कथन है कि ईश्वर की कृपा से वंचित रहने वाला दुखों में ही रोता है॥६७॥

सलोक महला ४ १ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

वह परब्रह्म केवल एक (ओंकार-स्वरूप) है, सतगुरु की कृपा से प्राप्ति होती है।

वडभागीआ सोहागणी जिन्हा गुरमुखि मिलिआ हरि राइ ॥ अंतरि जोति परगासीआ नानक नामि समाइ ॥ १ ॥

वे जीव स्त्रियाँ खुशनसीब हैं, सुहागिन कहलाने की हकदार हैं, जिनको गुरु द्वारा पति-प्रभु मिला है। गुरु नानक फुरमान करते हैं कि इनके मन में प्रकाश हो जाता है और वे प्रभु-नाम में समाहित हो जाती हैं॥१॥

वाहु वाहु सतिगुरु पुरखु है जिनि सचु जाता सोइ ॥ जितु मिलिऐ तिख उतरै तनु मनु सीतलु होइ ॥ वाहु वाहु सतिगुरु सति पुरखु है जिस नो समतु सभ कोइ ॥ वाहु वाहु सतिगुरु निरवैरु है जिसु निंदा उसतति तुलि होइ ॥ वाहु वाहु सतिगुरु सुजाणु है जिसु अंतरि ब्रहमु वीचारु ॥ वाहु वाहु सतिगुरु निरंकारु है जिसु अंतु न पारावारु ॥ वाहु वाहु सतिगुरू है जि सचु द्रिड़ाए सोइ ॥ नानक सतिगुर वाहु वाहु जिस ते नामु परापति होइ ॥ २ ॥

जिसने परमसत्य परमेश्वर को जान लिया है, वाह वाह !! वह सतिगुरु महान् है। उसे मिलकर प्यास दूर हो जाती है और तन मन को शान्ति प्राप्त हो जाती है। सत्य की मूर्ति सतिगुरु स्तुति योग्य है (क्योंकि) उसके लिए छोटा अथवा बड़ा हर कोई एक जैसा है। प्रेम की मूर्ति सतिगुरु वाह-वाह का हकदार है, जिसके लिए निन्दा अथवा प्रशंसा समान ही होती है। जिसके मन में ब्रह्म का चिंतन है, वह बुद्धिमान सतिगुरु तारीफ के काबिल है। वह निरंकार सतिगुरु स्तुत्य है, उसका कोई अन्त अथवा आर-पार नहीं। जो जीवों के दिल में हरिनाम बसाता है, वह सतिगुरु सराहनीय है। गुरु नानक फुरमान करते हैं— वह सतिगुरु वाह-वाह का हकदार है, जिससे ईश्वर का नाम प्राप्त होता है॥२॥

हरि प्रभ सचा सोहिला गुरमुखि नामु गोविंदु ॥ अनदिनु नामु सलाहणा हरि जपिआ मनि आनंदु ॥ वडभागी हरि पाइआ पूरन परमानंदु ॥ जन नानक नामु सलाहिआ बहुड़ि न मनि तनि भंगु ॥ ३ ॥

प्रभु का कीर्तिगान करो, गुरुमुख बनकर हर रोज़ हरिनाम जपना चाहिए। नित्य ईश्वर की सराहना करनी चाहिए, हरि का नाम जपने से मन आनंदमय हो जाता है। भाग्यशाली ही प्रभु को पाकर पूर्ण परमानंद पाता है। गुरु नानक फुरमान करते हैं कि जिन जिज्ञासुओं ने हरिनाम का संकीर्तन किया है, उनका मन तन दोबारा दुखी नहीं हुआ॥३॥

मूं पिरीआ सउ नेहु किउ सजण मिलहि पिआरिआ ॥ हउ ढूढेदी तिन सजण सचि सवारिआ ॥ सतिगुरु मैडा मितु है जे मिलै त इहु मनु वारिआ ॥ देंदा मूं पिरु दसि हरि सजणु सिरजणहारिआ ॥ नानक हउ पिरु भाली आपणा सतिगुर नालि दिखालिआ ॥ ४ ॥

मेरा तो प्रभु से ही प्रेम लगा हुआ है, उस प्यारे सज्जन से क्योंकर मिला जा सकता है? सत्य से शोभायमान सज्जन को ढूँढ रही हूँ। सच्चा गुरु मेरा मित्र है, अगर मिल जाए तो यह मन उसे न्यौछावर कर दूँ। मेरे प्रियतम (गुरु) सृजनहार प्रभु के बारे में मुझे बताता है। हे नानक! मैं अपने प्रभु को ढूँढ रही थी, सतिगुरु ने मन में ही दर्शन करा दिए हैं॥४॥

हउ खड़ी निहाली पंधु मतु मूं सजणु आवए ॥ को आणि मिलावै अजु मै पिरु मेलि मिलावए ॥ हउ जीउ करी तिस विटउ चउ खंनीऐ जो मै पिरी दिखावए ॥ नानक हरि होइ दइआलु तां गुरु पूरा मेलावए ॥ ५ ॥

मैं खड़ी रास्ता निहार रही हूँ, शायद मेरा सज्जन आ जाए। काश ! कोई आकर आज मुझे मेरे प्रियतम प्रभु से मिला दे। मैं अपने प्राण भी उस पर न्यौछावर करने को तैयार हूँ, जो मुझे प्रभु के दर्शन करा दे। गुरु नानक फुरमान करते हैं— जब परमात्मा दयालु होता है तो पूरे गुरु से मिला देता है॥५॥

अंतरि जोरु हउमै तनि माइआ कूड़ी आवै जाइ ॥ सतिगुर का फुरमाइआ मंनि न सकी दुतरु तरिआ न जाइ ॥ नदरि करे जिसु आपणी सो चलै सतिगुर भाइ ॥ सतिगुर का दरसनु सफलु है जो इछै सो फलु पाइ ॥ जिनी सतिगुरु मंनिआं हउ तिन के लागउ पाइ ॥ नानकु ता का दासु है जि अनदिनु रहै लिव लाइ ॥ ६ ॥

हमारे मन में अभिमान का बल है, तन में झूठी माया ने घर किया हुआ है, इसी वजह से जन्म-मरण का चक्र चलता है। गुरु का उपदेश हम लोग मानते नहीं, अतः कठिन भवसागर से तैर नहीं पाते। जिस पर ईश्वर अपनी कृपा कर देता है, वही गुरु के निर्देशानुसार चलता है। गुरु का दर्शन फलप्रद-सफल है, जो कामना होती है, वही फल प्राप्त हो जाता है। जिन्होंने गुरु का वंदन एवं मनन किया है, मैं उनके पैरों में पड़ता हूँ। गुरु नानक फुरमाते हैं— हमें उनकी दासता कबूल है, जो दिन-रात प्रभु-ध्यान में लीन रहते हैं॥६॥

जिना पिरी पिआरु बिनु दरसन किउ त्रिपतीऐ ॥ नानक मिले सुभाइ गुरमुखि इहु मनु रहसीऐ ॥ ७ ॥

जिनका ईश्वर से प्रेम है, वे भला दर्शन बिना कैसे तृप्त हो सकते हैं। हे नानक! गुरु के द्वारा वे सहज स्वाभाविक प्रभु से मिल जाते हैं और उनका मन प्रसन्न हो जाता है॥ ७॥

जिना पिरी पिआरु किउ जीवनि पिर बाहरे ॥ जां सहु देखनि आपणा नानक थीवनि भी हरे ॥ ८ ॥

जिनका परमेश्वर से प्रेम लगा हुआ है, वे उसके बिना भला कैसे जी सकते हैं। हे नानक! जब वे अपने प्रभु के दर्शन करते हैं तो उनका मन खिल उठता है॥८॥

जिना गुरमुखि अंदरि नेहु तै प्रीतम सचै लाइआ ॥ राती अतै डेहु नानक प्रेमि समाइआ ॥ ९ ॥

हे सच्चे प्रभु ! जिन गुरमुख जिज्ञासुओं के दिल में तूने अपना प्रेम लगाया है। गुरु नानक का कथन है कि वे दिन-रात प्रेम-भक्ति में लीन रहते हैं॥९॥

गुरमुखि सची आसकी जितु प्रीतमु सचा पाईऐ ॥ अनदिनु रहहि अनंदि नानक सहजि समाईऐ ॥ १० ॥

गुरुमुखों के दिल में सच्ची आशिकी लगी हुई है, जिस कारण वे प्रियतम प्रभु को पा लेते हैं। गुरु नानक फुरमाते हैं कि फिर वे दिन-रात आनंदमय रहते हैं, सहज-सुख में समाहित हो जाते हैं॥१०॥

सचा प्रेम पिआरु गुर पूरे ते पाईऐ ॥ कबहू न होवै भंगु नानक हरि गुण गाईऐ ॥ ११ ॥

सच्चा प्रेम भी पूरे गुरु से ही प्राप्त होता है। हे नानक ! ऐसा प्रेम कभी नहीं टूटता और हरदम ईश्वर का गुणगान होता रहता है॥ ११॥

जिन्हा अंदरि सचा नेहु किउ जीवन्हि पिरी विहूणिआ ॥ गुरमुखि मेले आपि नानक चिरी विछुंनिआ ॥ १२ ॥

जिनके दिल में सच्चा प्रेम लग गया है, वे प्रभु से विहीन रहकर कैसे जी सकते हैं। गुरु नानक कथन करते हैं कि चिरकाल से बिछुड़े हुओं का मिलन गुरु से ही होता है॥ १२॥

जिन कउ प्रेम पिआरु तउ आपे लाइआ करमु करि ॥ नानक लेहु मिलाइ मै जाचिक दीजै नामु हरि ॥ १३ ॥

हे प्रभु ! जिन भक्तों को तेरे साथ प्रेम है, वह भी तूने ही कृपा करके लगाया है। नानक की विनती है कि मुझ सरीखे याचक को भी हरिनाम देकर अपने चरणों में मिला लो॥१३॥

गुरमुखि हसै गुरमुखि रोवै ॥ जि गुरमुखि करे साई भगति होवै ॥ गुरमुखि होवै सु करे वीचारु ॥ गुरमुखि नानक पावै पारु ॥ १४ ॥

गुरुमुख (भक्ति के आनंद में) हँसता है और (प्रभु-वियोग के कारण) रोता है। जो गुरुमुख करता है, वही भक्ति होती है। जो गुरुमुख हो जाता है, वह सत्य का चिंतन करता है। गुरु नानक फुरमाते हैं कि गुरुमुख ही संसार-समुद्र से पार उतरता है॥१४॥

जिना अंदरि नामु निधानु है गुरबाणी वीचारि ॥ तिन के मुख सद उजले तितु सचै दरबारि ॥ तिन बहदिआ उठदिआ कदे न विसरै जि आपि बखसे करतारि ॥ नानक गुरमुखि मिले न विछुड़हि जि मेले सिरजणहारि ॥ १५ ॥

जिनके दिल में सुखनिधान हरिनाम है, जो गुरु की वाणी जपते हैं। उन्हीं के मुख सच्चे दरबार में उज्ज्वल होते हैं। उठते-बैठते उनको कभी परमात्मा नहीं भूलता, दरअसल कर्तार इनको स्वयं ही बख्श देता है। गुरु नानक फुरमान करते हैं कि जिसे सृष्टा अपने चरणों में मिला लेता है, वह गुरुमुख मिलकर उससे जुदा नहीं होता॥ १५॥

गुर पीरां की चाकरी महां करड़ी सुख सारु ॥ नदरि करे जिसु आपणी तिसु लाए हेत पिआरु ॥ सतिगुर की सेवै लगिआ भउजलु तरै संसारु ॥ मन चिंदिआ फलु पाइसी अंतरि बिबेक बीचारु ॥ नानक सतिगुरि मिलिऐ प्रभु पाईऐ सभु दूख निवारणहारु ॥ १६ ॥

गुरु एवं पीरों की सेवा बहुत कठिन है, लेकिन यही सुखदायक है। जिस पर प्रभु अपनी कृपा करता है, उसे सेवा-प्रेम लगा देता है। गुरु की सेवा में तल्लीन होने से प्राणी संसार-समुद्र से तिर जाता है। सेवा से दिल में विवेक एवं ज्ञान अवस्थित होता है और मनवांछित फल की प्राप्ति होती है। गुरु नानक फुरमान करते हैं– जब सच्चा गुरु मिल जाता है तो प्रभु भी प्राप्त हो जाता है, जो सब दुखों का निवारण करने वाला है॥१६॥

मनमुख सेवा जो करे दूजै भाइ चितु लाइ ॥ पुतु कलतु कुटंबु है माइआ मोहु वधाइ ॥ दरगहि लेखा मंगीऐ कोई अंति न सकी छडाइ ॥ बिनु नावै सभु दुखु है दुखदाई मोह माइ ॥ नानक गुरमुखि नदरी आइआ मोह माइआ विछुड़ि सभ जाइ ॥ १७ ॥

स्वेच्छाचारी द्वैतभाव में वृत्ति लगाकर सेवा करता है, उसका पुत्र-पत्नी इत्यादि परिवार से माया-मोह बढ़ जाता है। जब प्रभु-दरबार में कर्मों का हिसाब मांगा जाता है तो उसे कोई भी बचा नहीं पाता। हरिनाम के बिना सब दुख ही है और माया-मोह अति दुखदायक है। हे नानक ! जब गुरु की कृपा-दृष्टि होती है तो मोह-माया सब दूर हो जाते हैं॥१७॥

गुरमुखि हुकमु मंने सह केरा हुकमे ही सुखु पाए ॥ हुकमो सेवे हुकमु अराधे हुकमे समै समाए ॥ हुकमु वरतु नेमु सुच संजमु मन चिंदिआ फलु पाए ॥ सदा सुहागणि जि हुकमै बुझै सतिगुरु सेवै लिव लाए ॥ नानक क्रिपा करे जिन ऊपरि तिना हुकमे लए मिलाए ॥ १८ ॥

गुरुमुख हर समय अपने प्रभु के हुक्म को मानता है और उसके हुक्म से ही सुख प्राप्त करता है। वह उसके हुक्म का पालन करते हुए सेवा करता है, हुक्म में ही आराधना करता है, वह स्वयं तो हुक्म का पालन करता ही है, अपने संगियों को भी हुक्मानुसार चलने के लिए लगा देता है। परमेश्वर का हुक्म मानना ही उसके लिए व्रत-उपवास, नियम, शुद्धता एवं संयम है और हुक्मानुसार चलते हुए मनवांछित फल प्राप्त करता है। जो जीव-स्त्री प्रभु के हुक्म को समझती है, लगन लाकर सतिगुरु की सेवा करती है, वह सदैव सुहागिन है। गुरु नानक फुरमान करते हैं कि जिन पर ईश्वर अपनी कृपा करता है, उनको अपने हुक्म में मिला लेता है॥१८॥

मनमुखि हुकमु न बुझै बपुड़ी नित हउमै करम कमाइ ॥ वरत नेमु सुच संजमु पूजा पाखंडि भरमु न जाइ ॥ अंतरहु कुसुधु माइआ मोहि बेधे जिउ हसती छारु उडाए ॥ जिनि उपाए तिसै न चेतहि बिनु चेते किउ सुखु पाए ॥ नानक परपंचु कीआ धुरि करतै पूरबि लिखिआ कमाए ॥ १६ ॥

मनमुख पुरुष ईश्वर के हुक्म को नहीं समझता और बेचारा नित्य ही अहंकार में कर्म करता है। उसका व्रत-उपवास, नियम, शुद्धता, संयम, पूजा-पाठ इत्यादि पाखण्ड ही साबित होता है, उसका भ्रम बिल्कुल दूर नहीं होता। अन्तर्मन उसका माया-मोह ने ऐसे बिंधा होता है, जैसे हाथी अपने ऊपर ही धूल-मिट्टी उड़ाता है। जिस परमात्मा ने उत्पन्न किया, उसे याद नहीं करता, फिर उसे याद किए बिना सुख कैसे मिल सकता है। गुरु नानक फुरमाते हैं कि दरअसल यह प्रपंच ईश्वर ने ही किया है और पूर्व-कर्मानुसार मनमुख फल पाता है॥१६॥

गुरमुखि परतीति भई मनु मानिआ अनदिनु सेवा करत समाइ ॥ अंतरि सतिगुरु गुरू सभ पूजे सतिगुर का दरसु देखै सभ आइ ॥ मंनीऐ सतिगुर परम बीचारी जितु मिलिऐ तिसना भुख सभ जाइ ॥ हउ सदा सदा बलिहारी गुर अपुने जो प्रभु सचा देइ मिलाइ ॥ नानक करमु पाइआ तिन सचा जो गुर चरणी लगे आइ ॥ २० ॥

गुरु पर भरोसा हुआ तो मन प्रसन्न हो गया और दिन-रात सेवा में बीत रही है। हर कोई मन में गुरु की पूजा करता है और गुरु के दर्शनों के लिए सब आते हैं। मैं परम चिंतनशील सतिगुरु को ही मानता हूँ, जिसे मिलकर तृष्णा भूख सब दूर हो जाते हैं। मैं अपने गुरु पर सदैव कुर्बान जाता हूँ, जो सच्चे प्रभु से मिला देता है। नानक का कथन है कि बड़े भाग्य से जो गुरु के चरणों में लगे हैं, उन्होंने प्रभु को पा लिया है॥२०॥

जिन पिरीआ सउ नेहु से सजण मै नालि ॥ अंतरि बाहरि हउ फिरां भी हिरदै रखा समालि ॥ २१ ॥

जिस प्रभु से प्रेम लगा हुआ है, वह सज्जन हरदम मेरे साथ है। यद्यपि अंदर-बाहर जाता भी हूँ तो दिल में प्रभु को ही याद करता हूँ॥२१॥

जिना इक मनि इक चिति धिआइआ सतिगुर सउ चितु लाइ ॥ तिन की दुख भुख हउमै वडा रोगु गइआ निरदोख भए लिव लाइ ॥ गुण गावहि गुण उचरहि गुण महि सवै समाइ ॥ नानक गुर पूरे ते पाइआ सहजि मिलिआ प्रभु आइ ॥ २२ ॥

जिन्होंने एकाग्रचित होकर परमात्मा का ध्यान किया है, सतिगुरु से दिल लगाया है। उनका दुख, भूख, अहंकार इत्यादि बड़ा रोग दूर हो गया है और वे ईश्वर की स्मृति में सब दोषों से रहित हो गए हैं। वे ईश्वर का गुणगान करते हैं, उसकी महिमा का उच्चारण करते हैं और महिमा में ही लीन रहते हैं। नानक का मत है कि जिसने पूर्ण गुरु को पाया है, उसे सहज स्वाभाविक प्रभु आ मिला है॥२२॥

मनमुखि माइआ मोहु है नामि न लगै पिआरु ॥ कूड़ु कमावै कूड़ु संघरै कूड़ि करै आहारु ॥ बिखु माइआ धनु संचि मरहि अंति होइ सभु छारु ॥ करम धरम सुचि संजमु करहि अंतरि लोभु विकार ॥ नानक मनमुखि जि कमावै सु थाइ न पवै दरगह होइ खुआरु ॥ २३ ॥

मनमुखी जीव माया के मोह में पड़ा रहता है, अतः ईश्वर के नाम से प्रेम नहीं लगाता। वह झूठ ही कमाता है, झूठ जोड़ता है और झूठा आचरण ही करता है। वह विषय-विकारों के धन को इकट्ठा करता मृत्यु को प्राप्त हो जाता है, अंततः सब मिट्टी हो जाता है। वह कर्म-धर्म, शुद्धता एवं संयम इत्यादि करता है, परन्तु मन में लोभ विकारों में ग्रस्त रहता है। गुरु नानक फुरमाते हैं कि मनमुखी का कोई भी कार्य सफल नहीं होता और प्रभु-दरबार में ख्वार होता है॥२३॥

सभना रागां विचि सो भला भाई जितु वसिआ मनि आइ ॥ रागु नादु सभु सचु है कीमति कही न जाइ ॥ रागै नादै बाहरा इनी हुकमु न बूझिआ जाइ ॥ नानक हुकमै बूझै तिना रासि होइ सतिगुर ते सोझी पाइ ॥ सभु किछु तिस ते होइआ जिउ तिसै दी रजाइ ॥ २४ ॥

सब रागों में वही राग भला है, जिस द्वारा ईश्वर मन में बसता है। राग-संगीत सब सच्चे हैं, इनकी महत्ता अव्यक्त है। ईश्वर तो रागों-संगीत से भी बड़ा है, इन द्वारा उसके हुक्म को समझा नहीं जा सकता। गुरु नानक फुरमान करते हैं– जो लोग सतिगुरु से सूझ प्राप्त करते हैं, वही उसके हुक्म को समझ पाते हैं और उनका ही राग गान सफल होता है। सब कुछ उससे ही पैदा हुआ है, जैसे उस मालिक की मर्जी है, वैसा ही होता है॥२४॥

सतिगुर विचि अंम्रित नामु है अंम्रितु कहै कहाइ ॥ गुरमती नामु निरमलो निरमल नामु धिआइ ॥ अंम्रित बाणी ततु है गुरमुखि वसै मनि आइ ॥ हिरदै कमलु परगासिआ जोती जोति मिलाइ ॥ नानक सतिगुरु तिन कउ मेलिओनु जिन धुरि मसतकि भागु लिखाइ ॥ २५ ॥

अमृतमय भगवन्नाम गुरु में ही है, वह नामामृत का कीर्तन करता और जिज्ञासुओं से भी नाम का संकीर्तन करवाता है। गुरु का मत है कि परमात्मा का नाम निर्मल सागर है, अतः निर्मल नाम का भजन करो। यह अमृत-वाणी गुरु से ही मन में बसती है, जिससे हृदय-कमल प्रकाशमय हो जाता है और आत्म-ज्योति परम-ज्योति में विलीन हो जाती है। गुरु नानक फुरमान करते हैं सच्चे गुरु से मिलाप उन्हीं का होता है, जिनके ललाट पर भाग्य लिखा होता है॥२५॥

अंदरि तिसना अगि है मनमुख भुख न जाइ ॥ मोहु कुटंबु सभु कूड़ु है कूड़ि रहिआ लपटाइ ॥ अनदिनु चिंता चिंतवै चिंता बधा जाइ ॥ जंमणु मरणु न चुकई हउमै करम कमाइ ॥ गुर सरणाई उबरै नानक लए छडाइ ॥ २६ ॥

स्वेच्छाचारी के अन्तर्मन में तृष्णा की अग्नि लगी रहती है और उसकी वासना दूर नहीं होती। परिवार से मोह सब झूठा है, पर वह इस झूठ में ही लिपटा रहता है। वह प्रतिदिन चिंता-फिक्र में पड़ा रहता है और संसार की चिंताओं में फँसा रहता है। अहंकार में वह अहंकारयुक्त कर्म करता है, जिस कारण उसका जन्म-मरण नहीं छूटता। गुरु नानक का कथन है कि गुरु की शरण लेने से मनमुखी भी उबर जाता है, गुरु उसे संसार के बन्धनों से छुड़ा देता है॥२६॥

सतिगुर पुरखु हरि धिआइदा सतसंगति सतिगुर भाइ ॥ सतसंगति सतिगुर सेवदे हरि मेले गुरु मेलाइ ॥ एहु भउजलु जगतु संसारु है गुरु बोहिथु नामि तराइ ॥ गुरसिखी भाणा मंनिआ गुरु पूरा पारि लंघाइ ॥ गुरसिखां की हरि धूड़ि देहि हम पापी भी गति पांहि ॥ धुरि मसतकि हरि प्रभ लिखिआ गुर नानक मिलिआ आइ ॥ जमकंकर मारि बिदारिअनु हरि दरगह लए छडाइ ॥ गुरसिखा नो साबासि है हरि तुठा मेलि मिलाइ ॥ २७ ॥

गुरु की सत्संगत में श्रद्धा-भाव से परमात्मा का भजन गान होता है। जो सत्संगत में गुरु की सेवा करते हैं, गुरु उन्हें परमात्मा से मिला देता है। यह संसार भयानक व दुस्तर समुद्र है, गुरु जहाज है और हरिनाम ही तैराने वाला है। गुरु के शिष्यों ने रज़ा को मान लिया है और पूर्ण गुरु ने उनको पार उतार दिया है। हे हरि ! हमें भी गुरु के शिष्यों की चरण-धूलि प्रदान कर दो ताकि हम पापी भी मुक्ति पा लें। गुरु नानक फुरमान करते हैं– प्रभु ने जिसके मस्तक पर भाग्य लिखा है, उसे गुरु मिल गया है। वह यमदूतों को मारकर भगा देता है और प्रभु-दरबार में बचा लेता है। गुरु के शिष्यों को शाबाश है, जिनको परमेश्वर ने प्रसन्न होकर मिला लिया है॥२७॥

गुरि पूरै हरि नामु दिड़ाइआ जिनि विचहु भरमु चुकाइआ ॥ राम नामु हरि कीरति गाइ करि चानणु मगु देखाइआ ॥ हउमै मारि एक लिव लागी अंतरि नामु वसाइआ ॥ गुरमती जमु जोहि न सकै सचै नाइ समाइआ ॥ सभु आपे आपि वरतै करता जो भावै सो नाइ लाइआ ॥ जन नानकु नाउ लए तां जीवै बिनु नावै खिनु मरि जाइआ ॥ २८ ॥

उस पूर्ण गुरु ने परमात्मा का नाम सुमिरन करवाया है, जिसने मन में से भ्रमों को दूर कर दिया है । ईश्वर का कीर्तिगान करने से हमें सन्मार्ग दृष्टिगत हुआ। अहम् को मारकर हमने एक प्रभु में लगन लगाई है और मन में हरिनाम को बसाया है। गुरु-मतानुसार हरिनाम में लीन होने से यम भी बुरी नजर से नहीं देखता। सब ईश्वर ही करने वाला है, जब उसे ठीक लगता है, नाम-कीर्तन में लगा देता है। गुरु नानक फुरमाते हैं कि हमें तो हरिनाम जप कर जिंदगी मिल रही है, अन्यथा हरिनाम बिना तो पल में मर जाते हैं॥ २८ ॥

मन अंतरि हउमै रोगु भ्रमि भूले हउमै साकत दुरजना ॥ नानक रोगु गवाइ मिलि सतिगुर साधू सजणा ॥ २६ ॥

दुष्ट मायावी पुरुषों के मन में अहंकार का रोग लगा रहता है और अहंकार के कारण भ्रम में भूले रहते हैं। गुरु नानक फुरमान करते हैं— जब सतिगुरु, साधु सज्जन से मुलाकात होती है तो यह रोग दूर हो जाता है॥२६ ॥

गुरमती हरि हरि बोले ॥ हरि प्रेमि कसाई दिनसु राति हरि रती हरि रंगि चोले ॥ हरि जैसा पुरखु न लभई सभु देखिआ जगतु मै टोले ॥ गुर सतिगुरि नामु दिड़ाइआ मनु अनत न काहू डोले ॥ जन नानकु हरि का दासु है गुर सतिगुर के गुल गोले ॥ ३० ॥

गुरु की शिक्षा से जीव-स्त्री प्रभु का भजन करती है। वह दिन-रात प्रभु के प्रेम में आकर्षित रहती है और प्रभु-रंग में लीन रहती है। मैंने पूरे जगत में खोज कर देख लिया है, परन्तु ईश्वर जैसा परम पुरुष कहीं नहीं मिलता। गुरु परमात्मा का नाम जपवाता है, फिर मन कहीं भी दोलायमान नहीं होता। गुरु नानक फुरमाते हैं कि हम तो हरि के अनन्य भक्त हैं और अपने आप को गुरु-सतगुरु के सेवकों का सेवक मानते हैं॥३० ॥

सलोक महला ५ १ओं सतिगुर प्रसादि ॥

वह परब्रह्म केवल एक (ओंकार-स्वरूप) है, सतगुरु की कृपा से प्राप्ति होती है।

रते सेई जि मुखु न मोड़ंन्हि जिन्ही सिञाता साई ॥ झड़ि झड़ि पवदे कचे बिरही जिन्हा कारि न आई ॥ १ ॥

जिन लोगों ने मालिक को पहचान लिया है, वे उसकी भक्ति में ही लीन रहते हैं और कभी मुँह नहीं मोड़ते। जिनको प्रेम-भक्ति का कार्य नहीं आता, वे कच्चे प्रेमी टूट जाते हैं॥१॥

धणी विहूणा पाट पटंबर भाही सेती जाले ॥ धूड़ी विचि लुडंदड़ी सोहां नानक तै सह नाले ॥ २ ॥

प्रभु के बिना सुन्दर वस्त्र भी अग्नि में जला देने वाले हैं। गुरु नानक का कथन है कि हे प्रभु ! अगर तू मेरे साथ है तो मुझे धूल–मिट्टी में लोटना भी सुन्दर है॥२॥

गुर कै सबदि अराधीऐ नामि रंगि बैरागु ॥ जीते पंच बैराईआ नानक सफल मारू इहु रागु ॥ ३ ॥

गुरु के उपदेश से आराधना करो, प्रभु-नाम के रंग में वैराग्य प्राप्त होता है। हे नानक ! जो पाँच विकारों पर जीत पाते हैं, उनके लिए यह मारू राग सफल है॥३॥

जां मूं इकु त लख तउ जिती पिनणे दरि कितड़े ॥ बामणु बिरथा गइओ जनंमु जिनि कीतो सो विसरे ॥ ४ ॥

हे ब्राह्मण ! मेरे लिए तो एक परम परमेश्वर ही लाखों-करोड़ों समान है, जिसके द्वार पर कितने ही मांगने वाले हैं। हे ब्राह्मण ! तेरा जन्म व्यर्थ ही बीत गया है, जिस ईश्वर ने तुझे बनाया, तुमने उसे ही भुला दिया॥४॥

सोरठि सों रसु पीजीऐ कबहू न फीका होइ ॥ नानक राम नाम गुन गाईअहि दरगह निरमल सोइ ॥ ५ ॥

सोरठ राग द्वारा नाम रस पान करना चाहिए, जो कभी फीका नहीं होता। गुरु नानक फुरमाते हैं– जो ईश्वर का गुण-गान करता है, उसी की प्रभु-दरबार में प्रतिष्ठा होती है॥५॥

जो प्रभि रखे आपि तिन कोइ न मारई ॥ अंदरि नामु निधानु सदा गुण सारई ॥ एका टेक अगंम मनि तनि प्रभु धारई ॥ लगा रंगु अपारु को न उतारई ॥ गुरमुखि हरि गुण गाइ सहजि सुखु सारई ॥ नानक नामु निधानु रिदै उरि हारई ॥ ६ ॥

जिसे प्रभु बचाने वाला है, उसे कोई मार नहीं सकता। जिसके दिल में सुखनिधि प्रभु-नाम है, वह सदैव निरंकार का गुणानुवाद करता है। वह एक प्रभु का आसरा लेता है और मन तन

में उसे धारण करता है। उसे प्रभु का रंग लगा होता है, जिसे कोई उतार नहीं पाता। गुरुमुख ईश्वर का यशोगान करता है और स्वाभाविक सुख पाता है। हे नानक! वह अपने हृदय में सुखनिधि हरिनाम की माला धारण करता है॥ ६॥

करे सु चंगा मानि दुयी गणत लाहि ॥ अपणी नदरि निहालि आपे लैहु लाइ ॥ जन देहु मती उपदेसु विचहु भरमु जाइ ॥ जो धुरि लिखिआ लेखु सोई सभ कमाइ ॥ सभु कछु तिस दै वसि दूजी नाहि जाइ ॥ नानक सुख अनद भए प्रभ की मंनि रजाइ ॥ ७ ॥

परमात्मा जो भी करता है, उसे खुशी-खुशी अच्छा मानो, द्विधाभाव को छोड़ दो। वह अपनी कृपा-दृष्टि करके आप ही मिला लेता है। हे परमपिता! अपने भक्तों को उपदेश प्रदान करो, ताकि मन में से भ्रम दूर हो जाए। विधाता ने जो तकदीर में लिख दिया है, वही सब करना पड़ता है। सबकुछ परमेश्वर के वश में है, दूसरा कोई नहीं। गुरु नानक फुरमान करते हैं– प्रभु की रज़ा को मानने से ही सुख एवं आनंद प्राप्त होता है॥ ७॥

गुरु पूरा जिन सिमरिआ सेई भए निहाल ॥ नानक नामु अराधणा कारजु आवै रासि ॥ ८ ॥

जिन जिज्ञासुओं ने पूर्णगुरु का स्मरण किया है, वे निहाल हो गए हैं। नानक का कथन है कि ईश्वर की आराधना करने से सब काम पूरे हो जाते हैं॥ ८॥

पापी कंरम कमावदे करदे हाए हाइ ॥ नानक जिउ मथनि माधाणीआ तिउ मथे ध्रम राइ ॥ ९ ॥

पाप कर्म करने वाले अंततः हाय-हाय करते हैं। नानक कथन करते हैं कि ज्यों मथनी से मंथन किया जाता है, वैसे ही यमराज उनका मंथन करता है॥ ९॥

नामु धिआइनि साजना जनम पदारथु जीति ॥ नानक धरम ऐसे चवहि कीतो भवनु पुनीत ॥ १० ॥

धर्मात्मा पुरुष ईश्वर का ध्यान करते हुए अपना जन्म जीत लेते हैं। नानक का मत है कि वे धर्म का प्रचार करते हुए संसार को भी पवित्र कर देते हैं॥१०॥

खुभड़ी कुथाइ मिठी गलणि कुमंत्रीआ ॥ नानक सेई उबरे जिना भागु मथाहि ॥ ११ ॥

मैं तो गलत सलाहकारों की बातों को मीठा मानकर बुरे में फँस गई हूँ। हे नानक! जिनके ललाट पर उत्तम भाग्य है, वे बच गए हैं॥११॥

सुतड़े सुखी सवंन्हि जो रते सह आपणै ॥ प्रेम विछोहा धणी सउ अठे पहर लवंन्हि ॥ १२ ॥

जो अपने मालिक की याद में लीन रहते हैं, वही सुखपूर्वक सोते हैं। मालिक के प्रेम से जुदा होने वाले आठों प्रहर तंग होते हैं॥१२॥

सुतड़े असंख माइआ झूठी कारणे ॥ नानक से जागंन्हि जि रसना नामु उचारणे ॥ १३ ॥

झूठी माया के कारण अनगिनत लोग अज्ञान में सोए हुए हैं। हे नानक! जो रसना से ईश्वर के नाम का उच्चारण करते हैं, दरअसल वही जाग्रत माने जाते हैं॥ १३॥

म्रिग तिसना पेखि भुलणे वुठे नगर गंध्रब ॥ जिनी सचु अराधिआ नानक मनि तनि फब ॥ १४ ॥

मृगतृष्णा एवं गंधर्व नगरी को देखकर लोग भटके हुए हैं। गुरु नानक फुरमान करते हैं कि जो व्यक्ति ईश्वर की आराधना करते हैं, वही मन तन से सुन्दर लगते हैं॥ १४॥

पतित उधारण पारब्रहमु संम्रथ पुरखु अपारु ॥ जिसहि उधारे नानका सो सिमरे सिरजणहारु ॥ १५ ॥

परब्रह्म पतित जीवों का उद्धार करने वाला है, वह सर्वकला समर्थ एवं बे-अन्त है। गुरु नानक फुरमाते हैं— जिसका वह उद्धार करता है, वह उस सृजनहार का स्मरण करता है॥१५॥

दूजी छोडि कुवाटड़ी इकस सउ चितु लाइ ॥ दूजै भावीं नानका वहणि लुढ़ंदड़ी जाइ ॥ १६ ॥

द्वैतभाव का कुमार्ग छोड़कर भगवान से दिल लगाओ। हे नानक ! द्वैतभाव में रहने वाले लोग नदिया में बहने वाली चीज़ की तरह हैं॥१६॥

तिहटड़े बाजार सउदा करनि वणजारिआ ॥ सचु वखरु जिनी लदिआ से सचड़े पासार ॥ १७ ॥

लोग त्रिगुणात्मक माया के बाजार में जीवन का सौदा करते हैं। दरअसल वही सच्चे पंसारी कहलाने के हकदार हैं, जिन्होंने नाम रूपी सच्चा सौदा लाद लिया है॥१७॥

पंथा प्रेम न जाणई भूली फिरै गवारि ॥ नानक हरि बिसराइ कै पउदे नरकि अंध्यार ॥ १८ ॥

गंवार जीव-स्त्री प्रेम का रास्ता नहीं जानती और भटकती रहती है। हे नानक ! भगवान को भुलाकर वे घोर नरक में पड़ती है॥१८॥

माइआ मनहु न वीसरै मांगै दंमां दंम ॥ सो प्रभु चिति न आवई नानक नही करंमि ॥ १९ ॥

जीव के मन से धन-दौलत नहीं भूलती, बल्कि ज्यादा से ज्यादा धन ही मांगता है। गुरु नानक फुरमान करते हैं कि यदि भाग्य में बदा न हो तो उसे प्रभु याद नहीं आता॥१९॥

तिचरु मूलि न थुड़ींदो जिचरु आपि क्रिपालु ॥ सबदु अखुटु बाबा नानका खाहि खरचि धनु मालु ॥ २० ॥

जब तक ईश्वर कृपा बनी रहती है, तब तक किसी चीज़ की कमी नहीं आती। नानक का कथन है कि शब्द-प्रभु अक्षुण्ण भण्डार है, इस धन का स्वेच्छा से खर्च उपयोग किया जा सकता है॥२०॥

खंभ विकांदड़े जे लहां घिंना सावी तोलि ॥ तंनि जड़ांई आपणै लहां सु सजणु टोलि ॥ २१ ॥

यदि पंख बिक रहे हों तो उनको पर्याप्त मूल्य पर खरीद लूँगा। इनको अपने शरीर पर लगाकर अपने प्रभु को ढूँढ लूँगा॥ २१॥

सजणु सचा पातिसाहु सिरि साहां दै साहु ॥ जिसु पासि बहिठिआ सोहीऐ सभनां दा वेसाहु ॥ २२ ॥

मेरा सज्जन प्रभु ही सच्चा बादशाह है, वह शाहों से बड़ा शहंशाह है। उसके पास बैठते ही शोभा प्राप्त होती है, सब लोगों को उसी का भरोसा है॥२२॥

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥

वह अद्वितीय परब्रह्म जिसका वाचक ओम् है, केवल एक (ओंकार स्वरूप) है, गुरु की कृपा से प्राप्त होता है।

सलोक महला ६ ॥ गुन गोबिंद गाइओ नही जनमु अकारथ कीनु ॥ कहु नानक हरि भजु मना जिह बिधि जल कउ मीनु ॥ १ ॥

श्लोक महला ६॥ हे भाई! तुमने गोविन्द का गुणगान नहीं किया, अपना जीवन बेकार ही खो दिया है। गुरु नानक निर्देश करते हैं कि हे मन! परमात्मा का इस तरह भजन करो, जैसे मछली पानी में तल्लीन रहती है॥१॥

बिखिअन सिउ काहे रचिओ निमख न होहि उदासु ॥ कहु नानक भजु हरि मना परै न जम की फास ॥ २ ॥

हे भाई! क्योंकर विषय-विकारों में लीन हो, एक पल भी इनसे तुम अलग नहीं होते। गुरु नानक फुरमान करते हैं कि हे मन! भगवान का भजन कर लो, यम का फंदा नहीं पड़ेगा॥२॥

तरनापो इउ ही गइओ लीओ जरा तनु जीति ॥ कहु नानक भजु हरि मना अउध जातु है बीति ॥ ३ ॥

जवानी तो यूं ही चली गई, अब बुढ़ापे ने तन पर कब्जा कर लिया है। गुरु नानक निर्देश करते हैं कि हे मन! ईश्वर का भजन कर ले, समय बीतता जा रहा है॥३॥

बिरधि भइओ सूझै नही कालु पहूचिओ आनि ॥ कहु नानक नर बावरे किउ न भजै भगवानु ॥ ४ ॥

बूढ़ा हो गया, कोई होश नहीं, मौत भी सिर पर आ गई है। गुरु नानक का कथन है कि हे बावले नर! अब भी तुम भगवान का भजन क्यों नहीं कर रहे॥ ४॥

धनु दारा संपति सगल जिनि अपुनी करि मानि ॥ इन मै कछु संगी नही नानक साची जानि ॥ ५ ॥

हे भाई! धन-दौलत, पत्नी एवं पूरी सम्पति को जिसे तुमने अपना मान लिया था। नानक की सच्ची बात मान लो कि इन में से कोई तेरा साथी नहीं॥ ५॥

पतित उधारन भै हरन हरि अनाथ के नाथ ॥ कहु नानक तिह जानीऐ सदा बसतु तुम साथि ॥ ६ ॥

ईश्वर पतित जीवों का उद्धार करने वाला है, भयभंजन एवं अनाथों का नाथ है। नानक का कथन है कि यह समझ लो कि वह सदैव तुम्हारे साथ रहता है॥ ६॥

तनु धनु जिह तो कउ दीओ तां सिउ नेहु न कीन ॥ कहु नानक नर बावरे अब किउ डोलत दीन ॥ ७ ॥

जिस भगवान ने तुझे सुन्दर तन-धन दिया, उससे प्रेम नहीं किया। नानक कहते हैं कि हे बावले नर! अब दीन होकर क्यों दोलायमान हो रहा है॥७॥

तनु धनु संपै सुख दीओ अरु जिह नीके धाम ॥ कहु नानक सुनु रे मना सिमरत काहि न रामु ॥ ८ ॥

जिस परमेश्वर ने शरीर, धन-संपति, सुख-सुविधाएँ और रहने के लिए घर दिया है। गुरु नानक समझाते हैं कि हे मन! उस राम का सिमरन क्यों नहीं करते॥८॥

सभ सुख दाता रामु है दूसर नाहिन कोइ ॥ कहु नानक सुनि रे मना तिह सिमरत गति होइ ॥ ६ ॥

परमात्मा सब सुख देने वाला है, उसके अतिरिक्त कोई दूसरा नहीं। गुरु नानक निर्देश करते हैं कि हे मन! उसका सुमिरन करने से ही मुक्ति होती है॥६॥

जिह सिमरत गति पाईऐ तिह भजु रे तै मीत ॥ कहु नानक सुनु रे मना अउध घटत है नीत ॥ १० ॥

हे मित्र! जिसका सुमिरन करने से मुक्ति प्राप्त होती है, उसी का तुम कीर्तिगान करो। गुरु नानक कहते हैं कि हे मन! मेरी बात सुन, जिंदगी हर रोज़ घट रही है॥१०॥

पांच तत को तनु रचिओ जानहु चतुर सुजान ॥ जिह ते उपजिओ नानका लीन ताहि मै मानु ॥ ११ ॥

हे चतुर व्यक्तियो! यह जान लो कि ईश्वर ने पाँच तत्वों से तन की रचना की है। नानक का कथन है कि यह अच्छी तरह मान लो, जिससे उत्पन्न हुए हो, उसी में विलीन हो जाना है॥११॥

घट घट मै हरि जू बसै संतन कहिओ पुकारि ॥ कहु नानक तिह भजु मना भउ निधि उतरहि पारि ॥ १२ ॥

संत पुरुष पुकार कर यही कहते हैं कि ईश्वर घट-घट में रहता है। गुरु नानक निर्देश करते हैं कि हे मन! हरि भजन कर लो, भव-सागर से पार उतर जाओगे॥१२॥

सुखु दुखु जिह परसै नही लोभु मोहु अभिमानु ॥ कहु नानक सुनु रे मना सो मूरति भगवान ॥ १३ ॥

जिसे कोई सुख-दुख, लोभ, मोह एवं अभिमान स्पर्श नहीं करते। नानक संबोधन करते हैं कि हे मन! सुन, दरअसल वही भगवान की मूर्ति है॥१३॥

उसतति निंदिआ नाहि जिहि कंचन लोह समानि ॥ कहु नानक सुनि रे मना मुकति ताहि तै जानि ॥ १४ ॥

जिसे प्रशंसा अथवा निंदा का असर नहीं होता, लोहे एवं सोने को भी बराबर ही मानता है। नानक फुरमाते हैं कि हे मन! सुन, उसी से मुक्ति मिल सकती है॥१४॥

हरखु सोगु जा कै नही बैरी मीत समानि ॥ कहु नानक सुनि रे मना मुकति ताहि तै जानि ॥ १५ ॥

जिसे खुशी अथवा गम प्रभावित नहीं करता, शत्रुओं एवं मित्रों को भी बराबर मानता है। गुरु नानक कथन करते हैं कि हे मन! सुन, उसी से मुक्ति निहित है॥१५॥

भै काहू कउ देत नहि नहि भै मानत आन ॥ कहु नानक सुनि रे मना गिआनी ताहि बखानि ॥ १६ ॥

जो न किसी व्यक्ति को डराता है, न ही किसी का डर मानता है। नानक का कथन है कि हे मन! सुन, उसी को ज्ञानी कहना चाहिए॥१६॥

जिहि बिखिआ सगली तजी लीओ भेख बैराग ॥ कहु नानक सुनु रे मना तिह नर माथै भागु ॥ १७ ॥

जो विषय-विकारों को छोड़ देता है, संसार को त्याग कर वैराग्यवान हो जाता है। नानक का कथन है कि हे मन! सुन, वही व्यक्ति भाग्यवान् है॥१७॥

जिहि माइआ ममता तजी सभ ते भइओ उदासु ॥ कहु नानक सुनु रे मना तिह घटि ब्रहम निवासु ॥ १८ ॥

जो माया-ममता सब छोड़कर विरक्त हो गया है। नानक संबोधन करते हैं– हे मन! सुन, दरअसल उसी के दिल में ब्रह्म का निवास है॥१८॥

जिहि प्रानी हउमै तजी करता रामु पछानि ॥ कहु नानक वहु मुकति नरु इह मन साची मानु ॥ १९ ॥

जिस प्राणी ने अहम् को छोड़कर कर्ता परमेश्वर को पहचान लिया है। नानक का कथन है कि दरअसल वही व्यक्ति संसार के बन्धनों से मुक्त है, इस सच्चाई को मन में स्वीकार कर लो॥१९॥

भै नासन दुरमति हरन कलि मै हरि को नामु ॥ निसि दिनु जो नानक भजै सफल होहि तिह काम ॥ २० ॥

कलियुग में परमात्मा का नाम भय को नष्ट करने वाला और दुर्मति का हरण करने वाला है। गुरु नानक फुरमाते हैं– जो व्यक्ति रात-दिन परमात्मा का भजन करते हैं, उनके सब काम सफल हो जाते हैं॥ २०॥

जिहबा गुन गोबिंद भजहु करन सुनहु हरि नामु ॥ कहु नानक सुनि रे मना परहि न जम कै धाम ॥ २१ ॥

जिह्वा से गोविन्द का भजन करो, कानों से हरिनाम-कीर्तन सुनो। नानक संबोधन करते हैं कि हे मन! सुन, इससे यमपुरी में नहीं पड़ोगे॥ २१॥

जो प्रानी ममता तजै लोभ मोह अहंकार ॥ कहु नानक आपन तरै अउरन लेत उधार ॥ २२ ॥

जो प्राणी ममता, लोभ, मोह एवं अहंकार को तज देता है। नानक का कथन है कि वह आप तो संसार-सागर से तैरता ही है, अन्य लोगों का भी उद्धार कर देता है॥ २२॥

जिउ सुपना अरु पेखना ऐसे जग कउ जानि ॥ इन मै कछु साचो नही नानक बिनु भगवान ॥ २३ ॥

ज्यों सपना एवं थोड़ी देर के लिए कुछ देखना है, ऐसे ही दुनिया को मान। नानक का कथन है कि भगवान के बिना इन में से कुछ भी सत्य नहीं॥ २३॥

निसि दिनु माइआ कारने प्रानी डोलत नीत ॥ कोटन मै नानक कोऊ नाराइनु जिह चीति ॥ २४ ॥

धन-दौलत की खातिर प्राणी दिन-रात डोलता फिरता है। हे नानक! करोड़ों में कोई विरला ही है, जिसके दिल में ईश्वर रहता है॥२४॥

जैसे जल ते बुदबुदा उपजै बिनसै नीत ॥ जग रचना तैसे रची कहु नानक सुनि मीत ॥ २५ ॥

जैसे जल से बुलबुला रोज़ उत्पन्न व नष्ट होता है। नानक का कथन है कि हे मित्र! सुन, जगत-रचना भी वैसे ही रची हुई है॥२५॥

प्रानी कछू न चेतई मदि माइआ कै अंधु ॥ कहु नानक बिनु हरि भजन परत ताहि जम फंध ॥ २६ ॥

माया के नशे में अन्धा बनकर प्राणी को कुछ याद नहीं रहता। हे नानक! परमात्मा के भजन बिना तभी यम के फंदे में पड़ता है॥२६॥

जउ सुख कउ चाहै सदा सरनि राम की लेह ॥ कहु नानक सुनि रे मना दुरलभ मानुख देह ॥ २७ ॥

यदि सदैव सुख चाहते हो तो राम की शरण लो। गुरु नानक निर्देश करते हैं कि हे मन! सुन, यह मानव शरीर दुर्लभ है, इसे व्यर्थ मत गंवाना॥२७॥

माइआ कारनि धावही मूरख लोग अजान ॥ कहु नानक बिनु हरि भजन बिरथा जनमु सिरान ॥ २८ ॥

मूर्ख लोग धन की खातिर दौड़ते फिरते हैं। हे नानक! भगवान के भजन बिना जीवन व्यर्थ ही जाता है॥२८॥

जो प्रानी निसि दिनु भजै रूप राम तिह जानु ॥ हरि जन हरि अंतरु नही नानक साची मानु ॥ २९ ॥

जो प्राणी दिन-रात भजन करता है, उसे परमात्मा का रूप मानो। नानक का कथन है कि यह सच्ची बात मान लो कि ईश्वर एवं उसके भक्तों में कोई अन्तर नहीं॥२९॥

मनु माइआ मै फधि रहिओ बिसरिओ गोबिंद नामु ॥ कहु नानक बिनु हरि भजन जीवन कउने काम ॥ ३० ॥

मन माया में फँसा रहता है, जिससे ईश्वर का नाम भूल जाता है। गुरु नानक निर्देश करते हैं कि भगवान के भजन बिना जीवन किसी काम का नहीं॥३०॥

प्रानी रामु न चेतई मदि माइआ कै अंधु ॥ कहु नानक हरि भजन बिनु परत ताहि जम फंध ॥ ३१ ॥

माया के नशे में अन्धा होकर प्राणी राम को याद नहीं करता। हे नानक! प्रभु-भजन बिना इसके गले में मौत का फंदा ही पड़ता है॥३१॥

सुख मै बहु संगी भए दुख मै संगि न कोइ ॥ कहु नानक हरि भजु मना अंति सहाई होइ ॥ ३२ ॥

सुख में तो बहुत सारे साथी बन जाते हैं, परन्तु दुख में कोई साथ नहीं देता। गुरु नानक निर्देश करते हैं कि हे मन! भगवान का भजन कर लो, क्योंकि अंत में वही सहाई होता है॥३२॥

जनम जनम भरमत फिरिओ मिटिओ न जम को त्रासु ॥ कहु नानक हरि भजु मना निरभै पावहि बासु ॥ ३३ ॥

प्राणी बेचारा जन्म-जन्मांतर भटकता रहा, लेकिन उसका मौत का डर नहीं मिटा। नानक फुरमाते हैं कि हे मन! ईश्वर का भजन किया जाए तो निर्भय हो जाओगे॥३३॥

जतन बहुतु मै करि रहिओ मिटिओ न मन को मानु ॥ दुरमति सिउ नानक फधिओ राखि लेहु भगवान ॥ ३४ ॥

मैंने बहुत कोशिशें कर ली हैं, लेकिन मन का अहंकार मिट नहीं सका। नानक विनती करते हैं, हे भगवान! दुर्मति में फँसा हुआ हूँ, मुझे बचा लो॥३४॥

बाल जुआनी अरु बिरधि फुनि तीनि अवसथा जानि ॥ कहु नानक हरि भजन बिनु बिरथा सभ ही मानु ॥ ३५ ॥

बचपन, जवानी और बुढ़ापा– जिंदगी की यह तीन अवस्थाएँ मानी जाती हैं। नानक का कथन है कि ईश्वर के भजन बिना सब व्यर्थ मान॥३५॥

करणो हुतो सु ना कीओ परिओ लोभ कै फंध ॥ नानक समिओ रमि गइओ अब किउ रोवत अंध ॥ ३६ ॥

जो तुम्हारे करने योग्य काम था, वह (प्रभु-भजन) तूने लालच में फँसकर बिल्कुल नहीं किया। गुरु नानक फुरमाते हैं कि हे अन्धे! समय गुजर गया है, अब क्यों रो रहे हो॥३६॥

मनु माइआ मै रमि रहिओ निकसत नाहिन मीत ॥ नानक मूरति चित्र जिउ छाडित नाहिन भीति ॥ ३७ ॥

हे मित्र! मन तुम्हारा माया में ही लीन है, जो इससे निकलता नहीं। नानक का कथन है कि ज्यों दीवार पर रचित मूर्ति दीवार को नहीं छोड़ती, वैसा ही तुम्हारा हाल है॥ ३७॥

नर चाहत कछु अउर अउरै की अउरै भई ॥ चितवत रहिओ ठगउर नानक फासी गलि परी ॥ ३८ ॥

इन्सान चाहता तो कुछ और है, लेकिन कुछ और ही हो जाता है। हे नानक ! लोगों को धोखा देने की सोच में वह खुद ही फँस जाता है॥३८॥

जतन बहुत सुख के कीए दुख को कीओ न कोइ ॥ कहु नानक सुनि रे मना हरि भावै सो होइ ॥ ३६ ॥

लोग सुख के लिए बहुत प्रयास करते हैं परन्तु दुख की रोकथाम के लिए कुछ नहीं करते। नानक समझाते हैं कि हे मन ! सुन, दरअसल जो ईश्वर को उचित लगता है, वही होता है॥३६॥

जगतु भिखारी फिरतु है सभ को दाता रामु ॥ कहु नानक मन सिमरु तिह पूरन होवहि काम ॥ ४० ॥

यह जगत भिखारी की तरह घूमता है, लेकिन सब को देने वाला परमेश्वर ही है। नानक का कथन है कि हे मन ! भगवान का सिमरन करने से सब कार्य पूर्ण होते हैं॥४०॥

झूठै मानु कहा करै जगु सुपने जिउ जानु ॥ इन मै कछु तेरो नही नानक कहिओ बखानि ॥ ४१ ॥

हे भाई ! झूठा अभिमान क्यों कर रहे हो, यह दुनिया सपने की तरह है। नानक का यही कथन है कि दुनिया में कुछ भी तेरा नहीं॥४१॥

गरबु करतु है देह को बिनसै छिन मै मीत ॥ जिहि प्रानी हरि जसु कहिओ नानक तिहि जगु जीति ॥ ४२ ॥

हे मित्र ! शरीर का तुम गर्व करते हो, लेकिन यह तो क्षण में ही नष्ट हो जाता है। नानक का मत है कि जो प्राणी ईश्वर का यशोगान करता है, वही जगत पर विजयी होता है॥४२॥

जिह घटि सिमरनु राम को सो नरु मुकता जानु ॥ तिहि नर हरि अंतरु नही नानक साची मानु ॥ ४३ ॥

जिसके दिल में राम का सिमरन है, उसी व्यक्ति को मुक्त मानो। नानक का मत है कि सच मानना, उस व्यक्ति एवं परमात्मा में कोई अन्तर नहीं॥४३॥

एक भगति भगवान जिह प्रानी कै नाहि मनि ॥ जैसे सूकर सुआन नानक मानो ताहि तनु ॥ ४४ ॥

जिस प्राणी के मन में भगवान की भक्ति नहीं। गुरु नानक फुरमान करते हैं कि उसका तन सूअर एवं कुत्ते की तरह मानो॥४४॥

सुआमी को ग्रिहु जिउ सदा सुआन तजत नही नित ॥ नानक इह बिधि हरि भजउ इक मनि हुइ इक चिति ॥ ४५ ॥

ज्यों कुत्ता अपने मालिक का घर हरगिज नहीं छोड़ता। नानक का कथन है कि इसी तरह एकाग्रचित होकर दिल से भगवान का भजन करो॥ ४५॥

तीरथ बरत अरु दान करि मन मै धरै गुमानु ॥ नानक निहफलु जात तिह जिउ कुंचर इसनानु ॥ ४६ ॥

जो व्यक्ति तीर्थ, व्रत-उपवास एवं दान-पुण्य करके भी मन में गुमान करता है। हे नानक! उसके सब कर्म यों निष्फल हो जाते हैं, ज्यों हाथी स्नान के बाद धूल लगा लेता है॥४६॥

सिरु कंपिओ पग डगमगे नैन जोति ते हीन ॥ कहु नानक इह बिधि भई तऊ न हरि रसि लीन ॥ ४७ ॥

सिर काँप रहा है, पैर डगमगा रहे हैं और आँखों की रोशनी भी नहीं रही। गुरु नानक का कथन है कि बुढ़ापे में यह दशा हो गई है, इसके बावजूद भी जीव परमात्मा के भजन में लीन नहीं हो रहा॥४७॥

निज करि देखिओ जगतु मै को काहू को नाहि ॥ नानक थिरु हरि भगति है तिह राखो मन माहि ॥ ४८ ॥

दुनिया को मैंने अपना बनाकर भी देख लिया है, परन्तु कोई किसी का (हमदर्द) नहीं। नानक का कथन है कि केवल प्रभु-भक्ति ही स्थिर है, इसे ही दिल में बसाए रखो॥ ४८॥

जग रचना सभ झूठ है जानि लेहु रे मीत ॥ कहि नानक थिरु ना रहै जिउ बालू की भीति ॥ ४६ ॥

हे मित्र! यह सच्चाई मान लो, कि यह जगत-रचना सब झूठ है। नानक का कथन है कि रेत की दीवार की तरह कुछ भी स्थिर नहीं रहता॥ ४६॥

रामु गइओ रावनु गइओ जा कउ बहु परवारु ॥ कहु नानक थिरु कछु नही सुपने जिउ संसारु ॥ ५० ॥

दशरथ-सुत राम भी संसार को छोड़ गए, लंकापति रावण भी मौत की आगोश में चला गया, जिसका बहुत बड़ा परिवार था। नानक का कथन है कि यह संसार सपने की तरह है और कोई स्थाई नहीं है॥ ५०॥

चिंता ता की कीजीऐ जो अनहोनी होइ ॥ इहु मारगु संसार को नानक थिरु नही कोइ ॥ ५१ ॥

चिंता तो उसकी करनी चाहिए, जो अनहोनी हो। हे नानक! इस संसार मार्ग पर कोई स्थिर नहीं॥ ५१॥

जो उपजिओ सो बिनसि है परो आजु कै कालि ॥ नानक हरि गुन गाइ ले छाडि सगल जंजाल ॥ ५२ ॥

जो भी जन्म लेता है, वह मृत्यु को प्राप्त हो जाता है। आज अथवा कल हर कोई जाने वाला है। अतः नानक का मत है कि सब जंजाल छोड़कर भगवान का गुणगान कर लो॥ ५२॥

दोहरा ॥ बलु छुटकिओ बंधन परे कछू न होत उपाइ ॥ कहु नानक अब ओट हरि गज जिउ होहु सहाइ ॥ ५३ ॥

{सन् १६७५ ई. में जब गुरु तेग बहादुर जी मुगल बादशाह औरंगजेब के बंदीगृह में थे तो कहा जाता है कि यह दोहा उन्होंने अपने सुपुत्र गुरु गोविन्द सिंह जी को भेजा था}

दोहा॥ हमारा बल खत्म हो गया है, बन्धनों में पड़े हुए हैं और कोई उपाय भी सिद्ध नहीं हो रहा। नानक फुरमाते हैं कि अब तो ईश्वर का ही हमें आसरा है, जैसे हाथी को घड़ियाल से बचाने के लिए सहायता की थी॥५३॥

बलु होआ बंधन छुटे सभु किछु होत उपाइ ॥ नानक सभु किछु तुमरै हाथ मै तुम ही होत सहाइ ॥ ५४ ॥

{इसे दसम पिता, श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी का दोहा माना जाता है।}

ईश्वर में निष्ठा रखते हुए उत्तर है–

आध्यात्मिक बल भी पुनः मिल जाता है, बन्धनों से छुटकारा हो जाता है, सब उपाय साकार हो जाते हैं। हे नानक! सब कुछ आपके हाथ में हैं, आप स्वयं ही सहायता कर सकते हो॥५४॥

संग सखा सभि तजि गए कोऊ न निबहिओ साथि ॥ कहु नानक इह बिपति मै टेक एक रघुनाथ ॥ ५५ ॥

हमारे संगी-साथी सब छोड़ गए हैं। कोई आखिर तक साथ नहीं निभा सका। नानक विनती करते हैं कि हे परमेश्वर! इस विपत्ति के समय एकमात्र तुम्हारा ही आसरा है॥ ५५॥

नामु रहिओ साधू रहिओ रहिओ गुरु गोबिंदु ॥ कहु नानक इह जगत मै किन जपिओ गुर मंतु ॥ ५६ ॥

हरिनाम एवं साधु स्थाई हैं, गुरु परमेश्वर सदैव स्थिर है। हे नानक! इस जगत में किसी विरले ने ही गुरुमंत्र का जाप किया है॥५६॥

राम नामु उर मै गहिओ जा कै सम नही कोइ ॥ जिह सिमरत संकट मिटै दरसु तुहारो होइ ॥ ५७ ॥ १ ॥

राम नाम दिल में बसा लिया है, जिसके बराबर कोई नहीं। जिसका स्मरण करने से संकट दूर जाते हैं और हरि के दर्शन हो जाते हैं॥ ५७॥१॥

मुंदावणी महला ५ ॥

थाल विचि तिंनि वसतू पईओ सतु संतोखु वीचारो ॥ अंम्रित नामु ठाकुर का पइओ जिस का सभसु अधारो ॥ जे को खावै जे को भुंचै तिस का होइ उधारो ॥ एह वसतु तजी नह जाई नित नित रखु उरि धारो ॥ तम संसारु चरन लगि तरीऐ सभु नानक ब्रहम पसारो ॥ १ ॥

{पहेली— वह थाल बताओ जिसमें तीन वस्तुएँ हैं}

थाल में तीन वस्तुएँ परोसी हुई हैं— सत्य, संतोष एवं विचार। इस में ठाकुर जी का अमृतमय नाम भी डाला हुआ है, जिसका सब लोगों को आसरा है। जो इस भोजन का सेवन करता, इसका भोग करता है, उसका उद्धार हो जाता है। इस अमृतमय नाम वस्तु को छोड़ा नहीं जा सकता, नित्य इसे दिल में धारण करो। इस अंधकार भरे संसार को हरि-चरणों में लगकर पार किया जा सकता है। गुरु नानक फुरमान करते हैं कि सब ओर ब्रह्म का ही प्रसार है॥१॥

{दरअसल इस पहेली का उत्तर है कि गुरु ग्रंथ साहिब रूपी एक थाल है। इसका पाठ, कीर्तन एवं मनन जनमानस के लिए कल्याणकारी है।}

सलोक महला ५ ॥ तेरा कीता जातो नाही मैनो जोगु कीतोई ॥ मै निरगुणिआरे को गुणु नाही आपे तरसु पइओई ॥ तरसु पइआ मिहरामति होई सतिगुरु सजणु मिलिआ ॥ नानक नामु मिलै तां जीवां तनु मनु थीवै हरिआ ॥ १ ॥

श्लोक महला ५॥ हे परमपिता! तेरे एहसानों को मैं समझ नहीं पाया, तुमने ही मुझे प्रतिभाशाली बनाया है। क्योंकि मुझ गुणविहीन में कोई गुण नहीं था, तुमने स्वयं ही मुझ पर तरस किया है। तुमने तरस किया, तेरी मेहरबानी हुई तो मुझे सज्जन सतिगुरु मिल गया। गुरु नानक का कथन है कि प्रभु-नाम पर ही मेरा जीवन निर्भर है, अतः नाम मिलने पर ही जीता हूँ, जिससे मेरा तन मन खिल उठता है॥१॥

१ओं सतिगुर प्रसादि ॥

वह अद्वितीय परब्रह्म जिसका वाचक ओम् है, केवल एक (ओंकार-स्वरूप) है, गुरु की कृपा से प्राप्त होता है।

राग माला ॥ राग एक संगि पंच बरंगन ॥ संगि अलापहि आठउ नंदन ॥ प्रथम राग भैरउ वै करही ॥ पंच रागनी संगि उचरही ॥ प्रथम भैरवी बिलावली ॥ पुंनिआकी गावहि बंगली ॥ पुनि असलेखी की भई बारी ॥ ए भैरउ की पाचउ नारी ॥ पंचम हरख दिसाख सुनावहि ॥ बंगालम मधु माधव गावहि ॥ १ ॥ ललत बिलावल गावही अपुनी अपुनी भांति ॥ असट पुत्र भैरव के गावहि गाइन पात्र ॥ १ ॥

एक राग के संग उसकी पाँच रागिनियाँ हैं, राग के आठ पुत्र भी साथ ही गाते हैं। रागी संगीतकार प्रथम राग भैरव को मानते हैं, जिसके संग पाँच रागिनियाँ भी गाती हैं। राग भैरव की पहली नारी भैरवी, तदन्तर बिलावली, पुण्या और बंगली गाती है, फिर असलेखी की गाने की बारी आती है। यह राग भैरव की पाँच स्त्रियाँ हैं। इसके पुत्र पंचम, हर्ष, दिसाख, बंगालम, मधु, माधव भी अपना गान सुनाते हैं॥१॥ साथ ही साथ ललित एवं बिलावल भी अपने तरीके से गाते हैं। इस राग भैरव के आठ पुत्रों का गायक गान करते हैं॥१॥

दुतीआ मालकउसक आलापहि ॥ संगि रागनी पाचउ थापहि ॥ गोंडकरी अरु देवगंधारी ॥ गंधारी सीहुती उचारी ॥ धनासरी ए पाचउ गाई ॥ माल राग कउसक संगि लाई ॥ मारू मसतअंग मेवारा ॥ प्रबलचंड कउसक उभारा ॥ खउखट अउ भउरानद गाए ॥ असट मालकउसक संगि लाए ॥ १ ॥

दूसरा राग मालकौंस गाया जाता है, जिसके संग पाँच रागिनियाँ भी शामिल हैं। गोंडकी, देवगंधारी, गान्धारी, सीहुति और धनासरी– इन पाँचों को गाया जाता है। ये राग मालकौंस के साथ ही हैं। मारू, मस्तअंग, मेवारा, प्रबलचंड, कौसक, उभारा, खौखट और भौरानद गाए जाते हैं। ये आठों ही राग मालकौसक के साथ सुर के साथ सुर मिलाकर लगे हुए हैं॥१॥

पुनि आइअउ हिंडोलु पंच नारि संगि असट सुत ॥ उठहि तान कलोल गाइन तार मिलावही ॥ १ ॥ तेलंगी देवकरी आई ॥ बसंती संदूर सुहाई ॥ सरस अहीरी लै भारजा ॥ संगि लाई पांचउ आरजा ॥ सुरमानंद भासकर आए ॥ चंद्रबिंब मंगलन सुहाए ॥ सरसबान अउ आहि बिनोदा ॥ गावहि सरस बसंत कमोदा ॥ असट पुत्र मै कहे सवारी ॥ पुनि आई दीपक की बारी ॥ १ ॥

फिर राग हिंडोल पाँच रागिनियों एवं आठ पुत्रों के साथ आता है। यह तान उठाकर किल्लोल करता स्वर मिलाकर गान करता है॥१॥ इसकी पत्नी तेलंगी, देवकरी, बसंती, सुन्दर संदूर और सरस अहीरी भी आती है। ये पाँचों अपने पति के संग ही रहती हैं। सुरमानंद, भास्कर, चंद्रबिंब, मंगलन शोभा सहित आते हैं। सरसबान, विनोद, बसंत, कमोद भी साथ ही गाते हैं। इस तरह आठ पुत्रों के साथ हिंडोल सवारी करता है और फिर दीपक की बारी आती है॥१॥

कछेली पटमंजरी टोडी कही अलापि ॥ कामोदी अउ गूजरी संगि दीपक के थापि ॥ १ ॥ कालंका कुंतल अउ रामा ॥ कमलकुसम चंपक के नामा ॥ गउरा अउ कानरा कल्याना ॥ असट पुत्र दीपक के जाना ॥ १ ॥

कछेली, पटमंजरी, टोडी गाती है और कामोदी एवं गूजरी साथ ही दीपक के संग रागिनियाँ मौजूद हैं॥१॥ कालंका, कुंतल, रामा, कमल-कुसुम, चंपक, गौरा, कानड़ा एवं कल्याण नामक दीपक राग के आठ पुत्र माने जाते हैं॥१॥

सभ मिलि सिरीराग वै गावहि ॥ पांचउ संगि बरंगन लावहि ॥ बैरारी करनाटी धरी ॥ गवरी गावहि आसावरी ॥ तिह पाछै सिंधवी अलापी ॥ सिरीराग सिउ पांचउ थापी ॥ १ ॥ सालू सारग सागरा अउर गोंड गंभीर ॥ असट पुत्र स्रीराग के गुंड कुंभ हमीर ॥ १ ॥

रागी, विद्वान, गायक सब मिलकर सिरी राग गाते हैं और साथ ही पाँच रागिनियों को भी शामिल करते हैं। बैराड़ी, करनाटी, गवरी, आसावरी को वे गाते हैं और साथ सिंधवी का गान होता है। ये पाँचों रागिनियाँ सिरी राग के साथ विद्यमान हैं॥१॥ सालू, सारग, सागर, गोंड, गंभीर, गुंड, कुंभ तथा हमीर– ये श्री राग के आठ पुत्र हैं॥१॥

खसटम मेघ राग वै गावहि ॥ पांचउ संगि बरंगन लावहि ॥ सोरठि गोंड मलारी धुनी ॥ पुनि गावहि आसा गुन गुनी ॥ ऊचै सुरि सूहउ पुनि कीनी ॥ मेघ राग सिउ पांचउ चीनी ॥ १ ॥ बैराधर गजधर केदारा ॥ जबलीधर नट अउ जलधारा ॥ पुनि गावहि संकर अउ सिआमा ॥ मेघ राग पुत्रन के नामा ॥ १ ॥

संगीतकार, रागी, गीतकार छठवाँ राग मेघ गायन करते हैं। इसके साथ ही पाँच रागिनियों को भी शामिल करते हैं। इसकी रागिनी सोरठ, गोंड, मलारी की ध्वनि होती है, फिर आसा को मधुर स्वर में गाया जाता है। उच्च स्वर में सूही का गान होता है। इस तरह मेघ राग के साथ पाँच रागिनियाँ हैं॥१॥ बैराधर, गजधर, केदारा, जबलीधर, नट, जलधारा, शंकर और श्यामा भी गाए जाते हैं। ये मेघ राग के पुत्रों के नाम हैं॥१॥

खसट राग उनि गाए संगि रागनी तीस ॥ सभै पुत्र रागंन के अठारह दस बीस ॥ १ ॥ १ ॥

इस तरह गायकों ने छः रागों का गान किया है, जिनके साथ तीस रागिनियाँ हैं। इन सभी रागों के अठारह + दस + बीस = अड़तालीस पुत्र हैं, सबका जोड़ छः राग, पाँच रागिनियाँ, अड़तालीस पुत्र ६ + ३० + ४८ = कुल चौरासी हैं॥१॥१॥

☆☆☆

राग—रागिनियाँ

भैरव राग परिवार

पत्नी	पुत्र
भैरवी	पंचम
बिलावली	हर्ष
पुण्या	दिसाख
बंगली	बंगालम
असलेखी	मधु
	माधव
	ललित
	बिलावल

मालकौंस राग परिवार

पत्नी	पुत्र
गोंडकी	मारू
देवगंधारी	मस्तअंग
गान्धारी	मेवारा
सीहुति	प्रबलचंड
धनासरी	कौसक
	उभारा
	खौखट
	भौरानद

हिंडोल राग परिवार

पत्नी	पुत्र
तेलंगी	सुरमानंद
देवकरी	भास्कर
बसंती	चंद्रबिंब
संदूर	मंगलन
अहीरी	सरसबान
	विनोद
	बसंत
	कमोद

दीपक राग परिवार

पत्नी	पुत्र
कछेली	कालंका
पटमंजरी	कुंतल
टोडी	रामा
कामोदी	कमलकुसुम
गूजरी	चंपक
	गौरा
	कानड़ा
	कल्याण

सिरी राग परिवार

पत्नी	पुत्र
बैराड़ी	सालू
करनाटी	सारग
गवरी	सागर
आसावरी	गोंड
सिंधवी	गंभीर
	गुंड
	कुंभ
	हमीर

मेघ राग परिवार

पत्नी	पुत्र
सोरठ	बैराधर
गोंड	मजधर
मलारी	केदारा
आसा	जबलीधर
सूही	नट
	जलधारा
	शंकर
	श्यामा

हरि हरि हरि हरि हरि हरि हरि हरि हरि हरि हरि

गुरु गुरु गुरु गुरु गुरु गुरु गुरु गुरु गुरु गुरु गुरु गुरु

निरंकार निरंकार निरंकार निरंकार निरंकार

परब्रह्म परब्रह्म परब्रह्म परब्रह्म परब्रह्म परब्रह्म

ओंकार ओंकार ओंकार ओंकार ओंकार ओंकार

वाहिगुरु वाहिगुरु वाहिगुरु वाहिगुरु वाहिगुरु वाहिगुरु

अलख अलख अलख अलख अलख अलख

परवरदगार परवरदगार परवरदगार परवरदगार

गोविंद गोविंद गोविंद गोविंद गोविंद गोविंद

दीनदयाल दीनदयाल दीनदयाल दीनदयाल

पतितपावन पतितपावन पतितपावन पतितपावन

भक्तवत्सल भक्तवत्सल भक्तवत्सल भक्तवत्सल

मेहरबान मेहरबान मेहरबान मेहरबान मेहरबान

नानक नानक नानक न नक नानक नानक

—कोटि-कोटि वन्दन—